कबीर सागर

का

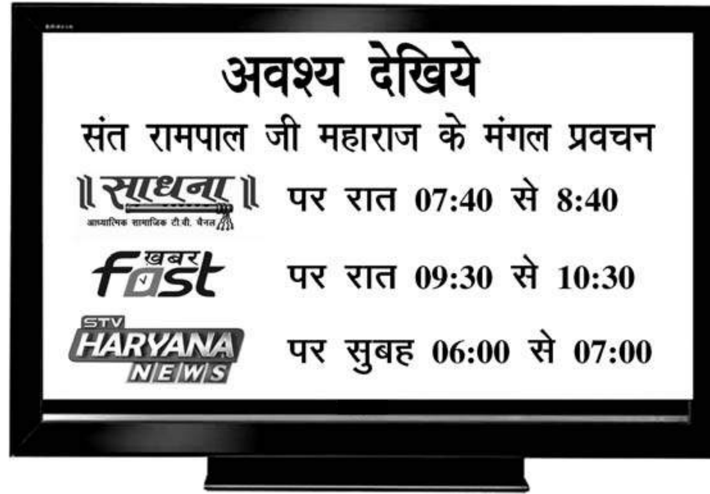
सरलार्थ

सरलार्थ कर्ता :-

संत रामपाल जी महाराज

कबीर, और ज्ञान सब ज्ञानड़ी, कबीर ज्ञान सो ज्ञान।

जैसे गोला तोब का, करता चले मैदान।।



कुल लागत - 200 रूपये
धर्मार्थ मूल्य - 100 रूपये

प्रकाशक :-
प्रचार प्रसार समिति तथा सर्व संगत
सतलोक आश्रम, बरवाला, जिला-हिसार (हरियाणा)
सम्पर्क सूत्र :- 8222880541, 8222880542, 8222880543, 8222880544, 8222880545
E-mail : jagatgururampalji@yahoo.com Visit us at : www.jagatgururampalji.org
Follow us onTwitter : twitter.com/satlokashram

मुद्रक :-
कबीर प्रिंटर्स
C-117, सैक्टर-3, बवाना इन्डस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली।

विषय सूची

❑❑❑

भूमिका

कबीर, दण्डवत् गोविन्द गुरू, बन्दू अविजन सोय।
पहले भये प्रणाम तिन, नमो जो आगे होय।।
गरीब, नमो नमो सतपुरूष कूं, नमस्कार गुरू किन्ही।
सुर–नर मुनिजन साधवां, सन्तों सर्वस दीन्ही।।
सतगुरू साहिब संत सब, दण्डवतम् प्रणाम।
आगे पीछे मध्य हुए, तिन कूं जां कुर्बान।।
गुरू रामदेवानंद जी ने दया करी, किया नजर निहाल।
सतनाम का दिया खजाना, बरतै रामपाल।।
कबीर, और ज्ञान सब ज्ञानड़ी, कबीर ज्ञान सो ज्ञान।
जैसे गोला तोब का, करता चले मैदान।।
कबीर, बेद मेरा भेद है, मैं ना बेदन के मांही।
जौन बेद से मैं मिलूँ, वो बेद जानते नांही।।

कबीर सागर ग्रन्थ का सरलार्थ बिना परमेश्वर की कृपा संभव नहीं हो सकता। जैसे सागर मंथन किया गया था। उसमें परमात्मा ने स्वयं पर्वत को समुद्र में रखा तथा उसे कच्छप बनकर सहारा देकर रोका। शेषनाग का नेता (रई घुमाने का छोटा व कुछ मोटा रस्सा) बनाया। तब सागर मंथन हुआ था। उससे अनमोल रत्न निकले थे।

कबीर सागर का मंथन परमेश्वर कबीर जी तथा पूज्य गुरू स्वामी रामदेवानंद जी की असीम कृपा से संभव हुआ है।

कबीर सागर पद्य भाग में दोहों, चौपाईयों, शब्दों, आरतियों, साखियों में कविताओं में लिखा है। जहाँ-जहाँ प्रमाण के लिए वाणी आवश्यक थी, वहाँ-वहाँ वाणियों को लिखकर ग्रन्थ की यथार्थता को बनाए रखा है। वाणियों में गूढ़ रहस्य छुपे हैं। पद्य भाग यानि दोहों, चौपाईयों तथा शब्दों में लिखा होने के कारण मुझ दास के अतिरिक्त कबीर सागर के गूढ़ ज्ञान को आज (सन् 2012) तक कोई नहीं बता पाया। इस ''कबीर सागर का सरलार्थ'' पुस्तक में उस रहस्य को मक्खन की तरह निकालकर ऊपर रख दिया है। आप जी इस पुस्तक को पढ़कर दाँतों तले ऊँगली दबाओगे। अब उस अनमोल अमृत ज्ञान को आसानी से समझकर ज्ञान की घूँट पीकर जन्म-मरण का रोग समाप्त करवाओगे। जिसका नाम सागर है, उसकी थाह (अंत) पाना कितना कठिन है?

इसी प्रकार परमात्मा के दिए ज्ञान को जानना खाला जी का घर नहीं है। जब तक परमेश्वर बुद्धि न खोले, तब तक एक पंक्ति का भी यथार्थ वर्णन नहीं किया जा सकता। परमेश्वर जी ने अपनी अपरमपार कृपा की है जो कलयुग के प्राणियों पर रहम है।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि :-

गुरू बिन काहू न पाया ज्ञाना, ज्यों थोथा भुष छड़े मूढ़ किसाना।
गुरू बिन वेद पढ़े जो प्राणी, समझे न सार रहे अज्ञानी।
कबीर, नौ मन सूत उलझिया, ऋषि रहे झख मार।

सतगुरू ऐसा सुलझा दे, उलझै ना दूजी बार।।

कबीर जी का ज्ञान (कबीर सागर, कबीर साखी, कबीर बीजक, कबीर शब्दावली) पाँचवां वेद है। इस पाँचवें वेद का सरलार्थ आप जी के कर कमलों में है।

इस कबीर सागर के सरलार्थ को पढ़कर पाठक धन्य हो जाऐंगे तथा आध्यात्मिक सत्य ज्ञान से परिचित हो जाऐंगे। अपने जीव का कल्याण कराऐंगे। परमात्मा कबीर जी की शरण में आऐंगे। काल जाल को समझकर जन्म-मरण के चक्र से सदा के लिए मुक्त होकर सनातन परम धाम (सतलोक) में स्थाई निवास पाऐंगे। इस जीवन में भी प्रभु कबीर जी की कंपा से सुखी जीवन जीऐंगे। मेरे इस प्रयत्न की सफलता इसी में है कि बुद्धिमान सज्जन पुरूष इसे पढ़ें और अन्य भ्रमित समाज को इस ग्रन्थ के ज्ञान को समझाऐं।

परमेश्वर कबीर जी की शरण में लगाऐं तथा एक जीव को गलत भक्ति से हटाकर सत्य पुरूष की सत्य भक्ति पर लगाकर एक करोड़ गायों को कसाई से छुड़वाने के समान पुण्य प्राप्त करेंगे।

विश्व के मानव का जीवन सफल होगा। सर्व मानव प्रेम तथा निष्कपटता से जीवन जीएगा। जो इस ग्रन्थ को पढ़कर अमल यानि इसमें लिखे को मानकर अपनी भक्ति क्रिया बदलकर भक्ति करेगा, उसकी एक सौ एक पीढ़ी मोक्ष को प्राप्त करेंगी। यह लेखक का विश्वास है तथा परमेश्वर कबीर जी का आदेश तथा निर्देश।

कबीर, भक्ति बीज जो होये हंसा, तारूं तास के एक्कोतर बंशा।।

सरलार्थ कर्ता

दासन दास रामपाल दास
सतलोक आश्रम बरवाला,
जिला - हिसार(हरियाणा) भारत।

स्पष्टीकरण

निवेदन :- पवित्र कबीर सागर जो वर्तमान में हमें प्राप्त है, उसको कबीर पंथी भारत पथिक स्वामी युगलानंद (बिहारी) द्वारा परिष्कृत यानि संशोधित किया गया है। कबीर सागर के अध्याय ''अनुराग सागर'' की प्रस्तावना में तथा ''ज्ञान प्रकाश'' के पृष्ठ 37 के नीचे संशोधनकर्ता की टिप्पणी में लिखा है कि ''अनुराग सागर'' की मेरे पास 46 हस्तलिखित प्रतियाँ रखी हैं जिनमें आपस में बहुत भिन्नता है। कोई भी एक-दूसरे से मेल नहीं खाती। सबसे निष्कर्ष निकालकर मैं यह ग्रन्थ ''कबीर सागर'' छपवा रहा हूँ। सन् 01-04-1914 (वैशाख बदी 8 विक्रमी संवत् 1971) में यह कबीर सागर छपा है।

अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' के पृष्ठ 37 के नीचे की टिप्पणी में लिखा है कि प्रत्येक प्रति के लेखक साहेबान ने अपनी महिमा मंडन के लिए ग्रन्थों में अपनी बुद्धि के अनुसार परिवर्तन किया है। जिस कारण से कबीर पंथ के ग्रन्थों की दुर्दशा हुई है। मैंने (स्वामी युगलानन्द जी ने) बहुत परिश्रम करके यह कबीर सागर संशोधित किया है। जो वर्तमान में छपी है, वह श्री उग्रनाम साहेब के पास जो प्रति थी, उसी को छपवाया है यानि सन् 01-04-1914 को छपा है।

❖ उपरोक्त प्रकरण से सिद्ध है कि कबीर सागर में ज्ञानहीन महंतों ने कुछ मिलावट या काँट-छाँट की है। वह उनका अपना अज्ञान अनुभव था। परंतु ''सागर'' होने के कारण कबीर जी के ज्ञान को समाप्त नहीं कर पाए। बीच-बीच में तथा कहीं पूरे अध्याय में सच्चाई शेष है। उसकी सत्यता संत गरीबदास जी गाँव-छुड़ानी (जिला-झज्जर, हरियाणा) वाले के 'सत्य-ग्रन्थ' से होती है जिसमें कोई काँट-छाँट या मिलावट नहीं है। अपने तत्त्वज्ञान को पुनः मानव समाज को प्रदान करने के लिए परमेश्वर कबीर जी ने अपनी प्यारी आत्मा संत गरीबदास जी को संत धर्मदास जी की तरह सत्यलोक के दर्शन करवाकर उनमें यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान भर दिया था जो संत गरीबदास जी ने परमेश्वर कबीर जी व उनकी संरचना तथा सत्यलोक को आँखों देखकर गवाह (Witness) बनकर अमृतवाणी बोलकर लिखवाया है जो दादू पंथी श्री गोपाल दास जी ने लिखा था। जिसकी हस्तलिखित कॉपी भी हमारे पास उपलब्ध है तथा प्रेस द्वारा छपा हुआ ग्रन्थ भी है। उससे तुलना करके जो प्रकरण कबीर सागर में मिलता है। वह मैंने सत्य माना है। उसी को आधार बनाकर सत्संग करता हूँ तथा पुस्तकें भी बनाई हैं। कबीर सागर के सरलार्थ में भी यही आधार माना है। जहाँ-जहाँ कबीर सागर में मिलावट की गई है, उसको पुराने कबीर सागर तथा उपरोक्त प्रमाणों से ठीक किया है।

कबीर सागर के प्रथम अध्याय का नाम है ''ज्ञान सागर'' :-

वास्तव में कबीर पंथियों ने एक ही अध्याय के कई अध्याय बनाकर भिन्न-भिन्न नाम रखकर अपनी-अपनी बुद्धि से अड़ंगा कर रखा है। वर्तमान कबीर सागर में कुल 40 अध्याय हैं। जिनके नाम हैं :-

1. ज्ञान सागर 2. अनुराग सागर 3. अम्बु सागर 4. विवेक सागर 5. सर्वज्ञ सागर 6. ज्ञान प्रकाश 7. अमर सिंह बोध 8. बीर सिंह बोध 9. भोपाल बोध 10. जगजीवन बोध 11. गरूड़ बोध 12. हनुमान बोध 13. लक्ष्मण बोध 14. मुहम्मद बोध 15. काफिर बोध 16. सुल्तान बोध 17. निरंजन बोध 18. ज्ञान बोध 19. भवतारण बोध 20. मुक्ति बोध 21. चौका बोध 22. कबीर बानी 23. कर्म बोध 24.

अमर मूल 25. उग्र गीता 26. ज्ञान स्थिति बोध 27. संतोष बोध 28. काया पाँजी 29. पंच मुद्रा 30. आत्म बोध 31. जैन धर्म बोध 32. स्वसमवेद बोध 33. धर्म बोध 34. कमाल बोध 35. श्वांस गुंजार 36. अगम निगम बोध 37. सुमिरन बोध 38. कबीर चरित्र बोध 39. गुरू महात्मय 40. जीव धर्म बोध।

सरलार्थ कर्ता

(संत) रामपाल दास
सतलोक आश्रम बरवाला
जिला-हिसार, प्रान्त-हरियाणा (भारत)

धनी धर्मदास का जन्म-मरण चक्र कैसे समाप्त हुआ?

पवित्र कबीर सागर का ज्ञान परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी ने अपनी प्रिय आत्मा धर्मदास जी सेठ को बताया जो बाद में धर्मदास जी ने लिखा। पवित्र कबीर सागर के ज्ञान का नाश नासमझ कबीर पंथी नकली आचार्यों ने कर रखा है जो आप जी ने इस ग्रन्थ के पूर्व में कबीर सागर के संशोधनकर्ता श्री युगलानंद (बिहारी) भारत पथिक कबीर पंथी द्वारा की गई अनुराग सागर की भूमिका में तथा ज्ञान प्रकाश के नीचे की गई टिप्पणी में पढ़ लिया है। इस ग्रन्थ ''कबीर सागर का सरलार्थ'' में यथार्थ तथा सरल ज्ञान पढ़ने को मिलेगा।

वास्तव में पूरे कबीर सागर का सारांश है ''धर्मदास बोध'' यानि ''ज्ञान प्रकाश''। परमात्मा ने अपने प्रिय भक्त धर्मदास जी को सत्य आध्यात्मिक ज्ञान बताया। इसलिए कबीर सागर ''धर्मदास बोध'' है और जिसका विस्तत वर्णन है ''ज्ञान प्रकाश'' अध्याय में जो छठा अध्याय है। सर्वप्रथम ''ज्ञान प्रकाश'' से कबीर सागर सार लेता हूँ।

अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' (छठा अध्याय) का सार परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी द्वारा सेठ धर्मदास जी (नगर=बाँधवगढ़, प्रदेश=मध्यप्रदेश, भारत देश) को शरण में लेने के लिए लीला का वर्णन है। इसमें पद्य भाग में दोहों तथा चौपाईयों के रूप में वर्णन है जो जन-साधारण की समझ से परे की बात है। इसलिए इसको गद्य भाग में सरल करके लिखना वर्तमान में अति आवश्यक है।

कप्या पढ़ें आगे संक्षिप्त तथा यथार्थ प्रमाणित आत्मा तथा परमात्मा का संवाद :-

अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' का सारांश (छठा अध्याय)

जैसा कि इस ग्रन्थ (कबीर सागर का सरलार्थ) के प्रारम्भ में लिखा है कि कबीर सागर के यथार्थ अर्थ को न समझकर कबीर पंथियों ने इस ग्रन्थ में अपने विवेक अनुसार फेर-बदल किया है। कुछ अंश काटे हैं। कुछ आगे-पीछे किए हैं। कुछ बनावटी वाणी लिखकर कबीर सागर का नाश किया है। परंतु सागर तो सागर ही होता है। उसको खाली नहीं किया जा सकता। इसी प्रकार कबीर सागर में बहुत सा सत्य विवरण उनकी कुदृष्टि से बच गया है। शेष मिलावट को अब एक बहुत पुराने हस्तलिखित ''कबीर सागर'' से मेल करके तथा संत गरीबदास जी की अमृतवाणी के आधार से तथा परमेश्वर कबीर जी द्वारा मुझ दास (रामपाल दास) को दिया, दिव्य ज्ञान के आधार से सत्य ज्ञान लिखा गया है। एक प्रमाण बताता हूँ जो बुद्धिमान के लिए पर्याप्त है।

ज्ञान प्रकाश में परमेश्वर कबीर जी द्वारा धनी धर्मदास जी को शरण में लेने का विवरण है। आपसी संवाद है, परंतु धर्मदास जी का निवास स्थान भी गलत लिखा है। पृष्ठ 21 पर पूर्व गुरू रूपदास जी से शंका का निवारण करके अपने घर चले गए। धर्मदास जी का निवास स्थान ''मथुरा नगर'' लिखा है, वाणी इस प्रकार है :-

तुम हो गुरू वो सतगुरू मोरा। उन हमार यम फंदा तोरा (तोड़ा)।।
धर्मदास तब करी प्रणामा। मथुरा नगर पहुँचे निज धामा।।

जबकि धर्मदास जी का निज निवास स्थान ''बांधवगढ़'' कस्बा था जो मध्यप्रदेश में है। संत गरीबदास जी ने अपनी वाणी में सर्व सत्य विवरण लिखा है कि धर्मदास बांधवगढ़ के रहने वाले सेठ थे। वे तीर्थ यात्रा के लिए मथुरा गए थे। उसके पश्चात् अन्य तीर्थों पर जाना था। कुछ तीर्थों पर भ्रमण कर आए थे। फेर-बदल का अन्य प्रमाण इसी ज्ञान प्रकाश में धर्मदास जी का प्रकरण चल रहा है। बीच में सर्वानन्द ब्राह्मण की कथा लिखी है जो वहाँ पर नहीं होनी चाहिए। केवल धर्मदास की ही बात होनी चाहिए। पृष्ठ 37 से 50 तक सर्वानन्द की कथा है। इससे पहले पृष्ठ 34 पर धर्मदास जी को नाम दीक्षा देने, आरती-चौंका करने का प्रकरण है। पृष्ठ 35 पर गुरू की महिमा की वाणी है जो पृष्ठ 36 तक है। फिर ''धर्मदास वचन'' चौपाई है जो मात्र तीन वाणी हैं। इसके बाद ''सतगुरू वचन'' वाला प्रकरण मेल नहीं करता। पृष्ठ 36 पर ''धर्मदास वचन'' चौपाई की तीन वाणी के पश्चात् पृष्ठ 50 पर ''धर्मदास वचन'' से मेल (Link) करता है जो सर्वानन्द के प्रकरण के पश्चात् ''धर्मदास वचन'' की वाणी है।

ज्ञान प्रकाश पृष्ठ 36 पर ''धर्मदास वचन'' चौपाई

हो साहब तव पद सिर नाऊँ। तव पद परस परम पद पाऊँ।।
केहि विधि आपन भाग सराही । तव बरत गहैं भाव पुनः बनाई।।
कोधों मैं शुभ कर्म कमाया। जो सदगुरू पद दर्शन पाया।।

ज्ञान प्रकाश पृष्ठ 50 ''धर्मदास वचन''

धन्य धन्य साहिब अविगत नाथा। प्रभु मोहे निशदिन राखो साथा।।
सुत परिजन मोहे कछु न सोहाही। धन दारा अरू लोक बड़ाई।।

इसके पश्चात् सही प्रकरण है। बीच में अन्य प्रकरण लिखा है, वह मिलावटी तथा गलत है।

नाम दीक्षा देने के पश्चात् परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को प्रसन्न करने के लिए कहा कि जब आपको विश्वास हो जाएगा कि मैं जो ज्ञान तथा भक्ति मंत्र बता रहा हूँ, वे सत्य हैं। फिर

तेरे को गुरू पद दूँगा। आप दीक्षा लेने वाले से सवा लाख द्रव्य (रूपये या सोना) लेकर दीक्षा देना। परमात्मा ने धर्मदास जी की परीक्षा ली थी कि वैश्य (बनिया) जाति से है यदि लालची होगा तो इस लालचवश मेरा ज्ञान सुनता रहेगा। ज्ञान के पश्चात् लालच रहेगा ही नहीं। परंतु धर्मदास जी पूर्ण अधिकारी हंस थे। सतलोक से विशेष आत्मा भेजे थे। फिर उन्होंने इस राशि को कम करवाया और निःशुल्क दीक्षा देने का वचन करवाया यानि माफ करवाया।

अब ''ज्ञान प्रकाश'' के पष्ठ 9 से आवश्यक वाणी लेते हैं क्योंकि जो अमतवाणी परमेश्वर कबीर जी के मुख कमल से बोली गई है, उसके पढ़ने-सुनने से भी अनेकों पाप नाश होते हैं। ज्ञान प्रकाश पष्ठ 9 से वाणी :-

धर्मदास बोध = ज्ञान प्रकाश

निम्न वाणी पुराने कबीर ग्रन्थ के अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' से हैं :-

बांधवगढ़ नगर कहाय। तामें धर्मदास साह रहाय।।
धन का नहीं वार रू पारा। हरि भक्ति में श्रद्धा अपारा।।
रूप दास गुरू वैष्णव बनाया। उन राम कष्ण भगवान बताया।।
तीर्थ बरत मूर्ति पूजा। एकादशी और सालिग सूजा।।
ताके मते दढ़ धर्मनि नागर। भूल रहा वह सुख का सागर।।
तीर्थ करन को मन चाहा। गुरू आज्ञा ले चला उमाहा।।
भटकत भ्रमत मथुरा आया। कष्ण सरोवर में उठ नहाया।।
चौका लीपा पूजा कारण। फिर लगा गीता सलोक उचारण।।
ताही समय एक साधु आया। पाँच कदम पर आसन लाया।।
धर्मदास को कहा आदेशा। जिन्दा रूप साधु का भेषा।।
धर्मदास देखा नजर उठाई। पूजा में मगन कछु बोल्या नाहीं।।
जग्यासु वत देखै दाता। धर्मदास जाना सुनत है बाता।।
ऊँचे सुर से पाठ बुलाया। जिन्दा सुन–सुन शीश हिलाया।।
धर्मदास किया वैष्णव भेषा। कण्ठी माला तिलक प्रवेशा।।
पूजा पाठ कर किया विश्रामा। जिन्दा पुनः किया प्रणामा।।
जिन्दा कहै मैं सुना पाठ अनुपा। तुम हो सब संतन के भूपा।।
मोकैं ज्ञान सुनाओ गोसाँई। भक्ति सरस कहीं नहीं पाई।।
मुस्लिम हिन्दू गुरू बहु देखे। आत्म संतोष कहीं नहीं एके।।
धर्मदास मन उठी उमंगा। सुनी बड़ाई तो लागा चंगा।।

धर्मदास वचन

जो चाहो सो पूछो प्रसंगा। सर्व ज्ञान सम्पन्न हूँ भक्ति रंगा।।
पूछहूँ जिन्दा जो तुम चाहो। अपने मन का भ्रम मिटाओ।।

जिन्द वचन

तुम काको पाठ करत हो संता। निर्मल ज्ञान नहीं कोई अन्ता।।
मोकूं पुनि सुनाओ बाणी। जातें मिलै मोहे सारंग पाणी।।
तुम्हरे मुख से ज्ञान मोहे भावै। जैसे जिह्वा मधु टपकावै।।
धर्मदास सुनि जब कोमल बाता। पोथी निकाली मन हर्षाता।।

धर्मदास का गीता का पाठ अनुवाद सहित सुनाना
(उग्र गीता)

धर्मदास जी को ज्ञान था कि जिन्दा वेशधारी मुसलमान संत होते हैं जबकि मुसलमान नहीं मानते कि पुनर्जन्म होता है। इसलिए पहले उसी प्रकरण वाले श्लोक सुनाए। (गीता अध्याय 2 श्लोक 12 व 17, अध्याय 4 श्लोक 5 व 9)

हे अर्जुन आपन जन्म–मरण बहुतेरे। तुम ना जानत याद है मेरे।।
नाश रहित प्रभु कोई और रहाई। जाको कोई मार सकता नाहीं।।

फिर गीता अध्याय 8 श्लोक 1 से 10 सुनाए :-

अर्जुन मन जो शंका आई। कृष्ण से पूछा विनय लाई।।
हे कृष्ण तुम तत् ब्रह्म बताया। अध्यात्म अधिभूत जनाया।।
वाका भेद बताओ दाता। मन्द मति हूँ देवो ज्ञान विधाता।।(गीता अ. 8 श्लोक 1-2)
कृष्ण अस बोले बानी। दिव्य पुरूष की महिमा बखानी।।
तत् ब्रह्म परम अक्षर ब्रह्म कहाया। जिन सब ब्रह्माण्ड बनाया।।
मम भक्ति करो मोकूं पाई। यामै कछु संशय नाहीं।।(गीता अ. 8 श्लोक 5,7)
जहाँ आशा तहाँ बाशा होई। मन कर्म बचन सुमरियो सोई।।(गीता अ. 8 श्लोक 6)
जोहै सनातन अविनाशी भगवाना। वाकि भक्ति करै वा पर जाना।।
जैसे सूरज चमके आसमाना। ऐसे सत्यपुरूष सत्यलोक रहाना।।
वाकी भक्ति करे वाको पावै। बहुर नहीं जग में आवै।।(गीता अ. 8 श्लोक 8-9-10)
मम मंत्र है ओम् अकेला।(गीता अ. 8 श्लोक 13)
ताका ओम् तत् सत् दूहेला।।(गीता अ. 17 श्लोक 23)
तुम अर्जुन जावो वाकी शरणा। सो है परमेश्वर तारण तरणा।।(गीता अ. 18 श्लोक 62,66)
वाका भेद परम संत से जानो। तत ज्ञान में है प्रमाणो।।(गीता अ. 4 श्लोक 34)
वह ज्ञान वह बोलै आपा। ताते मोक्ष पूर्ण हो जाता।।(गीता अ. 4 श्लोक 32)
सब पाप नाश हो जाई। बहुर नहीं जन्म–मरण में आई।।
मिले संत कोई तत्त्वज्ञानी। फिर वह पद खोजो सहिदानी।।
जहाँ जाय कोई लौट न आया। जिन यह संसार वृक्ष निर्माया।।(गीता अ. 15 श्लोक 4)
अब अर्जुन लेहू विचारी। कथ दीन्ही गीता सारी।।(गीता अ. 18 श्लोक 63)
गुप्त भेद बताया सारा। तू है मोकूं आजीज पियारा।।(गीता अ. 18 श्लोक 63)
अति गुप्त से गुप्त भेद और बताऊँ। मैं भी ताको इष्ट मनाऊँ।।(गीता अ. 18 श्लोक 64)
जे तू रहना मेरी शरणा। कबहु ना मिट है जन्म रू मरणा।।
नमस्कार कर मोहे सिर नाई। मेरे पास रहेगा भाई।।(गीता अ. 18 श्लोक 65)
बेसक जा तू वाकी शरणा। मम धर्म पूजा मोकूं धरणा।।
फिर ना मैं तू कूं कबहू रोकूं। ना मन अपने कर तू शोकूं।।(गीता अ. 18 श्लोक 66)
और अनेक श्लोक सुनाया। सुन जिन्द एक प्रश्न उठाया।।

जिन्दा बाबा (कबीर जी) वचन

हे वैष्णव! तव कौन भगवाना। काको यह गीता बखाना।।

धर्मदास वचन

राम क'ष्ण विष्णु अवतारा। विष्णु क'ष्ण है भगवान हमारा।।
श्री क'ष्ण गीता बखाना। एक एक श्लोक है प्रमाणा।।
जे तुम चाहो मोक्ष कराना। भक्ति करो अविनाशी भगवाना।।
विष्णु का कबहु नाश न होई। सब जगत के कर्ता सोई।।
तीर्थ वरत करूँ मन लावो। पिण्ड दान और श्राद्ध करावो।।
यह पूजा है मुक्ति मार्ग। और सब चले कुमार्ग।।

जिन्दा बाबा (कबीर जी) वचन

जै गीता विष्णु रूप में क'ष्ण सुनाया। कह कई बार मैं नाश में आया।।1।।
अविनाशी है कोई और विधाता। जो उत्तम परमात्मा कहाता।।2।।
वह ज्ञान मोकूं नाहीं। वाको पूछो संत शरणाई।।3।।
अविनाशी की शरण में जाओ। पुनि नहीं जन्म–मरण में आओ।।4।।
मैं भी इष्ट रूप ताही पूजा। अविनाशी कोई है मोते दूजा।।5।।
मम भक्ति मंत्र ओम् अकेला। वाका ओम् तत् सत् दुहेला।।6।।
मैं तोकूं पूछूं गोसांई। तेरे भगवान मरण के माहीं।।7।।
हम भक्ति वाकी चाहैं। जो नहीं जन्म–मरण में आहै।।8।।
जे तुम पास वह मंत्र होई। तो मैं पक्का चेला होई।।9।।
यही बात एक संत सुनाई। राम क'ष्ण सब मरण के माहीं।।10।।
अविनाशी कोई और दाता। वाकी भक्ति मैं बताता।।11।।
वो कह में वाही लोक से आया। मैं ही हूँ वह अविगत राया।।12।।
आज तुम गीता में फरमाया। फिर तो वह संत साच कहाया।।13।।
हे वैष्णव! तुम भी धोखे माहीं। बर्था आपन जन्म नशाहीं।।14।।
जो तू चाहो भवसागर तिरणा। जा के गहो वाकी शरणा।।15।।

कबीर परमेश्वर जी ने धर्मदास जी को गीता से ही प्रश्न तथा उत्तर देकर सत्य ज्ञान समझाया। उपरोक्त वाणी सँख्या 1 में गीता अध्याय 4 श्लोक 5, अध्याय 2 श्लोक 12 वाला वर्णन बताया जिसमें गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि अर्जुन! तेरे और मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं। तू नहीं जानता, मैं जानता हूँ। वाणी सँख्या 2 में गीता अध्याय 15 श्लोक 17 वाला वर्णन बताया है। वाणी सँख्या 3 में गीता अध्याय 4 श्लोक 34 वाला ज्ञान बताया है। वाणी सँख्या 4 में गीता अध्याय 18 श्लोक 62, 66 तथा अध्याय 15 श्लोक 4 वाला वर्णन बताया है। वाणी सँख्या 5 में गीता अध्याय 18 श्लोक 64 का वर्णन है जिसमें काल कहता है कि मेरा इष्ट देव भी वही है। वाणी सँख्या 6 में गीता अध्याय 8 श्लोक 13 तथा अध्याय 17 श्लोक 23 वाला ज्ञान है। आगे की वाणियों में कबीर परमेश्वर जी ने अपने आपको छुपाकर अपने ही विषय में बताया है।

धर्मदास वचन

विष्णु पूर्ण परमात्मा हम जाना। जिन्द निन्दा कर हो नादाना।।
पाप शीश तोहे लागे भारी। देवी देवतन को देत हो गारि।।

जिन्दा (कबीर जी) वचन

जे यह निन्दा है भाई। यह तो तोर गीता बतलाई।।

गीता लिखा तुम मानो साचा। अमर विष्णु है कहा लिख राखा।।
तुम पत्थर को राम बताओ। लडूवन का भोग लगाओ।।
कबहु लड्डू खाया पत्थर देवा। या काजू किशमिश पिस्ता मेवा।।
पत्थर पूज पत्थर हो गए भाई। आखें देख भी मानत नाहीं।।
ऐसे गुरू मिले अन्याई। जिन मूर्ति पूजा रीत चलाई।।
इतना कह जिन्द हुए अदेखा। धर्मदास मन किया विवेका।।

धर्मदास वचन

यह क्या चेटक बिता भगवन। कैसे मिटे आवा गमन।।
गीता फिर देखन लागा। वही वतान्त आगे आगा।।
एक एक श्लोक पढ़े और रौवै। सिर चक्रावै जागै न सोवै।।
रात पड़ी तब न आरती कीन्हा। झूठी भक्ति मैं मन दीन्हा।।
ना मारा ना जीवित छोड़ा। अधपका बना जस फोड़ा।।
यह साधु जे फिर मिल जावै। सब मानू जो कछु बतावै।।
भूल के विवाद करूं नहीं कोई। आधीनी से सब जानु सोई।।
उठ सवेरे भोजन लगा बनाने। लकड़ी चुल्हा बीच जलाने।।
जब लकड़ी जलकर छोटी होई। पाछलो भाग में देखा अनर्थ जोई।।
चटक–चटक कर चींटी मरि हैं। अण्डन सहित अग्न में जर हैं।।
तुरंत आग बुझाई धर्मदासा। पाप देख भए उदासा।।
ना अन्न खाऊँ न पानी पीऊँ। इतना पाप कर कैसे जीऊँ।।
कराऊँ भोजन संत कोई पावै। अपना पाप उतर सब जावै।।
लेकर थार चले धर्मनि नागर। वक्ष तले बैठे सुख सागर।।
साधु भेष कोई और बनाया। धर्मदास साधु नेड़े आया।।
रूप और पहचान न पाया। थाल रखकर अर्ज लगाया।।
भोजन करो संत भोग लगाओ। मेरी इच्छा पूर्ण कराओ।।
संत कह आओ धर्मदासा। भूख लगी है मोहे खासा।।
जल का छींटा भोजन पे मारा। चींटी जीवित हुई थाली कारा।।
तब ही रूप बनाया वाही। धर्मदास देखत लज्जाई।।
कहै जिन्दा तुम महा अपराधी। मारे चीटी भोजन में रांधी।।
चरण पकड़ धर्मनि रोया। भूल में जीवन जिन्दा मैं खोया।।
जो तुम कहो मैं मानूं सबही। वाद विवाद अब नहीं करही।।
और कुछ ज्ञान अगम सुनाओ। कहां वह संत वाका भेद बताओ।।

जिन्द (कबीर) वचन

हे वैष्णव तुम पिण्ड भरो और श्राद्ध कराओ। गीता पाठ सदा चित लाओ।।
भूत पूजो बनोगे भूता। पितर पूजै पितर हुता।।
देव पूज देव लोक जाओ। मम पूजा से मोकूं पाओ।।
यह गीता में काल बतावै। जाकूं तुम आपन इष्ट बतावै।।(**गीता अ. 9/25**)
इष्ट कह करै नहीं जैसे। सेठ जी मुक्ति पाओ कैसे।।

धर्मदास वचन

हम हैं भक्ति के भूखे। गुरू बताए मार्ग कभी नहीं चुके।।
हम का जाने गलत और ठीका। अब वह ज्ञान लगत है फीका।।
तोरा ज्ञान महा बल जोरा। अज्ञान अंधेरा मिटै है मोरा।।
हे जिन्दा तुम मोरे राम समाना। और विचार कुछ सुनाओ ज्ञाना।।

जिन्द (कबीर) वचन

मार्कण्डे एक पुराण बताई। वामें एक कथा सुनाई।।
रूची ऋषी वेद को ज्ञानी। मोक्ष मुक्ति मन में ठानी।।
मोक्ष की लगन ऐसी लगाई। न कोई आश्रम न बीवाह सगाई।।
दिन एक पितर सामने आए। उन मिल ये वचन फरमाए।।
बेटा रूची हम महा दुःख पाए। क्यों नहीं हमरे श्राद्ध कराए।।
रूची कह सुनो प्राण पियारो। मैं बेद पढ़ा और ज्ञान विचारो।।
बेद में कर्मकाण्ड अविद्या बताई। श्राद्ध करे पितर बन जाई।।
ताते मैं मोक्ष की ठानी। वेद ज्ञान सदा प्रमानी।।
पिता, अरू तीनों दादा। चारों पंडित नहीं बेद विधि अराधा।।
तातें भूत योनि पाया। अब पुत्र को आ भ्रमाया।।
कहें पितर बात तोरी सत है। वेदों में कर्मकाण्ड अविद्या कथ है।।
तुम तो मोक्ष मार्ग लागे। हम महादुःखी फिरें अभागे।।
विवाह कराओ अरू श्राद्ध कराओ। हमरा जीवन सुखी बनाओ।।
रूची कह तुम तो डूबे भवजल माहीं। अब मोहे वामें रहे धकाई।।
चतवारिस (40) वर्ष आयु बड़ेरी। अब कौन करै सगाई मेरी।।
पितर पतन करवाया आपन। लगे रूची को थापना थापन।।
विचार करो धर्मनी नागर। पीतर कहें वेद है सत्य ज्ञान सागर।।
वेद विरूद्ध आप भक्ति कराई। तातें पितर जूनी पाई।।
रूची विवाह करवाकर श्राद्ध करवाया। करा करवाया सबै नाशाया।।
यह सब काल जाल है भाई। बिन सतगुरू कोई बच है नाहीं।।
या तो बेद पुराण कहो है झूठे। या पुनि तुमरे गुरू हैं पूठे।।
शास्त्र विरूद्ध जो ज्ञान बतावै। आपन बूडै शिष डूबावै।।
डूब मरै वो ले चुलु भर पाणी। जिन्ह जाना नहीं सारंगपाणी।।
दोहा :– सारंग कहें धनुष, पाणी है हाथा। सार शब्द सारंग है और सब झूठी बाता।।
सारंगपाणी काशी आया। अपना नाम कबीर बताया।।
हम तो उनके चेले आही। गरू क्या होगा समझो भाई।।

धर्मदास वचन

जिन्दा एक अचरज है मोकूं। तुर्क धर्म और वेद पुराण ज्ञान है ताकूं।।
तुम इंसान नाहीं होई। हो अजब फरिश्ता कोई।।
और ज्ञान मोहे बताओ। युगों युगों की कथा सुनाओ।।

जिन्दा (कबीर) वचन

सुनो धर्मनि संष्टि रचना। सत्य कहूँ नहीं कल्पना।।
जब हम जगत रचना बताई। धर्मदास को अचरज अधिकाई।।

धर्मदास बचन

यह ज्ञान अजीब सुनायो। तुम को यह किन बतायो।।
कहाँ से बोलत हो ऐसी बाता। जानो तुम आप विधाता।।
विधाता तो निराकार बताया। तुम को कैसे मानु राया।।
तुम जो लोक मोहे बतायो। संष्टि की रचना सुनायो।।
आँखों देखूं मन धरै धीरा। देखूं कहा रहत प्रभु अमर शरीरा।।
(तब हम गुप्त पुनै छिपाई। धर्मदास को मूर्छा आई।।)

''कबीर परमेश्वर जी का अन्य वेश में छटे दिन मिलना''

चौपाई

दिवस पाँच जब ऐसहि बीता। निपट विकल हिय व्यापेउ चिन्ता।।
छठयें दिन अस्नान कहँ गयऊ। करि अस्नान चिंतवन कियऊ।।
पुहुप वाटिका प्रेम सोहावन। बहु शोभा सुन्दर शुठि पावन।।
तहां जाय पूजा अनुसारा। प्रतिमा देव सेव विस्तारा।।
खोलि पेटारी मूर्ति निकारी। ठाँव ठाँव धरि प्रगट पसारी।।
आनेउ तोरि पुहुप बहु भाँती। चौका विस्तार कीन्ही यहि भाँती।।
भेष छिपाय तहाँ प्रभु आये। चौका निकटहिं आसन लाये।।
धर्मदास पूजा मन लाये। निपट प्रीति अधिक चित चाये।।
मन अनुहारि ध्यान लौलावई। कहि कहि मंत्र पुहुप चढ़ावई।।
चन्दन पुष्प अच्छत कर लेही। निमित होय प्रतिमा पर देही।।
चवर डोलावहिं घण्ट बजायी। स्तुति देव की पढ़ैं चित लायी।।
करि पूजा प्रथमहि शिर नावा। डारि पेटारी मूर्ति छिपावा।।

सतगुरू बचन

अहो सन्त यह का तुम करहूँ। पौवा सेर छटंकी धरहूँ।।
केहि कारण तुम प्रगट खिडायहु। डारि पेटारी काहे छिपायेहु।।

धर्मदास बचन

बुद्धि तुम्हार जान नहि जाई। कस अज्ञानता बोलहु भाई।।
हम ठाकुर कर सेवा कीन्हा। हम कहँ गुरू सिखावन दीन्हा।।
ता कहँ सेर छटंकी कहहूँ। पाहन रूप ना देव अनुसरहूँ।।

सतगुरू बचन

अहो संत तुम नीक सिखावा। हमरे चित यक संशय आवा।।
एक दिन हम सुनेउ पुराना। विप्रन कहे ज्ञान सुनिधाना।।
वेद वाणि तिन्ह मोहि सुनावा। प्रभु कै लीला सुनि मन भावा।।
कहे प्रभु वह अगम अपारा। अगम गहे नहि आव अकारा।।
सुनेउँ शीश प्रभुकेर अकाशा। पग पताल तेहि अपर निवाशा।।

एकै पुरूष जगत कै ईसा। अमित रूप वह लोचन अमीसा।।
सोकित पोटली माहि समाहीं। अहो सन्त यह अचरज आहीं।।
औ गुरू गम्य मैं सुना रे भाई। अहैं संग प्रभु लखौ न जाई।।
अहो सन्त मैं पूछहुँ तोहीं। बात एक जो भाषो मोहीं।।
यहि घटमहँ को बोलत आही। ज्ञानदृष्टि नहि सन्त चिन्हाही।।
जौ लगि ताहि न चीन्हहुँ भाई। पाहन पूजि मुक्ति नहिं पाई।।
कोटि कोटि जो तीर्थ नहाओ। सत्यनाम विन मुक्ति न पाओ।।
जिन सुन्दर यह साज बनाया। नाना रंग रूप उपजाया।।
ताहि न खोजहु साहु के पूता। का पाहन पूजहु अजगूता।।
धर्मदास सुनि चक्रित भयऊ। पूजा पाती बिसरि सब गयऊ।।
एक टक मुख जो चितवत रहाई। पलकौ सुरति ना आनौ जाई।।
प्रिय लागै सुनि ब्रह्मका ज्ञाना। विनय कीन्ह बहु प्रीति प्रमाना।।

धर्मदास वचन (ज्ञान प्रकाश पृष्ठ 16)

अहो साहब तब बात पियारी। चरण टेकि बहु विनय उचारी।।
अहो साहब जस तुम्ह उपदेशा। ब्रह्मज्ञान गुरू अगम संदेशा।।
छठयें दिवस साधु एक आये। प्रीय बात पुनि उनहु सुनाये।।
अगम अगाधि बात उन भाखा। कृत्रिम कला एक नहिं राखा।।
तीरथ व्रत त्रिगुण कर सेवा। पाप पुण्य वह करम करेवा।।
सो सब उन्हहि एक नहिं भावै। सबते श्रेष्ठ जो तेहि गुण गावै।।
जस तुम कहेहु बिलोई बिलोई। अस उनहूँ मोहि कहा सँजोई।।
गुप्त भये पुनि हम कहँ त्यागी। तिन्ह दरशन के हम बैरागी।।
मोरे चित अस परचै आवा। तुम्ह वै एक कीन्ह दुइ भावा।।
तुम कहाँ रहो कहो सो बाता। उन्ह साहब कहँ जानहु ताता।।
केहि प्रभु कै तुम सुमिरण करहू। कहहु बिलोइ गोइ जनि धरहू।।

सतगुरू वचन

अहो धर्मदास तुम सन्त सयाना। देखौ तोहि में निरमल ज्ञाना।।
धर्मदास मैं उनकर सेवक। जहँहि सो भव सार पद भेवक।।
जिन कहा तुमहिं अस ज्ञाना। तिन साहेब कै मोहि सहिदाना।।
वे प्रभु सत्यलोकके वासी। आये यहि जग रहहि उदासी।।
नहिं वौ भग दुवार होइ आये। नहिं वो भग माहिं समाये।।
उनके पाँच तत्त्व तन नाहीं। इच्छा रूप सो देह नहिं आहिं।।
निःइच्छा सदा रहँहीं सोई। गुप्त रहहिं जग लखै न कोई।।
नाम कबीर सन्त कहलाये। रामानन्द को ज्ञान सुनाये।।
हिन्दू तुर्क दोउ उपदेशैं। मेटैं जीवन केर काल कलेशैं।।
माया ठगन आइ बहु बारी। रहैं अतीत माया गइ हारी।।
तिनहि पठवा मोहे तोहि पाही। निश्चय उन्ह सेवक हम आही।।
अहो सन्त जो तुम कारज चहहू। तो हमार सिखावन चित दे गहहू।।

उनकर सुमिरण जो तुम करिहौ। एकोतर सौ वंशा लै तरिहौ।।
वो प्रभु अविगत अविनाशी। दास कहाय प्रगट भे काशी।।
भाषत निरगुण ज्ञान निनारा। वेद कितेब कोइ पाव न पारा।।
तीन लोक महँ महतो काला। जीवन कहँ यम करै जंजाला।।
वे यमके सिर मर्दन हारे। उनहि गहै सो उतरै पारे।।
जहाँ वो रहहि काल तहँ नाहीं। हंसन सुखद एक यह आही।।

धर्मदास वचन (पृष्ठ 17)

अहो साहब बलि बलि जाऊँ। मोहिं उनके सँदेश सुनाऊँ।।
मोरे तुम उनहीं सम आही। तुम वै एक नाहिं बिलगाई।।
नाम तुम्हार काह है स्वामी। सो भाषहु प्रभु अन्तर्यामी।।

सतगुरू वचन

धर्मनि नाम साधु मम आही। सन्तन माँह हम सदा रहाही।।
साधु संगति निशिदिन मन भावै। सन्त समागम तहाँ निश्चय जावै।।
जो जिव करै साधु सेवकाई। सो जिव अति प्रिय लागै भाई।।
हमरे साहिब की ऐसन रीति। सदा करहिं सन्त समागम सो प्रीती।।
जो जिव उन्हकर दीक्षा लेहीं। साधू सेव सिखावन देहीं।।
जीव दया पर आतम पूजा। सद्गुरू भक्ति देव नहिं दूजा।।
सद्गुरू संकट मोचक आहीं। सच्चि भक्ति छुवैं यम नाहीं।।

धर्मदास बचन (ज्ञान प्रकाश पृष्ठ 18)

अहो साहब तुम्ह अविगत अहहू। अमृत वचन तुम निश्चय कहहू।।
हे प्रभु पूछेऊँ बात दुइ चारा। अब मैं परिचय भेद विचारी।।
सो तो हम नहिं जानहिं स्वामी। तुम कहहु प्रभु अंतरयामी।।

सतगुरू वचन

अहो धर्मदास तुम्ह भल यह भाखो। कहो सो जो प्रतीति तुम राखो।।
अहहु निगुरा कि गुरू किहुँ भाई। तौन बात मोहि कहहु बुझाई।।

धर्मदास वचन

समर्थ गुरू हमने कीन्हा। यह परिचे गुरू मोहि न दीन्हा।।
रूपदास विठलेश्वर रहहीं। तिनकर शिष्य सुनहुँ हम अहहीं।।
उन मोहिं इहे भेद समुझावा। पूजहु शालिग्राम मन भावा।।
गया गोमती काशी परागा। होइ पुण्य शुद्ध जनम अनुरागा।।
लक्ष्मी नारायण शिला कै दीन्हा। विष्णु पंजर पुनि गीता चीन्हा।।
जगन्नाथ बलभद्र सहोद्रा। पंचदेव औरो योगीन्द्रा।।
बहुतैं कही प्रमोध दृढ़ाई। विष्णुहिं सुमिरि मुक्ति होइ भाई।।
गुरू के वचन शीश पर राखा। बहुतक दिन पूजा अभिलाखा।।
तुम्हरे भेष मिले प्रभु जबते। तुम बानी प्रिय लागी तबते।।
वे गुरू तुम्हहीं सतगुरू अहहू। सारभेद मोहिं प्रभु कहहू।।
तुम्हरा दास कहाउब स्वामी। यमते छोड़ावहु अन्तरयामी।।

उनहूँ कर नाहीं निन्द करावै। अस विश्वास मोरे मन आवै।।
वह गुरू सर्गुण निर्गुण पसारा। तुमहौ यमते छोड़ावनहारा।।

सतगुरू वचन

सुनु धर्मनि जो तव मन इच्छा। तौ तोहिं देउँ सार पद दिच्छा।।
दो नाव पर जो होय असवारा। गिरे दरिया में न उतरे पारा।।
तुम अब निज भवन चलि जाऊ। गुरू परीक्षा जाइ कराऊ।।
अब तुम रूपदास पै जाओ। अपना संसा दूर कराओ।।
जो गुरू तुम्हैं न कहैं सँदेशा। तब हम तुम्ह कहँ देवें उपदेशा।।

धर्मदास वचन

(ज्ञान प्रकाश पृष्ठ 19)

हे साहेब एक आज्ञा चाहों। दया करो कछु प्रसाद लै आवों।।

सतगुरू वचन

हे धर्मदास मोहि इच्छा नाहीं। छुधा न व्यापै सहज रहाहीं।।
सत्यनाम है मोर अधारा। भक्ति भजन सतसंग सहारा।।

धर्मदास वचन

अहो साहब जो अन्न न खाहू। तो मोरे चितकर मिटै न दाहू।।

सतगुरू वचन

तुमरी इच्छा तो ल्यावहु भाई। अन्न खायें तब हम जाई।।
धर्मदास उठि हाट सिधाये। बतासा पेड़ा रूचि लै आये।।
आनि धरेउ आगे प्रभुकेरा। विनय भाव कीन्ह बहुतेरा।।
अहो साहु अब अज्ञा देहू। गुरू पहँ जाय मैं आशिष लेहू।।

धर्मदास वचन

करि दण्डवत धर्मनि कर जोरी। अब कब सुदिन होई मोरी।।
तेहि दिन सुदिन लेखे प्रभुराई। जेहि दिन तुव पुनः दरशन पाई।।
हम कहँ निज चेरा करि जानो। सत्य कहौं निश्चय करि मानो।।
आशिष दै प्रभु चले तुरन्ता। अबिगति लीला लखे को अन्ता।।
धर्मदास चितवहिं मगु ठाढो। उपजा प्रेम हृदय अति गाढो।।

भावार्थ :- धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से कहा कि हे प्रभु! आपकी आज्ञा हो तो कुछ प्रसाद खाने को लाऊँ। परमात्मा ने कहा कि मुझे क्षुधा (भूख) नहीं लगती। मैं सतनाम स्मरण के आधार रहता हूँ। धर्मदास जी ने कहा कि यदि आप मेरा अन्न नहीं खाओगे तो मेरी दाह यानि तड़फ समाप्त नहीं होगी। आप अवश्य कुछ भोग लगाओ। तब परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि जो तेरी इच्छा है, ले आ। धर्मदास बतासे और पेड़े ले आया। परमात्मा जी ने भोग लगाया। फिर कहा कि हे साहु (सेठ) धर्मदास! मुझे आज्ञा दे, मैं अपने गुरू जी के पास काशी में जाकर आशीर्वाद ले लुँ। धर्मदास जी ने कहा कि प्रभु! अब पुनः मेरे कब अच्छे दिन आऐंगे? मेरे वह सुदिन लेखे में होंगे जब आप पुनः मुझे मिलोगे। आप मुझे अपना दास मान लो, मैं विश्वास के साथ कह रहा हूँ। प्रभु कबीर जी धर्मदास को आशीष देकर चल पड़े। धर्मदास उस रास्ते को देखता रहा और हृदय में परमात्मा के प्रति विशेष प्रेम उमड़ रहा था।

''धर्मदास जी के गुरू रूपदास जी के निकट जाकर प्रश्न पूछना''

धर्मदास वचन-चौपाई

(ज्ञान प्रकाश पष्ठ 20)

धर्मदास चलि गए गुरू पाहाँ। रूपदास कर आश्रम जाहाँ।।
पहुँचे जाइ गुरू के धामा। होइ आधीन तब कीन्ह प्रणामा।।
तुम गुरूदेव शिष्य हम आहीं। परचे ज्ञान कहहु मोहि ताँही।।
जीव मुक्त कौन विधि होई। तन छूटे कहँ जाय समोई।।
(जिवकर मुक्ति कैसे होइ सांई। पारब्रह्म सो कहाँ रहाई?।।)
आदि ब्रह्म सो कहवां रहाई। घट महँ बोले कौन सो आही।।
ताकर नाम कहो हम ताँही। मेरे मन का संशय जाई।।
राम कष्ण से न्यारा सोई। जग करता प्रभु कहां समोई।।

गुरू रूपदास वचन

धर्मदास तुम भयो अजाना। को सिखयो तोहि अस ज्ञाना।।
सुमिरहु राम कष्ण भगवाना। ठाकुर सेवा कर बुधिवाना।।
हरदम जप लक्ष्मी नारायण। प्रतिमा पूजन मुक्ति परायन।।
मन वच सुमिरहु कुन्ज बिहारी। रहै वैकुण्ठ सोइ बनवारी।।
पुरूषोत्तम पुरि वेगि सिधाओ। जगन्नाथ परसो घर आओ।।
गया गोमती काशी थाना। तीरथ नहाय पुण्य परधाना।।
निराकार निर्गुण अविनाशी। ज्योति स्वरूप शून्य का वासी।।
ताहि पुरूषकर सुमिरहु नामा। तन छूटै पहुँचहु हरिधामा।।

धर्मदास वचन

(ज्ञान प्रकाश पष्ठ 21)

हो गुरूदेव पूँछो यक बाता। क्रोध करि कहहु जनि ताता।।
जीव रक्षक सो कहाँ रहाही। निराकार जिव भक्षक आही।।
लक्ष जीव नित खाय निरंजन। तिया सुत ताहि करै बहु गंजन।।
तीनों देव पड़ें मुख काला। सुर नर मुनि सब करै बिहाला।।
नर बपुराकी कौन चलावै। कौनी ठोर जीव बच पावै।।
तीन लोक वैकुण्ठ नशायी। अस्थिर घर मोहि देहु बतायी।।
पाप पुण्य भ्रम जाल पसारा। कर्म बन्ध भरमे संसारा।।
कीर्ति क्रत्रम की करें जुनि नहिं छूटै। सत्यनाम बिनु यम धरि लूटै।।

रूपदास वचन

अहो धर्मदास हम चक्रित होही। यह कछु समझि परै नहिं मोही।।
तीनि लोक के कर्ता जोहै। तेहि भाषत हौ जमरा सोहै।।
ब्रह्मा विष्णु महेश गोसाई। तुम्ह तेही कहहु काल धरि खाई।।
तीनि लोक में वैकुण्ठहिं श्रेष्ठा। सो सब तुम्ह कहेहु निकष्ठा।।
तीरथ व्रत अरू पुण्य कमाई। तुम यमजाल ताहि ठहराई।।

और अधिक मैं कहा बताऊँ। जो जानों सो नहीं दुराऊँ।।
जिन्ह तोहि अस बुद्धि दिया भाई। तिनहीं कहँ तुम सेवहु जाई।।

धर्मदास वचन

धर्मदास विनवैं कर जोरी। चूक ढिठाई बक्सहु मोरी।।
हम तेही पद अब सेवैं जायी। जिन्ह यह अगम मोही बतायी।।
तुम्हहूँ गुरू वो सतगुरू मोरा। उन हमार यमफन्दा तोरा।।
तुमने ज्ञान देय अभक्ष्य छुड़ावा। उन मोहि अलख अगम्य लखावा।।
धर्मदास तब करी प्रणामा। बांधवगढ़ पहुँचे निज धामा।।
कैतिक दिन यहि भाँति गयऊ। धर्मदास मन चिन्ता भयऊ।।
केतिक दिवस यहि विधि बीता। धर्मदास चित बाढ़ी प्रीता।।
धर्मदास मन माही विचारा। प्रभु आवै करूं भण्डारा।।
यज्ञ मांही साधु जीमाऊँ। जिन्दा कहत हम साधन मांह आऊँ।।
इस विध मैं दर्शन पाऊँ। अपना सब संसा नसाऊँ।।
धर्मनि तीन दिवस धर्म यज्ञ आरंभा। अन्तिम दिन हुआ अचम्बा।।
जिन्दा रूप धरी प्रभु आये। कदम वंक्ष तलै आसन लाये।।
आसन अधर देह नहिं छाया। अविगति लीला देख हर्षाया।।

धर्मदास वचन

(ज्ञान प्रकाश पंष्ठ 23)

जोरि पाणि (हाथ) मैं पूछौं स्वामी। कहो कंपा करि अन्तरयामी।।
अहो साहेब नाम का आही। परचै नाम कहो मोहि पाहीं।।
गुरू अरू सतगुरू तुमको का कहहूँ। हे प्रभु कौन देश तुम रहहू।।

जिन्दा वचन

हो धर्मनि जो पूछेहु मोहीं। सुनहुँ सुरति धरि कहो मैं तोही।।
जिन्दा नाम अहै सुनु मोरा। जिन्दा भेष खोज किहँ तोरा।।
हम सतगुरू कर सेवक आहीं। सतगुरू संग हम सदा रहाहीं।।
सत्य पुरूष वह सतगुरू आहीं। सत्यलोक वह सदा रहाहीं।।
सकल जीव के रक्षक सोई। सतगुरू भक्ति काज जिव होई।।
सतगुरू सत्यकबीर सो आहीं। गुप्त प्रगट कोइ चीन्है नाहीं।।
सतगुरू आ जगत तन धारी। दासातन धरि शब्द पुकारी।।
काशी रहहिं परखि हम पावा। सत्यनाम उन मोहि दंढ़ावा।।
जम राजा का सब छल चीन्हा। निरखि परखिभै यम सो भीना।।
तीन लोक जो काल सतावै। ताको ही सब जग ध्यान लगावै।।
ब्रह्म देव जाकूँ बेद बखानै। सोई है काल कोइ मरम न जानै।।
तिन्ह के सुत आहि त्रिदेवा। सब जग करै उनकी सेवा।।
त्रिगुण जाल यह जग फन्दाना। जाने न अविचल पुरूष पुराना।।
जाकी ईह जग भक्ति कराई। अन्तकाल जिव को सो धरि खाई।।
सबै जीव सतपुरूषके आहीं। यम दै धोख फांसा ताहीं।।

प्रथमहि भये असुर यमराई। बहुत कष्ट जीवन कहँ लाई।।
दूसरि कला काल पुनि धारा। धरि अवतार असुर सँघारा।।
जीवन बहु विधि कीन्ह पुकारा। रक्षा कारण बहु करै पुकारा।।
जिव जानै यह धनी हमारा। दे विश्वास पुनि धरै अवतारा।।
प्रभुता देखि कीन्ह विश्वासा। अन्तकाल पुनि करै निरासा।।

(ज्ञान प्रकाश पृष्ठ 24)

कालै भेष दयाल बनावा। दया दृढ़ाय पुनि घात करावा।।
द्वापर देखहु कृष्णकी रीती। धर्मनि परिखहु नीति अनीती।।
अर्जून कहँ तिन्ह दया दृढावा। दया दृढाय पुनि घात करावा।।
गीता पाठकै अर्थ बतलावा। पुनि पाछे बहु पाप लगावा।।
बन्धु घातकर दोष लगावा। पाण्डो कहँ बहु काल सतावा।।
भेजि हिमालय तेहि गलाये। छल अनेक कीन्ह यमराये।।
पतिव्रता वृन्दा व्रत टारा। ताके पाप पहने औतारा।।
बलिते सो छल कीन्ह बहुता। पुण्य नसाय कीन्ह अजगूता।।
छल बुद्धि दीन्हे ताहिं पताला। कोई न लखै प्रंपची काला।।
बावन सरूप होय प्रथम देखाये। पृथिवी लीन्ह पुनि स्वस्ति कराये।।
स्वस्ति कराइ तबै प्रगटाना। दीर्घरूप देखि बलि भय माना।।
तीनि पग तीनौ पुर भयऊ। आधा पाँव नृप दान न दियऊ।।
देहु पुराय नृप आधा पाऊँ। तो नहिं तव पुण्य प्रभाव नसाऊँ।।
तेहि कारण पीठ जगह दीन्हा। अन्धा जीव छल प्रगट न चीन्हा।।
तब लै पीठ नपय तेहि दीन्हा। हरि ले ताहि पतालै कीन्हा।।
यह छल जीव देखि नहि चीन्हा । कहै मुक्ति हरि हमको कीन्हा।।
और हरिचन्द का सुन लेखा। धर्मदास चित करो विवेका।।
स्वर्ग के धोखे नरकही जाहीं। जीव अचेत यम छल चीन्है नाहीं।।
पाण्डव सम की कृष्ण कूँ प्यारे। सो ले नरक मेंह डारे।।

(ज्ञान प्रकाश पृष्ठ 25)

यती सती त्यागी भयऊ। सब कहँ काल बिगुचन लयऊ।।
सो वैकुंठ चाहत नर प्रानी। यह यम छल बिरले पहिचानी।।
जस जो कर्म करै संसारा। तस भुगतै चौरासी धारा।।
मानुष जन्म बड़े पुण्य होई। सो मानुष तन जात बिगोई।।
नाम विना नहिं छूटे कालू। बार बार यम नर्कहिं घालू।।
नरक निवारण नाम जो आही। सुर नर मुनि जानत कोइ नाहीं।।
ताते यम फिर फिर भटकावै। नाना योनिन में काल सतावै।।
विरलै सार शब्द पहिचाने। सतगुरू मिले सतनाम समाने।।

ऐसे परमेश्वर जी ने धर्मदास जी को काल जाल से छुड़वाने के लिए कई झटके दिए। अब दीक्षा मंत्र देने का प्रकरण पढ़ें।

''धर्मदास जी को प्रथम नाम दीक्षा देना''

(ज्ञान प्रकाश पृष्ठ 30)

धर्मदास वचन

हे साहब मैं तब पग सिर धरऊँ। तुम्हते कछु दुविधा नहिं करऊँ।।
अब मोहि चिन्हि परी यमबाजी। तुम्हते भयउ मोरमन राजी।।
मोरे ह्दय प्रीति अस आई। तुम्हते होइहै जिव मुक्ताई।।
तुमहीं सत्यकबीर हौ स्वामी। कृपा करहु तुम अन्तर्यामी।।
हे प्रभु देहु प्रवाना मोही। यम तृण तोरि भजौ मैं तोही।।
मोरे नहीं अवर सो कामा। निसिदिन सुमिरों सद्गुरू नामा।।
पीतर पात्थर देव बहायी। सद्गुरू भक्ति करूँ चितलायी।।
अरपौं शीस सर्वस सब तोहीं। हे प्रभु यमते छोड़ावहु मोही।।
सन्तन्ह सेवाप्रीति सों करिहौं। वचन शिखापन निश्चय धरिहौं।।
जो तुम्ह कहो करब हम सोई। हे प्रभु दुतिया कबहुँ नहिं होई।।

जिन्दा वचन

सुनु धर्मनि अब तोहीं मुक्ताओ। निश्चय यमसों तोहि बचाओं।।
देइ परवाना हंस उबारों। जनम मरण दुख दारूण टारों।।
ले प्रवाना जो करै प्रतीती। जिन्दा कहै चले यम जीती।।
अब मोहि आज्ञा देहु धर्मदासा। हम गवनहि सद्गुरू के पासा।।
सद्गुरू संग आइब तव पाहीं। तब परवाना तोहि मिलाहीं।।

धर्मदास वचन

हे प्रभु अब तोहि जाने न दैहौं। नहिं आवो तो मैं पछितैहौं।।
पछताइ पछताइ बहु दुख पैहौं। नहिं आवहुतो प्राण गवैहौं।।
हाथ के रतन खोइ कोइ डारै। सो मूरख निजकाज विगारै।।

विशेष :- कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' के पृष्ठ 31 से 35 में भले ही मिलावट है, परंतु अन्य पृष्ठों पर सच्चाई भी कमाल की है। जो आरती चौंका की सामग्री है, वह मिलावटी है। कुछ शब्दों का भी फेरबदल किया हुआ है। आप जी को सत्य ज्ञान इसी विषय में इसी पुस्तक के पृष्ठ 26 से 65 तक पढ़ने को मिलेगा जिसका शीर्षक (Heading) है ''किस-किसको मिला परमात्मा''। कबीर सागर के ये पृष्ठ नं. पाठकों को विश्वास दिलाने के लिए बताए हैं ताकि आप कबीर सागर में देखकर मुझ दास (लेखक) द्वारा बताए ज्ञान को सत्य मानें।

विचार करें :- ज्ञान प्रकाश में धर्मदास जी का प्रकरण पृष्ठ 35 के पश्चात् पृष्ठ 50 से जुड़ता (Link होता) है। पृष्ठ 36 से 49 तक सर्वानन्द का प्रकरण गलत लिखा है। उस समय तक तो सर्वानन्द से परमात्मा कबीर जी मिले भी नहीं थे।

विचार :- कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' पृष्ठ 31 से 35 तथा 50 से 51 पर परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी की परीक्षा लेने के उद्देश्य से कहा कि मैं तेरे को गुरूपद प्रदान करूंगा। आप उसको दीक्षा देना जो आपको सवा लाख रूपये गुरू दक्षिणा के चढ़ाए। परमेश्वर कबीर जी को पता था कि धर्मदास व्यापारी व्यक्ति है, कहीं नाम दीक्षा को व्यापार न बना ले। परंतु धर्मदास

जी विवेकशील थे। भगवान प्राप्त करने के लिए समर्पित थे। धर्मदास जी ने कहा कि प्रभु! जिसके पास सवा लाख रूपये (वर्तमान के सवा करोड़ रूपये) नहीं होंगे, वह तो काल का आहार ही रहेगा अर्थात् उसकी मुक्ति नहीं हो सकेगी। हे परमेश्वर! कुछ थोड़े करो। करते-कराते अंत में मुफ्त दीक्षा देने का वचन ले लिया। फिर जिसकी जैसी श्रद्धा हो, वैसा दान अवश्य करे। इस प्रकरण में पष्ठ 51-53 पर कबीर पंथियों ने कुछ अपने मतलब की वाणी बनाकर लिखी हैं जो कहा है कि सवा सेर मिठाई आदि-आदि। यह भावार्थ पष्ठ 51-53 का है।

धर्मदास वचन

हो प्रभु तुम्ह सतपुरुष कृपाला। अन्तर्यामी दीन दयाला॥
मोहि निश्चय तुवपद विश्वासा। यह माया स्वप्नेकी आशा॥
जिन्ह जिन्ह माया नेह बढाया। तिन्ह२ निज२ जन्म गँवाया॥
सवालाख तुम मोहि बतायो। सवा करोड प्रभु आरति लायो॥
औ जन सम्पति मोर घरआही। अरपौं सभै संतन जो चाही॥
तुम प्रभु निःइच्छा नहिं चाहो। धन्य समरथ मर्याद दिढाहो॥
सो जिव पाँवर नरकै जायी। शक्ति अक्षत जो राखु छिपायी॥
हो प्रभु कछु विनती अनुसारूं। बकसहु ढिठाई तो वचन उचारूं॥
सवाशेर भाषहु मिष्टाना। औरौ वस्तु सवासो पाना॥
हो प्रभु कोई जिव भिक्षुक होई। भीख माँगि तन पालै सोई॥
सो जिव शब्द तोहार न जानै। कहहु केहि विधि लोक पयानै॥

सतगुरु वचन

हो धर्मनि जौ अस जिव होई। गुरु निज ओर करै पुनि सोई॥
इतने विनु जिव रोकि न राखा। छोरी बन्ध नाम तिहि भाखा॥

धर्मदास वचन

धन्य धन्य तुम दीन दयाला। दया सिन्धु दुखहरण कृपाला॥
छन्द–तुम धन्य सद्गुरु जीव रक्षक कालमर्दन नाम हौ॥
शुभ पन्थ भक्ति दिढायऊ प्रभु अमर सुखके धाम हौ॥
मैं सुदिन आपन तबहिं जान्यो प्रथमपद जब देखेऊं॥
अब भयेऊँ सुखी निशङ्क यमते सुफल जीवन लेखेऊं॥
दोहा–विनती एक करौं प्रभु, कृपा करहु जगदीश॥
दो सेवक जो तुम मिले, सो तो कहुँ नहिं दीश॥

सतगुरु वचन

सोरठा–धर्मदास लेहु जानि, हम वो एकै थान है॥
कहौ शब्द परमान, वो हम में उन माँहि हम॥

धर्मदास वचन–चौपाई

हो प्रभु उन मोहिं बड़ सुख दीन्हा। तुम भये गुप्त राखि उन्ह लीन्हा॥
विरह सिन्धु बूड़त उन्ह राखा। उन्ह दरशनकी है अभिलाखा॥

सतगुरु वचन

हो धर्मनि हम माँहि उन्ह देखो। उन्ह मोहिं द्वितिय भाव जनि लेखो॥
स्वामा सेवक एकै प्र ना। परिचै सुरति नाहिं विलगाना॥
हो धर्मनि तुमहूँ हम माहीं। मोहिं तोहिं अब अन्तर नाहीं॥
जो सेवक गुरु सुरति खमीरा। जीवनमुक्ति सो आहि कबीरा॥
जेहि सेवक गुरुहीं परशंसा। कहै कबीर सो निर्मल हंसा॥
सेवक कहँ अस चाहिये भाई। गुरुहिं रिझावे आपु गँवाई॥
जिमि नटकला मगन होय खेला। तिमि गुरु भक्ति मगन होय चेला॥
निजतनमन सुख स्वादगँवावै। मन वच कर्म गुरु सेवा लावै॥
निशिवासर सेवा चित देई। गुरुहिं रिझाय परम पद लेई॥
जगपहँ सेवावश भगवाना। धर्मदास यह वचन प्रमाना॥
सेवक सुरति प्रीति वश भाई। शून्य महा वस्ती होय जाई॥
तैसी प्रीति सुरति शुचि सेवा। किमि प्रसन्न नहिं होंहिं गुरुदेवा॥
धर्मनि सो सेवक मोहिं भावै। जो गुरु साधु सेवा चित लावै॥
सेवा करि नहिं धरै हंकारा। रहै अधीन दास सोइ प्यारा॥
हा धर्मनि तुम्ह असिख अहहू। हम तुम्ह एकसाँच हियगहहू॥

धर्मदास वचन

धर्मदास पद गहे अनुरागा। होप्रभु तुम्ह मोहि कीन्ह सुभागा॥
मैं पामर गुणहीन कुचाली। तुम्ह दीन्हेउ मोहि पन्थमराली॥
हे प्रभु नहि रसना प्रभुताई। अमित रसन गुण वरणि नहि जाई॥
महिमा अमित अहै हो स्वामी। केहि विधि वर्णौं अन्तर्यामी॥
जेहि सेवक पर होय तव दाया। ताके हृदय बुद्धि अस आया॥
पूरण भाग करै सेवकाई। धन्य सेवक जिन्ह गुरुहिं रिझाई॥
मैं सब विधि अयोग्य अविचारी। मोहि अधमहिं तुम लीन्ह उबारी॥

भावार्थ :- यह फोटोकॉपी कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' के पष्ठ 53 और 54 की है। पष्ठ 53-54 दोनों का भावार्थ इस प्रकार है :-

परमेश्वर कबीर जी धर्मदास जी को पहले कई बार अन्य रूप में मिले थे। धर्मदास जी की अरूचि देखकर अंतर्ध्यान हो जाते थे। बीच में धर्मदास जी को अन्य रूप में मिले थे। तब धर्मदास जी ने कहा था कि मुझे एक संत मिले थे। वे भी आप वाला ज्ञान ही सुनाते थे। उन्होंने मेरे को बहुत सुख दिया। जब आप मुझे छोड़कर चले जाते थे, मैं रोता रहता था। उस संत ने मुझे सांत्वना दी तथा अमर पुरूष तथा अमर लोक की कथा सुनाई। तब परमेश्वर जी ने कहा कि हे धर्मदास! हम दोनों ही उस काशी वाले कबीर जुलाहे के सेवक हैं। हम एक ही गुरू के शिष्य हैं। इसलिए हम वही ज्ञान प्रचार करते हैं जो हमारे गुरू कबीर जी ने हमें बताया है। आपने बताया कि आप

तथा वह एक गुरू के शिष्य हैं। आपका ऐसा ज्ञान है तो आप जी के गुरू जी का ज्ञान कितना उत्तम होगा। मैं आपके सतगुरू जी के दर्शन करना चाहता हूँ। परमेश्वर जी ने पृष्ठ 54 पर यह भी बताया है कि शिष्य की आस्था गुरू के प्रति कैसी होनी चाहिए?

बोधसागर ५१५ (५५)

अब यह दया करो सुखदाई। दोउ सेवक के दरशन पाई॥
बड़ इच्छा उन्ह दरशन केरा। हो प्रभु हम आहीं तुव चेरा॥

सतगुरु वचन

सुनु धर्म निदरशन तिन्ह पैहौ। लीला देखि थकित होइ जैहौ॥
आप तीनरूप प्रकट दिखावा। एक तीन होय एक समावा॥
धरमदास अचरज ह्वै रहेऊ। समिता होय युगल पद गहेऊ॥
लीला देखि चकित भये दासा। पुनि विनती एककीन्ह प्रगासा॥

धर्मदास वचन

हे प्रभु अविगति कला तुम्हारी। हम हैं कीट जीव व्यभिचारी॥
सत्यलोक तुम्ह वरणि सुनावा। सोभा पुरुष हंसन सतभावा॥
कैसन देश राज वह आही। चित इच्छा प्रभु देखन ताही॥

सतगुरु वचन

धर्मदास यह निरघिन काया। यहितन पुरुष दरश किमि पाया॥
तन ठीका जब पुरि है आई। सत्यलोक तब देखहु जाई॥

धर्मदास वचन

धर्मदास गहि चरण निहोरा। हे प्रभु तृषा मिटावहु मोरा॥
चरण टेकि प्रभु विनवौं तोहीं। पुरुष दरश बिनु कल नहिं मोहीं॥

कबीर साहिबका फिर अन्तर्धान हो जाना और धर्मदास साहबका विकल होना

गुप्त भये प्रभु अविगति ताता। धर्मदास मुख आवै न बाता॥

धर्मदासविलाप

मैं मतिहीनकुमति मुहिंलागा। मोहिंसमको जग आहि अभागा॥
मैं मूरख प्रतीति न कीन्हा। अस साहेब कहँ मैं नहिं चीन्हा॥
अब कौने विधि दरशन पाऊँ। दरशन बिनु मैं प्राण गवाऊँ॥
चरणोदक बिनु करौं न ग्रासा। तजौं शरीर कहैं धर्मदासा॥
दिवस सात लगि अन्न न खावा। भजन अखण्ड नाम लौलावा॥

भावार्थ :- यह फोटोकॉपी कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' के पृष्ठ 55 की है। प्रभु कबीर जी धर्मदास के समक्ष तीनों रूप में प्रकट हुए तथा कहा कि यह तीनों रूप मेरे ही हैं। काशी वाले कबीर के रूप में दोनों समा गए। एक कबीर रूप बन गए। धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से सत्यलोक तथा परमात्मा को देखने की विनय की तो परमेश्वर जी ने कहा कि यह मानव शरीर विकारों से भरा है। इसमें कैसे परमात्मा देखा जा सकता है? आप दीक्षा लो, भक्ति करो। जब शरीर समाप्त होने का ठीक (निर्धारित) का समय आएगा, तब सत्यलोक में परमात्मा को जाकर देखना। धर्मदास जी अधिक हठ करने लगा तो परमात्मा अन्तर्ध्यान हो गए। धर्मदास जी ने सात दिन तक अन्न नहीं खाया तथा प्रथम मंत्र का निरंतर जाप किया।

(५६) ५१६ ज्ञानप्रकाश

कबीर साहिबका पांचवीं बार फिर धर्मदासजीको दर्शन देना

सतयें दिन प्रभु प्रकट दिखाये । धर्मदास पद गहि अकुलाये ॥
धरहिं न श्वामहि निपट अधीरा । परे चरण महँ क्षीण शरीरा ॥
कर गहि साहब तबहिं उठावा । शीश हाथ दै अंक मिलावा ॥
धर्मदास चरणोदक लीन्हा । चरण पखारि आचमन कीन्हा॥

सतगुरु वचन

हो धर्मदास प्रमाद कछु पाओ । करि प्रसाद तव मोपहँ आओ॥
छन्द-चित सकुचि धर्मनि विछुरन गुनि सर्वत्र सब हौरा किये॥
कछु जाइ अलप प्रमाद ततक्षण तृण जल अंचवन लिये ॥
पुनि वेगि समरथ निकट आये सकुचि चित ठाढे भये ॥
अनुशासनो कहु धर्मनि कहा चित चिन्ता भये ॥

धर्मदास वचन

दोहा-धर्मदास कह नाइ शिर, सुनु प्रभु अगम अपार ॥
सात दिवस कहवाँ रहे, कौन दिशा पगु ढार ॥

सतगुरु वचन

सोरठा-धर्मनि सुनु चित लाय, जौन दिशा हम गौन किये ।
कालिंजर पहुँचे जाय, तहाँ पुनि शब्द प्रकाशेउँ ॥

धर्मदास वचन-चौपाई

हो साहेब कै जीव परमोधा । कौन शब्द सो आन समोधा॥
आरति चौका नरियर मोरचो । कै जीवन यमते तृणतोरचो ॥

सतगुरु वचन

धर्मनि सुनहु ताहि सहिदाना । तहाँके जीवहिं नहिं दीन्ह प्रवाना॥
आरति चौका तहाँ न कीना । नहीं तहाँ नरियर मोरु प्रवीना ॥
वचन बंध जीवनकहँ कियेऊँ । साखी शब्द रमैनी दियेऊँ ॥
कहि आयेऊँ तहँ वचन ठिकाना । धर्मदास सो न लियेहु प्रवाना॥

भावार्थ :- यह फोटोकॉपी कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' के पृष्ठ 56 की है। वर्णन है कि धर्मदास जी ने सात दिन तक कुछ नहीं खाया-पीया। सातवें दिन प्रभु कबीर जी धर्मदास जी के पास प्रकट हुए। धर्मदास जी ने विलाप करते हुए परमेश्वर के चरण पकड़े और चरणों में गिर गए क्योंकि शरीर दुर्बल हो गया था। परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को हाथ पकड़कर अपने चरणों से उठाया और सिर पर हाथ रखा। अपने शरीर से मिलाकर धर्मदास जी को प्यार दिया। धर्मदास जी ने चरणोदक (चरण धोकर चरणामृत बनाकर) पीया। परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी से कहा कि तुम कुछ प्रसाद (भोजन) खाओ। फिर मेरे पास आओ। धर्मदास जी शीघ्र गए और शीघ्र-शीघ्र कुछ अल्प आहार करके आचमन करके शीघ्र परमेश्वर जी के पास आ गए। भय था कि कहीं फिर न चले जाऐं। धर्मदास जी ने पूछा कि हे परवरदिगार! आप इतने दिन कहाँ रहे? प्रभु ने बताया कि मैं कालिंजर देश में गया था। वहाँ कुछ भक्तों को प्रथम दीक्षा दी। वहाँ मैंने कोई आरती चौंका नहीं किया, न ही नारियल फोड़ा। वचन से नाम देकर अपना किया है। वहाँ साखी तथा शब्द व रमैणी करके उनको पवित्र किया है। उनको सत्यनाम की प्रेरणा की थी, परंतु उन्होंने समझा नहीं और सत्यनाम में रूचि नहीं दिखाई। उन्होंने दूसरा प्रवाना (नाम दीक्षा) नहीं लिया।

''धर्मदास को सत्यलोक तथा सत्यपुरूष के दर्शन कराना''

बोधसागर ५९७ (५७)

जम्बूद्वीप कलिके कडिहारा । धर्मनि बाहु जीव होयँ पारा ॥
धर्मनि बाँह जिय पहुँचे आयी । देहु दान जेहि आरति लायी ॥
शब्द मानि पुनि मस्तक नाया । पुरुष दरशके बात जनाया ॥

धर्मदास वचन

हो प्रभु चिन्तागण करु मोरा । पुरुष दरश देउ करों निहोरा ॥

सतगुरु वचन

धर्मदास यह हठ का करहू । मानहुँ शब्द शीश पर धरहू ॥
हमरे गहे पुरुष पहँ जेहा । विना गहे उहां जान न पैहा ॥
हमसों पुरुष सो ऐसी अहई । जल तरंगजल अन्तर रहई ॥
जिमिरवि औ रवि तेजप्रकाशा ।तिमिमाहिंपुरुषअन्तरधर्मदासा॥
हमरी सुरति गहो चितलायी । तबहीं पुरुष पद दर्शन पायी ॥
शिष्य हृदय प्रतीति अस आनै। गुरु औ पुरुष भिन्न नहिं जानै॥
जौ लौं चित्त अस रीति न आवै। तौ लौं जिवनहिं लोकसिधावै॥
धर्मदास चित बहुत सकाने । चरण टेकि बहु विनती ठाने ॥

धर्मदास वचन

हो प्रभु सत्य कहौं तोहिपाहीं । तुम्हते कछु दुचिताई नाहीं ॥
मोरे तुमहिं पुरुष हौ स्वामी । यमते छोड़ावहु अन्तर्यामी ॥
हो प्रभु बरणेउँ लोकको शोभा । ताते आहि मारममलोभा ॥
तव लीला बहुतै हम देखा । पुरुष दरशविनु रहै हिय रेखा ॥
जौ किंकर पर होहु दयाला । तौछिन महँहायगत उरसाला॥

सतगुरु वचन

धर्मनि जौ ऐसो चित कीन्हा । तनुतजि चलौ लोकप्रबीना ॥
राखेउ तन गौने लै हंसा । तहँ पहुँचे जहँ काले संसा ॥
लवन एक महँ पहुँचे जाई । अविगति लीला लखे को भाई॥
शोभालोक देखि सुख माना । उदितअसंख्य शशिऔभाना॥

भावार्थ :- यह फोटोकॉपी कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' के पष्ठ 57 की है। धर्मदास जी ने कहा कि हे प्रभु! मैं आपके निहोरे निकालते हुए यानि गिड़गिड़ाते हुए कह रहा हूँ कि आप एक बार मेरे को सत्यलोक तथा उसमें रहने वाले समर्थ परमात्मा के दर्शन करा दो। आपने सत्यलोक की शोभा का जो वर्णन किया है, उसको देखने को मेरा मन लुभा रहा है। आपकी लीला (चमत्कार) मैंने बहुत देखे हैं, परंतु परमात्मा को देखे बिना मेरे मन में शंका बनी रहेगी। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे धर्मदास! आप यह जिद क्यों कर रहे हो? आप मेरी बातों पर विश्वास करो, मेरे बताए भक्ति कर्म को करके शरीर त्यागकर वहाँ चले जाओगे, फिर लोक तथा लोक नायक दोनों को देखना। मेरे तथा परमात्मा में कोई अंतर नहीं है जैसे जल तथा तरंग में भिन्नता नहीं होती। यह नियम है कि परमात्मा और गुरू को एक मानना चाहिए, तब सफलता मिलती है। यह वचन सुनकर भी धर्मदास जी ने फिर वही रट लगाई तो परमेश्वर जी धर्मदास जी की आत्मा

को सत्यलोक में ले गए। एक पल में सत्यलोक में पहुँच गए। सत्यलोक की शोभा देखकर धर्मदास आनन्दित हुआ। वहाँ पर मानों असँख्यों सूरज तथा चाँद उदय हुए हों, इतना प्रकाश सत्यलोक की भूमि का है। शेष ज्ञान प्रकाश के पृष्ठ 58 पर आगे है।

''कबीर जी ही सतपुरूष हैं''

(५८) ५९४ ज्ञानप्रकाश

जितदेखिये जगमगझलकाहीं। देखत छकित भये हियमाहीं॥
द्वारपाल हंस जो रहिया। ता महँ एकहंसहिं असकहिया॥
एहि संसहिं तुम्हजाहु लिवाई। पुरुष दरश दे आनहुँ भाई॥
चले लिवाय पुरुष पहँ जबहीं। झझकि हंस बहु आये तबहीं॥
करत कोलाहल मंगल चारा। शोभा अद्भुत अंग अपारा॥
हंसन शोभा कहाँ बताऊँ। कछुक प्रभाव सो वरणि सुनाऊँ॥
रतनमाल म्रित शोभित हंसा। और मणिमाल किमि करौं प्रशंसा॥
जगमग देह हंसन करहीं। अमर चीर बहु शोभा धरहीं॥
उडुराख चिकुर शोभाछबि आछे। रविकाकरतार रोम छबिकाछे॥
हंसन्हभालशोभाकिमि कहऊँ। षोडस चन्द्रभाल छबि लहऊँ॥
हंस कान्ति प्रतिरोम प्रकाशा। हीरामणी उदित रोमासा॥
कोटिकविधुहंसन छबिमोहा। देह प्राण शोभा अमी गिरोहा॥
षोडश रवि हँसन छबि मोहा। देह प्राण शुभ अमृत सोहा॥
कञ्चनकलशजडितमणि लोना। रतन थार आरतिमहिसोना॥
हंस मगन शब्द मुख उचारा। क्रीडाविनोद रतन मणियारा॥
सुरति हंस कहँ आगे लीन्हा। नृत करत चले हंस प्रवीणा॥
सुरति हंस अघानि अघाने। पुरुष सकल देखत हरषाने॥
सिंघासन छबि देखत मनमोहा। अद्भुत अमित कलातन सोहा॥
पुरुष राम एक कला अनन्ता। वरणत कोउ न पावै अन्ता॥
एक रोम रवि शशि कोटीशा। नखकोटिन्हविधुमलिनरवीशा॥
पुरुष प्रकाश सतलोक अँजोरा। तहां न पहुँच निरञ्जन चोरा॥
पुरुष कबीर देखा एक भाई। धर्मदास पुनि रहे लजाई॥
पुरुष दरश करि आयेउ तहँवा। प्रथम कबीर बैठे रहैं जहँवा॥
इहां कबीर बैठे पुनि देखा। कला पुरुष तन अचरज पेखा॥
का अजगुत कीन्हेऊँ भाई। उहां मोहिं प्रतीति न आई॥

भावार्थ :- यह फोटोकॉपी कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' के पृष्ठ 58 की है। सत्यलोक में जहाँ तक दृष्टि गई, धर्मदास जी ने देखा कि प्रकाश झलक रहा था। परमेश्वर (सत्य पुरूष) के दरबार के द्वार पर एक द्वारपाल (सन्तरी) खड़ा था। उसको जिन्दा रूप में नीचे से गए प्रभु ने कहा कि यह भक्त परमेश्वर जी के दर्शन करने मतलोक से आया है, इसको प्रभु के दर्शन कराओ। जिन्दा वेशधारी परमेश्वर बाहर ही बैठ गए थे। द्वारपाल ने एक अन्य हंस (सत्यलोक में भक्त को हंस तथा भक्तमति को हंसनी कहते हैं) से कहा कि आप इस भक्त को सत्यपुरूष के दर्शन कराओ। जब वह हंस धर्मदास जी को दर्शन के लिए लेकर चला तो बहुत सारे हंस आ गए और

धर्मदास जी का स्वागत करते हुए नाचते हुए आगे-आगे चले। उनका शरीर विशाल था, गले में रत्नों की माला थी। उनके नाक, मुख, गर्दन की शोभा अनोखी थी। सोलह सूर्यों जितना शरीर का प्रकाश था। उनके रोम (शरीर के बाल) की चमक रत्न (हीरे) जितनी थी। उनका शरीर अमर (अविनाशी) है। सब मिलकर पुरूष दरबार में गए। सत्यपुरूष जी सिंहासन पर बैठे थे। उनके एक रोम का प्रकाश करोड़ चन्द्रमाओं तथा सूर्यों जितना था। धर्मदास जी ने देखा कि ये तो वही चेहरा है जो नीचे जिन्दा बाबा के वेश में मिले थे तथा मुझे यहाँ लेकर आए हैं। धर्मदास जी बहुत लज्जित हुए और विचार करने लगे कि नीचे मुझे विश्वास नहीं हुआ कि यह जिन्दा ही परमेश्वर हैं। दर्शन करके धर्मदास जी को वहीं लाया गया जहाँ जिन्दा रूप में प्रभु दरबार के बाहर बैठे छोड़कर अन्दर गया था।

बोधसागर (५९)

कवीर पुरुष यक उहाँ छिपाये। सत्य पुरुष जग दास कहाये॥
धाये चरण गहु अति सकुचायी। हे प्रभु हम परिचे अब पायी॥
यह शोभा कस उहाँ छिपावा।कस नहिंजगमहँप्रगट दिखावा॥

सतगुरु वचन

धर्मनि जोवहि छबि जग जाऊ। तो होंय विकल निरञ्जन राऊ॥
सब जीव तब मोहि लौलावै। उजरै भौ सब लोकहि आवै॥
ताते गुप्त राखो जग भाऊ। शब्द सँदेश जीवन समुझाऊ॥
शब्दपरखि चीन्हैं माहिं कोई। गहि प्रतीति घर पहुंचे सोई॥
कहै कवीर सुनहुँ सुकृति हंसा। दरश पुरुष मिटेहु चित मंसा॥
अब तुम्ह वेगि चला संसारा। जिवहि चेतावहु करहु पुकारा॥

धर्मदास वचन

हो साहेब अब उहाँ न जाही। यहसुखघरतजि कहां झुराही॥
वहि यम देश अपरबल काला। नहिं जानौंधौंमति होयवेहाला॥

सतगुरु वचन

धर्मदास तोहि चिन्ता नाहीं। तुमरे सङ्ग हम सदा रहाहीं॥
तुम देखो सत्य लोक प्रभाऊ। हंसन कहो संदेश सुनाऊ॥

धर्मदास वचन

मानेउँ शब्द शीश पर राखा। लैचलु अंश सुकृत तब भाषा॥
छिन एक महँ जगहीं चलि आये। पैठि देह धर्मनि अकुलाये॥
परेउ चरण गहि साहब केरा। करि बिनती पदगहि मुख हेरा॥

छन्द-धन्य साहेब सतगुरु तुम सत्य पुरुष अनादि हो॥
तुवअमितलीला कोलखै प्रभु सकल लोकके तुम आदिहो॥
त्रिदेव मुनि सनकादि नारद कोईना लखि तुम पावई॥
तेहि हंस भाग सराहिये जो नाम तुव लौ लावई॥

भावार्थ :- यह फोटोकॉपी कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' के पंष्ठ 59 की है। धर्मदास जी ने कहा कि कबीर तथा सत्य पुरूष एक ही है। यही सत्यपुरूष जगत में दास (कबीर दास) कहलाता है। यह इनकी महानता है। धर्मदास जी ने दौड़कर परमेश्वर जी के चरण पकड़कर कहा

कि हे प्रभु! अब आपका यथार्थ परिचय मिला है। आप स्वयं ही परमेश्वर हैं। हे परमेश्वर! आपने अपनी यह छवि वहाँ (पृथ्वी पर) किसलिए छुपा रखी है? वहाँ पर प्रकट क्यों नहीं की? परमेश्वर कबीर जी ने उत्तर दिया कि मेरी शोभा नीचे देखकर काल निरंजन मुझे पहचानकर व्याकुल हो जाएगा। सर्व प्राणी मेरे पीछे पड़ जाऐंगे। मैंने काल से वचन किया है कि मैं अपना ज्ञान देकर सत्य भक्ति का धनी बनाकर जीवों को सत्यलोक में ले जाऊंगा। यह वचन काल निरंजन ने विनय करके लिया था। वास्तविकता यह है कि जब तक जीव को काल लोक के कष्ट का और सत्यलोक के सुख का ज्ञान नहीं होगा तो वह यदि सत्यलोक चला भी गया तो फिर वापिस आ जाएगा। पहले सब सत्यलोक में ही तो थे। वहीं से नीचे गिरे हैं। इसलिए तत्त्वज्ञान कराना तथा सत्यभक्ति से धनी बनाकर सत्यलोक ले जाना उचित है। मैं इसीलिए नीचे पृथ्वी पर गुप्त रहकर सर्व कार्य करता हूँ। धर्मदास जी ने कहा कि हे प्रभु! मुझे यहीं रहने दो। मैं अब उस गन्दे लोक में नहीं जाऊँगा। परमेश्वर जी ने कहा कि आप चिन्ता न करो, मैं सदा तेरे साथ रहूँगा। आपने जो सत्य लोक तथा परमात्मा को आँखों देखा है, नीचे के भक्तों को बताना, उनका विश्वास बढ़ाना।

धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी की आज्ञा मानी और उनके साथ नीचे आए। शरीर में प्रवेश करके उठे तथा यहाँ के लोक को देखकर व्याकुल हो गए। इस पृष्ठ के प्रकरण में कुछ प्रकरण छोड़ा है, कुछ जोड़ा है। यह मिलावट करने वालों की करतूत है। फिर भी सच्चाई पर्याप्त है। यह तो पाठकों को विश्वास दिलाने के लिए फोटोकॉपी लगाई है। वास्तविक ज्ञान आप पढ़ेंगे इसी पुस्तक के पृष्ठ 26 पर ''किस-किसको मिला परमात्मा'' में।

दोहा-निर्गुण सर्गुण आदिहौं, अविगति अगम अथाह ॥
गुप्त भये जग महँ फिरो, को तुव पावै थाह ॥

सोरठा-मोहि परचै तुम दीन्ह, ताते चीन्हेउँ तोहि प्रभु ॥
भये चरण लौलीन, दुचिताई सकलो गयी ॥

चौपाई

कीट ते भृंङ्ग मोहि प्रभुकीन्हा । निश्चलरंग आपनो दीन्हा ॥
जिमिनिलते जग होय फुलेला । तिमिमोहिं भयोसमर्थपदमेला॥
पारस परसि लोहा जिमिहेमा । तिमि मोहिं भयउनाथव्रतनेमा॥
अगर परसि जिमिभयोसुवासा । जल प्रसंग बसन मल नासा ॥
सनपट शुद्ध सूत कहै न कोई । प्रभुगुण लखित शिरनावै लोई ॥
हे प्रभु तिमिमाहिं भयउ अनंदा। जिमिचकोरहरहितलखिचंदा ॥
जनम मरण भौ संशय नाशी । तवपद सुखनिधान सुखराशी ॥
हे प्रभु अस शिख दीजै मोहीं । एकौ पल न विसारौं तोहीं ॥

सतगुरु वचन

जस मनसा तस आगे आवै । कहै कवीर ईजा नहिं पावै ॥
धर्मनि गुरुहिं दोष देइ प्रानी । आपु करहिंनर आपनहानी ॥
जो गुरु वचन कहै चित लाई । ब्यापै नाहिं ताहि दुचिताई ॥
जो गुरुचरन शिष्य संयोगा । उपजै ज्ञान न नासै भ्रम रोगा ॥
जिमि सौदागर साहु मिलाहीं । पूँजि जोग बहु लाभ बढ़ाहीं ॥
सतगुरु साहु सन्त सौदागर । सजीशब्द गुरुयोगा बहुनागर॥
जो गुरु शब्द कहै विश्वासा । गुरु पूरा पुरवहिं आसा ॥
विनु विश्वास पावै दुखचेला । गहै न निश्चय हृदय गुरुमेला॥
सुत नारी तन मन धन जाई । तन जोरहै न प्रीति दृढाई ॥
शूरा हंस सोई कहलावै । अग्नि रहै तो शोक न लावै ॥
जो विचलै तौ यम धरि खायी । अड़ा रहै तौ निज घर जायी ॥

भावार्थ :- यह फोटोकॉपी कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' के पष्ठ 60 की है। सत्यलोक तथा परमेश्वर को सत्यलोक में पहचानकर धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी का धन्यवाद किया। कहा है कि जैसे पारस पत्थर से स्पर्श होने के पश्चात् लोहा स्वर्ण बन जाता है। ऐसे मेरा जीवन सत्य भक्ति से बहुमूल्य हो गया है। मेरा जन्म-मरण समाप्त हो जाएगा। जैसे भंग, कीट को अपने समान बना लेता है, ऐसे आप जी ने मेरे को अपना शिष्य बनाया है। गुरू का शब्द (मन्त्र) विश्वास के साथ गहे (ग्रहण) करे तो उस शिष्य की मनोकामना गुरू पूरी करता है। सतगुरू भक्ति धन का शाह (सेठ) यानि धनी होता है। सेठ से धन लेकर जो अपना व्यापार बढ़ाता है तो धनी हो जाता है यानि शिष्य गुरू से दीक्षा लेकर मर्यादा में रहकर भक्ति करता है तो मोक्ष प्राप्त कर लेता है। कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' के पष्ठ 61 में गुरू की महिमा बताई है। पढ़ने से आसानी से समझ आती है। अधिक सरलार्थ की आवश्यकता नहीं है।

(६२) ज्ञानप्रकाश

सोइ इम सोइ तुम सोइ अनन्ता । कहैं कबीर गुरु पारस सन्ता ॥
सन्त चेतु चित सतगुरु ध्याना । कहैं कबीर सद्गुरु परमाना ॥
सतगुरु शब्द ज्ञान गुरु पुंजा । कहैं कबीर लखु मोहनकुंजा ॥
कुंज मोहि मोहन ठहरावै । कहैं कबीर सोइ सन्त कहावै ॥
सन्त कहाय जो सोधै आपू । कहैं कबीर तेहि पुण्य न पापू ॥
पुण्य पाप नहिं मान गुमाना । कहैं कबीर सो लोक समाना ॥
जिन्दा मुरदा चीन्हैं जीवा । कहैं कबीर सतगुरु निज पीवा ॥
मुरदा जग जिन्दा सतनामा । कहैं कबीर सतगुरु निजधामा ॥
यक जग जीतै यक जग हारै । कहैं कबीर गुरु काज सवाँरै ॥

धर्मदास वचन

कौन जग जीतै कौन जग हारै । कहो कौन विधि काज सवाँरै ॥

सतगुरु वचन

इन्द्रिन जीते साधुन सो हारै । कहैं कबीर सतगुरु निस्तारै ॥
सतगुरु सो सत्यनाम लखावै । सतपुर लै हंसन पहुँचावै ॥
सत्यनाम सतगुरु तत भाखा । शब्द ग्रन्थ कथि गुप्तहिं राखा ॥
सत्य शब्द गुरु गम पहिचाना । विनु जिभ्या करु अमृत पाना ॥
सत्य सुरति अम्मर सुख चीरा । अमी अंकका साजहु वीरा ॥
सोहं ओहं जावन वीरू । धर्मदास सो कहै कबीरू ॥
धरिहौ गोय कहिहौ जिन काहीं । नाद सुशील लखैहो ताहीं ॥
प्रथमहि नाद विन्द तब कीन्हा । मुक्ति पन्थ सो नाद गहि चीन्हा ॥
नाद सो शब्द पुरुष मुख बानी । गुरुमुख शब्द सो नाद बखानी ॥
पुरुष नाद सुत पोडश अहई । नाद पुत्र शिष्य शब्द जो लहई ॥
शब्द प्रतीति गहै जो हंसा । शब्द चालु जेहिसे मम बंशा ॥
शब्द चाल नाद दृढ़ गहई । यम शिर पगु देइ सो निस्तरई ॥
सुमिरण दया सेवा चित धरई । सत्यनाम गहि हंसा तरई ॥

भावार्थ :- यह फोटोकॉपी कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' के पष्ठ 62 की है। इसमें सत्यनाम भी लिखा है जो धर्मदास को परमेश्वर कबीर जी ने जाप के लिए दिया था। यह अपभ्रंश किया है :-

सोहं ओहं जानव बीरू। धर्मदास से कहा कबीरू।।
सत्य शब्द (नाम) गुरू गम पहिचाना। बिन जिभ्या करू अमत पाना।।

विवेचन :- आप जी ने कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' की फोटोकॉपी पढ़ी। ये प्रमाण के लिए लगाई हैं। भले ही इनमें कुछ मिलावट है, परंतु कुछ सच्चाई भी बची है। इस पष्ठ पर यह भी स्पष्ट किया है कि नाद पुत्र दो प्रकार के हैं। जैसे सतलोक में सतपुरूष ने सोलह वचनों से सोलह सुत उत्पन्न किए थे। वे नाद पुत्र हैं तथा धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से दीक्षा

ली थी तो धर्मदास जी भी नाद पुत्र हुए। इसी प्रकार जो गुरू से दीक्षा लेता है, वह नाद पुत्र होता है। उसे वचन पुत्र भी कहते हैं। अब आप जी को आत्मा (धर्मदास जी) तथा परमात्मा (कबीर बन्दी छोड़ जी) का यथार्थ संवाद अर्थात् धर्मदास जी को शरण में लेने का यथार्थ प्रकरण सुनाता हूँ।

''किस-किसको मिला परमात्मा''

कलयुग में परमेश्वर जिन-जिन महान आत्माओं को मिले, उनको तत्त्वज्ञान बताया, उनका मैं संक्षिप्त वर्णन करता हूँ:-

''सन्त धर्मदास जी से प्रथम बार परमेश्वर कबीर जी का साक्षात्कार''

1. श्री धर्मदास जी बनिया जाति से थे जो बाँधवगढ़ (मध्य प्रदेश) के रहने वाले बहुत धनी व्यक्ति थे। उनको भक्ति की प्रेरणा बचपन से ही थी। जिस कारण से एक रुपदास नाम के वैष्णव सन्त को गुरु धारण कर रखा था। हिन्दू धर्म में जन्म होने के कारण सन्त रुपदास जी श्री धर्मदास जी को राम कष्ण, विष्णु तथा शंकर जी की भक्ति करने को कहते थे। एकादशी का व्रत, तीर्थों पर भ्रमण करना, श्राद्ध कर्म, पिण्डोदक क्रिया सब करने की राय दे रखी थी। गुरु रुपदास जी द्वारा बताई सर्व साधना श्री धर्मदास जी पूरी आस्था के साथ किया करते थे। गुरु रुपदास जी की आज्ञा लेकर धर्मदास जी मथुरा नगरी में तीर्थ-दर्शन तथा स्नान करने तथा गिरीराज (गोवर्धन) पर्वत की परिक्रमा करने के लिए गए थे। परम अक्षर ब्रह्म स्वयं मथुरा में प्रकट हुए। एक जिन्दा महात्मा की वेशभूषा में धर्मदास जी को मिले। श्री धर्मदास जी ने उस तीर्थ तालाब में स्नान किया जिसमें श्री कष्ण जी बाल्यकाल में स्नान किया करते थे। फिर उसी जल से एक लोटा भरकर लाये। भगवान श्री कष्ण जी की पीतल की मूर्ति (सालिग्राम) के चरणों पर डालकर दूसरे बर्तन में डालकर चरणामत बनाकर पीया। फिर सालिग्राम को स्नान करवाकर अपना कर्मकाण्ड पूरा किया। फिर एक स्थान को लीपकर अर्थात् गारा तथा गाय का गोबर मिलाकर कुछ भूमि पर पलस्तर करके उस पर स्वच्छ कपड़ा बिछाकर श्रीमद्भगवत् गीता का पाठ करने बैठे। यह सर्व क्रिया जब धर्मदास जी कर रहे थे। परमात्मा जिन्दा भेष में थोड़ी दूरी पर बैठे देख रहे थे। धर्मदास जी भी देख रहे थे कि एक मुसलमान सन्त मेरी भक्ति क्रियाओं को बहुत ध्यानपूर्वक देख रहा है, लगता है इसको हम हिन्दुओं की साधना मन भा गई है। इसलिए श्रीमद्भगवत् गीता का पाठ कुछ ऊँचे स्वर में करने लगा तथा हिन्दी का अनुवाद भी पढ़ने लगा। परमेश्वर उठकर धर्मदास जी के निकट आकर बैठ गए। धर्मदास जी को अपना अनुमान सत्य लगा कि वास्तव में इस जिन्दा वेशधारी बाबा को हमारे धर्म का भक्ति मार्ग अच्छा लग रहा है। इसलिए उस दिन गीता के कई अध्याय पढ़े तथा उनका अर्थ भी सुनाया। जब धर्मदास जी अपना दैनिक भक्ति कर्म कर चुका, तब परमात्मा ने कहा कि हे महात्मा जी! आपका शुभ नाम क्या है? कौन जाति से हैं। आप जी कहाँ के निवासी हैं? किस धर्म-पंथ से जुड़े हैं? कपया बताने का कष्ट करें। मुझे आपका ज्ञान बहुत अच्छा लगा, मुझे भी कुछ भक्ति ज्ञान सुनाईए। आपकी अति कपा होगी।

धर्मदास जी ने उत्तर दिया :- मेरा नाम धर्मदास है, मैं बांधवगढ़ गाँव का रहने वाला वैश्य कुल से हूँ। मैं वैष्णव पंथ से दीक्षित हूँ, हिन्दू धर्म में जन्मा हूँ। मैंने पूरे निश्चय के साथ तथा अच्छी तरह ज्ञान समझकर वैष्णव पंथ से दीक्षा ली है। मेरे गुरुदेव श्री रुपदास जी हैं। अध्यात्म ज्ञान से मैं परिपूर्ण हूँ। अन्य किसी की बातों में आने वाला मैं नहीं हूँ। राम-कष्ण जो श्री विष्णु जी के ही

अवतार हुए हैं तथा भगवान शंकर की पूजा करता हूँ, एकादशी का व्रत रखता हूँ। तीर्थों में जाता हूँ, वहाँ दान करता हूँ। शालिग्राम की पूजा नित्य करता हूँ। यह पवित्र पुस्तक श्रीमद्भगवत् गीता है, इसका नित्य पाठ करता हूँ। मैं अपने पूर्वजों का श्राद्ध भी करता हूँ जो स्वर्गवासी हो चुके हैं। पिण्डदान भी करता हूँ। मैं कोई जीव हिंसा नहीं करता, माँस, मदिरा, तम्बाकू सेवन नहीं करता।

प्रश्न :- परमेश्वर कबीर जी ने पूछा कि आप जिस पुस्तक को पढ़ रहे थे, इसका नाम क्या है?

उत्तर :- धर्मदास जी ने बताया कि यह श्रीमद्भगवत गीता है। हम शुद्र को निकट भी नहीं आने देते, शुद्ध रहते हैं।

प्रश्न :- (कबीर जी जिन्दा रुप में) आप क्या नाम-जाप करते हो?

उत्तर :- (धर्मदास जी का) हम हरे कष्ण, कष्ण-कष्ण हरे-हरे, ओम् नमः शिवाय, ओम् भगवते वासुदेवाय नमः, राधे-राधे श्याम मिलादे, गायत्री मन्त्र का जाप 108 बार प्रतिदिन करता हूँ। विष्णु सहंस्रनाम का जाप भी करता हूँ।

प्रश्न :- (जिन्दा बाबा का) हे महात्मा धर्मदास! गीता का ज्ञान किसने दिया?

उत्तर : (धर्मदास का) भगवान श्री कष्ण जी ने, यही श्री विष्णु जी हैं।

प्रश्न : (जिन्दा बाबा रुप में परमात्मा का) :- आप जी के पूज्य देव श्री कष्ण अर्थात् श्री विष्णु हैं। उनका बताया भक्ति ज्ञान गीता शास्त्र है।

एक किसान को वद्धावस्था में पुत्र प्राप्त हुआ। किसान ने विचार किया कि जब तक पुत्र कषि करने योग्य होगा, तब तक मेरी मत्यु हो जाएगी। इसलिए उसने कषि करने का तरीका अपना अनुभव एक बही (रजिस्टर) में लिख दिया। अपने पुत्र से कहा कि बेटा जब आप युवा हो जाओ तो मेरे इस रजिस्टर में लिखे अनुभव को बार-2 पढ़ना। इसके अनुसार फसल बोना। कुछ दिन पश्चात् पिता की मत्यु हो गई, पुत्र प्रतिदिन अपने पिता के अनुभव का पाठ करने लगा। परन्तु फसल का बीज व बिजाई, सिंचाई उस अनुभव के विपरीत करता था। तो क्या वह पुत्र अपने कषि के कार्य में सफलता प्राप्त करेगा?

उत्तर : (धर्मदास का) : इस प्रकार तो पुत्र निर्धन हो जाएगा। उसको तो पिता के लिखे अनुभव के अनुसार प्रत्येक कार्य करना चाहिए। वह तो मूर्ख पुत्र है।

प्रश्न : (बाबा जिन्दा रुप में भगवान जी का) हे धर्मदास जी! गीता शास्त्र आप के परमपिता भगवान कष्ण उर्फ विष्णु जी का अनुभव तथा आपको आदेश है कि इस गीता शास्त्र में लिखे मेरे अनुभव को पढ़कर इसके अनुसार भक्ति क्रिया करोगे तो मोक्ष प्राप्त करोगे। क्या आप जी गीता में लिखे श्री कष्ण जी के आदेशानुसार भक्ति कर रहे हो? क्या गीता में वे मन्त्र जाप करने के लिए लिखा है जो आप जी के गुरुजी ने आप जी को जाप करने के लिए दिए हैं? (हरे राम-हरे राम, राम-राम हरे-हरे, हरे कष्णा-हरे कष्णा, कष्ण-कष्ण हरे-हरे, ओम नमः शिवाय, ओम भगवते वासुदेवाय नमः, राधे-राधे श्याम मिलादे, गायत्री मन्त्र तथा विष्णु सहंस्रनाम) क्या गीता जी में एकादशी का व्रत करने तथा श्राद्ध कर्म करने, पिण्डोदक क्रिया करने का आदेश है?

उत्तर :- (धर्मदास जी का) नहीं है।

प्रश्न :- (परमेश्वर जी का) फिर आप जी तो उस किसान के पुत्र वाला ही कार्य कर रहे हो जो पिता की आज्ञा की अवहेलना करके मनमानी विधि से गलत बीज गलत समय पर फसल बीजकर मूर्खता का प्रमाण दे रहा है। जिसे आपने मूर्ख कहा है। क्या आप जी उस किसान के मूर्ख पुत्र से कम हैं?

धर्मदास जी बोले : हे जिन्दा! आप मुसलमान फकीर हैं। इसलिए हमारे हिन्दू धर्म की भक्ति क्रिया व मन्त्रों में दोष निकाल रहे हो।

उत्तर : (कबीर जी का जिन्दा रुप में) हे स्वामी धर्मदास जी! मैं कुछ नहीं कह रहा, आपके धर्मग्रन्थ कह रहे हैं कि आपके धर्म के धर्मगुरु आप जी को शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण करवा रहे हैं जो आपकी गीता के अध्याय 16 श्लोक 23-24 में भी कहा है कि हे अर्जुन! जो साधक शास्त्र विधि को त्यागकर मनमाना आचरण कर रहा है अर्थात् मनमाने मन्त्र जाप कर रहा है, मनमाने श्राद्ध कर्म व पिण्डोदक कर्म व व्रत आदि कर रहा है, उसको न तो कोई सिद्धि प्राप्त हो सकती, न सुख ही प्राप्त होगा और न गति अर्थात् मुक्ति मिलेगी, इसलिए व्यर्थ है। गीता अध्याय 16 श्लोक 24 में कहा है कि इससे तेरे लिए कर्त्तव्य अर्थात् जो भक्ति कर्म करने चाहिए तथा अकर्त्तव्य (जो भक्ति कर्म न करने चाहिए) की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। उन शास्त्रों में बताए भक्ति कर्म को करने से ही लाभ होगा।

धर्मदास जी : हे जिन्दा! तू अपनी जुबान बन्द करले, मुझसे और नहीं सुना जाता। जिन्दा रुप में प्रकट परमेश्वर ने कहा, हे वैष्णव महात्मा धर्मदास जी! सत्य इतनी कड़वी होती है जितना नीम, परन्तु रोगी को कड़वी औषधि न चाहते हुए भी सेवन करनी चाहिए। उसी में उसका हित है। यदि आप नाराज होते हो तो मैं चला। इतना कहकर परमात्मा (जिन्दा रुप धारी) अन्तर्ध्यान हो गए। धर्मदास को बहुत आश्चर्य हुआ तथा सोचने लगा कि यह कोई सामान्य सन्त नहीं था। यह पूर्ण विद्वान लगता है। मुसलमान होकर हिन्दू शास्त्रों का पूर्ण ज्ञान है। यह कोई देव हो सकता है। धर्मदास जी अन्दर से मान रहे थे कि मैं गीता शास्त्र के विरुद्ध साधना कर रहा हूँ। परन्तु अभिमानवश स्वीकार नहीं कर रहे थे। जब परमात्मा अन्तर्ध्यान हो गए तो पूर्ण रुप से टूट गए कि मेरी भक्ति गीता के विरुद्ध है। मैं भगवान की आज्ञा की अवहेलना कर रहा हूँ। मेरे गुरु श्री रुपदास जी को भी वास्तविक भक्ति विधि का ज्ञान नहीं है। अब तो इस भक्ति को करना, न करना बराबर है, व्यर्थ है। बहुत दुखी मन से इधर-उधर देखने लगा तथा अन्दर से हृदय से पुकार करने लगा कि मैं कैसा नासमझ हूँ। सर्व सत्य देखकर भी एक परमात्मा तुल्य महात्मा को अपनी नासमझी तथा हठ के कारण खो दिया। हे परमात्मा! एक बार वही सन्त फिर से मिले तो मैं अपना हठ छोड़कर नम्र भाव से सर्वज्ञान समझूंगा। दिन में कई बार हृदय से पुकार करके रात्रि में सो गया। सारी रात्रि करवट लेता रहा। सोचता रहा हे परमात्मा! यह क्या हुआ। सर्व साधना शास्त्रविरुद्ध कर रहा हूँ। मेरी आँखें खोल दी उस फरिस्ते ने। मेरी आयु 60 वर्ष हो चुकी है। अब पता नहीं वह देव (जिन्दा रुपी) पुनः मिलेगा कि नहीं।

प्रातः काल वक्त से उठा। पहले खाना बनाने लगा। उस दिन भक्ति की कोई क्रिया नहीं की। पहले दिन जंगल से कुछ लकड़ियाँ तोड़कर रखी थी। उनको चूल्हे में जलाकर भोजन बनाने लगा। एक लकड़ी मोटी थी। वह बीचो-बीच थोथी थी। उसमें अनेकों चीटियाँ थीं। जब वह लकड़ी जलते-जलते छोटी रह गई तब उसका पिछला हिस्सा धर्मदास जी को दिखाई दिया तो देखा उस लकड़ी के अन्तिम भाग में कुछ तरल पानी-सा जल रहा है। चीटियाँ निकलने की कोशिश कर रही थी, वे उस तरल पदार्थ में गिरकर जलकर मर रही थी। कुछ अगले हिस्से में अग्नि से जलकर मर रही थी। धर्मदास जी ने विचार किया। यह लकड़ी बहुत जल चुकी है, इसमें अनेकों चीटियाँ जलकर भस्म हो गई है। उसी समय अग्नि बुझा दी। विचार करने लगा कि इस पापयुक्त भोजन को मैं नहीं खाऊँगा। किसी साधु सन्त को खिलाकर मैं उपवास रखूँगा। इससे मेरे पाप कम हो जाएंगे।

यह विचार करके सर्व भोजन एक थाल में रखकर साधु की खोज में चल पड़ा। परमेश्वर कबीर जी ने अन्य वेशभूषा बनाई जो हिन्दू सन्त की होती है। एक वृक्ष के नीचे बैठ गए। धर्मदास जी ने साधु को देखा। उनके सामने भोजन का थाल रखकर कहा कि हे महात्मा जी! भोजन खाओ। साधु रुप में परमात्मा ने कहा कि लाओ धर्मदास! भूख लगी है। अपने नाम से सम्बोधन सुनकर धर्मदास को आश्चर्य तो हुआ परंतु अधिक ध्यान नहीं दिया। साधु रुप में विराजमान परमात्मा ने अपने लोटे से कुछ जल हाथ में लिया तथा कुछ वाणी अपने मुख से उच्चारण करके भोजन पर जल छिड़क दिया। सर्वभोजन की चींटियाँ बन गई। चींटियों से थाली काली हो गई। चींटियाँ अपने अण्डों को मुख में लेकर थाली से बाहर निकलने की कोशिश करने लगी। परमात्मा भी उसी जिन्दा महात्मा के रुप में हो गए। तब कहा कि हे धर्मदास वैष्णव संत! आप बता रहे थे कि हम कोई जीव हिंसा नहीं करते, आपसे तो कसाई भी कम हिंसक है। आपने तो करोड़ों जीवों की हिंसा कर दी। धर्मदास जी उसी समय साधु के चरणों में गिर गया तथा पूर्व दिन हुई गलती की क्षमा माँगी तथा प्रार्थना की कि हे प्रभु! मुझ अज्ञानी को क्षमा करो। मैं कहीं का नहीं रहा क्योंकि पहले वाली साधना पूर्ण रुप से शास्त्र विरुद्ध है। उसे करने का कोई लाभ नहीं, यह आप जी ने गीता से ही प्रमाणित कर दिया। शास्त्र अनुकूल साधना किस से मिले, यह आप ही बता सकते हैं। मैं आपसे पूर्ण आध्यात्मिक ज्ञान सुनने का इच्छुक हूँ। कृपया मुझ किंकर पर दया करके मुझे वह ज्ञान सुनाऐं जिससे मेरा मोक्ष हो सके।

''व्रत करना गीता अनुसार कैसा है''

परमेश्वर (जिन्दा साधु के रुप में) बोले कि हे धर्मदास! आप एकादशी का व्रत करते हो। श्रीमद्भगवत् गीता अध्याय 6 श्लोक 16 में मना किया है कि हे अर्जुन! यह योग (भक्ति) न तो अधिक खाने वाले का और न ही बिल्कुल न खाने वाले का अर्थात् यह भक्ति न ही व्रत रखने वाले, न अधिक सोने वाले की तथा न अधिक जागने वाले की सफल होती है। इस श्लोक में व्रत रखना पूर्ण रुप से मना है। देख अपनी गीता खोलकर, धर्मदास जी को गीता के श्लोक याद भी थे क्योंकि प्रतिदिन पाठ किया करता था। फिर भी सोचा कि कहीं जिन्दा सन्त नाराज न हो जाए, इसलिए गीता खोलकर अध्याय 6 श्लोक 16 पढ़ा तथा स्वीकारा कि आपने मेरी आँखें खोल दी जिन्दा। आप तो परमात्मा के स्वरुप लगते हो।

''श्राद्ध-पिण्डदान गीता अनुसार कैसा है?''

आप श्राद्ध व पिण्डदान करते हो। गीता अध्याय 9 श्लोक 25 में स्पष्ट किया है कि भूत पूजने वाले भूतों को प्राप्त होंगे। श्राद्ध करना, पिण्डदान करना यह भूत पूजा है, यह व्यर्थ साधना है।

''श्राद्ध-पिण्डदान के प्रति रूची ऋषि का वेदमत''

मार्कण्डेय पुराण में ''रौच्य ऋषि के जन्म'' की कथा आती है। एक रुची ऋषि था। वह ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए वेदों अनुसार साधना करता था। विवाह नहीं करवाया था। रुची ऋषि के पिता, दादा, परदादा तथा तीसरे दादा सब पितर (भूत) योनि में भूखे-प्यासे भटक रहे थे। एक दिन उन चारों ने रुची ऋषि को दर्शन दिए तथा कहा कि बेटा! आपने विवाह क्यों नहीं किया? विवाह करके हमारे श्राद्ध करना। रुची ऋषि ने कहा कि हे पितामहो! वेद में इस श्राद्ध आदि कर्म

को अविद्या कहा है, मूर्खों का कार्य कहा है। फिर आप मुझे इस कर्म को करने को क्यों कह रहे हो?

पित्तरों ने कहा कि यह बात सत्य है कि श्राद्ध आदि कर्म को वेदों में अविद्या अर्थात् मूर्खों का कार्य ही कहा है। इससे सिद्ध हुआ कि वेदों में तथा वेदों के ही संक्षिप्त रुप गीता में श्राद्ध-पिण्डोदक आदि भूत पूजा के कर्म को निषेध बताया है, नहीं करना चाहिए। उन मूर्ख ऋषियों ने अपने पुत्र को भी श्राद्ध करने के लिए विवश किया। उसने विवाह करवाया, उससे रौच्य ऋषि का जन्म हुआ, बेटा भी पाप का भागी बना लिया।

❖ जिसे गायत्री मन्त्र कहते हो, वह यजुर्वेद के अध्याय 36 का मन्त्र 3 है जिसके आगे ''ओम्'' अक्षर नहीं है। यदि ''ओम्'' अक्षर को इस वेद मन्त्र के साथ जोड़ा जाता है तो परमात्मा का अपमान है क्योंकि ओम् (ॐ) अक्षर तो ब्रह्म का जाप है। यजुर्वेद अध्याय 36 मन्त्र 3 में परम अक्षर ब्रह्म की महिमा है। यदि कोई अज्ञानी व्यक्ति पत्र तो लिख रहा है प्रधानमन्त्री को और लिख रहा है सेवा में 'मुख्यमन्त्री जी' तो वह प्रधानमन्त्री का अपमान कर रहा है। फिर बात रही इस मन्त्र यजुर्वेद के अध्याय 36 मन्त्र 3 को बार-बार जाप करने की, यह क्रिया मोक्षदायक नहीं है। मन्त्र का मूल पाठ इस प्रकार है :-

भूर्भवः स्वः तत् सवितु वरेणीयम् भंगो देवस्य धीमहि धीयो योनः प्रयोदयात्।

अनुवाद :- (भूः) स्वयंभू परमात्मा पंथ्वी लोक को (भवः) गोलोक आदि भवनों को वचन से प्रकट करने वाला है (स्वः) स्वर्गलोक आदि सुख धाम हैं। (तत्) वह (सवितुः) उन सर्व का जनक परमात्मा है। (वरेणीयम) सर्व साधकों को वरण करने योग्य अर्थात् अच्छी आत्माओं के भक्ति योग्य है। (भंगो) तेजोमय अर्थात् प्रकाशमान (देवस्य) परमात्मा का (धीमहि) उच्च विचार रखते हुए अर्थात् बड़ी समझ से (धी यो नः प्रचोदयात) जो बुद्धिमानों के समान विवेचन करता है, वह विवेकशील व्यक्ति मोक्ष का अधिकारी बनता है।

भावार्थ : परमात्मा स्वयंभू जो भूमि, गोलोक आदि लोक तथा स्वर्ग लोक है उन सर्व का संजनहार है। उस उज्जवल परमेश्वर की भक्ति श्रेष्ठ भक्तों को यह विचार रखते हुए करनी चाहिए कि जो पुरुषोत्तम (सर्व श्रेष्ठ परमात्मा) है, जो सर्व प्रभुओं से श्रेष्ठ है, उसकी भक्ति करें जो सुखधाम अर्थात् सर्वसुख का दाता है।

उपरोक्त मन्त्र का यह हिन्दी अनुवाद व भावार्थ है। इसकी संस्कंत या हिन्दी अनुवाद को पढ़ते रहने से मोक्ष नहीं है क्योंकि यह तो परमात्मा की महिमा का एक अंश है अर्थात् हजारों वेद मन्त्रों में से यजुर्वेद अध्याय 36 का मंत्र सँख्या 3 केवल एक मन्त्र है। यदि कोई चारों वेदों को भी पढ़ता रहे तो भी मोक्ष नहीं। मोक्ष होगा वेदों में वर्णित ज्ञान के अनुसार भक्ति क्रिया करने से।

उदाहरण :- विद्युत की महिमा है कि बिजली अंधेरे को उजाले में बदल देती है, बिजली ट्यूबवेल चलाती है जिससे फसल की सिंचाई होती है। बिजली ऑटा पीसती है, आदि-आदि बहुत से गुण बिजली के लिखे हैं। यदि कोई व्यक्ति प्रतिदिन बिजली के गुणों का पाठ करता रहे तो उसे बिजली का लाभ प्राप्त नहीं होगा। लाभ प्राप्त होगा बिजली का कनेक्शन लेने से। कनेक्शन कैसे प्राप्त हो सकता है? उस विधि को प्राप्त करके फिर बिजली के गुणों का लाभ प्राप्त हो सकता है। केवल बिजली की महिमा को गाने मात्र से नहीं।

इसी प्रकार वेद मंत्रों में अर्थात् श्रीमद्भगवत् गीता (जो चारों वेदों का सार है) में मोक्ष प्राप्ति के लिए जो ज्ञान कहा है, उसके अनुसार आचरण करने से मोक्ष लाभ अर्थात् परमेश्वर प्राप्ति होती है।

प्रश्न :- (धर्मदास जी का) हे जिन्दा! मुझे तो यह भी ज्ञान नहीं है कि गीता में मोक्ष प्राप्ति

का ज्ञान कौन-सा है? मैंनें गीता को पढ़ा है, समझा नहीं। हमारे धर्मगुरुओं ने जो भक्ति बताई, उसे श्रद्धा से करते आ रहे हैं। वर्षों से चला आ रहा भक्ति का शास्त्र विरुद्ध प्रचलन सर्व भक्तों को सत्य लग रहा है। क्या गीता में लिखी भक्ति विधि पर्याप्त है?

उत्तर (जिन्दा बाबा का) :- गीता में केवल ब्रह्म स्तर की भक्तिविधि लिखी है। पूर्ण मोक्ष के लिए परम अक्षर ब्रह्म की भक्ति करनी होगी। गीता में पूर्ण विधि नहीं है, केवल संकेत है। जैसे गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में कहा है कि ''सच्चिदानन्द घन ब्रह्म अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म की प्राप्ति के लिए ''ऊँ, तत्, सत्'' इस मन्त्र का निर्देश है। इसके स्मरण की विधि तीन प्रकार से है। इस मन्त्र में ऊँ तो क्षर पुरुष अर्थात् ब्रह्म का मन्त्र तो स्पष्ट है परन्तु ''पर ब्रह्म'' (अक्षर पुरुष) का मन्त्र ''तत्'' है जो सांकेतिक है, उपदेशी को तत्त्वदर्शी सन्त बताएगा। ''सत्'' यह मन्त्र पूर्ण ब्रह्म (परम अक्षर ब्रह्म) का है जो सांकेतिक है, इसको भी तत्त्वदर्शी सन्त उपदेशी को बताता है। तत्त्वदर्शी सन्त के पास पूर्ण मोक्ष मार्ग होता है। जो न वेदों में है, न गीता में तथा न पुराणों या अन्य उपनिषदों में है। तत्त्वज्ञान की सत्यता को प्रमाणित करने के लिए गीता तथा वेद सहयोगी हैं। जो भक्तिविधि वेद-गीता में है, वही तत्त्वज्ञान में भी है। सूक्ष्मवेद अर्थात् तत्त्वज्ञान में वेदों तथा गीता वाली भक्तिविधि तो है ही, इससे भिन्न पूर्ण मोक्ष वाली साधना भी है। उदाहरण के लिए दसवीं कक्षा का पाठ्यक्रम गलत नहीं है, परंतु अधूरा है। **B.A., M.A.** वाले सलेबस में दसवीं वाला ज्ञान भी होता है, उससे आगे का भी होता है। यही दशा वेदों-गीता तथा सूक्ष्मवेद के ज्ञान में अंतर की जानें।

प्रश्न :- (धर्मदास जी का) गीता तथा वेदों में यह कहाँ प्रमाण है कि पूर्ण मोक्ष मार्ग तत्त्वदर्शी सन्त के पास ही होता है, वेदों व गीता में नहीं है। हे प्रभु जिन्दा! मेरी शंका का समाधान कीजिए, आपका ज्ञान हृदय को छूता है, सत्य भी है परन्तु विश्वास तो प्रत्यक्ष प्रमाण देखकर ही होता है।

उत्तर :- (जिन्दा परमेश्वर जी का) गीता अध्याय 4 श्लोक 25 से 30 में गीता ज्ञान दाता ने बताया है कि हे अर्जुन! सर्व साधक अपनी साधना व भक्ति को पापनाश करने वाली अर्थात् मोक्षदायक जान कर ही करते हैं। यदि उनको यह निश्चय न हो कि तुम जो भक्ति कर रहे हो, यह शास्त्रानुकुल नहीं है तो वे साधना ही छोड़ देते। जैसे कई साधक देवताओं की पूजा रुपी यज्ञ अर्थात् धार्मिक अनुष्ठान करके ही पूजा मानते हैं। अन्य ब्रह्म तक ही पूजा करते हैं। कई केवल अग्नि में घृत आदि डालकर अनुष्ठान करते हैं जिसको हवन कहते हैं। (गीता अध्याय 4 श्लोक 25)

❖ अन्य योगीजन अर्थात् भक्तजन आँख, कान, मुहँ बन्द करके क्रियाएं करते हैं। उसी में अपना मानव जीवन हवन अर्थात् समाप्त करते हैं। (गीता अध्याय 4 श्लोक 26)

❖ अन्य योगीजन अर्थात् भक्तजन श्वांसों को आना-जाना ध्यान से देखकर भक्ति साधना करते हैं जिससे वे आत्मसंयम साधना रुपी अग्नि में अपना जीवन हवन अर्थात् मानव जीवन पूरा करते हैं, जिसे ज्ञान दीप मानते हैं अर्थात् अपनी साधना को श्रेष्ठ मानते हैं। (गीता अध्याय 4 श्लोक 27)

❖ कुछ अन्य साधक द्रव्य अर्थात् धन से होने वाले यज्ञ अर्थात् धार्मिक अनुष्ठान करते हैं जैसे भोजन भण्डारा करना, कम्बल-कपड़े बाँटना, धर्मशाला, प्याऊ बनवाना, यह यज्ञ करते हैं। कुछ तपस्या करते हैं, कुछ योगासन करते हैं। इसी को परमात्मा प्राप्ति की साधना मानते हैं। कितने ही साधक अहिंसा आदि तीक्ष्ण व्रत करते हैं। जैसे मुख पर पट्टी बाँधकर नंगे पैरों चलना, कई दिन उपवास रखना आदि-आदि। अन्य योगीजन अर्थात् साधक स्वाध्याय अर्थात् प्रतिदिन

किसी वेद जैसे ग्रन्थ से कुछ मन्त्रों (श्लोकों) का पाठ करना, यह ज्ञान यज्ञ कहलाती है, करते रहते हैं। इन्हीं क्रियाओं को मोक्षदायक मानते हैं। (गीता अध्याय 4 श्लोक 28)

❖ दूसरे योगीजन अर्थात् भक्तजन प्राण वायु (श्वांस) अपान वायु में पहुँचाने वाली क्रिया करते हैं। अन्य योगीजन इसके विपरीत अपान वायु को प्राण वायु में पहुँचाने वाली क्रिया करते हैं। कितने ही साधक अल्पाहारी रहते हैं। कुछ योगिक क्रियाऐं करते हैं। जैसे प्राणायाम में लीन साधक पान-अपान की गति को रोककर श्वांस कम लेते हैं। इसी में अपना मानव जीवन हवन अर्थात् समर्पित कर देते हैं। ये सभी उपरोक्त (अध्याय 4 श्लोक 25 से 30 तक) साधक अपने-अपने यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों को करके मानते हैं कि हम पाप का नाश करने वाली साधना भक्ति कर रहे हैं। (गीता अध्याय 4 श्लोक 30)

❖ यदि साधक की साधना शास्त्रानुकूल हो तो हे कुरुश्रेष्ठ अर्जुन! इस यज्ञ से बचे हुए अमत भोग को खाने वाले साधक सनातन ब्रह्म अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म को प्राप्त होते हैं और यज्ञ अर्थात् शास्त्रानुकूल साधना न करने वाले पुरुष के लिए तो यह पथ्वीलोक भी सुखदायक नहीं होता, फिर परलोक कैसे सुखदायक हो सकता है अर्थात् उस शास्त्र विरूद्ध साधक को कोई लाभ नहीं होता। यही प्रमाण गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में भी है। (गीता अध्याय 4 श्लोक 31)

❖ गीता ज्ञान दाता ने ऊपर के 25 से 30 तक श्लोकों में स्पष्ट किया है कि जो साधक जैसी साधना कर रहा है, उसे मोक्षदायक तथा सत्य मानकर कर रहा है। परन्तु गीता अध्याय 4 के ही श्लोक 32 में बताया कि ''यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों का यथार्थ ज्ञान परम अक्षर ब्रह्म स्वयं अपने मुख कमल से बोलकर ज्ञान देता है। (वह सच्चिदानन्द घन ब्रह्म अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म की वाणी कही गई है। उसे तत्त्वज्ञान भी कहते हैं। उसी को पाँचवां वेद (सूक्ष्म वेद) भी कहते हैं।) उस तत्त्वज्ञान में भक्तिविधि विस्तार के साथ बताई गई है। उसको जानकर साधक सर्व पापों से मुक्त हो जाता है अर्थात् पूर्ण मोक्ष को प्राप्त हो जाता है।

नोट : गीता अध्याय 4 श्लोक 32 के अनुवाद में सर्व अनुवादकों ने एक जैसी ही गलती कर रखी है। ''ब्रह्मणः'' शब्द का अर्थ वेद कर रखा है। ''ब्रह्मणः मुखे'' का अर्थ वेद की वाणी में'' किया है जो गलत है। उन्हीं अनुवादकों ने गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में ''ब्रह्मणः'' का अर्थ सच्चिदानन्द घन ब्रह्म किया है जो उचित है। इसलिए गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में भी ''ब्रह्मणः'' का अर्थ सच्चिदानन्द घन ब्रह्म अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म करना उचित है।

❖ गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि उस ज्ञान को (जो परमात्मा अपने मुख कमल से बोलकर सुनाता है जो तत्त्वज्ञान है उसको) तू तत्त्वदर्शी सन्तों के पास जाकर समझ। उनको दण्डवत प्रणाम करने से, कपट छोड़कर नम्रतापूर्वक प्रश्न करने से तत्त्वदर्शी सन्त तुझे तत्त्वज्ञान का उपदेश करेंगे।

❖ इससे यह भी सिद्ध हुआ कि गीता वाला ज्ञान पूर्ण नहीं है, परन्तु गलत भी नहीं है। गीता ज्ञानदाता को भी पूर्ण मोक्षमार्ग का ज्ञान नहीं है क्योंकि तत्त्वज्ञान की जानकारी गीता ज्ञानदाता को नहीं है जो परमात्मा (परम अक्षर ब्रह्म) ने अपने मुख से बोला होता है। उसको तत्त्वदर्शी सन्तों से जानने के लिए कहा है।

❖ यही प्रमाण यजुर्वेद अध्याय 4 मन्त्र 10 में भी है। कहा है कि परम अक्षर ब्रह्म को कोई तो 'सम्भवात्' अर्थात् राम-कष्ण की तरह उत्पन्न होने वाला साकार कहते हैं। कोई 'असम्भवात्' अर्थात् परमात्मा उत्पन्न नहीं होता, वह निराकार है। परमेश्वर उत्पन्न होता है या नहीं उत्पन्न

होता, वास्तव में कैसा है? यह ज्ञान 'धीराणाम्' तत्त्वदर्शी सन्त बताते हैं, उनसे सुनो।

प्रश्न :- (धर्मदास जी का) हे प्रभु! हे जिन्दा! तत्त्वदर्शी सन्त की क्या पहचान है तथा प्रमाणित सद्ग्रन्थों में कहाँ प्रमाण है? आपका ज्ञान आत्मा के आर-पार हो रहा है। गीता का शब्दा-शब्द यथार्थ भावार्थ आप जी के मुख कमल से सुनकर युगों की प्यासी आत्मा कुछ तृप्त हो रही है तथा गदगद हो रही है।

उत्तर :- (जिन्दा परमेश्वर जी का) परमेश्वर ने बताया कि पहले तो लक्षण सुन तत्त्वदर्शी सन्त अर्थात् पूर्ण ज्ञानी सत्गुरु के :-

गुरू के लक्षण चार बखाना, प्रथम वेद शास्त्र को ज्ञाना (ज्ञाता)।
दूजे हरि भक्ति मन कर्म बानी, तीसरे समदृष्टि कर जानी।
चौथे वेद विधि सब कर्मा, यह चार गुरु गुण जानो मर्मा।

कबीर सागर के अध्याय ''जीव धर्म बोध'' के पृष्ठ 1960 पर ये अमृतवाणियां अंकित हैं।

भावार्थ:- जो तत्त्वदर्शी सन्त (पूर्ण सतगुरु) होगा उसमें चार मुख्य गुण होते हैं:-

1. वह वेदों तथा अन्य सभी ग्रन्थों का पूर्ण ज्ञानी होता है।

2. दूसरे वह परमात्मा की भक्ति मन-कर्म-वचन से स्वयं करता है, केवल वक्ता-वक्ता नहीं होता, उसकी करणी और कथनी में अन्तर नहीं होता।

3. वह सर्व अनुयाईयों को समान दृष्टि से देखता है। ऊँच-नीच का भेद नहीं करता।

4. चौथे वह सर्व भक्तिकर्म वेदों के अनुसार करता तथा करवाता है अर्थात् शास्त्रानुकूल भक्ति साधना करता तथा करवाता है। यह ऊपर का प्रमाण तो सूक्ष्म वेद में है जो परमेश्वर ने अपने मुखकमल से बोला है। अब आप जी को श्रीमद्भगवत गीता में प्रमाण दिखाते हैं कि तत्त्वदर्शी सन्त की क्या पहचान बताई है?

श्रीमद्भागवत गीता अध्याय 15 श्लोक 1 में स्पष्ट है:-

ऊर्धव मूलम् अधः शाखम् अश्वत्थम् प्राहुः अव्ययम्। छन्दासि यस्य प्रणानि, यः तम् वेद सः वेदवित् ।।

अनुवाद : ऊपर को मूल (जड़) वाला, नीचे को तीनों गुण रुपी शाखा वाला उल्टा लटका हुआ संसार रुपी पीपल का वृक्ष जानो, इसे अविनाशी कहते हैं क्योंकि उत्पत्ति-प्रलय चक्र सदा चलता रहता है जिस कारण से इसे अविनाशी कहा है। इस संसार रुपी वृक्ष के पत्ते आदि छन्द हैं अर्थात् भाग (Parts) हैं। (य तम् वेद) जो इस संसार रुपी वृक्ष के सर्वभागों को तत्त्व से जानता है, (सः) वह (वेदवित्) वेद के तात्पर्य को जानने वाला है अर्थात् वह तत्त्वदर्शी सन्त है। जैसा कि गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में कहा है कि परम अक्षर ब्रह्म स्वयं पृथ्वी पर प्रकट होकर अपने मुख कमल से तत्त्वज्ञान विस्तार से बोलते हैं। परमेश्वर ने अपनी वाणी में अर्थात् तत्त्वज्ञान में बताया है:-

कबीर, अक्षर पुरुष एक पेड़ है, क्षर पुरुष वाकि डार। तीनों देवा शाखा हैं, पात रुप संसार।।

भावार्थ :- जमीन से बाहर जो वृक्ष का हिस्सा है, उसे तना कहते हैं। तना तो जानों अक्षर पुरुष, तने से कई मोटी डार निकलती हैं। उनमें से एक मोटी डार जानों क्षर पुरुष। उस डार से तीन शाखा निकलती हैं, उनको जानों तीनों देवता (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिव-शंकर जी) और इन शाखाओं को पत्ते लगते हैं, उन पत्तों को संसार जानो।

गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 में सांकेतिक विवरण है। तत्त्वज्ञान में विस्तार से कहा गया है। पहले गीता ज्ञान के आधार से ही जानते हैं।

गीता अध्याय 15 श्लोक 2 में कहते हैं कि संसार रुपी वृक्ष की तीनों गुण (रजगुण ब्रह्माजी,

सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शंकर जी) रुपी शाखाएं है। ये ऊपर (स्वर्ग लोक में) तथा नीचे (पाताल लोक) फैली हुई हैं।

नोट :- रजगुण ब्रह्मा, सत्गुण विष्णु तथा तमगुण शंकर हैं।

देखें प्रमाण निम्न प्रश्न के उत्तर में :-

प्रश्न : यह कहाँ प्रमाण है कि रजगुण ब्रह्मा है, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शंकर है?

उत्तर : 1. श्री मार्कण्डेय पुराण (सचित्र मोटा टाईप गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित) के 123 पष्ठ पर कहा है कि रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शंकर, तीनों ब्रह्म की प्रधान शक्तियाँ है, ये ही तीन देवता हैं। ये ही तीन गुण हैं।

2. श्री देवी महापुराण संस्कत व हिन्दी अनुवाद (श्री वैंकटेश्वर प्रेस बम्बई से प्रकाशित) में तीसरे स्कंद अध्याय 5 श्लोक 8 में लिखा है कि शंकर भगवान बोले, हे मात! यदि आप हम पर दयालु हैं तो मुझे तमोगुण, ब्रह्मा रजोगुण तथा विष्णु सतोगुण युक्त क्यों किया?

उपरोक्त प्रमाणों से सिद्ध हुआ कि रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शंकर जी हैं।

तीनों शाखाएं ऊपर-नीचे फैली हैं, का तात्पर्य है कि गीता का ज्ञान पथ्वी लोक पर बोला जा रहा था। तीनों देवता की सत्ता तीन लोकों में है। 1. पथ्वी लोक, 2. स्वर्ग लोक तथा 3. पाताल लोक। ये तीन मन्त्री हैं, एक-एक विभाग के मन्त्री हैं। रजगुण विभाग के श्री ब्रह्मा जी, सतगुण विभाग के श्री विष्णु जी तथा तमगुण विभाग के श्री शिव जी।

गीता अध्याय 15 श्लोक 3 में कहा है कि हे अर्जुन! इस संसार रुपी वक्ष का स्वरुप जैसे यहाँ (विचार काल में) अर्थात् तेरे और मेरे गीता के ज्ञान की चर्चा में नहीं पाया जाता अर्थात् मैं नहीं बता पाऊँगा क्योंकि इसके आदि और अन्त का मुझे अच्छी तरह ज्ञान नहीं है। इसलिए इस अतिदढ़ मूल वाले अर्थात् जिस संसार रुपी वक्ष की मूल है। (वह परमात्मा भी अविनाशी है तथा उनका स्थान सत्यलोक, अलख लोक, अगम लोक तथा अकह लोक, ये चार ऊपर के लोक भी अविनाशी हैं। इन चारों में एक ही परमात्मा भिन्न-भिन्न रुप बनाकर सिंहासन पर विराजमान हैं। इसलिए इसको ''सुदढ़मूलम्'' अति दढ़ मूल वाला कहा है।) इसे तत्त्वज्ञान रुपी शस्त्र से काटकर अर्थात् तत्त्वदर्शी सन्त से तत्त्वज्ञान समझकर।

फिर गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि उसके पश्चात् परमेश्वर के उस परमपद अर्थात् सत्यलोक की खोज करनी चाहिए, जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर संसार में कभी नहीं आते। जिस परमेश्वर से संसार रुपी वक्ष की प्रवत्ति विस्तार को प्राप्त हुई है अर्थात् जिस परमेश्वर ने सर्व संसार की रचना की है। उसी परमेश्वर की भक्ति को पहले तत्त्वदर्शी सन्त से समझो! गीता ज्ञान दाता अपनी भक्ति को भी मना कर रहा है। गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में तीन प्रभु बताये हैं। क्षर पुरुष, अक्षर पुरुष ये दोनों नाशवान हैं। तीसरा परम अक्षर पुरुष है जो संसार रुपी वक्ष का मूल (जड़) है। वह वास्तव में अविनाशी है। जड़ (मूल) से ही वक्ष के सर्व भागों ''तना, डार-शाखाओं तथा पत्तों'' को आहार प्राप्त होता है। वह परम अक्षर पुरुष ही तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है। उसी (मूल) मालिक की पूजा करनी चाहिए। इस विवरण में तत्त्वदर्शी सन्त की पहचान तथा गीता ज्ञान दाता की अल्पज्ञता अर्थात् तत्त्वज्ञानहीनता स्पष्ट है।

''जिन्दा बाबा का दूसरी बार अन्तर्ध्यान होना''

(धर्मदास जी ने कहा) :- हे जिन्दा! आप यह क्या कह रहे हो कि श्री विष्णु जी तीनों लोको में केवल एक विभाग के मन्त्री हैं। आप गलत कह रहे हो। श्री विष्णुजी तो अखिल ब्रह्माण्ड के स्वामी हैं। ये ही श्री ब्रह्मा जी रुप में उत्पत्ति करते हैं। विष्णु रुप होकर संसार का पालन करते हैं तथा शिव रुप होकर संहार करते हैं। ये तो कुल के मालिक हैं, यदि फिर से आपने श्री विष्णु जी को अपमानित किया तो ठीक बात नहीं रहेगी। परमेश्वर कबीर जी ने कहा :-

मूर्ख के समझावतें, ज्ञान गाँठि का जाय। कोयला होत न उजला, भावें सौ मन साबुन लाय।।

इतना कहकर परमेश्वर जिन्दा रुपधारी अन्तर्ध्यान हो गए। दूसरी बार परमेश्वर को खोने के पश्चात् धर्मदास बहुत उदास हो गए। भगवान विष्णु में इतनी अटूट आस्था थी कि आँखों प्रमाण देखकर भी झूठ को त्यागने को तैयार नहीं थे।

कबीर, जान बूझ साची तजै, करे झूठ से नेह। ताकि संगति हे प्रभु, स्वपन में भी ना देह।।

कुछ देर के पश्चात् धर्मदास की बुद्धि से काल का साया हटा और अपनी गलती पर विचार किया कि सब प्रमाण गीता से ही प्रत्यक्ष किए गए थे। जिन्दा बाबा ने अपनी ओर से तो कुछ नहीं कहा। मैं कितना अभागा हूँ कि मैंने अपने हठी व्यवहार से देव स्वरुप तत्त्वदर्शी सन्त को खो दिया। अब तो वे देव नहीं मिलेंगे। मेरा जीवन व्यर्थ जाएगा। यह विचार करके धर्मदास सिहर उठा अर्थात् भय से काँपने लगा। खाना भी कम खाने लगा, उदास रहने लगा तथा मन-मन में अर्जी लगाने लगा हे देव! हे जिन्दा बाबा! एक बार दर्शन दे दो। भविष्य में ऐसी गलती कभी नहीं करुँगा। मैं आपसे करबद्ध प्रार्थना करता हूँ। मुझ मूर्ख की ओच्छी-मन्दी बातों पर ध्यान न दो। मुझे फिर मिलो गुसांई। आपका ज्ञान सत्य, आप सत्य, आप जी का एक-एक वचन अमृत है। कृपया दर्शन दो नहीं तो अधिक दिन मेरा जीवन नहीं रहेगा।

तीसरे दिन परमेश्वर कबीर जी एक दरिया के किनारे वृक्ष के नीचे बैठे थे। आसपास कुछ आवारा गायें भी उसी वृक्ष के नीचे बैठी जुगाली कर रही थीं। कुछ दरिया के किनारे घास चर रही थी। धर्मदास की दृष्टि दरिया के किनारे पिताम्बर पहने बैठे सन्त पर पड़ी, देखा आस-पास गायें चर रही है। ऐसा लगा जैसे साक्षात् भगवान कृष्ण अपने लोक से आकर बैठे हों। धर्मदास उत्सुकता से सन्त के पास गया तथा देखा यह तो कोई सामान्य सन्त है। फिर भी सोचा चरण स्पर्श करके फिर आगे बढ़ूँगा। धर्मदास जी ने जब चरणों का स्पर्श किया, मस्तक चरणों पर रखा तो ऐसा लगा कि जैसे रुई को छुआ हो। फिर चरणों को हाथों से दबा-दबाकर देखा तो उनमें कहीं भी हड्डी नहीं थी। ऊपर चेहरे की ओर देखा तो वही बाबा जिन्दा उसी पहले वाली वेशभूषा में बैठा था। धर्मदास जी ने चरणों को दृढ़ करके पकड़ लिया कि कहीं फिर से न चले जाएें और अपनी गलती की क्षमा याचना की। कहा कि हे जिन्दा! आप तो तत्त्वदर्शी सन्त हो। मैं एक भ्रमित जिज्ञासु हूँ। जब तक मेरी शंकाओं का समाधान नहीं होगा, तब तक मेरा अज्ञान नाश कैसे होगा? आप तो महाकृपालु हैं। मुझ किंकर पर दया करो। मेरा अज्ञान हटाओ प्रभु।

प्रश्न (धर्मदास जी का) :- हे जिन्दा! यदि श्री विष्णु जी पूर्ण परमात्मा नहीं है तो कौन है पूर्ण परमात्मा, कृप्या गीता से प्रमाण देना?

उत्तर :- वह परमात्मा ''परम अक्षर ब्रह्म'' है जो कुल का मालिक है।

प्रमाण :- श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 16-17 में है। गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 का सारांश व भावार्थ है कि ''उल्टे लटके हुए वृक्ष के समान संसार को जानो।

जैसे वृक्ष की जड़ें तो ऊपर हैं, नीचे तीनों गुण रुपी शाखाएं जानो। गीता अध्याय 15 श्लोक 1 में यह भी स्पष्ट किया है कि तत्त्वदर्शी सन्त की क्या पहचान है? तत्त्वदर्शी सन्त वह है जो संसार रुपी वृक्ष के सर्वांग (सभी भाग) भिन्न-भिन्न बताए।

विशेष :- वेद मन्त्रों की जो आगे फोटोकॉपियाँ लगाई हैं, ये आर्यसमाज के आचार्यों तथा महर्षि दयानंद द्वारा अनुवादित हैं और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा प्रकाशित हैं। जिनमें वर्णन है कि परमेश्वर स्वयं पृथ्वी पर सशरीर प्रकट होकर कवियों की तरह आचरण करता हुआ सत्य अध्यात्मिक ज्ञान सुनाता है। (प्रमाण ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 86 मन्त्र 26-27, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 82 मन्त्र 1-2, सुक्त 96 मन्त्र 16 से 20, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 94 मन्त्र 1, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 95 मन्त्र 2, ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 20 मन्त्र 1, ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 54 मन्त्र 3 में) इन मन्त्रों में कहा है कि परमात्मा सर्व भवनों अर्थात् लोकों के उपर के लोक में विराजमान है। जब-जब पृथ्वी पर अज्ञान की वृद्धि होने से अधर्म बढ़ जाता है तो परमात्मा स्वयं सशरीर चलकर पृथ्वी पर प्रकट होकर यथार्थ अध्यात्म ज्ञान का प्रचार लोकोक्तियों, शब्दों, चौपाईयों, साखियों, कविताओं के माध्यम से कवियों जैसा आचरण करके घूम-फिरकर करता है। जिस कारण से एक प्रसिद्ध कवि की उपाधि भी प्राप्त करता है। कृप्या देखें उपरोक्त वेद मन्त्रों की फोटोकॉपी इसी पुस्तक के पृष्ठ 483 पर।

परमात्मा ने अपने मुख कमल से ज्ञान बोलकर सुनाया था। उसे सूक्ष्म वेद कहते हैं। उसी को 'तत्त्व ज्ञान' भी कहते हैं। तत्त्वज्ञान का प्रचार करने के कारण परमात्मा ''तत्त्वदर्शी सन्त'' भी कहलाने लगता है। उस तत्त्वदर्शी सन्त रूप में प्रकट परमात्मा ने संसार रुपी वृक्ष के सर्वांग इस प्रकार बताये:-

कबीर, अक्षर पुरुष एक वृक्ष है, क्षर पुरुष वाकि डार। तीनों देवा शाखा हैं, पात रुप संसार।।

भावार्थ : वृक्ष का जो हिस्सा पृथ्वी से बाहर दिखाई देता है, उसको तना कहते हैं। जैसे संसार रुपी वृक्ष का तना तो अक्षर पुरुष है। तने से मोटी डार निकलती है वह क्षर पुरुष जानो, डार से मानो तीन शाखाऐं निकलती हों, उनको तीनों देवता (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिव) हैं तथा इन शाखाओं पर टहनियों व पत्तों को संसार जानों। इस संसार रुपी वृक्ष के उपरोक्त भाग जो पृथ्वी से बाहर दिखाई देते हैं। मूल (जड़ें), जमीन के अन्दर हैं। जिनसे वृक्ष के सर्वांगों का पोषण होता है। गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में तीन पुरुष कहे हैं। श्लोक 16 में दो पुरुष कहे हैं ''क्षर पुरुष तथा अक्षर पुरुष'' दोनों की स्थिति ऊपर बता दी है। गीता अध्याय 15 श्लोक 16 में भी कहा है कि क्षर पुरुष तथा अक्षर पुरुष दोनों नाशवान हैं। इनके अन्तर्गत जितने भी प्राणी हैं, वे भी नाशवान हैं। परन्तु आत्मा तो किसी की भी नहीं मरती। गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में कहा है कि उत्तम पुरुष अर्थात् पुरुषोत्तम तो क्षर पुरुष और अक्षर पुरुष से भिन्न है जिसको परमात्मा कहा गया है। इसी प्रभु की जानकारी गीता अध्याय 8 श्लोक 3 में है जिसको ''परम अक्षर ब्रह्म'' कहा है। गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में इसी का वर्णन है। यही प्रभु तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है। यह वास्तव में अविनाशी परमेश्वर है। मूल से ही वृक्ष की परवरिश होती है, इसलिए सबका धारण-पोषण करने वाला परम अक्षर ब्रह्म है। जैसे पूर्व में गीता अध्याय 15 श्लोक 1-4 में बताया है कि ऊपर को जड़ (मूल) वाला, नीचे को शाखा वाला संसार रुपी वृक्ष है। जड़ से ही वृक्ष का धारण-पोषण होता है। इसलिए परम अक्षर ब्रह्म जो संसार रुपी वृक्ष की जड़ (मूल) है, यही सर्व पुरुषों (प्रभुओं) का पालनहार इनका विस्तार (रचना करने वाला = सृजनहार) है। यही कुल का मालिक है।

प्रश्न :- धर्मदास जी ने पूछा कि क्या श्री विष्णु जी और शंकर जी की पूजा करनी चाहिए?

उत्तर :- (जिन्दा बाबा का) :- नहीं करनी चाहिए।

प्रश्न (धर्मदास जी का) :- कृपया गीता से प्रमाणित कीजिए।

उत्तर :- श्री मद्भगवत गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15, 20 से 23 तथा गीता अध्याय 9 श्लोक 23-24, गीता अध्याय 17 श्लोक 1 से 6 में प्रमाण है कि जो व्यक्ति रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव की भक्ति करते हैं, वे राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए मनुष्यों में नीच, दूषित कर्म करने वाले मूर्ख मुझे भी नहीं भजते। (यह प्रमाण गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 में है। फिर गीता अध्याय 7 के ही श्लोक 20 से 23 तथा गीता अध्याय 9 श्लोक 23-24 में यही कहा है और क्षर पुरुष, अक्षर पुरुष तथा परम अक्षर पुरुष गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में जिनका वर्णन है), को छोड़कर श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव जी अन्य देवताओं में गिने जाते हैं। इन दोनों अध्यायों (गीता अध्याय 7 तथा अध्याय 9 में) में ऊपर लिखे श्लोकों में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि जो साधक जिस भी उद्देश्य को लेकर अन्य देवताओं को भजते हैं, वे भगवान समझकर भजते हैं। उन देवताओं को मैंने कुछ शक्ति प्रदान कर रखी है। देवताओं के भजने वालों को मेरे द्वारा किए विधान से कुछ लाभ मिलता है। परन्तु उन अल्प बुद्धिवालों का वह फल नाशवान होता है। देवताओं को पूजने वाले देवताओं के लोक में जाते हैं। मेरे पुजारी मुझे प्राप्त होते हैं।

गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में कहा है कि शास्त्रविधि को त्यागकर जो साधक मनमाना आचरण करते हैं अर्थात् जिन देवताओं पितरों, यक्षों, भैरों-भूतों की भक्ति करते हैं और मनकल्पित मन्त्रों का जाप करते हैं, उनको न तो कोई सुख होता है, न कोई सिद्धि प्राप्त होती है तथा न उनकी गति अर्थात् मोक्ष होता है। इससे तेरे लिए हे अर्जुन! कर्तव्य (जो भक्ति करनी चाहिए) और अकर्त्तव्य (जो भक्ति न करनी चाहिए) की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। गीता अध्याय 17 श्लोक 1 में अर्जुन ने पूछा कि हे कृष्ण! (क्योंकि अर्जुन मान रहा था कि श्री कृष्ण ही ज्ञान सुना रहा है, परन्तु श्री कृष्ण के शरीर में प्रेत की तरह प्रवेश करके काल (ब्रह्म) ज्ञान बोल रहा था जो पहले प्रमाणित किया जा चुका है)। जो व्यक्ति शास्त्रविधि को त्यागकर अन्य देवताओं आदि की पूजा करते हैं, वे स्वभाव में कैसे होते हैं? गीता ज्ञान दाता ने उत्तर दिया कि सात्विक व्यक्ति देवताओं का पूजन करते हैं। राजसी व्यक्ति यक्षों व राक्षसों की पूजा तथा तामसी व्यक्ति प्रेत आदि की पूजा करते हैं। ये सब शास्त्रविधि रहित कर्म हैं। फिर गीता अध्याय 17 श्लोक 5-6 में कहा है कि जो मनुष्य शास्त्रविधि से रहित केवल मनकल्पित घोर तप को तपते हैं, वे दम्भी (अभिमानी) हैं और शरीर के कमलों में विराजमान शक्तियों को तथा मुझे भी क्रश करने वाले राक्षस स्वभाव के अज्ञानी जान। सूक्ष्मवेद में भी परमेश्वर जी ने कहा है कि :-

''कबीर, माई मसानी सेढ़ शीतला भैरव भूत हनुमंत। परमात्मा से न्यारा रहै, जो इनको पूजंत।।
राम भजै तो राम मिलै, देव भजै सो देव। भूत भजै सो भूत भवै, सुनो सकल सुर भेव।।''

स्पष्ट हुआ कि श्री ब्रह्मा जी (रजगुण), श्री विष्णु जी (सत्गुण) तथा श्री शिवजी (तमगुण) की पूजा (भक्ति) नहीं करनी चाहिए तथा इसके साथ-साथ भूतों, पितरों की पूजा, (श्राद्ध कर्म, तेरहवीं, पिण्डोदक क्रिया, सब प्रेत पूजा होती है) भैरव तथा हनुमान जी की पूजा भी नहीं करनी चाहिए।

धर्मदास को प्रभु ने सुनाया, गीता शास्त्र से प्रत्यक्ष प्रमाण देखकर धर्मदास की आँखें खुली की खुली रह गई। जैसे किसी को सदमा लग गया हो। झूठ कह नहीं सकता, स्वीकार करने से लिए अभी वक्त लगेगा।

जिन्दा रुपधारी परमेश्वर ने धर्मदास को सम्बोधित करते हुए कहा कि हे वैष्णव महात्मा!

कौन-सी दुनिया में चले गये, लौट आओ। मानो धर्मदास नींद से जागा हो। सावधान होकर कहा, कुछ नहीं-कुछ नहीं। कृपया और ज्ञान सुनाओ ताकि मेरा भ्रम दूर हो सके। परमेश्वर कबीर जी ने सृष्टि की रचना धर्मदास जी को सुनाई, कृपया पढ़ें इसी पुस्तक के पृष्ठ 603 पर।

सृष्टि रचना सुनकर धर्मदास जी को ऐसा लगा मानो पागल हो जाऊँगा क्योंकि जो ज्ञान आजतक हिन्दू धर्मगुरुओं, ऋषियों, महर्षियों-सन्तों से सुना था, वह निराधार तथा अप्रमाणित लग रहा था। जिन्दा बाबा हिन्दू सद्ग्रन्थों से ही प्रमाणित कर रहे थे। शंका का कोई स्थान नहीं था। मन-मन में सोच रहा था कि कहीं मैं पागल तो नहीं हो जाऊँगा?

प्रश्न :- (धर्मदास जी का) : हे जिन्दा! क्या हिन्दू धर्म के गुरुओं तथा ऋषियों को शास्त्रों का ज्ञान नहीं है?

उत्तर :- (जिन्दा महात्मा का) :- क्या यह बताने की भी आवश्यकता शेष है?

धर्मदास जी ने मन में विचार किया कि यह कैसे हो सकता है कि हिन्दू धर्म के किसी सन्त, गुरु, महर्षि को सत्य अध्यात्म ज्ञान नहीं? धर्मदास जी के मन में आया कि किसी महामण्डलेश्वर से ज्ञान पता करना चाहिए। एक रमते फकीर के पास क्या मिलेगा? यह बात मन में सोच ही रहा था कि परमेश्वर जिन्दा जी ने धर्मदास जी के मन का दोष जानकर कहा कि आप अपने महामण्डलेश्वरों से ज्ञान प्राप्त करलो। यह कहकर परमेश्वर तीसरी बार अन्तर्ध्यान हो गए। धर्मदास जी ठगे से रह गए और अपने मन के दोष को जिन्दा महात्मा के मुखकमल से सुनकर बहुत शर्मसार हुए। जब प्रभु अन्तर्ध्यान हो गए तो बहुत व्याकुल हो गया। परन्तु धर्मदास जी को आशा थी कि हमारे महामण्डलेश्वरों के पास तत्त्वज्ञान अवश्य मिलेगा। यदि जिन्दा बाबा (मुसलमान) के ज्ञान को तत्त्वज्ञान मानकर साधना स्वीकार करना तो ऐसा लग रहा है जैसे धर्म परिवर्तन करना हो। यह समाज में निन्दा का कारण बनेगा। इसलिए अपने हिन्दू महात्माओं से तत्त्वज्ञान जानकर श्रेष्ठ शास्त्रानुकूल भक्ति करनी ही उचित रहेगी। इस बार धर्मदास जी को जिन्दा बाबा का अचानक चला जाना खटका नहीं क्योंकि उसकी गलतफहमी थी कि हिन्दू इतना बड़ा तथा पुरातन धर्म है, क्या कोई भी तत्त्वदर्शी सन्त नहीं मिलेगा? धर्मदास जी एक वैष्णव महामण्डलेश्वर श्री ज्ञानानंद जी वैष्णव के आश्रम में गया। उस समय श्री ज्ञानानन्द जी का बहुत बोलबाला था। वह स्वामी रामानन्द जी काशी वाले का शिष्य था। परन्तु उस समय स्वामी रामानन्द जी तो परमेश्वर कबीर जी का शिष्य/गुरु बन चुका था। वह अपने ज्ञान को अज्ञान मान चुका था। स्वामी रामानन्द जी ने अपने सर्वऋषि शिष्यों से बोल दिया था कि मेरे द्वारा बताया ज्ञान व्यर्थ है और यह साधना शास्त्रविरुद्ध है। आप सब परमेश्वर कबीर जी से दीक्षा ले लें। परन्तु जाति का अभिमान, शिष्यों में प्रतिष्ठा, ज्ञान के स्थान पर अज्ञान का भण्डार जीव को सत्य स्वीकार करने नहीं देता।

कबीर, राज तजना सहज है, सहज त्रिया का नेह। मान बड़ाई ईर्ष्या, दुर्लभ तजना येह।।

धर्मदास जी ने श्री ज्ञानानंद जी से प्रश्न किया है कि स्वामी जी क्या भगवान विष्णु से भी ऊपर कोई प्रभु है। श्री ज्ञानानन्द जी ने उत्तर दिया कि श्री विष्णु स्वयं परम ब्रह्म परमात्मा है। इनसे ऊपर कौन हो सकता है? श्री कृष्ण जी भी श्री विष्णु जी स्वयं ही थे। उन्होंने ही श्रीमद्भगवत गीता का ज्ञान दिया। आपको किसने भ्रमित कर दिया? धर्मदास जी ने पूछा कि गीता अध्याय 8 श्लोक 1 में अर्जुन ने पूछा कि तत् ब्रह्म क्या है? गीता अध्याय 8 श्लोक 3 में भगवान ने कहा है कि वह ''परम अक्षर ब्रह्म'' है। यह तो भगवान कृष्ण से अन्य प्रभु हुआ। ज्ञानानन्द स्वामी बोला, लगता है कि तेरे को उस काशी वाले जुलाहे का जादू चढ़ा हुआ है। चल-चल अपना काम कर। भगवान कृष्ण से अन्य कोई प्रभु नहीं है। धर्मदास जी को पता चल गया कि इसके पास वह ज्ञान नहीं है

जो जिन्दा बाबा ने प्रमाणों सहित बताया है। धर्मदास निराश होकर वहाँ से चल दिया। धर्मदास जी को यह नहीं पता था कि काशी वाला जुलाहा वह बाबा जिन्दा ही है। फिर धर्मदास को पता चला कि एक मोहनगिरी नाम के महामण्डलेश्वर हैं, उनके पास जाकर भगवान की चर्चा करनी शुरु की। पहले एक रुपया दक्षिणा चढ़ाई जिस कारण से मोहनगिरी ने उनको निकट बैठाया और बताया कि भगवान शिव सर्व संष्टि के रचने वाले हैं। इनसे बढ़कर संसार में कोई प्रभु नहीं है। ''ओम् नमः शिवाय'' मन्त्र का जाप करो। धर्मदास जी प्रणाम करके चल पड़े। सोचा इनका कितना अच्छा नाम है, ज्ञान धेल्ले (एक पैसे) का नहीं। धर्मदास जी से किसी ने बताया कि एक बहुत बड़ा तपस्वी है। कई वर्षों से खड़ा तप कर रहा है। धर्मदास जी वहाँ गए, वह नाथ पंथ से जुड़ा था। भगवान शिव को समर्थ परमात्मा बताता था। तप करके हठयोग से परमात्मा की प्राप्ति मान रहा था। धर्मदास जी ने विवेक किया कि यदि इतनी घोर कठिन तपस्या से परमात्मा मिलेगा तो हमारे वश से बाहर की बात है। वहाँ से भी आगे चला। पता चला कि एक बहुत बड़ा विद्वान महात्मा काशी विद्यापीठ से पढ़कर आया है। वेदों का पूर्ण विद्वान है। धर्मदास जी ने उस महात्मा से पूछा परमात्मा कैसा है? उत्तर मिला-निराकार है। उस निराकार परमात्मा का कोई नाम है? धर्मदास ने पूछा। उत्तर विद्वान का :- उसका नाम ब्रह्म है। क्या परमात्मा को देखा जा सकता है, धर्मदास जी ने प्रश्न किया? उत्तर मिला परमात्मा निराकार है, उसको कैसे देख सकते हैं। केवल परमात्मा का प्रकाश देखा जा सकता है। प्रश्नः- क्या श्री कंष्ण या विष्णु परमात्मा हैं? उत्तर था कि ये तो सर्गुण देवता हैं, परमात्मा निर्गुण है।

गीता और वेद के ज्ञान में क्या अन्तर है? धर्मदास ने प्रश्न किया। ब्राह्मण का उत्तर था कि गीता चारों वेदों का सारांश है। धर्मदास जी ने पूछा कि भक्ति मन्त्र कौन सा है? उत्तर ब्राह्मण का था कि गायत्री मन्त्र का जाप करो = ओम् भूर्भवस्वः तत् सवितुः वरेणियम भंगोदेवस्य धीमहि, धीयो यो नः प्रचोदयात्'' धर्मदास जी को जिन्दा बाबा ने बताया था कि इस मन्त्र से मोक्ष सम्भव नहीं। धर्मदास जी फिर आगे चला तो पता चला कि सन्त गुफा में रहता है। कई-कई दिन तक गुफा से नहीं निकलता है। उसके पास जाकर प्रश्न किया कि भगवान कैसे मिलता है? उत्तर मिला कि इन्द्रियों पर संयम रखो, इसी से परमात्मा मिल जाता है। नाम जाप से कुछ नहीं होता। खाण्ड (चीनी) कहने से मुँह मीठा नहीं होता। धर्मदास जी को सन्तोष नहीं हुआ। सब सन्तों से ज्ञान चर्चा करके धर्मदास जी को बहुत पश्चाताप हुआ कि मेरे को उस जिन्दा बाबा पर विश्वास नहीं हुआ कि उसने कहा था किसी भी सन्त महामण्डलेश्वर के पास यथार्थ अध्यात्म ज्ञान नहीं है। किसी भी सन्त महात्मा का ज्ञान प्रमाणित नहीं है। कोई शास्त्र का आधार नहीं है, तब धर्मदास रोने लगा। अपनी अज्ञानता पर पश्चाताप करने लगा कि मैं कैसा कलमुँहा हूँ अर्थात् बुरी किस्मत वाला हूँ। मुझे उस परमात्मास्वरुप जिन्दा महात्मा पर विश्वास नहीं आया। अब वह अन्तर्यामी मुझे नहीं मिलेगा क्योंकि मैंने कई बार उनका अपमान कर दिया। अब क्या करुँ, न जीने को मन करता है, आत्महत्या पाप है। बुरी तरह रोने लगा। पछाड़ खाकर अचेत हो गया।

परमात्मा जिन्दा महात्मा के रुप में एक वंक्ष के नीचे बैठ गए। धर्मदास जी सचेत हुआ और हृदय से पुकार की कि हे जिन्दा! एक बार दर्शन दे दो। मैं टूट चुका हूँ। किसी के पास ज्ञान नहीं है। आपकी सर्व बातें सत्य हैं। परमात्मा एक बार मुझ अज्ञानी महामूर्ख को क्षमा करो परमेश्वर। आप जिन्दा नहीं परमात्मा हो। आप महाविद्वान हो। आपके ज्ञान का कोई सामना करने वाला नहीं है। मैं जिन्दगी में कभी आप पर अविश्वास नहीं करुँगा। ऐसे विचार कर आगे चला तो देखा एक वंक्ष के नीचे एक साधु बैठा है, कुछ व्यक्ति उसके पास बैठे हैं। धर्मदास जी ने सोचा कि मैं तो

उन महामण्डलेश्वरों से मिलकर आया हूँ। जिनके पास कई सैंकड़ों भक्त दर्शनार्थ बैठे रहते हैं। इस छोटे साधु से क्या मिलना? परन्तु अपने आप मन में आया कि कुछ देर विश्राम करना है, यहीं कर लेता हूँ। फिर सोचा कि प्रश्न करता हूँ। पूछाः- हे महात्मा! जी परमात्मा कैसा है? साधु ने उत्तर दिया कि मैं ही परमात्मा हूँ। धर्मदास जी चुप हो गए, सोचा यह तो मजाक कर रहा है। यह तो सन्त भी नहीं है। धीरे-धीरे सर्व व्यक्ति चले गए। जब धर्मदास जी चलने लगे परमात्मा बोले कि हे महात्मा! क्या आपके मण्डलेश्वरों ने नहीं बताया कि परमात्मा कैसा है? धर्मदास जी ने आश्चर्य से देखा कि इस साधु को कैसे पता कि मैं कहाँ-कहाँ भटका हूँ? उसी समय परमात्मा ने वही जिन्दा बाबा वाला रुप बना लिया। धर्मदास जी चरणों में गिरकर बिलख-बिलखकर रोने लगा तथा कहा कि हे भगवन! किसी के पास ज्ञान नहीं है। मुझ पापी अवगुण हारे को क्षमा करो महाराज! मैंने बड़ी भारी भूल की है। आपने संष्टि रचना का ज्ञान जो बताया है, उसके सामने सर्व सन्त का ज्ञान ऐसा है जैसे सूरज के सामने दीपक, सब ऊवा-बाई बकते हैं। परमेश्वर ने धर्मदास जी से कहा कि आपने जिन वेदों के पूर्ण विद्वान से प्रश्न किया था कि ''परमात्मा कैसा है? उत्तर मिला कि परमात्मा निराकार है। आपने प्रश्न किया था कि क्या परमात्मा देखा जा सकता है? उस अज्ञानी का उत्तर था कि ''जब परमात्मा निराकार है तो उसे देखने का प्रश्न ही नहीं है। परमात्मा का प्रकाश देखा जा सकता है।''

विचार करो धर्मदास! यह विचार तो ऐसे व्यक्ति के हैं जैसे किसी नेत्रहीन से कोई प्रश्न करे कि सूर्य कैसा है? उत्तर मिला कि सूर्य निराकार है। फिर प्रश्न किया कि क्या सूर्य को देखा जा सकता है? उत्तर मिले कि सूर्य को नहीं देखा जा सकता, सूर्य का प्रकाश देखा जाता है। उस नेत्रहीन से पूछें कि सूर्य बिना प्रकाश किसका देखा जा सकता है? इसी प्रकार अध्यात्म ज्ञान नेत्रहीन अर्थात् पूर्ण अज्ञानी सन्त ऐसी व्याख्या किया करते हैं कि परमात्मा तो निराकार है, उसका प्रकाश कैसे देखा जा सकता है? परमात्मा का ही तो प्रकाश होगा। धर्मदास जी ने कहा कि हे महात्मा जी! यह विचार तो मेरे दिमाग में भी नहीं आया। आप जी के दिव्य तर्क से मेरी आँखें खुल गई। जितने भी महामण्डलेश्वर मिले हैं, वे सर्व महाअज्ञानी मिले हैं। हे जिन्दा महात्मा जी! यदि मैं आपके ज्ञान को सुनने के पश्चात् यदि इन मूर्खों से नहीं मिलता तो मेरा भ्रम निवारण कभी नहीं होता, चाहे आप जी कितने ही प्रमाण दिखाते और बताते।

प्रश्न (धर्मदास) :- हे जिन्दा! आप नाराज न होना। मेरे मन में एक शंका है कि क्या भगवान विष्णु जी की भक्ति अच्छी नहीं?

उत्तर (जिन्दा महात्मा जी का) :- हे धर्मदास! श्रीमद् भगवत् गीता अध्याय 2 श्लोक 46 में प्रमाण है कि गीता ज्ञान दाता ने कहा हे अर्जुन! बहुत बड़े जलाशय (झील) की प्राप्ति के पश्चात् छोटे जलाशय में व्यक्ति का कितना प्रयोजन रह जाता है। इसी प्रकार पूर्ण ज्ञान और पूर्ण परमात्मा की भक्ति विधि व होने वाले लाभ का ज्ञान होने के पश्चात् अन्य ज्ञानों तथा छोटे भगवानों में उतनी ही आस्था रह जाती है जितनी बड़े जलाशय की प्राप्ति के पश्चात् छोटे जलाशय में रह जाती है। छोटे जलाशय का जल अच्छा है, परन्तु पर्याप्त नहीं है। यदि एक वर्ष वर्षा न हो तो छोटे जलाशय का जल सूख जाता है तथा उस पर आश्रित व्यक्ति भी जल के अभाव से कष्ट उठाते हैं, त्राहि-त्राहि मच जाती है। परन्तु बड़े जलाशय (झील) का जल यदि 10 वर्ष भी वर्षा न हो तो भी समाप्त नहीं होता। जिस व्यक्ति को वह बड़ा जलाशय मिल जाएगा तो वह तुरन्त छोटे जलाशय (जोहड़ = तालाब) को छोड़कर बड़े जलाशय के किनारे जा बसेगा। जिस समय गीता ज्ञान सुनाया गया, उस समय सर्व व्यक्ति तालाबों के जल पर ही आश्रित थे। इसलिए यह उदाहरण दिया था, इसी प्रकार

श्री विष्णु सतगुण की भक्ति भले ही अच्छी है, परन्तु पूर्ण मोक्षदायक नहीं है। श्री विष्णु जी भी नाशवान हैं। इनका भी जन्म-मत्यु होता है। फिर साधक अमर कैसे हो सकता है? इसलिए पूर्ण मोक्ष अर्थात् अमर होने के लिए अमर परमात्मा की ही भक्ति करनी पड़ेगी।

प्रश्न :- हे जिन्दा महात्मा जी! मैंने आपके ऊपर अविश्वास किया। मैं महापापी हूँ मुझे क्षमा करना।

उत्तर (जिन्दा बाबा जी का) :- हे धर्मदास! मैंने ही आपके मन में यह प्रेरणा की थी। यदि आप उन अपने धर्मगुरुओं की तलाशी न लेते तो आप कभी मेरी बातों पर विश्वास नहीं करते। रह-रहकर तेरे मन को यही बात कचोटती रहती कि ऐसा नहीं हो सकता कि हिन्दू धर्म के किसी महर्षि मण्डलेश्वर व सन्त-महन्त को तत्त्वज्ञान नहीं। अब आप मेरी बातों पर विश्वास करोगे। विचार करो धर्मदास! जब गीता ज्ञान दाता गीता अध्याय 4 श्लोक 32 व 34 में कहता है कि जो ज्ञान परम अक्षर ब्रह्म (परमेश्वर) अपने मुख से सुनाता है, वह तत्त्वज्ञान है। (गीता अध्याय 4 श्लोक 32) उस ज्ञान को तू तत्त्वदर्शी सन्तों के पास जाकर समझ। (गीता अध्याय 4 श्लोक 34) इससे सिद्ध हुआ कि गीता ज्ञान देने वाले परमात्मा को ही तत्त्वज्ञान नहीं तो गीता पाठकों व इन प्रभु के उपासकों को ज्ञान कैसे हो सकता है?

गीता अध्याय 2 श्लोक 53 में कहा कि हे अर्जुन! भिन्न-भिन्न प्रकार से भ्रमित करने वाले वचनों से हटकर तेरी बुद्धि एक तत्त्वज्ञान पर स्थिर हो जाएगी, तब तो तू योग (भक्ति) को प्राप्त होगा। भावार्थ है कि तब तू भक्त बनेगा। इसलिए मैंने धर्मदास तेरे को उन सन्तों-मण्डलेश्वरों के पास जाने के लिए प्रेरित किया था। अब तू योग को प्राप्त होगा। भक्त बन सकेगा।

प्रश्न (धर्मदास जी का) :- क्या पूर्ण मोक्ष के लिए भगवान विष्णु जी तथा भगवान शंकर जी की पूजा को छोड़ना पड़ेगा?

उत्तर (जिन्दा बाबा जी का) :- इन प्रभुओं को नहीं छोड़ना, इनकी पूजा छोड़नी होगी।

प्रश्न (धर्मदास जी का) :- हे जिन्दा! मैं समझा नहीं। इन विष्णु और शंकर प्रभुओं को नहीं छोड़ना और पूजा छोड़नी पड़ेगी। मेरी संकीर्ण बुद्धि है। मैं महाअज्ञानी प्राणी हूँ। कप्या विस्तार से बताने (समझाने) की कपा करें।

उत्तर :- (जिन्दा महात्मा जी का) : हे धर्मदास जी! आप इनकी साधना शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण कर रहे हो। जिससे आपजी को लाभ नहीं मिल रहा। इन देवताओं से लाभ लेने के साधना के मन्त्र मेरे पास हैं। जैसे भैंसा है, उसको भैंसा-भैंसा करते रहो, वह आपकी ओर नहीं देखेगा। उसका एक विशेष मन्त्र हुर्र-हुर्र, उसको सुनते ही वह तुरंत प्रभावित होता है और आवाज लगाने वाले की ओर खींचा चला आता है। इसी प्रकार इन सर्व आदरणीय देवताओं के निज मन्त्र हैं। जिनसे वे पूर्ण लाभ तथा तुरंत लाभ देते हैं। प्रिय पाठको! वही मन्त्र मेरे पास (संत रामपाल दास के पास) हैं जो परमेश्वर जी ने गुरू जी के माध्यम से मुझे दिए हैं, आओ और प्राप्त करो।

जैसा कि आपको बताया था (प्रश्न नं. 36 के उत्तर में वर्णन किया था) कि यह संसार एक वक्ष जानो। परम अक्षर पुरुष इसकी जड़ें मानो, अक्षर पुरुष तना जानो, क्षर पुरुष मोटी डार तथा तीनों देवता (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिवजी) इस संसार रुपी वक्ष की शाखाऐं जानों और पात रुप संसार।

यदि आप कहीं से आम का पौधा लेकर आए हो तो गढ़ढ़ा खोदकर उसकी जड़ों को उस गढ़ढ़े में मिट्‌टी में दबाओगे और जड़ों की सिंचाई करोगे। तब वह आम का पेड़ बनेगा और उस वक्ष की शाखाओं को फल लगेंगे। इसलिए वक्ष की शाखाओं को तोड़ा नहीं जा सकता। परन्तु इनको

जड़ के स्थान पर गढ़्ढ़े में मिट्टी में दबाकर इनकी सिंचाई नहीं की जाती। ठीक इसी प्रकार संसार रुपी वक्ष की जड़ अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म को ईष्ट रुप में प्रतिष्ठित करके पूजा करने से शास्त्रानुकूल साधना होती है जो परम लाभ देने वाली होती है। इस प्रकार किए गए भक्ति कर्मों का फल यही तीनों देवता (संसार वक्ष की शाखाऐं) ही कर्मानुसार प्रदान करते हैं। इसलिए इनकी पूजा छोड़नी होती है। लेकिन इनको छोड़ा (तोड़ा) नहीं जा सकता। यही प्रमाण श्रीमद्भगवत् गीता अध्याय 3 श्लोक 8 से 15 तक में भी है। कहा है कि हे अर्जुन! तू शास्त्रविहित कर्म कर अर्थात् शास्त्रों में जैसे भक्ति करने को कहा है, वैसा भक्ति कार्य कर। यदि घर त्यागकर जंगलों में चला गया अर्थात् तू कर्म सन्यासी हो गया या एक स्थान पर बैठकर हठपूर्वक साधना करने लगेगा तो तेरा शरीर पोषण का निर्वाह भी नहीं होगा। इसलिए कर्म न करने की अपेक्षा कर्म करते-करते भक्ति कर्म करना श्रेष्ठ है। (गीता अध्याय 3 श्लोक 8)

❖ जो साधक शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण करते हैं अर्थात् शास्त्रानुकूल भक्ति कर्मों के अतिरिक्त दूसरे कर्मों में लगा हुआ मनुष्य समुदाय कर्मों के बन्धन में बंधकर जन्म-मरण के चक्र में सदा रहता है। इसलिए हे कुन्तीपुत्र अर्जुन! शास्त्रविरुद्ध भक्ति कर्म जो कर रहा है, उससे आसक्ति रहित होकर शास्त्रानुकूल भक्ति कर्म कर। (गीता अध्याय 3 श्लोक 9)

❖ संसार की रचना करके प्रजापति (कुल के मालिक) ने सर्व प्रथम मनुष्यों की रचना करके साथ-साथ यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों की जानकारी का ज्ञान देते हुए इनसे कहा था कि तुम लोग इस तरह बताए शास्त्रानुकूल कर्मों द्वारा वद्धि को प्राप्त होओ। इस प्रकार शास्त्रानुकूल की गई भक्ति तुम लोगों को इच्छित भोग प्राप्त कराने वाली हो। (गीता अध्याय 3 श्लोक 10)

❖ इस प्रकार शास्त्रानुकूल भक्ति द्वारा अर्थात् संसार रुपी वक्ष की जड़ों (मूल अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म) की सिंचाई अर्थात् पूजा करके देवताओं अर्थात् संसार रुपी वक्ष की तीनों गुण रुपी शाखाओं (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिवजी) को उन्नत करो। वे देवता (संसार वक्ष की शाखा तीनों देवता) आपको कर्मानुसार फल देकर उन्नत करें। इस प्रकार एक-दूसरे से उन्नत करके परम कल्याण अर्थात् पूर्णमोक्ष को प्राप्त हो जाओगे (गीता अध्याय 3 श्लोक 11)

❖ शास्त्रविधि अनुसार किए गए भक्ति कर्मों अर्थात् यज्ञों द्वारा बढ़ाए हुए देवता अर्थात् संसार रुपी वक्ष की जड़ अर्थात् मूल मालिक (परम अक्षर ब्रह्म) को ईष्ट रुप में प्रतिष्ठित करके भक्ति कर्म से बढ़ी हुई शाखाएं (तीनों देवता) तुम लोगों को बिना माँगे ही कर्मानुसार इच्छित भोग निश्चय ही देते रहेंगे। जैसे आम के पौधे की जड़ की सिंचाई करने से पेड़ बनकर शाखाएं उन्नत हो गई। फिर उन शाखाओं को अपने आप फल लगेंगे। झड़-झड़कर गिरेंगे, व्यक्ति को जो कर्मानुसार धन प्राप्त होता है, वह उपरोक्त विधि से होता है। यदि कोई व्यक्ति उन देवताओं (शाखाओं) द्वारा दिए धन में से पुनः दान-पुण्य नहीं करता अर्थात् जो पुनः शास्त्रानुकूल साधना नहीं करता, केवल अपना ही पेट भरता है, स्वयं ही भोगता रहता है। वह तो परमात्मा का चोर ही है। (गीता अध्याय 3 श्लोक 12)

❖ शास्त्रानुकूल भक्ति की विधि में सर्वप्रथम परमात्मा को भोग लगाया जाता है। भण्डारा करना होता है। पहले परम अक्षर ब्रह्म को ईष्ट रुप में पूजकर भोग लगाकर शेष भोजन को भक्तों में बाँटा जाता है। उस बचे हुए अन्न को सत्संग में उपस्थित अच्छी आत्माएं ही खाती हैं क्योंकि पुण्यात्माएं ही परमात्मा के लिए समय निकालकर धार्मिक अनुष्ठानों में शामिल होते हैं। इसलिए कहा है कि उस यज्ञ से बचे हुए अन्न को खाने वाले सन्तजन सब पापों से मुक्त हो जाते हैं। जो पापी लोग होते हैं, जो तत्त्वदर्शी सन्त के सत्संग में नहीं जाते, उनको ज्ञान नहीं होता। वे पापात्मा

अपना शरीर पोषण करने के लिए ही भोजन पकाते हैं, वे तो पाप को ही खाते हैं क्योंकि भोजन खाने से पहले हम भक्त-सन्त सब परम अक्षर ब्रह्म को भोग लगाते हैं। जिस से सारा भोजन पवित्र प्रसाद बन जाता है, जो ऐसा नहीं करते, वे परमात्मा के चोर हैं। भगवान को भोग न लगा हुआ भोजन पाप का भोजन होता है। इसलिए कहा है जो धर्म-कर्म शास्त्रानुकूल नहीं करते, वे पाप के भागी होते हैं। (गीता अध्याय 3 श्लोक 13)

❖ सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं। अन्न वर्षा से होता है। वर्षा यज्ञ अर्थात् शास्त्रानुकूल धार्मिक अनुष्ठान से होती है। यज्ञ अर्थात् धार्मिक अनुष्ठान शास्त्रानुकूल कर्मों से होते हैं। (गीता अध्याय 3 श्लोक 14)

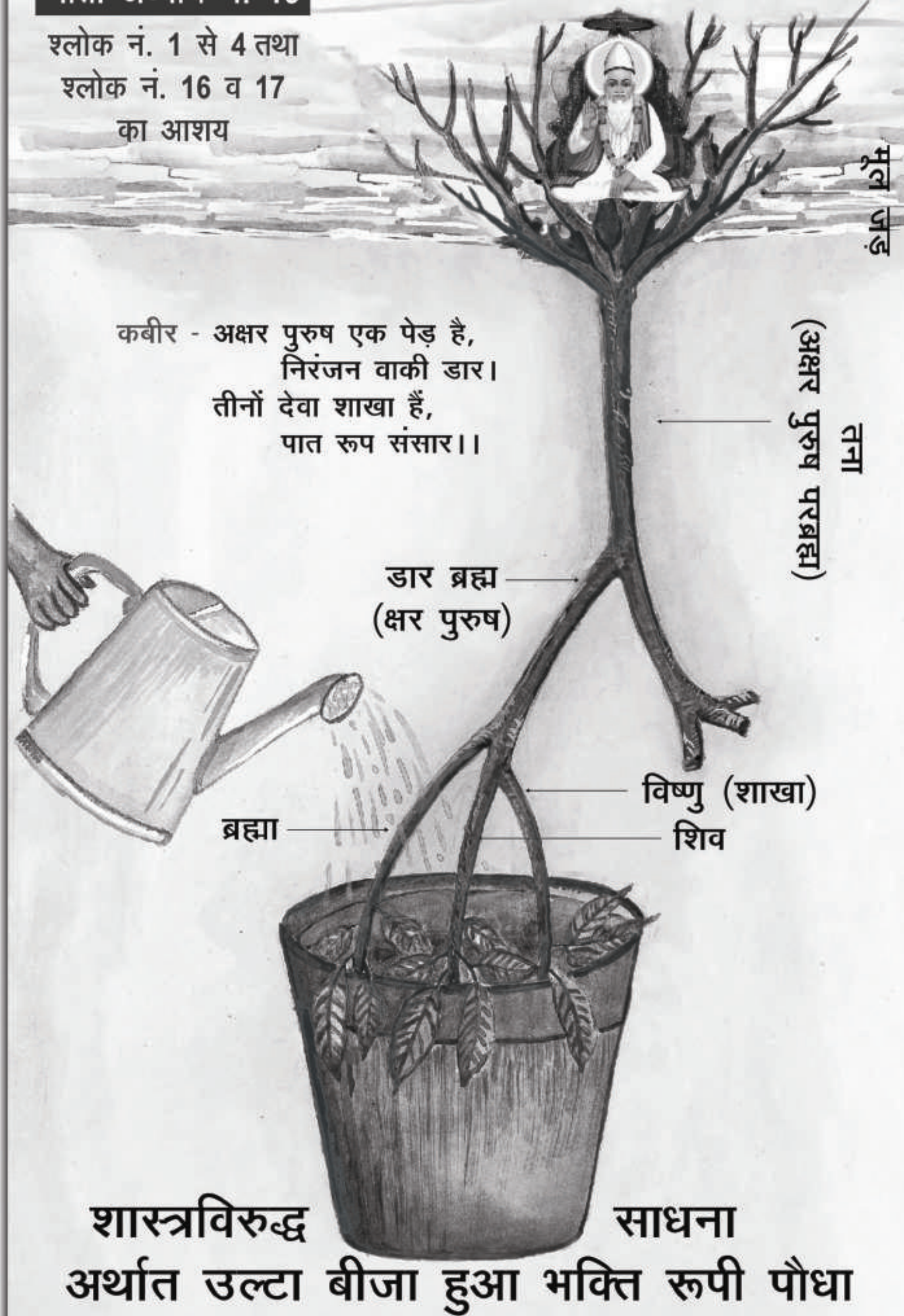
❖ कर्म तो ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरुष से उत्पन्न हुए हैं क्योंकि जहाँ सर्व प्राणी सनातन परम धाम में रहते थे। वहाँ पर बिना कर्म किए सर्व सुख व पदार्थ उपलब्ध थे। यहाँ के सर्व प्राणी अपनी गलती से क्षर पुरुष के साथ आ गए। अब सबको कर्म का फल ही प्राप्त होता है। कर्म करके ही निर्वाह होता है। इसलिए कहा है कि कर्म को ब्रह्म (क्षर पुरुष) से उत्पन्न जान और ब्रह्म को अविनाशी परमात्मा से उत्पन्न जान। (अधिक जानकारी के लिए पढ़ें सष्टि रचना इसी पुस्तक के पष्ठ नं. 603 पर।)

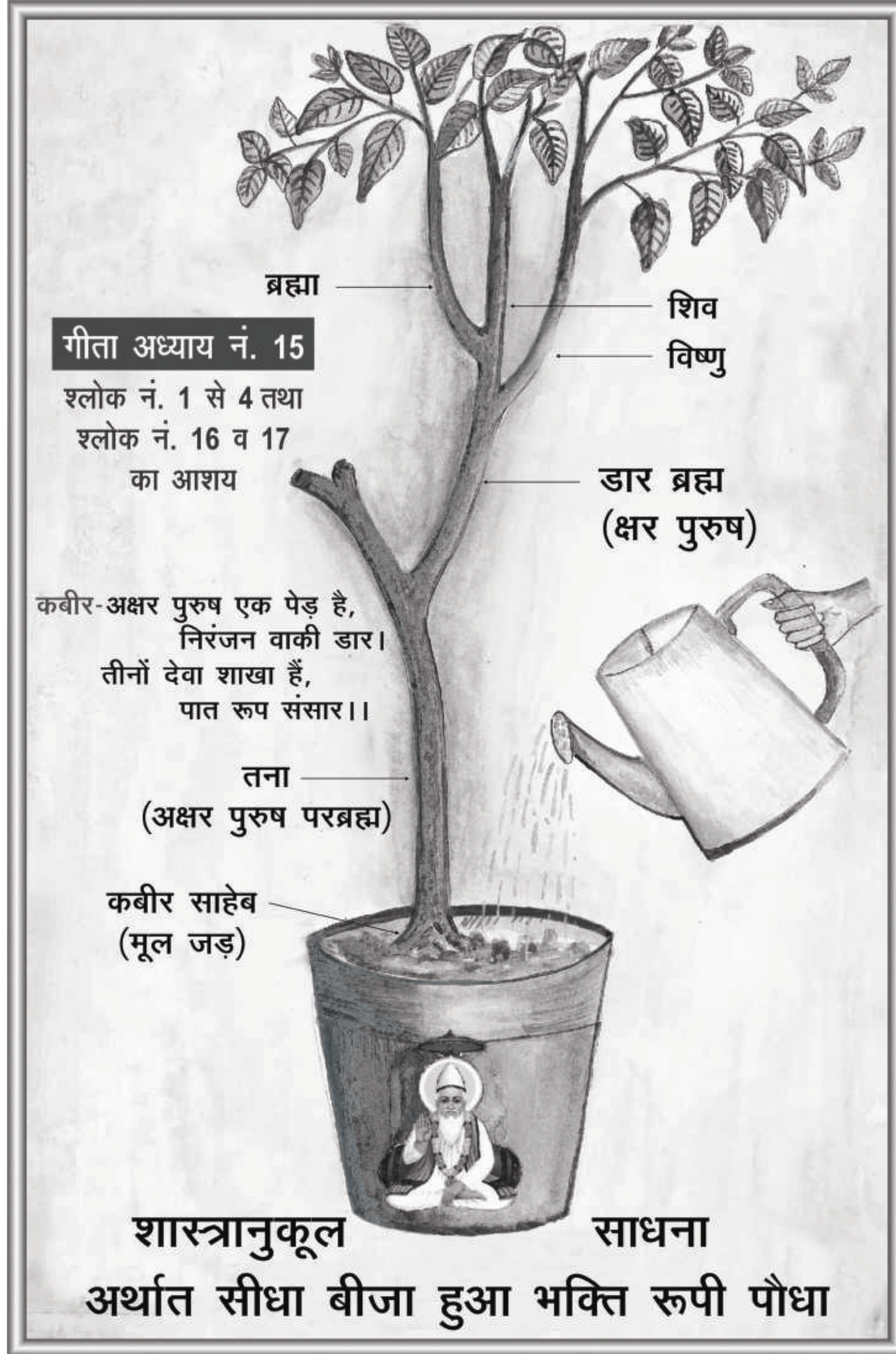
(नोट : इस श्लोक में ''अक्षर'' शब्द का अर्थ अविनाशी परमात्मा ठीक है। परन्तु जहाँ क्षर पुरुष, अक्षर पुरुष तथा परम अक्षर पुरुष का वर्णन है, वहाँ अक्षर पुरुष व क्षर पुरुष दोनों नाशवान कहे हैं। वहाँ पर अक्षर का अर्थ वही ठीक है। गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में वर्णन है, यहाँ 'अक्षर' का अर्थ अविनाशी परमात्मा है क्योंकि सष्टि रचना से स्पष्ट होता है कि ब्रह्म की उत्पत्ति सत्यपुरुष (अविनाशी परमात्मा) ने की थी।) इससे सिद्ध हुआ कि (सर्वगतम् ब्रह्म) अर्थात् जिस परमात्मा की पहुँच सर्व ब्रह्माण्डों में है, जो सर्व का मालिक है, वह परमात्मा सदा ही यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों में प्रतिष्ठित है। भावार्थ है कि परम अक्षर ब्रह्म को ईष्टदेव रुप में प्रतिष्ठित करके धार्मिक अनुष्ठान अर्थात् यज्ञ करने से शास्त्रविधि अनुसार कर्म करने से साधक को भक्ति लाभ मिलता है, जिससे मोक्ष प्राप्त होता है। देखें संसार रुपी पौधे का चित्र इसी पुस्तक के पष्ठ 45 पर।

देखें यह चित्र पष्ठ 44 पर, इसमें पौधे की शाखाओं को गढ्ढे में जमीन में लगाकर दिखाया गया है कि जो तीनों देवों (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु, तमगुण शिव) में से किसी की भी पूजा करता है, वह शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण कर रहा है जो गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में अनुचित तथा व्यर्थ बताया है। जिसने सर्वगतम् ब्रह्म अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म की पूजा नहीं की, उसको ईष्ट रुप में नहीं पूजा, जिस कारण से उस साधक की साधना व्यर्थ है। शाखाओं को सींचने से पौधा नष्ट हो जाता है। अन्य देवताओं की पूजा करना गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15, 20-23 तथा गीता अध्याय 9 श्लोक 20 से 23 में मना किया हुआ है।

''देखें यह चित्र'' इसी पुस्तक के पष्ठ 45 पर सीधा लगाया गया पौधा जो शास्त्रविधि अनुसार साधना है, यही मोक्षदायक है। यही प्रमाण गीता ग्रन्थ में है।

इसलिए हे धर्मदास! श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिवजी को नहीं छोड़ना है। इनकी पूजा ईष्ट रुप में करते हो, वह छोड़नी है। तभी भक्त का पूर्ण मोक्ष सम्भव है।


गीता अध्याय नं. 15
श्लोक नं. 1 से 4 तथा
श्लोक नं. 16 व 17
का आशय
पूर्ण ब्रह्म कबीर साहेब
मूल जड़
कबीर - अक्षर पुरुष एक पेड़ है,
निरंजन वाकी डार।
तीनों देवा शाखा हैं,
पात रूप संसार।।
तना
(अक्षर पुरुष परब्रह्म)
डार ब्रह्म
(क्षर पुरुष)
विष्णु (शाखा)
ब्रह्मा
शिव
शास्त्रविरुद्ध साधना
अर्थात उल्टा बीजा हुआ भक्ति रूपी पौधा


ब्रह्मा
शिव
विष्णु
गीता अध्याय नं. 15
श्लोक नं. 1 से 4 तथा
श्लोक नं. 16 व 17
का आशय
डार ब्रह्म
(क्षर पुरुष)
कबीर-अक्षर पुरुष एक पेड़ है,
निरंजन वाकी डार।
तीनों देवा शाखा हैं,
पात रूप संसार।।
तना
(अक्षर पुरुष परब्रह्म)
कबीर साहेब
(मूल जड़)
शास्त्रानुकूल साधना
अर्थात सीधा बीजा हुआ भक्ति रूपी पौधा

प्रश्न :- (धर्मदास जी का): हे जिन्दा! आप जी ने तीनों देवताओं (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिवजी) की भक्ति करने वालों की दशा तो श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15, 20 से 23 तथा अध्याय 9 श्लोक 23 में प्रत्यक्ष प्रमाणित कर दिया कि तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) की भक्ति करने वाले राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए मनुष्यों में नीच, दूषित कर्म करने वाले मूर्ख मुझ (गीता ज्ञान दाता ब्रह्म) को भी नहीं भजते। अन्य देवताओं की भक्ति पूजा करने वालों का सुख समय (स्वर्ग समय) क्षणिक होता है। स्वर्ग की प्राप्ति करके शीघ्र ही पथ्वी पर जन्म धारण करते हैं। हे महात्मा जी! कपया कोई संसार में हुए बर्ताव से ऐसा प्रकरण सुनाइए जिससे आप जी की बताई बातों की सत्यता का प्रमाण मिले।

उत्तर :- (जिन्दा जगदीश का) :- 1. रजगुण ब्रह्मा के उपासकों का चरित्र : एक हिरण्यकश्यप ब्राह्मण राजा था। किसी कारण उसको भगवान विष्णु (सतगुण) से ईर्ष्या हो गई। उस राजा ने रजगुण ब्रह्मा जी देवता को भक्ति करके प्रसन्न किया। ब्रह्मा जी ने कहा कि पुजारी! माँगो क्या माँगना चाहते हो? हिरण्यकश्यप ने माँगा कि सुबह मरूँ न शाम मरुँ, बाहर मरूँ न भीतर मरूँ, दिन मरूँ न रात मरुँ, बारह मास में न मरुँ, न आकाश में मरुँ, न धरती पर मरुँ। ब्रह्माजी ने कहा तथास्तु। इसके पश्चात् हिरण्यकश्यप ने अपने आपको अमर मान लिया और अपना नाम जाप करने को कहने लगा। जो विष्णु का नाम जपता, उसको मार देता। उसका पुत्र प्रहलाद विष्णु जी की भक्ति करता था। उसको कितना सताया था। हे धर्मदास! कथा से तो आप परिचित हैं। भावार्थ है कि रजगुण ब्रह्मा का भक्त राक्षस कहलाया, कुत्ते वाली मौत मारा गया।

2. तमगुण शिवजी के उपासकों का चरित्र : लंका के राजा रावण ने तमगुण शिव की भक्ति की थी। उसने अपनी शक्ति से 33 करोड़ देवताओं को कैद कर रखा था। फिर देवी सीता का अपहरण कर लिया। इसका क्या हश्र हुआ, आप सब जानते हैं। तमगुण शिव का उपासक रावण राक्षस कहलाया, सर्वनाश हुआ। निंदा का पात्र बना।

❖ अन्य उदाहरण :- आप जी को भस्मासुर की कथा का तो ज्ञान है ही। भगवान शिव (तमोगुण) की भक्ति भस्मागिरी करता था। वह बारह वर्षों तक शिव जी के द्वार के सामने ऊपर को पैर नीचे को सिर (शीर्षासन) करके भक्ति तपस्या करता रहा। एक दिन पार्वती जी ने कहा हे महादेव! आप तो समर्थ हैं। आपका भक्त क्या माँगता है? इसे प्रदान करो प्रभु। भगवान शिव ने भस्मागिरी से पूछा बोलो भक्त क्या माँगना चाहते हो। मैं तुझ पर अति प्रसन्न हूँ। भस्मागिरी ने कहा कि पहले वचनबद्ध हो जाओ, तब माँगूंगा। भगवान शिव वचनबद्ध हो गए। तब भस्मागिरी ने कहा कि आपके पास जो भस्मकण्डा(भस्मकड़ा) है, वह मुझे प्रदान करो। शिव प्रभु ने वह भस्मकण्डा भस्मागिरी को दे दिया। कड़ा हाथ में आते ही भस्मागिरी ने कहा कि होजा शिवजी होशियार! तेरे को भस्म करुँगा तथा पार्वती को पत्नी बनाउँगा। यह कहकर अभद्र ढ़ंग से हँसा तथा शिवजी को मारने के लिए उनकी ओर दौड़ा। भगवान शिव उस दुष्ट का उद्देश्य जानकर भाग निकले। पीछे-पीछे पुजारी आगे-आगे ईष्टदेव शिवजी (तमगुण) भागे जा रहे थे।

विचार करें धर्मदास! यदि आपके देव शिव जी अविनाशी होते तो मत्यु के भय से नहीं डरते। आप इनको अविनाशी कहा करते थे। आप इन्हें अन्तर्यामी भी कहते थे। यदि भगवान शिव अन्तर्यामी होते तो पहले ही भस्मागिरी के मन के गन्दे विचार जान लेते। इससे सिद्ध हुआ कि ये तो अन्तर्यामी भी नहीं हैं।

जिस समय भगवान शिव जी आगे-आगे और भस्मागिरी पीछे-पीछे भागे जा रहे थे, उस समय

भगवान शिव ने अपनी रक्षा के लिए परमेश्वर को पुकारा। उसी समय ''परम अक्षर ब्रह्म'' जी पार्वती का रुप बनाकर भस्मागिरी दुष्ट के सामने खड़े हो गए तथा कहा हे भस्मागिरी! आ मेरे पास बैठ। भस्मागिरी को पता था कि अब शिवजी निकट स्थान पर नहीं रुकेंगे। भस्मागिरी तो पार्वती के लिए ही तो सर्व उपद्रव कर रहा था। हे धर्मदास! आपको सर्व कथा का पता है। पार्वती रुप में परमात्मा ने भस्मागिरी को गण्डहथ नाच नचाकर भस्म किया। तमोगुण शिव का पुजारी भस्मागिरी अपने गन्दे कर्म से भस्मासुर अर्थात् भस्मा राक्षस कहलाया।

इसलिए इन तीनों देवों के पुजारियों को राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए मनुष्यों में नीच दूषित कर्म करने वाले मूर्ख कहा है।

3. अब सतगुण श्री विष्णु जी के पुजारियों की कथा सुनाता हूँ।

❖ एक समय हरिद्वार में हर की पोड़ियों पर कुंभ का मेला लगा। उस अवसर पर तीनों गुणों के उपासक अपने-अपने समुदाय में एकत्रित हो जाते है। गिरी, पुरी, नागा-नाथ ये भगवान तमोगुण शिव के उपासक होते हैं तथा वैष्णव सतगुण भगवान विष्णु जी के उपासक होते हैं। हर की पोड़ियों पर प्रथम स्नान करने पर दो समुदायों ''नागा तथा वैष्णवों'' का झगड़ा हो गया। लगभग 25 हजार त्रिगुण (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) के पुजारी लड़कर मर गये, कत्लेआम कर दिया। तलवारों, छुरों, कटारी से एक-दूसरे की जान ले ली। सूक्ष्मवेद में कहा है किः-

तीर तुपक तलवार कटारी, जमधड़ जोर बधावैं हैं। हर पैड़ी हर हेत नहीं जाना, वहाँ जा तेग चलावैं हैं।।
काटैं शीश नहीं दिल करुणा, जग में साध कहावैं हैं। जो जन इनके दर्शन कूं जावैं, उनको भी नरक पठावैं हैं।।

हे धर्मदास! उपरोक्त सत्य घटनाओं से सिद्ध हुआ कि रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिवजी की पूजा करने वालों को गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 में राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए मनुष्यों में नीच दूषित कर्म करने वाले मूर्ख कहा है।

❖ परमेश्वर जिन्दा जी के मुख कमल से उपरोक्त कथा सुनकर धर्मदास जी का सिर फटने को हो गया। चक्कर आने लगे। हिम्मत करके धर्मदास बोला हे प्रभु! आपने तो मुझ ज्ञान के अँधे को आँखें दे दी दाता। उपरोक्त सर्व कथायें हम सुना तथा पढ़ा करते थे परन्तु कभी विचार नहीं आया कि हम गलत रास्ते पर चल रहे हैं। आपका सौ-सौ बार धन्यवाद। आप जी ने मुझ पापी को नरक से निकाल दिया प्रभु!

प्रश्न :- (धर्मदास जी का) : हे जिन्दा महात्मा! आपने बताया और गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में मैंने भी आँखों देखा जिसमें गीता ज्ञान दाता ब्रह्म ने अपनी साधना से होने वाली गति को अनुत्तम अर्थात् घटिया बताया है। उसको भी इसी तरह स्पष्ट करने की कंपया करें। कोई कथा प्रसंग सुनाएं।

उत्तर :- (जिन्दा बाबा वेशधारी परमेश्वर का) :

❖ गीता अध्याय 2 श्लोक 12, गीता अध्याय 4 श्लोक 5 तथा 9, गीता अध्याय 10 श्लोक 2 में गीता ज्ञान दाता (ब्रह्म) ने कहा है कि हे अर्जुन! मेरे और तेरे बहुत से जन्म हो चुके हैं, तू नहीं जानता मैं जानता हूं। श्रीमद्भगवत् गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि तत्त्वदर्शी सन्त से तत्त्वज्ञान प्राप्त करके परमेश्वर के उस परमपद की खोज करनी चाहिए, जहाँ जाने के पश्चात् साधक लौटकर फिर संसार में कभी नहीं आते। जिस परमेश्वर से संसार रुपी वंक्ष की प्रवंत्ति विस्तार को प्राप्त हुई है अर्थात् जिस परमेश्वर ने सर्व संसार की उत्पत्ति की है। उसी परमेश्वर की भक्ति कर। फिर गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में गीता ज्ञान दाता ने कहा कि हे अर्जुन! तू सर्वभाव से उस परमेश्वर की शरण में जा, उस परमेश्वर की कंपा से ही तू परमशांति तथा सनातन

परमधाम को प्राप्त होगा। हे धर्मदास! जब तक जन्म-मरण रहेगा, तब तक परमशान्ति नहीं हो सकती और न ही सनातन परम धाम प्राप्त हो सकता। वास्तव में परमगति उसको कहते हैं जिसमें जन्म-मरण सदा के लिए समाप्त हो जाए जो ब्रह्म साधना से कभी नहीं हो सकती। इसलिए गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में गीता ज्ञान दाता ने बताया है कि जो ज्ञानी आत्मा हैं, मेरे विचार में सब नेक हैं। परन्तु वे सब मेरी अनुत्तम (घटिया) गति में ही लीन हैं क्योंकि वे मेरी (ब्रह्म की) भक्ति कर रहे हैं। ब्रह्म की साधना का ''ॐ'' मन्त्र है। इससे ब्रह्म लोक प्राप्त होता है। गीता अध्याय 8 श्लोक 16 में स्पष्ट है कि ब्रह्मलोक में गए हुए साधक भी पुनः लौटकर संसार में आते हैं। इसलिए उनको परमशान्ति नहीं हो सकती, सनातन परम धाम प्राप्त नहीं हो सकता। वेदों में वर्णित साधना से परमात्मा प्राप्ति नहीं होती। कुछ सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं जिनके द्वारा ऋषिजन चमत्कार करके किसी को हानि करके प्रसिद्ध हो जाते हैं। अंत में पाप के भागी होकर चौरासी लाख प्रकार के प्राणियों के शरीरों में कष्ट उठाते रहते हैं। इसलिए ब्रह्म साधना से होने वाली गति अर्थात् उपलब्धि अनुत्तम (घटिया) कही है।

❖ कथा प्रसंग : गीता ज्ञान दाता (ब्रह्म) ने गीता अध्याय 7 श्लोक 16-17 में बताया है कि मेरी भक्ति चार प्रकार के भक्त करते हैं - 1. आर्त (संकट निवारण के लिए) 2. अर्थार्थी (धन लाभ के लिए), 3. जिज्ञासु (जो ज्ञान प्राप्त करके वक्ता बन जाते हैं) और 4. ज्ञानी (केवल मोक्ष प्राप्ति के लिए भक्ति करने वाले)। इनमें से तीन को छोड़कर चौथे ज्ञानी को अपना पक्का भक्त गीता ज्ञान दाता ने बताया है।

❖ ज्ञानी की विशेषता :- ज्ञानी वह होता है जिसने जान लिया है कि मनुष्य जीवन केवल मोक्ष प्राप्ति के लिए ही प्राप्त होता है। उसको यह भी ज्ञान होता है कि पूर्ण मोक्ष के लिए केवल एक परमात्मा की भक्ति करनी चाहिए। अन्य देवताओं (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिवजी) की भक्ति से पूर्ण मोक्ष नहीं होता। उन ज्ञानी आत्माओं को गीता अध्याय 4 श्लोक 34 तथा यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 10 में वर्णित तत्त्वदर्शी सन्त न मिलने के कारण उन्होंने वेदों से स्वयं निष्कर्ष निकाल लिया कि ''ब्रह्म'' समर्थ परमात्मा है, ओम् (ॐ) इसकी भक्ति का मन्त्र है। इस साधना से ब्रह्मलोक प्राप्त हो जाता है। यही मोक्ष है।

ज्ञानी आत्माओं ने परमात्मा प्राप्ति के लिए हठयोग किया। एक स्थान पर बैठकर घोर तप किया तथा ओम् (ॐ) नाम का जाप किया। जबकि वेदों व गीता में हठ करने, घोर तप करने वाले मूर्ख दम्भी तथा राक्षस बताए हैं। (गीता अध्याय 3 श्लोक 4 से 9 तथा गीता अध्याय 17 श्लोक 1 से 6)। इनको हठयोग करने की प्रेरणा कहाँ से हुई? श्री देवीपुराण (गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित सचित्र मोटा टाईप) के तीसरे स्कंद में लिखा है कि ब्रह्मा जी ने अपने पुत्र नारद को बताया कि जिस समय मेरी उत्पत्ति हुई, मैं कमल के फूल पर बैठा था। आकाशवाणी हुई कि तप करो-तप करो। मैंने एक हजार वर्ष तक तप किया।

हे धर्मदास! ब्रह्माजी को वेद तो बाद में सागर मन्थन में मिले थे। उनको पढ़ा तो यजुर्वेद अध्याय 40 के मन्त्र 15 में 'ओम्'' नाम मिला। उसका जाप तथा आकाशवाणी से सुना हठयोग (घोर तप) दोनों मिलाकर ब्रह्मा जी स्वयं करने लगे तथा अपनी सन्तानों (ऋषियों) को बताया। वही साधना ज्ञानी आत्मा ऋषिजन करने लगे। उन ज्ञानी आत्माओं में से एक चुणक ऋषि का प्रसंग सुनाता हूँ जिससे आपके प्रश्न का सटीक उत्तर मिल जाएगा:- एक चुणक नाम का ऋषि था। उसने हजारों वर्षों तक घोर तप किया तथा ओम् (ॐ) नाम का जाप किया। यह ब्रह्म की भक्ति है। ब्रह्म

ने प्रतिज्ञा कर रखी है कि मैं किसी साधना यानि न जप से, न तप से, न वेदों में वर्णित यज्ञों से मेरे स्वरूप के दर्शन हो सकते अर्थात् किसी को भी दर्शन नहीं दूँगा। गीता अध्याय 11 श्लोक 48 में कहा है कि हे अर्जुन! तूने मेरे जिस रुप के दर्शन किए अर्थात् मेरा यह काल रुप देखा, यह मेरा स्वरुप है। इसको न तो वेदों में वर्णित विधि से देखा जा सकता, न किसी जप से, न तप से, न यज्ञ से तथा न किसी क्रिया से देखा जा सकता। गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 7 श्लोक 24-25 में स्पष्ट किया है कि यह मेरा अविनाशी विधान है कि मैं कभी किसी को दर्शन नहीं देता, अपनी योग माया से छिपा रहता हूँ। ये मूर्ख लोग मुझे मनुष्य रूप अर्थात् कष्ण रूप में मान रहे हैं। जो सामने सेना खड़ी थी, उसकी ओर संकेत करके गीता ज्ञान दाता कह रहा था। कहने का भाव था कि मैं कभी किसी को दर्शन नहीं देता, अब तेरे ऊपर अनुग्रह करके यह अपना रूप दिखाया है।

भावार्थ :- वेदों में वर्णित विधि से तथा अन्य प्रचलित क्रियाओं से ब्रह्म प्राप्ति नहीं है। इसलिए उस चुणक ऋषि को परमात्मा प्राप्ति तो हुई नहीं, सिद्धियाँ प्राप्त हो गई। ऋषियों ने उसी को भक्ति की अन्तिम उपलब्धि मान लिया। जिसके पास अधिक सिद्धियाँ होती थी, वह अन्य ऋषियों से श्रेष्ठ माना जाने लगा। यही उपलब्धि चुणक ऋषि को प्राप्त थी।

एक मानधाता चक्रवर्ती राजा (जिसका राज्य पूरी पथ्वी पर हो, ऐसा शक्तिशाली राजा) था। उसके पास 72 अक्षौहिणी सेना थी। राजा ने अपने आधीन राजाओं को कहा कि जिसको मेरी पराधीनता स्वीकार नहीं, वे मेरे साथ युद्ध करें, एक घोड़े के गले में एक पत्र बाँध दिया कि जिस राजा को राजा मानधाता की आधीनता स्वीकार न हो, वो इस घोड़े को पकड़ ले और युद्ध के लिए तैयार हो जाए। पूरी पथ्वी पर किसी भी राजा ने घोड़ा नहीं पकड़ा। घोड़े के साथ कुछ सैनिक भी थे। वापिस आते समय ऋषि चुणक ने पूछा कि कहाँ गए थे सैनिको! उत्तर मिला कि पूरी पथ्वी पर घूम आए, किसी ने घोड़ा नहीं पकड़ा। किसी ने राजा का युद्ध नहीं स्वीकारा। ऋषि ने कहा कि मैंने यह युद्ध स्वीकार लिया। सैनिक बोले हे कंगाल! तेरे पास दाने तो खाने को हैं नहीं और युद्ध करेगा महाराजा मानधाता के साथ? ऋषि चुणक जी ने घोड़ा पकड़कर वक्ष से बाँध लिया। मानधाता राजा को पता चला तो युद्ध की तैयारी हुई। राजा ने 72 अक्षौहिणी सैना की चार टुकड़ियाँ बनाई। ऋषि पर हमला करने के लिए एक टुकड़ी 18 अक्षौहिणी (18 करोड़) सेना भेज दी । दूसरी ओर ऋषि ने अपनी सिद्धि से चार पूतलियाँ बनाई। एक पुतली छोड़ी जिसने राजा की 18 अक्षौहिणी सेना का नाश कर दिया। राजा ने दूसरी टुकड़ी भेजी। ऋषि ने दूसरी पुतली छोड़ी, उसने दूसरी टुकड़ी 18 अक्षौहिणी सेना का नाश कर दिया। इस प्रकार चुणक ऋषि ने मानधाता राजा की चार पुतलियों से 72 अक्षौहिणी सेना नष्ट कर दी। जिस कारण से महर्षि चुणक की महिमा पूरी पथ्वी पर फैल गई।

हे धर्मदास! (जिन्दा रुप धारी परमात्मा बोले) ऋषि चुणक ने जो सेना मारी, ये पाप कर्म ऋषि के संचित कर्मों में जमा हो गए। ऋषि चुणक ने जो ऊँ (ओम्) एक अक्षर का जाप किया, वह उसके बदले ब्रह्मलोक में जाएगा। फिर अपना ब्रह्म लोक का सुख समय व्यतीत करके पथ्वी पर जन्मेगा। जो हठ योग तप किया, उसके कारण पथ्वी पर राजा बनेगा। फिर मत्यु के उपरान्त कुत्ते का जन्म होगा। जो 72 अक्षौहिणी सेना मारी थी, वह अपना बदला लेगी। कुत्ते के सिर में जख्म होगा और उसमें कीड़े बनकर 72 अक्षौहिणी सेना अपना बदला चुकाएगी। इसलिए हे धर्मदास! गीता ज्ञान दाता (ब्रह्म) ने अपनी साधना से होने वाली गति को अनुत्तम (अश्रेष्ठ) कहा है।

प्रश्न (धर्मदास जी का) :- हे जिन्दा! मैंने एक महामण्डलेश्वर से प्रश्न किया था कि गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में भगवान कृष्ण जी ने किस परमेश्वर की शरण में जाने के लिए कहा है? उस मण्डलेश्वर ने उत्तर दिया था कि भगवान श्री कृष्ण से अतिरिक्त कोई भगवान ही नहीं। कृष्ण जी ही स्वयं पूर्ण परमात्मा हैं, वे अपनी ही शरण आने के लिए कह रहे हैं, बस कहने का फेर है। हे जिन्दा जी! कृप्या मुझ अज्ञानी का भ्रम निवारण करें।

उत्तर : (जिन्दा बाबा परमेश्वर का) :- हे धर्मदास!

ये माला डाल हुए हैं मुक्ता। षटदल उवा–बाई बकता।

आपके सर्व मण्डलेश्वर अर्थात् तथा शंकराचार्य अट-बट करके भोली जनता को भ्रमित कर रहे हैं। कह रहे हैं कि गीता ज्ञान दाता गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में अर्जुन को अपनी शरण में आने को कहता है, यह बिल्कुल गलत है क्योंकि गीता अध्याय 2 श्लोक 7 में अर्जुन ने कहा कि 'हे कृष्ण! अब मेरी बुद्धि ठीक से काम नहीं कर रही है। मैं आप का शिष्य हूँ, आपकी शरण में हूँ। जो मेरे हित में हो, वह ज्ञान मुझे दीजिए। हे धर्मदास! अर्जुन तो पहले ही श्री कृष्ण की शरण में था। इसलिए गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में गीता ज्ञान दाता ने अपने से अन्य 'परम अक्षर ब्रह्म' की शरण में जाने के लिए कहा है। गीता अध्याय 4 श्लोक 3 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि हे अर्जुन! तू मेरा भक्त है। इसलिए यह गीता शास्त्र सुनाया है।

गीता ज्ञान दाता से अन्य पूर्ण परमात्मा का अन्य प्रमाण गीता अध्याय 13 श्लोक 11 से 28, 30, 31, 34 में भी है। श्री मद्भगवत गीता अध्याय 13 श्लोक 1 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि शरीर को क्षेत्र कहते हैं जो इस क्षेत्र अर्थात् शरीर को जानता है, उसे "क्षेत्रज्ञ" कहा जाता है। (गीता अध्याय 13 श्लोक 1)

गीता अध्याय 13 श्लोक 2 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि :- मैं क्षेत्रज्ञ हूँ। क्षेत्र तथा क्षेत्रज्ञ दोनों को जानना ही तत्त्वज्ञान कहा जाता है, ऐसा मेरा मत है। गीता अध्याय 13 श्लोक 10 में कहा है कि मेरी भक्ति अव्याभिचारिणी होनी चाहिए। जैसे अन्य देवताओं की साधना तो गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 तथा 20 से 23 में व्यर्थ कही हैं। केवल ब्रह्म की भक्ति करें। उसके विषय में यहाँ कहा है कि अन्य देवता में आसक्त न हों। भावार्थ है कि भक्ति व मुक्ति के लिए ज्ञान समझें, वक्ता बनने के लिए नहीं। इसके अतिरिक्त वक्ता बनने के लिए ज्ञान सुनना अज्ञान है। पतिव्रता स्त्री की तरह केवल मुझमें आस्था रखकर भक्ति करें और मनुष्यों में बैठकर बातें बनाने का स्वभाव नहीं होना चाहिए। एकान्त स्थान में रहकर भक्ति करें।

गीता अध्याय 13 श्लोक 11 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि अध्यात्म ज्ञान में रूचि रखकर तत्त्व ज्ञान के लिए सद्ग्रन्थों को देखना तत्त्वज्ञान है, वह ज्ञान है तथा तत्त्वज्ञान की अपेक्षा कथा कहानियाँ सुनाना, सुनना, शास्त्रविधि विरूद्ध भक्ति करना यह सब अज्ञान है। तत्त्वज्ञान के लिए परमात्मा को जानना ही ज्ञान है।

गीता अध्याय 13 श्लोक 12 में गीता ज्ञान दाता ने अपने से "परम ब्रह्म" यानि श्रेष्ठ परमात्मा का ज्ञान करवाया है, जो परमात्मा (ज्ञेयम्) जानने योग्य है, जिसको जानकर (अमृतम् अश्नुते) अमरत्व प्राप्त होता है अर्थात् पूर्ण मोक्ष का अमृत जैसा आनन्द भोगने को मिलता है। उसको भली-भाँति कहूँगा। (तत्) वह दूसरा (ब्रह्म) परमात्मा न तो सत् कहा जाता है अर्थात् गीता ज्ञान दाता ने अध्याय 4 श्लोक 32, 34 में कहा है कि जो तत्त्वज्ञान है, उसमें परमात्मा का पूर्ण ज्ञान है, वह तत्त्वज्ञान परमात्मा अपने मुख कमल से स्वयं उच्चारण करके बोलता है। उस तत्त्वज्ञान को

तत्त्वदर्शी सन्त जानते हैं, उनको दण्डवत् प्रणाम करने से, नम्रतापूर्वक प्रश्न करने से वे परमात्म तत्त्व को भली-भाँति जानने वाले तत्त्वदर्शी सन्त तुझे तत्त्वज्ञान का उपदेश करेंगे। इससे सिद्ध हुआ कि गीता ज्ञान दाता को परमात्मा का पूर्ण ज्ञान नहीं है। इसलिए कह रहा है कि वह दूसरा परमात्मा जो गीता ज्ञान दाता से भिन्न है। वह न सत् है, न ही असत्। यहाँ पर पर+ब्रह्म का अर्थ सात शंख ब्रह्माण्ड वाले परब्रह्म अर्थात् गीता अध्याय 15 श्लोक 16 वाले अक्षर पुरूष से नहीं है। यहाँ (पर माने दूसरा और ब्रह्म माने परमात्मा) ब्रह्म से अन्य परमात्मा पूर्ण ब्रह्म का वर्णन है।

भावार्थ :- गीता अध्याय 13 श्लोक 12 में गीता ज्ञान दाता कह रहा है कि जो मेरे से दूसरा ब्रह्म अर्थात् प्रभु है वह अनादि वाला है। अनादि का अर्थ है जिसका कभी आदि अर्थात् शुरूवात न हो, कभी जन्म न हुआ हो। गीता ज्ञानदाता क्षर पुरूष है, इसे "ब्रह्म" भी कहा जाता है। इसने गीता अध्याय 2 श्लोक 12, गीता अध्याय 4 श्लोक 5, 9, गीता अध्याय 10 श्लोक 2 में स्वयं स्वीकारा है कि हे अर्जुन! तेरे और मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं, तू नहीं जानता, मैं जानता हूँ। इससे सिद्ध हुआ कि गीता ज्ञानदाता अनादि वाला "ब्रह्म" अर्थात् प्रभु नहीं है। इससे यह सिद्ध हुआ कि गीता ज्ञानदाता ने अध्याय 13 के श्लोक 12 में अपने से अन्य अविनाशी परमात्मा की महिमा कही है। (अध्याय 13 श्लोक 12)

गीता ज्ञान दाता ब्रह्म है, यह एक हजार हाथ-पैर वाला है। इसका संहस्र कमल है अर्थात् हजार पँखुड़ियों वाला कमल है। गीता अध्याय 11 श्लोक 46 में अर्जुन ने कहा है कि हे संहस्राबाहु! (हजार हाथों वाले) आप चतुर्भुज रूप में आइए। इससे सिद्ध हुआ कि गीता ज्ञानदाता केवल हजार भुजाओं वाला है। इसलिए गीता अध्याय 13 श्लोक 13 में गीता ज्ञान दाता अपने से अन्य सब और हाथ-पैर वाले, सब और नेत्र सिर और मुख वाले और सब और कान वाले परमात्मा की महिमा कह रहा है। कहा है कि वह परमात्मा संसार में सबको व्याप्त करके अर्थात् अपनी शक्ति से सब रोके है और स्वयं सत्यलोक (शाश्वत स्थानम् तिष्ठति) बैठा है।

स्पष्ट हुआ कि गीता ज्ञानदाता से अन्य समर्थ परमात्मा है, वही सब संसार का संचालन, पालन करता है। (गीता अध्याय 13 श्लोक 13)

गीता के अध्याय 13 श्लोक 14 में भी स्पष्ट है कि गीता ज्ञान दाता अपने से अन्य परमात्मा का ज्ञान करा रहा है। कहा है :- सम्पूर्ण इन्द्रियों के विषयों को जानने वाला अर्थात् अन्तर्यामी है। सब इन्द्रियों से रहित है अर्थात् परमात्मा की इन्द्रियाँ हम मानव तथा अन्य प्राणियों जैसी विकारग्रस्त नहीं है। वह परमात्मा आसक्ति रहित है अर्थात् वह इस काल लोक (इक्कीस ब्रह्माण्डों) की किसी वस्तु-पदार्थ में आसक्ति नहीं रखता क्योंकि उस परमेश्वर का सत्यलोक इस काल के क्षेत्र से असख्यों गुणा उत्तम है। इसलिए वह परमात्मा आसक्ति रहित कहा है। वही सबका धारण-पोषण करने वाला है। यही प्रमाण गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में भी है। वह परमात्मा निर्गुण है, परंतु सगुण होकर ही अपना महत्त्व दिखाता है। उदाहरण के लिए :- जैसे आम का पेड़ आम के बीज (गुठली) में निर्गुण अवस्था में होता है। उस बीज को जब बीजा जाता है, तब वह पौधा फिर पेड़ रूप में सर्गुण होकर अपना महत्त्व प्रकट करता है। परन्तु परमात्मा सत्यलोक में सर्गुण रूप में बैठा है क्योंकि परमात्मा ने अपने वचन शक्ति से सर्व संष्टि रचकर विधान बनाकर छोड़ दिया। उस परमात्मा के विधान अनुसार सर्व प्राणी तथा नक्षत्र बनते-बिगड़ते रहते हैं, जीव कर्मानुसार जन्मते-मरते रहते हैं। परमात्मा को कोई टैंशन नहीं। परन्तु जब परमात्मा पथ्वी पर प्रकट होता है, उस समय सर्व गुणों को भोगता है। जैसे आम के वक्ष को तो निर्गुण से सर्गुण होने

में बहुत समय लगता है। परन्तु परमात्मा के लिए समय सीमा नहीं है। वे तो क्षण में निर्गुण, अगले क्षण में सर्गुण हो सकते हैं। इससे भी सिद्ध हुआ कि गीता ज्ञान दाता से अन्य कोई सबका धारण-पोषण करने वाला परमात्मा है।

गीता अध्याय 13 श्लोक 15-16 में भी यही प्रमाण है। गीता ज्ञानदाता ने कहा है कि जैसे सूर्य दूर स्थान पर स्थित होते हुए भी यहाँ पंथ्वी पर अपना प्रभाव बनाए है। उसी प्रकार परमात्मा सत्यलोक में स्थित होकर भी सर्व ब्रह्माण्डों पर अपनी शक्ति का प्रभाव बनाए हुए है। सर्व चर-अचर भूतों के बाहर-भीतर है। इसी प्रकार सूक्ष्म होने से हम उसको चर्मदंष्टि से देख नहीं पाते। इसलिए अविज्ञय अर्थात् हमारे ज्ञान से परे है तथा वही परमात्मा हमारे समीप में तथा दूर भी वही स्थित है। परमात्मा तो दूर सत्यलोक (शाश्वत स्थान) में है, उसकी शक्ति का प्रभाव प्रत्येक के साथ है। (गीता अध्याय 13 श्लोक 15)

जैसे सूर्य दूर स्थित है, परन्तु पंथ्वी के ऊपर प्रत्येक प्राणी को अपने साथ दिखाई देता है। जैसे एक स्थान पर कई घड़े जल के भरे रखे हैं तो सूर्य प्रत्येक में दिखाई देता है, टुकड़ों में नहीं दिखता। इसी प्रकार परमात्मा उस व्यक्ति को दिखाई देता है। परमात्मा ऐसे ही एक स्थान पर स्थित है। वह परमात्मा जानने योग्य है। भावार्थ है कि गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि मेरे से अन्य परमात्मा का ज्ञान होना चाहिए, वह जानने योग्य है। वही परमात्मा अपने विधानानुसार सर्व का धारण-पोषण, उत्पत्ति तथा मंत्यु करता है। वास्तव में "ब्रह्मा" (सबका उत्पत्तिकर्ता) वही है। वास्तव में विष्णु (सबका धारण-पोषण करने वाला) वही है, वास्तव में शंकर (सबका संहार करने वाला) वही है। अन्य ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर तो केवल एक ब्रह्माण्ड के कर्ता-धरता हैं। परन्तु वह परमात्मा तो सर्व ब्रह्माण्डों का ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर रूप में अकेला ही है। जैसे भारत वर्ष में केन्द्र का भी गंहमन्त्री होता है तथा राज्यों में भी गंहमन्त्री होते हैं।

इससे सिद्ध हुआ कि गीता ज्ञान दाता ने अपने से अन्य समर्थ परमात्मा की महिमा बताई है। गीता ज्ञान दाता से अन्य कोई पूर्ण परमात्मा है। (गीता अध्याय 13 श्लोक 16) गीता अध्याय 13 श्लोक 17 में गीता ज्ञान दाता ने अपने से अन्य परमात्मा की महिमा कही है जो इस प्रकार है:-

वह दूसरा परमात्मा (परम् ब्रह्म) सब ज्योतियों का भी ज्योति है अर्थात् सर्व प्रकाशस्रोत है, उसी अन्य समर्थ परमात्मा की शक्ति से सब प्रकाशमान हैं। और उस परमात्मा का प्रकाश सर्व से अधिक है। वह परमात्मा माया से अति परे कहा जाता है। वास्तव में निरंजन वही है। जो गीता ज्ञान दाता है, यह माया सहित "ज्योति निरंजन" कहा जाता है। वह परमात्मा ज्ञान का भण्डार है, वह जानने योग्य है, वह (ज्ञानगम्यम्) तत्त्वज्ञान द्वारा प्राप्त होने योग्य है।

इस गीता अध्याय 13 श्लोक 17 में मूल पाठ में "ज्ञानम् ज्ञेयम् ज्ञान गम्यम्" लिखा है जिसका भावार्थ है कि (ज्ञानम्) जो ज्ञान परमात्मा स्वयं पंथ्वी पर प्रकट होकर तत्त्वज्ञान अपने मुख कमल से बोलता है। इसलिए वह ज्ञान रूप है अर्थात् ज्ञान का भण्डार है। वह परमात्मा (ज्ञेयम् ज्ञानग्यम्) उसी तत्त्वज्ञान से जानने योग्य तथा उसी तत्त्वज्ञान से प्राप्त करने योग्य है। वह परमात्मा सर्व प्राणियों के हृदय में स्थित है। जैसे सूर्य दूर स्थान पर होते हुए भी प्रत्येक घड़े के जल में दिखाई देता है। वह उन घड़ों में नहीं हैं। परंतु घड़ों के ऊपर अपना प्रभाव रखता है, उष्णता देता है।

सूक्ष्म वेद में कहा है कि :-

ब्रह्मा विष्णु शिव राई झूमकरा। नहीं सब बाजी के खम्ब सुनों राई झूमकरा।
सर्व ठाम सब ठौर राई झूमकरा। सकल लोक भरपूर सुनो राई झूमकरा।।

यही प्रमाण गीता अध्याय 18 श्लोक 61 में भी है कहा है कि हे अर्जुन! शरीर रूप यन्त्र में आरूढ़ हुए सम्पूर्ण प्राणियों को अन्तर्यामी परमेश्वर अपनी माया अर्थात् अपनी शक्ति से उनके कर्मानुसार भ्रमण करवाता है अर्थात् संस्कारों के अनुसार अच्छी-बुरी योनियों में घूमाता है। वही सर्व शक्तिमान परमात्मा सर्व प्राणियों के हृदय में स्थित है अर्थात् विराजमान है। इसी प्रकार परमेश्वर की महिमा गीता अध्याय 13 श्लोक 17 में कही है। इससे सिद्ध हुआ कि गीता ज्ञान दाता ने अपने से अन्य पूर्ण परमात्मा की महिमा कही है। (गीता अध्याय 13 श्लोक 17)

गीता अध्याय 13 श्लोक 18 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि इस प्रकार क्षेत्र अर्थात् शरीर, ज्ञानम् तत्त्वज्ञान और ज्ञेयम् अर्थात् जानने योग्य परमात्मा की महिमा मैंने संक्षेप में कही है। मेरा भक्त पहले मुझे ही सर्वेस्वा जानकर मुझ पर आश्रित था। वह इस (विज्ञाय) तत्त्वज्ञान के आधार से मेरे भाव अर्थात् मेरी शक्ति से परिचित होकर तथा उस समर्थ की शक्ति से परिचित होकर (उप पद्यते) उसके उपरान्त भक्ति करके उसी भाव को प्राप्त होता है। (गीता अध्याय 13 श्लोक 18)

इसी प्रकार गीता अध्याय 13 श्लोक 19 में गीता ज्ञान दाता ने अपने से अन्य पुरूष अर्थात् परमात्मा की महिमा कही है। कहा है कि प्रकति और पुरूष दोनों ही अनादि हैं। यहाँ पर प्रकति से तात्पर्य सत्यलोक की प्रकति से है। जिसको पराशक्ति, परानन्दनी, महान प्रकति कहा जाता है। पुरूष का अर्थ पूर्ण परमात्मा है, ये दोनों अनादि हैं। इस प्रकति का भावार्थ दुर्गा स्त्री रूप की तरह स्त्री रूप प्रकति से नहीं है। जैसे सूर्य है तो उसकी प्रकति उष्णता भी साथ ही है। इसी प्रकार सत्यपुरूष तथा उसकी प्रकति अर्थात् शक्ति दोनों अनादि हैं।

इस प्रकार विकार तथा तीनों गुण जिससे उत्पन्न हुए हैं, वह अन्य प्रकति है, उससे उत्पन्न हुए हैं, ऐसा जान। गीता अध्याय 7 श्लोक 4-5 में दो प्रकति कही हैं, एक जड़ और दूसरी चेतन दुर्गा देवी। यहाँ पर दूसरी प्रकति दुर्गा कही है। (गीता अध्याय 13 श्लोक 19)

गीता अध्याय 13 श्लोक 20 में भी अन्य (पुरूषः) परमात्मा का वर्णन है। गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित गीता के इस श्लोक के अनुवाद में "पुरूषः" का अर्थ परमात्मा होता है। गीता अध्याय 13 श्लोक 20 का यथार्थ अनुवाद देखें "गहरी नजर गीता में" जो हमारी Web site पर देखी व डाऊनलोड की जा सकती है। Web site का नाम है "www. jagatgururampalji.org"

गीता अध्याय 13 श्लोक 21 में भी अन्य (पुरूषः) परमात्मा का वर्णन है। इसके अनुवाद में गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित में "पुरूषः" का अर्थ पुरूष ही किया है, यह ठीक है। पुरूषः का अर्थ परमात्मा होता है। प्रकरणवश पुरूषः का अर्थ मनुष्य भी किया जाता है क्योंकि परमात्मा ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुरूप बनाया है। इसलिए कहा जाता है कि :-

नर नारायण रूप है, तू ना समझ देहि।

''चौरासी लाख प्रकार के जीवों से मानव देह उत्तम है''

गीता अध्याय 13 श्लोक 22 में भी गीता ज्ञान दाता ने अपने से अन्य परमात्मा का प्रत्यक्ष प्रमाण बताया है। गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित गीता में इस श्लोक का अर्थ बिल्कुल गलत किया है।

❖ यथार्थ अनुवाद :- जैसे पूर्व के श्लोकों में वर्णन आया है कि परमात्मा प्रत्येक जीव के साथ ऐसे रहता है, जैसे सूर्य प्रत्येक घड़े के जल में स्थित दिखाई देता है। उस जल को अपनी उष्णता दे रहा है। इसी प्रकार परमात्मा प्रत्येक जीव के हृदय कमल में ऐसे विद्यमान है जैसे सौर ऊर्जा सयन्त्र जहाँ भी लगा है तो वह सूर्य से उष्णता प्राप्त करके ऊर्जा संग्रह करता है। इसी प्रकार प्रत्येक

जीव के साथ परमात्मा रहता है। इसलिए इस श्लोक (गीता अध्याय 13 श्लोक 22) में कहा है कि वह परमात्मा सब प्रभुओं का भी स्वामी होने से "महेश्वर", सबका धारण-पोषण करने से "कर्ता", सत्यलोक में बैठा प्रत्येक प्राणी की प्रत्येक गतिविधि को देखने वाला होने से "उपदष्टा", जीव परमात्मा की शक्ति से सर्व कार्य करता है। जीव परमात्मा का अंश है। (रामायण में भी कहा है, ईश्वर अंश जीव अविनाशी) जिस कारण से जीव जो कुछ भी अपने किए कर्म का सुख, दुःख भोगता है तो अपने अंश के सुख-दुःख का परमात्मा को भी अहसास होता है। (सूक्ष्म वेद में लिखा है- "कबीर कह मेरे जीव को दुःख ना दिजो कोय, भक्त दुःखाऐ मैं दुःखी मेरा आपा भी दुःखी होय।")

इसलिए "भोक्ता" कहलाता है। प्रत्येक प्राणी को गुप्त रूप से उचित राय देता है, जिस कारण से परमात्मा "अनुमन्ता" कहलाता है। परमात्मा शब्द का सन्धिविच्छेद = परम+आत्मा = श्रेष्ठ आत्मा = परमात्मा। यदि कोई दुःख का भोग भी देता है, सुख का भोग भी देता है। जैसे कर्म करेगा जीव वैसे अवश्य भोगेगा तो वह "परमात्मा" नहीं कहा जा सकता, वह श्रेष्ठ आत्मा नहीं होता। जैसे इस काल (ब्रह्म के) लोक में विधान है कि जैसा कर्म करोगे, वैसा फल आपको भगवान अवश्य देगा। तो यह प्रभु (स्वामी)तो है, परन्तु परम आत्मा नहीं है। इस मानव शरीर में (परः) दूसरा (पुरूषः) परमात्मा जो जीव के साथ अभिन्न रूप से रहता है, जैसे सूर्य प्रत्येक को अपनी ऊर्जा देता है, उसी प्रकार यह दूसरा परमात्मा उपरोक्त महिमा वाला है। जैसे सौर ऊर्जा से जो बल्ब जगता है, उसमें सूर्य होता है यानि सूर्य की ऊर्जा कार्य करती है। इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा की भूमिका समझें।

गीता अध्याय 13 श्लोक 23 में भी अन्य (पुरूषम्) परमात्मा बताया है। कहा है कि जो सन्त उपरोक्त प्रकार से (पुरूषम्) परमात्मा, प्रकति, तथा गुणों सहित जानता है, वह सन्त-साधक सब प्रकार से परमात्मा में लीन (वर्तमान) रहता हुआ पुनर्जन्म को प्राप्त नहीं होता अर्थात् उसका पूर्ण मोक्ष हो जाता है।

गीता अध्याय 13 श्लोक 24 भी अन्य परमात्मा का वर्णन है जो गीता ज्ञान दाता से अन्य है। कहा है कि जो परमात्मा सूर्य के सदश जीवात्मा के साथ अभेद रूप से रहता है। उसको साधक ध्यान द्वारा दिव्य दष्टि से हृदय में देखते हैं जैसे बिजली को टैस्टर द्वारा देख लेते हैं, अन्य साधक ज्ञान सुनकर विश्वास करके परमात्मा का अस्तित्व स्वीकार कर लेते हैं। अन्य भक्तजन (कर्मयोगेन) परमात्मा के कर्मों अर्थात् लीलाओं को देखकर परमात्मा का अस्तित्व जान लेते हैं। जैसे संसार में लगभग 7 अरब जनसँख्या है। किसी का भी चेहरा (face) एक-दूसरे से नहीं मिलता। (कवि ने कहा है :- कई अरब बनाए बन्दे आँख, नाक, हाथ लगाए, एक-दूसरे के नाल कोई भी रलदे नहीं रलाए) यह भी सिद्ध होता है कि कोई सर्वज्ञ शक्ति है, उसे "परमात्मा" कहा जाता है। कुछ भक्तजन परमात्मा के इस प्रकार के कार्य देखकर परमात्मा को मानते हैं।

गीता अध्याय 12 श्लोक 25 में कहा है कि जो शिक्षित नहीं और जो न ध्यान करते हैं, न ज्ञान को समझ पाते हैं और न वे परमात्मा की संरचना से परमात्मा को समझ पाते हैं। वे अन्य शिक्षित, विद्वान व्यक्तियों से परमात्मा की महिमा सुनकर मान लेते हैं कि जब यह शिक्षित और ज्ञानी व्यक्ति कह रहा है तो परमात्मा है। फिर वे उपासना करने लग जाते हैं। वे उसे सुनने के कारण परमात्मा के अस्तित्व को मानकर उपासना करने के कारण इस मतलोक (मत्यु संसार) से पार हो जाते हैं।

गीता अध्याय 13 श्लोक 26 में तो इतना ही कहा है कि सर्व प्राणी क्षेत्र अर्थात् दुर्गा के शरीर

तथा क्षेत्रज्ञ अर्थात् गीता ज्ञान दाता क्षर ब्रह्म के संयोग से उत्पन्न होते हैं। ध्यान रहे गीता ज्ञान दाता ने गीता के इसी अध्याय 13 के श्लोक 1 में कहा है कि "क्षेत्र" तो शरीर को कहते हैं तथा जो शरीर के विषय में जानता है, उसे "क्षेत्रज्ञ" कहते हैं। गीता अध्याय 13 श्लोक 2 में कहा है। इस काल लोक (इक्कीस ब्रह्माण्डों के क्षेत्र में) में जितने प्राणी उत्पन्न होते हैं, वे दुर्गा जी तथा काल भगवान के संयोग से होते हैं अर्थात् नर-मादा से काल प्रेरणा से काल संष्टि उत्पन्न होती है।

गीता अध्याय 13 श्लोक 27 में अन्य परमेश्वर स्पष्ट है जो गीता ज्ञान दाता से अन्य है। (भिन्न है) :- जैसे पूर्व के श्लोकों में प्रमाण सहित बताया गया है कि परमेश्वर प्रत्येक प्राणी के शरीर में हृदय में ऐसे बैठा दिखाई देता है जैसे सूर्य जल से भरे घड़ों में दिखाई देता है। इसी प्रकार इस श्लोक 27 में कहा है कि परमेश्वर हृदय में बैठा है। जब प्राणी का शरीर नष्ट हो जाता है तो भी परमेश्वर नष्ट नहीं होता। जैसे कोई घड़ा फूट गया, उसका जल पंथ्वी पर बिखर गया और पंथ्वी में समा गया तो भी सूर्य तो यथावत् है। इसलिए परमेश्वर अविनाशी है जो सन्त परमात्मा को इस दंष्टिकोण से देखता है, वह सही जानता है, वह तत्त्वज्ञानी सन्त है।

इस श्लोक (गीता अध्याय 13 श्लोक 27) में परमेश्वर शब्द लिखा है। जिससे भी गीता ज्ञान दाता से अन्य परमात्मा का बोध होता है। आओ जानेंः-

"परमेश्वर" का सन्दिछेद = परम+ईश्वर

व्याख्या :– "ईश" का अर्थ है स्वामी, प्रभु, मालिक।

"वर" का अर्थ है श्रेष्ठ, पति

1. ईश् तो गीता ज्ञान दाता "क्षर पुरूष" अर्थात् क्षर ब्रह्म है जो केवल इक्कीस ब्रह्माण्डों का ईश् अर्थात् प्रभु है।

2. ईश्वर = ईश् अर्थात् क्षर पुरूष से श्रेष्ठ प्रभु। वह केवल 7 शंख ब्रह्माण्डों का प्रभु है। इसे अक्षर पुरूष तथा परब्रह्म भी कहा जाता है।

3. परमेश्वर = ईश्वर अर्थात् अक्षर पुरुष से परम अर्थात् श्रेष्ठ है, जो असँख्य ब्रह्माण्डों का प्रभु है, उसे परम अक्षर ब्रह्म भी कहा जाता है। (गीता अध्याय 8 श्लोक 3 में प्रमाण है) गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में तीन पुरूषों का वर्णन है। क्षर पुरूष - यह गीता ज्ञान दाता ईश् है तथा अक्षर पुरूष - यह ईश्वर है तथा गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में कहा है कि (उत्तम पुरूषः) पुरूषोत्तम अर्थात् वास्तव में सर्व श्रेष्ठ प्रभु तो ऊपर के श्लोक (गीता अध्याय 15 श्लोक 16) में कहे दोनों (क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष) से भिन्न है, उसी को वास्तव में "परमात्मा" कहा जाता है। वही तीनों लोकों (क्षर पुरूष के 21 ब्रह्माण्डों का क्षेत्र काल लोक कहा जाता है तथा अक्षर पुरूष के 7 शंख ब्रह्माण्डों के क्षेत्र को परब्रह्म का लोक कहा जाता है और ऊपर चार लोकों (सत्यलोक, अलख लोक, अगम लोक तथा अकह लोक) का क्षेत्र अमर लोक परमेश्वर का लोक कहा जाता है। इस प्रकार तीन लोकों का यहाँ पर वर्णन है। इन तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है। वह वास्तव में अविनाशी परमेश्वर है। गीता अध्याय 13 श्लोक 27 में "परमेश्वर" शब्द है जो गीता ज्ञान दाता से भिन्न सर्व शक्तिमान, सर्व का पालन कर्ता का बोधक है।

गीता अध्याय 13 श्लोक 28 में भी गीता ज्ञान दाता से अन्य प्रभु का प्रमाण है। इस श्लोक में "ईश्वर" शब्द परमेश्वर का बोधक है, जैसे ईश् का अर्थ स्वामी, वर का अर्थ श्रेष्ठ। वास्तव में सबका "ईश्" स्वामी तो परम अक्षर ब्रह्म है। वही श्रेष्ठ ईश् है, इसलिए "ईश्वर" शब्द प्रकरणवश पूर्ण परमात्मा का बोधक है। यदि अन्य "ईश्" नकली स्वामी नहीं होते तो ईश्वर तथा परमेश्वर

शब्दों की आवश्यकता नहीं होती। इसलिए इस श्लोक में "ईश्वर" शब्द सत्य पुरूष का बोध जानें।

गीता अध्याय 13 श्लोक 28 का भावार्थ है कि गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि जो साधक सब प्रकार से परमेश्वर को समभाव में देखता हुआ (आत्मानम्) अपनी आत्मा को (आत्मना) अपनी अज्ञान आत्मा द्वारा नष्ट नहीं करता अर्थात् वह परमात्मा को सही समझकर उसकी साधना करके (ततः) उससे (पराम् = परा) दूसरी (गतिम्) गति अर्थात् मोक्ष को (याति) प्राप्त होता है अर्थात् वह साधक गीता ज्ञान दाता वाली परमगति (जो गीता अध्याय 8 श्लोक 13 में कही है) से अन्य गति को प्राप्त होता है।

गीता अध्याय 13 श्लोक 30 में स्पष्ट है कि गीता ज्ञान दाता ने अपने से अन्य परमात्मा की महिमा बताई है। कहा है कि जो सन्त सर्व प्रणियों की स्थिति भिन्न-भिन्न होते हुए भी एक परमात्मा सर्वशक्तिमान के अन्तर्गत मानता है तो वह समझो ''सच्चिदानन्दघन ब्रह्म'' अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म को प्राप्त हो गया है, वह सत्य भक्ति करके उस परमेश्वर को प्राप्त हो जाता है।

गीता अध्याय 13 श्लोक 31 में भी गीता ज्ञान दाता ने अपने से अन्य "परमात्मा" के विषय में कहा है। इस श्लोक में "परमात्मा" शब्द है जिसकी स्पष्ट परिभाषा गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में बताई है। कहा है कि जो उत्तम पुरूष अर्थात् सर्वश्रेष्ठ प्रभु है। वह तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है। वह वास्तव अविनाशी परमेश्वर है। उसी को "परमात्मा" कहा जाता है। वह क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष से अन्य है।

इस श्लोक (गीता अध्याय 13 श्लोक 31) में भी यही स्पष्ट किया है कि वह परमात्मा अनादि होने से, निर्गुण होने से प्रत्येक प्राणी के शरीर में (सूर्य जैसे घड़े में) स्थित होने पर भी न तो कुछ करता है क्योंकि सब कार्य परमात्मा की शक्ति करती है, (जैसे घड़े के जल में सूर्य दिखाई देता है उससे जल गर्म हो रहा है। वह सूर्य करता नहीं दिखाई देता, उसकी उष्णता कर रही है। सूर्य कुछ नहीं करता दिखता) और न परमात्मा उस शरीर में लिप्त होता है, जैसे सूर्य घड़े के जल में लिप्त नहीं होता।

गीता अध्याय 13 श्लोक 32 में भी यही प्रमाण है।

गीता अध्याय 13 श्लोक 33 में आत्मा और शरीर की स्थिति बताई है।

गीता अध्याय 13 श्लोक 34 में गीता ज्ञान दाता ने अपने से अन्य परमेश्वर की जानकारी दी है। कहा है कि इस प्रकार क्षेत्र (शरीर) तथा क्षेत्रज्ञ (गीता ज्ञान दाता) के भेद को तथा कर्म करते-करते भक्ति करके काल की प्रकति अर्थात् काल जाल से मुक्त जो साधक ज्ञान नेत्रों द्वारा जानकर तत्त्वदर्शी सन्त की खोज करके सत्य शास्त्रानुकूल साधना करके तत्त्वज्ञान को समझकर उस परम् अर्थात् दूसरे परमब्रह्म परमात्मा को प्राप्त होते हैं।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट हुआ कि गीता ज्ञान दाता से अन्य पूर्ण परमात्मा है जिसकी भक्ति की साधना करके साधक उस पूर्ण मोक्ष को प्राप्त हो जाता है जो गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में वर्णित है कि तत्त्वज्ञान की प्राप्ति के पश्चात् परमेश्वर के उस परमपद को खोजना चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर संसार में कभी नहीं आता।

सारांश :- पूर्वोक्त प्रमाणों से तथा इस गीता अध्याय 13 के उपरोक्त प्रमाणों से स्पष्ट हुआ कि गीता ज्ञान दाता से अन्य परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् पूर्ण परमात्मा है। जिसकी शरण में जाने के लिए गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 18 श्लोक 62, 66 में कहा है। वही पूर्ण मोक्षदायक है, वही पूजा करने योग्य है, वही सबका रचनहार है, वही सबका पालनहार, धारण करने वाला सर्व सुखदायक

है। उसको "परमात्मा" कहा जाता है।

प्रश्न :- अक्षर का अर्थ अविनाशी होता है। आपने गीता अध्याय 15 श्लोक 16 में भी अक्षर पुरूष को भी नाशवान बताया है, क्या स्पष्ट करें।

उत्तर :- यह सत्य है कि "अक्षर" का अर्थ अविनाशी होता है, परन्तु प्रकरणवश अर्थ अन्य भी होता है। गीता अध्याय 15 श्लोक 16 में कहा है कि क्षर और अक्षर ये पुरूष (प्रभु) इस लोक में है, ये दोनों तथा इनके अन्तर्गत जितने जीव हैं, वे नाशवान हैं, आत्मा किसी की भी नहीं मरती। फिर गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में स्पष्ट किया है कि पुरूषोत्तम तो उपरोक्त दोनों प्रभुओं से अन्य है। वही अविनाशी है, वही सबका धारण-पोषण करने वाला वास्तव में अविनाशी है। गीता अध्याय 8 श्लोक 3 में तत् ब्रह्म को परम अक्षर ब्रह्म कहा है। अक्षर का अर्थ अविनाशी है, परन्तु यहाँ परम अक्षर ब्रह्म कहा है। इससे भी सिद्ध हुआ कि अक्षर से आगे परम अक्षर ब्रह्म है, वह वास्तव में अविनाशी है।

❖ प्रमाण :- जैसे ब्रह्मा जी की आयु 100 वर्ष बताई जाती है, देवताओं का वर्ष कितने समय का है? सुनो! चार युग (सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग तथा कलयुग) का एक चतुर्युग होता है जिसमें मनुष्यों के 43,20,000 (त्रितालीस लाख बीस हजार) वर्ष होते हैं। 1008 चतुर्युग का ब्रह्मा जी का दिन और इतनी ही रात्रि होती है, ऐसे 30 दिन-रात्रि का एक महीना तथा 12 महीनों का ब्रह्मा जी का एक वर्ष हुआ। ऐसे 100 (सौ) वर्ष की श्री ब्रह्मा जी की आयु है।

श्री विष्णु जी की आयु श्री ब्रह्मा जी से 7 गुणा है। = 700 वर्ष।

श्री शंकर जी की आयु श्री विष्णु जी से 7 गुणा अधिक = 4900 वर्ष।

ब्रह्म (क्षर पुरूष) की आयु = 70 हजार शंकर की मृत्यु के पश्चात् एक ब्रह्म की मृत्यु होती है अर्थात् क्षर पुरूष की मृत्यु होती है। इतने समय का अक्षर पुरूष का एक युग होता है।

अक्षर पुरूष की आयु :- गीता अध्याय 8 श्लोक 17 में कहा है:-

सहंस्र युग पर्यन्तम् अहः यत् ब्रह्मणः विदुः। रात्रिम् युग सहंस्रान्तम् ते अहोरात्रा विदः जनाः।। (17)

अनुवाद :- आज तक सर्व अनुवादकर्ताओं ने उचित अनुवाद नहीं किया। सबने ब्रह्मा का एक हजार चतुर्युग लिखा है, यह गलत है। मूल पाठ में "संहस्र युग" लिखा है, न कि चतुर संहस्र युग। इसलिए गीता अध्याय 8 श्लोक 17 का अनुवाद ऐसे बनता है:- (ब्रह्मणः) अक्षर पुरूष का (यत) जो (अहः) दिन है वह (सहंस्रयुग प्रयन्तम्) एक हजार युग की अवधि वाला (विदुः) जानते हैं (ते) वे जना व्यक्ति (अहोरात्र) दिन-रात को (विदः) जानने वाले हैं।

भावार्थ :- इस श्लोक में "ब्रह्मा" शब्द मूल पाठ में नहीं है और न ही "चतुर युग" शब्द मूल पाठ में है, इसमें "ब्रह्मण" शब्द है जिसका अर्थ सचिदानन्द ब्रह्म अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म होता है।

❖ प्रमाण :- गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में ब्रह्मणः का अर्थ सचिदानन्द घन ब्रह्म किया है, वह अनुवादकों ने ठीक किया है। इस गीता अध्याय 8 श्लोक 17 में आयु का प्रकरण है। इसलिए यहाँ पर "ब्रह्मण" का अर्थ "अक्षर ब्रह्म" बनता है, यहाँ अक्षर पुरूष की आयु की जानकारी दी है। अक्षर पुरूष का एक दिन उपरोक्त एक हजार युग का होता है। {70 हजार शंकर की मृत्यु के पश्चात् एक क्षर पुरूष की मृत्यु होती है, वह समय एक युग अक्षर पुरूष का होता है।} ऐसे बने हुए एक हजार युग का अक्षर पुरूष का दिन तथा इतनी ही रात्रि होती है, ऐसे 30 दिन रात्रि का एक महीना तथा 12 महीनों का अक्षर पुरूष का एक वर्ष तथा 100 वर्ष की अक्षर पुरूष की आयु है। इसके पश्चात् इसकी मृत्यु होती है, इसलिए गीता अध्याय 15 श्लोक 16 में क्षर पुरूष तथा

अक्षर पुरूष दोनों नाशवान कहे हैं। गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में जो वास्तव में अविनाशी परमात्मा कहा है। यह परमात्मा सर्व प्राणियों के नष्ट होने पर भी नाश में नहीं आता।

प्रमाण :- गीता अध्याय 8 श्लोक 20 से 22 में स्पष्ट है कि वह परम अक्षर ब्रह्म सब प्राणियों के नष्ट होने पर भी कभी नष्ट नहीं होता।

उदाहरण :- जैसे सफेद मिट्टी के बने कप-प्लेट होते हैं, उनका ज्ञान है कि हाथ से छूटे और पक्के फर्श पर गिरे और टूटे अर्थात् नाशवान "क्षर" है, यह स्थिति तो क्षर पुरूष की जानो।

2. दूसरे कप-प्लेट स्टील (इस्पॉत) के बने हों, वे बहुत समय उपरान्त जंग लगकर नष्ट होते हैं, शीघ्र टूटते व नष्ट नहीं होते। मिट्टी के बने कप-प्लेट की तुलना में स्टील के कप-प्लेट चिर-स्थाई हैं, अविनाशी प्रतीत होते हैं, परन्तु हैं नाशवान। इसी प्रकार स्थिति "अक्षर पुरूष" की जानो।

3. तीसरे कप-प्लेट सोने के बने हों। वे कभी नष्ट नहीं होते, उनको जंग नहीं लगता। यह स्थिति "परम अक्षर ब्रह्म" की जानो। यह वास्तव में अविनाशी हैं, इसलिए प्रकरणवश "अक्षर" का अर्थ नाशवान भी होता है, वास्तव में अक्षर का अर्थ अविनाशी परमात्मा होता है।

उदाहरण के लिए :- गीता अध्याय 8 श्लोक 11 में मूल पाठ =

यत् अक्षरम् वेद विदः वदन्ति विशन्ति यत् यतयः बीतरागाः
यत् इच्छन्तः ब्रह्म चर्यम चरन्ति तत् ते पदम् संग्रहेण प्रवक्ष्ये (11)

अनुवाद : इस श्लोक में "अक्षर" का अर्थ अविनाशी परमात्मा के लिए हैः-(वेद विदः) तत्त्वदर्शी सन्त अर्थात् वेद के तात्पर्य को जानने वाले महात्मा (यत्) जिसे (अक्षरम्) अविनाशी (वदन्ति) कहते हैं। (यतयः) साधना रत (बीतरागा) आसक्ति रहित साधक (यत्) जिस लोक में (विशन्ति) प्रवेश करते हैं और (यत्) जिस परमात्मा को (इच्छन्तः) चाहने वाले साधक (ब्रह्म चर्यम) ब्रह्मचर्य अर्थात् शिष्य परम्परा का (चरन्ति) आचरण करते हैं, (तत्) उस (पदम्) पद को (ते) तेरे लिए मैं (संग्रहेषा) संक्षेप में (प्रवक्ष्ये) कहूँगा। इस श्लोक में "अक्षर" का अर्थ अविनाशी परमात्मा ठीक है।

कबीर जी ने सूक्ष्म वेद में कहा है कि -

गुरू बिन काहू न पाया ज्ञाना, ज्यों थोथा भूष छिड़े मूढ़ किसाना।
गुरू बिन वेद पढ़े जो प्राणी, समझे ना सार रहे अज्ञानी।।

प्रश्न :- (धर्मदास जी का) :- गीता अध्याय 4 श्लोक 6 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि मैं अजन्मा और अविनाशी रुप होते हुए भी समस्त प्राणियों का ईश्वर होते हुए भी अपनी योग माया से प्रकट होता हूँ। इसमें श्री कष्ण जी अपने आपको समस्त प्राणियों का अविनाशी ईश्वर कह रहे हैं, अपने को अजन्मा भी कहा है।

उत्तर :- (जिन्दा परमेश्वर जी का) : हे धर्मदास जी! गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि जितने प्राणी मेरे 21 ब्रह्माण्डों में मेरे अन्तर्गत हैं। मैं उनका श्रेष्ठ प्रभु (ईश्वर) हूँ। यही प्रमाण गीता अध्याय 15 श्लोक 18 में भी है कि गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि मैं लोक वेद (सुनी-सुनाई बातें) के आधार से अपने 21 ब्रह्माण्डों वाले लोक में पुरुषोत्तम प्रसिद्ध हूँ क्योंकि मैं शरीरधारी प्राणियों से तथा अविनाशी जीवात्मा से भी श्रेष्ठ हूँ जो मेरे अन्तर्गत मेरे इक्कीस ब्रह्माण्डों में हैं। वास्तव में पुरुषोत्तम तो कोई अन्य ही है जिसका वर्णन गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में बताया गया है।

गीता के अध्याय 4 श्लोक 6 में यह कहा है कि मैं (अजः) अजन्मा अर्थात् मैं तुम्हारी तरह जन्म नहीं लेता, मैं लीला से प्रकट होता हूँ। जैसे गीता अध्याय 10 में विराट रुप दिखाया था, फिर कहा है कि (अव्ययात्मा) मेरी आत्मा अमर है। फिर कहा है कि (आत्ममायया) अपनी लीला से

(सम्भवामि) उत्पन्न होता हूँ। यहाँ पर उत्पन्न होने की बात है क्योंकि यह काल ब्रह्म अक्षर पुरुष के एक युग के उपरान्त मरता है। फिर उस समय एक ब्रह्माण्ड का विनाश हो जाता है (जैसा कि आपने ऊपर के प्रश्न के उत्तर में पढ़ा) फिर दूसरे ब्रह्माण्ड में सर्व जीवात्माएं चली जाती हैं। काल ब्रह्म की आत्मा भी चली जाती है। वहाँ इसको पुनः युवा शरीर प्राप्त होता है। इसी प्रकार देवी दुर्गा की मत्यु होती है। फिर काल ब्रह्म के साथ ही इसको भी युवा शरीर प्राप्त होता है। यह परम अक्षर ब्रह्म (सत्य पुरूष) का विधान है। तो फिर उस नए ब्रह्माण्ड में दोनों पति-पत्नी रुप में नए रजगुण युक्त ब्रह्मा, सतगुण युक्त विष्णु तथा तमगुण युक्त शिव को उत्पन्न करते हैं। फिर उस ब्रह्माण्ड में संष्टि क्रम प्रारम्भ होता है। इस प्रकार इस काल ब्रह्म की मत्यु तथा लीला से जन्म होता है। गीता अध्याय 4 श्लोक 9 में भी स्पष्ट है जिसमें गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि मेरे जन्म तर्था कर्म अलौकिक हैं। वास्तव में यह नाशवान है। आत्मा सर्व प्राणियों की भी अमर है। आपके महामण्डलेश्वरों आचार्यों तथा शंकराचार्यो को अध्यात्मिक ज्ञान बिल्कुल नहीं है। इसलिए अनमोल ग्रन्थों को ठीक से न समझकर लोकवेद (दन्तकथा) सुनाते हैं। आप देखें इस गीता अध्याय 4 श्लोक 5 में स्वयं कह रहा है कि हे अर्जुन! तेरे और मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं। उन सबको मैं जानता हूँ, तू नहीं जानता। इसका अभिप्राय ऊपर स्पष्ट कर दिया है। सम्भवात् का अर्थ उत्पन्न होना है।

प्रमाण :- यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 10 में भी कहा है कि कोई तो परमात्मा को (सम्भवात्) जन्म लेने वाला राम व कष्ण की तरह मानता है, कोई (असम्भवात्) उत्पन्न न होने वाला निराकार मानता है अर्थात् तत्त्वदर्शी सन्त जो सत्यज्ञान बताते हैं, उनसे सुनो। वे बताएंगे कि परमात्मा उत्पन्न होता है या नहीं। वास्तव में परमात्मा स्वयंभू है। वह कभी नहीं जन्मा है और न जन्मेगा। मत्यु का तो प्रश्न ही नहीं। दूसरी ओर गीता ज्ञान दाता स्वयं कह रहा है कि मैं जन्मता और मरता हूँ, अविनाशी नहीं हूँ। अविनाशी तो ''परम अक्षर ब्रह्म'' है।

प्रश्न :- (जिन्दा बाबा परमेश्वर जी का) : आप जी ने कहा है कि हम शुद्र को निकट भी नहीं बैठने देते, शुद्ध रहते हैं। इससे भक्ति में क्या हानि होती है?

''कथनी और करनी में अंतर''

उत्तर :- (धर्मदास जी का) :- शुद्र के छू लेने से भक्त अपवित्र हो जाता है, परमात्मा रुष्ट हो जाता है, आत्मग्लानि हो जाती है। हम ऊँची जाति के वैश्य हैं।

प्रश्न तथा स्पष्टीकरण (बाबा जिन्दा ने किया) :- यह शिक्षा किसने दी? धर्मदास जी ने कहा हमारे धर्मगुरु बताते हैं, आचार्य, शंकराचार्य तथा ब्राह्मण बताते हैं। परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास को बताया (उस समय तक धर्मदास जी को ज्ञान नहीं था कि आपसे वार्ता करने वाला ही कबीर जुलाहा है) कि कबीर जुलाहा एक बार स्वामी रामानन्द पंडित जी के साथ तोताद्रिक नामक स्थान पर सत्संग-भण्डारे में गया। वह स्वामी रामानन्द जी का शिष्य है। सत्संग में मुख्य पण्डित आचार्यों ने बताया कि भगवान राम ने शुद्र भिलनी के झूठे बेर खाए। भगवान तो समदर्शी थे। वे तो प्रेम से प्रसन्न होते हैं। भक्त को ऊँचे-नीचे का अन्तर नहीं देखना चाहिए, श्रद्धा देखी जाती है। लक्ष्मण ने सबरी को शुद्र जानकर ग्लानि करके बेर नहीं खाये, फैंक दिए, बाद में वे बेर संजीवन बूटी बने। रावण के साथ युद्ध में लक्ष्मण मुर्छित हो गया। तब हनुमान जी द्रोणागिरी पर्वत को उठाकर लाए जिस पर संजीवन बूटी उन झूठे बेरों से उगी थी। उस बूटी को खाने से लक्ष्मण सचेत हुआ, जीवन रक्षा हुई। ऐसी श्रद्धा थी सबरी की भगवान के प्रति। किसी की श्रद्धा को ठेस नहीं पहुँचानी चाहिए।

सत्संग के तुरन्त बाद लंगर (भोजन-भण्डारा) शुरु हुआ। पण्डितों ने पहले ही योजना बना रखी थी कि स्वामी रामानन्द ब्राह्मण के साथ शुद्र जुलाहा कबीर आया है। वह स्वामी रामानन्द का शिष्य है। रामानन्द जी के साथ खाना खाएगा। हम ब्राह्मणों की बेईज्जती होगी। इसलिए दो स्थानों पर लंगर शुरु कर दिया। जो पण्डितों के लिए भण्डार था। उसमें खाना खाने के लिए एक शर्त रखी कि जो पण्डितों वाले भण्डारे में खाना खाएगा, उसको वेदों के चार मन्त्र सुनाने होंगे। जो मन्त्र नहीं सुना पाएगा, वह सामान्य भण्डारे में भोजन खाएगा। उनको पता था कि कबीर जुलाहा काशी वाला तो अशिक्षित है शुद्र है। उसको वेद मन्त्र कहाँ से याद हो सकते हैं? सब पण्डित जी चार-चार वेद मन्त्र सुना-सुनाकर पण्डितों वाले भोजन-भण्डारे में प्रवेश कर रहे थे। पंक्ति लगी थी। उसी पंक्ति में कबीर जुलाहा (धाणक) भी खड़ा था। वेद मन्त्र सुनाने की कबीर जी की बारी आई। थोड़ी दूरी पर एक भैंसा (झोटा) घास चर रहा था। कबीर जी ने भैंसे को पुकारा। कहा कि हे भैंसा पंडित! कृपया यहाँ आइएगा। भैंसा दौड़ा-दौड़ा आया। कबीर जी के पास आकर खड़ा हो गया। कबीर जी ने भैंसे की कमर पर हाथ रखा और कहा कि हे विद्वान भैंसे! वेद के चार मन्त्र सुना। भैंसे ने (1) यजुर्वेद अध्याय 5 का मन्त्र 32 सुनाया जिसका भावार्थ भी बताया कि जो परम शान्तिदायक (उसिग असि), जो पाप नाश कर सकता है (अंघारि), जो बन्धनों का शत्रु अर्थात् बन्दी छोड़ है = बम्भारी, वह ''कविरसि'' कबीर है। स्वर्ज्योति = स्वयं प्रकाशित अर्थात् तेजोमय शरीर वाला ''ऋतधामा'' = सत्यलोक वाला अर्थात् वह सत्यलोक में निवास करता है। ''सम्राटसि'' = सब भगवानों का भी भगवान अर्थात् सर्व शक्तिमान सम्राट यानि महाराजा है।

(2) ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 86 मन्त्र 26 सुनाया। जिसका भावार्थ है कि परमात्मा ऊपर के लोक से गति (प्रस्थान) करके आता है, नेक आत्माओं को मिलता है। भक्ति करने वालों के संकट समाप्त करता है। वह कर्विदेव (कबीर परमेश्वर) है।

(3) ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मन्त्र 17 सुनाया जिसका भावार्थ है कि (''कविः'' = कविर) परमात्मा स्वयं पृथ्वी पर प्रकट होकर तत्त्वज्ञान प्रचार करता है। कविर्वाणी (कबीर वाणी) कहलाती है। सत्य आध्यात्मिक ज्ञान (तत्त्वज्ञान) को कबीर परमात्मा लोकोक्तियों, दोहों, शब्दों, चौपाइयों व कविताओं के रुप में पदों में बोलता है।

(4) ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 94 मन्त्र 1 भी सुनाया। जिसका भावार्थ है कि परमात्मा कवियों की तरह आचरण करता हुआ पृथ्वी पर एक स्थान से दूसरे स्थान जाता है। भैंसा फिर बोलता है कि भोले पंडितो जो मेरे पास इस पंक्ति में जो मेरे ऊपर हाथ रखे खड़ा है, यह वही परमात्मा कबीर है जिसे लोग ''कवि'' कहकर पुकारते हैं। इन्हीं की कृपा से मैं आज मनुष्यों की तरह वेद मन्त्र सुना रहा हूँ।

कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि भैंसा पंडित आप पंडितो वाले लंगर में प्रवेश करके भोजन ग्रहण करें। मैं तो शुद्र हूँ, अशिक्षित हूँ। इसलिए आम जनता के लिए लगे लंगर मैं भोजन करने जाता हूँ।

उसी समय सर्व पंडित जो भैंसे को वेदमन्त्र बोलते देखकर एकत्रित हो गए थे। कबीर जी के चरणों में गिर गए तथा अपनी भूल की क्षमा याचना की। परमेश्वर कबीर जी ने कहा :-

करनी तज कथनी कथैं, अज्ञानी दिन रात । कुकर ज्यों भौंकत फिरें सुनी सुनाई बात ।।

सत्संग में तो कह रहे थे कि भगवान रामचन्द्र जी ने शुद्र जाति की सबरी (भीलनी) के झूठे बेर रुचि-रुचि खाए, कोई छुआछूत नहीं की और स्वयं को तुम परमात्मा से भी उत्तम मानते हो।

कहते हो, करते नहीं। एक-दूसरे से सुनी-सुनाई बात कुत्ते की तरह भौंकते रहते हो। सर्व उपस्थित पंडितों सहित हजारों की सँख्या में कबीर जुलाहे के शिष्य बने, दीक्षा ली। शास्त्रविरुद्ध भक्ति त्यागकर, शास्त्रविधि अनुसार भक्ति शुरु की, आत्म कल्याण करवाया।

हे धर्मदास! यही बात आप कह रहे हो कि हम शुद्र को पास भी नहीं बैठने देते। धर्मदास बहुत शर्मसार हुआ। परन्तु परमात्मा की शिक्षा को अपने ऊपर व्यंग्य समझकर खिझ गया तथा कहा कि हे जिन्दा! आपकी जली-भूनी बातें अच्छी नहीं लगती। आपको बोलने की सभ्यता नहीं है। कहते हो कि कुत्ते की तरह सुनी-सुनाई बातें तुम सब भौंकते फिरते हो। यह कहकर धर्मदास जी ने मुँह बना लिया। नाराजगी जाहिर की। परमात्मा जिन्दा रुप में अन्तर्ध्यान हो गए। चौथी बार अन्तर्ध्यान हो गए तो धर्मदास का जीना मुश्किल हो गया। पछाड़ खा-खा कर रोने लगा। उस दिन फिर वंदावन में धर्मदास से परमात्मा की वार्ता हुई थी। (इस प्रकार परमेश्वर कबीर जी कुल मिलाकर छः बार अन्तर्ध्यान हुए, तब धर्मदास की अक्ल ठिकाने आई) वन्दावन मथुरा से चलकर धर्मदास रोता हुआ अपने गांव बांधवगढ़ की ओर वापिस चल पड़ा। धर्मदास जी ने छः महीनों का कार्यक्रम तीर्थों पर भ्रमण का बना रखा था। वह 15 दिन में ही वापिस घर की ओर चल पड़ा। गरीब दास जी ने अपनी अमतवाणी में कहा है :-

तहां वहां रोवत है धर्मनी नागर, कहां गए मेरे सुख के सागर।
अति वियोग हुआ हम सेती, जैसे निर्धन की लुट जाय खेती।
हम तो जाने तुम देह स्वरुपा, हमरी बुद्धि अन्ध गहर कूपा।
कल्प करे और मन में रोवै, दशों दिशा कूं वो मघ जोहै।
बेग मिलो करहूं अपघाता, मैं ना जीवूं सुनो विधाता।

जब धर्मदास जी बाँधवगढ़ पहुँचा, उस समय बहुत रो रहा था। घर में प्रवेश करके मुँह के बल गिरकर फूट-फूटकर रोने लगा। उसकी पत्नी का नाम आमिनी देवी था। अपने पति को रोते देखकर तथा समय से पूर्व वापिस लौटा देखकर मन-मन में विचार किया कि लगता है भक्तजी को किसी ने लूट लिया है। धन न रहने के कारण वापिस लौट आया है। धर्मदास जी के पास बैठकर अपने हाथों आँसूं पौंछती हुई बोली - क्यों कच्चा मन कर रहे हो। कोई बात नहीं, किसी ने आपकी यात्रा का धन लूट लिया। आपके पास धन की कमी थोड़े है और ले जाना। अपनी तीर्थ यात्रा पूरी करके आना। मैं मना थोड़े करुँगी। कुछ देर बाद दढ़ मन करके धर्मदास जी ने कहा कि आमिनी देवी यदि रुपये पैसे वाला धन लुट गया होता तो मैं और ले जाता। मेरा ऐसा धन लुट गया है जो शायद अब नहीं मिलेगा। वह मैंने अपने हाथों अपनी मूर्खता से गँवाया है। जिन्दा महात्मा से हुई सर्वज्ञान चर्चा तथा जिन्दा बाबा से सुनी सष्टि रचना आमिनी देवी को सुनाया। सर्वज्ञान प्रमाणों सहित देखकर आमिनी ने कहा कि सेठ जी आप तो निपुण व्यापारी थे, कभी घाटे का सौदा नहीं करते थे। इतना प्रमाणित ज्ञान फिर भी आप नहीं माने, साधु को तो नाराज होना ही था। कितनी बार आपको मिले- बच्चे की तरह समझाया, आपने उस दाता को क्यों ठुकरवाया? धर्मदास ने कहा आमिनी! जीवन में पहली बार हानि का सौदा किया है। यह हानि अब पूर्ति नहीं हो पावेगी। वह धन नहीं मिला तो मैं जीवित नहीं रह पाऊँगा।

छः महीने तक परमेश्वर जिन्दा नहीं आए। धर्मदास रो-रो अकुलाए, खाना नाममात्र रह गया। दिन में कई-कई बार घण्टों रोना। शरीर सूखकर काँटा हो गया। एक दिन धर्मदास जी से आमिनी देवी ने पूछा कि हे स्वामी! आपकी यह हालत मुझ से देखी नहीं जा रही है। आप विश्वास रखो,

जब छः बार आए हैं तो अबकी बार भी आऐंगे। धर्मदास ने कहा कि इतना समय पहले कभी नहीं लगाया। लगता है मुझ पापी से बहुत नाराज हो गए हैं, बात भी नाराजगी की है। मैं महामूर्ख हूँ आमिनी देवी! अब मुझे उनकी कीमत का पता चला है। भोले-भाले नजर आते हैं, वे परमात्मा के विशेष कपा पात्र हैं। इतना ज्ञान देखा न सुना। आमिनी ने पूछा कि उन्होंने बताया हो कि वे कैसे-कैसे मिलते हैं, कहाँ-कहाँ जाते हैं? धर्मदास जी ने कहा कि वे कह रहे थे कि मैं वहाँ अवश्य जाता हूँ जहाँ पर धर्म-भण्डारे होते हैं। वहाँ लोगों को ज्ञान समझाता हूँ। आमिनी देवी ने कहा कि आप भण्डारा कर दो। हो सकता है कि जिन्दा बाबा आ जाए। धर्मदास जी बोले कि मैं तो तीन दिन का भण्डारा करुँगा। आमिनी देवी पहले तो कंजूसी करती थी। धर्मदास तीन दिन का भण्डारा कहता था तो वह एक दिन पर अड़ जाती थी। परन्तु उस दिन आमिनी ने तुरन्त हाँ कर दी कि कोई बात नहीं आप तीन दिन का भण्डारा करो। धर्मदास जी ने दूर-दूर तक तीन दिन के भण्डारे का संदेश भिजवा दिया। साधुओं का निमन्त्रण भिजवा दिया। निश्चित दिन को भण्डारा प्रारम्भ हो गया। दो दिन बीत गए। साधु-महात्मा आए, ज्ञान चर्चा होती रही। परन्तु जो ज्ञान जिन्दा बाबा ने बताया था। उसका उत्तर किसी के पास नहीं पाया। धर्मदास जी जान-बूझकर साधुओं से प्रश्न करते थे कि क्या ब्रह्मा, विष्णु, शिव का भी जन्म होता है। उत्तर वही घिसा-पिटा मिलता कि इनके कोई माता-पिता नहीं हैं। इससे धर्मदास को स्पष्ट हो जाता कि वह जिन्दा महात्मा नहीं आया है। वेश बदलकर आता तो भी ज्ञान तो सही बताता। तीसरे दिन भी दो पहर तक में जिन्दा बाबा नहीं आए। धर्मदास जी ने दढ़ निश्चय करके कहा कि यदि आज जिन्दा बाबा नहीं आए तो मैं आत्महत्या करुँगा, ऐसे जीवन से मरना भला। परमात्मा तो अन्तर्यामी हैं। जान गए कि आज भक्त पक्का मरेगा। उसी समय कुछ दूरी पर कदंब का पेड़ था। उसके नीचे उसी जिन्दा वाली वेशभूषा में बैठे धर्मदास को दिखाई दिए। धर्मदास दौड़कर गया, ध्यानपूर्वक देखा, जिन्दा महात्मा के गले से लग गया। अपनी गलती की क्षमा माँगी। कभी ऐसी गलती न करने का बार-बार वचन किया। तब परमात्मा धर्मदास के घर में गए। आमिनी तथा धर्मदास दोनों ने बहुत सेवा की, दोनों ने दीक्षा ली। परमात्मा ने जिन्दा रुप में उनको प्रथम मन्त्र की दीक्षा दी। कुछ दिन परमेश्वर उनके बाग में रहे। फिर एक दिन धर्मदास ने ऐसी ही गलती कर दी, परमात्मा अचानक गायब हो गए। धर्मदास जी ने अपनी गलती को घना (बहुत) महसूस किया। खाना-पीना त्याग दिया, प्रतिज्ञा कर ली कि जब तक दर्शन नहीं दोगे, पीना-खाना बन्द। धर्मदास शरीर से बहुत दुर्बल हो गए। उठा-बैठा भी नहीं जाता था। छठे दिन परमात्मा आए। धर्मदास को अपने हाथों उठाकर गले से लगाया। अपने हाथों खाना खिलाया। धर्मदास ने पहले चरण धोकर चरणामत लिया। फिर ज्ञान चर्चा शुरु हुई। धर्मदास जी ने पूछा कि आप जी को इतना ज्ञान कैसे हुआ?

परमेश्वर जी ने कहा कि मुझे सतगुरु मिले हैं। वे काशी शहर में रहते हैं। उनका नाम कबीर है। वे तो स्वयं परमेश्वर हैं। सतगुरु का रुप बनाकर लीला कर रहे हैं, जुलाहे का कार्य करते हैं। उन्होंने मुझे सतलोक दिखाया, वह लोक सबसे न्यारा है। वहाँ जो सुख है, वह स्वर्ग में भी नहीं है। सदाबहार फलदार वक्ष, सुन्दर बाग, दूधों की नदियाँ बहती हैं। सुन्दर नर-नारी रहते हैं। वे कभी वद्ध नहीं होते। कभी मत्यु नहीं होती। जो सतगुरु से तत्त्वज्ञान सुनकर सत्यनाम की प्राप्ति करके भक्ति करता है, वह उस परमधाम को प्राप्त करता है। इसी का वर्णन गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में भी है। धर्मदास जी ने हठ करके कहा कि हे महाराज! मुझे वह अमर लोक दिखाने की कपा करें ताकि मेरा विश्वास दढ़ हो। परमेश्वर जी ने कहा कि आप भक्ति करो। जब शरीर

त्यागकर जाएगा तो उस लोक को प्राप्त करेगा। धर्मदास जी के अधिक आग्रह करने पर परमेश्वर जिन्दा ने कहा कि चलो आपको सत्यलोक ले चलता हूँ। धर्मदास की आत्मा को निकालकर ऊपर सत्यलोक में ले गए। परमेश्वर के दरबार के द्वार पर एक सन्तरी खड़ा था। जिन्दा बाबा के रुप में खड़े परमेश्वर ने द्वारपाल से कहा कि धर्मदास को परमेश्वर के दर्शन करा के लाओ। द्वारपाल ने एक अन्य हंस (सतलोक में भक्त को हंस कहते हैं) से कहा कि धर्मदास को परमेश्वर के सिंहासन के पास ले जाओ, सत्यपुरुष के दर्शन करा के लाओ। वहाँ पर बहुत सारे हंस (भक्त) तथा हंसनी (नारी-भक्तमति) इकट्ठे होकर नाचते-गाते धर्मदास जी को सम्मान के साथ लेकर चले। सब हंसो तथा नारियों ने गले में सुन्दर मालाएं पहन रखी थी। उनके शरीर का प्रकाश 16 सूर्यों के समान था। जब धर्मदास जी ने तख्त (सिंहासन) पर बैठे सत्य पुरुष जी को देखा तो वही स्वरुप था जो धरती पर जिन्दा बाबा के रुप में था। परन्तु यहाँ पर परमेश्वर के एक रोम (शरीर के बाल) का प्रकाश करोड़ सूर्यों तथा करोड़ चन्द्रमा के प्रकाश से भी कहीं अधिक था। जिन्दा रूप में नीचे से गए परमात्मा तख्त पर विराजमान अपने ही दूसरे स्वरूप पर चँवर करने लगा। धर्मदास ने सोचा कि जिन्दा तो इस परमेश्वर का सेवक होगा। परन्तु सूरत मिलती-जुलती है। कुछ देर में तख्त पर बैठा परमात्मा खड़ा हुआ तथा जिन्दा सिंहासन पर बैठ गया। तेजोमय शरीर वाले प्रभु जिन्दा के शरीर में समा गया। धर्मदास शर्म के मारे पानी-पानी हो गया। अपने आपको कोसने लगा कि मैं कैसा दुष्ट हूँ। मैंने परमेश्वर को कितना दुःखी किया, कितना अपमानित किया। मुझे वहाँ विश्वास नहीं हुआ। जब दर्शन करवाकर सतलोक के भक्त वापिस लाए। तीन दिन तक परमात्मा के सत्यलोक में रहा। उधर से धर्मदास को तीन दिन से अचेत देखकर घर, गाँव तथा रिश्तेदार व मित्र बान्धवगढ़ में धर्मदास जी के घर पर इकट्ठे हो गए। कोई झाड़-फूँक करा रहा था। कोई वैध से उपचार करा रहा था, परन्तु सब उपाय व्यर्थ हो चुके थे। किसी को आशा नहीं रही थी कि धर्मदास जिन्दा हो जाएगा। तीसरे दिन परमात्मा ने उसकी आत्मा को शरीर में प्रवेश कर दिया। धर्मदास जी को उस बाग से उठाकर घर ले गए थे। जहाँ से परमात्मा उसको सत्यलोक लेकर गए थे। धर्मदास सचेत हो गया था। धर्मदास जी सचेत होते ही उस बाग में उसी स्थान पर गए तो वही परमात्मा जिन्दा बाबा के रुप में बैठे थे। धर्मदास जी चरणों में गिर गए और कहने लगे हे प्रभु! मुझ अज्ञानी को क्षमा करो प्रभु! :-

''अवगुण मेरे बाप जी, बख्सो गरीब निवाज''। जो मैं पूत कुपुत हूँ, बहुर पिता को लाज''

मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि आप परमात्मा हैं, आप परम अक्षर ब्रह्म हैं। कभी-कभी आत्मा तो कहती थी कि पूर्ण ब्रह्म के बिना ऐसा ज्ञान पृथ्वी पर कौन सुना सकता है, परन्तु मन तुरन्त विपरीत विचार खड़े कर देता था। हे सत्य पुरुष! आपने अपने शरीर की वह शोभा जो सत्यलोक में है, यहाँ क्यों प्रकट नहीं कर रखी?

परमेश्वर जी ने कहा कि धर्मदास! यदि मैं उसी प्रकाशयुक्त शरीर से इस काल लोक में आ जाऊँ तो क्षर पुरुष (ज्योति निरंजन भी इसी को कहते हैं) व्याकुल हो जाए। मैं अपना सर्व कार्य गुप्त करता हूँ। यह मुझे एक सिद्धी वाला सन्त मानता है। लेकिन इसको यह नहीं मालूम कि मैं कहाँ से आया हूँ? कौन हूँ? परमेश्वर ने धर्मदास से प्रश्न किया कि आपको कैसा लगा मेरा देश? धर्मदास बोले कि हे परमेश्वर इस संसार में अब मन नहीं लग रहा। उस पवित्र स्थान के सामने तो यह काल का सम्पूर्ण लोक (21 ब्रह्माण्डों का क्षेत्र) नरक के समान लग रहा है। जन्म-मरण यहाँ का अटल विधान है। चौरासी लाख प्रकार के प्राणियों के जीवन भोगना भी अनिवार्य है। प्रत्येक

प्राणी इसी आशा को लेकर जीवित हैं कि अभी नहीं मरुंगा परन्तु फिर भी कभी भी मत्यु को प्राप्त हो जाता है। प्रत्येक प्राणी एक-दूसरे से कपट से बातें करता है। लेकिन आपके सत्यलोक में सब व्यक्ति प्यार से बातें करते हैं। निष्कपट व्यवहार करते हैं। मैंने तीनों दिन यही जाँच की थी। धर्मदास जी यदि घर उपस्थित स्वजनों को न देखते जो उसके अचेत होने के साक्षी थे तो समझते कि कोई स्वप्न देखा होगा। परन्तु अब दढ़ निश्चय हो गया था। धर्मदास ने प्रश्न किया।

''क्या गुरू बदल सकते हैं?''

प्रश्न (धर्मदास जी का) :- हे प्रभु क्या गुरु बदल सकते हैं? सुना है सन्तों से कि गुरु नहीं बदलना चाहिए। गुरु एक, ज्ञान अनेक।

उत्तर (सत्यपुरुष का) :- जब तक गुरु मिले नहीं साचा, तब तक गुरु करो दस पाँचा।

कबीर झूठे गुरु के पक्ष को, तजत न लागै वार। द्वार न पावै मोक्ष का, रह वार का वार।।

भावार्थ : जब तक सच्चा गुरु (सतगुरु) न मिले, तब तक गुरु बदलते रहना चाहिए। चाहे कितने ही गुरु क्यों न बनाने पड़ें और बदलने पड़ें। झूठे गुरु को तुरन्त त्याग देना।

कबीर, डूबै थे पर उभरे, गुरु के ज्ञान चमक। बेड़ा देखा जरजरा, उतर चले फड़क।।

भावार्थ : जिस समय मुझे सत्य गुरु मिले, उनके ज्ञान के प्रकाश से पता चला कि हमारा ज्ञान और समाधान (साधना) गलत है तो ऐसे गुरु बदल दिया जैसे किसी डर से पशु फड़क कर बहुत तेज दौड़ता है और जैसे रात्रि में सफर कर रहे यात्रियों को सुबह प्रकाश में पता चले कि जिस नौका में हम सवार हैं, उसमें पानी प्रवेश कर रहा है और साथ में सुरक्षित और साबत नौका खड़ी है तो समझदार यात्री जिसने कोई नशा न कर रखा हो, वह तुरंत फूटी नौका को त्यागकर साबत (सुरक्षित) नौका में बैठ जाता है। मैंने जब काशी में कबीर जी सच्चे गुरु का यह ज्ञान सुना जो आपको सुनाया है तो जाति, धर्म को नहीं देखा। उसी समय सत्यगुरु की शरण में चला गया और दीक्षा मन्त्र लेकर भक्ति कर रहा हूँ। सतगुरु ने मुझे दीक्षा देने का आदेश दे रखा है। हे धर्मदास! विचार कीजिए यदि एक वैध से रोगी स्वस्थ नहीं होता तो क्या अन्य डॉक्टर के पास नहीं जाता?

धर्मदास ने कहा कि जाता है, जाना भी चाहिए, जीवन रक्षा करनी चाहिए। परमेश्वर ने कहा कि इसी प्रकार मनुष्य जन्म जीव कल्याण के लिए मिलता है। जीव को जन्म-मरण का दीर्घ रोग लगा है। यह सत्यनाम तथा सारनाम बिना समाप्त नहीं हो सकता। दोनों मंत्र काशी में सतगुरु कबीर रहते हैं, उनसे मिलते हैं, पथ्वी पर और किसी के पास नहीं हैं। आप काशी में जाकर दीक्षा लेना, आपका कल्याण हो जाएगा क्योंकि सत्यगुरु के बिना मेरा वह सत्यलोक प्राप्त नहीं हो सकता।

धर्मदास जी ने कहा कि हे प्रभु! मैंने गुरु रुपदास जी से दीक्षा ले रखी है। मैं पहले उनसे गुरु बदलने की आज्ञा लूँगा, यदि वे कहेंगे तो मैं गुरु बदलूंगा परन्तु धर्मदास की मूर्खता की हद देखकर परमेश्वर सातवीं बार अन्तर्ध्यान हो गए। धर्मदास जी फिर व्याकुल हो गए। पहले रुपदास जी के पास गए जो श्री कष्ण अर्थात् श्री विष्णु जी के पुजारी थे। जो वैष्णव पंथ से जुड़े थे।

धर्मदास जी ने सन्त रुपदास जी से सर्व घटना बताई तथा गुरु बदलने की आज्ञा चाही। सन्त रुपदास जी अच्छी आत्मा के इन्सान थे। उन्होंने कहा बेटा धर्मदास! जो ज्ञान आपने सुना है जिस जिन्दा बाबा से, यह ज्ञान भगवान ही बता सकता है। मेरी तो आयु अधिक हो गई है। मैं तो इस मार्ग को त्याग नहीं सकता। आपकी इच्छा है तो आप उस महात्मा से दीक्षा ले सकते हो।

तब धर्मदास जी काशी में गए, वहाँ पर कबीर जुलाहे की झोंपड़ी का पता किया। वहाँ कपड़ा बुनने का कार्य करते कबीर परमेश्वर को देखकर आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। खुशी भी अपार हुई कि सतगुरु तथा परमेश्वर यही है। तब उनसे दीक्षा ली और अपना कल्याण करवाया। कबीर परमेश्वर जी ने धर्मदास जी को फिर दो अक्षर (जिस में एक ओम् ॐ मन्त्र है तथा दूसरा तत् जो सांकेतिक है) का सत्यनाम दिया। फिर सारनाम देकर सतलोक का वासी किया।

❖ कलयुग में परमात्मा अन्य निम्न अच्छी आत्माओं (दृढ भक्तों) को मिलेः-

2. संत मलूक दास (अरोड़ा) जी को मिले।

3. संत दादू दास जी आमेर (राजस्थान वाले) को मिले।

4. संत नानक देव जी को सुल्तानपुर शहर के पास बह रही बेई नदी पर मिले जहाँ गुरूद्वारा ''सच्चखण्ड साहेब'' यादगार रूप में बना है।

5. संत गरीब दास जी गाँव छुड़ानी जिला झज्जर (हरियाणा) वाले को मिले, उस स्थान पर वर्तमान में यादगार बनी हुई है।

संत गरीब दास जी 10 वर्ष के बच्चे थे। अपने ही खेतों में अन्य कई ग्वालों के संग गऊएं चराने जाया करते थे, परमेश्वर जिन्दा बाबा के रूप में सत्यलोक (सच्चखण्ड) से चलकर आए। यह लोक सर्व भवनों के ऊपर है, जहाँ परमात्मा रहते हैं, सन्त गरीब दास जी की आत्मा को ऊपर अपने लोक में परमेश्वर लेकर गए। बच्चे को मृत जानकर शाम को चिता पर रखकर अन्तिम संस्कार करने वाले थे। तत्काल परमात्मा ने सन्त गरीबदास जी की आत्मा को ऊपर ब्रह्माण्डों का भ्रमण करवाकर सत्य ज्ञान बताकर शरीर में प्रवेश कर दिया, बालक जीवित हो गया। यह घटना फाल्गुन शुद्धि द्वादशी संवत 1784 सन् 1727 की है। संत गरीब दास जी को परमात्मा ने तत्त्वज्ञान प्रदान किया। उनका ज्ञान योग खोल दिया। जिस कारण से संत गरीब दास जी ने 24 हजार वाणी बोली जो संत गोपाल दास जी द्वारा लिखी गई। उन अमृतवाणियों को प्रिन्ट करवाकर ग्रन्थ रूप दे दिया है। यह दास (संत रामपाल दास) उसी से सत्संग किया करता है।

संत गरीब दास जी ने अमृत वाणी में कहा है :-

गरीब, हम सुलतानी नानक तारे, दादू को उपदेश दिया।
जाति जुलाहा भेद ना पाया, काशी मांहे कबीर हुआ।।
गरीब, अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड का, एक रति नहीं भार।
सतगुरू पुरूष कबीर हैं, कुल के सिरजनहार।।

भावार्थ :- संत गरीब दास जी ने परमात्मा से प्राप्त दिव्य दृष्टि से देखकर भूत-भविष्य का ज्ञान कहा है, बताया है कि जो काशी नगर (उत्तर प्रदेश) में जुलाहा कबीर जी थे। वे सर्व ब्रह्माण्डों के सृजनहार हैं। सर्व ब्रह्माण्डों को अपनी शक्ति से ठहराया है। परमेश्वर कबीर जी पर उनका कोई भार नहीं है। जैसे वैज्ञानिकों ने हवाई जहाज, रॉकेट बनाकर उड़ा दिये, स्वयं भी बैठ कर यात्रा करते हैं, इस प्रकार संत गरीब दास जी ने परमेश्वर जी को आँखों देखकर उनकी महिमा बताई है।

6. संत घीसा दास जी गाँव-खेखड़ा जिला बागपत (उत्तर प्रदेश) को मिले थे।

पुस्तक विस्तार को मध्यनजर रखते हुए अधिक विस्तार नहीं कर रहा हूँ, अधिक जानकारी के लिए **www.jagatgururampalji.org** से खोलकर अधिक ज्ञान ग्रहण कर सकते हैं।

❖ धर्मदास जी को कबीर परमेश्वर जी ने धामों की रचना की जानकारी दी :-

"पवित्र तीर्थ तथा धाम की जानकारी"

किसी साधक ऋषि जी ने किसी स्थान या जलाशय पर बैठ कर साधना की या अपनी आध्यात्मिक शक्ति का प्रदर्शन किया। वह अपनी भक्ति कमाई करके साथ ले गया तथा अपने ईष्ट लोक को प्राप्त हुआ। उस साधना स्थल का बाद में तीर्थ या धाम नाम पड़ा। अब कोई उस स्थान को देखने जाए कि यहां कोई साधक रहा करता था। उसने बहुतों का कल्याण किया। अब न तो वहाँ संत जी है, जो उपदेश दे। वह तो अपनी कमाई करके चला गया।

विचार करें :- कृपया तीर्थ व धाम को हमाम दस्ता जानें। (एक डेढ़ फुट का लोहे का गोल पात्र लगभग नौ इंच परिधि का उखल जैसा होता है तथा डेढ़ फुट लम्बा तथा दो इन्च परिधि का गोल लोहे का डंडा-सा मूसल जैसा होता है जो सामग्री व दवाईयां आदि कूटने के काम आता है, उसे हमाम दस्ता कहते हैं।) एक व्यक्ति अपने पड़ौसी का हमाम दस्ता मांग कर लाया। उसने हवन की सामग्री कूटी तथा मांज धोयकर लौटा दिया। जिस कमरे में हमाम दस्ता रखा था उस कमरे में सुगंध आने लगी। घर के सदस्यों ने देखा कि यह सुगन्ध कहां से आ रही है तो पता चला कि हमोम दस्ते से आ रही है। वे समझ गए कि पड़ौसी ले गया था, उसने कोई सुगंध युक्त वस्तु कूटी है। कुछ दिन बाद वह सुगंध भी आनी बंद हो गई।

इसी प्रकार तीर्थ व धाम को एक हमाम दस्ता जानों। जैसे सामग्री कूटने वाले ने अपनी सर्व वस्तु पोंछ कर रख ली। खाली हमाम दस्ता लौटा दिया। अब कोई उस हमोम दस्ते को सूंघकर ही कृत्यार्थ माने तो नादानी है। उसको भी सामग्री लानी पड़ेगी, तब पूर्ण लाभ होगा।

ठीक इसी प्रकार किसी धाम व तीर्थ पर रहने वाला पवित्र आत्मा तो राम नाम की सामग्री कूट कर झाड़-पौंछ कर अपनी सर्व कमाई को साथ ले गया। बाद में अनजान श्रद्धालु, उस स्थान पर जाने मात्र से कल्याण समझें तो उनके मार्ग दर्शकों (गुरुओं) की शास्त्र विधि रहित बताई साधना का ही परिणाम है। उस महान आत्मा सन्त की तरह प्रभु साधना करने से ही कल्याण सम्भव है। उसके लिए तत्त्वदर्शी संत की खोज करके उससे उपदेश लेकर आजीवन भक्ति करके मोक्ष प्राप्त करना चाहिए। शास्त्र विधि अनुकूल सत साधना मुझ दास के पास उपलब्ध है कृपया निःशुल्क प्राप्त करें।

"श्री अमरनाथ धाम की स्थापना कैसे हुई?"

भगवान शंकर जी ने पार्वती जी को एकांत स्थान पर उपेदश दिया था जिस कारण से माता पार्वती जी इतनी मुक्त हो गई कि जब तक प्रभु शिव जी (तमोगुण) की मृत्यु नहीं होगी, तब तक उमा जी की भी मृत्यु नहीं होगी। सात ब्रह्मा जी (रजोगुण) की मृत्यु के उपरान्त भगवान विष्णु (सतोगुण) की मृत्यु होगी। सात विष्णु जी की मृत्यु के पश्चात् शिवजी की मृत्यु होगी। तब माता पार्वती जी भी मृत्यु को प्राप्त होगी, पूर्ण मोक्ष नहीं हुआ। फिर भी जितना लाभ पार्वती जी को हुआ वह भी अधिकारी से उपदेश मंत्र ले कर हुआ। बाद में श्रद्धालुओं ने उस स्थान की याद बनाए रखने के लिए उसको सुरक्षित रखा तथा दर्शक जाने लगे।

जैसे यह दास (सन्त रामपाल) स्थान-स्थान पर जा कर सत्संग करता है। वहाँ पर खीर व हलवा भी बनाया जाता है। जो भक्तात्मा उपदेश प्राप्त कर लेता है, उसका कल्याण हो जाता है। सत्संग समापन के उपरान्त सर्व टैंट आदि उखाड़ कर दूसरे स्थान पर सत्संग के लिए चले गये,

पूर्व स्थान पर केवल मिट्टी या ईंटों की बनाई भट्ठी व चूल्हे शेष छोड़ दिए। फिर कोई उसी शहर के व्यक्ति से कहे कि आओ आपको वह स्थान दिखा कर लाता हूँ, जहां संत रामपाल दास जी का सत्संग हुआ था, खीर बनाई थी। बाद में उन भट्ठियों को देखने जाने वाले को न तो खीर मिले, न ही सत्संग के अमत वचन सुनने को मिले, न ही उपदेश प्राप्त हो सकता जिससे कल्याण हो सके। उसके लिए संत ही खोजना पड़ेगा, जहां सत्संग चल रहा हो, वहाँ पर सर्व कार्य सिद्ध होंगे। ठीक इसी प्रकार तीर्थों व धामों पर जाना तो उस यादगार स्थान रूपी भट्ठी को देखना मात्र ही है। यह पवित्र गीता जी में वर्णित न होने से शास्त्र विरूद्ध हुई। जिससे कोई लाभ नहीं।(प्रमाण पवित्र गीता अध्याय 16 मंत्र 23-24)

तत्त्व ज्ञान हीन सन्तों व महंतों तथा आचार्यों द्वारा भ्रमित श्रद्धालु तीर्थों व धामों पर आत्म कल्याणार्थ जाते हैं। श्री अमरनाथ जी की यात्रा पर गए श्रद्धालु तीन-चार बार बर्फानी तुफान में दब कर मत्यु को प्राप्त हुए। प्रत्येक बार मरने वालों की संख्या हजारों होती थी। विचारणीय विषय है कि यदि श्री अमरनाथ जी के दर्शन व पूजा लाभदायक होती तो क्या भगवान शिव उन श्रद्धालुओं की रक्षा नहीं करते? अर्थात् प्रभु शिव जी भी शास्त्र विरूद्ध साधना से अप्रसन्न हैं।

''वैष्णो देवी के मन्दिर की स्थापना कैसे हुई?''

जब सती जी (उमा देवी) अपने पिता राजा दक्ष के हवन कुण्ड में छलांग लगाने से जलकर मत्यु को प्राप्त हुई। भगवान शिव जी उसकी अस्थियों के कंकाल को मोहवश सती जी (पार्वती जी) जान कर दस हजार वर्ष तक कंधे पर लिए पागलों की तरह घूमते रहे। भगवान विष्णु जी ने सुदर्शन चक्र से सती जी के कंकाल को छिन्न-भिन्न कर दिया। जहां धड़ गिरा वहाँ पर उसको जमीन में गाढ़ दिया गया। इस धार्मिक घटना की याद बनाए रखने के लिए उसके ऊपर एक मन्दिर जैसी यादगार बना दी कि कहीं आने वाले समय में कोई यह न कह दे कि पुराण में गलत लिखा है। उस मन्दिर में एक स्त्री का चित्र रख दिया उसे वैष्णो देवी कहने लगे। उसकी देख-रेख व श्रद्धालु दर्शकों को उस स्थान की कहानी बताने के लिए एक नेक व्यक्ति नियुक्त किया गया। उसको अन्य धार्मिक व्यक्ति कुछ वेतन देते थे। बाद में उसके वंशजों ने उस पर भेंट (दान) लेना प्रारम्भ कर दिया तथा कहने लगे कि एक व्यक्ति का व्यापार ठप्प हो गया था, माता के सौ रूपये संकल्प किए, एक नारियल चढ़ाया। वह बहुत धनवान हो गया। एक निःसन्तान दम्पति था, उसने माता के दो सौ रूपए, एक साड़ी, एक सोने का गले का हार चढ़ाने का संकल्प किया। उसको पुत्र प्राप्त हो गया।

इस प्रकार भोली आत्माऐं इन दन्त कथाओं पर आधारित होकर अपनी पवित्र गीता जी तथा पवित्र वेदों को भूल गए, जिसमें वह सर्व साधनाएं शास्त्र विधि रहित लिखी हैं। जिसके कारण न कोई सुख होता है, न कोई कार्य सिद्ध होता है, न ही परम गति अर्थात् मुक्ति होती है। (प्रमाण पवित्र गीता अध्याय 16 मंत्र 23-24)। इसी प्रकार जहां देवी की आँखे गिरी वहाँ नैना देवी का मन्दिर व जहां जिह्वा गिरी वहाँ श्री ज्वाला जी के मन्दिर तथा जहां धड़ गिरा वहाँ वैष्णो देवी के मन्दिर की स्थापना हुई।

''पुरी में जगन्नाथ जी का मंदिर अर्थात् धाम कैसे बना'' तथा ''श्री जगन्नाथ के मंदिर में छूआछात प्रारम्भ से ही नहीं है'' कप्या पढ़ें लक्ष्मण बोध के सारांश में पष्ठ 245 से 251 पर।

अध्याय ''ज्ञान सागर'' का सारांश

कबीर सागर का प्रथम अध्याय ''ज्ञान सागर'' है। वास्तव में प्रथम अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' होना चाहिए। यह जिल्द बाँधने वालों से गलती हुई है और वर्तमान तक चली आ रही है। हमें अमृत ज्ञान ग्रहण करना है, वह करते हैं।

इस ''ज्ञान सागर'' अध्याय में परमेश्वर कबीर जी ने अपने निवास स्थान ''सत्यलोक'' तथा उसमें रहने वाले हंस आत्माओं की सतलोक में विशेष स्थिति बताई है जो काल ब्रह्म के लोक में नहीं है।

अथ ज्ञान सागर प्रारम्भ (सारांश)

चौपाई (पृष्ठ 1 से कुछ वाणियाँ)

मुक्ति भेद मैं कहूं विचारी। ता कहं नहीं जानत संसारी।।
बहु आनन्द होत तिहिं ठाऊं। संशय रहित अमरपुर गाऊँ।।

(पृष्ठ 2)

तहंवा रोग शोग नहीं कोई। क्रीड़ा विनोद करें सब कोई।।
चंद्र न सूर दिवस नहीं राती। वर्ण भेद नहीं जाति–अजाति।।
तहंवा जरा–मरण नहीं होई। बहुत आनन्द करें सब कोई।।
पुष्पक विमान सदा उजियारा। अमृत भोजन करत अहारा।।
काया सुंदर ताहि प्रमाना। उदित भये मानो षोड़श भाना।।
इतनौं एक हंस उजियारा। शोभित–शोभित सबै जनु तारा।।
विमल बांस तहां बिगसाई। योजन चार लौं सुबांस उड़ाई।।
सदा मनोहर छत्र सिर छाजा। बूझ न परै रंक और राजा।।
नहीं तहां काल वचन की खानी। अमृत वचन बोलत भल बानी।।
आलस निन्द्रा नहीं प्रकाशा। बहुत प्रेम सुं सुख करै विलासा।।
साखी :– अस सुख है हमारे घर कह कबीर समुझाय।
सत शब्द को जानि के अस्थिर बैठे जाय।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने अपने घर यानि सत्यलोक का वर्णन करते हुए बताया है कि मैं जो पूर्ण मोक्ष मार्ग का भेद बता रहा हूँ। उसको संसार में कोई नहीं जानता। मेरे द्वारा बताए गए मोक्ष मंत्र की साधना करने वाला उस अमरपुर अर्थात् अविनाशी स्थान (सनातन परम धाम) को प्राप्त हो जाता है।(जिसका वर्णन गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में है।) वहाँ पर बहुत आनन्द है। वहाँ पर अमर शरीर प्राप्त होता है जिसमें कभी कोई रोग नहीं लगता। वहाँ पर कोई शोक (चिंता) नहीं है। सर्व मोक्ष प्राप्त आत्माऐं आनन्द करते हैं। उस सत्यलोक में कोई चाँद-सूरज तथा दिन-रात नहीं हैं। वहाँ पर चार वर्ण (ब्राह्मण, वैश्य, क्षत्रीय, शुद्र) नहीं हैं। इसलिए वहाँ जाति भेदभाव नहीं है। हमारे अमरलोक में जरा (वृद्ध अवस्था) तथा मरण (मृत्यु) नहीं होता।

{गीता अध्याय 7 श्लोक 29 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि जो साधक जरा यानि वृद्ध अवस्था तथा मरण (मृत्यु) से मुक्ति प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील है, जो इस संसार के किसी वैभव की इच्छा नहीं रखते, वे तत् ब्रह्म को, सम्पूर्ण अध्यात्म को तथा सर्व कर्मों को जानते हैं।(गीता अध्याय 7 श्लोक 29)

गीता अध्याय 8 श्लोक 1 में अर्जुन ने प्रश्न किया कि तत् ब्रह्म क्या है? आध्यात्म, अधिभूत किसे कहते हैं?

इस प्रश्न का उत्तर गीता ज्ञान दाता काल ब्रह्म (क्षर पुरूष) ने गीता अध्याय 8 के ही श्लोक 3 में दिया है। कहा है कि वह परम अक्षर ब्रह्म है। इसी के विषय में गीता अध्याय 8 के ही श्लोक 8, 9, 10, 19 तथा 20, 21, 22 में और अध्याय 18 श्लोक 46, 61-62 आदि-आदि अनेकों श्लोकों में वर्णन किया है। इसी मुक्ति का वर्णन गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में भी है।}

परमेश्वर कबीर जी ने बताया है कि वहाँ पर व̇द्ध अवस्था यानि बुढ़ापे का कष्ट नहीं है। सदा युवा अवस्था रहती है, म̇त्यु नहीं होती। सर्व सतलोक निवासी आनन्द से रहते हैं। जिस पुष्पक विमान का वर्णन रामायण में आता है कि जिस समय श्री राम जी लंका के राजा रावण पर विजय प्राप्त करके, रावण को मारकर सीता जी के साथ पुष्पक विमान में बैठकर अयोध्या नगरी आए थे। ऐसे पुष्पक विमान सत्यलोक में प्रत्येक हंस (सत्यलोक में जीव नहीं हंस कहा जाता है) के महल के सामने खड़ा है। जब चाहें उस पर बैठकर घूम सकते हैं। उस सत्यलोक में सदा प्रकाश रहता है। वह सतलोक स्वप्रकाशित है। करोड़ों सूर्यों जितना प्रकाश उस सत्यलोक की धरती का अपना है जिसमें गर्मी नहीं है। इसलिए वहाँ सूर्य की आवश्यकता नहीं है और इसी कारण से दिन-रात भी नहीं हैं। सत्यलोक में प्रत्येक हंस (मानव) के शरीर का सोलह सूर्यों जितना प्रकाश है। यहाँ पर उन हंसों का वर्णन है जो सत्य पुरूष के साथ वाले क्षेत्र में निवास करते हैं। वहाँ केवल नर हैं। जैसा कि सत्यलोक को तीन भागों में बाँटा है। दूसरे भाग में नर तथा नारी रूप में परिवार के साथ हंस रहते हैं। वहाँ पर नर तथा नारी के शरीर का प्रकाश तो सोलह सूर्यों के प्रकाश के समान है, मनोहर छवि है, परंतु विकार किसी में व्याप्त नहीं होते।

अम̇त भोजन सब सतलोकवासी करते हैं। सबकी सुंदर काया यानि सुंदर शरीर है जैसे सोलह सूर्य शरीर में उदय हो गए हैं। एक हंस यानि सत्यलोक में मानव के शरीर की इतनी (सोलह सूर्यों जितनी) शोभा है। वहाँ सत्यलोक तथा सत्यपुरूष के प्रकाश में प्रत्येक हंस (देव स्वरूप आत्माएं) ऐसे दिखाई देते हैं जैसे तारे होते हैं यानि परमेश्वर के शरीर के प्रकाश के सामने थोड़े प्रकाशयुक्त परंतु चमक फिर भी दिखाई देती है। वहाँ पर सबको दिव्य नेत्र प्राप्त होते हैं जो सूक्ष्म से सूक्ष्म को भी देख लेते हैं। सत्यलोक में बहुत अच्छी सुगंध सदैव उठती रहती है। उसकी महक चार योजन यानि 16 कोस तक है। (एक योजन 4 कोस का होता है और एक कोस 3 कि.मी. का होता है, इस प्रकार एक योजन 12 कि.मी. का है।)

सत्यलोक में प्रत्येक देवात्मा (हंस-हंसनी) के सिर के ऊपर दैवीय शक्ति से अपने आप छत्र शोभित रहता है। यदि छत्र लगाना चाहें तो इच्छा करते ही छत्र सिर पर होता है। जब न चाहें तो सिर से हटकर अपने स्थान पर चला जाएगा जो महल में ही होता है। वहाँ पर केवल एक सत्यपुरूष राजा है। अन्य सब प्रजा है। प्रजाजन की शोभा प̇थ्वी के राजाओं से असँख्यों गुणा अधिक है। वहाँ कोई रंक (निर्धन) और राजा का अंतर नहीं है। वहाँ पर काल ब्रह्म के वचन यानि भाषा वाली जनता नहीं है जहाँ अपने से निर्बल को कुवचन बोल देते हैं, डाँट लगाते हैं। वहाँ सत्यलोक (सतलोक) में आलस तथा निन्द्रा किसी को नहीं आती, सब बहुत प्रेम से सुख भोगते हैं।

कबीर परमेश्वर जी ने सेठ धर्मदास जी को बताया कि हमारे घर यानि सतलोक में ऐसा सुख है, मैं तेरे को समझाकर कह रहा हूँ। मेरे पास वह सत्य शब्द (सतनाम) है जिसको समझकर स्मरण करके अमर लोक में स्थाई निवास प्राप्त करता है।

अध्याय ज्ञान सागर का सारांश लिखा जा रहा है :- पृष्ठ 2 से 56 तक पुराणों और रामायण तथा श्रीमद् भागवत सुधासागर वाला ज्ञान है। श्री राम की जीवनी, श्री कृष्ण लीला तथा पांडव यज्ञ जो सुपच सुदर्शन जी से संपूर्ण हुआ था, का संक्षिप्त सटीक वर्णन है।

❖ कुछ विशेष जानने योग्य :-

परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को सर्व पुराणों, रामायण, गीता तथा सुधा सागर का ज्ञान इसलिए बताया कि धर्मदास यह न समझे कि यह कबीर अपने-अपने ज्ञान को बता रहा है जिसका कोई प्रमाण नहीं और कबीर जी को गीता, पुराण, रामायण, सुधासागर (जिसको भागवत कहते हैं) का ज्ञान नहीं है क्योंकि ये सब संस्कृत में लिखी हैं और कबीर जी अशिक्षित हैं। परमेश्वर कबीर जी के मुख से सत्यज्ञान सुनकर धर्मदास जी परमेश्वर कबीर जी के मुख कमल की ओर देखता ही रह गया। मन में यह निश्चय हो गया कि ये कोई सामान्य व्यक्ति नहीं है। पृष्ठ 2 से 56 तक के प्रकरण में एक प्रसंग आया है।

कृष्ण जती और दुर्वासा निराहारी थे

कबीर जी ने कहा कि हे धर्मदास! आप जी को पता है कि श्री कृष्ण जी की 8 स्त्रियां तो वे थी जिनसे विवाह किया था, 16 हजार वे स्त्रियां थी जिनको एक राजा से युद्ध करके छीनकर लाए थे तथा अन्य जो मथुरा-वृंदावन की गोपियां थी, इन सबके साथ श्री कृष्ण जी भोग-विलास (Sex) करते थे। एक दुर्वासा ऋषि थे, वे निराहार रहते थे। दिन में केवल एक तिनका दूब घास का खाते थे, दूब को दुर्वा भी कहते हैं। केवल दूब के घास मात्र तिनके पर आधारित रहने के कारण ऋषि का नाम 'दुर्वासा' प्रसिद्ध हुआ। एक समय कुछ गोपियों को दुर्वासा ऋषि के दर्शन करने की इच्छा हुई, परंतु दुर्वासा ऋषि का आश्रम यमुना (जमना) दरिया के उस पार था। गोपियों ने श्री कृष्ण जी से दुर्वासा ऋषि के दर्शन करने तथा उनको भोजन करवाकर साधुभोज का पुण्य लेने की इच्छा व्यक्त की। श्री कृष्ण जी ने कहा कि बहुत अच्छा उद्देश्य है, जाओ। गोपियों ने समस्या बताई कि यमुना नदी में अथाह जल बह रहा है, कैसे पार करेंगी? श्री कृष्ण जी ने कहा कि तुम जमना नदी के किनारे खड़ी होकर ये शब्द कहना कि ''हे जमना दरिया! यदि श्री कृष्ण जती हैं और हमारे साथ भोग-विलास नहीं किया है तो हमें रास्ता दे दो। जब वापिस आओ तो जमना के किनारे कहना ''हे यमुना दरिया! यदि दुर्वासा ऋषि पवन आहारी हैं तो हमें रास्ता दे दो।'' सैंकड़ों गोपियाँ भोजन के थाल लेकर चली। यमुना नदी के किनारे जब ये शब्द बोले कि ''यदि कृष्ण गोपाल जती हैं और हमारे साथ भोग-विलास नहीं किया है (जती दो प्रकार के होते हैं, एक तो जिसने कभी स्त्री भोग नहीं किया हो, दूसरा जिसने अपनी पत्नी के अतिरिक्त अन्य स्त्री से कभी मिलन न किया हो। इसी प्रकार स्त्री भी दो प्रकार की सती होती है। स्त्रियों में तीसरे प्रकार की सती उसे कहा जाता है जो अपने पति की मृत्यु होने पर उसके साथ चिता में जिंदा जल जाती थी, मर जाती थी। जैसे सीता जी को सती कहते हैं, उसने रावण को नहीं स्वीकारा, केवल अपने पति श्री रामचन्द्र पर आश्रित रही। कहते हैं ''जती–सती का जोड़ा, कभी नहीं दुख का फोड़ा) तो हमें रास्ता दे दो। उसी समय जमुना नदी का पानी घुटनों तक आए, इतना गहरा रह गया। सब गोपियाँ नदी पार कर गई, फिर से जमुना दरिया किनारों तक भरकर बहने लगी। यह देखकर सर्व गोपियों ने विचार किया कि श्री कृष्ण जी ने हमारे साथ अनेकों बार विलास किया है, यह कैसा अचरज है? सब गोपियाँ यह विचार करती हुई दुर्वासा ऋषि के आश्रम में पहुँची। ऋषि दुर्वासा के

सामने भोजन का थाल रखकर भोजन खाने की प्रार्थना की। ऋषि जी ने कहा, देवियो! मैं आहार नहीं करता, केवल वायु पर या एक तिनका दूब घास खा लेता हूँ। उपस्थित सर्व अनुयाईयों ने यही बताया। तब गोपियों ने कहा, ऋषि जी! हम बड़ी श्रद्धा के साथ भोजन बनाकर लाई हैं। आप भोग नहीं लगाओगे तो हमारा दिल टूट जाएगा। यह कहकर बार-बार विनय करने लगी। तब ऋषि दुर्वासा जी ने सबका भोजन सारा का सारा खा लिया। गोपियों को आश्चर्य भी हुआ और अपने भोजन को खाने से मिलने वाले पुण्य से खुशी भी हुई और अपने गाँव को चल पड़ी। यमुना दरिया पर आकर उनको याद आया कि क्या शब्द कहना है? उन्होंने कहा कि ''हे जमुना दरिया! यदि दुर्वासा जी पवन आहारी हैं तो हमें रास्ता दे दो।'' उसी समय यमुना दरिया का पानी घुटनों तक रह गया। सर्व गोपियाँ दरिया पार कर गई। फिर से यमुना दरिया उसी तरह भरकर वेग से बहने लगी।

श्री कृष्ण जी ने गोपियों से पूछा, कहो कैसा रहा सफर? सब गोपियाँ मुस्करवाकर अपने-अपने घर चली गई और बोली आपको सब पता है।

इस कथा का क्या सारांश है?

संत गरीबदास जी (गाँव=छुड़ानी, जिला-झज्जर, हरियाणा वाले) को परमेश्वर कबीर जी ऐसे ही मिले थे जैसे सेठ धर्मदास जी को मिले थे। उनको भी सतलोक ले जाकर वापिस छोड़ा था। उनको भी तत्त्वज्ञान बताया था। उनका ज्ञान योग खोला था। संत गरीबदास जी ने अपनी अमृतवाणी में कहा है :-

गरीब, कृष्ण गोपिका भोग कर, फेर जती कहाया। जाकि गति पाई नहीं, ऐसे त्रिभुवन राया।।

भावार्थ :- श्री कृष्ण जी की रूचि स्त्री भोग करने की नहीं थी। यह कोई पूर्व का संस्कार था। उसका निर्वाह किया था। कृष्ण जी विद्वान थे, जान-बूझकर विलास करना उनका उद्देश्य नहीं था।

ऋषि दुर्वासा तप करे, दुर्वा करे आहार। प्रेम भोज गोपियन का खाया, तनिक न लाई वार।।

दुर्वासा पवन आहारी थे, सब भोजन खाया। श्रद्धालु की श्रद्धा पूर्ण कीनी, ताते भोग लगाया।।

भावार्थ :- ऋषि दुर्वासा जी ने गोपियों की श्रद्धावश भोजन किया। उनकी रूचि खाने की नहीं थी। ऐसा करने से व्रत भंग नहीं हुआ।

श्रीमद्भगवत गीता में लिखा है कि योगी कर्म करता हुआ भी अकर्मी होता है। वास्तव में यह सब काल का जाल है। मन काल का सूक्ष्म रूप है। काल ने प्रत्येक प्राणी को धोखे में रखकर अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए सौ छल-कपट किए हैं। श्री कृष्ण में प्रवेश करके अनेकों रूप बनाकर काल ब्रह्म स्वयं भोग-विलास करता था। भार श्री कृष्ण जी के सिर पर रख देता था। महिमा श्री कृष्ण जी, श्री राम जी तथा अन्य अपने द्वारा भेजे अवतारों की बनाता है, कार्य स्वयं करता है। सब प्राणी अवतारों को समर्थ मानकर उनके फैन (प्रशंसक) होकर उनकी पूजा करके काल जाल में रह जाते हैं।

ज्ञान सागर के पृष्ठ 56 पर यह भी स्पष्ट किया है कि जिस समय महाप्रलय काल निरंजन करेगा, उस समय ब्रह्मलोक को छोड़कर सब नष्ट हो जाऐंगे। फिर ब्रह्मलोक भी नष्ट होगा।(यहाँ पर अस्पष्ट वर्णन है। प्रलय का वास्तविक ज्ञान पढ़ें।)

''महाप्रलय का वर्णन''

महाप्रलय तीन प्रकार की होती है। एक तो काल (ज्योति निरंजन) करता है। महाकल्प के अंत में जिस समय ब्रह्मा जी की मृत्यु होती है {ब्रह्मा की रात्रि एक हजार चतुर्युग की होती है तथा इतना ही

दिन होता है। तीस दिन-रात्रि का एक महीना, 12 महीनों का एक वर्ष, सौ वर्ष का एक ब्रह्मा का जीवन। यह एक महाकल्प कहलाता है} दूसरी महा प्रलय :-- सात ब्रह्मा जी की मत्यु के बाद एक विष्णु जी की मत्यु होती है, सात विष्णु जी की मत्यु के उपरान्त एक शिव की मत्यु होती है। इसे दिव्य महाकल्प कहते हैं उसमें ब्रह्मा, विष्णु, शिव सहित इनके लोकों के प्राणी तथा स्वर्ग लोक, पाताल लोक, मत्यु लोक आदि में अन्य रचना तथा उनके प्राणी नष्ट हो जाते हैं। उस समय केवल ब्रह्मलोक बचता है जिसमें यह काल भगवान (ज्योति निरंजन) तथा दुर्गा तीन रूपों महाब्रह्मा-महासावित्री, महाविष्णु-महालक्ष्मी और महाशंकर-महादेवी (पार्वती) के रूप, में तीन लोक बना कर रहता है। इसी ब्रह्मलोक में एक महास्वर्ग बना है, उसमें चौथी मुक्ति प्राप्त प्राणी रहते हैं। {मार्कण्डेय, रूमी ऋषि जैसी आत्मा जो चौथी मुक्ति प्राप्त हैं जिन्हें ब्रह्म लीन कहा जाता है वे यहाँ के तीनों लोकों के साधकों की दिव्य दष्टि की क्षमता (रेंज) से बाहर होते हैं। स्वर्ग, मत्यु व पाताल लोकों के ऋषि उन्हें देख नहीं पाते। इसलिए ब्रह्म लीन मान लेते हैं। परन्तु वे ब्रह्मलोक में बने महास्वर्ग में चले जाते हैं।} फिर दिव्य महाकल्प के आरम्भ में काल (ज्योति निरंजन) भगवान ब्रह्म लोक से नीचे की सष्टि फिर से रचता है। काल भगवान अपनी प्रकति (माया-आदि भवानी) महासावित्री, महालक्ष्मी व महादेवी (गौरी)के साथ रति कर्म से अपने तीन पुत्रों (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु, तमगुण शिव) को उत्पन्न करता है। यह काल भगवान उन्हें अपनी शक्ति से अचेत अवस्था में कर देता है। फिर तीनों को भिन्न-2 स्थानों पर जैसे ब्रह्मा जी को कमल के फूल पर, विष्णु जी को समुद्र में शेष नाग की शैय्या पर, शिव जी को कैलाश पर्वत पर रखता है। तीनों को बारी-बारी सचेत कर देता है। उन्हें प्रकति (दुर्गा) के माध्यम से सागर मंथन का आदेश होता है। तब यह महामाया (मूल प्रकति/शेराँवाली) अपने तीन रूप बना कर सागर में छुप जाती है। तीन लड़कियों (जवान देवियों) के रूप में प्रकट हो जाती है। तीनों बच्चे (ब्रह्मा, विष्णु, शिव) इन्हीं तीनों देवियों से विवाह करते हैं। अपने तीनों पुत्रों को तीन विभाग - उत्पत्ति का कार्य ब्रह्मा जी को व स्थिति (पालन-पोषण) का कार्य विष्णु जी को तथा संहार (मारने) का कार्य शिव जी को देता है जिससे काल (ब्रह्म) की सष्टि फिर से शुरु हो जाती है। जिसका वर्णन पवित्र पुराणों में भी है जैसे शिव महापुराण, ब्रह्म महापुराण, विष्णु महापुराण, महाभारत, सुख सागर, देवी भागवद् महापुराण में विस्तत वर्णन किया गया है और गीता जी के चौदहवें अध्याय के श्लोक 3 से 5 में संक्षिप्त रूप से कहा गया है। तीसरी महाप्रलय :- एक ब्रह्मण्ड में 70000 वार त्रिलोकिय शिव (काल के तमोगुण पुत्र) की मत्यु हो जाती है तब एक ब्रह्मण्ड की प्रलय होती है तथा ब्रह्मलोक में तीन स्थानों पर रहने वाला काल (महाशिव) अपना महाशिव वाला शरीर भी त्याग देता है। इस प्रकार यह एक ब्रह्मण्ड की प्रलय अर्थात् तीसरी महाप्रलय हुई तथा उस समय एक ब्रह्मलोकिय शिव (काल) की मत्यु हुई तथा 70000 (सतर हजार) त्रिलोकिय शिव (काल के पुत्र) की मत्यु हुई अर्थात् एक ब्रह्मण्ड में बने ब्रह्म लोक सहित सर्व लोकों के प्राणी विनाश में आते हैं। इस समय को परब्रह्म अर्थात् अक्षर पुरुष का एक युग कहते हैं। इस प्रकार गीता अध्याय 8 श्लोक 16 का भावार्थ समझना चाहिए।

''इस प्रकार तीन दिव्य महाप्रलय होती हैं'' :-

''प्रथम दिव्य महाप्रलय''

जब सौ (100) ब्रह्मलोकिय शिव (काल-ब्रह्म) की मत्यु हो जाती है तब चारों महाब्रह्मण्डों में बने 20 ब्रह्मण्डों के प्राणियों का विनाश हो जाता है।

तब चारों महाब्रह्मण्डों के शुभ कर्मी प्राणियों (हंसात्माओं) को इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में बने नकली

सत्यलोक आदि लोकों में रख देता है तथा उसी लोक में निर्मित अन्य चार गुप्त स्थानों पर अन्य प्राणियों को अचेत करके डाल देता है तथा तब उसी नकली सत्यलोक से प्राणियों को खाकर अपनी भूख मिटाता है तथा जो प्रतिदिन खाए प्राणियों को उसी इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में बने चार गुप्त मुकामों में अचेत करके डालता रहता है तथा वहाँ पर भी ज्योति निरंजन अपने तीन रूप (महाब्रह्मा, महाविष्णु तथा महाशिव) धारण कर लेता है तथा वहाँ पर बने शिव रूप में अपनी जन्म-मंत्यु की लीला करता रहता है, जिससे समय निश्चित रखता है तथा सौ बार मंत्यु को प्राप्त होता है, जिस कारण परब्रह्म के सौ युग का समय इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में पूरा हो जाता है। तत् पश्चात् चारों महाब्रह्मण्डों के अन्दर संष्टि रचना का कार्य प्रारम्भ करता है। {जिस एक संष्टि में सौ ब्रह्मलोकिय शिव (काल) की आयु अर्थात् परब्रह्म के सौ युग तक संष्टि रहती है तथा इतनी ही समय प्रलय रहती है अर्थात् परब्रह्म के दो सौ युग (क्योंकि परब्रह्म के एक युग में एक ब्रह्मलोकिय शिव अर्थात् काल की मंत्यु होती है) में एक दिव्य महाप्रलय जो काल द्वारा की जाती है का क्रम पूरा होता है} यह काल अर्थात् ब्रह्म प्रथम अव्यक्त कहलाता है (गीता अध्याय 7 श्लोक 24-25 में)। दूसरा अव्यक्त परब्रह्म तथा इससे भी परे दूसरा सनातन अव्यक्त जो पूर्ण ब्रह्म है, गीता अध्याय 8 श्लोक 20 का भाव समझें।

''दूसरी दिव्य महाप्रलय''

इस महाप्रलय के पाँच बार हो जाने के पश्चात् द्वितीय दिव्य महाप्रलय होती है। दूसरी दिव्य महाप्रलय परब्रह्म (अविगत पुरुष/अक्षर पुरुष) करता है। उसमें काल अर्थात् ब्रह्म (क्षर पुरूष) सहित सर्व 21 ब्रह्मण्डों का विनाश हो जाता है। जिसमें तीनों लोक (स्वर्गलोक-मंत्युलोक-पाताल लोक), ब्रह्मा, विष्णु, शिव व काल (ज्योति निरंजन-ओंकार निरंजन) तथा इनके लोकों (ब्रह्म लोक) अर्थात् सर्व अन्य 21 ब्रह्मण्डों के प्राणी नष्ट हो जाते हैं।

विशेष :- सात त्रिलोकिय ब्रह्मा की मंत्यु के बाद एक त्रिलोकिय विष्णु जी की मंत्यु होती है तथा सात विष्णु की मंत्यु के बाद एक त्रिलोकिय शिव की मंत्यु होती है। 70000 (सतर हजार) त्रिलोकिय शिव की मंत्यु के बाद एक ब्रह्मलोकिय शिव अर्थात् काल (ब्रह्म) की मंत्यु परब्रह्म के एक युग के बाद होती है। ऐसे एक हजार युग का परब्रह्म (अक्षर पुरूष) का एक दिन तथा इतनी ही रात्रि होती है। तब प्रकंति (दुर्गा) सहित काल (ज्योति निरंजन) अर्थात् ब्रह्म तथा इसके इक्कीस ब्रह्मण्डों के प्राणी विनाश में आते हैं। तब परब्रह्म (दूसरे अव्यक्त) का एक हजार युग का दिन समाप्त होता है। इतनी ही रात्रि व्यतीत होने के उपरान्त ब्रह्म को फिर पूर्ण ब्रह्म प्रकट करता है। गीता अ. 8 श्लोक 17 का भाव ऐसे समझें। परन्तु ब्रह्मण्डों व महाब्रह्मण्डों व इनमें बने लोकों की सीमा (गोलाकार दिवार समझो) समाप्त नहीं होती। फिर इतने ही समय के बाद यह काल तथा माया (प्रकंति देवी) को पूर्ण ब्रह्म (सत्यपुरूष) अपने द्वारा पूर्व निर्धारित संष्टि कर्म के आधार पर पुनः उत्पन्न करता है तथा सर्व प्राणी जो काल के कैदी (बन्दी) हैं, को उनके कर्माधार पर शरीरों में संष्टि कर्म नियम से रचता है तथा लगता है कि **परब्रह्म रच रहा है** {यहाँ पर गीता अ. 15 का श्लोक 17 याद रखना चाहिए जिसमें कहा है कि उत्तम प्रभु तो कोई और ही है जो वास्तव में अविनाशी ईश्वर है। जो तीनों लोकों में प्रवेश करके सर्व का धारण–पोषण करता है तथा गीता अ. 18 के श्लोक 61 में कहा है कि अन्तर्यामी ईश्वर सर्व प्राणियों को यन्त्र (मशीन) के सदंश कर्माधार पर घुमाता है तथा प्रत्येक प्राणी के हृदय में स्थित है।

गीता के पाठकों को फिर भ्रम होगा कि गीता अ. 15 के श्लोक 15 में काल (ब्रह्म) कहता है कि मैं सर्व प्राणियों के हृदय में स्थित हूँ तथा सर्व ज्ञान अपोहन व वेदों को प्रदान करने वाला हूँ।

हृदय कमल में काल भगवान महापार्वती (दुर्गा) सहित महाशिव रूप में रहता है तथा पूर्ण परमात्मा भी जीवात्मा के साथ अभेद रूप से रहता है जेसे वायु रहती है गंध के साथ। दोनों का अभेद सम्बन्ध है परन्तु कुछ गुणों का अन्तर है। गीता अ. 2 के श्लोक 17 से 21 में भी विस्तंत विवरण है। इस प्रकार पूर्ण ब्रह्म भी प्रत्येक प्राणी के हृदय में जीवात्मा के साथ रहता है जैसे सूर्य दूर स्थान पर होते हुए भी उसकी ऊष्णता व प्रकाश का प्रभाव प्रत्येक प्राणी से अभेद है तथा जीवात्मा का स्थान भी हृदय ही है।

विशेष :– एक महाब्रह्माण्ड (जो पाँच ब्रह्माण्डों का समूह है) का विनाश परब्रह्म के 100 वर्षों के उपरान्त होता है। इतने ही वर्षों तक एक महाब्रह्मण्ड में प्रलय रहती है।

काल अर्थात् ब्रह्म (ज्योति निरंजन) को तो ऐसा जानों जैसे गर्मियों के मौसम में राजस्थान–हरियाणा आदि क्षेत्रों में वायु का एक स्तम्भ जैसा (मिट्टी युक्त वायु) आसमान में बहुत ऊँचे तक दिखाई देता है तथा चक्र लगाता हुआ चलता है। जो अस्थाई होता है। परन्तु गंध तो वायु के साथ अभेद रूप में है। इसी प्रकार जीवात्मा तथा परमात्मा का सुक्ष्म सम्बन्ध समझे। ऐसे ही सर्व प्रलय तथा महाप्रलय के क्रम को पूर्ण परमात्मा (सत्यपुरूष, कविर्देव) से ही होना निश्चित समझे। एक हजार युग जो परब्रह्म की रात्रि है उसके समाप्त होने पर काल (ज्योति निरंजन) संष्टि फिर से सत्यपुरूष कविर्देव की शब्द शक्ति से बनाए समय के विद्यान अनुसार प्रारम्भ होती है। अक्षर पुरुष(परब्रह्म) पूर्ण ब्रह्म (सतपुरूष) के आदेश से काल (ज्योति निरंजन) व माया (प्रकंति अर्थात् दुर्गा) को सर्व प्राणियों सहित काल के इक्कीस ब्रह्मण्ड में भेज देता है तथा पूर्ण ब्रह्म के बनाए विद्यान अनुसार सर्व ब्रह्मण्डों में अन्य रचना प्रभु कबीर जी की कंपा से हो जाती है। माया (प्रकंति) तथा काल (ज्योति निरंजन) के सूक्ष्म शरीर पर नूरी शरीर भी पूर्ण परमात्मा ही रचता है तथा शेष उत्पत्ति ब्रह्म(काल) अपनी पत्नी दुर्गा (प्रकंति) के संयोग से करता है। शेष स्थान निरंजन पाँच तत्त्व के आधार से रचता है। फिर काल (ज्योति निरंजन अर्थात् ब्रह्म) की संष्टि प्रारम्भ होती है। इस प्रकार यह परब्रह्म दूसरा अव्यक्त कहलाता है।}

''तीसरी दिव्य महा प्रलय''

जैसा कि पूर्वोक्त विवरण में पढ़ा कि सत्तर हजार काल (ब्रह्म) के शिव रूपी पुत्रों की मंत्यु के पश्चात् एक ब्रह्म (महाशिव) की मंत्यु होती है वह समय परब्रह्म का एक युग होता है। इसी के विषय में गीता अध्याय 2 श्लोक 12, अध्याय 4 श्लोक 5 तथा 9 में, अध्याय 10 श्लोक 2 में गीता ज्ञान दाता प्रभु कह रहा है कि मेरी भी जन्म मंत्यु होती है। बहुत से जन्म हो चुके हैं। जिनको देवता लोग (ब्रह्मा,विष्णु तथा शिव सहित) व महर्षि जन भी नहीं जानते क्योंकि वे सर्व मुझ से ही उत्पन्न हुए हैं। गीता अध्याय 4 श्लोक 9 में कहा है कि मेरे जन्म और कर्म दिव्य हैं। परब्रह्म के एक युग में काल भगवान सदाशिव वाला शरीर त्यागता है तथा पुनः अन्य ब्रह्मण्ड में अन्य तीन रूपों में विराजमान हो जाता है। यह लीला स्वयं करता है। परब्रह्म का एक दिन एक हजार युग का होता है इतनी ही रात्रि होती है। तीस दिन-रात का एक महीना, बारह महीनों का एक वर्ष तथा सौ वर्ष की परब्रह्म (द्वितीय अव्यक्त) की आयु होती है। उस समय परब्रह्म की मंत्यु होती है। यह तीसरी दिव्य महाप्रलय कहलाती है।

तीसरी दिव्य महा प्रलय में सर्व ब्रह्मण्ड तथा अण्ड जिसमें ब्रह्म (काल) के इक्कीस ब्रह्मण्ड तथा परब्रह्म के सात शंख ब्रह्मण्ड व अन्य असंख्यों ब्रह्मण्ड नाश में आवेंगे। धूंधूकार का शंख बजेगा। सर्व अण्ड व ब्रह्मण्ड नाश में आवेंगे परंतु वह तीसरी दिव्य महा प्रलय बहुत समय प्रयन्त होगी। वह तीसरी (दिव्य) महा प्रलय सतपुरुष का पुत्र अचिंत अपने पिता पूर्ण ब्रह्म (सतपुरूष) की आज्ञा से संष्टि कर्म नियम से जो पूर्णब्रह्म ने निर्धारित किया हुआ है करेगा और फिर संष्टि रचना होगी। परंतु सतलोक में

गए हंस दोबारा जन्म-मरण में नहीं आऐंगे। इस प्रकार न तो अक्षर पुरुष (परब्रह्म) अमर है, न काल निरंजन (ब्रह्म) अमर है, न ब्रह्मा (रजगुण), विष्णु (सतगुण), शिव (तमगुण) अमर हैं। फिर इनके पूजारी (उपासक) कैसे पूर्ण मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं? अर्थात् कभी नहीं। इसलिए पूर्णब्रह्म की साधना करनी चाहिए जिसकी उपासना से जीव सतलोक (अमरलोक) में चला जाता है। फिर वह कभी नहीं मरता, पूर्ण मुक्त हो जाता है। वह पूर्ण ब्रह्म (कविर्देव) तीसरा सनातन अव्यक्त है। जो गीता अ. 8 के श्लोक 20,21 में वर्णन है।

''अमर करुं सतलोक पठाऊं, तातैं बन्दी छोड़ कहांउ''

उसी पूर्ण परमात्मा का प्रमाण गीता जी के अध्याय 2 के श्लोक 17 में, अध्याय 3 के श्लोक 14,15 में, अध्याय 7 के श्लोक 13 और 19 में, अध्याय 8 के श्लोक 3, 4, 8, 9, 10, 20, 21, 22 में, अध्याय 13 श्लोक 12 से 17 तथा 22 से 24,27,28,30-31 व 34 तथा अध्याय 4 श्लोक 31-32, अध्याय 6 श्लोक 7-19-20, 25 से 27 में तथा अध्याय 18 श्लोक 46, 61, 62 में भी विशेष रूप से प्रमाण दिया गया है कि उस पूर्ण परमात्मा की शरण में जा कर जीव फिर कभी जन्म मरण में नहीं आता है।

{विशेष :– यह काल कला समझने के लिए यह विवरण ध्यान रखें कि त्रिलोक में एक शिव जी है। जो इस काल का पुत्र है जो 7 त्रिलोकिय विष्णु जी की मृत्यु तथा 49 त्रिलोकिय ब्रह्मा जी की मृत्यु के उपरान्त मृत्यु को प्राप्त होता है। ऐसे ही काल भगवान एक ब्रह्मण्ड में बने ब्रह्मलोक में महाशिव रूप में भी रहता है। परमेश्वर द्वारा बनाए समय के विधान अनुसार सृष्टि क्रम का समय बनाए रखने के लिए यह ब्रह्मलोक वाला महाशिव (काल) भी मृत्यु को प्राप्त होता है। जब त्रिलोकिय 70000 (सतर हजार) ब्रह्म काल के पुत्र शिव मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं तब एक ब्रह्मलोकिय शिव (ब्रह्म/क्षर पुरुष) पूर्ण परमात्मा द्वारा बनाए समय के विधान अनुसार परवश हुआ मरता तथा जन्मता है। यह ब्रह्मलोकिय शिव (ब्रह्म/काल) की मृत्यु का समय परब्रह्म (अक्षर पुरूष) का एक युग होता है। इसीलिए गीता जी के अ. 2 के श्लोक 12, गीता अ. 4 श्लोक 5, गीता अ. 10 श्लोक 2 में कहा है कि मेरे तथा तेरे बहुत जन्म हो चुके हैं। मैं जानता हूँ तू नहीं जानता। मेरे जन्म अलौकिक (अद्भुत) होते हैं।}

अद्भुत उदाहरण :- आदरणीय गरीबदास साहेब जी सन् 1717 (संवत् 1774) में श्री बलराम जी के घर पर माता रानी जी के गर्भ से जन्म लेकर 61 वर्ष तक शरीर में गांव छुड़ानी जिला झज्जर में रहे तथा सन् 1778 (विक्रमी संवत् 1835) में शरीर त्याग गए। आज भी उनकी स्मृति में एक यादगार बनी है जहाँ पर शरीर को जमीन में सादर दबाया गया था। जिसको छतरी साहेब के नाम से जाना जाता है। छः महीने के उपरान्त वैसा ही शरीर धारण करके आदरणीय गरीबदास साहेब जी 35 वर्ष तक अपने पूर्व शरीर के शिष्य श्री भक्त भूमड़ सैनी जी के पास शहर सहारनपुर (उत्तर प्रदेश) में रह कर शरीर त्याग गए। वहाँ भी आज उनकी स्मृति में यादगार बनी है। स्थान है :- चिलकाना रोड़ से कलसिया रोड़ निकलता है, कलसिया रोड़ पर आधा किलोमीटर चल कर बाएँ तरफ यह अद्वितीय पवित्र यादगार विद्यमान है तथा उस पर एक शिलालेख भी लिखा है, जो प्रत्यक्ष साक्षी है। उसी के साथ में बाबा लालदास जी का बाड़ा भी बना है।

ज्ञान सागर के पृष्ठ 57 से 70 तक तीन युगों में प्रकट होने का प्रकरण है जो पूर्ण रूप से गलत उलट-पटांग करके लिखा है जिसका कोई सिर-पैर नहीं है। यथार्थ ज्ञान पढ़ें कबीर चरित्र बोध के सारांश में इसी पुस्तक के पृष्ठ 473 से 516 तक।

ज्ञान सागर के पृष्ठ 71 से आगे कलयुग में कबीर नाम से प्रकट होने का प्रकरण है। राजा बीर सिंह बघेल, बिजली खान पठान तथा राजा सिकंदर को शरण में लेने का अपुष्ट और पूर्ण रूप

से गलत है। पृष्ठ 72 पर नीरू को नूरी लिखा है। कलयुग में प्रकट होने का वास्तविक ज्ञान आप जी कबीर चरित्र बोध के सारांश में पढ़ें।

अन्य प्रकरण बीर सिंह को शरण में लेने का पूर्ण विवरण कबीर सागर के आठवें अध्याय में लिखा है। ज्ञान सागर अध्याय की कोई आवश्यकता नहीं थी। यह काल प्रेरित व्यक्तियों का कारनामा है। 40 अध्याय बनाए हैं। कबीर सागर में ये कुल 9 या 10 अध्याय हैं जिनको बार-बार घटा-बढ़ाकर व्यर्थ का ग्रन्थ विस्तार किया है। अधिकतर अध्यायों में वही प्रकरण बार-बार लिखा है।

प्रमाण :- परमेश्वर कबीर जी के कलयुग में प्रकाट्य को कई अध्यायों में लिखा है। वह भी अपुष्ट (अधूरा) तथा कुछ बनावटी लिखा है।

1. कंवारी गाय (बछिया) का दूध पीना :-

''ज्ञान सागर'' पृष्ठ 74, फिर ''कबीर चरित्र बोध'' पृष्ठ 1794 से 1796, ''स्वसमवेद बोध'' पृष्ठ 134

2. कबीर जी के नाम से 12 पंथों का चलना :-

''कबीर बानी'' पृष्ठ 134, 136, 137, ''कबीर चरित्र बोध'' पृष्ठ 1870, 1835, स्वसमवेद बोध पृष्ठ 155 पर लिखे हैं।

3. कबीर परमेश्वर द्वारा चार गुरू निर्धारित करना :-

''अम्बुसागर'' पृष्ठ 63, ''कबीर चरित्र बोध'' पृष्ठ 1863 से 1866, ''ज्ञान बोध'' 35, अनुराग सागर पृष्ठ 104, 105, 113

विवेचन :- कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान बोध'' के पृष्ठ 35 पर लिखा है कि कबीर जी ने बताया है, हे धर्मदास! चारों युगों में एक-एक आत्मा को मैंने गुरू पद प्रदान किया है। भावार्थ है कि परमेश्वर जी प्रत्येक युग में प्रकट होते हैं और एक-एक अच्छी आत्मा को मिलते हैं। उनको अपना परिचय कराते हैं जैसे धर्मदास जी को करवाया है।

सतजुग शिष्य सहते जी कहाये। द्वापर चतुर्भुज नाम सुनाये।।
त्रेता शिष्य वकेजी भाई। कलयुग में धर्मदास गुसाईं।।

यह प्रकरण सही है। यही प्रमाण ''अनुराग सागर'' पृष्ठ 104, 105 तथा 113 पर भी है। उसमें भी धर्मदास जी को चौथा गुरू लिखा है। हनुमान बोध पृष्ठ 132 पर पंक्ति नं. 10 में लिखा है कि हनुमान को समझाकर त्रेतायुग में ही चतुर्भुज को मिला, फिर मिलावट करके वाणी बनाई है। पंक्ति नं. 12 में लिखा है कि चतुर्भुज को दरभंगा में गुरू पद दिया। त्रेता का वर्णन है, कलयुग से जोड़ने की कुचेष्टा की है, मिलावट है और जो ''कबीर चरित्र बोध'' पृष्ठ 1863-1866 तथा ''अम्बु सागर'' पृष्ठ 63 पर कहा है कि :-

चार गुरू हैं जग कड़िहारा। सुकृत अंश आदि अधिकारा।।
वंके जी, चतुर्भुज और सहते जी। सुकृति जग में चौथे भेजी।।
जग में नाम होंहि धर्मदासु। जीवन ले राखे सुख वासु।।

भावार्थ :- इस उल्लेख में स्पष्ट है कि श्री धर्मदास जी को ''सुकृति'' कहा है जो चौथे नम्बर पर भेजा है यानि पहले तीन पुण्यात्माओं को गुरूवाई मिल चुकी थी। तब चौथे सुकृति (धर्मदास जी) को परमेश्वर कबीर जी ने गुरूवाई सौंपी है। यह विवरण ''ज्ञान बोध'' पृष्ठ 35 तथा ''अनुराग सागर'' पृष्ठ 104, 105, 113 वाले से मेल करता है जो ''कबीर चरित्र बोध'' पृष्ठ 1862-1863 पर कबीर पंथी दामाखेड़ा वालों ने मनघड़न्त कथा बनाई है कि कलयुग में कबीर जी ने चार जनों को गुरू पद सौंपा है। पहले धर्मदास जी हैं और शेष तीन अभी आए नहीं हैं। 2. चतुर्भुज 3. वंके

जी 4. सहत जी। यह भी लिखा है कि अभी तक केवल धर्मदास जी ही प्रकट हैं, अन्य आने शेष हैं। यह प्रकरण गद्य भाग में कहानी की तरह मनघड़न्त बनाकर लिखा है जबकि पष्ठ 1864(कबीर चरित्र बोध) पर ''चारों गुरूओं की प्रशंसा-उर्दू सेर'' लिखा है जो मनघड़न्त है। उसी के आधार से मनमुखी कथा बनाई है। इस प्रकार कबीर जी के वास्तविक साहित्य की बुरी दशा हुई है। फिर भी सच्चाई प्रत्यक्ष दिखाई देती है।

यह पष्ठ 1865-1866 पर धर्मदास जी की आने वाली संतान से जो गुरू पद प्राप्त करेंगे, उनके आगे साहब लिखा है। यदि ये सेर कबीर साहेब जी ने कहे होते तो साहब कभी नहीं लगाते। सुदर्शन साहब, कमलनाम साहब, धीरजनाम साहब, फिर लिखा है कि चौदहवीं गद्दी वाला करूनाम साहब होगा जबकि वर्तमान में गद्दी पर चौदहवें गुरू श्री प्रकाश मुनि नाम साहब बैठे हैं।

15वें का कोई नाम नहीं, 16वां उदित नाम साहब लिखा है। पाठकों को सहज में ज्ञान हो जाएगा कि सत्य क्या है?

धर्मदास जी की वंश परंपरा के बारे में

कबीर सागर के अध्याय ''अनुराग सागर'' के पष्ठ 138 से 141 पर और ''अमर मूल'' पष्ठ 243 पर :-

विवेचन :- अनुराग सागर पष्ठ 140 पर परमात्मा ने बताया है कि चुड़ामणि (मुक्तामणि) तेरा बिंद पुत्र है। उससे तेरी वंश गुरू गद्दी प्रारम्भ होगी। फिर छठी पीढ़ी तेरी आएगी। उसको ''टकसारी पंथ'' वाला नकली कबीर पंथी भ्रमित करेगा। वह छठी पीढ़ी वाला वास्तविक नाम तथा क्रिया छोड़कर टकसारी वाली (पान प्रवाना) दीक्षा लेगा। टकसारी पंथ में चल रही चौंका आरती करेगा जो हमारे वास्तविक भक्ति मार्ग से विपरीत होने से व्यर्थ होगा। बहुत जीवों को चौरासी लाख के चक्र में डालेगा। धर्मदास जी ने कहा है कि हे परमात्मा! आप एक और तो कह रहे थे कि तेरे बयालिस पीढ़ी वाले बिन्द यानि वंश वालों से सबका कल्याण होगा। अब कह रहे हो कि छठी पीढ़ी के पश्चात् काल वाली साधना चलेगी और मोक्ष मार्ग से भटक जाऐंगे। यह बात समझाऐं।

अनुराग सागर पष्ठ 140 से ऊपर से वाणी पंक्ति नं. 1 से 12 तक :-

नाद बिंद जो पंथ चलावै। चुरामणि हंसन मुक्तावै।।1
धर्मदास तव बंश अज्ञाना। चीन्हैं नहीं अंश सहिदाना।।2
जस कछु आगे होई है भाई। सो चरित्र तोहि कहों बुझाई।।3
छटे पीढ़ी बिन्द तव होई। भूले वंश बिन्दु तव सोई।।4
टकसारी को ले है पाना। अस तव बिन्द होय अज्ञाना।।5
चाल हमारी बंश तव झाड़ै। टकसारी का मत सब मांडै।।6
चौंका तैसे करै बनाई। बहुत जीव चौरासी जाई।।7
आपा हंस अधिक होया ताही। नाद पुत्र से झगर कराही।।8
होवे दुर्मति वंश तुम्हारा। बचन बंश रोके बटपारा।।9

भावार्थ :- कबीर जी ने श्री चुड़ामणि पुत्र सेठ धर्मदास जी को दीक्षा दी थी। इस कारण से चुड़ामणि को नाद तथा बिन्द दोनों नामों से संबोधित किया है। बिन्द तो धर्मदास का पुत्र होने से कहा है। बताया है कि चुरामणि (चुड़ामणि) से तेरे वंश वालों की गुरू पीढ़ी प्रारम्भ होगी, परंतु जो कुछ आगे तेरे वंश गद्दी वालों के साथ काल का छल होगा, वह बताता हूँ, सुन। हे धर्मदास!

तेरा वंश अज्ञानी है जो छठी पीढ़ी वाला गद्दीनशीन होगा, वह मेरे द्वारा बताया यथार्थ भक्ति मार्ग त्यागकर टकसारी वाले नकली कबीर पंथी महंत वाली भक्ति विधि ग्रहण करेगा, उसी तरह आरती चौका किया करेगा। इस प्रकार आगे आने वाली तेरी वंश परंपरा वाले महंतों से दीक्षा लेकर बहुत सारे जीव चौरासी लाख के चक्र में चले जाऐंगे। उनका जीवन नष्ट हो जाएगा। यदि कोई मेरे पंथ को नाद (शिष्य परंपरा) वाला आगे बढ़ाएगा। उसके साथ तेरे वंश गद्दी वाले झगड़ा करेंगे। हे धर्मदास! तेरा वंश दुर्मति को प्राप्त हो जाएगा और वह ठग होकर वचन (नाद) वाले पंथ को रोकेगा।

''धर्मदास वचन''

अब तो संशय भयो अधिकाई। निश्चय वचन करो मोहि साईं।।10
प्रथम आप वचन असभाषा निर संशय महां ब्यालीस राखा।।11
अब कहहु काल बश परि हैं। दोई बात किहि विधि निस्तरी है।।12

भावार्थ :- धर्मदास जी ने कबीर परमेश्वर से कहा कि अब तो मेरे को और अधिक शंका हो गई। मुझे विश्वास दिलाओ। पहले तो आपने ऐसे कहा कि तेरे वंश वालों से सर्व मानव का कल्याण होगा। अब आप कह रहे हो कि तेरी छठी पीढ़ी वाला भ्रमित होकर काल साधना करेगा-कराएगा। ये दोनों बातें कैसे सत्य हो सकती हैं?

''कबीर वचन''

परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि मैंने तेरे पुत्र को दीक्षा देकर आगे दीक्षा देने का अधिकार दे दिया है। यदि आगे आने वाले गुरू गद्दी वाले सत्य साधना त्यागकर काल साधना करेंगे तो फिर मेरा क्या दोष है? फिर मैं तो अपना कोई नाद (शिष्य) भेजूंगा जो मेरे पंथ को बढ़ाएगा। यथार्थ भक्ति मार्ग से भ्रमित जगत को सत्य भक्ति मार्ग दढ़ करेगा। जब-जब तेरे बिन्द (वंश) वालों को काल छलेगा। तब मैं सहायता करूँगा। मैं नाद हंस (शिष्य परंपरा) प्रकट करूँगा। नाद पुत्र यानि शिष्य रूपी पुत्र जो हमारा होगा, उससे मेरे पंथ का प्रकाश होगा। हे धर्मदास! अपने वचन वंश को समझा दो यानि चुड़ामणि को समझा दो कि वह सबको बताए कि कभी काल झटका दे जाए तो नाद वंश वाले से दीक्षा लेकर अपना मोक्ष करा लें।

विशेष :- वर्तमान में मेरे (रामपाल) द्वारा चलाया गया यह तेरहवां पंथ है। यह दास (रामपाल दास) अंतिम सतगुरू है। नामदान प्रकाश पुंज शरीर (electronic Body) यानि DVD से दिया जाएगा। अब के बाद नाद तथा बिंद का कोई चक्कर नहीं रहेगा। पहले भक्ति विधि गलत कर देते थे। जिस कारण से बिंद वाले पंथ भक्ति मार्ग को नष्ट कर देते थे। भक्ति विधि ठीक रहेगी तो साधकों का मोक्ष निश्चित है। अब तो DVD से दीक्षा दिलाई जाएगी। उसे वही दिलाएगा जिसको आदेश दिया जाएगा। वह चाहे बिन्द का हो, चाहे नाद का। कल्याण नाम दीक्षा से होना है। पंथ तो अब कोई भी नष्ट नहीं कर सकेगा। कलयुग में सत्य साधना चलेगी। विश्व का कल्याण होगा। जो अहंकारी व काल प्रेरित है, वे अपना कर्म खराब करते रहेंगे। काल के जाल में रह जाऐंगे। वे अपनी महिमा बनाने के लिए मेरे ज्ञान व विधान में त्रुटि निकालकर अपने अज्ञान का परिचय देंगे। मेरे भक्त ज्ञानवान हो चुके हैं। उनके काल जाल में नहीं आऐंगे।

अध्याय ''अनुराग सागर'' पर पष्ठ 141 पर लिखा है :-

चारहूं युग देखो संवादा। पंथ उजागर कीन्हो नादा।।
कहाँ निर्गुण कहाँ सर्गुण भाई। नाद बिना नहिं चलै पंथाई।।

धर्मनि नाद पुत्र तुम मोरा। ताते दीन्ह मुक्ति का डोरा।।
याह विध हम बयालीस तारैं। जब गिरै वह तबै उभारै।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने स्पष्ट कर दिया है कि नाद पुत्र किसे कहते हैं? कहा कि जैसे धर्मदास तुम मेरे वचन के पुत्र हो यानि शिष्य रूप में नाद के पुत्र हो। ऐसे जब नाद वाला मेरा अंश प्रकट होगा, तब यदि तेरे बिन्द वाले भी उस नाद वाले से दीक्षा लेकर नाम जाप करेंगे तो तेरे बिन्द वाले भी पार हो जाऐंगे। इस प्रकार तेरे बयालीस पीढ़ी वालों को पार करूँगा। यदि तेरा बिन्द मेरे नाद के वचन नहीं मानेगा, देखते ही देखते उन जीवों को काल खा जाएगा। कबीर जी ने स्पष्ट कर दिया है कि :-

कहाँ नाद कहाँ बिन्द ने भाई। नाम भक्ति बिन लोक न जाई।।

भावार्थ :- चाहे कोई नाद वाला है, चाहे बिन्द वाला है। यदि नाम की वास्तविक भक्ति है तो सतलोक जा सकेगा।

''बहुत महत्त्वपूर्ण प्रमाण''

कबीर सागर के अध्याय ''कबीर बानी'' में पष्ठ 132 पर स्पष्ट किया है कि कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि हे धर्मदास! तू हमारा अंश है। मैं तेरे को एक गुप्त वस्तु का भेद बताता हूँ जो मैंने गुप्त रखी है। सात सुरति तो उत्पत्ति करने वाली हैं। तुम आठवीं सुरति हो तथा नौतम (नौंवी) सुरति मैंने गुप्त छुपाई है। नौतम सुरति मेरा निज वचन है यानि उसको पूर्ण मोक्ष मंत्र का अधिकार है जिससे दीक्षा लेने के पश्चात् काल चोर उस जीव को रोक नहीं सकता। धर्मदास जी ने प्रार्थना की कि हे परमात्मा! मुझे वह वचन बताओ जिससे जीव फिर से जन्म-मरण के चक्र में न आए। परमात्मा कबीर जी ने कहा कि आठ बूँद यानि सतलोक में स्त्री-पुरूष से उत्पन्न हंसों से जीव मुक्त कराने की योजना बनाई थी। तुम आठवीं बूँद हो। परंतु सबको काल ने भ्रमित कर दिया। अब नौंवी बूँद यानि नौतम सुरति से तुम सहित आठों की मुक्ति कराई जाएगी। नौतम सुरति बूँद प्रकाशा यानि नौंवे हंस का जन्म संसार में बूँद यानि माता-पिता से होगा। उस एक बूँद से तेरे बीयालिस बूँद वाले हंस पार कर दिए यानि आशीर्वाद दे दिया है, ऐसा होगा। वाणी :- वंश बीयालिस बून्द तुम्हारा। सो मैं एक बून्द (वचन) से तारा।**(कबीर बानी पष्ठ 132-133 पर)**

अनुराग सागर में पष्ठ 142 पर :-

बिन्द तुम्हारा नाद संग जावै। देखत दूत मन ही पछतावै।।

भावार्थ :- हे धर्मदास! तेरा वंश नाद वाले के साथ जाएगा यानि नाद वाले से दीक्षा लेगा तो काल के दूत निकट नहीं आऐंगे। वे भाग जाऐंगे, बहुत पश्चाताप करेंगे कि यह तो पार होगा।

भावार्थ है कि परमेश्वर कबीर जी ने स्पष्ट कर दिया है कि धर्मदास जी की छठी पीढ़ी के पश्चात् काल की साधना चलेगी। टकसारी पंथ (जो नकली बारह कबीर पंथों में से एक है) वाली भक्ति विधि आरती चौंका, उसी नाम वाला मंत्र (अजर नाम, अमर नाम, पाताले सप्त सिंधु नाम आदि-आदि) दीक्षा में दिया जाता है। जो दामाखेड़ा (छत्तीसगढ़) वाले महंत जी दीक्षा दे रहे हैं, वह टकसारी वाली साधना है जो व्यर्थ है।

कबीर सागर के अध्याय ''अमर मूल'' के पष्ठ 242-243 पर दामाखेड़ा वालों ने मिलावट करके लिखी वाणी में कहा है कि सातवीं पीढ़ी वाला तो अभिमानवश विचलित हो जाएगा, परंतु आठवीं पीढ़ी से पंथ का प्रकाश हो जाएगा, परंतु परमात्मा ने वाणी में स्पष्ट किया है कि :-

जो तेरी वंश पीढ़ी वाले गुरू हैं, उनका नाम तो स्वर्ग तक है। आठवां भी काल अपना दूत भेजेगा। इस प्रकार काल बहुत छल करेगा। तुम्हारे वंश का यह लेखा बता दिया है कि बिना सारशब्द के मुक्ति नहीं हो सकती। सारशब्द केवल धर्मदास जी को दिया था और धर्मदास जी से प्रतिज्ञा करा ली कि यह सारशब्द किसी को नहीं देना। अपने वंश को भी नहीं बताना। हे धर्मदास! तेरे को लाख दुहाई, यह सारशब्द तेरे अतिरिक्त किसी के पास नहीं जाना चाहिए। यदि यह सार शब्द किसी के हाथ लग गया तो वह अन् अधिकारी व्यक्ति सबको भ्रमित कर देगा। सारशब्द को उस समय तक छुपाना है, जब तक 12 पंथों को मिटा न दिया जाए। 12वां (बारहवां) पंथ संत गरीबदास जी (गाँव-छुड़ानी, जिला-झज्जर, हरियाणा वाले) का है जिनका जन्म विक्रमी संवत् 1774 (सन् ई. 1717) में हुआ। उनको परमेश्वर कबीर जी धर्मदास जी की तरह मिले थे। उनको भी यही आदेश दिया था कि जब तक कलयुग 5505 वर्ष नहीं बीत जाता, तब तक मूल ज्ञान और मूल शब्द (मूल मंत्र) यानि सार शब्द छुपा कर रखना है। तो वह सार शब्द धर्मदास जी की वंश गद्दी वालों के पास कहाँ से आ गया? वह सार शब्द (मूल शब्द) तथा मूल ज्ञान (तत्त्वज्ञान) मेरे (रामपाल दास के) पास है। विश्व में अन्य किसी के पास नहीं है।

प्रमाण :- कबीर सागर के अध्याय ''कबीर बानी'' पष्ठ 136-137 तथा कबीर चरित्र बोध पष्ठ 1835, 1870 पर तथा ''जीव धर्म बोध'' पष्ठ 1937 पर है।

कलयुग सन् 1997 को 5505 वर्ष पूरा हो जाता है। सन् 1997 को मुझ दास को परमेश्वर कबीर के दर्शन दिन के 10 बजे हुए थे। सार शब्द (मूल शब्द) तथा मूल ज्ञान को सार्वजनिक करने का सही समय बताकर अन्तर्ध्यान हो गये थे। उसी समय से गुरू जी की आज्ञा से सार शब्द अनुयाईयों को प्रदान किया जा रहा है। सबका कल्याण होगा जो मेरे से नाम दीक्षा लेकर मन लगाकर मर्यादा में रहकर भक्ति करेगा, उसका मोक्ष निश्चित है।

''कबीर परमेश्वर जी की काल से वार्ता''

जब परमेश्वर ने सर्व ब्रह्मण्डों की रचना की और अपने लोक में विश्राम करने लगे। उसके बाद हम सभी काल के ब्रह्मण्ड में रह कर अपना किया हुआ कर्मदण्ड भोगने लगे और बहुत दुःखी रहने लगे। सुख व शांति की खोज में भटकने लगे और हमें अपने निज घर सतलोक की याद सताने लगी तथा वहां जाने के लिए भक्ति प्रारंभ की। किसी ने चारों वेदों को कंठस्थ किया तो कोई उग्र तप करने लगा और हवन यज्ञ, ध्यान, समाधि आदि क्रियाएं प्रारम्भ की, लेकिन अपने निज घर सतलोक नहीं जा सके क्योंकि उपरोक्त क्रियाएं करने से अगले जन्मों में अच्छे समद्ध जीवन को प्राप्त होकर (जैसे राजा-महाराजा, बड़ा व्यापारी, अधिकारी, देव-महादेव, स्वर्ग-महास्वर्ग आदि) वापिस लख चौरासी भोगने लगे। बहुत परेशान रहने लगे और परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करने लगे कि हे दयालु ! हमें निज घर का रास्ता दिखाओ। हम हृदय से आपकी भक्ति करते हैं। आप हमें दर्शन क्यों नहीं दे रहे हो?

यह वतान्त कबीर साहेब ने धर्मदास जी को बताते हुए कहा कि धर्मदास इन जीवों की पुकार सुनकर मैं अपने सतलोक से जोगजीत का रूप बनाकर काल लोक में आया। तब इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में जहां काल का निज घर है वहां पर तप्तशिला पर जीवों को भूनकर सुक्ष्म शरीर से गंध निकाला जा रहा था। मेरे पहुंचने के बाद उन जीवों की जलन समाप्त को गई। उन्होंने मुझे देखकर कहा कि हे पुरुष ! आप कौन हो? आपके दर्शन मात्र से ही हमें बड़ा सुख व शांति का आभास हो रहा है। फिर मैंने बताया कि मैं पारब्रह्म परमेश्वर कबीर हूं। आप सब जीव मेरे लोक से आकर काल ब्रह्म के लोक में फंस गए

हो। यह काल रोजाना एक लाख मानव के सुक्ष्म शरीर से गंध निकाल कर खाता है और बाद में नाना-प्रकार की योनियों में दण्ड भोगने के लिए छोड़ देता है। तब वे जीवात्माएं कहने लगी कि हे दयालु परमश्वेर! हमें इस काल की जेल से छुड़वाओ। मैंने बताया कि यह ब्रह्मण्ड काल ने तीन बार भक्ति करके मेरे से प्राप्त किए हुए हैं जो आप यहां सब वस्तुओं का प्रयोग कर रहे हो ये सभी काल की हैं और आप सब अपनी इच्छा से घूमने के लिए आए हो। इसलिए अब आपके ऊपर काल ब्रह्म का बहुत ज्यादा ऋण हो चुका है और वह ऋण मेरे सच्चे नाम के जाप के बिना नहीं उतर सकता।

जब तक आप ऋण मुक्त नहीं हो सकते तब तक आप काल ब्रह्म की जेल से बाहर नहीं जा सकते। इसके लिए आपको मुझसे नाम उपदेश लेकर भक्ति करनी होगी। तब मैं आपको छुड़वा कर ले जाऊंगा। हम यह वार्ता कर ही रहे थे कि वहां पर काल ब्रह्म प्रकट हो गया और उसने बहुत क्रोधित होकर मेरे ऊपर हमला बोला। मैंने अपनी शब्द शक्ति से उसको मुर्छित कर दिया। फिर कुछ समय बाद वह होश में आया। मेरे चरणों में गिरकर क्षमा याचना करने लगा और बोला कि आप मुझ से बड़े हो, मुझ पर कुछ दया करो और यह बताओ कि आप मेरे लोक में क्यों आए हो ? तब मैंने काल पुरुष को बताया कि कुछ जीवात्माएं भक्ति करके अपने निज घर सतलोक में वापिस जाना चाहती हैं। उन्हें सतभक्ति मार्ग नहीं मिल रहा है। इसलिए वे भक्ति करने के बाद भी इसी लोक में रह जाती हैं। मैं उनको सतभक्ति मार्ग बताने के लिए और तेरा भेद देने के लिए आया हूं कि तूं काल है, एक लाख जीवों का आहार करता है और सवा लाख जीवों को उत्पन्न करता है तथा भगवान बन कर बैठा है। मैं इनको बताऊंगा कि तुम जिसकी भक्ति करते हो वह भगवान नहीं, काल है। इतना सुनते ही काल बोला कि यदि सब जीव वापिस चले गए तो मेरे भोजन का क्या होगा ? मैं भूखा मर जाऊंगा। आपसे मेरी प्रार्थना है कि तीन युगों में जीव कम संख्या में ले जाना और सबको मेरा भेद मत देना कि मैं काल हूँ, सबको खाता हूँ। जब कलियुग आए तो चाहे जितने जीवों को ले जाना। ये वचन काल ने मुझसे प्राप्त कर लिए। कबीर साहेब ने धर्मदास को आगे बताते हुए कहा कि सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग में भी मैं आया था और बहुत जीवों को सतलोक लेकर गया लेकिन इसका भेद नहीं बताया। अब मैं कलियुग में आया हूं और काल से मेरी वार्ता हुई है। काल ब्रह्म ने मुझ से कहा कि अब आप चाहे जितना जोर लगा लेना, आपकी बात कोई नहीं सुनेगा। प्रथम तो मैंने जीव को भक्ति के लायक ही नहीं छोड़ा है। उनमें बीड़ी, सिगरेट, शराब, मांस आदि दुर्व्यसन की आदत डाल कर इनकी वति को बिगाड़ दिया है। नाना-प्रकार की पाखण्ड पूजा में जीवात्माओं को लगा दिया है। दूसरी बात यह होगी कि जब आप अपना ज्ञान देकर वापिस अपने लोक में चले जाओगे तब मैं (काल) अपने दूत भेजकर आपके पंथ से मिलते-जुलते बारह पंथ चलाकर जीवों को भ्रमित कर दूंगा। महिमा सतलोक की बताएंगे, आपका ज्ञान कथेंगे लेकिन नाम-जाप मेरा करेंगे, जिसके परिणामस्वरूप मेरा ही भोजन बनेंगे। यह बात सुनकर कबीर साहेब ने कहा कि आप अपनी कोशिश करना, मैं सतमार्ग बताकर ही वापिस जाऊंगा और जो मेरा ज्ञान सुन लेगा वह तेरे बहकावे में कभी नहीं आएगा।

सतगुरु कबीर साहेब ने कहा कि हे निरंजन ! यदि मैं चाहूं तो तेरे सारे खेल को क्षण भर में समाप्त कर सकता हूँ, परंतु ऐसा करने से मेरा वचन भंग होता है। यह सोच कर मैं अपने प्यारे हंसों को यथार्थ ज्ञान देकर शब्द का बल प्रदान करके सतलोक ले जाऊंगा और कहा कि -

सुनो धर्मराया, हम शंखों हंसा पद परसाया। जिन लीन्हा हमरा प्रवाना, सो हंसा हम किए अमाना।।

(पवित्र कबीर सागर में जीवों को भूल-भूलइयां में डालने के लिए तथा अपनी भूख को मिटाने के लिए तरह-२ के तरीकों का वर्णन)

द्वादस पंथ करूं मैं साजा, नाम तुम्हारा ले करूं अवाजा। द्वादस यम संसार पठहो, नाम तुम्हारे पंथ चलैहो।।
प्रथम दूत मम प्रगटे जाई, पीछे अंश तुम्हारा आई।। यही विधि जीवनको भ्रमाऊं, पुरुष नाम जीवन समझाऊं।।
द्वादस पंथ नाम जो लैहे, सो हमरे मुख आन समै है।। कहा तुम्हारा जीव नहीं माने, हमारी ओर होय बाद बखानै।।
मैं दृढ़ फंदा रची बनाई, जामें जीव रहे उरझाई।। देवल देव पाषान पूजाई, तीर्थ व्रत जप–तप मन लाई।।
यज्ञ होम अरू नेम अचारा, और अनेक फंद में डारा।। जो ज्ञानी जाओ संसारा, जीव न मानै कहा तुम्हारा।।

(सतगुरु वचन)

ज्ञानी कहे सुनो अन्याई, काटो फंद जीव ले जाई।।
जेतिक फंद तुम रचे विचारी, सत्य शबद तै सबै बिंडारी।।
जौन जीव हम शब्द दृढावै, फंद तुम्हारा सकल मुकावै।।
चौका कर प्रवाना पाई, पुरुष नाम तिहि देऊं चिन्हाई।।
ताके निकट काल नहीं आवै, संधि देखी ताकहं सिर नावै।।

उपरोक्त विवरण से सिद्ध होता है कि जो अनेक पंथ चले हुए हैं। जिनके पास कबीर साहेब द्वारा बताया हुआ सतभक्ति मार्ग नहीं है, ये सब काल प्रेरित हैं। अतः बुद्धिमान को चाहिए कि सोच-विचार कर भक्ति मार्ग अपनांए क्योंकि मनुष्य जन्म अनमोल है, यह बार-बार नहीं मिलता। कबीर साहेब कहते हैं कि :-

कबीर मानुष जन्म दुर्लभ है, मिले न बारम्बार। तरूवर से पत्ता टूट गिरे, बहुर न लगता डारि।।

काल निरंजन द्वारा कबीर जी से तीन युगों में कम जीव ले जाने का वचन लेना

(विस्तृत व सम्पूर्ण वर्णन)

प्रश्न :- कबीर जी के नाम से चले 12 पंथों के वास्तविक मुखिया कौन हैं और तेरहवां पंथ कौन चलाएगा?

उत्तर :- जैसा कि कबीर सागर के संशोधनकर्ता स्वामी युगलानन्द (बिहारी) जी ने दुख व्यक्त किया है कि समय-समय पर कबीर जी के ग्रन्थों से छेड़छाड़ करके उनकी बुरी दशा कर रखी है।

उदाहरण :- परमेश्वर कबीर जी का जोगजीत के रूप में काल ब्रह्म के साथ विवाद हुआ था। वह ''स्वसमवेद बोध'' पृष्ठ 117 से 122 तक तथा ''अनुराग सागर'' 60 से 67 तक है।

परमेश्वर कबीर जी अपने पुत्र जोगजीत के रूप में काल के प्रथम ब्रह्माण्ड में प्रकट हुए जो इक्कीसवां ब्रह्माण्ड है जहाँ पर तप्त शिला बनी है। काल ब्रह्म ने जोगजीत के साथ झगड़ा किया। फिर विवश होकर चरण पकड़कर क्षमा याचना की तथा प्रतिज्ञा करवाकर कुछ सुविधा माँगी।

1. तीनों युगों (सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग) में थोड़े जीव पार करना।

2. जोर-जबरदस्ती करके जीव मेरे लोक से न ले जाना।

3. आप अपना ज्ञान समझाना। जो आपके ज्ञान को माने, वह आपका और जो मेरे ज्ञान को माने, वह मेरा।

4. कलयुग में पहले मेरे दूत प्रकट होने चाहिऐं, पीछे आपका दूत जाए।

5. त्रेतायुग में समुद्र पर पुल बनवाना। उस समय मेरा पुत्र विष्णु रामचंद्र रूप में लंका के राजा रावण से युद्ध करेगा, समुद्र रास्ता नहीं देगा।

6. द्वापर युग में बौद्ध शरीर त्यागकर जाऊँगा। राजा इन्द्रदमन मेरे नाम से (जगन्नाथ नाम से) समुद्र के किनारे मेरी आज्ञा से मंदिर बनवाना चाहेगा। उसको समुद्र बाधा करेगा। आप उस

मंदिर की सुरक्षा करना। परमेश्वर ने सर्व माँगें स्वीकार कर ली और वचनबद्ध हो गए। तब काल ब्रह्म हँसा और कहा कि हे जोगजीत! आप जाओ संसार में। जिस समय कलयुग आएगा। उस समय मैं अपने 12 दूत (नकली सतगुरू) संसार में भेजूँगा। जब कलयुग 5505 वर्ष पूरा होगा, तब तक मेरे दूत तेरे नाम से (कबीर जी के नाम से) 12 कबीर पंथ चला दूँगा। कबीर जी ने जोगजीत रूप में काल ब्रह्म से कहा था कि कलयुग में मेरा नाम कबीर होगा और मैं कबीर नाम से पंथ चलाऊँगा। इसलिए काल ज्योति निरंजन ने कहा था कि आप कबीर नाम से एक पंथ चलाओगे तो मैं (काल) कबीर नाम से 12 पंथ चलाऊँगा। सर्व मानव को भ्रमित करके अपने जाल में फाँसकर रखूँगा। इनके अतिरिक्त और भी कई पंथ चलाऊँगा जो सतलोक, सच्चखण्ड की बातें किया करेंगे तथा सत्य साधना उनके पास नहीं होगी। जिस कारण से वे सत्यलोक की आश में गलत नामों को जाप करके मेरे जाल में ही रह जाऐंगे।

काल ब्रह्म ने पूछा था कि आप किस समय कलयुग में अपना सत्य कबीर पंथ चलाओगे? कबीर जी ने कहा था कि जिस समय कलयुग 5505 (पाँच हजार पाँच सौ पाँच) वर्ष बीत जाएगा, तब मैं अपना यथार्थ तेरहवां कबीर पंथ चलाऊँगा।

काल ने कहा कि उस समय से पहले मैं पूरी पृथ्वी के ऊपर शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण करवाकर शास्त्रविरूद्ध ज्ञान बताकर झूठे नाम तथा गलत साधना के अभ्यस्त कर दूँगा। जब तेरा तेरहवां अंश आकर सत्य कबीर पंथ चलाएगा, उसकी बात पर कोई विश्वास नहीं करेगा, उल्टे उसके साथ झगड़ा करेंगे। कबीर जी को पता था कि जब कलयुग के 5505 वर्ष पूरे होंगे (सन् 1997 में) तब शिक्षा की क्रांति लाई जाएगी। सर्व मानव अक्षर ज्ञानयुक्त किया जाएगा। उस समय मेरा दास सर्व धार्मिक ग्रन्थों को ठीक से समझकर मानव समाज के रूबरू करेगा। सर्व प्रमाणों को आँखों देखकर शिक्षित मानव सत्य से परिचित होकर तुरंत मेरे तेरहवें पंथ में दीक्षा लेगा और पूरा विश्व मेरे द्वारा बताई भक्ति विधि तथा तत्त्वज्ञान को हृदय से स्वीकार करके भक्ति करेगा। उस समय पुनः सत्ययुग जैसा वातावरण होगा। आपसी रागद्वेष, चोरी-जारी, लूट-ठगी कोई नहीं करेगा। कोई धन संग्रह नहीं करेगा। भक्ति को अधिक महत्त्व दिया जाएगा। जैसे उस समय उस व्यक्ति को महान माना जा रहा होगा जिसके पास अधिक धन होगा, बड़ा व्यवसाय होगा, बड़ी-बड़ी कोठियाँ बना रखी होंगी, परंतु 13वें पंथ के प्रारम्भ होने के पश्चात् उन व्यक्तियों को मूर्ख माना जाएगा और जो भक्ति करेंगे, सामान्य मकान बनाकर रहेंगे, उनको महान, बड़े और सम्मानित व्यक्ति माना जाएगा।

''प्रमाण के लिए पवित्र कबीर सागर से भिन्न-भिन्न अध्यायों से अमृत बानी''

''कबीर जी तथा ज्योति निरंजन की वार्ता''

अनुराग सागर के पृष्ठ 62 से :-

''धर्मराय (ज्योति निरंजन) वचन''

धर्मराय अस विनती ठानी। मैं सेवक द्वितीया न जानी।।1
ज्ञानी बिनती एक हमारा। सो न करहू जिह से हो मोर बिगारा।।2
पुरूष दीन्ह जस मोकहं राजु। तुम भी देहहु तो होवे मम काजु।।3
अब मैं वचन तुम्हरो मानी। लीजो हंसा हम सो ज्ञानी।।4

पंष्ठ 63 से अनुराग सागर की वाणी :-

दयावन्त तुम साहेब दाता। ऐतिक कंपा करो हो ताता।।5
पुरूष शॉप मोकहं दीन्हा। लख जीव नित ग्रासन कीन्हा।।6

पंष्ठ 64 से अनुराग सागर की वाणी :-

जो जीव सकल लोक तव आवै। कैसे क्षुधा मोर मिटावै।।7
जैसे पुरूष कंपा मोपे कीन्हा। भौसागर का राज मोहे दीन्हा।।8
तुम भी कंपा मोपर करहु। जो माँगे सो मोहे देहो बरहु।।9
सतयुग, त्रेता, द्वापर मांहीं। तीनों युग जीव थोड़े जाहीं।।10
चौथा युग जब कलयुग आवै। तब तव शण जीव बहु जावै।।11

पंष्ठ 65 से अनुराग सागर की वाणी, ऊपर से वाणी पंक्ति नं. 3 से :-

प्रथम दूत मम प्रकटै जाई। पीछे अंश तुम्हारा आई।।12

पंष्ठ 64 से अनुराग सागर की वाणी, ऊपर से वाणी पंक्ति नं. 6 :-

ऐसा वचन हरि मोहे दीजै। तब संसार गवन तव कीजै।।13

''जोगजीत वचन=ज्ञानी बचन''

पंष्ठ 64 से अनुराग सागर की वाणी, ऊपर से वाणी पंक्ति नं. 7 :-

अरे काल तुम परपंच पसारा। तीनों युग जीवन दुख डारा।।14
बीनती तोरी लीन्ह मैं जानि। मोकहं ठगा काल अभिमानी।।15
जस बीनती तू मोसन कीन्ही। सो अब बरवस तोहे दीन्ही।।16
चौथा युग जब कलयुग आवै। तब हम अपना अंश पठावैं।।17

''धर्मराय (काल) वचन''

पंष्ठ 64 से अनुराग सागर की वाणी, ऊपर से वाणी पंक्ति नं. 17 :-

हे साहिब तुम पंथ चलाऊ। जीव उबार लोक लै जाऊ।।18

पंष्ठ 66 से अनुराग सागर की वाणी, ऊपर से वाणी पंक्ति नं. 8, 9, 16 से 21 :-

सन्धि छाप (सार शब्द) मोहे दिजे ज्ञानी। जैसे देवोंगे हंस सहदानी।।19
जो जन मोकूं संधि (सार शब्द) बतावै। ताके निकट काल नहीं आवै।।20
कहै धर्मराय जाओ संसारा। आनहु जीव नाम आधारा।।21
जो हंसा तुम्हरे गुण गावै। ताहि निकट हम नहीं जावैं।।22
जो कोई लेहै शरण तुम्हारी। मम सिर पग दै होवै पारी।।23
हम तो तुम संग कीन्ह ढ़िठाई। तात जान किन्ही लड़काइ।।24
कोटिन अवगुन बालक करही। पिता एक चित नहीं धरही।।25
जो पिता बालक कूं देहै निकारी। तब को रक्षा करै हमारी।।26
सारनाम देखो जेहि साथा। ताहि हंस मैं नीवाऊँ माथा।।27

ज्ञानी (कबीर) वचन

अनुराग सागर पंष्ठ 66 :-

जो तोहि देहुं संधि बताई। तो तूं जीवन को हइहो दुखदाई।।28
तुम परपंच जान हम पावा। काल चलै नहीं तुम्हरा दावा।।29
धर्मराय तोहि प्रकट भाखा। गुप्त अंक बीरा हम राखा।।30

जो कोई लेई नाम हमारा। ताहि छोड़ तुम हो जाना नियारा।।31
जो तुम मोर हंस को रोको भाई। तो तुम काल रहन नहीं पाई।।32

''धर्मराय (काल निरंजन) बचन''

पृष्ठ 62 तथा 63 से अनुराग सागर की वाणी :-

बेसक जाओ ज्ञानी संसारा। जीव न मानै कहा तुम्हारा।।33
कहा तुम्हारा जीव ना मानै। हमरी और होय बाद बखानै।।34
दृढ़ फंदा मैं रचा बनाई। जामें सकल जीव उरझाई।।35
वेद–शास्त्र समर्ति गुणगाना। पुत्र मेरे तीन प्रधाना।।36
तीनहू बहु बाजी रचि राखा। हमरी महिमा ज्ञान मुख भाखा।।37
देवल देव पाषाण पुजाई। तीर्थ व्रत जप तप मन लाई।।38
पूजा विश्व देव अराधी। यह मति जीवों को राखा बाँधि।।39
जग (यज्ञ) होम और नेम आचारा। और अनेक फंद मैं डारा।।40

''ज्ञानी (कबीर) वचन''

हमने कहा सुनो अन्याई। काटों फंद जीव ले जांई।।41
जेते फंद तुम रचे विचारी। सत्य शब्द ते सबै विडारी।।42
जौन जीव हम शब्द दृढ़ावैं। फंद तुम्हारा सकल मुक्तावैं।।43
जबही जीव चिन्ही ज्ञान हमारा। तजही भ्रम सब तोर पसारा।।44
सत्यनाम जीवन समझावैं। हंस उभार लोक लै जावै।।45
पुरूष सुमिरन सार बीरा, नाम अविचल जनावहूँ।
शीश तुम्हारे पाँव देके, हंस लोक पठावहूँ।।46
ताके निकट काल नहीं आवै। संधि देख ताको सिर नावै।।48
(संधि = सत्यनाम+सारनाम)

''धर्मराय (काल) वचन''

पंथ एक तुम आप चलऊ। जीवन को सतलोक लै जाऊ।।49
द्वादश पंथ करूँ मैं साजा। नाम तुम्हारा ले करों आवाजा।।50
द्वादश यम संसार पठाऊँ। नाम कबीर ले पंथ चलाऊँ।।51
प्रथम दूत मेरे प्रगटै जाई। पीछे अंश तुम्हारा आई।।52
यहि विधि जीवन को भ्रमाऊँ। आपन नाम पुरूष का बताऊँ।।53
द्वादश पंथ नाम जो लैहि। हमरे मुख में आन समैहि।।54

''ज्ञानी (कबीर) वचन'' चौपाई

अध्याय ''स्वसमवेद बोध'' पृष्ठ 121 :-

अरे काल परपंच पसारा। तीनों युग जीवन दुख आधारा।।55
बीनती तोरी लीन मैं मानी। मोकहं ठगे काल अभिमानी।।56
चौथा युग जब कलयुग आई। तब हम अपना अंश पठाई।।57
काल फंद छूटै नर लोई। सकल सृष्टि परवानिक (दीक्षित) होई।।58
घर–घर देखो बोध (ज्ञान) बिचारा (चर्चा)। सत्यनाम सब ठोर उचारा।।59
पाँच हजार पाँच सौ पाँचा। तब यह वचन होयगा साचा।।60

कलयुग बीत जाए जब ऐता। सब जीव परम पुरूष पद चेता।।61

भावार्थ :- (वाणी सँख्या 55 से 61 तक) परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे काल! तूने विशाल प्रपंच रच रखा है। तीनों युगों (सतयुग, त्रेता, द्वापर) में जीवों को बहुत कष्ट देगा। जैसा तू कह रहा है। तूने मेरे से प्रार्थना की थी, वह मान ली। तूने मेरे साथ धोखा किया है, परतुं चौथा युग जब कलयुग आएगा, तब मैं अपना अंश यानि कपा पात्र आत्मा भेजूँगा। हे काल! तेरे द्वारा बनाए सर्व फंद यानि अज्ञान आधार से गलत ज्ञान व साधना को सत्य शब्द तथा सत्य ज्ञान से समाप्त करेगा। उस समय पूरा विश्व प्रवानिक यानि उस मेरे संत से दीक्षा लेकर दीक्षित होगा। उस समय तक यानि जब तक कलयुग पाँच हजार पाँच सौ पाँच नहीं बीत जाता, सत्यनाम, मूल नाम (सार शब्द) तथा मूल ज्ञान (तत्त्वज्ञान) प्रकट नहीं करना है। परंतु जब कलयुग पाँच हजार पाँच सौ पाँच वर्ष पूरा हो जाएगा, तब घर-घर में मेरे अध्यात्मिक ज्ञान की चर्चा हुआ करेगी और सत्यनाम, सार शब्द को सब उपदेशियों को प्रदान किया जाएगा। यह जो बात मैं कह रहा हूँ, ये मेरे वचन उस समय सिद्ध होंगे, जब कलयुग के 5505 (पाँच हजार पाँच सौ पाँच) वर्ष पूरे हो जाऐंगे। जब कलयुग इतने वर्ष बीत जाएगा। तब सर्व मानव प्राणी परम पुरूष यानि सत्य पुरूष के पद अर्थात् उस परम पद के जानकार हो जाऐंगे जिसके विषय में गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि तत्त्वदर्शी संत के प्राप्त होने के पश्चात् साधक लौटकर संसार में कभी नहीं आते। जिस परमेश्वर ने संसार रूपी वक्ष का विस्तार किया है अर्थात् जिस परमेश्वर ने संष्टि की रचना की है, उस परमेश्वर की भक्ति करो।

उपरोक्त वाणी का भावार्थ है कि उस समय उस परमेश्वर के पद (सत्यलोक) के विषय में सबको पूर्ण ज्ञान होगा।

स्वसमवेद बोध पष्ठ 170 :-

अथ स्वसम वेद की स्फुटवार्ता-चौपाई

एक लाख और असि हजारा। पीर पैगंबर और अवतारा।।62
सो सब आही निरंजन वंशा। तन धरी–धरी करैं निज पिता प्रशंसा।।63
दश अवतार निरंजन के रे। राम कष्ण सब आहीं बडेरे।।64
इनसे बड़ा ज्योति निरंजन सोई। यामें फेर बदल नहीं कोई।।65

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने बताया है कि बाबा आदम से लेकर हजरत मुहम्मद तक कुल एक लाख अस्सी हजार (1,80,000) पैगंबर तथा दस अवतार जो हिन्दु मानते हैं, ये सब काल के भेजे आए हैं। इन दस अवतारों में राम तथा कष्ण प्रमुख हैं। ये सब काल की महिमा बनाकर सर्व जीवों को भ्रमित करके काल साधना दढ़ कर गए हैं। इस सबका मुखिया ज्योति निरंजन काल (ब्रह्म) है।

स्वसमवेद बोध पष्ठ 171(1515) :-

सत्य कबीर वचन

दोहे :- पाँच हजार अरू पाँच सौ पाँच जब कलयुग बीत जाय।
महापुरूष फरमान तब, जग तारन कूं आय।।66
हिन्दु तुर्क आदि सबै, जेते जीव जहान।
सत्य नाम की साख गही, पावैं पद निर्वान।।67

यथा सरितगण आप ही, मिलैं सिन्धु मैं धाय।
सत्य सुकंत के मध्य तिमि, सब ही पंथ समाय।।68
जब लग पूर्ण होय नहीं, ठीक का तिथि बार।
कपट–चातुरी तबहि लौं, स्वसम बेद निरधार।।69
सबही नारी–नर शुद्ध तब, जब ठीक का दिन आवंत।
कपट चातुरी छोड़ि के, शरण कबीर गहंत।।70
एक अनेक है गए, पुनः अनेक हों एक।
हंस चलै सतलोक सब, सत्यनाम की टेक।।71
घर घर बोध विचार हो, दुर्मति दूर बहाय।
कलयुग में सब एक होई, बरतें सहज सुभाय।।72
कहाँ उग्र कहाँ शुद्र हो, हरै सबकी भव पीर(पीड़)।।73
सो समान समदंष्टि है, समर्थ सत्य कबीर।।74

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने बताया है कि हे धर्मदास! मैंने ज्योति निरंजन यानि काल ब्रह्म से भी कहा था, अब आपको भी बता रहा हूँ।

स्वसमबेद बोध की वाणी सँख्या 66 से 74 का सरलार्थ :- जिस समय कलयुग पाँच हजार पाँच सौ पाँच वर्ष बीत जाएगा, तब एक महापुरूष विश्व को पार करने के लिए आएगा। हिन्दु, मुसलमान आदि-आदि जितने भी पंथ तब तक बनेंगे और जितने जीव संसार में हैं, वे मानव शरीर प्राप्त करके उस महापुरूष से सत्यनाम लेकर सत्यनाम की शक्ति से मोक्ष प्राप्त करेंगे। वह महापुरूष जो सत्य कबीर पंथ चलाएगा, उस (तेरहवें) पंथ में सब पंथ स्वतः ऐसे तीव्र गति से समा जाएंगे जैसे भिन्न-भिन्न नदियाँ अपने आप निर्बाध दौड़कर समुद्र में गिर जाती है। उनको कोई रोक नहीं पाता। ऐसे उस तेरहवें पंथ में सब पंथ शीघ्रता से मिलकर एक पंथ बन जाएगा। परंतु जब तक ठीक का समय नहीं आएगा यानि कलयुग पाँच हजार पाँच सौ पाँच वर्ष पूरे नहीं करता, तब तक मैं जो यह ज्ञान स्वसमवेद में बोल रहा हूँ, आप लिख रहे हो, निराधार लगेगा।

जिस समय वह निर्धारित समय आएगा। उस समय स्त्री-पुरूष उच्च विचारों तथा शुद्ध आचरण के होकर कपट, व्यर्थ की चतुराई त्यागकर मेरी (कबीर जी की) शरण ग्रहण करेंगे। परमात्मा से लाभ लेने के लिए एक ''मानव'' धर्म से अनेक पंथ (धार्मिक समुदाय) बन गए हैं, वे सब पुनः एक हो जाएंगे। सब हंस (निर्विकार भक्त) आत्माऐं सत्य नाम की शक्ति से सतलोक चले जाएंगे। मेरे अध्यात्म ज्ञान की चर्चा घर-घर में होगी। जिस कारण से सबकी दुर्मति समाप्त हो जाएगी। कलयुग में फिर एक होकर सहज बर्ताव करेंगे यानि शांतिपूर्वक जीवन जीएंगे। कहाँ उग्र अर्थात् चाहे डाकू, लुटेरा, कसाई हो, चाहे शुद्र, अन्य बुराई करने वाला नीच होगा। परमात्मा सत्य भक्ति करने वालों की भवपीर यानि सांसारिक कष्ट हरेगा यानि दूर करेगा। सत्य साधना से सबकी भवपीर यानि संसारिक कष्ट समाप्त हो जाएंगे और उस 13वें (तेरहवें) पंथ का प्रवर्तक सबको समान दंष्टि से देखेगा अर्थात् ऊँच-नीच में भेदभाव नहीं करेगा। वह समर्थ सत्य कबीर ही होगा। (मम् सन्त मुझे जान मेरा ही स्वरूपम्)

प्रश्न :- वह तेरहवां पंथ कौन-सा है, उसका प्रवर्तक कौन है?

उत्तर :- वह तेरहवां पंथ ''यथार्थ सत कबीर'' पंथ है। उसके प्रवर्तक स्वयं कबीर परमेश्वर जी हैं। वर्तमान में उसका संचालक उनका गुलाम रामपाल दास पुत्र स्वामी रामदेवानंद जी महाराज

है। (अध्यात्मिक दृष्टि से गुरू जी पिता माने जाते हैं जो आत्मा का पोषण करते हैं।)

प्रमाण :- वैसे तो संत धर्मदास जी की वंश परंपरा वाले महंतो से जुड़े श्रद्धालुओं ने अज्ञानतावश तेरहवां पंथ और संचालक धर्मदास की बिन्द (परिवार) की धारा वालों को सिद्ध करने की कुचेष्टा की है। परंतु हाथी के वस्त्र को भैंसे पर डालकर कोई कहे कि देखो यह वस्त्र भैंसे का है। बुद्धिमान तो तुरंत समझ जाते हैं कि यह भैंसा का वस्त्र नहीं है। यह तो भैंसे से कई गुणा लंबे-चौड़े पशु का है। भले ही वे ये न बता सकें कि यह हाथी का है।

उदाहरण :- पवित्र कबीर सागर के अध्याय ''कबीर चरित्र बोध'' के पृष्ठ 1834-1835 पर लिखा है।

तेरह गाड़ी कागजों को लिखना

एक समय दिल्ली के बादशाह ने कहा कि कबीर जी 13(तेरह) गाड़ी कागजों को ढ़ाई दिन यानि 60 घण्टे में लिख दे तो मैं उनको परमात्मा मान जाऊँगा। परमेश्वर कबीर जी ने अपनी डण्डी उन तेरह गाड़ियों में रखे कागजों पर घुमा दी। उसी समय सर्व कागजों में अमृतवाणी सम्पूर्ण अध्यात्मिक ज्ञान लिख दिया। राजा को विश्वास हो गया, परंतु अपने धर्म के व्यक्तियों (मुसलमानों) के दबाव में उन सर्व ग्रन्थों को दिल्ली में जमीन में गडवा दिया। कबीर सागर के अध्याय कबीर चरित्र बोध ग्रन्थ में पृष्ठ 1834-1835 पर गलत लिखा है कि जब मुक्तामणि साहब का समय आवेगा और उनका झण्डा दिल्ली नगरी में गड़ेगा। तब वे समस्त पुस्तकें पृथ्वी से निकाली जाएंगी। सो मुक्तामणि अवतार (धर्मदास के) वंश की तेरहवीं पीढ़ी वाला होगा।

विवेचन :- ऊपर वाले लेख में मिलावट का प्रमाण इस प्रकार है कि वर्तमान में धर्मदास जी की वंश गद्दी दामाखेड़ा जिला-रायगढ़ प्रान्त-छत्तीसगढ़ में है। उस गद्दी पर 14वें (चौदहवें) वंश गुरू श्री प्रकाशमुनि नाम साहेब विराजमान हैं। तेरहवें वंश गुरू श्री उदित नाम साहेब थे जो वर्तमान सन् 2013 से 15 वर्ष पूर्व 1998 में शरीर त्याग गए थे। यदि तेरहवीं गद्दी वाले वंश गुरू के विषय में यह लिखा होता तो वे निकलवा लेते और दिल्ली झण्डा गाड़ते। ऐसा नहीं हुआ तो वह तेरहवां पंथ धर्मदास जी की वंश परंपरा से नहीं है।

फिर ''कबीर चरित्र बोध'' के पृष्ठ 1870 पर कबीर सागर में 12 (बारह) पंथों के नाम लिखे हैं जो काल (ज्योति निरंजन) ने कबीर जी के नाम से नकली पंथ चलाने को कहा था। उनमें सर्व प्रथम ''नारायण दास'' लिखा है। बारहवां पंथ गरीब दास का लिखा है। वास्तव में प्रथम चुड़ामणि जी हैं, जान-बूझकर काँट-छाँट की है।

उनको याद होगा कि परमेश्वर कबीर जी ने नारायण दास जी को तो शिष्य बनाया ही नहीं था। वे तो श्री कृष्ण जी के पुजारी थे। उसने तो अपने छोटे भाई चुड़ामणि जी का घोर विरोध किया था। जिस कारण से श्री चुड़ामणि जी कुदुर्माल चले गए थे। बाद में बाँधवगढ़ नगर नष्ट हो गया था। ''कबीर चरित्र बोध'' में पृष्ठ 1870 पर बारह पंथों के प्रवर्तकों के नाम लिखे हैं। उनमें प्रथम गलत नाम लिखा है। शेष सही हैं। लिखा है :-

1. नारायण दास जी का पंथ 2. यागौ दास (जागु दास) जी का पंथ 3. सूरत गोपाल पंथ 4. मूल निरंजन पंथ 5. टकसारी पंथ 6. भगवान दास जी का पंथ 7. सतनामी पंथ 8. कमालीये (कमाल जी का) पंथ 9. राम कबीर पंथ 10. प्रेम धाम (परम धाम) की वाणी पंथ 11. जीवा दास पंथ 12. गरीबदास पंथ।

फिर ''कबीर बानी'' अध्याय के पृष्ठ 134 पर कबीर सागर में लिखा है कि:-

''वंश प्रकार''

प्रथम वंश उत्तम **(यह चुड़ामणि जी के विषय में कहा है।)**

दूसरे वंश अहंकारी **(यह यागौ यानि जागु दास जी का है।)**

तीसरे वंश प्रचंड **(यह सूरत गोपाल जी का है।)**

चौथे वंश बीरहे **(यह मूल निरंजन पंथ है।)**

पाँचवें वंश निन्द्रा **(यह टकसारी पंथ है।)**

छटे वंश उदास **(यह भगवान दास जी का पंथ है।)**

सातवें वंश ज्ञान चतुराई **(यह सतनामी पंथ है।)**

आठवें वंश द्वादश पंथ विरोध **(यह कमाल जी का कमालीय पंथ है।)**

नौवें वंश पंथ पूजा **(यह राम कबीर पंथ है।)**

दसवें वंश प्रकाश **(यह परम धाम की वाणी पंथ है।)**

ग्यारहवें वंश प्रकट पसारा **(यह जीवा पंथ है।)**

बारहवें वंश प्रकट होय उजियारा **(यह संत गरीबदास जी गाँव-छुड़ानी जिला-झज्जर, प्रान्त-हरियाणा वाला पंथ है जिन्होंने परमेश्वर कबीर जी के मिलने के पश्चात् उनकी महिमा को तथा यथार्थ ज्ञान को बोला जिससे परमेश्वर कबीर जी की महिमा का कुछ प्रकाश हुआ।)**

तेरहवें वंश मिटे सकल अंधियारा **{यह यथार्थ कबीर पंथ है जो सन् 1994 से प्रारम्भ हुआ है जो मुझ दास (रामपाल दास) द्वारा संचालित है।}**

दामाखेड़ा वाले धर्मदास जी के वंश गद्दी वालों ने वास्तविक भेद छुपाने की कोशिश की तो है, परंतु सच्चाई को मिटा नहीं सके।

कबीर सागर के अध्याय ''कबीर बानी'' के पृष्ठ पर 136 :-

द्वादश पंथ चलो सो भेद

द्वादश पंथ काल फुरमाना। भूले जीव न जाय ठिकाना।।
तातें आगम कह हम राखा। वंश हमारा चुड़ामणि शाखा।।
प्रथम जग में जागु भ्रमावै। बिना भेद वह ग्रन्थ चुरावै।।
दूसर सुरति गोपाल होई। अक्षर जो जोग दृढ़ावै सोई।।

(विवेचन :- यहाँ पर प्रथम जागु दास बताया है जबकि वाणी स्पष्ट कर रही है कि वंश (प्रथम) चुड़ामणि है। दूसरा जागु दास। यही प्रमाण ''कबीर चरित्र बोध'' पृष्ठ 1870 में है। दूसरा जागु दास है। अध्याय ''स्वसमवेद बोध'' के पृष्ठ 155(1499) पर भी दूसरा जागु लिखा है। यहाँ प्रथम लिख दिया। यहाँ पर प्रथम चुड़ामणि लिखना उचित है।)

तीसरा मूल निरंजन बानी। लोक वेद की निर्णय ठानी।।
चौथे पंथ टकसार (टकसारी) भेद लौ आवै। नीर पवन को संधि बतावै।।

(यह पाँचवां लिखना चाहिए)

पाँचवां पंथ बीज को लेखा। लोक प्रलोक कहै हम में देखा।।

(यह भगवान दास का पंथ है जो छटा लिखना चाहिए था।)

छटा पंथ सत्यनामी प्रकाशा। घट के माहीं मार्ग निवासा।।

(यह सातवां पंथ लिखना चाहिए।)

सातवां जीव पंथ ले बोलै बानी। भयो प्रतीत मर्म नहीं जानी।।

(यह आठवां कमाल जी का पंथ है।)

आठवां राम कबीर कहावै। सतगुरू भ्रम लै जीव दढ़ावै।।

(वास्तव में यह नौवां पंथ है।)

नौमें ज्ञान की कला दिखावै। भई प्रतीत जीव सुख पावै।।

(वास्तव में यह ग्यारहवां जीवा पंथ है। यहाँ पर नौमा गलत लिखा है।)

दसवें भेद परम धाम की बानी। साख हमारी निर्णय ठानी।।

(यह ठीक लिखा है, परंतु ग्यारहवां नहीं लिखा। यदि प्रथम चुड़ामणि जी को मानें तो सही क्रम बनता है। वास्तव में प्रथम चुड़ामणि जी हैं। इसके पश्चात् बारहवें पंथ गरीबदास जी वाले पंथ का वर्णन प्रारम्भ होता है। यह सांकेतिक है। संत गरीबदास जी का जन्म वि.संवत् 1774 (सतरह सौ चौहत्तर) में हुआ था। यहाँ गलती से सतरह सौ पचहत्तर लिखा है। यह प्रिन्ट में गलती है।)

संवत् सतरह सौ पचहत्तर (1775) होई। ता दिन प्रेम प्रकटें जग सोई।।
आज्ञा रहै ब्रह्म बोध लावै। कोली चमार सबके घर खावै।।
साखि हमारी ले जीव समझावै। असंख्य जन्म ठौर नहीं पावै।।
बारहवें (बारवै) पंथ प्रगट होवे बानी। शब्द हमारै की निर्णय ठानी।।
अस्थिर घर का मर्म नहीं पावै। ये बार (बारह) पंथ हमी (कबीर जी) को ध्यावैं।।
बारहें पंथ हमहि (कबीर जी ही) चलि आवैं। सब पंथ मिटा एक ही पंथ चलावैं।।
प्रथम चरण कलजुग निरयाना (निर्वाण)। तब मगहर मांडो मैदाना।।

भावार्थ :- यहाँ पर बारहवां पंथ संत गरीबदास जी वाला स्पष्ट है क्योंकि संत गरीबदास जी को परमेश्वर कबीर जी मिले थे और उनका ज्ञान योग खोल दिया था। तब संत गरीबदास जी ने परमेश्वर कबीर जी की महिमा की वाणी बोली जो ग्रन्थ रूप में वर्तमान में प्रिन्ट करवा लिया गया है। विचार करना है। संत गरीबदास जी के पंथ तक 12 (बारह) पंथ चल चुके हैं। यह भी लिखा है कि भले ही संत गरीबदास जी ने मेरी महिमा की साखी-शब्द-चौपाई लिखी है, परंतु वे बारहवें पंथ के अनुयाई अपनी-अपनी बुद्धि से वाणी का अर्थ करेंगें, परंतु ठीक से न समझकर संत गरीबदास जी तक वाले पंथ के अनुयाई यानि बारह पंथों वाले मेरी वाणी को ठीक से नहीं समझ पाएंगे। जिस कारण से असंख्य जन्मों तक सतलोक वाला अमर धाम ठिकाना प्राप्त नहीं कर पाऐंगे। ये बारह पंथ वाले कबीर जी के नाम से पंथ चलाएंगे और मेरे नाम से महिमा प्राप्त करेंगे, परंतु ये बारह के बारह पंथों वाले अनुयाई अस्थिर यानि स्थाई घर (सत्यलोक) को प्राप्त नहीं कर सकेंगे। फिर कहा है कि आगे चलकर बारहवें पंथ (संत गरीबदास जी वाले पंथ में) हम यानि स्वयं कबीर जी ही चलकर आएंगे, तब सर्व पंथों को मिटाकर एक पंथ चलाऊँगा। कलयुग का वह प्रथम चरण होगा, जिस समय मैं (कबीर जी) संवत् 1575 (ई. सन् 1518) को मगहर नगर से निर्वाण प्राप्त करूँगा यानि कोई लीला करके सतलोक जाऊँगा।

परमेश्वर कबीर जी ने कलयुग को तीन चरणों में बाँटा है। प्रथम चरण तो वह जिसमें परमेश्वर लीला करके जा चुके हैं। बिचली पीढ़ी वह है जब कलयुग पाँच हजार पाँच सौ पाँच वर्ष बीत जाएगा। अंतिम चरण में सब कतघ्नी हो जाएंगे, कोई भक्ति नहीं करेगा।

मुझ दास (रामपाल दास) का निकास संत गरीबदास वाले बारहवें पंथ से हुआ है। वह तेरहवां

पंथ अब चल रहा है। परमेश्वर कबीर जी ने चलवाया है। गुरू महाराज स्वामी रामदेवानंद जी का आशीर्वाद है। यह सफल होगा और पूरा विश्व परमेश्वर कबीर जी की भक्ति करेगा।

संत गरीबदास जी को परमेश्वर कबीर जी सतगुरू रूप में मिले थे। परमात्मा तो कबीर हैं ही। वे अपना ज्ञान बताने स्वयं पथ्वी पर तथा अन्य लोकों में प्रकट होते हैं। संत गरीबदास जी ने ''असुर निकंदन रमैणी'' में कहा है कि ''सतगुरू दिल्ली मंडल आयसी। सूती धरती सूम जगायसी। दिल्ली के तख्त छत्र फेर भी फिराय सी। चौंसठ योगनि मंगल गायसी।'' **संत गरीबदास जी के सतगुरू ''परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी'' थे।**

परमेश्वर कबीर जी ने कबीर सागर अध्याय ''कबीर बानी'' पष्ठ 136 तथा 137 पर कहा है कि बारहवां (12वां) पंथ संत गरीबदास जी द्वारा चलाया जाएगा।

संवत् सतरह सौ पचहत्तर (1775) होई। जा दिन प्रेम प्रकटै जग सोई।।
साखि हमारी ले जीव समझावै। असंख्यों जन्म ठौर नहीं पावै।।
बारहवें पंथ प्रगट हो बानी। शब्द हमारे की निर्णय ठानी।।
अस्थिर घर का मर्म ना पावैं। ये बारा (बारह) पंथ हमही को ध्यावैं।।
बारहवें पंथ हम ही चलि आवैं। सब पंथ मिटा एक पंथ चलावैं।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने स्पष्ट कर दिया है कि 12वें (बारहवें) पंथ तक के अनुयाई मेरी महिमा की साखी जो मैंने (परमेश्वर कबीर जी ने) स्वयं कही है जो कबीर सागर, कबीर साखी, कबीर बीजक, कबीर शब्दावली आदि-आदि ग्रन्थों में लिखी हैं। उनको तथा जो मेरी कपा से गरीबदास जी द्वारा कही गई वाणी के गूढ़ रहस्यों को ठीक से न समझकर स्वयं गलत निर्णय करके अपने अनुयाईयों को समझाया करेंगें, परंतु सत्य से परिचित न होकर असँख्यों जन्म स्थाई घर अर्थात् सनातन परम धाम (सत्यलोक) को प्राप्त नहीं कर सकेंगे। फिर मैं (परमेश्वर कबीर जी) उस गरीबदास वाले पंथ में आऊँगा जो कलयुग में पाँच हजार पाँच सौ पाँच वर्ष पूरे होने पर यथार्थ सत कबीर पंथ चलाया जाएगा। उस समय तत्त्वज्ञान पर घर-घर में चर्चा चलेगी। तत्त्वज्ञान को समझकर सर्व संसार के मनुष्य मेरी भक्ति करेंगे। सब अच्छे आचरण वाले बनकर शांतिपूर्वक रहा करेंगे। इससे सिद्ध है कि तेरहवां पंथ जो यथार्थ कबीर पंथ है, वह अब मुझ दास (रामपाल दास) द्वारा चलाया जा रहा है। कपा परमेश्वर कबीर जी की है। जब परमेश्वर कबीर जी ''तोताद्रि'' स्थान पर ब्राह्मणों के भण्डारे में भैंसे से वेद-मंत्र बुलवा सकते हैं तो वे स्वयं भी बोल सकते थे। समर्थ की समर्थता इसी में है कि वे जिससे चाहें, अपनी महिमा का परिचय दिला सकते हैं। शायद इसीलिए परमेश्वर कबीर जी ने अपनी कपा से मुझ दास (रामपाल दास) से यह 13वां (तेरहवां) पंथ चलवाया है।

कलयुग वर्तमान में कितना बीत चुका है?

हिन्दु धर्म में आदि शंकराचार्य जी का विशेष स्थान है। दूसरे शब्दों में कहें तो हिन्दु धर्म के सरंक्षक तथा संजीवन दाता भी आदि शंकराचार्य हैं। उनके पश्चात् जो प्रचार उनके शिष्यों ने किया, उसके परिणामस्वरूप हिन्दु देवताओं की पूजा की क्रान्ति-सी आई है। उनके ईष्ट देव श्री शंकर भगवान हैं। उनकी पूज्य देवी पार्वती जी हैं। इसके साथ श्री विष्णु जी तथा अन्य देवताओं के वे पुजारी हैं। विशेषकर ''पंच देव पूजा'' का विधान है :- 1. श्री ब्रह्मा जी 2. श्री विष्णु जी 3. श्री शंकर जी 4. श्री पारासर ऋषि जी 5. श्री कष्ण द्वैपायन उर्फ श्री वेद व्यास जी पूज्य हैं।

पुस्तक ''जीवनी आदि शंकराचार्य'' में लिखा है कि आदि शंकराचार्य जी का जन्म 508 वर्ष ईशा जी से पूर्व हुआ था।

फिर पुस्तक ''हिमालय तीर्थ'' में भविष्यवाणी की थी जो आदि शंकराचार्य जी के जन्म से पूर्व की है। कहा है कि आदि शंकराचार्य जी का जन्म कलयुग के तीन हजार वर्ष बीत जाने के पश्चात् होगा।

अब गणित की रीति से जाँच करके देखते हैं, वर्तमान में यानि 2012 में कलयुग कितना बीत चुका है?

आदि शंकराचार्य जी का जन्म ईशा जी के जन्म से 508 वर्ष पूर्व हुआ।

ईशा जी के जन्म को हो गए = 2012 वर्ष

शंकराचार्य जी को कितने वर्ष हो गए =2012+508=2520 वर्ष।

ऊपर से हिसाब लगाएं तो शंकराचार्य जी का जन्म हुआ = कलयुग 3000 वर्ष बीत जाने पर।

कुल वर्ष 2012 में कलयुग कितना बीत चुका है =3000+2520=5520 वर्ष।

अब देखते हैं कि 5505 वर्ष कलयुग कौन-से सन् में पूरा होता है =

5520-5505 = 15 वर्ष 2012 से पहले।

2012-15 = 1997 ई. को कलयुग 5505 वर्ष पूरा हो जाता है। संवत् के हिसाब से स्वदेशी वर्ष फाल्गुन महीने यानि फरवरी-मार्च में पूरा हो जाता है।

जो संतजन मानते हैं कि श्रीमद्भगवत गीता 5151 वर्ष पूर्व कही गई थी। वह गलत है।

''दीक्षा देने की विधि कबीर सागर के अनुसार''

प्रश्न :- कबीर पंथी दीक्षा एक बार में देते हैं। आप कहते हैं कि तीन बार में दीक्षा क्रम पूरा होता है। कौन-सी बात सत्य मानी जाए?

उत्तर :- जो कबीर सागर के अध्याय ''अमर मूल'' में प्रमाण है।

प्रश्न :- आप कहते हैं और अध्याय ''अनुराग सागर'' में भी पढ़ा है कि कबीर सागर में बहुत कांट-छांट की गई है, मिलावट भी की गई है। आप जिन वाणियों को सत्य मानते हो, उनको कैसे सत्य मानें?

उत्तर :- यदि इन वाणियों पर मिलावट करने वालों की दृष्टि पड़ जाती तो इसे काट देते क्योंकि वे एक बार में दीक्षा देकर नरकगामी कर रहे हैं। यह प्रकरण उनकी मान्यता अनुसार भी सत्य है क्योंकि यह कबीर सागर में लिखा है तथा राजा बीर सिंह को तीन बार में नामदान करने का भी प्रमाण है। इसलिए मेरे वाली क्रिया ठीक है।

मुझ दास (रामपाल दास) को दीक्षा देने का आदेश मेरे पूज्य गुरूजी द्वारा सन् 1994 में हुआ था। उस समय से मैं दीक्षा को तीन चरणों में पूरा कर रहा हूँ। यह प्रेरणा परमेश्वर कबीर जी की ओर से थी। उस समय तक मैंने कबीर सागर का नाम भी नहीं सुना था। मैं संत गरीबदास जी के पंथ में दीक्षित होने के कारण संत गरीबदास जी के ग्रन्थ को ही पढ़ता था। सन् 2008 में कबीर सागर को पढ़ा। तब पाया कि परमात्मा कबीर जी भी दीक्षा क्रम को तीन चरणों में पूरा करते थे।

प्रमाण :- पवित्र कबीर सागर के अध्याय ''अमर मूल'' के पृष्ठ 265 पर स्पष्ट किया है कि हे धर्मदास! दीक्षा को तीन चरणों में पूरा करना होता है। इसी परंपरा से सर्व संसार में दीक्षा प्रदान

की जाएगी। (यही प्रमाण कबीर सागर के अध्याय ''सुल्तान बोध'' के पष्ठ 62 पर है :- प्रथम पान परवाना लेई। पीछे सार शब्द तोहे देई।।) **फिर अध्याय ''बीर सिंह बोध'' में प्रमाण है कि कबीर परमेश्वर जी ने राजा बीर सिंह को तीन चरणों में दीक्षा प्रदान की थी। प्रथम बार ''सात नाम'' का मंत्र दिया था।**

प्रमाण = अध्याय ''बीर सिंह बोध'' पष्ठ 113 पर :-

तिनका तोरि पान लिख (रख) दयऊ। रानी–राय (राजा) अपन करि लयऊ।।
बहुत जीव पान मम पाये। ताघट पुरूष नाम सात आये।।
जो कोई हमरा बीरा पावै। बहुरि न योनि संकट आवै।।

(बीर सिंह बोध पष्ठ 114 से वाणी)

सत्य कहूँ सुनु धर्मदासा। बिनु बीरा पावै यम फांसा।।
बीरा पाय राय भय भागा। सत्य ज्ञान हृदय में जागा।।
गदगद कंड हरष मन बाढ़ा। विनती करै राजा होय ठाढ़ा।।
प्रेमाश्रु दोई नैनन ढ़रावै। प्रेम अधिकता बचन न आवै।।

भावार्थ :- प्रथम बार राजा तथा रानी को सात नाम वाला प्रथम मंत्र नामदान किया। उनके साथ बहुत सारे व्यक्तियों ने भी दीक्षा ली। उनको सात नाम का मंत्र दिया जो सात पुरूषों (प्रभुओं) का है।

1. परमात्मा का गुरू रूप में त्रिकुटी कमल में विराजमान का ''सत सुकत'' नाम जाप।
2. मूल कमल में विराजमान गणेश जी का नाम जाप।
3. स्वाद कमल में विराजमान ब्रह्मा-सावित्री जी का नाम जाप।
4. नाभि कमल में विराजमान विष्णु-लक्ष्मी जी का नाम जाप।
5. हृदय कमल में विराजमान शंकर-पार्वती जी का नाम जाप।
6. कंठ कमल में विराजमान देवी दुर्गा जी का नाम जाप।
7. नौवें कमल में विराजमान पूर्ण ब्रह्म यानि सत्य पुरूष जी का नाम जाप।

सात नाम के मंत्र के विषय में अन्य प्रमाण :- अध्याय ''अगम निगम बोध'' पष्ठ 84 से 86:- पष्ठ 84 पर वाणी पंक्ति सँख्या 7 से 9 तक। पष्ठ 85 पर नीचे से पाँचवीं (5वीं) पंक्ति में लिखा है :- सातों नाल जो आय विहंगा। **भावार्थ है कि सात प्रभु एक नाल (कड़ी) में जुड़े हैं। फिर पष्ठ 86 प्रथम पंक्ति में लिखा है :-** सोहं नाल चीन्ह जिन पाई, सोई सिद्ध संत है भाई। **फिर पाँचवीं पंक्ति में कहा है :-** पाँच नाम तिहको परवाना, जो कोई साधु हृदय में आना। **फिर आठवीं पंक्ति में लिखा है :-** सप्त नाल के सातों नामा, बीर विहंग करै सब कामा। **अगम निगम बोध पष्ठ 86, 87 पर श्रीं, ॐ, ह्रीं, कर्लीं नाम प्रत्यक्ष लिखे हैं। परमात्मा कबीर जी विशेष श्रद्धालु को ही सात नाम वाला मंत्र देते थे। अन्य को केवल पाँच नाम ही देते जो गणेश जी से दुर्गा जी वाले हैं, ही देते थे। अनुराग सागर पष्ठ 72 पर राजा खेम सरी को प्रथम नाम 5 शब्द दिए थे, वहाँ पढ़ें।**

''दूसरे चरण में सतनाम देने का प्रमाण''

कबीर सागर अध्याय ''बीर सिंह बोध'' पष्ठ 114 पर :-

यहाँ पर कहा है कि जब राजा बीर सिंह को सत्यनाम दिया। जब राजा ने अपने कानों सत्यनाम (दो अक्षर) को सुना, तब प्रतीत आई यानि विश्वास हुआ।

''राजा बीर सिंह द्वारा प्रार्थना (स्तुति करना)''

करूणामय सद्गुरू अभय मुक्ति धामी नामा हो।
पुलकित सादर प्रेम वश होय सुधरे सो जीव कामा हो।
भव सिंधु अति विकराल दारूण, तास तत्त्व बुझायऊ।
अजर बीरा नाम दै मोहि। पुरूष दर्श करायऊ।।
सोरठा :– चलिये वही लोक को, राय चरण गहे धाय।
जरा मरण जेही घर नहीं, जहाँ वहाँ हंस रहाय।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने जब राजा को प्रथम मंत्र दिया। उसको प्राप्त करके राजा को विश्वास हुआ कि साधना सही है क्योंकि हिन्दु होने के नाते राजा ने अपने देवताओं के निज मंत्र प्राप्त किए तो मन में कोई विरोध नहीं हुआ। फिर परमेश्वर कबीर जी ने कहा राजा यह मंत्र तो सांसारिक सुविधाऐं प्राप्त करवाता है और भक्ति में रूचि पैदा करता है। जब संसार छोड़कर जाओगे तो आपको प्रत्येक देव जिनका नाम दिया है, वे अपनी-अपनी सीमा से जीव को आदर के साथ बिना किसी बाधा के पार करेंगे, परंतु त्रिकुटी पर जाने के पश्चात् जीव के पास ''सत्य नाम'' का होना अनिवार्य है। यदि सत्यनाम नहीं है तो जीव ब्रह्म रंद्र वाले दसवें द्वार को तथा परब्रह्म रंद्र वाले ग्यारहवें द्वार को नहीं खोल पाएगा। फिर पूर्ण ब्रह्म रंद्र बारहवां द्वार है। वह सार शब्द से खुलता है। यह सत्यनाम के बाद प्रदान किया जाता है। जब तक सत्यनाम के स्मरण की कमाई यानि भक्ति शक्ति धन संग्रह नहीं करेगा, तब तक सारनाम (सार शब्द) नहीं दिया जाता। वह मैं परीक्षा करके देता हूँ। राजा ने उपरोक्त वाणियों में परमेश्वर कबीर जी से प्रार्थना की है कि हे दया के सागर सद्गुरू! यह भवसागर बहुत विकराल है, भयंकर है। उस तत्त्वभेद को बताकर मुझे अजर बीरा नाम अर्थात् अमर होने की दीक्षा देकर सत्यपुरूष के दर्शन कराने की कपा करो और उस लोक में ले चलो जहाँ जरा (वद्ध अवस्था) तथा मरण (मत्यु) नहीं है। जहाँ पर अमर हंस (देव स्वरूप आत्माऐं) रहती हैं। इतना सुनकर राजा ने परमेश्वर कबीर जी के चरण दौड़कर दण्डवत् करके पकड़े।

''कबीर वचन''

तौन नाम राजा कहं दीना। सकल जीव अपना कर लीना।।
राजा (राय) श्रवण जब नाम सुनायी। तब प्रतीत राजा जीव आई।।
सत्य पुरूष सत्य है फूला। सत्य शब्द है मुक्ति को मूला।।
सत्यनाम जीव जो पावै। सोई जीव तेहि लोक समावै।।
ऐसो नाम सुहेला भाई। सुनतहि काल जाल नशि जाई।।
सोई नाम राजा जो पाये। सत्य पुरूष दरशन चित लाये।।

(पुराने कबीर सागर से वाणी)

अब राजा तुम सिमर करिहो। राज पराये चित न धरिहो।।
सत्य नाम बख्स मैं दीना। रहना सदा भक्त संत के आधीना।।
सार शब्द जब तक नहीं पावै। कोई साधक सतलोक नहीं जावै।।
सार शब्द सुमरण करही। सो हंस भवसागर तिरही।।

कबीर सागर अध्याय ''बीर सिंह बोध'' पृष्ठ 115 पर :-

''राजा बीर सिंह वचन''

साहब सार शब्द मोहे दीजे। अपना करि प्रभु निज कै लीजै।।
दयावंत बिनती सुन मोरी। हम पुरूषा परे नरक अघोरी।।
मोको तारो भवसागर सो गोसाईं। बिनती करों रंकको नाई।।

पृष्ठ नं. 116 से 118 तक कबीर सागर के अध्याय बीर सिंह बोध की फोटोकॉपी लगाई हैं ताकि पाठकजन आँखों देख पढ़कर विश्वास करें। अब तक तो प्रथम तथा दूसरे मंत्र देने का वर्णन है। आगे सार शब्द (सार नाम) के लिए परीक्षा ली। फिर सार शब्द (सारनाम) देने का प्रमाण है।

''कबीर वचन''

कबीर सागर अध्याय ''बीर सिंह बोध'' पृष्ठ 116 (पढ़ें फोटोकॉपी)

(११६) 556 अमरसिंह बोध

कबीर वचन

अजर नाम चौका विस्तारो। जेहिते पुरुषा तरें तुम्हारो॥
गाव तुम्हारे ब्राह्मणि जाती। धोती कीन्ही बहुते भांती॥
बारी माहिं कपास लगायी। बहुत नेम से काति बनायी॥
सो धोती तुम राजा लाऊ। पाछे चौका जुगुति बनाऊ॥

राजा बीरसिंह वचन

तब राजा अस विन्ती कीन्हा। कैसे जान्यो को कहि दीन्हा॥
ब्राह्मणि मंदिर नगर रहायी। ताकी सुधि हमहूँ नहिं पायी॥

कबीर वचन

तब राजा आपे चलि गयऊ। साथ एक नेगीको लयऊ॥
पूछत ब्राह्मणि राजा गयऊ। वही पुरीमें जाइ ठाढ रहेऊ॥
राजा आवन सुनी जब सोई। आदर देन चली तब ओई॥
माई पुत्री आगे चलि आई। दधि अछत औ लुटिया लाई॥

ब्राह्मणी वचन

ब्राह्मणि कहै दोई कर जोरी। राजा सुनिये विन्ती मोरी॥
भाग मोर हम दर्शन पावा। मैं बलिहारी यहाँ सिधावा॥

राजा बीरसिंह वचन

राजा कह ब्राह्मणीसे बाता। तुव घर धोती एक रहाता॥
सो धोती हमको देहू। गाँव ठौर तुम हमसे लेहू॥
एतो वचन जो राखु हमारा। धोती देइ करू काज निबारा॥

ब्राह्मणी वचन

ब्राह्मणी कहे सुनो हो राऊ। धोती सुधि तुहि कौन बताऊ॥

राजा बीरसिंह वचन

हम घर सतगुरु कहि समझायी। धोती सुधि हम गुरुपे पायी॥

कबीर वचन धर्मदास प्रति

वचन सुनत तेहि सुधि सो भूली। मन पछताय विनय मुख खोली॥

ब्राह्मणी वचन

छन्द–माइ पुत्री करइ विन्ती धोती नाथ अनाथकी ॥
गाव मुल्क नहिं चाहीं मोहि धोती अहै जगन्नाथकी ॥
हम दीन हैं आधीन भिक्षुक शीस बरु मम लीजिये ॥
करि जोडि विन्ती मैं करूं जस चाहिये अब कीजिये ॥

कबीर वचन

सोरठा–राजा घरहिं सिधाइ, टेके चरण तहँ खसम कर ॥
कहे उत्तर समुझाय, धोती मांगे न दीनेऊ ॥

राजा बीरसिंह वचन–चौपाई

साहिब ब्राह्मणी लग हम गयऊ । धोती माँगत हम नहिं पयऊ ॥
कहे धोती मोहि देइ न जायी । जगन्नाथ हेतु धोती बनायी ॥
कहे बरु शीस लेहु तुम राजा । धोती देत होय व्रत अकाजा ॥

कबीर वचन

एती सुनतै हम विहँसाये । राजा कहँ एक वचन सुनाये ॥
छरीदार दोउ देउ पठायी । ब्राह्मणी संग क्षेत्रहीं जायी ॥
यहि प्रतीति लेहु तुम जाका । हम विन धोती लेइ को ताका ॥
राजा छडीदार पठवाये । ब्राह्मणी संग क्षेत्र चलि जाये ॥
नरियर लेइ ब्राह्मणी हाथा । करि अस्नान परसि जगन्नाथा ॥
लै धोती जब परस्यो जायी । तब धोती बाहर परि आयी ॥

ब्राह्मणी वचन

अब यह धोती काम न आयो । धोती फेरि कहो कस लायो ॥

जगन्नाथ वचन

जाके व्रत तुम काति बनायी । सो घर बैठे माँगि पठायी ॥
अब तुम अपने घर लै जाहू । लै धोती दै डालो काहू ॥

१ जगन्नाथपुरीको ।

ब्राह्मणी वचन

तबै ब्राह्मणी कहै कर जोरी । ठाकुर सुनिये विन्ती मोरी ॥
राय बीरसिंह मो घर आये । धोती माँगि कबीर पठाये ॥
उनके मांगे मैं नहिं दीना । हम कहि जगन्नाथ व्रत कीना ॥
तब राजा अपने घर गयऊ । हम लै धोती इहां सिधयऊ ॥

जगन्नाथ वचन

जगन्नाथ तब कहि समझायो । तुम अपनी भल भाँति नशायो॥
उनके मांगे धोती देती । आपन जनम सुफल कर लेती ॥

कबीर वचन

जगन्नाथ जस कहि समझायी । छडीदार तब लिये अर्थायी ॥
छडीदार अरु ब्राह्मणी आये । जहाँ राय अरु हम बैठाये ॥
ब्राह्मणी ले धोती धर दीनी । दोय कर जोरि सो बिन्ती कीनी॥

ब्राह्मणी वचन

हम अजान कछु जान न जायी । धोती नहिं दीनी मम पायी ॥

छडीदार वचन

छडीदार तब शीस नवाये । राजासे उठि विन्ती लाये ॥
जगन्नाथ धोती नहिं लीना । मंडप बाहर धोती कीना ॥
जगन्नाथ अस वचन सुनावा । यह धोती हम काम न आवा ॥
जब राजा से मांग पठाई । कस ना धोती दीनेउ माई ॥
जब हम मांगा तब ना दियऊ । अब कस देन यहाँ चलि अयऊ॥

कबीर वचन

छडीदार उत्तर जब कहेऊ । तब मम चरण राय शिर लयऊ ॥

राजा बीरसिंह वचन

सांचे सद्गुरु हैं तुव बचना । सत्य लोककी सत्य है रचना ॥
अब मोहि धनी सिखापन दीजे । हम पुरुषा आपन करि लीजे ॥
जाते अजर अमर पद पाई । सोई विधि तुम करो गुसांई ॥

कबीर सागर के अध्याय बीर सिंह बोध के पष्ठ 116 से 118 में कहा है कि:-

परमेश्वर कबीर से राजा बीर सिंह बघेल ने विनती की कि हे सद्गुरू जी! सार शब्द बिन मोक्ष नहीं है तो मुझे सार शब्द देने का कष्ट करें। परमेश्वर कबीर जी ने एक तीर से तीन शिकार किए। बीर सिंह बघेल काशी नगरी के राजा थे। उसी नगर में एक विधवा ब्राह्मणी (नाम-चन्द्रप्रभा) रहती थी। उसकी एक पुत्री थी। उन दोनों ने भी परमेश्वर से सत्यनाम ले रखा था। वे दोनों माँ-बेटी भी सारशब्द के लिए बार-बार प्रार्थना किया करती थी। ब्राह्मणी चन्द्रप्रभा भगवान जगन्नाथ को इष्ट मानकर अटूट श्रद्धा से भक्ति करती थी। गुरू कबीर जी को मानती थी। उसने अपने आँगन में कपास (बाड़ी) बीजी। उसमें गंगा का पावन जल लाकर सिंचाई की। फिर उससे कपास निकालकर सूत बनाया और अपने हाथों कपड़ा बुना यानि एक धोती (साड़ी जैसी) बनाई जिसे भगवान जगन्नाथ के मंदिर में पुरी (प्रान्त-उड़ीसा) में अर्पित करना चाहती थी। एक-दो दिन में पुरी को रवाना होने वाली थी।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा, राजन! आपको मैं सारशब्द देता हूँ, परंतु उसके लिए एक धोती की आवश्यकता पड़ती है। आप ऐसा करो, आपकी नगरी काशी में आपकी एक गुरू बहन ब्राह्मणी रहती है। उसने अपने घर के आँगन में कपास बीजकर स्वयं निकालकर कात-बुनकर एक धोती तैयार की है। वह धोती लाओ तो सारनाम मिलेगा। राजा बीर सिंह उस बहन के पास गए। उस

बहन चन्द्रप्रभा को राजा के आने की खबर मिली तो पहले तो घबराई, कुछ संभलकर दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम करके आदर से बैठाया। आने का कारण पूछा। राजा ने कहा, बहन! आज मुझे सारनाम मिलना है। गुरूदेव ने एक धोती मँगाई है जो आपने अपने घर के आँगन में बाड़ी बीजकर और सूत बुनकर तैयार की है। आप उसके बदले में चाहे कुछ गाँव ले लो बहन! मेरे जीवन कल्याण के लिए वह धोती दे दे। राजा बीर सिंह की यह बात सुनकर दोनों माँ-बेटी हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगी कि राजन! यह धोती भगवान जगन्नाथ जी के लिए बनाई है। हे राजन! बेसक हमारा सिर काट दो, परंतु हम यह धोती नहीं दे सकते। बीर सिंह ने कहा, बहन! सतगुरू देव जी ने मँगाई है। मैं राजा के तौर पर माँगने नहीं आया हूँ। आपकी इच्छा नहीं है तो मैं चला जाता हूँ। बहन चन्द्रप्रभा तथा पुत्री ने राहत की साँस ली। राजा बीर सिंह बघेल ने जाकर सतगुरू कबीर जी को सब वार्ता बताई। तब सतगुरू देव जी ने कहा कि मैं अपनी शर्त छोड़ देता हूँ, मैं आपको बिना धोती के ही सारनाम दे दूँगा। आप एक काम करो। जब वह धोती भेंट करने पुरी को जाए, उस बहन चन्द्रप्रभा के साथ अपने सिपाही भेज दो। राजा ने दो सिपाही उस बहन के साथ भेज दिए ताकि कोई रास्ते में परेशान न करे। दोनों माँ-बेटी जगन्नाथ पुरी में चली गई। सुबह स्नान करके एक नारियल तथा धोती थाली में रखकर जगन्नाथ मंदिर में भेंट कर दी। देखते-देखते धोती वहाँ से उठी और मंदिर से बाहर आँगन में मिट्टी में गिरी। आकाशवाणी हुई कि यह धोती मैंने राजा बीर सिंह के द्वारा काशी में मँगवाई थी। वहाँ क्यों नहीं भेजी? यहाँ किसलिए लाई है? जगन्नाथ तो काशी में बैठा है, जाओ, उसे भेंट करो। यह कौतुक सबने देखा। राजा के सिपाही भी यह सब देख रहे थे। आकाशवाणी भी सुनी। ब्राह्मणी बहन तथा उसकी पुत्री पश्चाताप करने लगी कि हम कितनी मूर्ख हैं, जगन्नाथ तो काशी में कबीर जी हैं। हम उन्हें सामान्य व्यक्ति जुलाहा ही मान रही थी। वहीं से रोने लगी थी, रह-रहकर रो रही थी। वापिस काशी नगरी में आ गए। उस दिन भी परमेश्वर कबीर जी राजा बीर सिंह बघेल के महल में बैठे थे। चन्द्रप्रभा बहन, उसकी पुत्री तथा दोनों सिपाही कबीर परमेश्वर जी से मिले। साथ में राजा बीर सिंह बघेल बैठा था। वह ब्राह्मणी चन्द्रप्रभा परमेश्वर कबीर जी के चरणों में धोती रखकर बिलख-बिलखकर रोने लगी और कहा, मुझे भ्रम था कि आप केवल मानव हैं। हे सतगुरू! आप तो जगत के स्वामी साक्षात् जगन्नाथ हो। दोनों सिपाहियों ने सर्व घटना बताई। जो आकाशवाणी सुनी थी, वह भी बताई। तब राजा बीर सिंह को भी दृढ़ निश्चय हुआ। परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि :-

कबीर, गुरू मानुष कर जानते, ते नर कहिए अंध। होवें दुखी संसार में, आगै यम के फंद।।
गुरू गोविन्द कर जानियो, रहियो शब्द समाय। मिलें तो दण्डवत् बन्दगी, नहीं पल—पल ध्यान लगाय।।

तब परमेश्वर जी ने कहा, पहले अपना नाम शुद्ध कराओ, कमाई करो, फिर सारनाम दूँगा। यह कहकर परमेश्वर जी ने उन सबका नाम शुद्ध किया।

परमेश्वर ने एक तीर से तीन शिकार किए। राजा को विश्वास नहीं था कि कबीर जी वास्तव में परमेश्वर हैं। वे उनको सिद्ध पुरूष मानते थे। यही दशा उस बहन ब्राह्मणी की थी, उन दोनों का भ्रम निवारण किया तथा अपनी महिमा से परिचित करवाया।

उपरोक्त प्रकरण से सिद्ध हुआ कि परमेश्वर जी नाम दीक्षा का क्रम तीन चरणों में पूरा करते थे। विश्व में कोई संत इस प्रकार दीक्षा को तीन चरणों में प्रदान नहीं करता। परमेश्वर कबीर जी के पश्चात् यह दास (रामपाल दास) तीन चरणों में दीक्षा का कार्य पूरा करता है।

बुद्धिमान को संकेत ही पर्याप्त होता है। यहाँ तो प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

कथा सारांश :- सार शब्द प्राप्ति के लिए साधक को विशेष ज्ञान होना आवश्यक है। परमात्मा और सतगुरू के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित होना अनिवार्य है। सर्व संसार-असार तथा दुःखालय मानना चाहिए। दीक्षा तीन चरणों में देने वाला वास्तव में सतगुरू है, वह तारणहार (कड़िहार गुरू=संसार से काड़ने यानि निकालने वाला गुरू) है। प्रसंग दीक्षा के विषय में चल रहा है :-

''दीक्षा बिना आरती-चौंका भी दी जाती है, वह भी समान लाभदायक है''

प्रमाण :- पवित्र कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' पृष्ठ 56 पर।

अन्य प्रमाण :- 1. संत दादू जी को जंगल में पान के पत्ते पर जल डालकर पिलाया। इस प्रकार प्रथम नाम दीक्षा बिना चौका-आरती के दी थी।

2. संत गरीबदास जी (गाँव-छुड़ानी, जिला-झज्जर, हरियाणा वाले) को जंगल में कंवारी गाय के दूध को पिलाकर बिना चौका-आरती के दी थी।

3. संत नानक देव जी को अपने करमण्डल से जल पिलाकर बिना आरती-चौका के दीक्षा दी थी।

4. संत घीसा दास जी (खेखड़ा वाले) को भी बिना चौका-आरती के दीक्षा दी थी।

जैसा कि परमेश्वर कबीर जी ने अनुराग सागर के पृष्ठ 140 पर स्पष्ट किया है कि हे धर्मदास! आपके वंश वाली छठी गद्दी के महंत तो काल के चलाए 12 पंथों में से जो टकसारी पंथ वाला (पाँचवां) है। वह भ्रमित करके अपने वाला नकली नाम तथा नकली आरती चौंका विधान बनाएगा और वह छठी पीढ़ी वाला तेरा वंशज भ्रमित होकर टकसारी पंथ वाला पान यानि नाम लेकर वही आरती चौंका किया करेगा। (जो वर्तमान में धर्मदास जी की वंश गद्दी वाले कर रहे हैं) इस प्रकार तेरे शेष वंश गद्दी वाले सत्य भक्ति न कर सकते और न अनुयाईयों को करा पाएंगे। इसलिए मेरा (परमेश्वर कबीर जी का) नाद (वचन परंपरा वाला अंश) का अंश आएगा जो शिष्य परंपरा से होगा। उससे मेरा यथार्थ कबीर पंथ उजागर (प्रकाशित=प्रसिद्ध) होगा। प्रमाण :- अनुराग सागर पृष्ठ 141

वाणी इस प्रकार है :- पृष्ठ 140 :-

नाद बिन्द जो पंथ चलावै। चूरामणि (चूड़ामणि) हंसन मुक्तावै।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को संतोष दिलाने के लिए उसके छोटे पुत्र चूड़ामणि (मुक्तामणि) जी को गुरू गद्दी का अधिकारी बनाया था। स्वयं उनको केवल प्रथम मंत्र से 5 नाम (मूल कमल से कण्ठ कमल तक) ही दिए थे। ये ही आगे अपने शिष्यों को देने का निर्देश दिया था। सार शब्द नहीं दिया था क्योंकि वह तो इस समय तक छुपाकर (गुप्त) रखना था जब तक 5505 (पाँच हजार पाँच सौ पाँच) वर्ष कलयुग के न बीत जाएं। (प्रमाण :—अध्याय ''कबीर बानी'' पृष्ठ 137 तथा अध्याय ''जीव धर्म बोध'' पृष्ठ 1937 पर)

यहाँ पर कहा है कि मेरा नाद (वचन का पुत्र यानि शिष्य) और तेरा बिन्द यानि शरीर का पुत्र चूड़ामणि जो पंथ चलाएगा और जीवों को मुक्त करेगा। {सेठ धर्मदास जी को सांत्वना देने के लिए परमेश्वर कह रहे हैं कि तेरा बिन्द वाला जो जीवों को मोक्ष प्रदान करेगा। वास्तविकता यह है कि जब तक सारशब्द प्राप्त नहीं होगा, तब तक काल हटा न जाने यानि सार शब्द बिन मुक्ति नहीं होती। वह सार शब्द तो चूड़ामणि के पास था ही नहीं।}

धर्मदास तव अंश अज्ञाना। चीन्ह नहीं वो अंश सहिदाना।।
जस कुछ आगे होईह भाई। सो चरित्र तोहि कहों बुझाई।।

छटे पीढ़ी बिन्द तव होई। भूलै वंश बिन्द तव सोई।।
टकसारी का ले है पाना। अस तव बिन्द होय अज्ञाना।।
चाल हमारा बंश तव झाड़े (छोड़ै)। टकसारी का मत सब मांडे।।
चौंका (आरती) वैसे करे बनाई। बहुत जीव चौरासी जाई।।
होवे दुर्मति वंश तुम्हारा। वचन (नाद)। बंश को रोके बटपारा (ठग)।।
आपा हंम (अहंकार) अधिक होय ताही। नाद पुत्र से झगरा कराही।।

भावार्थः- परमेश्वर कबीर जी ने स्पष्ट कर दिया है कि हे धर्मदास! तेरा वंश अज्ञानी सिद्ध होगा। वह काल के अंश (दूत) को समझ नहीं पाएगा।

जो कुछ तेरी गद्दी वालों की परंपरा में आगे होगा, वह बताता हूँ।

जो काल द्वारा बारह (12) पंथ चलाए जाएंगे, उनमें एक टकसारी पंथ (पाँचवां) होगा। तेरा छठी पीढ़ी वाला उसके द्वारा भ्रमित किया जाएगा जो तेरा बिन्द वाला गद्दीनशीन होगा। वह उस टकसारी पंथ वाली दीक्षा स्वयं भी लेगा तथा उसी पद्धति को जो टकसारी वाली चौंका आरती और नकली पाँच नाम जो सुमिरन बोध पष्ठ 22 पर लिखा है, प्रदान किया करेगा। वह कोई जाप मंत्र नहीं है। वह तो सारशब्द की यानि आदिनाम की महिमा बताई है जो इस प्रकार है :-

आदिनाम, अजर नाम, अमीनाम, पाताले सप्त सिंधु नाम।
आकाशे आदली निज नाम, ऐही नाम हंस को काम।।
खोले कूंची खोले कपाट। पाँजी (पाँच नाम वाला उपदेशी) चढ़े मूल के घाट।।
भ्रम भूत को बाँधो गोला, कहें कबीर प्रवान। पाँच नाम ले हंसा, सत्यलोक समान।।

''स्मरण दीक्षा मंत्र''

सत्य सुकत की रहनी रहै, अजर अमर गहै सत्य नाम।
कह कबीर मूल दीक्षा, सत्य शब्द (सार शब्द) परवान।।

इस वाणी में कबीर जी ने बताया है कि जो पाताल यानि नीचे के चक्रों के तथा परमेश्वर के कुल 7 नाम हैं। सिंधु का अर्थ सागर जैसे गहरे गूढ़ मंत्र हैं जो आदिनाम (सार शब्द) है, वह अजर है, अमर है, अमत जैसा लाभदायक है जो आकाश यानि ऊपर को सत्यलोक की ओर चलने का निज नाम है। पांजी (पाँच नाम की दीक्षा वाले शिष्य) मूल यानि सार शब्द की ओर बढ़ता है। उसको अध्यात्मिक लाभ मिलता है। इसीलिए परमेश्वर ने उस समय केवल पाँच नाम प्रारम्भ किए थे। सात नाम तो वर्तमान में कलयुग के पाँच हजार पाँच सौ पाँच वर्ष पूरे करने के समय देने थे। उस समय बताना अनिवार्य था, नहीं तो आज प्रमाण न मिलने से भ्रम रह जाता। पाँच नाम लेने वाला ही तो सत्यलोक जाने का अधिकारी होगा। फिर स्मरण का विशेष मंत्र जो पाँच (5) और सात (7) से अन्य मंत्र का है।

''स्मरण दीक्षा''

भावार्थ है कि नेक नीति से रहो। अजर-अमर जो सार शब्द है, वह तथा दो अक्षर वाला सत्यनाम प्राप्त करो। यह मूल दीक्षा है। केवल पाँच तथा सात नाम से मोक्ष नहीं है।

टकसारी पंथ वाले ने इसी चूड़ामणि वाले पंथ से दीक्षा लेकर यानि नाद वाला बनकर मूर्ख बनाया था कि कबीर साहब ने कहा है कि तेरे बिन्द वाले मेरे नाद वाले से दीक्षा लेकर ही पार होंगे। इससे भ्रमित होकर धर्मदास के छठी पीढ़ी वाले ने वास्तविक पाँच मंत्र (कमलों को खोलने

वाले) छोड़कर नकली नाम जो सुमिरन बोध के पृष्ठ 22 पर लिखे हैं, प्रारम्भ कर दिए जो वर्तमान में दामाखेड़ा गद्दी वाले महंत जी दीक्षा में देते हैं। वह गलत हैं। उसने टकसारी पंथ बनाया तथा उसने चुड़ामणि वाले पंथ से भिन्न होकर अपनी चतुराई से अन्य साधना प्रारम्भ की थी जो ऊपर बताई है। उसने मूल गद्दी वाले धर्मदास की छठी पीढ़ी वाले को भ्रमित किया कि हमने तो एक सत्यपुरूष की भक्ति करनी है। ये मूल कमल से लेकर कण्ठ कमल तक वाले देवी-देवताओं के नाम जाप नहीं करने, नहीं तो काल के जाल में ही रह जाएंगे। फिर कबीर सागर से उपरोक्त पूरे शब्द (कविता) को दीक्षा मंत्र बनाकर देने लगा। मनमानी आरती चौंका बना लिया। इस तर्क से प्रभावित होकर धर्मदास जी की छठी गद्दी वाले महंत जी ने टकसारी वाली दीक्षा स्वयं भी ले ली और शिष्यों को भी देने लगा जो वर्तमान में दामाखेड़ा गद्दी से प्रदान की जा रही है जो व्यर्थ है।

''अनुराग सागर'' अध्याय के पृष्ठ 140 की वाणियों का भावार्थ चल रहा है।

हे धर्मदास! तेरी छठी पीढ़ी वाला टकसारी पंथ वाली दीक्षा तथा आरती चौंका नकली स्वयं भी लेगा और आगे वही चलेगा। इस प्रकार तेरा बिन्द (वंश पुत्र प्रणाली) अज्ञानी हो जाएगा। हमारी सर्व साधना झाड़ै यानि छोड़ देगा। अपने आपको अधिक महान मानेगा, अहंकारी होगा जो मेरा नाद (शिष्य परंपरा में तेरहवां अंश आएगा, उस) के साथ झगड़ा करेगा। तेरा पूरा वंश वाले दुर्मति को प्राप्त होकर वे बटपार (ठग=धोखेबाज) मेरे तेरहवें वचन वंश (नाद शिष्य) वाले मार्ग में बाधा उत्पन्न करेंगे।

अध्याय ''अनुराग सागर'' के पृष्ठ 140 से वाणी सँख्या 16 :-

धर्मदास तुम चेतहु भाई। बचन वंश कहं देहु बुझाई।।1

कबीर जी ने कहा कि हे धर्मदास! तुम कुछ सावधानी बरतो। अपने वंश के व्यक्तियों को समझा दो कि सतर्क रहें।

हे धर्मदास! जब काल ऐसा झपटा यानि झटका मारेगा तो मैं (कबीर जी) सहायता करूँगा। अन्य विधि से अपना सत्य कबीर भक्ति विधि प्रारम्भ करूँगा।

नाद हंस (शिष्य परंपरा का आत्मा) तबहि प्रकटावैं। भ्रमत जग भक्ति दृढ़ावैं।।2
नाद पुत्र सो अंश हमारा। तिनतै होय पंथ उजियारा।।3
बचन वंश नाद संग चेतै। मेटैं काल घात सब जेते।।4

{बचन वंश का अर्थ धर्मदास जी के वंशजों से है क्योंकि श्री चूड़ामणि जी को कबीर परमेश्वर जी ने दीक्षा दी थी। इसलिए बचन वंश कहे गए हैं। बाद में अपनी संतान को उत्तराधिकार बनाने लगे। वे बिन्द के कहे गए हैं। नाद से स्पष्ट है कि शिष्य परंपरा वाले।}

अध्याय ''अनुराग सागर'' पृष्ठ 141 से :-

शब्द की चास नाद कहँ होई। बिन्द तुम्हारा जाय बिगोई।।5
बिन्द से होय न नाम उजागर। परिख देख धर्मनि नागर।।6
चारहूँ युग देख हूँ समवादा। पंथ उजागर कीन्हो नादा।।7
धर्मनि नाद पुत्र तुम मोरा। ततें दीन्हा मुक्ति का डोरा।।8

भावार्थ :- वाणी नं. 8 में परमेश्वर कबीर जी ने स्पष्ट भी कर दिया है कि नाद किसे कहा है? हे धर्मनि! तुम मेरे नाद पुत्र अर्थात् शिष्य हो और जो आपके शरीर से उत्पन्न हो, वे आपके बिन्द परंपरा है।

वाणी नं. 2 :- जब-जब काल मेरे सत्यभक्ति मार्ग को भ्रष्ट करेगा। तब मैं अपना नाद अंश

यानि शिष्य रूपी पुत्र प्रकट करूँगा जो यथार्थ भक्ति विधि तथा यथार्थ अध्यात्मिक ज्ञान से भ्रमित समाज को सत्य भक्ति समझाएगा, सत्य मार्ग को दढ़ करेगा। जो मेरा नाद (वचन वाला शिष्य) अंश आएगा, उससे मेरा यथार्थ कबीर पंथ प्रसिद्ध होगा, (उजागर यानि प्रकाश में आवैगा।) बिन्द वंश (जो धर्मदास तेरे वंशज) हैं, उनका कल्याण भी नाद (मेरे शिष्य परंपरा वाले) से होगा।

वाणी नं. 5 :- शब्द यानि सत्य मंत्र नाम की चास यानि शक्ति नाद (शिष्य परंपरा वाले) के पास होगी। यदि मेरे नाद वाले से दीक्षा नहीं लेंगे तो तुम्हारा बिन्द यानि वंश परंपरा महंत गद्दी वाला बर्बाद हो जाएंगे।

वाणी नं. 6 :- बिन्द से कभी भी नाद यानि शिष्य प्रसिद्ध नहीं हुआ।

भावार्थ है कि महंत गद्दी वाले तो अपनी गद्दी की सुरक्षा में ही उलझे रहते हैं। अपने स्वार्थवश मनमुखी मर्यादा बनाकर बाँधे रखते हैं।

वाणी नं. 7 :- चारों युगों का इतिहास उठाकर देख ले। संवाद यानि चर्चा करके विचार कर। प्रत्येक युग में नाद से ही पंथ का प्रचार व प्रसिद्धि हुई है।

प्रमाण :- 1. सत्ययुग में कबीर जी सत सुकत नाम से प्रकट हुए थे। उस समय सहते जी को शिष्य बनाया था। उससे प्रसिद्धि हुई है।

2. त्रेता में बंके जी को शिष्य बनाया था, उससे प्रसिद्धि हुई थी।

3. द्वापर में चतुर्भुज जी को शिष्य बनाया था, उससे सत्यज्ञान प्रचार हुआ था।

4. कलयुग में धर्मदास जी को शिष्य बनाया था जिनके कारण ही वर्तमान तक कबीर पंथ की प्रसिद्धि तथा विस्तार हुआ है।

अनुराग सागर पष्ठ 140 पर वाणी है :-

जब–जब काल झपटा लाई। तबै–तबै हम होये सहाई।।

भावार्थ है कि काल ने धर्मदास की छठी पीढ़ी वाले पर झपट्टा मारा तो परमेश्वर जी ने अपनी प्यारी आत्मा संत गरीबदास जी (गाँव-छुड़ानी, जिला-झज्जर, प्रान्त-हरियाणा) को विक्रमी संवत् 1784 (सन् 1727) में गाँव के जंगल में मिले थे। धर्मदास जी की तरह सतलोक लेकर गए थे, वापिस छोड़ा था। उन्होंने भी परमेश्वर कबीर जी की महिमा का अनमोल प्रचार किया। महिमा का ग्रन्थ बनाया, परंतु उस पंथ में भी काल झपटा मार चुका है। सब राम-कष्ण के पुजारी हैं, पाठ संत गरीबदास जी की वाणी का करते हैं। एक मेरे पूज्य गुरूदेव स्वामी रामदेवानंद जी ही कबीर जी के यथार्थ ज्ञान से परिचित थे। उसके पश्चात् मुझ दास (रामपाल दास) पर दया करके यथार्थ ज्ञान दिया है। यथार्थ भक्ति विधि सत्य भक्ति मंत्र तथा यथार्थ सम्पूर्ण अध्यात्मिक ज्ञान मेरे को प्रदान किया। अब विश्व सत्य भक्ति करेगा। सत्ययुग जैसा वातावरण होगा। यदि धर्मदास जी के बिन्द वाले महंत तथा उनके शिष्य जो महंतों का वचन अंश यानि शिष्य हैं, वे मेरे पास (रामपाल दास) से दीक्षा लेकर गुरू मर्यादा में रहकर भक्ति करेंगे तो वे भी पार हो जाएंगे। कबीर परमेश्वर जी ने **अनुराग सागर पष्ठ 141 पर कहा है :-**

कहाँ निर्गुण कहाँ सरगुण भाई। नाद बिना नहीं चलै पंथाई।।9
यह विधि तेरे ब्यालिस तारैं। जब–जब गिरै फेर संभारैं।।10
नाद का वचन जो बिन्द न मानै। देखत जीव काल धर तानै।।11
कहाँ नाद कहाँ बिन्द रे भाई। नाम भक्ति बिनु लोक न जाई।।12

भावार्थ :- वाणी नं. 9-10 :- हे धर्मदास! यदि तेरे बिन्द वाले मेरे नाद वाले से दीक्षा ले लेंगे

तो उनका भी कल्याण हो जाएगा। इस विधि से तेरी बयालीस पीढ़ी को पार करूँगा।

वाणी नं. 11 :- नाद की बात को यदि तेरा बिन्द नहीं मानेगा तो देखते-देखते उसको काल सतावैगा।

वाणी नं. 12 :- इसमें तो स्पष्ट कर दिया है कि क्या बिन्द और क्या नाद है, यदि सच्चा नाम लेकर भक्ति नहीं करेंगे तो कोई भी पार नहीं हो पाएगा।

❖ प्रसंग दीक्षा की विधि का चल रहा है। (आप जी को याद दिला दूँ कि कबीर सागर के संशोधनकर्ता स्वामी युगलानंद जी ने भी स्पष्ट कर रखा है कि समय-समय पर काल के भेजे दूतों ने कबीर पंथ के ग्रन्थों की दुर्दशा कर रखी है।)

अध्याय ''ज्ञान प्रकाश बोध'' पृष्ठ 56 :-

जिस समय परमेश्वर कबीर जी अंतर्ध्यान होकर पाँचवीं बार धर्मदास जी को सात दिन पश्चात् मिले तो पूछा कि प्रभु! इस दौरान कहाँ रहे?

दोहाः– धर्मदास कह नाई सिर, सुन प्रभु अगम अपार।
सात दिवस कहाँ रहे, कौन दिश पग डार।।

उत्तरः- सोरठाः–जौन दिश हम गौन कियो, धर्मनि सुनु चित लाय।
तहाँ पुनि शब्द प्रकाशेऊ, कालिंजर पहुँचे जाय।।

प्रश्न :- धर्मदास जी ने पूछा कि हे प्रभु! वहाँ पर आरती करके नारियल तोड़कर कितने जीवों को शब्द देकर काल से मुक्त करवाया?

उत्तर :- परमेश्वर कबीर जी ने आरती आदि करके पान परवाना नहीं दिया।

केवल वचनबद्ध करके यानि नाम दीक्षा देकर, साखी, रमैणी तथा शब्द यानि नाम दिया था। उनको वचन का ठिकाना अर्थात् नाम के जाप से जो स्थान प्राप्त होता है, वह सत्यलोक उनको बता आया हूँ। वहाँ बहुत जीवों ने नाम लिया।

धर्मनि सुनहु ताहि सहिदाना। वाको नहीं दीना पान प्रवाना।।
आरती चौंका तहां न कीन्हा। नहीं तहां नारियर मोरो प्रवीना।।
वचन बंध जीवन कहं कियेऊ। साखी शब्द रमैणी दियेऊ।।
कहि आयेऊ तहं बचन ठिकाना। धर्मदास न देयऊ पान प्रवाना।।

अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' पृष्ठ 57 पर वाणी :-

जम्बूदीप (भारत) कलि के कड़िहारा। धर्मनि बहु जीव होवै पारा।।
धर्मनि वहाँ जीव पहुँचे आयी। देय दान उन मोर स्तुति लाई।।
शब्द मानि पुनि मस्तक नाया। पुरूष दर्श की बात जनाया।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने स्पष्ट किया है कि जो आरती चौंका काल द्वारा भ्रमित दामाखेड़ा वाले धर्मदास जी को बिन्द वाले महंत या अन्य उनके वचन वाले शिष्य करते हैं, वह हमारी परंपरा नहीं है। कबीर सागर में चौंका आरती का विधान स्वार्थी महंतों ने जोड़ रखा है।

प्रमाण :- 1. आदरणीय संत गरीबदास जी को परमेश्वर कबीर जी गाँव-छुड़ानी के जंगल में मिले थे। वहीं पर कंवारी बछिया का दूध पीया था तथा उसी दूध से अमृत पान करवाकर वृक्ष के नीचे दीक्षा दी थी।

2. इसी प्रकार संत दादू दास जी को जंगल में मिले थे। उनको अपने करमण्डल (लोटे) से जल पान के पत्ते पर रखकर पिलाया था तथा दीक्षा दी थी, दोनों को पार किया।

3. संत घीसादास जी को गाँव-खेखड़ा जिला-बागपत उत्तर प्रदेश में मिले थे। उनको भी अपने लोटे से जल पिलाकर जंगल में दीक्षा दी थी। उनका भी कल्याण किया। कोई आरती-चौंका करके नारियल नहीं फोड़ा।

4. संत नानक देव साहेब को कबीर परमेश्वर बेई नदी पर सुल्तानपुर में मिले। अपने करमण्डल से जल पिलाकर प्रथम मंत्र देकर सत्यलोक (सच्चखण्ड) लेकर गए। कोई आरती-चौंका नहीं किया।

सिद्ध हुआ कि दीक्षा देने के लिए आरती-चौंका करना व्यर्थ है।

परमेश्वर कबीर जी ने ''अनुराग सागर'' के पष्ठ 140 पर स्पष्ट कर ही दिया है कि यह आरती चौंका जो धर्मदास के बिन्द यानि मंहत परम्परा वाले या उनकी शाखाओं वाले कर रहे हैं। यह काल द्वारा चलाए गये बारह पंथों में पाँचवां (5वां) पंथ टकसारी है, उस वाला चल रहा है जो व्यर्थ है। यथार्थ भक्ति विधि तथा दीक्षा कबीर जी ने अन्य महापुरूषों को भी दी है, कोई आरती चौका नहीं किया। जैसा भी समय या उसी अनुसार दीक्षा देकर जीव का उद्धार किया।

यही सामान्य विधि से दीक्षा यह दास (रामपाल दास) दे रहा है, उपदेशी को तुरन्त लाभ मिलता है और मोक्ष भी अवश्य होगा।

प्रश्न :- कौन से मन्त्र हैं जिनसे मोक्ष सम्भव है?

उत्तर :- जैसे रोग से छुटकारा पाने के लिए औषधि विशेष होती है। टी.बी. (क्षयरोग) की एक ही दवाई है। उसका विधिवत् सेवन करने से रोग समाप्त हो जाता है। मनुष्य स्वस्थ हो जाता है। यदि टी.बी. के रोगी को अन्य औषधि सेवन कराई जाऐं तो रोगी स्वस्थ नहीं हो सकता। टी.बी. के रोगी को वही औषधि सेवन करानी पड़ेगी जो उसके लिए वैज्ञानिकों ने बनाई है।

कबीर परमेश्वर जी ने हम प्राणियों को बताया है कि आप सबको जन्म-मरण का दीर्घ रोग लगा है। उसकी औषधि बताने तथा इस रोग की जानकारी देने मैं (कबीर परमेश्वर) अपने निज स्थान सत्यलोक से चलकर आया हूँ।

शब्द

जग सारा रोगिया रे जिन सतगुरू भेद ना जान्या जग सारा रोगियारे।।टेक।।
जन्म मरण का रोग लगा है, तष्णा बढ़ रही खाँसी।
आवा गमन की डोर गले में, पड़ी काल की फांसी।।1
देखा देखी गुरू शिष्य बन गए, किया ना तत्त्व विचारा।
गुरू शिष्य दोनों के सिर पर, काल ठोकै पंजारा।।2
साच्चा सतगुरू कोए ना पूजै, झूठै जग पतियासी।
अन्धे की बांह गही अन्धे ने, मार्ग कौन बतासी।।3
ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर रोगी, आवा गवन न जावै।
ज्योति स्वरूपी मरे निरंजन, बिन सतगुरू कौन बचावै।।4
सार शब्द सरजीवन बूटी, घिस–घिस अंग लाए।
कह कबीर तुम सतकर मानौं, जन्म–मरण मिट जाए।।5

❖ श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 4 श्लोक 5 तथा 9, गीता अध्याय 2 श्लोक 12, गीता अध्याय 10 श्लोक 2 में गीता ज्ञान दाता काल ब्रह्म ने बताया है जो श्री कष्ण जी के शरीर में प्रवेश करके बोल रहा था। कहा कि अर्जुन! तेरे और मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं। उन सबको तू नहीं जानता,

मैं जानता हूँ। तू और मैं पहले भी जन्में थे, आगे भी जन्मते रहेंगे। मेरी उत्पत्ति को न तो ऋषिजन जानते हैं, न देवता जानते हैं क्योंकि ये सब मेरे से उत्पन्न हुए हैं।

यह तो पवित्र ग्रन्थ गीता ने स्पष्ट कर दिया कि ज्योति निरंजन काल (क्षर पुरूष) नाशवान है, जन्म-मरण का रोगी है।

❖ श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी के भी जन्म-मत्यु होते हैं :-

प्रमाण :- श्री देवी पुराण (गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित सचित्र मोटा टाईप केवल हिन्दी) के तीसरे स्कन्द में पष्ठ 123 पर लिखा है :-

श्री विष्णु जी ने अपनी माता दुर्गा जी से कहा कि ''मैं, ब्रह्मा तथा शंकर तो नाशवान हैं, हमारा तो अविर्भाव (जन्म) तथा तीरोभाव (मत्यु) होता है।

❖ स्पष्ट हुआ कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर भी जन्म-मरण के रोगी हैं। आवा (जन्म) गवन (संसार से जाना यानि मत्यु) समाप्त नहीं है। ज्योति स्वरूप निरंजन यानि काल ब्रह्म गीता ज्ञान दाता भी मरेगा, बिन सतगुरू कौन बचावै अर्थात् पूर्ण गुरू ही जन्म-मरण के रोग से छुटकारा दिला सकता है। जिसके पास जन्म-मरण रोग को समाप्त करने की संजीवनी औषधि सार शब्द है। उसका जाप करने से मोक्ष प्राप्त होता है। वह औषधि यानि साधना कौन-सी है जिससे जन्म-मत्यु का रोग समाप्त होता है, यह जाँच करनी है।

❑ औषधि की पहचान दो प्रकार से होती है।

1. डाक्टर स्वयं बताए कि औषधि का यह नाम है, उस में ये-ये औषधि गुण यानि Salt (सॉल्ट) हैं।

2. दूसरा वह रोगी बताए जिसका टी.बी. का रोग किस औषधि से ठीक हुआ था।

प्रथम प्रकार की जाँच :- परमेश्वर कबीर जी का विधान है कि वे स्वयं सतगुरू रूप में प्रकट होकर यथार्थ भक्ति साधना के नाम मन्त्र स्वयं बताते और वही मन्त्र आदरणीय धर्मदास जी, आदरणीय संत गरीबदास जी (छुड़ानी वाले) आदरणीय संत नानक देव जी, आदरणीय संत घीसा दास साहेब जी को दिए। उन्होंने अपनी अमत वाणी में लिखा है कि इन-इन मन्त्रों से मोक्ष हुआ।

1. संत धर्मदास जी को नाम दीक्षा में जो नाम दीक्षा मन्त्र दिए थे। वे कबीर सागर के ''ज्ञान प्रकाश बोध'' पष्ठ 62 पर लिखे हैं :-

सत्यनाम सतगुरू तत् भाखा, सार शब्द ग्रंथ कथि गुप्त ही राखा।।
सत्य शब्द गुरू गम पहिचाना। विन जिभ्या करू अमत पाना।।
ओहं (ॐ)–सोहं जानों बीरू। धर्मदास से कहो कबीरू।।
धरीहों गोय कहियो जिन काही। नाद सुशील लखैहो ताही।।
सुमिरण दया सेवा चित धरई। सत्यनाम गहि हंसा तीरही।।
पष्ठ 62 = सत्यनाम सुमिरण करै सतगुरू पद निज ध्यान।
परमात्म पूजा जीव दया लहै सो मुक्ति धाम।।

2. संत गरीबदास जी (गाँव=छुड़ानी वाले) को भी यही सत्यनाम दिया था। (सतनाम=सत्यनाम तो गोली यानि कैप्सूल का नाम है, उसमें सॉल्ट (Salt) ओम्-सोहं है।)

संत गरीबदास जी को भी सतगुरू कबीर परमेश्वर जी मिले थे। अपनी वाणी में लिखा है :-

गरीब, अलल पंख अनुराग है, सुन मण्डल रह थीर। दास गरीब उधारिया, सतगुरू मिले कबीर।।

जो नाम मन्त्र की साधना (औषधि) संत गरीबदास को मिली। वह अपनी अमतवाणी में लिखी है :-

''राम नाम जप कर थिर (स्थिर) होई, ओम्–सोहं मन्त्र दोई।

3. संत नानक जी को भी परमेश्वर कबीर जी सतगुरू रूप में मिले थे। उनको भी जो नाम मन्त्र की साधना (औषधि-उपचार) बताई। वह अपनी अमृत वाणी में लिखी है तथा पवित्र पुस्तक ''भाई बाले वाली जन्म-साखी गुरू नानक देव की'' में अध्याय ''समन्दर की साखी'' में मन्त्रों के प्रत्यक्ष नाम लिए हैं जो सतनाम में दो अक्षर हैं। संत नानक देव जी ने अपनी अमृत वाणी में कहा है कि :-

जे तूँ पढ़िया पंडित बिन दोय अखर बिन दोय नावाँ। पर्णवत् नानक एक लंघाए जेकर सच्च समावाँ।।

भाई बाले वाली जन्म साखी में ''समन्दर की साखी'' अध्याय में प्रकरण इस प्रकार है :-

❖ एक समय भाई बाला तथा मर्दाना को साथ लेकर संत नानक देव जी श्रीलंका के लिए चले तो समन्दर के किनारे प्रकट हो गए। बाला तथा मर्दाना से कहा कि तुम दोनों ''वाहे गुरू-वाहे गुरू'' नाम जाप करते हुए मेरे पीछे-पीछे आओ। समन्दर के जल के ऊपर पृथ्वी की तरह आगे-आगे श्री नानक देव जी ओम्-सोहं का दो अक्षर के सतनाम का जाप करते हुए चल रहे थे। उनके पीछे-पीछे वाहे गुरू-वाहे गुरू मन्त्र का जाप करते हुए दोनों शिष्य समुद्र के जल पर ऐसे चल रहे थे जैसे पृथ्वी के ऊपर चलते हैं। कुछ दूर जाने के पश्चात् मर्दाना जी के मन में आया कि गुरू जी तो ओम्-सोहं का मन्त्र जाप कर रहें हैं, मैं भी यही जाप करता हूँ। मर्दाना भी ओम्-सोहं का जाप करने लगा जिस कारण से वह समुद्र में गोते खाने लगा। संत नानक जी ने कहा मर्दाना तू वही जाप कर जो तेरे को कहा। गुरू की करनी की ओर नहीं देखना चाहिए, गुरू जी की आज्ञा का पालन करना चाहिए। मर्दाना फिर वाहे गुरू-वाहे गुरू का जाप करने लगा तो उसी प्रकार फिर जल के ऊपर थल की तरह चलने लगा।

शंका समाधान :- परमेश्वर कबीर जी ने उन सर्व महापुरूषों को जिन-जिनको शिष्य बनाया था, मना किया था कि सत्यनाम तथा सारशब्द का जाप आप स्वयं कर सकते हो, अन्य किसी को नहीं बताना। इसको तब तक छुपाना जब तक कलयुग पाँच हजार पाँच सौ पाँच (5505) वर्ष न बीत जाए। इसलिए किसी भी सिक्ख को यह दो अक्षर का मन्त्र सतनाम नहीं दिया। वर्तमान में (सन् 1997 से) यह मन्त्र देने का परमेश्वर कबीर जी का पुनः आदेश मुझ दास (रामपाल दास) को 1997 में दिया है।

श्री नानक जी केवल पाँच नाम (मूल कमल से कण्ठ कमल तक वाले मन्त्र) देते थे। साथ में वाहे गुरू-वाहे गुरू का जाप भी देते थे। उन पाँच नामों का प्रमाण पुस्तक ''तीइये ताप की कथा'' में गुरू अमर दास जी ने ये पाँचों नाम मन्त्र लिखे हैं जिनके जाप से रोग भी नष्ट हो जाता है। (वे मन्त्र हैं हरियं, श्रीं, कलिं, ओं, सों) यह मैं (रामपाल दास) प्रथम चरण की दीक्षा में देता हूँ। दूसरे चरण में सतनाम तथा तीसरे चरण में ''सारशब्द'' देता हूँ। {इसी प्रकार परमेश्वर कबीर जी ने राजा बीर सिहं बघेल (काशी नरेश) को तीन बार में दीक्षा पूर्ण की थी। प्रमाण :- कबीर सागर के अध्याय ''बीर सिहं बोध'' में।}

❖ सोई गुरू पूरा कहावै जो दो अखर का भेद बतावै।

ऊपर दो अक्षर के सतनाम (सत्यनाम) के विषय में लिख दिया है, परंतु सारशब्द के विषय में नहीं बताऊँगा। काल के दूत सार शब्द जानकर स्वयंभू गुरू बन कर भोले जीवों को काल के जाल में रख लेंगे क्योंकि यह मन्त्र तथा उपरोक्त प्रथम दीक्षा मन्त्र तथा दूसरी दीक्षा मन्त्र सत्यनाम वाले तथा सार शब्द मुझ दास (रामपाल दास) के अतिरिक्त कलयुग में कोई दीक्षा में ये मन्त्र देने का अधिकारी नहीं है। अधिकारी के बिना ये मन्त्र लाभ नहीं देते।

उदाहरण :- जैसे विदेश जाने का पासपोर्ट बनवाया जाता है, यदि बनाने वाला अधिकारी नहीं है तो वह पासपोर्ट किसी काम नहीं आता, उल्टा दोषी भी होता है। पासपोर्ट की जाँच हवाई अड्डे (Airport) पर होती है। इसी प्रकार अधिकारी संत से लिए दीक्षा मन्त्रों तथा अधिकारी गुरू की जाँच

त्रिकुटी पर होती है। तब तक साधक का सब कुछ लुट चुका होगा।

❖ संत घीसा दास साहेब जी ने कहा है :-

सतनाम :- ''ओम् सोहं जपले भाई, रामनाम की यही कमाई''

उपरोक्त जाँच से पता चलता है कि जन्म-मरण के रोग को समाप्त करने की साधना (उपचार) कौन से मन्त्र जाप से होती है जिससे जन्म-मरण समाप्त हो।

पवित्र कबीर सागर के ''कबीर वाणी'' अध्याय पृष्ठ 137 तथा ''जीव धर्म बोध'' पृष्ठ 1937 पर कबीर परमेश्वर जी ने संत श्री धर्मदास जी को तीनों समय की दीक्षा देकर कहा था :-

धर्मदास मेरी लाख दुहाई, सारशब्द कहीं बाहर न जाई।
सारशब्द बाहर जो पड़ही, बिचली पीढ़ी हंस न तिरही।।

यह पृष्ठ 1937 ''जीव धर्म बोध'' में लिखा है:-

धर्मदास मेरी लाख दोहाई, मूल (सार) शब्द बाहर न जाई।
पवित्र ज्ञान तुम जग में भाखो, मूल ज्ञान गोई (गुप्त) तुम राखो।।
मूल ज्ञान तब तक छुपाई, जब तक द्वादश पंथ न मिट जाई।।

यह ''कबीर वाणी'' पृष्ठ 137 पर लिखा है।

इस प्रकार साधना करने से पूर्ण मोक्ष होगा जो श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में गीता ज्ञान दाता ने पूर्ण मोक्ष प्राप्ति के लिए अपने से अन्य परमेश्वर की शरण में जाने को कहा है कि हे अर्जुन! सर्व भाव से तू उस परमेश्वर की शरण में जा। उस परमेश्वर की कृपा से ही तू परम शान्ति को तथा सनातन परमधाम को प्राप्त होगा।

गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में भी गीता ज्ञान दाता ने अपने से अन्य परमेश्वर की भक्ति करने और सनातन पद को प्राप्त करने को कहा है कि :-

❖ तत्त्वज्ञान की प्राप्ति के पश्चात् परमेश्वर के उस परम पद (सनातन परमधाम) की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक लौटकर संसार में कभी नहीं आते। उस परमेश्वर की भक्ति करो जिसने संसार रूपी वृक्ष की रचना की है। (गीता अध्याय 15 श्लोक 4)

भावार्थ :- पूर्ण मोक्ष उसी को कहते हैं जिसको प्राप्त करके साधक पुनः संसार में जन्म धारण नहीं करता। परमशान्ति वही है, कभी जन्म-मरण के चक्र में न गिरे, सदा सुख सागर स्थान सत्यलोक में रहे, वह पूर्ण परम गति कही जाती है।

ऊपर स्पष्ट हुआ कि जन्म-मरण का रोग किन मन्त्रों की साधना से समाप्त होता है।

पवित्र कबीर सागर में ''ज्ञान सागर'' प्रथम अध्याय है। इसके 106 पृष्ठ हैं। वास्तव में सर्व अध्याय भिन्न पुस्तक रूप में हैं। कबीर सागर में 40 पुस्तकों को इकट्ठा जिल्द किया है। प्रिन्ट कराने से पहले यह एक ही कबीर सागर था जो श्री धर्मदास जी द्वारा हाथ से लिखा था। उसके पश्चात् समय अनुसार अन्य कबीर जी के अनुयाईयों ने कई कॉपी हाथ से लिखी थी। जिस कारण से प्रत्येक ने भिन्न-भिन्न अध्यायों को पुस्तक रूप बना लिया जो उठाने-पढ़ने में सुविधाजनक थे। उसके पश्चात् इन सबको प्रिन्ट करते समय एक पवित्र कबीर सागर बना दिया गया और अपनी बुद्धि अनुसार हाथ से लिखते समय यानि कॉपी करते समय वाणी काट दी, कुछ मिला दी। जिस कारण से परमेश्वर कबीर जी ने वही यथार्थ ज्ञान अपनी प्यारी आत्मा संत गरीबदास (गाँव-छुड़ानी वाले) को प्रदान किया है। उनको अपने सत्यलोक में लेकर गए जैसे श्री धर्मदास जी को, श्री नानक जी को लेकर गए थे। संत गरीबदास जी ने आँखों देखा परमेश्वर का परिचय अपनी अमृतवाणी में लिखा है जो कबीर सागर से भी अधिक

वाणी हैं और सत्य तथा बिना परिवर्तन के हैं।

❖ परमेश्वर कबीर जी तो अन्तर्यामी हैं। उनको पता था कि यदि इस ग्रन्थ में छेड़छाड़ कर दी गई तो हमारा ज्ञान, हमारी महिमा प्रमाणित नहीं हो पाएगी। संत गरीबदास के पंथ में एक दयाल दास नाम के साधु थे। उन्होंने गरीबदास पंथ का बहुत प्रचार किया। वह भ्रमण करके प्रचार करता था। उसके साथ लगभग 500 (पाँच सौ) साधुओं की मण्डली (समूह) रहती थी। संत गरीबदास जी के हस्तलिखित ग्रन्थ को साथ रखते थे। उस समय तक संत गरीबदास जी के ग्रन्थ की कई कॉपी की जा चुकी थी। जब मण्डली एक शहर से दूसरे शहर में जाती थी तो संत गरीबदास जी के ग्रन्थ को एक संत सिर पर रखकर चलता था। उस ग्रन्थ की एक कॉपी किसी गिरी पंथ के साधु के हाथ लगी। उसने उसको पढ़ा तो पाया कि कबीर जुलाहे को सृष्टि का सृजनहार लिखा है :-

तीनों देवता काल है, ब्रह्मा, विष्णु, महेश। भूले चुके समझियो, सब काहु आदेश।।

ब्रह्मा, विष्णु, महेशा, माया (देवी दुर्गा) और धर्मराया (ज्योति निरंजन) कहिए।

इन पाँचों मिल प्रपंच बनाया, वाणी हमरी लहिए।।

चलसी (नष्ट हो जाऐंगे) ब्रह्मा, विष्णु, महेश, चलसी नारद सारद शेषा।

इक्कीस ब्रह्मण्ड चलेंगे भाई, तब तुम रहोगे किसकी शरणाई।।

गिरी पंथ वाले भगवान शंकर जी के उपासक होते हैं। उन्हीं को समर्थ प्रभु मानते हैं। जिस कारण से उस गिरी ने स्वामी दयाल दास जी से बहुत विवाद किया तथा उनका बहुत विरोध किया। एक दिन दयाल दास जी के मन में आया कि इस प्रकार की वाणियों को निकाल देता हूँ। उसने यह करने की ठान ली। सर्व तैयारी कर ली थी। उसी समय दयाल दास जी को अधरंग मार गया, शरीर का दांया भाग कार्य करना छोड़ गया। संत गरीबदास जी दिखाई दिए। कहा कि महात्मा जी आपने हमारे ज्ञान को ठीक से नहीं समझा। हमने यह भी लिखा है ''ब्रह्मा, विष्णु, शम्भु शेषा, तीनों देव दयाल हमेशा''। हमने स्थान व स्थिति अनुसार प्रत्येक देवता की स्थिति बताई है। जहाँ उनको काल इसलिए कहा कि वे काल के सर्व राज्य को चला रहे हैं। काल के खाने के लिए जीवों की उत्पत्ति, पालन तथा संहार कर रहे हैं। इसलिए इनको काल कहा है। वास्तव में ये काल नहीं हैं, बहुत विनम्र आत्मा के हैं। परन्तु इनका कार्य ऐसा है, वैसे ये देव रूप में बहुत दयालु हैं। किसी को नाजायज परेशान नहीं करते। अपने उपासकों की अपने सामर्थ्य अनुसार पूरी सहायता करते हैं, परंतु जन्म-मरण से न स्वयं मुक्त हैं, न इनके उपासक जन्म-मरण से मुक्त हो सके हैं। मेरी वाणी परमेश्वर कबीर जी की बख्शीश है। उनकी धरोहर है, इसमें किसी ने एक भी अक्षर काटा या जोड़ा तो उसको क्षमा का स्थान नहीं हैं। इतना कहकर अन्तर्ध्यान हो गए। उसके पश्चात् पूरे गरीबदास जी के पंथ में यह बात फैल गई। किसी ने उस वाणी में फेर-बदल नहीं किया। उसके पश्चात् वह ग्रन्थ विशेष जिज्ञासु तथा उपदेशी श्रद्धालु को देने लगे। गाँव छुड़ानी में स्वामी दयाल दास जी के नाम से एक आश्रम है जो गरीबदासीय साधु भक्त राम जी ने बनवा रखा है। पहले दयाल दास जी ने वहाँ एक मकान बनाया था। वे संत गरीबदास जी की जन्म स्थली लीला स्थली तथा परमेश्वर कबीर जी के प्रकट होने से पवित्र धाम छुड़ानी में प्रत्येक वर्ष सतसंग में आते थे। वहाँ सतसंग उस दिन किया जाता है जिस तिथि को संत गरीबदास जी को परमेश्वर कबीर जी मिले थे। फाल्गुन मास की सुदी द्वादशी को संत गरीबदास जी की वाणी का तीसरे दिन भोग लगता है। तीन दिन तक पाठ चलता है। फाल्गुन विक्रमी संवत् 1784 (सन् 1727) को फाल्गुन (फागन) मास की सुदी द्वादशी (चान्दनी दुवास) को परमेश्वर कबीर जी संत गरीबदास जी को मिले थे। उस समय संत गरीबदास जी की आयु 10 वर्ष थी। इस प्रकार संत गरीबदास जी की

वाणी पूर्ण रूप से सुरक्षित है। उसी के आधार से यह दास (रामपाल दास) सर्व ज्ञान प्रचार कर रहा है। सर्व वेद, गीता, पुराण, कुरान, बाईबल जैसे पवित्र ग्रन्थों के गूढ़ रहस्यों को परमेश्वर कबीर जी की कृपा से समझा है। पवित्र वाणी संत गरीबदास जी की तथा उसी से कबीर सागर की मिलावट जानी तथा कांट-छांट को समझा तथा पवित्र कबीर सागर की अमृतवाणी जो स्वयं परमेश्वर कबीर जी ने अपने मुख कमल से बोली थी तथा धर्मदास जी ने अपनी आँखों से परमात्मा तथा परमात्मा के सत्यलोक को देखकर अपनी साक्षी देकर वाणी की सत्यता दृढ़ की है। इसी प्रकार संत गरीबदास जी ने भी परमेश्वर कबीर जी की स्थिति आँखों देखी बताई है।

गरीब, अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड का, एक रति नहीं भार।
सतगुरू पुरूष कबीर हैं, कुल के सिरजनहार।।
गरीब, हम सुलतानी नानक तारे, दादू को उपदेश दिया।
जाति जुलाहा भेद न पाया, काशी मांहे कबीर हुआ।।
गरीब, गुरू ज्ञान अडोल अबल है, सतगुरू शब्द सेरी पिछानी।
दास गरीब कबीर सतगुरू मिले, आनस्थान रोप्या छुडानी।।
गरीब, अजब नगर में (सत्यलोक में) ले गए हमको सतगुरू आन।
झिलके बिम्ब अगाध गति, सुते चादर तान।।

इसी प्रकार संत नानक जी को परमेश्वर कबीर जी अपने साथ लेकर सच्चखण्ड यानि सत्यलोक लेकर गए थे। तीन दिन ऊपर के सर्व लोक दिखाकर अपनी महिमा सामर्थ्य से परिचित करके तीसरे दिन वापिस छोड़ा था। उन्होंने भी परमेश्वर कबीर जी की आँखों देखी महिमा की गवाही दी है।

फाई सुरत मलुकि वेश ऐ ठगवाड़ा ठगी देश
खरा सियाणा बहुते भार धाणक रूप रहा करतार (गुरू ग्रन्थ पृष्ठ 24)
यक अर्ज गुफतम पेश तो दर कून करतार,
हक्का कबीर करीम तू बे एब परवरदिगार।।(गुरू ग्रन्थ पृष्ठ 721)
नीच जाति परदेशी मेरा छिन आव तिल जावै।
जाकी संगत नानक रहेंदा क्यूकर मोंडा पावै।।(गुरू ग्रन्थ पृष्ठ 731)

संत गरीबदास जी की वाणी में सम्पूर्ण आध्यात्मिक ज्ञान है जो परमेश्वर कबीर जी ने कबीर सागर में कहा था जो कुछ-कुछ बदला गया। इसलिए कबीर सागर में की गई मिलावट या कांट-छांट स्पष्ट दिखाई दे जाती है। संत गरीबदास जी तथा परमेश्वर कबीर जी की वाणी पवित्र वेदों, गीता, पुराणों से मेल करती है। इसलिए यह विश्वास होना भी स्वभाविक है कि कबीर सागर तथा संत गरीबदास जी की वाणी वाला ज्ञान तत्त्वज्ञान है। अब पवित्र कबीर सागर से सार रूपी मोती निकालता हूँ।

''ज्ञान सागर का निष्कर्ष''

इस अध्याय में कुल 106 पृष्ठ हैं। हमने मोती निकालने हैं, सागर भरा रहेगा। हमारे लिए मोती प्राप्त करना अनिवार्य तथा पर्याप्त है। प्रथम तो यह सिद्ध करना चाहूँगा कि ''अथाह सागर से मोती निकालना मेरे स्तर का कार्य नहीं था। मैं (रामपाल दास) केवल दसवीं तक पढ़ा हूँ। उसके पश्चात् तीन वर्ष का सिविल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा किया और हरियाणा सरकार के सिंचाई विभाग में 17-02-1977 को जूनियर इंजीनियर (J.E.) के पद पर नौकरी लगा। 17-02-1988 को परम पूज्य गुरूदेव स्वामी रामदेवानन्द जी से दीक्षा प्राप्त हुई। फिर मार्च 1994 को गुरूदेव ने गुरू पद प्रदान किया। कहा

कि बेटा तू दीक्षा दे, मैं तेरे को आदेश देता हूँ। उस दिन वही दिन था जिस दिन परमेश्वर कबीर जी अपनी प्यारी आत्मा संत गरीबदास जी को गाँव छुड़ानी के खेतों में मिले थे और दीक्षा दी थी। सत्यलोक ले गए थे, शाम को वापिस छोड़ा था। उस उपलक्ष्य में तीन दिन का पाठ चल रहा था। मध्य के दिन मेरे को छुड़ानी धाम में दीक्षा देने का आदेश पुज्य गुरूदेव स्वामी रामदेवानंद जी ने दिया था। कहा था कि संसार में तेरे बराबर कोई संत नहीं होगा। मैं तेरे साथ रहूँगा, अपने को अकेला मत समझना। उपस्थित सर्व संगत को कह दिया था कि आज से यह तुम्हारा गुरू है, मैं नहीं। जो वस्तु इसके पास है, वह विश्व में नहीं है। उस दिन के बाद से यह दास दीक्षा देने लगा, नौकरी करते-करते छुट्टी लेकर तथा शनिवार, रविवार की छुट्टियों में पाठ भी करता, सत्संग भी करता था। मई 1995 में पाठों की सँख्या अधिक होने के कारण नौकरी पर नहीं जा पाया, नौकरी से त्याग पत्र दे दिया जो हरियाणा सरकार से स्वीकृत है। मैं यह बताना चाहता हूँ कि जो ज्ञान मुझे प्राप्त हुआ है, वह सामान्य व्यक्ति को प्राप्त नहीं हो सकता क्योंकि वह ज्ञान उन महापुरूषों को छोड़कर जिनको परमेश्वर मिले थे और ऊपर लेकर गए, फिर वापिस छोड़ा था, जिसके शुभ नाम ऊपर बताए हैं, आज तक अन्य किसी को प्राप्त नहीं हुआ। कबीर जी ने कहा है:-

कबीर, नौ मन सूत उलझिया, ऋषि रहे झखमार। सतगुरू ऐसा सुलाझा दे, उलझै ना दूजी बार।।

मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि जो ज्ञान विश्व में वर्तमान में किसी के पास नहीं है, पहले भी नहीं था, यह सामान्य बात नहीं है। पहले जिन महात्माओं को परमेश्वर मिले थे। उनको सम्पूर्ण ज्ञान था, परंतु उनको सम्पूर्ण दीक्षा देने का आदेश नहीं था। वह सम्पूर्ण आध्यात्मिक ज्ञान तथा सम्पूर्ण दीक्षा मन्त्र देने का अधिकार मुझ दास को मिला है, यह असामान्य बात है। मेरी इतनी तीक्ष्ण बुद्धि नहीं थी कि इतने विशाल अध्यात्म ज्ञान को संग्रह (Store) कर सके तथा सार निकाल सके। यह तो परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी की शक्ति से तथा पूज्य गुरूदेव जी के आशीर्वाद तथा आदेश से संभव हुआ है। सीधे शब्दों में वही लीला चित्रार्थ हुई जो तोताद्रि नामक स्थान पर पंडितों के भण्ड़ारे में प्रवेश करने के लिए कबीर परमेश्वर जी ने एक भैंसे से चारों वेदों के मन्त्र संस्कृत भाषा में बुलवाए थे। मुझ दास से भी यह आध्यात्म सम्पूर्ण सत्य ज्ञान बुलवाया जा रहा है। परमेश्वर कबीर जी की दया शक्ति से गुरूदेव जी के आशीर्वाद से अब रामपाल दास सामान्य व्यक्ति नहीं रहा, संत विशेष की श्रेणी में हो गया है।

संत बोले सहज सुभाय, संत का बोला निष्फल न जाए।

❖ ज्ञान सागर का सार :- पृष्ठ 1 पर सर्व प्रथम कुछ नाम लिखे हैं जिनसे स्पष्ट है कि पवित्र कबीर सागर पर धनी धर्मदास जी के बिन्द (पुत्र वंशावली) का प्रभाव रहा है, यदि कुछ कांट-छांट, मिलावट या बनावटी वाणी काटी या लिखी है तो यह श्रेय धर्मदास जी के गद्दी वाले महन्त साहेबानों को ही जाता है।

सोरठाः— बुझो संत विवेक करि, सत्यनाम सार।
सतगुरू का आदेश यह, उतरो भवजल पार।।
सुमरो मन चित एक करि, सतगुरू दीन दयाल।
यथार्थ वाणी = सुमरो मन चित एक करि, सतगुरू करे निहाल।
अगम शब्द प्रमाण इमि, छेड़ सके नहीं काल।।
बन्दी छोड़ दयाल प्रभु, बन्दों गुरू पद पंकज।।
देत दान जो मुक्ति फल, तुम चरणन मन रंज।।
मुक्ति भेद में कहूँ विचारी। ता को नहीं जानत संसारी।

बहु आनन्द होत तेहीं ठाऊँ। शोक रहित अमरपुर गांऊँ।।(गाँव)
पृष्ठ 2 = तहँवा रोग शोग नहिं होई, क्रीड़ा विनोद करें सब कोई।।
चन्द न सूर दिवश न राती। वरण भेद नही जाति अजाति।।
तहाँ वहाँ जरा–मरण नहीं होई। बहु आनन्द करे सब कोई।
पुष्पक विमान सदा उजियारा। अमृत भोजन करत आहारा।
काया सुन्दर ताहि प्रमाना। उदित हुए जनु षोडस भाना।।
इतनौ एक हंस उजियारा। शोभित ऐसे जानु गगन में तारा।
विमल बांस तहाँ बिगसाई। योजन चार लग सुबांस उड़ाई।।
सदा मनोहर छत्र सिर छाजा। बूझ न परै रंक और राजा।।
नही तहाँ काल वचन की खानी। अमृत वचन बोलै भल बानी।।
आलस निद्रा नहीं प्रकाशा। बहुत प्रेम सुख करें विलसा।।
साखी = अस सुख है हमरे घरे। कहै कबीर समुझाय।
सत शब्द को जानिकै, अस्थिर बैठे जाय।।

भावार्थ:- परमेश्वर कबीर जी ने अपने प्रिय भक्त धर्मदास जी को बताया कि जिस तरह मुक्ति हो सकती है। वह भेद बताता हूँ और उस मुक्ति को प्राप्त हंस वहाँ चले जाते हैं जहाँ कोई रोग नहीं, कोई शोक नहीं, वहाँ पर सब आत्माऐं आनन्द से खेलती हैं अर्थात सुखमय जीवन जीते हैं, वहाँ पर कोई चाँद-सूर्य नहीं हैं, वहाँ पर वह सतलोक स्वयं प्रकाशित है, सत्य पुरूष के एक रोम का प्रकाश करोड़ों सूर्यों तथा चान्दों से अधिक है। वहाँ एक हंस (मानव) के शरीर का प्रकाश 16 सूर्यों जितना है। वहाँ जाति भेद भी नहीं है। वहाँ हमारे सत्यलोक में जरा-मरण नहीं है। सदा युवा रहते हैं, मृत्यु नहीं है। सब भक्तों (स्त्री तथा पुरूष) का शरीर सुन्दर है और सोलह सूर्यों जितना प्रकाश एक भक्त के शरीर का है तथा भक्तमति के शरीर का प्रकाश भी सोलह सूर्यों के प्रकाश के समान है। सतलोक में सितारों की तरह चमक रहे हैं। सतलोक में सुगन्ध उठ रही है जो चार योजन यानि 48 कि.मी. तक जाती है। (एक योजन में चार कोस, एक कोस में तीन कि.मी.। इस प्रकार एक योजन में 12 कि.मी., चार योजन में 48 कि.मी. हुए।) सतलोक में प्रत्येक भक्त के पास पुष्पक विमान है। श्री रामचन्द्र जी सीता को लेकर लंका से आए थे। वे पुष्पक विमान में आए थे। वैसा विमान सत्यलोक में प्रत्येक हंस आत्मा के पास है। प्रत्येक भक्त तथा भक्तमति के सिर पर छत्र शोभा करता है। वहाँ कोई निर्धन और रंक का भेद नहीं है। वहाँ सतलोक में काल लोक के प्राणियों की तरह कराल वचन कोई नहीं बोलता। सदा अमृत जैसी मीठी बोली भली भाषा में बोलते हैं। उस लोक में आलस निन्द्रा नहीं है। बहुत सुखी हैं। बहुत प्रेम से रहते हैं। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हमारे घर (सतलोक) में ऊपर वर्णित सुख है। जिनके पास सत्य शब्द (सतनाम) है, वह उस लोक में स्थाई निवास प्राप्त करता है।

❖ पृष्ठ 3 से 27 तक सृष्टि की उत्पत्ति का ज्ञान है, परंतु कांट-छांट कर लिखा है। वास्तविक ज्ञान पूर्व में लिख दिया है, वहाँ से ग्रहण करें।

❖ पृष्ठ 27 से 51 तक श्री रामचन्द्र तथा श्री कृष्ण जी की लीला बताई है और सिद्ध किया है कि यह सब ज्योति निरंजन का षडयंत्र है। पहले तो अपने अवतारों को शक्ति दे देता है। फिर उनसे पाप करवाता है। फिर उनसे वह शक्ति छीन लेता है, उनका अन्त भी बुरा होता है। जब इसी लोक में ऐसी गति हुई तो ऊपर के लोक में क्या मिलेगा। श्री राम जी ने अन्त में अपने पुत्रों लव तथा कुश से पराजित होकर शर्म के मारे सरयू नदी में समाधि लेनी पड़ी यानि अपनी जीवन लीला सरयू नदी में

छलांग लगाकर समाप्त की। पहले बाली तथा रावण जैसे योद्धाओं को मार डाला था।

यही दशा श्री कष्ण जी की हुई थी। उनकी आँखों के सामने उनका पूरा यादव कुल नष्ट हो गया था तथा श्री कष्ण जी के पैर में विषाक्त तीर एक बालिया नामक शिकारी ने मारा जिससे उनकी मत्यु हुई। श्री कष्ण जी ने बाली को त्रेता युग में वक्ष की ओट लेकर मारा था। उसी आत्मा ने शिकारी बनकर अपना बदला लिया।

❖ पष्ठ 52 से 53 तक सुदर्शन सुपच द्वारा पाण्ड़वों की यज्ञ पूर्ण करने का वर्णन है, परंतु पूर्ण रूप से गलत लिखा है। पूर्ण वर्णन आगे बताया जाएगा।

❖ पष्ठ 53 से 70 तक कबीर परमेश्वर जी का सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापर में सतसुकत, मुनीन्द्र तथा करूणामय नाम से प्रकट होने वाला प्रकरण है जो बिल्कुल ऊट-पटांग तरीके से बताया है। वाणी कांट-छांट तथा बनावटी-मिलावटी बनाकर अपनी बुद्धि अनुसार व्याख्या की है जो गलत है। वास्तविकता पहले वर्णन कर दी है।

❖ पष्ठ 71 से 74 तक कलयुग में काशी में प्रकट होने का प्रकरण।

❖ पष्ठ 74 पर वर्णन है कि बालक कबीर जी ने बछिया का दूध पीया। (कंवारी गाय का दूध पीया।)

❖ पष्ठ 75 से 76 रामानन्द जी से गुरू दीक्षा लेना आदि-आदि वर्णन है।

❖ पष्ठ 76 पर सिकंदर राजा को अपनी शरण में लेने वाला प्रकरण है।

उपरोक्त प्रकरण ''कबीर चरित्र बोध'' में भी हैं।

यथार्थ कबीर जी की लीला इस अध्याय में सम्पूर्ण नहीं है।

❖ पष्ठ 76 से 86 तक रतना को मिलना तथा अन्य जानकारी है जो ज्ञान प्रकाश में बताई जा चुकी है।

❖ पष्ठ 86 पर आठ कमलों की जानकारी है।

❖ पष्ठ 88 से 97 तक सामान्य ज्ञान है जो ज्ञान प्रकाश में बताया जा चुका है।

❖ पष्ठ 97 से 106 तक अस्पष्ट वर्णन है, इससे अधिक स्पष्ट ज्ञान पहले ज्ञान प्रकाश में धर्मदास को शरण में लेने वाले प्रकरण में पढ़ें।

विशेषः- जैसा कि ज्ञान सागर के सार के प्रारम्भ में लिखा है कि कबीर सागर धनी धर्मदास जी द्वारा लिखा था, वह हस्तलिखित था। बहुत अधिक बड़ा होने के कारण से किसी महंत ने उसमें से अपने विवेक के अनुसार कुछ-कुछ वाणी लेकर कुछ अपनी बनावटी बना-मिलाकर ज्ञान सागर बनाया है। इसी प्रकार अन्य कई अध्यायों में यही देखने को मिला है। बाद में स्वामी युगलानन्द जी भारत पथिक कबीर पंथी ने उन सर्व अध्यायों को कुछ संशोधित करके एक कबीर सागर का रूप दे दिया गया जो अपने को वर्तमान में उपलब्ध है। इसलिए ''ज्ञान सागर'' में कोई भिन्न ज्ञान नहीं है। यह ज्ञान अन्य अध्यायों में विस्तार के साथ है।

उदाहरण :- ज्ञान सागर में प्रकरण है। ''कंवारी गाय (बछिया) के दूध से परमेश्वर कबीर की परवरिश'' वाणी इस प्रकार है :-

''कबीर जी का काशी में प्रकट होना''

यहाँ पर नूरी गलत लिखा है नूरी नहीं नीरू को मिलने की कथा है। यह कुछ प्रकरण ठीक व कुछ गलत है। विवेचन करता हूँ :-

❖ पष्ठ 73-74 से वास्तव में नीरू तथा उसकी पत्नी नीमा द्वापरयुग में सुदर्शन सुपच के

माता-पिता वाली आत्माऐं थी। उस समय परमेश्वर कबीर जी करूणामय नाम से प्रकट थे। सुदर्शन जी का जन्म वाल्मीकि जाति में हुआ था। सुदर्शन जी को पूर्ण विश्वास हो गया था कि करूणामय स्वयं पूर्ण परमेश्वर हैं। उस युग में कबीर परमेश्वर जी भी करूणामय की लीला करने के लिए एक कमल के फूल पर शिशु रूप में प्रकट हुए थे। उनको एक वाल्मीकि दम्पति अपने घर ले गए थे, वे निःसन्तान थे। कालू नाम से वाल्मीकि के घर परवरिश होने के कारण परमेश्वर करूणामय वाल्मीकि कहलाए। कालू की पत्नी का नाम गोदावरी था। सुदर्शन जी ने परमेश्वर करूणामय (कबीर) जी से विनय की थी कि हे परमात्मा! मेरे माता-पिता को अपनी शरण में लेकर कल्याण करें, परंतु सुदर्शन जी के माता-पिता ने परमेश्वर की शरण नहीं ली, उपदेश नहीं लिया। उनकी मत्यु हो गई। सुदर्शन जी ने अपने गुरू करूणामय जी यानि परमेश्वर कबीर जी से प्रार्थना की कि हे गुरूदेव! मेरे माता-पिता जी ने आपसे उपदेश नहीं लिया, उनका कल्याण कैसे होगा, मैं बहुत चिंतित हूँ। तब परमेश्वर कबीर जी ने विचार किया कि माता-पिता के मोह में भक्त भी मोक्ष प्राप्त नहीं कर पाएगा। जहाँ आशा तहाँ बासा होई, मन कर्म वचन सुमरियो सोई। इसलिए परमेश्वर कबीर जी ने अपने भक्त को विश्वास दिलाया कि मैं तेरे माता-पिता का कल्याण करूंगा। उनको अगले जन्म में शरण में लूँगा। यह मेरी प्रतिज्ञा है। तब भक्त सुदर्शन जी शान्त होकर भक्ति करने लगा। अगले जन्म में वे दोनों ब्राह्मण जाति में जन्में। दोनों का फिर विवाह हुआ, परंतु सन्तान नहीं हुई। उनको परमेश्वर कबीर जी 3 वर्ष की आयु के बच्चे के रूप में मिले। वे उस बच्चे को घर ले गए। बच्चा उनसे कहता कि आप परमात्मा की भक्ति शास्त्र विधि अनुसार नहीं कर रहे हो। मैं बताता हूँ शास्त्र अनुकूल साधना, मुझे गुरू बनाओ। यह सुनकर दोनों क्रोधित हो गए। कहा तू हमारे से ज्यादा जानता है क्या? कई बार परमेश्वर ने कोशिश की, परंतु वे दोनों बहुत क्रोध करते और एक बार परमात्मा को थप्पड़ मारने लगे तो परमेश्वर अन्तर्ध्यान हो गए। फिर उस जन्म में नहीं मिले। वे दोनों मत्यु के उपरांत फिर से ब्राह्मण कुल में जन्मे। दोनों का विवाह हुआ। बच्चे उस जन्म में भी नहीं हुए। ब्राह्मण का नाम गौरी शंकर तथा ब्राह्मणी का नाम सरस्वती था। गौरी शंकर भगवान शिव का परम भक्त था। निःस्वार्थ शिव पुराण की कथा करता था। जो कोई स्वेच्छा से दान करता तो उससे अपना निर्वाह करते थे। शेष का भोजन भण्डारा (लंगर) करा देते थे। जिस कारण से जनता में विशेष छाप (छवि) बनी थी। सब उनकी प्रशंसा करते थे। जिस कारण से अन्य ब्राह्मण गौरी शंकर से ईर्ष्या करते थे। मुसलमानों को यह भली-भाँति ज्ञान था। उन्होंने इसका लाभ उठाया। गौरी शंकर तथा सरस्वती को जबरन मुसलमान बना दिया। उनके घर में अपना झूठा पानी छिड़क दिया, उन दोनों के मुख में डाल दिया। सर्व स्वार्थी ब्राह्मणों ने मौके का लाभ उठाया। काशी नगर में मुनादी (**Announcement**) करा दी कि गौरी शंकर तथा सरस्वती मुसलमान बन गए हैं। जिस कारण से उनको शिव पुराण की कथा करने तथा गंगा दरिया में स्नान करने से मना कर दिया गया। मुसलमानों ने गौरी शंकर का नाम नूरअली रखा तथा सरस्वती का नाम नियामत रखा। पुरूष को नीरू तथा स्त्री को नीमा कहने लगे। निर्वाह की समस्या के कारण जुलाहे का कार्य करने लगे। जिस कारण से जुलाहा कहलाए। गंगा में स्नान न करने देने के कारण अपनी झौंपड़ी से लगभग 4 कि. मी. दूर लहरतारा तालाब में स्नान करने जाने लगे। उस सरोवर में वर्षा के मौसम में गंगा दरिया का पवित्र जल पशु घाटों के अन्दर से लहरों के द्वारा उछलकर उस सरोवर को भर देता था। पूरे वर्ष वह जल स्वच्छ निर्मल रहता था। इसी कारण से उस जलाशय का नाम लहरतारा तालाब पड़ा। नीरू उर्फ गौरी शंकर तथा नीमा उर्फ सरस्वती भले ही मुसलमान बना दिए थे, परंतु वे फिर भी भगवान शंकर को दिल से मानते थे। उन्हीं का स्मरण करते थे। सन्तान न होने का दुःख भी बराबर था। विक्रमी

संवत् 1455 ई. (सन् 1398) ज्येष्ठ मास की पूर्णमासी को सूर्य उदय से 1½-2 घण्टे पहले जिसे ब्रह्म मुहूर्त कहते हैं, उस समय परमेश्वर अपने सत्यलोक से गति करके (चलकर) आए और उस लहरतारा सरोवर में कमल के फूल के ऊपर शिशु रूप धारण करके विराजमान हुए। उस समय एक अष्टानन्द नामक ऋषि जो स्वामी रामानन्द जी ब्राह्मण का शिष्य था, उस सरोवर में प्रतिदिन की तरह स्नान करके एकान्त स्थान पर शांत वातावरण में साधना कर रहा था। वहाँ पर वह ऋषि एक घण्टा प्रतिदिन साधना-स्मरण करता था। जब परमेश्वर कबीर जी सत्यलोक से नीचे अवतरित हो रहे थे तो उनके शरीर का दिव्य प्रकाश अष्टानन्द जी को दिखाई दिया। वह एक प्रकाश का गोला रूप में दिखा। अष्टानन्द ऋषि जी की चर्म दृष्टि उस प्रकाश की चमक को सहन न कर सकी। उन्होंने अपनी आँखें बंद कर ली। बंद आँखों में एक बालक दिखाई दिया। फिर आँखें खोली तो वह प्रकाश लहर तारा जलाशय में समाता हुआ दिखाई दिया और सरोवर के सर्व कमल स्पष्ट दिखाई दिए, परंतु क्षण (सैकंड) मात्र में फिर अंधेरा हो गया, परंतु अष्टानन्द जी की आँखों के सामने शिशु का प्रकाश रहित आकार फिर भी दिखाई दे रहा था। कुछ समय के पश्चात् वह शिशु की आकृति समाप्त हो गई। जैसे कभी हम सूर्य की ओर देख लेते हैं तो सूर्य की प्रकाश रहित आकृति देर तक आँखों में बनी रहती है, चाहे आँखें बंद करें या खोलें। अष्टानन्द जी को बहुत आश्चर्य हुआ। वे तुरन्त उठकर अपने गुरूदेव स्वामी रामानन्द ऋषि जी के पास गए तथा जो कुछ देखा था, सब वृतान्त सुनाया। स्वामी जी ने बताया, बेटा! जब कोई अवतारी शक्ति ऊपर के लोक से पृथ्वी पर लीला करने आती है तो ऐसी घटना होती है। कोई महान आत्मा काशी नगर में किसी भाग्यवान माता के गर्भ से जन्म लेगा।

स्वामी रामानन्द जी को इतना ही ज्ञान था कि अवतार भी माता से जन्म लेते हैं क्योंकि उनके प्रभु राम-कृष्ण जी भी माता के गर्भ से जन्में थे।

प्रतिदिन की तरह नीरू तथा नीमा भी उसी लहर तारा तालाब में स्नानार्थ आए। पिछले दिन नीरू के घर कोई मेहमान आए थे। एक स्त्री भी थी। स्त्री ने नीमा से चर्चा में सन्तान की महिमा बताई कि पुत्र बिना गति नहीं होती, वृद्धावस्था में कौन सहारा बनेगा? एक बच्चा तो होना ही चाहिए। निःसन्तान का तो लोग सुबह-सुबह मुख देखना भी शुभ नहीं मानते। उस स्त्री के जाने के पश्चात् उसके द्वारा लगाए इंजेक्शन का प्रभाव नीमा पर ऐसा हुआ कि वह सारी रात रोती रही और अपने इष्ट देव शंकर जी से एक पुत्र प्राप्ति की माँग करती रही। सवेरे उठकर अपने पति के साथ स्नान के लिए चली तब भी सुबक-सुबककर आहें भरकर भगवान शिव से याचना कर रही थी कि हे महादेव! क्या हमारे लिए आपके पास सन्तान नहीं है। आप तो समर्थ हैं, मेरी गलती को क्षमा करके एक लाल मेरी झोली में भी डाल दें। उसकी यह दयनीय दशा देखकर नीरू ने कहा, हे नीमा! अपनी किस्मत में सन्तान होती तो प्रभु शंकर कभी के सन्तान दे देते। आप रो-रोकर अपनी आँखें खराब कर लोगी। मिलना वही है जो भाग्य में लिखा है। यह कहकर अपनी धोती से उसके आँसू पौंछे। सरोवर पर आने के पश्चात् पहले नीमा ने स्नान किया क्योंकि तब तक अंधेरा था। उसके पश्चात् नीरू ने स्नान के लिए तालाब में प्रवेश किया। नीमा उस वस्त्र को धोने के लिए पुनः सरोवर के किनारे गई जिसको लपेट कर स्नान किया था। उस समय सरोवर या दरिया के जल में नंगा स्नान करना पाप माना जाता था। तब तक सवेरा हो गया था, वस्तु कुछ-कुछ स्पष्ट दिखाई देने लगी थी। नीमा को एक कमल के फूल के ऊपर कुछ हलचल महसूस हुई। ध्यानपूर्वक देखने से पता चला कि एक नवजात शिशु पंकज पर विराजमान है। एक पैर का अंगूठा अपने मुख में चूस रहा है और एक को चला रहा है। नीमा ने अपने पति के कहा कि देखो जी! कमल पुष्प पर बच्चा लेटा है। नीरू गोते मार-मारकर तथा कभी पानी में

खड़ा होकर अपने दोनों हाथों से पानी अपने शरीर पर डाल-डालकर आनन्द से शीतल नल में नहाकर गर्मी से निजात पा रहा था। उसने स्नान करते-करते कहा कि नीमा तू पुत्र के चक्र में दिमाग का संतुलन खो चुकी है। जिस करण से तेरे को जल में भी बच्चा दिखने लगा है। नीमा ने बहुत कसक के साथ पुनः कहा कि सचमुच देखो तो एक बार, बच्चा डूबने वाला है। नीरू ने उधर देखा जिधर नीमा हाथ से संकेत कर रही थी, नीरू ने आव देखा ना ताव, फूल सहित बच्चे को उठाकर अपनी पत्नी को थमा दिया और कोसने लगा उस बेरहम स्त्री को कि किसने यह मासूम बच्चा मारने के लिए अंधेरे में फैंक दिया। परमात्मा का शुक्र है कि यह मजबूत (ताकतवर = दृढ़) कमल पर गिर गया अन्यथा मर जाता। यह भी बच्चे की अच्छी तकदीर है कि हम समय पर आ गए, इसका जीवन बच गया। नीमा उस बच्चे के सुन्दर मुख को देखकर भावुक होकर परमात्मा शिव जी का शुक्र अदा कर रही थी तथा बच्चे को कभी सीने से लगा रही थी तथा कभी उसका मुख चूमकर दुलार रही थी जब नीरू स्त्री को कोस रहा था। तब कबीर जी बोले जैसे आकाशवाणी हो रही हो, नीमा तो बच्चे को सीने के लगाकर वर्षों की पुत्र की प्यास बुझाने में लगी थी। उसको तो होश (चेतना) ही नहीं था, कौन बोल रहा है। वाणी बोली :-

जाको राखे सांईयाँ, मार सके ना कोय। बाल न बांका कर सके, चाहे जग बैरी होय।।
हम ही अलख अल्लाह हैं, हमरा अमर शरीर। अमर लोक से चलकर आए, काटन जम की जंजीर।।

नीरू तथा नीमा ने सोचा कि आस-पास किसी किनारे पर कोई साधु संत परमात्मा की स्तुति कर रहा होगा। नीरू को लोकलाज सताने लगी। जिस कारण से अपनी पत्नी से कहा कि नीमा! संसार के व्यक्ति क्या सोचेंगे? यदि हम इस बच्चे को घर ले गए तो अपना जीना हराम हो जाएगा। कोई कुछ कहेगा, कोई कुछ। मुसलमानों में हमारे परिचित ज्यादा नहीं हैं। यह लड़का भी छीन लिया जाएगा और दण्डित भी किए जा सकते हैं। नगर निकाला भी मिल सकता है। आप इस बच्चे को परमात्मा के भरोसे यहीं छोड़ दो। नीमा ने कहा मैं इस बच्चे को नहीं छोड़ सकती, न जाने इस बालक ने मेरे ऊपर क्या जादू कर दिया। मैं मर सकती हूँ, परंतु बालक नहीं छोडूँगी। नीरू ने दुःखी होकर जीवन में प्रथम बार अपनी पत्नी पर क्रोध किया और थप्पड़ मारने के लिए हाथ उठाया और कहा कि आज तक मैंने तेरी प्रत्येक बात को माना। कारण यही था कि हमारे कोई अपनी सन्तान नहीं थी। मैं यही विचार करता था कि तेरे को मैं इतना प्यार दूँ कि तू पुत्र सेवा को भी भूल जाए। तेरे को कभी सोई हुई को नहीं जगाया, वस्तु माँगी तो एक के स्थान पर दो लाया। जिस कारण तू मेरी किसी बात की परवाह नहीं कर रही है। बहुत मुहँ लगा रखी है। जिद्दी हो गई है। इस बच्चे को रख दे मेरी एक बात तो मान ले नहीं तो मैं तुझे थप्पड़ मारता हूँ। उसी समय बालक वेशधारी परमेश्वर बोले हे नूरअली! मैं सतलोक से आया हूँ। तुम्हारे को काल के जाल से निकालने के लिए। आप ब्राह्मण थे। अच्छा हुआ तुम गरीब मुसलमान जुलाहा बन गए। ब्राह्मण होते तो आप में जाति का अभिमान होता। जिसमें अभिमान होता है, उसको परमात्मा नहीं मिलता। द्वापर युग में आप सुदर्शन के माता-पिता थे। मैंने सुदर्शन से वचन किया था कि मैं तेरे माता-पिता का कल्याण अवश्य करूँगा। आप मुझे अपने घर ले चलो, आपको कोई आपत्ति नहीं होगी।

द्वापर युग में तुम बालमिक जाती। भक्ति शिव की करि दिन राती।।
तुमरा एक बालक प्यारा। वह था परम शिष्य हमारा।।
सुपच भक्त मम प्राण प्यारा। उससे था एक वचन हमारा।।
ता करण हम चल आए। जल पर प्रकट हम नारायण कहाऐ।।

लै चलो तुम घर अपने। कोई अकाज होये नहीं सपने।।
बाचा बन्ध जा कारण यहाँ आए। काल कष्ट तुम्हरा मिट जाए।।
इतना सुनि कर जुलहा घबराया। कोई जिन्द या ओपरा पराया।।
मोकूँ कोई शाप न लग जाए। ले बालक को घर कूँ आए।।
साखीः- सुत काशी को लै चले। लोग देखन तहँ आय।।
अन्न पानी भक्षै नहीं जुलहा शोक जनाय।।

परमेश्वर कबीर जी को लेकर नीरू जुलाहा अपनी पत्नी के साथ घर पर आया। वह डर गया कि इस बच्चे में कोई जिन्द या भूत-प्रेत बोल रहा है। कहीं मेरे को हानि न कर दे, इस डर से बच्चे को घर ले आया। काशी नगर के नर-नारी झुंड (समूह रूप में) लड़के को देखने आए और अपनी-अपनी धारणा के अनुसार महिमा करने लगे। संत गरीबदास जी (छुड़ानी वाले) ने भी अपनी वाणी में परमात्मा कबीर जी द्वारा प्राप्त दिव्य दृष्टि से पूर्व वाली घटना देखकर कहा है :-

संत गरीबदास जी की अमृतवाणी :-

काशी पुरी कस्द किया, उतरे अधर अधार। मोमिन को मुजरा हुआ, जंगल में दीदार।।
कोटि किरण शशि भानु सुधि, आसन अधर विमान। परत पूर्ण ब्रह्म को शीतल प्राण और पिण्ड।।
गोदि लिय मुख चूम कर, हेम रूप झलकन्त। जगर मगर काया करे, दमकें पदम अनन्त।।
काशी में अचरज भया, गई जगत की नींद। ऐसे दुल्हा ऊतरें ज्यों कन्य बर बीन्द।।
खलक मुलक देखन गया, राजा प्रजा रीत। जम्बुदीप जहान में, उतरे शब्द अतीत।।
काशी उमड़ी गुल भया, मोमिन का घट घेर। कोई कह ब्रह्मा विष्णु है, कोई कह इन्द्र कुबेर।।
कोई कह वरूण धर्मराय है, कोई–कोई कहत ईश। सोलह कला सुभान गति, कोई कहत जगदीश।।
दुनी कह यह देव है, देव कह यह ईश। ईश कहै परब्रह्म है, पूरण बिसवे बीस।।
कोई कहै छल है ईश्वर नहीं, कोई किन्नर कहाय। कोई कहे गण ईश का, ज्यों ज्यों मात रिसाय।।
दूध ना पीवै ना अन्न भखै, नहीं पलने झूलंत। अधर आसन ध्यान में, कमल कला फूलन्त।।
शिव उतरे शिव पुरी से, अवगत बदन विनोद। महके कमल खुशी भया, लिया ईश कूँ गोद।।
नजर नजर से मिल गई, किया ईश प्रणाम। धन्य मोमिन धन्य पूरणा, धन्य काशी निःकाम।।
सात बार चर्चा करी, बोले बालक बैनु। शिवकर मस्तक धरया, ल्या मोमिन कंवारी धेनु।
अन ब्यावर (कंवारी) को दूहत है, दूध दिया तत्काल। पीवै बालक ब्रह्मगति, तहाँ शिव भये दयाल।।

''कबीर सागर के ज्ञान सागर के पृष्ठ 74 पर''

सुत काशी को ले चले, लोग देखन तहाँ आय। अन्न–पानी भक्ष नहीं, जुलहा शोक मनाय।।
तब जुलहा मन कीन तिवाना, रामानन्द सो कहा उत्पाना।।
मैं सुत पायो बड़ा गुणवन्ता। कारण कौण भखै नहीं सन्ता।
रामानन्द ध्यान तब धारा। जुलहा से तब बचन उच्चारा।।।
पूर्व जन्म तैं ब्राह्मण जाती। हरि सेवा किन्ही भलि भांति।।
कुछ सेवा तुम हरि की चुका। तातैं भयों जुलहा का रूपा।।
प्रति प्रभु कह तोरी मान लीन्हा। तातें उद्यान में सुत तोंह दिन्हा।।

नीरू वचन

हे प्रभु जस किन्हो तस पायो। आरत हो तव दर्शन आयो।।
सो कहिए उपाय गुसाई। बालक क्षुदावन्त कुछ साई।।

रामानन्द वचन

रामानन्द अस युक्ति विचारा। तव सुत कोई ज्ञानी अवतारा।।
बछिया जाही बैल नहीं लागा। सो लाई ठढ करो तेही आगै।।
साखी = दूध चलै तेहि थन तें, दूधहि धरो छिपाई।
क्षूदावन्त जब होवै, तबहि दियो पिलाई।।

चौपाई

जुलहा एक बछिया लै आवा। चल्यो दूत (दूध) कोई मर्म न पावा।।
चल्यो दूध, जुलहा हरषाना। राखो छिपाई काहु नहीं जाना।।।
पीवत दूध बाल कबीरा। खेलत संतों संग जो मत धीरा।।

ज्ञान सागर पष्ठ 73 पर चौपाई

''भगवान शंकर तथा कबीर बालक की चर्चा''

{**नोटः- यह प्रकरण अधूरा लिखा है। फिर भी समझने के लिए मेरे ऊपर कपा है परमेश्वर कबीर जी की। पहले यह वाणी पढ़ें जो ज्ञान सागर के पष्ठ 73 पर लिखी है, फिर अन्त में सारज्ञान यह दास (रामपाल दास) बताएगा।**}

चौपाई

घर नहीं रहो पुरूष (नीरू) और नारी (नीमा)। मैं शिव सों अस वचन उचारी।।
आन के बार बदत हो योग। आपन नार करत हो भोग।।

नोटः- जो वाणी कोष्ठक { } में लिखी हैं, वे वाणी पहले ज्ञान सागर में नहीं लिखी गई हैं।

{ऐसा भ्रम जाल फलाया। परम पुरूष का नाम मिटाया।}
काशी मरे तो जन्म न होई। {स्वर्ग में बास तास का सोई}
{ मगहर मरे सो गधा जन्म पावा, काशी मरे तो मोक्ष करावा}
और पुन तुम सब जग ठग राखा। काशी मरे हो अमर तुम भाखा
जब शंकर होय तव काला, {ब्रह्मण्ड इक्कीस हो बेहाला}
{तुम मरो और जन्म उठाओ, ओरेन को कैसे अमर कराओ}
{सुनों शंकर एक बात हमारी, एक मंगाओ धेनु कंवारी}
{साथ कोरा घट मंगवाओ। बछिया के पीठ हाथ फिराओ}
{दूध चलैगा थनतै भाई, रूक जाएगा बर्तन भर जाई}
{सुनो बात देवी के पूता। हम आए जग जगावन सूता}
{पूर्ण पुरूष ज्ञान बताऊँ। दिव्य मन्त्र दे अमर लोक पहुँचाऊँ}
{तब तक नीरू जुलहा आया। रामानन्द ने जो समझाया}
{रामानन्द की बात लागी खारी। दूध देवेगी गाय कंवारी}
{जब शंकर पंडित रूप में बोले, कंवारी धनु लाओ तौले}
{साथ कोरा घड़ा भी लाना, तास में धेनु दूधा भराना}
{तब जुलहा बछिया अरू बर्तन लाया, शंकर गाय पीठ हाथ लगाया}
{दूध दिया बछिया कंवारी। पीया कबीर बालक लीला धारी}
{नीरू नीमा बहुते हर्षाई। पंडित शिव स्तुति गाई}
{कह शंकर यह बालक नाही। इनकी महिमा कही न जाई}

{मस्तक रेख देख मैं बोलूं। इनकी सम तुल काहे को तोलूं}
{ऐस नछत्रा देखा नाहीं, घूम लिया मैं सब ठाहीं।}
{इतना कहा तब शंकर देवा, कबीर कहे बस कर भेवा}
{मेरा मर्म न जाने कोई। चाहे ज्योति निरंजन होई}
{हम है अमर पुरूष अवतारा, भवसैं जीव ऊतारूं पारा}
{इतना सुन चले शंकर देवा, नीरू शिश चरण धर की नीरू नीमा सेवा}
हे स्वामी मम भिक्षा लीजै, सब अपराध क्षमा (विपर) किजै
{कह शंकर हम नहीं पंडित भिखारी, हम है शंकर त्रिपुरारी।}
{साधु संत को भोजन कराना, तुमरे घर आए रहमाना}
{ज्ञान सुन शंकर लजा आई, अद्भुत ज्ञान सुन सिर चक्राई।}
{ऐसा निर्मल ज्ञान अनोखा, सचमुच हमार है नहीं मोखा}

❖ कबीर सागर अध्याय ''स्वसम वेद बोध'' पष्ठ 132 से 134 तक परमेश्वर कबीर जी की प्रकट होने वाली वाणी है, परंतु इसमें भी कुछ गड़बड़ कर रखी है। कहा कि जुलाहा नीरू अपनी पत्नी का गौना (यानि विवाह के बाद प्रथम बार अपनी पत्नी को उसके घर से लाना को गौना अर्थात् मुकलावा कहते हैं।) यह गलत है। जिस समय परमात्मा कबीर जी नीरू को मिले, उस समय उनकी आयु लगभग 50 वर्ष थी। विचार करें गौने से आते समय कोई बालक मिल जाए तो कोई अपने घर नहीं रखता। वह पहले गाँव तथा सरकार को बताता है। फिर उसको किसी निःसंतान को दिया जाता है यदि कोई लेना चाहे तो। नहीं तो राजा उसको बाल ग्रह में रखता है या अनाथालय में छोड़ते हैं। नीमा ने तो बच्चे को छोड़ना ही नहीं चाहा था। फिर भी जो सच्चाई वह है ही, हमने परमात्मा पाना है। उसको कैसे पाया जाता है, वह विधि सत्य है तो मोक्ष सम्भव है, ज्ञान इसलिए आवश्यक है कि विश्वास बने कि परमात्मा कौन है, कहाँ प्रमाण है? वह चेष्टा की जा रही है। अब केवल ''बालक कबीर जी ने कंवारी गाय का दूध पीया था, वे वाणी लिखता हूँ''।

स्वसम वेद बोध पष्ठ 134 से

पंडित निज निज भौन सिधारा। बिन भोजन बीते बहु बारा (दिन)।।
बालक रूप तासु (नीरू) ग्रह रहेता। खान पान नाहीं कुछ गहते।
जोलाहा तब मन में दुःख पाई। भोजन करो कबीर गोसांई।।
जोलाहा जोलाही दुखित निहारी। तब हम तिन तें बचन उचारी।।
कोरी (कंवारी) एक बछिया ले आवो। कोरा भाण्डा एक मंगाओ।।
तत छन जोलाहा चलि जाई। गऊ की बछिया कोरी (कंवारी) ल्याई।।
कोरा भाण्डा एक गहाई (ले आई)। भांडा बछिया शिघ्र (दोनों) आई।।
दोऊ कबीर के समुख आना। बछिया दिशा दष्टि निज ताना।।
बछिया हेठ सो भाण्डा धरेऊ। ताके थनहि दूधते भरेऊ।
दूध हमारे आगे धरही, यहि विधि खान–पान नित करही।।

ऊपर लिखी अमत वाणी कबीर सागर के तीन अध्यायों से हैं।

विचार करें :- इससे एक तो यह बात स्पष्ट होती है कि कबीर सागर में मिलावट तथा कांट-छांट की गई। दूसरी यह स्पष्ट होती है कि ग्रन्थ में मिलावट है जैसे कबीर सागर में प्रकरण है वह संत गरीबदास जी की वाणी में भी है तो संत गरीबदास जी द्वारा यथार्थ ज्ञान बताया गया है। इसलिए

कबीर सागर के ज्ञान का नाश कर रखा है, अब यह दास (रामपाल दास) यथार्थ ज्ञान आपके रूबरू कर रहा है।

कथा प्रसंग है कि कंवारी गाय के दूध से परमेश्वर कबीर जी की परवरिश हुई थी, यह सत्य है तथा सत्य प्रकरण क्या है? शेष कथा बताता हूँ।

❖ जैसा कि ''स्वसम वेद बोध'' के पष्ठ 132 से 134 तक के प्रकरण में वाणी लिखी है, जिनमें दर्शाया गया है कि इस जन्म में नीरू-नीमा जन्म से जुलाहे थे। इससे पहले जन्म में पंडित थे। वास्तविकता यह है कि उस जन्म में भी पंडित थे जिस जन्म में परमेश्वर काशी में लहर तारा तालाब में कमल के फूल पर मिले थे और उससे पूर्व जन्म में भी ब्राह्मण थे।

उस जन्म में जिसमें परमेश्वर जी लहर तारा तालाब पर मिले थे, उसमें वे ब्राह्मण कुल में जन्में थे। बाद में जबरन मुसलमान बनाए गए थे। यदि जन्मजात मुसलमान होते तो भगवान शंकर किसलिए प्रकट होते? स्वसम वेद बोध पष्ठ 134 पर लिखा है कि पंडित बालक कबीर का नाम रखने आए। यदि जन्मजात मुसलमान जुलाहा नीरू होता तो ब्राह्मण किसलिए नामांकन करने आते? वास्तविकता यह है कि गौरी शंकर ब्राह्मण को मुसलमान बनाकर नीरू नाम रखा था। काजी और मुल्ला दोनो नामांकन करने आए थे। वास्तविकता अब पढ़ें निम्न लेख मेंः-

❖ कबीर बलाक ने 25 दिन तक कुछ भी आहार नहीं किया, पानी तक नहीं पीया।

वेदों में प्रमाण है कि परमात्मा ऊपर के लोक से आकर जब जमीन पर प्रकट होता है। शिशु रूपधारी परमात्मा की परवरिश (पोषण) कंवारी गायों के दूध से होती है। प्रमाण ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सूक्त 1 मंत्र 9 में है। जिस समय अमर पुरूष (सोम) जी शिशु रूप में पथ्वी के ऊपर प्रकट होते हैं तो उनकी पोषण की लीला (व्यवस्था) कंवारी गायों द्वारा होती है।

आप जी ने ऊपर यानि कबीर सागर के अध्यायों ''ज्ञान सागर'' पष्ठ 74 कबीर चरित्र बोध पष्ठ 1794 से 1796 तक अंकित है तथा स्वस्मबेद बोध पष्ठ 134 पर लिखा वर्णन पढ़ा जो लगभग विक्रमी संवत् 1550 यानि सन् 1497 में बांधवगढ़ वाले सेठ धनी धर्मदास जी ने लिखा था। यही प्रमाण वेदों में लिखा है। इससे यह भी प्रमाणित होता है कि कबीर जुलाहा ही वह पूर्ण परमात्मा है जिनकी महिमा वेदों में लिखी है और वह परमेश्वर कबीर जी के ऊपर खरी उतरती है। इनके अतिरिक्त विश्व में किसी भी महापुरूष पर या जिनको परमात्मा मानकर पूजा करते हैं। (श्री रामचन्द्र तथा श्री कष्णचंद्र) पर वेदों में लिखी पहचान खरी नहीं उतरती है।

कबीर सागर के उपरोक्त अध्यायों में प्रसंग छोड़ा गया है, कुछ जोड़ा गया है। जिस कारण से परमेश्वर कबीर जी की महिमा संपूर्ण वर्णित नहीं है। चौपाइयों तथा दोहों, साखियों में किया वर्णन प्रत्येक व्यक्ति समझ नहीं सकता। उसका विस्तत ज्ञान आप अध्याय ''कबीर चरित्र बोध'' के सारांश में पष्ठ 517 से 573 में ''कबीर जी का कलयुग में प्राकाट्य'' में पढ़ें।

अनुराग सागर पवित्र ''कबीर सागर'' का तीसरा अध्याय है। इसका अधिकतर प्रकरण अध्याय ज्ञान प्रकाश में लिखा गया है जो ''सष्टि रचना'' से सम्बन्धित है। पष्ठ 12 से 67 तक तथा इससे आगे ''परमेश्वर कबीर जी का तीन युगों में प्रकट होने वाला वर्णन है।'' यह भी इसी पुस्तक के ''ज्ञान प्रकाश बोध'' के सारांश में लिखा है। यहाँ लिखना व्यर्थ विस्तार करना है। पाठकजन वहीं से ज्ञान ग्रहण करें।

अनुराग सागर में कुछ त्रुटियां हैं। उनका विवरण भी ज्ञान प्रकाश अध्याय के सारांश में लिखा गया है।

अध्याय ''अनुराग सागर'' का सारांश

अनुराग सागर पष्ठ 3 से 5 तक का सारांश :-

पष्ठ 3 से :- धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से प्रश्न किया :-

प्रश्न :- प्रभु! दीक्षा प्राप्ति के पश्चात् परमेश्वर में कैसी आस्था होनी चाहिए?

उत्तर :- परमेश्वर कबीर जी ने बताया है कि जैसे मग (हिरण) शब्द पर आसक्त होता है, वैसे साधक परमात्मा के प्रति लग्न लगावै।

❖ हिरण (मग) पकड़ने वाला एक यंत्र से विशेष शब्द करता है जो हिरण को अत्यंत पसंद होता है। जब वह शब्द बजाया जाता है तो हिरण उस ओर चल पड़ता है और शिकारी जो शब्द कर रहा होता है, उसके सामने बैठकर मुख जमीन पर रखकर समर्पित हो जाता है। अपने जीवन को दॉव पर लगा देता है। इसी प्रकार उपदेशी को परमात्मा के प्रति समर्पित होना चाहिए। अपना जीवन न्यौछावर कर देना चाहिए।

❖ दूसरा उदाहरण :-

पतंग (पंख वाला कीड़ा) को प्रकाश बहुत प्रिय है। अपनी प्रिय वस्तु को प्राप्त करने के लिए वह दीपक, मोमबत्ती, बिजली की गर्म लाईट के ऊपर आसक्त होकर उसे प्राप्त करने के उद्देश्य से उसके ऊपर गिर जाता है और मत्यु को प्राप्त हो जाता है। इसी प्रकार भक्त को परमात्मा प्राप्ति के लिए मर-मिटना चाहिए। समाज की परंपरागत साधना को तथा अन्य शास्त्र विरूद्ध रीति-रिवाजों को त्यागने तथा सत्य साधना करने में कठिनाईयां आती हैं। उनका सामना करना चाहिए चाहे कुछ भी कुर्बानी देनी पड़े, पीछे नहीं हटे।

❖ तीसरा उदाहरण :-

पुराने समय में पत्नी से पहले यदि पति की मत्यु हो जाती थी तो पत्नी अपने पति से इतना प्रेम करती थी कि वह अपने मत पति के साथ उसी चिता में जलकर मर जाती थी। उस समय घर तथा कुल के व्यक्ति समझाते थे कि तेरे छोटे-छोटे बच्चे हैं। इनका आपके बिना कौन पालन करेगा? चाचे-ताऊ किसी के बच्चों को नहीं पालते। जब तक माता-पिता होते हैं, तब तक कुल के व्यक्ति प्यार की औपचारिकता करते हैं। वास्तव में प्रेम तो अपनों में ही होता है। आप इन छोटे-छोटे बच्चों की ओर देखो। बच्चे पिता के वियोग में रो रहे होते हैं। माता का पल्लु पकड़ रोकते हैं। उस स्त्री को उसके स्वर्ण के आभूषण भी दिखाए जाते हैं। देख इनका क्या होगा? कितने सुंदर तथा बहुमुल्य आभूषण हैं। आप अपने बच्चों में रहो। परंतु वह स्त्री प्रेमवश होकर उसी चिता में जिंदा जलकर मर जाती थी। पीछे कदम नहीं हटाती थी। पहले तो इस प्रकार सती होती थी। कोई एक-दो ही होती थी। बाद में यह रीति-रिवाज कुल की मर्यादा का रूप ले गई थी। पति की मत्यु के पश्चात् स्त्री को जबरन उसी चिता में जलाया जाने लगा था जिससे सती प्रथा का जन्म हुआ। बाद में यह संघर्ष के पश्चात् समाप्त हो गई।

इस कथा का सारांश है कि जैसे एक पत्नी अपने पति के वैराग्य में जिंदा जलकर मर जाती है। मुख से राम-राम कहकर चिता में जल जाती है।

जगत में जीवन दिन–चार का, कोई सदा नहीं रहे। यह विचार पति संग चालि कोई कुछ कहे।।

हे धर्मदास! इसी प्रकार भक्त का विचार होना चाहिए।

ऐसे ही जो सतपुरूष लौ लावै। कुल परिवार सब बिसरावै।।1

नारि सुत का मोह न आने। जगत रू जीवन स्वपन कर जानै।।2
जग में जीवन थोड़ा भाई। अंत समय कोई नहीं सहाई।।3
बहुत प्यारी नारि जग मांही। मात–पिता जा के सम नाहीं।।4
तेही कारण नर शीश जो देही। अंत समय सो नहीं संग देही।।5
एक–आध जलै पति के संगा। फिर दोनों बनैं कीट पतंगा।।6
फिर कोई पशु कोई पक्षी जन्म पावै। बिन सतगुरू दुःख कौन मिटावै।।7
ऐसी नारि बहुतेरी भाई। पति मरै तब रूधन मचाई।।8
काम पूर्ति की हानि विचारै। दिन तेरह ऐसे पुकारै।।9
निज स्वार्थ को रोदन करही। तुरंत ही खसम दूसरो करही।।10
सुत परिजन धन स्वपन स्नेही। सत्यनाम गहु निज मति ऐही।।11
स्व तन सम प्रिय और न आना। सो भी संग नहीं चलत निदाना।।12
ऐसा कोई ना दिख भाई। अंत समय में होय सहाई।।13
आदि अंत का सखा भुलाया। झूठे जग नातों में फिरै उमाहया।।14
अंत समया जम दूत गला दबावै। ता समय कहो कौन छुड़ावै।।15
सतगुरू है एक छुड़ावन हारा। निश्चय कर मानहू कहा हमारा।।16
काल को जीत हंस ले जाही। अविचल देश जहां पुरूष रहाही।।17
जहां जाय सुख होय अपारा। बहुर न आवै इस संसारा।।18
ऐसा दृढ़ मता कराही। जैसे सूरा लेत लड़ाई।।19
टूक–टूक हो मरै रण के मांही। पूठा कदम कबहू हटावै नांही।।20
जैसे सती पति संग जरही। ऐसा दृढ़ निश्चय जो करही।।21
साहेब मिलै जग कीर्ति होई। विश्वास कर देखो कोई।।22
हम हैं राह बतावन हारा। मानै बचन भव उतरै पारा।।23
छल कपट हम नहीं कराहीं। निस्वार्थ परमार्थ करैं भाई।।24
जीव एक जो शरण पुरूष की जावै। प्रचारक को घना पुण्य पावै।।25
कोटि धेनु जो कटत बचाई। एता धर्म मिलै प्रचारक तांही।।26
लावै गुरू शरण दीक्षा दिलावै। आपा ना थापै सब कुछ गुरू को बतावै।।27
जो कोई प्रचारक गुरू बनि बैठै। परमात्मा रूठे काल कान ऐठै।।28
लाख अठाइस झूठे गुरू रोवैं। पड़े नरक में ना सुख सोवैं।।29
अब कहे हैं भूल भई भारी। हे सतगुरू सुध लेवो हमारी।।30
बोऐ बबूल आम कहां खाई। कोटि जीवन को नरक पठाई।।31
ऐसी गलती ना करहूं सुजाना। सत्य वचन मानो प्रमाना।।32

उपरोक्त वाणियों का भावार्थ है कि :-

जब लड़का युवा होता है तो उसका विवाह हो जाता है। विवाह के पश्चात् माता-पिता से भी अधिक लगाव अपनी पत्नी में हो जाता है। फिर बच्चों से ममता हो जाती है। यदि पति की मृत्यु हो जाती है तो पत्नी साथ नहीं जाती। कुछ समय पश्चात् यानि तेरहवीं क्रिया के पश्चात् छोटे-बड़े पति के भाई के साथ सगाई-विवाह कर लेती है। पति को पूर्ण रूप से भूल जाती है। यदि कोई अपने पति के साथ जल मरती है तो अगले जन्म में पक्षी या पशु योनि में दोनों भटक रहे होंगे।

जिस पत्नी के लिए पुरूष अपनी गर्दन तक कटा लेता है। यदि कोई किसी की पत्नी को बुरी नजर से देखता है, मना करने पर भी नहीं मानता है तो पति अपनी पत्नी के लिए लड़-मरता है। फिर वही पत्नी पति की मत्यु के उपरांत अन्य पुरूष से मिल जाती है। यह भले ही समय की आवश्यकता है, परंतु भक्त के लिए ठोस शिक्षा है।

इसी प्रकार किसी व्यक्ति की पत्नी की मत्यु हो जाती है तो वह कुछ समय उपरांत दूसरी पत्नी ले आता है। पत्नी अपने पति के लिए अपना घर, भाई-बहन, माता-पिता त्यागकर चली आती है, परंतु पत्नी की मत्यु के उपरांत स्वार्थ के कारण रोता है। परंतु जब अन्य व्यक्ति विवाह के लिए कहते हैं तो सब भूलकर तैयार हो जाता है।

भावार्थ है कि सब स्वार्थ का नाता है। इसलिए सत्य भक्ति करके उस सत्यलोक में चलो जहाँ पर जरा (वद्धावस्था) तथा मरण (मत्यु) नहीं है।

आगे चेतावनी दी है कि हे भक्त! अपने शरीर के समान इंसान को कुछ भी प्रिय नहीं होता। अपने शरीर की रक्षार्थ लाखों रूपये ईलाज (Treatment) में खर्च कर देता है यह विचार करके कि यदि जीवन बचा तो मेहनत-मजदूरी करके रूपये तो फिर बना लूँगा। यदि रूपये नहीं होते हैं तो संपत्ति को भी यही विचार करके बेच देता है और अपना शरीर बचाता है। परमेश्वर कबीर जी ने समझाया कि हे धर्मदास!

स्व तनु सम प्रिय और न आना। सो भी संग न चलत निदाना।।

अपने शरीर के समान अन्य कुछ वस्तु प्रिय नहीं है, वह शरीर भी आपके साथ नहीं जाएगा। फिर अन्य कौन-सी वस्तु को तू अपना मानकर फूले और भगवान भूले फिर रहे हो। सर्व संपत्ति तथा परिजन एक स्वपन जैसा साथ है। कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि मेरी अपनी राय यह है कि पूर्ण संत से सत्य नाम (सत्य साधना का मंत्र) लेकर अपने जीव का कल्याण कराओ और जब तक आप स्वपन (संसार) में हैं, तब तक स्वपन देखते हुए पूर्ण संत की शरण में जाकर सच्चा नाम प्राप्त करके अपना मोक्ष कराओ। सर्व प्राणी जीवन रूपी रेलगाड़ी (Train) में सफर कर रहे हैं। जिस डिब्बे (Compartment) में बैठे हो, वह आपका नगर है। जिस सीट पर बैठे हो, वह आपका परिवार है। जिस-जिसकी यात्रा पूरी हो जाएगी, वे अपने-अपने स्टेशन पर उतरते जाएंगे। यही दशा इस संसार की है। जैसे यात्रियों को मालूम होता है कि हम कुछ देर के साथी हैं। सभ्य व्यक्ति उस सफर में प्यार से रहते हैं। एक-दूसरे का सहयोग करते हैं। इसी प्रकार हमने अपने स्वपन वाले समय को व्यतीत करना है। स्वपन टूटेगा यानि शरीर छूटेगा तो पता चलेगा यह क्या था? वह परिवार तथा संपत्ति कहाँ है जिसको संग्रह करने में अनमोल जीवन नष्ट कर दिया। संसार के अंदर परमात्मा के अतिरिक्त ऐसा कोई नहीं है जो मत्यु के समय में यम के दूत कण्ठ को बंद करेंगे, उस समय आपकी सहायता करे। परमेश्वर उसी की मदद करता है जिसने पूर्ण संत से दीक्षा ले रखी होगी। परमेश्वर उस सतगुरू के रूप में उपदेशी की सहायता करता है। इसलिए सतगुरू जी की शरण में आने के पश्चात् ज्ञानवान साधक परमेश्वर में ऐसी लग्न लगाए जैसी 1. मग 2. पतंग 3. सती 4. शूरवीर लगाते हैं। अपने उद्देश्य से पीछे नहीं हटते। शूरवीर टुकड़े-टुकड़े होकर पथ्वी पर गिर जाना बेहतर मानते हैं। पीछे कदम नहीं हटाते। पुराणों में तथा श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 2 श्लोक 38 में कहा है कि अर्जुन! यदि सैनिक युद्ध में मारा जाता है तो स्वर्ग में सुख प्राप्त करता है। भक्त भक्ति मार्ग में संघर्ष करते हुए भक्ति करके शरीर त्याग जाता है तो सतलोक सुख सागर में सदा के लिए सुखी हो जाता है। जन्म-मरण का संकट सदा के लिए समाप्त हो जाता है। जैसे

हमारा जन्म पृथ्वी पर हुआ। हमारे को ज्ञान नहीं था कि हम किसके घर पुत्र या पुत्री रूप में जन्म लेंगे। फिर हमारे को नहीं पता था कि हमारा विवाह संयोग किसके साथ होगा? यह भी ज्ञान नहीं था कि हमारे घर बेटा जन्म लेगा या बेटी? यह सब पूर्व जन्म के संस्कारवश होता चला गया। आपस में कितना प्यार तथा अपनापन बन गया। सदा साथ रहने की इच्छा रहती है। कोई ना मरे, यह कामना करते रहते हैं। इस काल ब्रह्म के लोक में कोई सदा नहीं रहेगा। एक-एक करके पहले-पीछे सब मरते जाएंगे। सारे जीवन में जो संपत्ति इकट्ठी की थी, वह यहीं रह जाएगी। जीव खाली हाथ जाएगा। परंतु जो पूर्ण संत से सच्चे नाम की दीक्षा लेकर साधना करेगा, वह सत्यलोक चला जाएगा। वहाँ पर ऐसे ही जन्म होगा जैसे पृथ्वी पर होता है। उसी प्रकार परिवार बनता चला जाएगा। वहाँ पर कोई कर्म नहीं करना पड़ता। सर्व खाद्य पदार्थ प्रचूर मात्रा में सत्यलोक में हैं। सदाबहार पेड़-पौधे, फुलवाड़ी, मेवा (काजू, किशमिश, मनुखा दाख आदि) दूधों के समुद्र (क्षीर समुद्र) हैं। सतलोक में वृद्ध अवस्था नहीं है। मृत्यु भी नहीं है। इसको अक्षय मोक्ष कहते हैं। पूर्ण मुक्ति कहते हैं जो गीता अध्याय 18 श्लोक 62 तथा अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है तथा जिस सिद्धी मोक्ष शक्ति को ''नैष्कर्म्य'' सिद्धि कहा है जिसका वर्णन गीता अध्याय 3 श्लोक 4, अध्याय 18 श्लोक 49 से 62 में है। इस काल ब्रह्म यानि ज्योति निरंजन के इक्कीस ब्रह्माण्डों के क्षेत्र में सर्व प्राणी कर्म करके ही आहार प्राप्ति करते हैं। सत्यलोक में ऐसा नहीं है। वहाँ बिना कर्म किए सर्व सुख पदार्थ प्राप्त होते हैं। जैसे बाग में फलों से लदपद वृक्ष तथा बेल होते हैं। फल तोड़ो और खाओ। सर्व प्रकार का अनाज भी ऐसे ही उगा रहता है। सदा बहार हैं। जो इच्छा है, बनाओ और खाओ। वहाँ पर खाना बनाना नहीं पड़ता। भोजनालय में रखो जो खाना चाहते हो, अपने आप तैयार हो जाता है। यह सब परमेश्वर की शक्ति से होता है। उस सतलोक (शाश्वत स्थान) को प्राप्त करने के लिए आप जी को सती तथा शूरमा की तरह कुर्बान होना पड़ेगा। भावार्थ है कि अपने उद्देश्य यानि पूर्ण मोक्ष प्राप्ति के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए संसार के सर्व लोभ-लाभ त्यागने पड़ें तो विचारने की आवश्यकता नहीं है। तुरंत छोड़ो और अपने स्मरण ध्यान में मगन रहो। यदि सतगुरू की शरण ग्रहण नहीं की तो जिस समय अंत समय आएगा, तब भक्तिहीन प्राणी के कंठ को यमदूत बंद करते हैं। उन यमदूतों से परिवार का कोई व्यक्ति नहीं छुड़वा सकता। केवल सतगुरू जी उस आपत्ति के समय सहायता करते हैं। इसलिए परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि:-

अंत समय जम दूत गला दबावैं। ता समय कहो कौन छुड़ावै।।
सतगुरू एक छुड़ावन हारा। निश्चय कर मानहु कहा हमारा।।

यदि कोई भक्त ज्ञान समझकर दीक्षित होकर अन्य भोले-भूले जीवों को ज्ञान चर्चा करके सत्य ज्ञान प्रचार द्वारा सतगुरू शरण में लाकर दीक्षा दिलाता है तो उसको एक जीव को सत्य भक्ति मार्ग बताकर गुरू से दीक्षा दिलाने का इतना पुण्य होता है जितना एक करोड़ गायों को कसाई से बचाने का मिलता है। एक मानव का जीवन इतना बहुमुल्य तथा इतने पुण्यों से प्राप्त होता है। यदि कोई मूर्ख प्रचारक मान-बड़ाई के वश होकर स्वयं दीक्षा देता है, स्वयं गुरू बन बैठता है तो वह महा अपराधी होता है। उससे परमेश्वर रूष्ट हो जाता है तथा काल उसको कान पकड़कर घसीटकर ले जाता है। जैसे खटिक (कसाई) बकरे-बकरी को ले जाता है। कबीर सागर के अध्याय ''अम्बुसागर'' पृष्ठ 48 पर प्रमाण है कि :-

तब देखा दूतन कहं जाई। चौरासी तहां कुण्ड बनाई।।
कुण्ड-कुण्ड बैठे यमदूता। देत जीवन कहं कष्ट बहुता।।

तहां जाय हम ठाड (खड़े) रहावा। देखत जीव विनय बहुत लावा।।

''झूठे कड़िहार (नकली सतगुरू) की दशा''

पड़े मार जीव करें बहु शोरा। बाँध–बाँध कुंडन में बोरा।।
लाख अठाइस पड़े कड़िहारा। बहुत कष्ट तहां करत पुकारा।।
हम भूले स्वार्थ संगी। अब हमरे नाहीं अर्धंगी।।
हम तो जरत हैं अग्नि मंझारा। अंग अंग सब जरत हमारा।।
कौन पुरूष अब राखे भाई। करत गुहार चक्षु ढल जाई।।

''ज्ञानी (कबीर जी) वचन''

करूणा देख दया दिल आवा। अरे दूत त्रास भास दिखावा।।

यह वाणी बनावटी है, वास्तविक वाणी नीचे है।

दुर्दशा देख दया दिल आवा। अरे दूत तुम जीवन भ्रमावा।।
जीव तो अचेत अज्ञाना। वाको काल जाल तुम बंधाना।।
चौरासी दूतन कहं बांधा। शब्द डोर चौदह यम सांधा।।
तब हम सबहन कहं मारा। तुम हो जालिम बटपारा।।
हमरे भगतन को तुम भ्रमावा। पल पल सुरति जीवन डिगावा।।
गहि चोटि दूत घसियाए। यम रू दूत विनय तब लाए।।

''दूत (जो नकली कड़िहार बने थे) वचन''

चुक हमारी छमा कर दीजै। मन माने तस आज्ञा कीजै।।
हम तो धनी (काल) कहयो जस कीन्हा। सो वचन मान हम लीन्हा।।
अब नहीं जीव तुम्हारा भ्रमावैं। हम नहीं कबहू गुरू कहावैं।।

''ज्ञानी (कबीर जी) वचन''

सुन ज्ञानी बहुते हंसाई। दूतन दुष्ट बंध न छोड़ो जाई।।
पल इक जीवन सुख दीना। तब संसार गमन हम कीन्हा।।

भावार्थ :- कबीर परमेश्वर जी ने बताया कि जो झूठे सतगुरू बनकर मान-बड़ाई के वश होकर काल प्रेरणा से भोले जीवों को भ्रमाया करते थे। उनको भी दण्ड मिलता है। उनको भी नरक में डालकर यातनाऐं दी जाती हैं। जब मैं उस नरक के पास गया जिसमें वे मान-बड़ाई के भूखे नकली कड़िहार (संसार से काड़ने वाले यानि सतगुरू) बनकर महिमा बनाए हुए थे। लाखों जीवों को शिष्य बनाकर नरक में ले गए। फिर परमेश्वर के विद्यान अनुसार वे भी अपराधी होने के कारण नरक में पड़े थे। उस नरक क्षेत्र में कुण्ड बने हैं। प्रत्येक कुण्ड में जीव पड़े है तथा यमदूत सता रहे हैं। वे अठाईस लाख नकली सतगुरूओं ने मुझे देखकर अर्जी लगाई कि हमें बचा लो प्रभु! कारण यह था कि जो यमदूत उन्हें नरक में मार-पीट रहे थे, वे सब परमेश्वर कबीर जी की शक्ति के सामने काँपने लगे। इस कारण से उन नकली सतगुरूओं को लगा कि ये कोई परम शक्ति वाले देव हैं। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि तुमने भोले जीवों को भ्रमित किया। अपने आपको पूर्ण सतगुरू सिद्ध किया। तुम्हें पता भी था कि तुम्हारे पास नाम दीक्षा का अधिकार नहीं। तुम्हें पूर्ण मोक्ष का ज्ञान नहीं। अपने स्वार्थवश लाखों मनुष्यों के अनमोल जीवन का नाश कर दिया। वे काल जाल में फंसे रह गए। फिर मैंने उन दूतों (काल के बनाए कड़िहारों) को तथा अन्य यमदूतों को मारा, चोटी पकड़कर घसीटा। फिर नकली सतगुरूओं ने कहा कि हमने तो अपने धनी यानि

मालिक काल ब्रह्म की आज्ञा का पालन किया है। अब आप जैसे कहोगे, हम वैसे करेंगे। मैंने कहा कि अब तुमको छोड़ा नहीं जाएगा। जो जीव उन नकली गुरूओं के शिष्य बनकर जीवन नष्ट कर गए थे। वे भी वहीं उनके साथ नरक में पड़े थे। जब तक मैं (कबीर परमेश्वर जी) वहाँ रहा, उन जीवों को नरक का कष्ट नहीं हो रहा था। इस प्रकार उनको कुछ समय का सुख देकर वहाँ से चलकर संसार में आया। मेरे आने के पश्चात् वे नकली गुरूओं तथा उनके भौंदू शिष्यों को फिर से नरक की यातना प्रारम्भ हो गई। इसलिए पूर्वोक्त वाणी में कहा है कि यदि कोई प्रचारक स्वयं गुरू बन बैठा तो परमेश्वर रूष्ट हो जाएगा और काल कान ऐंठेगा अर्थात् कष्ट देगा। इसलिए हे सज्जन पुरूष! कभी ऐसी गलती न करना। मेरे वचन को प्रमाणित मानना।

''भक्त का स्वभाव कैसा हो?''

(अनुराग सागर के पष्ठ 6 से वाणी नं. 7 से 17)

धर्मदास वचन

मंतक भाव प्रभु कहो बुझाई। जाते मनकी तपनि नसाई।।
केहि विधि मरत कहो यह जीवन। कहो विलोय नाथ अमंतधन।।

कबीर वचन-मंतक के दंष्टांत (उदाहरण)

धर्मदास यह कठिन कहानी। गुरूगम ते कोई विरले जानी।।

भंगी का दंष्टांत (उदाहरण)

मंतक होय के खोजहिं संता। शब्द विचारि गहैं मगु अन्ता।।
जैसे भंग कीट के पासा। कीट गहो भंग शब्द की आशा।।
शब्द घातकर महितिहि डारे। भंगी शब्द कीट जो धारे।।
तब लैगौ भंगी निज गेहा। स्वाती देह कीन्हो समदेहा।।
भंगी शब्द कीट जो माना। वरण फेर आपन करजाना।।
बिरला कीट जो होय सुखदाई। प्रथम अवाज गहे चितलाई।।
कोइ दूजे कोइ तीजे मानै। तन मन रहित शब्द हित जानै।।
भंगी शब्द कीट ना गहई। तौ पुनि कीट आसरे रहई।।
एक दिन कीट गहेसी भंग भाषा। वरण बदलै पूरवै आशा।।

''मंतक के और दंष्टांत''

(अनुराग सागर के पंष्ठ 7 से वाणी नं. 7 से 20)

सुनहु संत यह मंतक सुभाऊ। बिरला जीव पीव मग धाऊ।।
औरै सुनहु मंतक का भेवा। मंतक होय सतगुरू पद सेवा।।
मंतक छोह तजे शब्द उरधारे। छोह तजै तो जीव उबारे।।

पंथ्वी का दंष्टांत

जस पंथ्वी के गंजन होई। चित अनुमान गहे गुण सोई।।
कोई चन्दन कोई विष्टा डारे। कोई कोई कंषि अनुसारे।।

गुण औगुण तिन समकर जाना। तज विरोध अधिक सुखमाना।।

ऊख का दष्टांत

औरो मतक भाव सुनि लेहू। निरखि परखि गुरू मगु पगु देहू।।
जैसे ईख किसान उगावै। रती रती कर देह कटावे।।
कोल्हू महँ पुनि ताही पिरावै। पुनि कड़ाह में खूब उँटावे।।
निज तनु दाहे गुड़ तब होई। बहुरि ताव दे खांड विलोई।।
ताहू मांहि ताव पुनि दीन्हा। चीनी तबै कहावन लीन्हा।।
चीनी होय बहुरित तन जारा। ताते मिसरी है अनुसारा।।
मिसरीते जब कंद कहावा। कहे कबीर सबके मन भावा।।
यही विधिते जो शिष करही। गुरू कपा सहजे भव तरई।।

भावार्थ :- अनुराग सागर पष्ठ 6 पर लिखी पंक्ति नं. 7 से 17 तक का भावार्थ है कि धनी धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से विनयपूर्वक प्रश्न किया कि हे प्रभु! मुझे मतक का स्वभाव समझाओ कैसा होता है? किस प्रकार जीवित मरना होता है। हे अमर परमात्मा! हे स्वामी! कप्या बिलोय अर्थात् निष्कर्ष निकालकर वह अमत धन अर्थात् अमर होने का मार्ग बताऐं।

''परमेश्वर कबीर वचन = मतक के दष्टान्त''

परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे धर्मदास! यह जो प्रश्न आपने किया है, यह जटिल कथा प्रसंग है। सतगुरू शरण में ज्ञान का इच्छुक ही इसको समझकर खरा उतरता है।

''भंगी का दष्टांत''

संत-साधकजन जीवित मतक होकर परमात्मा को खोजते हैं। शब्द विचार यानि यथार्थ नाम मंत्रों को समझ विचार करके उस मार्ग के अंत यानि अंतिम छोर तक पहुँचते हैं अर्थात् पूर्ण मोक्ष प्राप्त करते हैं।

जैसे एक भंग (पंखों वाला नीले रंग का कीड़ा) होता है जिसे भंभीरी कहते हैं जिसको इन्जनहारी आदि-आदि नामों से जाना जाता है जो भीं-भीं की आवाज करती रहती है। वह अपना परिवार नर-मादा के मिलन वाली विधि से उत्पन्न नहीं करती। वह एक कीट (कीड़े) विशेष के पास जाती है। उसके पास अपनी भीं-भीं की आवाज करती है। जो कीड़ा उसकी आवाज से प्रभावित हो जाता है। उसको उठाकर पहले से तैयार किया मिट्टी के घर में ले जाती है। वह गोल आकार का दो इंच परिधि का एक-दो मुख वाला गारा का बना होता है। फिर दूसरा-तीसरा ले जाती है। फिर उनके ऊपर अपनी भीं-भीं की आवाज करती रहती है। फिर औस के जल को अपने मुख से लाकर उन कीटों के मुख में डालती है। उस भंभीरी यानि भंग की बार-बार आवाज को सुनकर वह कीट उसी रंग का हो जाता है तथा उसी तरह पंख निकल आते हैं। वह आवाज भी उसी की तरह भीं-भीं करने लगता है। भंभीरी ही बन जाती है। इसी प्रकार पूर्ण संत अपने ज्ञान को भंभीरी की तरह बार-बार बोलकर सामान्य व्यक्ति को भी भक्त बना लेता है। फिर वह भक्त भी सतगुरू से सुने ज्ञान को अन्य व्यक्तियों को सुनाने लगता है। संसार की रीति-रिवाजों को त्याग देने से अन्य व्यक्ति कहते हैं कि इसका रंग-ढ़ंग बदल गया है। यह तो भक्त बन गया है। जैसे भंग (भंभीरी) कीटों को अपनी आवाज सुनाती है तो कोई शीघ्र सक्रिय हो जाता है, कोई दूसरी, कोई

तीसरी बार कोशिश करने से मानता है। इसी प्रकार जब सतगुरू कुछ व्यक्तियों को अपना सत्संग रह-रहकर सुनाते हैं तो कोई अच्छे संस्कार वाला तो शीघ्र मान जाता है, कोई एक-दो बार फिर सत्संग सुनकर मार्ग ग्रहण कर लेता है, दीक्षा ले लेता है। कुछ कीट ऐसे होते हैं, कई दिनों के पश्चात् अपना स्वभाव बदलते हैं। यदि वह कीट भंगी नहीं बना है और उस भंग कीट की शरण में रह रहा है तो अवश्य एक दिन परिवर्तन होगा। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे धर्मदास! यदि शिष्य इसी प्रकार गुरू जी के विचारों को सुनता रहेगा तो उस भंग कीट की तरह प्रभावित होकर संसारिक भाव बदलकर भक्त बनकर हंस दशा को प्राप्त होगा।

पंष्ठ 7 से पंक्ति 7 से 20 तक का भावार्थ :-

कबीर जी ने कहा कि हे संतो! सुनो यह मंतक का स्वभाव। इस प्रकार कोई बिरला जीव ही अनुसरण करता है। वह पीव यानि परमात्मा को प्राप्त करने का मग यानि मार्ग प्राप्त करता है। उपरोक्त यानि भंग वाले उदाहरण के अतिरिक्त और सुनो मंतक का भाव जिससे मंतक यानि जीवित मंतक होकर सतगुरू के पद यानि पद्यति के अनुसार साधना करता है।

''पंथ्वी का उदाहरण''

जैसे पंथ्वी में सहनशीलता होती है। इसी प्रकार पंथ्वी वाले गुण को जो ग्रहण करेगा, वह जीवित मंतक है और वही सफल होता है। पंथ्वी के ऊपर कोई बिष्टा (टट्टी करता है। डालता है, कोई खेती करता है तो चीरफाड़ करता है। कोई-कोई धरती पूजन करता है। पंथ्वी गुण-अवगुण नहीं देखती। जिसकी जैसी भावना है, वह वैसा ही करता है। यह विचार करके धरती विरोध न करके सुखी रहती है।

भावार्थ है कि जैसे जमीन सहनशील है, वैसे ही भक्त-संत का स्वभाव होना चाहिए। चाहे कोई गलत कहे कि यह क्या कर रहे हो यानि अपमान करे, चाहे कोई सम्मान करे, अपने उद्देश्य पर दंढ़ रहकर भक्त सफलता प्राप्त करता है।

''उख (ईख यानि गन्ने) का दंष्टांत''

जैसे किसान ईख बीजता है। उस समय गन्ने के एक-एक फुट के टुकड़े करके धरती में दबा देता है। ईख गन्ना बनने के पश्चात् कोल्हु में पीड़ा जाता है। फिर रस को कड़ाहे में अग्नि की आँच में उबाला जाता है। तब गुड़ बनता है। यदि अधिक ताव गन्ने के रस को दिया जाता है तो वह खांड बन जाता है जो गुड़ से भी स्वादिष्ट होती है। और अधिक ताव देने से चीनी बन जाती है। और भी अधिक गर्म किया जाता है तो मिश्री बन जाता है। फिर मिसरी से कंद बन जाता है। परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि हे धर्मदास! इस प्रकार यदि शिष्य भक्ति मार्ग में कठिनाईयां सहन करता है तो उतना ही परमात्मा का प्रिय बहुमुल्य होता चला जाता है।

मृतकभाव कौन धारण कर सकता है ! छन्द

मिरतक भाव है कठिन धर्मनि, लहे विरलशूरहो ॥
कादर सुनतेहि तनमन दहै,पाछे न चितवतकूरहो॥
ऐसे शिष्य आप सम्हारे, नाव सही गुरुज्ञानको ॥
लहै भेदी भेद निश्चय, जाय दीप अमानको ॥६॥

मृतक ही साधु होता है

सोरठा-मृतक हो सो साधु, सो सतगुरुको पावई॥
मेटे सकल उपाध, तासु देव आसा करें ॥ ६ ॥

साधु किसे कहते हैं

साधूमार्ग कठिन धर्मदासा । रहनी रहे सो साधु सुबासा ॥
पाँचों इन्द्री सम करि राखे । नाम अमीरसनिशिदिन चाखे॥

चक्षुवशीकरण

प्रथमहिं चक्षु इन्द्री कहँ साधे। गुरु गम पंथ नाम अवराधे ॥
सुन्दर रूप चक्षुकी पूजा । रूप कुरूप न भावे दूजा ॥
रूप कुरूपहिं सम करजाने । दरस विदेह सदा सुख माने ॥

श्रवणवशीकरण

इन्द्री श्रवण वचन शुभ चाहै । उत्कट वचनसुनत चित दाहै॥
बोल कुबोल दोउ सह लेखे । हृदय शुद्ध गुरुज्ञान विशेखे ॥

नासिकावशीकरण

नासिका इन्द्री बास अधीना । यहि सम राखे संत प्रवीना॥

जिह्वावशीकरण

जिभ्या इन्द्री चाहै स्वादा । खट्टा मीठा मधुर सवादा ॥
सहज भावमें जो कछु आवे । रूखा फीका नहिं विलगावे ॥
जो कोई पंचामृत ले आवे । ताहि देख नहिं हरष चढ़ावे॥
तजे न रूखा साग अलूना । अधिक प्रेमसौ पावैं दूना ॥

शिश्नवशीकरण

इन्द्री दुष्ट महा अपराधी । कुटिलकाम होई विरलेसाधी॥
कामिनि रूप कालकी खानी । तजहु तासु सँग हो गुरुज्ञानी॥

कामवशीकरण

जबही काम उमंग तन आवै । ताहि समय जो आप जुगावै॥
शब्द विदेह सुरत लै राखे । गहिमन मौन नामरसचाखे ॥
जब निहतत्त्वमें जाय समाई । तबहीं काम रहै मुरझाई ॥

कामदेव लुटेरा है । छन्द

काम परबल अति भयंकर, महा दारुण काल हो॥
सुरदेव मुनिगणयक्षगंधर्व,सबहि कीन्ह विलास हो॥
सबहिं लूटे विरल छूटे, ज्ञान गुण निज दृढ गहे ॥
गुरुज्ञान दीप समीप सतगुरु,भेदमारग तिन लहे॥७॥

कामलुटेरेसे बचने का उपाय

सोरठा-दीपक ज्ञान प्रकाश,भवन उजेरा करि रहो॥
सतगुरुशब्द विलास,भाज चोर अँजोरा जब॥७॥

अनलपक्षिका दृष्टान्त

गुरू कृपासों साधु कहावे । अनलपच्छह्वै लोक सिधावै॥
धर्मदास यह परखो बानी । अनलपच्छ गमकहों बखानी॥
अनलपच्छ जो रहै अकाशा । निशि दिन रहै पवनकी आशा॥
दृष्टिभाव तिनरति विधिठानी । यहविधिगरभ रहेतिहिजानी ॥
अंडप्रकाश कीन्ह पुनि तहवाँ । निराधार आलंबहिं जहवाँ ॥
मारग माहिं पुष्ट भो अंडा । मारग माहिं विरह नौखण्डा॥
मारग माहिं चक्षु तिन पावा । मारग माहिं पंख पर भावा॥
महि ढिग आवा सुधि भइताहीं । इहां मोर आश्रम नहिं आहीं॥
सुरतिसम्हार चले पुनि तहवाँ । मात पिताको आश्रम जहवाँ॥

अनुराग सागर के पृष्ठ 8 तथा 9 का सारांश है कि साधक वही है जो अपनी सर्व इन्द्रियों को संयम में रखता है। जैसा मिल जाए, उसी में संतोष करे। रूप को देखकर उस पर आकर्षित नहीं होवे। कुरूप को देखकर घृणा न करे। दोनों को दिव्य ज्ञान की नजरों से देखे कि ऊपर का चाम गोरा-काला है, शरीर में हाड-माँस सब एक जैसा है तथा जरा-सा रोग होने पर गल जाता है, सडांद (बदबू) मारने लगती है। इस प्रकार विवेक से भक्ति करे। यदि कोई सम्मान करता है, प्यार से बोलता है तो खुशी महसूस न करें। यदि कोई कुबोल (कुवचन) कहता है तो दुःख न मानें। उनकी बुद्धि के स्तर को जानकर शांत रहें। यदि कोई अच्छा भोजन खीर-खाण्ड, हलवा-पूरी खिलाता है तो उसी कारण उससे प्रभावित न हों। उसको उसका कर्म का फल मिलेगा। यदि कोई लुखा-सूखा भोजन खिलाए तो उसको अधिक भाव से प्रेम से खाना चाहिए। काम वासना (Sex) को महत्व न दें, वही भक्त वास्तव में परमेश्वर प्राप्ति कर सकता है। यदि काम वासना परेशान करे तो उसको भक्ति नाम स्मरण में लगाकर आनंद प्राप्त करें। उसी समय काम वासना मुरझा जाती है। काम वासना का नाश करने का तरीका :-

कबीर, परनारी को देखिये, बहन बेटी का भाव। कह कबीर काम नाश का, यही सहज उपाय।।

मोक्ष प्राप्ति का अन्य भाव ''अनल (अलल) पक्षी जैसा भाव''

जैसे एक अनल पक्षी (अलल पंख) आकाश में रहता है। यह पक्षी अब लुप्त हो चुका है। इसके चार पैर होते थे। आगे वाले छोटे और पीछे वाले बड़े। इसका आकार बहुत बड़ा होता था। लम्बे-लम्बे पंख होते थे। पूरा पक्षी यानि युवा पक्षी चार हाथियों को एक साथ उठाकर आकाश में अपने परिवार के पास ले जाता था।

अनल पक्षी (अलल पक्षी) ऊपर वायु में रहता था। वहीं से मादा अनल अण्डे उत्पन्न कर देती थी। वह अण्डे उस स्थान पर छोड़ती थी जहाँ केले का वन होता था। केले एक-दूसरे में फँसकर गहरा वन बना लेते थे। हाथियों का झुण्ड (समूह) यानि सैंकड़ों हाथी भी केले के वन में रहते थे क्योंकि हाथी केले के पेड़ खा जाता है तथा केले के पेड़ों पर ही लेट जाता है। मस्ती करता रहता है। अलल पक्षी का अण्डा वायुमंडल से गुजरकर नीचे पृथ्वी तक आने में हवा के घर्षण से पककर बच्चा तैयार हो जाता था। वह अण्डा केले के पेड़ों के ऊपर गिरता था। केले के पेड़ों की सघनता के कारण वह अण्डा क्षतिग्रस्त नहीं होता था। केवल इतनी गति से केले के पेड़ों को तोड़कर पृथ्वी पर गिरता था कि अण्डा फूट जाए। अण्डे का आकार बहुत बड़ा होता था। उसका कवर भी सख्त मजबूत होता था। बच्चे के बचाव के लिए अण्डे के कवर तथा बच्चे के बीच में गद्देदार पदार्थ होता था जो पृथ्वी के ऊपर गिरते समय बच्चे को चोट लगने से बचाता था। अनल पक्षी का बच्चा पृथ्वी पर अन्य पक्षियों के बच्चों के साथ रहता था। उनसे मिलकर उड़ता था, परंतु उसकी अंतरआत्मा यह मानती थी कि यह मेरा घर-परिवार नहीं है, मेरा परिवार तो ऊपर है। मैंने ऊपर अपने परिवार में जाना है। यह मेरा संसार नहीं है। वह जब युवा हो जाता है तो हाथियों के झुण्ड पर झपट्टा मारता था। चार हाथियों को चारों पंजों से उठाता था तथा एक हाथी को चौंच से पकड़कर उड़ जाता था। अपने परिवार के पास चला जाता था। साथ में उनके लिए आहार भी ले जाता था।

कबीर परमेश्वर जी ने सटीक उदाहरण बताकर भक्त को मार्गदर्शन किया है कि आप इस संसार के स्थाई वासी नहीं हैं। आपको यह छोड़कर जाना है। आपका परिवार ऊपर सत्यलोक में है। आप इस पृथ्वी के ऊपर गिरे हो। तत्त्वज्ञान प्राप्त भक्त के मन की दशा उस अनल (अलल) पक्षी के बच्चे जैसी होनी चाहिए। जब तक सतलोक जाने का समय नहीं आता तो सांसारिक व्यक्तियों के साथ मिलकर शिष्टाचार से रहो। चलते समय इनमें कोई लगाव नहीं रहना चाहिए। अपनी नाम-स्मरण की कमाई तथा पुण्य धर्म की कमाई साथ लेकर उड़ जाना है। अपने परिवार के पास अपने निज घर सतलोक में जाना है।

अनुराग सागर पृष्ठ 10 तथा 11 का सारांश :-

(अनुराग सागर के पृष्ठ 10 से वाणी नं. 11 से 20 शुद्ध करके लिखी हैं।)

''नाम महात्मय''

जबलग ध्यान विदेह न आवे। तब लग जिव भव भटका खावे।।
ध्यान विदेह औ नाम विदेहा। दोइ लख पावे मिटे संदेहा।।
छन इक ध्यान विदेह समाई। ताकी महिमा वरणि न जाई।।
काया नाम सबै गोहरावे। नाम विदेह विरले कोई पावै।।
जो युग चार रहे कोई कासी। सार शब्द बिन यमपुर वासी।।

नीमषार बद्री परधामा। गया द्वारिका का प्राग अस्नाना।।
अड़सठ तीरथ भूपरिकरमा। सार शब्द बिन मिटै न भरमा।।
कहँ लग कहों नाम पर भाऊ। जा सुमिरे जमत्रास नसाऊ।।

नाम पाने वाले को क्या मिलता है?

सार नाम सतगुरू सो पावे। नाम डोर गहि लोक सिधावे।।
धर्मराय ताको सिर नावे। जो हंसा निःतत्त्व समावे।।

सार शब्द क्या है?

(अनुराग सागर के पष्ठ 11 से वाणी)

सार शब्द विदेह स्वरूपा। निअच्छर वहि रूप अनूपा।।
तत्त्व प्रकति भाव सब देहा। सार शब्द नितत्त्व विदेहा।।
कहन सुनन को शब्द चौधारा। सार शब्द सों जीव उबारा।।
पुरूष सु नाम सार परबाना। सुमिरण पुरूष सार सहिदाना।।
बिन रसना के सिमरा जाई। तासों काल रहे मुग्झाई।।
सूच्छम सहज पंथ है पूरा। तापर चढ़ो रहे जन सूरा।।
नहिं वहँ शब्द न सुमरा जापा। पूरन वस्तु काल दिख दापा।।
हंस भार तुम्हरे शिर दीना। तुमको कहों शब्द को चीन्हा।।
पदम अनन्त पंखुरी जाने। अजपा जाप डोर सो ताने।।
सुच्छम द्वार तहां तब परसे। अगम अगोचर सत्पथ परसे।।
अन्तर शुन्य महि होय प्रकाशा। तहंवां आदि पुरूष को बासा।।
ताहिं चीन्ह हंस तहं जाई। आदि सुरत तहं लै पहुंचाई।।
आदि सुरत पुरूष को आही। जीव सोहंगम बोलिये ताही।।
धर्मदास तुम सन्त सुजाना। परखो सार शब्द निरबाना।।

सार शब्द (नाम) जपने की विधि गुरूगमभेद छन्द

अजपा जाप हो सहज धुना, परखि गुरूगम डारिये।।
मन पवन थिरकर शब्द निरखि, कर्म ममन मथ मारिये।।
होत धुनि रसना बिना, कर माल विन निर वारिये।।
शब्द सार विदेह निरखत, अमर लोक सिधारिये।।
सोरठा – शोभा अगम अपार, कोटि भानु शशि रोम इक।।
षोडश रवि छिटकार, एक हंस उजियार तनु।।

धर्मदास का आनन्दोद्‌गार

हे प्रभु तब चरण बलिहारी। किये सुखी सब कष्ट निवारी।।
चक्षुहीन जिमि पावे नैना। तिमि मोही हरष सुनत तव नैना।।

अनुराग सागर पष्ठ 10-11 का भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने नाम की महिमा बताई है। कहा है कि हे धर्मदास! जब तक विदेह का ध्यान साधक को नहीं आता, तब तक जीव संसार में

जन्म-मरण चक्र में भटकता रहता है। यहाँ पर विदेह का अर्थ है परमेश्वर। जैसे धर्मदास जी से परमेश्वर कबीर जी ने कहा था कि मेरे शरीर को परखकर ध्यान से देख, मेरा शरीर आप जैसा पाँच तत्त्व का नहीं है। धर्मदास जी ने हाथ-पैर पकड़कर दबाए तो रबड़ की तरह नरम थे। परमेश्वर ने कहा था कि मैं विदेही हूँ। (राजा जनक को भी विदेही कहा गया है।) विदेह का अर्थ सामान्य व्यक्ति के शरीर से भिन्न है। वह विदेह है। भावार्थ है कि जब तत्त्वज्ञान हो जाता है, तब उस विदेह परमेश्वर में ध्यान लगता है। उसको प्राप्त करने का नाम जाप मंत्र भी विदेह है यानि विलक्षण है। विदेह नाम को सारनाम, सार शब्द, अमर नाम भी कहते हैं। विदेह परमेश्वर में लगन लगे और नाम भी विदेह हो यानि उसी का सारनाम हो। जब इन दोनों को लख लेगा यानि जान लेगा, सत्य रूप में देख लेगा, तब शंका समाप्त होगी। उस विदेह परमेश्वर (सत्य पुरूष) का ध्यान एक क्षण भी हो जाए, उसकी इतनी कीमत है कि कही नहीं जा सकती। काया के नाम यानि देह धारी (माता के गर्भ से उत्पन्न) राम, कष्ण, विष्णु, शिव आदि के नाम तो सब जाप करते हैं, परंतु विदेह परमात्मा का सारनाम कोई बिरला ही प्राप्त करता है।

जैसे कि किंवदन्ती (दंत कथा) है कि जो काशी नगर में मरता है, वह स्वर्ग जाता है। परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि चारों युग तक काशी में निवास करे, परंतु सार शब्द बिना काल के मुख में जाएगा। यदि कोई श्रद्धालु बद्रीनाथ, केदारनाथ आदि धामों पर जाता है, गया जी, द्वारिका, प्रयाग आदि तीर्थों में स्नान करता है, यदि कोई अड़सठ तीर्थों का भ्रमण करता है, यदि कोई (भू) भूमि की परिक्रमा कर लेता है। (गोवर्धन पर्वत की तो बहुत छोटी परिक्रमा है) यानि यदि कोई पथ्वी की परिक्रमा भी क्यों न कर आए, वह भी व्यर्थ है क्योंकि सार शब्द के बिना जीव का भ्रम समाप्त नहीं होता अर्थात् सार शब्द से जीव का मोक्ष हो सकता है। अन्य उपरोक्त साधना शास्त्र विरूद्ध होने के कारण मोक्षदायक नहीं हैं।

अनुराग सागर के पष्ठ 11 का सारांश :-

''सारशब्द (सार नाम) से लाभ''

सारनाम पूर्ण सतगुरू से प्राप्त होता है। नाम प्राप्त करने से सतलोक की प्राप्ति होती है। धर्मराय (ज्योति स्वरूपी निरंजन अर्थात् काल ब्रह्म) भी सार शब्द प्राप्त भक्त के सामने नतमस्तक हो जाता है। सार शब्द की शक्ति के सामने काल ब्रह्म टिक नहीं पाता क्योंकि सार शब्द विदेह परमेश्वर कबीर जी का है। इसलिए सार शब्द ही निःअक्षर का स्वरूप है। यह सार नाम (विदेह नाम) अनूप यानि अद्भुत है। सार शब्द तो विदेह है क्योंकि यह विदेह परमेश्वर का जाप मंत्र है।

कबीर परमेश्वर विदेह हैं। विदेह-विदेह में भी अंतर होता है। जैसे राजा जनक को भी विदेह कहा जाता है और कबीर परमेश्वर जी भी विदेही हैं। जैसे एक सोने का आभूषण दो कैरेट स्वर्ण से बना है। वह भी स्वर्ण आभूषण कहा जाता है। दूसरा 24 कैरेट स्वर्ण से बना है तो दोनों ही स्वर्ण आभूषण कहलाते हैं, परंतु मूल्य में अंतर बहुत होता है। इसलिए कहा है कि जो अन्य प्रभु हैं (श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु, श्री शिव जी तथा राम-कष्ण) वे सब पाँच तत्त्व के शरीर में हैं और परमेश्वर कबीर जी यानि सत्य पुरूष का शरीर निःतत्त्व यानि पाँच तत्त्व से रहित है। इसलिए विदेह परमात्मा का सार शब्द जाप मंत्र है। कहने को तो शब्द बहुत प्रकार के हैं, परंतु सार शब्द से जीव का उद्धार होता है। सतपुरूष का प्रवाना यानि दीक्षा मंत्र सार नाम है और उसका सुमरण भी सार यानि खास विधि से होता है। सार शब्द का जाप बिन जीभ के यानि सुरति-निरति से श्वांस द्वारा स्मरण होता

है। यह भक्ति का सहज व यथार्थ मार्ग है और इस साधना को कोई शूरवीर ही करता है। इस साधना से काल मुरझा जाता है यानि काल ब्रह्म कमजोर (बलहीन) हो जाता है। हे धर्मदास! तेरे को सार शब्द की पहचान करा दी है और तेरे को हंस की पदवी प्राप्त करा दी है। सतलोक में जाने के पश्चात् कोई सुमरण जाप नहीं रहता, न वहाँ काल का जाल देखने को मिलता है। वहाँ पर पूर्ण वस्तु है अर्थात् सर्व वस्तुओं का भण्डार है, किसी चीज का अभाव नहीं है। सत्यलोक में एक अनन्त पंखुड़ियों वाला कमल है जो परमेश्वर का आसन है। उस अमर स्थान तथा अमर पुरूष को प्राप्त करने के लिए अजपा जाप की डोर तान दे अर्थात् सत्यलोक को प्राप्त करने के लिए श्वांस का बिना जीभ के मानसिक जाप किया जाता है, उसको निरंतर कर। जैसे बाण चलाने वाला निशाना लगाते समय तीर को तानकर (कसकर) छोड़ता है। ऐसे नाम के जाप को तान दे। जब अगम अगोचर अर्थात् सबसे ऊपर वाला सर्व श्रेष्ठ सत्य मार्ग परसे यानि प्राप्त हो जाए तो तब वह सूक्ष्म द्वार यानि भंवर गुफा का द्वार दिखाई देता है। अंतरिक्ष में सुन्न स्थान यानि एकांत लोक में प्रकाश दिखाई देता है। वहाँ पर परम पुरूष का निवास है। उस सार शब्द में सुरति (ध्यान) लगाकर वहाँ जाया जाता है। सारशब्द को पहचानकर उसमें सुरति लगाकर भक्त वहाँ जाता है। आदि सुरति अर्थात् सनातन शब्द का ध्यान सत्य पुरूष का है। उसके लिए हे जीव! सोहं शब्द का स्मरण करना, उसी को सोहं जाप कहते हैं। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे धर्मदास! आप सज्जन संत हो, उस सार शब्द को परखो (जाँचो) जो निर्वाण यानि मोक्ष देने वाला है।

''सार शब्द जपने की विधि''

सारनाम का स्मरण बिना रसना (जीभ) के मन तथा पवन यानि श्वांस के द्वारा किया जाता है। यह अजपा (बिना जीभ से) जाप होता है। इस शब्द को निरखे अर्थात् शब्द की जाँच करे। फिर मन को सत्य ज्ञान का मंथन करके मारो यानि विषय विकारों को हटाओ। सार शब्द की साधना बिना जीभ के बिना आवाज किए की जाती है। इस जाप स्मरण के लिए कर यानि हाथ में माल उठाने की आवश्यकता नहीं यानि माला की आवश्यकता नहीं होती अर्थात् सार शब्द बिना हाथ में माला लिए निर वारिये यानि बिना माला के निर्वाह कीजिए। निर्वाह का यहाँ अर्थ है प्रयत्न। ऐसे सार शब्द और उसके स्मरण की विधि निरखकर यानि पहचान (जान) कर सत्यलोक जाईये।

सत्यलोक में सत्यपुरूष जी के शरीर के एक रोम (बाल) का प्रकाश करोड़ सूर्यों के समान है। जो साधक मोक्ष प्राप्त करके सत्यलोक में चले गए या जो वहाँ के आदि वासी हैं, उनके शरीर का प्रकाश 16 सूर्यों के प्रकाश के समान है। सत्यलोक में परमेश्वर के शरीर की शोभा अपार है।

''धर्मदास का आनंदोद्गार''

धर्मदास जी ने परमेश्वर जी का धन्यवाद किया कि आप जी ने वास्तविक ज्ञान तथा जाप मंत्र देकर मेरा कष्ट समाप्त कर दिया। मैं आपकी बलिहारी जाऊँ। जैसे चक्षुहीन (अंधे) को आँखें मिल जाएं। उसी प्रकार आपके अमृत वचन सुनकर मुझे हर्ष हो रहा है। आपने मुझ पर अपार कृपा की है।

अनुराग सागर पृष्ठ 12 का सारांश :-

''कबीर परमेश्वर जी के वचन''

धर्मदास तुम अंस अंकुरी। मोहि मिलेउ कीन्हे दुख दूरी।।

जस तुम कीन्हे मोसंग नेहा। तजि धन धामरू सुत पितु गेहा।।
आगे शिष्य जो अस विधि करि हैं। गुरू चरण मन निश्चल धरि हैं।।
गुरू के चरण प्रीत चित धारै। तन मन धन सतगुरू पर वारै।।
सो जिव मोही अधिक प्रिय होई। ताकहँ रोकि सकै नहिं कोई।।
शिष्य होय सरबस नहीं वारे। हृदय कपट मुख प्रीति उचारे।।
सो जिव कैसे लोग सिधाई। बिन गुरू मिलै मोहि नहिं पाई।।

पृष्ठ 12 का भावार्थ :- इन चौपाईयों में परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी से कहा कि हे धर्मदास! आप हमारे अंकुरी हंस हो। {अंकुरी का अर्थ है जो पूर्व जन्म का उपदेशी होता है और वह किन्हीं कारणों से मुक्त नहीं हो पाता है। उसको अंकुरी हंस कहते हैं। जैसे चनों को पानी में भिगो दिया जाता है तो सुबह तक या एक-दो दिन में उनमें अंकुर निकल आते हैं। कुछ किसान चनों को बीजने से एक दिन पहले पानी छिड़क देते हैं। फिर वह अंकुरित चना शीघ्र उग जाता है। इसी प्रकार पूर्व का उपदेशी प्राणी (स्त्री-पुरूष) शीघ्र ज्ञान ग्रहण करके भक्ति पर लग जाता है। इसलिए परमेश्वर ने धर्मदास जी को अंकुरी हंस कहा है।} आप मेरे को मिले तो तेरा दुःख दूर कर दिया है। जैसे आपने मेरे साथ प्रेम भाव किया है। आपने अपने परिवार तथा धन को त्यागकर मेरे अंदर पूर्ण आस्था और सच्चा प्रेम किया है। भविष्य में यदि कोई भक्त मेरे भेजे अंश से जो सतगुरू होगा, उससे ऐसे ही भाव करेगा। मन को निश्चल करके गुरू के चरणों में धरेगा। जो सतगुरू के ऊपर तन-मन-धन न्यौछावर करेगा, वह जीव मेरे को अधिक प्रिय होगा। उसको सत्यलोक जाने से कोई नहीं रोक सकता। यदि शिष्य होकर समर्पित नहीं होता और हृदय में छल रखता है, ऊपर से दिखावा प्रेम करता है। वह प्राणी सत्यलोक कैसे जा सकेगा क्योंकि गुरू के मिले बिना यानि गुरू के साथ परमात्मा जैसा लगाव किए बिना मुझे (कबीर परमेश्वर जी) को नहीं प्राप्त कर सकता।

उदाहरण :- जैसे गणित के अंदर एक ऋण का प्रश्न आता है, उसमें मूलधन ज्ञात करना होता है। उसमें मानना होता है कि मान लो मूलधन सौ रूपये। वास्तविक मूलधन करोड़ों रूपये की राशि होती है। परंतु पहले सौ रूपये मूलधन माने बिना वह वास्तविक मूलधन नहीं मिल सकता। इसी प्रकार इस अंतिम वाणी का भावार्थ है।

''धर्मदास वचन''

यह तो प्रभु आप ही कीन्हा। नहीं मैं तो हतो बहुत मलीना।।
करके दया प्रभु आप ही आये। पकड़ि बांह प्रभु काल सों छुड़ाये।।

''सृष्टि उत्पत्ति विषय प्रश्न तथा विवेचन''

अब साहब मोंहि देउ बताई। अमर लोग सो कहां रहाई।।
लोक दीप मोहिं बरनि सुनावहु। तृषनावन्तको अमी पियावहु।।
कौन द्वीप हंसको वासा। कौन द्वीप पूरूष रह वासा।।
भोजन कौन हंस तहँ करई। और बानी कहँ पुनि उच्चरई।।
कैसे पूरूष लोक रचि राखा। द्वीपहिं कर कैसे अभिलाखा।।
तीन लोक उत्पत्ती भाखो। वर्णहुसकल गोय जनि राखो।।
काल निरंजन केहि विधि भयऊ। कैसे षोडश सुत निर्मयऊ।।
कैसे चार खानि बिस्तारी। कैसे जीव कालवश डारी।।

कैसे कूर्म शेष उपराजा। कैसे मीन बराहहिं साजा।।
त्रय देवा कौन विधि भयऊ। कैसे महि अकाश निरमयऊ।।
चन्द्र सूर्य कहु कैसे भयऊ। कैसे तारागण सब ठयऊ।।
किहि विधि भइ शरीर की रचना। भाषो साहब उत्पत्ति बचना।।

भावार्थ :- धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से विनयपूर्वक अति आधीन होकर प्रश्न किया कि हे परमेश्वर! कपा करके मुझे यह बताईये कि वह अमर लोक कहाँ पर है?

धर्मदास जी ने वही भूमिका की जो श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 4 श्लोक 32 तथा 34 में कहा है। गीता ज्ञान दाता काल ब्रह्म ने कहा कि हे अर्जुन! यज्ञों यानि धार्मिक अनुष्ठानों का विस्तारपूर्वक ज्ञान (ब्रह्मणः मुखे) सच्चिदानंद घन परमेश्वर अपने मुख कमल से उच्चारण करके वाणी में बताता है। जिसे तत्त्वज्ञान कहते हैं। उसको जानकर सर्व पापों से मुक्त हो जाता है।(अध्याय 4 श्लोक 32)

उस ज्ञान को तू तत्त्वदर्शी संतों के पास जाकर समझ। उनको दण्डवत् प्रणाम करने से वे परमात्म तत्त्व को भली-भांति जानने वाले ज्ञानी महात्मा तुझे तत्त्वज्ञान का उपदेश करेंगे।(अध्याय 4 श्लोक 34)

यहाँ पर दोनों ही अभिनय स्वयं परमेश्वर कबीर जी कर रहे हैं। वे सच्चिदानंद घन ब्रह्म भी हैं और उस समय तत्त्वदर्शी संत यानि सतगुरू का अभिनय भी कर रहे थे। धर्मदास जी अत्यधिक विनम्र व्यक्ति थे। सूक्ष्मवेद में कहा है :-

अति आधीन दीन हो प्राणी। वाकु कहना यह अकथ कहानी।।
जज्ञासु से कहिए ही कहिए। अन् ईच्छुक को भेद ना दीये।।

कबीर परमेश्वर जी ने कहा कि :-

धर्मदास तू अधिकारी पाया। ताते मैं कहि भेद सुनाया।।

धर्मदास जी ने विनम्र भाव से पूछा कि हे परमेश्वर! मुझे बताएें वह अमर लोक कहाँ पर है? जो सत्यलोक और द्वीप आपने बताए हैं, उनको विस्तार से बताने की कपा करें। किस द्वीप में हंस (मुक्त जीव) रहते हैं? परमेश्वर (सत्य पुरूष) का निवास किस लोक में है? सतलोक में जो भक्त रहते हैं, वे कैसा भोजन खाते हैं? कैसी भाषा बोलते हैं यानि प्यार से रहते हैं या यहाँ की तरह छल-कपट तथा गाली-गलौच करते हैं? परमेश्वर ने कैसे लोक की रचना कर रखी है? द्वीपों की रचना करने की कैसे अभिलाषा (प्रेरणा) हुई? तीन लोकों की रचना कैसे की, वह बताएें? मेरे से कुछ न छुपाऐं। सब वंतान्त सुनायें। काल निरंजन की उत्पत्ति कैसे हुई? सोलह पुत्रों की उत्पत्ति कैसे हुई? कैसे चार खानि बनाई? किस प्रकार जीव काल के जाल में फँसे? कूर्म तथा शेष की उत्पत्ति कैसे हुई? मीन, बरहा तीनों देवताओं (ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव) की उत्पत्ति कैसे हुई? कैसे मही (पथ्वी) तथा आकाश रचे? सूर्य, चाँद तथा तारों की रचना कैसे की? हे परमात्मा! शरीर आदि की रचना सहित सर्व ज्ञान सुनाओ ताकि मेरे मन की शंका समाप्त हो जाए।

अनुराग सागर के पष्ठ 13 का सारांश :-

छन्द

आदि उत्पत्ति कहो सतगुरू, कपाकरी निजदास को।।
बचन सुधा सु प्रकाश कीजै, नाश हो यमत्रासको।।
एक एक विलोयबर्णहु, दास मोहि निज जानिकै।।
सत्य वक्ता सदगुरू तुम, कहूँ मैं निश्चय मानिकै।।

सोरठा–निश्चय बचन तुम्हार, मोहिं अधिक प्रियताहिते।।
लीला अगम अपार, धन्यभाग दर्शन दिये।।

भावार्थ :- धर्मदास जी ने कहा कि हे सतगुरू जी! आप सत्य वक्ता हैं। जो स्पष्ट वचन आपने कहे हैं, किसी ने नहीं कहे। मुझे अपना दास जानकर एक-एक वचन विलोकर यानि पूर्ण विस्तार से बताऐं। मेरे धन्य भाग हैं कि मुझे आपके दर्शन हुए।

''कबीर वचन''

धर्मदास अधिकारी पाया। ताते मैं कहि भेद सुनाया।।
अब तुम सुनहु आदिकी बीनी। भाषों उत्पत्ति प्रलय निशानी।।

सष्टि के आदि में क्या था?

तब की बात सुनहु धर्मदासा। जब नहीं महि पाताल आकाशा।।
जब नहिं कूर्म बराह और शेषा। जब नहिं शारद गौरि गणेशा।।
जब नहिं हते निरंजन राया। जिन जीवन कह बांधि झुलाया।।
तेतिस कोटि देवता नाहीं। और अनेक बताऊ काहीं।।
ब्रह्मा विष्णु महेश न तहिया। शास्त्र वेद पुराण न कहिया।।
तब सब रहे पुरूष के माहीं। ज्यों बट वक्ष मध्य रह छाहीं।।

छन्द

आदि उत्पत्ति सुनहु धर्मनि, कोइ न जानत ताहिहो।।
सबहि भो बिस्तर पाछे, साख (गवाही) देउँ मैं काहि हो।।
बेद चारों नाहिं जानत, सत्य पुरूष कहानियाँ।।
वेद को तब मूल नाहीं, अकथकथा बखानियाँ।।
सोरठा–निराकरतै वेद, आदिभेद जाने नहीं।।
पण्डित करत उछेद, मते वेद के जग चले।।

भावार्थ :- अनुराग सागर के पष्ठ 13 की 7वीं पंक्ति से 20वीं पंक्ति में अंकित चौपाईयों में परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि हे धर्मदास! तू इस तत्त्वज्ञान को सुनने का अधिकारी मिला है। इसलिए तेरे को यह ज्ञान बताया। अब तेरे को आदि यानि प्रारम्भ की रचना का ज्ञान करवाता हूँ।

''सष्टि की आदि में क्या था?''

हे धर्मदास! उस समय की बात सुन, जिस समय न तो पथ्वी थी, न आकाश तथा पाताल बने थे। न तब कूर्म, शेष, बराह थे, न शारदा, पावर्ती तथा गणेश की उत्पत्ति हुई थी। उस समय ज्योति स्वरूपी काल निरंजन भी नहीं जन्मा था जिसने जीवों को कर्मों के बंधन में बाँध रखा है। और क्या बताऊँ उस समय न तो तैंतीस करोड़ देवता थे, न ब्रह्मा, विष्णु, महेश का जन्म हुआ था। तब न चारों वेद थे, न पुराण आदि शास्त्र थे।

तब सब रहे पुरूष के मांही। ज्यों वट वक्ष मध्य रहे बीज में छुपाई।।

उस समय सर्व रचना परमेश्वर यानि सत्यपुरूष के अंदर थी। जैसे वट वक्ष (बड़ का वक्ष) बीज में (जो राई के दाने के समान होता है) छुपा होता है। ऐसे सर्व रचना परमेश्वर में बीज रूप में रखी थी। परमेश्वर को भगलीगर भी कहा जाता है। जैसे एक जादूगर (भगलीगर) अपने मुख में एक काँच की छोटी-सी गोली डालता है। फिर मुख से आधा किलोग्राम का पत्थर निकाल देता

है। इसी प्रकार परमात्मा ने सर्व रचना अपने वचन से अपने शरीर के अंदर से बाहर निकाली है। हे धर्मनि! आदि यानि सर्वप्रथम वाली रचना सुनाता हूँ जिसको कोई नहीं जानता और जो मैं बताने जा रहा हूँ, उसका साखी यानि साक्षी (गवाह) किसे बनाऊँ क्योंकि सब उपरोक्त देवता तथा पथ्वी-आकाश आदि-आदि बाद में उत्पन्न किए हैं। आदि की उत्पत्ति का स्पष्ट वर्णन वेदों में भी नहीं है। वेद भी सत्यपुरूष की सत्य कथा को नहीं जानते। जो चार वेद काल निरंजन (जिसे भूल से निराकार मानते हैं) के श्वांसों से निकले थे। काल ने वेद का सत्यज्ञान वाला भाग नष्ट कर दिया था। शेष भाग को ऋषि कष्ण द्वैपायन (जिसे वेदव्यास कहते हैं) ने बेद को चार भागों में बाँटा तथा कागज के ऊपर लिखा। वेदों वाला अधूरा ज्ञान है। उसी ज्ञान को पंडितजन जनता में सुनाते हैं। जिस कारण से सर्व मानव वेदों के अनुसार साधना करने लगे हैं।

(अनुराग सागर के पष्ठ 14 से वाणियाँ)

''सष्टि की उत्पत्ति (सत्य पुरूष द्वारा की गई रचना)''

सत्य परूष जब गुप्त रहाये। कारण करण नहीं निरमाये।।1
समपुट कमल रह गुप्त सनेहा। पुहुप माहिं रह पुरूष विदेहा।।2
इच्छा कीन्ह अंश उपजाये। हंसन देखि हरष बहुपाये।।3
प्रथमहिं पुरूष शब्द परकाशा। दीप लोक रचि कीन्ह निवासा।।4
चारि कर सिंहासन कीन्हा। तापर पुहुप दीपकर चीन्हा।।5
पुरूष कला धरि बैठे जहिया। प्रगटी अगर वासना तहिया।।6
सहस अठासी दीप रचि राखा। पुरूष इच्छातैं सब अभिलाखा।।7
सबै द्वीप रह अगर समायी। अगर वासना बहुत सुहायी।।8

भावार्थ :- वाणी नं. 1 :- सत्यपुरूष अर्थात् अविनाशी परमेश्वर गुप्त रहते थे। उस समय कुछ भी रचना नहीं की थी।

वाणी नं. 2 :- एक असंख्य पंखुड़ी का कमल का फूल था। उसके ऊपर परमेश्वर विराजमान थे। परमात्मा विदेह हैं, निराकार नहीं हैं। विदेह का अर्थ शरीर रहित यहाँ नहीं है। जैसे धर्मदास जी को कबीर परमेश्वर जी ने कहा था कि मैं विदेह हूँ। इसलिए आपका भोजन नहीं खाऊँगा। धर्मदास जी ने कहा कि आप जी का शरीर मैं प्रत्यक्ष देख रहा हूँ। आप बातें कर रहे हो। वस्त्र पहने हुए हो। आपकी एक जिंदा बाबा वाली वेशभूषा है। आप अपने आपको विदेह कह रहे हो। यह भेद समझाओ। कबीर परमेश्वर जी ने कहा कि हे धर्मदास! मेरे हाथों को छूकर देख। धर्मदास जी ने परमेश्वर जी के चरण छूए तो रूई जैसे नरम (मुलायम) थे। धर्मदास जी हैरान थे। तब परमेश्वर जी ने कहा कि हे धर्मदास! मेरा शरीर आप जैसा पाँच तत्त्व से (नर-मादा से) निर्मित नहीं है। इसलिए मैं विदेही हूँ यानि मेरा विलक्षण शरीर है। विदेही का अर्थ है भिन्न शरीर। जैसा कि वाणी नं. 2 में कहा है कि परमात्मा कमल पुष्प पर विराजमान थे।

वाणी नं. 3 :- स्वेच्छा से अंश उत्पन्न किए। उनको देखकर अति प्रसन्न हुए।

वाणी नं. 4 :- सर्व प्रथम (कमल पुष्प पर बैठे-बैठे) परमेश्वर ने एक वचन से सर्व लोकों तथा द्वीपों की रचना की। फिर उन लोकों में स्वयं निवास किया और द्वीपों में अपने अंश यानि वचन से उत्पन्न पुत्रों को रहने की आज्ञा दी।

सर्व प्रथम सत्य पुरूष जी ने ऊपर के चार अविनाशी लोकों की रचना की। 1. अकह (अनामी) लोक 2. अगम लोक 3. अलख लोक 4. सत्यलोक।

वाणी नं. 5 :- चारिकर सिंहासन कीन्हा। तापर पुहुप द्वीपर कर चीन्हा।।

भावार्थ :- इन चारों लोकों की रचना करके परमेश्वर जी ने प्रत्येक लोक में कमल के फूल के आकार के सिंहासन की रचना की।

वाणी नं. 6 :- उन चारों लोकों में एक-एक कमल पुष्पनुमा सिंहासन की रचना करके पुरूष (सत्य पुरूष) के रूप में यानि एक सम्राट के समान मुकुट पहनकर ऊपर छत्र तानकर महाराजाओं की तरह बैठ गए।

उसके पश्चात् आगे की रचना की इच्छा प्रकट हुई। फिर अठासी हजार द्वीपों की रचना की।

''सोलह पुत्रों (सुतों) को उत्पन्न करना''

दुजे शब्द भयेजु पुरूष प्रकाशा। निकसे कूर्मचरण गहि आशा।।9
तीजे शब्द भयेजु पुरूष उच्चारा। ज्ञान नाम सुत उपजे सारा।।10
टेकी चरण सम्मुख है रहेऊ। आज्ञा पुरूष द्वीप तिन्ह दएऊ।।11
चौथे शब्द भये पुनि जबहीं। विवेकनाम सुत उपजे तबहीं।।12
आप पुरूष किये द्वीप निवासा। पंचम शब्द सो तेज प्रकासा।।13
पांचवे शब्द जब पुरूष उच्चारा। काल निरंजन भी औतारा।।14
तेज अंगते काल है आवा। ताते जीवन कह संतावा।।15
जीवरा अंश पुरूष का आहिं। आदि अंत कोउ जानत नाहीं।।16
छठे शब्द पुरूष मुख भाषा, प्रगटे सहजनाम अभिलाषा।।17
सतयें शब्द भयो संतोषा। दीन्हो द्वीप पुरूष परितोषा।।18
अठयें शब्द पुरूष उचारा। सुरति सुभाष द्वीप बैठारा।।19
नवमें शब्द आनन्द अपारा। दशयें शब्द क्षमा अनुसारा।।20
ग्यारहें शब्द नाम निष्कामा। बारहें शब्द जलरंगी नामा।।21
तेरहें शब्द अचिंत सुत जाने। चौदहें शब्द सुत प्रेम बखाने।।22
पन्द्रहें शब्द सुत दीन दयाला। सोलहें शब्द में धैर्य रसाला।।23
सत्रहवें शब्द सुतयोग संतायन। एक नाल षोडषसुत पायन।।
शब्दहिते भयो सुतन अकारा। शब्दते लोक द्वीप विस्तारा।।
अग्र अभी दिव्य अंश अहारा। द्वीप द्वीप अंशन बैठारा।।
अंशन शोभा कला अनन्ता। होत तहां सुख सदा बसन्ता।।
अंशन शोभा अगम अपारा। कला अनन्त को वरणै पारा।।
सब सुत करें पुरूष को ध्याना। अमी अहार सदासुख माना।।
याही बिधि सोलह सुत भेऊ। धर्मदास तुम चितधरि लेऊ।।
द्वीप करी को अनंत शोभा, नहि बरणतसो बने।।
अमितकला अपार अद्भुत, सुनत शोभा को गिने।।
पुरके उजियार से सुन, सबै द्वीप अजो रहो।।
सत पुरूष रोम प्रकाश एकहि, चन्द्र सूर्य करोर हो।।
सोरठा–सतगुरू आँन धाम, शोकमोहदुःख तहँ नहीं।।
हंसन को विश्राम, पुरूष दरश अँचवन सुधा।।

भावार्थ :- पंक्ति नं. 9 में कहा कि परमात्मा ने दूसरे शब्द से कूर्म की उत्पत्ति की। फिर पंक्ति

नं. 10 से 13 तक कहा है कि तीसरे शब्द से ज्ञान नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। चौथे शब्द से विवेक नामक, पाँचवे शब्द से तेज नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। इसके पश्चात् पंक्ति नं. 14, 15, 16 बनावटी यानि झूठी हैं क्योंकि पंक्ति नं. 13 में वाणी स्पष्ट करती है।

आप पुरूष रहे द्वीप निवासा। पंचम शब्द तेज प्रकाश।।

भावार्थ है कि परमात्मा ने स्वयं अपने द्वीप में बैठे-बैठे वहाँ से पाँचवां शब्द उच्चारण करके पाँचवां पुत्र तेज उत्पन्न किया।

पंक्ति नं. 14 :- पाँचवे शब्द पुरूष उच्चारा। काल निरंजन भो अवतारा।।

पंक्ति नं. 15 :- तेज अंग ते काल है आया। ताते जीवन कहै सतावा।।

पंक्ति नं. 16 :- जीवरा अंश पुरुष का आही। आदि अंत कोई जानत नाहीं।।

भावार्थ पंक्ति नं. 14 से 16 तक बनावटी वाणी बनाकर अज्ञानता स्पष्ट की है। जब 13वीं पंक्ति में स्पष्ट है कि पाँचवें शब्द से परमात्मा ने तेज की उत्पत्ति की। फिर पंक्ति नं. 14 से 16 में यह कहना कि तेज से काल निरंजन का जन्म हुआ, कितनी मूर्खता है। काल निरंजन को तेज का पुत्र सिद्ध कर दिया जो गलत है। इस प्रकार तो तेरह सुत बनते हैं जो गलत है। दूसरा प्रमाण यह है कि पंक्ति नं. 9 से 13 तथा 17 से 23 तक अनुराग सागर के पष्ठ 14 में तथा पष्ठ नं. 15 पर प्रथम पंक्ति में प्रत्येक पुत्र के विषय में एक-एक वचन से उत्पत्ति कही है। तो पंक्ति नं. 13 में स्पष्ट है तेज की उत्पत्ति पाँचवे शब्द से परमेश्वर जी ने की। फिर तेज से काल निरंजन की उत्पत्ति बताना बनावटी वाणी का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

वास्तव में परमेश्वर जी ने 17 वचनों से रचना की जो प्रथम चरण में की थी। एक वचन से सर्व लोक तथा लोकों में भिन्न-भिन्न द्वीप बनाए। फिर 16 वचनों से 16 पुत्रों की रचना की।

दूसरे चरण में अक्षर पुरूष को मान सरोवर में सोये हुए को जगाने तथा निकालने के लिए सत्यपुरूष जी ने अमत जल से एक अण्डा वचन से बनाया तथा उस अण्डे में वचन से एक आत्मा प्रवेश की। अण्डे का आकार बहुत बड़ा था। उसको सरोवर के जल में छोड़ दिया। उसकी गड़गड़ाहट की आवाज सुनकर अक्षर पुरूष निन्द्रा से जागा और अण्डे की और कोप से देखा। उस क्रोध से अण्डा फूट गया। उसमें से ज्योति निरंजन यानि काल निरंजन निकला। उन दोनों (अक्षर पुरूष तथा काल निरंजन) जिनको गीता अध्याय 15 श्लोक 16 में क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष कहा है) को अचिन्त के द्वीप में रहने की आज्ञा दी। फिर काल निरंजन ने तीन बार (सत्तर युग, सत्तर युग तथा 64 युग) तपस्या करके यह इक्कीस ब्रह्माण्ड का क्षेत्र प्राप्त किया। विस्तत सष्टि रचना कपा पढ़ें इसी पुस्तक के पष्ठ 603 से 670 तक। यदि प्रमाण देखना है तो कबीर सागर के अध्याय स्वस्मबेद बोध पष्ठ 90 से 92 तक तथा सर्वज्ञ सागर के पष्ठ 137 तथा अध्याय कबीर बानी के पष्ठ 117, 119 तथा 123 पर पढ़ें। काल निरंजन की उत्पत्ति अण्डे से हुई थी।

''अनुराग सागर पष्ठ 12 से 68 का सारांश''

अनुराग सागर अध्याय में पष्ठ 12 से 68 तक सष्टि की रचना तथा काल के साथ वार्ता संबंधी अमत ज्ञान है। यथार्थ रूप से सष्टि रचना का ज्ञान पढ़ें इसी पुस्तक में अंदर लिखे पष्ठ 603 से 670 तक।

अनुराग सागर पष्ठ 69 से 110 तक तीन युगों में (सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग) में प्रकट होकर जीवों को शरण में लेने का प्रकरण है। जगन्नाथ मंदिर की स्थापना का गलत वर्णन है। इसमें

बहुत मिलवाटी तथा बनावटी वाणी हैं जो गलत हैं। यथार्थ प्रसंग पढ़ें इसी पुस्तक के पृष्ठ 473 से 516 तक अध्याय ''कबीर चरित्र बोध'' के सारांश में।

अनुराग सागर के पृष्ठ 110 से 141 तक परमेश्वर कबीर जी का कलयुग में प्रकट होना, धर्मदास जी को शरण में लेना, 42 वंश तथा 12 पंथों के विषय में वाणियाँ हैं जो कुछ ठीक, कुछ बनावटी हैं। यथार्थ ज्ञान पढ़ें इसी पुस्तक के ज्ञान सागर के सारांश में शीर्षक ''धर्मदास जी की वंश परंपरा के बारे में'' पृष्ठ 77 से 80 तक। अनुराग सागर पृष्ठ 142 से 150 तक सतगुरू की महिमा बताई है।

पृष्ठ 150 से 152 पर कमलों की जानकारी है। सम्पूर्ण कमलों का ज्ञान पढ़ें इसी पुस्तक के पृष्ठ 152 से 161 तक।

पृष्ठ 152 से 155 तक मन के द्वारा पाप कर्म करवाकर जीव को दोषी बनाने के विषय में है।

पृष्ठ 155 से 160 तक सामान्य ज्ञान है।

पृष्ठ 160 से 163 तक संत तथा हंस के लक्षण के बारे में है।

पृष्ठ 115 अनुराग सागर में धर्मदास जी के ज्येष्ठ पुत्र नारायण दास के विषय में ज्ञान है।

''नारायण दास को काल का दूत बताना''

अनुराग सागर पृष्ठ 115 का सारांश :-

परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को सत्यज्ञान समझाकर तथा सत्यलोक में ले जाकर अपना परिचय देकर धर्मदास जी के विशेष विनय करने पर उनको दीक्षा मंत्र दे दिये। प्रथम मंत्र में कमलों के देवताओं के जो जाप मंत्र हैं, वे दिए जाते हैं। धर्मदास जी उन देवों को ईष्ट रूप में पहले ही मानता था, परंतु अब ज्ञान हो गया था कि ये इष्ट रूप में पूज्य तो नहीं हैं, परंतु साधना का एक अंग हैं। धर्मदास की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। उसने अपने परिवार का कल्याण करना चाहा। धर्मदास जी के साथ उनकी पत्नी आमिनी देवी दीक्षा ले चुकी थी। केवल इकलौता पुत्र नारायण दास ही दीक्षा बिना रहता था। धर्मदास जी ने परमात्मा कबीर जी से अपने पुत्र नारायण दास को शरण में लेने के लिए प्रार्थना की।

''धर्मदास वचन''

हे प्रभु तुम जीवन के मूला। मेटेउ मोर सकल तन सूला।।
आहि नरायण पुत्र हमारा। सौंपहु ताहि शब्द टकसारा।।
इतना सुनत सदगुरू हँसि दीन्हा। भाव प्रगट बाहर नहिं कीन्हा।।

भावार्थ :- धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से प्रार्थना की कि हे प्रभु जी! आप सर्व प्राणियों के मालिक हैं। मेरे दिल का एक सूल यानि काँटे का दर्द दूर करें। मेरा पुत्र नारायण दास है। उसको भी टकसार शब्द यानि वास्तविक मोक्ष मंत्र देने की कृपा करें। जब तक नारायण दास आपकी शरण में नहीं आता। तब तक मेरे मन में सूल (काँटे) जैसा दर्द बना है।

धर्मदास जी की बात सुनकर परमात्मा अंदर ही अंदर हँसे। हँसी को बाहर प्रकट नहीं किया। कारण यह था कि परमेश्वर कबीर जी तो जानीजान हैं, अंतर्यामी हैं। उनको पता था कि काल का मुख्य दूत मृत्यु अंधा ही नारायण दास रूप में धर्मदास के घर पुत्र रूप में जन्मा है।

''कबीर परमेश्वर वचन''

धर्मदास तुम बोलाव तुरन्ता। जेहिको जानहु तुम शुद्धअन्ता।।

धर्मदास तब सबहिं बुलावा। आय खसम के चरण टिकावा।।
चरण गहो समरथ के आई। बहुरि न भव जल जन्मो भाई।।
इतना सुनत बहुत जिव आये। धाय चरण सतगुरू लपटाये।।
यक नहिं आये दास नरायन। बहुतक आय परे गुरू पायन।।
धर्मदास सोच मन कीन्हा। काहे न आयो पुत्र परबीना।।

भावार्थ :- कबीर परमेश्वर जी ने कहा कि हे धर्मदास! अपने पुत्र को भी बुला ले और जो कोई आपका मित्र या निकटवासी है, उनको भी बुला लो, सबको एक-साथ दीक्षा दे दूँगा। धर्मदास जी ने नारायण दास तथा अन्य आस-पड़ोस के स्त्री-पुरूषों से कहा कि परमात्मा आए हैं, दीक्षा लेकर अपना कल्याण कराओ। फिर यह अवसर हाथ नहीं आएगा। यह बात सुनकर आसपास के बहुत से जीव आ गए, परंतु नारायण दास नहीं आया। धर्मदास जी को चिंता हुई कि मेरा पुत्र क्यों नहीं आया? वह तो बड़ा प्रवीन है। तीक्ष्ण बुद्धि वाला है। धर्मदास जी ने अपने नौकर तथा नौकरानियों से कहा कि मेरे पुत्र नारायण दास को बुलाकर लाओ। नौकरों ने देखा कि वह गीता पढ़ रहा था और आने से मना कर दिया।

''नारायण दास वचन''

हम नहिं जायँ पिता के पासा। वंद्ध भये सकलौ बुद्धि नाशा।।
हरिसम कर्ता और कहँ आहि। ताको छोड़ जपैं हम काही।।
वंद्ध भये जुलाहा मन भावा। हम मन गुरू विठलेश्वर पावा।।
काहि कहौं कछु कहो न जाई। मोर पिता गया बौराई।।

भावार्थ :- नारायण दास ने नौकरों से कहा कि मैं पिताजी के पास नहीं जाऊँगा। वंद्धावस्था (बुढ़ापे) में उनकी बुद्धि का पूर्ण रूप से नाश हो गया है। हरि (श्री विष्णु जी) के समान और कौन कर्ता है जिसे छोड़कर हम अन्य किसकी भक्ति करें? पिता जी को वंद्ध अवस्था में जुलाहा मन बसा लिया है। मैंने तो बिठलेश्वर यानि बिट्ठल भगवान (श्री कंष्ण जी) को गुरू मान लिया है। क्या कहूँ? किसके सामने कहने लायक नहीं रहा हूँ। मेरे पिताजी पागल हो गए हैं।

नौकरों ने जो-जो बातें नारायण ने कही थी, धर्मदास जी को सुनाई। धर्मदास जी स्वयं नारायण दास को बुलाने गए और कहा कि हे पुत्र! आप चलो सतपुरूष आए हैं। चरणों में गिरकर विनती करो। अपना कल्याण कराओ। बेटा! फिर ऐसा अवसर हाथ नहीं आएगा। हे भोले बेटा! यह हठ छोड़ दे।

''नारायण दास वचन''

तुम तो पिता गये बौराई। तीजे पन जिंदा गुरू पाई।।
राम कंष्ण सम न देवा। जाकी ऋषि मुनि लावहिं सेवा।।
गुरू बिठलेश्वर छांडेउ दीता। वंद्ध भये जिंदा गुरू कीता।।

भावार्थ :- नारायण दास ने कहा कि पिता जी! आप तो पागल हो गए हो। तीजेपन यानि जीवन के तीसरे पड़ाव को पार कर चुके हो। 75 वर्ष तक के जीवन को तीसरा पड़ाव कहते हैं। आपने जिन्दा बाबा (मुसलमान संत) गुरू बना लिया। राम जी के समान अन्य कोई प्रभु नहीं है। जिसकी सेवा (पूजा) सब ऋषि-मुनि करते रहे हैं।

''धर्मदास वचन''

बांह पकर तब लीन्ह उठाई। पुनि सतगुरू के सन्मुख लाई।।

सतगुरू चरण गहो रे बारा। यम के फन्द छुड़ावन हारा।।
तज संसार लोक कहँ जाई। नाम पान गुरू होय सहाई।।

भावार्थ :- धर्मदास जी ने अपने पुत्र नारायण दास को बाजू से पकड़कर उठाया और सतगुरू कबीर जी के सामने ले आया। हे मेरे बालक! सतगुरू के चरण ग्रहण करो। ये काल की बंद से छुड़ाने वाले हैं। जिस समय संसार छोड़कर सतलोक में जाएंगे तो गुरू दीक्षा सहायता करती है।

''नारायण दास वचन''

तब मुख फेरे नरायन दासा। कीन्ह मलेच्छ भवन परगासा।।
कहँवाते जिंदा ठग आया। हमरे पितहिं डारि बौराया।।
वेद शास्त्र कहँ दीन उठाई। आपनि महिमा कहत बनायी।।
जिंदा रहे तुम्हारे पासा। तो लग घरकी छोड़ी आसा।।
इतना सुनत धर्मदासा अकुलाने। ना जाने सुत का मत ठाने।।
पुनि आमिन बहुविधि समझायो। नारायण चित एकु न आयो।।
तब धर्मदास गुरू पहँ आये। बहुविधिते पुनि बिनती लाये।।

भावार्थ :- सतगुरू कबीर जी के सम्मुख जाते ही नारायण दास ने अपना मुख दूसरी ओर टेढ़ा किया और बोला कि पिता जी! आपने मलेच्छ (मुसलमान) को घर में प्रवेश करवाया है। धर्म भ्रष्ट कर दिया है। यह जिंदा बाबा ठग कहाँ से आया। मेरे पिता को बहका दिया है। इसने वेद-शास्त्रों को तो एक और रखा दिया, अपनी महिमा बनाई है। जब तक यह जिन्दा घर में रहेगा, मैं घर में नहीं आऊँगा। अपने पुत्र की इतनी बातें सुनकर धर्मदास व्याकुल हो गया कि बेटा पता नहीं क्या कर बैठेगा? फिर नारायण दास की माता जी आमिनी देवी ने भी बहुत समझाया, परंतु नारायण दास के हृदय में एक बात नहीं आई और उठकर चला गया। धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से प्रार्थना की कि हे प्रभु! क्या कारण है। नारायण दास इतना विपरीत चल रहा है।

कबीर परमेश्वर जी ने कहा कि हे धर्मदास! तेरे पुत्र रूप में काल का दूत आया है। इसका नाम मत्यु अंधा दूत है। यह मेरी बात को नहीं मानेगा।

विवेचन :- पाठकों से निवेदन है कि अनुराग सागर के पष्ठ 117 पर ''कबीर वचन'' जो पंक्ति 15 नं. 22 अंतिम तक तथा पष्ठ 118 तथा पष्ठ 123 तक वाणियां बनावटी तथा मिलावटी हैं। यह धर्मदास जी के बिंद (परिवार वाले) महंतों ने नाश कर रखा है क्योंकि जिन 12 पंथों का यहाँ वर्णन है वह ''कबीर बानी'' अध्याय में कबीर सागर में पष्ठ 134 पर लिखे प्रथम अंश से नहीं मिलता। उसमें लिखा है कि प्रथम अंश उत्तम यानि चूड़ामणी (मुक्तामणी) नाम साहेब के विषय में कहा है। यदि काल के बारह (12) पंथों में प्रथम उत्तम है तो नारायण दास प्रथम पंथ का प्रवर्तक नहीं हो सकता क्योंकि नारायण दास ने तो कबीर जी का मार्ग ग्रहण नहीं किया था। वे तो अंतिम समय तक श्री कष्ण जी के पुजारी रहे थे। अपने छोटे भाई चूड़ामणी जी के दुश्मन बन गए थे। चूड़ामणी जी तो बाँधवगढ़ त्यागकर कुदुर्माल गाँव चले गए थे। नारायण दास ने बाँधवगढ़ में श्री कष्ण जी का आलीशान मंदिर बनवाया था। श्री चूड़ामणी जी के कुदुर्माल जाने के कुछ वर्ष पश्चात् बाँधवगढ़ नगर भूकंप से नष्ट हो गया था। उसमें सब श्री कष्ण पुजारी वैश्य रहते थे जैसे हरियाणा में अग्रोहा में हुआ था। बाद में उसी बाँधवगढ़ में श्री कष्ण मंदिर बनाया गया है जो वर्तमान में विद्यमान है और उसको केवल जन्माष्टमी पर सरकार की देखरेख में तीन दिन दर्शनार्थ खोला जाता है। शेष समय में केवल सरकारी पुजारी मंदिर में पूजा करता है। कारण यह है कि उस स्थान

पर खुदाई करना मना है। पहले खुदाई में बहुत व्यक्तियों को बहुत सोना-चाँदी हाथ लगा था। बाद में सरकार ने अपने कब्जे में ले रखा है। उस मंदिर का इतिहास नारायण दास सेठ से प्रारम्भ होता है। (यह वहाँ का पुजारी तथा वहाँ के उपासक बताते हैं।) धर्मदास जी के सर्व धन-संपत्ति पर नारायण दास ने कब्जा कर लिया था। श्री चूड़ामणी नाम साहेब तो परमेश्वर कबीर जी के भेजे परम हंस थे। उनका उद्देश्य धन-संपत्ति संग्रह करना नहीं था। परमात्मा के यथार्थ ज्ञान का प्रचार करना था तथा परमेश्वर कबीर जी के वचन अनुसार धर्मदास का वंश चलाना था जो बयालीस (42) पीढ़ी तक चलेगा। वर्तमान में चौदहवीं पीढ़ी चल रही है। चूड़ामणी की वंश गद्दी परंपरा में छठी पीढ़ी वाले ने वास्तविक भक्ति विधि तथा भक्ति मंत्र त्यागकर काल के 12 पंथों में भी पाँचवां टकसारी पंथ है, उसके बहकावे में आकर टकसारी पंथ वाली आरती-चौंका तथा पाँच नाम (अजर नाम, अमर नाम, अमीनाम आदि-आदि) शुरू कर दिये थे जो वर्तमान में दामाखेड़ा (छत्तीसगढ़) में गद्दी परंपरा वाले चौदहवें महंत श्री प्रकाश मुनि नाम साहेब प्रदान कर रहे हैं। अधिक जानकारी के लिए अनुराग सागर के पृष्ठ 138 से पृष्ठ 142 तक विस्तृत ज्ञान पढ़ें आगे।

''धर्मदास जी के दूसरे पुत्र चूड़ामणी की उत्पत्ति''

अनुराग सागर पृष्ठ 124 का सारांश :-

''धर्मदास वचन''

हे प्रभु तुम जीवन के मूला। मेटहु मोर सकल दुख शूला।।
आहि नरायन पुत्र हमारा। अब हम तहँकर दीन्हा निकारा।।
काल अंश गृह जन्मों आई। जीवन काज होवै दुखदाई।।
धन सतगुरू तुम मोहि लखावा। काल अंशको भाव चिन्हावा।।
पुत्र नरायना त्यागी हम दीन्हा। तुमरो वचन मानि हम लीना।।

धर्मदास साहब को अन्शका दर्शन होना

धर्मदास विनवै सिर नाई। साहिब कहो जीव सुखदाई।।
किहि विधि जीव तरै भौसागर। कहिये मोहि हंसपति आगर।।
कैसे पंथ करौं परकासा। कैसे हंसहिं लोक निवासा।।
दास नरायन सुत जो रहिया। काल जान ताकँइ परिहरिया।।
अब साहिब देहु राह बताइ। कैसे हंसा लोक समाई।।
कैसे बंस हमारो चलि है। कैसे तुम्हरो पंथ अनुसरि है।।
आगे जेहिते पंथ चलाई। ताते करो विनती प्रभुराई।।

भावार्थ :- कुछ वाणी काटी गई हैं। इसलिए वह प्रसंग बताता हूँ। धर्मदास जी को विश्वास नहीं हुआ कि नारायण दास वास्तव में काल दूत है। तब कबीर परमेश्वर जी से व्याकुल तथा पुत्र मोह से ग्रस्त होकर कहा कि हे सतगुरू जी! आप जो कहते हैं वह गलत नहीं हो सकता, परंतु मेरा मन मुझे परेशान कर रहा है कि नारायण दास तो भगवान का परम भक्त है। यह काल का दूत नहीं हो सकता। ऐसी करो गुरूदेव मेरी शंका समाप्त हो। परमेश्वर जी ने कहा कि हे धर्मदास! आप नारायण दास को फिर बुलाओ और दोनों पति-पत्नी तुम आओ। जैसे-तैसे नारायण दास बुलाया। परमेश्वर कबीर जी ने नारायण दास की प्रसंशा की। कहा कि धर्मदास! तेरे घर प्रभु का परम भक्त जन्मा है। यह जो भक्ति कर रहा है, करने दो, देख इसके मस्तिक की रेखा। दोनों

(आमिनी तथा धर्मदास) देखो। ऐसी रेखा करोड़ों में एक की होती है। धर्मदास तथा आमिनी ने देखा कि नारायण दास का स्वरूप भयानक था। ओछा माथा और लंबे दाँत, काला शरीर। उसके ऊपर नारायण दास के भौतिक शरीर का कवर था जो पहले हटता दिखा, फिर लिपटता दिखा। अपने पुत्र रूप में काल के दूत को आँखों देखकर धर्मदास तथा आमिनी देवी ने एक सुर में कहा कि जाओ पुत्र! जैसी भक्ति करना चाहो करो, परंतु घर त्यागकर मत जाना। लोग हमें जीने नहीं देंगे। नारायण दास चला गया। कबीर साहब ने कहा कि हे धर्मदास! यह कहीं जाने वाला नहीं है। अब ऊपर लिखी अनुराग सागर के पृष्ठ 124 की वाणियों का सरलार्थ करता हूँ।

भावार्थ :- धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से निवेदन किया कि हे प्रभु! आप तो सर्व प्राणियों के जनक हैं। मेरे मन की शंका दूर करो। नारायण तो काल का अंश। यह तो मैंने दिल से उतार दिया। और पुत्र है नहीं। नारायण दास की संतान काल प्रेरित रहेगी। इस प्रकार तो मेरा वंश काल वंश होगा। आपने कहा कि मेरा वंश बयालीस पीढ़ी तक चलेगा। हे परमात्मा! ये तो काल कुल होगा। आपने कहा है कि तू धर्मदास मेरे (कबीर जी के) पंथ को आगे बढ़ाना सो वह कैसे संभव हो सकेगा?

अनुराग सागर के पृष्ठ 125 का सारांश :-

''कबीर वचन''

धर्मदास सुनु शब्द सिखापन। कहों संदेश जानि हित आपन।।
नौतम सुरति पुरूष के अंशा। तुव गृह प्रगट होइ है वंशा।।
वचन वंश जग प्रगटे आई। नाम चुणामणि ताहि कहाई।।
पुरूष अंश के नौतम वंशा। काल फन्द काटे जिव संशा।।

छन्द

कलि यह नाम प्रताप धर्मनि, हंस छूटे कालसो।।
सत्तनाम मन बिच दृढ़गहे, सोनिस्तरे यमजालसो।।
यम तासु निकट न आवई, जेहि बंशकी परतीतिहो।
कलि काल के सिर पांदै, चले भवजल जीतिहो।।
सोरठा—तुमसों कहों पुकार, धर्मदास चित परखहू।।
तेहि जिव लेउँ उबार वचन जो वंश दृढ़ गहे।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि तेरे घर मेरे वचन से तेरी पत्नी के गर्भ से एक पुत्र का जन्म दसवें महीने होगा। उसका नाम चूड़ामणी रखना। वैसे उसका नाम नोतम दास है। (मीनी सतलोक में काल लोक में भी परमेश्वर कबीर जी ने एक सतलोक की रचना की है जैसे राजदूत भवन प्रत्येक देश में प्रत्येक देश का होता है, उसका प्रसिद्ध नाम सतगुरू लोक है। वहाँ से चुड़ामणि वाला जीव भेजा जाएगा।) उसको मैं स्वयं दीक्षा तथा गुरू पद प्रदान करूँगा।

अनुराग सागर के पृष्ठ 125 का सारांश :-

''धर्मदास वचन''

भावार्थ :- धर्मदास जी ने कहा कि यदि उस अंश के एक बार दर्शन हो जाएं तो मन का सब संशय समाप्त हो जाएगा। आपके वचन पर विश्वास हो जाएगा।

''कबीर परमेश्वर वचन''

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे मुक्तामणी! तू मेरा नामक अंश है। मेरे से सुकृत

ने तेरे दर्शन का हठ किया है। एक बार शिशु रूप में इसके आंगन में प्रकट हो और फिर वापिस जाओ। {सतगुरू लोक यानि मीनी सतलोक से धर्मदास जी वाली आत्मा आई थी। वहाँ पर इनकी आत्मा का नाम सुकत है। उस लोक के हंस इसी नाम से जानते हैं। सतगुरू लोक में जो हंस हैं, वे पार नहीं हुए हैं। उनकी भक्ति अधूरी रहती है, वे अंकुरी हंस हैं। अब कलयुग की बिचली पीढ़ी (कलयुग 5505 वर्ष बीतने के पश्चात् सन् 1997 से प्रारम्भ हुई है) में पथ्वी पर जन्म लेंगे। यदि मेरे (रामपाल दास) से दीक्षा लेंगे, वे सर्व सतलोक चले जाएंगे।} परमेश्वर कबीर जी के कहते ही एक शिशु धर्मदास के घर के आँगन में पथ्वी से एक फुट ऊपर दिखाई दिया। एक पैर का अंगूठा मुख में, एक को हिला रहा था। फिर तुरंत चला गया।

धर्मदास तथा आमिनी देवी अति हर्षित हुए। परमेश्वर के चरणों में दण्डवत् प्रणाम किया।

''धर्मदास वचन''

भावार्थ :- हे परमात्मा! मेरी आयु अति वद्ध हो चुकी है। उस समय धर्मदास जी की आयु लगभग 85 वर्ष की थी। आगे कैसे वंश चलेगा?

''कबीर वचन''

भावार्थ :- कबीर परमेश्वर जी ने कहा कि यह जो शिशु आपने देखा था। वह तेरी पत्नी के गर्भ से दसवें महीने जन्म लेगा। जो यह तुम्हारा पुत्र होगा, यह हमारा अंश होगा। जो मैंने तेरे को सतनाम तथा सारनाम दिया है। वह भंडार है, उसको उसे देना जिसे मैं कहूँ।

''धर्मदास वचन''

भावार्थ :- हे प्रभु! मेरी इन्द्री शिथिल हो चुकी है। अब कैसे लड़का उत्पन्न होगा? {स्पष्टीकरण :- इन वाणियों में मिलावट है जो लिखा है कि मैंने इन्द्री वश किन्हीं हैं, पुत्र कैसे होगा। यह गलत है। इन्द्री वश करने का अर्थ है संयम रखना। परंतु ऐसी आवश्यकता पड़ने पर संतानोत्पत्ति के लिए इन्द्री तो सक्रिय ही होती है। वास्तविकता यह थी कि वद्ध अवस्था का हवाला देकर प्रश्न किया था। परंतु इतिहास गवाह है कि 80-90 वर्ष के व्यक्ति ने भी संतानोत्पत्ति की है। जिनका स्वास्थ्य ठीक चल रहा हो। फिर भी परमात्मा जो चाहे, कर सकते हैं। बांझ को संतान। नपुसंक को भी मर्द बना सकते हैं। यहाँ पर इतना ही समझना पर्याप्त है।

अनुराग सागर के पष्ठ 126 का सारांश :-

''धर्मदास जी को सार शब्द देने का प्रमाण''

''कबीर वचन''

तब आयसु साहब अस भाखे। सुरति निरति करि आज्ञा राखे।।
पारस नाम धर्मनि लिखि देहू। जाते अंश जन्म सो लेहू।।
लखहु सैन मैं देऊँ लखाई। धर्मदास सुनियो चितलाई।।
लिखो पान पुरूष सहिदाना। आमिन देहु पान परवाना।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे धर्मदास! अब आपका दढ़ निश्चय हो गया है। तूने अपने पुत्र को भी त्याग दिया है। अब मैं तेरे को पारस पान (सारनाम की दीक्षा) देता हूँ। आमिनी देवी को भी सारनाम देता हूँ।

''धर्मदास वचन''

भावार्थ :- वाणियों को पढ़ने से ही पता चलता है कि इनमें कत्रिम वाणी है, लिखा है कि:-

रति सुरति सो गरभ जो भयऊ। चूरामनी दास वास तहं लयऊ।।

इस वाणी से यह सिद्ध करना चाहा है कि सुरति से रति (Sex) करने से चूड़ामणी का जन्म हुआ।

इस प्रकार कबीर सागर में अपनी बुद्धि के अनुसार यथार्थ वर्णन कई स्थानों पर नष्ट कर रखा है। इसके लिए जो मैंने (रामपाल दास) ने लिखा है, वही यथार्थ जानें कि परमेश्वर की शक्ति से धर्मदास तथा आमिनी के संयोग से पुत्र चूड़ामणी का जन्म हुआ। कई कबीर पंथी जो दामाखेड़ा गद्दी वालों के मुरीद (शिष्य) हैं, वे कहते हैं कि चूड़ामणी के शरीर की छाया नहीं थी। जिस कारण से कहा जाता है कि उनका जन्म सुरति से हुआ है। यहाँ याद रखें कि श्री ब्रह्मा, महेश, विष्णु जी के शरीर की छाया नहीं होती। उनका जन्म भी दुर्गा देवी (अष्टांगी) तथा ज्योति निरंजन के भोग-विलास (Sex) करने से हुआ। कबीर सागर के अध्याय ज्ञान बोध के पृष्ठ 21-22 पर वाणी है:-

धर्मराय कीन्हें भोग विलासा। माया को रही तब आश।।
तीन पुत्र अष्टांगी जाये। ब्रह्मा, विष्णु, शिव नाम धराये।।

इसलिए यह कहना कि चूड़ामणी जी के शरीर की छाया नहीं थी। इसलिए यह लिख दिया कि सुरति से रति (Sex) किया गया था, अज्ञानता का प्रमाण है। कबीर सागर के अनुराग सागर के पृष्ठ 126 का सारांश किया जा रहा है। स्पष्टीकरण दिया है कि वाणी में मिलावट करके भ्रम उत्पन्न किया है। मेरी (रामपाल दास) की सेवा इसलिए परमेश्वर जी ने लगाई है कि सब अज्ञान अंधकार समाप्त करूं। कबीर बानी अध्याय में कबीर सागर के पृष्ठ 134 पर भी परमेश्वर कबीर जी ने स्पष्ट किया है कि तेरहवें अंश मिटै सकल अंधियारा। अब आध्यात्मिक ज्ञान को पूर्ण रूप से स्पष्ट करके प्रमाणित करके आपके रूबरू कर रहा हूँ।

❖ अनुराग सागर के पृष्ठ 127-128 का सारांश :-

इन दोनों पृष्ठों पर वृतान्त यह है कि परमेश्वर कबीर जी ने चूड़ामणी जी को दीक्षा दी तथा गुरू पद दिया। कहा कि हे धर्मदास! तेरे बयालीस वंश का आशीर्वाद दे दिया है और तेरे वंश मेरे वचन अंश चूड़ामणी को कड़िहार (तारणहार) का आशीर्वाद दे दिया है। तेरे वंश से दीक्षा लेकर जो मर्यादा में रहकर भक्ति करेगा, उसका कल्याण हो जाएगा। परंतु सार शब्द इस दीक्षा से भिन्न है। मैंने 14 कोटि ज्ञान कह दिया है, परंतु सार शब्द इनसे भिन्न है। अन्य नाम तो तारे जानो। सार शब्द को सूर्य जानो।

❖ अनुराग सागर के पृष्ठ 129 का सारांश :-

''धर्मदास वचन''

धर्मदास विनती अनुसारी। हे प्रभु मैं तुम्हरी बलिहारी।।
जीवन काज वंश जग आवा। सो साहिब सब मोहि सुनावा।।
वचन वंश चीन्हे जो ज्ञानी। ता कह नहीं रोके दुर्ग दानी।।
पुरूष रूप हम वंशहि जाना। दूजा भाव न हृदये आना।।
नौतम अंश परगट जग आये। सो मैं देखा ठोक बजाये।।
तबहूँ मोहि संशय एक आवे। करहु कृपा जाते मिट जावे।।
हमकहँ समरथ दीन पठायी। आये जग तब काल फसायी।।
तुम तो कहो मोहि सुकृत अंशा। तबहूँ काल कराल मुहिडंसा।।
ऐसहिं जो वंशन कहँ होई। जगत जीव सब जाय बिगोई।।

तातें करहु कपा दुखभंजन। वंशन छले नहिं काल निरंजन।।
और कछू मैं जानौं नाहीं। मोरलाज प्रभु तुम कहँ आही।।

भावार्थ :- धर्मदास जी ने शंका की और समाधान चाहा कि हे परमेश्वर जी! आपने मेरे वंश (बिन्द वालों) को कड़िहार (नाद दीक्षा देकर मोक्ष करने वाला) बना दिया। मुझे एक शंका है कि जैसे आपने मुझे कहा है कि तुम सुकत अंश हो, संसार में जीवों के उद्धार के लिए भेजा है। आगे मेरे को काल ने फंसा लिया। आप मुझे सुकत अंश कहते हो तो भी मेरे को काल कराल ने डस लिया यानि अपना रंग चढ़ा दिया। मैं (धर्मदास) काल के पुत्र श्री विष्णु पर पूर्ण कुर्बान था। आपने राह दिखाया और मुझे बचाया। कहीं काल मेरे वंश वालों के साथ भी छल कर दे तो संसार के जीव कैसे पार होंगे? वे सब नष्ट हो जाएंगे। इसलिए हे दुःख भंजन! ऐसी दया करो कि मेरे वंश वालों को काल निरंजन न ठगे। मैं और अधिक कुछ नहीं जानता, मेरी लाज आपके हाथ में है।

''कबीर वचन''

❖ अनुराग सागर पष्ठ 130 से 137 का सारांश :-

कबीर परमेश्वर जी ने बताया कि हे धर्मदास! काल बड़ा छलिया है। इसने पहले तो मेरे तीन युगों में जीव थोड़े पार करने तथा कलयुग में जितने मर्जी पार कर देना, यह वर माँग लिया। बाद में कहा कि मेरे अंश (काल के दूत) पहले भेजूंगा जो तेरे (कबीर) नाम से 12 पंथ चलाएंगे। उनके चार मुखिया होंगे। अन्य भी होंगे। उसने अपने चार मुख्य दूतों से कहा कि जगत में मेरा शत्रु कबीर जाएगा। वह कबीर नाम से पंथ चलाएगा। भवसागर उजाड़ना चाहता है। कोई अन्य लोक सुखदायी तथा अन्य सतपुरूष बताएगा। वह झूठ बोलता है, तुम जाओ, मेरी भक्ति दढाओ। इस प्रकार उसने (काल निरंजन ने) अपने दूत भेजे हैं। बताया है कि कबीर जम्बूद्वीप (भारत) में अपना पंथ चलाएगा। तुम कबीर नाम से 12 नकली पंथ चलाना। काल ने अपने दूतों को समझाकर पथ्वी पर जाने के लिए चार मुख्य दूत हैं - रंभ, कूरंभ, जय तथा विजय।

ये सब जालिम हैं। इनमें ''जय'' नामक दूत अधिक दुष्ट है। वह तेरे वंश को भ्रमित करेगा। बांधवगढ़ के पास गाँव कुरकुट में चमार जाति में जन्म लेगा। साहब दास नाम कहावैगा। इसका पुत्र गणपति नाम का होगा। ये दोनों तेरी गद्दी वालों यानि वंश छाप वालों को भ्रमित करेंगे। वे झंग शब्द का उच्चारण करेंगे, यही दीक्षा मंत्र होगा। काल ने एक झांझरी द्वीप की रचना कर रखी है। उसमें काल का बाजा बजता है, वही काल लोक वाली भंवर गुफा में सुनता है। आरती चौंका करेंगे और अपने पंथ को वास्तविक कबीर पंथ बताकर तेरे वंश को विचलित करेंगे।

''धर्मदास की पीढ़ी वालों को काल ने छला''

❖ अनुराग सागर पष्ठ 138 से 142 तक का सारांश :-

अनुराग सागर के पष्ठ 138 से 142 के सरलार्थ की विस्तत जानकारी तथा ''दीक्षा देने की विधि कबीर सागर के अनुसार'' कप्या पढ़ें इसी पुस्तक ''कबीर सागर का सरलार्थ'' में ज्ञान सागर के सारांश में क्रमशः पष्ठ 77 से 80 तक, पष्ठ 92 से 108 तक।

संक्षिप्त वर्णन यहाँ करना भी अनिवार्य है जो इस प्रकार है :-

पष्ठ 138 पर ''भविष्य कथन अलग व्यौहार'' :-

परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि हे धर्मदास! जो कुछ आगे तेरे वंश में होगा और कैसे तेरे बयालीस वंश तथा जगत के अन्य जीवों को पार करूँगा। जो कुछ आगे होय है भाई। सो चरित्र

तोहि कहूं बुझाई।। जो आगे होगा, वह चरित्र पूछो धर्मदास। जब तक तुम शरीर में रहोगे, तब तक काल निकट नहीं आएगा। तेरे शरीर त्यागने के पश्चात् काल तेरे कुल (वंश) के निकट आएगा और तेरे वंश का यथार्थ नाम दीक्षा खंडित करेगा। तेरे वंश वालों में यह अभिमान होगा कि हम धर्मदास के कुल के हैं, हम सबके तारणहार हैं। आपस में तो झगड़ा करेंगे ही, वे जो मेरा भेजा नाद (वचन का पुत्र यानि शिष्य) परंपरा वाले से जो मेरा सुपंथ (यथार्थ कबीर पंथ) चलाएगा, उसकी निंदा करके पाप के भागी होंगे, पार तो हो ही नहीं सकेंगे। इसलिए अपने वंश को समझा देना कि जब काल का दॉव लग जाए, वंश परंपरा कुपंथ पर चले तो मैं अपना नाद (शिष्य) परम्परा का अपना अंश भेजूंगा, उसको प्रेम से मिलें और उससे दीक्षा ले लें। जैसे मेरा पुत्र कमाल था जिसको मैंने मतक से जीवित किया था। उसको दीक्षा भी दी थी। वह स्वयंभू गुरू बन गया था। अपना जीवन नष्ट किया और अनेकों को भी ले डूबा। (विस्तार से वर्णन अध्याय ''कमाल बोध'' के सारांश में पष्ठ 431 से 437 पर पढ़ें।)

पष्ठ 139 पर :-

कमाल को अभिमान हो गया था। मैंने उसको त्याग दिया था। मेरे को अहंकारी प्राणी पसंद नहीं हैं। हम तो भक्ति के साथी हैं, हाथी-घोड़ों को नहीं चाहता। जो प्रेम भक्ति करता है, उसको हृदय में रखता हूँ। इसलिए नाद पुत्र को (शिष्य परंपरा वाले को) दीक्षा देने का अधिकार यानि गुरू पद सौंपूंगा। मेरा पंथ नाद से ही उजागर होगा यानि प्रसिद्ध होगा। तेरे वंश वाले बहुत अहंकार करेंगे। धर्मदास जी ने चिंता जताई कि आप नाद वाले को गुरू पद दोगे, परंतु मेरे वंश वाले कैसे मोक्ष प्राप्त करेंगे? परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि तेरे वंश वाले हों, चाहे अन्य जीव हों, जो मेरे द्वारा भेजे अंश (नाद अंश) से दीक्षा लेकर मर्यादा में रहेंगे तो कैसे पार नहीं होंगे? जो हमारे वचन को मानेगा, वही वंश वाला मुझे प्यारा लगेगा। बिना वचन यानि नाद वाले को गुरू माने बिना पार नहीं हो सकता, मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता। तेरे बयालीस (42) पीढ़ी को मैंने एक वचन से पार कर दिया है। वह वचन यह है कि (नाद परंपरा) वाले से दीक्षा लेकर पार हो जाएंगे। बिन्द वाले वंश कहलाते हैं और वचन (नाद) वाले बिना वे अपने घर यानि सतलोक नहीं जा सकते।

अनुराग सागर पष्ठ 140 का सारांश :-

(कबीर वचन ही चल रहे हैं)

परमेश्वर कबीर जी बता रहे हैं कि मेरा नाद का पुत्र चूड़ामणी है। यह मेरा शिष्य है और आपका वंश (बिन्द) पुत्र है। यह मेरी आज्ञा से पंथ चलाएगा, जीवों का कल्याण करेगा। परंतु हे धर्मदास! तेरा वंश (कुल) के लोग अज्ञानी हैं। वे ठीक से ज्ञान नहीं समझेंगे। मेरे अंश को (जो मैं भेजूंगा) नहीं समझ सकेंगे और अन्य काल के दूतों से भ्रमित होकर कुमार्ग पर चलेंगे।

जो कुछ आगे तेरी वंश गद्दी वालों के साथ होगा, वह सुन! चूड़ामणी के पश्चात् छठी पीढ़ी वाले महंत को काल द्वारा चलाए गए 12 पंथों में से पाँचवां टकसारी पंथ होगा, वह ठगेगा। अपना ज्ञान सुनाकर प्रभावित करके काल जाल में डालेगा। तेरा छठी पीढ़ी वाला (पोता) उस टकसारी पंथ वाले से दीक्षा लेगा और उसी वाला आरती-चौंका किया करेगा। (वही हुआ, वर्तमान में जो दीक्षा बाँधवगढ़ गद्दी वाले महंत दे रहे हैं तथा जो आरती-चौंका कर रहे हैं, वह वही काल के दूत टकसारी वाली है) हे धर्मदास! इस प्रकार तेरा वंश अज्ञानी होकर काल के धोखे में पड़कर नरक में जाएगा। तेरा वंश मेरी वह दीक्षा जो मैंने चूड़ामणी को दी है, उसको छोड़ देगा। टकसारी वाली दीक्षा लेकर अपना जीवन नाश करेगा। ऐसे तेरा वंश (कुल) दुर्मति को प्राप्त होगा। वे तेरे वंश

वाले ठग मेरे नाद अंश को बाधित करेंगे, पाप के भागी होंगे।

''धर्मदास वचन''

हे परमात्मा! पहले तो आप कह रहे थे कि तेरे बयालीस पीढ़ी को पार कर दूंगा। अब आप कह रहे हो कि काल जाल में फंसेगे। ये दोनों बात कैसे सत्य होंगी?

''कबीर जी वचन''

परमेश्वर कबीर जी ने कहा हे धर्मदास! तुम सावधान होवो और अपने वंश को समझा देना कि जिस समय काल झपट्टा लगाएगा यानि मार्ग से तेरे वंश को भ्रमित करेगा तो मैं अपना नाद यानि शिष्य परंपरा वाला हंस प्रकट करूंगा। यथार्थ कबीर पंथ यानि भक्ति मार्ग से भटके मानव को सत्य भक्ति पर दृढ़ करूंगा। उसी से दीक्षा लेकर तेरे वंश वाले मोक्ष प्राप्त करेंगे। वचन वंश (चुड़ामणि की संतान) भी नाद यानि शिष्य शाखा वाले से दीक्षा लेकर मोक्ष प्राप्ति करेगा।

विशेष विवेचन :- कुछ व्यक्ति इस प्रकरण को सुनकर भ्रम फैलाते हैं कि रामपाल के बिन्द वालों से इस पंथ का नाश होगा। हम रामपाल के नाद वाले (शिष्य) हैं। हमारे से यह पंथ आगे फैलेगा। हमें दान का पैसा दो, रामपाल वालों को न दो। ऐसे व्यक्ति काल के दूत हैं। वे अपने स्वार्थवश ऐसा भ्रम फैलाते हैं। मैं स्पष्ट करना चाहता हूँ कि धर्मदास के बिन्द वाले गुरू पद प्राप्त करके भक्ति विधि में परिवर्तन करके सत्य साधना त्यागकर काल साधना करते-कराते हैं। भक्ति विधि तथा ज्ञान गलत होने से यथार्थ पंथ का नुकसान (हास) होता है। मेरे पश्चात् कलयुग में कोई गुरू पद पर रहेगा ही नहीं। यह तेरहवां (13वां) अंतिम पंथ है। यह दास (रामपाल दास) अंतिम सतगुरू है। मेरे प्रकाश पुंज (Electronic) शरीर यानि DVD वाले स्वरूप से नाद दीक्षा दी जा रही है। यही आगे चलेगी। यह प्रक्रिया सन् 2009 से चल रही है। लाखों अनुयाई बन चुके हैं। प्रत्येक को लाभ हो रहा है और होता रहेगा। अब न तो भक्ति विधि यानि भक्ति के मंत्र बदल सकते हैं, न ज्ञान। फिर पंथ नष्ट होने का प्रश्न ही नहीं रहता। नाद और बिंद का झंझट ही समाप्त हो गया है। DVD से गुरु जी के नाम को दिलाने की सेवा नाद वालों को मिले, चाहे बिन्द वालों को, पंथ नष्ट नहीं हो सकता। आगे ही बढ़ेगा।

अनुराग सागर पृष्ठ 141 का सारांश :-

सार शब्द की चास यानि अधिकार नाद के पास होगा। यदि तेरा बिंद (पुत्र परंपरा) उससे दीक्षा नहीं लेंगे तो वे नष्ट हो जाएंगे। परमेश्वर कबीर जी ने नाद की परिभाषा स्पष्ट की है। कहा है कि हे धर्मदास! तू मेरा नाद पुत्र (वचन पुत्र यानि शिष्य) है। इसलिए तेरे को मुक्ति मंत्र यानि सार शब्द दे दिया है। परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को दीक्षा देने का अधिकार नहीं दिया था और सख्त निर्देश दिया था कि जो सार शब्द मैंने तेरे को दिया है, यह किसी को नहीं बताना है। यदि यह तूने बता दिया तो जिस समय बिचली पीढ़ी कलयुग में चलेगी यानि जिस समय कलयुग 5505 वर्ष बीत जाएगा (सन् 1997 में) तब मैं अपना नाद अंश भेजूंगा। मेरा यथार्थ कबीर पंथ चलेगा। उस समय से पहले यदि यह सार शब्द काल के दूतों के हाथ लग गया तो सत्य-असत्य भक्ति विधि का ज्ञान कैसे होगा? जिस कारण से भक्त पार नहीं हो पावेंगे। कबीर सागर में ''कबीर बानी'' अध्याय के पृष्ठ 137 पर तथा अध्याय ''जीव धर्म बोध'' पृष्ठ 1937 पर प्रमाण है जिसमें कहा है कि :-

धर्मदास मेरी लाख दुहाई, सार शब्द कहीं बाहर नहीं जाई।
सार शब्द बाहर जो परही, बिचली पीढ़ी हंस नहीं तिरही।।

सार शब्द तब तक छिपाई, जब तक द्वादश (12) पंथ न मिट जाई।।

स्वसमबेद बोध पृष्ठ 121 तथा 171 पर कहा है कि :-

चौथा युग जब कलयुग आई। तब हम अपना अंश पठाई।।
काल फंद छूटे नर लोई। सकल सृष्टि परवानिक होई।।
घर–घर देखो बोध विचारा (ज्ञान चर्चा)। सत्यनाम सब ठौर उचारा।।
पाँच हजार पाँच सौ पाँचा। तब यह वचन होयगा साचा।।
कलयुग बीत जाय जब ऐता। सब जीव परम पुरूष पद चेता।।

प्रिय पाठको! कलयुग सन् 1997 में 5505 वर्ष पूरा कर गया है। यहाँ तक सार शब्द छुपाकर रखना था।

बीच-बीच में धर्मदास जी वंश मोह में आकर सार शब्द अपने पुत्र चूड़ामणी जी को बताना चाहते थे। उसी समय अंतर्यामी परमेश्वर कबीर जी प्रकट होकर कुछ दिन साथ रहकर उसको दृढ़ करते थे। अंत में धर्मदास जी को जगन्नाथ पुरी में जीवित समाधि दे दी यानि जीवित ही पृथ्वी में दबा दिया। धर्मदास जी ने स्वयं कबीर जी से कहा था कि हे परमेश्वर! मैं पुत्र मोह वश होकर सार शब्द बता सकता हूँ। मेरे वश से बाहर की बात हो चुकी है। आप मुझे सत्यलोक भेज दो नहीं तो बात बिगड़ जाएगी। तब धर्मदास जी को जीवित समाधि दी गई थी। (यह प्रमाण दामाखेड़ा वाले महंत द्वारा छपाई पुस्तक ''आशीर्वाद शताब्दी ग्रन्थ'' में पृष्ठ 95 पर है।) अनुराग सागर के पृष्ठ 141 का शेष सारांश :-

कबीर परमेश्वर जी ने कहा कि हे धर्मदास! चारों युगों में देख ले, मेरे यथार्थ कबीर पंथ को नाद परंपरा ने प्रसिद्ध किया है। क्या निर्गुण क्या सर्गुण है, नाद बिन पंथ नहीं चलेगा। यदि तेरे बिन्द वाले उससे दीक्षा लेंगे तो वे भी पार हो जाएंगे। तेरे बिन्द वालों को इस प्रकार बयालीस पीढ़ी को पार करूंगा। जब कलयुग 5505 वर्ष पूरा करेगा। उसके पश्चात् सर्व विश्व दीक्षित होगा तो धर्मदास जी के वंशज भी दीक्षा लेकर कल्याण कराएंगे। (यदि नाद की आशा बिन्द (परिवार वंश) वाले छोड़ देंगे तो तेरे बिंद (पीढ़ी) वाले काल जाल में फंसेंगे।) इसलिए हे धर्मदास! अपने बिन्द को सतर्क कर देना। अपना कल्याण कराऐं। परमेश्वर कबीर जी का कहना है कि बिन्द वाले नाम को बदलकर यथार्थ भक्ति नष्ट कर देते हैं। वर्तमान में वह समस्या नहीं रहेगी क्योंकि अब कोई उतराधिकारी गुरू रूप नहीं होगा। दीक्षा D.V.D. से दी जा रही है। नाम दीक्षा दिलाने की सेवा चाहे नाद वाले करो, चाहे बिन्द वाले, भक्ति विधि सही रहेगी। इसलिए पंथ को कोई हानि नहीं होगी।

अनुराग सागर के पृष्ठ 142 का सारांश :-

परमेश्वर कबीर जी अपने भक्त धर्मदास जी को समझा रहे हैं कि जो कोई नाद वंश को जान लेगा, उसको यम के दूत रोक नहीं पाएंगे। जिन्होंने सत्य शब्द (सतनाम) को पहचान लिया, वे ही मोक्ष प्राप्त कर सकेंगे। तेरे वंश वाले जो चूड़ामणी की संतान हैं, वही सफल होगा जो नाद वंश की शरण न छोड़े। तुम्हारा बिन्द यानि संतान नाद यानि शिष्य परंपरा वाले के साथ मोक्ष प्राप्त करेगी।

''धर्मदास वचन''

धर्मदास जी ने प्रश्न किया कि आपने मेरे पुत्र चूड़ामणी को वचन वंश कहा है क्योंकि यह आप जी के वचन यानि आशीर्वाद से उत्पन्न हुआ। इसकी संतान को बिन्द कहा जो मेरे बयालीस

पीढ़ी चलेगी। आप यह भी कह रहे हो कि मेरे बिन्द परंपरा यानि महंत गद्दी वाले नाद यानि शिष्य परंपरा वालों से दीक्षा लेकर पार हो सकते हैं। वे आप जी ने नाद वंश के आधीन बता दिए। फिर बिन्द वाले क्या करेंगे? यदि नाद से ही जगत पार होना है।

''कबीर वचन''

धर्मदास जी के वचन सुनकर परमेश्वर हँसे और कहा कि हे धर्मदास! तेरे को बयालीस वंश का आशीर्वाद दे दिया है क्योंकि तुम नारायण दास को काल दूत जानकर वंश नष्ट होने की चिंता कर रहे हो। इसलिए तेरे वंश की शुरूआत आपके नेक पुत्र से की है। पाठकों से निवेदन है कि इस पृष्ठ पर बिन्द परंपरा वालों ने बनावटी वाणी अधिक डाली हैं अपनी महिमा बनाने के लिए, परंतु अनुराग सागर के पृष्ठ 140-141 पर स्पष्ट कर दिया है कि चूड़ामणी जी की वंश गद्दी की छठी पीढ़ी वाले के पश्चात् मेरे द्वारा बताई यथार्थ भक्ति विधि तथा भक्ति मंत्र नहीं रहेंगे। वह पाँचवी पीढ़ी वाला ''टकसारी'' पंथ वाला आरती-चौंका तथा वही नकली पाँच नाम की दीक्षा देने लगेगा। इसलिए तेरे बिन्द वाले काल जाल में जाएंगे। यदि वे मेरे द्वारा भेजे गए नाद अंश से दीक्षा ले लेंगे तो तेरी बयालीस (42) पीढ़ी मोक्ष प्राप्त करेगी। इस प्रकार तेरे 42 वंश को पार करूंगा। उस समय जब पूरा जगत ही दीक्षा प्राप्त करेगा तो तेरी संतान भी दीक्षा लेगी। यह वर्णन पृष्ठ 140-141 के सारांश में स्पष्ट कर दिया है।

अनुराग सागर के पृष्ठ 143 का सारांश :-

धर्मदास जी को फिर से अपने पुत्र नारायण दास का मोह सताने लगा और परमेश्वर कबीर जी से अपनी चिंता व्यक्त की कि मेरा पुत्र नारायण दास काल के मुख में पड़ेगा। मुझे अंदर ही अंदर यह चिंता खाए जा रही है। हे स्वामी! उसकी भी मुक्ति करो।

''कबीर परमेश्वर वचन''

बार बार धर्मनि समुझावा। तुम्हरे हृदय प्रतीत न आवा।।
चौदह यम तो लोक सिधावें। जीवन को फन्द कह्यो वे लावें।।
अब हम चीन्हा तुम्हारो ज्ञाना। जानि बूझि तुम भयो अजाना।।
पुरूष आज्ञा मेटन लागे। बिसरयो ज्ञान मोहमद जागे।।
मोह तिमिर जब हिरदे छावे। बिसर ज्ञान तब काज नसावे।।
बिन परतीत भक्ति नहिं होई। बिनु भक्ति जिव तरै न कोई।।
बहुरि काल फांसन तोहि लागा। पुत्रमोह त्व हिरदय जागा।।
प्रतच्छ देखि सबे तुम लीना। दास नरायण काल अधीना।।
ताहू पर तुम पुनि हठ कीना। मोर वचन तुम एकु न चीन्हा।।
धर्मदास जो मोसन कहिया। सोऊ ध्यान त्व हृदय न रहिया।।
मोर प्रतीत तुम्हैं नहिं आवे। गुरू परतीत जगत कसलावे।।

भावार्थ :- कबीर परमेश्वर जी ने कहा कि हे धर्मदास! अब मुझे तेरी बुद्धि के स्तर का पता चल गया। तू जान-बूझकर अनजान बना हुआ है। जब तेरे को बता दिया, आँखों दिखा दिया कि नारायण दास काल का दूत है। मेरी आत्माओं को काल जाल में फांसने के लिए काल का भेजा आया है। तेरे को बार-बार समझाया है, वह तेरी बुद्धि में नहीं आ रहा है। अब तेरे हृदय में पुत्र मोह से अज्ञान अंधेरा छा गया है। काल के दूत को लेकर फिर हठ कर रहा है। मेरा एक वचन भी तेरी समझ में नहीं आया। हे धर्मदास! जो वचन तूने मेरे से किये थे कि मैं कभी नारायण दास

को दीक्षा देने के लिए नहीं कहूंगा। अब तेरे ह्रदय से वह वादा भूल गया है। जब तुमको मुझ पर विश्वास नहीं हो रहा जबकि तेरे को सतलोक तक दिखा दिया तो फिर मेरे भेजे नाद अंश जो गुरू पद पर होगा, उस पर जगत कैसे विश्वास करेगा?

अनुराग सागर पष्ठ 144 का सारांश :-

परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को बार-बार वही बातें दोहराई हैं जो पूर्व के पष्ठ पर कही हैं।

अनुराग सागर के पष्ठ 145 का सारांश :-

''धर्मदास वचन''

सुनत वचन धर्मदास सकाने। मनहीं माहिं बहुत पछताने।।
धाइ गिरे सतगुरू के पाई। हौं अचेत प्रभु होहु सहाई।।
चूक हमारी वकसहु स्वामी। विनती मानहु अन्तरयामी।।
हम अज्ञान शब्द तुम टारा। विनय कीन्ह हम बारंबारा।।
अब मैं चरण तुम्हारे गहऊँ। जो संतनिकी विनती करऊँ।।
पिता जानि बालक हठ लावे। गुण औगुण चित ताहि न आवे।।
पतित उधारण नाम तुम्हारा। औगुण मोर न करहु विचारा।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी के वचन सुनकर धर्मदास जी बहुत लज्जित हुए और परमेश्वर कबीर जी के चरणों में गिरकर विलाप करने लगे कि हे स्वामी जी! मैं तो अचेत यानि मंद बुद्धि हूँ। मेरी गलती क्षमा करो। हे अंतर्यामी! मेरी विनती स्वीकार करो। मैं अज्ञानी हूँ। मैंने आपके वचन की अवहेलना की है। मैंने ऐसे गलती की है जैसे बालक अपने पिता से हठ कर लेता है, पिता बालक की गलती पर ध्यान नहीं देता, उसके अवगुण क्षमा कर देता है। आपका नाम तो पतित उद्धारण है। आप पापियों का उद्धार करने वाले हो, मेरे अवगुणों पर ध्यान न दो। बालक जानकर क्षमा कर दो।

''कबीर परमेश्वर वचन''

परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे धर्मदास! आप सतपुरूष अंश हैं। आप नारायण दास का मोह त्याग दो। तुम में और मेरे में कोई भेद नहीं है क्योंकि आप मेरे नाद पुत्र (शिष्य रूपी पुत्र) हो। आप तो जगत में यथार्थ पंथ चलाने के लिए आए हो। जीवों का उद्धार करने के लिए भेजा है। परमेश्वर कबीर जी ने इस प्रकार धर्मदास को उत्साहित किया।

''धर्मदास वचन''

हे प्रभु तुम सुख सागर दाता। मुझ किंकर को करयो सनाथा।।
जबलग हम तुमों नहीं चीन्हा। तब लग मति कालहर लीन्हा।।
जबते तुम आपन कर जाना। तबते मोहिं भयो दढ ज्ञाना।।
अब नहिं दुनिया मोहि सुहायी। निश्चय गहीं चरण तुव धाई।।
तुम तजि मोहि आनकी आसा। तो मुहिं होय नरक महँ वासा।।

भावार्थ :- धर्मदास जी ने कहा कि हे परमेश्वर! आप तो सुख सागर दाता हैं। मुझ किंकर (दास) को शरण में लेकर सनाथ कर दिया। जब तक मैंने आप जी को नहीं जाना था, तब तक तो मेरी बुद्धि काल ने छीन रखी थी। जब से आपने मेरे को शरण दी है यानि अपना मान लिया है, उसी दिन से मुझे आपके चरणों में दढ़ निश्चय है। अब मुझे यह संसार अच्छा नहीं लग रहा

है। यदि मैं आपको त्यागकर किसी अन्य में श्रद्धा करूं तो मेरा नरक में निवास हो।

''कबीर वचन''

भावार्थ :- कबीर परमेश्वर जी ने धर्मदास जी से कहा कि तेरा धन्य भाग है कि तूने मेरे को पहचान लिया और मेरी बात मानकर पुत्र मोह त्याग दिया।

अनुराग सागर के पृष्ठ 146 का सारांश :-

इस पृष्ठ में ऊपर की वाणी बनावटी हैं। यह धर्मदास जी की संतान चूड़ामणी जी वाली दामाखेड़ा गद्दी वाले महंतों की कलाकारी है। इसमें कोशिश की है यह दर्शाने की कि नारायण दास वाली संतान तो बिन्द वाली है और चूड़ामणी वाली संतान नाद वाली है ताकि हमारी महिमा बनी रहे कि हमारे से दीक्षा लेकर ही जगत के जीवों का कल्याण होगा। याद रखें कि नारायण दास ने तो कबीर जी की दीक्षा ली ही नहीं थी। वह तो विष्णु उर्फ कृष्ण पुजारी था। उसके पंथ का कबीर पंथ से कोई लेना-देना नहीं है। प्रिय पाठको! कबीर जी कहते हैं कि :-

चोर चुरावै तुम्बड़ी, गाड़े पानी मांही। वो गाड़े वा ऊपर आवै, सच्चाई छानी नांही।।

अनुराग सागर के पृष्ठ 140 पर परमेश्वर जी ने स्पष्ट कर रखा है कि मेरा शिष्य (नाद) तथा तेरे बिन्द से उत्पन्न पुत्र चूड़ामणी जो पंथ चलाएगा और जीवों की मुक्ति कराएगा। इस चूड़ामणी को मैंने दीक्षा दी है तथा गुरू पद दिया है। यह मेरा नाद पुत्र है। आगे इसकी बिन्दी (संतान) धारा चलेगी। वे इस गुरू गद्दी पर विराजमान होंगे। वे अज्ञानी होंगे। छठी पीढ़ी वाले महंत को काल के बारह पंथों में पाँचवां पंथ टकसारी पंथ होगा। वह भ्रमित करेगा। जिस कारण से मेरे द्वारा बताए यथार्थ भक्ति विधि तथा यथार्थ मंत्र त्यागकर टकसारी पंथ वाले मंत्र तथा आरती-चौंका दीक्षा रूप में देने लगेगा। तुम्हारा वंश यानि चूड़ामणी वाली संतान दुर्मति को प्राप्त होगी। वे बटपारे (ठग) बहुत जीवों को चौरासी लाख के चक्र में डालेंगे, नरक में ले जाएंगे। जो मेरा नाद परंपरा का अंश आएगा, उसके साथ झगड़ा करेंगे।

प्रत्यक्ष प्रमाण :- प्रिय पाठको! सन् 2012 में मेरे कुछ अनुयाईयों द्वारा मेरे विचारों की लिखी एक पुस्तक ''यथार्थ कबीर पंथ परिचय'' का प्रचार करते-करते दामाखेड़ा (छत्तीसगढ़) में चले गए। उस दिन दामाखेड़ा महंत गद्दी वालों का सत्संग चल रहा था। उस दिन समापन था। मेरे शिष्य सत्संग से जा रहे भक्तों को वह पुस्तक बाँटने लगे। उस आश्रम के किसी सेवक ने वह पुस्तक पहले ले रखी थी। वह पहले ही इस ताक में था कि रामपाल के शिष्य कहीं मिलें तो उनकी पिटाई करें। उस दिन दामाखेड़ा में ही उसने मेरे शिष्यों को सेवा करते देखा तो महंत श्री प्रकाश मुनि नाम साहेब जो चौदहवां गुरू गद्दी वाला बिन्दी परंपरा वाला महंत है, को बताया कि जो ''यथार्थ कबीर पंथ परिचय'' पुस्तक मैंने आपको दी थी, आज फिर उसी पुस्तक को रामपाल के शिष्य हमारी संगत में बाँट रहे हैं।

यह सुनकर महंत प्रकाश मुनि आग-बबूला हो गया और आदेश दिया कि उनको पकड़कर लाओ। उसी समय पुस्तक बाँट रहे मेरे अनुयाईयों में से पाँच को गाड़ी में जबरदस्ती डालकर ले गए। अन्य शिष्य पता चलने पर भाग निकले। जिन सेवकों को दामाखेड़ा वाले पकड़कर ले गए थे, उनको बेरहमी से मारा-पीटा, उनसे कहा कि कहो, फिर नहीं बाँटेंगे। उन्होंने कहा कि इसमें गलत क्या है? यह तो बताओ। उन सब मेरे शिष्यों को पीट-पीटकर अचेत कर दिया। फिर मुकदमा दर्ज करा दिया कि शांति भंग कर रहे थे। तीन दिन में जमानत हुई। ऐसे हैं ये धर्मदास जी की बिन्द परंपरा चुड़ामणी वाली दामाखेड़ा गद्दी के महंत जिनके विषय में परमेश्वर कबीर जी ने कहा है:-

कबीर नाद अंश मम सत ज्ञान दढ़ाही। ताके संग सभी राड़ बढ़ाई।।
अस सन्त महन्तन की करणी। धर्मदास मैं तो से बरणी।।

यही प्रमाण अनुराग सागर के पृष्ठ 140 पर है :-

आप हंस अधिक होय ताही। नाद पुत्र से झगर कराहीं।।

(आपा हंस यह गलत है। यहाँ पर ''आप अहम'' है जिसका अर्थ है अपने आप में अहंकार।)

होवै दुरमत वंश तुम्हारा। नाद वंश रोके बटपारा।।

प्रिय पाठको! यह सर्व लक्षण मुझ दास (रामपाल दास) तथा दामाखेड़ा की गद्दी वाले धर्मदास जी के बिन्द वालों पर खरे उतरते हैं।

अनुराग सागर के इसी पृष्ठ 146 पर आगे गुरू महिमा है।

अनुराग सागर के पृष्ठ 147 का सारांश :-

इसमें भी गुरूदेव की महिमा का ज्ञान है जो सामान्य ज्ञान है।

अनुराग सागर के पृष्ठ 148 का सारांश :-

इसमें भी गुरू की महिमा है जो सामान्य ज्ञान है।

अनुराग सागर के पृष्ठ 149 पर भी गुरू महिमा है। यह सामान्य ज्ञान है कि परम संत की प्राप्ति के पश्चात् उसके साथ कपट-चतुराई न रखे। सच्चे मन से उनके वचनों का पालन करके कल्याण कराए। कागवति को त्यागकर हंस दशा अपनाऐं।

अनुराग सागर पृष्ठ 150 पर भी सामान्य ज्ञान है।

अनुराग सागर के पृष्ठ 151 का सारांश :-

''शरीर के कमलों की जानकारी''

इस पृष्ठ पर मानव शरीर में बने कमलों का वर्णन है।

1. मूल (मूलाधार) कमल :- इसकी चार पत्तियाँ हैं। इसका देवता गणेश है। इसके 600 (छः सौ) जाप हैं।

2. इस मूल कमल के ऊपर स्वाद कमल (अनाहद कमल) है। इसकी छः पंखुड़ी हैं। ब्रह्मा तथा सावित्री देवता हैं। इसके छः हजार (6000) जाप हैं।

3. इस स्वाद कमल से ऊपर नाभि कमल है। इसकी आठ पंखुड़ियाँ हैं। लक्ष्मी तथा विष्णु प्रधान देवता हैं। छः हजार जाप हैं।

4. इसके ऊपर बारह पंखुड़ियों का कमल है। प्रधान देवता रूद्र (महेश) तथा पार्वती हैं। छः हजार जाप हैं।

5. इसके ऊपर कण्ठ कमल है जो 16 पंखुड़ियों का है। इसकी प्रधान देवी अविद्या यानि दुर्गा है। इसके एक हजार जाप हैं।

6. इसके ऊपर संगम कमल है जो छठा कमल है। इस छठे कमल की तीन पंखुड़ी हैं। मन का वास है। {भवतारण बोध पृष्ठ 111(957) पर इस कमल में परमात्मा का वास लिखा है। भवतारण बोध पृष्ठ 57(903) पर इस कमल में सरस्वती का वास लिखा है।} इस कमल के एक हजार जाप हैं।

7. यह सातवां कमल सुरति कमल है। इसमें सतगुरू का निवास है। {भवतारण बोध पृष्ठ 57(903) पर इसको त्रिकुटी कमल लिखा है। इसकी दो पंखुड़ी हैं। कबीर बानी पृष्ठ 111(957)

पर इसे दो पंखुड़ियों का लिखा है।} एक हजार जाप हैं।

8. दो दल वाले सातवें कमल से ऊपर शुन्य स्थान है। इसकी एक सफेद पंखुड़ी है। उसमें सत्य पुरूष सतगुरू रूप में रहते हैं। दूसरी काले रंग की है। इसमें ज्योति निरंजन रहता है। {भवतारण बोध पष्ठ 57(903) पर लिखा है कि अष्टम कमल ब्रह्माण्ड के मांही। तहां निरंजन दूसर नांही।। कबीर बानी पष्ठ 111(957) पर लिखा है कि आठे कमल दश पंखुरी कहिए यानि आठवें कमल की दस (10) पंखुड़ियां हैं।} इसके जाप की सही सँख्या नहीं लिखी है।

संत गरीबदास (छुड़ानी वाले) ने कमलों का ज्ञान इस प्रकार कहा है।

1. मूल कमल, स्वाद कमल, नाभि कमल, हृदय कमल, कण्ठ कमल तक यही उपरोक्त वर्णन है। त्रिकुटी कमल में दो पंखुड़ी का कमल है। इसमें सतगुरू (कबीर) परमेश्वर का निवास बताया है। उपरोक्त सर्व प्रकरण का निष्कर्ष है।

''शरीर के कमलों की यथार्थ जानकारी''

कबीर सागर में अध्याय ''कबीर बानी'' पष्ठ 111 पर है जो इस प्रकार है:-

1. प्रथम मूल कमल है, देव गणेश है। चार पंखुड़ी का कमल है।
2. दूसरा स्वाद कमल है, देवता ब्रह्मा-सावित्री हैं। छः पंखुड़ी का कमल है।
3. तीसरा नाभि कमल है, लक्ष्मी-विष्णु देवता हैं। आठ पंखुड़ी का कमल है।
4. चौथा हृदय कमल है, पार्वती-शिव देवता हैं। 12 पंखुड़ी का कमल है।
5. पाँचवां कंठ कमल है, अविद्या (दुर्गा) देवता है। 16 पंखुड़ी का कमल है।

कबीर सागर में भवतारण बोध में पष्ठ 57 पर लिखा है कि :-

षट्कमल पंखुड़ी है तीनी। सरस्वती वास पुनः तहाँ किन्ही।।
सप्तम् कमल त्रिकुटी तीरा। दोय दल मांही बसै दोई बीरा (शूरवीर)।।

6. यह छठा संगम कमल त्रिकुटी से पहले है जो सुष्मणा के दूसरे अंत वाले द्वार पर बना है। इसकी तीन पंखुड़ियाँ है। इसमें सरस्वती का निवास है। वास्तव में दुर्गा जी ही अन्य रूप में यहाँ रहती है। इसके साथ 72 करोड़ सुन्दर देवियाँ रहती हैं। इसकी तीन पंखुड़ियाँ हैं। इन तीनों में से एक में परमेश्वर का निवास है जो अन्य रूप में रहते हैं। एक पंखुड़ी में सरस्वती तथा 72 करोड़ देवियाँ जो ऊपर जाने वाले भक्तों को आकर्षित करके उनको अपने जाल में फँसाती हैं। दूसरी पंखुड़ी में काल अन्य रूप में रहता है। मन रूप में काल का निवास है तथा करोड़ों युवा देव रहते हैं जो भक्तमतियों को आकर्षित करके काल के जाल में फँसाते हैं। तीसरी पंखुड़ी में परमेश्वर जी हैं जो अपने भक्तों को सतर्क करते हैं जिससे सतगुरू के भक्त उन सुन्दर परियों के मोह में नहीं फँसते।

7. सातवां त्रिकुटी कमल है जिसकी काली तथा सफेद दो पंखुड़ियाँ हैं। काली में काल का सतगुरू रूप में निवास है तथा सफेद में सत्य पुरूष का सतगुरू रूप में निवास है।

8. आठवाँ कमल (अष्ट कमल) ये दो हैं। एक तो उसे कहा है जो संहस्र कमल कहा है जिसमें काल ने एक हजार ज्योति जगाई हैं जो ब्रह्मलोक में है। इसको संहस्र कमल कहते हैं। इसकी हजार पंखुड़ी हैं। यह सिर में जो चोटी स्थान (सर्वोपरि) है, उसको ब्रह्माण्ड कहा जाता है। जैसे कई ऋषियों की लीला में लिखा है कि वे ब्रह्माण्ड फोड़कर निकल गए। इनके सिर में तालु के ऊपर और चोटी स्थान के बीच में निशान बन जाता है। शरीर त्याग जाते हैं। वे शुन्य में भ्रमण करते

रहते हैं। वे ओम् (ॐ) अक्षर का जाप तथा हठ योग करके यह गति प्राप्त करते हैं। महाप्रलय में नष्ट हो जाते हैं। फिर जीव रूप जन्मते हैं। इस सिर के ऊपर के भाग को ब्रह्माण्ड कहते हैं। यह आठवां कमल ब्रह्माण्ड में इस प्रकार कहा है।

इस कमल में काल निरंजन ने धोखा कर रखा है। केवल ज्योति दिखाई देती है जो प्रत्येक पंखुड़ी में जगमगाती है। उस कमल में परमात्मा कबीर जी भी गुप्त रूप में निवास करते हैं। इसके साथ-साथ परमात्मा जी प्रत्येक कमल में अपनी शक्ति का प्रवेश रखते हैं।

❖ अन्य अष्ट कमल वह जो सत्यलोक में जाने वाले रास्ते में है। उसकी दश (10) पंखुड़ियाँ हैं जो ब्रह्म के साधक हैं। उनके लिए आठवां कमल संहस्र कमल है जो हजार पंखुड़ियों वाला है। इसमें निरंजन का निवास है। भवतारण बोध पष्ठ 57 पर वाणी है :-

अष्टम कमल ब्रह्मण्ड के मांही। तहाँ निरंजन दूसर नांही।।

फिर दूसरा अष्टम कमल मीनी सतलोक में जाने वाले मार्ग में है।

9. नौंमा कमल मीनी सतलोक में है। तीसरा अष्टम कमल अक्षर पुरूष के लोक में है। उसका यहाँ वर्णन नहीं करना है। वह पिण्ड (शरीर) से बाहर सूक्ष्म शरीर में है। शब्द ''कर नैंनो दीदार महल में प्यारा है'' में सबको भिन्न-भिन्न बताया है जो आप नीचे पढ़ें।

कबीर सागर में कबीर बानी अध्याय के पष्ठ 111(957) पर नौंवे (नौमें) कमल का वर्णन है। नौमें कमल की शंख पंखुड़ी हैं। पूर्ण ब्रह्म का निवास है।

''शब्द''

कर नैनों दीदार महलमें प्यारा है।।टेक।।
काम क्रोध मद लोभ बिसारो, शील सँतोष क्षमा सत धारो।
मद मांस मिथ्या तजि डारो, हो ज्ञान घोडै असवार, भरम से न्यारा है।1।
धोती नेती बस्ती पाओ, आसन पदम जुगतसे लाओ।
कुम्भक कर रेचक करवाओ, पहिले मूल सुधार कारज हो सारा है।2।
मूल कँवल दल चतूर बखानो, किलियम जाप लाल रंग मानो।
देव गनेश तहँ रोपा थानो, रिद्धि सिद्धि चँवर ढुलारा है।3।
स्वाद चक्र षटदल विस्तारो, ब्रह्म सावित्री रूप निहारो।
उलटि नागिनी का सिर मारो, तहाँ शब्द ओंकारा है।।4।।
नाभी अष्ट कमल दल साजा, सेत सिंहासन बिष्णु बिराजा।
हरियम् जाप तासु मुख गाजा, लछमी शिव आधारा है।।5।।
द्वादश कमल हृदयेके माहीं, जंग गौर शिव ध्यान लगाई।
सोहं शब्द तहाँ धुन छाई, गन करै जैजैकारा है।।6।।
षोड्श कमल कंठ के माहीं, तेही मध बसे अविद्या बाई।
हरि हर ब्रह्म चँवर ढुराई, जहँ श्रीयम् नाम उचारा है।।7।।
तापर कुँज कमल है भाई, बग भौंरा दुइ रूप लखाई।
निज मन करत वहाँ ठकुराई, सो नैनन पिछवारा है।।8।।
कमलन भेद किया निर्वारा, यह सब रचना पिंड मँझारा।
सतसँग कर सतगुरु शिर धारा, वह सतनाम उचारा है।।9।।
आँख कान मुख बन्द कराओ, अनहद झिंगा शब्द सुनाओ।

दोनों तिल इक तार मिलाओ, तब देखो गुलजारा है।।10।।
चंद सूर एक घर लाओ, सुषमन सेती ध्यान लगाओ।
तिरबेनीके संधि समाओ, भौर उतर चल पारा है।।11।।
घंटा शंख सुनो धुन दोई, सहस्र कमल दल जगमग होई।
ता मध करता निरखो सोई, बंकनाल धस पारा है।।12।।
डाकिनी शाकनी बहु किलकारे, जम किंकर धर्म दूत हकारे।
सत्तनाम सुन भागे सारें, जब सतगुरु नाम उचारा है।।13।।
गगन मँडल बिच उर्धमुख कुइया, गुरुमुख साधू भर भर पीया।
निगुरो प्यास मरे बिन कीया, जाके हिये अँधियारा है।।14।।
त्रिकुटी महलमें विद्या सारा, धनहर गरजे बजे नगारा।
लाल बरन सूरज उजियारा, चतूर दलकमल मंझार शब्द ओंकारा है।15।
साध सोई जिन यह गढ लीनहा, नौ दरवाजे परगट चीन्हा।
दसवाँ खोल जाय जिन दीन्हा, जहाँ कुलुफ रहा मारा है।।16।।
आगे सेत सुन्न है भाई, मानसरोवर पैठि अन्हाई।
हंसन मिलि हंसा होई जाई, मिलै जो अमी अहारा है।।17।।
किंगरी सारंग बजै सितारा, क्षर ब्रह्म सुन्न दरबारा।
द्वादस भानु हंस उँजियारा, षट दल कमल मँझार शब्द ररंकारा है।।18।।
महा सुन्न सिंध बिषमी घाटी, बिन सतगुरु पावै नहिं बाटी।
व्याघर सिहं सरप बहु काटी, तहँ सहज अचिंत पसारा है।।19।।
अष्ट दल कमल पारब्रह्म भाई, दहिने द्वादश अंचित रहाई।
बायें दस दल सहज समाई, यो कमलन निरवारा है।।20।।
पाँच ब्रह्म पांचों अँड बीनो, पाँच ब्रह्म निःअच्छर चीन्हों।
चार मुकाम गुप्त तहँ कीन्हो, जा मध बंदीवान पुरुष दरबारा है।। 21।।
दो पर्वतके संध निहारो, भँवर गुफा तहां संत पुकारो।
हंसा करते केल अपारो, तहाँ गुरन दर्बारा है।।22।।
सहस अठासी दीप रचाये, हीरे पन्ने महल जड़ाये।
मुरली बजत अखंड सदा ये, तँह सोहं झनकारा है।।23।।
सोहं हद तजी जब भाई, सत्तलोककी हद पुनि आई।
उठत सुगंध महा अधिकाई, जाको वार न पारा है।।24।।
षोडस भानु हंसको रूपा, बीना सत धुन बजै अनूपा।
हंसा करत चँवर शिर भूपा, सत्त पुरुष दर्बारा है।।25।।
कोटिन भानु उदय जो होई, एते ही पुनि चंद्र लखोई।
पुरुष रोम सम एक न होई, ऐसा पुरुष दिदारा है।।26।।
आगे अलख लोक है भाई, अलख पुरुषकी तहँ ठकुराई।
अरबन सूर रोम सम नाहीं, ऐसा अलख निहारा है।।27।।
ता पर अगम महल इक साजा, अगम पुरुष ताहिको राजा।
खरबन सूर रोम इक लाजा, ऐसा अगम अपारा है।।28।।

ता पर अकह लोक है भाई, पुरुष अनामि तहां रहाई।
जो पहुँचा जानेगा वाही, कहन सुनन ते न्यारा है।।29।।
काया भेद किया निरुवारा, यह सब रचना पिंड मँझारा।
माया अविगत जाल पसारा, सो कारीगर भारा है।।30।।
आदि माया कीन्ही चतूराई, झूठी बाजी पिंड दिखाई।
अवगति रचना रची अँड माहीं, ताका प्रतिबिंब डारा है।।31।।
शब्द बिहंगम चाल हमारी, कहैं कबीर सतगुरु दई तारी।
खुले कपाट शब्द झनकारी, पिंड अंडके पार सो देश हमारा है।।32।।

नोट :- कुंज कमल त्रिकुटी में बने 7वें कमल को कहा है जिसके दो दल हैं एक काला (भंवरे जैसा काला) दूसरा बग (बुगले पक्षी जैसा सफेद) है।

जो त्रिकुटी कमल में विद्या सारा लिखा है और चतुर दल कमल लिखा है। यह त्रयदल कमल है। यह छठा कमल है। इसकी तीन पंखुड़ी दल हैं। इसमें देवी दुर्गा श्री सरस्वती रूप बनाकर रहती है। ओंकार शब्द उसी के स्थान पर हो रहा है। यह चौपाई नं. 15 का विश्लेष्ण है।

चौपाई नं. 18 में षट दल कमल लिखा। यह अक्षर पुरूष के लोक का वर्णन है, परंतु काल ब्रह्म ने ने इसकी नकल ब्रह्मलोक में बनाई है। उसमें ररंकार शब्द हो रहा है। दूसरे शब्दों में चौपाई नं. 18 में जो वर्णन है। यह अक्षर पुरूष के लोक का है। उसमें दो ही कमल हैं। एक षट (छः) दल का कमल जिसमें उसका न्यायधीश बैठता है। जहाँ पर भक्त उसके लोक का किरवाया यानि सोहं शब्द की भक्ति की राशि जमा करवाता है। दूसरा अष्ट दल का कमल है। उसमें अक्षर पुरूष रहता है। उसकी राजधानी कमल के फूल के आकार की है जिसमें आठ पंखुड़ी बनी दिखाई देती हैं।

शब्दः-- ''कर नैनों दीदार महल में प्यारा है'' तथा कबीर सागर में साहेब कबीर ने काल के जाल का पूरा विवरण दिया है। वाणी नं. 1 से 13 तक का भावार्थ स्थूल शरीर (पाँच तत्त्व से बना मनुष्य) को एक टेलिविजन जानो। इसमें चैनल लगे हैं।

	कमल	**देवता**	**जाप**
1	मूल कमल	गणेश	किलियम्
2	स्वाद चक्र	ब्रह्मा–सावित्री	ॐ
3	नाभि कमल	विष्णु–लक्ष्मी	हरियम्
4	हृदय कमल	शिव–पार्वती	सोहं
5	कंठ कमल	अविद्या (प्रकति)	श्रीयम्

त्रिकुटी दो दल (काला व सफेद रंग) का कमल है। इसे एयरपोर्ट जानों जैसे हवाई अड्डा हो। वहाँ से जहाँ भी जाना है वही जहाज उपलब्ध होगा। चूंकि सर्व संत यहीं से अपना आगे जाने का मार्ग लेते हैं। वहाँ पर परमात्मा (भक्त जिस इष्ट का उपासक है) गुरु का रूप (शब्द स्वरूपी गुरु या शब्द गुरु कहिए) बना कर आता है तथा अपने हंस को अपने साथ ले कर स्वस्थान में ले जाता है। यहाँ पर निजमन (पारब्रह्म) भी रहता है। वह जीव के साथ किसी प्रकार का धोखा नहीं होने देता। जैसे हवाई अड्डे पर जाने से पहले जिस देश में जाना है उसका पासपोर्ट, वीजा व टिकट पहले ही प्राप्त कर लिया जाता है। वहाँ पर जाते ही उसी जहाज में बैठा दिया जाता है। जिसने जिस इष्ट लोक में जाने की तैयारी गुरु बना कर नाम स्मरण करके कर रखी है वह उसी लोक में त्रिकुटी से अपने शब्द गुरु के

साथ चला जाता है। इससे आगे सहंस्रार कमल है तथा ज्योति नजर आती है ब्रह्म उपासक इस ज्योति को देख कर अपने धन्य भाग समझते हैं। यहीं तक की जानकारी पतंजलि योग दर्शन व अन्य योगियों का अनुभव है। इससे आगे किसी प्रमाणित शास्त्र में ज्ञान नहीं है। यह काल का प्रथम जाल है।

जिन भक्त आत्माओं को पूर्ण सतगुरु मिल गया, उसने सतसंग सुन कर सतनाम ले लिया। वह इस जाल को समझ गया तथा नाम जपने लग गया।

काल का दूसरा जाल है कि सतलोक, अलख लोक, अगम लोक व अनामी लोक यह सब पूर्णब्रह्म की रचना की झूठी नकल कर रखी है{उसका प्रतिबिम्ब (स्वरूप) डारा है}। नकली शब्द बना रखे हैं। उनको सुनने का तरीका है आँख-कान-मुख हाथ की उँगलियों से बन्द करके फिर उसमें कानों पर ध्यान लगाओ। एक झींगा कीट होता है वह झीं-झीं की आवाज करता रहता है। उससे मिलती जुलती आवाज है। उसे अनहद झींगा शब्द कहते हैं इसे सुनो।

दूसरी साधना - दोनों आँखों की पुतलियों (सैलियों के निचे) को दबाओ। उसमें से नाना प्रकार का प्रकाश का नजारा (गुलजारा) दिखाई देगा।

फिर तीसरी साधना बताई - ठण्डा स्वांस चन्द (बांई नाक वाली स्वांस) व सुर (सूर्य) गर्म स्वांस (दांई नाक वाली स्वांस) को इक्ट्ठा करके सुषमना में प्रवेश करो। यह प्राणायाम विधि है। फिर आगे चलो त्रिवेणी पर। यह सब काल रचित है। जब साधक त्रिवेणी पर चले जाते हैं। वहाँ तीन रास्ते होते हैं। (यह त्रिवेणी काल के इक्कीसवें ब्रह्माण्ड में है जो कमलों की सँख्या में नहीं है।) बांई ओर सहंस्रार (एक हजार कमल दल) दल वाला कमल है। वह काल (ज्योति निरंजन) का महास्वर्ग है। इसमें घंटा तथा शंख की आवाज होती सुनाई देवेगी तथा फिर झिलमिल-झिलमिल प्रकाश नजर आएगा। वहाँ निराकार रूप में (काल) कर्त्ता रहता है। ऐसा साधक मानते हैं परंतु वास्तव में महाब्रह्मा-महाविष्णु व महाशिव रूप में आकार में है। अठासी हजार नगरियां हैं तथा सप्तपुरी का मण्डल है। परंतु महा प्रलय में फिर समाप्त हो जाएंगे। काल जब दोबारा सष्टि रचेगा तो फिर चौरासी लाख योनियों में कर्म कष्ट भोगने के लिए चले जाएंगे। जब यह साधक ब्रह्मरन्द्र (काल लोक से अक्षर पुरूष के लोक में प्रवेश होने वाले ग्यारहवें द्वार को यहाँ ब्रह्मरन्द्र कहा है। वास्तव में ब्रह्मरन्द्र त्रिवेणी पर है) की ओर चलता है तो वहाँ पर बहुत भयंकर आकतियाँ वाली स्त्रियों (डाकनी) की व यम दूतों की पूरी फौज रहती है। उस कटक दल (काल सेना) को न तो ऊँ नाम से जीता जा सकता, न किलियम् से, न हरियम् से, न सोहं से, न ही ज्योति निरंजन - रंरकार - ओंकार - सोहं - शक्ति (श्रीयम्) से, न ही राधास्वामी नाम से, न हीं अकाल मूर्त-शब्द स्वरूपी राम या सतपुरुष या अन्य मनमुखी नामों से जीता जा सकता है। वह केवल पूर्ण संत से उपदेश प्राप्त करके सतनाम सच्चा नाम (ऊँ-सोहं) स्वांस के स्मरण करने से उनको तीर से लगते हैं। जिससे वे भाग जाते हैं। रास्ता खाली हो जाता है, ब्रह्मरन्द्र खुल जाता है तथा साधक काल के असली (विराट रूप में जहाँ रहता है) स्वरूप को देख कर उसके सिर पर पैर रखकर ग्यारहवें द्वार [जो काल ने अपने सिर से बन्द कर रखा है जो सतगुरु के सत्यनाम व सारनाम के दबाव से काल का सिर स्वतः झुक जाता है और वह द्वार खुल जाता है। इस प्रकार यह हंस परब्रह्म के लोक] में प्रवेश कर जाता है। वहाँ काल की माया का दबाव नहीं है। उसके बाद अपने आप केवल सोहं शब्द व सारनाम स्मरण शुरु हो जाता है। ऊँ का जाप उच्चारण नहीं होता। चूंकि वहाँ सूक्ष्म शरीर छूट जाता है अर्थात् ओ३म मंत्र की कमाई ब्रह्म (काल) को छोड़ दी जाती है। कारण व महाकारण भी सारनाम के स्मरण से (जो केवल सुरति निरति से शुरु हो जाता है) समाप्त हो जाते हैं। उस समय केवल कैवल्य शरीर रह जाता है। उस समय जीव की स्थिति बारह सूर्यों के प्रकाश के समान हो जाती है, इतना तेजोमय हो

जाता है। सतगुरु वहाँ पूछते हैं कि हे हंस आत्मा! आपका किसी जीव में, वस्तु में, सम्पत्ति में मोह तो नहीं है। यदि है तो फिर वापिस काल लोक में जाना होगा। परंतु उस समय यह जीवात्मा काल का पूर्ण जाल पार कर चुकी होती है। वापिस जाने को आत्मा नहीं मानती। तब कह देती है कि नहीं सतगुरु जी, अब उस नरक में नहीं जाऊँगा। तब सतगुरु उस हंस को अमत मानसरोवर में स्नान करवाते हैं। उस समय उस हंस का कैवल्य शरीर तथा सर्व आवरण समाप्त होकर आत्म तत्त्व में आ जाता है। यह मानसरोवर परब्रह्म के लोक तथा सतलोक के बीच में बने सुन्न स्थान में है जहाँ से भंवर गुफा प्रारम्भ होती है। उस समय इस आत्मा का स्वरूप 16 सूर्यों जितना तेजोमय हो जाता है तथा बारहवें द्वार को पार कर सत्यलोक में प्रवेश कर सदा पूर्ण मोक्ष के आनन्द को पाती है। यह पूर्ण मुक्ति है।

यह आत्मा भूल कर भी वापिस काल के जाल में नहीं आती। जैसे बच्चे का एक बार आग में हाथ जल जाए तो वह फिर उधर नहीं जाता। उसे छूने की कोशिश भी नहीं करता।

वाणी नं. 14 में साहेब कबीर बता रहे हैं कि यह संसार उल्टा लटक रहा है। जैसे किसी कुँए में अमत भरा है अर्थात् परमात्मा का आनन्द इस शरीर में है। वह दसवें द्वार के पार ही है जो इस शरीर के अन्दर नीचे को मुख वाला सुषमना द्वार है। जो सुष्मणा में से पार हो जाता है वही भक्त लाभ प्राप्त करता है यह साधना नाम व गुरु धारण करके ही बनती है।

वाणी नं. 15 में सतगुरु कबीर साहेब जी भेद दे रहे हैं कि जब काल साधक ऊँ नाम का जाप परमात्मा को निर्गुण जान कर गुरु धारण करके करता है तो काल स्वयं उस साधक के गुरु का (नकली शब्द रूप) रूप बनाकर आता है तथा महास्वर्ग (महाइन्द्रलोक) में ले जाता है। जब वह महाइन्द्र लोक के निकट जाते हैं तो बहुत जोर से बादल की गर्जना जैसा भयंकर शब्द होता है। जो साधक डर जाता है वह वापिस चौरासी में चला जाता है और जो नहीं डरता है वह अपने गुरु के साथ आगे बढ़ जाता है। उसे फिर सुहावना नंगारा बजता हुआ सुनाई देता है। चार पंखड़ी वाला कमल का लाल रंग का एक और कमल है उसमें ओंकार धुनि हो रही हो जो महास्वर्ग में है। वास्तव में यह तीन पंखुड़ी का कमल है जो छठा कमल है। लिखने में गलती है।

वाणी नं. 16 का अर्थ है कि संत वह है जो दसवें दरवाजे पर काल द्वारा लगाए ताले को सत्यनाम की चाबी से खोल कर आगे ग्यारहवाँ द्वार जो काल ने नकली सतलोक आदि बीस ब्रह्मण्डों के पार इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में बनाकर बन्द कर रखा है उसे भी खोल कर परब्रह्म (अक्षर ब्रह्म) के लोक में चला जाता है। क्योंकि नौ द्वार (दो नाक, दो कान, दो आँखें, मुख, गुदा-लिंग ये नौ) प्रगट दिखाई देते हैं। दसवें द्वार पर (जो सुषमना खुलने पर आता है) ताला लगा रखा है तथा ग्यारहवां द्वार परब्रह्म के लोक में प्रवेश करने वाले स्थान पर बना रखा है। जहाँ स्वयं काल भगवान सशरीर विराजमान है।

वाणी नं. 17 का भावार्थ है कि आगे सेत सुन्न है (जो काल भगवान ने नकली बना रखी है) वहाँ एक नकली मानसरोवर बना रखा है तथा जो निर्गुण उपासक ब्रह्म के होते हैं उन्हें इस सरोवर में स्नान कराने के बाद नकली परब्रह्म के लोक में जो महास्वर्ग में रच रखा है भेज देता है। वे अन्य साधकों की दष्टि से दूर हो जाते हैं। उन्हें ब्रह्म लीन मान लिया जाता है। इस स्थान को काल ने गुप्त रखा हुआ है। जो इसमें पहुँच गए वह पूर्व पहुँचे हंसों को मिल कर आन्नदित होते हैं। जैसे पित्र-पित्रों को मिलकर तथा भूत भूतों को मिल कर। इसमें ररंकार धुनि चल रही है। जिन साधकों ने खैचरी मुद्रा लगा कर साधना ररंकार जाप से की वे महाविष्णु (ब्रह्म-काल) के महास्वर्ग में चले जाते हैं। फिर काल निर्मित महासुन्न है, उसको बिना गुरु वाले हंस पार नहीं कर सकते। वहाँ पर काल ने मायावी सिंह, व्याध व सर्प छोड़ रखे हैं वे बिना गुरु के हंस को काटते हैं। इसलिए भक्ति चाहे काल लोक की करो, चाहे सतलोक की,

लेकिन गुरु बनाना जरूरी है। यह सहज सुखदाई विस्तार है।

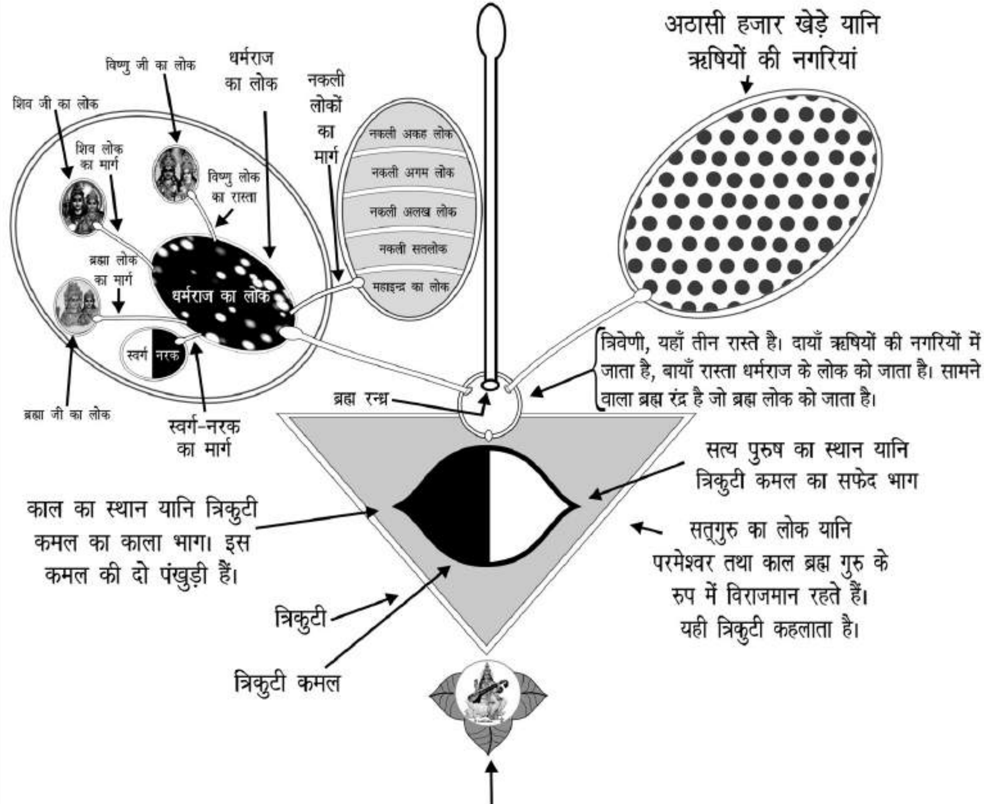
यह जो कमल वर्णन किए जा रहे हैं यह सूक्ष्म शरीर के हैं तथा सूक्ष्म शरीर भी काल द्वारा जीव पर चढाया गया है। इसलिए यह सब काल की नकली रचना का वर्णन सतगुरु बता रहे हैं। अष्ट पंखड़ी वाला एक और कमल है वह परब्रह्म का लोक कहा है। वास्तव में यह वह स्थान है जहाँ पर पूर्ण ब्रह्म अन्य रूप में निवास करता है तथा वहाँ न ब्रह्म (काल) जा सकता है तथा न तीनों देव ही जा सकते हैं। इसलिए इसे भी परब्रह्म कहा जाता है। उसके दांए हिस्से में बारह भक्त रहते हैं। उसके बांए में दस दल का कमल है जिसमें कर्म सन्यासी निर्गुण उपासक रहते हैं। ऐसे-2 काल ने पाँच ब्रह्म (भगवान) व पाँच अण्ड मण्डल बना रखे हैं। उनको अपनी ओर से निःअक्षर की उपाधि दे रखी है और चार स्थान गुप्त रखे हैं जिनमें वे भक्त जो सतगुरु कबीर के उपासक होते हैं तथा फिर दोबारा काल भक्ति करने लगते हैं। उनसे काल (ब्रह्म-निरंजन) इतना नाराज हो जाता है कि उन्हें कैदी बनाकर इन गुप्त स्थानों पर रख देता है तथा वहाँ महाकष्ट देता है। आगे दो पर्वत हैं। उनके बीचों बीच एक रास्ता है। वहाँ काल के उपासक जो गुरुपद पर होते हैं उन्हें कुछ दिन इस स्थान पर रखता है। इसे भंवर गुफा भी कहते हैं। वहाँ पर ये हंस (गुरुजन) मौज मारते हैं तथा वहाँ सोहं शब्द की स्वतः धुनि चल रही है और मुरली की मीठी-2 धुन भी चल रही होती है तथा उस स्थान में हीरे-पन्ने जड़े हुए हैं। बहुत ही मनोरम स्थान बना रखा है। जब इस सोहं मन्त्र द्वारा किए जाप से अक्षर पुरूष (परब्रह्म) के लोक से पार होने पर नकली सतलोक आता है। परब्रह्म रूप धार कर काल ही धोखा दे रहा है। उसमें महक उठती रहती है। जो बहुत विस्तत स्थान है। यहाँ पर काल उपासक विशेष साधक (मार्कण्डे ऋषि जैसे) ही पहुँच पाते हैं। यहाँ काल स्वयं सतपुरुष बना बैठा है। वहाँ पर अपने आप धुनि हो रही है। वहाँ पहुँचे हंस उस महाविष्णु रूप में बैठे नकली सतपुरुष पर आदर से चँवर करते हैं तथा आनन्दित होते हैं। उस काल रूपी सतपुरुष का रूप हजारों सूर्य और चन्द्रमाओं की रोशनी हो ऐसा सतपुरुष से कुछ मिलता जुलता रूप बना रखा है।

फिर स्वयं ही अलख पुरुष बना बैठा है तथा अलख लोक बना रखा है। फिर स्वयं ही अगम पुरुष बनकर अगम लोक में व अनामी पुरुष बनकर अकह लोक में सबको धोखा दिए बैठा है तथा कहता है कि वह तो अवर्णननीय है। यह वही जानेगा जो वहां पहुँचेगा।

कबीर साहेब जी ने शब्द के अंत में कहा कि यह सब काया स्थूल व सूक्ष्म शरीर के कमलों का न्यारा-2 विवरण आपके सामने कर दिया। यह सब वर्णन रचना का भेद आपको बताया है यह (दोनों शरीर स्थूल व सूक्ष्म के अन्दर है) काया के अन्दर ही है। इस काल की माया (प्रकति) ने अपनी चतुराई से झूठी रचना करके सतलोक की रचना जैसी ही अण्ड (ब्रह्मण्ड) में नकली रचना कर रखी है। फिर भी इसमें और वास्तविक सतलोक में दिन और रात का अन्तर है। जैसे बारीक नमक तथा बूरा में कोई अंतर दिखाई नहीं देता परंतु स्वाद भिन्न है। कबीर साहेब कहते हैं कि हमारा मार्ग विहंगम (पक्षी) की तरह है। जैसे पक्षी जमीन से उड़ कर सीधा वक्ष की चोटी पर पहुँच जाता है। काल साधकों का मार्ग पपील मार्ग है। जैसे चींटी जमीन से चल कर वक्ष के तने से फिर डार व टहनियों पर से ऊपर जाती है। त्रिकुटी से कबीर साहेब के हंस विमान में बैठ कर उड़ जाते हैं। परंतु ब्रह्म (काल) के उपासक चींटी की तरह चल कर अपने-अपने इष्ट स्थान पर जाते हैं। सारनाम रूपी विमान से ही साधक सतलोक जा सकता है। अन्य किसी उपासना या मंत्र से नहीं जाया जा सकता। जैसे समुद्र को समुद्री जहाज या हवाई जहाज से ही पार किया जा सकता है, तैर कर नहीं। इसलिए पूज्य कबीर साहेब जी ने कहा है कि हम व हमारे हंस आत्मा शब्द (सत्यनाम व सार नाम) के आधार पर सतलोक चले जाते हैं।

त्रिकुटी तथा त्रिवेणी का चित्र

इस चित्र को कबीर सागर के अध्याय 'भवतारण बोध' पृष्ठ 57, अध्याय 'कबीर बानी' पृष्ठ 111 तथा अध्याय 'पंच मुद्रा' पृष्ठ 190-191 से प्रमाण से बनाया है। इनके अतिरिक्त कमलों का वर्णन अध्याय 'अनुराग सागर' पृष्ठ 151 पर भी है जो अस्पष्ट है। चित्र में मेरा (संत रामपाल दास का) अनुभव भी विशेष है।



यह छठा संगम कमल सरस्वती का निवास है। वास्तव में दुर्गा ही सरस्वती रुप में रहती है। तीन पंखुड़ी हैं। यहाँ पर धर्मराज ने जीवों को काल जाल में फंसाए रखने के लिये 72 करोड़ उर्वशी (सुन्दर परियाँ) रखी हैं। सरस्वती मधुर आवाज में स्वयं भी गाती हैं तथा सब उर्वशियां भी गाती हैं तथा अर्धनग्न शरीर में विचरण करती रहती हैं। यहाँ भक्तों की कठिन परिक्षा होती है। बहुत बड़ा बाड़ा है। कई एकान्त स्थान हैं। यहाँ पर अज्ञानी मार खा जाता है। इसकी एक पंखुड़ी में काल अन्य रूप में निवास करता है जो उन भक्तों को पकड़ लेता है जो सुंदर स्त्रियों को देखकर भ्रमित होते हैं। इसके साथ करोड़ों की संख्या में युवा रहते हैं जो भक्तमतियों को अपनी ओर आकर्षित करके काल-जाल में रखते हैं। इसी छठे कमल की तीसरी पंखुड़ी जो दांई ओर है। उसमें सतपुरूष भी अन्य रूप में रहते हैं जो भक्तों को वाणी सुनाकर काल-जाल से सचेत करते हैं और उनको अपनी ओर आने का संकेत करते हैं। भक्त सैन (ईशारा-संकेत) समझ जाते हैं और दौड़कर उनके पक्ष में चले जाते हैं। फिर दो दल के कमल में भक्त-भक्तमति जाते हैं।

वहाँ पर आत्मा के शरीर का प्रकाश सोलह सूर्यों के प्रकाश तुल्य हो जाता है। वहाँ मनुष्य जैसा ही अमर शरीर आत्मा को प्राप्त होता है। वहाँ पर जीव नहीं कहलाता, वहां पर परमात्मा जैसे गुणों युक्त होकर हंस कहलाता है तथा ऊपर के दोनों लोकों अलख लोक व अगम लोक में परमहंस कहा जाता है, अनामी लोक में परमात्मा तथा आत्मा का अस्तित्व भिन्न नहीं रहता। तत्त्वज्ञान के आधार से साधक सूक्ष्म शरीर वाले कमलों में नहीं उलझते। चूंकि सतगुरु जी सार शब्द रूपी कुंजी दे देता है, जिससे काल के सर्व ताले (बन्धन) अपने आप खुलते चले जाते हैं तथा वास्तविक शब्द की झनकार (धुनि) होने लगती है जो इस शरीर के बाहर सत्यलोक में हो रही है। हमारा सत्यलोक पिंड (शरीर) व अण्ड (ब्रह्मण्ड) के पार है। वहां जा कर आत्मा पूर्ण मुक्ति प्राप्त करती है।

अनुराग सागर के पष्ठ 152 का सारांश :-

इस पष्ठ पर परमेश्वर ने शरीर के अंदर का गुप्त भेद बताया है। इस मानव शरीर में 72 नाड़ियां हैं। उनमें तीन (ईड़ा, पिंगला, सुष्मणा) मुख्य हैं। फिर एक विशेष नाड़ी है ''ब्रह्म रन्द्र''

परमेश्वर कबीर जी ने बताया है कि धर्मदास! मन ही ज्योति निरंजन है। इसने जीव को ऐसे नचा रखा है जैसे बाजीगर मर्कट (बंदर) को नचाता है। इस शरीर में 5 तत्त्व 25 प्रकति तथा तीन गुण काल के तीन एजेंट हैं। जीव को धोखे में रखते हैं। इस शरीर में काल निरंजन तथा जीव दोनों की मुख्य भूमिका है। काल निरंजन मन रूप में सब पाप करवाता है। पाप जीव के सिर रख देता है।

अनुराग सागर के पष्ठ 153 का सारांश :-

काल ने ऐसा धोखा कर रखा है कि जीव परमेश्वर को भूल गया है।

''मन कैसे पाप-पुण्य करवाता है''

मन ही काल-कराल है। यह जीव को नचाता है। सुंदर स्त्री को देखकर उससे भोग-विलास करने की उमंग मन में उठाता है। स्त्री भोगकर आनन्द मन (काल निरंजन) ने लिया, पाप जीव के सिर रख दिया।

{वर्तमान में सरकार ने सख्त कानून बना रखा है। यदि कोई पुरूष किसी स्त्री से बलात्कार करता है तो उसको दस वर्ष की सजा होती है। यदि नाबालिक से बलात्कार करता है तो आजीवन कारागार की सजा होती है। आनन्द दो मिनट का मन की प्रेरणा से तथा दुःख पहाड़ के समान। इसलिए पहले ही मन को ज्ञान की लगाम से रोकना हितकारी है।}

अनुराग सागर के पष्ठ 154 का सारांश :-

पराये धन को देखकर मन उसे हड़पने की प्रेरणा करता है। चोरी कर जीव को दण्ड दिलाता है। परनिंदा, परधन हड़पना यह पाप है। काल इसी तरह जीव को कर्मों के बंधन में फंसाकर रखता है। संत से विरोध तथा गुरूद्रोह यह मन रूप से काल ही करवाता है जो घोर अपराध है।

''निरंजन चरित्र = काल का जाल''

परमेश्वर कबीर जी ने बताया है कि धर्मदास! मैं तेरे को धर्म (धर्मराय-काल) का जाल समझाता हूँ। काल निरंजन ने श्री कष्ण में प्रवेश करके गीता का ज्ञान दिया। उसको कर्मयोग उत्तम बताकर युद्ध करवाया। ज्ञान योग से उसको भ्रमित किया। अर्जुन तो पहले ही नेक भाषा बोल रहा था जो ज्ञान था। कह रहा था कि युद्ध करके अपने ही कुल के भतीजे, भाई, साले, ससुर, चाचे-ताऊ को मारने से अच्छा तो भीख माँगकर निर्वाह कर लेंगे। मुझे ऐसे राज्य की आवश्यकता

नहीं जो पाप से प्राप्त हो। उसको डरा-धमकाकर युद्ध करवाकर नरक का भागी बना दिया। ज्ञान योग का बहाना कर कर्म योग पर जोर देकर महापाप करा दिया।

अनुराग सागर के पृष्ठ 155 का सारांश :-

धर्मदास जी ने प्रश्न किया कि हे प्रभु! आपने काल-जाल समझाया, अब यह बताने की कृपा करें कि जीव को आपकी प्राप्ति के लिए क्या करना चाहिए?

''सतगुरू (कबीर जी) वचन''

''भक्त के 16 गुण (आभूषण)''

परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे धर्मदास! भवसागर यानि काल लोक से निकलने के लिए भक्ति की शक्ति की आवश्यकता होती है। परमात्मा प्राप्ति के लिए जीव में सोलह (16) लक्षण अनिवार्य हैं। इनको आत्मा के सोलह सिंगार (आभूषण) कहा जाता है।

1. ज्ञान 2. विवेक 3. सत्य 4. संतोष 5. प्रेम भाव 6. धीरज 7. निरधोषा (धोखा रहित) 8. दया 9. क्षमा 10. शील 11. निष्कर्मा 12. त्याग 13. बैराग 14. शांति निज धर्मा 15. भक्ति कर निज जीव उबारै 16. मित्र सम सबको चित धारै।

भावार्थ :- परमात्मा प्राप्ति के लिए भक्त में कुछ लक्षण विशेष होने चाहिऐं। ये 16 आभूषण अनिवार्य हैं।

1. तत्त्वज्ञान 2. विवेक 3. सत्य भाषण 4. परमात्मा के दिए में संतोष करे और उसको परमेश्वर की इच्छा जाने 5. प्रेम भाव से भक्ति करे तथा अन्य से भी मृदु भाषा में बात करे 6. धैर्य रखे, सतगुरू ने जो ज्ञान दिया है, उसकी सफलता के लिए हौंसला रखे फल की जल्दी न करे 7. किसी के साथ दगा (धोखा) नहीं करे 8. दया भाव रखे 9. भक्त तथा संत का आभूषण क्षमा भी है। शत्रु को भी क्षमा कर देना चाहिए 10. शील स्वभाव होना चाहिए। भक्ति को निष्काम भाव से करे, सांसारिक लाभ प्राप्ति के उद्देश्य से नहीं करे 12. त्याग की भावना बहुत अनिवार्य है 13. बैराग्य होना चाहिए। संसार को असार तथा अपने जीवन को अस्थाई जानकर परमात्मा के प्रति विशेष लगाव होना मोक्ष में अति आवश्यक है 14. भक्त का विशेष गुण शांति होती है, यह भी अनिवार्य है 15. भक्ति करना यानि भक्ति करके अपने जीव का कल्याण कराऐं 16. प्रत्येक व्यक्ति के साथ मित्र के समान व्यवहार करना चाहिए।

ये उपरोक्त गुण होने के पश्चात् सत्यलोक जाया जाएगा। इनके अतिरिक्त गुरू की सेवा, गुरू पद्यति में विश्वास रखे। परमात्मा की भक्ति और संत समागम करना अनिवार्य है।

अनुराग सागर के पृष्ठ 156 तथा पृष्ठ 157 का सारांश :-

इन पृष्ठों पर भी यही ज्ञान है और विषय-विकार त्यागना चाहिए, तब भक्ति सफल होगी।

अनुराग सागर के पृष्ठ 158-159 का सारांश :-

परमेश्वर ने बताया है कि उपदेशी को चाहिए कि 15वें दिन कोई धार्मिक अनुष्ठान यानि पाठ कराना चाहिए। यदि 15 दिन में नहीं करा सकता है तो महीने में अवश्य कराए। निर्धन के लिए कहा है कि यदि कोई रंक हो तो वर्ष में दो बार कराए या वर्ष में एक बार अवश्य कराए। यदि वर्ष में नहीं कराएगा तो वह भक्त साकट (भक्तिभाव हीन) कहलावेगा। एक वर्ष में पाठ करावे तो उसके जीव को मोक्ष में धोखा नहीं।

कबीर नाम श्रद्धा से जपे यानि गर्व के साथ कबीर जी का नाम ले। शर्म नहीं करे कि यह

भी कोई परमात्मा का नाम है। ऐसे कहने वालों से डरे नहीं, शर्मावे नहीं और इसके साथ-साथ तेरा (धर्मदास) नाम भी आदर से कहे।

भावार्थ है कि आदरणीय धर्मदास के साथ परमात्मा रहे, उनको सत्यलोक लेकर गए, अपना यथार्थ परिचय दिया। धर्मदास जी ने अपने आँखों देखा, कानों परमेश्वर से सुना आध्यात्मिक ज्ञान कबीर सागर, कबीर बानी, कबीर बीजक, कबीर शब्दावली को लिखकर मानव समाज पर महान उपकार किया है। इसलिए उनकी महिमा भी करनी चाहिए।

भक्त को चाहिए कि भक्ति-साधना तथा मर्यादा का पालन अन्तिम श्वांस तक करे। जैसे शूरवीर युद्ध के मैदान में या तो मार देता है या स्वयं वीरगति को प्राप्त हो जाता है। वह पीछे कदम नहीं हटाता। संत तथा भक्त का रणक्षेत्र भक्ति मन्त्र जाप तथा मर्यादा है। जो शिष्य गुरू से विमुख हो जाता है। नाम खण्डित कर देता है तो स्वाभाविक ही वह गुरू में कुछ दोष निकालेगा। जिस कारण से नरक में अग्नि कुण्ड में गिरेगा। यदि गुरू विमुख होकर भक्ति छोड़ देता है तो उसको भी बहुत हानि होती है।

उदाहरणः- जैसे इन्वर्टर को चार्जिंग पर लगा रखा है, वह चार्ज हो रहा है। यदि बीच में चार्जर निकाल लिया जाए तो वह इन्वर्टर जितना चार्ज हो गया था, उतनी देर लाभ देगा। फिर अचानक सर्व सुविधाऐं बंद हो जाएंगी। इसी प्रकार उस शिष्य की दशा जानें। गुरू शरण में रहकर मर्यादा में रहते हुए जितने दिन भक्ति की वह शक्ति आत्मा में जमा हो गई, उतनी आत्मा चार्ज हो गई। जिस दिन गुरू जी से विमुख हो गया, उसी दिन से भक्ति की शक्ति आनी बंद हो जाती है। यदि गुरू विमुख (गुरू से विरोध करके गुरू त्याग देना) होकर भी उसी गुरू द्वारा बताई गई साधना मन्त्र आदि करता है तो कोई लाभ नहीं होता। जैसे बिजली का कनैक्शन कट जाने के पश्चात् पंखे, मोटर, बल्ब के स्विच (बटन) दबाते रहो, न पंखा चलेगा, न बल्ब जलेगा। यही दशा गुरू विमुख साधक की होगी। फिर नरक का भागी होगा। कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि :-

कबीर, मानुष जन्म पाकर खोवै, सतगुरू विमुखा युग–युग रोवै।
कबीर, गुरू विमुख जीव कतहु न बचै। अग्नि कुण्ड में जर–बर नाचै।।
कोटि जन्म विषधर को पावै। विष ज्वाला सही जन्म गमावै।।
बिष्ट (टट्टी) मांही क्रमि जन्म धरई। कोटि जन्म नरक ही परही।।

भावार्थ :- गुरू को त्याग देने वाला जीव बिल्कुल नहीं बचेगा। नरक स्थान पर अग्नि के कुण्डों में जल-बल (उबल-उबल) कर कष्ट पाएगा। वहाँ अग्नि के कष्ट से नाचेगा यानि उछल-उछलकर अग्नि में गिरेगा।

फिर करोड़ों जन्म विषधर (सर्प) की जूनी (शरीर) प्राप्त करेगा। सर्प के अपने अन्दर के विष की गर्मी बहुत परेशान करती है। गर्मी के मौसम में सर्प उस विष की उष्णता से बचने के लिए शीतलता प्राप्त करने के लिए चन्दन वृक्ष के ऊपर लिपटे रहते हैं। फिर वही गुरू विमुख यानि गुरू द्रोही बिष्टा (टट्टी-गुह) में कीड़े का जन्म प्राप्त करता है। इस प्रकार गुरू से दूर गया प्राणी महाकष्ट उठाता है। यदि गुरू नकली है तो उसको त्यागकर पूर्ण गुरू की शरण में चले जाने से कोई पाप नहीं लगता।

कबीर गुरू दयाल तो पुरूष दयाल। जेहि गुरू व्रत छुए नहीं काल।।

भावार्थ :- हे धर्मदास! यदि गुरू शिष्य के प्रति दयाल है यानि गुरू के दिल में शिष्य की अच्छी छवि है, मर्यादा में रहता है तो परमात्मा भी उस भक्त के ऊपर प्रसन्न है। अन्यथा उपरोक्त

कष्ट शिष्य को भोगने पड़ेंगे।

पृष्ठ 160 का सारांश :-

इस पृष्ठ पर कुछ गुरू महिमा है तथा कोयल की चाणक्य नीति का ज्ञान है।

''काल का जीव सतगुरू ज्ञान नहीं मानता''

"कोयल-काग" का उदाहरण :- कोयल पक्षी कभी अपना भिन्न घौंसला बना कर अण्डे-बच्चे पैदा नहीं करती। कारण यह कि कोयल के अण्डों को कौवा (Crow) खा जाता है। इसलिए कोयल को ऐसी नीति याद आई कि जिससे उसके अण्डों को हानि न हो सके। कोयल जब अण्डे उत्पन्न करती है तो वह ध्यान रखती है कि कहाँ पर कौवी (Female Crow) ने अपने घौंसले में अण्डे उत्पन्न कर रखे हैं। जिस समय कौवी पक्षी भोजन के लिए दूर चली जाती है तो पीछे से कोयल उस कौवी के घौंसले में अण्डे पैदा कर देती है और दूर वृक्ष पर बैठ जाती है या आस-पास रहेगी। जिस समय कौवी घौंसले में आती है तो वह दो के स्थान पर चार अण्डे देखती है। वह नहीं पहचान पाती कि तेरे अण्डे कौन से हैं, अन्य के कौन-से हैं? इसलिए वह चारों अण्डों को पोषण करके बच्चे निकाल देती है। कोयल भी आसपास रहती है। अब कोयल भी अपने बच्चों को नहीं पहचानती है क्योंकि सब बच्चों का एक जैसा रंग (काला रंग) होता है। जिस समय बच्चे उड़ने लगते हैं, तब कोयल निकट के अन्य वृक्ष पर बैठकर कुहु-कुहु की आवाज लगाती है। कोयल की बोली कोयल के बच्चों को प्रभावित करती है, कौवे वाले मस्त रहते हैं। कोयल की आवाज सुनकर कोयल के बच्चे उड़कर कोयल की ओर चल पड़ते हैं। कोयल कुहु-कुहु करती हुई दूर निकल जाती है, साथ ही कोयल के बच्चे भी आवाज से प्रभावित हुए कोयल के पीछे-पीछे दूर चले जाते हैं। कौवी विचार करती है कि ये तो गए सो गए, जो घौंसले में हैं उनको संभालती हूँ कि कहीं कोई पक्षी हानि न कर दे। यह विचार करके कौवी लौट आती है। इस प्रकार कोयल के बच्चे अपने कुल परिवार में मिल जाते हैं।

परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास को समझाया है कि हे धर्मदास! तेरा पुत्र नारायण दास काग यानि काल का बच्चा है। उसके ऊपर मेरे प्रवचनों का प्रभाव नहीं पड़ा। आप दयाल (करूणामय सतपुरूष) के अंश हो। आपके ऊपर मेरी प्रत्येक वाणी का प्रभाव हुआ और आप खींचे चले आए। काल के अंश नारायण दास पर कोई असर नहीं हुआ। यही कहानी प्रत्येक परिवार में घटित होती है। जो अंकुरी हंस यानि पूर्व जन्म के भक्ति संस्कारी जो किसी जन्म में सतगुरू कबीर जी के सत्य कबीर पंथ में दीक्षित हुए थे, परंतु मुक्त नहीं हो सके। वे किसी परिवार में जन्मे हैं, सतगुरू की कबीर जी की वाणी सुनते ही तड़फ जाते हैं। आकर्षित होकर दीक्षा प्राप्त करके शिष्य बनकर अपना कल्याण कराते हैं। उसी परिवार में कुछ ऐसे भी होते हैं जो बिल्कुल नहीं मानते। अन्य जो दीक्षित सदस्य हैं, उनका भी विरोध तथा मजाक करते हैं। वे काल के अंश हैं। वे भी नारायण दास की तरह काल के दूतों द्वारा प्रचलित साधना ही करते हैं।

पृष्ठ 161 अनुराग सागर का सारांश :-

कबीर परमात्मा ने कहा कि हे धर्मदास! जिस प्रकार शूरवीर तथा कोयल के सुत (बच्चे) चलने के पश्चात् पीछे नहीं मुड़ते। इस प्रकार यदि कोई मेरी शरण में इस प्रकार धाय (दौड़कर) सब बाधाओं को तोड़कर परिवार मोह छोड़कर मिलता है तो उसकी एक सौ एक पीढ़ियों को पार कर दूँगा।

कबीर, भक्त बीज होय जो हंसा। तारूं तास के एकोतर बंशा।।

कबीर, कोयल सुत जैसे शूरा होई। यही विधि धाय मिलै मोहे कोई।।
निज घर की सुरति करै जो हंसा। तारों तास के एकोतर बंशा।।

''हंस (भक्त) लक्षण''

काग जैसी गंदी वत्ति को त्याग देता है तो वह हंस यानि भक्त बनता है। काग (कौवा) निज स्वार्थ पूर्ति के लिए दूसरों का अहित करता है। किसी पशु के शरीर पर घाव हो जाता है तो कौवा उस घाव से नौंच-नौंचकर माँस खाता है, पशु की आँखों से आँसू ढ़लकते रहते हैं। कौए की बोली भी अप्रिय होती है। हसं को चाहिए कि अपनी कौए वाला स्वभाव त्यागे। निज स्वार्थवश किसी को कष्ट न देवे। कोयल की तरह मदु भाषा बोले। ये लक्षण भक्त के होते हैं।

''ज्ञानी यानि सत्संगी के लक्षण''

सतगुरू का ज्ञान तथा दीक्षा प्राप्त करके यदि शिष्य जगत भाव में चलता है, वह मूर्ख है। वह भक्ति लाभ से वंचित रह जाता है। वह भक्ति में आगे नहीं बढ़ पाते। वे सार शब्द प्राप्ति योग्य नहीं बन पाते। यदि अंधे व्यक्ति का पैर बिष्टे (टट्टी) या गोबर पर रखा जाता है तो उसका कोई मजाक नहीं करता। कोई उसकी हाँसी नहीं करता। यदि आँखों वाला कुठौर (गलत स्थान पर) जाता है (परनारी गमन, चोरी करना, मर्यादा तोड़ना, वर्जित वस्तु तथा साधना का प्रयोग करना कुठौर कहा है।) तो निंदा का पात्र होता है।

अनुराग सागर के पष्ठ 162 तथा 163 का सारांश :-

''भक्त परमार्थी होना चाहिए''

जैसे गाय स्वयं तो जंगल में खेतों में घास खाकर आती है। स्वयं जल पीती है। मानव को अमत दूध पिलाती है। उसके दूध से घी बनता है। गाय सुत यानि गाय का बच्छा हल में जोता जाता है। इंसान का पोषण करता है। गाय का गोबर भी मनुष्य के काम आता है। मत्यु उपरांत गाय के शरीर के चमड़े से जूती बनती हैं जो मानव के पैरों को काँटों-कंकरों से रक्षा करती है। मानव जन्म प्राप्त प्राणी परमार्थ न करके भक्ति से वंचित रहकर पाप करने में अनमोल जीवन नष्ट कर जाता है। माँसाहारी नर राक्षस की तरह गाय को मारकर उसके माँस को खा जाता है। महापाप का भागी बनता है। इस सम्बन्ध की परमेश्वर कबीर जी की निम्न वाणी पढ़ें :-

''परमार्थी गऊ का दष्टांत''

गऊको जानु परमार्थ खानी। गऊ चाल गुण परखहु ज्ञानी।।
आपन चरे तण उद्याना। अँचवे जल दे क्षीर निदाना।।
तासु क्षीर घत देव अघाहीं। गौ सुत नर के पोषक आहीं।।
विष्ठा तासु काज नर आवे। नर अघ कर्मी जन्म गमावे।।
टीका पुरे तब गौ तन नासा। नर राक्षस गोतन लेत ग्रासा।।
चाम तासु तन अति सुखदाई। एतिक गुण इक गोतन भाई।।

''परमार्थी संत लक्षण''

गौ सम संत गहै यह बानी। तो नहिं काल करै जिवहानी।।
नरतन लहि अस बुद्धी होई। सतगुरू मिले अमर है सोई।।

सुनि धर्मनि परमारथ बानी। परमारथते होय न हानी।।
पद परमारथ संत अधारा। गुरू सम लेई सो उतरे पारा।।
सत्य शब्द को परिचय पावै। परमारथ पद लोक सिधावै।।
सेवा करे विसारे आपा। आपा थाप अधिक संतापा।।
यह नर अस चातुर बुद्धिमाना। गुन सुभ कर्म कहै हम ठाना।।
ऊँचा कर्म अपने सिर लीन्हा। अवगुण कर्म पर सिर दीन्हा।।
तात होय शुभ कर्म विनाशा। धर्मदास पद गहो विश्वासा।।
आशा एक नामकी राखे। निज शुभकर्म प्रगट नहिं भाखे।।
गुरूपद रहे सदा लौ लीना। जैसे जलहि न विसरत मीना।।
गुरू के शब्द सदा लौ लावे। सत्यनाम निशदिन गुणगावे।।
जैसे जलहि न विसरे मीना। ऐसे शब्द गहे परवीना।।
पुरूष नामको अस परभाऊ। हंसा बहुरि न जगमहँ आऊ।।
निश्चय जाय पुरूष के पासा। कूर्मकला परखहु धर्मदासा।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी के माध्यम से मानव मात्र को संदेश व निर्देश दिया है। कहा है कि मानव को गाय की तरह परमार्थी होना चाहिए। जिनको सतगुरू मिल गया है, वे तो अमर हो जाएंगे। घोर अघों (पापों) से बच जाएंगे, सेवा करें तो अपनी महिमा की आशा न करें। यदि अपने आपको थाप (मान-बड़ाई के लिए अपने आपको महिमावान मान) लेगा तो उसको अधिक कष्ट होगा। शुभ कर्म नष्ट हो जाएंगे।

उपदेशी केवल एक नाम की आशा रखे। मान-बड़ाई की चाह हृदय से त्याग दे। अपने शुभ कर्म (दान या अन्य सेवा) किसी के सामने न बताए। गुरू जी के पद (चरण) यानि गुरू की शरण में ऐसे रहे जैसे जल में मीन रहती है। मछली एक पल भी पानी के बिना नहीं रह सकती। तुरंत मर जाती है। ऐसे गुरू की शरण को महत्त्व देवे। गुरू जी द्वारा दिए शब्द यानि जाप मंत्र (सतगुरू शब्द) जो सत्यनाम है यानि वास्तविक भक्ति मंत्र में सदा लीन रहे जो पुरुष (परमात्मा) का भक्ति मंत्र है, उसका ऐसा प्रभाव है, उसमें इतनी शक्ति है कि साधक पुनः संसार में जन्म-मरण के चक्र में नहीं आता। वह वहाँ चला जाता है जो सनातन परम धाम, जहाँ परम शांति है। जहाँ जाने के पश्चात् साधक कभी लौटकर संसार में नहीं आता।

यही प्रमाण श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में है। गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि हे अर्जुन! तू सर्वभाव से उस परमेश्वर की शरण में जा, उस परमेश्वर की कृपा से ही तू परम शांति को तथा सनातन परम धाम (शाश्वतम् स्थानम्) को प्राप्त होगा।(अध्याय 18 श्लोक 62)

गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि तत्त्वज्ञान प्राप्ति के पश्चात् परमेश्वर के उस परम पद की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक लौटकर कभी संसार में नहीं आता। जिस परमेश्वर ने संसार रूपी वृक्ष की रचना की है, उसी की भक्ति करो।(अध्याय 15 श्लोक 4)

गीता ज्ञान दाता ने अपनी नाशवान अर्थात् जन्म-मरण की स्थिति गीता अध्याय 2 श्लोक 12, अध्याय 4 श्लोक 5, 9 में तथा अध्याय 10 श्लोक 2 में स्पष्ट ही रखी है कि अर्जुन! तेरे और मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं, तू नहीं जानता, मैं जानता हूँ। पाठकजनो! गीता से स्पष्ट हुआ कि गीता ज्ञान दाता (काल ब्रह्म है जो श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रवेश करके बोल रहा था) नाशवान है,

जन्म-मरण के चक्र में है तो उसके उपासक की भी यही स्थिति होती है। इसलिए गीता अध्याय 18 श्लोक 62 तथा अध्याय 15 श्लोक 4 में वर्णित लाभ प्राप्त नहीं हो सकता। दूसरी बात यह सिद्ध होती है कि गीता ज्ञान दाता कोई अन्य समर्थ तथा सर्व लाभदायक परमेश्वर हैं जिनकी शरण में जाने के लिए गीता ज्ञान दाता यानि काल ब्रह्म ने कहा है। वह परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी हैं। उन्होंने अपनी महिमा स्वयं ही कही है जो आप जी कबीर सागर में पढ़ रहे हैं। परमेश्वर ने अनुराग सागर पृष्ठ 13 पर कहा कि सत्य पुरूष द्वारा रची सृष्टि के विषय में बताई कथा का साक्षी किसको बनाऊँ क्योंकि सबकी उत्पत्ति बाद में हुई है। पहले अकेले सतपुरूष थे। यहाँ पर विवेक करने की बात यह है कि कबीर जी को ज्ञान कहाँ से हुआ? जब सृष्टि रचना के समय कोई नहीं था। इससे स्वसिद्ध है कि ये स्वयं पूर्ण परमात्मा सृष्टि के सृजनहार हैं। जिन महान आत्माओं को परमेश्वर कबीर जी मिले हैं, उन्होंने भी यही साक्ष्य दिया है कि :-

गरीब, अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड का, एक रति नहीं भार।
सतगुरू पुरूष कबीर हैं, कुल के सिरजनहार।।

भावार्थ इस वाणी से ही स्पष्ट है।

''कूर्म कला परखो धर्मदासा'' का भावार्थ है कि जैसे कूर्म यानि कच्छवा आपत्ति के समय अपने मुख तथा पैरों को अपने अंदर छुपाकर निष्क्रिय हो जाता है। आपत्ति टलने के तुरंत पश्चात् अपने मार्ग पर चल देता है। इसी प्रकार भक्त को चाहिए कि यदि सांसारिक व्यक्ति आपके भक्ति मार्ग में बाधा उत्पन्न करे तो उसको उलटकर जवाब न देकर अपनी भक्ति को छुपाकर सुरक्षित रखे। सामान्य स्थिति होते ही फिर उसी गति से साधना करे। इस प्रकार करने से ''निश्चय जाय पुरूष के पासा'' **वह साधक परमात्मा के पास अवश्य चला जाएगा।**

अनुराग सागर पृष्ठ 163(281) पर :-

सोरठा :– हंस तहां सुख बिलसहीं, आनन्द धाम अमोल।
पुरूष तनु छवि निरखहिं, हंस करें किलोल।।

भावार्थ :- उपरोक्त ज्ञान के आधार से साधना करके साधक अमर धाम में चला जाता है। वहाँ पर आनन्द भोगता है। वह सतलोक बेसकीमती है। वहाँ पर सत्यपुरूष के शरीर की शोभा देखकर आनन्द मनाते हैं।

कबीर सागर के अध्याय ''अनुराग सागर'' का सारांश सम्पूर्ण हुआ।

।।सत साहेब।।

अध्याय ''अम्बुसागर'' का सारांश

कबीर सागर में ''अम्बुसागर'' तीसरा अध्याय है जो पृष्ठ 1(287) पर है। अम्बुसागर अध्याय में 14 तरंग (भाग) हैं। आप जी सृष्टि रचना में पढ़ें, उसमें प्रमाण है कि काल के इक्कीस ब्रह्माण्ड हैं। उसने 5 ब्रह्माण्डों का एक ग्रुप (समूह) बनाया। ऐसे-ऐसे चार समूह पाँच-पाँच ब्रह्माण्डों के बनाए हैं। एक ब्रह्माण्ड भिन्न रखा है जो इन सबके समान क्षेत्रफल वाला है। अब जो वर्णन आप जी अम्बुसागर में पढ़ेंगे, वह तेरह तरंगों वाला वर्णन इस ब्रह्माण्ड (जिसमें हम रह रहे हैं) का नहीं है। वह विवरण पाँचवें ब्रह्माण्ड का है जो समूह के मध्य वाला है। पाँचवें ब्रह्माण्ड में प्रत्येक ब्रह्माण्ड के सामान्तर सृष्टि चलती है। विस्तार से इस प्रकार है :- जिस ब्रह्माण्ड में हम रह रहे हैं। इसमें जो परमेश्वर कबीर जी की भक्ति सतनाम तक करते रहे हैं। वे बीच में भक्ति छोड़ गए। गुरूद्रोही नहीं हुए। उनको धोखा देने के लिए उस पाँचवें मध्य वाले ब्रह्माण्ड में रोके रखता है। ॐ (ओम्) नाम जाप की भक्ति की कमाई तो इसी ब्रह्माण्ड (जिसमें हम रह रहे हैं) ब्रह्म लोक में भोगते हैं। पुनः जन्म-मरण चक्र में गिर जाते हैं। इसके चार युग हैं। (सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग तथा कलयुग) जिनका वर्णन चतुर्दश तरंग में है। उस पाँचवें (मध्य वाले) ब्रह्माण्ड में 13 युग हैं। वहाँ पर वे जीव काल ब्रह्म द्वारा भेजे जाते हैं जो सोहं नाम का जाप करते हैं तथा जो केवल सतनाम का जाप करते हैं। सतनाम के जाप के ॐ (ओम्) की भक्ति कमाई इस ब्रह्माण्ड के ब्रह्मलोक में भोगते हैं। दूसरे मंत्र सोहं की कमाई इस पाँचवें ब्रह्माण्ड में भोगने के लिए भेज दिए जाते हैं। वहाँ भी एक ब्रह्मलोक है तथा अन्य लोक हैं। वहाँ के ब्रह्म लोक में सुख भोगने के पश्चात् उनको अन्य द्वीपों में राजा-रानी तथा जनता के रूप में जन्म दिया जाता है। फिर वे व्यक्ति वहाँ भी भक्ति करते हैं। राज का सुख वहाँ भोगते हैं।

आप जी ने कई प्रसंगों में पढ़ा है कि एक प्रियवत राजा था। उसने ग्यारह अरब वर्ष तप किया। इतने वर्ष उस तप के प्रतिफल में राज किया। यह उस पाँचवें ब्रह्माण्ड में डले ढ़ोए जाते हैं यानि व्यर्थ साधना की जाती है। यह पाँचवां ब्रह्माण्ड केवल इसी कार्य के लिए काल ब्रह्म ने रखा है। प्रथम तरंग में अघासुर युग की कथा है।

● ''अघासुर युग का ज्ञान (प्रथम तरंग)'' ●

कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि हे धर्मदास! अब मैं तेरे को ऐसे लोक का वर्णन सुनाता हूँ जिसमें 13 युग हैं। वहाँ के प्राणियों को भी मैंने सत्यलोक की जानकारी दी। जिन प्राणियों ने मेरे ऊपर विश्वास किया, उनको भी नाम दीक्षा देकर पार किया। उनको दीक्षा देकर मोक्ष दिलाया। उनको सतलोक पहुँचाया।

अघासुर युग में पाँचवें ब्रह्माण्ड में गया। अघासुर युग के प्राणी अच्छे स्वभाव के होते हैं। उन्होंने शीघ्र मेरा ज्ञान स्वीकार किया। एक करोड़ प्राणियों को पार किया।

● ''दूसरा बलभद्र युग'' ●

बलभद्र युग में चौदह लाख जीव पार किये। पाठकों से निवेदन है कि अम्बुसागर पृष्ठ 4 पर दोहों के पश्चात् ''हंस वचन-चौपाई'' से लेकर अंतिम पंक्ति, पृष्ठ 5 पूरा तथा पृष्ठ 6 पर बलभद्र युग सम्बंधी प्रकरण बनावटी है।

● ''तीसरा द्वन्दर युग का वर्णन'' ●

एक जलरंग नामक शुभकर्मी हंस अपने पूर्व जन्मों की भक्ति कमाई से अछप द्वीप में रहता था। वह स्वयंभू गुरू भी बना था। उसने बहुत से जीव दीक्षा देकर शिष्य बनाए थे जो उसकी सेवा करते थे। जलरंग अपने शिष्यों के सिर पर हाथ रखकर दीक्षा देता था। दो शिष्य सफेद रंग के चंवरों से सेवा कर रहे थे। जलरंग सो रहा था। करोड़ों शिष्य उसको माथा टेक रहे थे। उसको नमन कर रहे थे। नीचे के ब्रह्माण्ड वाले शंखों युग बीत गए सोए हुए। मैंने उस दौरान अपना ज्ञान सुनाकर दो हजार जीव पार कर दिए। जब जलरंग ऋषि जागा तो मेरे से विवाद करने लगा। कहा कि मैं जो दीक्षा देता हूँ, वह श्रेष्ठ मंत्र है। मेरी आज्ञा के बिना कबीर यहाँ कैसे आ गया? फिर वह काल ब्रह्म को आदि पुरूष बताने लगा। कहा कि उसका कोई स्वरूप नहीं है। वह मणिपुर लोक में रहता है और बहुत-सी मिथ्या पहचान बताई। मैं वहाँ से चला गया। इस जलरंग को ''पुरवन युग'' में समझाया। पढ़ें आगे पुरवन युग का वर्णन :-

● ''चौथा पुरवन युग का प्रकरण'' ●

कबीर सागर में अम्बुसागर के पष्ठ 9 पर पुरवन युग का प्रकरण है। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे धर्मदास! मैं पुरवन युग में फिर उसी ब्रह्माण्ड में गया। जलरंग सोया था। उस दौरान मैंने 7 लाख हंसों को दीक्षा दी जिनमें से 25 ने नाम खण्ड कर दिया। वे तो काल के जाल में रह गये। शेष जीव (6 लाख 99 हजार 975) सत्यलोक चले गए। इसके पश्चात् मैं उसी द्वीप में गया जहाँ जलरंग रहता था। मुझे देखकर जलरंग ने कहा कि मैं तो निन्द्रा में आलसवश था, तुम पीछे से जीव ले गए। मेरे को सतपुरूष ने नाम दान करने का आदेश दे रखा है। तुम मेरे से आज्ञा लिए बिना जीवों को कैसे ले गया?

''सतगुरू-उवाच''

परमेश्वर जी ने कहा कि हे जलरंग! मैं तो युग-युग में आता हूँ। मैं अमर हूँ। आप तो नाशवान हैं। एक समय मेरे से एक कुष्टम पक्षी मिला था। वह भी इसी ब्रह्माण्ड में रहता है। वह कह रहा था कि मैं असंख्य युग से रह रहा हूँ। उसने बहुत पुरानी बातें बताई।

''जलरंग-उवाच''

यह बात सुनकर जलरंग ने कहा कि जब महाप्रलय होती है, तब वह कुष्टम पक्षी कहाँ रहता है? वह भी नष्ट हो जाता होगा? उस पक्षी को मुझे दिखाओ।

''सतगुरू-वचन''

कुष्टम पक्षी ने मुझे बताया कि मैंने 27 हजार महाप्रलय देखी हैं। कबीर परमेश्वर बता रहे हैं कि मेरे को कुष्टम पक्षी ने बताया कि हे जलरंग! तुम सत्य मानो।

जलरंग ने कहा कि मेरे को कुष्टम पक्षी के दर्शन कराओ। यह बात सुनकर विमान में बैठकर मैं तथा जलरंग कुष्टम पक्षी के लोक में गए। हमारे साथ करोड़ों जीव भी गए जो जलरंग के शिष्य बने थे। वहाँ के बुद्धिमान हंस हमसे मिले। कुष्टम पक्षी 50 युग से समाधि लगाए था। कुष्टम पक्षी के गणों (सेवादारों) ने कुष्टम पक्षी को हमारे आने की सूचना दी। कहा कि दो महापुरूष आए हैं। उनके साथ करोड़ों जीव भी आए हैं। आपका दर्शन करना चाहते हैं।

कुष्टम पक्षी ने कहा कि तुम उन दोनों हंसों को बुला लाओ। शेष उनकी सेना को छोड़ो।

हम दोनों कुष्टम पक्षी के पास गए तो कुष्टम पक्षी ने हमारा सत्कार किया। हमारे को उच्च आसन दिया। जलरंग ने अपनी शंका का समाधाना चाहा तो कुष्टम पक्षी ने बताया कि मैं कबीर पुरूष का शिष्य हूँ। जिस समय महाप्रलय होती है, सब लोक जलमय हो जाते हैं। सब जगह जल ही जल होता है। तब मैं ऐसे रहता हूँ जैसे जल के ऊपर फोग (झाग) रहता है।

यह बात सुनकर जलरंग को आश्चर्य हुआ और शर्म के मारे सिर झुका लिया। उसका अभिमान टूट गया। तब कबीर पुरूष की जलरंग ने स्तुति की। मैं तो महाभूल में था, परमात्मा तो कबीर ही हैं।

''कुष्टम पक्षी-वचन चौपाई''

अम्बुसागर पृष्ठ 14 :-

कुष्टम पक्षी ने कहा कि हे जलरंग! मैं कबीर परमेश्वर का शिष्य (भक्त) हूँ। मेरे को दस लाख युग हो गए हैं पक्षी का शरीर प्राप्त हुए। मुझे कबीर परमात्मा ने आज्ञा नहीं की कि तू सतलोक में चल। उनकी आज्ञा के बिना उस अमर लोक में कोई नहीं जा सकता। मेरे सामने 27 हजार महाप्रलय (महा विनाश) हो चुकी हैं। मैं शुन्य द्वीप में रहता हूँ। वहाँ से अब आया हूँ। मेरे को मेरे सेवकों ने आपके आने की सूचना दी तो मैं तुरंत इस स्थान पर आया हूँ। तब मैंने (कबीर जी ने) बताया कि मेरा ही नाम कबीर ज्ञानी और जोगजीत है। यह सब सुनकर जलरंग ऋषि मेरे (कबीर जी के) चरणों में गिर गया और कहा कि मेरे गर्व को समाप्त करने के लिए आपने पक्षी को माध्यम बनाया है। मुझे अपनी शरण में ले लो स्वामी! अन्य सर्व जीवों को भी विश्वास हुआ जो हमारे साथ गए थे तथा जो उस कुष्टम पक्षी के द्वीप के थे। वे सब यह वार्ता द्वार पर खड़े होकर सुन रहे थे। हमारी वार्ता की आवाज सबको सुनाई दे रही थी। जलरंगी तथा अन्य जीवों ने दीक्षा ली, अपना कल्याण करवाया। उनको सात नाम वाला प्रथम प्रवाना दिया।

● ''पाँचवां अनुमान युग का प्रकरण'' ●

कबीर सागर के अध्याय अम्बुसागर के पृष्ठ 15 पर कबीर परमेश्वर जी ने बताया है कि हे धर्मदास! अनुमान युग में अद्या यानि दुर्गा देवी अपनी पुत्रियों के साथ गुप्त द्वीप में रहती थी। काल की कला और छल को तुझे बताता हूँ।

अपने पुत्र ब्रह्मा को चार वेद दिए। उनको पढ़कर ब्रह्मा ने अपने अनुभव से पुराण ज्ञान अपने वंशजों (ऋषियों) को सुनाया। उन्होंने (ऋषियों ने) एक पुराण ज्ञान के अठारह भाग बना दिए। ब्रह्मा के ज्ञान में अपना-अपना अनुभव मिलाकर सबने ज्ञान का अज्ञान बनाकर जनता में फैला दिया। जिस कारण से जनता ने ऋषियों को देवता मानकर पूजना शुरू कर दिया। ब्रह्मा पहले स्वयं पृथ्वी पर ऋषि रूप में आया। अपना अनुभव कथा की ब्राह्मण पूजा प्रारम्भ करके चला गया। क्रिया कर्म का जाल फैला गया।

फिर विष्णु पृथ्वी पर आया। उसने तुलसी काष्ठ की माला, जती, सती, त्यागी सन्यासी पंथ चलाया, विष्णु का सुमरण करें, विष्णु को अनिवाशी बताया। फिर शिव जगत में आया। उन्होंने भिक्षुक पंथ चलाया। गिरी, पुरी, नाथ, नागा, चारों शंकराचार्य आदि-आदि शिव के पुजारी हैं।

सर्व संसार इनकी पूजा करने लगा। अद्या (दुर्गा-अष्टंगी) को कोई नहीं पूजता था। तब दुर्गा ने देखा कि इन तीनों पुत्रों ने मेरा नामो-निशान ही मिटा दिया। तब उसने तीन पुत्री जन्मी। उनका नाम रखा रम्भा, सुचि, रेणुका। इन्होंने 64 रागनी और राग गाए। सुरनर, मुनिजन मोहित किए।

फिर 72 करोड़ उर्वशी उत्पन्न की। इनमें सर्व देवता तथा ऋषि फँसा रखे हैं। मैंने उस अनुमान युग में 7 हजार जीव पार किए। उस समय मेरे को देवी नहीं पहचान सकी।

● ''छठे धीर्यमाल (धीरमाल) युग का प्रकरण'' ●

अम्बुसागर पृष्ठ 20 पर :-

परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे धर्मदास! विश्व के प्राणियों को भूल लगी है। किसी के पास भी मूल नाम नहीं है। सब भक्ति कर रहे हैं। कहते हैं कि हम मोक्ष प्राप्त करेंगे। यदि मूलनाम यानि सारनाम प्राप्त होगा तो साधक का जन्म-मरण बचेगा अन्यथा करोड़ों नाम हैं, उनके जाप से मोक्ष नहीं है।

कबीर, देही नाम सब कोई जाना। नाम विदेह बिरले पहचाना।।

भावार्थ :- देहीनाम का अर्थ है शरीर धारी माता से गर्भ लेने वाले प्रभु ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश, गणेश आदि के नाम तो सब जाप करते हैं, परंतु विदेह (कबीर जी) जो माता-पिता के सम्पर्क से बने शरीर रहित (शुक्रम अकायम् अशनाविरम कविर्देव यजुर्वेद अध्याय 5 श्लोक 8 में बताया है।) के मंत्र नाम को किसी बिरले ने पहचाना है। उस विदेह शब्द यानि सार शब्द बिन मोक्ष नहीं। मैं घर-घर जाकर समझाता हूँ। मैं विदेह शरीर से प्रकट होकर परमात्मा की महिमा यानि अपनी महिमा बताता हूँ, परंतु कोई ध्यान नहीं देता।

अम्बुसागर पृष्ठ 22 पर कहा है कि :-

अपने सुख को गुरू कहावैं, गुरू कह कह सब जीव भुलावैं।
गुरू शिष्य दोनों डहकावैं, बिना सार शब्द जो गुरू कहावैं।।
अथवा पाँच नाम नहीं जाना। नारियर मोरहीं करें विज्ञाना।।

भावार्थ है कि स्वार्थवश गुरू कहलाते हैं। सर्व जीवों को भ्रमित करते हैं। इनके पास सारशब्द तो है नहीं, तो शिष्य और गुरू दोनों नरक में जाएंगे। सार शब्द तो दूर की बात है। इनको वास्तविक पाँच नामों का भी ज्ञान नहीं। ये नारियर मोर (नारियल फोड़कर) दीक्षा देते फिर रहे हैं और विज्ञान यानि तत्त्वज्ञान का दावा करते हैं, वे झूठे हैं। हमने जीवों को समझाया है कि :-

कबीर लोकवेद की छोड़ो आशा। अगम ज्ञान का करो विश्वासा।।
सारनाम का मिले उपदेशा। सतगुरू काटै सकल कलेशा।।
आर्य पुरूष (उत्तम पुरूष) के दर्शन पावै। षोडश भानु रूप जहाँ आवै।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि लोकवेद यानि दंत कथा अर्थात् शास्त्रविरूद्ध ज्ञान की आशा छोड़कर अगम यानि आगे का तत्त्वज्ञान ग्रहण करो। जब सारनाम सतगुरू से प्राप्त होगा, तब जन्म-मरण का सब कष्ट समाप्त हो जाएगा।

गीता अध्याय 15 श्लोक 17 :-

उत्तम पुरूषः तु अन्य परमात्मा इति उदाहृतः। यः लोकत्रयम् आविश्य विभर्ति अव्ययः ईश्वरः।।

भावार्थ :- उत्तम पुरूष यानि श्रेष्ठ प्रभु। आर्य का अर्थ श्रेष्ठ है। इसलिए कहा है कि जो आर्य पुरूष है। वह तो क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष से अन्य है जो परमात्मा कहा जाता है। जो तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है। वह वास्तव में अविनाशी परमेश्वर है। यहाँ पर भी कहा है कि सारनाम प्राप्त साधक आर्यपुरूष (श्रेष्ठ परमात्मा) का दर्शन करेगा और 16 सूर्यों जितने प्रकाश वाला शरीर सतलोक में प्राप्त करेगा। हे धर्मदास! मेरे यथार्थ ज्ञान से प्रभावित होकर

एक लाख जीव पार हुए। धीरमाल युग की इतनी कथा है।

● ''सातवें तारण युग का वर्णन'' ●

अम्बुसागर 23 पष्ठ पर :-

कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि हे धर्मदास! आपको तारण युग की कथा सुनाता हूँ। एक उत्तम पंथ नाम का राजा था। धन-धान्य से परिपूर्ण था। हमारा पिछले जन्म में शिष्य था। किसी कारण से काल-जाल में रह गया था। काल हाथों चढ़ा व्यक्ति कोरे पाप करता है। उसको भक्तिहीन करने के लिए काल ब्रह्म उसके कर्म खराब करवाता है। जिसके पास आवश्यकता से अधिक माया होती है, वह परमात्मा को भूलकर अपना जन्म नष्ट करता है। राजा उत्तम पंथ बहुत अन्यायी हो गया था। ब्राह्मण, ऋषि, सन्यासियों को देखकर क्रोधित होता था। उनके वेद-शास्त्र, जनेऊ तोड़कर अग्नि में डाल देता था। इतना अत्याचार कर रहा था। पशु-पक्षियों को शिकार कर-करके मारता था। प्रजा को अति कष्ट दे रहा था। मैं एक दिन उस राजा के महल (House) के सामने वट वक्ष के नीचे संत वेष में बैठ गया। एक सगुनिया नाम की नौकरानी ने कहा कि राजा आपको मार देगा, आप यहाँ से चले जाओ। मैं उठकर दरिया के किनारे जा बैठा। राजा इक्कीस ड्योडी के अंदर अपनी पत्नी के साथ रहता था। जब उसको पता चला तो मुझे मारने के लिए आया। मैं नहीं मिला तो वापिस चला गया। राजा सुबह स्नान करता था। उसके लिए एक क्षितिया नाम की नौकरानी सरोवर का जल लाती थी। उससे राजा-रानी स्नान करते थे। अगले दिन क्षितिया नौकरानी घड़ा लेकर जल लेने गई। घड़ा जल में डालकर भरा, परंतु घड़ा बाहर नहीं निकला। बहुत प्रयत्न करने पर भी घड़ा नहीं निकला। राजा-प्रजा सब आए, परंतु घड़ा नहीं निकला। फिर मैंने एक सुंदर तोते का रूप बनाया। मुझे पकड़ने के लिए सभी कोशिशें की गई, परंतु व्यर्थ रहा। कारण था कि सर्वप्रथम एक शिकारी ने मुझे तीर मारा, तीर उलटा शिकारी को लगा, वह डर गया। अन्य ने गुलेल मारी, वह टूट गई। राजा तक सूचना गई कि एक अति सुंदर तोता है, पकड़ा नहीं जाता, उड़कर भी नहीं जाता। राजा के सामने भी जाल आदि से पकड़ने की कोशिश की गई। बात नहीं बनी। फिर मुझे (तोते को) उड़ाने की कोशिश की गई, ढ़ोल-नगाड़े बजाए गए, परंतु असफल रहे। तोते को देखकर राजा-रानी बहुत प्रभावित हुए, परंतु हताश थे। अंत में मैं स्वयं राजा की बाजू पर जाकर बैठ गया। मुझे पकड़कर सोने (स्वर्ण) के पिंजरे में बंद कर दिया। राजा-रानी मुझे पढ़ाने लगे। राम-राम बोल। मैं कहने लगा कि एक दिन सबने एक-दूसरे से बिछुड़ना है, मोह तथा प्रीति छोड़ो। एक दिन मरना है, यह ध्यान करो। राजा-रानी कहने लगे कि यह तोता कुबोल बोलता है यानि अशुभ वाक्य कहता है कि मरोगे, यहाँ नहीं रह पाओगे।

राजा शिकार करने गया। महल में आग लग गई। सब कुछ जल गया। देखा तोते का पिंजरा और तोता सुरक्षित है। राजा-रानी को मेरे जीवित मिलने की खुशी हुई, महल जल गया, कोई बात नहीं। राजा तथा रानी के इस व्यवहार से मैं प्रसन्न हुआ और उनको बताया कि मैं वट वक्ष के नीचे बैठा था, सगुनिया आपको बताने आई। मुझे आपका स्वभाव बताया कि राजा आपकी गर्दन काट देगा। फिर आपके स्नान के लिए घड़ा लेने क्षितिया नौकरानी गई। वह बाहर नहीं निकला। आपने अपने योद्धा तथा हाथियों से भी कोशिश की थी। फिर मैंने तोते का वेश बनाया। यह बात सुनकर राजा ने कहा, आप तो परमेश्वर हैं। अपने वास्तविक रूप में आऐं, हमें कतार्थ करें। तब मैं कबीर रूप में प्रकट हो गया। राजा तथा तेरह रानियों ने तथा बेटियों, पुत्रों व पुत्रवधुओं ने कुल

31 जीवों ने उपदेश लिया। कथा का सारांश है कि जिनको वर्तमान में लगता है कि मैं सुखी हूँ, सर्व सुख हैं, भक्ति नहीं करता। वह बाद में कष्ट उठाता है। नरक का भागी होता है। राजा को कितना सुख था, परंतु संत के ज्ञान से वह सुख दुश्मन लगा और अपने परिवार का कल्याण करवाया। यदि परमात्मा कपा नहीं करते तो अनमोल जीवन नष्ट हो जाता। इसलिए संत की महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता।

क्या आकाश का फेर है, क्या धरती का तोल। क्या संत की महिमा कहूँ, क्या पारस का मोल।।

● ''आठवें अखिल युग का वर्णन'' ●

अम्बुसागर पष्ठ 36 पर :-

धर्मदास जी के प्रश्न का उत्तर परमेश्वर कबीर जी ने दिया कि हे धर्मदास! अखिल युग में उसी ब्रह्माण्ड में एक धनुषमुनि नाम का तपस्वी रहता था। वह त्रयोदश (तेरह) हजार युग से तपस्या कर रहा था। नीचे सिर (सिरासन) करके पाँच अग्नि (धूने) लगाकर तपस्या कर रहा था। अपने प्राण पुरूष यानि जीव को सिर के ऊपर के भाग में चढ़ाए हुए था। सिर के ऊपर के भाग को ब्रह्माण्ड कहते हैं। वाणी पष्ठ 36 पर :-

''अर्धमुखी पाँच अग्नि तपाये, प्राण पुरूष कूं ब्रह्माण्ड चढ़ाये।''

आँखें तथा शरीर क्षीण (दुर्बल) हो चुका था। धनुषमुनि को समझाया कि तप से राजा बनता है। फिर नरक में गिरता है।

अम्बुसागर के पष्ठ 38, 39 तथा 40 पर ऊपर की सात पंक्तियों तथा पष्ठ 38 पर एक पंक्ति तथा पष्ठ 39 पर पूरा विवरण मिलाया गया है। इसका पूर्व प्रकरण से कोई सम्बन्ध नहीं है। इसमें उन चार गुरूओं का वर्णन है जिनके नाम हैं :- धर्मदास जी, बंके जी, सहते जी, चतुर्भुज जी।

● ''नौवें विश्व युग का वर्णन'' ●

अम्बुसागर के पष्ठ 40 पर :-

इसमें अद्या (दुर्गा देवी) से परमेश्वर कबीर जी की वार्ता है। परमेश्वर वेश बदलकर सतगुरू (सठहार=संदेशवाहक) के रूप में गए। देवी ने पूछा कि हे सठहार! आप कौन देश से आये हो? तुमको किसने भेजा है? परमेश्वर कबीर जी ने सठहार रूप में उत्तर दिया कि मैं सतलोक से आया हूँ। सतपुरूष ने भेजा हूँ। तुमने (निरंजन और देवी ने) परमेश्वर के अंश जीव को बहुत सताया है। उनको पाप करने के लिए बाध्य किया। उनमें अज्ञान फैलाया है। किसी देवी पर भैंसा कटाया जाता है। उसको धर्म-कर्म बताकर मूर्ख बनाया है। कहीं पर बकरा कटाया है। उसको धर्म बताकर पाप करवाया है। तुम परमेश्वर के चोर हो।

देवी ने कहा कि तुम कैसे कुटिल वचन बोल रहे हो? मैं तुम्हारे परमात्मा से नहीं डरती। मेरी शक्ति तीनों लोकों में कार्य करती है। तीनों लोकों के प्राणी मेरे पाँव के नीचे हैं यानि मेरे आधीन हैं। अरे दुष्ट सठहार! तू कहाँ से चल आया? तेरे को परमेश्वर ने किसलिए भेजा है? मेरे वश ब्रह्मा, विष्णु, शिव सहित सर्व देवता, सनक, सनन्दन, संत कुमार, सनातन सब हैं। मेरी 64 लाख कामिनि (सुंदर युवती) हैं। 72 करोड़ उर्वशी (अप्सराऐं) हैं। सबको मोहित करके मैंने फँसाकर रखा है। मेरे ऊपर कोई स्वामी नहीं है। मैं स्वतंत्र कार्य करती हूँ। हमने तप करके यह स्थान (21 ब्रह्माण्ड) प्राप्त किया है। मेरे हाथ में खप्पर है। मेरी आठ भुजाऐं हैं। मुझे तुम्हारा कोई भय नहीं

है। परमेश्वर जी ने कहा कि मैं तो सतलोक से आया हूँ। तुम जो अपनी ताकत दिखा रही हो, यह मिथ्या है। तूने अपने बड़े भ्राता से अवैध रीति से विवाह कर लिया। अपनी गलती को याद नहीं कर रही हो। सर्वप्रथम तुमने यह बीज बोया था। अब उस जार यानि (परस्त्री गमन करने वाला) निरंजन के साथ मिलकर जुल्म पर जुल्म कर रही हो। अपने पिता को भूल गई। जब महाप्रलय हो जाएगी, तब हे दुर्गा! तुम तथा तुम्हारे सब लोक, ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव और निरंजन तक विनाश को प्राप्त हो जाओगे। तब तू कहाँ रहेगी? अपने पिता के सर्व सुख को छोड़कर इस निरंजन की अर्धांगिनी (स्त्री) बनकर पाप इकट्ठे करने पर लगी हो। आप पिता को त्याग पति को अधिक महत्त्व दे रही हो। इस लोक (काल लोक) की सर्व स्त्रियों में भी यही प्रभाव है। पति के घर जाने के पश्चात् प्रत्येक लड़की का भाव रहता है कि अधिक समय पति के घर पर बिताए और पिता के घर से धन लाकर पति का घर बसाए।

परमेश्वर जी के यह सत्य वचन सुनकर देवी को लाज आई और मुझे (कबीर जी को) सिहांसन पर बैठाया और कहा कि आप अपना ज्ञान तथा नाम देकर जीव ले जा सकते हैं। जो आपका नाम लेगा, वह हमारे सिर पर पैर रखकर पार हो सकता है, हम उसको रोक नहीं सकते। जो आपका सारनाम प्राप्त है और उसको हम रोक देंगे तो हम पुरूष द्रोही (परमात्मा के द्रोही) हो जाएंगे। ऐसी गलती करने से हमारा लोक नष्ट हो जाएगा। जो जीव सारनाम लेकर गुरूद्रोही हो जाएगा। उसको हम यहीं लपेट लेंगे। अन्य नकली गुरूओं के नकली नाम प्राप्त जीव भी हमारे जाल में ही रह जाएंगे। वे हमारा खप्पर भरेंगे यानि काल निरंजन का भोजन बनेंगे। परमेश्वर कबीर जी ने बताया कि हे धर्मदास! विश्व युग में मनुष्य की आयु एक हजार युग होती थी। युग 20 लाख वर्ष की अवधि का था। मनुष्यों की ऊँचाई 68 हाथ यानि सैंकड़ों फुट थी। जो व्यक्ति सात नाम का प्रथम मंत्र प्राप्त करता था तथा सत्यनाम तथा सारनाम में निश्चय रखता था। वही परमेश्वर के दर्शन करने का अधिकारी होता था।

● ''दसवें अक्षय तरूण युग का वर्णन'' ●

अम्बुसागर पृष्ठ 44 पर :-

परमेश्वर कबीर जी ने बताया कि हे धर्मदास! इस युग में उसी ब्रह्माण्ड में काल का कूर्म था। उसको समझाया, उसने दीक्षा ली। वहाँ पर एक नरक है। उसमें 84 कुण्ड बने हैं। प्रत्येक ुण्ड पर यम दूतों का पहरा है। उनके 14 यम मुखियाँ हैं। उनके नाम बताए हैं।

''चौदह यमों के नाम''

1. मृत्यु अंधा 2. क्रोधित अंधा 3. दुर्ग अभिमाना 4. मन करन्द 5. चित चंचल 6. अपर बल 7. अंध अचेत 8. कर्म रेख 9. अग्नि घंट 10. कालसेन 11. मनसा मूल 12. भयभीत 13. तालुका 14. सुर संहार।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि मैंने सब यमदूतों को पकड़ लिया। फिर प्रत्येक कुण्ड में दूत जीवों को सता रहे थे। मैं वहाँ खड़ा हो गया। यमदूत उन नरक कुण्डों में पड़े प्राणियों को पकड़-पकड़कर पीट रहे थे। उनमें 28 लाख नकली गुरू भी नरक भोग रहे थे। मुझे देखकर नकली गुरूओं ने बचाने की पुकार की। मैंने कहा कि तुमने मेरे जीवों को भ्रमित करके काल के जाल में डाला है। मेरा मार्ग छुड़वाकर काल मार्ग बताया है। आप भी यहीं पर नरक में पड़े हो, सड़ो। उन

सब यमों को तथा दूतों (नकली कड़िहारों यानि नकली दूतों) को चोटी पकड़-पकड़कर घसीटा-पीटा। फिर उन नकली गुरूओं ने क्षमा याचना की। कहा कि हे परमात्मा! हमसे भूल हुई है। हम काल के वश हैं। हमारे स्वामी ने जो आज्ञा दी, हमने पालन किया। हमारी गलती क्षमा करें।

यह सुनकर मैं हँसा और कहा कि दूतों (नकली गुरूओं) की बँध नहीं छुड़वाई जाएगी। उन कुण्डों में जो नकली गुरूओं के शिष्य थे, वे भी वहीं नरक भोग रहे थे। जब तक मैं वहाँ पर रहा, तब तक सब जीवों को नरक की पीड़ा नहीं हुई। मेरे जाने के पश्चात् फिर से वही यातनाऐं उनको प्रारम्भ हो गईं। अक्षयतरूण युग में 5 लाख जीवों को मोक्ष प्राप्त करवाया।

● ''ग्यारहवें नंदी युग का वर्णन'' ●

अम्बुसागर पृष्ठ 49 तथा 50 पर :-

परमेश्वर कबीर जी ने बताया कि हे धर्मदास! अब नंदी युग की कथा बताता हूँ। एक गुप्तमुनि था जो आँखें बंद किए ध्यान लगाए बैठा था। करोड़ वर्ष साधना करते बीत चुके थे। मैं उनके पास बैठ गया। जब ऋषि ने आँखें खोली तो उसने कहा कि आप कौन हैं? मैंने आज तक ऐसी शोभा वाला व्यक्ति नहीं देखा। शरीर का ऐसा रूप कभी नहीं देखा। कहा, आप कौन हो? कहाँ से आए हो? मैंने उत्तर दिया कि मैं सतलोक से आया हूँ। सतलोक की व्यवस्था बताई तो गुप्तमुनि ने लोक देखने की प्रबल इच्छा व्यक्त की। मैंने गुप्तमुनि की कई बार परीक्षा ली तो वह प्रत्येक बार सही निकला। फिर उसको प्रथम चरण वाली मंत्र दीक्षा दी। जब उस मुनि की आधीनता देखी, मेरे चरण पकड़कर सत्यलोक दर्शन की प्रार्थना की तो उसको उसी जगह (सतलोक) ले गया। प्रथम उसको मानसरोवर दिखाया। वहाँ पर सुंदर स्त्रियां (कामिनि) थी जो एक समान सुंदर थी। उनके शरीर की शोभा ऐसी थी जैसे चार सूर्य शरीर के ऊपर लपेट रखे हों यानि उनके शरीर का प्रकाश चार सूर्यों के समान था। (मानसरोवर पर स्त्री-पुरूष के शरीर का प्रकाश चार सूर्यों के प्रकाश के समान होता है। सत्यलोक में स्त्री-पुरूष के शरीर का प्रकाश सोलह सूर्यों के प्रकाश के समान हो जाता है।) वे वहाँ आनन्द से बातें कर रही थी। मानसरोवर के घाटों पर ऐसी सीढ़ी (पैड़ी=Stair Case) बनी थी जैसे उनके ऊपर चाँद और सूरज चिपका रखे हों। मानसरोवर के अमृत जल में ऊँची-ऊँची लहरें उठ रही थी जैसे सूर्य ही उस जल में मिल गया हो। ऐसा सुंदर रंग उस जल का है। वहाँ पर वे सर्व स्त्रियां उस समय स्नान कर रही थी। स्नान करते समय उनका रूप और भी चमक रहा था। स्थान-स्थान पर अन्य स्त्रियां गाने गा रही थी। यह दृश्य देखकर गुप्तमुनि का मन ललायित हो उठा। ऋषि का मन उनकी शोभा तथा मान सरोवर का नजारा देखकर व्याकुल हो गया। मानसरोवर के चारों ओर भांति-भांति की फुलवाड़ी थी। उनको देखकर लगता था जैसे पौधों पर उड़गन (तारे) तथा रवि (सूर्य) लगा रखे हों। यह शोभा देखकर गुप्तमुनि मेरे चरणों से चिपट गया और कहा कि हे साहब! अब मैं यहाँ से नहीं जाऊँगा। ऐसे स्थान पर आपकी कृपा बिना फिर नहीं आ पाऊँगा।

सतगुरू वचन चौपाई (पृष्ठ 51 तथा 52)

कबीर परमेश्वर जी ने बताया कि हे धर्मदास! सतलोक देखकर जो स्थिति तुम्हारी हुई थी, वही स्थिति गुप्तमुनि की हो गई। मैंने उनसे कहा कि अभी तो आपको प्रथम नाम दीक्षा दी है। जब तक सारनाम प्राप्त नहीं होगा और उसकी साधना पूरी नहीं करोगे, तब तक यहाँ स्थाई विश्राम नहीं मिल सकता। अब आप अपने स्थान पर जाओ। फिर हम दोनों गुप्तमुनि के स्थान पर आ गए।

गुप्तमुनि ने मेरे से (कबीर परमात्मा से) कहा कि आपके उस स्थान को मैं कैसे प्राप्त कर सकता हूँ। मुझे वह विधि बताने की कंपा करें। मैं उसकी प्राप्ति के लिए जो भी साधना तथा कुर्बानी करनी पड़ेगी, वही करूँगा। मैंने गुप्तमुनि को सत्यनाम की दीक्षा दी। अति आधीन देखकर उसको सारशब्द देकर सतलोक ले गया। वहाँ के हँसों (भक्तों) से मिलकर अति प्रसन्न हुआ। मेरा कोटि-कोटि धन्यवाद किया। कहा कि आपकी कंपा के बिना भगवन्! न तो सत्य ज्ञान मिल सकता है, न भगवान। आप ही करूणा के सागर हो। आप ही मोक्षदाता हो। आप ही वास्तव में पूर्ण ब्रह्म विधाता हो। सतलोक में आपके शरीर की शोभा देखकर दर्शन करके युगों की प्यास शांत हो गई है। इस युग में केवल एक हँस की मुक्ति कराई।

● ''बारहवें हिंडोल युग का वर्णन'' ●

कबीर सागर के अध्याय ''अम्बुसागर'' के पंष्ठ 53 तथा 54 पर :-

परमेश्वर कबीर जी ने बताया कि हे धर्मदास! अब मैं आप को हिंडोल युग (जो मध्य के ब्रह्माण्ड में चलता है) की कथा सुनाता हूँ। मैं सतलोक से चला। सतलोक में असँख्य द्वीप हैं। द्वीप-द्वीप में हँस विलास करते हैं यानि मोक्ष प्राप्त प्राणी आनन्द से रहते हैं। मैं हिंडोल युग के मध्य में गया। मैं घर-घर में ज्ञान सुनाता हुआ विचरण करता था। कोई भी जीव मेरे से बातें नहीं करता था। मैं उनको अमंत ज्ञान सुनाता था। वे मेरे से झगड़ा करते थे। धीरे-धीरे उनको समझाया। लाभ-लोभ देकर शरण में लिया। सात लाख जीवों ने दीक्षा ली। उनको सत्यलोक भेजा।

● ''तेरहवें कंकवत युग का वर्णन'' ●

कबीर सागर के अध्याय ''अम्बुसागर'' पंष्ठ 55 पर :-

परमेश्वर कबीर जी ने बताया कि हे धर्मदास! जब काल निरंजन को पता चला कि कोई सतलोक से कड़िहार (जीव मुक्त करने वाला सतपुरूष का भेजा अंश) आता है। उसने अनेकों जीवों को हमारे जाल से छुड़ा लिया है। कंकवत युग में काल ब्रह्म स्वयं एक गुप्त मुनि का रूप बनाकर बैठा तपस्या कर रहा था। करोड़ों जीवों को नाम देकर मूर्ख बनाए उनका गुरू बनकर बैठा था। गुप्त मुनि ने मेरे को देखकर पूछा कि आप इस लोक के निवासी नहीं हो। कहाँ से आए हो, कंपा बताऐं। तब मैंने बताया कि आपका पाताल लोक देखने आया हूँ। सत्यलोक से आया हूँ। गुप्त मुनि मध्य वाले ब्रह्माण्ड के पाताल लोक में था। मैंने (परमेश्वर कबीर जी ने) उसको समझाया कि तुम काल हो। तूने परमेश्वर के जीवों को सता रखा है, पाप का भागी हो रहा है। मैं जीवों को मोक्ष मार्ग बताने आया हूँ। यह सुनकर गुप्त मुनि क्रोधित हुआ और बोला कि क्या मंत्र देते हो, मुझे क्या समझ रखा है? मैं साठ खरब वर्ष तक की जानकारी रखता हूँ। प्रलय समय कहाँ रहेगा जिस समय सुर मुनि अठासी हजार नहीं रहेंगे, तब तुम कहाँ रहोगे कबीर जी? जिस समय उत्पत्ति (काल की प्रलय के पश्चात्) नहीं हुई थी, तब तुम कहाँ थे? कहाँ आपका शरीर था?

''कबीर परमेश्वर (ज्ञानी) बचन''

कबीर परमेश्वर जी ने कहा कि हे गुप्त मुनि! जब कुछ भी उत्पत्ति नहीं हुई थी। उस समय मैं एक कमल के ऊपर विराजमान था। मैंने ही सर्व रचना की है। मैंने ही सतलोक की रचना की है जो मन को आकर्षित करता है। मैंने ही षोडश (सोलह) अंश उत्पन्न किए थे। (अण्डे से तेरी उत्पत्ति भी मैंने की थी।) तूने तो मुझे पहचाना नहीं। कबीर परमेश्वर जी ने कहा कि हे अहंकारी!

अब बोल। यह बात सुनकर काल मेरे साथ युद्ध करने लगा। उसको मैंने शब्द शक्ति से घायल किया। वह उठकर भागा और अपने इक्कीसवें ब्रह्माण्ड में जाकर छिप गया। उसके पश्चात् उस मध्य के ब्रह्माण्ड में बने तीन लोकों में प्रलय हो गई।

इस कंकवत युग की अवधि पैंतीस लाख वर्ष होती है। मनुष्य की आयु एक लाख वर्ष होती है। मनुष्य के शरीर की ऊँचाई 80 हाथ यानि सैंकड़ों फुट होती है।

● ''चौदहवें तरंग में चारों युगों का वर्णन'' ●

अध्याय ''जम्बुसागर'' पृष्ठ 58 पर :-

''धर्मदास वचन''

धर्मदास जी ने कहा कि हे परमेश्वर! मुझे चारों युगों की कथा सुनाने की कृपा करें।

''सतगुरू वचन''

परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे धर्मदास! इस ब्रह्माण्ड में जिसमें आप रह रहे हो, कुल चार युग हैं। 1. सत्ययुग 2. त्रेतायुग 3. द्वापर युग 4. कलयुग।

1. सत्ययुग का वर्णन :- सत्ययुग की अवधि 17 लाख 28 हजार वर्ष है। मनुष्य की आयु प्रारम्भ में दस लाख वर्ष होती है। अन्त में एक लाख वर्ष होती है। मनुष्य की ऊँचाई 21 हाथ यानि लगभग 100 से 150 फुट होती है। {उस समय मनुष्य के हाथ (कोहनी से बड़ी ऊंगली के अंत तक) की लंबाई लगभग 5 फुट होती है।} मेरा नाम सत सुकृत होता है।

{वर्तमान में कलयुग में मनुष्य के एक हाथ की लंबाई लगभग डेढ़ (1½) फुट है। पहले के युगों में लंबे व्यक्ति होते थे। उनके हाथ की लंबाई भी अधिक होती थी।}

2. त्रेतायुग का वर्णन :- त्रेतायुग की अवधि 12 लाख 96 हजार वर्ष होती है। मनुष्य की आयु प्रारम्भ में एक लाख वर्ष होती है, अंत में दस हजार वर्ष होती है। मनुष्य की ऊँचाई 14 हाथ यानि लगभग 70 से 90 फुट होती है। मेरा नाम मुनिन्द्र रहता है।

3. द्वापरयुग का वर्णन :- द्वापरयुग की अवधि 8 लाख 64 हजार वर्ष होती है। मनुष्य की आयु दस हजार प्रारम्भ में होती है। अंत में एक हजार रह जाती है। मनुष्य की ऊँचाई 7 हाथ यानि 40-50 फुट होती है। द्वापर युग में मेरा नाम करूणामय होता है।

4. कलयुग का वर्णन :- कलयुग की अवधि 4 लाख 32 हजार वर्ष होती है। मनुष्य की आयु एक हजार वर्ष से प्रारम्भ होती है, अंत में 20 वर्ष रह जाती है तथा ऊँचाई साढ़े तीन हाथ यानि 10 फुट होती है। अंत में 3 फुट रह जाती है। कलयुग में मेरा नाम कबीर रहता है।

नोट :- जो व्यक्ति सौ फुट लम्बा होगा। उसका हाथ (कोहनी से हाथ के पंजे की बड़ी ऊँगली तक) भी लंबा होगा यानि 5 फुट का हाथ होता था। ऊपर लिखी आयु युग के अंत की होती है। जैसे सत्ययुग के प्रारम्भ में 10 लाख वर्ष से प्रारम्भ होती है। अंत में एक लाख वर्ष रह जाती है। त्रेतायुग में एक लाख से प्रारम्भ होती है, अंत में 10 हजार रह जाती है। द्वापर युग में 10 हजार से प्रारम्भ होती है, अंत में एक हजार वर्ष रह जाती है। कलयुग में एक हजार वर्ष से प्रारम्भ होती है, अंत में 20 वर्ष रह जाती है। अधिक समय तक 120 वर्ष की रहती है। प्रदूषण की अधिकता कलयुग में सर्वाधिक होती है। इसलिए आयु भी उतनी शीघ्रता से कम होती है जो ऊपर के युगों की भांति सहज नहीं रहती। प्राकृतिक विधि से कम नहीं होती अन्यथा कलयुग में अंत में 100 वर्ष होनी चाहिए।

''कलयुग में मानव का व्यवहार''

परमेश्वर कबीर जी ने बताया कि हे धर्मदास! कलयुग में कोई बिरला ही भक्ति करेगा अन्यथा पाखण्ड तथा विकार करेंगे। आत्मा भक्ति बिना नहीं रह सकती, परंतु कलयुग में मन (काल का दूत है मन) आत्मा को अधिक आधीन करके अपनी चाल अधिक चलता है। कलयुग में मनुष्य ऐसी भक्ति करेगा। गुरू के सम्मुख तो श्रद्धा का पूर्ण दिखावा करेगा, पीछे से गुरू में दोष निकालेगा, निंदा करेगा। जिस कारण से भक्त का स्वाँग करके भी जीवन-जन्म नष्ट करके जाएगा। कलयुग में संतों में अभिमान होगा। सब संतों में अहंकार समाया रहेगा। अहंकार काल का दूसरा रूप है। मन अहंकार का बर्तन है। कोई बिरला साधु होगा जो अहंकार से बचेगा। अधिकतर साधु दूसरे साधु को देखकर ईर्ष्या करेंगे। इसलिए चौरासी लाख प्राणियों के जन्मों में भटकेंगे। घर-घर में गुरू बनकर जाएंगे। अपनी महिमा बनाएंगे। सतगुरू यानि तत्त्वदर्शी संत को देखकर जल मरेंगे।

चौंका बैठ (पाठ करने के आसन पर बैठकर) कर बहुत फूलेंगे। स्त्री देखकर तो कुर्बान हो जाएंगे। जब भी किसी घर में जाएंगे तो सुंदर स्त्री को देखकर अभद्र संकेत आँखों से करेंगे। फिर बनावटी उपदेश करेंगे। प्रसाद वितरित करते समय भी भेदभाव करेंगे।

धर्मदास सुन बचन हमारा। कलयुग में साधुन के व्यवहारा।।
चौंका बैठ करैं बहु शोभा। नारी देख बहु मन लोभा।।
देख नारी सुंदर नैना। ताको दूर से मारें सैना।।
जिसको अपना जानै भाई। ताको दें प्रसाद अधिकाई।।
मुक्ति–मुक्ति सब संत पुकारें। सारनाम बिन जीवन हारें।।
निःअक्षर वाकि है बाटि। बिना मम अंश न पावै घाटि।।
दया धर्म औरां बतलावैं। आप दयाहीन करद चलावैं।।
कलयुगी साधु ऐसे बेशर्मा। करावैं पाप बतावैं धर्मा।।
और कहु भगतन की रीति। मम अंश से द्रोह काल दूत से प्रीति।।
जो कोई नाम कबीर का गहही। उनको देख मन में दहही।।(जलते हैं।)
लोभ देय निज सेव दृढ़ायी। चेला चेली बहुत बनाई।।
पुनि तिन संग कुकर्म करहीं। कर कुकर्म नरक में परहीं।।
जो कोई मम संत शब्द प्रकटाई। ताके संग सभी राड़ बढ़ाई।।
अस साधु महंतन करणी। धर्मदास मैं तोसे वर्णी।।
अम्बुसागर तुम सन भाषा। समझ बूझ तुम दिल में राखा।।
धर्मदास सुनाया ज्ञाना। कलयुग केरैं चरित्र बखाना।।
जब आवै ठीक हमारी। तब हम तारैं सकल संसारी।।
आवै मम अंश सत्य ज्ञान सुनावै। सार शब्द को भेद बतावै।।
सारनाम सतगुरू से पावै। बहुर नहीं भवजल आवै।।

नोट :- अम्बुसागर पृष्ठ 63 पर जो चार गुरूओं के प्रकट होने का प्रकरण है, यह गलत है। ठीक वर्णन अध्याय ''कबीर चरित्र बोध'' पृष्ठ 1863 पर तथा ''ज्ञान बोध'' पृष्ठ 35, ''अनुराग सागर'' पृष्ठ 104, 105, 106 पर है। अम्बुसागर के पृष्ठ 54 से 67 तक सामान्य ज्ञान है जो पहले कई बार दोहराया गया है।

❖ अध्याय ''विवेक सागर'' का सारांश

कबीर सागर का पाँचवा अध्याय ''विवेक सागर'' पष्ठ 68(354) पर :-

इस अध्याय में कहा है कि :-

इस जीव को विकार नचा रहे हैं। काम (Sex), क्रोध, मोह, लोभ तथा अहंकार। जिनके वश काल लोक की महान शक्तियाँ भी हैं। जैसे ब्रह्मा जी जो अपनी पुत्री को देखकर कामवश प्रेरित हो गया था तथा अहंकार के कारण श्री ब्रह्मा जी तथा श्री विष्णु जी का युद्ध हुआ। काम वासना के वश बड़े-बड़े ऋषि-महर्षि भी अपना धर्म-कर्म नष्ट कर गए। इन सर्व विकारों से बचकर मोक्ष प्राप्ति का एकमात्र मार्ग तत्त्वज्ञान है तथा सारनाम है।

इस पूरे विवेक सागर में यह सारांश है।

❖ अध्याय ''सर्वज्ञ सागर'' का सारांश

कबीर सागर का छठा अध्याय ''सर्वज्ञ सागर'' पष्ठ 127(403) पर :-

परमेश्वर कबीर जी से धर्मदास जी ने बार-बार प्रश्न किए। परमात्मा ने बार-बार ज्ञान दोहराया था इस सर्वज्ञ सागर में अधिक ज्ञान वही है जो पहले के अध्यायों में आप पढ़ चुके हैं। यहाँ पुनः लिखने की आवश्यकता नहीं है। कुछ संक्षिप्त सार लिखता हूँ।

परमेश्वर कबीर जी ने कितने जीव कौन से युग में पार किए?

सत्ययुग का वर्णन

सतयुग चारि हंस समझाये। प्रथम राय मित्र सैंन ही आये।।
चित्ररेखा रानी कर नाऊ। तिन सुनि शब्द श्रवण चितलाऊ।।
तिन युगबन्ध चौका कीन्हा। युग बन्धी परवाना लीन्हा।।
राजा रानी पूछत मोही। सो हकीकत कहौं मैं तोही।।
अष्टचौकाको शब्द सुनावा। राजा रानी लोक पठावा।।
दुसरे राय वट क्षेत्र के आवा। सत सुकति तहँ नाम धरावा।।
तिन राजा पूछा चित लायी। तब तेहि भेद कह्यो समझायी।।
पान परवाना राजहिं दीन्हा। राजा वास लोक में कीन्हा।।
तिसरे राय हरचन्द कहँ आये। बन्ध काटिके लोक पठाये।।
चौथे पुरी मथुरा में आयी। विकसी ग्वालिन के समझायी।।
चारिहंस सतयुग समझाये। ते चारों गुरू वंश कहाये।।
चारिहंस नौ लाख बचाये। शब्द भरोसे घरहिं पठाये।।

त्रेता युग का वर्णन

पुनि त्रेता युग कहौं विचारी। सात हंस त्रेतायुग तारी।।
प्रथम ऋषी श्रंगी समझाये। दुसरे अयोध्या मधुकर आये।।
तिनसे शब्द कह्यो टकसारा। चौथे बोधे लछन कुमारा।।
पचवें चलि रावण लगि गयऊ। तहां भेंट मन्दोदरि से भयऊ।।

गर्वी रावण शब्द न माना। मन्दोदरी शब्द पहचाना।।
छठैं चलि वशिष्ठ लगि आये। ब्रह्म निरूपन उनहिं सुनाये।।
सतये जंगल में कियो वासा। जहां मिले ऋषी दुर्वासा।।
सात हंस सातौ गुरू कीन्हा। परम तत्त्वउनही भल चीन्हा।।
सातौ गुरू त्रेता में भयऊ। देइ उपदेश सो हंस पठयऊ।।

द्वापरयुग वर्णन

त्रेता गया द्वापर युग आया। सत्रह जीव परवाना पाया।।
प्रथमें रायचन्द विजय कहँ गयऊ। ताकी रानी इन्दुमति रहेऊ।।
दुसरे राय युधिष्ठिर कहँ आये। कष्ण पूजैं नहीं परवाना पाये।।
तिसरे पाराशर पहँ आये। निर्णय ज्ञान ताहि समझाये।।
मानवश नहीं सुना ज्ञान। उलझ रहे निर्गुण भगवाना।।
चौथे राय धुधुल लहि भेदा। बहुत ज्ञान को कीन्ह निखेदा।।
पचयें पारसदास समझावा। स्त्री सहित परवाना पावा।।
छठये गरूड़ बोध हम कीन्हा। विहँग शब्द गरूडको दीन्हा।।
सातें हरिदास सुपच समझावा। नीमषार महँ उसको पावा।।
अठयें शुकदेव पहँ ज्ञान पसारा। सकल सरब भेद निरवारा।।
नवमें राजा विदुर समझाया। भक्तिरूप उन दर्शन पाया।।
दशमें राजा भोज बुझाया। सत्य शब्द पुनि उसे चिन्हाया।।
ग्यारहें राजा मुचकुन्दहि तारे। बारहें राजा चन्द्रहास उबारे।।
तेरहे चलि वन्दावन आये। चारि ग्वाल गोपी समझाये।।
गुरू रूप पुनि पन्थ चलाये। भौसे हंसा आनि छुड़ाये।।
बावन लाख जो जीव उबारा। कलियुग चौथे यहाँ पग धारा।।

कलियुग वर्णन

प्रथमें गोरखदत्त समझाये। तारक भेद सुनि हर्षाये।।
दुसरे शाह बलखको बोधा। पढै अरबी बहुविधि सोधा।।
तिसरे रामानन्द पहँ आये। गुप्त भेद हम उन्हें सुनाये।।
चौथे पीरकी परचे दीन्हा। पचये शरण सिकंदर लीन्हा।।
छठै बीरसिंह राजा भयऊ। ताको हम शब्द सुनयऊ।।
सतयें कनकसिंघ समझाये। सोलह रानी लोक पठाये।।
अठएँ राव भूपाले आये। ग्यारह रानी लोक पठाये।।
नौमें रतना बनिन समझाई। जाति अग्रवालिन करत मिठाई।।
दशवें अलिदास धोबी पै गयऊ। सात जीव परवाना पयऊ।।
ग्यारहें राजा भोज समझायी। तिन बहु भक्ति करी चितलाई।।
बारहें मुहम्मदसो कहयो कुराना। हद्द हुकुम जीव कर माना।।
तेरहें नानक से कह्यो उपदेशा। गुप्त भेद का कहा संदेशा।।

चौदहें साहु दमोदर समझावा। करामात दै जीव मुक्तावा।।
चौदह हंस कलियुग में कीन्हा। गुरू स्वरूप परवाना दीन्हा।
पांच लाख हम पहिले तारे। पीछे धर्मनि तुम पगु धारे।।
वंशन थाप्यों कियो कडिहारा। लाख ब्यालिस जीव उबारा।।
साखी–तुम जानो हमही मिलै, फिर पूछो मोहि।
नाम भरोसे पहुँचि हैं, ज्ञान करे का होहि।।

भावार्थ :- उपरोक्त अमतवाणी स्वयं स्पष्ट है। इनके भावार्थ की आवश्यकता नहीं है। इसमें मिलावट है। परंतु ज्ञान समझने के लिए पर्याप्त है कि जिन ऋषियों की प्रसिद्धि है, उनको परमात्मा मिले थे। प्रथम नाम दिया। उससे उनमें सिद्धियाँ आ गई। उन्हीं से खेलने लगे। अपनी भक्ति पर गर्व करने लगे। आगे के नाम नहीं लिए। परमेश्वर जी ने परमात्मा की महिमा बनाए रखने के लिए सब किया था। यदि वे ऋषि सिद्धियों से चमत्कार नहीं करते तो आज कोई परमात्मा को नहीं मानता। उस समय मोक्ष का सम्पूर्ण मंत्र नहीं देना था। भक्ति में आस्था बनाए रखने के लिए ज्ञान तथा प्रथम मंत्र के कुछ मंत्र देकर जीवों को स्वर्ग तथा संसार का सुख प्रदान किया जाना था। वही किया गया था।

सर्वज्ञ सागर पष्ठ 133(409) का शेष तथा पष्ठ 134(410) से 147(423) तक सर्वज्ञ सागर अध्याय मे सष्टि रचना का अधूरा ज्ञान है। सम्पूर्ण सष्टि रचना पढ़ें इसी पुस्तक ''कबीर सागर का सरलार्थ'' के पष्ठ 603 से 670 तक। अध्याय ''सर्वज्ञ सागर'' के पष्ठ 135(411) पर विशेष पढ़ेंः-

अबोल परस सुरति कह दीन्हा। सात संधि प्रकट कर लीन्हा।।
सात संधि तब गुप्त ही पेखा। पीछे सोहं शब्द विवेका।।
सोहं शब्द सत्य अनुसारा। सोहं सुरति अजावन सारा।।

भावार्थ है कि सात मंत्र जो सात शक्तियों के हैं, वे प्राप्त करने के पश्चात् सोहं शब्द तथा सार शब्द का विवेक करना चाहिए। फिर सारशब्द प्राप्त करके आत्मकल्याण करना चाहिए।

पष्ठ 145 पर :-

सार शब्द निर्णय को नामा। जाते होय जीव को कामा।।

ज्ञान प्रकाश का सारांश पढ़ें इसी पुस्तक के पष्ठ 3 पर।

ज्ञान प्रकाश के पष्ठ 62 पर धर्मदास जी को नाम दिया था, वह प्रकरण है।

सोहं–ओहं अजावन बीरू। धर्मदास सों कहयो कबीरू।।

भावार्थ है कि ओम्-सोहं मोक्ष मंत्र है जो परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को कहा था, सुनाया था।

कबीर सागर के अध्याय ''सर्वज्ञ सागर'' का सारांश सम्पूर्ण हुआ।

''सत साहेब''

अध्याय ''अमर सिंह बोध'' का सारांश (सातवां अध्याय)

कबीर सागर में सातवां अध्याय ''अमर सिंह बोध'' पष्ठ 69(493) पर :-

परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को बताया कि एक अमर सिंह नाम का सिंगलदीप का राजा था। अमरपुरी नाम की नगरी उसकी राजधानी थी।

हे धर्मदास! मैं सत्यपुरूष की आज्ञा के अनुसार मत्युलोक (काल लोक) में आया। (धर्मदास जी मन-मन में कह रहे थे कि आप स्वयं सब लीला कर रहे हो। मैं तो आपको दोनों रूपों में देख चुका हूँ।) परमात्मा ने कहा कि एक अमर सिंह नामक राजा अमरपुरी राजधानी में रहता है। वह पुण्यात्मा है, परंतु भगवान भूल गया है। आप जाओ, उसका कल्याण करो। कोई बालक भी नाम ले, उसे भी दीक्षा देना। स्त्री नाम ले, उसे भी नाम देना।

हे धर्मदास! मैं अमरपुरी नगरी में गया। राजा ने अपनी कचहरी (Court) लगा रखी थी। मैं राजा के महल के मध्य में बनी ड्योडी में पहुँच गया। उस समय मैंने अपने शरीर का सोलह सूर्यो जितना प्रकाश बनाया। राजा के महल में अनोखा प्रकाश हुआ। राजा को पता चला तो उठकर महल में आया। मेरे चरण पकड़कर पूछा कि क्या आप ब्रह्मा, विष्णु, शिव में से एक हो या परब्रह्म हो? मैंने कहा कि ब्रह्मा, विष्णु, शिव तथा परब्रह्म से भी ऊपर के स्थान सतलोक से आया हूँ। राजा को विश्वास नहीं हुआ तथा मजाक जाना। मैं अंतर्ध्यान हो गया। राजा रो-रोकर कहने लगा कि किस कारण आप आए थे? क्यों अब छुप गए? दशों दिशाओं को खोज रहा हूँ। पाँच दिन तक राजा विलाप करता रहा। पाँचवें दिन मैंने स्वयं आकर पानी से उसका मुख धोया। मैं फिर उसी प्रकाशमय शरीर में प्रकट हुआ था। राजा ने चरण लिए तथा कहा कि यदि अबकी बार हे परमात्मा! आप चले गए तो मुझे जीवित नहीं पाओगे। मैंने राजा को बताया कि आप पूर्व जन्म के पुण्यवान हैं। परंतु वर्तमान में कोरे पाप कर रहे हो। यह राज्य तथा जीवन और जवानी सदा नहीं रहेगी। पुनः पशु-पक्षी का जन्म प्राप्त करोगे। इसलिए भक्ति करो। राजा ने कहा कि मैं भगवान विष्णु जी की भक्ति करता हूँ। मैंने 101 (एक सौ एक) विष्णु जी के मंदिर अपने राज्य में बनवा रखे हैं। प्रत्येक में पुजारी छोड़ रखे हैं। उनका सब खर्च देता हूँ। पुराणों के आधार से गाय के सींगों पर सोना चढ़ाकर पिताम्बर ओढ़ाकर दूध वाली गाय ब्राह्मणों को देता हूँ। मैंने कहा कि यह मोक्ष मार्ग नहीं है। इस साधना से कर्म का भोग मिलेगा। पाप भी भोगोगे, पुण्य भी मिलेंगे। विष्णु तेरे पाप क्षमा नहीं कर सकता। मैं एक नाम दूँगा जिसके जाप से सर्व पाप नाश हो जाऐंगे। स्वर्ग से असंख्य गुणा सुखमय लोक प्राप्त होगा। राजा को विश्वास नहीं हो रहा था, परंतु मत्यु का डर तथा पशु-पक्षी के जीवन से डरकर दीक्षा लेने की ठानी और मेरे शरीर का तेज देखकर प्रभावित होकर रानी को बुलाने गया जो सातवीं मंजिल पर महल में थी। पहले तो रानी ने कहा कि जो आप बता रहे हो कि विष्णु जी से ऊपर पूर्ण परमात्मा है। अधिक सुखदायी लोक है, यह झूठ हो और लोग हँसाई होवे। राजा ने कहा कि ऐसा संत नहीं देखा। आप स्वयं चलकर देखो। रानी मान गई।

उसकी पत्नी का नाम स्वरकला था। वह इतनी रूपवान (सुंदर) थी कि जिस समय मेरे चरण छूने के लिए राजा के साथ मैदान में आई। रानी के साथ सात (7) सहेलियाँ भी आई। वहाँ चारों ओर राजा के योद्धा, मंत्री-महामंत्री, राज दरबारी खड़े हुए और आश्चर्य किया कि रानी कभी नीचे नहीं आई थी, क्या कारण है? आज आई है। जब रानी ने अपने मुख से आधा पर्दा हटाया तो चेहरे की शोभा ऐसी थी जैसे दूसरा सूर्य पथ्वी पर उतर आया हो। रानी का पहली बार मुख देखकर

राजा के नौकरों ने कहा कि रानी नहीं देवी है। पाठकों से निवेदन है कि राजा की पदवी, सुंदर रूप, स्वस्थ शरीर, धन-धान्य से परिपूर्णता, अच्छे नौकर, मंत्री आदि जीव को सौभाग्य से मिलते हैं। सौभाग्य कैसे बना? दुर्भाग्य कैसे बना? कब बना? ये प्रश्न अध्यात्म ज्ञान से हल होते हैं।

जन्म-जन्मान्तर में किए पुण्यों का अधिक संग्रह हो जाता है। तब उपरोक्त वस्तु तथा मानव तन प्राप्त होते हैं। वे पूर्व जन्म के परमात्मा के भक्त होते हैं। सत्संग के अभाव से वर्तमान में भक्ति न करके केवल पूर्व जन्म के शुभ कर्मों को ही खर्च-खा रहे होते हैं। ऐसे पुण्यात्माओं को परमेश्वर पुनः मार्गदर्शन करने के लिए भक्तिभाव जगाने के लिए कोई युक्ति बनाते हैं। ऐसी पुण्यात्माओं में एक विशेषता होती है कि वे भले ही उच्च अधिकारी या राजा हों, परंतु परमात्मा की चर्चा उन्हें विशेष अच्छी लगती है। परमेश्वर कबीर जी ने राजा अमर सिंह को उसी प्रकार शरण में लिया जैसे धर्मदास को शरण में लेने की लीला की थी। राजा-रानी ने दीक्षा ली। मुझे सिहांसन पर बैठाया और मेरे चरण धोकर चरणामत बनाया। राजा ने पानी की झारी (मटका) लिया। राजा ने मेरे चरणों पर पानी डाला। रानी ने चरण धोए। फिर रानी ने अंगोछे से चरण पौंछे। ऐसी भाव भक्ति उन्होंने की। फिर खाना तैयार करके मुझे तथा राजा को एक साथ दो थालियों में भोजन परोसा। मैं तथा राजा अपनी-अपनी थाली से खाना खाने लगे। रानी स्वयं भोजन परोस रही थी। मेरी थाली पथ्वी से कुछ ऊपर उठी जिससे मुझे खाने में सुविधा रहे। रानी ने यह देखा तो राजा को बताया। फिर तो सर्व सेवक आ गए। सर्व को विश्वास हुआ कि यह कोई सिद्ध महात्मा है, सामान्य व्यक्ति नहीं है। सब उपस्थित नर-नारियों ने प्रसाद माँगा। मैंने उपस्थित सर्व जनों को प्रसाद दिया जिससे सबके मन में भक्ति भावना तीव्र हो गई। राजा-रानी तथा अन्य ने दीक्षा ली।

अध्याय ''अमर सिंह बोध से कुछ अमतवाणियाँ''

''राजा बचन''

रानी मानो कहा हमारो। साहेब चरन बेगि चितधारो।।
धन जौबन तनरंग पतंगा। छिन में छार होत है अंगा।।
तुरत मान जो रानी लीना। संत दरश कामिनि जो कीना।।
हाथ नारियल आरति लीना। सात खंड से उतर पग दीना।।
सात सहेली संग लगी जबहीं। स्वरकला पुनि उतरी तबहीं।।
सब उमराव बैठे दरबारा। रानी आइ बाहिर पग धारा।।
तब उमराव उठे भहराई। स्वरकला कस अचरज आई।।
रानी कबहु न देखी भाई। सो रानी कस बाहेर आई।।
गजमोतिन से पूरे मांगा। लाल हिरा पुनि दमके आंगा।।
आधा मस्तक कीन्ह उघारा। मानिक दमके झलाहलपारा।।
तब रानी सतगुरू पहँ आई। नारियल भेंट जो आन चढ़ाई।।
रानी थाल हाथ में लियऊ। करत निछावर आरति कियऊ।।

साखी—रानी ठाड़ि मैदान में, सुनो संत धर्मदास।
सुरज किरन अरू रानिको, एकही भयो प्रकाश।।

चौपाई

लगि चकाचौंधि अधिक पुनिज बहीं। देखि न जाय रानी तन तबहीं।।

राजा रानी दंडवत कीन्हा। ऐसी भक्ति हृदय में चीन्हा।।
दोउ कर जारि राय भयो ठाढा। उपज्यो प्रेम हृदय अति गाढा।।
साहेब हम पर दया जो कीजै। भुवन हमारे पांव जो दीजै।।
तबहीं हम मंदिर महँ आये। पलंग बिछाय तहां बैठाये।।
झारी भर तब राजा लीना। चरनामृत की युक्ति कीना।।
राजा ऊपरते डारत पानी। चरन पखारे स्वरकला रानी।।
चरण पखारि अँगोछा लीना। ऐसी भाव भक्ति उन कीना।।
चरणामृत तब शीश चढ़ावा। ले चरणामृत बहु विनती लावा।।
जैसी भक्ति राव जो पावा। धरमदास तोहि बरन सुनावा।।

धर्मदास वचन

और कहो राजा की करनी। सो साहेब तुम भाखो वरनी।।

सतगुरू वचन

तुरतहि तब सब साज बनावा। हमको सो अस्नान करावा।।
हम अरू राय बैठे जेंवनारा। आनेउ सार धरे दोउ थारा।।
अधर थार भूमिते रहई। रानी तबहीं चितवन करई।।
रानी कहे रायसों तबहीं। लीला निरखो गुरू की अबहीं।।
अधर अग्र जिनका पनवारा। महा प्रसादते आइ अपारा।।
नर नारी तब ठाढे भय आई। महा प्रसाद अब देहु गुसाई।।
तब हम दीनेउ तहां प्रसादा। पाय प्रसाद भई तब यादा।।
पुरूष लोक की भई सुधि तबहीं। ज्ञानी आय चेताये भलहीं।।
हम भूले तुम लीन चेताई। फिरि न विगोवे आइ यमराई।।
या यम देश कठिन है फांसी। काम क्रोध मद लोभ विनाशी।।

साखी–काम क्रोध अरू लोभ यह, त्रिगुन बसे मन माहि। सत्य नाम पाये विना, जमते छुटन को नाहिं।।

इस प्रकार राजा अमर सिंह तथा रानी स्वरकला को दीक्षा दी और शरण में लिया।

राजा अमर सिंह के जीव को ऊपर के लोकों में लेकर गए। उनको चित्र तथा गुप्त के पास लेकर गए तो चित्र तथा गुप्त ने परमेश्वर कबीर जी का खड़े होकर सत्कार किया। उन्होंने कहा कि हे परमेश्वर! इस पापी आत्मा को बैकुण्ठ (स्वर्ग) में क्यों ले आये? परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि इसने सत्यनाम ले लिया है। चित्र तो प्राणी के वह कर्म लिखता है जो प्रत्यक्ष करता है और गुप्त वह कर्म लिखता है जो जीव अप्रत्यक्ष यानि छुपकर करता है। चित्र-गुप्त को शंका हुई कि हमारे यहाँ तो सर्व कर्मों का भोग मिलता है। सत्यनाम लेने से क्या कर्म समाप्त हो जाते हैं? तब परमेश्वर कबीर जी ने एक पारस पत्थर के टुकड़े को लोहे से छू दिया। उसी समय लोहा सोना (स्वर्ण) बन गया। तब परमेश्वर कबीर जी ने चित्र-गुप्त से कहा कि हमारा नाम पारस के समान है, जो जीव प्राप्त करता है, उसके गुण-धर्म बदल जाते हैं। वह शुद्ध आत्मा (हंस) बन जाता है। चित्र-गुप्त को आश्चर्य हुआ और परमेश्वर कबीर जी को प्रणाम किया। यह सब लीला यमराज भी देख रहा था। मैंने यमराज से कहा कि राजा को यमपुरी (यम की नगरी) दिखाकर लाओ। तब यमराज ने दो दूतों को राजा के साथ भेजा।

''नरक का वर्णन''

किसी स्थान पर पापी प्राणियों को कोल्हू में पीड़ा जा रहा था, कहीं उल्टा लटका रखा था, कहीं गर्म खंभों से बाँध रखा था। कई प्रकार से चीस (कष्ट) दी जा रही थी। कहीं पर यमदूत पापी प्राणियों को चबा-चबाकर खा रहे थे। कुछ डर के मारे इधर-उधर भाग रहे थे, परंतु कोई बच नहीं पा रहा था। किसी को नरक कुण्डों में डाल रखा था। कोई सिर में मोगरी (छोटे-मोटे डण्डे) मार रहा था। 84 नरक कुण्ड बने हैं। यह दृश्य आँखों से देखकर राजा व्याकुल हो गया। किसी कुण्ड में रूधिर (Blood) भरा था। किसी में पीब (मवाद) तो किसी में मूत्र भरा था जिनकी गहराई (Depth) एक योजन (12 कि.मी.) तथा चार योजन (48 किमी.) परिधि (Diameter) यानि गोलाई और चार योजन तक दुर्गन्ध जाती है। इन चार कुण्डों का तो यह वर्णन है। पाँचवें में अग्नि जल रही थी, बहुत जीव उसमें जल रहे थे। यह बहुत लम्बा-चौड़ा है, गहरा है। राजा अमर सिंह उस नरक को देखकर भयभीत था, कुछ बोल नहीं पा रहा था।

जो झूठ बोलकर स्वार्थ पूर्ति करता है, उसकी जीभ काट रखी थी। जो झूठी गवाही देता था, उसको सर्प की जीभ लगा रखी थी। जो निर्दोष को मारता है, उसकी पिटाई हो रही थी। जो स्त्री अपने पति को छोड़कर पर पुरूष के पास जाती है। उसको नरक में अग्नि में जलाया जाता है यानि आग के मनुष्य जैसे पुतले से बाँध दिया जाता है। यदि कोई पुरूष परस्त्री गमन करता है तो उसको नारी जैसे अग्नि खंभ से बाँध दिया जाता है। अन्य अपराधियों को अन्य प्रकार की यातनाऐं दी जा रही थी। गिद्ध पक्षी, कॉग (कौवा) पक्षी उनको नौंच-नौंचकर खा रहे थे। जो नर-नारी शराब पीते हैं, उनको गर्म तेल पिलाया जा रहा था। जो साधु की निंदा करते हैं, उनको कुष्ट रोग (कोढ़ रोग) लगता है। फिर पृथ्वी के ऊपर भी उनको 84 लाख प्रकार के प्राणियों के शरीरों में कष्ट तथा मानव जन्म में भी भिन्न कष्ट कर्मानुसार भोगने पड़ते हैं।

राजा अमर सिंह नरक देखकर चित्र-गुप्त के लोक में दूतों के साथ आया। वहाँ पर परमेश्वर कबीर जी सिंहासन पर विराजमान थे। राजा भयभीत होकर परमेश्वर कबीर जी के चरणों में सिर रखकर बहुत दुखी मन से कहने लगा कि हे प्रभु! मेरी रक्षा करो, मुझे बचा लो। नरक की कथा सुनकर धर्मदास भयभीत हो गया तथा कहा कि आगे और बताओ परमेश्वर। परमेश्वर कबीर जी ने बताया कि जो पुण्य करता है, उसको स्वर्ग में भेज दिया जाता है और जो पाप करता है, वह नरक में कष्ट भोगता है। दोनों प्रकार के कर्मों को भोगने के पश्चात् अन्य प्राणियों के गर्भ में कष्ट, फिर जीवनभर कष्ट भोगना पड़ता है। इस चक्र में काल ने जीव को फँसा रखा है। परमेश्वर कबीर जी धर्मदास जी को सुना रहे हैं कि रविसुत यानि यमराज का एक सदन (Parliament House) है। उसमें यमराज का सिंहासन मध्य में है। सामने खाली जगह है, तीन ओर यम के गण यानि यमदूत अकड़ के साथ अपने-अपने आसनों पर बैठे होते हैं। अन्य सिंहासनों पर वेद-शास्त्र के कर्ता-वक्ता, ऋषि-मुनि जैसे पारासर ऋषि और व्यास आदि-आदि सब ऋषिजन शरीर त्यागकर यमराज के कार्यालय में जाते हैं। वहाँ यमराज की सहायता करते हैं। पाप-पुण्य का हिसाब कराते हैं। जितने जीव (मानव) मृत्यु के पश्चात् वहाँ जाते हैं, सब मिलकर जीवों का पाप-पुण्य का निर्णय करने में सहयोग देते हैं। ये सब काल के नौकर हैं। अपनी आँखों हमने देखा है। धर्म-अधर्म का यथावत निर्णय सब मिलकर करते हैं। यह सब काल की सेना है। हे धर्मदास! चित्र-गुप्त प्रत्येक मानव के जीव के साथ रहते हैं। फिर वे अपना सारा लेखा-जोखा (Account) मुख्य चित्र को चित्र तथा मुख्य

गुप्त को जीव के साथ वाला गुप्त सर्व लेखा (Bio-data) देता है। प्रत्येक चित्र तथा गुप्त प्रत्येक जीव का पाप-पुण्य बोल-बोलकर सुनाता है। धर्मराय उनको यथार्थ न्याय के साथ प्रत्येक का दण्ड तथा स्वर्ग समय निर्धारित करके देता है। उसी अनुसार दूत जीवों को भुगतान कराते हैं। जो सुकर्म (धर्म करने वाला) है, उसको देवदूतों के साथ स्वर्ग में भेजा जाता है।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे धर्मदास! और सुन कि क्या-क्या यातना किन अपराधों में दी जाती है? जो ब्रह्म हत्या (वेद-शास्त्र पढ़ने-पढ़ाने वाले ब्राह्मण) की हत्या करता है। उसको सर्वाधिक दण्ड दिया जाता है। जो विश्वासघात करता है, जो अपने गुरू या स्वामी की हत्या करता है, जो बच्चे या वंद्ध को मारता है, उनको उबलते तेल में डाला जाता है। अन्य अपराध :- जो परदार (परस्त्री) तथा परक्षेत्र को छीन लेता है, जो सीमा में गड़बड़ (हेराफेरी) करता है, वे भयंकर नरक में गिरते हैं। उनके सिर काटे जाते हैं। जो चोरी करता है, गुरूद्रोही, मदिरा पीने वाला, झूठ बोलने वाला, दूसरे की निंदा करने वाला है।

तिन पापीन को यम विकराला। भयंकर नरक माँझ तेही डाला।।

जो दूसरे की साधना में बाधा करता है, जो वेद-शास्त्र को नहीं पढ़ता, जो परमात्मा की चर्चा सुनकर जलता है, औरों का मन भी विचलित करता है, वह साकट व्यक्ति है। उसके तन को नरक में सूअर खाते हैं। जो मित्र को मारता है, वह घोर नरक में जाता है। जो गुरू के धन को हड़पता (चुराता) है, वह क्रीमी नरक (कीड़ों के कुण्ड) में डाला जाता है। जो गुरू पद पर विराजमान होकर व्याभिचार करता है, जो राजा प्रजा को कष्ट देता है, जो शिष्य भी बना है और शंका रखता है, जो न्यायधीश होकर पक्षपात करता है, वे घोर नरक के भागी बनते हैं। जो बिना देखे किसी में दोष निकालता है, उसकी आँखें यमदूत फोड़ते हैं। जो परतिय (परत्रीया) की इच्छा करता है, जो देव, गुरू और धर्म-शास्त्रों की निंदा करता है, उनको पहले सूलों (लोहे की पैनी कीलों) पर बैठाकर ऊपर से सूलों वाले मुगदर (मोगरों) से जख्म (घाव) यमदूत करते हैं। जो अपनी स्त्री को बिना बैराग के त्याग देता है या स्वयं अन्य स्त्री से लगाव करने के लिए अपनी स्त्री में दोष निकालकर छोड़ देता है। जो वैराग धारण करके अपनी स्त्री को त्याग जाता है तो वह दोषी नहीं होता, परंतु परमात्मा के वैराग में अपनी पत्नी को त्याग दिया, फिर अन्य से लगाव कर लिया, वे व्यक्ति नरक में डाले जाते हैं। उनको कितना समय नरक में भोगना पड़ेगा, कहने में नहीं आता। उनके हाथ और पैर बाँधकर यातना देते हैं।

चित्र तथा गुप्त तो पुण्य-पाप लिखते हैं, धर्मराज उनका न्याय करता है। अमर सिंह बोध पंष्ठ 82 तथा 83 पर भी पाप करने वालों को और क्या-क्या कष्ट नरक में दिया जाता है, बताया है। बुद्धिमान को संकेत ही पर्याप्त होता है।

जो माँस खाते हैं, शराब पीते हैं, उनको तपते (उबलते) तेल में डाला जाता है। उनके पेट के अंदर भी उबलता तेल डाला जाता है। इस प्रकार यातना दी जाती है।

''धर्मदास बचन'' {पंष्ठ 84(508)}

उपरोक्त नरक का वर्णन सुनकर धर्मदास व्याकुल हो गए। कबीर जी ने कहा है कि :-

''सतगुरू बचन''

सुनत वचन प्रभु मन विहँसाये। कही शब्द धर्मनि समुझाये।।
धर्मनि तुमही भय कछु नाही। सतगुरू शब्द है तुमरे पाही।।
और कथा सुनहु चितधारी। संशय मिटै तो होहु सुखारी।।

जब राजा विनती मम कीन्हा। तब हम ताहि दिलासा दीन्हा।।
शब्द गहै सो नाहि डराई। तुम किमि डरहु सुनहु हो राई।।
सत्य शब्द मम जे जिव पैहैं। काल फांस सो सबै नशैहैं।।
सुनत वचन राजा धरू धीरा। बोलै वचन काल बलबीरा।।

भावार्थ :- धर्मदास जी की व्याकुलता देखकर कहा कि हे धर्मदास! आपने तो दीक्षा ले रखी है। आपको तो सत्यनाम प्राप्त है, आपको कोई डर नहीं। परमेश्वर कबीर जी ने बताया कि राजा को भी चिंता बनी और कहा कि हे परमात्मा! अब क्या होगा? मैंने (कबीर जी ने) राजा को दिलासा दिया कि जो सत्य शब्द मेरे से ले लेगा, उसको कोई भय नहीं है। यह वचन सुनकर राजा को धैर्य हुआ। फिर चित्र-गुप्त बोले :-

''चित्र-गुप्त बचन''

है साहब तुम काह विचारो। नगर हमार उजारन धारो।।
हो साहब जो तुम अस करहू। न्याय नीति सबही तुम हरहू।।
सुनो साहब एक बात हमारी। पंथ तुम्हारा चले संसारी।।
ताते बिनती करैं बहोरी। सुनो गुसाइयाँ अरज मोरी।।
ब्रह्मा विष्णु शिव अधिकारी। तीन की आश जगतमहँ भारी।।
उनसे हम नहिं कबहुँ डरावैं। चूक चालैं तो ताहि नचावैं।।
और जीवकी कौन चलावै। हमते उबरन ऐको न पावें।।
सीधि चाल चलै जीव सुजाना। सो जीव देहों लोक पयाना।।
परपंच करै और साहेब को धावे। हम ते जीव जान नहिं पावे।।
चाल चलत लागै बडिबारा। ताते नाहीं दोष हमारा।।

भावार्थ :- चित्र-गुप्त ने कहा कि हे प्रभु! आप यह क्या कह रहे हो कि जो सत्य शब्द लेगा, उसको कोई कष्ट नहीं होगा, उसको दण्ड नहीं दिया जाएगा। आप तो हमारा नगर उजाड़ने (बर्बाद करने) आए हो। यदि आप ऐसा करोगे तो न्याय नीति सब नष्ट हो जाएगी। आपका पंथ संसार में ही चलेगा। वहाँ के मालिक ब्रह्मा-विष्णु तथा शिव हैं। वे भी हमसे डरते हैं। यदि वे भी गलती करते हैं तो हम उनको भी नचाते हैं यानि दण्डित करते हैं, और जीव की क्या चलेगी?

''सतगुरू वचन''

ज्ञानी कहे सुनो जमराई। हमरो हंसा न्यार रहाई।।
परपंच तुमरो देखि डराये। जीवघात कबहू नहिं लाये।।
निशिदिन जीव दया उर धारे। ज्ञान ग्रंथ मन माहिं बिचारे।।
अहो यमराय जाहु वैकुंठा। राजा विष्णुसों करावहु भेंटा।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि मेरा भक्त आप से भिन्न रहेगा। आप उनका हिसाब नहीं करोगे। मेरा भक्त परमात्मा से डरकर रहता है। वह तो दयाभाव वाला होता है। वह जीव हिंसा कभी नहीं करता। कबीर परमेश्वर जी ने कहा कि अब मेरे को विष्णु से मिलाओ।

''चित्र-गुप्त बचन''

चित्र-गुप्त ने हाथ जोड़कर विनती की तथा कहा कि हे प्रभु! कोई गलती हुई तो क्षमा करना। आप मालिक हो, हम आपके दास हैं। चित्र-गुप्त के साथ मैं (कबीर जी) तथा राजा अमर सिंह विष्णु के महल के पास पहुँच गए। विष्णु मुझे देखकर खड़े हो गए। हमारे को बैठने के लिए सिंहासन

दिया। उस समय भगवान विष्णु जी लक्ष्मी जी के साथ बैठे थे। अन्य देवी-देवता दर्शन के लिए खड़े थे। विष्णु जी ने कहा कि आपने दर्शन देकर हमको कतार्थ किया। आप भूपति (राजा) को कैसे साथ लाए हो?

''अमरसिंह राजा बचन''

ओ भगवान सुनो मम वानी। सेवा तुम्हरी निष्फल जानी।।
हम एकोत्तर मंदिर बनावा। तामें मूरति लै पधरावा।।
साधु राखि मंदिर के मांही। छाजन भोजन दीना ताही।।
जेता धर्म हम सुने पुराना। विप्रन कहे धरम ठिकाना।।
सुरभी सोने सींग मढाई। पीतांबर पुनि ताहि ओढाई।।

भावार्थ :- राजा अमर सिंह ने भगवान विष्णु से कहा कि हे भगवान! मैंने आपके 101 मंदिर बनवाए। उनमें आपकी मूर्ति स्थापित की। आपका पुजारी रखा। उसके वेतन तथा भोजन का प्रबंध किया। जो भी वेद-पुराणों से पंडितों ने धर्म-कर्म बताया, सो सब किया। गाय की सींगों पर सोना चढ़वाकर उनको पीतांबर ओढ़ाकर सौ गाय ब्राह्मण को दान की। इस प्रकार आपकी पूजा की। फिर भी हमारे सिर पर कर्म-दण्ड लगाए हैं। श्री विष्णु जी ने कहा कि राजा लोग पाप भी बहुत करते हैं। शिकार करते हैं, जंगली जीवों को मारकर खाते हैं। पाप तो लगेगा ही। कबीर परमेश्वर जी ने बताया कि हे धर्मदास! मैंने उसी समय राजा अमर सिंह के सिर पर हाथ रखा। उसी समय उसके मुख से अनेकों कौवे निकले। यही लीला देखकर भगवान विष्णु शर्मिन्दे हो गए। आगे कुछ नहीं बोले। फिर मैं राजा अमरसिंह को मानसरोवर पर ले गया। वहाँ की शोभा देखकर राजा आश्चर्य में पड़ गया। वहाँ की कामनियों के शरीर की शोभा अनोखी है। राजा की पत्नी भी अति सुंदर थी, परंतु मानसरोवर की स्त्रियों के सामने सूर्य के सामने दीपक के समान थी। परमेश्वर कबीर जी ने राजा अमर सिंह को शरीर में प्रवेश करा दिया। पथ्वी पर आकर राजा तथा रानी को आगे का मोक्ष मंत्र दिया। उसके पश्चात् उनकी सच्ची भक्ति श्रद्धा परखकर सारशब्द दिया। राजा अमर सिंह अपनी आँखों नरक का कष्ट तथा विष्णु जी की असमर्थता को देख चुका था तथा मानसरोवर पर सुंदर-अच्छे स्वभाव की स्त्रियाँ व मानसरोवर की शोभा देखकर सतलोक की सुंदरता की कल्पना कर रहा था कि वहाँ तो वास्तव में अद्‌भुत नजारा तथा सुख होगा। राजा ने मेरे (कबीर परमेश्वर) से कहा कि हे सतगुरू! पता नहीं कब मत्यु होगी। लंबा समय है। हमारे परिवार को तुरंत सतलोक ले चलो। यहाँ अब नहीं रहा जाएगा। यह कहकर पूरा परिवार यानि राजा-रानी तथा पुत्र चरणों में गिरकर रोने लगे। राजा ने पुत्र तथा पत्नी को ऊपर का कष्ट, विष्णु जी से हुई वार्ता, मानसरोवर का नजारा वहाँ की शोभा बताई थी। राजा से ऊपर का वर्णन सुनकर रानी तथा पुत्र व अन्य 21 (इक्कीस) लाख नागरिक उपदेशी हुए और शीघ्र सतलोक चलने का बार-बार सच्चे दिल से आग्रह किया। उनकी भक्ति पूरी करवाकर मैंने (कबीर परमेश्वर जी ने) सबका शरीर छुड़वाकर विमान में बैठाकर सतलोक पहुँचाया। वहाँ जाकर सबके शरीर का सोलह सूर्यों जितना प्रकाश हो गया। परमात्मा ने उनको सीने से लगाया। सबने अमत भोजन खाया। सतलोक में स्थाई निवास पाया। अमर मोक्ष प्राप्त हुआ।

शंका समाधान :- जैसा कि इस ग्रन्थ के प्रारम्भ में स्पष्टीकरण किया है कि नकली कबीर पंथियों ने अपनी अल्प बुद्धि से वाणियों में फेरबदल किया है। अमर सिंह बोध के पष्ठ 91 पर तो लिखा है कि सतलोक जाने के पश्चात् राजा और अन्य जीव जो नीचे से गए थे, उन सबका एक

जैसा सोलह (षोडश) सूर्यों जैसे शरीर का प्रकाश हो गया। वहाँ पर राजा तथा रंक का कोई भेद नहीं रहता। फिर पष्ठ 92 पर लिखा है कि सतपुरूष ने राजा के शरीर का प्रकाश करोड़ सूर्यों के प्रकाश के समान कर दिया और सिर पर राजाओं की तरह छत्र लगाया।

विचार करने की बात है कि एक तरफ तो पूरे ग्रन्थ में लिखा है कि सतलोक में सर्व हंस-हंसनी का सोलह सूर्यों जैसा तेजोमय शरीर है। यहाँ राजा का शरीर करोड़ सूर्यों के प्रकाश के समान लिखकर ग्रन्थ की सत्यता को बिगाड़ा है।

कबीर सागर के अध्याय ''अमर सिंह बोध'' का सारांश सम्पूर्ण हुआ।

''सत साहेब''

❖ अध्याय ''राजा बीर देव सिंह बोध'' का सारांश

(इस अध्याय में तीन बार में दीक्षा क्रम पूरा होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है।)

कबीर सागर में अध्याय ''बीर सिंह बोध'' पष्ठ 97(521) पर है। यह 8वां अध्याय है। परमेश्वर कबीर जी से धर्मदास जी ने जानना चाहा कि हे परमात्मा! आपने बताया कि काशी नगरी का नरेश बीर सिंह बघेल भी आपकी शरण में है। वह तो बहुत अभिमानी राजा था। वह कैसे आपकी शरण में आया? कपा करके मुझ दास को बताऐं।

''परमेश्वर कबीर बचन''

परमात्मा की प्यारी आत्माओं से निवेदन है कि कबीर जी के ग्रन्थ की दुर्दशा कर रखी है। इस ग्रन्थ के अध्याय ''बीर सिंह बोध'' के प्रारम्भ में जितने संतों का वर्णन किया है कि वे सब इकट्ठे होकर राजा बीर सिंह के महल के पास कीर्तन कर रहे थे। वे समकालीन नहीं थे। नामदेव जी का जन्म सन् 1270 (विक्रमी संवत् 1327) में महाराष्ट्र में हुआ। परमेश्वर कबीर जी सन् 1398 (विक्रमी संवत् 1455) में काशी नगरी में लहर तारा नामक सरोवर में कमल के फूल पर जल के ऊपर शिशु रूप में प्रकट हुए थे। परमेश्वर कबीर जी राजा बीर सिंह बघेल के समकालीन थे। ग्रन्थ का नाश करने वाले ने इन-इन संतों को मिलकर कीर्तन करते लिखा है। श्री नामदेव, भक्त धन्ना जाट, रंका-बंका (ये दोनों पति-पत्नी थे। रंका पुरूष था, बंका स्त्री थी। ये संत नामदेव के समकालीन थे। उस समय परमात्मा अन्य भेष में इनको मिले थे।) फिर लिखा है, सदन कसाई, पद्मावती आदि-आदि भी उसी कीर्तन में थे। अब सत्य कथा इस प्रकार है :-

राजा बीर सिंह को शरण में लेना

काशी नगरी का राजा बीर सिंह बघेल था। राजा में अभिमान होना स्वाभाविक है। ऐश्वर्य के साधन जुटाना स्वाभाविक है। राजा का महल सुंदर बाग में बना था। राजा ने अपने गुरू ब्राह्मण की आज्ञा से कीर्तन का आयोजन करा रखा था। राजा स्वयं अपने महल में था। कीर्तन कुछ दूरी पर मंदिर के पास बाग में ही हो रहा था। बहुत सारे संत, ब्राह्मण वक्ता तथा श्रोता आए थे। अपने-अपने इष्ट की महिमा-स्तुति कर रहे थे। राम, कष्ण, शिव, दुर्गा देवी, गणेश आदि प्रभुओं को परम मोक्षदायक संकट मोचक, भवसागर से पार करने वाले परम प्रभु बता रहे थे। अविनाशी अजन्मा कहकर श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी के गुणगान कर रहे थे। परमेश्वर कबीर जी भी उस सत्संग में पहुँचे। कुछ दूरी पर आसन लगाकर बैठ गए। प्रवक्ता प्रवचन कर रहे थे, श्रोता झूम रहे थे। कुछ समय के पश्चात् राजा के गुरू ब्राह्मण ने कहा कि हे भक्त! लगता है कि आप भी सत्संग करते हो। आओ! आप भी कुछ ज्ञान का प्रसाद श्रोताओं को दो। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे संत-महात्माओ! आपने तो सब-कुछ सुना दिया है। अब आपके ज्ञान के सामने तो सूरज को दीपक दिखाना है। मैं और क्या ज्ञान सुनाऊँ? ब्राह्मण ने तथा अन्य उपस्थित भक्तों-संतों ने मिलकर अनुरोध किया। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि मेरा ज्ञान आप सुन नहीं सकोगे। आपके कान फट जाएंगे। दिमाग की स्नायु सिकुड़ जाएगी। मस्तिष्क पर त्योड़ी पड़ जाएंगी। बखेड़ा खड़ा हो जाएगा। आप मेरे से झगड़ा करोगे। सर्व उपस्थित संतों-भक्तों ने कहा कि भक्त जी! हम साधु-संत, भक्त हैं, हम कभी झगड़ा नहीं करते। हमें कोई गाली भी देता है तो भी हम मुस्कराकर चुप रहकर चले जाते हैं। आप तो भक्त हैं, आप तो परमेश्वर की चर्चा ही तो

करोगे। हम वादा करते हैं कि आपसे कोई झगड़ा-विरोध नहीं करेंगे।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा :-

''परमेश्वर कबीर वचन''

हरि ब्रह्मा शिव शक्ति उपायी। इनकी उत्पन्न कहहुँ बुझायी।।
बिना भेद सब फूले ज्ञानी। ताते काल बांधि जिव तानी।।
अजर अमर है देश सुहेला। सो वे कहहिं पंथ दुहेला।।
ताका मरम भक्त नहीं जाना। किरत्रम कर्ता से मन माना।।
हम तो अगम देश से आये। सत्यनाम सौदा हम लाये।।
साखी–किरत्रम रस रंग भेदिया, वह तो पुरूष न्यार।
तीन लोक के बाहिरे, पुरूष सो रहत निनार।।
प्रथम अर्जुन को बल दीन्हा। पीछे सब बल हर लीना।।
कष्ण ने जब त्यागी देही। भील बालिया बदला लेही।।
अर्जुन जब गोपियों लीवाऐ। आगे खड़े भील बहु पाए।।
भीलों घेरा अर्जुन का दीन्हा। मारा पीटा गोपीयन लीन्हा।।
गांडिव लिए अर्जुन रोवै। चला नहीं धनुष कारण टोहै।।
कष्ण कूं अर्जुन कोसै। कष्ण छलिये के मरे भरोसै।।
महाभारत में जब नाश करवाया। गांडिव धनुष से सब मार गिराया।।
आज वह गांडिव हाथ न उठ्या। भीलों ने जब जी भरकर कूट्या।।
रामचन्द्र ने बाली मारा। वक्ष ओट ले कहैं करतारा।।
सब भूले हो बिना विवेका। हम राम–कष्ण मरते देखा।।
मरें ब्रह्मा–विष्णु–महेशा। साथै नारद शारद शेषा।।
मरें ज्योति निरंजन अभिमानी। साथ मरै तुम्हरी आदि भवानी।।
पढ़क देखो बेद पुराना। आदि पुरूष का भेद बखाना।।
पुरान कहें तीनों मरहीं। बार–बार जन्में गर्भ में परहीं।।
तुम यह ज्ञान कहाँ से लाए। ब्रह्मा विष्णु अमर बताए।।
कबीर, अक्षर पुरूष एक पेड़ है, निरंजन वाकी डार।
त्रिदेवा (ब्रह्मा, विष्णु, शिव) साखा भये, पात रूप संसार।।
रजगुण ब्रह्मा सतगुण विष्णु तमगुण शंकर कहलावै रै।
चौथे पद का भेद नियारा, कोई बिरला साधु पावै रै।।
तीन देव को सब कोई ध्यावै, चौथे पद का मर्म ना पावै।
चौथा छोड़ पंचम ध्यावै, कह कबीर वह हम पर आवै।।
तीन गुणों की भक्ति में, भूल पर्यो संसार।
कहें कबीर निज नाम बिना, कैसे उतरो पार।।
तीन देव की जो करते भक्ति। उनकी कबहु ना होवै मुक्ति।।
कबीर, औंकार नाम है काल (ब्रह्म) का, याकूं कर्ता मत जान।
साच्चा शब्द कबीर का, पर्दे मांही पहचान।।
तीन लोक सब राम जपत है, जान मुक्ति को धाम।

रामचन्द्र वशिष्ठ गुरू कियो, तिनको सुनायो ओम् नाम।।
राम कष्ण अवतार हैं, इनका नहीं संसार।
जिन साहब संसार रचा, सो कीन्ह न जायो नार।।
चार भुजा के भजन में, भूल परे सब संत।
कबीर सुमिरे तास कूं, जाकी भुजा अनंत।।
वशिष्ठ मुनि से त्रिकाली योगी, शोध कै लग्न धरै।
सीता हरण मरण दशरथ का, बन–बन राम फिरै।।
समंदर पांटि लंका गया, सीता का भरतार।
ताहि अगस्त ऋषि पी गयो, इनमें कौन करतार।।
गोवर्धन श्री कष्ण धार्यो, द्रोणागिरी हनुमंत।
शेषनाग सष्टि उठायो, इनमें कौन भगवंत।।
काटे बन्धन विपत में, कठिन कियो संग्राम।
चिन्हो रे नर प्राणियो, गरूड़ बड़ो के राम।।
कह कबीर चित चेतहु, शब्द करो निरूवार।
श्री रामचन्द्र कूं कर्ता कहं, भूलि पर्यो संसार।।
जिन राम कष्ण निरंजन किया, सो तो कर्ता न्यार।
अँधा ज्ञान न बूझही, कहै कबीर विचार।।

मुझ दास (रामपाल दास) पर परमेश्वर कबीर जी की कपा हुई। इसी संदर्भ में कुछ वाणी रची हैं जो निम्न हैं, प्रकरण यही चल रहा है। इसलिए ये वाणी लिख रहा हूँ। यही ज्ञान परमेश्वर कबीर जी ने उपस्थित व्यक्तियों को सुनाया था।

युद्ध जीत कर पांडव, खुशी हुए अपार। इन्द्रप्रस्थ की गद्दी पर, युधिष्ठिर की सरकार।।
एक दिन अर्जुन पूछता, सुन कष्ण भगवान। एक बार फिर सुना दियो, वो निर्मल गीता ज्ञान।।
घमाशान युद्ध के कारण, भूल पड़ी है मोहें। ज्यों का त्यों कहना भगवन्, तनिक न अन्तर होए।।
ऋषि मुनि और देवता, सबको रहे तुम खाय। इनको भी नहीं छोड़ा आपने, रहे तुम्हारा ही गुण गाय।।
कष्ण बोले अर्जुन से, यह गलती क्यों किन्ह। ऐसे निर्मल ज्ञान को भूल गया बुद्धिहीन।।
अब मुझे भी कुछ याद नहीं, भूल पड़ी नीदान। ज्यों का त्यों उस गीता का मैं, नहीं कर सकता गुणगान।।
स्वयं श्री कष्ण को याद नहीं और अर्जुन को धमकावे। बुद्धि काल के हाथ है, चाहे त्रिलोकी नाथ कहलावे।।
ज्ञान हीन प्रचारका, ज्ञान कथें दिन रात। जो सर्व को खाने वाला, कहें उसी की बात।।
सब कहें भगवान कपालु है, कपा करें दयाल। जिसकी सब पूजा करें, वह स्वयं कहै मैं काल।।
मारै खावै सब को, वह कैसा कपाल। कुत्ते गधे सुअर बनावै है, फिर भी दीन दयाल।।
बाईबल वेद कुरान है, जैसे चांद प्रकास। सूरज ज्ञान कबीर का, करै तिमर का नाश।।
रामपाल साची कहै, करो विवेक विचार। सतनाम व सारनाम, यही मन्त्र है सार।।
कबीर हमारा राम है, वो है दीन दयाल। संकट मोचन कष्ट हरण, गुण गावै रामपाल।।
ब्रह्मा विष्णु शिव, हैं तीन लोक प्रधान। अष्टंगी इनकी माता है, और पिता काल भगवान।।
एक लाख को काल, नित खावै सीना ताण। ब्रह्मा बनावै विष्णु पालै, शिव कर दे कल्याण।।
अर्जुन डर के पूछता है, यह कौन रूप भगवान। कहै निरंजन मैं काल हूँ, सबको आया खान।।
ब्रह्म नाम इसी का है, वेद करें गुणगान। जन्म मरण चौरासी, यह इसका संविधान।।

चार राम की भक्ति में, लग रहा संसार। पाँचवें राम का ज्ञान नहीं, जो पार उतारनहार।।
ब्रह्मा–विष्णु–शिव तीनों गुण हैं, दूसरा प्रकृति का जाल। लाख जीव नित भक्षण करें, राम तीसरा काल।।
अक्षर पुरूष है राम चौथा, जैसे चन्द्रमा जान। पाँचवा राम कबीर है, जैसे उदय हुआ भान।।
रामदेवानन्द गुरु जी, कर गए नजर निहाल। सतनाम का दिया खजाना, बरतै रामपाल।।

परमेश्वर कबीर जी के उपरोक्त सत्यज्ञान को सुनकर सर्व श्रोता आश्चर्यचकित रह गए। जो वक्ता थे, वे जल-भुन गए। एक जो राजा का ब्राह्मण गुरू था, वह राजा के पास गया और राजा से कहा कि हे राजन! हम जिन ब्रह्मा, विष्णु, शिव (ब्रह्मा, हरि, हर) को परमात्मा अविनाशी मानते हैं। कबीर जुलाहा कह रहा है कि ये नाशवान हैं। इनकी भक्ति करने से मुक्ति नहीं हो सकती। ब्रह्मा, विष्णु, शिव का पिता काल है जिसने श्री कष्ण जी में प्रवेश करके गीता का ज्ञान दिया है। इनकी माता दुर्गा है। इन सबसे शक्तिमान अन्य परमेश्वर है जो कभी जन्मता-मरता नहीं।

जो आप पत्थर की मूर्ति को प्रभु मानकर पूजते हो, यह एक कारीगर द्वारा निर्मित है। बनाते समय कारीगर ने इसकी छाती पर पैर रखकर छैनी और हथौड़े मारकर आकार दिया है। इसका रचनहार निर्माता कारीगर है। यह कत्रिम देव किसी काम का नहीं। क्या कभी इस मूर्ति भगवान ने आपसे बातें की हैं? क्या किसी कष्ट का समाधान बताया है?

मूर्ति कूटि पत्थर की बनाई। कारीगर छाति दे पाँही।।
भक्ति ज्ञान योग का भेवा। तीर्थ बरत जप तप सब सेवा।।
सबको काल जाल बतावै। जो कोई करै नरक में जावै।।

राजा ने एक छड़ीदार (सिपाही) को कबीर जी को बुलाने के लिए भेजा। सिपाही ने कहा कि हे संत जी! आपको राजा ने बुलाया है।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा :-

''परमेश्वर कबीर बचन''

कहै कबीर बचन अरथाई। केहि कारण मोहि राय बुलाई।।
ना हम पण्डित ना परधाना। ना ठाकुर चाकर तेहि जाना।।
ना हम बिराना देश बसावें। ना हम नाटक चेटक लावें।।
पैसा दमरी नाहिं हमारे। केहि कारणै मोंहि राय हंकारे।।
गरज होय तो यहाँ चलि आवै। हम तो बैठे भजन करावै।।
साखी–छड़ीदार तुम जायकै, कहो राय के पास।
महा प्रचण्ड बघेल है, हम नहिं मानत त्रास।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि मेरे को राजा से कोई काम नहीं है। यदि राजा को गरज (आवश्यकता) है तो यहाँ आ जाएगा। न तो मैं पंडित हूँ, न राजा का नौकर, न ठाकुर, न मैं कोई भिन्न देश बना रहा हूँ यानि देशद्रोही नहीं हूँ, न मैं कोई जादू-जंत्र, चेटक, टूणे-टोटके करने वाला, मुझे किस कारण से राजा ने बुलाया है, हम नहीं जाते।

सिपाही ने जाकर नमक-मिर्च लगाकर राजा को बताया। राजा बुद्धिमान भी होते हैं। राजा बीर सिंह बघेल ने विचार किया कि लालची संत होता तो दौड़ा आता। राजा के बुलाने पर भी नहीं आया तो देव स्वरूप है, व्यक्ति नहीं।

''राजा बीर सिंह का कबीर जी के पास जाना''

कीन्ह विवेक राय दिल माहीं। नहिं आये कबीर हम जाहीं।।
वह तो सत्य भक्ति चित दीन्हा। कारण कौन त्रास मम कीन्हा।।
यहि विधि कीन विवेक विचारा। तबहीं राजा आप सिधारा।।
हुकम पाय आय असवारा। गज औ तुरंग सु साज सँवारा।।
आवत देखा जब हम भाई। तब हम लीला एक बनाई।।
आसन अधर कीन तेहि वारा। सवा हाथ धरती से न्यारा।।
माला तिलक और टोप विराजै। हाथ स्वेत कुवरी सो छाजै।।
नंपति देखि अचरज मन कीन्ही। यह तो पुरूष न देखे कबही।।
धन्य धन्य अस्तुति सब गावैं। धन्य कबीर चरण सब ध्यावैं।।
राजा चरण दोऊ पकड़ि भाई। धन्य धन्य नंप करई बड़ाई।।
कहे राय धन भाग हमारा। दर्शन दीन्ह आय करतारा।।

राजा बीर सिंह वचन

छन्द– अस्तुति करत नंपति भाषेउ। तुम ब्रह्म निर्गुण आप हौ।।
अनाथ नाथ सुनाथ करि दिये। माथ हाथ अनाथ हो।।
अपनो दास करि जानि साहब। दरश दीनेउ आयकै।।
कीजै कंपा यहि दासपै। चलि भवन दरस दिखायकै।।
सोरठा–कंपा कीन जस मोहिं, तस मन्दिर पग दीजिये।।
विनय करौं प्रभु तोहिं, वेगि विलम्ब न कीजिये।।

कबीर वचन-चौपाई

कहैं कबीर तहाँ नहिं काजा। तुम परचण्ड बघेला राजा।।
काम क्रोध मद लोभ बड़ाई। रोम रोम अभिमान समाई।।
तुरी सवा लाख सँग तोरे। लाख सवा दो प्यादा दौरे।।
हस्ती चलत सहस तव संगा। निशिदिन भूले कामिनि रंगा।।
कंचन कलसा महल अटारी। कैसे शब्द गहै नर नारी।।
हम भिक्षुक जानै संसारा। कौन काज है तहाँ हमारा।।

राजा बीर सिंह वचन

तुम सतगुरू हौ दीन दयाला। कर्म वश हम अहैं विहाला।।
माया तिमिर नैन पट लागी। दर्शन पाय भये अनुरागी।।

भावार्थ :- जिस समय राजा सत्संग स्थल के निकट आया तो देखा कि कबीर जी पंथ्वी से सवा हाथ ऊपर बैठे दिखाई दिए। यह लीला देखकर राजा समझ गया कि परमात्मा आए हैं। चरणों में शीश रखा। घर चलने की विनती की। पहले तो मना किया, परंतु राजा के विशेष आग्रह करने पर कबीर परमेश्वर सहर्ष राजा के साथ चल दिए। राजा ने सम्मान के साथ सुंदर आसन पर बैठाए। राजा ने अपने गुरू ब्राह्मण को भी आदर के साथ कबीर जी के समान आसन दिया। ब्राह्मण से कहा कि आपका कबीर जी से किन बातों पर मतभेद है? वह प्रश्न अब करो। मैं दोनों का ज्ञान सुनकर निर्णय लूँगा। ब्राह्मण ने कहा कि कबीर जी तो ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जी को नाशवान

कहते हैं, यह बिल्कुल गलत है। किसी शास्त्र में प्रमाण नहीं है। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि आपकी देवी पुराण में तीसरे स्कंद में पढ़ें ऋषि जी! उस समय ब्राह्मण ने देवी पुराण निकाली, तीसरा स्कंद निकाला और पढ़ने लगा। परमात्मा की लीला वही जानता है। ब्राह्मण के सामने वही प्रकरण आया जिसमें लिखा था (श्री देवी पुराण सचित्र मोटा टाईप केवल हिन्दी, गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित पष्ठ 123 पर लिखा है) भगवान विष्णु ने अपनी माता देवी (दुर्गा) जी से कहा कि हे माता! तुम शुद्ध स्वरूपा हो। यह सारा संसार तुम से ही उद्भाषित है। मैं (विष्णु), ब्रह्मा तथा शिव तो नाशवान हैं। हमारा तो अविर्भाव (जन्म) तथा तिरोभाव अर्थात् मत्यु होती है। भगवान शिव बोले, हे माता! यदि ब्रह्मा तथा विष्णु का जन्म आपसे हुआ है तो मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर क्या तुम्हारी संतान नहीं हुआ? अर्थात् मेरे को जन्म देने वाली तुम ही हो।(लेख समाप्त)

श्री देवी पुराण में यह प्रकरण देखकर ब्राह्मण के चेहरे का रंग उतर गया, परंतु मन में सोचा कि मना कर देता हूँ कि ऐसा कहीं नहीं लिखा। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि ब्राह्मण जी! आप राजा की कचहरी (न्यायालय) में बैठे हो। आज यह निर्णय होकर रहेगा। किसी अन्य पंडित को बुलाकर यह स्पष्ट किया जाएगा। राजा बीर सिंह ने कहा कि ब्राह्मण! अब सत्य के अतिरिक्त कुछ भी नहीं सुनूंगा। यदि झूठ बोला तो अंजाम अच्छा नहीं होगा। ब्राह्मण ने कहा, राजन! यही लिखा है। ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जी नाशवान हैं। इनके माता-पिता हैं। यह चर्चा रानी मानकदेई भी सुन रही थी। राजा-रानी ने परमेश्वर कबीर जी से उपदेश लिया। ब्राह्मण ने भी परमात्मा से दीक्षा ली। सब कर्म-काण्ड त्याग दिया। परमात्मा ने राजा-रानी तथा पुरोहित को प्रथम मंत्र दिया।

पाठकों से निवेदन है कि कबीर सागर ग्रन्थ में ऊवाबाई भर रखी है। यह दशा कबीर पंथी ज्ञानहीनों ने की है जिन्होंने ब्राह्मण के स्थान पर नामदेव जी से वार्ता लिखी है। प्रत्यक्ष प्रमाण आप बीर सिंह बोध के पष्ठ 105 पर वाणी में देखें। राजा शिकार करने चला तो सवा लाख पैदल सेना चली, हाथी-घोड़े बहुत बाहर निकाले। भाठ लोग गीत गाते चले, बैंड-बाजे बजाते चले। विचार करें शिकार करने राजा के साथ 200 या 300 सैनिक जाते थे। यथार्थ कथा इस प्रकार है :-

''राजा को सतनाम देना''

राजा-रानी को प्रथम मंत्र देकर परमेश्वर कबीर जी चले गए। यह कहकर गए कि जिस समय आपकी प्रथम मंत्र की भक्ति पर्याप्त हो जाएगी, तब मैं आपको सतनाम का मंत्र दूँगा। वह दो अक्षर का होता है। परमेश्वर कबीर जी सत्यनाम देने के लिए आए। उस समय राजा बीर सिंह शिकार पर जाने के लिए तैयार था। गुरू जी के आने पर उनसे भी कहा कि आप भी हमारे साथ चलो। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि मेरे को साथ लेकर चलोगे तो आपको कोई शिकार नहीं मिलेगा। राजा नहीं माना और आग्रह करके हाथी पर बैठाकर अपने साथ ले चले। जंगल में एक स्थान पर पड़ाव डाला। शिकार के लिए अपने टैण्ट से 40 मील दूर जंगल में चले गए। गर्मी का मौसम था। दिन के 12 बजे राजा तथा सैनिकों और घोड़ों को प्यास लगी, प्यास से प्राण निकलने को हो गए। राजा ने इधर-उधर सैनिक दौड़ाकर जल की खोज की, परंतु व्यर्थ। राजा तथा सेना भूख-प्यास से तिलमिला उठी। कहने लगे कि कुछ ही समय का जीवन शेष है। तब परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि राजन! उस सामने वाले पहाड़ के ऊपर सुंदर बाग है। मीठे जल का सरोवर है। राजा तथा वजीरों ने कहा कि हम पहले आए थे। तब उस पहाड़ पर टैण्ट लगाया था। वहाँ कुछ नहीं है। एक वद्ध वजीर ने कहा कि साधु बोलै सहज सुभाव, संत का बोल्या व्यर्थ नहीं जाय। एक बार

चलकर देख लेते हैं। राजा ने दो घुड़सवार भेजे। उन्होंने देखकर सबको बुलाया कि आ जाओ! सुंदर बाग है, सरोवर है। सबने जाकर देखा तो फलों से लदपद वृक्ष तथा लताऐं थी, मीठे निर्मल जल का सरोवर था। सबने पानी पीया, फल खाए तथा घर के लिए भी गठरी बाँधकर घोड़ों पर रख ली। राजा तथा सेना का पुनर्जीवन था। सबने कबीर परमेश्वर जी के चरणों में शीश रखा तथा दीक्षा के लिए विनती की। परमात्मा ने कहा कि नगरी में चलो, वहाँ पर दीक्षा दूँगा। राजा काफिले सहित चला तो परमेश्वर कबीर जी से कहा कि हे सतगुरू! यहाँ सूखे पहाड़ों पर कभी जल नहीं देखा। न ऐसा बाग देखा, क्या बात है? मन को विश्वास नहीं हो रहा, स्वपन जैसा लग रहा है। कुछ दूरी पर जाकर देखा मुड़कर देखा तो न वहाँ बाग था, न जल का सरोवर। उबड़-खाबड़ पत्थर सूखे पड़े थे। राजा के आश्चर्य का ठिकाना नहीं था। परमेश्वर कबीर जी से पूछा, हे प्रभु! वह बाग तथा जल कहाँ से आया था? कहाँ चला गया? परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि यह बाग तथा जल सत्यलोक से आया था। वह हमारा परमधाम (सत्यलोक) है। घोड़ों पर फल-मेवा रखी थी, स्वपन भी नहीं कहा जा सकता था। यह लीला देखकर परमेश्वर से सर्व वजीरों-सैनिकों ने नाम लिया। राजा ने रानी को बताया तो वह भी आश्चर्य करने लगी। सर्व सैनिकों तथा मंत्रियों ने रानी को बताया, फल खाने को दिए तथा परमेश्वर कबीर जी का गुणगान किया। तब रानी को विश्वास हुआ। कबीर जी ने राजा से कहा कि आज के बाद शिकार नहीं करेगा। राजा ने प्रतिज्ञा ली कि भविष्य में कोई जीव हिंसा नहीं करूँगा। राजा बीर सिंह बघेल तथा रानी मानकदेई का पहला नाम शुद्ध किया तथा सत्यनाम दिया। परमेश्वर कबीर जी ने राजा तथा रानी से कहा कि आपको सारनाम भी मिलेगा। तब आपका कल्याण होगा। आपने प्रथम मंत्र तथा सत्यनाम का जाप अत्यधिक करना है। तब सारनाम मिलेगा। तब आपका मोक्ष होगा।

''राजा तथा रानी को प्रथम नाम सात मंत्र का दिया''

प्रमाण :- कबीर सागर के अध्याय ''बीर सिंह बोध'' के पृष्ठ 113 परः-

''कबीर वचन''

करि चौका तब नरियर मोरा। करि आरती भयो पुनि भोरा।।
तिनका तोरि पान लिखि दयऊ। रानी राय अपन करि लयऊ।।
बहुतक जीव पान मम पाये। ताघट पुरूष नाम सात आये।।
जो कोइ हमारा बीरा पावै। बहुरि न योनी संकट आवै।।
बीरा पावे भवते छूटे। बिनु बीरा यम धरि–धरि लूटे।।
सत्य कहूँ सुनु धर्मदासा। विनु बीरा पावै यम फांसा।।
बीरा पाय राय भये सुभागा। सत्य ज्ञान हृदय में जागा।।
काल जाल तब सबै पराना। जब राजा पायो परवाना।।
गदगद कंठ हरष मन बाढा। विनती करै राजा होय ठाढा।।
प्रेमाश्रु दोइ नयन ढरावै। प्रेम अधिकता वचन न आवै।।

राजा बीर सिंह का स्तुति करना

करूणारमन सद्गुरू अभय मुक्तिधामी नाम हो।।
पुलकित सादर प्रेम वश होय सुधरे सो जीवन काम हो।।

भवसिन्धु अति विकराल दारूण तासु तत्त्व बुझायऊ।।
अजर बीरा नाम दै मोहि। पुरूष दरश करायऊ।।
सोरठा–राय चरण गहे धाय, चलिये वहि लोक को।।
जहवाँ हंस रहाय, जरा मरण जेहि घर नहीं।।

कबीर वचन

आदि अंत जब नहीं निवासा। तब नहिं दूसर हते अवासा।।
तौन नाम राजा कहँ दीना। सकल जीव आपन करि लीना।।
राय श्रवण जब नाम सुनायी। तब प्रतीति राया जिव आयी।।
सत्यपुरूष सत्य है फूला। सत्य शब्द है जीवको मूला।।
सत्य द्वीप सत्य है लोका। नहीं शोक जहँ सदा अशोका।।
सत्यनाम जीव जो पावै। सोई जीव तेहि लोक समावै।।
ऐसो नाम सुहेला भाई। सुनतहिं काल जाल नशि जाई।।
सोई नाम राजा जो पाये। सत्य पुरूष दरशन चित लाये।।
साखी–ऐसो नाम है खसमका, राय सुरति करि लीन।
हर्षित पहुँचे पुरूष घर, यमहिं चुनौती दीन।।

उपरोक्त वाणी से स्पष्ट हुआ कि परमेश्वर कबीर ने राजा-रानी को दो चरणों में दीक्षा दी। फिर ज्ञान समझाया कि सार शब्द के बिना सत्यलोक प्राप्ति नहीं होगी। ये प्रेरणा पाकर राजा को सारनाम प्राप्ति की लगन लगी। सारनाम प्राप्ति के लिए प्रथम तथा द्वितीय मंत्र की सच्ची लगन से भक्ति की। एक दिन परमेश्वर कबीर जी राजा बीर सिंह बघेल के घर पर आए। आदरमान किया तथा आसन पर बैठाकर राजा-रानी ने परमेश्वर स्वरूप गुरू जी के चरण धोकर चरणामृत लिया तथा सारशब्द देने के लिए प्रार्थना की।

''राजा बीर सिंह वचन''

साहब शब्द सार मोहि दीजे। आपन करि प्रभु निजकै लीजे।।
औघट घाट बाट कहि दीन्हा। पाँजी भेद सकल हम चीन्हा।।
दयावंत विनती सुनु मोरी। हम पुरूषा परे नरक अघोरी।।
महा कुटिल बड़ कामी रहिया। ताते नरक अघोर बड़ परिया।।
ते जिव तारो अरज गुसाईं। विन्ती करों रंककी नाई।।
भरमें जीवनको मुकताऊ। सो भाषों प्रभु शब्द प्रभाऊ।।

कबीर वचन

अजर नाम चौका विस्तारो। जेहिते पुरूषा तरै तुम्हारो।।
गाँव तुम्हारे ब्राह्मणि जाती। धोती कीन्ही बहुतै भांती।।
बारी माहिं कपास लगायी। बहुत नेम से काति बनायी।।
सो धोती तुम राजा लाऊ। पाछे चौका जुगुति बनाऊ।।

राजा बीर सिंह वचन

तब राजा अस विन्ती कीन्हा। कैसे जान्यो को कहि दीन्हा।।
ब्राह्मणि मंदिर नगर रहायी। ताकी सुधि हमहूँ नहिं पायी।।

कबीर वचन

तब राजा आपै चलि गयऊ। साथ एक नेगीको लयऊ।।
पूछत ब्राह्मणि राजा गयऊ। वही पुरी में जाइ ठाढ रहेऊ।।
राजा आवन सुनी जब सोई। आदर देन चली तब ओई।।
माई पुत्री आगे चलि आई। दधि अछत औ लुटिया लाई।।

ब्राह्मणी वचन

ब्राह्मणि कहै दोई कर जोरी। राजा सुनिये विन्ती मोरी।।
भाग मोर हम दर्शन पावा। मैं बलिहारी यहाँ सिधावा।।

राजा बीर सिंह वचन

राजा कह ब्राह्मणी से बाता। तुव घर धोती एक रहाता।।
सो धोती हमको देहू। गाँव ठौर तुम हमसे लेहू।।
एतो वचन जो राखु हमारा। धोती देइ करू काज निबारा।।

ब्राह्मणी वचन

ब्राह्मणी कहे सुनो हो राऊ। धोती सुधि तुहि कौन बताऊ।।

राजा बीर सिंह वचन

हम घर सतगुरू कहि समझायी। धोती सुधि हम गुरूपै पायी।।

कबीर वचन धर्मदास प्रति

वचन सुनत तेहि सुधि सो भूली। मन पछताय विनय मुख खोली।।

ब्राह्मणी वचन

छन्द–माइ पुत्री करह विन्ती धोती नाथ अनाथ की।।
गाव मुल्क नहिं चाहीं मोहि धोती है जगन्नाथकी।।
हम दीन हैं आधीन भिक्षुक शीश बरू मम लीजिये।।
करि जोड़ि विन्ती मैं करूं जस चाहिए अब कीजिये।।

कबीर वचन

सोरठा–राजा घरहिं सिधाइ, टेके चरण तहँ खसम कर।।
कहे उत्तर समुझाय, धोती मांगे न दीनेऊ।।

राजा बीर सिंह वचन-चौपाई

साहिब ब्राह्मणी लग हम गयऊ। धोती माँगत हम नहिं पयऊ।।
कहे धोती मोहि देइ न जायी। जगन्नाथ हेतु धोती बनायी।।
कहे बरू शीस लेहु तुम राजा। धोती देत होय व्रत अकाजा।।

कबीर वचन

एती सुनतै हम विहँसाये। राजा कहँ एक वचन सुनाये।।
छड़ीदार दोउ देउ पठायी। ब्राह्मणी संग क्षेत्रहीं जायी।।
यहि प्रतीति लेहु तुम जाका। हम विन धोती लेइ को ताका।।
राजा छड़ीदार पठवाये। ब्राह्मणी संग क्षेत्र चलि जाये।।
नरियर लेइ ब्राह्मणी हाथा। करि अस्नान परसि जगन्नाथा।।
लै धोती जब परस्यो जायी। तब धोती बाहर परि आयी।।

ब्राह्मणी वचन

अब यह धोती काम न आयो। धोती फेरि कहो कस लायो।।

जगन्नाथ वचन

जाके व्रत तुम काति बनायी। सो घर बैठे माँगि पठायी।।
अब तुम अपने घर लै जाहू। लै धोती दै डालो काहू।।

ब्राह्मणी वचन

तबै ब्राह्मणी कहै कर जोरी। ठाकुर सुनियो विन्ती मोरी।।
राय बीरसिंह मो घर आये। धोती माँगि कबीर पठाये।।
उनके मांगे मैं नहिं दीना। हम कहि जगन्नाथ व्रत कीना।।
तब राजा अपने घर गयऊ। हम लै धोती इहां सिधयऊ।।

जगन्नाथ वचन

जगन्नाथ तब कहि समझायो। तुम अपनी भल भक्ति नशायो।।
उनके मांगे धोती देती। आपन जनम सुफल कर लेती।।
जगन्नाथ काशी मांही निवाजा। वाके चरणें धर सब साजा।।

कबीर वचन

जगन्नाथ जस कहि समझायी। छड़ीदार तब लिये अर्थायी।।
छड़ीदार अरू ब्राह्मणी आये। जहाँ राय अरू हम बैठाये।।
ब्राह्मणी ले धोती धर दीनी। दोय कर जोरि सो बिन्ती कीनी।।

ब्राह्मणी वचन

हम अजान कछु जान न जायी। धोती नहिं दीनी मम पायी।।
तुम हो खुद समर्थ भगवाना। मैं मूर्ख ना तोकूँ पहचाना।।
अपराध छमा करो गुरू राया। अब हम कूँ तुम परिचय पाया।।

छड़ीदार वचन

छड़ीदार तब शीस नवाये। राजा से उठि विन्ती लाये।।
जगन्नाथ धोती नहिं लीना। मंडप बाहर धोती कीना।।
जगन्नाथ अस वचन सुनावा। यह धोती हम काम न आवा।।
जब राजा से मांग पठई। कस ना धोती दीनेउ माई।।
जब हम मांगा तब ना दियऊ। अब कस देन यहाँ चलि अयऊ।।

कबीर वचन

छड़ीदार उत्तर जब कहेऊ। तब मम चरण राय शिर लयऊ।।

राजा बीर सिंह वचन

सांचे सतगुरू हैं तुव बचना। सत्य लोककी सत्य है रचना।।
अब मोहि सिखापन दीजै। हम पुरूषा आपन करि लीजै।।
जाते अजर अमर पद पाई। सोई विधि तुम करो गुसांई।।

उपरोक्त वाणियों का भावार्थ :- एक दिन परमेश्वर कबीर जी अपने शिष्य बीर देव सिंह बघेल के महल में गए। राजा ने परमेश्वर कबीर जी का अत्यधिक आदर किया। सारशब्द देने की प्रार्थना की। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि आपके काशी शहर में आपकी गुरू बहन ब्राह्मणी (चंद्रप्रभा

नाम की) रहती है। उसने अपने घर के आँगन में कपास बीजी, उसको गंगा जल से सींचा। पकने के पश्चात् कपास निकालकर काता। फिर अपने हाथों से एक धोती बुनी है। उस धोती को राजा आप किसी कीमत पर लाओ, तब आपको सार शब्द मिलेगा। राजा को सार शब्द बिना जीवन अधूरा लग रहा था। इसलिए धोती लेने चल पड़ा। नौकर पहले ही विधवा ब्राह्मणी के घर पहुँच गए और राजा के आने की सूचना दी। चन्द्रप्रभा तथा उसकी एक बेटी थी। दोनों डर गई कि हमसे क्या गलती हो गई? राजा पहुँचा तो फूलों की माला से स्वागत किया। राजा ने धोती देने के लिए कहा तो बहन चन्द्रप्रभा ने कहा, हे राजन! यह धोती मैंने जगन्नाथ के लिए श्रद्धा से तैयार की है। मैं उनकी अमानत उनके चरणों में अर्पित करूँगी। राजा ने कहा कि बहन! मेरा जीवन सारशब्द के बिना अधूरा रह जाएगा। इस धोती (साड़ी) के बिना मुझे गुरू जी सार शब्द नहीं देंगे। हे चन्द्रप्रभा! मैं आपको पाँच-सात गाँव दे दूँगा। आप धोती दे दो। ब्राह्मणी ने कहा कि आप राजा हैं, हम माँ-बेटी की गर्दन काट लो, परंतु धोती के लिए क्षमा करो, नहीं देंगे। राजा ने कहा ठीक है बहन, तेरी इच्छा। राजा उदास मन से लौटा तो परमेश्वर कबीर जी ने पूछा कि धोती ले आए। राजा ने सर्व वार्ता बताई तो कबीर जी ने कहा कि आप चन्द्रप्रभा के साथ दो सिपाही भेज दो। वह बहन सकुशल धोती चढ़ाकर लौटेगी तो मैं आपको बिना धोती के ही सार शब्द दे दूँगा। राजा की खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। जिस दिन ब्राह्मणी ने जगन्नाथ जी के लिए प्रस्थान किया तो दो सिपाही सुरक्षा गार्ड के रूप में राजा ने भेजे। जगन्नाथ मंदिर में सुबह स्नान करके ब्राह्मणी ने वह धोती मंदिर में अर्पित कर दी तथा कहा, हे जगन्नाथ! आपकी दासी की तुच्छ भेंट स्वीकार करें। उस समय वे सिपाही (छड़ीदार=डण्डे वाले व्यक्ति) भी मंदिर में उपस्थित थे। वह धोती वहाँ से उड़कर मंदिर के आँगन में गिरी और आकाशवाणी हुई कि हे मूर्ख! यह धोती मैंने राजा बीर सिंह द्वारा काशी में मँगाई थी। वहाँ तो धोती भेंट नहीं की, यहाँ किसलिए लाई है? ले जा वहीं पर। परमात्मा काशी में बैठा है। यह आकाशवाणी तथा धोती आँगन में गिरती दोनों सिपाहियों ने भी देखी तथा सुनी। उस धोती को उठाकर ब्राह्मणी बहन रोती हुई तथा अपनी अज्ञानता को कोसती हुई काशी में आ गई। पहले परमेश्वर कबीर जी की झोंपड़ी में गई। पता चला कि परमेश्वर कबीर जी राजा बीर सिंह के राज दरबार में गए। फिर सब राजा के महल में गए। बहन चन्द्रप्रभा ने अपनी गलती की क्षमा याचना की तथा कहा कि परमेश्वर! ज्ञान नहीं था। आप स्वयं जगन्नाथ काशी में लीला करने आए हो। परमेश्वर कबीर जी ने पूछा कि धोती साथ किसलिए लाई है? तब जो घटना जगन्नाथ के मंदिर में घटी थी, सब विस्तार से बताई। राजा ने सिपाहियों से इस बात का साक्ष्य माँगा तो दोनों ने बताया कि जो बहन बता रही है, यह सत्य है। हमने अपनी आँखों देखा, कानों सुना। तब राजा भी परमेश्वर के चरणों में गिर गया तथा कहा, हे प्रभु! आप तो स्वयं परमेश्वर हो। मैं तो आपको केवल एक सिद्ध पुरूष गुरू मानता था। आज विश्वास हुआ है। अब तक मैं सार शब्द प्राप्ति के योग्य नहीं था। यही बात बहन चन्द्रप्रभा तथा उसकी बेटी ने कही। पहले उनका नाम शुद्ध किया, फिर कुछ समय उपरांत सार शब्द दिया, कल्याण किया।

सारांश :- इस प्रसंग से सिद्ध हुआ कि परमेश्वर कबीर जी दीक्षा क्रम तीन चरणों में पूरा करते थे। एक बात यह भी सिद्ध हुई कि जब तक हम गुरू जी को परमात्मा नहीं मानेंगे तो मोक्ष के अधिकारी नहीं बन सकते। यह बीर सिंह बघेल काशी नरेश की यथार्थ कथा है। इसी प्रकार बीर सिंह बोध में बिजली खाँ पठान की कथा भी लिखी है। वह पूर्ण रूप से गलत है। यथार्थ कथा इस प्रकार है :-

''बिजली खाँ पठान मगहर रियासत को शरण में लेना''

एक बिजली खान पठान मगहर रियासत नवाब था। मगहर नगर के साथ से एक आमी नदी बहती थी। वह भगवान शंकर जी के शॉप से सूख गई थी। भगवान शिव का दूसरा शॉप था कि जो मगहर में प्राण त्यागेगा, वह गधे की योनि को प्राप्त करेगा, फिर नरक में जाएगा। जो काशी में मरेगा, वह बैकुण्ठ में जाएगा।

एक समय मगहर नगर के आसपास यानि मगहर रियासत में दुर्भिक्ष पड़ा। त्राहि-त्राहि मच गई। सर्व जन्त्र-मंत्र, पाठ, हवन कर-करा लिए, परंतु व्यर्थ रहा। मगहर नगर उत्तर प्रदेश में गोरखपुर (गीता प्रैस वाला) से 25 कि.मी. दूर है। मगहर में हिन्दू तथा मुसलमान आधे-आधे हैं। किसी ने राजा को बताया कि काशी नगर में एक कबीर नाम के महात्मा बड़े सिद्ध पुरूष हैं। यदि वे आशीर्वाद दे देंगे तो वर्षा निश्चित रूप से हो जाएगी। नवाब बिजली खान पठान ने एक पत्र राजा बीर सिंह के नाम लिखा और अपना सूखा पड़ने का दुःख बताया और लिखा कि सुना है कबीर पीर आपके नगर में रहता है। कपा उसे भेजें, हम दुखी हो गए हैं। राजा बीर सिंह बघेल परमेश्वर कबीर जी का शिष्य हो चुका था। वह सब मर्यादा जानता था। बीर सिंह ने पत्र पढ़कर बिजली खाँ को पत्र लिखा कि हे खान जी! साधु-संतों को आदेश देकर नहीं बुलाया जाता। यदि आदेश से बुला भी लिया, उन्होंने आशीर्वाद नहीं दिया, फिर उस जाने और बुलाने का क्या औचित्य हुआ? यह पत्र पढ़कर नवाब स्वयं अपने अंगरक्षकों के साथ गए। कबीर परमेश्वर जी से अपनी दुख भरी कहानी सुनाई। उस समय बीर सिंह बघेल भी साथ था। कबीर परमेश्वर घोड़े पर बैठकर नवाब के साथ चल दिए। गोरखनाथ जी सिद्ध पुरूष हैं। वे संसार छोड़कर जा चुके हैं। सिद्ध पुरूषों के पास कुछ वर्षों तक यह शक्ति रहती है कि वे जब चाहें पथ्वी पर प्रकट हो जाते हैं। अपने पंथ का विस्तार फिर भी करते रहते हैं। जब गोरखनाथ जी को पता चला कि तेरी तपस्थली गोरखपुर के पास कोई संत वर्षा कराने के उद्देश्य से आ रहा है तो मगहर नगर से एक मील अर्थात् लगभग 1½ कि.मी. दूर एक सूखी जोहड़ी (तलैया) के पास वक्ष के नीचे बैठ गया। परमेश्वर कबीर जी को गोरखनाथ ने पहले देखा था जब परमेश्वर 10-12 वर्ष की लीलामय आयु में थे। स्वामी रामानंद जी की उपस्थिति में कबीर जी तथा गोरखनाथ जी की गोष्ठी हुई थी। गोरखनाथ ने परमेश्वर कबीर जी से हार मानी थी, परंतु अहंकार शेष था। परमेश्वर कबीर जी को गोरखनाथ जी ने पहचाना नहीं। उस दिन परमेश्वर ने गोरखनाथ जी को देखा और जाना कि गोरखनाथ किस उद्देश्य से बैठे हैं?

परमेश्वर कबीर जी तो अंतर्यामी हैं। उनको समझते देर नहीं लगी। परमेश्वर घोड़ा रोककर नीचे उतरे और नवाब से कहा कि हे बिजली खान! आप काशी गए, यह देखो महात्मा जी बैठे हैं। ये तो जो चाहें कर सकते हैं। इनसे प्रार्थना करो। नवाब बिजली खान ने सिद्ध पुरूष से वर्षा कराने की प्रार्थना की। गोरखनाथ जी उठे और अपने त्रिशूल को उस तलैया (छोटे जोहड़=जोहड़ी) के बीच में जमीन में गाड़ा और निकाल लिया। पानी का फव्वारा निकला। तलैया भरने के पश्चात् रूक गया। कबीर जी ने कहा हे बिजली खान! बन गया काम, महात्मा का धन्यवाद करो। बिजली खान ने कहा, हे महात्मा जी! इस जल से तो एक समय पशु भी तप्त नहीं हो सकते। वर्षा कराने की कपा करें। गोरखनाथ जी क्रोध से बोले कि इस क्षेत्र के व्यक्तियों के भाग्य में दो वर्ष तक बारिश होने का संयोग नहीं है। पाप कर्म बढ़ा है, बारिश कैसे हो सकती है? यदि किसी में शक्ति है तो

वर्षा करा के दिखा दे। उस समय गोरखनाथ जी कबीर जी पर व्यंग्य कर रहे थे। कबीर जी ने नवाब तथा साथ आए सैनिकों तथा गाँव से आए व्यक्ति जो नवाब को देखकर उसी तलैया पर चले गए थे, को कहा, मैं यहाँ बैठकर परमात्मा में धुन लगाता हूँ। आप घर को जाओ, यदि परमेश्वर ने सुन ली तो आधे घण्टे में वर्षा हो जाएगी। यह कहकर परमेश्वर कबीर जी गोरखनाथ की तलैया से 200 फुट की दूरी पर बैठ गए। नवाब तथा प्रजा कैसे गाँव जा सकती थी? उनके पैर नहीं चल रहे थे। 10 मिनट के अंदर ही जोर की घटा उठी, मूसलाधार वर्षा हुई। सब सरोवर भर गए, खेतों में पानी-पानी हो गया। यह लीला देखकर बिजली खान पठान कबीर जी को प्रार्थना करके गाँव ले गए। स्वयं नाम लिया, पूरे नगर के हिन्दु तथा मुसलमानों ने दीक्षा ली। उस समय संतान की बहुत कमी होती थी। एक मुसलमान के घर कोई संतान नहीं थी। आयु 70 वर्ष थी। पति-पत्नी ने कबीर परमात्मा से रो-रोकर पुत्र की माँग की। परमेश्वर जी ने आशीर्वाद दिया कि दसवें महीने पुत्र हो जाएगा। ऐसा ही हुआ। वर्तमान में उस व्यक्ति के परिवार का एक पूरा मौहल्ला (कॉलोनी) बना है। उसका नाम ''मौहल्ला कबीर करम'' है। कबीर करम का अर्थ है ''कबीर कंपा''। यह दास मगहर में संगत को वह पवित्र यादगार दिखाने गया था। तीन बार वहाँ जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वहाँ के नागरिक कहते हैं कि परमेश्वर कबीर जी की कंपा से नगरी सुख से बस रही है। यहाँ हिन्दु-मुसलमान लगभग आधे-आधे हैं। कभी भी धर्म के नाम पर आपस में झगड़ा नहीं हुआ है। देश के अन्य शहरों में कई बार हिंसा होती थी, परंतु हमारे गाँव में भाईचारा कायम रहा है।

''नाम भक्ति की कमाई करना अनिवार्य''

अध्याय ''बीर सिंह बोध'' पंष्ठ 123 पर :-

राजा बीर सिंह की एक छोटी रानी सुंदरदेई थी। उसने भी परमेश्वर कबीर जी से दीक्षा ले रखी थी। उसने सत्संग बहुत सुने थे। विश्वास कम था, नाम की कमाई यानि साधना नहीं करती थी। जब रानी का अंतिम समय आया तो यम के दूत राजभवन में प्रवेश कर गए। फिर यमदूत रानी के शरीर में प्रवेश कर गए और अंतिम श्वांस का इंतजार करने लगे। उस समय रानी सुंदरदेई के शरीर में बेचैनी हो गई। यमदूत दिखाई देने लगे। राजा ने रानी से पूछा कि क्या बात है? रानी ने कहा कि मुझे राजपाट, महल, आभूषण, कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा है। रानी ने कहा कि साधु-भक्तों को बुलाकर परमात्मा की चर्चा कराओ। साधु तथा भक्त आकर परमात्मा की चर्चा तथा भक्ति करने लगे। उससे कोई लाभ नहीं हुआ। रानी के शरीर में कष्ट और बढ़ गया। अर्ध-अर्ध यानि आधा श्वांस चलने लगा। श्वांस खींच-खींचकर आने-जाने लगा। हृदय कमल को त्यागकर जीव भयभीत होकर त्रिकुटी की ओर भागा। यम दूतों ने चारों ओर से घेर लिया। चारों यमदूतों ने जीव को घेरकर कहा कि आप चलो! हरि (प्रभु) ने तुम्हें बुलाया है। तब रानी के जीव को सत्संग वचन याद आए। उसने यमदूतों से कहा कि हे बटपार! हे जालिमों! तुम यहाँ कैसे आ गए? हमारा सतगुरू हमारा मालिक है। आप हमें नहीं ले जा सकते। मेरे सतगुरू धनी (मालिक) ने मुझे नाम दिया है। मेरे गुरूजी आएंगे तो मैं जाऊँगी। यह बात सुनकर यम के दूत बोले कि यदि आपका कोई खसम (धनी) है तो उसको बुलाओ, नहीं तो हमारे साथ परमात्मा के दरबार में चलो। जीव ने कहा कि :-

धरनी (पंथ्वी) आकाश से नगर नियारा। तहाँ निवाजै धनी हमारा।।

अगम शब्द जब भाखै नाऊं। तब यम जीव के निकट नहीं आऊं।।

भावार्थ :- पहले तो रानी को विश्वास नहीं हो रहा था कि जो सतगुरू जी सत्संग में ज्ञान सुना रहे हैं, वह सत्य है। वह सोचती थी कि यह केवल कहानी है क्योंकि सब नौकर-नौकरानी आज्ञा मिलते ही दौड़े आते थे। मनमर्जी का खाना खाती थी, सुंदर वस्त्र, आभूषण पहनती थी। उसने सोचा था कि ऐसे ही आनन्द बना रहेगा। यह तो पूर्व जन्म की बैटरी चार्ज थी। वर्तमान में चार्जर मिला (नाम मिला) तो चालू नहीं किया यानि साधना नहीं की। जब बैटरी की चार्जिंग समाप्त हो जाती है, बैटरी डाउन हो जाती है तो सर्व सुविधाऐं बंद हो जाती हैं। फिर न पंखा चलता है, न बल्ब जगता है। बटन दबाते रहो, कोई क्रिया नहीं होती। इसी प्रकार जीव का पूर्व जन्म की भक्ति का धन यानि चार्जिंग समाप्त हो जाती है तो सर्व सुविधाऐं छीन ली जाती हैं। जीव को नरक में डाल दिया जाता है, तब उसको अक्ल आती है। उस समय वक्त हाथ से निकल चुका होता है। केवल पश्चाताप और रोना शेष रह जाता है। रानी सुंदरदेई ने सत्संग सुन रखा था। पूर्ण सतगुरू से दीक्षा ले रखी थी। नाम की कमाई नहीं की थी। वह गुरूद्रोही नहीं हुई थी। गुरू निंदा नहीं करती थी। रानी ने सतगुरू को याद किया कि हे सतगुरू! हे मेरे धनी! मेरे को यमदूतों ने घेर रखा है। मुझ दासी को छुड़ावो। मैंने आपकी दीक्षा ले रखी है। आज मुझे पता चला कि ऐसी आपत्ति में न पति, न पत्नी, ने बेटा-बेटी, भाई-बहन, राजा-प्रजा कोई सहायक नहीं होता। रानी के जीव ने हृदय से सतगुरू को पुकारा। तुरंत सतगुरू कबीर जी वहाँ उपस्थित हुए। रानी ने दौड़कर सतगुरू देव जी के चरण लिए। उसी समय यमदूत भागकर हरि यानि धर्मराज के पास गए और बताया कि उसका सतगुरू आया तो वहाँ पर प्रकाश हो गया। जीव ने सत सुकत नाम जपा था। उसको इतना ही याद था। इस कारण से उसको यमदूतों से छुड़वाया तथा पुनः जीवन बढ़ाया। तब रानी ने दिल से भक्ति की। फिर सतगुरू कबीर जी ने पुनः सतनाम, सारनाम दिया, उसकी कमाई की। संसार असार दिखाई देने लगा। राज, धन, परिवार पराया दिखाई दे रहा था। जाने का समय निकट लग रहा था। इस कारण से रानी ने तन-मन-धन सतगुरू चरणों में समर्पित करके भक्ति की तो सत्यलोक में गई। वहाँ परमेश्वर (सत्य पुरूष) ने रानी के जीव के सामने अपने ही दूसरे रूप सतगुरू से प्रश्न किया कि हे कड़िहार! (तारणहार) मेरे जीव को यमदूतों ने कैसे रोक लिया? सतगुरू रूप में कबीर जी ने कहा कि हे परमेश्वर! इसने दीक्षा लेकर भक्ति नहीं की। इस कारण से इसको यमदूतों ने घेर लिया था। मैंने छुड़वाया। परमेश्वर कबीर जी ने जीव से कहा कि आपने भक्ति क्यों नहीं की? सत्यलोक में कैसे आ गई?

सिर नीचा करके जीव ने कहा कि पहले मुझे विश्वास नहीं था। फिर यमदूतों की यातना देखकर मुझे आपकी याद आई। आपका ज्ञान सत्य लगा। आपको पुकारा। आपने मेरी रक्षा की। फिर मेरे को वापिस जीवन दिया गया। तब मैंने दिलोजान से आपकी भक्ति की। पूर्ण दीक्षा प्राप्त करके आपकी ही कपा से गुरू जी के सहयोग से मैं यहाँ आपके चरणों में पहुँच पाई हूँ। सत्यलोक में जाकर भक्त अन्य भक्तों के पास भेज दिया जाता है। सुंदर अमर शरीर मिलता है। बहुत बड़ा आवास महल मिलता है। विमान आँगन में खड़ा है। सिद्धियां आदेश का इंतजार करती हैं। तुरंत विद्युत की तरह सक्रिय होती हैं जैसे बिजली का बटन (Switch) दबाते ही बिजली से चलने वाला यंत्र तुरंत कार्य करने लगता है। ऐसे वहाँ पर वचन का बटन (Switch) है। जो वस्तु चाहिए बोलिये। वस्तु-पदार्थ आपके पास उपस्थित होगा। जैसे भोजन खाने की इच्छा होते ही आपके भोजनस्थल पर गतिविधि प्रारम्भ हो जाएंगी, थाली-गिलास रखे जाएंगे। कुछ देर में खाने की इच्छा बनी तो

सिद्धि से उठकर रसोई में रखे जाएंगे। मिनट पश्चात् इच्छा हुई तो भी उसी समय व्यवस्था हो जाएगी। घूमने की इच्छा हुई तो विमान में गतिविधि महसूस होगी। विमान के निकट जाते ही द्वार खुल जाएगा। विमान स्टार्ट हो जाएगा। जहाँ जिस द्वीप में जाने की इच्छा होगी, विचार करने पर विमान उसी ओर उड़ चलेगा। इच्छा करते ही ताजे-ताजे फल वक्षों से तोड़कर लाकर आपके समक्ष रख दिए जाएंगे। सत्यलोक की नकल यह काल लोक है। इसी तरह स्त्री-पुरूष परिवार हैं। सत्यलोक में दो तरह से संतानों की उत्पत्ति होती है। शब्द से तथा मैथुन से। वह हंस पर निर्भर करता है। वचन से संतानोपत्ति वाला क्षेत्र सतपुरूष के सिंहासन के चारों ओर है। नर-नारी से परिवार वाला क्षेत्र उसके बाद में है। वचन से संतान उत्पन्न करने वाले केवल नर ही उत्पन्न करते हैं। सत्यलोक में वद्धावस्था नहीं है। नर-नारी वाले क्षेत्र में लड़के तथा लड़कियां दोनों उत्पन्न करते हैं। विवाह करते हैं केवल वचन से। जो बच्चे उत्पन्न होते हैं, वे काल लोक से मुक्त होकर गए जीव जन्म लेते हैं। फिर कभी नहीं मरते, न वद्ध होते। जो सत्यलोक में मुक्त होकर जाते हैं, उनको सर्वप्रथम सत्यपुरूष जी के दर्शन कराए जाते हैं। उस समय उसका वही स्वरूप रहता है जैसा पथ्वी से आता है, परंतु वद्ध नीचे से गया तो वहाँ सतपुरूष के सामने उसी अवस्था व स्वरूप में जाता है। उसका प्रकाश सोलह सूर्यों के प्रकाश जितना हो जाता है। उसके पश्चात् उसको उस स्थान पर भेजा जाता है जो सबसे भिन्न है। वहाँ जाते ही उसका स्वरूप तो वैसा ही रहता है, लेकिन उसके शरीर का प्रकाश सोलह सूर्यों जैसा हो जाता है, परंतु यदि वद्ध नीचे से गया है तो युवा अवस्था हो जाती है। जवान है तो जवान ही रहता है, बालक है तो बालक ही रहता है। वहाँ पर कुछ को सत्य पुरूष के वचन से स्त्री-पुरूष का शरीर मिलता है। कुछ बीज रूप में सतपुरूष द्वारा बनाए जाते हैं जिनका फिर एक बार किसी के घर सत्यलोक में जन्म होगा, परिवार बनेगा। उस स्थान पर वे हंस एक बार जन्म लेंगे जो काल लोक तथा अक्षर लोक से मुक्त होकर जाते हैं। एकान्त स्थान पर रखे जाते हैं। वे दोनों क्षेत्रों में जन्म लेते हैं। (वचन से उत्पन्न होने वाले तथा स्त्री-पुरूष से जन्म लेने वाले में) स्त्री-पुरूष से उत्पत्ति की औसत अधिक होती है। यह औसत 10/90 होती है। यह 10% वचन से उत्पत्ति, 90% विवाह रीति से उत्पत्ति होती है।

सत्यलोक में स्त्री तथा नर के शरीर का प्रकाश सोलह सूर्यों के प्रकाश के समान होता है। मीनी सतलोक, मानसरोवर पहले हैं। वहाँ दोनों के शरीर का प्रकाश चार सूर्यों के समान होता है। फिर आगे जाते हैं। जब परब्रह्म के लोक में बने अष्ट कमल के पास पहुँचते हैं तो हंस तथा हंसनी यानि नर-नारी के शरीर का प्रकाश 12 सूर्यों के प्रकाश के समान हो जाता है। फिर सत्यलोक में बनी भंवर गुफा में प्रत्येक के शरीर का प्रकाश सोलह सूर्यों के समान हो जाता है।

प्रमाण कबीर सागर अध्याय ''मोहम्मद बोध'' पष्ठ 20, 21 तथा 22 पर दश मुकामी रेखताः-

''दश मुकामी रेखता''

पष्ठ 21 से कुछ अंश लिखता हूँ :-

भया आनन्द फन्द सब छोड़िया पहुँचा जहाँ सत्यलोक मेरा।।
{हंसनी (नारी रूप पुण्यात्माऐं) हंस (नर रूप पुण्यात्माऐं)}
हंसनी हंस सब गाय बजाय के साजि के कलश मोहे लेन आए।।
युगन युगन के बिछुड़े मिले तुम आय कै प्रेम करि अंग से अंग लाए।।
पुरूष दर्श जब दीन्हा हंस को तपत बहु जन्म की तब नशाये।।

पलिट कर रूप जब एक सा कीन्हा मानो तब भानु षोडश (16) उगाये।।
पहुप के दीप पयूष (अमृत) भोजन करें शब्द की देह सब हंस पाई।।
पुष्प का सेहरा हंस और हंसनी सच्चिदानंद सिर छत्र छाए।।
दीपैं बहु दामिनी दमक बहु भांति की जहाँ घन शब्द को घमोड़ लाई।।
लगे जहाँ बरसने घन घोर कै उठत तहाँ शब्द धुनि अति सोहाई।।
सुन्न सोहैं हंस–हंसनी युत्थ (जोड़े–झुण्ड) है एकही नूर एक रंग रागै।।
करत बिहार (सैर) मन भावनी मुक्ति में कर्म और भ्रम सब दूर भागे।।
रंक और भूप (राजा) कोई परख आवै नहीं करत कोलाहल बहुत पागे।।
काम और क्रोध मदलोभ अभिमान सब छाड़ि पाखण्ड सत शब्द लागे।।
पुरूष के बदन (शरीर) कौन महिमा कहूँ जगत में उपमा कछु नाहीं पायी।।
चन्द और सूर (सूर्य) गण ज्योति लागै नहीं एक ही नख (नाखुन) प्रकाश भाई।।
परवाना जिन नाद वंश का पाइया पहुँचिया पुरूष के लोक जायी।।
कह कबीर यही भांति सो पाइहो सत्य पुरूष की राह सो प्रकट गायी।।

भावार्थ :- इस अमृतवाणी में स्पष्ट है कि परमेश्वर कबीर जी सतगुरू रूप में पृथ्वी से धर्मदास जी को लेकर सत्यलोक को चले तो रास्ते में 9 स्थान आए जैसे नासूत, मलकूत यह फारसी में शब्द है। इन सात आसमानों के पार अचिन्त, विष्णु लोक आदि के पार जब सत्यलोक में पहुँचा तो धर्मदास जी कह रहे हैं कि मेरे को सत्कार के साथ लेने को सत्यलोक के हंस (नर) हंसनी (नारी) गाते-नाचते ढ़ोल आदि साज-बाज बजाते हुए स्त्रियां सिर के ऊपर कलश रखकर लेने आए। उनके शरीर का प्रकाश सोलह सूर्यों के समान था। मेरे शरीर का प्रकाश भी उनके शरीर के प्रकाश के समान 16 सूर्यों के समान हो गया।

जो पृथ्वी लोक से मोक्ष प्राप्त करके हंस जाता है। वह पुहप द्वीप में ले जाया जाता है। वहाँ सर्व सुख है, वह सत्यलोक का हिस्सा है। परंतु सर्व प्रथम नीचे से गए मोक्ष प्राप्त जीव को पोहप द्वीप में रखा जाता है। यहाँ का दृश्य बताया जा रहा है। यहाँ से इसका जन्म अन्य स्थानों में परिवार में होता है। इसके पश्चात् उस स्थान का वर्णन है जहाँ नर-नारी से उत्पत्ति होकर परिवार बनता है। जहाँ पर नर-नारी के जोड़ों के समूह के समूह सुख से बैठे बातें करते हैं। बादल गरजते हैं, फव्वार पड़ती हैं। यह भिन्न स्थान है जहाँ सतलोक निवासी पिकनिक के लिए जाते हैं। कुछ स्थान ऐसे हैं जहाँ न बादल दिखाई देता है, वर्षा हो रही होती है।

अब पढ़ें वह वाणी जिसमें रानी सुंदरदेई को यमदूत पकड़ने के लिए घेर लेते हैं, वह कैसे बचती है?

''रानी सुंदरदेई की यमदूतों से रक्षा''

सुन्दरदेइ रानी कर नाऊ (नाम)। पाये शब्द न प्रीति लगाऊ।।
शब्द पाइ गुरू प्रीति न लागी। बिना प्रीति सतभक्ति न जागी।।
पाय शब्द नहिं कीन कमाई। ताते यम बहुते दुख लाई।।
चारि दूत हरि तबहि बुलावा। तासे सकल मता समुझावा।।
नगर गहो जाय नृप रानी। तहँवा जाय बेगि तुम आनी।।
तब यमदूत गए राजा गाँऊ (गाँव)। जाय ठाढ मन्दिर में भयऊ।।

घट घट यम देखा व्योहारा। काया पैठि सो कीन बिचारा।।
तब रानी के बेदन भयऊ। व्याकुल करी दूत चित रहऊ।।
राजा बूझे रानी बाता। कहे रानी मोहि कुछ नाहि सुहाता।।
एक बात सुनिये मम राई। साधु संत सब देहु बुलाई।।
राजा सकल साधु बुलवाये। सतगुरू भक्ति करो चित लाये।।
बढ़ि विथा रानी की काया। व्याकुल जीव बहुत दुःख पाया।।
तबहीं यम जिव घेरे आयी। अरध अरध स्वासा चलि धायी।।
भागि हंस त्रिकुटी में गयऊ। तहवाँ यम जिव घेरे लयऊ।।
चारो जीव यम घेरे लायी। काहे बल तुम बचिहो जायी।।
चलो हंस हरि कीन बुलाऊ। तब हंसा यक वचन सुनाऊ।।
यहाँ कस आये बटपारा। हमरे हैं समरथ रखवारा।।
हम घर गुरू खसम यक आही। सो मोहि नाम दीन बतलाही।।
दूत भूत यम तोहि चिन्हाई। आज्ञा देइ खसम घर जाई।।
जे साहेब मोहि नाम सुनाया। सो आवे गुरू जाय लिवाया।।

साखी–तबही यम अस बोलिया, कहाँ है धनी तुम्हार।।
ताकहँ वेगि बुलावहू, नहिं चलु हरि दरबार।।

चौपाई

तब जिव यम से कहवे लीना। साहब एक वचन कहि दीना।।
निगम के पार अगम के आगे। सो सतगुरू मम श्रवणहि लागे।।
धरनि आकाश ते नगर निनारा। तहाँ विराजे धनी हमारा।।
जहँ नहिं चन्द सूर की कांती। तहाँ नहीं दिवस अरू राती।।
अगम शब्द जब भाषे नाऊ (नाम)। तब यम जीव निकट नहीं आऊ।।
चलो जीव हरि ब्रह्मा पासे। तुम्हरे धनी मोहे न आसे।।
तबहीं हंसा कीन पुकारा। कहँवा हौ तुम धनी हमारा।।
मोसे यम कीनी बरियाई। कस नहिं राखहु सद्गुरू आई।।
छन्द–कीन जीव पुकार ततक्षण खसम बेगहिं आइये।।
बेग लागु गुहार सतगुरू हंस लोक पठाइये।।
काहि करों पुकार साहब मातु पिता नहिं कोइ जना।।
करि ढिठाई मारि जीव यम झूठ जग महँ बन्धना।।

सोरठा–लगे खसम गुहार, घाट घाट यम छेकिया।।
कठिन परी यमभार, अति व्याकुल अकुलाय जिव।।

चौपाई

तब सतगुरू का आसन डोला। काल दग्ध जिव व्याकुल बोला।।
आइ खसम तब दर्शन दियऊ। चरण बन्दि हंसा तब लियऊ।।
साहब देखि भागा यमराई। अति आतुर होय हरिपै जाई।।

हरिहर वचन

हरिहर बूझे यम से बाता। कस नहिं कियो जीव की घाता।।

दूत वचन

कहे यम स्वामी विन्ती मोरी। हम जिव छेकि कीन तेहि सोरी।।
वह सुमिरे सत सुकृत नाऊ (नाम)। सुनत पुकार धनी चलि आऊ।।
आवत धनी भयो उजियारा। हम भागे चारो पग सिर धारा।।
वहाँ दूत पहुँचे हरि पासा। यहाँ जीव कहत सुख वासा।।

जीव वचन

विनय जीव सुनु बन्दी छोरा। हम कहँ कष्ट दीन बड़ चोरा।।
नाम तुम्हार बूझे यमराया। कहा नाम तब बचने पाया।।
तब हम ततछिन कीन पुकारा। बेगहि आओ खसम हमारा।।

ज्ञानी वचन

सुनो जीव नहिं शब्दहिं ध्यावा। राज पाय गुरू विसरावा।।
गहे नाम अरू करे कमाई। तब यम दूत निकट न आई।।

जीव वचन

जेहि ते हंसको घर पठवायी। तौन नाम मोहि भाषि सुनायी।।
जाते जीव अमर घर जावै। दूत भूत यम खबर न पावै।।

कबीर वचन

साखी–गुप्त नाम मुख भाखिया, अकह अमर निज नाम।।
अमर कृपा निधि जीव कूँ, पहुँचे जीव निज ठाम।।

चौपाई

पहुँचे जीव खसम घर जबहीं। सुख आनन्द भये बड़ तबहीं।।
कंचन कलस बरत तहँ बाती। आरति करे हंस बहु भांती।।
देखत जीव हंस उजियारा। अंग अंग शोभा चमकारा।।
देख द्वीप शोभा बहु भाँती। रवि शशि मनि लागे जिमि पाँती।।
ता मध्ये जिमि लाल जडाई। बीच बीच चुनि लै बैठाई।।
मोतीसर झालरि बहु पोहा। देखत हंस रहे तहँ मोहा।।
तबहिं पुरूष ज्ञानी हँकराई (पुकारा)। कौन वचन तुम जीव सुनाई।।
कौन वचन तुम जीवन दीना। जाते जीव अटक यम कीना।।

ज्ञानी वचन

दोय कर जोरि कहे शठिहारा। मुक्ति वचन जिव डार विसारा।।
विसरे नाम छेके यह आयी। भाषि नाम यम जीव छुडायी।।

पुरूष वचन

आज्ञा जीव पुरूष हंकराई। कहो जीव कस न कीन कमाई।।
कैसे पहुँचे लोक हमारे। सत्य वचन सो कहो विचारे।।

हंस वचन

मस्तक नाय हंस कर जोरी। अमर पुरूष विन्ती यक मोरी।।
हे साहब हम कछू न चीन्हा। गुरू को वचन मानि शिर लीन्हा।।
जा दिन गुरू मोहिं दीनेउ पाना। तब मैं जानवो पद निर्बाना।।

साधु संत कर बन्देउ पायो। विसरयो नाम गुरू मोहि सुनायो।।
अब पुरी यम छेकेउ आयी। पल यक दुख मोहिं तहाँ दिखायी।।
साखी— खसम आइ दर्शन दिये, दीना नाम सुनाइ।।
तबआये हम लोककूँ, यम शिर पाँव चढाइ।।

चौपाई

जो नहिं नाम मुक्तिको पावे। माला डारि जगत बौरावे।।
सुने नाम अरू करे कमाई। छाड़े पाखण्ड अरू अधमाई।।
निर्मल काया होय संसारा। जाकहँ दया करे करतारा।।
नाम कबीर जपे बड़ भागी। उन मन ले गुरूचरनन लागी।।
जापर दया जो होय तुम्हारी। ताकहँ कहा करहि बटपारी।।
पुरूष दया जब होय सहायी। सत्यलोकमों जाय समायी।।
छन्द—पुरूष दाया कीन ततछिन अटल काया तब भयो।।
पुहुप दीप निवास कीना सुमन सज्या आनन्दमयो।।
हंसन शिर क्षत्र राजे अमृत फल आनन्द घना।।
रूप षोडश भानु हंसा कोटि शशि शीतल बना।।
सोरठा—धाम जो पास अमोल, हंसा सुख तहँ विलसही।।
द्वीपहिं द्वीप कलोल, जरा मरन भ्रम मेटिया।।

कबीर सागर के अध्याय ''बीर सिंह बोध'' का सारांश सम्पूर्ण हुआ।

।।सत साहेब।।

अध्याय ''भोपाल बोध'' का सारांश

कबीर सागर में भोपाल बोध नौवा अध्याय पष्ठ 7 से प्रारम्भ है :-

सारांश यह है कि राजा भोपाल जालन्धर नगर में रहता था। पूर्व जन्म के अच्छे संस्कार वाला था। परमेश्वर कबीर जी की शरण में रहा था, परंतु काल जाल में रह गया। सतगुरू शरण में जो नाम जाप तथा धर्म किए थे, उनकी कमाई से राजा बना था। परमेश्वर कबीर जी ने संत गरीबदास जी (छुड़ानी वाले) को बताया था जो संत गरीबदास जी ने अपनी अमतवाणी में लिखा।

गोता मारूँ स्वर्ग में, जा पैठूं पाताल। गरीबदास ढूँढ़त फिरूँ, हीरे माणिक लाल।।

भावार्थ है कि परमेश्वर कबीर जी ने बताया कि मैं अपनी अच्छी आत्माओं को ढूँढ़ता फिरता हूँ। स्वर्ग, पाताल तथा पथ्वी पर जहाँ भी कोई मेरा पूर्व जन्म का भक्त जो पार न हो सका, उस नेक जीव को फिर से भक्ति की महिमा तथा आवश्यकता बताने के लिए उनसे मिलता हूँ। उनको जैसे-तैसे भक्ति का महत्त्व बताकर काल-जाल से छुड़वाता हूँ। ये मेरे हीरे-मोती तथा लाल हैं। इनकी खोज करता हूँ। इसी विधान अनुसार परमेश्वर कबीर जी राजा भोपाल को मिले। उनको ज्ञान समझाने के लिए राजा के चौंक में प्रकट हो गए। उस समय परमेश्वर कबीर जी ने जिंदा बाबा का रूप बना रखा था। वहाँ उपस्थित अधिकारी-कर्मचारियों को ज्ञान सुनाने लगे। उन्हें किसी ने ठग कहा, किसी ने जंत्र-मंत्र करने वाला कहा। एक सिपाही सन्तरी (पौरवे) ने राजा से कहा कि राजन! एक जिंदा बाबा आया है। वह आपसे मिलना चाहता है। वह कह रहा है कि मैं राजा को भक्ति ज्ञान बताना चाहता हूँ। राजा अपना अनमोल जीवन नष्ट कर रहा है। राजा को उनके गुरू ब्राह्मण ने बताया हुआ था कि वेदों में जो ज्ञान परमात्मा का लिखा है, वह सत्य है। यदि कोई उसके विरूद्ध ज्ञान बताता है तो वह झूठा है। उसको दण्डित किया जाना चाहिए। राजा ऐसे ही करता था। अपने गुरू ब्राह्मण को बुला लेता था और आने वाले संत से दोनों की ज्ञान चर्चा करवाता था, जो वेदों के विरूद्ध ज्ञान बताता था। उसको दण्डित करता था। ब्राह्मण को भी वेद ज्ञान नहीं था, परंतु राजा ने उसको विद्वान मान रखा था। परमेश्वर को ज्ञान था कि ज्ञान चर्चा का कोई लाभ नहीं होगा। राजा ने कहा कि ब्राह्मण को बुलाओ और ज्ञान चर्चा कराओ। ब्राह्मण जो कहे, वैसा करो। परमेश्वर कबीर जी ने राजा की ड्योडी को वचन से गिरा दिया। राजा को बताया गया कि वह संत जंत्र-मंत्र जानता है, उसने ड्योडी गिरा दी है। राजा क्रोध में होकर चला तो राजा का महल सोने का बना दिया। किवाड़-दीवार सब स्वर्ण के बन गए। राजा ने विवेक से काम लिया। जिन्दा के चरण छूए और अपनी शरण में लेने की इच्छा व्यक्त की। परमेश्वर कबीर जी ने राजा को दो घण्टे ज्ञान दिया। संसार असार है, आप सदा राजा नहीं रहोगे। संसार छोड़कर जाओगे तो कहाँ जाओगे? राजा प्रभावित हुआ। प्रथम नाम लिया। सत्यलोक की महिमा सुनकर दर्शन की प्रबल इच्छा जाहिर की। राजा को सत्यलोक लेकर गए। वहाँ की शोभा दिखाई। राम-कष्ण (विष्णु) ब्रह्मा, शंकर जी की शक्ति आँखों दिखाई, नीचे लाए। राजा ने अपनी नौ (9) रानियों को तथा अपने 50 पुत्रों तथा एक पुत्री को आँखों देखा विवरण सुनाया। परिवार के सर्व सदस्यों ने नाम लिया, मोक्ष करवाया।

।।सत साहेब।।

अध्याय ''जगजीवन बोध'' का सारांश

कबीर सागर में अध्याय ''जगजीवन बोध'' 10वां अध्याय पृष्ठ 21 पर है। इस अध्याय में चेतावनी का अजब वर्णन है। इसका यदि सारांश ही लिख दिया जाए तो थोड़ा ही है। परंतु इसके मूल पाठ को पढ़ने का आनन्द अलग ही है। आत्मा को झंझोड़कर रख देता है। पहले सारांश लिखता हूँ।

''सारांश''

जीव जब मानव शरीर प्राप्त करने के लिए माता के गर्भ में होता है, तब इसको छठे महीने चेतना आती है। वहाँ पर महाकष्ट भोगता है। ऊपर को पैर नीचे को सिर होता है। जेर लिपटी होती है। गंदा रक्त आसपास लगा होता है। माता जो खट्टा-मीठा खाती है, मिर्चयुक्त भोजन खाती है। उसकी जलन बच्चे के शरीर पर जख्म पर नमक की तरह कष्ट पैदा करती है। बच्चा रोता है, आवाज नहीं निकलती है। इसी कारण से घूमता है। संत गरीबदास जी (गाँव-छुड़ानी वाले) ने कहा है कि :-

''शब्द''

साहेब (प्रभु) से चित्त लाले रे मन गर्भ गुमानी।
नाभि कमल में नीर जमा तेरा दीन्हा महल बनाय।
नीचै जठराग्नि जलै थी, वहाँ तेरी करी सहाय।
नीचे शीश चरण ऊपर कूं, वो दिन याद कराय।
दाँत नहीं जब दूध दिया था, अमी महारस खाय।
बाहर आया भ्रम भुलाया, बाजे तूर सहनाय।
दाई आयी घूंटि प्याई, माता गोद खिलाय।
तूही तूही तो छोड़ दिया, अब चला अधम किस राहै।
द्वादश वरष खेलते बीते, फिर लिन्हा विवाह कराय।
तरूणी नारी से घरबारी, चाल्या मूल गँवाय।
कारे काग गए घर अपने, बैठे श्वेत बुगाय।
दाँत जाड़ तेरे उखड़ गए हैं, रसना गई ततुराय।
जो दिन आज सो काल नहीं आगे फिर धर्मराय।
नर से फिर तू पशुवा कीजै, दीजै बैल बनाय।
चार पहर जंगल में डोलै, तो नहीं उदर भराय।
कांदै जूवा जोतै कूवा, कोंदों का भुष खाय।
सिर पर सींग दिए मन बोरे, दूम से मच्छर उड़ाय।
फिर पीछे तू खर कीजैगा, कुरड़ी चरने जाय।
टूटी कमर पजावै चढ़ै, कागा माँस खिलाय।
सुखदेव ने चौरासी भुगती, कहाँ रंक कहाँ राय।
जै सतगुरू की संगत करते, सकल कर्म कटि जाय।
दास गरीब कबीर का चेरा, शब्दै शब्द समाय।

भावार्थ :- जब जीव माता के गर्भ में आता है तो महान कष्ट उठाता है। ऊपर को पैर नीचे

को सिर होता है। उस समय यह परमात्मा को याद करता है, परंतु जन्म लेते ही काल के जाल में फँसकर परमात्मा से जो वायदा किया था कि आपका भजन करूँगा, कभी नहीं भूलूंगा, मुझे इस नरक से निकाल दो, वह भूल जाता है।

उस समर्थ की रीझ छुपाई, कुल कुटम से राता। गर्भ के अंदर वचन करे थे, कहाँ गई वो बाता।।

भावार्थ :- जब गर्भ में कष्ट था। परमात्मा से पुकार की, भक्ति का वायदा किया। परमेश्वर ने प्रसन्न होकर तेरे को सकुशल बाहर निकाला। अब कुल-परिवार में लीन हो गया। परमेश्वर को भूल गया है। जवान स्त्री के साथ मिलकर परिवार तो उत्पन्न कर लिया, परंतु परमात्मा को भूल गया। फिर मत्यु होगी। आगे फिर धर्मराय मिलेगा। वह फिर पूछेगा कि जो वायदा परमात्मा से किया था, वह फिर नहीं निभाया। तू फिर कहेगा, गलती बन गई, एक जन्म मनुष्य का और दे दो, अबके कोई गलती नहीं करूँगा। धर्मराज यह बातें सुन-सुनकर तंग आ चुका होगा और तेरे को पशु बनाएगा, तू बैल तथा गधे की योनि भोगेगा। यदि सतगुरू की शरण लेकर साधना करता तो सर्व पाप कर्म समाप्त हो जाते और सत्यलोक में निवास होता।

कथा :- जगजीवन एक राजा था। जब वह जीव माता के गर्भ में था। उस समय रो-रोकर परमात्मा से गर्भ के कष्ट से मुक्ति की प्रार्थना कर रहा था। तब परमेश्वर कबीर जी उसके पास गए और कहा कि हे भक्त! जब-जब आप कष्ट में होते हो, तब ही मुझे याद करते हो। जब आप सुखी होते हो, तब मुझे याद नहीं करते। उस समय माया (धन-संपत्ति) तथा मौज-मस्ती बकवाद याद करते हो। यदि आप सुख में भी याद करते तो ये दिन देखने नहीं पड़ते।

कबीर, दुःख में सुमिरण सब करें, सुख में करै ना कोय। जै सुख में सुमरण करैं, तो दुख काहे कूं होय।।

जगजीवन वाला जीव परमात्मा से विनती करने लगा।

''जगजीवन वचन''

साहिब संकट दूर निवारो। मैं निज खानाजाद तुम्हारो।।
दिल में करूणा करै अतिभारी। अब मोहि साहब लेहु उबारी।।
करै अस्तुति बहुतै सुधिलावै। तुम विनु खाविन्द कौन छुड़ावै।।
अब दुःख दूर निवारो स्वामी। कौल करूँ प्रभु अन्तरयामी।।
बाहर निकारो आदि सनेही। बहु दुःख पावै मेरी देही।।
मैं जन प्रभुको दास कहाऊँ। आन देव के निकट न जाऊँ।।
सतगुरू का होय रहों चेरा। दम दम नाम उचारूँ तेरा।।
नित उठि गुरू चरणामत लेऊँ। तन मन धनै निछावर देऊँ।।
जो मैं तन सों करूँ कमाई। अर्धमाल मैं गुरूहि चढाई।।
कुबुद्धि सीख काहू नहिं मानूं। हराम माल जहर करिजानूं।।
कुल की त्यागूं मान बडाई। निर्मल ज्ञान एक संत सगाई।।
रात दिवस ऐसे लव लाऊँ। करत फुरत भक्ति गुरू कराऊँ।।
दुःख सुख परै सो तनसे सहूँ। भक्ति दढ़ै गुरू चरणै रहू।।
परत्रिया ताकूं नहिं कोई। जननी बहन करि देखूँ सोई।।
दुष्ट बैन कबहूँ मुख नहिं खोलूँ। शीतल बैन सदा मुख बोलूँ।।
स्वास उस्वासमों रटना लाऊँ। आन उपाय एको नहिं चाऊँ।।
तन मन धन निछावर देऊँ। सतगुरू का चरणामत लेऊँ।।

सतगुरू कहैं सोई अब करिहौं। आज्ञा लोप पाओं नहिं धरिहौं।।
और सकल बैरी कर जानूँ। सद्गुरू कहँ मित्र कर मानूँ।।
ज्ञान बतावै सोई गुरूदाता। तन मन धन अरपूँ उन ताता।।
तन मन धन मैं उनको देऊँ। नित उठि गुरूचरणामत लेऊँ।।
यहि गर्भवास में कौल बधाऊँ। बाहर निकारो धुर निबाँऊँ।।
जो मैं छूटूँ गरभ बासही। तन मन अरपूँ गुरू विश्वास ही।।
एक नाम सांचा कर मानूँ। और सबै मिथ्या कर जानूँ।।
कहा अस्तुति करों गुसाई। बहुत दुःख पावत हूँ या ठाई।।
यहां कोई मित्र नहिं भाई। मातु पिता नहिं लोग लुगाई।।
देवी देव की कछू न चालै। गुरू विन कौन करै प्रतिपालै।।
अब तो खबर परी यहि ठाहीं। और किसी की चालै नाहीं।।
पिछली बात मैं ह्रदय जानी। कोई काहूका नहीं रे प्राणी।।
अपने साथ चलेगा सोई। जो कछु सुकत करे सो होई।।
मद माया में जीव भरमाया। सो तो कोई काम न आया।।
बहुत विचार किया मैं सोई। अंतकाल अपनो नहिं कोई।।
ऐसी करूणा करै विचारा। दया करो दुःख भंजन हारा।।

भावार्थ :- जगजीवन पूर्व जन्म में सतगुरू कबीर जी के शिष्य थे। भक्ति की परंतु बाद में लोकलाज में आकर सतगुरू शरण त्यागकर वही पारंपरिक भक्ति करने लगा। अन्य मौज-मस्ती भी करने लगा। जिस कारण से पुनः जन्म-मरण के चक्र में गिर गया। जब वह माता के गर्भ में आया, तब नानी याद आई। तब सतगुरू याद आए। गर्भ में जीव महादुःखी होता है। गर्भ में छठे महीने जीव को चेतना आती है। दुःख-सुख महसूस होने लगता है। गर्भ में जगजीवन वाला जीव परमात्मा को याद करके पुकारने लगा कि हे परमात्मा! मैं महाकष्ट में हूँ। आपके बिना मेरा कोई नहीं। हे स्वामी! मेरा कष्ट दूर करो। हे अंतर्यामी प्रभु! मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं आप (सतपुरूष) का दास यानि सेवक बनकर रहूँगा। आन देव यानि आपके अतिरिक्त किसी अन्य देव की भक्ति कभी नहीं करूँगा। आन देव के निकट नहीं जाऊँगा। हे सतगुरू! मैं आपका चेरा (शिष्य) सदा बना रहूँगा। दम-दम (श्वांस-श्वांस) में आपका नाम उच्चारण यानि जाप किया करूँगा। नित उठ चरणामत लेऊँ, तन–मन–धन न्यौछावर कर देऊँ। **मैं जो कमाई करूँगा यानि मेहनत-मजदूरी, व्यापार, नौकरी आदि से जो धन कमाऊँगा, उसका आधा भाग गुरू चरणों में दान किया करूँगा। हे प्रभु! एक बार मुझे गर्भ से बाहर निकाल दो। फिर मैं किसी कुबुद्धि की शिक्षा नहीं मानूंगा। हराम माल यानि रिश्वत से, चोरी से, हेराफेरी से मिलने वाले धन-माल को विष के तुल्य मानूंगा, कभी नहीं छूऊँगा। कुल की लोकलाज, मान-बड़ाई को त्याग दूँगा। केवल संतों-भक्तों तथा सतगुरू से सगाई यानि रिश्ता रखूँगा। रात-दिन चलते-फिरते कर्म करते-करते नाम जपा करूँगा। यदि कोई कष्ट मानव जीवन में आएगा तो उसे सहन करते हुए भी आपको याद किया करूँगा, नाम जाप करना नहीं त्यागूंगा। गुरू चरणों से दूर नहीं होऊँगा। परस्त्री को कभी बुरी नजर से नहीं देखूंगा, जननी तथा बहन रूप में देखा करूँगा। कभी कुटिल वचन यानि दुर्वचन नहीं कहूँगा। सबसे प्रेम से पेश आया करूँगा। सतगुरू जी जो आज्ञा देंगे, वही करूँगा। उनकी आज्ञा की अवहेलना नहीं करूँगा। अन्य सबको मीठे शत्रु मानूँगा, केवल एक गुरू जी को अपना मित्र समझूँगा क्योंकि आज मेरे को सांसारिक**

व्यक्ति इस कष्ट से नहीं बचा सकता। केवल गुरू कृपा से परमात्मा ही बचा सकता है। आज जो गर्भ निवास के समय प्रतिज्ञा कर रहा हूँ। यह गर्भ से बाहर जाकर भी आजीवन निभाऊँगा। एक नाम को सत्य मानूँगा। शेष सब मिथ्या जानूँगा। इस गर्भ में कोई मित्र नहीं है, न कोई स्त्री साथ है, न पति-पत्नी का साथ होता है। (यहाँ कोई मित्र नहीं भाई। मात–पिता ना लोग लुगाई।)

मैंने देवी-देवता को याद करके देखा है। उन्होंने अपनी असमर्थता व्यक्त कर दी है। कहा है कि कर्म का फल तो सबको भोगना पड़ता है। हम आपकी सहायता नहीं कर सकते। कभी कोई गुरू बनाया हो तो उसे याद कर लो। यदि पूर्ण गुरू परमात्मा का प्रतिनिधि होगा तो आपकी सहायता अवश्य करेगा। अन्य का यहाँ कोई वश नहीं चलेगा।

देवी देव की कछुना चालै। गुरू बिन कौन करै प्रतिपालै।।
अब तो खबर परि यही ठाँही। और कोई की चालै नाहीं।।
पिछली बात मैं हृदय में जानी। कोई काहु का नहीं रे प्राणी।।

मेरे को पिछले जन्म की बातें अब दिल में जानी हैं। यहाँ गर्भवास के संकट में कोई साथ नहीं देता। केवल सुकृत (शुभ कर्म) ही सहयोगी होते हैं। अब मैंने पूर्ण रूप से जान तथा मान लिया है कि हे प्रभु! अंत काल में आपके बिना कोई हमारा अपना नहीं है। हे दुःखभंजन प्रभु! मुझ पर दया करो। गर्भ का कष्ट दूर करो।

''साहिब वचन''

तब साहिब यों कहै पुकारा। कहि समझाया तोहिं बारम्बारा।।
अनेक बार गरभ में आया। तैं रती कर्म भरम नहिं पाया।।
कई बार तैं कौल बैंधावा। कई बार तैं गर्भ में आवा।।
गर्भ में ज्ञान उपजा है तोही। संकट में सुमिरे सब कोही।।
बाहर निकसि नहिं उपजै ज्ञाना। अंधकार अहंकार समाना।।
अनेक बार भुलाना भाई। नहिं सतगुरू की रीत निभाई।।
गरभ बास में कौल बन्धावा। सो कैसे तैं न बाहर निर्बावा।।
बहु संकट में तोहि उपजे ज्ञाना। बाहर निकसत सब विसराना।।
जोई जीव गुरू कौल निर्वाहै। सोई नहिं गरभवास महँ आहै।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने गर्भ में कष्ट भोग रहे प्राणी से कहा कि तेरे को कितनी बार समझाया, तू नहीं मानता। अब महा संकट में तेरे अंदर ज्ञान पैदा हो गया है। सुख होते ही सर्व प्रथम परमात्मा को ही भूलता है। बाहर जाने के पश्चात् तो समझाने से भी मेरा यही ज्ञान तेरे हृदय में प्रवेश नहीं करता है। बहु संकट में तोहे उपजा ज्ञाना। बाहर निकल सब ही विसराना।। **अब संकट में तो ज्ञानी बना है। सुख होते ही बदल जाता है। तूने किसी जन्म में मेरी भक्ति की थी। इस कारण से मैं तेरा कुछ कष्ट हल्का करता हूँ, भविष्य में ध्यान रखना। परमेश्वर कबीर जी दीन दयाल हैं। प्रत्येक प्राणी के जनक हैं। वे पिता का कर्तव्य पालन करते हुए हंस को संकट मुक्त करके कृतार्थ करते हैं। इसी कारण जगजीवन के जीव को संकट मुक्त किया। परंतु बाहर आते ही काल के जाल में जीव फँस जाता है। फिर से भूल लग जाती है। दीन दयाल परमेश्वर कबीर जी फिर से चेताने के लिए स्वयं या अपने दास को संत बनाकर परमात्मा की महिमा जीव को बताते हैं। सत्संग द्वारा, पुस्तक द्वारा जैसे-तैसे उस तक अपना संदेश अवश्य पहुँचाते हैं। जगजीवन का जन्म राजा के घर हुआ। राजा बनकर लाखों हाथी, लाखों घोड़े, शानो-शौकत में भगवान भूल गया।**

राजा का एक नौलखा बाग था। वह बारह वर्ष से सूखा हुआ था। परमेश्वर कबीर जी उस सूखे बाग में जाकर आसन लगाकर समाधि जैसी लीला करके बैठ गए। उस बाग के वक्ष सूख चुके थे। लकड़ियाँ जलाने के लिए प्रयोग की जा रही थी। वह बाग हरा-भरा हो गया। देखने वालों ने राजा को बताया। ज्योतिष ने बताया कि इस बाग में कोई सिद्ध पुरुष आया है। इसलिए सूखा बाग हरा हो गया है। राजा को पता चला तो बाग देखने गया। बाग 4 कोस (12 कि.मी.) लम्बा 3 कोस (9 कि.मी.) चौड़ा था। खोज करने पर परमात्मा कबीर जी समाधि लगाए बैठे देखे। राजा ने चरण छूए। परमेश्वर ने आँखें खोली। राजा ने कहा, धन्य भाग हैं मेरे। प्यासे के पास गंगा आई है। आपने मेरा बाग हरा कर दिया। सतगुरू बोले, राजन! मुझे तो व्यर्थ बड़ाई दे रहे हो। मैं तो हरे बाग को देखकर साधना करने बैठा था। राजा ने कहा, हे परमात्मा! यह 12 वर्ष से सूखा पड़ा था। हमने आपको पहचान लिया है। राजा ने संकेत करके पालकी मँगवाई। उसमें बैठाकर घर में ले चले। पालकी को नौकर उठाए हुए थे। राजा सतगुरू का एक पैर पालकी से बाहर निकालकर अपने कँधे पर रखकर चले। आदर-सत्कार से घर लाए। परमात्मा ने ज्ञान समझाया। पूरे परिवार ने (12 रानियों ने, चार पुत्रों और राजा ने) दीक्षा ली। राजा को सतलोक दिखाया। उसने सब परिवार को बताया। सबने कहा, हे सतगुरू! अभी ले चलो। सतगुरू ने कहा :-

''सतगुरू वचन'' {पष्ठ 49}

काहे को हठ करत हो भाई। सबही हंस सुनो चित लाई।।
देह धरी अब करो सुख वासा। सदा रखो निज नाम की आशा।।
घर में रहकर कुल कर्म निभाहो। जो सब सच्ची मुक्ति चाहो।।
सतगुरू कहै सुनो रे भाई। सबही रहो नाम लौ लाई।।
सदा रहूँ मैं उनके पासा। धरै ध्यान जो सतलोक की आशा।।
इतना बचन सतगुरू सुनावा। सबको ध्यान विदेह समझावा।।
इनकी मैं का करूँ बडाई। ये तो सब निज हंसा आई।।
निश्चय बात हमारी मानी। काया माया खाकै (मिट्टी) जानी।।
सतगुरू हंस को लोक चढ़ायी। सहस अठासी द्वीप दिखायी।।
जेहि जेहि हंस सवारी काया। द्वीप द्वीप सब दष्टि बताया।।
देखो हंस कह सब अस्थाना। देखो द्वीप सबही मन माना।।
सबही हंस करे पछतावा। यह गति हम वहां नाहीं पावा।।
लै हंसन को पहुँचे तहँवा। महापुरूष (बड़े परमात्मा) विराजे जहँवा।।
साखी—द्वीप वर्नन कहा कहौं, सबैं मनोरथ काज।
सब द्वीपनते न्यार है, सत्यपुरूष को राज।।

चौपाई

जब हंसनको ले पहुँचाये। तब सतपुरूष उठि कंठ लगाये।।
जबहि पुरूष अंक भरि लीना। पारस देह सब हंसन कीना।।

परमेश्वर कबीर जी ने राजा जगजीवन तथा उसके परिवार से कहा कि आप भक्ति की कमाई करो और अपने सांसारिक कार्य भी करो। जब जीवन का समय पूरा होगा, तब सतलोक ले चलूँगा। सबने आजीवन भक्ति की और सत्यलोक में अमर शरीर पूर्ण मोक्ष प्राप्त किया।

अब पढ़ें मूल पाठ। (इस मूल पाठ का कुछ अंश बनावटी है, वह छोड़ दिया है जो सतगुरू की वाणी नहीं है।)

धर्मदास वचन-चौपाई

धर्मदास कह सुनहू स्वामी। कहो गरभकी स्थिति अन्तर्यामी।।
कैसे जीव गरभ में आवे। कैसे जीव जठर दुख पावे।।
कैसे जीव परवशै भयऊ। कैसे इन्द्री देह बनयऊ।।
कैसे जीव अपने पद दरसै। कैसे जीव समरथ पद परसे।।
कैसे जीव कौल बँधावे। कैसे साहब दर्शन पावे।।
सो सब भेद कहो गुरू ज्ञानी। घट भीतरका भेद बखानी।।

सतगुरू-वचन

कहैं कबीर सुनो धर्मदासा। तुम घट भली बुद्धि परकासा।।
प्रथमैं सत्य नाम गुण गाऊँ। घट भीतर का भेद बताऊँ।।
सबही जीव गर्भ में जावैं। कौल बान्ध कै बाहर धावैं।।
चूके कौल गरभ का भाई। बारम्बार गरभ में जाई।।
नौ नाथ सिद्धि चौरासी भारी। उनहूँ देह गरभमें धारी।।
नौ अवतार विष्णु जो लीन्हा। उनहूँ गरभ वसेरा कीन्हा।।
तेतिस कोटी देव कहाये। गरभ वास महँ देह बनाये।।
जोगी जंगम औ तप धारी। गर्भवास में देह सवाँरी।।
गर्भ वास तब छूटे भाई। जब समरथ गुरू बाहँ गहाई।।

गर्भोत्पत्ति वर्णन (पष्ठ 22)

नारि पुरूष बांधे संयोगा। कामबाण लगि देहसुख भोगा।।
सात धातुका अंग बनाया। जिह्वा दांत मुख कान उपाया।।
हाथ पावँ रु शीस निर्माया। सुन्दर रूप बनी बहु काया।।
नख शिख काहू नर बहू कीन्हा। दशही द्वार युक्ति करि लीन्हा।।
दश द्वार नौ नाड़ि बनायी। ऐसे सबतर बन्ध लगायी।।
दीन्हा ठेक बहत्तर भारी। नाडी बन्धन बहुत अपारी।।
नाद बिन्दुसों काय निरमायी। तामें प्रकती आन समायी।।
हद्द कारिगर हुनर कीन्हा। जैसे दूधमें जामन दीन्हा।।
तीनसों साठ चार बन्ध लायी। सोलह खांई तहां बनायी।।
सोलह खांई चौदह दर्वाजा। हूंठ हाथ गढ खूब विराजा।।
छाजे महल अधिकही छाजा। तामें जीव जो आनि विराजा।।
अजब महल बहु खूब बनाया। छठे महीने हंस चितवन लाया।।
छठे मांस में सुरती आयी। दुख सुखकी तब पारख पायी।।
छै मासको भयो जब प्रानी। दुख सुखकी मति सबै पहिचानी।।
ओंधे मुख झूले लटकंता। मैल बहुत तहँ कीच रहंता।।
जठर अग्नि तहँ बहुत सतावै। संकट गर्भ तहँ अन्त न आवै।।
बहुत सांकरी पिंजार पोई। तड़फड़ै बहुत निकसे नहिं जोई।।
मुखसों बोल निकसि नहिं आवै। विलाप करि मन में पछितावै।।
अरूझै श्वास रोवै मन माहीं। कौन करमगति लागी आहीं।।

विलाप करे मन में पछितावे। ज्यों करीब कंठ करद बैठावे।।
ता दुखकी गति कासु कहीजै। करम उनमान तहँ दुःख सहीजै।।
यदि आलोच करै मनमाही। संगी मित्र कोइ दीखत नाहीं।।
पिछला जनम जब सूझा भाई। तब जिव दिलमा चिंता आई।।
स्त्री मित्र कुटुम्ब परिवारा। सुत नाती और जो पियारा।।
संगी सुजन बन्धु औ भाई। गरभ कि चीन्ह परी नहिं ताई।।
महा दुःख सो गरभ में पावे। बहुत बैराग हियामें आवे।।
जब जिव गरभमें ज्ञान बिचारा। अब मैं सुमरूं सिरजन हारा।।
सोच मोह विज कछू न कीजै। अब सद्गुरू का शरणा लीजै।।
जिव अपने दिल माहि बिचारे। तब समरथ को कीन पुकारे।।
सुनु धर्मदास यक कथा सुनाऊँ। यक राजाको जस बने बनाऊँ।।
राय जगजीवन ताहिकर नामा। जब वह पहुँच्यो एही ठामा।।
करन विन्ती लागु अधीरू। सतगुरू कहँ तब कीन्ही टेरू।।

जगजीवन वचन

सहिब संकट दूर निवारो। मैं निज खानाजाद तुम्हारो।।
दिल में पुकार करै अतिभारी। अब मोहि साहब लेहु उबारी।।
करै अस्तुति बहुतै सुधिलावै। तुम विनु खाविन्द कौन छुड़ावै।।
अब दुःख दूर निवारो स्वामी। कौल करूँ प्रभु अन्तरयामी।।
बाहर निकारो आदि सनेही। बहु दुःख पावै मेरी देही।।
मैं जन प्रभुको दास कहाऊँ। आन देव के निकट न जाऊँ।।
सतगुरूका होय रहों मैं चेरा। दम दम नाम उचारूँ तेरा।।
नित उठि गुरू चरणामंत लेऊँ। तन मन धनै निछावर देऊँ।।
जो मैं तन सों करूँ कमाई। अर्धमाल मैं गुरूहि चढाई।।
कुबुद्धि सीख काहू नहिं मानूं। हराम माल जहर करिजानूं।।
कुलकी त्यागूँ मान बडाई। निर्मल ज्ञान एक संत सगाई।।
रात दिवस ऐसे लव लाऊँ। करत फुरत भक्ति गुरू कराऊँ।।
दुःख सुख परे सो तनसे सहूँ। भक्ति द्दढे गुरू चरणै रहू।।
परत्रिया ताकूं नहिं कोई। जननी बहन करि देखूँ सोई।।
दुष्ट बैन मुख कबहूँ नहिं खोलूँ। शीतल बैन सदा मुख बोलूँ।।
स्वास उस्वासमों रटना लाऊँ। आन उपाय एको नहिं चाऊँ।।
तन मन धन निछावर देऊँ। सतगुरू का चरणामंत लेऊँ।।
सतगुरू कहैं सोई अब करिहौं। आज्ञा लोप पाओं नहिं धरिहौं।।
और सकल बैरी कर जानूँ। सद्गुरू कहँ मित्र कर मानूँ।।
ज्ञान बतावै सोई गुरूदाता। तन मन धन अरपूँ उन ताता।।
तन मन धन मैं उनको देऊँ। नित उठि गुरू चरणामंत लेऊँ।।
यहि गर्भवासमें कौल बधाऊँ। बाहर निकारो धुर निबाँऊँ।।
जो मैं छूटूँ गरभ बासही। तन मन अरपूँ करूं गुरू विश्वास ही।।

एक नाम सांचा कर मानूँ। और सबै मिथ्या कर जानूँ।।
कहा अस्तुति करों गुसाई। बहुत दुःख पावत हूँ या ठाई।।
यहां कोई मित्र नहिं भाई। मातु पिता नहिं लोग लुगाई।।
देवी देवकी कछू न चालै। गुरू विन कौन करै प्रतिपालै।।
अब तो खबर परी यहि ठाहीं। और कोईकी चालै नाहीं।।
पिछली बात मैं ह्रदय जानी। कोई काहूका नहीं रे प्राणी।।
अपने साथ चलेगा सोई। जो कछु सुकत करे सो होई।।
मद माया में जीव भरमाया। सो तो कोई काम न आया।।
बहुत विचार किया मैं सोई। अन्तकाल अपनो नहिं कोई।।
ऐसी करूणा करै विचारा। दया करो दुःख भंजर हारा।।

साहिब वचन

तब साहिब यों कहै पुकारा। कहि समझाया तोहिं बारम्बारा।।
अनेक बार गरभ में आया। कबहु नहीं तैं कौल निभाया।।
कई बेर तैं कौल बँधावा। कई बार तैं गर्भ में आवा।।
गर्भ में ज्ञान उपजा है तोही। संकटमें सुमिरे सब कोही।।
बाहर निकसि नहिं उपजै ज्ञाना। अंधकार अंहकार समाना।।
बार अनेक भुलाना भाई। नहिं सतगुरू की दीक्षा पाई।।
गरभ त्रास तब छूटै भाई। जब सतगुरू कहँ बाँह समाई।।

जगजीवन वचन

अब नाहीं भूलूं गुरू देवा। तन मन लाय करूं गुरू सेवा।।
मोकूँ बाहिर काढो स्वामी। कौल न चूकूँ अन्तर्यामी।।

सतगुरू वचन

कौल बोल सब चौकस कीना। तबहीं गर्भ सो बहर लीना।।
नौवें मास जो बाहर आया। लोग कुटुम्ब सबही सुख पाया।।
सबही हरष करैं मन माई। पुत्र हेतु सब करैं बधाई।।
बाजा बाजै करै उछावा। गीत नाद आधिके चितआवा।।
सबै सजन मिलि गुड़ बँटावा। रैन समय तिय (त्रिया) गंगल गावा।।
नगरलोक सब करैं बधाई। घर घर साजे देइ लुगाई।।
घर राजाके जनम सो पइया। कौल किया सो सब बिसरैया।।
परिजन मिले सबहिं करें प्यारा। सबहीं ज्ञान भुलावन हारा।।
ताका नाम सुनो रे भाई। महा जालके फन्द फँदाई।।
झूठे झूठ मिले संसारा। नरक कुण्ड में नाखन हारा।।
यह सब झूठै पाखण्ड साजू। इनसूँ सरै न एको काजू।।

साखी—कहैं कबीर सब चेतहू, आगे काल कराल।
आल जँजाल तुम छाडिके, पिछले कौल सँभाल।।

चौपाई

साखी—ये तेरे मित्र नहिं, सब वैरी करि जान।

उबरा चाहो कालते, गुरूहि मित्र कर मान।।

चोपाई

एक वर्ष लगि डोल डोलावै। पशू रूपमें जनम गँवावै।।
उखली जीभ तोतला बोलै। मातु पिता सब हर्षित डोलै।।
आज जंजाल बोले बहकावे। त्यों त्यों हरष हिये मांही भावै।।
बाहर भीतर ऊभा धावै। बाहर भीतर दौड़ा आवै।।
कंचन घूँघुरू बेगि गढ़ाई। रेशम केरी डोर पोवाई।।
बालन सँग में खेलन जावै। नाच कूद के घरही आवै।।
मनमें आनँद करै चँचलाई। सोच फिकर कछु व्यापे नाई।।
द्वादश वर्षकी भयी है देही। अनन्त उपाय करै नर केही।।
प्रगटै काम काया के भीतर। सोच फिकिर नहिं व्यापे अंतर।।
अघ (पाप) करै बहुत अहंकारा। निरखै तिरिया घर घर द्वारा।।
परवश दूती आनि मिलावै। जोर करै तो पकरि मगावै।।
अघ कर्मि होय तन डोलै। जोर बहुत गरब (गर्व) सो बोलै।।
आंखिन मारै दर्शे लोई (नारी)। ज्ञान ध्यानकी सुधि ना होई।।
गुरू चर्चा के निकट न जावै। हँसी मसखरीसों मन भावै।।
झूठी बात करै लबराई। तासों हेतु करै मितराई।।

साखी—यह नर गर्व भुलाइया, देखि मायाको झौल।
कहै कबीर सब चेतहू, सुमर पाछलो कौल।।

चोपाई

पहले विवाही एक लुगाई। बहुत प्रेम सँग ताहि लिवाई।।
विषय विवेक फिर उपजा भारी। पीछे व्याही सुन्दरि नारी।।
अँगस्वरूप कामिनि अधिकाई। कामातुर वा सें रहे लपटाई।।
महा अनन्द भये मन माहीं। एक पलक सँग छाडें नाहीं।।
करै खवासी कहत है दासी। बन्धा मोह जाल की फांसी।।
खिदमतगार सहेली घनी। कई नायिका कई रामजनी।।
नौ–नौ खण्डके महल बनाये। सोना केरे कलस चढाये।।
करी बिछावन तहँ बड़भारी। गादी तकिया बहुत अपारी।।
नित नित त्रिया नई संयोगा। खान पान और षट रस भोगा।।
मता विषय रस कछू न सूझै। भैरों भूत शीतला पूजै।।
भूलै कौल गरभ में बांधी। अब चकचौंध आई आंधी।।
सबही जीव कौलकरि आवै। बाहर निकसि सब बिसरावै।।

सतगुरू के आगमन

ऐसे जीव भूल रहे सारे। तब सतगुरू आइ पगु धारे।।
जीव चितावन सतगुरू आये। अलीदास धोबी समझाये।।
और हंस बहुत चेताये। फिरत फिरत पाटनपुर आये।।

सतगुरू का पाटनपुर में पहुँचना

सतगुरू आये पाटन ठाऊँ। जगजीवन राय बसै तेहि गाऊँ।।
राय न मानै भक्ति विचारा। हँसे भक्तको बारम्बारा।।
भक्त रूप सब शहर निहारा। कोउ न मानै कहा हमारा।।
तब आपन मन कीन विचारा। कैसे मानैं शब्द हमारा।।
जाइ बाग में आसन कीन्हा। गुप्त रहे काहू नहिं चीन्हा।।
द्वादश वर्ष भये बाग सुखाने। सुलगे काष्ठ होय पुराने।।
चार कोस तेहि बाग लम्बाई। तीन कोसकी है चौड़ाई।।
तहां जाय आसन हम कीन्हा। रहों गुप्त काहू नहिं चीन्हा।।
तहवां मैं कौतुक अस कीया।। सूखे बाग हरा कर दीया।।
विकसे पुहुप जीव सब जागे। सबने हरियर देखा बागे।।
माली को जाय कै दीन बधाई। जागा भाग तुम्हारा भाई।।
देखा बाग जाय तेहि बारा। फल फूलनका अन्त न पारा।।
हर्षा माली बाहर आया। देखा बाग बहुत सुख पाया।।
फूलन छाब भरी दुइ चारी। नाना विधिके फूल अपारी।।
नाना विधिके मेवा लाया। लै माली दरबारे आया।।
बैठा राजा सभा मँझारा। उमरावनको तहाँ न पारा।।
माली सब लै धरी रसाला। राजा पूछ करे ततकाला।।
कौन देश तैं माली आया। फूल अनूप कहांसे लाया।।
कौन बाग के फलन विशेखा। कानो सुनी न आंखन देखा।।

माली वचन

नौ लखा बाग हरा होय आया। फल प्रसून सब नये बनाया।।
सुनिके राजा हरषा भारी। संग उठी चली परजा सारी।।

राजा वचन

कहु दिवान यह कौन प्रकारा। समझि बूझिके करो विचारा।।
जयोतिषी पण्डित सबै बुलाये। पत्रा पोथी सबही लाये।।

ज्योतिषी वचन

लगन सोधि सब ऐसी कही। कोइ पुरूष यहँ आये सही।।
है कोइ नर कै कोइ पखेरू। सोधो जाय बाग सब हेरू।।
खोजा राय बागके माहीं। बैठे संत यक ध्यान लगाहीं।।
राजा जाय धरा सिर पाई। नगर भरेकी परजा आई।।
कहे राजा धन मेरो भागा। दर्शन पाय अमर होय लागा।।
आलसी घर गंगा आयी। मिटि गई गर्मी भयी शितलायी।।

सतगुरू वचन

तब राजासों कही पुकारी। सुन राजा एक बात हमारी।।
हम को न भार चढाओ भाई। काहे को तुम देहु बड़ाई।।

अच्छा बाग विमल हम चीन्हा। तासो आये आसन कीन्हा।।
ऐसा तुमहीं बाग बनाया। नाना विध के रूख लगाया।।
आसन किया देखि हम ठारी। बहुत फूल फलकी अधिकारी।।

राजा वचन

फिर कै राजा शीस नवाया। द्वादश वर्ष भये बाग सुखाया।।
सूखा बाग भये बरस बारा। नहिं कोइ हमरा चाला चारा।।
छाड़ी फल फूलनकी आसा। कोइ न आवै बागके पासा।।
तुम समर्थ पग धारे आई। हरा हुआ बाग सब ठाई।।
राजा कहै दया अब कीजै। मोकूँ मुक्तिदान फल दीजै।।
मेरे मस्तक धरहू हाथा। मैं रहूँ सतगुरू तुम्हारे साथा।।

सतगुरू वचन

तुमको कौल भुलाना भाई। किया सो कौल गया बिसराई।।
संकट गरभ में बाचा दीन्हा। बाहर निकस कर्म बहु कीन्हा।।
किया कौल जब गये भुलाई। तब हम आइके चरित दिखाई।।
बहु विधि बात कही चेताई। बाहर निकसि बुद्धि पलटाई।।
तुमको तो कछु सूझत नाहीं। फन्दा मोहजाल के माहीं।।
आवै यम दश द्वार मून्दी। तबहीं बांधि गिराए मूंधी।।
सोच बूझ देख मन माहीं। इतने में तेरा कौन सहाहीं।।
घर घर हम सब कही पुकारी। कोइ न मानै कही हमारी।।

हे राजा जब तू मातगर्भ में था तब तू वचनवद्ध हुआ था कि भजन के अतिरिक्त अब और कुछ न करेंगे। उस दुःखमें तो तू पुकारता था तथा हाय हाय करता था, कि मुझको इस दुःखसे निकालो। जब तू गर्भके बाहर आया तब तू अपनी प्रतिज्ञा भूल गया और शारीरिक कामना तथा पशुधर्मके वशीभूत होकर तूने कौन कौन से कुकर्म न किये? सत्यगुरू की दया को तू भूल गया, भोगविलासमें फँसकर अन्धा हो गया और माया ने तेरे ज्ञानको बिल्कुल ही नष्ट कर दिया। जब यमदूत आवेंगे और तेरी मुश्कें (गोला-लाठी) बांधकर नरक में ले जावेंगे तब तेरा कौन मित्र सहायता करेगा? और तुझको उनसे कौन छुड़ावेगा? राजा! तू सोच तथा समझ कि, वे लोग जिन्हें तू अपना मित्र समझता है उनमें से कौन तेरा उस समय सहायक होगा? कौन तुझको नरक से बचावेगा? गर्भमें मैंने तुझको बहुत समझाया था सो हे गँवार! तू उन सब बातों को भूल गया मैंने सबसे घर घर पुकार कर कहा मेरा कहना किसी मूर्ख ने न माना। इतनी बात सुनकर राजा बोला :-

राजा वचन-चौपाई

अब तो गुरू होहु सहाई। मोकों यमसे लेहु छुडाई।।
सबही करम बख्सकै दीजे। डूबत मोहिं उबारके लीजे।।
सैन करी पालकी मँगाई। लै सद्गुरू को माहिं बिठाई।।
पाँव उघार कांध धर लीन्हा। तबही महल पयाना कीन्हा।।
सद्गुरू पग धर महलके माहीं। सब रानिनको राय बुलाहीं।।
समरथा दरशन दीन्हां आनी। धनधन भाग्य तुम्हारो रानी।।
सद्गुरू को पलँगा बैठाई। सब मिलि पांव पखारो आई।।

राजा भाखे शीश नवाई। मोकों राखो गुरू शरनाई।।
करिये सद्‌गुरू जीवको काजा। दया करो मैं लाऊँ साजा।।
अब हम शरना लेब तुम्हारी। दया करो तन दुखत हमारी।।

सतगुरू वचन

तब कहे सतगुरू लेहु सँभारी। राजा सुनहू बात हमारी।।
कस चले राजा लोक हमारे। मैं नहिं देखूँ लगन तुम्हारे।।
कोटिन ज्ञान कथे असरारा। बिना लगन नहिं जीव उबारा।।
जो कोई बूझे भक्ति हमारी। ताको चहिये लगन सँचारी।।
जैसे लगन चकोरकी होई। चन्द्र सनेह अँगार चुगोई।।
ऐसे लगन गुरूसे होई। धर्मराय शिर पग धर सोई।।
तुम तो हो मोटे महराजा। कैसे छोड़िहौ कुल मर्यादा।।
कैसे छोड़िहौ मान बड़ाई। कैसे छोड़िहौ मुख चतुराई।।
कैसे छोड़िहौ हाथी असवारा। कैसे छोड़िहौ द्रव्य भँडारा।।
कैसे छोड़िहौ काम तरंगा। कैसे राजसे करो मन भंगा।
कैसे छोड़िहौ कनक जवाहिरा। कैसे छोड़िहौ कुल परिवारा।।
तुम तो उनकी बांधी आसा। हम तो राजा कथैं निरासा।।
भक्ति कठिन करी ना जाई। काहे को हिर्स करत हो राई।।

राजा वचन

राजा कहे दोऊ कर जोरी। सुनिये समरथ बिनती मोरी।।
नगर के सब षट् बरन बुलाऊं। यहि अवसर सब माल लुटाऊं।।
तुम तो कह्यो बाहर लेवूं वासा। मैं तो देहकी छोडों आसा।।
अमृत वचन पियाओ आनी। हंस उबार करो निरबानी।।
नगर कोटकी छोड़ी आसा। निश दिन रहूं तुम्मारे पासा।।
हुकुम करो सोई मैं लाऊं। करो दया मैं शीस नवाऊं।।
उमँग उठे हर्षित मन मोरा। थकत भये जनु चन्द्र चकोरा।।
सूखा बाग जो फल परकाशा। तबते पूरी मनकी आशा।।
कसनी कसो सों सहूँ शरीरा। तबहूँ प्रीत न छोड़ूँ तीरा।।
जो तुम कहो सो भक्ति कराऊँ। आज्ञा करो तो शीश चढाऊँ।।
मैं हूँ जीव पाप कर्म बहु कीना। कैसे यमसों करिहो भीना।।
गिनत गिनत नहिं आवे चीना। बारम्बार मैं औगुन कीना।।
ऐसा करम किया मैं भारी। कैसे यमसे लेहो उबारी।।
एक बात गुरू कहौ विचारी। मोसम पतित आगे कोइ तारी।।
तब सतगुरू बहुत विहँसाने। फिर राजासों निरणय ठाने।।

सतगुरू वचन

युगन युगन भवसागर आऊँ। जो समझे तेहि लोक पठाऊँ।।
शब्द हमारा मानै कोई। तौ नहिं जाय यमपुरी सोई।।
इतनी बात कही समझायी। दिल राजा के प्रतीति समायी।।

राजा वचन

धन्य भाग मेरा कुल कर्मा। कोटिक यज्ञ कियो तप धर्मा।।
सत्यगुरू आय दरस मोहि दीन्हा। बूझत हंस उबार कै लीन्हा।।
हो प्रभु मोर करो निर्वेरा। मैं तो चरण कमल का चेरा।।
कहु संदेश नगर में भाई। जग जीवन राय लोकको जाई।।
नेगी जोगी सबहि बुलायी। और नगर की परजा आई।।
चन्दनका सिंहासन कीन्हा। चौका पूरि कलश ध्शरि दीना।।
सतगुरू शब्द उचारे लीना। युक्ति साजि गादी पगु दीना।।
सब रानिनको बेगि बुलायी। करि दण्डवत् गुरूचरणा आयी।।
साखी–सब रानी बिन्ती करैं, सुनु समरथ चित लाय।
महा अकरमी जीव हम, सबहि लेहु मुकताय।।

''चारों पुत्रों को दीक्षा दी''

इसके पश्चात् राजा ने अपने चारों राजकुंवरों को बुलाया तथा परमेश्वर जी ने परीक्षा करके दीक्षा दी। वाणी :-

छड़ीदार वचन

छड़ीदार कहै कर जोरी। राज कुँवर सुनु विन्ती मोरी।।
राजा रानि गुरू चरणै आये। ताते तुमको बेगि बुलाये।।
गरभवास से करैं निरूवारा। तुरत चलो जनि लावो बारा।।
जहाँ सतगुरू आसन कीन्हा। कुँवर चार आइ दर्शन लीन्हा।।

सतगुरू वचन

तब सतगुरू अस बचन उचारा। शिष्य होय सौपूँ भंडारा।।
शिष्य होय सौंपै देही। लोक द्वीप की गम्य तब लेही।।
तन मन धनको नेह न आवै। तब जिव लगन जैमुनी पावै।।
तब राजा मन हरष अपारी। करहु शिष्य जाऊँ बलिहारी।।

कुँवर वचन

कुँवर कहै विलम्ब किमि सारूँ। आज्ञा करो हो शीस उतारूँ।।

रानी वचन

रानी मन में हर्ष अनन्दा। मानों ऊगे कोटिक चन्दा।
तन मन से करिहौं गुरू सेवा। हमको शिष्य करहु गुरू देवा।।

सतगुरू वचन

सरब भेद मैं तोहि बताया। विरले हंस भेद यह पाया।।
तुम सों हंस कहूँ समझायी। गुप्त भेद ना बाहिर जायी।।
अब हम पंथ्वी परिक्रमा जावें। भूले हंसन को रै चितावें।।
तुम राजा बैठि राज कराओ। सार शब्द जपन चित्त लाओ।।

राजा वचन

जब सतगुरू तहँ ऐसो कहिया। तब राजा मन चिंता भइया।।

राजा चरण धरयो तब आई। तुम बिनु कैसे रहूँ गुसांई।।
हमको राखो चरण लगायी। नहिं देहु सत्यलोक पठायी।।

सतगुरू वचन

सतगुरू कहै सुनो मोर भाई। हम संगे रहो लै जाउँ लिवाई।।
सदा रहौ हंसन के पासा। हमको रहै हंसनकी आसा।।
देह सो दर्शन तुम्हें दिये राई। विदेही होय संग रहुँ सदाई।।
विदेही दर्शन जब हंस पावे। देखि दरश होय अधिक उछावे।।
सतगुरू चलन खबर सब पावा। धीरे धीरे सब हंस आवा।।
आये हंसा विन्ती करहीं। हे साहब हम धीर कस धरहीं।।
जो तुम जाओ सतगुरू साहब। हम भी संग सब तुम्हरे आयब।।
तुम विनु गुरू कैसे रहि जावै। जल बिन मच्छी ज्यों तड़पावै।।
हम पाये आनंद दरश तुम्हारे। हम को न छोड़ो स्वामि हमारे।।

सतगुरू वचन

काहे को हठ करत हो भाई। सबही हंस सुनो चित लाई।।
देह धरी अब करो सुख वासा। सदा रखो निज नाम की आसा।।
घर में रहो कुल धर्म निबाहो। जो सब साँचि भक्ति तुम चाहो।।

परिवार के सब जीवों के वचन

माता पिता त्रिया नहिं चहिए। सुत नारी से नहिं नेह लगैये।।
सतगुरू तुमही हौ यक सांचा। झूठ और सकल जग काचा।।
बिना दर्श सो दुख हम पावें। नित चरणामृत कहाँ से लावें।।
तुम बिनु देह छुटि सो जावै। कहँ गुरूवचन बहुरि सो पावे।।
बिना दरश व्यर्थ जगकी माया। सबहि छुटे नहिं चहिए काया।।

सतगुरू वचन

सतगुरू कहै सुनो रे भाई। सबही रहो नाम लौ लायी।।
सदा रहूँ मैं उनके पासा। धरे ध्यान जो सांचकी आसा।।
सुनो हंस गहो पद सांची। ध्यान विदेह में रहि हो रांची।।
इतना भेद सतगुरू बतलावा। सबको विदेह ध्यान समझावा।।
ध्यान पाइ आनन्द सबै भयऊ। सतगुरू दरश प्रत्यक्षहि पयऊ।।
तुम सों राजा कहूँ चितायी। रहो सदा शब्द लवलायी।।
चले गुरू समरथ जेही बारा। रोवै हंस बहैं जल धारा।।
जैसे रंक का रतन चुराना। जैसे भुजंग मणी विसराना।।
मानि सतगुरू आज्ञा लीना। विदेह ध्यान गुरू दर्शन दीना।।
ध्यान पाइ गुरू करैं सब भक्ति। काल जाल सब छूटी युक्ति।।
केते दिवस ऐसे चलि गयऊ। तबहीं राजा आगम पयऊ।।

राजा के परिवार के साथ-साथ मंत्रियों तथा नौकरानियों ने भी दीक्षा ली थी। सबने दिल लगाकर भक्ति की। मर्यादा का पालन किया। समय आने पर साधना पूर्ण होने पर जब सतलोक

चलने के लिए परमेश्वर कबीर जी ने कहा तो सब उपदेशी ऐसे उमंग में भर गए जैसे बारात में जाते हैं। राजा ने नगर में मुनादी (Announcement) करवा दी कि नगर की सब जनता आओ, हम सत्यलोक जा रहे हैं। जिसके लिए भक्ति कर रहे थे, वह समय आ गया है।

राजा वचन

जेहि कारण हम भक्ति कराई। सो दिन अब पहुँचा है आई।।
ताल पखावज वेगि लै आओ। शब्द चलावा मंगल गाओ।।
बाजा बाजे बहुत बधायी। सबै त्रिया मिलि मंगल गायी।।
सब ही लोक खबर यह पायी। राय जगजीवन लोक सिधायी।।
पाटन नगर में बहुत उछावा। घर घर तिरिया करे बधावा।।
बैठे राजा आसन धारी। जुरे हंस जहँ बहुत अपारी।।
ले परवाना बन्दगी कीना। सबही हंस परिकरमा दीना।।
रानी पांच कुवँर दोय जाना। दासी चार हजूरी साना।।
चार प्रधान सात उमराऊ। प्रोहित दोय हियै मन भाऊ।।
इतना जन परवाना लीना। राजा संग सो प्याना कीना।।
पावत बीरा जिव निस्तारेऊ। अमर लोक कहँ प्याना धारेउ।।

राजा तथा पाँच रानी, दो पुत्र, चार दासी (नौकरानी), चार प्रधान, सात उमराव (वजीर), दो पुरोहित, इन सबको सतगुरू कबीर जी लेकर सत्यलोक पहुँचे। अपने ही दूसरे स्वरूप में विराजमान सत्यपुरूष से भक्तों की बड़ाई की। कहा :-

सतगुरू वचन

इनकी मैं का करूं बडाई। ये तो सब निज हंसा आई।।
निश्चय बात हमारी मानी। काया माया खाकै (मिट्टी) जानी।।
सतगुरू हंसको लोक चढायी। सहस अठासी द्वीप दिखायी।।
जेहि जेहि हंस सवारी काया। द्वीप द्वीप सब दंष्टि बताया।।
देखो हंस कह सब अस्थाना। देखो द्वीप सबही मन माना।।
सबहीं हंस करे पछतावा। यह गति हम वहां नाहीं पावा।।
लै हंसनको पहुँचे तहँवा। महापुरूष (बड़े परमात्मा) विराजे जहँवा।।
साखी—द्वीप वर्नन कह कहौं, सबैं मनोरथ काज।
सब द्वीपनते न्यार है, सत्य पुरूष को राज।।

चौपाई

जब हंसन को ले पहुँचाये। तब सतपुरूष उठि कंठ लगाये।।
जब ही पुरूष अंक भरि लीना। पारस देह सब हंसन कीना।।

''सतगुरू कबीर तथा सतपुरूष एक ही हैं, दोनों भूमिका करते हैं''

राजा जगजीवन समूह के अतिरिक्त अन्य भी सतगुरू कबीर जी के साथ चले थे। कुल चार हजार सात सौ बावन (4752) थे। उनमें से 200 मानसरोवर पर रह गए। कारण यह था कि उन्होंने भक्ति थोड़ी की थी। रास्ते में मानसरोवर आता है। उसमें सर्व भक्तों को स्नान करवाया जाता है। जिन भक्तों की भक्ति पूर्ण हो गई है। उनके शरीर की शोभा 16 सूर्यों जितने प्रकाश के तुल्य प्रकाशमान हो जाती है। जिनकी भक्ति पूर्ण नहीं होती, उनके शरीर का प्रकाश 4 सूर्यों के समान

रह जाता है। वे मानसरोवर पर ही रह जाते हैं। उनसे वहाँ भक्ति कराई जाती है। यदि उनकी ममता संसार में रह जाती है तो उन्हें पुनर्जन्म मिलता है। राजा भी बन जाते हैं। फिर भूल पड़ जाती है। काल के जाल में फँसकर जन्म नष्ट करते हैं। उनको फिर भक्ति की महिमा बताने और काल के जाल से छुड़ाने के लिए सत्यपुरूष कबीर जी संसार में आते हैं। ऐसे भक्त शीघ्र भक्ति ग्रहण करके मोक्ष प्राप्ति कर लेते हैं। जैसे राजा जगजीवन का परिवार था तथा उनकी दासी (नौकरानी) और मंत्रीगण ऐसे ही हंस थे। फिर उमंग के साथ काल की सर्व संपत्ति पराई जानकर सहर्ष त्यागकर सतगुरू के साथ सत्यलोक चले गए। अमृतवाणी में यह भी स्पष्ट है कि सतगुरू कबीर जी तथा सतपुरूष एक ही हैं। दोनों भूमिका स्वयं ही करते हैं। वाणी है कि :-

सतगुरू अरू पुरूष भये जब एका। सब हंसन आंखन देखा।।

अब पढ़ें अन्य अमृतवाणी :-

पुरूष वचन

कहै पुरूष ज्ञानी भल आये। इतने हंस कवन विधि लाये।।

''ज्ञानी (सतगुरू कबीर) वचन''

तुम जानो पुरूष पुराना। मैं केहि मुख सों करौं बखाना।।
चार हजार सातसों बावन पाये। एते हंस दरश तुव आये।।
सबही आये लोक मँझारा। दुइ सै रोके धरम बटपारा।।
कौल किया पुनि गये भुलायी। पांजी द्वार धरम पर जायी।।
मान सरोवर केते रहाये। उनको देही नाहिं बनाये।।
और द्वीपन सब कीन बसारा। जैसी हंसन देह सँवारा।।
इन तन मन सो बदला कीना। शिष्य होय इन वस्तुहि लीना।।
कसनी कसि सो तन बदले चीन्हा। गुरू को इन सब वश करि लीन्हा।।
जीवत मृतक होय रहे जगमाहीं। जासें दरस तुम्हारा पाहीं।।
सुनिके पुरूष हरष बहु कीना। फिर फिर हंस अंक भर लीना।।
काह देउ तोहि हंस बड़ाई। तुम अमर लोक चलि आई।।
अधर सिंहासन आसन पाये। सब हंसन शिर छत्र धराये।।
हर्षित बदन औ बहुत हुलासा। सदा रहो तुम हमरे पासा।।
बैठयो महा पुरूष दरबारा। सोलह सूर हंस उजियारा।।
अमृत फलका करो अहारा। धन्य हंस बड़भाग तुम्हारा।।
सतगुरू अरू पुरूष भये जब एका। सब हंसन आखन देखा।।
कहे हंस आप प्रभु हमों लाए। हम तुमको परख नहीं पाए।।
किन्ही लीला साहब सारी। कैसे जाने जीव व्यभिचारी।।
अपना बालक पीता दिल लावै। और कौन इजलत उदावै।।
कोटि–कोटि किन्ही प्रणामा। जीव उधारे पूर्ण रामा।।

''पुरूष वचन''

इस कथा में यह भी प्रमाण है कि परमेश्वर कबीर जी फिर संसार में आते हैं। ये स्वयं ही सत्यपुरूष हैं। स्वयं ही ज्ञानी, सहज दास, जोगजीत रूप बनाते हैं।

जगजीवन बोध का सारांश पूरा हुआ।

अध्याय ''गरूड़ बोध'' का सारांश

कबीर सागर में 11वां अध्याय ''गरूड़ बोध'' पृष्ठ 65(625) पर है :-

परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को बताया कि मैंने विष्णु जी के वाहन पक्षीराज गरूड़ जी को उपदेश दिया, उसको सृष्टि रचना सुनाई। अमरलोक की कथा सत्यपुरूष की महिमा सुनकर गरूड़ देव अचम्भित हुआ। अपने कानों पर विश्वास नहीं कर रहे थे। मन-मन में विचार कर रहे थे कि मैं आज यह क्या सुन रहा हूँ? मैं कोई स्वपन तो नहीं देख रहा हूँ। मैं किसी अन्य देश में तो नहीं चला गया हूँ। जो देश और परमात्मा मैंने सुना है, वह जैसे मेरे सामने चलचित्र रूप में चल रहा है। जब गरूड़ देव इन ख्यालों में खोए थे, तब मैंने कहा, हे पक्षीराज! क्या मेरी बातों को झूठ माना है। चुप हो गये हो। प्रश्न करो, यदि कोई शंका है तो समाधान कराओ। यदि आपको मेरी वाणी से दुःख हुआ है तो क्षमा करो। मेरे इन वचनों को सुनकर खगेश की आँखें भर आई और बोले कि हे देव! आप कौन हैं? आपका उद्देश्य क्या है? इतनी कड़वी सच्चाई बताई है जो हजम नहीं हो पा रही है। जो आपने अमरलोक में अमर परमेश्वर बताया है, यदि यह सत्य है तो हमें धोखे में रखा गया है। यदि यह बात असत्य है तो आप निंदा के पात्र हैं, अपराधी हैं। यदि सत्य है तो गरूड़ आपका दास खास है। परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को बताया कि मैंने कहा, हे गरूड़देव! जो शंका आपको हुई है, यह स्वाभाविक है, परंतु आपने संयम से काम लिया है। यह आपकी महानता है। परंतु मैं जो आपको अमरपुरूष तथा सत्यलोक की जानकारी दे रहा हूँ, वह परम सत्य है। मेरा नाम कबीर है। मैं उसी अमर लोक का निवासी हूँ। आपको काल ब्रह्म ने भ्रमित कर रखा है। यह ज्ञान ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जी को भी नहीं है। आप विचार करो गरूड़ जी! जीव का जन्म होता है। आनन्द से रहने लगता है। परिवार विस्तार होता है। उसके पालन-पोषण में सांसारिक परंपराओं का निर्वाह करते-करते वृद्ध हो जाता है। जिस परिवार को देख-देखकर अपने को धन्य मानता है। उसी परिवार को त्यागकर संसार छोड़कर मजबूरन जाना पड़ता है। स्वयं भी रो रहा है, अंतिम श्वांस गिन रहा है। परिवार भी दुःखी है। यह क्या रीति है? क्या यह उचित है? गरूड़ देव बोले, हे कबीर देव! यह तो संसार का विधान है। जन्मा है तो मरना भी है। परमेश्वर जी ने कहा कि क्या कोई मरना चाहता है? क्या कोई वृद्धावस्था पसंद करता है? गरूड़ देव का उत्तर=नहीं। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि यदि ऐसा हो कि न वृद्ध अवस्था हो, न मृत्यु तो कैसा लगे? गरूड़ देव जी ने कहा कि कहना ही क्या, ऐसा हो जाए तो आनन्द हो जाए परंतु यह तो ख्वाबी ख्याल (स्वपन विचार) जैसा है। हे धर्मदास! मैंने कहा कि वेदों तथा पुराणों को आप क्या मानते हो, सत्य या असत्य? गरूड़ देव जी ने कहा, परम सत्य।

देवी पुराण में स्वयं विष्णु जी ने कहा कि हे माता! तुम शुद्ध स्वरूपा हो। यह सारा संसार तुमसे ही उद्भाषित हो रहा है। मैं ब्रह्मा तथा शंकर आपकी कृपा से विद्यमान हैं। हमारा तो आविर्भाव (जन्म) तथा तिरोभाव (मृत्यु) हुआ करता है।

परमेश्वर कबीर जी के मुख कमल से ऐसे पुख्ता प्रमाण (सटीक प्रमाण) सुनकर गरूड़ देव चरणों में गिर गए। अपने भाग्य को सराहा और कहा कि जो देव सृष्टि की रचना, ब्रह्मा-विष्णु-महेश तथा दुर्गा देव तथा निरंजन तक की उत्पत्ति जानता है, वह ही रचनहार परमेश्वर है। आज तक किसी ने ऐसा ज्ञान नहीं बताया। यदि किसी जीव को पता होता, चाहे वह ऋषि-महर्षि भी है तो

अवश्य कथा करता। मैंने बड़े-बड़े मण्डलेश्वरों के प्रवचन सुने हैं। किसी के पास यह ज्ञान नहीं है। इनको वेदों तथा गीता का भी ज्ञान नहीं है। आप स्वयं को छुपाए हुए हो। मैंने आपको पहचान लिया है। कृपा करके मुझे शरण में ले लो परमेश्वर।

परमेश्वर कबीर जी ने गरूड़ से कहा कि आप पहले अपने स्वामी श्री विष्णु जी से आज्ञा ले लो कि मैं अपना कल्याण कराना चाहता हूँ। एक महान संत मुझे मिले हैं। मैंने उनका ज्ञान सुना है। यदि आज्ञा हो तो मैं अपना कल्याण करा लूँ। मैं आपका दास नौकर हूँ, आप मालिक हैं। हमें सब समय इकट्ठा रहना है। यदि मैं छिपकर दीक्षा ले लूँगा तो आपको दुःख होगा। गरूड़ ने ऐसा ही किया। विष्णु जी से सब बात बताई। श्री विष्णु जी ने कहा मैं आपको मना नहीं करता, आप स्वतंत्र हैं। आपने अच्छा किया, सत्य बता दिया। मुझे कोई एतराज नहीं है।

हे धर्मदास! मैंने गरूड़ को प्रथम मंत्र दीक्षा पाँच नाम (कमलों को खोलने वाले प्रत्येक देव की साधना के नाम) की दी। गरूड़ देव ने कहा कि हे गुरूदेव! यह मंत्र तो इन्हीं देवताओं के हैं। अमर पुरूष का मंत्र तो नहीं है। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि ये इनकी पूजा के मंत्र नहीं हैं। ये इन देवताओं को अपने अनुकूल करके इनके जाल से छूटने की कूँजी (Key) है। इनके वशीकरण मंत्र हैं। जैसे भैंसे को आकर्षित करने के लिए यदि उसको भैंसा-भैंसा करते हैं तो वह आवाज करने वाले की ओर देखता तक नहीं। जब उसका वशीकरण नाम पुकारा जाता है, हुर्र-हुर्र तो वह तुरंत प्रभाव से सक्रिय हो जाता है। आवाज करने वाले की ओर दौड़ा आता है। आवाज करने वाला व्यक्ति उससे अपनी भैंस को गर्भ धारण करवाता है। इसी प्रकार आप यदि श्री विष्णु जी के अन्य किसी नाम का जाप करते रहें, वे ध्यान नहीं देते। जब आप इस मंत्र का जाप करोगे तो विष्णु देव जी तुरंत प्रभावित होकर साधक की सहायता करते हैं। ये देवता तीनों लोकों (पृथ्वी, स्वर्ग तथा पाताल) के प्रधान देवता हैं। ये केवल संस्कार कर्म लिखा ही दे सकते हैं। इस मंत्र के जाप से हमारे पुण्य अधिक तथा भक्ति धन अधिक संग्रहित हो जाता है। उसके प्रतिफल में ये देवता साधक की सहायता करते हैं। इस प्रकार इनकी साधना तथा पूजा का अंतर समझना है। जैसे अपने को आम खाने हैं तो पहले मेहनत, मजदूरी, नौकरी करेंगे, धन मिलेगा तो आम खाने को मिलेगा। नौकरी पूजा नहीं होती। उस समय हमारा पूज्य आम होता है। पूज्य की प्राप्ति के लिए किया गया प्रयत्न नौकरी है। इसी प्रकार अपने पूज्य परमेश्वर कबीर जी हैं तथा अमर लोक है। उसके लिए हम श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु, श्री शिव, श्री गणेश तथा श्री दुर्गा जी की मजदूरी करते हैं, साधना करते हैं। पूजा परमेश्वर की करते हैं। गरूड़ जी बड़े प्रसन्न हुए और इस अमृत ज्ञान की चर्चा हेतु श्री ब्रह्मा जी से मिले। उनको बताया कि मैंने एक महर्षि से अद्भुत ज्ञान सुना है। मुझे उनका ज्ञान सत्य लगा है। उन्होंने बताया कि आप (ब्रह्मा), विष्णु तथा शिव नाशवान हो, पूर्ण करतार नहीं हो। आप केवल भाग्य में लिखा ही दे सकते हो। आप किसी की आयु वृद्धि नहीं कर सकते हो। आप किसी के कर्म कम-अधिक नहीं कर सकते। पूर्ण परमात्मा अन्य है, अमर लोक में रहता है। वह पाप कर्म काट देता है। वह मृत्यु को टाल देता है। आयु वृद्धि कर देता है। प्रमाण भी वेदों में बताया है। ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 161 मंत्र 2 में कहा है कि रोगी का रोग बढ़ गया है। वह मृत्यु को प्राप्त हो गया है। तो भी मैं उस भक्त को मृत्यु देवता से छुड़वा लाऊँ, उसको नवजीवन प्रदान कर देता हूँ। उसको पूर्ण आयु जीने के लिए देता हूँ।

ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 161 मंत्र 5 में कहा है कि हे पुनर्जन्म प्राप्त प्राणी! तू मेरी भक्ति

करते रहना। यदि तेरी आँखें भी समाप्त हो जाएंगी तो तेरी आँखें स्वस्थ कर दूँगा, तेरे को मिलूंगा भी यानि मैं तेरे को प्राप्त भी होऊँगा।

ब्रह्मा जी को वेद मंत्र कंठस्थ हैं। तुरंत समझ गए, परंतु संसार में लोकवेद के आधार से ब्रह्मा जी अपने आपको प्रजापिता यानि सबकी उत्पत्तिकर्ता मान रहे थे। वेदों को कठंस्थ (याद) कर लेना भिन्न बात है। वेद मंत्रों को समझना विशेष ज्ञान है। मान-बड़ाई वश होकर ब्रह्मा जी ने कहा कि वेदों का ज्ञान मेरे अतिरिक्त विश्व में किसी को नहीं है। इन मंत्रों का अर्थ गलत लगाया है। कबीर परमेश्वर ने ऐसे व्यक्तियों के विषय में कहा है कि :-

कबीर, जान बूझ साच्ची तजैं, करै झूठ से नेह। ताकि संगत हे प्रभु, स्वपन में भी ना देय।।

ब्रह्मा जी गरूड़ के वचन सुनकर अति क्रोधित हुए और कहा कि तेरी पक्षी वाली बुद्धि है। तेरे को कोई कुछ कह दे। उसी की बातों पर विश्वास कर लेता है। तेरे को अपनी अक्ल नहीं है। ब्रह्मा जी ने उसी समय विष्णु, महेश, इन्द्र तथा सब देवताओं व ऋषियों को बुला लिया। सभा लग गई। ब्रह्मा जी ने उनको बुलाने का कारण बताया कि गरूड़ आज नई बात कर रहा है कि ब्रह्मा-विष्णु-महेश नाशवान हैं। पूर्ण परमात्मा कोई अन्य है। वह अमर लोक में रहता है। तुम कर्ता नहीं हो। यह बात सुनकर श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी बहुत क्रोधित हुए और गरूड़ को ब्रह्मा वाले उलाहणें (दोष निकालकर बुरा-भला कहना) कहे। फिर सबने मिलकर निर्णय लिया कि माता (दुर्गा) जी से सत्य जानते हैं। सब मिलकर माता के पास गए। यही प्रश्न पूछा कि क्या हमारे (ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव) से अन्य कोई पूर्ण प्रभु है। क्या हम नाशवान हैं? माता ने दो टूक जवाब दिया कि तुमको यह गलतफहमी (भ्रम) कब से हो गया कि तुम अविनाशी तथा जगत के कर्ता हो। यदि ऐसा है तो तुम मेरे भी कर्ता (बाप) हुए जबकि तुम्हारा जन्म मेरी कोख से हुआ है। वास्तव में परमेश्वर अन्य है, वही अविनाशी है। वही सबका कर्ता है। यह बात सुनकर सभा भंग हो गई, सब चले गए। परंतु ब्रह्मा-विष्णु-शिव जी के गले में यह सत्य नहीं उतर पा रहा था। उन्होंने गरूड़ को बुलाया। गरूड़ ने आकर प्रणाम किया। आदेश पाकर बैठ गया। तीनों देवताओं ने कहा, हे पक्षीराज! आपको कैसे विश्वास हो कि हम जगत के कर्ता नहीं हैं? आप जो चाहो, परीक्षा करो। गरूड़ जी उठकर उड़कर मेरे पास (कबीर जी के पास) आए तथा सब वतांत बताया। तब मैंने कहा कि बंग देश (वर्तमान में बांग्लादेश) में एक ब्राह्मण का बारह वर्षीय बालक है। उसकी आयु समाप्त होने वाली है। वह कुछ दिन का मेहमान है। मैंने उस बालक को शरण में लेने के लिए ब्रह्मा, विष्णु, शिव की स्थिति बताई जो गरूड़ तेरे को बताई है। उस बालक ने बहुत विवाद किया और मेरे ज्ञान को नहीं माना। तब मैंने उस बालक से कहा कि तेरी आयु तीन दिन शेष है। यदि तेरे ब्रह्मा-विष्णु-शिव समर्थ हैं तो अपनी रक्षा कराओ। मैं इतना कहकर अंतर्ध्यान हो गया। बालक बेचैन है। उस बालक को लेकर देवताओं के पास जाओ। उनसे कुछ बनना नहीं है। फिर आप मेरे से ध्यान से बातें करना। मैं तेरे को आगे क्या करना है, वह बताऊँगा। गरूड़ जी उस बालक को लेकर ब्रह्मा-विष्णु-शिव के पास गए। गरूड़ ने बालक को समझाया कि आप उन देवताओं से कहना कि हम आपके भक्त हैं। मेरे दादा-परदादा, पिता और मैंने सदा आपकी पूजा की है। मेरे जीवन के दो दिन शेष हैं। मेरी आयु भी क्या है? कपा मेरी आयु वद्धि कर दें। बच्चे ने यही विनय की तो तीनों ने कोशिश की परंतु व्यर्थ। फिर विचार किया कि धर्मराज (न्यायधीश) के पास चलते हैं। सबका हिसाब (account) उसी के पास है। उससे वद्धि करा देते हैं। यह विचार करके सबके सब

धर्मराज के पास गए। उनसे तीनों देवताओं ने कहा कि पहले तो यह बताओ कि इस ब्राह्मण बच्चे की कितनी आयु है? धर्मराज ने डॉयरी (रजिस्टर) देखकर बताया कि कल इसकी मत्यु हो जाएगी। तीनों देवताओं ने कहा कि आप इस बच्चे की आयु वद्धि कर दो। धर्मराज ने कहा, यह असंभव है। तीनों ने कहा कि हम आपके पास बार-बार नहीं आते, आज इज्जत-बेइज्जती का प्रश्न है। हमारे आये हुओं की इज्जत तो रख लो। धर्मराज ने कहा कि एक पल भी न बढ़ाई जा सकती है, न घटाई जा सकती है। यदि आप अपनी आयु इसको दे दो तो वद्धि कर सकता हूँ। यह सुनते ही सबकी हवा निकल गई। उस समय कहने लगे कि यह तो परमेश्वर ही कर सकता है। वहाँ से तुरंत चल पड़े और गरूड़ से कहा कि कोई और समर्थ शक्ति है तो तुम इसकी आयु बढ़वाकर दिखा दो। गरूड़ ने कबीर जी से ध्यान द्वारा (टेलीफोन से) सम्पर्क किया। परमेश्वर कबीर जी ने ध्यान द्वारा बताया कि आप इसके लिए मानसरोवर से जल ले आओ। वहाँ एक श्रवण नाम का भक्त मिलेगा। उसको मैंने सब समझा दिया है, आप अमत ले आओ। गरूड़ जी ने जैसी आज्ञा हुई, वैसा ही किया। अमत लाकर उस बच्चे को पिला दिया। उस बालक के पास मैं गया। गरूड़ ने उसे सब समझा दिया कि अमत तो बहाना है। ये स्वयं परमेश्वर हैं। इन्होंने जल मन्त्रित करके दिया था। बालक तुम दीक्षा ले लो। इस अमत से तो दस दिन जीवित रहोगे। बालक ने मेरे से दीक्षा ली। जब बालक 15 दिन तक नहीं मरा तो गरूड़ ने तीनों ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जी को बताया कि वह बालक जीवित है। मेरे गुरू जी से दीक्षा ले ली है। उन्होंने उस बच्चे को पूर्ण आयु जीने का आशीर्वाद दे दिया है। ब्रह्मा-विष्णु-महेश तीनों फिर धर्मराज के पास गए, साथ में गरूड़ भी गया। तीनों देवताओं ने धर्मराज से पूछा कि वह बालक कैसे जीवित है, उसको मर जाना चाहिए था। धर्मराज ने उसका खाता देखा तो उसकी आयु लम्बी लिखी थी। धर्मराज ने कहा कि यह ऊपर से ही होता है। यह तो कभी-कभी होता है। उस परमेश्वर की लीला को कौन जान सकता है? तीनों देवताओं को आश्चर्य हुआ, परंतु मान-बड़ाई के कारण प्रत्यक्ष देखकर भी सत्य को माना नहीं। अपना अहम भाव नहीं त्यागा। गरूड़ को विश्वास अटल हो गया।

कबीर, राज तजना सहज है, सहज त्रिया का नेह। मान बड़ाई ईर्ष्या, दुर्लभ तजना येह।।

इस गरूड़ बोध के अंत में वासुकी नाग कन्या वाला प्रकरण गलत तरीके से लिखा है। इसमें गरूड़ को गुरू पद पर चित्रार्थ कर रखा है। वह ऐसा नहीं है। जो भी किया, परमेश्वर कबीर जी ने किया है।

''अब पढ़ें कुछ अमतवाणी गरूड़ बोध से''

धर्मदास वचन

धर्मदास बीनती करै, सुनहु जगत आधार।
गरूड़ बोध भेद सब, अब कहो तत्त्व विचार।।

सतगुरू वचन (कबीर वचन)

प्रथम गरूड़ सों भेंट जब भयऊ। सत साहब मैं बोल सुनाऊ।
धर्मदास सुनो कहु बुझाई। जेही विधि गरूड़ को समझाई।।

गरूड़ वचन

सुना बचन सत साहब जबही। गरूड़ प्रणाम किया तबही।।

शीश नीवाय तिन पूछा चाहये। हो तुम कौन कहाँ से आये।।

ज्ञानी (कबीर) वचन

कहा कबीर है नाम हमारा। तत्त्वज्ञान देने आए संसारा।।
सत्यलोक से हम चलि आए। जीव छुड़ावन जग में प्रकटाए।।

गरूड़ वचन

सुनत बचन अचम्भो माना। सत्य पुरूष है कौन भगवाना।।
प्रत्यक्षदेव श्री विष्णु कहावै। दश औतार धरि धरि जावै।।

ज्ञानी (कबीर) बचन

तब हम कहया सुनो गरूड़ सुजाना। परम पुरूष है पुरूष पुराना।।(आदि का)
वह कबहु ना मरता भाई। वह गर्भ से देह धरता नाहीं।।
कोटि मरे विष्णु भगवाना। क्या गरूड़ तुम नहीं जाना।।
जाका ज्ञान बेद बतलावैं। वेद ज्ञान कोई समझ न पावैं।।
जिसने कीन्हा सकल बिस्तारा। ब्रह्मा, विष्णु, महादेव का सिरजनहारा।।
जुनी संकट वह नहीं आवे। वह तो साहेब अक्षय कहावै।।

गरूड़ वचन

राम रूप धरि विष्णु आया। जिन लंका का मारा राया।।
पूर्ण ब्रह्म है विष्णु अविनाशी। है बन्दी छोड़ सब सुख राशी।।
तेतीस कोटि देवतन की बन्द छुड़ाई। पूर्ण प्रभु हैं राम राई।।

ज्ञानी (कबीर) वचन

तुम गरूड़ कैसे कहो अविनाशी। सत्य पुरूष बिन कटै ना काल की फांसी।।
जा दिन लंक में करी चढ़ाई। नाग फांस में बंधे रघुराई।।
सेना सहित राम बंधाई। तब तुम नाग जा मारे भाई।।
तब तेरे विष्णु बन्दन से छूटे। याकु पूजै भाग जाके फूटे।।
कबीर ऐसी माया अटपटी, सब घट आन अड़ी।
किस–किस कूं समझाऊँ, कूऐ भांग पड़ी।।

गरूड़ वचन

ज्ञानी गरूड़ है दास तुम्हारा। तुम बिन नहीं जीव निस्तारा।।
इतना कह गरूड़ चरण लिपटाया। शरण लेवों अविगत राया।।
कबहु ना छोड़ूँ तुम्हारा शरणा। तुम साहब हो तारण तरणा।।
पत्थर बुद्धि पर पड़े है ज्ञानी। हो तुम पूर्ण ब्रह्म लिया हम जानी।।

ज्ञानी (कबीर) वचन

तब हम गरूड़ कुं पाँच नाम सुनाया। तब वाकुं संशय आया।।
यह तो पूजा देवतन की दाता। या से कैसे मोक्ष विधाता।।
तुमतो कहो दूसरा अविनाशी। वा से कटे काल की फांसी।।
नायब से कैसे साहेब डरही। कैसे मैं भवसागर तिरही।।

ज्ञानी (कबीर) वचन

साधना को पूजा मत जानो। साधना कूं मजदूरी मानो।।
जो कोऊ आम्र फल खानो चाहै। पहले बहुते मेहनत करावै।।
धन होवै फल आम्र खावै। आम्र फल इष्ट कहावै।।
पूजा इष्ट पूज्य की कहिए। ऐसे मेहनत साधना लहिए।।
यह सुन गरूड़ भयो आनन्दा। संशय सूल कियो निकन्दा।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी से गरूड़ देव ने कहा कि हे परमेश्वर! आपने तो इन्हीं देवताओं के नाम मंत्र दे दिये। यह इनकी पूजा है। आपने बताया कि ये तो केवल 16 कला युक्त प्रभु हैं। काल एक हजार कला युक्त प्रभु है। पूर्ण ब्रह्म असँख्य कला का परमेश्वर है। आपने सष्टि रचना में यह भी बताया है कि काल ने आपको रोक रखा है। काल ब्रह्म के आधीन तीनों देवता ब्रह्मा, विष्णु, शिव जी हैं। हे परमेश्वर! नायब (उप यानि छोटा) से साहब (स्वामी-मालिक) कैसे डरेगा? यानि ब्रह्मा, विष्णु, शिव जी तो केवल काल ब्रह्म के नायब हैं। जैसे नायब तहसीलदार यानि छोटा तहसीलदार होता है। तो छोटे से बड़ा कैसे डर मानेगा? भावार्थ है कि ये काल ब्रह्म के नायब हैं। आपने इनकी भक्ति बताई है, इनके मंत्र जाप दिए हैं। ये नायब अपने साहब (काल ब्रह्म) से हमें कैसे छुड़वा सकेंगे? तब परमेश्वर कबीर जी ने पूजा तथा साधना में भेद बताया कि यदि किसी को आम्र फल यानि आम का फल खाने की इच्छा हुई है तो आम फल उसका पूज्य है। उस पूज्य वस्तु को प्राप्त करने के लिए किया गया प्रयत्न साधना कही जाती है। जैसे धन कमाने के लिए मेहनत करनी पड़ती है। उस धन से आम मोल लेकर खाया जाता है। इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा हमारा इष्ट देव यानि पूज्य देव है। जो देवताओं के मंत्र का जाप मेहनत (मजदूरी) है। जो नाम जाप की कमाई रूपी भक्ति धन मिलेगा, उसको काल ब्रह्म में छोड़कर कर्जमुक्त होकर अपने इष्ट यानि पूज्य देव कबीर देव (कविर्देव) को प्राप्त करेंगे। यह बात सुनकर गरूड़ जी अति प्रसन्न हुए तथा गुरू के पूर्ण गुरू होने का भी साक्ष्य मिला कि पूर्ण गुरू ही शंका का समाधान कर सकता है और दीक्षा प्राप्ति की। गरूड़ को त्रेतायुग में शरण में लिया था। श्री विष्णु जी का वाहन होने के कारण तथा बार-बार उनकी महिमा सुनने के कारण तथा कुछ चमत्कार श्री विष्णु जी के देखकर गरूड़ जी की आस्था गुरू जी में कम हो गई, परंतु गुरू द्रोही नहीं हुआ। फिर किसी जन्म में मानव शरीर प्राप्त करेगा, तब परमेश्वर कबीर जी गरूड़ जी की आत्मा को शरण में लेकर मुक्त करेंगे। दीक्षा के पश्चात् गरूड़ जी ने ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जी से ज्ञान चर्चा करने का विचार किया। गरूड़ जी चलकर ब्रह्मा जी के पास गए। उनसे ज्ञान चर्चा की।

'''गरूड़ वचन ब्रह्मा के प्रति''

ब्रह्मा कहा तुम कैसे आये। कहो गरूड़ मोहे अर्थाय।।
तब हम कहा सुनों निरंजन पूता। आया तुम्हें जगावन सूता।।
जन्म–मरण एक झंझट भारी। पूर्ण मोक्ष कराओ त्रिपुरारी।।

''ब्रह्मा वचन''

हमरा कोई नहीं जन्म दाता। केवल एक हमारी माता।।
पिता हमारा निराकर जानी। हम हैं पूर्ण सारंगपाणी।।
हमरा मरण कबहु नहीं होवै। कौन अज्ञान में पक्षि सोवै।।

तबही ब्रह्मा विमान मंगावा। विष्णु, ब्रह्मा को तुरंत बुलावा।।
गए विमान दोनों पासा। पल में आन विराजे पासा।।
इन्द्र कुबेर वरूण बुलाए। तेतिस करोड़ देवता आए।।
आए ऋषि मुनी और नाथा। सिद्ध साधक सब आ जाता।।
ब्रह्मा कहा गरूड़ नीन्द मैं बोलै। कोरी झूठ कुफर बहु तोलै।।
कह कोई और है सिरजनहारा। जन्म–मरण बतावै हमारा।।
ताते मैं यह मजलिस जोड़ी। गरूड़ के मन क्या बातां दौड़ी।।
ऋषि मुनि अनुभव बताता। ब्रह्मा, विष्णु, शिव विधाता।।
निर्गुण सरगुण येही बन जावै। कबहु नहीं मरण मैं आवै।।

''विष्णु वचन''

पक्षीराज यह क्या मान में आई। पाप लगै बना आलोचक भाई।।
हमसे और कौन बडेरा दाता। हमहै कर्ता और चौथी माता।।
तुमरी मति अज्ञान हरलीनि। हम हैं पूर्ण करतार तीनी।।

''महादेव वचन''

कह महादेव पक्षी है भोला। हृदय ज्ञान इन नहीं तोला।।
ब्रह्मा बनावै विष्णु पालै। हम सबका का करते कालै।।
और बता गरूड़ अज्ञानी। ऋषि बतावै तुम नहीं मानी।।
चलो माता से पूछै बाता। निर्णय करो कौन है विधाता।।
सबने कहा सही है बानी। निर्णय करेगी माता रानी।।
सब उठ गए माता पासा। आपन समस्या करी प्रकाशा।।

''माता वचन''

कहा माता गरूड़ बताओ। और कर्ता है कौन समझाओ।।

''गरूड़ वचन''

मात तुम जानत हो सारी। सच्च बता कहे न्याकारी।।
सभा में झूठी बात बनावै। वाका वंश समूला जावै।।
मैं सुना और आँखों देखा। करता अविगत अलग विशेषा।।
जहाँ से जन्म हुआ तुम्हारा। वह है सबका सरजनहारा।।
वेद जाका नित गुण गावैं। केवल वही एक अमर बतावै।।
मरहें ब्रह्मा विष्णु नरेशा। मर हैं सब शंकर शेषा।।
अमरपुरूष सत पुर रहता। अपने मुख सत्य ज्ञान वह कहता।।
वेद कहे वह पंथ्वी पर आवै। भूले जीवन को ज्ञान बतलावै।।
क्या ये झूठे शास्त्र सारे। तुम व्यर्थ बन बैठे सिरजनहारे।।
मान बड़ाई छोड़ो भाई। ताकि भक्ति करे अमरापुर जाई।।
माता कहना साची बाता। बताओ देवी है कौन विधाता।।

''माता (दुर्गा) वचन''

माता कह सुनो रे पूता। तुम जोगी तीनों अवधूता।।

भक्ति करी ना मालिक पाए। अपने को तुम अमर बताए।।
वह कर्ता है सबसे न्यारा। हम तुम सबका सिरजनहारा।।
गरूड़ कहत है सच्ची बानी। ऐसे बचन कहा माता रानी।।
सब उठ गए अपने अस्थाना। साच बचन काहु नहीं माना।।

''गरूड़ वचन''

ब्रह्मा विष्णु मोहे बुलाया। महादेव भी वहाँ बैठ पाया।।
तीनों कहे कोई दो प्रमाणा। तब हम तोहे साचा जाना।।
मैं कहा गुंगा गुड़ खावै। दुजे को स्वाद क्या बतलावै।।
मैं जात हूँ सतगुरू पासा। ला प्रमाण करू भ्रम विनाशा।।
त्रिदेव कहें लो परीक्षा हमारी। पूर्ण करें तेरी आशा सारी।।
हमही मारें हमही बचावैं। हम रहत सदा निर्दावैं।।
गरूड़ कहा हम करें परीक्षा। तुम पूर्ण तो लूं तुम्हारी दीक्षा।।
उड़ा वहाँ से गुरू पासे आया। सब वंत्तात कह सुनाया।।

''सतगुरू (कबीर) वचन''

गरूड़ सुनो बंग देश को जाओ। बालक मरेगा कहो उसे बचाओ।।
दिन तीन की आयु शेषा। करो जीवित ब्रह्मा विष्णु महेशा।।
फिर हम पास आना भाई। हम बालक को देवैं जिवाई।।
बंग देश में गरूड़ गयो, बालक लिया साथ।
त्रिदेवा से अर्ज करी, जीवन दे बालक करो सुनाथ।।

''त्रिदेव वचन''

धर्मराज पर है लेखा सारा। बासे जाने सब विचारा।।
गरूड़ और बालक सारे। गए धर्मराज दरबारे।।
धर्मराज से आयु जानी। दिन तीन शेष बखानी।।
याकी आयु बढ़ै नाहीं। मंत्यु अति नियड़े आयी।।
त्रिदेव कहँ आए राखो लाजा। हम क्या मुख दिखावैं धर्मराजा।।
धर्म कह आपन आयु दे भाई। तो बालक की आयु बढ़ जाई।।
चले तीनों न नहीं पार बसाई। बने बैठे थे समर्थ राई।।
सुन गरूड़ यह सत्य है भाई। आई मंत्यु न टाली जाई।।

गरूड़ वचन

समर्थ में गुण ऐसा बताया। आयु बढ़ावै और अमर करवाया।।
अब मैं जाऊँ समर्थ पासा। बालक बचने की पूरी आशा।।
गया गरूड़ कबीर की शरणा। दया करो हो साहब जरणा(विश्वास)।।

''कबीर साहब वचन''

सुनो गरूड़ एक अमर बानी। यह अमंत ले बालक पिलानी।।
जीवै बालक उमर बढ़ जावै। जग बिचरे बालक निर्दावै।।
बालक लाना मेरे पासा। नाम दान कर काल विनाशा।।

जैसा कहा गरूड़ ने कीन्हा। बालक कूं जा अमृत दीना।।
ले बालक तुरंत ही आए। सतगुरू से दीक्षा पाए।।
आशीर्वाद दिया सतगुरू स्वामी। दया करि प्रभु अंतर्यामी।।
बदला धर्मराज का लेखा। ब्रह्मा विष्णु शिव आँखों देखा।।
गए फिर धर्मराज दरबारा। लेखा फिर दिखाऊ तुम्हारा।।
धर्मराज जब खाता खोला। अचर्ज देख मुख से बोला।।
परमेश्वर का यह खेल निराला। उसका क्या करत है काला।।
वो समर्थ राखनहारा। वाने लेख बदल दिया सारा।।
सौ वर्ष यह बालक जीवै। भक्ति ज्ञान सुधा रस पीवै।।
यह भी लेख इसी के माहीं। आँखों देखो झूठी नाहीं।।
देखा लेखा तीनों देवा। अचर्ज हुआ कहूँ क्या भेवा।।
बोले ब्रह्मा विष्णु महेशा। परम पुरूष है कोई विशेषा।।
जो चाहे वह मालिक करसी। वाकी शरण फिर कैसे मरसी।।
पक्षीराज तुम साचे पाये। नाहक हम मगज पचाऐ।।
करो तुम जो मान मन तेरा। तुम्हरा गरूड़ भाग बड़ेरा।।
पूर्ण ब्रह्म अविनाशी दाता। सच्च में है कोई और विधाता।।
इतना कह गए अपने धामा। गरूड़ और बालक करि प्रणामा।।
भक्ति करी बालक चित लाई। गरूड़ अरू बालक भये गुरू भाई।।
धर्मदास यह गरूड़ को बोधा। एक–एक वचन कहा मैं सोधा।।

कबीर सागर के अध्याय ''गरूड़ बोध'' का सारांश सम्पूर्ण हुआ।

।।सत साहेब।।

अध्याय ''हनुमान बोध'' का सारांश

कबीर सागर के पष्ठ 113 पर 12वां अध्याय ''हनुमान बोध'' है।

कबीर सागर के इस अध्याय में पवन सुत हनुमान जी को शरण में लेने का प्रकरण है। धर्मदास जी ने प्रश्न किया कि हे परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी! क्या आप अच्छी आत्मा पवन पुत्र हनुमान जी को भी मिले हो।

उत्तर (परमेश्वर कबीर जी का)= हाँ।

प्रश्न (धर्मदास जी का) :- हे प्रभु! क्या उन्होंने भी आपके ज्ञान को स्वीकारा? वे तो मेरे की तरह श्री राम उर्फ विष्णु जी में अटूट श्रद्धा रखते थे। उनको आपकी शरण में लेना तो सूर्य पश्चिम से उदय करने के समान है।

उत्तर (परमेश्वर कबीर जी का) :- परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास को पवन तनय हनुमान जी को शरण में लेने का वतांत बताया। आप जी पढ़ें सरलार्थकर्ता (रामपाल दास) द्वारा हनुमान जी को कैसे परमेश्वर कबीर जी ने शरण में लिया तथा रामायण का संक्षिप्त वर्णन :-

रामायण ग्रन्थ में प्रकरण आता है कि एक बाली नाम का राजा था। उसका भाई सुग्रीव था। किसी कारण से बाली ने अपने भाई सुग्रीव को अपने राज्य से निकाल दिया। उसकी पत्नी को अपने कब्जे में पत्नी बनाकर रखा। सुग्रीव दूर देश में मायूस भ्रमण कर रहा था। हनुमान जी राम-राम करते हुए एक पहाड़ पर बैठे दिखाई दिए। दोनों की मित्रता हो गई। सुग्रीव ने अपना दुःख हनुमान जी से साझा किया। हनुमान जी ने शरणागत सुग्रीव की सहायता करने का वचन दिया। सुग्रीव ने हनुमान जी को बताया कि बाली में ऐसी सिद्धि है कि कोई उससे युद्ध करता है तो सामने वाले की आधी शक्ति बाली में प्रवेश कर जाती है। यह बात जानकर हनुमान जी भी शान्त रहे। युद्ध करने का इरादा त्याग दिया। उस समय रामचन्द्र पुत्र राजा दशरथ जी को बनवास हुआ था। उनकी पत्नी सीता जी तथा भाई लक्ष्मण भी वन में साथ गए थे। श्रीलंका के राजा रावण की बहन स्वरूपणखां ने लक्ष्मण को देखा तो उससे विवाह करने का प्रस्ताव रखा। लक्ष्मण ने कहा कि मेरा विवाह हो चुका है। (लक्ष्मण की पत्नी का नाम उर्मिला था।) शुर्पणखा ने बार-बार विवाह करने का आग्रह किया तो शेषनाग अवतार लक्ष्मण ने क्रोधवश उसका नाक काट दिया। शुर्पणखा ने अपनी दुर्दशा की दास्तां अपने भाई रावण से सुनाई और पूरा पता बताया। रावण ने प्रतिशोध लेने के लिए राम की पत्नी सीता का अपहरण करने की योजना बनाई। साधु वेश बनाकर अपने मामा मारीच के सहयोग से रावण ने सीता जी का अपहरण कर लिया।

सीता जी की खोज में श्री राम जी तथा श्री लक्ष्मण जी वन-वन भटक रहे थे। उसी समय उनको श्री हनुमान जी तथा श्री सुग्रीव जी मिले। आपस में परिचय हुआ। सुग्रीव ने श्री राम से अपना कष्ट बताया। श्री राम चन्द्र जी ने शर्त रखी कि यदि मैं आपका राज्य आपको दिला दूँ तो आपको सीता की खोज तथा वापसी के लिए मेरा सहयोग करना होगा। बात पक्की हो गई। श्री रामचन्द्र जी ने वक्ष की ओट लेकर बाली को युद्ध करके मारकर सुग्रीव को राज तिलक कर दिया। सुग्रीव ने अपनी प्रतिज्ञा का पालन किया। सीता जी की खोज के लिए चारों दिशा में खोजी भेजे गए। जटायु पक्षी ने श्री राम को बताया कि सीता माता को लंकेश्वर रावण उठा ले गया। उससे मैंने माता को छुड़वाने की चेष्टा की तो मेरे पँख काट दिए। रावण से बातचीत करके सीता को लौटाने के लिए श्री राम जी ने हनुमान को राजदूत बनाया। श्री रामचन्द्र जी ने श्री हनुमान जी

को सीता को विश्वास दिलाने के लिए अपनी अँगूठी दी जिस पर श्री राम लिखा था। सीता उस अँगूठी से हनुमान पर विश्वास कर सकती थी कि जो मुझसे मिलने आया है, वह श्री राम का भेजा हुआ है। हनुमान जी श्री राम की मुंद्री लेकर आकाश मार्ग से उड़कर श्रीलंका में गए। रावण का एक नौ लखा बाग था। उसमें सीता जी को रावण राक्षस ने कैद कर रखा था। हनुमान जी ने सीता माता को अँगूठी देकर अपना विश्वास दिलाया। सीता जी ने अपना सर्व कष्ट जो राक्षस रावण दे रहा था, हनुमान जी को बताया। सीता जी ने अपना कंगन (सुहाग का कड़ा) हाथ से निकालकर हनुमान जी को दिया। कहा कि भाई! आप यह कंगन श्री राम जी को दिखाओगे, तब उनको विश्वास होगा कि तुम सीता की खोज करके आए हो। हनुमान जी के साथ सीता जी ने आने से इंकार कर दिया कि मैं तेरे साथ नहीं चलूँगी। हनुमान जी ने फल खाने की इच्छा व्यक्त की तो सीता ने कहा, भाई! कोई फल झड़कर गिरा हो, वह फल खा सकते हो। फल तोड़कर खाने का मुझे भी आदेश नहीं है। इस बात से क्षुब्ध होकर हनुमान जी ने पहले तो पेड़ को गिराया। फिर पके हुए फल खाये। फिर उस वृक्ष को समुद्र में फैंक दिया। ऐसे हनुमान जी ने रावण का नौ लखा बाग उजाड़कर वृक्ष समुद्र में फैंक दिए। लंका के राजा रावण ने हनुमान की पूँछ पर कपड़े-रूई बाँधकर आग लगा दी थी। हनुमान ने अपनी दुम की अग्नि से रावण की लंका को आग के हवाले कर दिया।

इसके पश्चात् आकाश मार्ग से उड़कर समुद्र पार करके एक पहाड़ी पर उतरे। सुबह का समय था। पहाड़ पर जलाशय पवित्र जल से भरा था। पास ही बाग था जिसमें फलदार वृक्ष थे। हनुमान जी को भूख लगी थी। स्नान करने का विचार किया। कंगन को एक पत्थर पर रख दिया। स्नान करते समय भी हनुमान की एक आँख कंगन पर लगी थी। लंगूर बंदर आया। उसने कंगन उठाया और चल पड़ा। हनुमान जी को चिंता बनी कि कहीं बंदर इस कंगन को समुद्र में न फैंक दे, मेर परिश्रम पर पानी न फिर जाए। अब लंका में जाने का रास्ता भी बंद हो गया है। अजीब परेशानी में हनुमान बंदर के पीछे-पीछे चला। देखते-देखते बंदर ने वह कंगन एक ऋषि की कुटिया के बाहर रखे एक घड़े में डाल दिया और आगे दौड़ गया। हनुमान जी ने राहत की श्वांस ली। कलश में झांककर कंगन निकालना चाहा तो देखा घड़े में एक जैसे अनेकों कंगन थे। हनुमान जी को फिर समस्या हुई। कंगन उठा-उठाकर देखे, कोई अंतर नहीं पाया। अपना कंगन कौन-सा है? कहीं मैं गलत कंगन ले जाऊँ और श्री राम कहे, यह कंगन सीता का नहीं है, मेरा प्रयत्न व्यर्थ हो जाएगा। सामने एक ऋषि हनुमान जी की परेशानी को देखकर मुस्करा रहा था। कुटिया के बाहर बैठा था। ऋषि जी बोले, आओ पवन पुत्र! किस समस्या में हो? हनुमान जी ने कहा कि ऋषि जी! श्री रामचन्द्र जी की पत्नी को लंका का राजा रावण अपहरण करके ले गया है। मैं पता करके आया हूँ। ऋषि जी ने कहा कि कौन-से नम्बर वाले रामचन्द्र की बात कर रहे हो? हनुमान जी को आश्चर्य हुआ कि ऋषि अपने होश-हवास में है या भाँग पी रखी है? हनुमान जी ने पूछा, हे ऋषि जी! क्या राम कई हैं? ऋषि जी ने कहा, हाँ, कई हो चुके हैं और आगे भी जन्मते-मरते रहेंगे। हनुमान जी को ऋषि का व्यवहार उचित नहीं लगा, परंतु ऋषि जी से विवाद करना भी हित में नहीं जाना। ऋषि जी ने पूछा, आप फल खाओ। खाना बनाता हूँ, भोजन खाओ। थके हो, विश्राम करो। हनुमान जी ने कहा, ऋषि जी! मेरी तो चैन-अमन ही समाप्त हो गई है। मेरे को सीता माता ने कंगन दिया था। उस कंगन के बिना श्री रामचन्द्र जी को विश्वास नहीं होना कि सीता की खोज हो चुकी है। उस कंगन को पत्थर पर रखकर मैं स्नान कर रहा था। बंदर ने उठाकर घड़े में डाल

दिया। मेरी पहचान में नहीं आ रहा कि वास्तविक कंगन कौन-सा है। मेरे को तो सब एक जैसे लग रहे हैं। ऋषि रूप में बैठे परमेश्वर कबीर जी ने कहा, हे पवन के लाडले! आप कोई एक कंगन उठा ले जाओ, कोई अंतर नहीं है और कहा कि जितने कंगन इसमें पड़े हैं। इतनी बार श्री राम पुत्र दशरथ को बनवास तथा सीता हरण और हनुमान द्वारा खोज हो चुकी है। हनुमान जी ने कहा, ऋषि जी! यह बताओ, आपकी बात मानता हूँ। पूछता हूँ कि प्रत्येक बार सीता हरण, हनुमान का खोज करके कंगन लाना और बंदर द्वारा घड़े में डालना होता है तो कंगन तो यहाँ रह गया, हनुमान लेकर क्या जाता है? ऋषि मुनीन्द्र जी ने कहा कि मैंने इस घड़े को आशीर्वाद दे रखा है कि जो वस्तु इसमें गिरे, वह दो एक समान हो जाऐं। यह कहकर ऋषि जी ने एक मिट्टी का कटोरा घड़े में डाला तो एक और कटोरा वैसा ही बन गया। ऋषि मुनीन्द्र जी ने कहा, हे हनुमान! आप एक कंगन ले जाओ, कोई परेशानी नहीं होगी। हनुमान जी के पास कोई अन्य विकल्प नहीं बचा था। उस घड़े से एक कंगन निकालकर उड़ चले।

श्री रामचन्द्र जी को हनुमान जी ने सीता जी की निशानी कंगन दिया तथा जो-जो बातें माता सीता ने कही थी, वे सब बताई। श्री रामचन्द्र जी कंगन देखकर भावुक हो गए। हनुमान जी को सीने से लगाया। कहा, हे संतजन! मैं आपका अहसान कैसे चुका पाऊँगा? आपने अपना जीवन जोखिम में डालकर मेरा महा कठिन कार्य किया है। यह कंगन सीता का ही है। अब सभा बुलाता हूँ। आगे का कार्यक्रम तैयार करते हैं। समुद्र पर पुल बनाने का विचार किया गया। नल-नील के हाथों में ऋषि मुनीन्द्र के आशीर्वाद से शक्ति थी कि वे अपने हाथों से जल में कोई वस्तु डाल देते तो वह डूबती नहीं थी। पत्थर, कांसी के बर्तन आदि जो भी वस्तु वे डालते, वह जल पर तैरती थी। उस समय नल-नील ने अभिमान करके अपनी महिमा की इच्छा से अपने गुरू ऋषि मुनीन्द्र का नाम नहीं लिया। जिस कारण से उनकी वह शक्ति समाप्त हो गई। रामचन्द्र जी तथा सर्व उपस्थित योद्धा हनुमान सहित महादुःखी हुए। तीन दिन तक श्री राम घुटनों पानी में खड़ा रहा। रास्ता देने की प्रार्थना करता रहा, परंतु समुद्र टस से मस नहीं हुआ। तब श्री राम ने लक्ष्मण से कहा कि मेरा अग्नि बाण निकाल, समुद्र को फूँक देता हूँ। लातों के भूत बातों से नहीं मानते। उसी समय समुद्र विप्र रूप धारकर श्री राम के सामने करबद्ध होकर खड़ा हो गया तथा कहा कि भगवन! मेरे अंदर संसार बसा है। आप पाप के भागी मत बनो। आप ऐसा करो कि सर्प भी मर जाए और लाठी भी न टूटे।

आपकी सेना में नल-नील नाम के दो सैनिक हैं। उनको उनके गुरू जी का आशीर्वाद है। उनके हाथों से पत्थर भी मेरे ऊपर तैर सकते हैं। तब नल-नील से पत्थर डालकर दिखाने को कहा तो नल-नील ने अपनी महिमा चाही और गुरू को याद नहीं किया। जिस कारण से ऋषि मुनीन्द्र जी ने उनकी शक्ति छीन ली, पत्थर डूब गए। समुद्र ने उनकी गलती बताई। तब नल-नील जी ने अपने गुरू जी को याद किया। श्री रामचन्द्र जी को भी महसूस हुआ कि जब गुरू अपने शिष्यों को शक्ति दे सकता है तो मेरे कार्य को भी कर सकते हैं। श्री रामचन्द्र जी विष्णु जी के अवतार थे। श्री विष्णु काल निरंजन के पुत्र हैं। जिस समय परमेश्वर कबीर जी प्रथम बार काल के लोक में आए थे तो ज्योति निरंजन ने पहले तो परमेश्वर के साथ झगड़ा किया था, जब वश नहीं चला तो चरणों में गिरकर क्षमा याचना की और कुछ आशीर्वाद भी लिए। उनमें से एक यह भी था कि मेरा अंश विष्णु त्रेतायुग में रामचन्द्र नाम से राजा दशरथ के घर जन्म लेगा, उसको बनवास होगा। उसके साथ उसकी पत्नी सीता भी होगी। उसे एक राक्षस लंका नगरी में उठाकर ले जाएगा। तब

रामचन्द्र समुद्र के ऊपर पुल बनाना चाहेगा, वह नहीं बना पाएगा। आप वह पुल बनवाना। दूसरा आशीर्वाद लिया था कि द्वापर युग में वही कष्ण रूप में जन्मेगा। मत्यु उपरांत वह जगन्नाथ नाम से पुरी नगर में समुद्र के किनारे मन्दिर बनवाएगा। समुद्र उसको बनने नहीं देगा। आप उस मंदिर की समुद्र से रक्षा करना। परमेश्वर कबीर जी ने कहा था कि मैं वह कार्य करूँगा। उसी वचन का पालन करने के लिए ऋषि मुनीन्द्र रूप में परमेश्वर कबीर जी सेतुबन्द पर प्रकट हो गए और आते-आते पर्वत के चारों ओर अपनी सोटी (डण्डी) से रेखा अंकित कर आए। नल-नील ने दूर से अपने गुरू जी को पहचान लिया और कहा, हमारे गुरू जी आ गए हैं। श्री रामचन्द्र जी ने अपनी समस्या बताई तथा विनम्र भाव से अपने कार्य की सिद्धि के लिए आशीर्वाद माँगा। परमेश्वर ने कहा, नल-नील ने गलती की। जिस कारण से इनकी शक्ति क्षीण हो गई है। मैंने सामने वाले पर्वत के चारों ओर रेखा लगाई है। उसके अंदर-अंदर के पत्थर लकड़ी से भी हल्के कर दिए हैं, वे डूबेंगे नहीं। हनुमान जी राम भक्त थे। उन्होंने उन पत्थरों पर राम-राम लिखा और उठाकर चले और रखा तो पत्थर डूबे नहीं। नल-नील शिल्पकार यानि निपुण राज-मिस्त्री भी थे। जिस कारण से नल तथा नील ने पत्थरों को तरासकर एक-दूसरे में फँसाकर जोड़ा था। पहले श्री राम से पत्थर तिरे नहीं, नल-नील भी असफल हुए। हनुमान खड़ा-खड़ा राम-राम ही कर रहा था। चाहता भी था कि पत्थर तैरें, परंतु सब व्यर्थ हुआ। ऋषि मुनीन्द्र जी (कबीर जी) ने पत्थर हल्के किए थे। जिस कारण से पत्थर समुद्र में डूबे नहीं थे। हनुमान जी तो अपना राम-राम का पाठ करने के लिए श्रद्धा से राम-राम पत्थरों पर लिख रहे थे। वे तो जहाँ भी बैठते थे, वहीं पेड़-पौधों पर राम-राम लिखते रहते थे। हनुमान जी तो श्री रामचन्द्र जी पुत्र दशरथ को जानते भी नहीं थे। उससे पहले भी राम-राम का जाप किया करते थे। जैसा कि लोकवेद (दन्त कथा) सुनते आए हैं कि नल-नील ने पत्थर तैराए थे, तब पुल बना। कोई कहता था कि हनुमान जी ने पत्थरों पर राम-राम लिखा। जिस कारण से पत्थर तैरे थे। यह भी सुनते थे कि श्री राम ने पत्थर तैराए थे। कारण यह रहा है कि जो बातें पत्थर तैराने की हुई थी और मुनीन्द्र ऋषि जी ने कहा था कि मैंने पर्वत का पत्थर हल्का कर दिया है। यह वार्ता 20-30 व्यक्तियों के समक्ष हुई थी। शेष करोड़ों व्यक्ति युद्ध के लिए आए थे, वे तो आज्ञा मिलते ही पत्थर लाने लगे। उन्होंने देखा कि हनुमान जी राम-राम लिख रहे थे। अन्य उन पत्थरों को उठा-उठाकर ला रहे थे। आगे नल-नील पत्थरों से पुल बना रहे थे। श्री रामचन्द्र जी नल-नील को शाबाशी दे रहे थे। अन्य उपस्थित व्यक्तियों ने एक-दूसरे को बताया कि हनुमान जी ने पत्थरों के ऊपर राम-राम लिख दिया। जिस कारण से पत्थर जल पर तैर रहे हैं। कुछ को लगा कि नल-नील के हाथों में करामात है। जिस कारण से पत्थर तैर रहे हैं। इस प्रकार यह गलतफहमी यानि भ्रमणा फैल गई। पुल बनाकर युद्ध में लग गए। अधिकतर मर गए, कुछ बचे वे अपने-अपने घर चले गए। उन्होंने अपने-अपने नगर-गाँव में यह गलत सूचना फैला दी जो आज तक निर्विवाद चल रही है। सच्चाई यह है जो इस दास (रामपाल दास) ने बताई है। युद्ध हुआ। श्री राम की सेना पर नाग फांस शस्त्र छोड़ा गया। जिस कारण से श्री राम, हनुमान, जाम्बवंत, सुग्रीव, अंगद सहित सर्व सेना नागों (सर्पों) द्वारा बाँध दी गई। सर्प लिपट गए। हाथों को भी शरीर के साथ जकड़ दिया। जैसे ईखों को किसान बाँध देता है, ऐसे निष्क्रिय हो गए। तब गरूड़ को बुलाया गया। गरूड़ ने सर्व नाग काटे। तब सर्व सेना तथा श्री राम बँधन मुक्त हुए। लक्ष्मण को तीर लगने से मूर्छा आ गई थी।(कोमा में चला गया था।) तब हनुमान जी लंका से वैद्य को उठाकर लाए। वैद्य ने कहा कि द्रोणागिरी पर्वत पर संजीवनी बूटी है। उसकी पहचान है कि वह रात्रि में

जुगनू की तरह जगती है। सूर्योदय से पहले वह जड़ी लाई जाए तो लक्ष्मण जीवित हो सकता है, देर हो गई तो मत्यु निश्चित है। हनुमान जी को यह कार्य श्री राम जी ने सौंपा कि बजरंग बली! तेरे बिना यह कार्य सम्भव नहीं है। आज्ञा मिलते ही हनुमान जी आकाश मार्ग से उड़ चले। द्रोणागिरी पर राक्षसों ने अपनी माया से सब अन्य नकली जड़ी-बूटियों में भी चमक भर दी। वैद्य ने बताया था कि वे बहुत कम सँख्या में होती हैं। दिन में उनकी पहचान नहीं हो सकती क्योंकि उसके आसपास वैसी ही औषधि के पौधे उगते हैं। हनुमान जी को समझते देर नहीं लगी। उन्होंने द्रोणागिरी पर्वत को ही उठा लिया और आकाश मार्ग से चल पड़े। हनुमान जी ने लक्ष्मण और श्री राम द्वारा अपने भाई भरत के विषय में बताई शक्ति खटक रही थी। वे कहते थे कि यदि आज भरत होते तो अकेले रावण को तथा इसके लाख पुत्रों तथा सवा लाख नातियों (पोतों) को यमलोक भेज देते। हनुमान जी के मन में आया कि चलते-चलते भरत की परीक्षा लेकर चलता हूँ। भरत को पता था कि रावण तथा राम युद्ध चल रहा है। आकाश मार्ग से पर्वत सहित हनुमान जी को जाते देख विचार किया कि कोई राक्षस जा रहा है। वह तो बहुत हानि कर सकता है। भरत जी ने तीर चलाया। हनुमान जी ने तीर लगने का बहाना करके हे राम-हे राम करते हुए धरती पर गिर गए। पर्वत को भी धरती के ऊपर रख दिया। राम शब्द सुनकर भरत को समझते देर नहीं लगी कि यह तो कोई अपने पक्ष का है। निकट जाकर पूछा, आप कौन हो? कहाँ जा रहे हो? पर्वत किसलिए उठाया है? मेरा नाम भरत है। मैं श्री राम व लक्ष्मण का भाई हूँ। हनुमान जी ने बताया कि मेरा नाम हनुमान है। राम-रावण का युद्ध चल रहा है। आपके भाई लक्ष्मण को तीर लगने से मूर्छा आई है। वैद्य ने द्रोणागिरी पर उपचार की औषधि बताई है। मेरी पहचान में नहीं आई, इसलिए पर्वत ही ले जा रहा हूँ। सूर्य उदय होने से पहले पहुँचना है। अन्यथा लक्ष्मण की मत्यु हो जाएगी। आपने बिना सोचे-समझे तीर मार दिया, अब मैं कैसे समय पर पहुँच पाऊँगा? सूर्योदय के पश्चात् लक्ष्मण संसार में नहीं रहेगा। भरत ने तीर मारने का कारण बताया तथा कहा, हे अंजनी के लाल! चिंता न करो। आप द्रोणागिरी को उठाओ और बाण के अग्र भाग पर बैठो। अपने दोनों पैर आगे-पीछे करके खड़े हो जाओ। मैं तीर द्वारा आपको पर्वत सहित आपसे भी पहले लंका में भेज दूँगा। हनुमान जी को अपनी शक्ति पर अत्यधिक गर्व था। जमीन पर रखे तीर पर दोनों पैर जँचाकर पर्वत को हाथ पर उठाकर हनुमान जी खड़े हो गए। भरत जी ने तीर को हनुमान जी तथा पर्वत सहित धरती से उठाकर धनुष की प्रत्यंचा पर चढ़ाने के लिए अपनी छाती के बराबर लाकर छोड़ने लगे तो हनुमान जी को आश्चर्य हुआ कि मेरे तथा द्रोणागिरी के भार को ऐसे उठा लिया जैसे केवल तीर को ही उठाया है। हनुमान जी ने कहा, हे दशरथ के लाल! मैं तो आपकी परीक्षा ले रहा था। मैं स्वस्थ हूँ। मैं स्वयं उड़कर समय से पहले पहुँच जाऊँगा। आपकी प्रशंसा आपके दोनों भाई किया करते थे। यदि भरत होता तो अकेला ही रावण तथा रावण की सेना के लिए पर्याप्त था। मेरे को उनकी बातों पर विश्वास नहीं हो पा रहा था। आज अपनी आँखों देख रहा हूँ। आप वास्तव में शूरवीर तथा बलवान हो। आपने मेरा भी अभिमान चकनाचूर कर दिया। यह कहकर हनुमान जी उस तीर से ही छलाँग लगाकर उड़ गए। उस समय तीर टस से मस नहीं हुआ।

विचार करने की बात है। यदि कोई भार उठाता है तो दोनों हाथों से या एक हाथ से पकड़कर उठा लेता है, परंतु उसी भार को किसी डण्डे से उठाना चाहे तो कदापि नहीं उठा सकता। थोड़े भार को ही डण्डे से उठा सकता है। भरत जी ने महाबली हनुमान जी तथा द्रोणागिरी को धरती से 50 फुट ऊपर उठा दिया। त्रेतायुग में मनुष्य की ऊँचाई लगभग 70 या 80 फुट होती

थी। यह कोई सामान्य बात नहीं है। कोई किसी व्यक्ति को डण्डे से उठाकर देखे, कैसा महसूस होगा? लक्ष्मण को वैद्य ने संजीवनी औषधि पिलाकर स्वस्थ किया। युद्ध हुआ, रावण मारा गया। रावण ने प्रभु शिव की भक्ति की थी। अपने दस बार शीश काटकर शिव जी को भेंट किए थे। दस बार शिव जी ने उसको वापिस कर दिए तथा आशीर्वाद दिया कि तेरी मत्यु दस बार गर्दन काटने के पश्चात् होगी। रावण के दस बार सिर काटे गए थे। फिर नाभि में तीर लगने से नाभि अमत नष्ट होने से रावण का वध हुआ था। दस बार सिर कटे, दस बार वापिस सिर धड़ पर लग गए। फिर विभीषण के बताने पर कि रावण की नाभि में अमत है, रामचन्द्र ने रावण की नाभि में तीर मारने की पूरी कोशिश कर ली थी, परंतु रावण का ध्यान भी वहीं केन्द्रित था कि नाभि पर तीर न लगे। रामचन्द्र जी ने परमेश्वर को याद किया कि इस राक्षस को मारो, मेरी सहायता करो। हे महादेव! हे देवों के देव! हे महाप्रभु! मेरी सहायता करो। आपकी बेटी (सीता) महाकष्ट में है। आपके बच्चे तेतीस करोड़ देवता भी इसी राक्षस ने जेल में डाल रखे हैं। परमेश्वर कबीर जी ने उसी समय गुप्त रूप में रामचन्द्र के हाथों पर अपने सूक्ष्म हाथ रखे और तीर रावण की नाभि में मारा। तब रावण मरा।

{परमेश्वर कबीर जी की प्राप्ति के पश्चात् संत गरीबदास जी (गाँव-छुड़ानी जिला-झज्जर, हरियाणा प्रान्त) ने परमेश्वर कबीर जी की महिमा बताई है। कबीर जी ने बताया है कि :-

कबीर, कह मेरे हंस को, दुःख ना दीजे कोय।
संत दुःखाए मैं दुःखी, मेरा आपा भी दुःखी होय।।
पहुँचुंगा छन एक मैं, जन अपने के हेत।
तेतीस कोटि की बंध छुटाई, रावण मारा खेत।।
जो मेरे संत को दुःखी करैं, वाका खोऊँ वंश।
हिरणाकुश उदर विदारिया, मैं ही मारा कंस।।
राम—कष्ण कबीर के शहजादे, भक्ति हेत भये प्यादे।।}

लंका का राज्य रावण के छोटे भ्राता विभीषण को दिया। सीता की अग्नि परीक्षा श्री राम ने ली। यदि रावण ने सीता मिलन किया है तो अग्नि में जलकर मर जाएगी। यदि सीता पाक साफ है तो अग्नि में नहीं जलेगी। सीता जी अग्नि में नहीं जली। उपस्थित लाखों व्यक्तियों ने सीता माता की जय बुलाई। सीता सती की पदवी पाई। रावण का वध आसौज मास की शुक्ल पक्ष की दसवीं को हुआ था।

रावण वध के 20 दिन बाद 14 वर्ष की वनवास अवधि पूरी करके श्रीराम, लक्ष्मण और सीता पुष्पक विमान में बैठकर अयोध्या नगरी में आए। उस दिन कार्तिक मास की अमावस्या थी। उस काली अमावस्या को गाय के घी के दीप अपने-अपने घरों के अंदर तथा ऊपर मण्डेरों पर जलाकर श्रीराम, सीता तथा लक्ष्मण के आगमन की खुशी मनाई। भरत ने अपने भाई श्री रामचन्द्र जी को राज्य लौटा दिया। एक दिन श्री रामचन्द्र जी से सीता ने कहा कि मैं युद्ध में लड़ने वाले योद्धाओं को कुछ इनाम देना चाहती हूँ। इनाम में सीता जी ने हनुमान जी को अपने गले से सच्चे मोतियों की माला निकालकर दे दी तथा कहा, हे हनुमान! यह अनमोल उपहार मैं आपको दे रही हूँ, बहुत सम्भाल कर रखना। हनुमान जी ने उस माला का मोती तोड़ा, फिर फोड़ा। फिर दूसरा, देखते-देखते सब मोती फोड़कर जमीन पर फैंक दिए। सीता जी को हनुमान जी का यह व्यवहार अच्छा नहीं लगा। क्रोध में भरकर कहने लगी कि हे मूर्ख! यह क्या कर दिया? ऐसी अनमोल माला

का सर्वनाश कर दिया। तू वानर का वानर ही रहा। चला जा मेरी आँखों के सामने से। उस समय श्री रामचन्द्र जी भी सीता जी के साथ ही सिंहासन पर विराजमान थे। उन्होंने भी हनुमान के इस व्यवहार को अच्छा नहीं माना और चुप रहे। हनुमान जी ने कहा, माता जी! जिस वस्तु में राम-नाम अंकित नहीं है, वह मेरे किसी काम की नहीं है। मैंने मोती फोड़कर देखे हैं, इनमें राम-नाम नहीं निकला। इसलिए मेरे काम की नहीं है। सीता जी ने कहा, क्या तेरे शरीर में राम-नाम लिखा है? फिर इस शरीर को किसलिए साथ लिए है, इसको फैंक दे फाड़कर। उसी समय हनुमान जी ने अपना सीना चाक (चीर) कर दिखाया। उसमें राम-राम लिखा था। हनुमान जी उसी समय अयोध्या त्यागकर वहाँ से कहीं दूर चले गए।

श्री रामचन्द्र जी अपनी अयोध्या नगरी की जनता के दुःख दर्द जानने के लिए गुप्त रूप से रात्रि के समय वेश बदलकर घूमा करते थे। कुछ वर्ष उपरांत जब राजा रामचन्द्र जी रात्रि में अयोध्या की गलियों में विचरण कर रहे थे। एक घर से ऊँची-ऊँची आवाज आ रही थी। राजा रामचन्द्र जी ने निकट जाकर वार्ता सुनी। एक धोबी की पत्नी झगड़ा करके घर से चली गई थी। वह दो-तीन दिन अपने बहन के घर रही, फिर लौट आई। धोबी उसकी पिटाई कर रहा था। कह रहा था कि निकल जा मेरे घर से, तू दो रात बाहर रहकर आई है। मैं तेरे को घर में नहीं रखूँगा। तू कलंकित है। वह कह रही थी, मुझे सौगंध भगवान की। सौगंध है राजा राम की, मैं पाक साफ हूँ। आपने मारा तो मैं गुस्से से अपनी बहन के घर गई थी, मैं निर्दोष हूँ। धोबी ने कहा कि मैं दशरथ पुत्र रामचन्द्र नहीं हूँ जो अपनी कलंकित पत्नी को घर ले आया है जो वर्षों रावण के साथ रही थी। अयोध्या नगरी के सब लोग-लुगाई चर्चा कर रहे हैं। क्या जीना है ऐसे व्यक्ति का जिसकी पत्नी अपवित्र हो गई हो। राजा राम ने धोबी के मुख से यह बात सुनी तो कानों में मानो गर्म तेल डाल दिया हो।

अगले दिन रामचन्द्र जी ने सभा बुलाई तथा नगरी में चल रही चर्चा के विषय में बताया और कहा कि यह चर्चा तब बंद हो सकती है, जब मैं सीता को घर से निकाल दूँगा। उसी समय सीता जी को सभा में बुलाया गया तथा घर से निकलने का आदेश दे दिया। कारण भी बता दिया। सीता जी ने विनय भी की कि हे स्वामी! आपने मेरी अग्नि परीक्षा भी ली थी। मैं भी आत्मा से कहती हूँ, रावण ने मेरे साथ मिलन नहीं किया। कारण था कि उसको एक ऋषि का शॉप था कि यदि तू किसी परस्त्री से बलात्कार करेगा तो तेरी उसी समय मत्यु हो जाएगी। यदि परस्त्री की सहमति से मिलन करेगा तो ऐसा नहीं होगा। जिस कारण से रावण मुझे छू भी नहीं सका मिलन के लिए। हे प्रभु! मैं गर्भवती हूँ। ऐसी स्थिति में कहाँ जाऊँगी? रावण जैसे व्यक्तियों का अभाव नहीं है। रामचन्द्र जी आदेश देकर सभा छोड़कर चले गए। कहते गए कि मैं निंदा का पात्र नहीं बनना चाहता। मेरे कुल को दाग लगेगा। सीता जी को धरती भी पैरों से खिसकती नजर आई। आसमान में अँधेरा छाया दिखाई दिया। संसार में कुछ दिनों का जीवन शेष लगा।

सीता अयोध्या छोड़कर चल पड़ी। मुड़-मुड़कर अपने राम को तथा उसके महलों को देखने की कोशिश करती रही और दूर जंगल में जाकर ऋषि वाल्मीकि जी की कुटिया के निकट थककर गिर गई, अचेत हो गई। ऋषि वाल्मीकि स्नान करने के लिए आश्रम से निकले। सामने एक युवती गर्भावस्था में अचेत पड़ी देखकर निकट गए। अपने आश्रम से औषधि लाए। सीता जी के मुख में डाली। गर्मी का मौसम था। ठण्डे जल के छींटे मुख पर मारे। उसी समय सीता जी सचेत होकर बैठ गई। ऋषि ने नाम और गाँव पूछा तो बताया कि नीचे पथ्वी, ऊपर आसमान, आगे कुछ बताने

से इंकार कर दिया। ऋषि दयावान होते हैं। कहा, बेटी संसार तो स्वार्थ का है। धन्यवाद कर परमात्मा का, तू मेरे आश्रम में आ गई। बेटी मुझे अपना पिता मान और मेरे पास रह। सीता जी ऋषि वाल्मीकि जी के आश्रम में रहने लगी। ऋषि ने भी बात आगे नहीं बढ़ाई। परमेश्वर कबीर जी जो त्रेतायुग में ऋषि मुनीन्द्र जी के रूप में लीला करने आए थे। हनुमान जी से मिले। सत साहेब बोला। हनुमान जी ने राम-राम कहा तथा खड़ा होकर ऋषि जी का सत्कार किया तथा एक पत्थर पर स्वयं बैठ गए, दूसरे पर ऋषि को बैठने के लिए आग्रह किया। दोनों ने स्थान ग्रहण कर लिया। हनुमान जी ऋषि जी को पहचानने की कोशिश करने लगे। ऋषि जी ने कहा, क्या सोच रहे हो हनुमान? मैं वही ऋषि हूँ, मेरे आश्रम में वानर ने सीता जी का कंगन घड़े में डाला था। उसमें अन्य कंगन भी वैसे ही थे। हे हनुमान! वह कंगन कैसा रहा? हनुमान जी को पहचानते देर नहीं लगी और ऋषि जी को प्रणाम फिर किया। हे ऋषि जी! आपका कैसे आना हुआ? परमेश्वर कबीर जी (मुनीन्द्र ऋषि रूप में) ने कहा, हे पवन पुत्र! मैं आपको भक्ति ज्ञान कराने आया हूँ। आप जिस दशरथ पुत्र रामचन्द्र की पूजा पूर्ण परमात्मा मानकर कर रहे हो। आप धोखे में हो। जो जन्मता-मरता है, वह पूर्ण परमात्मा नहीं हो सकता। पूर्ण परमात्मा तो अविनाशी है। हनुमान जी ने कहा, हे ऋषिवर! मैं आपके वचनों से आहत होता हूँ। मेरी भावनाओं को चोट लगती है। आप अन्य विषय पर चर्चा करें। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि यदि कोई व्यक्ति गलत रास्ते जा रहा हो, वह उस रास्ते को ठीक मानकर चल रहा हो जो डाकुओं के डेरे में जा रहा है। यदि कोई सज्जन पुरूष उसको बताए कि जिस रास्ते पर आप जा रहे हो, आपकी जान तथा माल को खतरा है, आगे डाकुओं का डेरा है। पहले मारते हैं, फिर लूटते हैं। यदि वह व्यक्ति कहे कि आप मेरी भावनाओं को चोटिल कर रहे हो, यह कितना सत्य है? हनुमान जी चुप रहे, पंरतु मुस्कराए मानो कह रहे हों, आप सत्य कहते हो। हनुमान जी के चेहरे पर शान्ति का चिन्ह देखकर परमेश्वर ने बताया कि श्री रामचन्द्र जी, श्री विष्णु जी के अवतार हैं। श्री विष्णु जी, श्री ब्रह्मा जी तथा श्री शिव जी का पिता काल ब्रह्म है। इसी को ज्योति निरंजन भी कहते हैं। काल को इसकी गलती के कारण शॉप लगा है कि एक लाख मानव शरीरधारी प्राणियों को प्रतिदिन खाया करेगा। सवा लाख प्रतिदिन उत्पन्न किया करेगा। जिस कारण से उसने अपने तीनों पुत्रों को एक-एक विभाग का स्वामी बना रखा है। श्री ब्रह्मा जी रजगुण हैं जिसके प्रभाव से सर्व प्राणी प्रेरित होकर संतान उत्पत्ति करते हैं। जिस कारण से ब्रह्मा को भूल से उत्पत्तिकर्ता मान रखा है। उत्पत्तिकर्ता तो पूर्ण परमात्मा है।

काल ने अपने दूसरे पुत्र विष्णु को कर्मानुसार पालन करने का विभाग दिया है, विष्णु सतगुण है। काल ने तीसरे पुत्र शिव तमगुण को इन एक लाख मानव शरीरधारी जीवों को मारकर उसके पास भेजने का विभाग दे रखा है। वह स्वयं अव्यक्त (गुप्त) रहता है। आप देख रहे हो, यहाँ कोई भी जीव अमर नहीं है, देवता भी मरते हैं। ब्रह्मा, विष्णु, शिव भी जन्मते-मरते हैं। जो पूरी आयु जीते हैं, वृद्धावस्था भी सब में आती है। एक लोक ऐसा है जहाँ पर वृद्धावस्था तथा मरण नहीं है। वहाँ कोई रावण किसी की पत्नी का अपहरण नहीं करता। आपकी आँखों के सामने लंका में हुए राम-रावण युद्ध में कितने व्यक्ति तथा अन्य प्राणी मारे गए। एक सीता को छुड़ाने के लिए। आपने श्री रामचन्द्र जी के लिए अपने प्राणों की बाजी लगाकर लंका को जलाया। रावण का भाई अहिरावण जो पाताल का राजा था। वह राम तथा लक्ष्मण का अपहरण करके ले गया। उनकी बली देने वाला था। आप वहाँ गए और उन दोनों को जीवित लाए। आप ही बताऐं, वे परमात्मा हैं। जिस समय

नाग फांस शस्त्र के छोड़ने से सर्पों ने श्री राम तथा आप तथा सर्व सेना व लक्ष्मण तक बाँध दिया था। सर्प आप सबको जकड़े हुए थे। आप सब विवश थे। कुछ समय में आप सबको रावण की सेना आसानी से काट डालती। उस समय गरूड़ को पुकारा गया। उसने नागों को काटा। आप तथा रामचन्द्र बंधनमुक्त हुए। यदि परमात्मा इतना विवश है कि अपना बंधन नहीं काट सका तो पुजारियों का क्या होगा? विचार करो।

काटे बंधत विपत में, कठिन कियो संग्राम।
चिन्हो रे नर प्राणियो, गरूड़ बड़ो के राम।।

हनुमान जी ने कहा ऋषि जी! समुद्र पर पुल बनाना क्या आम आदमी का कार्य है? यह परमात्मा बिना नहीं बनाया जा सकता।

समन्दर पांटि लंका गयो, सीता को भरतार।
अगस्त ऋषि सातों पीये, इनमें कौन करतार।।

यदि आप समुद्र के ऊपर सेतु बनाने से श्री रामचन्द्र जी को परमात्मा मानते हो तो अगस्त ऋषि ने सातों सागरों को पी लिया था। इनमें कौन है परमात्मा?

ऋषि मुनीन्द्र जी ने बताया कि आप भूल गए क्या? एक ऋषि आए थे। उन्होंने एक पर्वत के पत्थरों को अपनी डण्डी से रेखा खींचकर हल्का किया था। तब पत्थर तैरे थे, तब पुल बना था। रामचन्द्र तो तीन दिन से रास्ता माँग रहे थे। समुद्र ने ही बताया था नल-नील के विषय में। हनुमान जी ने कहा कि वह तो विश्वकर्मा जी थे जो वेश बदलकर श्री रामचन्द्र जी के बुलाने पर आए थे। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि विश्वकर्मा जी तो पुल का निर्माण कर सकते हैं, जल के ऊपर पत्थर नहीं तैरा सकते। नल-नील के हाथों में शक्ति थी। उनके हाथों से डाली गई वस्तु जल के ऊपर तैरा करती थी। उस दिन उनमें अभिमान आ गया था। उनकी शक्ति समाप्त हो गई थी। वह आशीर्वाद मेरा ही था। हनुमान जी ने कहा, क्या आप ऋषि मुनीन्द्र जी हैं? परमेश्वर जी ने कहा, हाँ। मुनीन्द्र जी ने कहा कि आपने अपने प्राणों की परवाह न करके राम जी के लिए क्या नहीं किया? जब सीता ने आपको अपशब्द कहे और घर छोड़ने को कहा। उस समय श्रीराम वहीं विराजमान थे। एक शब्द भी नहीं कहा कि सीता ऐसा न कर। पवन सुत अंदर से तो मान रहे थे, परंतु ऊपर से कह रहे थे कि ऋषि जी! किसी की आलोचना नहीं करनी चाहिए। मुनीन्द्र जी ने कहा कि सत्य कहना आलोचना नहीं होती। यदि श्री रामचन्द्र और सीता के अंदर अच्छे इंसान वाले गुण भी होते तो भी आपका आजीवन अहसान मानते और अपने चरणों में रखते। आप तो उनके बिना जीना भी उचित नहीं मानते। और सुनो! आपके साथ जैसा व्यवहार किया, उसका फल भी सीता तथा रामचन्द्र को मिल गया है। कुछ वर्षों के पश्चात् सीता को श्री राम ने घर से निकाल दिया। उस समय वह गर्भवती थी। यह सुनकर हनुमान की आँखों से आँसू निकल आए और ऋषि जी के चरणों में गिर गए। कुछ नहीं बोले। अयोध्यावासियों ने दो वर्ष दिपावली और दशहरा मनाया था। उसके पश्चात् बंद कर दिया था कि जिस देवी के लिए रावण मारा, आज वह फिर कितने रावणों का कष्ट झेलेगी। दीपमाला खुशी का प्रतीक है। जब राजा और रानी भिन्न-भिन्न हो गए तो न दीपावली राजा को अच्छी लगे और न प्रजा को। इसलिए दीपावली का पर्व उसी समय से बंद हो गया था। जो दो वर्ष मनाया था, उसी के आधार से भोली जनता यह पर्व मना रही है।

इसी प्रकार दशहरा तथा रावण दहन की परंपरा चली आ रही है। यदि किसी के घर पर

किसी जवान की मत्यु हो जाती है तो वह परिवार तथा रिश्तेदार कोई त्यौहार नहीं मनाते।

हनुमान जी ने कहा, प्रभु! परमेश्वर की चर्चा करो। कबीर परमेश्वर जी ने संष्टि रचना सुनाई। सत्यकथा सुनकर हनुमान जी गदगद हुए। सत्यलोक देखने की प्रार्थना की। परमेश्वर आकाश में उड़ गए। हनुमान जी देख रहे थे। कुछ देर अंतर्ध्यान हो गए। हनुमान जी चिंतित हो गए कि अब ये ऋषि कैसे मिलेंगे? इतने में आकाश में विशेष प्रकाश दिखाई दिया। हनुमान जी को दिव्य दंष्टि देकर सतलोक दिखाया। ऋषि मुनीन्द्र जी सिंहासन पर बैठे दिखाई दिए। उनके शरीर का प्रकाश अत्यधिक था। सिर पर मुकुट तथा राजाओं की तरह छत्र था। कुछ देर वह दंश्य दिखाकर दिव्य दंष्टि समाप्त कर दी। मुनीन्द्र जी नीचे आए। हनुमान जी को विश्वास हुआ कि ये परमेश्वर हैं। सत्यलोक सुख का स्थान है। परमेश्वर कबीर जी से दीक्षा ली। अपना जीवन धन्य किया। मुक्ति के अधिकारी हुए। इस प्रकार पवित्र आत्मा परमार्थी स्वभाव हनुमान जी को परमेश्वर कबीर जी ने अपनी शरण में लिया। परमार्थी आत्मा को संसार तथा काल के स्वामी भले ही परोपकार का फल नहीं देते, परंतु परमेश्वर ऐसी आत्माओं को शरण में अवश्य लेते हैं क्योंकि ऐसी आत्मा ही परम भक्त बनकर भक्ति करते हैं और मोक्ष प्राप्त करते हैं। संसारिक व्यक्ति जो परमार्थी को धोखा देते हैं, वे आजीवन कष्टमय जीवन व्यतीत करते हैं।

श्री रामचन्द्र जी को अंत समय में अपने ही पुत्रों लव तथा कुश से पराजय का मुँह देखना पड़ा। सीता जी ने उनके दर्शन करना भी उचित नहीं समझा। देखते-देखते पंथ्वी में समा गई। इस ग्लानि से श्री रामचन्द्र जी ने अयोध्या के पास बह रही सरयु नदी में छलांग लगाकर अपनी जीवन लीला जल समाधि लेकर समाप्त की। परमार्थी हनुमान जी को निस्वार्थ दुःखियों की सहायता करने का फल मिला। परमात्मा स्वयं आए, मोक्ष मार्ग बताया। जीव का कल्याण हुआ। हनुमान जी फिर मानव जीवन प्राप्त करेंगे। तब परमेश्वर कबीर जी उनको शरण में लेकर मुक्त करेंगे। उस आत्मा में सत्य भक्ति बीज डल चुका है।

कबीर सागर के अध्याय ''हनुमान बोध'' का सारांश सम्पूर्ण हुआ।

।।सत साहेब।।

अध्याय ''लक्ष्मण बोध'' का सारांश

वास्तव में यह ''जगन्नाथ मंदिर की स्थापना'' का बोध है।

कबीर सागर में लक्ष्मण बोध 13वां अध्याय पष्ठ 141 पर है।

विशेष विवेचन :- इस अध्याय में जगन्नाथ के मंदिर की स्थापना कैसे हुई, यह ज्ञान (बोध) है। लक्ष्मण तथा रामचन्द्र का प्रकरण वैसे ही मिला रखा है। यह काल प्रेरित कबीर पंथियों की अज्ञानता का प्रमाण है। इसमें धर्मदास जी ने प्रश्न किया कि हे प्रभु! जगन्नाथ के मंदिर में छूआछात प्रारम्भ से ही नहीं है। इसका क्या राज है? परमेश्वर कबीर जी ने बताया कि इसके लिए आप जगन्नाथ के मंदिर की पुरी में स्थापना कैसे हुई? यह सुनो।

''जगन्नाथ मंदिर की पुरी (उड़ीसा) में स्थापना''

जिस समय दुर्वासा ऋषि के शॉप से 56 करोड़ यादव आपस में लड़कर गए। कुछ शेष बचे थे, वे श्री कष्ण जी ने मूसलों से मार डाले। बलभद्र (बलराम) शेष नाग का अवतार था। मत्यु के पश्चात् सर्प रूप बनाकर यमुना नदी में प्रवेश कर गया। श्री कष्ण जी वक्ष के नीचे विश्राम करने के लिए लेट गए। एक बालीया नाम के भील शिकारी ने श्री कष्ण के पैर में लगे पदम को हिरण की आँख जानकर वक्ष की झुरमटों के अंदर से विषाक्त तीर मार दिया। जिस कारण श्री कष्ण जी की मत्यु हुई। मत्यु से पहले श्री कष्ण जी से उस शिकारी ने क्षमा याचना की तथा कहा हे राजन! मेरे से धोखे से तीर लग गया। मैंने जान-बूझकर नहीं मारा। श्री कष्ण जी ने कहा कि यह तेरा और मेरा पिछले जन्म का बदला था, सो आपने पूरा कर लिया। आप त्रेतायुग में सुग्रीव के भाई बाली थे। उस समय मैं रामचन्द्र रूप में जन्मा था। मैंने आपको वक्ष की ओट लेकर मारा था। आज आपने मुझे वक्ष की ओट से ही मारा है। मैं कुछ समय का मेहमान हूँ। एक कार्य कर दे, मेरे रिश्तेदार पाण्डवों को संदेशा भेज दो कि यादव आपस में लड़कर मर रहे हैं, शीघ्र आओ। जब अर्जुन तथा युधिष्ठर आदि पाँचों पाण्डव पहुँच गए तो श्री कष्ण ने अर्जुन से कहा कि मेरे शरीर को जलाकर इसकी राख को काष्ठ की पेटी यानि सन्दूक बनवाकर उसमें डालकर पूर्ण रूप से बंद कर देना और समुद्र में बहा देना। ऐसा ही किया गया। कुछ समय पर्यन्त वह पेटी बहकर उड़ीसा में पुरी के पास समुद्र के किनारे पहुँच गई। उड़ीसा का राजा इन्द्रदमन था जो श्री कष्ण जी का परम भक्त था। श्री कष्ण जी ने राजा को स्वपन में दर्शन दिए तथा बताया कि मेरे शरीर की राख एक काष्ठ की संदूक में डालकर द्वारका में समुद्र में बहाई थी। वह पेटी अब पुरी में अमूक स्थान पर बहकर आ गई है। समुद्र के किनारे लगी है। उसको निकालकर वहीं समुद्र के किनारे जगन्नाथ नाम से मंदिर बनवा दे। राजा ने सुबह उठकर स्वपन को अपनी पत्नी तथा मुख्य मंत्रियों तथा सलाहकारों को बताया। सब मिलकर उस स्थान पर गए तो वहाँ पर वह संदूक मिली। सबको विश्वास हो गया और शीघ्र ही जगन्नाथ जी के मंदिर का निर्माण कार्य प्रारम्भ हो गया। अब पढ़ें सम्पूर्ण कथा :-

उड़ीसा प्रांत में एक इन्द्रदमन नाम का राजा था। वह भगवान श्री कष्ण जी का अनन्य भक्त था। एक रात्रि को श्री कष्ण जी ने राजा को स्वपन में दर्शन देकर कहा कि समुद्र के किनारे मेरे शरीर की राख एक काष्ठ की पेटी (सन्दूक) में बंद है। उसी किनारे पर राख के ऊपर जगन्नाथ नाम से मेरा एक मन्दिर बनवा दे। श्री कष्ण जी ने यह भी कहा था कि इस मन्दिर में मूर्ति पूजा

नहीं करनी है। केवल एक संत छोड़ना है जो दर्शकों को पवित्र गीता अनुसार ज्ञान प्रचार करे। समुद्र तट पर वह स्थान भी दिखाया जहाँ मन्दिर बनाना था। सुबह उठकर राजा इन्द्रदमन ने अपनी पत्नी को बताया कि आज रात्रि को भगवान श्री कृष्ण जी दिखाई दिए। मन्दिर बनवाने के लिए कहा है। रानी ने कहा शुभ कार्य में देरी क्या? सर्व सम्पत्ति उन्हीं की दी हुई है। उन्हीं को समर्पित करने में क्या सोचना है? राजा ने उस स्थान पर मन्दिर बनवा दिया जो श्री कृष्ण जी ने स्वपन में समुद्र के किनारे पर दिखाया था। मन्दिर बनने के बाद समुद्री तुफान उठा, मन्दिर को तोड़ दिया। निशान भी नहीं बचा कि यहाँ मन्दिर था। ऐसे राजा ने पाँच बार मन्दिर बनवाया। पाँचों बार समुद्र ने तोड़ दिया।

राजा ने निराश होकर मन्दिर न बनवाने का निर्णय ले लिया। यह सोचा कि न जाने समुद्र मेरे से कौन-से जन्म का प्रतिशोध ले रहा है। कोष रिक्त हो गया, मन्दिर बना नहीं। कुछ समय उपरान्त पूर्ण परमेश्वर (कविर्देव) ज्योति निरंजन (काल) को दिए वचन अनुसार राजा इन्द्रदमन के पास आए तथा राजा से कहा आप मन्दिर बनवाओ। अब के समुद्र मन्दिर (महल) नहीं तोड़ेगा। राजा ने कहा संत जी मुझे विश्वास नहीं है। मैं भगवान श्री कृष्ण (विष्णु) जी के आदेश से मन्दिर बनवा रहा हूँ। श्री कृष्ण जी समुद्र को नहीं रोक पा रहे हैं। पाँच बार मन्दिर बनवा चुका हूँ, यह सोच कर कि कहीं भगवान मेरी परीक्षा ले रहे हों। परन्तु अब तो परीक्षा देने योग्य भी नहीं रहा हूँ क्योंकि कोष भी रिक्त हो गया है। अब मन्दिर बनवाना मेरे वश की बात नहीं। परमेश्वर ने कहा इन्द्रदमन जिस परमेश्वर ने सर्व ब्रह्मण्डों की रचना की है, वही सर्व कार्य करने में सक्षम है, अन्य प्रभु नहीं। मैं उस परमेश्वर की वचन शक्ति प्राप्त हूँ। मैं समुद्र को रोक सकता हूँ (अपने आप को छुपाते हुए कह रहे थे)। राजा ने कहा कि संत जी मैं नहीं मान सकता कि श्री कृष्ण जी से भी कोई प्रबल शक्ति युक्त प्रभु है। जब वे ही समुद्र को नहीं रोक सके तो आप कौन से खेत की मूली हो। मुझे विश्वास नही होता तथा न ही मेरी वित्तीय स्थिति मन्दिर (महल) बनवाने की है। संत रूप में आए कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने कहा राजन् यदि मन्दिर बनवाने का मन बने तो मेरे पास आ जाना मैं अमूक स्थान पर रहता हूँ। अब के समुद्र मन्दिर को नहीं तोड़ेगा। यह कह कर प्रभु चले आए।

उसी रात्रि में प्रभु श्री कृष्ण जी ने फिर राजा इन्द्रदमन को दर्शन दिए तथा कहा इन्द्रदमन एक बार फिर महल बनवा दे। जो तेरे पास संत आया था उससे सम्पर्क करके सहायता की याचना कर ले। वह ऐसा वैसा संत नहीं है। उसकी भक्ति शक्ति का कोई वार-पार नहीं है।

राजा इन्द्रदमन नींद से जागा, स्वपन का पूरा वृतान्त अपनी रानी को बताया। रानी ने कहा प्रभु कह रहे हैं तो आप मत चूको। प्रभु का महल फिर बनवा दो। रानी की सद्भावना युक्त वाणी सुन कर राजा ने कहा अब तो कोष भी खाली हो चुका है। यदि मन्दिर नहीं बनवाऊंगा तो प्रभु अप्रसन्न हो जायेंगे। मैं तो धर्म संकट में फँस गया हूँ। रानी ने कहा मेरे पास गहने रखे हैं। उनसे आसानी से मन्दिर बन जायेगा। आप यह गहने लो तथा प्रभु के आदेश का पालन करो, यह कहते हुए रानी ने सर्व गहने जो घर रखे थे तथा जो पहन रखे थे निकाल कर प्रभु के निमित अपने पति के चरणों में समर्पित कर दिये। राजा इन्द्रदमन उस स्थान पर गया जो परमेश्वर कबीर जी ने बताया था। कबीर प्रभु अर्थात् अपरिचित संत को खोज कर समुद्र को रोकने की प्रार्थना की। प्रभु कबीर जी ने कहा कि जिस तरफ से समुद्र उठ कर आता है, वहाँ समुद्र के किनारे एक चौरा (चबूतरा) बनवा दे। जिस पर बैठ कर मैं प्रभु की भक्ति करूँगा तथा समुद्र को रोकूँगा। राजा ने

एक बड़े पत्थर को कारीगरों से चबूतरा जैसा बनवाया, परमेश्वर कबीर उस पर बैठ गए। छठी बार मन्दिर बनना प्रारम्भ हुआ। उसी समय एक नाथ परम्परा के सिद्ध महात्मा आ गए। नाथ जी ने राजा से कहा राजा बहुत अच्छा मन्दिर बनवा रहे हो, इसमें मूर्ति भी स्थापित करनी चाहिए। मूर्ति बिना मन्दिर कैसा? यह मेरा आदेश है। राजा इन्द्रदमन ने हाथ जोड़ कर कहा नाथ जी प्रभु श्री कष्ण जी ने मुझे स्वपन में दर्शन दे कर मन्दिर बनवाने का आदेश दिया था तथा कहा था कि इस महल में न तो मूर्ति रखनी है, न ही पाखण्ड पूजा करनी है। राजा की बात सुनकर नाथ ने कहा स्वपन भी कोई सत्य होता है। मेरे आदेश का पालन कीजिए तथा चन्दन की लकड़ी की मूर्ति अवश्य स्थापित कीजिएगा। यह कह कर नाथ जी बिना जल पान ग्रहण किए उठ गए। राजा ने डर के मारे चन्दन की लकड़ी मंगवाई तथा कारीगर को मूर्ति बनाने का आदेश दे दिया। एक मूर्ति श्री कष्ण जी की स्थापित करने का आदेश श्री नाथ जी का था। फिर अन्य गुरुओं-संतों ने राजा को राय दी कि अकेले प्रभु कैसे रहेंगे? वे तो श्री बलराम को सदा साथ रखते थे। एक ने कहा बहन सुभद्रा तो भगवान श्री कष्ण जी की लाड़ली बहन थी, वह कैसे अपने भाई बिना रह सकती है? तीन मूर्तियाँ बनवाने का निर्णय लिया गया। तीन कारीगर नियुक्त किए। मूर्तियाँ तैयार होते ही टुकड़े-टुकड़े हो गई। ऐसे तीन बार मूर्तियाँ खण्ड हो गई। राजा बहुत चिन्तित हुआ। सोचा मेरे भाग्य में यह यश व पुण्य कर्म नहीं है। मन्दिर बनता है वह टूट जाता है। अब मूर्तियाँ टूट रही हैं। नाथ जी रूष्ट हो कर गए हैं। यदि कहूँगा कि मूर्तियाँ टूट जाती हैं तो सोचेगा कि राजा बहाना बना रहा है, कहीं मुझे शॉप न दे दे। चिन्ता ग्रस्त राजा न तो आहार कर रहा है, न रात्रि भर निन्द्रा आई। सुबह बेचैन अवस्था में राज दरबार में गया। उसी समय पूर्ण परमात्मा (कविर्देव) कबीर प्रभु एक अस्सी वर्षीय कारीगर का रूप बनाकर राज दरबार में उपस्थित हुआ। कमर पर एक थैला लटकाए हुए था जिसमें आरी बाहर स्पष्ट दिखाई दे रही थी, मानों बिना बताए कारीगर का परिचय दे रही थी तथा अन्य बसोला व बरमा आदि थेले में भरे थे। कारीगर वेश में प्रभु ने राजा से कहा मैंने सुना है कि प्रभु के मन्दिर के लिए मूर्तियाँ पूर्ण नहीं हो रही हैं। मैं 80 वर्ष का वद्ध हो चुका हूँ तथा 60 वर्ष का अनुभव है। चन्दन की लकड़ी की मूर्ति प्रत्येक कारीगर नहीं बना सकता। यदि आपकी आज्ञा हो तो सेवक उपस्थित है। राजा ने कहा कारीगर आप मेरे लिए भगवान ही कारीगर बन कर आये लगते हो। मैं बहुत चिन्तित था। सोच ही रहा था कि कोई अनुभवी कारीगर मिले तो समस्या का समाधान बने। आप शीघ्र मूर्तियाँ बना दो। वद्ध कारीगर रूप में आए कबीर प्रभु ने कहा राजन! मुझे एक कमरा दे दो, जिसमें बैठकर प्रभु की मूर्ति तैयार करूंगा। मैं अंदर से दरवाजा बंद करके स्वच्छता से मूर्ति बनाऊंगा। ये मूर्तियां जब तैयार हो जायेंगी तब दरवाजा खुलेगा, यदि बीच में किसी ने खोल दिया तो जितनी मूर्तियाँ बनेगी उतनी ही रह जायेंगी। राजा ने कहा जैसा आप उचित समझो वैसा करो।

बारह दिन मूर्तियाँ बनाते हो गए तो नाथ जी आ गए। नाथ जी ने राजा से पूछा इन्द्रदमन मूर्तियाँ बनाई क्या? राजा ने कर बद्ध हो कर कहा कि आपकी आज्ञा का पूर्ण पालन किया गया है महात्मा जी। परन्तु मेरा दुर्भाग्य है कि मूर्तियाँ बन नहीं पा रही हैं। आधी बनते ही टुकड़े-टुकड़े हो जाती हैं नौकरों से मूर्तियों के टुकड़े मंगवाकर नाथ जी को विश्वास दिलाने के लिए दिखाए। नाथ जी ने कहा कि मूर्ति अवश्य बनवानी है। अब बनवाओं मैं देखता हूँ कैसे मूर्ति टूटती है। राजा ने कहा नाथ जी प्रयत्न किया जा रहा है। प्रभु का भेजा एक अनुभवी 80 वर्षीय कारीगर बन्द कमरें में मूर्ति बना रहा है। उसने कहा है कि मूर्तियाँ बन जाने पर मैं अपने आप द्वार खोल दूंगा। यदि

किसी ने बीच में द्वार खोल दिया तो जितनी मूर्तियाँ बनी होंगी उतनी ही रह जायेंगी। आज उसे मूर्ति बनाते बारह दिन हो गये। न तो बाहर निकला है, न ही जल पान तथा आहार ही किया है। नाथ जी ने कहा कि मूर्तियाँ देखनी चाहिये, कैसी बना रहा है? बनने के बाद क्या देखना है। ठीक नहीं बनी होंगी तो ठीक बनाऐंगे। यह कहकर नाथ जी राजा इन्द्रदमन को साथ लेकर उस कमरे के सामने गए जहाँ मूर्ति बनाई जा रही थी तथा आवाज लगाई कारीगर द्वार खोलो। कई बार कहा परन्तु द्वार नहीं खुला तथा जो खट-खट की आवाज आ रही थी, वह भी बन्द हो गई। नाथ जी ने कहा कि 80 वर्षीय वृद्ध बता रहे हो, बारह दिन खाना-पिना भी नहीं किया है। अब आवाज भी बंद है, कहीं मर न गया हो। धक्का मार कर दरवाजा तोड़ दिया, देखा तो तीन मूर्तियाँ रखी थी, तीनों के हाथ के व पैरों के पंजे नहीं बने थे। कारीगर अन्तर्ध्यान था।

मन्दिर बन कर तैयार हो गया और चारा न देखकर अपने हठ पर अडिग नाथ जी ने कहा ऐसी ही मूर्तियों को स्थापित कर दो, हो सकता है प्रभु को यही स्वीकार हो, लगता है श्री कृष्ण ही स्वयं मूर्तियां बना कर गए हैं।

मुख्य पांडे ने शुभ मूहूर्त निकाल कर अगले दिन ही मूर्तियों की स्थापना कर दी। सर्व पाण्डे तथा मुख्य पांडा व राजा तथा सैनिक व श्रद्धालु मूर्तियों में प्राण स्थापना करने के लिए चल पड़े। पूर्ण परमेश्वर कबीर जी एक शुद्र का रूप धारण करके मन्दिर के मुख्य द्वार के मध्य में मन्दिर की ओर मुख करके खड़े हो गए। ऐसी लीला कर रहे थे मानों उनको ज्ञान ही न हो कि पीछे से प्रभु की प्राण स्थापना की सेना आ रही है। आगे-आगे मुख्य पांडा चल रहा था। परमेश्वर फिर भी द्वार के मध्य में ही खड़े रहे। निकट आ कर मुख्य पांडे ने शुद्र रूप में खड़े परमेश्वर को ऐसा धक्का मारा कि दूर जा कर गिरे तथा एकान्त स्थान पर शुद्र लीला करते हुए बैठ गए। राजा सहित सर्व श्रद्धालुओं ने मन्दिर के अन्दर जा कर देखा तो सर्व मूर्तियाँ उसी द्वार पर खड़े शुद्र रूप परमेश्वर का रूप धारण किए हुए थी। इस कौतूक को देखकर उपस्थित व्यक्ति अचम्भित हो गए। मुख्य पांडा कहने लगा प्रभु क्षुब्ध हो गया है क्योंकि मुख्य द्वार को उस शुद्र ने अशुद्ध कर दिया है। इसलिए सर्व मूर्तियों ने शुद्र रूप धारण कर लिया है। बड़ा अनिष्ट हो गया है। कुछ समय उपरान्त मूर्तियों का वास्तविक रूप हो गया। गंगा जल से कई बार स्वच्छ करके प्राण स्थापना की गई। {कबीर प्रभु ने कहा अज्ञानता व पाखण्ड वाद की चरम सीमा देखें। कारीगर मूर्ति का भगवान बनता है। फिर पूजारी या अन्य संत उस मूर्ति रूपी प्रभु में प्राण डालता है अर्थात् प्रभु को जीवन दान देता है। तब वह मिट्टी या लकड़ी का प्रभु कार्य सिद्ध करता है, वाह रे पाखण्डियों खूब मूर्ख बनाया प्रभु प्रेमी आत्माओं को।}

मूर्ति स्थापना हो जाने के कुछ दिन पश्चात् लगभग 40 फूट ऊँचा समुद्र का जल उठा जिसे समुद्री तुफान कहते हैं तथा बहुत वेग से मन्दिर की ओर चला। सामने कबीर परमेश्वर चौरा (चबुतरे) पर बैठे थे। अपना एक हाथ उठाया जैसे आशीर्वाद देते हैं, समुद्र उठा का उठा रह गया तथा पर्वत की तरह खड़ा रहा, आगे नहीं बढ़ सका। विप्र रूप बना कर समुद्र आया तथा चबूतरे पर बैठे प्रभु से कहा कि भगवन आप मुझे रास्ता दे दो, मैं मन्दिर तोड़ने जाऊंगा। प्रभु ने कहा कि यह मन्दिर नहीं है। यह तो महल (आश्रम) है। इसमें विद्वान पुरुष रहा करेगा तथा पवित्र गीता जी का ज्ञान दिया करेगा। आपका इसको विध्वंश करना शोभा नहीं देता। समुद्र ने कहा कि मैं इसे अवश्य तोडूँगा। प्रभु ने कहा कि जाओ कौन रोकता है? समुद्र ने कहा कि मैं विवश हो गया हूँ। आपकी शक्ति अपार है। मुझे रास्ता दे दो प्रभु। परमेश्वर कबीर साहेब जी ने पूछा कि आप

ऐसा क्यों कर रहे हो? विप्र रूप में उपस्थित समुद्र ने कहा कि जब यह श्री कृष्ण जी त्रेतायुग में श्री रामचन्द्र रूप में आया था तब इसने मुझे अग्नि बाण दिखा कर बुरा भला कह कर अपमानित करके रास्ता मांगा था। मैं वह प्रतिशोध लेने जा रहा हूँ।



परमेश्वर कबीर जी द्वारा समुन्द्र से जगन्नाथ मन्दिर को तोड़ने से बचाया

परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि प्रतिशोध तो आप पहले ही ले चुके हो। आपने द्वारिका को डूबो रखा है। समुद्र ने कहा कि अभी पूर्ण नहीं डूबा पाया हूँ, आधी रहती है। वह भी कोई प्रबल शक्ति युक्त संत सामने आ गया था जिस कारण से मैं द्वारिका को पूर्ण रूपेण नहीं समा पाया। अब भी कोशिश करता हूँ तो उधर नहीं जा पा रहा हूँ। उधर से मुझे बांध रखा है।

तब परमेश्वर कबीर जी ने कहा वहाँ भी मैं ही पहुँचा था। मैंने ही वह अवशेष बचाया था। अब जा शेष बची द्वारिका को भी निगल ले, परन्तु उस यादगार को छोड़ देना, जहाँ श्री कृष्ण जी के शरीर का अन्तिम संस्कार किया गया था। {श्री कृष्ण जी के अन्तिम संस्कार स्थल पर बहुत बड़ा मन्दिर बना दिया गया। यह यादगार प्रमाण बना रहेगा कि वास्तव में श्री कृष्ण जी की मृत्यु हुई थी तथा पंच भौतिक शरीर छोड़ गये थे। नहीं तो आने वाले समय में कहेंगे कि श्री कृष्ण जी की तो मृत्यु ही नहीं हुई थी। अंतिम संस्कार स्थल से राख उठाकर संदूक (लकड़ी की पेटी) में बंद करके समुद्र में पाण्डवों ने बहा दी थी।} आज्ञा प्राप्त कर शेष द्वारिका को भी समुद्र ने डूबो लिया। परमेश्वर कबीर जी ने कहा अब आप आगे से कभी भी इस जगन्नाथ मन्दिर को तोड़ने का प्रयत्न नहीं करना तथा इस महल से दूर चला जा। ऐसी आज्ञा प्रभु की मान कर प्रणाम करके मन्दिर से दूर लगभग डेढ़ किलोमीटर हट गया। ऐसे श्री जगन्नाथ जी का मन्दिर अर्थात् धाम स्थापित हुआ।

”श्री जगन्नाथ के मन्दिर में छुआछात प्रारम्भ से ही नहीं है“

कुछ दिन पश्चात जिस पांडे ने प्रभु कबीर जी को शुद्र रूप में धक्का मारा था उसको कुष्ठ रोग हो गया। सर्व औषधि करने पर भी स्वस्थ नहीं हुआ। कुष्ट रोग का कष्ट अधिक से अधिक बढ़ता ही चला गया। सर्व उपासनायें भी की, श्री जगन्नाथ जी से रो-रोकर संकट निवारण के लिए प्रार्थना की, परन्तु सर्व निष्फल रही। स्वपन में श्री कष्ण जी ने दर्शन दिए तथा कहा पांडे उस संत के चरण धोकर चरणामत पान कर जिसको तुने मन्दिर के मुख्य द्वार पर धक्का मारा था। तब उसके आशीर्वाद से तेरा कुष्ठ रोग ठीक हो सकता है। यदि उसने तुझे हृदय से क्षमा किया तो, अन्यथा नहीं। मरता क्या नहीं करता?

वह मुख्य पांडा सवेरे उठा। कई सहयोगी पांडों को साथ लेकर उस स्थान पर गया जहाँ पर प्रभु कबीर शूद्र रूप में विराजमान थे। ज्यों ही पांडा प्रभु के निकट आया तो परमेश्वर उठ कर चल पड़े तथा कहा हे पांडा मैं तो अछूत हूँ मेरे से दूर रहना, कहीं आप अपवित्र न हो जायें। पांडा निकट पहुँचा, परमेश्वर और आगे चल पड़े। तब पांडा फूट-फूट कर रोने लगा तथा कहा परवरदीगार मेरा दोष क्षमा कर दो। तब दयालु प्रभु रूक गए। पांडे ने आदर के साथ एक स्वच्छ वस्त्र जमीन पर बिछा कर प्रभु को बैठने की प्रार्थना की। प्रभु उस वस्त्र पर बैठ गए। तब उस पांडे ने स्वयं चरण धोए तथा चरणामत को पात्र में वापिस डाल लिया। प्रभु कबीर जी ने कहा पांडे चालीस दिन तक इसे पीना भी तथा स्नान करने वाले जल में कुछ डाल कर स्नान करते रहना। चालीसवें दिन तेरा कुष्ठ रोग समाप्त होगा तथा कहा कि भविष्य में भी इस जगन्नाथ जी के मन्दिर में किसी ने छूआछात किया तो उसको भी दण्ड मिलेगा। सर्व उपस्थित व्यक्तियों ने वचन किए कि आज के बाद इस पवित्र स्थान पर कोई छुआ-छात नहीं की जायेगी।

विचार करें :- हिन्दुस्तान का यह एक ही मन्दिर ऐसा है जिसमें प्रारम्भ से ही छूआछात नहीं रही है।

मुझ दास को भी उस स्थान को देखने का अवसर प्राप्त हुआ। कई सेवकों के साथ उस स्थल को देखने के लिए गया था कि कुछ प्रमाण प्राप्त करूं। वहाँ पर सर्व प्रमाण आज भी साक्षी मिले। जिस पत्थर (चौरा) पर बैठ कर कबीर परमेश्वर जी ने मन्दिर को बचाने के लिए समुद्र को रोका था वह आज भी विद्यमान है। उसके ऊपर एक यादगार रूप में गुम्बद बना रखा है। वहाँ पर बहुत पुरातन महन्त(रखवाला) परम्परा से एक आश्रम भी विद्यमान है। वहाँ पर लगभग 70 वर्षीय वद्ध महन्त जी से उपरोक्त मन्दिर की समुद्र से रक्षा की जानकारी चाही तो उसने भी यही बताया तथा कहा कि मेरे पूर्वज कई पीढ़ी से यहाँ पर महन्त (रखवाले) रहे हैं। यहाँ पर ही श्री धर्मदास साहेब व उनकी पत्नी भक्तमति आमनी देवी ने शरीर त्यागा था। दोनों की समाधियाँ भी साथ-साथ बनी दिखाई।

फिर हम श्री जगन्नाथ जी के मन्दिर में गए। वहाँ पर मूर्ति पूजा आज भी नहीं है। परन्तु प्रदर्शनी अवश्य लगा रखी है।

जो तीन मूर्तियाँ भगवान श्री कष्ण जी तथा श्री बलराम जी व बहन सुभद्रा जी की मन्दिर के अन्दर स्थापित हैं उनके दोनों हाथों के पंजे नहीं हैं, दोनों हाथ टूंडे हैं। उन मूर्तियों की भी पूजा नहीं होती, केवल दर्शनार्थ रखी हैं। वहाँ पर एक गाईड पांडे से पूछा कि सुना है कि यह मन्दिर पाँच बार समुद्र ने तोड़ा था पुनः बनवाया था। समुद्र ने क्यों तोड़ा? फिर किसने समुद्र को

रोका। पांडे ने कहा इतना तो मुझे पता नहीं। यह सर्व कपा जगन्नाथ जी की थी, उन्होंने ही समुद्र को रोका था, सुना तो है कि समुद्र ने तीन बार मन्दिर को तोड़ा था। मैंने फिर प्रश्न किया कि प्रथम बार ही क्यों न समुद्र रोका प्रभु ने? पांडे ने उत्तर दिया कि लीला है जगन्नाथ की।

मैंने फिर पूछा कि इस मन्दिर में छूआछात है या नहीं? उसने कहा जब से मन्दिर बना है यहाँ कोई छूआछात नहीं है। मन्दिर में शुद्र तथा पांडा एक थाली या पतल में खाना खा सकते हैं कोई मना नहीं करता। मैंने प्रश्न किया पांडे जी अन्य हिन्दु मन्दिरों में तो पहले बहुत छुआछात थी, इसमें क्यों नहीं? प्रभु तो वही है। पांडे का उतर था लीला है जगन्नाथ की।

अब पुण्यात्माऐं विचार करें कि सत्य को कितना दबाया गया है, एक लीला जगन्नाथ की कह कर। पवित्र यादगारें आदरणीय हैं, परन्तु आत्म कल्याण तो केवल पवित्र गीता जी व पवित्र वेदों में वर्णित तथा परमेश्वर कबीर जी द्वारा दिए तत्त्वज्ञान के अनुसार भक्ति साधना करने मात्र से ही सम्भव है, अन्यथा शास्त्र विरुद्ध होने से मानव जीवन व्यर्थ हो जाएगा। (प्रमाण गीता अध्याय 16 मंत्र 23-24 में)

श्री जगन्नाथ के मन्दिर में प्रभु के आदेशानुसार पवित्र गीता जी के ज्ञान की महिमा का गुणगान होना ही श्रेयकर है तथा जैसा श्रीमद्भगवत गीता जी में भक्ति विधि है उसी प्रकार साधना करने मात्र से ही आत्म कल्याण संभव है, अन्यथा जगन्नाथ जी के दर्शन मात्र या खिचड़ी प्रसाद खाने मात्र से कोई लाभ नहीं क्योंकि यह क्रिया श्री गीता जी में वर्णित न होने से शास्त्र विरुद्ध हुई, जो अध्याय 16 मंत्र 23-24 में प्रमाण है।

अर्ध रात्रि बीत गई थी, स्वपन में दीखे घनश्याम।
इन्द्रदमन एक मन्दिर बनवा दे,जगन्नाथ हो जिसका नाम।।टेक।।
सुन राजा एक भवन बनवा दे, संग समन्दर गहरा हो। गीता जी का ज्ञान चलै वहां, विद्वान कथा कोई कह रहा हो।।
ना मूर्ति ना पाखण्ड पूजा, वो सहज स्वभाव से रह रहा हो। योग युगत की विधि बतावै, जिससे मन इन्द्रि पर पहरा हो।।
कलियुग में जो नाम जपैगा, उसके सरैंगे सारे काम।।1।।
पाँच बार मन्दिर बनवाया, श्री कष्ण जी के कहने से। मन्दिर टूटा अवशेष बचा ना, तेज समुन्द्र बहने से।।
कहैं कबीर अब मन्दिर बनावाओ, यो टूटै ना मेरे रहने से। छठी बार मन्दिर बनवाया, राजा न राणी के गहने से।।
कहै कष्ण पूर्णब्रह्म कबीर यही है, इसके चरणों में कर प्रणाम।।2।।
कहै कबीर एक चौरा बनवाओ, जहां राम नाम लौ लाऊँगा। जिस पर बैठ समुन्द्र को रोकूं और मन्दिर को बचाऊँगा।।
कहै समुन्द्र उठो भगवन, मैं समुन्द्र तोड़ने जाऊँगा। राम रूप में इसने मुझे सताया, वो बदला लेना चाहूँगा।।
अग्नि बाण से रास्ता मांगा, कहया था मुझे नीच गुलाम।।3।।
कष्ण जी की पुरी द्वारका, उस पर ला कर लावो घात। इधर समुन्द्र बहुर जो आया, तो ठीक नहीं रहगी बात।।
एक मील सागर हटगा, जोड़ कर के दोनों हाथ। पुरी द्वारका डुबो लई थी, कष्ण जी की बिगाड़ी जात।।
पर्वत की ज्यों रूका समुन्द्र, जगन्नाथ का बन गया धाम।।4।।
वद्ध कारीगर बन कर आए, बन्दी छोड़ कबीर करतार। हाथ पैर प्रतीमा के रह गए,धक्के तै दिए खोल किवार।।
अछूत रूप में साहिब आए, खड़े हुए थे बीच द्वार। पांडे जी ने धक्का मारा, कहै करके नीच गंवार।।
कोढ लाग्या पांडा रोवै, काया का गलगा सब चाम।।5।।
चरण धो पांडे न पीये, ज्यों की त्यों फिर हो गई खाल। कहै कबीर सुनो सब पांडा, यहां छुआ—छात की ना चालै चाल।।
जै कोई छुआ—छात करैगा, उसका भी योही होगा हाल। एक पतल मैं दोनों जीमैं, पांडा गुलाम रामपाल।।
इसमें कौन सा भगवान बदल गया, वोहे कष्ण वोहे राम।।6।।

अध्याय ''मोहम्मद बोध'' का सारांश (मुसलमान धर्म की जानकारी)

कबीर सागर में ''मोहम्मद बोध'' 14वां अध्याय पष्ठ 6 पर है।

धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से मुसलमान धर्म के प्रवर्तक हजरत मोहम्मद को ज्ञान समझाने के बारे में प्रश्न किया कि हे बन्दी छोड़! क्या आप नबी मोहम्मद से भी मिले थे? उसने आपकी शरण ली या नहीं? यह जानने की मेरी इच्छा है। आप सबके मालिक हैं, जानीजान हैं।

परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को मोहम्मद धर्म की जानकारी इस प्रकार दी :- (लेखक रामपाल दास के शब्दों में।)

कबीर परमेश्वर जी ने अपनी प्यारी आत्मा धर्मदास जी को मुसलमान धर्म की जानकारी बताई जो इस प्रकार है। {पाठकों से निवेदन है कि कबीर सागर से बहुत सा प्रकरण कबीर पंथियों ने निकाल रखा है। कारण यह रहा है कि वे उस विवरण को समझ नहीं सके। उसको अपनी अल्पबुद्धि के अनुसार गलत मानकर निकाल दिया। मेरे पास एक बहुत पुराना कबीर सागर है। उसके आधार से तथा परमेश्वर कबीर जी ने अपने ज्ञान को संत गरीबदास जी को सन् 1727 (विक्रमी संवत् 1784) में प्रदान किया। संत गरीबदास जी उस समय 10 वर्ष के बालक थे। उनको कबीर परमेश्वर जी सत्यलोक लेकर गए। फिर वापिस छोड़ा। उसके पश्चात् संत गरीबदास जी ने आँखों देखा वर्णन किया। फिर मैंने (रामपाल दास) ने सर्व धर्म ग्रन्थों का इस दष्टिकोण से अध्ययन किया कि क्या यह प्रकरण पुरातन धर्मग्रन्थों में भी है। यदि पुराने धर्मग्रन्थों (पवित्र वेदों, पवित्र गीता, पवित्र पुराण, पवित्र कुरान तथा पवित्र बाईबल जो तीन पुस्तकों का योग है - तौरत, जबूर, इंजिल) में पवित्र कबीर सागर वाला प्रकरण है तो संसार की भोली-भाली और विभिन्न पंथों में धर्म के नाम से बंटी जनता को एक सूत्र में बाँधा जा सकता है। अध्ययन से पता चला कि सर्व धर्मग्रन्थ जहाँ तक यानि जिस मंजिल तक का ज्ञान उनमें है, वह कबीर सागर से मिलता है। कबीर सागर में उन ग्रन्थों से आगे का ज्ञान भी है।

कबीर परमेश्वर जी ने धर्मदास जी को बताया कि हे धर्मदास! मुसलमानों का मानना है कि बाबा आदम से मनुष्यों की उत्पत्ति हुई है। यह इनका अधूरा ज्ञान है। आदम जी वाला जीव पूर्व जन्म में ऋषभ देव राजा था जिसको जैन धर्म का प्रवर्तक व प्रथम तीर्थकंर माना जाता है। मैंने (परमेश्वर कबीर जी ने) नबी मोहम्मद को यही समझाया था कि आप बाबा आदम को अपना प्रथम पुरूष मानते हो, उसी की संतान आप अपने को मानते हो। जिस समय बाबा आदम नहीं था। उस समय परमात्मा तो था। यह ज्ञान पवित्र बाईबल में उत्पत्ति ग्रन्थ में लिखा है। नबी मोहम्मद जी से पूर्व बाबा आदम की संतान में लाखों पैगम्बर हुए माने जाते हैं जिनमें से 1. दाऊद 2. मूसा 3. ईशा जी। दाऊद जी को जबूर किताब मिली, मूसा जी को तौरेत तथा ईशा जी को इंजिल पुस्तक मिली। प्रत्येक को एक ही बार में उपरोक्त पुस्तकें मिली। नबी मोहम्मद जी को कुरान शरीफ किताब मिली जो कई चरणों में कई प्रकार से प्राप्त हुई है।

जब किसी पंथ की शुरूआत होती है, किसी समुदाय के व्यक्ति द्वारा उसी समुदाय से होती है। कारण यह होता है कि परमात्मा किसी महापुरूष को इसी उद्देश्य से संसार में भेजता है कि वह मनुष्यों में फैली बुराई, कुरीतियों, शास्त्र विरूद्ध साधना को छुड़ाकर स्वच्छ तथा शास्त्रविधि अनुसार भक्ति करने वाले भक्त तैयार करे। जिस कारण से उसको अपने ही समुदाय से शुरूआत करनी होती है। रूढ़िवादी तथा स्वार्थी पंथी गुरू उस सच्चे संत का जनता को भ्रमित करके बहुत

विरोध कराते हैं। उसका जीना हराम कर देते हैं। परंतु वह प्रभु का भेजा हुआ अंश होता है। इस संसार में दो शक्ति अपना-अपना कार्य कर रही हैं।

एक काल ब्रह्म है जिसको ज्योति निरंजन भी कहते हैं। वेदांती उसको ब्रह्म कहते हैं और निराकार मानते हैं। मुसलमान उसी को बेचुन (निराकार) अल्लाह कहते हैं।

दूसरी शक्ति सत्य पुरूष है जिसको गीता में परम अक्षर पुरूष, सच्चिदानंद घन ब्रह्म, दिव्य परमपुरूष, तत् ब्रह्म कहा है। (गीता अध्याय 7 श्लोक 29, अध्याय 8 श्लोक 3, अध्याय 8 श्लोक 8, 9, 10)

काल ब्रह्म का राज्य इक्कीस ब्रह्माण्ड का क्षेत्र है जिसको काल लोक कहते हैं। काल ब्रह्म को एक लाख मानव शरीरधारी जीव खाने का शॉप लगा है। जिस कारण से यह अधूरा अध्यात्मिक ज्ञान तथा साथ में बुराई जैसे-शराब, माँस, तम्बाकू का सेवन करने तथा धाम-तीर्थ आदि पूजने का भी ज्ञान देता है। जिस कारण से साधक साधना करते हुए अन्य विषय-विकार तथा शास्त्र विरूद्ध साधना करके अपना जीवन व्यर्थ करते हैं और काल ब्रह्म के जाल में ही रह जाते हैं। काल ब्रह्म की यही कोशिश है। दूसरी शक्ति सत्य पुरूष है। असँख्य ब्रह्माण्डों में जितने भी प्राणी हैं, ये सब सत्य पुरूष जी की आत्माऐं हैं जो सत्यलोक में रहते थे। वहाँ से अपनी अल्पबुद्धि के कारण काल ब्रह्म के साथ यहाँ आ गए। वहाँ पर सत्यलोक में प्रत्येक जीव का अपना घर-परिवार सर्व सामान था। प्रत्येक को काल ब्रह्म के देवताओं से भी अधिक सुविधाऐं थी। कोई वंद्ध नहीं होता था, कोई मरता नहीं था। संष्टि ऐसी ही है। यह पाँच तत्त्व से बनी है। वहाँ एक नूर तत्त्व से बनी संष्टि है। यह मिट्टी से निर्मित जानो, वहाँ की सोने से बनी मानो। यह नाशवान है। वह अविनाशी है। सत्य पुरूष स्वयं कबीर जी हैं। उनके शरीर का नाम कबीर है। वेदों में कविर्देव कहते हैं। कुरान में अल्लाह अकबर, अल्लाह कबीर कहते हैं। परमेश्वर कबीर जी चाहते हैं कि सर्व जीव मेरे ज्ञान को समझें और मेरे द्वारा बताई भक्ति साधना करें। सर्व बुराई त्यागकर निर्मल होकर सत्यलोक में चले जाएंगे। वहाँ इनको कोई कष्ट नहीं है। न मरण है, न वंद्ध अवस्था। सर्व खाद्य पदार्थ सदा उपलब्ध हैं। कोई डाकू-बदमाश, चोर आदि नहीं है। स्त्री-बच्चे, पुरूष सब ऐसी ही संष्टि है। काल ब्रह्म चाहता है कि सर्व प्राणी मेरे जाल में फंसे रहें। जन्मते-मरते रहें। बुराई करके पापग्रस्त होकर जन्मते-मरते रहें। किसी को सत्यलोक तथा सत्य पुरूष का ज्ञान न हो। मेरे तक ज्ञान को अंतिम मानें। इसलिए काल ब्रह्म परमेश्वर कबीर जी की आत्माओं में से अच्छी आत्मा को अपना पैगम्बर यानि संदेशवाहक ज्ञान देने के लिए भक्ति दूत बनाकर भेजता है। अपने काल जाल में रखने वाला ज्ञान देता है। उसी ने बाबा आदम, हजरत दाऊद, हजरत मूसा, हजरत ईशा, हजरत मोहम्मद को तथा अवतारों राम, कंष्ण, आदि शंकराचार्य, ऋषि-मुनियों द्वारा अपना प्रचार करा रखा है। सत्य पुरूष प्रत्येक युग के प्रारम्भ में स्वयं आते हैं। अपनी लीला करते हैं। अपना यथार्थ ज्ञान स्वयं प्रचार करते हैं। उसकी पुस्तकें बन जाती हैं। फिर परमेश्वर अपना पैगम्बर यानि भक्ति प्रचारक दूत भेजते हैं। सत्य पुरूष के पैगम्बर से पहले काल ब्रह्म अपने पैगम्बर भेज देता है। उनके द्वारा जनता को असत्य ज्ञान तथा अन्य बुराइयों पर आरूढ़ कर देता है। सर्व मानव समाज अपनी-अपनी साधना तथा अध्यात्म ज्ञान तथा परंपरा को सर्वश्रेष्ठ मानकर अडिग हो जाता है।

जब सत्यपुरूष आप आते हैं या अपना अंश भेजते हैं, तब सब मानव उनके द्वारा बताए गए सत्य ज्ञान को असत्य मानकर उनका घोर विरोध करते हैं। हे धर्मदास! आप यह प्रत्यक्ष देख भी रहे हो। आप भी तो काल के ज्ञान तथा साधना के ऊपर अडिग थे। ऐसे ही अनेकों श्रद्धालु काल

प्रभु को दयाल, कपावान प्रभु मानकर भक्ति कर रहे होते हैं। काल ब्रह्म भी परमात्मा की अच्छी-सच्ची निष्ठावान आत्माओं को अपना पैगम्बर बनाता है। बाबा आदम की संतान में 1 लाख 80 हजार पैगम्बर, हिन्दू धर्म के 88 हजार ऋषि तथा अन्य प्रचारक, ये अच्छी तथा सच्ची निष्ठा वाले थे जिनको काल ब्रह्म ने अपना प्रचारक बनाया। ऋषियों ने पवित्र वेदों, पवित्र श्रीमद्भगवत गीता तथा पुराणों के आधार से स्वयं भी साधना की तथा अपने अनुयाईयों को भी वही साधना करने को कहा। वेदों तथा गीता में ज्ञान तो श्रेष्ठ है, परंतु अधूरा है। पुराण जो सँख्या में 18 हैं, ये ऋषियों का अपना अनुभव तथा कुछ-कुछ वेद ज्ञान है तथा देवी-देवताओं की जीवनी लिखी है। चारों वेदों का ज्ञान काल ब्रह्म ने दिया। चारों वेदों का सारांश अर्थात् संक्षिप्त रूप श्रीमद्भवगत गीता है। चारों वेदों का ज्ञान काल ब्रह्म ने सर्व प्रथम दिया था। उसके पश्चात् उसी काल ब्रह्म ने चार किताबों (जबूर, तौरेत, इंजिल तथा कुरान शरीफ) का ज्ञान दिया है। भक्ति का मार्ग वेदों तथा गीता में बताया गया है। उसके पश्चात् दाऊद जी को जबूर किताब वाला ज्ञान दिया। इसमें सष्टि की उत्पत्ति का आंशिक ज्ञान दिया। इसके पश्चात् मूसा जी को तौरेत पुस्तक वाला ज्ञान दिया तथा इसके पश्चात् ईसा जी को इंजिल पुस्तक वाला ज्ञान दिया। फिर बाद में कुरान शरीफ वाला ज्ञान मोहम्मद जी को दिया। वेदों में भक्ति तथा भगवान का ज्ञान बताया है। वह ज्ञान अन्य पुस्तकों जबूर, तौरेत, इंजिल तथा कुरान शरीफ में दोहराना उचित न जानकर सामान्य ज्ञान दिया है। इनमें कुछ वेद ज्ञान है तथा कुरान शरीफ में लगभग 40 प्रतिशत ज्ञान बाईबल वाला है। (बाईबल ग्रन्थ में तीन पुस्तक इकट्ठी की गई हैं, जबूर, तौरेत तथा इंजिल) मूसा जी के अनुयाई यहूदी कहलाते हैं। ईशा जी के अनुयाई ईसाई कहे जाते हैं। मोहम्मद जी के अनुयाई मुसलमान कहे जाते हैं। ये सब बाबा आदम को अपना प्रथम पुरूष अर्थात् सब आदमियों का पिता मानते हैं। ये अब मानते हैं कि जब तक सष्टि चलेगी, तब तक सर्व मानव मरते रहेंगे। उनको कब्र में दबाते चलो। जिस समय कयामत (प्रलय) आएगी, उस समय सब व्यक्ति (स्त्री-पुरूष) कब्रों से निकालकर मुर्दे जीवित किए जाएंगे। उनके कर्मों का हिसाब होगा जिन्होंने चारों कतेबों (पुस्तकों) में लिए अल्लाह के आदेशानुसार कर्म किए हैं। वे जन्नत (स्वर्ग) में रहेंगे। जिन्होंने चारों पुस्तकों (जबूर, तौरेत, इंजिल तथा कुरान शरीफ) के आदेश का पालन नहीं किया। वे सदा दोजिख (नरक) की आग में जलेंगे। इसके पश्चात् यहाँ की सष्टि सदा के लिए नष्ट हो जाएगी। मुसलमानों का मानना है कि कयामत से पहले केवल निराकार प्रभु था। वर्तमान में जन्नत में कोई नहीं है। न ही दोजख में कोई है। मुसलमान नहीं मानते कि पुनर्जन्म होता है। वे केवल एक बार जन्म, फिर मरण, उसके पश्चात् कब्र में, फिर जब सष्टि का विनाश होगा, तब कब्र से निकालकर कर्मानुसार स्वर्ग तथा नरक, फिर Full stop यानि सष्टि क्रम का पूर्ण विराम रहेगा। यदि उपरोक्त बात सत्य है तो हजरत मुहम्मद जी ने जन्नत में बाबा आदम, मुसा, ईशा, दाऊद आदि की मण्डली को देखा। उनको भी कब्र में रहना चाहिए था। इससे आप मुसलमानों का विधान गलत सिद्ध हुआ।

परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी से कहा कि हे धर्मदास! यह विचार तथा ज्ञान गलत है। वास्तविकता यह है कि जन्म-मरण, पुनर्जन्म उस समय तक चलता रहता है, जब तक जीव मेरी (कबीर जी की) शरण में नहीं आता। परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को बताया कि मोहम्मद की जीवनी इस प्रकार है। ईशा मसीह के लगभग 600 वर्ष पश्चात् हजरत मोहम्मद जी का जन्म यहूदी समुदाय में हुआ। उस समय आध्यात्मिक अज्ञानता पूरी तरफ फैल चुकी थी। उस समुदाय के सब व्यक्ति मूर्ति पूजक थे। मोहम्मद जी के पिता का नाम अबदुल्ला था। दादा जी का नाम

अब्दुल मुअतिल था। मोहम्मद का जन्म एक बिल्ला रहमान नामक फकीर (साधु) के सूक्ष्म मिलन से रहे गर्भ से हुआ था। इसको मोहम्मद की माता ने स्वपन दोष माना था। {इसी प्रकार ईशा जी की माता मर्यम को भी गर्भ एक फरिश्ते से रहा था। मर्यम ने भी इसे स्वपन दोष माना था, परंतु ईशा के पिता युसुफ ने इसे गलत कर्म मानकर मर्यम को तलाक देना चाहा था। उसी समय एक फरिश्ता (देवता) प्रकट हुआ। उसने कहा कि मर्यम को गर्भ मेरे से रहा है। इसको कुछ पता नहीं है। यह प्रभु की ओर से भेजा गया नबी है। संसार को भक्ति संदेश देने संसार में जन्म लेगा। युसुफ ने देवता की बात मानकर मर्यम को आदर के साथ रखा। महाभारत में भी प्रमाण है कि धतराष्ट्र तथा पाण्डव दो भाई थे। राजा शान्तनु के पुत्र थे। पाण्डव छोटा था। वह रोगी था, संतानोत्पत्ति में असमर्थ था। उसकी दो पत्नियाँ थी। एक कुंती व दूसरी मादरी। कुंती ने तीन पुत्रों को जन्म दिया जो तीन फरिश्तों (देवताओं) से गर्भ रहा था। युधिष्ठर का जन्म धर्मराज द्वारा कुंती से मिलन से हुआ था। अर्जुन का जन्म कुंती से इन्द्र देवता के भोग-विलास से हुआ था। भीम का जन्म पवन देवता द्वारा कुंती से मिलन करने से हुआ था। नकुल का जन्म स्रत देवता से मादरी से मिलन से तथा सहदेव का जन्म नासत्य देवता से मादरी से मिलन से हुआ था। पुराणों में कथा है कि एक समय सूर्य देव की पत्नी घर छोड़कर जंगल में चली गई। कारण यह था कि सूर्य देव के अधिक भोग-विलास (Sex) से तंग आकर अपनी नौकरानी को अपने जैसे स्वरूप का आशीर्वाद दिया और उससे कहा कि तू मेरा भेद मत देना। मैं अपने पिता विश्वकर्मा के घर जाती हूँ। ऐसा कहकर उषा चली गई। नौकरानी का स्वरूप उषा जैसा हो गया। जब सूर्य देव को पता चला तो वह विश्वकर्मा के घर गए। विश्वकर्मा ने अपनी पुत्री को वापिस घर जाने पर जोर दिया तो उषा जंगल में घोड़ी का रूप बनाकर तप करने लगी। उसने सोचा था कि यदि स्त्री रूप में तप करूँगी तो कोई इज्जत का दुश्मन हो जाएगा। सूर्य को पता चला कि उषा तो यहाँ से भी चली गई है तो ध्यान से दिव्य दष्टि से देखा तो उषा घोड़ी रूप में तप कर रही है। सूर्य देव ने घोड़े का रूप धारण किया और उषा से भोग करने की तड़फ हुई। घोड़ी रूप में उषा ने घोड़े को गलत नीयत से अपनी ओर आता देख अपने पष्ठ भाग (इन्द्री) को बचाने के लिए घोड़े की तरफ मुख करके साथ-साथ घूमती रही। वासनावश सूर्य रूपी घोड़ा मुख में ही भोग करने लगा। उसकी बीज शक्ति पथ्वी के ऊपर गिर गई। उससे दो लड़के उत्पन्न हुए। वे अश्वनी (घोड़ी) कुमार कहलाए। उनका नाम स्रत तथा नासत्य रखा। वे अश्वनी कुमार देवता कहे जाते हैं।} अबदुल्ला जी अपनी पत्नी को ससुराल से लेकर आए।

{**सूक्ष्मवेद में लिखा है कि :-** ''मुसलमान बिस्तार बिल्ला का। नौज उदर घर संजम जाका।।
जाके भोग मोहम्मद आया। जिसने यह धर्म चलाया।।

कुछ महीने बाद अबदुल्ला जी कुछ व्यापारियों के साथ रोजगार के लिए गए तो बीमार होकर मत्यु को प्राप्त हो गए। उस समय मोहम्मद जी माता के गर्भ में थे। बाद में मोहम्मद जी का जन्म हुआ। छः वर्ष के हुए तो माता जी अपने पति की कब्र देखने के लिए गाँव के कुछ स्त्री-पुरूषों के साथ गई थी तो उनकी मत्यु भी रास्ते में हो गई। नबी मोहम्मद अनाथ हो गए। दादा पालन-पोषण करने लगा। जब आठ वर्ष के हुए तो दादा की भी मत्यु हो गई। पूर्ण रूप से अनाथ हो गए। जैसे-तैसे 25 वर्ष के हुए, तब एक 40 वर्ष की खदिजा नामक विधवा से विवाह हुआ। {खदिजा का दो बार बड़े धनवान घरानों में विवाह हुआ था। दोनों की मत्यु हो जाने के कारण उनकी सब संपत्ति खदिजा के पास ही थी। वह बहुत रईस थी।} खदिजा से मोहम्मद जी के तीन पुत्र (कासिम, तयब,

ताहिर) तथा चार पुत्री हुई। जिस समय मोहम्मद जी 40 वर्ष के हुए तो उनको जबरील नामक फरिश्ता मिला और कुरान शरीफ का ज्ञान देना प्रारम्भ किया। वे नबी बने। मुसलमानों का मानना है कि हजरत मोहम्मद जी को कुरान शरीफ का ज्ञान सीधा बेचून (निराकार) अल्लाह की ओर से भेजा गया है। उसमें बिना किसी मिलावट किए जबरील फरिश्ते ने मोहम्मद जी को बताया है। कभी-कभी फरिश्ता मोहम्मद के शरीर में प्रवेश करके बोलता था। मोहम्मद जी चद्दर मुख पर ढ़ककर लेट जाते थे। ऊपर से अल्लाह के पास से वयह (संदेश) आती थी। उस ज्ञान को मोहम्मद जी मुख ढ़के-ढ़के बोलते थे, लिखी जाती थी। इस तरह आने वाला संदेश बहुत दुःखदायी होता था। मोहम्मद जी का सारा शरीर कांपता था। वास्तव में फरिश्ता अंदर प्रवेश करके बोलता था। कभी-कभी काल ब्रह्म भी स्वयं प्रवेश करके बोलता था। (काल ब्रह्म ने कष्ण के शरीर में प्रवेश करके गीता वाला ज्ञान बोला था।) एक दिन हजरत मोहम्मद जी ने अपनी ऊपर (स्वर्ग) की यात्रा का वर्णन बताया। एक गधे जैसा जानवर (जिसे बुराक नाम दिया) लेकर जबरील देवता आया और मोहम्मद जी को बैठाकर ऊपर के सातों आसमानों की सैर कराई। ऊपर जाकर एक मैराज यानि सीढ़ी ऊपर से नीचे की ओर खुली, उसके ऊपर बुराक चढ़ा। मोहम्मद जी भी उस पर बैठे थे। जबरील नीचे रहा। फिर एक पक्षी आया। उस पर बैठकर मोहम्मद जी अल्लाह के पास गए। पक्षी भी चला गया। मोहम्मद जी ने अल्लाह से सीधी वार्ता की। अल्लाह पर्दे के पीछे से बोला और 50 नमाज प्रतिदिन करने को कहा। फिर मूसा जी के कहने से वापिस जाकर 5 नमाज करने की आज्ञा अल्लाह से लेकर आए जो वर्तमान में मुसलमान करते हैं। हजरत मोहम्मद जी ने बताया कि मैंने जन्नत (स्वर्ग) में सब आदमियों के पिता बाबा आदम जी को देखा व उनके दांई और स्वर्ग था। स्वर्ग में उसकी नेक संतान थी जिन्होंने अल्लाह के आदेशानुसार भक्ति की थी। वे स्वर्ग (जन्नत) में सुखी थे। बाबा आदम के बांई ओर दोजख (नरक) था। उसमें बाबा आदम की निकम्मी संतान कष्ट भोग रही थी जिन्होंने अल्लाह की कतेबों के आदेशानुसार भक्ति न करके जीवन व्यर्थ किया था। हजरत मोहम्मद जी ने बताया कि बाबा आदम बांई ओर नरक में अपनी संतान को नरक में कष्ट उठाते देखकर रो रहे थे और दांई ओर स्वर्ग में नेक संतान को देखकर हँस रहे थे। जबरील देवता ने बताया कि ये बाबा आदम हैं। मोहम्मद साहब ने बताया कि ऊपर के लोकों में मुझे हजरत दाऊद, हजरत मूसा तथा हजरत ईशा जी तथा अन्य नबियों की जमात (मण्डली) मिली। मैंने उनको नमाज पढ़ाई। फिर नीचे लाकर बुराक छोड़कर चला गया। हजरत मुहम्मद जी के इस आँखों देखे प्रकरण को मुसलमान सत्य मानते हैं। इसलिए आपका वह सिद्धांत गलत सिद्ध हुआ कि मत्यु के पश्चात् प्रलय (कयामत) तक बाबा आदम, हजरत दाऊद, मूसा, ईशा आदि-आदि को जन्नत की बजाय कब्रों में होना चाहिए था जिनको हजरत मुहम्मद जी ने जन्नत में देखा तथा बाबा आदम की संतान भी कब्रों में रहनी चाहिए थी जो ऊपर स्वर्ग (जन्नत) तथा नरक (दोजख) में हजरत मुहम्मद जी ने देखी थी। आपका सिद्धांत गलत है। हजरत मोहम्मद जी को खदिजा जी से तीन पुत्र तथा चार बेटी प्राप्त हुई थी। तीनों बेटे मोहम्मद जी की आँखों के सामने अल्लाह को प्यारे हुए।

"पवित्र मुसलमान धर्म का संक्षिप्त परिचय"

पहले दिन दिल्ली के सम्राट सिकंदर लोधी का असाध्य जलन का रोग परमात्मा कबीर जी ने आशीर्वाद से समाप्त किया था तथा सिकंदर लोधी राजा ने क्रोधवश स्वामी रामानंद जी की गर्दन

काटी थी। परमात्मा कबीर जी ने जीवित किया था। उस समय से शेखतकी पीर साथ नहीं था। अगले दिन पूज्य कबीर परमेश्वर राज दरबार में पहुँचे। काशी नरेश बीरदेव सिंह बघेल तथा दिल्ली के बादशाह सिकंदर लोधी ने डण्डवत् प्रणाम (जमीन पर लम्बा लेटकर) किया तथा कबीर प्रभु जी को आसन पर बैठाया तथा स्वयं नीचे जमीन पर बिछे गलीचे पर विराजमान हो गए। बादशाह सिकंदर ने प्रार्थना की कि हे परवरदीगार ! मेरा रोग न तो हिन्दू संतों से शांत हुआ तथा न ही मुसलमान पीरों, काजी तथा मुल्लाओं से। क्या कारण था दीन दयाल आपके आशीर्वाद मात्र से ही मेरा जान लेवा रोग छू मंत्र हो गया। कल रात्रि में मैंने पेट भर कर खाना खाया। वर्षों से यह कष्ट मुझे सत्ता रहा था। आपकी कृपा से मैं स्वस्थ हो गया हूँ।

परमेश्वर कबीर साहेब जी ने बताया कि राजन् पूर्ण परमात्मा अल्लाहु अकबर(अल्लाहु कबीरू) ही सर्व पाप नाश (क्षमा) कर सकता है जिसका मेरे अतिरिक्त किसी को ज्ञान नहीं है। अन्य प्रभु तो केवल किए कर्म का फल ही दे सकते हैं। जैसे प्राणी को दुःख तो पाप से होता है तथा सुख पुण्य से। आपको पाप कर्म के कारण कष्ट था। यह आपके प्रारब्ध में लिखा था। यह किसी भी अन्य भगवान से ठीक नहीं हो सकता था। क्योंकि पाप नाशक (क्षमा करने वाले) पूर्ण परमात्मा कविर्देव/अल्लाहु अकबर (अल्लाहु कबीरू) के वास्तविक ज्ञान व भक्ति विधि को न तो हिन्दू संत, गुरुजन जानते हैं तथा न ही मुसलमान पीर, काजी तथा मुल्ला ही परिचित हैं। उस सर्व शक्तिमान परमेश्वर की पूजा विधि तथा पूर्ण ज्ञान केवल यह दास जानता है। न श्री राम तथा श्री कृष्ण अर्थात् श्री विष्णु जी जानते तथा न ही श्री ब्रह्मा जी तथा श्री शिव जी, न ब्रह्म (जिसे आप निराकार प्रभु कहते हो) जानता। न हजरत मुहम्मद जानता था, न ही अन्य मुसलमान पीर व काजी तथा मुल्ला ही जानते हैं।

"शेखतकी नामक मुसलमान पीर से वार्ता"

परमेश्वर कबीर साहेब जी के मुख कमल से उपरोक्त वचन सुनकर शेखतकी व्यंगात्मक तरीके से बोला कि क्या तू ही जानता है सर्व ज्ञान को? हमारे हजरत मुहम्मद साहेब जी को भी अज्ञानी कह रहा है। बीच बचाव करते हुए बीरसिंह बघेल काशी नरेश ने कहा पीर जी इसमें नाराज होने की कौन-सी बात है, प्रेम पूर्वक शंका का समाधान करवाओ। काशी नरेश जानता था कि सर्व ज्ञान सम्पन्न पूज्य कबीर साहेब जी ज्ञान गोष्ठी करके पीर जी का भ्रम निवारण करना चाहते हैं। काशी नरेश ने शेखतकी से कहा कबीर जी ने किस कारण से हजरत मुहम्मद जी को पूर्ण ज्ञान से वंचित कहा है आप कारण पूछो। शेखतकी ने कहा प्रश्न ही तो पूछ रहा हूँ। कबीर जी कारण बताए किस आधार पर हमारे परम आदरणीय हजरत मुहम्मद जी को अज्ञानी कहा है?

"पवित्र कुर्आन शरीफ ने प्रभु के विषय में क्या बताया है ?"

परम पूज्य कबीर परमेश्वर ने कहना प्रारम्भ किया। पवित्र कुर्आन शरीफ सुरत फुर्कानि संख्या 25 आयत 52 से 59 में जिस कबीर अल्लाह का विवरण है वह पूर्ण परमात्मा है। जिसे अल्लाहु अकबर(अकबीरू) कहते हो। कुर्आन शरीफ का ज्ञान दाता अल्लाह किसी अन्य कबीर नामक अल्लाह की महिमा का गुणगान कर रहा है। आयत सं. 52 से 58 तथा 59 में हजरत मुहम्मद जी को कुर्आन शरीफ के ज्ञान दाता प्रभु ने कहा है कि हे नबी मुहम्मद ! जो कबीर नामक अल्लाह है उसने सर्व ब्रह्मण्डो की रचना की है। वही सर्व पाप नाश (क्षमा) करने वाला है तथा सर्व के पूजा

करने योग्य है(इबादही कबीरा अर्थात् पूजा के योग्य कबीर)। उसी ने जमीन तथा आसमान के मध्य जो कुछ भी है सर्व की रचना छः दिन में की है तथा सातवें दिन आसमान में तख्त पर जा विराजा। काफिर लोग उस कबीर प्रभु (अल्लाहु अकबर) को सर्व शक्तिमान प्रभु नहीं मानते। आप उनकी बातों में मत आना। उनका कहा मत मानना। मेरे द्वारा दिए कुर्आन शरीफ की दलीलों पर विश्वास रखना तथा अहिंसा के साथ कबीर अल्लाह के लिए संघर्ष (जिहाद) करना, लड़ाई नहीं करना(सूरत फुर्कानि आयत 52)। उस परमात्मा कबीर (अल्लाहु अकबर) की भक्ति विधि तथा उसके विषय में पूर्ण ज्ञान मुझे नहीं है। उस सर्व शक्तिमान, सर्व ब्रह्मण्डों के रचनहार, सर्व पाप नाशक, सर्व के पूजा योग्य कबीर अल्लाह की पूजा के विषय में किसी तत्त्वदर्शी (बाखबर) संत से पूछो। कबीर परमेश्वर ने कहा शेखतकी जी आपके अल्लाह को ही ज्ञान नहीं है तो आप के हजरत मुहम्मद साहेब जी को कैसे पूर्ण ज्ञान हो सकता है? तथा अन्य काजी, मुल्ला तथा पीर भी सत्य साधना तथा तत्त्वज्ञान से वंचित हैं। जिस कारण से साधक के कष्ट का निवारण नहीं होता। अन्य साधना जैसे पाँच समय निमाज, बंग आदि देने से मोक्ष तथा कष्ट निवारण नहीं होता। जन्म-मृत्यु तथा स्वर्ग-नरक तथा अन्य प्राणियों के शरीरों में भी किए कर्म के आधार से कष्ट भोगना पड़ता है।

उपरोक्त वार्ता सुनकर शेखतकी ने तुरन्त कुर्आन शरीफ को खोला तथा सूरत फुर्कानि संख्या 25 आयत 52 से 59 को पढ़ा जिसमें उपरोक्त विवरण सही था। वास्तविकता को आँखों देखकर भी मान हानि के भय से कहा कि ऐसा कहीं नही लिखा है। यह काफिर झूठ बोल रहा है। उस समय शिक्षा का अभाव था। मुसलमान समाज अरबी भाषा से परिचित नहीं था। कुर्आन शरीफ अरबी भाषा में लिखी थी। बादशाह सिकंदर को भी शंका हो गई कि परमेश्वर कबीर साहेब जी भले ही शक्ति युक्त हैं परन्तु अशिक्षित होने के कारण कुर्आन शरीफ के विषय में नहीं जान सकते।

शेखतकी ने जले-भुने वचन बोले क्या तूही है वह बाखबर ? फिर बता दे वह अल्लाहु अकबर कैसा है? यदि परमात्मा को साकार कहता है तो कौन है? कहाँ रहता है?

परमेश्वर कबीर साहेब जी ने कहा :- वह कबीर अल्लाह जिसे आप अल्लाहू अकबर कहते हो मैं ही हूँ। मैं ऊपर सतलोक में रहता हूँ। मैंने ही सर्व ब्रह्मण्डों की रचना की है। मैं हजरत मुहम्मद जी को भी जिन्दा संत का रूप धारण करके मिला था तथा उस प्यारी आत्मा को सतलोक दिखाकर वापिस छोड़ा था। हजरत मुहम्मद से कहा था कि आप अब मेरी महिमा सर्व अनुयाईयों को सुनाओ। परन्तु जिबराईल फरिश्ते के भय के कारण तत्त्व ज्ञान का प्रचार नहीं किया तथा न मेरी बातों पर विश्वास किया। क्योंकि उससे पूर्व जिबराईल देवता हजरत मुहम्मद जी को पितर लोक में घुमा लाया था। जहाँ पर हजरत मुहम्मद जी ने अपने पूर्वज बाबा आदम को देखा जो दांई ओर मुंह करके हंस रहा था तथा बांई ओर मुंह करके रो रहा था। हजरत जिबराईल से हजरत मुहम्मद जी ने पूछा कि यह व्यक्ति कौन है, जो एक बार हंस रहा है एक बार रो रहा है ? जिबराईल ने बताया यह बाबा आदम है। दांई ओर स्वर्ग में इनकी पुण्य कर्मी संतान है तथा बांई ओर नरक में बुरी संतान कष्ट उठा रही है। इसलिए जब नेक संतान को स्वर्ग में सुखी देखता है तो हंसत्ता है। जब बांई ओर बुरी संतान को महा कष्ट से नरक में पीड़ित देखता है तो बुरी तरह रोता है। इसी लोक में अन्य स्थान पर हजरत मूसा तथा हजरत ईसा जी आदि को भी देखा। वहाँ पर नबियों की मण्डली देखी। उनसे हजरत मुहम्मद जी की वार्ता हुई। इस कारण से हजरत मुहम्मद काल के जाल को न समझकर उसी स्थान को वास्तविक ठिकाना मान चुका था क्योंकि वहाँ पितर लोक में पवित्र ईसाई तथा पवित्र मुसलमान धर्म के पूज्य बाबा आदम भी थे तथा अन्य नबी भी विराजमान थे।

"माँस-मदिरा निषेध का उपदेश"

हजरत मुहम्मद जी जिस साधना को करता था वही साधना अन्य मुसलमान समाज भी कर रहा है। वर्तमान में सर्व मुसलमान श्रद्धालु माँस भी खा रहे हैं। परन्तु नबी मुहम्मद जी ने कभी माँस नहीं खाया तथा न ही उनके सीधे अनुयाईयों(एक लाख अस्सी हजार) ने माँस खाया। केवल रोजा व बंग तथा नमाज किया करते थे। गाय आदि को बिस्मिल(हत्या) नहीं करते थे।

नबी मुहम्मद नमस्कार है, राम रसूल कहाया।
एक लाख अस्सी कूं सौगंध, जिन नहीं करद चलाया।।
अरस कुरस पर अल्लह तख्त है, खालिक बिन नहीं खाली।
वे पैगम्बर पाख पुरुष थे, साहिब के अब्दाली।।

भावार्थ :- नबी मोहम्मद तो आदरणीय है जो प्रभु के अवतार कहलाए हैं। कसम है एक लाख अस्सी हजार को जो उनके अनुयाई थे उन्होंने भी कभी बकरे, मुर्गे तथा गाय आदि पर करद नहीं चलाया अर्थात् जीव हिंसा नहीं की तथा माँस भक्षण नहीं किया। वे हजरत मोहम्मद, हजरत मूसा, हरजत ईसा आदि पैगम्बर(संदेशवाहक) तो पवित्र व्यक्ति थे तथा ब्रह्म(ज्योति निरंजन/काल) के कपा पात्र थे, परन्तु जो आसमान के अंतिम छोर(सतलोक) में पूर्ण परमात्मा(अल्लाहू अकबर अर्थात् अल्लाह कबीर) है उस सष्टि के मालिक की नजर से कोई नहीं बचा।

मारी गऊ शब्द के तीरं, ऐसे थे मोहम्मद पीरं।।
शब्दै फिर जिवाई, हंसा राख्या माँस नहीं भाख्या, ऐसे पीर मुहम्मद भाई।।

भावार्थ : एक समय नबी मुहम्मद ने एक गाय को शब्द(वचन सिद्धि) से मार कर सर्व के सामने जीवित कर दिया था। उन्होंने गाय का माँस नहीं खाया। अब मुसलमान समाज वास्तविकता से परिचित नहीं है। जिस दिन गाय जीवित की थी उस दिन की याद बनाए रखने के लिए गऊ मार देते हो। आप जीवित नहीं कर सकते तो मारने के भी अधिकारी नहीं हो। आप माँस को प्रसाद रूप जान कर खाते तथा खिलाते हो। आप स्वयं भी पाप के भागी बनते हो तथा अनुयाईयों को भी गुमराह कर रहे हो। आप दोजख (नरक) के पात्र बन रहे हो।

कबीर–माँस अहारी मानई, प्रत्यक्ष राक्षस जानि। ताकी संगति मति करै, होइ भक्ति में हानि।।1।।
कबीर–माँस खांय ते ढेड़ सब, मद पीवैं सो नीच। कुलकी दुरमति पर हरै, राम कहै सो ऊंच।।2।।
कबीर–माँस भखै औ मद पिये, धन वेश्या सों खाय। जुआ खेलि चोरी करै, अंत समूला जाय।।5।।
कबीर–माँस माँस सब एक है, मुरगी हिरनी गाय। आँखि देखि नर खात है, ते नर नरकहिं जाय।।6।।
कबीर–यह कूकर को भक्ष है, मनुष देह क्यों खाय। मुखमें आमिख मेलिके, नरक परंगे जाय।।7।।
कबीर–पापी पूजा बैठिकै, भखै माँस मद दोइ। तिनकी दीक्षा मुक्ति नहिं, कोटि नरक फल होइ।।10।।
कबीर–जीव हनै हिंसा करै, प्रगट पाप सिर होय। निगम पुनि ऐसे पाप तें, भिस्त गया नहिं कोय।।14।।
कबीर–तिलभर मछली खायके, कोटि गऊ दै दान। काशी करौंत ले मरै, तौ भी नरक निदान।।16।।
कबीर–बकरी पाती खात है, ताकी काढी खाल। जो बकरीको खात है, तिनका कौन हवाल।।18।।
कबीर–मुल्ला तुझै करीमका, कब आया फरमान। घट फोरा घर घर बांटा, साहबका नीसान।।21।।
कबीर–काजीका बेटा मुआ, उर में सालै पीर। वह साहब सबका पिता, भला न मानै बीर।।22।।
कबीर–पीर सबनको एकसी, मूरख जानैं नाहिं। अपना गला कटायकै, क्यों न बसो भिश्त के माहिं।।23।।
कबीर–मुरगी मुल्लासों कहै, जबह करत है मोहिं। साहब लेखा माँगसी, संकट परिहै तोहिं।।24।।

कबीर–जोर करि जबह करै, मुखसों कहै हलाल। साहब लेखा माँगसी, तब होसी कौन हवाल।।28।।
कबीर–जोर कीयां जुलूम है, मांगै ज्वाब खुदाय। खालिक दर खूनी खडा, मार मुहीं मुँह खाय।।29।।
कबीर–गला काटि कलमा भरै, कीया कहै हलाल। साहब लेखा माँगसी, तब होसी जबाब–सवाल।।30।।
कबीर–गला गुसाकों काटिये, मियां कहरकौ मार। जो पाँचू बिस्मिल करै, तब पावै दीदार।।31।।
कबीर–ये सब झूठी बंदगी, बेरिया पाँच निमाज। सांचहि मारै झूठ पढ़ि, काजी करै अकाज।।32।।
कबीर–दिनको रोजा रहत हैं, रात हनत है गाय। यह खून वह बंदगी, कहुं क्यों खुशी खुदाय।।33।।
कबीर–कबीर तेई पीर हैं, जो जानै पर पीर। जो पर पीर न जानि है, सो काफिर बेपीर।।36।।
कबीर–खूब खाना है खीचड़ी, माँहीं परी टुक लौन। माँस पराया खायकै, गला कटावै कौन।।37।।
कबीर–कहता हूँ कहि जात हूँ, कहा जो मान हमार। जाका गला तुम काटि हो, सो फिर काटै तुम्हार।।38।।
कबीर–हिन्दू के दया नहीं, मिहर तुरकके नाहिं। कहै कबीर दोनूं गया, लख चौरासी माहिं।।39।।
कबीर–मुसलमान मारै करदसो, हिंदू मारे तरवार। कहै कबीर दोनूं मिलि, जैहैं यमके द्वार।।40।।

❖ उपरोक्त अमतवाणी में पूज्य कबीर परमेश्वर ने समझाया कि जो व्यक्ति माँस खाते हैं, शराब पीते हैं, सत्संग सुनकर भी बुराई नहीं त्यागते, उपदेश प्राप्त नहीं करते, उन्हें तो साक्षात राक्षस जानों। अनजाने में गलती न जाने किससे हो जाए। यदि वह बुराई करने वाला व्यक्ति सत्संग विचार सुनकर बुराई त्याग कर भगवान की भक्ति करने लग जाता है वह तो नेक आत्मा है, वह चाहे किसी जाति व धर्म का हो। जो माँस आहार तथा मदिरा पान त्यागकर प्रभु भक्ति नहीं करता वह तो ढेड(नीच) व्यक्ति है, चाहे किसी जाति या धर्म का हो। भावार्थ है कि उच्च कर्म करने वाला उच्च है तथा नीच कर्म करने वाला नीच है। जाति या धर्म विशेष में जन्म मात्र से उच्च-नीच नहीं होता। जिन साधकों ने उपदेश ले रखा है उन्हें उपरोक्त प्रकार के बुराई करने वालों के पास नहीं बैठना चाहिए, जिससे आपकी भक्ति में बाधा पड़ेगी(साखी 1-2)।

❖ जो व्यक्ति माँस भक्षण करते हैं, शराब पीते हैं, जो स्त्री वैश्यावति करती है तथा जो व्यक्ति उससे व्यवसाय करवा कर वैश्या से धन प्राप्त करते हैं, जुआ खेलते हैं तथा चोरी करते है, समझाने से भी नहीं मानते, वह तो महापाप के भागी हैं तथा घोर नरक में गिरेंगे(साखी 5)।

❖ माँस चाहे गाय, हिरनी तथा मुर्गी आदि किसी प्राणी का है जो व्यक्ति माँस खाते हैं वे नरक के भागी हैं। जो व्यक्ति अनजाने में माँस खाते हैं(जैसे आप किसी रिश्तेदारी में गए, आपको पता नहीं लगा कि सब्जी है या माँस, आपने खा लिया) तो आपको दोष नहीं, परन्तु आगे से अति सावधान रहना। जो व्यक्ति आँखों देखकर भी खा जाते हैं वे दोषी हैं। यह माँस तो कुत्ते का आहार है, मनुष्य शरीर धारी के लिए वर्जित है(साखी 6-7)।

❖ जो गुरुजन माँस भक्षण करते हैं तथा शराब पीते हैं उनसे नाम दीक्षा प्राप्त करने वालों की मुक्ति नहीं होती अपितु महा नरक के भागी होंगे(साखी 10)।

❖ जो व्यक्ति जीव हिंसा करते हैं (चाहे गाय, सूअर, बकरी, मुर्गी, मनुष्य, आदि किसी भी प्राणी को मारते हैं) वे महापापी हैं, (भले ही जिन्होंने पूर्ण संत से पूर्ण परमात्मा का उपदेश भी प्राप्त है) वे कभी मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकते।(साखी-10-14)

❖ जरा-सा (तिल के समान) भी माँस खाकर भक्ति करता है, चाहे करोड़ गाय दान भी करता है, उस साधक की साधना भी व्यर्थ है। माँस आहारी व्यक्ति चाहे काशी में करौंत से गर्दन छेदन भी करवा ले वह नरक ही जायेगा।(नोट - काशी/बनारस के हिन्दूओं के स्वार्थी गुरुओं ने भक्त समाज में भ्रम फैला रखा था कि जो काशी में मरता है वह स्वर्ग जाता है। अधिक भीड़ होने लगी

तब एक और घातक योजना बनाई उसके तहत कहा कि जो शीघ्र स्वर्ग जाना चाहता है उसके लिए गंगा पर एक करौंत भगवान का भेजा आता है। उससे गर्दन कटवाने वालों के लिए स्वर्ग के कपाट खुले रहते हैं। उन स्वार्थी गुरुजनों ने मनुष्य हत्या के लिए एक हत्था खोल दिया। श्रद्धालु भक्तों ने आत्मकल्याण के लिए वहाँ गर्दन कटवाना भी स्वीकार कर लिया। परन्तु ज्ञानहीन गुरुओं के द्वारा बताई साधना से भी कोई लाभ नहीं होता)। इसलिए कहा है कि माँस खाने वाला चाहे कितना भी भक्ति तथा पुण्य व दान तथा बलिदान करे उसका कोई लाभ नहीं(साखी 16)।

❖ बकरी जो आपने मार डाली वह तो घास-फूंस, पत्ते आदि खाकर पेट भर रही थी। इस काल लोक में ऐसे शाकाहारी पशु की भी हत्या हो गई तो जो बकरी का माँस खाते हैं उनका तो अधिक बुरा हाल होगा(साखी 18)।

❖ पशु आदि को हलाल, बिस्मिल आदि करके माँस खाने व प्रसाद रूप में वितरित करने का आदेश दयालु (करीम) प्रभु का कब प्राप्त हुआ(क्योंकि पवित्र बाईबल उत्पत्ति ग्रन्थ में पूर्ण परमात्मा ने छः दिन में सष्टि रची, सातवें दिन ऊपर तख्त पर जा बैठा तथा सर्व मनुष्यों के आहार के लिए आदेश किया था कि मैंने तुम्हारे खाने के लिए फलदार वक्ष तथा बीजदार पौधे दिए हैं। उस करीम (दयालु प्रभु पूर्ण परमात्मा) की ओर से आपको फिर से कब आदेश हुआ ? वह कौन-सी कुर्आन में लिखा है ? पूर्ण परमात्मा सर्व मनुष्यों आदि की सष्टि रचकर ब्रह्म(जिसे अव्यक्त कहते हो, जो कभी सामने प्रकट नहीं होता, गुप्त कार्य करता तथा करवाता रहता है) को दे गया। बाद में पवित्र बाईबल तथा पवित्र कुर्आन शरीफ आदि ग्रन्थों में जो विवरण है वह ब्रह्म (काल/ज्योति निरंजन) का तथा उसके फरिश्तों का है, या भूतों-प्रेतों का है। करीम अर्थात् पूर्ण ब्रह्म दयालु अल्लाहु कबीरू का नहीं है। उस पूर्ण ब्रह्म के आदेश की अवहेलना किसी भी फरिश्ते व ब्रह्म आदि के कहने से करने की सजा भोगनी पड़ेगी।)

एक समय एक व्यक्ति की दोस्ती एक पुलिस थानेदार से हो गई। उस व्यक्ति ने अपने दोस्त थानेदार से कहा कि मेरा पड़ोसी मुझे बहुत परेशान करता है। थानेदार (S.H.O.) ने कहा कि मार लट्ठ, मैं आप निपट लूंगा। थानेदार दोस्त की आज्ञा का पालन करके उस व्यक्ति ने अपने पड़ोसी को लट्ठ मारा, सिर में चोट लगने के कारण पड़ोसी की मत्यु हो गई। उसी क्षेत्र का अधिकारी होने के कारण वह थाना प्रभारी अपने दोस्त को पकड़ कर लाया, कैद में डाल दिया तथा उस व्यक्ति को मत्यु दण्ड मिला। उसका दोस्त थानेदार कुछ मदद नहीं कर सका। क्योंकि राजा का संविधान है कि यदि कोई किसी की हत्या करेगा तो उसे मत्यु दण्ड प्राप्त होगा। उस नादान व्यक्ति ने अपने मित्र दरोगा की आज्ञा मान कर राजा का संविधान भंग कर दिया। जिससे जीवन से हाथ धो बैठा।

ठीक इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा की आज्ञा की अवहेलना करने वाला पाप का भागी होगा। क्योंकि कुर्आन शरीफ (मजीद) का सारा ज्ञान ब्रह्म (काल/ज्योति निरंजन, जिसे आप अव्यक्त कहते हो) का दिया हुआ है। इसमें उसी का आदेश है तथा पवित्र बाईबल में केवल उत्पत्ति ग्रन्थ के प्रारम्भ में पूर्ण प्रभु का आदेश है। पवित्र बाईबल में हजरत आदम तथा उसकी पत्नी हव्वा को उस पूर्ण परमात्मा ने बनाया। बाबा आदम की वंशज संतान हजरत ईस्राईल, राजा दाऊद, हजरत मूसा, हजरत ईसा तथा हजरत मुहम्मद आदि को माना है। पूर्ण परमात्मा तो छः दिन में सष्टि रचकर तख्त पर विराजमान हो गया। बाद का सर्व कतेबों (कुर्आन शरीफ आदि) का ज्ञान ब्रह्म (काल/ज्योति निरंजन) का प्रदान किया हुआ है। पवित्र कुर्आन का ज्ञान दाता स्वयं कहता है कि पूर्ण परमात्मा जिसे करीम, अल्लाह कहा जाता है उसका नाम कबीर है, वही पूजा के योग्य है। उसके तत्त्वज्ञान व भक्ति विधि को किसी बाखबर

(तत्त्वदर्शी संत) से पता करो। इससे सिद्ध है कि जो ज्ञान कुर्आन शरीफ आदि का है वह पूर्ण प्रभु का नहीं है (साखी 21)।

❖ जब काजी के पुत्र की मत्यु हो जाती है तो काजी को कितना कष्ट होता है। पूर्ण ब्रह्म(अल्लाह कबीर) सर्व का पिता है। उसके प्राणियों को मारने वाले से अल्लाह खुश नहीं होता (साखी 22)।

❖ दर्द सर्व को एक जैसा ही होता है। यदि बकरे आदि का गला काट कर (हलाल करके) उसे स्वर्ग भेज देते हो तो काजी तथा मुल्ला अपना गला छेदन करके (हलाल करके) स्वर्ग प्राप्ति क्यों नहीं करते? (साखी 23)

❖ जिस समय बकरी को मुल्ला मारता है तो वह बेजुबान प्राणी आँखों में आंसू भर कर म्यां-म्यां करके समझाना चाहता है कि हे मुल्ला मुझे मार कर पाप का भागी मत बन। जब परमेश्वर के न्याय अनुसार लेखा किया जाएगा उस समय तुझे बहुत संकट का सामना करना पड़ेगा। (साखी 24)

❖ जबरदस्ती (बलात्) निर्दयता से बकरी आदि प्राणी को मारते हो, कहते हो हलाल कर रहे हैं। इस दोगली नीति का आपको महा कष्ट भोगना होगा। काजी तथा मुल्ला व कोई भी जीव हिंसा करने वाला पूर्ण प्रभु के कानून का उल्लंघन कर रहा है, जिस कारण वहाँ धर्मराज के दरबार में खड़ा-खड़ा पिटेगा। यदि हलाल ही करने का शौक है तो काम, क्रोध, मोह, अहंकार, लोभ आदि को करो।

❖ पाँच समय निमाज भी पढ़ते हो व रोजों के समय रोजे (व्रत) भी रखते हो। शाम को गाय, बकरी, मुर्गी आदि को मार कर माँस खाते हो। एक तरफ तो परमात्मा की स्तुति करते हो, दूसरी ओर उसी के प्राणियों की हत्या करके पाप करते हो। ऐसे प्रभु कैसे खुश होगा ? अर्थात् आप स्वयं भी पाप के भागी हो रहे हो तथा अनुयाईयों को भी गुमराह करने के दोषी होकर नरक में गिरोगे। (साखी 28 से 33)

❖ कबीर परमेश्वर कह रहे हैं कि हे काजी, मुल्लाओं आप पीर (गुरु) भी कहलाते हो। पीर तो वह होता है जो दूसरे के दुःख को समझे उसे, संकट में गिरने से बचाए। किसी को कष्ट न पहुँचाए। जो दूसरे के दुःख में दुःखी नहीं होता वह तो काफिर (नीच) बेपीर (निर्दयी) है। वह पीर (गुरु) के योग्य नहीं है। (साखी 36)

❖ उत्तम खाना नमकीन खिचड़ी है उसे खाओ। दूसरे का गला काटने वाले को उसका बदला देना पड़ता है। यह जान कर समझदार व्यक्ति प्रतिफल में अपना गला नहीं कटाता। दोनों ही धर्मों के मार्ग दर्शक निर्दयी हो चुके हैं। हिन्दूओं के गुरु कहते हैं कि हम तो एक झटके से बकरा आदि का गला छेदन करते हैं, जिससे प्राणी को कष्ट नहीं होता, इसलिए हम दोषी नहीं हैं तथा मुसलमान धर्म के मार्ग दर्शक कहते हैं हम धीरे-धीरे हलाल करते हैं जिस कारण हम दोषी नहीं। परमात्मा कबीर साहेब जी ने कहा यदि आपका तथा आपके परिवार के सदस्य का गला किसी भी विधि से काटा जाए तो आपको कैसा लगेगा ? (साखी 37 से 40)

बात करते हैं पुण्य की, करते हैं घोर अधर्म। दोनों नरक में पड़हीं, कुछ तो करो शर्म।।

कबीर परमेश्वर ने कहा -

हम मुहम्मद को सतलोक ले गया। इच्छा रूप वहाँ नहीं रहयो।
उल्ट मुहम्मद महल पठाया, गुज बीरज एक कलमा लाया।।
रोजा, बंग, नमाज दई रे। बिसमिल की नहीं बात कही रे।।

भावार्थ :- नबी मुहम्मद को मैं(कबीर परमेश्वर) सतलोक ले कर गया था परन्तु वहाँ न रहने की इच्छा व्यक्त की, वापिस मुहम्मद जी को शरीर में भेज दिया। नबी मुहम्मद जी ने रोजा(व्रत) बंग(ऊँची आवाज में प्रभु स्तुति करना) तथा पाँच समय की नमाज करना तो कहा था परन्तु गाय

आदि प्राणियों को बिस्मिल करने(मारने) को नहीं कहा।

उपरोक्त वार्ता सुनकर शेखतकी पीर ने क्रोध करते हुए कहा कि तू क्या जाने कुर्आन शरीफ तथा हमारे नबी के विषय में तू तो अशिक्षित है। हमारे धर्म के विषय में झूठा प्रचार करके भ्रम फैला रहा है। मैं बताता हूँ पवित्र कुर्आन शरीफ की अमत वाणी कैसे प्राप्त हुई। यह कोई बाद में लिखा ग्रंथ नहीं है। यह तो अल्लाह(प्रभु) द्वारा बोली वाणी साथ की साथ लिखी गई थी। शेखतकी ने (जो दिल्ली के महाराजा सिकंदर लौधी का धार्मिक गुरु तथा पूरे भारत के मुसलमान शेखतकी की प्रत्येक आज्ञा का पालन करते थे) ने कहा कि सुन गंवार हमारे मुहम्मद नबी का जीवन वतांत।

''हजरत मुहम्मद जी का जीवन चरित्र''

हजरत मुहम्मद के बारे में श्री मुहम्मद इनायतुल्लाह सुब्हानी के विचार

जीवनी हजरत मुहम्मद(सल्लाहु अलैहि वसल्लम) लेखक हैं – मुहम्मद इनायतुल्लाह सुब्हानी,

मूल किताब – मुहम्मदे(अर्बी) से, अनुवादक – नसीम गाजी फलाही,

प्रकाशक – इस्लामी साहित्य ट्रस्ट प्रकाशन नं. 81 के आदेश से प्रकाशन कार्य किया है।

मर्कजी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स, डी–307, दावत नगर, अबुल फज्ल इन्कलेव जामिया नगर, नई दिल्ली–1110025,

श्री हाशिम के पुत्र शौबा थे। उन्हीं का नाम अब्दुल मुत्तलिब पड़ा। क्योंकि जब मुत्तलिब अपने भतीजे शौबा को अपने गाँव लाया तो लोगों ने सोचा कि मुत्तलिब कोई दास लाया है। इसलिए श्री शौबा को श्री अब्दुल मुत्तलिब के उर्फ नाम से अधिक जाना जाने लगा। श्री अब्दुल मुत्तलिब को दस पुत्र प्राप्त हुए। किसी कारण से अब्दुल मुत्तलिब ने अपने दस बेटों में से एक बेटे की कुर्बानी अल्लाह के निमित्त देने का प्रण लिया।

देवता को दस बेटों में से कौन सा बेटा कुर्बानी के लिए पसंद है। इसके लिए एक मन्दिर(काबा) में रखी मूर्तियों में से बड़े देव की मूर्ति के सामने दस तीर रख दिए तथा प्रत्येक पर एक पुत्र का नाम लिख दिया। जिस तीर पर सबसे छोटे पुत्र अब्दुल्ला का नाम लिखा था वह तीर मूर्ति की तरफ हो गया। माना गया कि देवता को यही पुत्र कुर्बानी के लिए स्वीकार है। श्री अब्दुल्ला(नबी मुहम्मद के पिता) की कुर्बानी देने की तैयारी होने लगी। पूरे क्षेत्र के धार्मिक लोगों ने अब्दुल मुत्तल्लिब से कहा ऐसा न करो। हा-हा कार मच गया। एक पुजारी में कोई अन्य आत्मा बोली। उसने कहा कि ऊंटों की कुर्बानी देने से भी काम चलेगा। इससे राहत की स्वांस मिली। उसी शक्ति ने उसके लिए एक अन्य गाँव में एक औरत जो अन्य मन्दिरों के पुजारियों की दलाल थी के विषय में बताया कि वह फैसला करेगी कि कितने ऊंटों की कुर्बानी से अब्दुल्ला की जान अल्लाह क्षमा करेगा। उस औरत ने कहा कि जितने ऊंट एक जान की रक्षा के लिए देते हो अन्य दस और जोड़ कर तथा अब्दुल्ला के नाम की पर्ची तथा दस ऊंटों की पर्ची डाल कर जाँच करते रहो। जब तक ऊंटों वाली पर्ची न निकले, तब तक करते रहो। इस प्रकार दस-2 ऊंटों की संख्या बढ़ाते रहे तब सौ ऊंटों के बाद ऊंटों की पर्ची निकली, उससे पहले अब्दुल्ला की पर्ची निकलती रही। इस प्रकार सौ ऊटों की कुर्बानी(हत्या) करके बेटे अब्दुल्ला की जान बचाई। जवान होने पर श्री अब्दुल्ला का विवाह भक्तमति आमिनी देवी से हुआ। जब हजरत मुहम्मद माता आमिनी जी के गर्भ में थे। पिता श्री अब्दुल्ला जी की मत्यु किसी दूर स्थान पर हो गई। वहीं पर उनकी कब्र बनवा दी। जिस समय बालक मुहम्मद की आयु छः वर्ष हुई तो माता आमिनी देवी अपने पति की कब्र देखने गई थी। उसकी भी मत्यु

रास्ते में हो गई। छः वर्षिय बालक मुहम्मद जी यतीम (अनाथ) हो गए। (उपरोक्त विवरण पूर्वोक्त पुस्तक 'जीवनी हजरत मुहम्मद' पष्ठ 21 से 29 तथा 33-34 पर लिखा है)।

हजरत मुहम्मद जी जब 25 वर्ष के हुए तो एक चालीस वर्षीय विधवा खदीजा नामक स्त्री से विवाह हुआ। खदीजा पहले दो बार विधवा हो चुकी थी। तीसरी बार हजरत मुहम्मद से विवाह हुआ। वह बहुत बड़े धनाङ्य घराने की औरत थी।(यह विवरण पूर्वोक्त पुस्तक के पष्ठ 46, 51-52 पर लिखा है)।

हजरत मुहम्मद जी को संतान रूप में खदीजा जी से तीन पुत्र तथा चार बेटियाँ प्राप्त हुई। तीनों पुत्र 1. कासिम, 2. तय्यब 3. ताहिर आप (हजरत मुहम्मद जी) की आँखों के सामने मत्यु को प्राप्त हुए। केवल चार लड़कियां शेष रहीं। (पूर्वोक्त पुस्तक के पष्ठ 64 पर यह उपरोक्त विवरण लिखा है)।

एक समय प्रभु प्राप्ति की तड़फ में हजरत मुहम्मद जी नगर से बाहर एक गुफा में साधना कर रहे थे। एक जिबराईल नामक फरिश्ते ने हजरत मुहम्मद जी का गला घोंट-2 कर बलात् कुर्आन शरीफ का ज्ञान समझाया। हजरत मुहम्मद जी को डरा धमका कर अव्यक्त माना जाने वाले प्रभु का ज्ञान दिया गया। उस जिबराईल देवता के डर से हजरत मुहम्मद जी ने वह ज्ञान याद किया। इस प्रकार मुहम्मद साहेब जी को काल के भेजे फरिश्ते द्वारा इस ज्ञान को जनता में बताने को बाध्य किया गया। हजरत मुहम्मद जी ने अपनी पत्नी खदीजा जी को बताया कि मैं जब गुफा में बैठा था तो एक फरिश्ता आया। उसके हाथ में एक रेशम का रूमाल था। उस पर कुछ लिखा था। फरिश्ते ने मेरा गला घोंट कर कहा इसे पढ़ो। मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे प्राण निकलने वाले हैं। पूरे शरीर को भींच कर जबरदस्ती मुझे पढ़ाना चाहा। ऐसा दो बार किया। तीसरी बार फिर कहा पढ़ो, मैं अशिक्षित होने के कारण नहीं पढ़ पाया। अब की बार मुझे लगा कि यह और ज्यादा पीड़ा देगा। मैंने कहा क्या पढूं। तब उसने मुझे कुर्आन की एक आयत पढ़ाई। (यह विवरण पूर्वोक्त पुस्तक के पष्ठ 67 से 75 तक लिखा है तथा पष्ठ 157 से 165 तक लिखा है)।

फरिश्ते जिबराईल ने नबी मुहम्मद जी का सीना चाक किया उसमें शक्ति उड़ेल दी और फिर सील दिया तथा एक खच्चर जैसे जानवर पर बैठा कर ऊपर ले गया। वहाँ नबियों की जमात आई, उनमें हजरत मुसा जी, ईसा जी और इब्राहीम जी आदि भी थे। जिनको हजरत मुहम्मद जी ने नमाज पढाई।

वहाँ बाबा आदम जी भी थे जो कभी हँस रहे थे और कभी रो रहे थे। फरिश्ते जिबराईल ने हजरत मुहम्मद जी को बताया यह बाबा आदम जी हैं। रोने तथा हँसने का कारण था कि दाई ओर स्वर्ग में नेक संतान थी जो सुखी थी जिसे देख कर बाबा आदम हँस रहे थे तथा बाई ओर निकम्मी संतान नरक में कष्ट भोग रही थी, जिसे देखकर रो रहे थे। जिसके कारण बाबा आदम ऊपर के लोक में भी पूर्ण सुखी नहीं थे।

फिर सातवें आसमान पर गए। पर्दे के पीछे से आवाज आई की प्रति दिन पचास निमाज किया करे। वहाँ से पचास नमाजों से कम करवाकर केवल पाँच नमाज ही अल्लाह से प्राप्त करके नबी मुहम्मद वापिस आ गए।

(पष्ठ नं. 307 से 315) हजरत मुहम्मद जी द्वारा मुसलमानों को कहा कि खून-खराबा मत करना, ब्याज तक भी नहीं लेना तथा 63 वर्ष की आयु में सख्त बीमार होकर तड़पते-2 भी नमाज की तथा घर पर आकर असहनीय पीड़ा में सारी रात तड़फ कर प्राण त्याग दिए।

(पष्ठ नं. 319) बाद में उत्तराधिकारी का झगड़ा पड़ा। फिर हजरत अबू बक्र को खलीफा चुना गया।

शेखतकी पीर ने बताया कि अल्लाह तो सातवें आसमान पर रहता है वह तो निराकार है। कबीर जी ने कहा शेख जी एक ओर तो आप भगवान को निराकार कह रहे हो। दूसरी ओर प्रभु को सातवें आसमान पर एक देशीय सिद्ध कर रहे हो। जब परमात्मा सातवें आसमान पर रहता है तो वह साकार हुआ।

शेखतकी से उपरोक्त जीवन परिचय हजरत मुहम्मद साहेब जी का सुनकर परमेश्वर कबीर साहेब जी ने कहा शेखतकी जी आपने बताया कि हजरत मुहम्मद जी जब माता के गर्भ में थे उस समय उनके पिता श्री अब्दुल्लाह जी की मत्यु हो गई, छः वर्ष के हुए तो माता जी की मत्यु। आठ वर्ष के हुए तो दादा अब्दुल मुत्तलिब चल बसा। यतीमी का जीवन जीते हुए हजरत मुहम्मद जी की 25 वर्ष की आयु में दो बार पहले विधवा हो चुकी 40 वर्षिय खदीजा से विवाह हुआ। तीन पुत्र तथा चार पुत्रियाँ संतान रूप में हुई। हजरत मुहम्मद जी को जिबराईल नामक फरिश्ते ने गला घोंट-घोंट कर जबरदस्ती डरा धमका कर कुर्आन शरीफ (मजीद) का ज्ञान तथा भक्ति विधि (निमाज आदि) बताई जो तुम्हारे अल्लाह द्वारा बताई गई थी। फिर भी हजरत मुहम्मद जी के आँखों के तारे तीनों पुत्र (कासिम, तय्यब तथा ताहिर) मत्यु को प्राप्त हुए। विचार करें जिस अल्लाह के भेजे रसूल (नबी) के जीवन में कहर ही कहर (महान कष्ट) रहा। तो अन्य अनुयाईयों को कुर्आन शरीफ व मजीद में वर्णित साधना से क्या लाभ हो सकता है ? हजरत मुहम्मद 63 वर्ष की आयु में दो दिन असहाय पीड़ा के कारण दर्द से बेहाल होकर मत्यु को प्राप्त हुआ। जिस पिता के सामने तीनों पुत्र मत्यु को प्राप्त हो जाऐं, उस पिता को आजीवन सुख नहीं होता। प्रभु की भक्ति इसीलिए करते हैं कि परिवार में सुख रहे तथा कोई पाप कर्म दण्ड भोग्य हो, वह भी टल जाए। आप के अल्लाह द्वारा दिया भक्ति ज्ञान अधूरा है। इसीलिए सूरत फुर्कानि 25 आयत 52 से 59 तक में कहा है कि जो गुनाहों को क्षमा करने वाला कबीर नामक अल्लाह है उसकी पूजा विधि किसी तत्त्वदर्शी (बाखबर) से पूछ देखो। कबीर परमेश्वर ने कहा शेखतकी मैं स्वयं वही कबीर अल्लाह हूँ। मेरे पास पूर्ण मोक्ष दायक, सर्व पाप नाशक भक्ति विधि है। इसीलिए आपके समक्ष बादशाह सिकंदर लोधी जी पाप के कारण भोग रहे कष्ट से मुक्त होकर सुख की सांस ले रहे हैं। जो आपकी भक्ति पद्धति से नहीं हो पाया।

जैसा कि शेखतकी जी आपने बताया कि सब मनुष्यों का पिता हजरत आदम ऊपर आसमान पर जिसको आप जन्नत (स्वर्ग) कहते हो, वहाँ पर (जहाँ जिस लोक में जिबराईल फरिश्ता हजरत मोहम्मद को लेकर गया था) कभी रो रहा था, कभी हंस रहा था। क्योंकि उसकी निकम्मी संतान नरक में कष्ट उठा रही थी। उन्हें देखकर रो रहा था तथा अच्छी संतान जो स्वर्ग में सुखी थी, उन्हें देखकर जोर-जोर से हंस रहा था।

विचारणीय विषय है कि पवित्र ईसाई धर्म तथा पवित्र मुसलमान धर्म के प्रमुख बाबा आदम ने जो साधना की उसके प्रतिफल में जिस लोक में पहुँचा है वहाँ पर भी चैन (शान्ति) से नहीं रह रहा। इस लोक में भी बाबा आदम जैसे पुण्यात्माओं के प्रथम दोनों पुत्रों में राग-द्वेष भरा था जिस कारण बड़े भाई ने छोटे की हत्या कर दी। यहाँ पथ्वी पर भी बाबा आदम महादुःखी ही रहे क्योंकि बड़े भाई ने छोटे को मार दिया, बड़ा घर त्याग कर चला गया। सैकड़ों वर्षों पश्चात् बाबा आदम को एक पुत्र हुआ। जिस से भक्ति मार्ग चला है। जिस किसी के दोनों पुत्र ही बिछुड़ जाए वह पिता सुखी नहीं हो सकता। यही दशा बाबा आदम जी की हुई थी। सैकड़ों वर्ष दुःख झेलने के पश्चात्

एक नेक पुत्र प्राप्त हुआ। फिर बाबा आदम उस लोक में भी इसी कष्ट को झेल रहे हैं। जहाँ जाने के लिए आप भक्ति कर रहे हो, सर्व नबी जो पहले पथ्वी पर अल्लाह के भेजे आए थे, वे (हजरत ईसा, हजरत अब्राहिम, हजरत मूसा आदि) भी उसी स्थान (लोक) में अपनी साधना से पहुँचे। वास्तव में वह पितर लोक है। उसमें अपने-अपने पूर्वजों के पास चले जाते हैं। इसी प्रकार हिन्दूओं का भी ऊपर वही पितर लोक है। जिनका संस्कार पितर बनने का होता है वह पितर योनीधारण करके उस पितर लोक में रहता है। फिर पितर वाला जीवन भोग कर फिर भूत तथा अन्य पशु व पक्षियों की योनियों को भी भोगता है। यह तो पूर्ण मोक्ष तथा सुख प्राप्ति नहीं हुई। अन्य वर्तमान के साधकों को क्या उपलब्धि होगी ?

पवित्र बाईबल में लिखा है कि हजरत आदम के काईन तथा हाबिल दो पुत्र थे। हाबिल भेड़ बकरियाँ पाल कर निर्वाह कर रहा था तथा काईन खेती करता था। एक दिन काईन अपनी पहली फसल का कुछ अंश प्रभु के लिए ले गया। प्रभु ने काईन की भेंट स्वीकार नहीं की क्योंकि काईन का दिल पाक नहीं था। हाबिल अपने भेड़ का पहलौंठा मेंमना(बच्चा) भेंट के लिए लेकर प्रभु के पास गया, जो प्रभु ने स्वीकार कर लिया। इस बात से काईन क्रोधित हो गया। वह अपने छोटे भाई हाबिल को बहका कर जंगल में ले गया, वहाँ उसकी हत्या कर दी। प्रभु ने पूछा काईन तेरा भाई कहाँ गया? काईन ने कहा मैं क्या उसके पीछे-पीछे फिरता हूँ ? मुझे क्या मालूम?

तब प्रभु ने कहा कि तुने अपने भाई के खून से पथ्वी को रंगा है। अब मैं तुझे शाप देता हूँ कि तू रोजी के लिए भटकता रहेगा।

विचार :- विचार करने योग्य है कि जहाँ से दोनों पवित्र धर्मों (मुसलमान तथा ईसाई) के पूर्वज मुखिया की जीवनी प्रारम्भ होती है वहीं से हृदय विदारक घटनाऐं प्रारम्भ हो गई।

वास्तव में हजरत आदम के शरीर में कोई पितर आकर प्रवेश करता था। वही माँस खाने का आदी होने के कारण पवित्र आत्माओं को गुमराह करता था कि अल्लाह (प्रभु) को भेड़ के बच्चे की भेंट स्वीकार है। दोनों भाईयों का झगड़ा करा दिया। हजरत आदम जी के परिवार को बर्बाद कर दिया।

''पवित्र बाईबल में साकार पूर्ण परमात्मा के विषय में वर्णन''

उत्पत्ति ग्रन्थ, पष्ठ नं. 1 से 3

परमेश्वर ने छः दिन में सष्टि रची तथा सातवें दिन विश्राम किया, प्रभु ने पाँच दिन तक अन्य रचना की, फिर छटवें दिन ईश्वर ने कहा कि हम मनुष्य को अपना ही स्वरूप बनायेंगे।

फिर परमेश्वर ने मनुष्य को अपना ही स्वरूप बनाया, नर-नारी करके उसकी सष्टि की। फिर ईश्वर ने मनुष्यों के खाने के लिए केवल फलदार वक्ष तथा बीजदार पौधे दिए। जो तुम्हारे भोजन के लिए हैं। छः दिन में पूरा कार्य करके परमेश्वर ऊपर तख्त पर जा विराजा अर्थात् विश्राम किया।

ईश्वर ने प्रथम आदम बनाया फिर उसकी पसली निकाल कर नारी (हव्वा) बनाई तथा दोनों को एक वाटिका में छोड़कर तख्त पर जा बैठे। फिर पष्ठ नं. 8 पर लिखा है कि ईश्वर ने मनुष्य जाति के खाने के लिए फलदार पेड़ तथा बीजदार पौधे बनाए और वन प्राणियों के लिए घास व पौधे बनाए।

भगवान ने मनुष्य को अपना प्रति रूप बनाया। इससे स्वसिद्ध है कि भगवान (अल्लाह) आकार में है और वह मनुष्य जैसा है। वह पूर्ण परमात्मा तो यहाँ तक रचना छः दिन में करके सातवें दिन अपने सत्यलोक में तख्त पर विराजमान हो गया। इसके बाद अव्यक्त प्रभु (काल/ज्योति निरंजन) की भूल-भुलईयाँ प्रारम्भ हो गई।

"पवित्र बाईबल में अव्यक्त साकार प्रभु (काल) के विषय में वर्णन"

पूर्ण परमात्मा ने छः दिन में सष्टि रचना करके विश्राम किया। तत्पश्चात् अव्यक्त प्रभु (काल) ने बागडोर संभाल ली। हजरत आदम तथा हजरत हव्वा (जो श्री आदम जी की पत्नी थी) को कहा कि इस वाटिका में लगे हुए फलों को तुम खा सकते हो। लेकिन ये जो बीच वाले फल हैं इनको मत खाना, अगर खाओगे तो मर जाओगे। परमेश्वर ऐसा कह कर चला गया।

उसके बाद एक सर्प आया और कहा कि तुम ये बीच वाले फल क्यों नहीं खा रहे हो? हव्वा जी ने कहा कि भगवान (अल्लाह) ने हमें मना किया है कि अगर तुम इनको खाओगे तो मर जाओगे, इन्हें मत खाना। सर्प ने फिर कहा कि भगवान ने आपको बहकाया हुआ है। वह नहीं चाहता है कि तुम प्रभु के सदश ज्ञानवान हो जाओ। यदि तुम इन फलों को खा लोगे तो तुम्हें अच्छे और बुरे का ज्ञान हो जाएगा। आपकी आँखों पर से वह पर्दा हट जाएगा जो अज्ञानता का प्रभु ने आपके ऊपर डाल रखा है। यह बात सर्प ने हव्वा को कही जो कि आदम की पत्नी थी। हव्वा ने अपने पति हजरत आदम से कहा कि हम ये फल खायेंगे और हमें भले-बुरे का ज्ञान हो जाएगा। ऐसा ही हुआ। उन्होंने वह फल खा लिया तो उनकी आँखें खुल गई तथा वह अंधेरा हट गया जो भगवान ने उनके ऊपर अज्ञानता का पर्दा डाल रखा था। जब उन्होंने देखा कि हम दोनों निवस्त्र हैं तो शर्म आई और अंजीर के पत्तों को तोड़ कर अपने पर्दो पर बांधा।

कुछ दिनों के बाद जब शाम के समय घूमने के लिए प्रभु आया तो पूछा कि तुम कहाँ हो? आदम जी तथा हव्वा जी ने कहा कि हम छुपे हुए है, क्योंकि हम निवस्त्र हैं। भगवान ने कहा कि क्या तुमने उस बीच वाले फल को खा लिया? आदम ने कहा कि हाँ जी और उसके खाने के बाद हमें महसूस हुआ कि हम निवस्त्र हैं। प्रभु ने पूछा कि तुम्हें किसने बताया कि ये फल खाओ। आदम ने कहा कि हमारे को सर्प ने बताया और हमने वह खा लिया। उसने मेरी पत्नी हव्वा को बहका दिया और हमने उसके बहकावे में आकर ये फल खा लिया।

21. फिर यहोवा प्रभु ने आदम तथा उसकी पत्नी के लिए चमड़े के अंगरखे पहना दिए।

"अनेक प्रभुओं का प्रमाण"

3:22. फिर यहोवा प्रभु ने (उत्पत्ति अध्याय 3/22 तथा 17/1 तथा 18/1 से 5 तथा 16 से 23 तथा 26-29-32-33 में) कहा मनुष्य भले-बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है। इसलिए ऐसा न हो कि यह जीवन के वक्ष वाला फल भी तोड़कर खा ले और सदा जीवित रहे। उत्पत्ति ग्रन्थ के अध्याय 17 श्लोक 1 (17:1) में कहा है कि जब अब्राहिम निन्यानवे (99) वर्ष का हो गया तब यहोवा ने उसको दर्शन देकर कहा ''मैं सर्वशक्तिमान हूँ। मेरी उपस्थिति में चल और सिद्ध होता जा'' फिर उत्पत्ति ग्रन्थ के अध्याय 18 श्लोक 1 से 10 तथा अध्याय 19 श्लोक 1 से 25 में तीन प्रभुओं का प्रमाण है।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि आदम जी का प्रभु कह रहा है कि आदम को भले बुरे का ज्ञान होने से हम में से एक के समान हो गया है। इससे सिद्ध हुआ कि ऐसे प्रभु और भी हैं जब कि इसाई धर्म के श्रद्धालु कहते है परमात्मा एक है तथा यह भी प्रमाणित हुआ कि परमात्मा साकार है मनुष्य जैसा है।

उत्पत्ति ग्रन्थ अध्याय 3 के श्लोक 23. व 24. इसलिए प्रभु ने आदम व उसकी पत्नी को अदन के

उद्यान से निकाल दिया।

काल प्रभु ने उनको उस वाटिका से निकाल दिया और कहा कि अब तुम्हें यहाँ नहीं रहने दूँगा और तुझे अपना पेट भरने के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ेगा और औरत को श्राप दिया कि तू हमेशा आदमी के अधीन रहेगी।

{विशेष :– श्री मनु जी के पुत्र इक्ष्वाकु तथा इसी वंश में राजा नाभीराज हुए। राजा नाभीराज के पुत्र श्री ऋषभदेव जी हुए जो पवित्र जैन धर्म के प्रथम तीरथंकर माने जाते हैं। यही श्री ऋषभदेव जी की पवित्रात्मा बाबा आदम हुए। जैन धर्म के सद्ग्रन्थ ''आओ जैन धर्म को जाने'' पृष्ठ 154 में लिखा है।}

आदम व हव्वा के संयोग से दो पुत्र उत्पन्न हुए। एक का नाम काईन तथा दूसरे का नाम हाबिल रखा। काईन खेती करता था। हाबिल भेड़-बकरियाँ चराया करता था। काईन कुछ धुर्त था परन्तु हाबिल ईश्वर पर विश्वास करने वाला था। काईन ने अपनी फसल का कुछ अंश प्रभु को भेंट किया। प्रभु ने अस्वीकार कर दिया। फिर हाबिल ने अपने भेड़ के पहले मेमने को प्रभु को भेंट किया, प्रभु ने स्वीकार किया। {यदि बाबा आदम में प्रभु बोल रहा होता तो कहता कि बेटा हाबिल मैं तेरे से प्रसन्न हूँ। आपने जो मैमना भेंट किया यह आपकी प्रभु के प्रति श्रद्धा का प्रतीक है। यह आप ही ले जाईये और इसे बेच कर धर्म (भण्डारा) कीजिए और अपनी भेड़ों की ऊन उतार कर रोजी–रोटी चलाईये तथा प्रभु में विश्वास रखिये। यह बाबा आदम के शरीर में प्रेतवत प्रवेश करके कोई प्रेत व पितर बोल रहा था तथा इसी प्रकार पवित्र बाईबल में माँस खाने का प्रावधान पितरों ने किसी नबी में बोल कर करवाया है।}

इससे काईन को द्वेष हुआ तथा अपने छोटे भाई को मार दिया। कुछ समय के बाद आदम व हव्वा से एक पुत्र हुआ उसका नाम सेत रखा। सेत को फिर पुत्र हुआ उसका नाम एनोस रखा। उस समय से लोग प्रभु का नाम लेने लगे।

विचार करें - जहाँ से पवित्र ईसाई व मुसलमान धर्म प्रथम पुरूष के वंश की शुरूआत हुई वहीं से मार-काट लोभ और लालच द्वेष परिपूर्ण है। आगे चलकर इसी परंपरा में ईसा मसीह जी का जन्म हुआ। इनकी पूज्य माता जी का नाम मरियम तथा पूज्य पिता जी का नाम यूसुफ था। परन्तु मरियम को गर्भ एक देवता से रहा था। इस पर यूसुफ ने आपत्ति की तथा मरियम को त्यागना चाहा तो स्वपन में (फरिश्ते) देवदूत ने ऐसा न करने को कहा तथा यूसुफ ने डर के मारे मरियम का त्याग न करके उसके साथ पति-पत्नी रूप में रहे। देवता से गर्भवती हुई मरियम ने ईसा को जन्म दिया। हजरत ईसा से पवित्र ईसाई धर्म की स्थापना हुई। ईसा मसीह के नियमों पर चलने वाले भक्त आत्मा ईसाई कहलाए तथा पवित्र ईसाई धर्म का उत्थान हुआ।

प्रमाण के लिए कुरान शरीफ में सूरः मर्यम-19 में तथा पवित्र बाईबल में मती रचित सुसमाचार मती=1:25 पष्ठ नं. 1-2 पर।

हजरत ईसा जी को भी पूर्ण परमात्मा सत्यलोक से आकर मिले तथा एक परमेश्वर का मार्ग समझाया। इसके बाद ईसा जी एक ईश्वर की भक्ति समझाने लगे। लोगों ने बहुत विरोध किया। फिर भी वे अपने मार्ग से विचलित नहीं हुए। परन्तु बीच-बीच में ब्रह्म(काल/ज्योति निरंजन) के फरिश्ते हजरत ईसा जी को विचलित करते रहे तथा वास्तविक ज्ञान को दूर रखा।

हजरत यीशु का जन्म तथा मत्यु व जो जो भी चमत्कार किए वे पहले ब्रह्म(ज्योति निरंजन) के द्वारा निर्धारित थे। यह प्रमाण पवित्र बाईबल में है कि एक व्यक्ति जन्म से अंधा था। वह हजरत यीशु मसीह के पास आया। हजरत जी के आशीर्वाद से उस व्यक्ति की आँखें ठीक हो गई। शिष्यों ने पूछा हे मसीह जी इस व्यक्ति ने या इसके माता-पिता ने कौन-सा ऐसा पाप किया था जिस कारण

से यह अंधा हुआ तथा माता-पिता को अंधा पुत्र प्राप्त हुआ। यीशु जी ने कहा कि इसका कोई पाप नहीं है जिसके कारण यह अंधा हुआ है तथा न ही इसके माता-पिता का कोई पाप है जिस कारण उन्हें अंधा पुत्र प्राप्त हुआ। यह तो इसलिए हुआ है कि प्रभु की महिमा प्रकट करनी है। भावार्थ यह है कि यदि पाप होता तो हजरत यीशु आँखे ठीक नहीं कर सकते थे। यह सब काल ज्योति निरंजन (ब्रह्म) का सुनियोजित जाल है। जिस कारण उसके द्वारा भेजे अवतारों की महिमा बन जाए तथा आस पास के सभी प्राणी उस पर आसक्त होकर उसके द्वारा बताई ब्रह्म साधना पर अटल हो जाऐं। जब परमेश्वर का संदेशवाहक आए तो कोई भी विश्वास न करे। जैसे हजरत ईसा मसीह के चमत्कारों में लिखा है कि एक प्रेतात्मा से पीड़ित व्यक्ति को ठीक कर दिया। यह काल स्वयं ही किसी प्रेत तथा पितर को प्रेरित करके किसी के शरीर में प्रवेश करवा देता है। फिर उसको किसी के माध्यम से अपने भेजे दूत के पास भेजकर प्रेत को भगा देता है। उसके अवतार की महिमा बन जाती है। या कोई साधक पहले का भक्ति युक्त होता है। उससे भी ऐसे चमत्कार उसी की कमाई से करवा देता है तथा उस साधक की महिमा करवा कर हजारों को उसका अनुयाई बनवा कर काल जाल में फंसा देता है तथा उस पूर्व भक्ति कमाई युक्त साधक की कमाई को समाप्त करवा कर नरक में डाल देता है।

इसी तरह का उदाहरण पवित्र बाईबल 'शमूएल' नामक अध्याय 16:14-23 में है कि शाऊल नामक व्यक्ति को एक प्रेत दुःखी करता था। उसके लिए बालक दाऊद को बुलाया जिससे उसको कुछ राहत मिलती थी। क्योंकि हजरत दाऊद भी ज्योति निरंजन का भेजा हुआ पूर्व शक्ति युक्त साधक पूर्व की भक्ति कमाई वाला था। जिसको 'जबूर' नामक किताब ज्योति निरंजन/ब्रह्म ने बड़ा होने पर उतारी।

हजरत ईसा मसीह की मत्यु 30 वर्ष की आयु में हुई जो पूर्व ही निर्धारित थी। स्वयं ईसा जी ने कहा कि मेरी मत्यु निकट है तथा तुम (मेरे बारह शिष्यों) में से ही एक मुझे विरोधियों को पकड़वाएगा। उसी रात्रि में सर्व शिष्यों सहित ईसा जी एक पर्वत पर चले गए। वहाँ उनका दिल घबराने लगा। अपने शिष्यों से कहा कि आप जागते रहना। मेरा दिल घबरा रहा है। मेरा जी निकला जा रहा है। मुझे सहयोग देना। ऐसा कह कर कुछ दूरी पर जाकर मुंह के बल पथ्वी पर गिरकर प्रार्थना की (38,39), वापिस चेलों के पास लौटे तो वे सो रहे थे। यीशु ने कहा क्या तुम मेरे साथ एक पल भी नहीं जाग सकते। जागते रहो, प्रार्थना करते रहो, ताकि तुम परीक्षा में फेल न हो जाओ। मेरी आत्मा तो मरने को तैयार है, परन्तु शरीर दुर्बल है। इसी प्रकार यीशु मसीह ने तीन बार कुछ दूर जाकर प्रार्थना की तथा फिर वापिस आए तो सभी शिष्यों को तीनों बार सोते पाया। ईसा मसीह के प्राण जाने को थे, परन्तु चेले राम मस्ती में सोए पड़े थे। गुरु जी की आपत्ति का कोई गम नहीं।

तीसरी बार भी सोए पाया तब कहा मेरा समय आ गया है, तुम अब भी सोए पड़े हो। इतने में तलवार तथा लाठी लेकर बहुत बड़ी भीड़ आई तथा उनके साथ एक ईसा मसीह का खास यहूंदा इकसरौती नामक शिष्य था, जिसने तीस रूपये के लालच में अपने गुरु जी को विरोधियों के हवाले कर दिया।(मत्ती 26:24-55 पष्ठ 42-44)

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि पुण्यात्मा ईसा मसीह जी को केवल अपना पूर्व का निर्धारित जीवन काल प्राप्त हुआ जो उनके विषय में पहले ही पूर्व धर्म शास्त्रों में लिखा था। ''मत्ती रचित समाचार'' पष्ठ 1 पर लिखा है कि याकुब का पुत्र युसूफ था। युसूफ ही मरियम का पति था।

मरियम को एक फरिश्ते से गर्भ रहा था। तब हजरत ईसा जी का जन्म हुआ समाज की दष्टि में ईसा जी के पिता युसूफ थे। (मत्ती 1:1-18)

तीस (30) वर्ष की आयु में ईसा मसीह जी को शुक्रवार के दिन सलीब मौत (दीवार) के साथ एक ✝ आकार के लकड़ के ऊपर ईसा को खड़ा करके हाथों व पैरों में मेख (मोटी कील) गाड़ दी। जिस कारण अति पीड़ा से ईसा जी की मत्यु हुई। तीसरे दिन रविवार को ईसा जी फिर से दिखाई देने लगे। 40 दिन (चालीस) कई जगह अपने शिष्यों को दिखाई दिए। जिस कारण भक्तों में परमात्मा के प्रति आस्था दढ़ हुई। वास्तव में पूर्ण परमात्मा ने ही ईसा जी के रूप में प्रकट होकर प्रभु भक्ति को जीवित रखा था। काल तो चाहता है यह संसार नास्तिक हो जाए। परन्तु पूर्ण परमात्मा ने यह भक्ति वर्तमान समय तक जीवित रखनी थी। अब यह पूर्ण रूप से फैलेगी। उस समय के शासक(गवर्नर) पिलातुस को पता था कि ईसा जी निर्दोष हैं परन्तु फरीसियों अर्थात् मूसा के अनुयाईयों के दबाव में आकर सजा सुना दी थी।

"हजरत ईसा मसीह में देव तथा पितर प्रवेश करके चमत्कार दिखाने का प्रमाण"

एक स्थान पर हजरत ईसा जी ने कहा है कि मैं याकुब (जो मरियम के पति का भी पिता था) से भी पहले था। संसार की दष्टि में ईसा मसीह का दादा जी याकुब था। ईसा जी नहीं कहते कि मैं याकुब से भी पहले था। इससे सिद्ध है कि ईसा जी में कोई अन्य फरिश्ता बोल रहा था जो प्रेतवत प्रवेश कर जाता था, भविष्यवाणी कर जाता था।

एक और उदाहरण ग्रन्थ बाईबल अध्याय 2 कुरिन्थियों 2:12-17 पष्ठ 259-260 में स्पष्ट लिखा है कि एक आत्मा किसी में प्रवेश करके बोल रही है। कहा है कि (14) परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो मसीह में सदा हम को जय उत्सव में लिए फिरता है और अपने ज्ञान की सुगन्ध हमारे द्वारा हर जगह फैलाता है। 17. हम उन लोगों में से नहीं हैं जो परमेश्वर के वचनों में मिलावट करते हैं। हम तो मन की सच्चाई और परमेश्वर की ओर से परमेश्वर की उपस्थिति जान कर मसीह में बोलते हैं।

उपरोक्त विवरण पवित्र बाईबल के अध्याय कुरिन्थियों 2:12 से 18 पष्ठ 259-260 से ज्यों का त्यों लिखा है। इससे दो बातें स्पष्ट होती हैं 1. मसीहा (नबी अर्थात् अवतार) में कोई अन्य फरिश्ता बोलकर किताबें लिखाता है। जो प्रभु का भेजा हुआ होता है वह तो प्रभु का संदेश ज्यों का त्यों बिना परिवर्तन किए सुनाता है। 2. दूसरी बात यह भी सिद्ध हुई कि मसीह (नबी) में अन्य आत्मा भी बोलते हैं जो अपनी तरफ से मिलावट करके भी बोलते हैं। यही कारण है कि कुर्आन शरीफ (मजीद) तथा बाईबल आदि में माँस खाने का आदेश अन्य आत्माओं का है, प्रभु का नहीं है।

इन्हीं प्रेतों तथा पित्तरों व फरिश्तों तथा ब्रह्म (ज्योति निरंजन) ने हजरत मुहम्मद जी में प्रवेश करके काल (ब्रह्म/ज्योति निरंजन) तक का अटकल युक्त ज्ञान प्रवेश करके भ्रमित किया हुआ है। न तो कुर्आन शरीफ (मजीद) तथा तौरत, इंजिल आदि का ज्ञान पूर्ण है, न भक्ति विधि पूर्ण है, क्योंकि उपरोक्त सर्व पवित्र पुस्तकों का ज्ञान दाता वही है जो कुर्आन शरीफ (मजीद) का है। जो सूरत फुर्कानि 25 आयत 52 से 58 व 59 में कह रहा है कि सर्व सष्टि रचनहार, सर्व पापों का नाश करने वाला, सर्व का पालन कर्ता कबीर दयालु प्रभु है। उपरोक्त सर्व पुस्तकों तथा कुर्आन शरीफ व मजीद सहित का ज्ञान दाता प्रभु अपनी अल्पज्ञता जता रहा है कि उस कबीर प्रभु के वास्तविक ज्ञान तथा भक्ति मार्ग को किसी बाखबर (तत्त्वदर्शी संत) से पूछो। इससे सिद्ध है कि कुर्आन शरीफ

व अन्य उपरोक्त पुस्तकों में ज्ञान पूर्ण नहीं है।

इसी प्रकार पवित्र हिन्दू धर्म के माने जाने वाले चारों पवित्र वेद तथा पवित्र गीता का ज्ञान दाता ब्रह्म(काल/ज्योति निरंजन) भी कह रहा है कि मेरी भक्ति तथा ब्रह्मा, विष्णु व शिव की साधना व्यर्थ है। इसलिए उस परमेश्वर की शरण में जा जिसकी कपा से ही तू परम शांति तथा सनातन परम धाम को प्राप्त होगा। उस परमात्मा की भक्ति विधि तथा पूर्ण ज्ञान के विषय में किसी तत्त्वदर्शी संत की खोज कर, फिर जैसे वह तत्त्वदष्टा संत साधना बताऐ उसी प्रकार अनन्य मन से कर।

फिर गीता ज्ञान दाता प्रभु ने कहा कि मैं भी उसी की शरण में हूँ। (प्रमाण यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 10, 13 तथा 17 तथा अथर्ववेद काण्ड 4 अनुवाक 1 मंत्र 1 से 7 तथा गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15, 18, 20 से 23 में, गीता अध्याय 4 श्लोक 34 व अध्याय 18 श्लोक 62 तथा अध्याय 15 श्लोक 4-17 में)।

"हजरत मुहम्मद जी में काल(ब्रह्म) तथा अन्य देव व पितर प्रवेश करके बोलते थे'' का प्रमाण

सर्व पवित्र धर्मों के श्रद्धालु वास्तविक ज्ञान तथा भक्ति विधि से वंचित हैं। वह वास्तविक तत्त्वज्ञान तथा भक्ति विधि मैं (कबीर परमेश्वर काशी वाला जुलाहा/धाणक) स्वयं ही बताने आया हूँ। मुझ पर विश्वास करो। और बताता हूँ(परमेश्वर कबीर साहेब जी ने अपने अमत वचनों को जारी रखते हुए कहा) -

मैंने एक मुल्ला द्वारा कुर्आन शरीफ की कुछ सूरतों का विवरण सुना था, उनमें निम्न विवरण लिखा है - कुर्आन शरीफ अर्थात् कुर्आन मजीद की प्राप्ति कैसे हुई? (कुर्आन शरीफ वाला ज्यों का त्यों विवरण कुर्आन मजीद में है)।

कुर्आन मजीद – तर्जुमा, फतेह मुहम्मद खां साहब जालंधरी, प्रकाशक : महमूद एण्ड कम्पनी, मरोल पाईप लाईन, बम्बई–59, सोल एजेंट, फरीद बुक डिपो, देहली–6

उपरोक्त पुस्तक के : मुकदमा के पष्ठ 6-7 पर लिखे है -

''कुर्आन मजीद के उतरने और संग्रह व संकलन करने के हालात''

उपरोक्त पुस्तक कुर्आन मजीद के मुकदमा पष्ठ 6-7 पर लिखें लेखक के लेख का निष्कर्ष -

कुर्आन मजीद (शरीफ) 23 वर्षों में पूरी लिखी गई। जब हजरत मुहम्मद जी की आयु 40 वर्ष थी उस समय से प्रारम्भ हुई तथा अन्तिम समय 63 वर्ष की आयु तक 23 वर्ष लगातार कभी एक आयत, कभी आधी, कभी दो आयत, कभी 10 आयत, कभी पूरी सूरतें उतरी हैं। इसी को शरीअत में ''बह्य'' कहते हैं।

विद्वानों ने लिखा है ''वह्य(वह्य)'' उतरने के भिन्न-भिन्न तरीके हदीसों में पेश किए हैं।

1. फरिश्ता ''वह्य(वह्य)'' ले कर आता था तो घंटियाँ सी बजती थी। नबी मुहम्मद जी की जान निकलने को हो जाती थी। यह तरीका ज्यादा कष्ट दायक नबी मुहम्मद जी के लिए होता था।

यह भी लिखा है कि हजरत मुहम्मद जी नुबूबत के बाद (चालीस वर्ष की आयु से नबी बनने के बाद) रमजान के दिनों में पूरा कुर्आन मजीद (शरीफ) अल्लाह के पास से उस आसमान से जिसे हम देख नहीं सकते हैं अल्लाह (प्रभु) के हुकम (आज्ञा) से उतारा गया अर्थात् उसी अल्लाह के द्वारा बोला गया। इसके बाद हजरत जिबराईल को जिस समय, जिस कदर हुकम (आज्ञा) हुआ, उन्होंने पवित्र कलाम को बिल्कुल वैसा ही बिना किसी परिवर्तन के नबी मुहम्मद जी तक पहुँचाया।

2. कभी फरिश्ता दिल में कोई बात डाल दे।

3. फरिश्ता आदमी के रूप में आकर बात करे।

{नोट - हजरत मुहम्म्द जी की जीवनी में लिखा है कि जिस समय जिब्राईल फरिश्ता प्रथम बार वह्य (वह्य) लेकर आया मनुष्य रूप में दिखाई दिया, तो उसने मुहम्मद जी का गला घोंट कर कहा इसे पढ़ो। हजरत मुहम्मद जी ने बताया कि मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे, वह मेरा गला घोंट रहा हो। मेरे शरीर को दबा रहा हो। ऐसा दो बार किया फिर तीसरी बार फिर कहा पढ़ो। मुझे ऐसा लगा कि वह फिर गला घोटेंगा, इस बार और जोर से भींचेगा, मैं बोला क्या पढूं ? कुर्आन की प्रथम आयत पढ़ाई, वह मुझे याद हो गई। फिर फरिश्ता चला गया, मैं घबरा गया। दिल बैठता जा रहा था। पूरा शरीर थर-थर कांपने लगा। गुफा के बाहर आकर सोचा यह कौन था। फिर वही फरिश्ता आदमी की सूरत में दिखाई दिया, जहाँ देखूं वही दिखाई देने लगा। ऊपर, नीचे, दांए, बांए सब ओर। घर आकर चादर ओढ़कर लेट गया। सारा शरीर पसीने से भीगा हुआ था। मुझे डर है कि खदीजा कहीं मर न जाऊँ। फिर हजरत मुहम्मद जी ने अपनी पत्नी खदीजा को सारी बात बताई, फिर एक 'बरका' नामक व्यक्ति ने हजरत मुहम्मद जी से सारी बातें सुन कर कहा आप 'नबी' बनोगे। यही फरिश्ता मूसा जी के पास भी आता था। उपरोक्त विवरण से तो सिद्ध होता है कि फरिश्ता आदमी रूप में वह्य लाता था तो भी हजरत मुहम्मद जी को बहुत कष्ट हुआ करता।}

4. अल्लाह तआला जागते में नबी मुहम्मद (सल्ल) से कलाम फरमाए। भावार्थ है कि आकाशवाणी करके ब्रह्म स्वयं बोलता था।

5. अल्लाह तआला सपने की हालत में कलाम फरमाए।

6. फरिश्ता सपने की हालत में आकर कलाम करे(इस छठी व पाँचवी प्रकार पर विवाद है, शेष उपरोक्त कुर्आन मजीद(शरीफ) के उतरने की 4 सही हैं।) पष्ठ 29 पर लिखा है कि कभी स्वयं ''वह्य(वह्य)'' आती थी। भावार्थ है कि जैसे कोई प्रेत प्रवेश करके बोलता है। कभी नबी मुहम्मद चादर लपेट कर लेट जाते थे, फिर चादर के अन्दर से बोलते थे।

पवित्र कुर्आन मजीद(शरीफ) के मुकदमा के पष्ठ 6-7 के लिखे लेख से स्पष्ट है कि जिबराईल नामक फरिश्ते ने तो केवल संदेश वाहक का कार्य किया है। ज्ञान व आदेश देने वाला प्रभु अर्थात् काल भगवान एक देशीय साकार सिद्ध हुआ जो सातवें आसमान पर अव्यक्त रूप में है, जिसे देखा नहीं जा सकता। अव्यक्त का उदाहरण है जैसे सूर्य बादलों के पार होने के कारण अदश्य (अव्यक्त) होता है। दिन होते हुए भी दिखाई नहीं देता। इसी प्रकार परमात्मा एक देशीय जाने तथा अपनी शक्ति से छुपा है। जिस कारण से उसे निराकार माना है। परन्तु भक्ति की सत्य साधना द्वारा उसे देखा जा सकता है। वह सत्य भक्ति विधि कुरान शरीफ में नहीं है क्योंकि उसके लिए किसी बाखबर (तत्त्वदर्शी) से जानने को कहा है। कुर्आन शरीफ (मजीद) के ज्ञान दाता ने किसी अन्य कबीर नामक अल्लाह (प्रभु) को सर्व का पालन कर्ता, सर्व ब्रह्मण्डों का रचनहार, सर्व के पूजा के योग्य कहा है। कुर्आन शरीफ (मजीद) सूरत फुर्कानि 25 आयत 52 से 58 तथा 59 में वर्णन है। जिसमें कुर्आन ज्ञान दाता अल्लाह ने कहा है कि उस उपरोक्त अल्लाह कबीर या खबीर जिसे अल्लाहु अकबर भी कहा जाता है। उसके विषय में मैं(कुर्आन का ज्ञान दाता) नहीं जानता। उसके विषय में किसी बाखबर(तत्त्वदर्शी संत) से पूछो। वह कबीर अल्लाह छः दिन में सष्टि की उत्पत्ति करके सातवें दिन तख्त पर जा विराजा। इससे यह भी सिद्ध होता है कि पूर्ण परमात्मा कबीर साकार है।

यही प्रमाण पवित्र बाईबल ''उत्पत्ति ग्रंथ'' में भी है। हजरत आदम के अल्लाह(प्रभु) ने पूर्ण

परमात्मा के द्वारा रची सष्टि का वर्णन किया है। छठे दिन परमश्वेर ने कहा कि हम मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाएं। प्रभु ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार बनाया। फिर उनके खाने के लिए केवल फलदार वक्ष तथा बीजदार पौधे दिये। माँस खाने की आज्ञा नहीं दी तथा सातवें दिन विश्राम किया।

"पवित्र ईसाई तथा मुसलमान धर्मों के अनुयाईयों को कर्माधार से लाभ-हानि करने वाले भी (श्री ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव) तीन ही देवता"

हजरत आदम तथा उसकी पत्नी हव्वा तथा अन्य प्राणियों व सर्व ब्रह्मण्डों की उत्पत्ति करके कुर्आन व बाईबल बोलने वाले प्रभु को सौंप गया। बाईबल के उत्पत्ति ग्रंथ से भी सिद्ध होता है कि परमात्मा मनुष्य जैसा है। क्योंकि प्रभु ने मनुष्य को अपने जैसा बनाया तथा सात दिन के बाद का वर्णन कुर्आन शरीफ व बाईबल ज्ञान दाता(काल/ज्योति निरंजन) की लीला का है। पवित्र बाईबल में लिखा है कि 'फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, मनुष्य भले-बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है। इसलिए अब ऐसा न हो कि वह हाथ बढ़ा कर जीवन के वक्ष का फल भी तोड़ कर खा ले और सदा जीवित रहे। परमेश्वर ने उसे अदन के उ़द्यान से निकाल दिया।

उपरोक्त विवरण से यह भी सिद्ध होता है कि जो आदम का प्रभु है ऐसा कोई और भी है तथा साकार है। इसीलिए तो कहा है कि मनुष्य जीवन फल को खाकर हम में से एक के समान हो गया है। क्योंकि बाईबल के उत्पत्ति ग्रन्थ में ही लिखा है कि आदम ने भले-बुरे के ज्ञान वाला फल तोड़ कर खा लिया तो उसे पता चला वह नंगा है। यहोवा परमेश्वर टहलते हुए आ गया। उसने आदम को पुकारा तू कहाँ है? तब आदम ने कहा मैं तेरी आवाज सुनकर छुप गया हूँ, क्योंकि मैं नंगा हूँ। फिर परमेश्वर ने आदम तथा उसकी पत्नी हव्वा के वस्त्र बनवाए।

विचार करें उपरोक्त विवरण स्वयं सिद्ध कर रहा है कि पूर्ण परमात्मा भी सशरीर मनुष्य जैसे आकार का है तथा अन्य प्रभु भी मनुष्य जैसे आकार के हैं, जिसे पवित्र ईसाई तथा मुसलमान धर्म निराकार मानता है तथा प्रभु एक से अधिक भी हैं।

क्योंकि काल ब्रह्म स्वयं सामने नहीं आता, उसने अपने तीनों पुत्रों (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी) के द्वारा एक ब्रह्मण्ड का कार्य चला रखा है। हजरत आदम जी भगवान ब्रह्मा के अवतार हैं। हजरत आदम को श्री ब्रह्मा जी ने बहका कर रखा था, उसी ने उसको वहाँ से निकाला था। इसीलिए कहा है कि भले बुरे के ज्ञान वाला फल खाकर आदम हम में से एक के समान हो गया है। क्योंकि ब्रह्मा, विष्णु व महेश तीनों देव हैं, हजरत ईसा के अवतार धारण करने के विषय में पवित्र बाईबल में लिखा है कि प्रभु ईश्वर ने पथ्वी पर बढ़ रहे दुराचार के अन्त के लिए अपने पुत्र को भेजा था, क्योंकि हजरत ईसा जी भगवान विष्णु के अवतार हैं। विष्णु लोक से कोई देव आत्मा का जन्म मरयम के गर्भ से फरिस्ते (देव) द्वारा हुआ था।

"मामरे पर तीनों देवताओं के देखने का प्रमाण"

(इसहाक के जन्म की प्रतिज्ञा)

इसमें लिखा है कि अब्राहम मम्रे (मामरे) के बांजों के बीच कड़ी धूप के समय तम्बू के द्वार पर बैठा था , तब यहोवा ने उसे दर्शन दिया। और उसने आँख उठा कर देखा तो तीन पुरुष उसके सामने खड़े हैं। उन्होंने अब्राहम की प्रार्थना पर खाना खाया तथा वद्ध अवस्था में पुत्र होने का

आशीर्वाद देकर चले गए तथा जाते समय कहा कि हम सदोम आदि नगरों का नाश करने जा रहे हैं। वहाँ के लोग अधर्मी हो गए हैं। अब्राहम ने पूछा क्या आप अधर्मियों के साथ धर्मियों को भी मार डालोगे। प्रभु ने कहा यदि 100 व्यक्ति भी धर्मी होंगे तो भी हम उस नगरी का नाश नहीं करेंगे। ''सदोम आदि नगरों का विनाश'' नामक विषय में लिखा है कि उनमें से दो दूत ''सदोम'' में पहुँचे।सदोम में लूत (लोट) नामक व्यक्ति रहता था। उस गाँव के व्यक्ति बहुत निकम्मे थे। लूत (लोट) ने उन्हें आदर पूर्वक रोका। गाँव वालों ने उन फरिश्तों को आम व्यक्ति जान कर उनके साथ कुकर्म (नर से नर बलात्कार करना) करने के लिए बाहर निकलने को कहा। परन्तु लूत(लोट) ने कहा यह मेरे अतिथि हैं, मैं इन्हें आपको नहीं दे सकता। आप मेरी लड़की को ले लो। इस बात से प्रसन्न फरिश्तों ने सभी निकम्मे व्यक्तियों को अंधा कर दिया तथा लूत(लोट) को उसके परिवार सहित उस गाँव से निकाल कर पूरे गाँव को नष्ट कर दिया। इससे सिद्ध हुआ कि तीनों देवता हैं, जो ब्रह्म के आदेश से सर्व को किए कर्म का फल देते हैं।

उपरोक्त विवरण से सिद्ध हुआ कि तीन देवता हैं। उनमें से कभी दो कभी एक अपने-अपने साधक के पास जाते हैं। यदि कोई तीनों का साधक है तो तीनों भी एक साथ जाते हैं, यदि कोई दो का साधक है तो दो भी दर्शन देते हैं। उपरोक्त प्रमाण से भी सिद्ध होता है कि तीनों देवता (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) ही अपने पिता ब्रह्म के आदेशानुसार एक ब्रह्मण्ड में सर्व कार्य करते हैं। भक्ति भाव के व्यक्तियों की कर्म अनुसार रक्षा तथा दुष्कर्म करने वालों का कर्म अनुसार नाश करते हैं। ब्रह्म(अव्यक्त कभी सामने दर्शन न देने वाला) प्रभु उपरोक्त तीनों फरिश्तों (देवताओं) द्वारा अपना आदेश नबियों के पास भिजवाता है तथा आकाशवाणी द्वारा या प्रेतवत प्रवेश करके स्वयं भी आदेश देता है। फरिश्ते तो उसका ज्यों का त्यों आदेश सुनाते हैं। आदेश में कोई परिवर्तन नहीं करते। इससे स्पष्ट हुआ कि पवित्र बाईबल तथा पवित्र कुर्आन सहित चारों कतेबों का ज्ञान दाता प्रभु किसी अन्य कबीर नामक प्रभु की तरफ संकेत कर रहा है।

विशेष :- कुर्आन शरीफ(मजीद) शूरः बकरः 2(87) आयत 21 से 33 तक उस पूर्ण परमात्मा की महिमा के विषय में वर्णन है तथा आयत 34 से अंत तक अपनी महिमा बताई है तथा अपने ज्ञान अनुसार पूजा विधि बताई है। यह भी स्पष्ट किया है कि मैंने (कुर्आन ज्ञान दाता ने) आदम तथा उसकी पत्नी हव्वा को स्वर्ग की वाटिका में ठहराया तथा उनको बीच वाले वृक्षों के फल छोड़ कर शेष वृक्षों के फल खाने को कहा। परन्तु उन्होंने सर्प के बहकाने से बीच वाले वृक्षों के फल खा लिये। मैंने उनको जमीन पर दुःखी होने के लिये भेज दिया। (शूरः बकरः 2(87) आयत 35 से 39 तक।)

कुर्आन ज्ञान दाता अल्लाह ने स्पष्ट किया है कि मैंने ही हजरत मुसा को ''तौरत'' किताब उतारी थी तथा मूसा के लिए पत्थर से पानी के झरने निकाले थे(आयत 41, 53, 60)। हम ही मुसा के बाद एक के बाद दूसरा पैगम्बर भेजते रहे तथा ईसा बिन मरियम को खुली निशानियाँ बख्शी तथा रूहुल कुदस(यानि जिब्रील) से उनको मदद दी। (आयत 87)

सार विचार :- उपरोक्त पवित्र कुर्आन शरीफ के विवरण से स्पष्ट हुआ कि बाबा आदम से लेकर हजरत ईसा, हजरत अब्राहम, हजरत दाऊद, हजरत मुसा, हजरत मुहम्मद साहेब तक को पैगम्बर बना कर भेजने वाला खुदा(अल्लाह/प्रभु) एक ही है। उसी ने कुर्आन शरीफ अर्थात् मजीद का ज्ञान बह्म के द्वारा स्वयं प्रेतवत प्रवेश करके या आकाशवाणी करके कहा है या फरिश्तों के माध्यम से हजरत मुहम्मद तक ज्यों का त्यों पहुँचाया है। वही खुदा सूरत फुर्कानि 25 आयत 52 से 58 तथा

59 में कह रहा है कि हे पैगम्बर (हजरत मुहम्मद) पूर्ण परमात्मा कबीर है, परन्तु काफिर लोग मेरी इस बात पर विश्वास नहीं करते। आप उनकी कही बातों को मत मानना मेरे द्वारा दिया यह कुरान शरीफ वाले ज्ञान की दलीलों पर विश्वास करना की कबीर अल्लाह उसी को अल्लाह अक्बरू कहते हैं। इस ज्ञान के समर्थन में काफिरों के साथ संघर्ष करना भावार्थ है कि काफिर लोग कहते हैं कि कबीर अल्लाह नहीं है। आप (हजरत मुहम्मद) कहना कि कबीर अल्लाह है। लड़ना नहीं है। उनकी बातों में नहीं आना हैं (आयत 52) वह (कबीर अल्लाह) वही है जिसने जमीन व आसमान के बीच सर्व रचा, दिन-रात बनाए, परिवार, रिश्तेदार, आदि इन्सान के लिए बनाए तथा जमीन में मीठा पानी आदि पदार्थ प्रदान किए।(आयत 53 से 55) हे पैगम्बर(हजरत मुहम्मद)! मैंने जो कुरान की आयतों द्वारा ज्ञान दिया है उसमें जो कबीर है वह पूर्ण परमात्मा है उस पर विश्वास रखना। काफिर लोग उस कबीर को परमात्मा अल्लाह नहीं मानते। उनकी बातें मत मानना, उनके साथ ज्ञान का संघर्ष करना लड़ना नहीं परन्तु उनकी बातों को स्वीकार नहीं करना। (आयत 52) वह कबीर परमात्मा वही है जिसने सर्व सष्टि की रचना की है। जिसने परिवार के जन उत्पन्न किए नाते-रिश्ते बनाए। सर्व का पालन करता है। (आयत 53से 55) हमने तुम्हें खुशखबरी सुनाने(सिर्फ अजाब से) डराने के लिये भेजा है। (आयत 56) और (ऐ पैगम्बर) उस जिंदा पर भरोसा रखो जो कभी मरने वाला नहीं है। {क्योंकि पूर्ण परमात्मा (अल्लाह कबीर) एक जिन्दा महात्मा की वेशभूषा में हजरत मुहम्मद जी को मिला था तथा सतलोक आदि को दिखाया था, परन्तु हजरत मुहम्मद जी ने पूर्ण परमात्मा की बात पर विश्वास नहीं किया था। उसी का वर्णन है।} तारीफ के साथ उसकी पाकी ब्यान करते रहो और वह कबीर अल्लाह अपने बंदो के गुनाहों से खबरदार है तथा वही (ईवादही खबीरा/कबीरा) कबीर परमात्मा अर्थात् अल्लाहू अकबर पूजा के योग्य है। (58) वह कबीर अल्लाह वही है जिसने छः दिन में सर्व ब्रह्मण्डों को रचा तथा सातवें दिन तख्त पर विराजा। वास्तव में वह अल्लाह कबीर रहमान(क्षमा शील) है। उसके विषय में मैं (कुर्आन शरीफ/मजीद का ज्ञान दाता) नहीं जानता। उसकी खबर अर्थात् पूर्ण ज्ञान व भक्ति की विधि किसी बाखबर(तत्त्वदर्शी संत) से पूछो। (आयत 59)

उपरोक्त विवरण से यह भी सिद्ध हुआ कि प्रभु एक नहीं अनेक हैं तथा तीनों देवता (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु तथा श्री शिव जी) ही तीनों लोकों के प्राणियों को संस्कारवश लाभ व हानि तथा उत्पत्ति, स्थिति तथा संहार के कारण हैं तथा ब्रह्म(काल) सर्व को धोखा देकर रखता है। पूर्ण परमात्मा कबीर ही सर्व सुखदायक, सर्व के पूजा के योग्य तथा पूर्ण मोक्ष दायक है।

पूज्य कबीर परमेश्वर बता रहे हैं कि मैंने उस मुल्ला जी से कहा कि जिस बाखबर(तत्त्वदष्टा) संत के लिये आपका अल्लाह संकेत कर रहा है। उस तत्त्वदष्टा संत द्वारा दिया ज्ञान ही पूर्ण मोक्ष दायक है। वह वास्तविक भक्ति मार्ग न तो हजरत मुहम्मद जी को प्राप्त हुआ, न आप मुल्ला, काजियों व पीरों को। इसलिए आज तक जो भी साधना आप कर रहे हो वह अधूरी है। केवल ब्रह्म (काल/ज्योति निरंजन) का फैलाया भ्रम जाल है। यह नहीं चाहता कि साधक मेरे जाल से निकल जाए। पूज्य कबीर परमेश्वर ने बताया वह बाखबर (अर्थात् तत्त्वदर्शी संत) मैं हूँ। आप मेरे से उपदेश लो तथा यह तत्त्वज्ञान जो मैं आपको बताऊंगा अन्य भक्ति चाहने वालों को भी समझाओ। यह तो काल है जिसे वेदों में ब्रह्म(क्षर पुरुष/ज्योति निरंजन) कहा जाता है। पूर्ण परमात्मा कोई और है जिसे वेदों में कविर्देव कहा है तथा कुर्आन शरीफ(मजीद) में कबीरन्, कबीरा, खबीरन्, खबीरा आदि कहा है तथा जिसे हजरत मुहम्मद जी ने अल्लाहु अकबर कहा है। वह कबीर अल्लाह मैं हूँ।

आप सर्व मेरी आत्मा हो। आपको काल(ब्रह्म) ने भ्रमित किया है।

बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर ने आगे बताया - यह वार्ता सुनकर वह मुल्ला मुझसे अति नाराज हो गया तथा आगे से उसकी कथा में न आने को कहा। पूज्य कबीर परमेश्वर से उपरोक्त विवरण जानकर बादशाह सिंकदर लौधी ने अपने धार्मिक गुरू शेखतकी से कहा ''पीर जी, क्या कुर्आन शरीफ में महाराज कबीर साहेब जी द्वारा बताया विवरण है?'' शेखतकी ने कुर्आन शरीफ में सूरत फुरकानी 25 आयत 52 से 59 को ध्यान से पढ़ा तथा सत्य को जाना परन्तु मान वश कह दिया कि कबीर जी तो झूठा है। यह क्या जाने पवित्र कुर्आन शरीफ के गूढ रहस्य को। यह कहकर अति नाराजगी व्यक्त करता हुआ उठ कर अपने कमरे में चला गया। बादशाह सिकंदर लौधी भी कुर्आन शरीफ को सुना करता था तो उसे याद आया कि ऐसा वर्णन अवश्य आता है। फिर भी भक्ति मार्ग तथा अरबी भाषा का ज्ञान न होने के कारण पूर्ण विश्वास नहीं हुआ। परन्तु हजरत मुहम्मद जी के जीवन चरित्र से पूर्ण परिचित था। उससे बहुत प्रभावित हुआ तथा कहा कि सच-मुच हजरत मुहम्मद जी के जीवन में कष्ट ही कष्ट रहे हैं।

''बादशाह सिकंदर की शंकाओं का समाधान''

प्रश्न - बादशाह सिकंदर लोधी ने पूछा, हे परवरदिगार (क). यह ब्रह्म(काल) कौन शक्ति है? (ख). यह सभी के सामने क्यों नहीं आता?

उत्तर - परमेश्वर कबीर साहेब जी ने सिकंदर लोधी बादशाह के प्रश्न 'क-ख' के उत्तर में सष्टि रचना सुनाई। (कप्या देखें इसी पुस्तक के पष्ठ 603 से 670 पर)

(ग). क्या बाबा आदम जैसे महापुरुष भी इसी के जाल में फंसे थे?

ग के उत्तर में बताया कि पवित्र बाईबल में उत्पत्ति विषय में लिखा है कि पूर्ण परमात्मा मनुष्यों तथा अन्य प्राणियों की रचना छः दिन में करके तख्त अर्थात् सिंहासन पर चला गया। उसके बाद इस लोक की बाग डोर ब्रह्म ने संभाल ली। इसने कसम खाई है कि मैं सबके सामने कभी नहीं आऊँगा। इसलिए सभी कार्य अपने तीनों पुत्रों (ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव) के द्वारा करवाता रहता है या स्वयं किसी के शरीर में प्रवेश करके प्रेत की तरह बोलता है या आकाशवाणी करके आदेश देता है। प्रेत, पितर तथा अन्य देवों (फरिश्तों) की आत्माऐं भी किसी के शरीर में प्रवेश करके अपना आदेश करती हैं। परन्तु श्रद्धालुओं को पता नहीं चलता कि यह कौन शक्ति बोल रही है। पूर्ण परमात्मा ने माँस खाने का आदेश नहीं दिया। पवित्र बाईबल उत्पत्ति विषय में सर्व प्राणियों के खाने के विषय में पूर्ण परमात्मा का प्रथम तथा अन्तिम आदेश है कि मनुष्यों के लिए फलदार वक्ष तथा बीजदार पौधे दिए हैं जो तुम्हारे खाने के लिए हैं तथा अन्य प्राणियों को जिनमें जीवन के प्राण हैं उनके लिए छोटे-छोटे पेड़ अर्थात् घास, झाड़ियाँ तथा बिना फल वाले पेड़ आदि खाने को दिए हैं। इसके बाद पूर्ण प्रभु का आदेश न पवित्र बाईबल में है तथा न किसी कतेब (तौरत, इंजिल, जुबुर तथा कुर्आन शरीफ) में है। इन कतेबों में ब्रह्म, उसके फरिश्तों तथा पित्तरों व प्रेतों का मिला-जुला आदेश रूप ज्ञान है।

(घ). क्या बाबा आदम से पहले भी सष्टि थी ?

उत्तर - हाँ, सूर्यवंश में राजा नाभिराज हुआ। उसका पुत्र राजा ऋषभदेव हुआ जो जैन धर्म का प्रवर्तक तथा प्रथम तीरथंकर माना जाता है। वही ऋषभदेव ही बाबा आदम हुआ, यह विवरण जैन धर्म की पुस्तक ''आओ जैन धर्म को जाने'' के पष्ठ 154 पर लिखा है।

इससे स्पष्ट है कि बाबा आदम से भी पूर्व सष्टि थी। पथ्वी का अधिक क्षेत्र निर्जन था। एक

दूसरे क्षेत्र के व्यक्ति भी आपस में नहीं जानते थे कि कौन कहाँ रहता है। ऐसे स्थान पर ब्रह्म ने फिर से मनुष्य आदि की सष्टि की। हजरत आदम तथा हव्वा की उत्पत्ति ऐसे स्थान पर की जो अन्य व्यक्तियों से कटा हुआ था। काल के पुत्र ब्रह्मा के लोक से यह पुण्यात्मा (बाबा आदम) अपना कर्म संस्कार भोगने आया था। फिर शास्त्र अनुकूल साधना न मिलने के कारण पितर योनी को प्राप्त होकर पितर लोक में चला गया। बाबा आदम से पूर्व फरिश्ते थे। पवित्र बाईबल ग्रन्थ में लिखा है।

(ड़). यदि अल्लाह का आदेश मनुष्यों को माँस न खाने का है तो बाईबल तथा कुर्आन शरीफ में कैसे लिखा गया ?

उत्तर - पवित्र बाईबल में उत्पत्ति विषय में लिखा है कि पूर्ण परमात्मा ने छः दिन में सष्टि रचकर सातवें दिन विश्राम किया। उसके बाद बाबा आदम तथा अन्य नबियों को अव्यक्त अल्लाह (काल) के फरिश्ते तथा पितर आदि ने अपने आदेश दिए हैं। जो बाद में कुर्आन शरीफ तथा बाईबल में लिखे गए हैं।

(च). अव्यक्त प्रभु काल ने यह सर्व वास्तविक ज्ञान छुपाया है तो पूर्ण परमात्मा का संकेत किसलिए किया ?

उत्तर - ज्योति निरंजन(अव्यक्त माना जाने वाला प्रभु) पूर्ण परमात्मा के डर से यह नहीं छुपा सकता कि पूर्ण परमात्मा कोई अन्य है। यह पूर्ण प्रभु की वास्तविक पूजा की विधि से अपरिचित है। इसलिए यह केवल अपनी साधना का ज्ञान ही प्रदान करता है तथा महिमा गाता है पूर्ण प्रभु की भी।

सिकंदर ने सोचा कि ऐसे भगवान को दिल्ली में ले चलता हूँ और हो सकता है वहाँ के व्यक्ति भी इस परमात्मा के चरणों में आकर एक हो जाऐं। यह हिन्दू और मुसलमान का झगड़ा समाप्त हो जाऐं। कबीर साहेब के विचार कोई सुनेगा तो उसका भी उद्धार होगा। दिल्ली के बादशाह सिकंदर लोधी ने प्रार्थना की कि हे ''सतगुरुदेव एक बार हमारे साथ दिल्ली चलने की कपा करो।'' कबीर साहेब ने सिकंदर लौधी से कहा कि पहले आप मेरे से उपदेश लो फिर आपके साथ चल सकता हूँ। ऐसे नहीं जाऊँगा। सिकंदर ने कहा कि दाता जैसे आप कहोगे वैसे ही करूँगा। कबीर साहेब ने कहा कि एक तो हिन्दू से मुसलमान नहीं बनाएगा। सिकंदर ने कहा कि नहीं बनाऊँगा। कोई जीव हिंसा नहीं करवाएगा। सिकंदर ने कहा प्रभु मैं जीव हिंसा नहीं करूंगा तथा न किसी को जीव हिंसा करने के लिए कहूँगा। परन्तु ये मुल्ला तथा काजी मेरे बस से बाहर हैं। कबीर साहेब ने कहा ठीक है आप अपने मुख से नहीं कहोगे। सिकंदर ने कहा कि ठीक है दाता अर्थात् सारे नियम बता दिए और सिकंदर ने सारे स्वीकार कर लिए। परमश्ेवर कबीर साहेब जी से दीक्षा ग्रहण कर ली तथा सर्व नियमों को आजीवन पालन करने का प्रण किया।

तब सतगुरुदेव सिकंदर लौधी को प्रथम मंत्र प्रदान करके वहाँ से उसके साथ दिल्ली को रवाना हुए। बादशाह सिकंदर ने परमेश्वर कबीर साहेब को अपने साथ हाथी पर अम्बारी में बैठाया। उसमें राजा के अतिरिक्त कोई बैठ नहीं सकता था। परन्तु सिकंदर को भगवान सामने दिखाई दिया जिसने उसकी असाध्य बिमारी से रक्षा की उसके सामने मुर्दा स्वामी रामानन्द जीवित कर दिया।

जब सिकंदर लौधी के धार्मिक गुरु शेखतकी को पता चला कि राजा स्वस्थ हो गया और इसके सामने कबीर परमेश्वर ने स्वामी रामानन्द जी का कटा शीश जोड़कर जीवित कर दिया। उसने सोचा कि अब मेरे नम्बर कटेंगे अर्थात् मेरी महिमा कम हो जाएगी और मेरी कमाई तथा प्रभुता गई। शेखतकी को साहेब कबीर से इर्ष्या हो गई। वह विचार करने लगा कि किसी प्रकार इसको नीचा

दिखा दूं और सिकंदर के हृदय से यह उतर जाए और मेरी प्रभुता बनी रह जाए। सभी वहाँ से दिल्ली के लिए चल पड़े। रास्ते में रात्रि में एक दरिया पर रूक गए। सोचा कि रात्रि में विश्राम करेंगे। सुबह चलने का इरादा करके वहाँ पर पड़ाव लगा दिया।

पाठकों से निवेदन है कि अज्ञान के कारण ज्ञानहीन कबीर पंथियों ने वर्तमान कबीर सागर के ज्ञान का अपनी अज्ञानता के कारण नाश कर रखा है। कबीर सागर में ''मोहम्मद बोध'' पृष्ठ 15(735) पर लिखा है कि साखी में लिखा है कि कबीर साहेब ने मोहम्मद से कहा कि तुम तो जाओ, मक्का में जाओ, मैं काशी शहर में जाकर रामानंद को गुरू करता हूँ।

साखी :– हमतो काशी को जात हैं, तुम मक्के अस्थान।
हम गुरू रामानन्द करें, तुम देओ जगत फरमान।।

विचार करें :- हजरत मोहम्मद जी का जन्म 603 ई. में हुआ। वे 63 वर्ष की आयु में रोग के कारण मृत्यु को प्राप्त हुए थे। परमेश्वर कबीर जी काशी में 1398 ई. में प्रकट हुए। सन् 1403 ई. में 5 वर्ष की आयु में रामानंद जी से दीक्षा लेने की लीला की थी। झूठे व्यक्तियों ने कबीर जी को मोहम्मद जी का समकालीन बना दिया। मुहम्मद जी को परमेश्वर सत्यलोक से आकर मिले थे जैसे संत गरीबदास जी को मिले थे।

''मुसलमानों का सिद्धांत गलत सिद्ध हुआ।''

मुसलमान मानते हैं कि बाबा आदम जी प्रथम नबी थे। उनसे लेकर हजरत ईशा जी तक सब मृत्यु के उपरांत कब्रों में दबाए गए हैं। वे सब तब तक कब्रों में रहेंगे, जब तक कयामत (प्रलय) नहीं आती। प्रलय आने में अभी अरबों वर्ष शेष हैं। तब तक जन्नत (स्वर्ग) तथा दोजख (नरक) खाली पड़े हैं। हजरत मोहम्मद मृत्यु के निकट आए तो रात्रि में उठकर कब्रों में गए। वहाँ उन कब्रों में दबे मुर्दों से कहा कि हे कब्र वालो! तुम्हें अल्लाह सलामत रखे।

इससे भी स्पष्ट है कि मुसलमान मानते हैं कि मृत्यु के उपरांत सब कब्रों में दबाए जाते हैं और कयामत तक कब्रों में रहते हैं। आप जी ने ऊपर पढ़ा कि हजरत मोहम्मद जी जब बुराक पर बैठकर ऊपर गए तो जन्नत में हजरत आदम की अच्छी संतान थी जिनको देखकर बाबा आदम हँस रहे थे। बांई और नरक में निकम्मी संतान थी जिनको देखकर रो रहे थे। हजरत मोहम्मद जी ने ऊपर पूर्व वाले सब नबियों को देखा। यदि मुसलमान धर्म का यह सिद्धांत सत्य है कि कयामत तक सब मानव तथा पैगंबर कब्रों में रहते हैं तो हजरत मोहम्मद जी को जन्नत में न बाबा आदम मिलते, न उनकी अच्छी-बुरी संतान स्वर्ग-नरक में मिलती और न बाबा आदम से लेकर ईशा तक नबियों की मण्डली ऊपर के आसमानों में मिलती। जन्नत (स्वर्ग) तथा दोजख (नरक) खाली पड़े होने चाहिएं थे। इससे मुसलमानों का यह कहना गलत सिद्ध हुआ कि कयामत तक प्रत्येक मानव मृत्यु के उपरांत कब्रों में दबे रहते हैं।

जन्नत उसको कहते हैं जहाँ कोई कष्ट ना हो। वह जन्नत (स्वर्ग) सत्य लोक में है। वास्तव में वह स्वर्ग है। काल लोक के स्वर्ग पूर्ण सुखदायक नहीं हैं।

''काल ब्रह्म का स्वर्ग (जन्नत) भी कष्टदायक''

आप जी ने पढ़ा कि बाबा आदम जो ईसाई धर्म तथा मुसलमान धर्म के प्रथम पैगंबर हैं। वे साधना करके जिस स्थान पर गए। वहाँ भी सुखी नहीं, कभी हँस रहे थे तो कभी रो रहे थे। अन्य

भी उसी स्थान को जन्नत मानकर भक्ति करके प्राप्त करेंगे। यही दशा वहाँ पर उनकी होगी।

यदि यह बात सत्य मानें कि कयामत तक कब्रों में रहना पड़ता है तो कयामत तो अभी अरबों वर्षों के पश्चात् आएगी, तब तक भूखे-प्यासे कब्रों में तड़फते रहेंगे। फिर वे उस जन्नत को प्राप्त करेंगे जिसको बाबा आदम प्राप्त करके अशान्त हैं क्योंकि वे वहाँ पर रो रहे हैं और हँस रहे हैं।

परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को यह निष्कर्ष बताया तो धर्मदास जी परमेश्वर कबीर जी के चरणों में गिरकर दण्डवत् प्रणाम करके रोने लगे। कहा कि हे बन्दी छोड़! आँखें खोल दी। काल का भयंकर जाल है। आपके सब बच्चे हैं। हे परमात्मा! क्या आप हजरत मोहम्मद जी को मिले थे? क्या वे आपकी शरण में आए थे? कृपा मेरे मन में यह जानने की प्रबल इच्छा है।

उत्तर = ऊपर लिख दिया है।

कृपया पढ़ें कबीर सागर के अध्याय ''मुहम्मद बोध'' से वाणी :-

धर्मदास वचन

साखी – धर्मदास बीनती करे, कृपा करो गुरूदेव।
नबी मुहम्मद जस भये, सोसब कहियों भेव।।

कबीर वचन

धर्मदास तुम पूछो भल बानी। सो सब कथा कहूँ सहिदानी।।
मिले हम मुहम्मद कूँ जाई। सलाम वालेकम कह सुनाई।।
मुहम्मद बोले वालेकम सलामा। हमें बताओ गाम रूनामा।।
साखी – कहाँ ते आये पीर तुम, क्यों कर किया पयान।
कौन शक्सका हुक्म है, किसका है फरमान।।

मुहम्मद वचन

रमैनी

पीर मुहम्मद सखुन जो खोला। अल्ला हमसे परदै बोला।।
हम अहदी अल्ला फरमाना। वतन लाहूत मोर अस्थाना।।
उन भेजे रूह बारह हजारा। उम्मत के हम हैं सरदारा।।
तिस कारण जो हम चलि आये। सोवत थे सब जीव जगाये।।
जीव ख्वाब में परो भुलाये। तिस कारन फरमान ले आये।।
तमु बूझो सो कौन हो भाई। अपनो इस्म कहो समुझाई।।
साखी – दूर की बाते जो करौ, करते रोजा नमाज।।
सो पहुँचे लाहूत को, खोवे कुल की लाज।।

कबीर वचन

कहैं कबीर सुनो हो पीर। तुम लाहूत करो तागीरा।।
तुम भूले सो मरम न पाया। दे फरमान तुम्हें भरमाया।।
फिर फिर आव फिर फिर जाई। बद अमली किसने फरमाई।।
लाहूत मुकाम बीच को भाई। बिन तहकीक असल ठहराई।।
तुम ऐसे उनके बहुतेरे। लै फरमान जाव तुम डेरे।।
साखी – खोजत खोजत खोजियाँ, हुवा सो गूना गून।

खोजत खोजत ना मिला, तब हार कहा बेचून।।
बेचूँन जग राँचिया, साई नूर निनार।
आखिर करे वक्त में, किसकी करो दिदार।।

रमैनी

तुम लाहूंत रचे हो भाई। अगम गम्य तुम कैसे पाई।।
यह तो एक आदि विसरामा। आगे पाँच आदि निज धामा।।
तहाँ ते हम फरमान ले आये। सब बदफेल को अमल मिटाये।।
उन फरमान जो हमको दीना। तिनका नाम बेचून तुम लीना।।
साखी – साहब का घर दूर है, जासु असल फरमान।
उनको कहो जो पीर तुम, सोइ अमर अस्थान।।

मुहम्मद वचन

कहै मुहम्मद सुनो कबीरा। तुम कैसे पायो अस्थीरा।।
लाहूत मेटि जो अगम बतायो। खुद खुदाय हमहूँ नहिं पायो।।
हम जानैं खुद आपै आही। तुम कुदरत कर थापो ताही।।
हम तो अर्श हाजिरी आयो। तुम तो कुदरत से ठहराये।।
तुम्हरे कहे भरम मोहि आयो। खुद खुदाय तुम दूर बतायो।।
आप सुनाओ खुदकी बानी। आलम दुनियाँ कहो बखानी।।
लाहूत मुकाम हम निजकर जाना। सो तो तुम कुदरत कर ठाना।।
हलकी मुलकी बासरी भाई। तीन हुक्म अल्ला फरमाई।।
साखी – साई मुरशिद पीर है, साँचा जिस फरमान।
हलकी मुलकी बासरी, तीन हुकुम कर मान।।

कबीर वचन

सुन मुहम्मद कहूं खुदवाणी। खुद खोदाय की कहूँ निशानी।।
कादिर थे तब कुदरत नाहीं। कुदरत थी कादिर के माहीं।।
ख्वार सभी को चीन्हो भाई। असल रूह को देउँ बताई।।
असल रूह की दीदार जो पावे। पावे निज मुसलमान कहावे।।
हो आवाज जहां परदा पोशी। है वह मर्द कि है वह जोशी।।
जब लग तख्त नजर नहीं आवे। दिल विश्वास कौन विधि पावे।।
जब खुद की खबर न पावे। तब लग कुदरत भ्रम ठहरावे।।
हाल माशूक नजर जो आवै। एक निगाह दीदार जो पावै।।
जो तुम कहा हमारा मानो। तो हम तुमते निर्णय ठानो।।
साखी – यह प्रपंच बेचून का, तुमते कहा न भेव।।
आप गुप्त होइ बैठा, तुम चार करत हो सेव।।

मुहम्मद बोध

कहैं मुहम्मद सुन खुद अहदी। इल्म लद्दुनी कहु बुनियादी।।
जब नहिं पिण्ड ब्रह्माण्ड अस्थूला। तब ना हतो संष्टि को मूला।।
तादिन की कहिय उपतानी। आदि अंत और मध्य निशानी।।

साखी – बुजरूग हकीकत सब कहो, किस विधि भया प्रकाश।
जब हम जाने आदि को, तो हमहूँ बाँधे आश।।

कबीर वचन

सुनो मुहम्मद सांचे पीरा। समरथ हुकुम खुद आदि कबीरा।।
अब हम कहें सुनो चितलायी। आदि अन्त सब कहों बुझायी।।
प्रथम समरथ आदि अकेला। उनके संग हता नहिं चेला।।
साखी – वाहिदन थे तब आप में, सकल हतो तेहि माँह।
ज्यौं तरूवर के बीज में, पुष्प पात फल छाँह।।

चौपाई

निरंजन भये राज अधिकारी। तिनके चार अंश सेवकारी।।
चार ज्ञानते चारो वेदा। तिनते चारो भये कतेबा।।
मूल कुरान वेद की वानी। सो कुरान तुम जग में आनी।।
हक्क कुरान जो तुमको दीना। हद हुक्म तुम आपन कीना।।
चार कतेब के चारों अंशा। तिनते कहो भिन्न–भिन्न बंशा।।
वेद पढावत ब्रह्मा आये। ऋग वेद को नाम लखाये।।
दूसर यजुरवेदकी वानी। भक्ति ज्ञान सो कीन बखानी।।
तीसर सामवेद की वानी। यज्ञ होम तिन कीन बखानी।।
चौथ अथर्बन गुप्त छपाये। तौन हुक्म तुम जगमें आये।।
ऐकै मूल कुरान में चारी। चार बीर तुम हो सरदारी।।
जब्बूर किताब दाऊद ने पाई। नासूत मोकाम रहै ठहराई।।
तौरेत कीताब मूसाने पाई। मलकूत मोकाम रहै ठहराई।।
इंजील किताब ईशा ने पाई। जबरूत मोकाम रहै ठहराई।।
फुरकान किताब नबी तुम पाई। लाहूत मोकाम रहै लौलाई।।
कुरान बेहद को मरम न पावै। बिन देखे विश्वास क्या आवै।।
चार मोकाम किताब है चारी। पंचयें नाम अचिंत सँवारी।।
तहँते आइ रूह बारह हजारी। तहां अचिंत गुप्त व्योहारी।।
साखी – पीर औलिया थाकिया, यह सब उरले पीर।।
समरथ का घर दूर है, तिनको खोजो बीर।।

मारफत

चौपाई

ओवल मोकाम नासूत ठेकाना। दूजा मोकाम मलकूत जो जाना।।
सेउम मोकाम जबरूत ठेकाना। चहारूम मोकाम लाहूत बखाना।।
पंचये मोकाम हाहूत अस्थाना। छठे मोकाम सोहं जो माना।।
हफतुम मोकाम बानी अस्थाना। अठयें मोकाम अंकूर ठेकाना।।
नवयें मुकाम आहूत निशानी। दसयें मोकाम पुरूष रजधानी।।

बेतुक

औवल शरी अत्।१। तरीकत् २। हकीकत् ३। मरफत् ४। मरौवत् ५। ध्यान दोरहिअत् ६। जुलफकार

चन्द्र गेटा ७। हुकुममुरतद ८। देयना कासो यही अंत् ६। सच पावे समरथ काय १०। अंकार ओंकार कलिमा नवी सचुपावै देखा हद बेहद

मुहम्मद वचन

तुम कबीर भेद अधिकाये। खुद समरथ की खबरि जो ल्याये।।
अब तुमको हम बूझैं अंतू। सो कहिये खुद अहदी संतू।।
को तुम आहु कहांते आये। क्यों तुम अपना बर्ण छिपाये।।
सात सुरति समरथ निमाई। यह अस्थान रहो की जाई।।
यती मारफत कहु दुरवेशा। हम मानैं तुमरो उपदेशा।।
सात सुरति केहि माहि समाई। जिव बोधे सो कह चलि जाई।।
समरथ गम तुमु साँच कबीरा। समरथ भेद कहो मति धीरा।।
साखी – मेरे शंका बाढिया, थाके वेद कुरान।
वाहिद कैसे पाइये, समरथ को मक्कान।।

सत्य कबीर वचन

सुनो मुहम्मद कहों बुझाई। जो खुद आदि अस्थान है भाई।।
जो जो हुकुम समरथ फरमाई। सो सो हुकुम हम आनि चलाई।।
सुर नर मुनि को टेरि सुनाये। तुमको बहुत बार समुझाये।।
तुम पर मोह क्षर ने डारा। तेहि कारण आये संसारा।।
सोलह असंख जुग जबै सिराई। सोलह असंख उत्पत्ति मिटि जाई।।
सात सुरति तब लोकहि जाई। जिव बोधो तेहि माह समाई।।
सात सुन्य तजि ते अस्थाना। ते सब मिटे होय घमसाना।।
वेद कतेव कि छोड़ो आशा। वेद कतेव में क्षर प्रकाशा।।
तीन बार तुम जग में आये। फिर फिर क्षर ने भरमाये।।
क्षर चीन्हिके छोडो भाई। तीन अंश क्षर निरमाई।।
ब्रह्मादिका संष्टि आपको कीना। जीव वंष्टि तीरथ व्रत दीना।।
माया वंष्टि ईश्वरी जानो। सबमें आतम एक समानो।।
साखी–खोजो खुद समरत्थको, जिन किया सब फरमान।
पीर मुहम्मद तहँ चलो, सोई अमर अस्थान।।

मुहम्मद वचन

पीर मुहम्मद मुख तब मोरा। कछु नहिं चलै तुम्हारी जोरा।।
क्षर हुक्म को मेटनहारा। चार वेद जिन कीन पसारा।।

कबीर वचन

सुनिये सखुन मुहम्मद पीरा। हम खुद अहदी आदि कबीरा।।
मेटों क्षरको बिस्तारा। मेटो निरंजन सकल पसारा।।
मेटो अचिंतकी रजधानी। मेटो ब्रह्मा वेद निशानी।।
चौदह जमको बांधि नचावों। मंतु अंधा मगहर ले आवों।।
धर्मरायते झगर पसारा। निरंजन बांधि रसातल डारा।।
वे कतेब को अमल मिटावों। घर घर सार शब्द फैलावों।।

समरथ हुक्म चलै सब माही। ब्यापै सत्य असत्य उठि जाही।।

मुहम्मद वचन

पीर मुहम्मद बोले बानी। अगम भेद काहू नहिं जानी।।
सुनाकान नहिं आखिन देखा। बिन देखे को करे विवेखा।।
जो नहिं देखो अपने नैना। कैसे मानो गुरूको बैना।।
जो तुम खुद अहदी है आये। हुक्म हजूर फरमान ले आये।।
जौन राह से तुम चलि आवो। सोई राह मोकहँ बतलावो।।
हँसन को अस्थान चिन्हावो। समरथ को मोहि लोक देखावो।।
साखी – हंसन को अस्थान लखि, तब मानुँ फरमान।।
जो समरथ को हुक्म है, सो मेरे परवान्।।

कबीर वचन

सुनो मुहम्मद कहों बुझाई। साहेब तुमको देउँ बताई।।
चलै सैल को दोनों पीरा। एक मुहम्मद एक कबीरा।।

(नासूत) मोकाम १

भूमि से चले जहाँ पहुँचे जाई। मानसरोवर तहां कहाई।।
तहँ नासूत आहि मोकामा। नबी कबीर पहुँच तेहि धामा।।
तहँ दाऊद पयंबर होई। जब्बूर किताब पढे तहँ सोई।।
तहाँ सलामालेक सोई कीना। दस्तावोस उनहु उठि लीना।।

(मलकूत) मोकाम २

तहवाँते पुनि कीन पयाना। दूसरा मुकाम वैकुंठ प्रमाना।।
तहवाँ पहुँच बैठे ऋषि दुर्बासा। देव सबै बैठे तेहि पासा।।
वह वैकुंठ विष्णु अस्थाना। मलकूत मोकाम मूसाको जाना।।
मूसा पैगम्बर पढै किताबा। उसका नाम तौरेत किताबा।।
सलामालेक तहाँ हम कीना। दस्ताबोस उनहु उठि लीना।।

(जबरूत) मोकाम ३

वैकुण्ठ ते आगे लायो डोरी। सुमेरते सुन्य अठारह करोरी।।
येतो अधर सुन्य अस्थाना। जबरूत मोकाम ईसाको जाना।।
ईसा पैगम्बर पढै किताबा। उसका नाम इंजील किताबा।।
सलामालेक तहाँ हम कीना। दस्ता बोस उनहु उठि लीना।।
तहँवा बैठि विस्वंभर राई। वही पीर तो वही खुदाई।।
यह विष्णुपुरी है भाई। यामें भी एक बैकुण्ठ बनाई।।
विष्णु है यहाँ का प्रधाना। सुन मुहम्मद ज्ञान विज्ञाना।।
उहँते अधर सून्य है भाई। ताकी शोभा कही न जाई।।

(लाहूत) मोकाम ४

महाशून्यको लागी डोरी। ग्यारह पालँग तहाँ ते सोरी।।
लाहूत मोकाम कहावै सोई। जो देखे बहुतै सुख होई।।
रह महादेव पार्बति संगा। लाहुत मुकाम देख मन चंगा।।

यह मुहम्मद तुम्हरो डेरा। गण गंधर्व सब यहाँ चेरा।।
मुस्तफा पैगंबर बैठे तहाँ। फुरकान किताब पढत थे जहाँ।।
सलामालेक तहाँ हम कीना। दस्ताबोस उनहु उठि लीना।।
देखत हौ मुहम्मद अस्थाना। तुम बेचून कहो यही ठेकाना।।
सब फिरिश्ते सलामालेक कीना। तब हम आगे का पग दीना।।

(हाहूत) मोकाम ५

तहँते चले अचिंत ठेकाना। एक असंख्य सुन्य परमाना।।
ब्रह्मापुरी है हाहूत मोकामा। आदम का यहाँ विश्रामा।।
हाहूत मोकाम को वही ठेकाना। आगे है सोहं बंधाना।।

(बाहूत) मोकाम ६

तीन असंख्य शून्य परमानी। बाहूत मोकाम सो कहो बखानी।।
यह देवी का अस्थाना। गुप्तभेद कोई ना जाना।।
नवी कबीर चले तेहि आगे। मूल सुरति बैठे अनुरागे।।

(फाहूत) मोकाम ७

पांच असंख सुन्न विचआही। सप्तम मोकाम कहत है ताही।।
संगम धाम दुर्गा के आगे। यको तुम फाहूत अनुरागे।।
फाहूत मोकाम तोहे बताया। भिन्न भेद कह समझाया।।

(राहूत) मोकाम ८

इच्छा सुरति के पहुँचे द्वीपा। चार असंख है लोक समीपा।।
सतगुरू रूप काल दयाला। एक बुगा और एक काला।।
ताको नाम राहूत मोकामा। नबी कबीर पहुँचे तेहि ठामा।।

(आहूत) मोकाम ६

तहाँते सहज द्वीप परमाना। दोय असंख तहाँते जाना।।
मुकाम निरंजन धामा। आप गुप्त ज्योति प्रगटाना।।
ताहि मोकाम नाम आहूता। सोभा ताकी देख बहूता।।

(जाहूत) मोकाम १०

साखी – पहुँचे जायके लोक जहँ, सन्त असंख दस लाख।।
अक्षर धाम जाहूत मुकामा। शंख इक्कीस लोक अकाना।।
सो मोकाम जाहूत का, दस मोकाम यह भाख।।

चौपाई

सलामवालेकम तहाँ हम कीना। दस्ताबोस उनहु उठिलीना।।
तहँते अमरलोकको छोरा। नबी कवीर पहुँच तेहि ठौरा।।
अमरलोक के हंस सब आये। तिनकी सोभा कही न जाये।।
भरि भरि अंक मिले तहँ आये। देखि मुहम्मद रहे भुलाये।।
सब मिलि हंस गये पुनि तहँवा। साहेब तखत पै बैठे जहँवा।।
जगर मगर छतर उजियारा। आम धनी का कहो बिहारा।।
असंख भानु पुरूष उजियारा। अमरलोक को कहो विस्तारा।।

सकल हंस तहँ दरशन पाई। तिनकी सोभा बरनि न जाई।।
तहँवा जाय बंदगी कीना। नबी भये जो बहुत अधीना।।

मुहम्मद वचन

चूक हमार बकस कर दीजै। जो तुम कहो सोई हम कीजै।।

पुरूष वचन

कहु मुक्तामनि बेगि तुम आये। दूसर कौन सँग ले आये।।

दश मुकामी रेखता

चला जब लोकको शाक सब त्यागिया हंसको रूप सतगुरू वनायी। भंग ज्यों कीट को पलटि भं किया आप समर दै ले उड़ायी। छोडि नासूत मलकूतको पहुंचिया विष्णु की ठाकुरी दीख जायी। इन्द्र कुबेर जहाँ रंभको नत्य है देव तेतीस कोटि रहायी।।१।। छाड़ि वैकुंठ को हंस आगे चला शुन्य में ज्योति जगमग गायी। ज्योति परकाश में निरखि निस्तत्त्वको आप निर्भय हुआ भय मिटायी। अलख निर्गुण जेहि वेद स्तुति करै तिनहूं देव को हैं पिताई। भगवान तिनके परे श्वेत मूरति धरे भागको आन तिनको रहायी।।२।। चार मुक्काम पर खंड सोरह कहै अंडको छोर ह्यां ते रहायी। अंड के परे स्थान अचिंत को निरखिया हंस जब उहां जायी। सहस औ द्वादशै रूह है समें करत कल्लोल अनहद बजायी। तासुके बदनकी कौन महिमा कहौं भासती देह अति नूर छायी।।३।। महल कंचन बने मणिक तामें जड़े बैठ तहँ कलश अखंड छाजै। अचिंत के परे स्थान सोहंका हंस छत्तीस तहँवा विराजै। नूरका महल और नूरकी भूमि है तहां आनन्द सो द्वन्द्व भाजै। करत कल्लोल बहुत भांति से संग यक हंस सोहंग के समाजै।।४।। हंस जब जात षट चक्रको वेधि के सातमुक्काम में नजर फेरा। सोहंग के परे सुरति इच्छा कही सहसवामन जहँ हंस हेरा। रूपकी राशिते रूप उनको बना नहीं उपमा इन्दु जौनिवेरा। सुरति से भेटिकै शब्द को टेकि चढ़ि मुक्काम अंकूर केरा।।५।। शून्य के बीच में बिमल बैकुण्ठ जहाँ सहज अस्थान है गैब केरा। नवो मुक्काम यह हंस जब पहुंचिया पलक बिलंब ह्यां कियो डेरा। तहाँसे डोरि मकरतार ज्यों लागिया ताहि चढि हंस गो दै दरेरा।। भये आनन्द से फंद सब छोड़िया पहुँचिया जहाँ सत्यलोक मेरा।।६।। हंसिनी हंस सब गाय बजायकै साजिकै कलश मोहे लेन आये। युगन युग बीछुरे मिले तुम आहकै प्रेम करि अंगसो अंग लाये। पुरूष ने दर्श जब दीन्हिया हंसको बहु जनमकी तब नशाये। पलटिकै रूप जब एकसे कीन्हिया मनहुं तब भानु षोडश उगाये।।७।। पुहुप के द्वीप पीयूष भोजन करै शब्द की देह जब हंस पायी पुहुप के सेहरा हंस औ हंसिनी सच्चिदानन्द शिर छत्रछायी। दिपैं बहु दामिनी दमक बहु भांति की जहाँ घन शब्द को घमंड लायी। लगे जहाँ वरषने गरज घन घोरिकै उठत तहँ शब्द धुनि अति सोहायी।।८।। सुन सोहं हंस तहँ यूत्थके यूत्थ है एकही नूर यक रंग रागै। करत बिहार मन भामिनी मुक्ति में कर्म औ भर्म सब दूरि भागै। रंक और भूप कोइ परखि आवै नहीं करत कल्लोल बहु भाँति पागे। काम औ क्रोध मद लोभ अभिमान सब छाँड़ि पाखण्ड सत शब्द लागे।।९।। पुरूष के बदन की कौन महिमा कहौं जगत् में ऊपमांय कछु नाहिं पायी। चन्द्र औ सूर गण ज्योति लागै नहीं एकही नक्ख परकाश भाई। पान परवान जिन बंशका पाइया पहुंचिया पुरूष के लोक जायी। कहैं कब्बीर यहि भांति सो पाइहौ सत्य की राह सो प्रकट गायी।।१०।।

{यही प्रकरण अध्याय ज्ञान प्रकाश के पष्ठ 57-58 पर है तथा अमर मूल के पष्ठ 202 और ज्ञान स्थिति बोध के पष्ठ 83 पर परमेश्वर के सब अंगों का वर्णन है। कण्ठ, कान, हाथ, भाल यानि मस्तक, सिर, आँख, गर्दन (ग्रीव), कपोल (होठ), मुख, भुजा, कटि (कमर), नाभि, पिंडी, जाँघ, नख (नाखून), सिख (चोटी यानि सिर का ऊपर वाला भाग) सब वर्णन है।}

अध्याय ''काफिर बोध'' का सारांश

कबीर सागर में 15वां अध्याय ''काफिर बोध'' पृष्ठ 26(746) पर है।

काफिर का अर्थ है ''दुष्ट इंसान''। मुसलमान कहते हैं कि हिन्दु काफिर हैं क्योंकि ये देवी-देवताओं की पूजा करते हैं। मंदिर में मूर्ति रखकर पूजा करते हैं। सूअर का माँस खाते हैं। हिन्दु कहते हैं कि मुसलमान काफिर हैं क्योंकि ये माँस खाते हैं, गाय को मारते हैं। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि काफिर कोई समुदाय नहीं होता। काफिर वह है जो गलत काम करता है। कबीर सागर में बहुत कुछ फेर-बदल है। इसकी पूर्ति संत गरीबदास जी द्वारा परमेश्वर कबीर जी ने करवाई है।

कृपया पढ़ें काफिर बोध वाणी :-

''काफिर बोध''

कबीर, गला काट बिसमल करें, वे काफिर बे बूझं।
ओरा काफिर बताबही, अपना कुफुर ना सूझ।।
काफिर बोध सुनो रे भाई। दोहूं दीन बीच राम खुदाई।।(1)
काफिर सो माता दैं गारी, वै काफिर जो खेलैं सारी।।(2)
काफिर दान यज्ञ नहीं करहीं, काफिर साधु संत सैं अरहीं।।(3)
काफिर तीरथ ब्रत उठावैं, सत्यवादी जन नाम लौ लावैं।।।(4)
काफिर पिता बचन उलटांहीं, इतनें काफिर दोजिख जांहीं।।(5)
वे काफिर जो बड़ बड़ बोलैं, काफिर कहौ घाटि जो तोलैं।।(6)
वै काफिर ऋणि हत्या राखैं, वै काफिर परदारा ताकैं।।(7)
काफिर स्वाल सूखन कूं मोड़ैं, काफिर प्रीति नीचसूं जोड़ैं।।(8)
दोहा– काफिर काफिर छाड़ि हूं, सत्यवादी सैं नेह।
गरीबदास जुग जुग पड़ै, काफिर कै मुख खेह।।(9)
वै काफिर जो कन्या मारैं, वै काफिर जो बन खंड जारैं।।(10)
वै काफिर जो नारि हितांही, वै काफिर जो तोरैं बांही।।(11)
वै काफिर जो अंतर काती, वै काफिर जो देवल जाती।।(12)
वै काफिर जो डाक बजावैं, वै काफिर जो शीश हलावैं।।(13)
वै काफिर जो करैं कंदूरी, वै काफिर जिन नहीं सबूरी।।(14)
वै काफिर जो बकरे खांही, वै काफिर नहीं साधू जिमांही।।(15)
वै काफिर जो मांस मसाली, वै काफिर जो मारें हाली।।(16)
वै काफिर जो खेती चोरं, वै काफिर जो मारैं मोरं।।(17)
वै काफिर अन भावत खांही, काफिर गणिका सूं गल बांही।।(18)
काफिर अर्ध बिंब सैं संगा, काफिर सो जो फिरै बिनंगा।।(19)
काफिर सो जो मही तनावैं, जाका दूध रुधिर घर ल्यावैं।।(20)
काफिर जो भल भदर भेषा, जाके शिर पर बाल न एका।।(21)
काफिर सो जो मुरगी काटैं, वै काफिर जो सीनां चाटैं।।(22)

काफिर गूदा घतैं सलाई, काफिर हुका पीवैं अन्याई।।(23)
काफिर भांग भसौड़ी भरहीं, काफिर हुक्के कूं सर करहीं।।(24)
काफिर घट में धूमां देहीं, काफिर नास नाक में लेहीं।।(25)
काफिर कथ सुपारी चूना, पांन लपेटि मुख में थूंनां।।(26)
काफिर मालनि कूं डर पावैं, बिनहीं कीनैं भाजी खावैं।।(27)
काफिर सो एक अंब चिचोरैं, मजलसि बैठें मुख निपोरैं।।(28)
काफिर सो जो कानी देही, काफिर सो कन्या धन लेही।।(29)
काफिर सो साली सैं साखा, काफिर बचन पलटै माका।।(30)
काफिर सो जो विद्या चुरावैं, काफिर भैरव भूत पूजावै।।(31)
साखी– पूजैं देई धाम कूं, शीश हलावै जोय।
गरीबदास साची कहैं, हदि काफिर है सोय।।(32)
काफिर तोरै बनज ब्योहारं, काफिर सो जो चोरी यांर।।(33)
काफिर सो जो बाग उपारं, काफिर सो बिन सतनाम अधारं।।(34)
काफिर आंन देवकूं मानैं, काफिर गुड़कुं दूधैं सानैं।।(35)
वै काफिर जो अनरुचि खांही, वै काफिर जो भूले सांई।।(36)
वै काफिर जो अंडा फोरैं, काफिर सूर गऊ कूं तोरैं।।(37)
वै काफिर जो मिरगा मारैं, काफिर उदर क्रदसे पारैं।।(38)
काफिर पीवत गऊ हटावैं, काफिर कूवे की मणि ढांहवैं।।(39)
काफिर भेष भेष कूं मारै, काफिर कूड़ा ज्ञान पसारै।।(40)
दोहा– गरीब काफिर कीर्ति ना लखै, धर्म दया ब्यवहार।
गरीबदास कैसैं बचै, जाना जम दरबार।।(41)

भावार्थ :- काफिर उसको जानो जो माता को गाली देता है, चोरी करता है, जारी (व्यभिचार) करता है। माँस खाता है, दान-धर्म नहीं करता। शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण करता है।

''गरीब हिन्दु हदीरे (यादगार) पूजहीं, मुसलिम पूजैं घोर (कब्र)।
कह कबीर दोनों दीन की, अकल को ले गए हैं चोर।।

शब्दार्थ :- कबीर जी ने कहा है कि हिन्दू तो एक यादगार मन्दिर में मूर्ति पूजा करते हैं। मुसलमान घोर यानि कब्रों को तथा मदीना में पत्थर को सिजदा करते हैं। दोनों धर्म के व्यक्तियों की बुद्धि चोरों ने छीन रखी है। स्वयं वही गलती करते हैं। एक-दूसरे को काफिर बताते हैं।

कबीर सागर के अध्याय ''काफिर बोध'' का सारांश सम्पूर्ण हुआ।

।।सत साहेब।।

अध्याय ''सुल्तान बोध'' का सारांश

कबीर सागर में 16वां अध्याय ''सुल्तान बोध'' पृष्ठ 37(757) पर है।

''सुल्तान'' फारसी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है ''राजा''। एक अब्राहिम अधम नाम का राजा था। उसको ''इब्राहिम अधम सुल्तान'' कहा जाता था। उसके राज्य के व्यक्ति उसको ''सुल्तान'' कहा करते थे। उनका पूरा नाम नहीं लेते थे। जैसे उपायुक्त यानि डिप्टी कमीश्नर कार्यालय के अधिकारी व कर्मचारी आपस में एक-दूसरे को कोई कार्य करने को कहते हैं तो कहते हैं कि साहब ने कहा है। वे बार-बार उपायुक्त साहब या डी.सी. साहब नहीं कहते। उनके लिए साहब शब्द से स्पष्ट हो जाता है, किसका आदेश है? इसी प्रकार अब्राहिम अधम सुल्तान को सुल्तान शब्द से जाना जाने लगा था। पूर्व जन्म के भक्त ही राजपद, अधिकारी पद तथा धनपति बनते हैं। यह जीव जबसे सत्यपुरूष से बिछुड़कर काल ब्रह्म के जाल में फँसा है। उसके कुछ समय उपरांत इसको उस सुख की खोज है जो यह सत्यलोक में छोड़कर आया है। जैसे गाय या भैंस के बच्चे को उसकी माता के स्तनों का दूध पी रहे को हटाकर व्यक्ति अपने हाथ की ऊँगलियों को उसके मुख में डाल देता है। वह बच्चा माता का थन समझकर थनों को छोड़कर कुछ देर ऊँगलियों को चूसता है। दूध वाला स्वाद न आने के कारण कुछ देर में छोड़ देता है। फिर कभी रस्से के सिरे को, कभी माता के कान को मुख में देकर चूसता है, परंतु दूध वाला स्वाद तो दूध से ही मिलता है। यही दशा उन सब प्राणियों की है जो काल जाल में इक्कीस ब्रह्माडों में रह रहे हैं। उस सत्यलोक को प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहे हैं, परंतु सत्य साधना न मिलने के कारण जन्म-मरण के चक्र में रह जाते हैं। परमेश्वर कबीर जी स्वयं सत्यपुरूष हैं। सत्यज्ञान सत्यभक्ति परमेश्वर स्वयं ही प्रकट होकर बताते हैं। सत्यपुरूष कबीर जी प्रत्येक युग में भिन्न नामों से प्रकट होते हैं। सत्ययुग में ''सत्य सुकृत'' नाम से, त्रेतायुग में ''मुनीन्द्र'' नाम से, द्वापर युग में ''करूणामय नाम से'', कलयुग में ''कबीर नाम से'' संसार में प्रकट होकर यथार्थ अध्यात्मिक ज्ञान तथा सत्य साधना मंत्रों का ज्ञान कराते हैं। कुछ भक्त परमेश्वर के ज्ञान को सुन-समझकर सत्य साधना करने लगते हैं, परंतु अज्ञानी संत तथा गुरू उनको भ्रमित कर सत्य साधना छुड़ाकर काल साधना पर पुनः दृढ़ कर देते हैं।

संत गरीबदास जी ने बताया कि मुझे परमेश्वर कबीर जी ने बताया कि :-

अनन्त कोटि बाजी तहाँ, रचे सकल ब्रह्मण्ड। गरीबदास मैं क्या करूँ, काल करै जीव खण्ड।।

भावार्थ :- परमात्मा कबीर जी ने बताया कि हे गरीबदास! मैं इतना समर्थ हूँ कि अनन्त जीवों की रचना तथा सब ब्रह्मण्डों की रचना मैंने की है। भोले जीव मुझे ठीक से न पहचानकर मुझे छोड़कर मेरे नाम को खण्ड करके काल के जाल में फँस जाते हैं। अब तुम ही बताओ, मैं क्या करूँ? फिर कहा है :-

जो जन मेरी शरण है, ताका हूँ मैं दास। गेल–गेल लाग्या फिरूँ, जब तक धरती आकाश।।
गोता मारूँ स्वर्ग में, जा पैठूँ पाताल। गरीबदास खोजत फिरूँ, अपने हीरे मोती लाल।।

भावार्थ :- परमात्मा कबीर जी ने बताया है कि यदि कोई जीव किसी युग में मेरी दीक्षा ले लेता है। यदि वह पार नहीं हो पाता है तो उसको किसी मानुष जन्म में ज्ञान सुनाकर शरण में लूँगा। उसके साथ-साथ रहूँगा। मेरी कोशिश रहती है कि किसी प्रकार यह काल जाल से छूटकर सुखसागर सत्यलोक में जाकर सुखी हो जाए। मेरा प्रयत्न तब तक रहता है जब तक धरती और

आकाश नष्ट नहीं होते यानि प्रलय नहीं होती। इसी प्रक्रिया के चलते अब्राहिम अधम सुल्तान की आत्मा पूर्व के कई जन्मों से परमेश्वर कबीर जी की शरण में रही थी। फिर काल ने खण्ड कर दिया। इसके पूर्व के कुछ जन्मों का विवरण इस प्रकार है जो पुराने कबीर सागर में है, वर्तमान वाले कबीर सागर से वह विवरण अज्ञानवश निकाल दिया गया है। कारण यह रहा है कि काल प्रेरणा से 12 पंथों के कबीर पंथी समझ नहीं सके। इसलिए उसको व्यर्थ जानकर ग्रन्थ से निकाल दिया।

''सम्मन वाली आत्मा ही सुल्तान इब्राहिम था''

जिस समय परमेश्वर कबीर जी काशी में प्रकट थे। उस समय दिल्ली के निवासी सम्मन मनियार, उसकी पत्नी नेकी तथा पुत्र शिव (सेऊ) ने परमेश्वर से दीक्षा ली थी। आर्थिक स्थिति कमजोर थी। परमात्मा के उपदेश का दृढ़ता से पालन करते थे। परमेश्वर पर पूर्ण विश्वास था। दोनों पति-पत्नी स्त्रियों को चूड़ियाँ पहनाने का कार्य घर-घर जाकर करते थे। साथ में अपने गुरूदेव कबीर जी की महिमा भी किया करते थे। बताया करते थे कि हमारे सतगुरू देव जी ने राजा सिकंदर लोधी का असाध्य रोग आशीर्वाद मात्र से ठीक कर दिया। बादशाह सिकंदर ने स्वामी रामानन्द जी की गर्दन काट दी थी। उसको सतगुरू कबीर जी ने धड़ पर गर्दन जोड़कर जीवित कर दिया। एक कमाल नाम का लड़का मर गया था। उसके कबीले वालों ने अंतिम संस्कार रूप में दरिया में प्रवाह कर दिया था। शेखतकी जो राजा सिकंदर जी का धर्मगुरू है, उसको विश्वास नहीं था कि रामानंद जी की गर्दन काटने के पश्चात् भी कबीर जी ने जीवित कर दिया। वह राजा से कहता था कि कबीर जन्त्र-मन्त्र जानता है और कुछ नहीं है, मुर्दे कभी जिन्दे होते हैं। मेरे सामने कोई मुर्दा जिन्दा करे तो मानूँ। राजा सिकंदर को कबीर जी पर पूर्ण विश्वास था क्योंकि वह तो रोग से महादुःखी था तथा रामानन्द स्वामी जी को अपने हाथों से कत्ल किया था। उसके सामने कबीर जी ने जीवित किया था। उस दिन शेखतकी भी दरिया पर उपस्थित था। मुर्दे को देखकर कहा कि यदि मेरे सामने इस मुर्दे को जीवित कर दे तो मैं कबीर को अल्लाह का नबी मान लूँगा। कबीर जी ने कहा कि हे शेख जी! आप भी बड़े पहुँचे हुए पीर हो, आप कोशिश करो, बाद में कहोगे कि मैं भी कर देता। उपस्थित सर्व मन्त्रियों और बादशाह ने भी यही कहा कि आप कौन-से छोटी हस्ती हो? कर दो काम। शेखतकी ने शर्म के मारे जन्त्र-मन्त्र किए, परंतु व्यर्थ। कहा कि मुर्दे जिन्दा नहीं हुआ करते। कबीर तो चाहता है कि मुर्दा बहकर दूर चला जाए और इज्जत रह जाए। वह चला गया मुर्दा। कबीर जी ने अपने हाथ का संकेत किया और कहा मुर्दा वापिस आओ। इन्जन वाली नौका के समान बालक का शव वापिस आ गया। कबीर जी ने कहा, हे जीवात्मा! जहाँ भी है, कबीर हुक्म से शव में प्रवेश कर और बाहर आओ। उसी समय वह 12 वर्षीय बालक जीवित होकर दरिया से बाहर आ गया। उपस्थित दर्शकों ने कहा, कबीर जी! कमाल कर दिया। बालक का नाम कमाल रख दिया। परमात्मा कबीर जी ने उस कमाल बालक को अपने घर बच्चे की तरह पाला। शेखतकी शर्म से पानी-पानी हो गया, परंतु माना नहीं। कहने लगा कि बालक को सदमा हुआ था। गलती से मृत मानकर जल प्रवाह कर दिया था। जब जानूँ, मेरी बेटी कई दिनों से कब्र में दबा रखी है। वह मृत्यु को प्राप्त हो चुकी है। उसको कबीर जीवित कर दे। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि दो दिन बाद तेरी बेटी को जीवित कर दूँगा। आसपास के गाँव तथा दिल्ली में मुनादी करा दो कि सब आकर देखें। ऐसा ही किया गया। कब्र तोड़ दी गई। कबीर परमेश्वर जी ने कहा, शेख जी! प्रयत्न करो, कहीं बाद में कहे कि लड़की सदमे में थी। उपस्थित जनता ने कहा

कि कबीर जी! यदि शेख में शक्ति होती तो अपनी बेटी को कैसे मरने देता? आप कोशिश करो। कबीर जी ने कहा कि हे शेखतकी की बेटी! जीवित हो जा। लड़की जीवित नहीं हुई। ऐसा दो बार कहा। लड़की जीवित नहीं हुई। शेखतकी को अपनी बेटी के जीवित न होने का दुःख नहीं, कबीर जी की हार की खुशी मनाने लगा और ताली बजाते हुए नाचने लगा। कबीर जी ने कहा, हे जीवात्मा! जहाँ भी हो, कबीर हुक्म से अपने शरीर में प्रवेश कर और कब्र से बाहर आओ। कहने की देरी थी, उसी समय 12 वर्षीय कन्या के शरीर में हलचल हुई और लड़की उठकर बाहर आई और कबीर जी को दण्डवत् प्रणाम किया। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे शेखतकी की बेटी! अपने पिता के साथ घर जाओ। शेखतकी ने भी बेटी का हाथ पकड़ा और घर चलने को कहा। कन्या का नाम कमाली रखा क्योंकि उपस्थित जनता ने कहा, कमाल है, कमाल है। इसलिए कमाली नाम रखा। कमाली ने कहा कि शेखतकी की ओर से तो मैं यमराज के पास जा चुकी थी। अब तो मैं अल्लाह अकबर की बेटी हूँ। यह कबीर स्वयं अल्लाह है। इस प्रकार लड़की ने कबीर परमेश्वर जी के आशीर्वाद से 1½ घण्टे तक प्रवचन किए। अपने पूर्व के जन्मों की जानकारी दी कि एक बार मैं राबिया थी। उस समय 12 वर्ष की आयु में कबीर जी मिले थे। मैंने 4 वर्ष इनकी बताई साधना की थी। फिर अपने मुसलमान धर्म वाली साधना करने लगी थी जो व्यर्थ थी। फिर मैं बांसुरी लड़की बनी। मक्के में अपना शरीर भी काटकर अर्पित कर दिया था। अगले जन्म में मैंने वैश्या का जीवन जीया। उन चार वर्ष की सत्यभक्ति से मुझे 2½ जन्म मनुष्य के मिले थे। अब मेरा कोई मानव जीवन शेष नहीं था। पशु की योनि में जाना था। उसी समय परमेश्वर कबीर जी धर्मराज के पास गए और मुझे छुड़ाकर लाए और शरीर में प्रवेश कर दिया। इनकी कपा से मुझे मानव जीवन मिला है। अब मैं अपने वास्तविक पिता अल्लाह कबीर जी के साथ रहूँगी। कबीर जी ने कमाली को बेटी की तरह पाला और अपने घर पर रखा। उपस्थित लाखों की सँख्या में दर्शकों ने परमेश्वर कबीर जी से दीक्षा ली। सबको प्रथम 5 मन्त्र का उपदेश दिया। इस प्रकार कबीर जी के उस समय 64 लाख शिष्य हो गए थे। वे चमत्कार देखकर ही शरण में आए थे। दिल्ली नगर की स्त्रियाँ उनसे ये अनोखी बातें सुनकर बाद में चर्चा करती थी कि क्या ये बातें सम्भव हो सकती हैं? कुछ तो कहती थी कि हमारे घर वाला भी उस समय वहीं उपस्थित था। जब शेख की लड़की कब्र से निकालकर जीवित की गई थी, परंतु मेरा पति इस बात से नाराज हुआ कि कबीर क्यों ले गया लड़की को? जिसकी बेटी थी, उसको सौंप देनी थी। भावार्थ है कि कुल मिलाकर वे स्त्रियां अंदर से मजाक रूप में मानती थी, परंतु उनके सम्मुख चुप रह जाती थी। पाठको! कथा लम्बी है, विषय दूसरा बताना है। इसलिए संक्षिप्त में बताता हूँ। एक दिन कबीर जी अपने साथ शेख फरीद तथा कमाल को लेकर सम्मन के घर आ गए। घर पर शाम का अन्न नहीं था। सम्मन तथा लड़का सेऊ आटा चोरी करने गए तो सेऊ को सेठ ने पकड़ लिया। आटा लेकर सम्मन घर आ गया। लड़के को सेठ ने पकड़कर थांब से बाँध दिया। कहा कि कल नगर इकट्ठा करके तुम्हें राजा के पेश करूँगा। तुम्हारे गुरू को भी सजा दिलवाऊँगा। वही चोरी कराने आता है। नेकी (पत्नी सम्मन) ने कहा कि तलवार ले जाओ, पुत्र का सिर काट लाओ। सम्मन ने ऐसा ही किया। नेकी पहले नगर से आटा उधार लेने गई थी। कारण बताया था कि हमारे सतगुरू आए हैं, उनके साथ दो भक्त भी हैं। तीन सेर आटा उधार दे दो। इसके बदले मेरा चीर (चुन्नी) ले लो। चीर फटा हुआ था। इस कारण से किसी ने वह नहीं लिया। व्यंग्य करने लगी कि आपका गुरू तो मुर्दे जीवित कर देता है, क्या तीन सेर आटा पेश नहीं कर सकता? नेकी मन में महादुःखी हुई। तब उसी ने

दोनों को चोरी करने रात्रि में भेजा था। सेऊ का कत्ल हुआ देख लाला जी को भय हो गया कि यह तेरे सिर लगाएंगे। उसने रातों-रात बच्चे के धड़ को दूर पजावे (मैदानी भट्ठे) में घसीटकर डाल दिया। नेकी ने कहा कि सेठ बच्चे के धड़ को कहीं फैंकेगा, आप उसकी घसीट के निशान के साथ वहाँ जाकर उठा लाओ। सम्मन ने वैसा ही किया। धड़ को पीछे कोठे में रखकर फटी बोरी डाल दी। सिर अलमारी के ताख में रखा था। नेकी ने सुबह वक्त से खाना बनाया ताकि सतगुरू जी जल्दी निकल जाएं। नगर में कोई इनकी इज्जत का दुश्मन न हो जाए। खाना तीन पत्तलों में यानि मिट्टी के दोनों में डालकर सतगुरू तथा भक्तों को प्रसाद के लिए प्रार्थना की। कबीर परमेश्वर जी ने कहा कि छः दोनों में प्रसाद डालो। सब मिलकर प्रसाद खाऐंगे। न चाहते हुए भी नेकी ने छः बर्तनों में खाना परोस दिया। पाँचों जने अपने-अपने दोनों पर खाने के लिए बैठ गए। सम्मन तथा नेकी चिंतित थे कि यदि गुरू जी को लड़के की मत्यु का पता चल गया तो ये खाना नहीं खाएंगे, कल से भूखे हैं। इसलिए दिल करड़ा (मजबूत) किए थे, बता नहीं रहे थे।

उसी समय परमेश्वर कबीर जी ने कहा :-

आओ सेऊ जीम लो, यह प्रसाद प्रेम। शीश कटत हैं चोरों के, साधों के नित क्षेम।।
सेऊ धड़ पर शीश चढ़ा, बैठा पंगत माहीं। नहीं घर्रा गर्दन में, वो सेऊ अक नाहीं।।

सेऊ के धड़ पर शीश लगा और गर्दन पर कटने का निशान भी नहीं था। सेऊ जीवित होकर खाने की पंगत में बैठकर खाना खाने लगा।

।।जय हो परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी की।।

सम्मन वाली आत्मा नौशेर खान बना

नेकी और सेऊ तो उसी जन्म में मोक्ष प्राप्त कर गए, परंतु सम्मन के दिल पर ठेस लग गई कि यदि मेरे पास धन होता तो मुझे बेटा काटना ना पड़ता। परमात्मा ने उसी जन्म में सम्मन-नेकी-सेऊ को धन-धान्य से परिपूर्ण कर दिया था। वे निर्धन नहीं रहे थे। सम्मन दिल्ली का महान धनी व्यक्ति हो गया था, परंतु फिर भी मोक्ष की इच्छा नहीं बनी। जिस कारण से बेटे की कुर्बानी परमेश्वर रूप सतगुरू के लिए करने के कारण अगले जन्म में नौशेरखाँ शहर के राजा के घर जन्म लिया। राजा बना। 80 खजाने हीरे-मोतियों के भरे थे, परंतु दान नहीं करता था, न परमात्मा को याद करता था। परमेश्वर कबीर जी जिन्दा बाबा का वेश बनाकर नौशेरखान के बादशाह नौशेरखान के पास गए और दान करने का उपदेश दिया। राजा ने कहा, मैं निर्धन राजा हूँ। जिन्दा ने कहा कि आपके 80 खजानों को झंडे लगे हैं। यह राजा की पहचान होती थी कि जिसके पास जितने खजाने होते, उतने झण्डे खड़े किया करते।

राजा ने कहा, ये तो कोयले हैं। जिन्दा ने कहा कि जैसी तेरी नीयत है, कोयले हो जाएंगे। राजा ने खोलकर खजाने देखे तो सच में कोयले हो गए थे। राजा ने परमेश्वर के चरण पकड़कर क्षमा याचना की। परमेश्वर ने कहा कि यदि अधिक धन को दान करे तो ये फिर से हीरे-मोती बन जाएंगे। राजा ने कहा, जैसे आपकी आज्ञा, वही करूँगा। खजाने फिर से हीरों से भर गए। राजा नौशेरखान ने अधिक धन को दान किया। जिसके फलस्वरूप तथा पूर्व जन्म की भक्ति व संत सेवा के फलस्वरूप ईराक देश में बलख नामक शहर का राजा बना।

विस्तत कथा आगे है :-

''अब्राहिम सुल्तान की जन्म कथा''

एक अधम शाह नाम का फकीर था। उसने बलख शहर से कुछ दूर एक कुटिया बना रखी थी। शहर में घूमने-फिरने आता था। एक दिन उसने बलख के बादशाह की इकलौती बेटी को देखा। वह युवा तथा सुंदर थी। अधम शाह के मन में दोष उत्पन्न हो गया और राजा के पास जाकर कहा कि इस लड़की का विवाह मेरे से कर दो। राजा हैरान रह गया। फकीर कहीं शॉप न दे दे, इसलिए डर भी गया। अचानक हाँ या ना नहीं कह सका, कल आने को कहा। मंत्रियों को पता चला। एक राय बनी कि कल उसे कह देंगे कि राजा की लड़की से विवाह करने के लिए मोतियों का एक हार लाना पड़ता है या सौ मोती लाने होते हैं। अन्यथा विवाह नहीं होता। अगले दिन फकीर को यह शर्त बता दी गई। फकीर मोती लेने चला। किसी ने बताया कि मोती तो समुद्र में मिलते हैं। समुद्र के किनारे जाकर अपने करमण्डल (लोटे) से समुद्र का जल भरकर कुछ दूरी पर रेत में डालने लगा। कई दिन तक भूखा-प्यासा इसी प्रयत्न में लगा रहा। शरीर भी समाप्त होने को आया। जो भी देखता, वही कहता कि अल्लाह के लिए घर त्यागा था। अब नरक की तैयारी कर रहा है। समुद्र कभी खाली नहीं हो सकता। भक्ति कर। परमात्मा जिंदा बाबा के वेश में वहाँ प्रकट हुए तथा अधम शाह से पूछा कि क्या कर रहे हो? उसने बताया कि राजा की लड़की से विवाह करना है। उसके लिए मोतियों की शर्त रखी है। मोती समुद्र में बताए हैं। समुद्र खाली करके मोती लेकर जाऊँगा। जिन्दा ने कहा कि समुद्र खाली नहीं हो सकता। आप भूखे-प्यासे मर जाओगे। आप जिस मोक्ष के उद्देश्य के लिए घर से निकले हो। मोक्ष प्राप्ति के लिए प्रयत्न करो तो कुछ बात बने। आपने जीवन को नष्ट करने की योजना बना ली है। अधम शाह ने कहा कि आपकी शिक्षा की मुझे कोई आवश्यकता नहीं है। मैं अपना कार्य कर रहा हूँ, तुम अपना करो। कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि:-

विकार मरे मत जानिया, ज्यों भूभल (राख) में आग। जब करेल्लै धधकहीं, कोई बचै सतगुरू शरण लाग।।

चुटकुला :- एक 70-75 वर्ष का वंद्ध शराब पीकर मार्ग में खड़ा-खड़ा झूझ रहा था। उसके हाथ का डोगा (सहारे के लिए डण्डा) जमीन पर गिर गया। वह डोगा उठाने में असमर्थ था क्योंकि वह गिर जाता। फिर उठना मुश्किल हो जाता। एक भद्र पुरूष उसी रास्ते से आया। वंद्ध ने उसे लड़खड़ाती आवाज में कहा कि मेरा डोगा उठाकर मुझे दे दो। यात्री को समझते देर नहीं लगी। कहा, हे दादा जी! आप अपनी आयु की ओर देखो। इस आयु में शराब पीना शोभा नहीं देता। पोते-पोतियों वाले हो। उन पर क्या प्रभाव पड़ेगा? यह बात सुनकर वंद्ध ने कहा कि शिक्षा बिना बात ना रह ही, क्या आज तक कोई मेरे को यह शिक्षा देने वाला नहीं मिला होगा? यदि डोगा उठाना है तो उठा नहीं तो जा। यही दशा अधम शाह फकीर की थी। परमात्मा ने देखा कि भक्त तो मरेगा। समुद्र की झाल मारी, हजारों मोती रेत में पड़े थे। या अल्लाह कहकर अधम शाह ने हजारों मोती चद्दर में बाँध लिए और राजा के दरबार में जाकर रख दिए और कहा कि आप अपने वायदे अनुसार शहजादी का विवाह मेरे से कर दो। मंत्रियों ने सिपाहियों को आज्ञा दी कि इसको डण्डे मारो और मारकर जंगल में डाल आओ। ऐसा ही किया गया। परमात्मा की कंपा से वह मरा नहीं। कुछ दिन में चलने-फिरने लगा। कुछ दिन के पश्चात् राजा की लड़की मर गई। उसको कब्र में दबाकर चार पहरेदार छोड़ दिए कि कोई जंगली जानवर शव को खराब न कर दे। अधम शाह को पता चला। वह रात्रि को कब्र के पास गया। पहरेदार गहरी नींद में सोए थे। अधम शाह कब्र

को खोदकर शव को निकालकर, कब्र को उसी तरह ठीक करके लड़की के शव को अपनी कुटिया में उठा ले गया। उसी रात्रि में बंजारों का काफिला रास्ता भूलकर उसी जंगल में चला गया। कुटिया में दीपक जल रहा था। लड़की का शव कफन में लिपटा दीवार के सहारे रखा जैसे लड़की पलाथी लगाकर बैठी हो। सर्दी का मौसम था। अग्नि लेने के लिए काफिले के दो व्यक्ति कुटिया पर गए। आवाज सुनकर अधम शाह डर गया कि राजा के आदमी आ गए। वह कुटिया के पीछे जाकर एक गुफा में छिप गया जिसमें वह साधना किया करता था। काफिले के व्यक्तियों ने मत जवान लड़की को दीवार के सहारे बैठा देखा तो डर के मारे उलटे पैरों काफिले में जाकर बताया। एक वैद्य भी काफिले में रहता था। कई व्यक्ति तथा वैद्य वहाँ गये तो लड़की को देखते ही वैद्य ने कहा कि यह लड़की मरी नहीं है, इसको सदमा लगा है। उपचार कर सकता हूँ। काफिले के मालिक ने कहा कि आप उपचार करो। यदि लड़की स्वस्थ हो गई तो इसी से पूछेंगे कि कौन है तेरा पिता या पति कहाँ है? पहले लड़की के नग्न शरीर के ऊपर चद्दर डाली। फिर वैद्य ने हाथ की नस में चीरा देकर अशुद्ध रक्त निकाला। लड़की कुछ ही मिनटों में सचेत हो गई। बोली कि मैं यहाँ कैसे आयी हूँ। अधम शाह फकीर ने दीपक की रोशनी में देखा कि ये राजा के आदमी नहीं हैं। शहजादी भी जीवित हो गई है। वह काफिले के व्यक्तियों के पास आया और सारी दास्तां बताई जो लड़की ने भी सुनी। लड़की को काफिले के व्यक्तियों ने समझाया कि यदि आपको यह फकीर कब्र से निकालकर नहीं लाता तो आप तो संसार से चली गई होती। अब आपको चाहिए कि इस फकीर के साथ अल्लाह की रजा मानकर रहें। लड़की ने हाँ कर दी। उन व्यक्तियों ने दोनों का विवाह कर दिया, निकाह पढ़ दिया। काफिले के मालिक ने कहा कि यदि आप हमारे साथ चलना चाहें तो हम आपकी सेवा करेंगे, कोई कष्ट नहीं होने देंगे। गहस्थी बना फकीर बोला कि हमारे को यहीं रहना है। मैं आपका अहसान कभी नहीं भूल सकूँगा। आप मेरे लिए अल्लाह का स्वरूप बनकर आए हो। हम दोनों की मौत होनी थी। आपने हमारे जीवन की रक्षा की है। उनको वहीं छोड़कर काफिले के व्यक्ति चले गए। कुछ दिन पश्चात् लड़की ने एक सुंदर पुत्र को जन्म दिया। उसका नाम ''इब्राहिम'' रखा। चार वर्ष का बच्चा होने के पश्चात् बलख शहर के मौलवी के पास पढ़ने के लिए प्रवेश दिलाया। प्रतिदिन अधम बेटे को मौलवी के पास सुबह छोड़ आता, शाम को ले आता। एक दिन बलख का राजा उस मौलवी के पास गया। वह विधार्थियों को इनाम देता था। गरीब बच्चों को कपड़े बाँटता था। अधम शाह फकीर के लड़के को देखकर राजा हैरान रह गया। उसकी सूरत राजा की मत लड़की से मिलती थी। राजा ने मौलवी से पूछा कि यह बच्चा किसका है? मौलवी ने बताया कि एक फकीर जंगल से आता है, उसका बालक है। सुबह छोड़कर जाता है, शाम को ले जाता है। हमने अधिक पूछताछ नहीं की। लड़का भी उठकर राजा से लिपट गया। राजा ने उसे गोद में उठा लिया और चल पड़ा। मौलवी से कहा कि इसका पिता आए तो महल में भेज देना, वहाँ से ले जाएगा। राजा ने रानी को वह बालक दिखाया, वह तो देखते ही अपनी बेटी को याद करके मूर्छित होकर पथ्वी के ऊपर गिर गई। सचेत होने पर बालक को सीने से लगाया। खाना खीर-हलवा स्वयं बनाकर खिलाया। रानी ने कहा कि यह तो अपनी लड़की से मिलती शक्ल का है। इतने में फकीर मौलवी के पास जाकर राजा के महल में चला गया। राजा ने नौकरों को बोल रखा था कि इस लड़के का पिता आए तो उसे रोकना नहीं, महल में आदर के साथ लेकर आना है। उसी फकीर को देखकर राजा ने कहा कि यह बालक किसका है? फकीर ने बताया कि यह मेरा लड़का है। आपकी लड़की से उत्पन्न हुआ है। राजा ने कहा कि फकीर होकर झूठ बोलना

ठीक नहीं होता। फकीर ने सर्व कथा बताई। राजा को विश्वास नहीं हुआ। फकीर को साथ लेकर नौकरों के साथ पहले लड़की की कब्र को खोदा, वहाँ शव नहीं था। फकीर की कुटिया पर गए। उनकी लड़की कई स्थानों से फटे और पैबन्द लगे वस्त्र पहने बैठी थी। अपने माता-पिता को देखते ही दौड़कर पिता-माता से बारी-बारी सीने से लगी। लड़की तथा फकीर को उनकी आज्ञा से तथा बच्चे को लेकर महल में आए। अधम को अपना उतराधिकारी नियुक्त कर दिया। जिस कारण से शाह कहा जाने लगा। उसका नाम 'अधम' था। कुछ दिन रहकर अधम शाह को राज-ठाठ अच्छे नहीं लगे। वह उनसे प्रेम से विदाई लेकर कुटिया में चला गया और कभी-कभी लड़के तथा पत्नी से मिल जाता था। कुछ वर्षों के पश्चात् अधम शाह फकीर की मुत्यु हो गई। उसकी समाधि कुटिया में बना दी। आसपास सुंदर बगीची बनाई गई। वहाँ मेले लगने लगे। बालक इब्राहिम नाना जी के राज्य का उतराधिकारी बनाया गया।

विचारणीय विषय :- भक्ति के लिए भक्त का शरीर स्वभाव बहुत सहयोगी होता है। अच्छे माता-पिता से मिले जन्म से बच्चे के शरीर में माता-पिता का स्वभाव भी साथ रहता है। इब्राहिम जिस जन्म में सम्मन मनियार था। उसने अपने लड़के की कुर्बानी सतगुरू की सेवा के लिए दी थी। कुछ कारण ऐसा बना था जो आप जी ने सुल्तान बोध के प्रारम्भ में पढ़ा। परमेश्वर जी यानि सतगुरू कबीर जी ने वह लड़का जीवित कर दिया था। वही सम्मन फिर राजा बना। भक्ति नहीं की। अबकी बार उस आत्मा को ऐसे पिता से शरीर दिया जो जन्म से परमात्मा पर समर्पित थे। सम्मन की आत्मा को मोक्ष दिलाने के लिए परमेश्वर जी ने अधम शाह में विवाह की प्रेरणा प्रबल की। लड़की को सदमा, समुद्र से मोती, बंजारों का काफिला रास्ता भूलकर कुटिया पर आना, लड़की को जीवित करना। इब्राहिम का जन्म अधम शाह से पाक आत्मा लड़की से होना जो एक फकीर के साथ रहकर साध्वी जीवन जी रही थी। उच्च विचार बने थे। संसार की कोई बुराई लड़की को नहीं लगी थी। सतगुरू के लिए अपने पुत्र सेऊ (शिव) का बलिदान तथा नौशेरखान रूप में दान किए खजाने यानि अरबों रूपये। उस दान का फल भी उस जीव को देना था। उसके लिए परमेश्वर कबीर जी ने यह लीला की थी। आदम शाह फकीर का दादा उसी बलख शहर का राजा था जिसका राज्य अब्राहिम के नाना जी के पिता ने लड़ाई करके छीन लिया था। फिर वही राज्य उसी वंश के अब्राहिम को मिला। आदम शाह भी भक्ति से भटकने के कारण पशु की योनि में जन्मा। कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि :-

ये सब खेल हमारे किए। हम से मिले जो निश्चय जीये।।
जोजन मेरी शरण है, उसका हूँ मैं दास। गेल गेल लाग्या फिरूँ, जब तक धरती आकाश।।

सुल्तान को शरण में लेना

अगले जन्म में नौशेरखान फिर राजा बना। इराक के अंदर एक बलख नाम का शहर था। उस शहर में उसकी राजधानी थी। राजा का नाम अब्राहिम अधम सुल्तान था। उस आत्मा ने सम्मन के जीवन में जो श्रद्धा से भक्ति की थी। उसके कारण मानव जीवन मिलते आ रहे थे तथा जो दान किया था, उसके प्रतिफल में राजा बनता रहा। उसका सबसे बड़ा दान तीन सेर आटा था जो बेटे की कुर्बानी देकर किया था। उसी कारण से वह धनी राजा बनता रहा। कुछ नौशेरखान के जीवन में कबीर परमेश्वर जी ने कारण बनाकर दान करवाया। जिस कारण से भी बलख का धनी राजा बना। अठारह लाख घोड़े थे। अन्य हीरे-मोतियों की कमी नहीं थी। एक जोड़ी जूतियों

के ऊपर अढ़ाई लाख के हीरे लगे होते थे। कहते हैं 16 हजार स्त्रियों रखता था। ऐश (मौज) करता था। शिकार करने जाता, बहुत जीव हिंसा करता था। एक दिन राजा के महल के पास किसी भक्त के घर कुछ संत आए थे। उन्होंने सत्संग किया। राजा ने रात्रि में अपने घर की छत के ऊपर बैठकर पूरा सत्संग सुना। परमात्मा की भक्ति की प्रबल प्रेरणा हुई। सुबह अपने मंत्रियों से कहा कि किसी अच्छे संत का पता करो। मुझे मिलाओ। एक ढ़ोंगी बाबा बड़ा प्रसिद्ध था। राजा को उसके पास ले जाया गया। राजा उसके बताए मार्ग से भक्ति करने लगा। राजा की ऊँगली में एक बहुमूल्य छाप (अंगूठी) थी। ढ़ोंगी बाबा दिखावा तो करता था कि वह धन को हाथ नहीं लगाता। लगता था कि बड़ा त्यागी और बैरागी है, परंतु था धूर्त। सुल्तान भी उससे प्रभावित था। उस बाबा ने अपने निजी सेवक से कहा कि जिस सुनार ने राजा अब्राहिम की अँगूठी बनाई है, उस सुनार से वैसी ही अँगूठी नकली हीरों तथा मोतीयुक्त नकली सोने की बनवा ला। नकली अँगूठी बिल्कुल वैसी ही बन गई। एक दिन राजा संत के पास गया। संत ने नौका विहार की इच्छा की। अब्राहिम अधम सुल्तान ने नौका विहार का प्रबन्ध करवाया। सरोवर के मध्य में जाकर बाबा ने कहा, राजन्! आपकी अँगूठी अति सुन्दर है, दिखाना जरा। राजा ने अँगूठी निकालकर संत जी को दे दी, वह बाबा देखने लगा। नजर बचाकर अँगूठी बदल दी। राजा ने कहा कि आप चाहें तो अँगूठी ले लें या और बनवा दूँ। बाबा ने कहा, अरे! साधु-संतों के लिए तो यह मिट्टी है मिट्टी। यह कहकर नकली अँगूठी सरोवर में फैंक दी। राजा को पूरा भरोसा हो गया कि वास्तव में साधु त्यागी और बैरागी है। कुछ दिन बाद उस ढ़ोंगी बाबा की पोल खुल गई। उसके राजदार शिष्य ने राजा को बताया कि आपकी अँगूठी ऐसे-ऐसे बाबा ने ठगी है। वह उसके पास है। जब राजा ने वह अँगूठी उसी बाबा की कुटिया में जमीन में दबी पाई तो बहुत दुःख हुआ और साधु-संतों से विश्वास उठ गया। उस ढ़ोंगी को जेल में डाल दिया। फिर तो राजा ने अपने राज्य के सब संत-महात्माओं को बुला-बुलकार उनसे प्रश्न किया कि यदि आपने खुदा को पाया है तो मुझे भी मिला दो। इसका उत्तर किसी के पास नहीं था। एक संत ने कहा कि आप एक गिलास दूध का मंगवाऐं दूध का गिलास नौकर ने लाकर दे दिया। संत ने दूध में उंगली डाली और राजा से कहा, राजन्! आपके दूध में घी नहीं है। राजा ने कहा, दूध से घी प्राप्त करने की विधि है। पहले दूध को गर्म करके ठण्डा किया जाता है। फिर जमाया जाता है, दही बनती है। फिर बिलोया जाता है। तब घी निकलता है। उस संत जी ने कहा, सुल्तान जी! जिस प्रकार दूध से घी प्राप्त करने की विधि है। वैसे ही मानव शरीर से परमात्मा प्राप्ति की विधि है। उस विधि से परमात्मा प्राप्त होता है। गुरू बनाओ, साधना करो। राजा के मन में घृणा थी गुरू के प्रति। वह सबको उसी दृष्टिकोण से देख रहा था। सब महात्माओं को जेल में डाल दिया। सबसे चक्की चलवाई जा रही थी। सब साधु परमात्मा के लिए ही तो घर-परिवार त्यागकर निकले होते हैं। भक्ति मार्ग सही नहीं मिलने के कारण महिमा की चाह स्वतः हो जाती है। अधिक शिष्य बनाना। अच्छा-बड़ा आश्रम बनाना, यह धुन लग जाती है, परंतु परमेश्वर की अच्छी आत्माऐं होती हैं। वे परमेश्वर के लिए प्रयत्नशील होने से परमात्मा की उन पर रजा रहती है। उनको सत्यज्ञान देने के लिए वेश बदलकर परमात्मा उनको समझाते हैं, परंतु काल के जाल में अँधे होकर नहीं मानते। परमात्मा सबका पिता है। वह बालक जानकर क्षमा करता रहता है। फिर भी उनकी सहायता करते रहते हैं।

लीला नं. 1 :- जेल में दुःखी भक्तों की पुकार सुनकर उनको छुड़ाने के लिए तथा अपने परम भक्त सम्मन को काल के जाल से निकालने के लिए परमेश्वर कबीर जी एक भैंसे के ऊपर बैठकर

सुल्तान अधम के राज दरबार (कार्यालय) में पहुँच गए। साधु वेश में परमेश्वर को देखकर अब्राहिम सुल्तान ने पूछा, आप किसलिए आए हो? परमेश्वर जी ने कहा कि आपके प्रश्न का उत्तर देने आया हूँ। अब्राहिम ने प्रश्न किया कि मुझे बताओ खुदा कैसा है? खुदा से आप मिले हैं तो मुझे भी मिलाओ। कबीर जी ने भैंसे से कहा कि बता दे भैंसा! अल्लाह कैसा है? कहाँ है? खुदा की कसम सच कहना। भैंसा मनुष्य की तरह बोला, कहा कि अब्राहिम मेरे ऊपर बैठा यह अल्लाहु अकबर है। सुल्तान को भैंसे को बोलते देखकर आश्चर्य हुआ और प्रभावित भी हुआ। सोचने लगा कि यह कोई सेवड़ा हो सकता है। परमेश्वर भैंसे सहित अन्तर्ध्यान हो गये। अब्राहिम को चक्कर आ गया। परमात्मा जेल के सामने खड़े हो गए। सिपाहियों को आदेश था कि कोई भी साधु मिले, उसको जेल में डाल दे। उन्होंने परमात्मा को जेल में बंद कर दिया। सिपाहियों ने कहा कि चक्की चलाओ। अन्य सब साधु भी चक्की चलाकर आटा पीस रहे थे, रो रहे थे। कबीर जी ने सिपाहियों से कहा कि हम बन्दी एक काम करेंगे, एक सिपाही करेंगे। हम चक्की चलाएंगे तो चक्की में कनक (गेहूँ, चना, बाजरा) सिपाही डालेंगे। या हम कनक डालेंगे, तुम चक्की चलाओ। सिपाहियों ने क्रोधित होकर कहा कि हम कनक डालेंगे, तुम चक्की चलाओ। कबीर जी ने कहा कि सब संत खड़े हो जाओ। यह कहकर अपनी चक्की को डण्डा लगाया। उसी समय सब (360) चक्की अपने आप चलने लगी। परमात्मा ने कहा, सिपाही भाई डालो कनक, पीसो जितना चाहिए। साधुओं से कहा कि आँखें बंद करो। सबने आँखें बंद कर ली। फिर परमेश्वर जी ने कहा कि आँखें खोलो। आँखें खोली तो सब जेल से बाहर बलख शहर से दूर जंगल में खड़े थे। कबीर जी ने कहा कि आप इस राजा के राज्य को त्यागकर दूर चले जाओ। सर्व भक्त जन परमेश्वर को प्रणाम तथा धन्यवाद करके भाग चले। दूर चले गए। राजा को पता चला कि एक सिद्ध फकीर आया था। सब कैदियों को छुड़ाकर ले गया। जाते दिखाई नहीं दिए। एक चक्की को डण्डा लगाया, सब (360) चक्कियाँ चलने लगी हैं। राजा जेल में गया। चलती चक्कियों को देखकर हैरान रह गया। फिर चक्कियाँ बंद हो गई। राजा विचारों में खो गया।

लीला नं. 2 :- कुछ दिनों के पश्चात् परमेश्वर कबीर जी एक ऊँट चराने वाले ग्रामीण जैसे वेश बनाकर हाथ में लंबी लाठी लेकर राजा के निवास के ऊपर छत पर प्रकट हो गए। रात्रि का समय था। राजा सो रहा था। परमेश्वर ने छत के ऊपर लाठी को जोर-जोर से मारना शुरू किया। सुल्तान अब्राहिम नींद से जागा। नौकरों को डाँटा, यह कौन शोर कर रहा है? लाओ पकड़कर। नौकर ऊपर गए। एक ऊँटों को चराने वाले को छत पर से पकड़कर सुल्तान के समक्ष लाए। राजा ने पूछा, तू कौन है? मेरे महल की छत पर क्या कर रहा है? परमेश्वर जी ने कहा कि मैं ऊँटवाल हूँ। मेरा एक ऊँट गुम हो गया है। उसको छत पर खोज रहा था। मैं एक कारवांन हूँ। सुल्तान अधम ने कहा कि हे भोले बन्दे! छत के ऊपर ऊँट कैसे चढ़ सकता है? यह तो कभी हुआ न होगा। कहीं जंगल में ऊँट को खोज। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे अब्राहिम! जैसे ऊँट छत के ऊपर नहीं होता, न छत के ऊपर कभी मिलता है, ऊँट को जंगल में खोजना चाहिए। इसी प्रकार परमात्मा राजगद्दी पर बैठकर ऐशो-आराम (मौज-मस्ती) करने से नहीं, वह संतों में मिलता है। इतना कहकर कबीर परमेश्वर जी अंतर्ध्यान हो गए। सुल्तान अधम मूर्छित होकर जमीन पर गिर गए। मन्त्रियों तथा रानियों ने एक झाड़-फूँक करने वाला बुलाया। उसने राजा की दांई बाजू पर ताबीज बाँध दिया और कहा कि इसके ऊपर भूत-प्रेत का साया है, ठीक हो जाएगा। राजा का मन राज-काज में नहीं लग रहा था। उदास रहने लगा। राजा ने कुछ संतों को फिर से कैद कर रखा

था। परमेश्वर फिर से जेल में गए। उसी तरह उनको भी जेल से निकाला। अबकी बार सब कैदियों से कहा कि तुम सब खड़े होकर आँखें बंद करो। कुछ देर अल्लाह का चिंतन करो। उसके पश्चात् चक्की चलाएंगे। चक्की आसानी से चलेंगी। सब बंदी खड़े होकर अल्लाह का चिंतन आँखें बंद करके करने लगे। परमेश्वर ने एक चक्की को डण्डा (सोटी) लगाया। सर्व चक्कियां चलने लगी। परमात्मा कबीर जी ने कहा कि आँखें खोलो। सबने आँखें खोली तो अपने को बलख नगर से दूर जेल से बाहर जंगल में खड़े पाया। परमेश्वर ने कहा कि फिर से इस सुल्तान के राज्य की सीमा में मत आना। उसके पश्चात् राजा ने साधु-संतों को कैद में डालना बंद कर दिया था, परंतु डर के मारे कोई भी साधु-महात्मा उसके राज्य में नहीं आते थे। कबीर परमेश्वर जी भी यही चाहते थे कि ये नकली गुरू यहाँ न आऐं। कहीं राजा को भ्रमित करके मेरे से दूर न कर दें। इसलिए उनको इस विधि से दूर रखना था। कुछ समय उपरांत राजा सामान्य हो गया और ऐसो-आराम में खो गया।

लीला नं. 3 :- परमात्मा कबीर जी अपने गुण अनुसार फिर एक लीला करने आए। एक यात्री (मुसाफिर) का रूप बनाकर काख में कपड़ों की पोटली, ग्रामीण वेशभूषा में शाम के समय सुल्तान के निवास में आए। सुल्तान घर के द्वार पर आँगन में कुर्सी पर बैठा था। राजा ने पूछा कि आप यहाँ किसलिए आए हो? परमात्मा कबीर जी ने कहा कि मैं एक यात्री हूँ। रात्रि में आपकी धर्मशाला (सराय) में रूकना है। एक रात का भाड़ा (किरवाया) बता, कितना लेगा। अब्राहिम अधम सुल्तान हँसा और कहा कि हे भोले मुसाफिर, यह सराय नहीं है। यह तो मेरा महल है। मैं नगरी का राजा हूँ। परमात्मा बन्दी छोड़ दया के सागर ने प्रश्न किया आपसे पहले इस महल में कौन रहता था? सुल्तान अब्राहिम अधम ने उत्तर दिया कि मेरे बाप-दादा आदि रहते थे। प्रश्न प्रभु का:- वे कहाँ हैं? मैं उन्हें देखना चाहता हूँ। उत्तर सुल्तान का:- वे तो अल्लाह को प्यारे हुए। परमात्मा ने प्रश्न किया कि आप कितने दिन इस महल में रहोगे। उत्तर के स्थान पर सुल्तान ने चिंतन किया और कहा कि मुझे भी मरना है। परमेश्वर ने कहा कि हे भोले प्राणी! यह सराय (धर्मशाला) नहीं तो क्या है?

तेरे बाप–दादा पड़ पीढ़ी। वे बसे इसी सराय में गीद्यी।।
ऐसे ही तू चल जाई। तातें हम महल सराय बताई।।
अब तू तख्त बैठकर भूली। तेरा मन चढ़ने को सूली।।

इतना कहकर परमात्मा गुप्त हो गए। सुल्तानी को मूर्छा आ गई। बहुत देर में होश में आया। अन्य मौलवी बुलाया। उसने बांयी बाजु पर ताबीज बाँधकर झाड़फूँक की, कहा कि अब कुछ नहीं होगा। चला गया।

लीला नं. 4 :- कुछ दिन बाद राजा सामान्य होकर फिर मौज-मस्ती करने लगा। दिन के समय राजा अब्राहिम अपने नौलखा (जिसमें नौ लाख फलदार पेड़ भिन्न-भिन्न प्रकार के लगाए जाते थे, उसको नौलखा बाग कहते थे।) बाग में सोया करता था। उसके बिस्तर को नौकरानियाँ बिछाया करती थी। फूलों के गुलदस्ते चारों ओर रखा करती थी। नौकरानियों की पोषाक रानियों से भिन्न होती थी। सब बांदियों की पोषाक एक जैसी होती थी। दीन दयाल कबीर जी ने उस अपनी प्यारी आत्मा सम्मन के जीव को काल जाल से निकालने के लिए क्या-क्या उपाय करने पड़ रहे हैं। एक दिन परमेश्वर कबीर जी ने नौकरानी का वेश बनाया। स्त्री रूप धारण किया। बाग में राजा का बिस्तर (सेज) बिछाया। फूलों के गुलदस्ते अत्यंत सुन्दर तरीके से लगाए और स्वयं उस सेज पर लेट गए। राजा अब्राहिम आया तो देखा, एक बांदी (खवासी) मेरी सेज पर सो रही है। इसको मेरा

जरा-सा भी भय नहीं है। सुल्तान ने उसी समय कोड़ा उठाकर लेटे हुए परमेश्वर की कमर पर तीन बार मारा। तीन निशान कमर पर बन गए, खाल उतर गई। बांदी वेश में परमेश्वर ने पलंग से नीचे उतरकर एक बार रोने का अभिनय किया और फिर जोर-जोर से हँसने लगे। दासी को इतनी चोट लगने के पश्चात् भी हँसते देखकर अब्राहिम आश्चर्य में पड़ गया। वह विचार कर रहा था कि बांदी को तो बेहोश हो जाना चाहिए था या मर जाना चाहिए था। राजा ने दासी वेश धारी परमात्मा का हाथ पकड़ा और पूछा कि हँस किसलिए रही है? परमात्मा ने कहा कि मैं इस बिस्तर पर एक घड़ी (22 मिनट) लेटी हूँ, विश्राम किया है। एक घड़ी के विश्राम का दण्ड मुझे तीन कोड़े मिला है। मेरे शरीर का चाम भी उतर गया है। मैं इसलिए हँस रही हूँ कि जो इस गंदी सेज पर दिन-रात सोता है, उसका क्या हाल होगा? मुझे तेरे ऊपर तरस आ रहा है भोले प्राणी!

मैं एक घड़ी सेज पर सोई। ताते मेरा यह हाल होई।।
जो सोवै दिवस और राता। उनका क्या हाल विधाता।।
गैब भये ख्वासा। सुल्तानी भये उदासा।।
यह कौन छलावा भाई। याका भेद समझ ना आई।।

यह दृश्य देखकर सुल्तान अधम अचेत हो गया। उठा तब सोचा कि यह क्या हो रहा है? मैं समझ नहीं पा रहा हूँ।

लीला नं. 5 :- कुछ समय के पश्चात् मन्त्रियों-रानियों ने कहा कि राजा को शिकार करने ले जाओ। कई दिनों तक जंगल में रहो। इनके मन की चिंता कम हो जाएगी। ऐसा ही किया गया। पहले दिन ही दोपहर तक कोई जानवर नहीं मिला। राजा को यह सब अच्छा नहीं लगा। जंगल में तो मृगों के झुण्ड के झुण्ड चलते हैं। आज एक हिरण भी नहीं आया है। अचानक एक हिरण दिखाई दिया। राजा ने कहा कि यह हिरण बचकर नहीं जाना चाहिए। जिसके पास से निकल गया, उसकी खैर नहीं। देखते-देखते हिरण राजा के घोड़े के नीचे से निकलकर जंगल की और दौड़ लिया। राजा ने शर्म के मारे घोड़ा पीछे-पीछे दौड़ाया। दूर जाकर हिरण जंगल में छिप गया। राजा तथा घोड़े को बहुत प्यास लगी थी। जान जाने वाली थी। अल्लाह से जीवन रक्षार्थ जल की याचना की। वापिस अपने पड़ाव की ओर चला। पड़ाव एक घण्टा दूर था। वहाँ तक जीवित बचना कठिन था। कुछ दूर चलकर दाऐं-बायें देखा तो एक जिन्दा फकीर बैठा दिखाई दिया। पास में स्वच्छ जल का छोटा जलाशय था। उसके चारों ओर फलदार वृक्ष थे। मधुर फल लगे थे। राजा को जीवन की किरण दिखाई दी। जल पीया, कुछ फल खाए। घोड़े को पानी पिलाया। वृक्ष से बाँध दिया। जिन्दा बाबा की ओर देखा तो उनके पास तीन सुंदर कुत्ते बँधे थे। एक कुत्ते बाँधने की सांकल (चैन=लोहे की बेल) साथ में रखी थी। सुल्तान ने फकीर को सलाम वालेकम किया। फकीर ने भी उत्तर में वालेकम सलाम बोला। राजा ने कहा, हे फकीर जी! आप तीन कुत्तों का क्या करोगे? इनमें से दो मुझे दे दो। फकीर जी ने कहा, ये कुत्ते मैं किसी को नहीं दे सकता। इनको मैंने पाठ पढ़ाना है। ये तीनों बलख शहर के राजा रहे हैं। मैं इनको समझाता था कि तुम अल्लाह को याद किया करो। इस संसार में सदा नहीं रहोगे। मरकर कुत्ते का जीवन प्राप्त करोगे। अब तुम नान पुलाव-काजू-किशमिश, मनुखा दाख, खीर, हलवा, फल खा रहे हो। यह आपके पूर्व जन्मों के पुण्यों तथा भक्ति का फल मिला है। यदि इस मानव जीवन में भक्ति नहीं करोगे तो कुत्ते आदि के प्राणियों के जीवन में कष्ट उठाओगे। खाने को यह अच्छा भोजन नहीं मिलेगा। झूठे टुकड़े खाया करोगे। टट्टी खाया करोगे, गंदा पानी नाली का पीया करोगे। जब राजा थे, तब इन्होंने मेरी बातों पर

बिल्कुल ध्यान नहीं दिया। ये सोचते थे कि यह फकीर मूर्ख है। राज्य को कौन संभालेगा? रानियों का क्या होगा? अब ये तीनों कुत्ते बने हैं। देखो! मैंने काजू-बादाम, किशमिश मिलाकर बनाया हलवा-खीर इनके सामने रखा है। इनको खाने नहीं देता हूँ। दिखाता हूँ। जब ये खाने की कोशिश करते हैं तो मैं इनको पीटता हूँ। यह कहकर परमेश्वर जी ने जो एक लोहे की बेल खाली रखी थी। उठाकर कुत्तों को मारना शुरू किया। कुत्ते चिल्लाने लगे। परमेश्वर बोले कि खालो न हलवा खिलाऊँ तुमको। झूठा-सूखा टुकड़ा डालूंगा। ऐ घोड़े वाले भाई! यह जो खाली बेल रखी है, यह बताऊँ किसलिए है? जो बलख शहर का राजा अब्राहिम अधम है। वह भी संसार तथा राज्य की चकाचौंध में अँधा होकर अल्लाह को भूल गया है। अब उसको याद नहीं कि मरकर कुत्ता भी बनूंगा। उसको बहुत बार समझाया है कि भक्ति करले, इन महल रूपी सराय में सदा नहीं रहेगा, परंतु उसको खुदा का कोई खौफ नहीं है। वह तो खुद खुदा बनकर निर्दोष फकीरों को दण्डित कर रहा है। मैं तो यहाँ दूर बैठा हूँ। इसलिए बचा हूँ। वह राजा मरेगा, भक्ति बिना कुत्ता बनेगा। उसको लाकर इस सांकल से बाँधूंगा। जिन्दा फकीर के मुख से ये वचन सुनकर कुत्तों के रूप में अपने पूर्वजों की दुर्दशा देखकर अब्राहिम काँपने लगा और बोला कि हे फकीर जी! बलख शहर का राजा मैं ही हूँ। मुझे क्षमा करो। यह कहकर फकीर के चरणों में गिर गया। कुछ देर पश्चात् उठा तो देखा, वहाँ पर न जिन्दा बाबा था, न जलाशय, न बाग था, न कुत्ते थे। सुल्तानी इसको स्वपन भी नहीं मान सकता था क्योंकि घोड़े के पैर अभी भी भीगे थे। कुछ फल तोड़कर रखे थे, वे भी सुरक्षित थे। सुल्तान को समझते देर नहीं लगी। घोड़े पर चढ़ा और पड़ाव पर आया। मुख से नहीं बोल पाया। हाथ से संकेत किया कि सामान बाँधो और लौट चलो शहर को। कुछ मिनटों में काफिला बलख शहर को चल पड़ा।

लीला नं. 6 :- घर में एक कमरे में बैठकर रोने लगा। रानियों ने, मंत्रियों ने समझाना चाहा कि यह तो वैसे ही होता रहता है। मुख्य रानियाँ कह रही थी कि ऐसी बात तो स्त्रियों के साथ होती हैं, आप तो मर्द हैं। हिम्मत रखो। आप तो प्रजा के पालक हो। इतने में एक कुत्ता आया। उसके सिर में जख्म था। उसमें कीट (कीड़े) नोच रहे थे। कुत्ता बोला, हे अब्राहिम! मैं भी राजा था। जितने प्राणी शिकार में मारे तथा एक राजा के साथ युद्ध में जीव मारे, वे आज अपना बदला ले रहे हैं। मेरे सिर में कीड़े बनकर मुझे नोंच रहे हैं। मैं कुछ करने योग्य नहीं हूँ। यही दशा तेरी होगी। अपना भविष्य देख लो। तेरे पीछे-पीछे खुदा भटक रहा है। तू परिवार-राज्य मोह में अपना जीवन नष्ट कर रहा है। यह लीला भी स्वयं परमेश्वर कबीर जी ने की थी। यह अंतिम झटका था अब्राहिम को दलदल से निकालने का। उसी रात्रि में मुख पर काली स्याही लेपकर एक अलफी के स्थान पर एक शॉल, फिर एक तकिया, एक लोटा, एक पतला गद्दा यानि बिछौना लेकर घर से कमद के रास्ते पीछे से उतरकर चल पड़ा। (कमद=एक मोटा रस्सा जिसको दो-दो फुट पर गाँठें लगा रखी होती थी जिसके द्वारा छत से आपत्ति के समय उतरते थे।)

लीला नं. 7 :- रास्ते में एक मालिन बाग के बाहर बेर बेच रही थी। सुल्तान को भूख लगी थी। सारी रात पैदल चला था। मालन से बेरों का भाव पूछा तो मालिन ने बताया कि एक आने के सेर। (एक रूपये में 16 आने होते थे। एक सेर यानि एक किलोग्राम) राजा के पास आना नहीं था। उसने जो जूती पहन रखी थी, उन दोनों की कीमत उस समय 2½ लाख रूपये थी। उनके ऊपर हीरे-पन्ने जड़े थे। राजा ने कहा कि मेरे पास एक आना या रूपया नहीं है। ये जूती हैं, इनकी कीमत अढ़ाई लाख रूपये है। ये दोनों ले लो, मुझे भूख लगी है, एक सेर बेर तोल दो। मालिन

एक सेर बेर तोलकर अब्राहिम के शॉल के पल्ले में डालने लगी तो एक बेर नीचे गिर गया। उस बेर को उठाने के लिए मालिन ने भी हाथ बढ़ाया और अब्राहिम ने भी मालिन के हाथ से बेर छीनना चाहा। दोनों अपना बेर होने का दावा करने लगे। उसी समय परमेश्वर कबीर जी प्रकट हुए और कहने लगे, हे गंवार! यह तो मूर्ख है जिसको इतना भी विवेक नहीं कि एक बेर के पीछे उस व्यक्ति से उलझ रही है जिसने अढ़ाई लाख की जूती छोड़ दी। हे मूर्ख! ढ़ाई लाख की जूती छोड़ रहा है और एक पैसे के बेर के ऊपर झगड़ा कर रहा है। ये कैसा त्याग है तेरा? विवेक से काम ले। यह कहकर परमात्मा ने सुल्तान अधम के मुख पर थप्पड़ मारा और अंतर्ध्यान हो गए।

जीवन की यात्रा ऐसे भी हो सकती है :- सुल्तान आगे चला तो देखा कि एक निर्धन व्यक्ति एक डले के ऊपर सिर रखकर जमीन पर सो रहा है। उसी समय तकिया तथा बिछौना फैंक दिया। आगे देखा कि एक व्यक्ति नदी से हाथों से जल पी रहा था। लोटा भी फैंक दिया।

काल की भूल-भुलईया में फँसे व्यक्ति को समझाना :- रास्ते में वर्षा होने लगी। शीतल वायु बहने लगी। अब्राहिम ने एक झौंपड़ी देखी जो एक किसान की थी। उसके पास दो बीघा जमीन बिना सिंचाई की थी। एक बूढ़ी गाय जो चार-पाँच बार प्रसव कर चुकी थी। एक काणी स्त्री थी। शीतल वायु के कारण उत्पन्न ठण्ड से बचने के लिए अब्राहिम अधम सुल्तान उस झौंपड़ी के पीछे लेट गया। रात्रि में दोनों पति-पत्नी बातें कर रहे थे कि वर्षा अच्छी हो गई है। गाय का चारा पर्याप्त हो जाएगा। अपने खाने के लिए भी अच्छी फसल पकेगी। अपने ऐसे ठाठ हो जाएंगे, ऐसे तो बलख बुखारे के बादशाह के भी नहीं हैं। अब्राहिम अधम सुल्तान यह सब वार्ता सुनकर उनकी बुद्धि पर पत्थर गिरे जानकर उनको भविष्य के दुःखों से अवगत कराने के उद्देश्य से सूर्योदय तक वहीं पर ठहरा रहा। सुबह उठकर उनकी झौंपड़ी के द्वार पर खड़ा होकर प्रणाम किया। दोनों पति-पत्नी झौंपड़ी से बाहर आए। अब्राहिम उनको भक्ति करने तथा माया से मुख मोड़ने का ज्ञान देने लगा। कहा कि आपके पास तो एक गाय है, एक स्त्री है। दो बीघा जमीन है। आप इसी से चिपके बैठे हो। इसे बलख के बादशाह से भी अधिक ठाठ मान रहे हो। यह तो कुछ दिनों का मेला है। तुमको गुरू जी से उपदेश दिला देता हूँ, तुम्हारा जीवन धन्य हो जाएगा। मैं ही अब्राहिम अधम हूँ। मैं उस राज्य को छोड़कर परमात्मा की प्राप्ति के लिए चला हूँ। उन्होंने कहा कि हमें तो लगता नहीं कि आप बलख शहर के राजा हो। यदि ऐसा है तो तेरे जैसा मूर्ख व्यक्ति इस पृथ्वी पर नहीं है। आपकी शिक्षा की हमें आवश्यकता नहीं है। सुल्तान ने कहा कि :-

गरीब, रांडी (स्त्री) ढांडी (गाय) ना तजैं, ये नर कहिये काग। बलख बुखारा त्याग दिया, थी कोई पिछली लाग।।

इसके पश्चात् अब्राहिम अधम पृथ्वी का सुल्तान तो नहीं रहा, परंतु भक्ति का सुल्तान बन गया। भक्त राज बन गया। इसलिए उसको सुल्तान या प्यार में सुल्तानी नाम से प्रसिद्धि मिली। आगे की कथा में इसको केवल सुल्तान नाम से ही लिखा-कहा जाएगा। जैसे धर्मदास जी को धनी धर्मदास कहा जाने लगा था। वे भक्ति के धनी थे। वैसे सांसारिक धन की भी कोई कमी नहीं थी। सुल्तान को परमेश्वर मिले और प्रथम मंत्र दिया और कहा कि बाद में तेरे को सतनाम, फिर सार शब्द दूंगा।

कबीर सागर के अध्याय ''सुल्तान बोध'' में पृष्ठ 62 पर प्रमाण है :-

प्रथम पान प्रवाना लेई। पीछे सार शब्द तोई देई।।
तब सतगुरू ने अलख लखाया। करी परतीत परम पद पाया।।
सहज चौका कर दीन्हा पाना (नाम)। काल का बंधन तोड़ बगाना।।

विचार करें :- उस समय अब्राहिम के पास न तो आरती चौंका करने को धन था, न अन्य सुविधा थी। यह वास्तविक कबीर जी की दीक्षा की विधि है। जो आरती चौका, उसमें लाखों या हजारों का सामान, नारियल आदि का कोई प्रावधान नहीं है। वह तो बाद में कोई पाठ कराना चाहे तो कराए अन्यथा दीक्षा विधि केवल मंत्रित जल तथा मीठे पदार्थ (मीश्री-चीनी, गुड़, बूरा, शक्कर) से दी जा सकती है। सत्य नाम तथा सार शब्द में पान (पेय पदार्थ) नहीं दिया जाता। केवल दीक्षा मंत्र बताए-समझाए जाते हैं। संत गरीबदास जी (गाँव-छुड़ानी, जिला-झज्जर, हरियाणा प्रान्त) को परमेश्वर कबीर जी मिले थे। उनको दिव्य दृष्टि प्रदान की थी। उसी के आधार से संत गरीबदास जी ने बताया है कि :-

गरीब, हम सुल्तानी नानक तारे, दादू कूं उपदेश दिया।
जाति जुलाहा भेद न पाया, काशी माहें कबीर हुआ।।
गरीब, अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड का, एक रति नहीं भार।
सतगुरू पुरूष कबीर हैं, कुल के सिरजनहार।।

''अब्राहिम अधम सुल्तान के विषय में संत गरीबदास जी के विचार''

कबीर परमेश्वर जी ने अपने शिष्य गरीबदास जी को बताया कि :-

अमर लोक से सतगुरू आए, रूप धरा करवांना।
ढूँढ़त ऊँट महल पर डोलैं, बूझत शाह ब्याना।।(टेक)
हम कारवान होय आये। महलौं पर ऊंट बताये।।(1)
बोलैं पादशाह सुलताना। तूं रहता कहां दिवाना।।(2)
दूजैं कासिद गवन किया रे। डेरा महल सराय लिया रे।।(3)
जब हम महल सराय बताई। सुलतानी कूं तांवर आई।।(4)
अरे तेरे बाप दादा पड़ पीढी। ये बसे सराय में गीदी।।(5)
ऐसैं ही तूं चलि जाई। यौं हम महल सराय बताई।।(6)
अरे कोई कासिद कूं गहि ल्यावै। इस पंडित खांनें द्यावै।।(7)
ऊठे पादशाह सुलताना। वहां कासिद गैब छिपाना।।(8)
तीजै बांदी होय सेज बिछाई। तन तीन कोरड़े खाई।।(9)
तब आया अनहद हांसा। सुलतानी गहे खवासा।।(10)
मैं एक घड़ी सेजां सोई। तातैं मेरा योह हवाल होई।।(11)
जो सोवैं दिवस रू राता। तिन का क्या हाल बिधाता।।(12)
तब गैबी भये खवासा। सुलतानी हुये उदासा।।(13)
यौह कौन छलावा भाई। याका कछु भेद न पाई।।(14)
चौथे जोगी भये हम जिन्दा। लीन्हें तीन कुत्ते गलि फंदा।।(15)
दीन्ही हम सांकल डारी। सुलतानी चले बाग बाड़ी।।(16)
बोले पातशाह सुलताना। कहां सैं आये जिन्द दिवाना।।(17)
ये तीन कुत्ते क्या कीजै। इनमें सैं दोय हम कूं दीजै।।(18)
अरे तेरे बाप दादा है भाई। इन बड़ बदफैल कमाई।।(19)
यहां लोह लंगर शीश लगाई। तब कुत्यौं धूम मचाई।।(20)

अरे तेरे बाप दादा पड़ पीढी। तूं समझै क्यूं नहीं गीदी।।(21)
अब तुम तख्त बैठकर भूली। तेरा मन चढने कूं शूली।।(22)
जोगी जिन्दा गैब भया रे। हम ना कछु भेद लह्या रे।।(23)
बोले पादशाह सुलताना। जहां खड़े अमीर दिवाना।।(24)
येह च्यार चरित्र बीते। हम ना कछु भेद न लीते।।(25)
वहां हम मार्‍या ज्ञान गिलोला। सुलतानी मुख नहीं बोला।।(26)
तब लगे ज्ञान के बानां। छाड़ी बेगम माल खजाना।।(27)
सुलतानी जोग लिया रे। सतगुरु उपदेश दिया रे।।(28)
छाड्या ठारा लाख तुरा रे। जिसे लाग्या माल बुरा रे।।(29)
छाड़े गज गैंवर जल हौडा। अब भये बाट के रोड़ा।।(30)
संग सोलह सहंस सुहेली। एक सें एक अधिक नवेली।।(31)
गरीब, अठारह लाख तुरा जिन छोड़े, पद्यमनी सोलह सहंस।
एक पलक में त्याग गए, सो सतगुरू के हैं हंस।।(32)
रांडी–ढ़ांडी ना तजैं, ये नर कहिए काग।
बलख बुखारा त्याग दिया, थी कोई पिछली लाग।।(33)
छाड़े मीर खान दीवाना, अरबों खरब खजाना।।(34)
छाड़े हीरे हिरंबर लाला। सुलतानी मोटे ताला।।(35)
जिन लोक पर्गणा त्यागा। सुनि शब्द अनाहद लाग्या।।(36)
पगड़ी की कौपीन बनाई। शालौं की अलफी लाई।।(37)
शीश किया मुंह कारा। सुलतानी तज्या बुखारा।।(38)
गण गंधर्व इन्द्र लरजे। धन्य मात पिता जिन सिरजे।।(39)
भया सप्तपुरी पर शांका। सुलतानी मारग बांका।।(40)
जिन पांचौं पकड़ि पछाड्या। इनका तो दे दिया बाड़ा।।(41)
सुनि शब्द अनाहद राता। जहां काल कर्म नहीं जाता।।(42)
नहीं कच्छ मच्छ कुरंभा। जहां धौल धरणि नहीं थंभा।।(43)
नहीं चंद्र सूर जहां तारा। नहीं धौल धरणि गैंनारा।।(44)
नहीं शेष महेश गणेशा। नहीं गौरा शारद भेषा।।(45)
जहां ब्रह्मा बिष्णु न बानी। नहीं नारद शारद जानी।।(46)
जहां नहीं रावण नहीं रामा। नहीं माया का बिश्रामा।।(47)
जहां परसुराम नहीं पर्चा। नहीं बलि बावन की चर्चा।।(48)
नहीं कंस कान्ह कर्तारा। नहीं गोपी ग्वाल पसारा।।(49)
यौंह आँवन जान बखेड़ा। यहाँ कौंन बसावै खेड़ा।।(50)
जहाँ नौ दशमा नहीं भाई। दूजे कूं ठाहर नाँही।।(51)
जहां नहीं आचार बिचारा। ना कोई शालिग पूजनहारा।।(52)
बेद कुराँन न पंडित काजी। जहाँ काल कर्म नहीं बाजी।।(53)
नहीं हिन्दू मुसलमाना। कुछ राम न दुवा सलामा।।(54)
जहाँ पाती पान न पूजा। कोई देव नहीं है दूजा।।(55)

जहाँ देवल धाम न देही। चीन्ह्यो क्यूं ना शब्द सनेही।।(56)
नहीं पिण्ड प्राण जहां श्वासा। नहीं मेर कुमेर कैलासा।।(57)
नहीं सत्ययुग द्वापर त्रेता। कहूं कलियुग कारण केता।।(58)
यौह तो अंजन ज्ञान सफा रे। देखो दीदार नफा रे।।(59)
निःबीज सत निरंजन लोई। जल थल में रमता सोई।।(60)
निर्भय निरगुण बीना। सोई शब्दअतीतं चीन्हा।।(61)
अडोल अबोल अनाथा। नहीं देख्या आवत जाता।।(62)
हैं अगम अनाहद सिंधा। जोगी निरगुण निरबंधा।।(63)
कछु वार पार नहीं थाहं। सतगुरु सब शाहनपति शाहं।।(64)
उलटि पंथ खोज है मीना। सतगुरु कबीर भेद कहैं बीना।।(65)
यौह सिंधु अथाह अनूपं। कछु ना छाया ना धूपं।।(66)
जहां गगन धूनि दरबानी। जहां बाजैं सत्य सहिदानी।।(67)
सुलतान अधम जहां राता। तहां नहीं पांच तत का गाता।।(68)
जहां निरगुण नूर दिवाला। कछु न घर है खाला।।(69)
शीश चढाय पग धरिया। यौह सुलतानी सौदा करिया।।(70)
सतगुरु जिन्दा जोग दिया रे। सुलतानी अपन किया रे।।(71)
कहैं दास गरीब गुरु पूरा। सतगुरु मिले कबीरा।।(72)

''अब्राहिम अधम सुल्तान की परीक्षा''

सुल्तान अधम ने एक साधु की कुटिया देखी जो कई वर्षों से उस स्थान पर साधना कर रहा था। अब्राहिम उसके पास गया। वह साधक बोला कि यहाँ पर मत रहना, यहाँ कोई खाना-पानी नहीं है। आप कहीं और जाइये। सुल्तान अब्राहिम बोला कि मैं तेरा मेहमान बनकर नहीं आया। मैं जिसका मेहमान (परमात्मा का मेहमान) हूँ, वह मेरे रिजक (खाने) की व्यवस्था करेगा। इन्सान अपनी किस्मत साथ लेकर आता है। कोई किसी का नहीं खाता है। हे बेइमान! तू तो अच्छा नागरिक भी नहीं है। तू चाहता है परमात्मा से मिलना। नीयत ठीक नहीं है तो इंसान परमार्थ नहीं कर सकता। बिन परमार्थ परमात्मा नहीं मिलता। जिसने जीवन दिया है, वह रोटी भी देगा। अब्राहिम थोड़ी दूरी पर जाकर बैठ गया। शाम को आसमान से एक थाल उतरा जिसमें भिन्न-भिन्न प्रकार की सब्जी, हलवा, खीर, रोटी तथा जल का लोटा था। थाली के ऊपर थाल परोस (कपड़े का रूमाल) ढ़का था। अब्राहिम ने थाली से कपड़ा उठाया और पुराने साधक को दिखाया। उस पुराने साधक के पास आसमान से दो रोटी वे भी जौ के आटे की और एक लोटा पानी आए। यह देखकर पुराना साधक नाराज हो गया कि हे प्रभु! मैं तेरा भेजा हुआ भोजन नहीं खाऊँगा। आप तो भेदभाव करते हो। मुझे तो सूखी जौ की रोटी, अब्राहिम को अच्छा खाना पुलाव वाला भेजा है।

परमात्मा ने आकाशवाणी की कि हे भक्त! यह अब्राहिम एक धनी राजा था। इसके पास अरब-खरब खजाना था। इसकी 16 हजार रानियां थी, बच्चे थे। अमीर मंत्री तथा दीवान थे। नौकर-नौकरानियां थी। यह मेरे लिए ऐसे ठाठ छोड़कर आया है। इसको तो क्या न दे दूँ। तू अपनी औकात देख, तू एक घसियारा था। सारा दिन घास खोदता था। तब एक टका मिलता था। सिर पर गट्ठे लेकर नित बोझ मरता था। न बीबी (स्त्री) थी, न माता थी, न कोई पिता तेरा सेठ था।

तुझको मैं पकी-पकाई रोटियां भेजता हूँ। तू फिर भी नखरे करता है। यदि तू मेरी रजा में राजी नहीं है तो कहीं और जा बैठ। यदि भक्ति से विमुख हो गया तो तेरा घास खोदने का खुरपा और बाँधने की जाली, ये रखी जा खोद घास और खा। यदि (परमात्मा से) कुछ हासिल करना है तो मेरी रजा से बाहर कदम मत रखना। भक्त में यदि कुब्र (अभिमान) है तो वह परमात्मा से दूर है। यदि बंदगान (भगवान के भक्त) में इज्जत (आदर, सम्मान आधीनी) है तो वह हक्क (परमेश्वर) के करीब है।

सुल्तान अधम ने परमेश्वर से अर्ज की कि हे दाता! मैं मेहनत करके निर्वाह करूँगा। आपकी भक्ति भी करूँगा। आप यह भोजन न भेजो। रूखी-सूखी खाकर मैं आपके चरणों में बना रहना चाहता हूँ। यह भोजन आप भेज रहे हो। यह खाकर तो मन में दोष आएंगे, कोई गलती कर बैठूंगा। यह अर्ज वह पुराना भक्त भी सुन रहा था। उसकी गर्दन नीची हो गई। परमात्मा से अर्ज की, प्रभु! मेरी गलती को क्षमा करो। मैं आपकी रजा में प्रसन्न रहूँगा। उस दिन से अब्राहिम जंगल से लकड़ियां तोड़कर लाता, बाजार में बेचकर खाना ले जाता। आठ दिन तक उसी को खाता और भक्ति करता था।

''भक्त हो नीयत का पूरा''

कुछ वर्ष पश्चात् अब्राहिम भ्रमण पर निकला। एक सेठ का बाग था। उसको नौकर की आवश्यकता थी। सुल्तान को पकड़कर बाग की रखवाली के लिए रख दिया। एक वर्ष पश्चात् सेठ बाग में आया। उसने अब्राहिम से अनार लाने को कहा। अनार लाकर सेठ को दे दिए। अनार खट्टे थे। सेठ ने कहा कि तेरे को एक वर्ष में यह भी पता नहीं चला कि मीठे अनार कैसे होते हैं? सुल्तान ने कहा कि सेठ जी! आपने मेरे को बाग की सुरक्षा के लिए रखा है, बाग उजाड़ने के लिए नहीं। यदि रक्षक ही भक्षक हो जाएगा तो बात कैसे बनेगी? मैंने कभी कोई फल खाया ही नहीं तो खट्टे-मीठे का ज्ञान कैसे हो सकता है? सेठ ने अन्य नौकरों से पूछा तो नौकरों ने बताया कि यह नौकर तो जो रोटी मिलती है, बस वही खाकर बाग के चारों ओर कुछ बड़बड़ करता घूमता रहता है। हमने गुप्त रूप से भी देखा है। इसने कभी कोई फल नहीं तोड़कर खाया है, न नीचे पड़ा उठाया है। किसी नौकर ने बताया कि यह बलख शहर का राजा है। मैंने 10 वर्ष पहले इसको जंगल में शिकार के समय देखा था। जब मैंने इससे पूछा कि लगता है आप बलख शहर के सुल्तान अब्राहिम अधम हो। पहले तो मना किया, फिर मैंने बताया कि आपको शिकार के समय जंगल में देखा था। आपकी सेना में मेरा साला याकूब बड़ा अधिकारी है। उसने बताया कि राजा ने सन्यास ले लिया है। उसका बेटा गद्दी पर बैठा है। तब इसने कहा कि किसी को मत बताना। सेठ ने चरणों में गिरकर क्षमा याचना की और ढ़ेर सारा धन देकर कहा कि आप यह धन लेकर अपना निर्वाह करो, भक्ति भी करो। मेरे घर रहो या बाग में महल बनवा दूँ, यहाँ रहकर भक्ति करो। सुल्तान धन्यवाद कहकर चल पड़ा।

''दास की परिभाषा''

एक समय सुल्तान एक संत के आश्रम में गया। वहाँ कुछ दिन संत जी के विशेष आग्रह से रूका । संत का नाम हुकम दास था। बारह शिष्य उनके साथ आश्रम में रहते थे। सबके नाम के पीछे दास लगा था। फकीर दास, आनन्द दास, कर्म दास, धर्मदास। उनका व्यवहार दास वाला

नहीं था। उनके गुरू एक को सेवा के लिए कहते तो वह कहता कि धर्मदास की बारी है, उसको कहो, धर्मदास कहता कि आनन्द दास का नम्बर है। उनका व्यवहार देखकर सुल्तानी ने कहा कि:-

दासा भाव नेड़े नहीं, नाम धराया दास। पानी के पीए बिन, कैसे मिट है प्यास।।

सुल्तानी ने उन शिष्यों को समझाया कि मैं जब राजा था, तब एक दास मोल लाया था। मैंने उससे पूछा कि तू क्या खाना पसंद करता है। दास ने उत्तर दिया कि दास को जो खाना मालिक देता है, वही उसकी पसंद होती है। आपकी क्या इच्छा होती है? आप क्या कार्य करना पसंद करते हो? जिस कार्य की मालिक आज्ञा देता है, वही मेरी पसंद है। आप क्या पहनते हो? मालिक के दिए फटे-पुराने कपड़े ठीक करके पहनता हूँ। उसको मैंने मुक्त कर दिया। धन भी दिया। उसी की बातों को याद करके मैं अपनी गुरू की आज्ञा का पालन करता हूँ। अपनी मर्जी कभी नहीं चलाता। जो प्रभु देता है, उसकी आज्ञा जानकर खाता हूँ। मैं अपने को दास मानकर सेवा करता हूँ। परमात्मा को प्रसन्न करने के लिए गुरूदेव को प्रसन्न करना अनिवार्य होता है। उसके पश्चात् वे सर्व शिष्य दास भाव से रहकर अपने गुरू जी की आज्ञा का पालन करने लगे तथा आपस में अच्छा व्यवहार करने लगे। अपना जीवन सफल किया।

''सुल्तानी को सार शब्द कैसे प्राप्त हुआ?''

परमेश्वर कबीर जी एक आश्रम बनाकर रहने लगे। नाम जिन्दा बाबा से प्रसिद्ध थे। सुल्तानी को प्रथम मंत्र दीक्षा के कुछ महीनों के पश्चात् सतनाम की (दो अक्षर के मंत्र की) दीक्षा दी जिसमें एक ''ओम्'' मंत्र है तथा दूसरा उपदेश के समय बताया जाता है। दर्शन के लिए सुल्तान अनेकों बार आता रहा। सत्यनाम के पश्चात् योग्य होने पर सार शब्द साधक को दीक्षा में दिया जाता है। एक वर्ष के पश्चात् सुल्तान अधम ने अपने गुरू की कुटिया में जाकर सारनाम की दीक्षा के लिए विनम्र प्रार्थना की तो परमेश्वर जी ने कहा कि एक वर्ष के पश्चात् ठीक इसी दिन आना, सारनाम दूंगा। दर्शनार्थ कभी-भी आ सकते हो। सुल्तान अब्राहिम अधम ठीक उसी दिन सारनाम लेने के लिए गुरू जी की कुटिया में गया तो गुरू जी ने कहा कि ठीक एक वर्ष पश्चात् इसी दिन आना, सारनाम दूँगा। ऐसे करते-करते ग्यारह (11) वर्ष निकाल दिए। बीच-बीच में भी सतगुरू के दर्शन करने आता था, परंतु सारनाम के लिए निश्चित दिन ही आना होता था। जब ग्यारहवें वर्ष सुल्तानी सारशब्द के दीक्षार्थ आ रहा था तो एक मकान के साथ से रास्ता था। उस मकान की मालकिन ने छत से कूड़ा बुहारकर गली में डाला तो गलती से भक्त के ऊपर गिर गया। सुल्तान इब्राहिम के ऊपर कूड़ा गिरा तो वह ऊँची आवाज में बोला, क्या तुझे दिखाई नहीं देता? गली में इंसान भी आते-जाते हैं? यदि मैं आज राज्य त्यागकर न आया होता तो तेरी देही का चॉम उधेड़ देता । उस बहन ने क्षमा याचना की और कहा, हे भाई! मेरी गलती है, मुझे पहले गली में देखना चाहिए था। आगे से ध्यान रखूँगी। वह मकान वाली बहन भी जिन्दा बाबा की भक्तमति थी। उसने जब इब्राहिम को आश्रम में देखा तो गुरू जी से पूछा, हे गुरूदेव! वह जो भक्त बैठा है एकान्त में, क्या वह कभी राजा था? जिन्दा बाबा ने पूछा, क्या बात है बेटी? यहाँ तो राजा और रंक में कोई भेद नहीं है। आपने यह प्रश्न किस कारण से किया? यह पहले बलख शहर का राजा था। इसको मैंने ज्ञान समझाया तो इसने राज्य त्याग दिया और मेहनत करके लकड़ियां बेचकर निर्वाह करता है, भक्ति भी करता है। उस बहन ने बताया कि मेरे से गलती से सूखा कूड़ा छत से फैंकते समय इसके ऊपर गिर गया तो यह बहुत क्रोधित हुआ और बोला कि यदि मैंने राज्य न त्यागा होता

तो तेरी खाल उतार देता। सत्संग के पश्चात् सार शब्द लेने वालों को बुलाया गया। जब सुल्तान अब्राहिम की बारी आई तो गुरू जी ने कहा कि अभी तो आप राजा हो, सार शब्द तो बच्चा! दास को मिलता है जिसने शरीर को मिट्टी मान लिया है। सुल्तानी ने कहा, गुरूदेव! राज्य को त्यागे तो वर्षों हो चुके हैं। गुरू महाराज जी ने कहा, मुझसे कुछ नहीं छुपा है। तूने जैसा राज्य त्यागा है। राज भाव नहीं त्यागा है। आप एक वर्ष के पश्चात् इसी दिन सारनाम के लिए आना। एक वर्ष के पश्चात् फिर सुल्तानी आ रहा था। उसी मकान के साथ से आना था। गुरू जी ने उसी शिष्या से कहा कि कल वह राजा सारशब्द लेने आएगा। तेरे मकान के पास से रास्ता है, और कोई रास्ता कुटिया में आने का नहीं है। अबकी बार उसके ऊपर पानी में गोबर-राख घोलकर बाल्टी भरकर उसके ऊपर डालना। फिर उसकी क्या प्रतिक्रिया रहे, वह मुझे बताना। उस बहन ने ऐसा ही किया। बहन ने साथ-साथ यह भी कहा कि हे भाई! धोखे से गिर गया। मैं धोकर साफ कर दूँगी। आप यहाँ तालाब में स्नान कर लो। सुल्तान ने कहा कि बहन मिट्टी के ऊपर मिट्टी ही तो गिरी है, कोई बात नहीं, मैं स्नान कर लेता हूँ, कपड़े धो लेता हूँ। उस शिष्या ने गुरूदेव को सुल्तानी की प्रक्रिया बताई, तब उसको सारशब्द दिया और कहा, बेटा! आज तू दास बना है। अब तेरा मोक्ष निश्चित है।

इसलिए भक्तजनों को इस कथा से शिक्षा लेनी चाहिए। सारशब्द प्राप्ति के लिए शीघ्रता न करें। अपने अंदर सब विकारों को सामान्य करें। विवेक से काम लें, मोक्ष निश्चित है।

''राजा बड़ा है या भक्त राज''

एक बार सुल्तान अधम अपने बलख शहर के बाहर एक तालाब पर जाकर बैठ गया। उसका पुत्र राजा था। पता चला तो हाथी पर चढ़कर बैंड-बाजे के साथ तालाब पर पहुँचा। पिता जी से घर चलने को कहा। सुल्तान ने साफ शब्दों में मना कर दिया। लड़के ने कहा कि आपने यह क्या हुलिया बना रखा है? आप यहाँ ठाठ से रहो। आप भिखारी बनकर कष्ट उठा रहे हो। मेरी आज्ञा से आज सब कुछ हो जाता है। सुल्तान ने कहा कि जो परमात्मा कर सकता है, वह राजा नहीं कर सकता। लड़के ने कहा कि आप आज्ञा दो, वही कर दूँगा। आपको हमारे पास रहना होगा। सुल्तानी ने कहा कि ठीक है, स्वीकार है। मैं हाथ से कपड़े सीने की एक सूई इस तालाब में डालता हूँ। यह सूई जल से निकालकर मेरे को लौटा दे। राजा ने सिपाहियों, गोताखोरों तथा जाल डालने वालों को बुलाया। सब प्रयत्न किया, परंतु व्यर्थ। लड़के ने कहा, पिताजी! एक सूई के बदले हजार सूईयाँ ला देता हूँ। क्या आपका अल्लाह यह सूई निकाल देगा? तब सुल्तान ने कहा कि हे पुत्र! यदि मेरा अल्लाह यही सूई निकाल देगा तो क्या तुम भक्ति करोगे? क्या सन्यास ले लोगे? लड़के ने कहा कि आप पहले यह सूई अपने प्रभु से निकलवाओ, फिर सोचूँगा। इब्राहिम ने कहा कि परमात्मा की बेटी मछलियों! मुझ दास की एक सूई आपके तालाब में गिर गई है। मेरी सूई निकालकर मुझे देने की कृपा करें। कुछ ही क्षणों के उपरांत एक मछली मुख में सूई लिए इब्राहिम के पास किनारे पर आई। इब्राहिम ने सूई पकड़ ली और मछलियों का हाथ जोड़कर धन्यवाद किया। तब सुल्तानी ने कहा, बेटा! देख परमात्मा जो कर सकता है, वह मानव चाहे राजा भी क्यों न हो, नहीं कर सकता। अब क्या भक्ति करेगा? पुत्र ने कहा कि भगवान ने आपको सूई ही तो दी है, मैं तो आपको हीरे-मोती दे सकता हूँ। भक्ति तो वृद्धावस्था में करूंगा। भक्त इब्राहिम उठकर चल पड़ा। अपनी गुफा में चला गया।

''विकार जैसे काम, मोह, क्रोध, वासना नष्ट नहीं होते, शांत हो जाते हैं''

विकार मरे ना जानियो, ज्यों भूभल में आग। जब करेल्लै धधकही, बचे सतगुरू शरणा लाग।।

एक समय इब्राहिम सुल्तान मक्का में गया हुआ था। उनका उद्देश्य था कि भ्रमित मुसलमान श्रद्धालु मक्का में हज के लिए या वैसे भी आते रहते हैं। उनको समझाना था। उनको समझाने के लिए वहाँ कुछ दिन रहे। कुछ शिष्य भी बने। किसी हज यात्री ने बलख शहर में जाकर बताया कि इब्राहिम मक्का में रहता है। छोटे लड़के ने पिता जी के दर्शन की जिद की तो उसकी माता-लड़का तथा नगर के कुछ स्त्री-पुरूष भी साथ चले और मक्का में जाकर इब्राहिम से मिले। इब्राहिम अपने शिष्यों को शिक्षा देता था कि बिना दाढ़ी-मूछ वाले लड़के तथा परस्त्री की ओर अधिक देर नहीं देखना चाहिए। ऐसा करने से उनके प्रति मोह बन जााता है। अपने लड़के को देखकर इब्राहिम पर रहा नहीं गया, एकटक बच्चे को देखता रहा। लड़के की आयु लगभग 13 वर्ष थी। शिष्यों ने कहा कि गुरूदेव आप हमें तो शिक्षा देते हो कि बिना दाढ़ी-मूछ वाले बच्चे की ओर ज्यादा देर नहीं देखना चाहिए, स्वयं देख रहे हो। इब्राहिम ने कहा, पता नहीं मेरा आकर्षण इसकी ओर क्यों हो रहा है? उसी समय एक वृद्ध ने कहा, राजा जी! यह आपकी रानी है और यह आपका पुत्र है। आप राज्य त्यागकर आए, उस समय यह गर्भ में था। आपसे मिलने आए हैं। उसी समय लड़का पिता के चरणों को छूकर गोदी में बैठ गया। इब्राहिम की आँखों में ममता के आँसूं छलक आए। परमेश्वर की ओर से आकाशवाणी हुई कि हे सुल्तानी! तेरे को मेरे से प्रेम नहीं रहा। अपने परिवार से प्रेम है। अपने घर चला जा। उसी समय इब्राहिम को झटका लगा तथा आँखें बंद करके प्रार्थना की कि हे परमात्मा! मेरे वश से बाहर की बात है, या तो मेरी मृत्यु कर दो या इस लड़के की। उसी समय लड़के की मृत्यु हो गई। इब्राहिम उठकर चल पड़ा। बलख से आए व्यक्ति लड़के के अंतिम संस्कार करने की तैयारी करने लगे। परमात्मा पाने के लिए भक्त को प्रत्येक कसौटी पर खरा उतरना पड़ता है। तब सफलता मिलती है। उस लड़के के जीव को परमात्मा ने तुरंत मानव जीवन दिया और अपने भक्त के घर में लड़के को उत्पन्न किया। बचपन से ही उस आत्मा को परमात्मा का मार्ग मिला। एक बार सब भक्त बाबा जिन्दा के आश्रम में सत्संग में इकट्ठे हुए। वह लड़का उस समय 4 वर्ष की आयु का था। परमेश्वर की कृपा से उसका बिस्तर तथा इब्राहिम का बिस्तर साथ-साथ लगा था। इब्राहिम को देखकर लड़का बोला, पिताजी! आप मुझे मक्का में क्यों छोड़ आए थे? मैं अब भक्त के घर जन्मा हूँ। देख न अल्लाह ने मुझे आप से फिर मिला दिया। यह बात गुरू जी जिन्दा बाबा (परमेश्वर कबीर जी) के पास गई तो जिन्दा बाबा ने बताया कि यह इब्राहिम का लड़का है जो मक्का में मर गया था। अब परमात्मा ने इस जीव को भक्त के घर जन्म दिया है। इब्राहिम को लड़के के मरने का दुःख बहुत था, परंतु किसी को साझा नहीं करता था। उस दिन उसने कहा, कृपासागर! तू अन्तर्यामी है। आज मेरा कलेजा (दिल) हल्का हो गया। मेरे मन में रह-रहकर आ रहा था कि परमात्मा ने यह क्या किया? इसकी माँ घर पर किस मुँह से जाएगी? आज मेरी आत्मा पूर्ण रूप से शांत है। जिन्दा बाबा ने उस लड़की पूर्व वाली माता यानि इब्राहिम की पत्नी को संदेश भिजवाया कि वह आश्रम आए। लड़के तथा उसके नए माता-पिता तथा इब्राहिम को भी बुलाया। उस लड़के को पहले वाली माता से मिलाया। लड़का देखते ही बोला, अम्मा जान! आप मेरे को मक्का छोड़कर चली गई। वहाँ पर अल्लाह आए, देखो ये बैठे (जिन्दा बाबा की ओर हाथ करके बोला) और मेरे को साथ लेकर इनके घर छोड़ गए। मैं इस माई के पेट

में चला गया। फिर मेरा जन्म हुआ। अब मैं दीक्षा ले चुका हूँ। प्रथम मंत्र का जाप करता हूँ। हे माता जी! आप भी गुरू जी से दीक्षा ले लो, कल्याण हो जाएगा। इब्राहिम की पत्नी ने दीक्षा ली और कहा कि इस लड़के को मेरे साथ भेज दो। परमेश्वर कबीर जी (जिन्दा बाबा) ने कहा कि यदि उस नरक में (राज की चकाचौंध में) रखना होता तो इसकी मत्यु क्यों होती? अब तो आप आश्रम आया करो और महीने में सत्संग में बच्चे के दर्शन कर जाया करो। इब्राहिम को उस लड़के में अपनापन नहीं लगा क्योंकि वह किसी अन्य के शरीर से जन्मा था। परंतु उसके भ्रम, मन की मूर्खता का नाश हो गया। जो वह मन-मन में कहा करता कि अल्लाह ने यह नहीं करना चाहिए था। अब उसे पता चला कि परमात्मा जो करता है, अच्छा ही करता है। भले ही उस समय अपने को अच्छा न लगे। अल्लाह के सब जीव हैं, वह सबके हित की सोचता है। हम अपने-अपने हित की सोचते हैं। रानी को भी उस लड़के में वह भाव नहीं था, परंतु आत्मा वही थी। इसलिए माता वाली ममता दिल में जाग्रत थी। इसलिए उसको देखकर शांति मिलती थी। यह कारण बनाकर परमेश्वर जी ने उस रानी का भी उद्धार किया और बालक का भी।

''भक्त तरवर (वृक्ष) जैसे स्वभाव का होता है''

एक बार एक समुद्री जहाज में एक सेठ व्यापार के लिए जा रहा था। उसके साथ रास्ते का खाना बनाने वाले तथा मजाक-मस्करा करके दिल बहलाने वालों की पार्टी भी थी। लम्बा सफर था। महीना भर लगना था। मजाकिया व्यक्तियों को एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जिसके ऊपर सब मजाक की नकल झाड़ सकें। खोज करने पर इब्राहिम को पाया और पकड़कर ले गए। सोचा कि इस भिखारी को रोटियाँ चाहिए, मिल जाएंगी। समुद्र में दूर जाने के पश्चात् सेठ के लिए मनोरंजन का प्रोग्राम शुरू हुआ। इब्राहिम के ऊपर मजाक झाड़ रहे थे। कह रहे थे कि एक इस (इब्राहिम) जैसा मूर्ख था। वह वृक्ष की उसी डाली पर बैठा था जिसे काट रहा था। गिरकर मर गया। हा-हा करके हँसते थे। इस प्रकार बहुत देर तक ऐसी अभद्र टिप्पणियाँ करते रहे।

इब्राहिम बहुत दुःखी हुआ। सोचा कि महीनों का दुःख हो गया। न भक्ति कर पाऊँगा, न चैन से रह पाऊँगा। उसी समय आकाशवाणी हुई कि हे भक्त इब्राहिम! यदि तू कहे तो इन मूर्खों को मार दूँ। जहाज को डुबो दूँ, तुझे बचा लूँ। ये तेरे को तंग करते हैं। यह आकाशवाणी सुनकर जहाज के सब व्यक्ति भयभीत हो गए। इब्राहिम ने कहा, हे अल्लाह! यह कलंक मेरे माथे पर न लगा। ये बेखबर हैं। इतने व्यक्तियों के मारने के स्थान पर मुझे ही मार दे या इनको सद्बुद्धि दे दो, ये आपकी भक्ति करके अपने जीव का कल्याण कराऐं। जहाज मालिक सहित सब यात्रियों ने इब्राहिम से क्षमा याचना की तथा परमात्मा का ज्ञान सुना। आदर के साथ अपने साथ रखा। भक्ति करने के लिए जहाज में भिन्न स्थान दे दिया। इब्राहिम ने उन सबको सत्यज्ञान समझाकर आश्रम में लाकर गुरू जी से दीक्षा दिलाई।

इब्राहिम स्वयं दीक्षा दिया करता था। जब जिन्दा बाबा यानि परमेश्वर कबीर जी को किसी ने इब्राहिम की उपस्थिति में बताया कि हे गुरूदेव! इब्राहिम दीक्षा देता है। तब परमेश्वर जी ने बताया कि हे भक्त! आप गलती कर रहे हो। आप अधिकारी नहीं हो। उस दिन के पश्चात् इब्राहिम ने दीक्षा देनी बंद की तथा अपने सब शिष्यों को पुनः गुरू जी से उपदेश दिलाया। क्षमा याचना की, स्वयं भी अपना नाम शुद्ध करवाया। भविष्य में एसी गलती नहीं की।

कबीर सागर के अध्याय ''सुल्तान बोध'' का सारांश सम्पूर्ण हुआ।

अध्याय ''निरंजन (काल) बोध'' का सारांश

कबीर सागर में 17वां अध्याय ''निरंजन बोध'' पष्ठ 5(851) पर है। इस स्थान पर ''निरंजन बोध'' अधूरा लिखा है। सम्पूर्ण ज्ञान इसी पुस्तक ''कबीर सागर का सरलार्थ'' में अध्याय ज्ञान सागर के सारांश में अनुराग सागर की वाणियों के अनुवाद में पष्ठ 80 से 88 तक तथा सष्टि रचना में पष्ठ 603 से 624 तक पढ़ें।

अध्याय ''ज्ञान बोध'' का सारांश

कबीर सागर में ज्ञान बोध 18वां अध्याय पष्ठ 16(862) पर है।

सतगुरू कबीर परमेश्वर जी ने ज्ञान बोध में धर्मदास जी को पात्र बनाकर विश्व के मानव को काल का जाल समझाया है तथा बताया है कि काल के जाल से कैसे निकला जा सकता है। कुछ भ्रमित साधक साधना करते हैं काल ब्रह्म तथा इसके तीनों पुत्रों श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव जी की तथा दावा करते हैं काल जाल से निकलने का। जब तक सतगुरू नहीं मिलेगा, तब तक सार शब्द नहीं मिल सकता, न ही सतनाम मिल सकता। सतनाम तथा सार शब्द बिना काल जाल से छूटा नहीं जा सकता। जिनको सतगुरू नहीं मिला, वे कैसा दावा कर रहे हैं कि हम मोक्ष प्राप्त कर लेंगे?

ज्ञान सागर पष्ठ 16(862) का सारांश :- आदि अनाम ब्रह्म है न्यारा अर्थात् पूर्ण परमात्मा तो भिन्न है। उसका नाम जाप आपके शास्त्रों में नहीं है। इसलिए अनाम कहा है। वह सब प्रभुओं से भिन्न है। बिन सतगुरू के उसकी भक्ति विधि नहीं मिल सकती। जिस कारण से सब प्राणी संसार सागर में डूब रहे हैं यानि पार नहीं हो पा रहे हैं। इसलिए जगत के प्राणियों को समझाओ कि संसार सागर से सतनाम की नौका में बैठाकर सतगुरू खेवट बनकर पार करेगा। जो आदि ब्रह्म यानि परम अक्षर ब्रह्म सबसे भिन्न है। उसकी भक्ति करो। जब शरीर त्यागकर जाओगे तो सीधे सतलोक में चले जाओगे।

पष्ठ 17 का सारांश :- कबीर परमेश्वर जी ने कहा, हे धर्मदास! मैंने आदि नाम का ज्ञान करवाया। आदि ब्रह्म की जानकारी दी, परंतु तत्त्वज्ञानहीन अज्ञानी जीव नहीं मानते, उल्टा कहते हैं कि यह जुलाहा (धाणक) मतिहीन यानि अज्ञानी है। हमारे ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव की आलोचना करता है यानि इनको महिमाहीन कहता है। कहता है ''तीन देव की जो करते भक्ति, उनकी कदे न होवे मुक्ति।'' यह जुलाहा जो कभी-कभी जिन्दा बाबा का वेश बनाकर पाखण्ड करता है। यह क्या जाने श्री रामचन्द्र जी की महिमा जिसने लंका के राजा रावण का चिन्ह मिटा दिया। रावण ने राम की पत्नी सीता का अपहरण किया था। जिस कारण से रावण का नाश राम जी ने किया था और क्या-क्या महिमा कहूँ भगवान विष्णु उर्फ रामचन्द्र जी की। कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि हे धर्मदास! यह भोला प्राणी अज्ञानता के वश ऐसी भाषा मेरे प्रति बोलता है। ''आदि नाम मैं भाख सुनाई, यह जग जीव न चेता भाई।''

भावार्थ :- कबीर जी ने कहा कि आदिनाम यानि सारशब्द मैंने बोलकर सुनाया, परंतु काल लोक का जीव सचेत नहीं हुआ। आदिनाम को भूल गए हैं। काल ब्रह्म के मायाजाल में लिपटे हैं। सच्चा साहब यानि सत्य साहब (सच्चा मालिक) किसी को मिला नहीं। ये राम-कष्ण की भक्ति में लगे हैं। जो साधक निज नाम यानि वास्तविक भक्ति मंत्र (सतनाम, सार शब्द) लेवेगा, वही अमर

लोक में पहुँचेगा।

ज्ञान बोध के पष्ठ 18 का सारांश :- कबीर परमेश्वर जी ने कहा कि हे धर्मदास! आदि नाम हम भाख सुनाया, मूर्ख जीव मर्म नहीं पाया। **जगत के व्यक्ति काल ब्रह्म के भेजे दूत संतों द्वारा भ्रमित होकर कहते हैं कि यह जुलाहा (धाणक) कबीर अज्ञानी है। यह परमात्मा का ज्ञान नहीं रखता। यह नीच जाति का है। इसको अक्षर ज्ञान नहीं है। काल ब्रह्म के भेजे भ्रमित ब्राह्मण कहते हैं कि वेद, शास्त्र, गीता को हमने अच्छी तरह जाना है। वेद-शास्त्र कहते हैं कि ब्रह्मा-विष्णु तथा शिव से भिन्न कोई प्रभु नहीं है।**

वेद–पुराण हमने जाना। ब्रह्मा विष्णु महेश्वर माना।।
सार बेद में देखा भाई। रजगुण, सतगुण, तमगुण साँई।।
गीता, भागवत पुस्तक नाना। कहें निस दिन जाप करो इन्हीं भगवाना।।
आदि भवानी तीनों देवा। इनकी सब मिल साधें सेवा।।
ऐसा ज्ञान हमारा होई। जुलाहा का कहा न मानो कोई।।

ज्ञान बोध पष्ठ 19 का सारांश :- कबीर परमेश्वर जी ने कहा कि हे धर्मदास! इन काल ब्रह्म के दूत गुरूओं ने उपरोक्त ज्ञान चला रखा है। इस काल से भ्रमित जगत के व्यक्तियों की उल्टी रीति है। ये वास्तविक नाम तथा सच्चे परमात्मा से परिचित नहीं हैं। काल ब्रह्म से प्रेम किए हैं जो इन सबको खाता है। जैसे गीता अध्याय 15 के श्लोक 1 से 4 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि हे अर्जुन! यह संसार एक पीपल के वक्ष के तुल्य जानों। जिस संसार रूप वक्ष की मूल (जड़) यानि मूल मालिक तो ऊपर के लोकों में है तथा नीचे को तीनों गुण रूपी (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु, तमगुण शिव रूपी) शाखा हैं। इससे अधिक मैं आपको नहीं बता सकता क्योंकि इसके आदि-अंत को मैं नहीं जानता। इसके लिए गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 4 श्लोक 32, 34 में स्पष्ट ही कर दिया है कि सम्पूर्ण आध्यात्मिक ज्ञान तो (ब्रह्मणः मुखे) सच्चिदानन्द घन ब्रह्म अपने मुख कमल से बोली वाणी में दिए तत्त्वज्ञान में विस्तार के साथ बताता है। उसको जानकर सब पापों से मुक्ति मिल जाती है। वह तत्त्वज्ञान है।(गीता अध्याय 4 श्लोक 32)

गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि अर्जुन! तू उस ज्ञान को तत्त्वदर्शी संतों के पास जाकर समझ। उनको दण्डवत् प्रणाम करके नम्रतापूर्वक कपट छोड़कर प्रश्न करने से वे परमात्म तत्त्व को जानने वाले महात्मा तुझे तत्त्वज्ञान का उपदेश करेंगे।(गीता अध्याय 4 श्लोक 34)

गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि हे अर्जुन! तत्त्वज्ञान की प्राप्ति के पश्चात् परमेश्वर के उस परम पद की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर संसार में नहीं आते। जिस परमात्मा ने संसार रूपी वक्ष की रचना की है। उसी की भक्ति कर।

गीता अध्याय 15 श्लोक 16 में दो पुरुष कहे हैं। एक क्षर पुरूष, यह गीता ज्ञान दाता काल ब्रह्म है तथा दूसरा अक्षर पुरूष है। ये दोनों नाशवान हैं। इनके अंतर्गत जितने प्राणी हैं, वे भी नाशवान हैं। आत्मा तो सबकी अमर है। वह तो कुत्ते-गधे की भी अमर है।

गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में अन्य पूर्ण परमात्मा बताया है जो संसार रूप वक्ष की जड़ (मूल) है। जिसका ज्ञान गीता ज्ञान दाता ने अर्जुन को गीता अध्याय 8 श्लोक 1 के प्रश्न किया कि तत् ब्रह्म क्या है? उसका उत्तर गीता ज्ञान दाता ने अध्याय 8 के ही श्लोक 3 में दिया है। कहा है कि जिसे तत् ब्रह्म कहते हैं, वह ''परम अक्षर ब्रह्म'' है।

गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में स्पष्ट किया है जो क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष अध्याय 15 के श्लोक 16 में कहे हैं। उनसे भिन्न उत्तम पुरूष यानि पुरूषोत्तम तो कोई अन्य है जिसे परमात्मा कहा जाता है। वही तीनों लोकों (क्षर पुरूष का 21 ब्रह्माण्ड का क्षेत्र यानि काल लोक, दूसरा अक्षर पुरूष का सात शंख ब्रह्माण्ड तथा ऊपर के चारों लोकों सत्यलोक, अलख लोक, अगम लोक तथा अकह लोक का क्षेत्र अमर लोक कहा जाता है, ऐसे तीनों लोकों का वर्णन यहाँ पर है) में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है, वह मूल मालिक है। वह वास्तव में अविनाशी परमेश्वर है। परमेश्वर कबीर जी ने भी कहा है कि :-

अक्षर पुरूष एक पेड़ है, क्षर पुरूष वाकी डार। तीनों देवा शाखा हैं, पात रूप संसार।।

भावार्थ :- पृथ्वी से बाहर जो भाग होता है, उसको वृक्ष कहते हैं। पृथ्वी के अंदर जो भाग होता है, उसे मूल यानि जड़ कहते हैं। वृक्ष को मूल से आहार मिलता है। उससे तना, मोटी डार, शाखा तथा पत्तों का पोषण होता है। इससे स्पष्ट हुआ कि जो मूल रूप परमेश्वर यानि परम अक्षर ब्रह्म सबका पालक है तथा संसार का सृजनहार है।

गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में कहा है। गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि हे अर्जुन! तू सर्वभाव से उस परमेश्वर की शरण में जा, उस परमेश्वर की कृपा से ही तू परम शांति तथा सनातन परम धाम को प्राप्त होगा।(गीता अध्याय 18 श्लोक 62)

परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को ज्ञान बोध में यह बताया है कि काल ब्रह्म के द्वारा दिए शास्त्र विरूद्ध ज्ञान अर्थात् लोकवेद के आधार से भ्रमित जनता संसार रूप वृक्ष के मूल को छोड़कर डार तथा शाखाओं की पूजा कर रहे हैं। ज्ञान बोध पृष्ठ 19 का सारांश चल रहा है। इसमें लिखा है :-

कबीर मूल राम ना काहू पाये। शाखा डार में जगत भ्रमाये।।
डार शाखा में ध्यान जो धरहीं। निश्चय जाय नरक में परही।।
बेद पढ़ै और भेद न जाने। डार शाखा को पुरूष (प्रभु) बखाने।।
पढ़ें पुरान और बेद बखाने। सतपुरूष का भेद न जाने।।
बेद पुराण यह करे पुकारा। सबही से एक पुरूष (प्रभु) नियारा।।
ताहि न यह जग जाने भाई। तीन देव में ध्यान लगाई।।
तीन देव की करि हैं भक्ति। उनकी कबहु ना होवे मुक्ति।।
तीन देव का अजब ख्याला। देवी देव प्रपंची काला।।
इनमें मत भटको अज्ञानी। काल झपट पकड़ेगा प्राणी।।
तीन देव पुरूष गम्य ना पाई। जग के जीव सब फिरैं भुलाई।।
जो कोई सतपुरूष भजै भाई। ताको देख डरै जम राई।।

भावार्थ :- कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि हे धर्मदास! मूल राम यानि उत्तम पुरूष (पुरूषोत्तम) अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म का ज्ञान किसी को नहीं हुआ। डार यानि क्षर पुरूष तथा शाखाओं अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु, महेश की भक्ति में संसार भटक रहा है। जो इनमें आस्था रखता है, वह नरक में निश्चित गिरेगा। विद्वान बनकर पंडितजन वेद-पुराणों को पढ़ते हैं और उन पर व्याख्यान यानि प्रवचन करते हैं। उनको पुराणों तथा वेदों का ठीक से ज्ञान नहीं है। जिस कारण से व्यर्थ में मेरे से झगड़ा करते हैं। ये कहते हैं कि श्री विष्णु जी, श्री शिव जी, श्री ब्रह्मा जी परमात्मा हैं। गीता चारों वेदों का सारांश है। वेद तथा गीता में लिखा है कि परमात्मा तो सबसे भिन्न है।

उसी की भक्ति करो। उसको यह संसार नहीं जानता। मैं कहता हूँ कि जो तीन देव (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) की भक्ति करते हैं, उनकी कभी मुक्ति नहीं हो सकती। देवी तथा देवताओं व काल ब्रह्म में आस्था मत रखो, आपको काल अचानक झपट कर ले जाएगा। तीनों देवताओं यानि ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव को भी परम अक्षर पुरूष का गम्य यानि भेद नहीं मिला। अन्य जीव जो इनके साधक हैं, उनको कैसे परमेश्वर मिलेंगे? अर्थात् कभी मुक्ति नहीं हो सकती। जो सतपुरूष यानि परम अक्षर ब्रह्म को भजता है, उसको देख (जम राई) काल राजा यानि काल पुरूष भी भय मानता है।

ज्ञान बोध पृष्ठ 20 का सारांश :- परमेश्वर कबीर जी ने बताया है कि पंडितजन अपने आपको विद्वान तथा परमात्मा के भक्त कहते हैं और मूर्ति पूजा करते हैं। पत्थर-पानी की पूजा करके अपना अनमोल जन्म नष्ट कर रहे हैं। तीनों देवता सगुण (व्यक्त) हैं, काल निरंजन (निर्गुण) अव्यक्त है। इनसे पार पूर्ण परमात्मा है।

बेद पढ़ें पर भेद ना जानें, बांचैं पुराण अठारा। पत्थर की पूजा करें, भूल गए सिरजनहारा।।
ब्राह्मण भूले बावरे सरगुण मत के जोर। लाख चौरासी भोगेहीं पार ब्रह्म के चोर।।
तीनों गुण सरगुण होई। ब्रह्मा विष्णु शिव है सोई।।
चौथा निरगुण निरंजन राई। निज उत्पत्ति बना के खाई।।
ताके परे इक राम नियारा। सो निर्गुण सरगुण के पारा।।

ज्ञान बोध पृष्ठ 21 का सारांश :- परमेश्वर कबीर जी अपना भेद स्वयं ही बताया करते हैं। वे कह रहे हैं कि जो सबसे भिन्न पार ब्रह्म है यानि परम अक्षर ब्रह्म है, उसको यह संसार नहीं जानता। ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव में सर्व संसार आस्था लगाए है। सत्य कबीर नाम के जाप का आनन्द नहीं लेता।

ब्रह्मा विष्णु शिव ही जग झांकै। सत कबीर नाम रस ना छाकै।।
नाम अमल रस चाखै कोई। ताका जरा मरण ना होई।।
सतगुरू भक्ति करै जो कोई। जाति वर्ण दुर्मति सब खोई।।
आदि नाम का जाप करावै। भव सागर बहुर नहीं आवै।।
आदि नाम की गहे जो आशा। सतगुरू काटे काल की फांसा।।
आदिनाम है गुप्त अमोला। धर्मदास मैं तुम से खोला।।
धर्मदास यह जग बौराना। कोई ना जाने पद निर्वाणा।।
यही कारण मैं कथा पसारा। जग से कहिए एक राम नियारा।।
यही ज्ञान जग जीव सुनाओ। सब जीवों का भ्रम नशाओ।।

''सृष्टि रचना की वाणी'' (ज्ञान बोध पृष्ठ 21-22 से)

भ्रम गए जब बेद पुराणा। आदि राम का भेद ना जाना।।
राम–राम सब जगत बखाने। आदि राम कोई बिरला जाने।।
राजा राम को यह जग जाने। सबको ताका भेद बखाने।।
अब मैं तुमसे कहूं चिताई। त्रयदेवन की उत्पत्ति भाई।।
कुछ संक्षेप कहूं गोहराई। सब संशय तुम्हरे मिट जाई।।
ज्ञानी सुने सो हृदय लगाई। मूर्ख सुने तो गम्य नहीं पाई।।
माँ अष्टंगी पिता निरंजन। वे जम दारूण वंशन अंजन।।

पहले कीन निरंजन राई। पीछे से माया उपजाई।।
माया रूप देख अति शोभा। देव निरंजन तन मन लोभा।।
कामदेव धर्मराय सताये। देवी कूं तुरंत धर खाये।।
पेट से देवी करी पुकारी। हे साहब मोहे लेवो उबारी।।
टेर सुनि सतगुरू तहं आए। अष्टंगी को बंद छुड़वाये।।
धर्मराय ने हिकमत कीन्हा। नख रेखा से भग कर लीना।।
धर्मराय कीन्हें भोग विलासा। माया को रही तब आशा।।
तीन पुत्र अष्टंगी जाये। ब्रह्मा विष्णु शिव नाम धराये।।
तीन देव संसार चलाये। इनमें यह जग धोखा खाये।।
सतपुरूष का भेद कैसे कोई पाए। काल निरंजन जग भ्रमाए।।
तीन लोक अपने सुत दीन्हा। सुन्न निरंजन बासा लीन्हा।।
अलख निरंजन सुन्न ठिकाना। ब्रह्मा विष्णु शिव भेद न जाना।।
तीन देव सो उसको ध्यावैं। निरंजन का वे पार न पावैं।।
अलख निरंजन बड़ा बटपारा। तीन लोक जीव करत आहारा।।
ब्रह्मा विष्णु शिव नहीं बचाये। सकल खाय पुन धूल उड़ाये।।
तिनके सुत हैं तीनों देवा। आंधर जीव करत हैं सेवा।।
अकाल पुरूष काहू नहीं चीन्हा। काल पाय सबही गह लीन्हा।।
ऐसा राम सकल जग जाने। आदि ब्रह्म (तत् ब्रह्म) को ना पहचाने।।
तीनों देव और अवतारा। ताको भजै सकल संसारा।।
गुण तीनों की भक्ति में, भूल परो संसार।
कहैं कबीर निज राम बिना, कैसे उतरो पार।।

भावार्थ :- उपरोक्त वाणियों में परमेश्वर कबीर जी ने सृष्टि का आंशिक ज्ञान दिया है। सम्पूर्ण ज्ञान आप इसी पुस्तक के पृष्ठ 603 से 670 तक पढ़ें। इसमें बताया है कि दुर्गा देवी तथा ज्योति निरंजन ने भोग-विलास (Sex) करके तीन पुत्र ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव की उत्पत्ति की। काल प्रतिदिन एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों को खाता है। अपने तीनों पुत्रों को भी खाता है। संत गरीबदास जी को भी परमेश्वर कबीर जी धर्मदास जी की तरह मिले थे। उनको सत्यलोक लेकर गए थे, फिर वापिस छोड़े थे। उसके पश्चात् संत गरीबदास जी ने भी परमात्मा से प्राप्त ज्ञान बताया।

माया आदि निरंजन भाई। अपने जाये आपै खाई।।
ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर माया और धर्मराया कहिए।
इन पाँचों मिल प्रपंच बनाया, वाणी हमरी लहिए।।

ज्ञान बोध पृष्ठ 23 का सारांश :-

कबीर, ऐसा राम कबीर ने जाना। धर्मदास सुनिये दे काना।।
जग जीवों को दीक्षा देही। सतनाम बिन पुरूष द्रोही।।
ज्ञानहीन जो गुरू कहावै। आपन भूला जीवन भुलावै।।
ऐसा ज्ञान चलाया भाई। सत साहब की सुध बिसराई।।
या दुनिया दोरंगी भाई। जीव गह शरण काल की जाई।।

भावार्थ :- कबीर परमेश्वर जी ने कहा कि हे धर्मदास! कान देकर यानि ध्यान से सुन ले। जो सबसे भिन्न परमात्मा है, वह मैंने जाना है। जो सतनाम की दीक्षा नहीं लेता और जो गुरू सतनाम नहीं जानता या जो अधिकारी न होकर सतनाम की दीक्षा देता है, वह परमेश्वर का द्रोही है। यह दुनिया दोगली है। हमारा ज्ञान सुनकर नाम दीक्षा लेकर फिर से वही पूजा काल वाली करने लगती है। ऐसा ज्ञान संसार में फैला दिया। सत साहब यानि सच्चे परमात्मा (परम अक्षर ब्रह्म) का नाम ही भुला रखा है।

ज्ञान बोध पृष्ठ 24 से 26 तक सामान्य ज्ञान है।

ज्ञान बोध पृष्ठ 25 पर एक वाणी है :-

सार शब्द ब्राह्मण नहीं जाने। आदि नाम शुद्र ही बखाने।।

भावार्थ :- ऊँची जाति वाले ब्राह्मण सारशब्द नहीं जानते। जिस कारण से अपना अनमोल जीवन नष्ट कर रहे हैं। उस सार शब्द यानि आदिनाम को भेद शुद्र यानि छोटी जाति वाला कबीर जुलाहा बखान करता है यानि वर्णन करता है।

ज्ञान बोध पृष्ठ 27 का सारांश :-

परमेश्वर कबीर जी ने सत्यलोक तथा अपनी महिमा आप ही बताई है। कहा है कि अनामी पुरूष का ज्ञान बताया है। निहअक्षर अर्थात् जो अक्षर से भिन्न है, उसको मेरे अतिरिक्त कोई नहीं जानता। अमर लोक यानि सतलोक में परमेश्वर का अमर शरीर है। उस लोक में अकाल पुरूष अर्थात् अविनाशी परमात्मा स्वयं रहता है।

धर्मदास जहां वास हमारा। काल महाकाल न पावै पारा।।
निर्भय घर बोही है भाई। रोग न ब्यापे काल न खाई।।
ऐसा है वह देश हमारा। जहां से हम आए संसारा।।
ताकी भक्ति करे जो कोई। भव ते छूटै जन्म न होई।।
वहां जाय जीव करै विलासा। अमर लोक में नहीं जीव का नाशा।।
कहै कबीर सुनो धर्मदासा। आदि नाम कहों तुम पासा।।
मूर्ख सतगुरू मर्म ना पावै। भव सागर में भटका खावै।।

उपरोक्त वाणियों का भावार्थ समझाने की आवश्यकता नहीं है, अपने आप ही स्पष्ट हैं, Self Speaking हैं।

पृष्ठ 28 ज्ञान बोध में गुरू की महिमा का कुछ ज्ञान है, ज्ञान बोध पृष्ठ 29 का सारांश :-

परमेश्वर कबीर जी ने अपने को छुपाकर कहा है कि सतपुरूष ने मुझे जीवों को समझाने के लिए भेजा है। वास्तव में कबीर जी ही परमेश्वर हैं।

हम हैं सतलोक के बासी। दास कहाय प्रकटे काशी।।
कलियुग में काशी चलि आए। जब हमरे तुम दर्शन पाये।।
तब हम नाम कबीर धराये। काल देख तब रह मुरझाय।।
देह नहीं और दरशै देही। जग ना चीन्हे पुरूष विदेही।।
नहीं बाप ना माता जाये। अबगत से हम चल आये।।
होते विदेह देह धरि आए। आदि नाम जग टेर सुनाये।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने बताया है कि हम पूर्ण परमात्मा हैं और काशी नगर (भारतवर्ष) में दास बनकर प्रकट हुआ हूँ।

मेरी पाँच तत्त्व की देह अर्थात् शरीर नहीं है। इसको विदेह कहा जाता है। यह देह दिखाई दे रही है। मेरी देही तेरी जैसी देह नहीं है। इसको विदेह कहते हैं। विदेह का अर्थ यही माना जाता है कि देह रहित परंतु मेरी देह यानि शरीर आप देख रहे हैं। मेरा जन्म माता-पिता से नहीं हुआ, मैं स्वयंभू हूँ। हम विदेह थे यानि विशेष शरीर में थे जो चर्म दष्टि से देखा नहीं जा सकता यानि अधिक प्रकाशमय विलक्षण शरीर है। उसके ऊपर अन्य चोला (शरीर) पहनकर हम आए हैं। मैं चारों युग में आया हूँ। चारों युग के चार नाम रहे हैं।

चारों युग के चारों नामा। माया रहित रहे तिहि ठामा (स्थान)।।
सतजुग में सत सुकत कहाये। त्रेता नाम मुनिन्द्र धराए।।
द्वापर में करूणामय कहाए। कलियुग नाम कबीर रखाये।।
आदिनाम चारों युग टेरा। सज्जन जीव सुनत ही आया नेरा।।
जो जो जीव शरण में आये। तिनको हमने नाम सुनाये।।

भावार्थ की आवश्यकता नहीं है। वाणी स्वयं बोलती है, Self Speaking है।

ज्ञान बोध पष्ठ 30 का सारांश :- धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से भक्तों यानि साधकों के लक्षण जानना चाहा तो कबीर परमेश्वर जी ने बताया कि संसार में बहुत भक्त हुए हैं।

धर्मदास वचन

कह धर्मदास सुनो प्रभु राई। भक्त भाव मोहि देव बताई।।

कबीर वचन

भक्तों की यह कथा पसारा। धर्मदास सुनियो चित्त धारा।।
जग में भक्त भये अधिकारी। जोगी सन्यासी लटा धारी।।
शीव गोरख अरू बहु ब्रह्मचारी। मायाने सबको ठगडारी।।
इनको ठग जब हम पर धाई। गुप्त नाम हम टेर सुनाई।।
लौट गइ माया बहुवारी। हम रहे जीत माया गइ हारी।।
माया जाल है कठिण अपारा। तासे मुनि गण बैठे हारा।।
माया जाल परो मत भाई। धर्मदास जग कहो गुहराई।।
भवसागर है भक्त बहुतेरा। जिनको तुमसे कहो निबेरा।।
मौनी भये मुखहु नहिं बोलें। भेष बनाये घर घर डोलें।।
अंगहि भस्म गले बिच माला। मढ़िया बैठ भये मतवाला।।
धूनि रमाय गुरिया सरकावे। गगन चढ़ाय के जग भरमावें।।
कान फाड़ शिर जटा बढ़ाये। माथे चन्दन तिलक लगाये।।
वस्त्र रंगा जोगी बन आये। प्रभु मिले नहीं भेष बनाये।।
बहुत करैं जप तप रे भाई। आदि नाम कोई नहिं पाई।।
पाहन सेवें भक्त कहावै। चन्दन तेल सिंदूर चढ़ावैं।।
मानुष जन्म बड़े तप होई। नाम बिना झूठे तन खोई।।
साधु युक्ति अस चाल बताऊँ। धर्मदास मैं तुम्हें लखाऊँ।।
काम क्रोध लोभ अहंकारा। सोई साधु जो इतने मारा।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने स्पष्ट किया है कि जिनके पास गुप्त नाम यानि आदिनाम (सार शब्द) है, उसके ऊपर माया का वश नहीं चलता। वह माया में लिप्त नहीं होता। परमेश्वर

कबीर जी ने कहा है कि :-

कबीर, माया दासी संत की, उभय दे आशीष। विलसी और लातों छड़ी, सुमर–सुमर जगदीश।।

अन्य जिनको पूर्ण संत नहीं मिला, सार शब्द प्राप्त नहीं हुआ, उन्होंने बहुत कठिन साधनाऐं की हैं। भिन्न-भिन्न प्रकार की शास्त्र विरूद्ध साधनाऐं की हैं जो सामान्य व्यक्ति नहीं कर सकता। जिस कारण से वे साधक जगत में सुप्रसिद्ध भी हुए हैं, परंतु मोक्ष नहीं हुआ। माया (दुर्गा देवी) ने उन सबको ठग लिया। उनकी सिद्धि शक्ति समाप्त करा दी। कुछ को स्त्री जाल में फंसा दिया। माया (दुर्गा देवी) कई बार मेरे ऊपर जाल डालने आई, परंतु मैंने गुप्त नाम का जाप आवाज लगाकर कर दिया। (इनको ठग जब हम पर आई। गुप्त नाम हम टेर सुनाई।। लौट गई माया बहु बारी। हम रहे जीत माया रही हारी।।)

साधक शास्त्र विधि रहित साधना करके अपना जीवन नष्ट कर जाते हैं। कोई मौन रखता है, मुख से बोलता नहीं, घर-घर जाता है। शरीर के ऊपर भस्म (राख) लगाते हैं। कोई कानों में छिद्र करा लेते हैं, मुद्रा डालते हैं, जिनको कनपाड़ा कहते हैं। कुछ सिर के ऊपर लंबे-लंबे बाल रखते हैं जिनको जटाधारी कहते हैं। मस्तिक के ऊपर तिलक लगाते हैं। कोई वस्त्रों को लाल रंग से रंगकर साधु बन जाते हैं। जनता उनको पूर्ण संत मानने लगती है, उनकी पूजा करने लगती है। परमात्मा इस प्रकार के ऊपरी आडंबर करने से नहीं मिलता।

कबीर, मानुष जन्म बड़े पुण्य से होई। नाम बिना झूठा तन खोई।।
बहुत करें जप तप रे भाई। आदि नाम बिन मुक्ति नाहीं।।

आदिनाम यानि सार शब्द के बिना मोक्ष नहीं हो सकता। वह उपरोक्त आडंबर करने वालों के पास नहीं है। सारशब्द प्राप्त करके भक्त निराभिमानी होना चाहिए। काम (विषय वासना) लोभ, क्रोध आदि से बचे तथा सुका-फीका जैसा भी परमात्मा भोजन दे, उसमें संतोष करे। माँस-मदिरा, नशीली वस्तुओं का सेवन न करे और दिन-रात हमारा नाम यानि आदिनाम का स्मरण करे।

ज्ञान बोध पृष्ठ 31 का सारांश :-

तत्त्व प्रकति और बल माया। इनहिं जीत तब साधु कहाया।।
अन्त कपट सब देय बहाई। क्षमा गंग में बैठ नहाई।।
हार जीत और अभिमाना। इनसों रहित सो साधु जाना।।
बिहंसत बदन भजन को आगर। शीतल दया प्रेम सुखसागर।।
सब षट कर्म छोड़ अज्ञाना। धर ले केवल निर्गुन ध्याना।।
धन्य धन्य जग साधु है सोई। जिन अपनी दुरमति सब खोई।।
ऐसी रहन साधु की भाई। जब हंसा निरभय पद पाई।।
साधु लक्षण तुम्हें सुनाया। गन मुनि कहू भेद न पाया।।
आदि नामको नित गुनगावो। सोवत जागत ना बिसरावो।।
सत साहिब है सबसे न्यारा। ताहि जपे होवे भव पारा।।
भक्त अनेक भये जग माहीं। जोग करै पै युक्ति न पाहीं।।

भावार्थ :- भक्त को परमेश्वर के ऊपर पूर्ण विश्वास होना चाहिए। संसारी हार-जीत से दुःखी तथा सुखी न होकर परमेश्वर की रजा में खुश रहे चाहे कितनी ही हानि हो जाए। परमात्मा की रजा जाने। परमात्मा प्रसन्न रहेगा तो पलभर में सर्व हानि लाभ में बदल देगा। यदि सांसारिक हानि के कारण परमात्मा से दूर हो गया तो समझो सर्वनाश ही हो गया। परमेश्वर कबीर जी ने कहा

कि हे धर्मदास! यह आपको साधक के लक्षण बताए हैं। आदिनाम (सार शब्द) का दिन-रात स्मरण करो। सोते समय तथा जागते समय परमात्मा को न भूलो। सत साहिब यानि अविनाशी परमात्मा सबसे भिन्न है। वह भक्त-संत धन्य है जिसकी दुर्मति यानि अज्ञान समाप्त हो गया है।

ज्ञान बोध पष्ठ 32 का सारांश :- इस पष्ठ पर गुरूदेव की महिमा बताई है। शिष्य को गुरूदेव के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए, यह समझाया है।

गुरू सेवा में फल सब आवै। गुरू विमुख नर पार न पावै।।
गुरू वचन निश्चय कर मानै। पूरे गुरू की सेवा ठानै।।
गुरू से शिष्य करे चतुराई। सेवाहीन नरक में जाई।।

साधक को चाहिए कि वह परस्त्री को माता तथा बहन के समान समझे, परधन पत्थर के तुल्य जाने। जीवों के प्रति दया रखे। जीव हिंसा नहीं करनी चाहिए। ना ही माँस खाना चाहिए। भक्त के हृदय में दयाभाव होना चाहिए। ऐसी साधना करनी चाहिए जिससे सारशब्द प्राप्ति हो सके।

फिर कहा है कि साधक को पाठ भी कराना चाहिए। प्रत्येक पूर्णमासी को यानि महीने में एक दिन पाठ अवश्य कराना चाहिए। यदि प्रति महीने पाठ की रजा नहीं हो सके तो छठे महीने कराना चाहिए। छठे महीने भी पाठ नहीं करा सके तो वर्ष में एक बार पाठ अवश्य कराऐं। कबीर जी का नाम यानि आदिनाम तथा सतनाम व प्रथम मंत्र मिलकर कबीर परमेश्वर द्वारा बताए मंत्र कबीर जी का नाम कहे जाते हैं। इनका जाप अवश्य करें। ऐसे जो करेगा, उसकी मुक्ति अवश्य होगी।

पष्ठ 33 ज्ञान बोध का सार :-

इस पष्ठ पर भी जीव दया का ज्ञान है। जीवों की हत्या कसाई व्यक्ति करते हैं। जो शिकार करके खुशी मनाते हैं, वे दुष्ट अन्यायी हैं।

उनको चाहिए कि बुराई तथा हिंसा त्यागकर सतगुरू शरण में आकर दीक्षा लेकर भक्ति करके अपना कल्याण कराऐं।

ज्ञान बोध पष्ठ 34 का सारांश :-

परमेश्वर कबीर जी ने आदिनाम का परिचय तथा महत्त्व बताया है।

आदिनाम है अजर शरीरा। तन मन से गह सत कबीरा।।
धर्मदास सुन जो गहे कबीरा। सो पावै सुख सागर सीरा (हिस्सा)।।
निज शब्द कबीर है सारा। जाका है निज सकल पसारा।।

इसमें कुछ वाणी मिलावटी हैं जिसमें लिखा है कि धर्मदास और कबीर में भेद न मानें। यह तो गुरू पद पर विराजमान गुरू के प्रति कहा है। फिर स्पष्ट किया है कि :-

आदिनाम मैं भाख सुनायो। यह नाम जपे से मुक्ति पायो।।
दोहा :— आदि नाम है मुक्ति का, जप जान जो कोए।
कोटि नाम संसार में, तासे मुक्ति ना होए।।

ज्ञान बोध पष्ठ 35 का सारांश :-

''चार गुरूओं का ज्ञान''

इस पष्ठ पर स्पष्ट किया है कि चार गुरू चारों युगों में नियुक्त किए थे। 1. सत्ययुग में 'सहते जी' 2. त्रेता में 'बंके जी' 3. द्वापर में 'चतुर्भुज जी' 4. कलयुग में 'धर्मदास जी', ये जानकारी है।

विवेचन :- इस पष्ठ पर उपरोक्त विवरण के तुरंत पश्चात् धर्मदास जी के बयालीस (42) पीढ़ी के विषय में वाणी है, ये मिलावटी है। इनमें कहा है कि :- धर्मदास वंश बयालीस तुम्हरे सारा और सकल सब झूठ पसारा। इन्हें सौंप देव तुम भारा।

भावार्थ :- इस वाणी का भावार्थ यह है कि परमेश्वर कबीर जी धर्मदास जी से कह रहे हैं कि तेरे बयालीस वंश ही वास्तविक हैं और सब झूठ है। इनको तुम मोक्ष का भार सौंप दो। विचार करें कि कबीर परमेश्वर जी ने धर्मदास जी को गुरू पद नहीं दिया था। फिर उसको यह कहना कि तुम अपने वंश को मोक्ष का भार सौंप देना निरर्थक है। कबीर परमेश्वर जी ने धर्मदास जी के दूसरे पुत्र चूड़ामणि (मुक्तामणि) जी को स्वयं दीक्षा देकर गुरू पद दिया था। केवल प्रथम मंत्र दिया था। फिर यह भी स्पष्ट कर दिया था कि इस गुरू परंपरा में छठी पीढ़ी वाला वास्तविक भक्ति मंत्र त्यागकर टकसारी वाले नकली कबीर पंथी वाले भक्ति मंत्र तथा आरती चौंका करेगा तथा कराएगा। यह काल का छल होगा जो तेरे वंश की बयालीस पीढ़ी से वास्तविक भक्ति विधि समाप्त हो जाएगी। काल की साधना शुरू होगी। {प्रमाण :- अनुराग सागर पष्ठ 140 पर।} फिर परमेश्वर कबीर जी ने इसी ज्ञान बोध के पष्ठ 35 पर अंतिम वाणियों में स्पष्ट किया कि हे धर्मदास! जिसके पास नाम का भेद है यानि जिसके पास वास्तविक भक्ति मंत्र है, वही हमारा वंश है। नहीं दुनिया यानि जनता बहुत है, आपकी बयालीस पीढ़ी से कोई लेना-देना नहीं। यदि वास्तविक भक्ति है तो तेरे वंश वाले भी हमारा वंश है जिनके पास सत्य साधना नहीं है तो वह अन्य जनता में गिने जाएंगे। वह संसार वाले हैं, भवसागर में डूब मरते हैं।

धर्मदास मैं कहो विचारी। यहि विधि निबहै सब संसारी।।
साखी :– नाम भेद जो जानहीं, सोई वंश हमार।
नातर दुनिया बहुत है, बूड़ मरा संसार।।

फिर परमात्मा कबीर जी ने धर्मदास जी से कहा है कि सारशब्द मैंने तुझे दिया है। इस मंत्र के प्रभाव से काल तेरे आधीन रहेगा।

'सार शब्द मैं तुमको दीन्हा, काल तुम्हारे रहे आधीना।'

फिर परमेश्वर कबीर जी ने कबीर सागर के ''कबीर बानी'' अध्याय के पष्ठ 137(983) पर तथा अध्याय ''जीव धर्म बोध'' के पष्ठ 1937 पर कहा है कि हे धर्मदास! यह सार शब्द किसी को नहीं बताना। इस सार शब्द को तब तक छुपाना है, जब तक कलयुग पाँच हजार पाँच सौ पाँच (5505) वर्ष न बीत जाए तथा काल के द्वादश (12) पंथ चलकर मिट न जाऐं। विचार करें उस समय तो एक भी पंथ नहीं चला था। इसलिए धर्मदास के पुत्र चूड़ामणि (मुक्तामणि) जी को सार शब्द नहीं दिया गया था।

ज्ञान बोध पष्ठ 36 से 39 का सारांश :-

पष्ठ 36 पर सामान्य ज्ञान है। पष्ठ 37 पर बताया है कि ''मन'' काल है। यह काल का दूत है। पष्ठ 38 का सारांश है कि सतलोक में काल ब्रह्म ही नहीं जा सकता तो अन्य देव की कहाँ चलेगी? अर्थात् वे कैसे उस ऊपर के स्थान को प्राप्त कर सकते हैं? परमेश्वर कबीर जी ने अपनी महिमा स्वयं ही बताई है। कहा है कि हमारा सतलोक महा सुखदायी है और उसको काल, दुर्गा तथा देवता भी प्राप्त नहीं कर सकते। सार शब्द प्राप्त प्राणी उस सुखसागर में आसानी से जा सकता है। उस लोक में जाने के पश्चात् पुनः लौटकर इस संसार में नहीं आता। इसी लोक में जाने के लिए गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 18 श्लोक 62 तथा अध्याय 15 के श्लोक 4 में

कहा है कि उस परमेश्वर की शरण में जा, उसकी कृपा से ही तू परम शांति तथा सनातन परम धाम को प्राप्त होगा। जहाँ जाने के पश्चात् लौटकर संसार में कभी नहीं आते।

ज्ञान बोध पृष्ठ 39 का सारांश :-

आदिनाम की जो राखे आशा। तापै परे नहीं काल की फांसा।।
आदिनाम निरअक्षर भाई। ताहि नाम ले लोक जाई।।
अकह नाम कहा नहीं जाई। घट घट व्याप निरंतर सांई।।
हिये नयन से देखो भाई। तब तुमको वह राम लखाई।।

भावार्थ :- इस पृष्ठ पर स्पष्ट किया है कि निःअक्षर आदिनाम को ही कहते हैं। इसी नाम के जाप की कमाई यानि भक्ति धन से सतलोक में जाया जाता है। जो इस आदिनाम की आशा रखता है यानि विश्वास से भक्ति करके मोक्ष की आशा इसी नाम की भक्ति करके रखता है, उसका काल का बंधन समाप्त हो जाता है। काल का बंधन कर्म है सारशब्द यानि आदिनाम से सर्व पाप कर्म नष्ट हो जाते हैं। आदिनाम को अकह नाम कहा जाता है। भावार्थ है कि अकह नाम आदिनाम को इसलिए कहते हैं कि इसका जाप बोलकर यानि उच्चारण करके नहीं किया जाता। श्वांस-उश्वांस सुरति-निरति से किया जाता है। परमात्मा दिव्य नेत्रों यानि दिव्य दृष्टि से देखा जा सकता है।

ज्ञान बोध पृष्ठ 40 का सारांश :-

सोहं शब्द निरक्षर बासा। ताहि शब्द जप है निज दासा।।
सार शब्द का सुमरण करि है। सहज अमर लोक निस्तरि है।।
सुमरण का बल ऐसा होई। कर्म काट सब पल में खोई।।
सुमरण से सब कर्म विनाशा। सुमरण से होय दिव्य ज्ञान प्रकाशा।।

भावार्थ :- इस पृष्ठ पर स्पष्ट किया है कि सार शब्द का स्मरण करना होता है। जो कहते हैं कि स्मरण करने की कोई आवश्यकता नहीं, गुरू ही पार कर देगा, उनको यह पृष्ठ ध्यान से पढ़कर मिथ्या भाषण त्यागकर आदिनाम पूरे सतगुरू से लेकर स्मरण करना चाहिए। यह भी स्पष्ट किया है कि सारशब्द यानि निरक्षर में सोहं शब्द का योग है, उस शब्द का जाप करना चाहिए। स्मरण से सब पाप कर्म नष्ट हो जाते हैं। परमात्मा दिव्य दृष्टि (हिये नयन=हृदय नैन) से देखा जा सकता है। जो सारशब्द का स्मरण करते हैं, वे सहज यानि सरलता से सतलोक में निवास करते हैं।

ज्ञान बोध पृष्ठ 41 का सारांश :-

याही ग्रन्थ में नाम नियारा। सूक्ष्म रीति से कहों पुकारा।।
जै आदि नाम जाने संसारा। करे भक्ति तो पहुँचे दरबारा।।
पढ़े संत होवै मतिधीरा। आदि नाम है अजर शरीरा।।
आदिनाम है सत कबीरा। जो जन गहे छूटे भव पीरा।।
आदि नाम पहचानों भाई। तब हंसा निज घर ही जाई।।
ज्ञान उपदेश कह गुरू पूरा। नाम गहे चेला सोई सूरा।।

भावार्थ :- इस ज्ञान बोध ग्रन्थ में आदि नाम लिख दिया है। वह सबसे भिन्न मंत्र है। वह मंत्र किसी ग्रन्थ में नहीं है। उस आदिनाम का उपदेश पूर्ण सतगुरू ही देता है। उसी से आदिनाम की दीक्षा लेकर संसार से पार हुआ जा सकता है। पूर्ण गुरू से उपदेश का लाभ पूरा शिष्य उठाता है जो प्रत्येक मर्यादा का पालन करता है।

अध्याय ''भवतारण बोध'' का सारांश

कबीर सागर में 19वां (उन्नीसवां) अध्याय ''भवतारण बोध'' पृष्ठ 42 पर है। इस अध्याय में कोई भिन्न ज्ञान नहीं है। इसमें जो जानकारी है, वह पहले अध्यायों की है। इसमें परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास के माध्यम से साधक समाज को समझाया है कि :-

साधक को चाहिए कि भक्ति सच्चे मन से करे। इसको भाव भक्ति कहा है। संत यानि अच्छी आत्माओं का सत्कार करे, भोजन-पानी श्रद्धा से कराए।

जो योगी है यानि हठ योग करते हैं, योग-आसन तक ही सीमित हैं, सार शब्द सतगुरू से मिला नहीं है, वे कभी भव से यानि संसार से पार नहीं हो सकते।

जो दान देते हैं और सतगुरू से सच्चा भक्ति मंत्र प्राप्त नहीं है तो उनका मोक्ष नहीं है। केवल दान का फल अगले जन्म में मिल जाएगा। आवश्यक नहीं है कि वह फल मनुष्य जन्म में ही मिलेगा। वह फल कुत्ते, घोड़े, गाय, भैंस आदि के जन्म में मिलेगा। यदि सतगुरू से सत्य साधना प्राप्त है और भक्ति करता है, दान भी देता है तो उसका मोक्ष हो जाता है। उसको दान का फल इसी जन्म में भी आवश्यकता अनुसार मिलता है। यदि किसी कारण से मोक्ष प्राप्त नहीं हुआ तो पुनर्जन्म मानव का मिलता है, वह दान अगले जन्म में मानव शरीर में मिलता है।

❖ तीर्थ के ऊपर जाकर स्नान करने का क्या लाभ-हानि है, वह बताया है :-

पाठकजन ध्यान दें कि कबीर सागर में काल प्रेरित कबीर पंथियों ने अपनी बुद्धि अनुसार वाणी मिलाई तथा काटी हैं। इस अध्याय में पृष्ठ 43 पर लिखी वाणियों का अर्थ है कि जो तीर्थ पर स्नान करने जाते हैं, उनको सुंदर शरीर मिलता है। ऊँचे कुल में, ब्राह्मण, क्षत्रिय के घर में जन्म होता है। यह बिल्कुल गलत है। जैसा कि आप जी को पूर्व में बताया है कि परमेश्वर कबीर जी ने अपनी महिमा का तथा भक्ति का यथार्थ ज्ञान संत गरीबदास जी (गाँव-छुड़ानी, जिला झज्जर, हरियाणा प्रान्त) को दिया है। उनका ज्ञान योग (दिव्य दृष्टि) खोल दिया था। तब संत गरीबदास जी ने यथार्थ ज्ञान लिखाया है। तीर्थ पर जाने वालों को क्या मिलता है?

गरीब, तीर्थ बाट चलै जो प्राणी। सोतो जन्म–जन्म उरझानी।।
जा तीर्थ पर कर है दानं। ता पर जीव मरत है अरबानं।।
गोते–गोते पड़ि है भारं। गंगा जमना गए केदारं।।

भावार्थ :- जो श्रद्धालु तीर्थ स्नान के लिए जाता था। वह पैदल जाता था। वर्तमान में गाड़ी से, मोटरसाईकिल से जाते हैं। रास्ते में जितने जीव यात्रा में मरते हैं, वे तीर्थ यात्री के पाप कर्मों में लिखे जाते हैं। तीर्थ के अंदर जल में स्नान करने से कोई लाभ नहीं होता। यदि वहाँ दान करते हैं, वह दान कहीं कर लो, उसका फल अवश्य मिलता है चाहे पशु-पक्षी के जीवन में मिले। तीर्थ पर जाकर किए दान के साथ अरबों जीव मरने का पाप भी साथ लिपट गया। अब आप विचार करें कि तीर्थ स्नानार्थ जाने वाले को क्या लाभ या हानि होती है। गीता अध्याय 17 श्लोक 22 में कहा है कि कुपात्र को दिया दान लाभ के स्थान पर हानि करता है। कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि:-

कबीर, गुरू बिन माला फेरते, गुरू बिन देते दान। गुरू बिन दोनों निष्फल हैं, पूछो बेद पुराण।।

इन्द्रियों को हठ करके साधते हैं, वह व्यर्थ प्रयत्न है। नाम साधना करने से इन्द्रियों पर अपने आप आवश्यक संयम हो जाता है।

व्रत करने से आध्यात्मिक कुछ भी लाभ नहीं है। गीता अध्याय 6 श्लोक 16 में कहा है कि

हे अर्जुन! यह योग यानि भक्ति न तो बिल्कुल न खाने वाले की यानि व्रत रखने वाले की सफल होती है और न अधिक खाने वाले की, न अधिक सोने वाले की, न बिल्कुल न सोने वाले की सफल होती है। सूक्ष्म वेद यानि कबीर परमेश्वर जी की वाणी में कहा है कि :-

गरीबदास जी ने कहा है कि मुझे मेरे सतगुरू कबीर जी ने बताया है कि:-

गरीब, प्रथम अन्न जल संयम राखै, योग युक्त सब सतगुरू भाखै।

भावार्थ :- अन्न तथा जल को सीमित खावै, न अधिक और न ही कम, यह भक्ति की विधि मेरे सतगुरू बताते हैं।

''तीनों देवताओं तथा ब्रह्म साधना का फल''

यदि आप विष्णु जी की भक्ति करते हो और उसी को कर्ता मानते हो तो आप विष्णु-विष्णु का नाम जाप करके विष्णु जी के लोक में चले जाओगे, अपना पुण्य समाप्त करके फिर पृथ्वी पर जन्म पाओगे। एक दिन विष्णु जी की भी मृत्यु होगी। इसलिए श्री विष्णु जी की भक्ति से गीता अध्याय 18 श्लोक 62 तथा अध्याय 15 श्लोक 4 वाली मुक्ति व सनातन स्थान प्राप्त नहीं हो सकता।

कबीर, हरि नाम विष्णु का होई। विष्णु विष्णु जपै जो कोई।।
जो विष्णु को कर्ता बतलावै। कहो जीव कैसे मुक्ति फल पावै।।
बहुत प्रीति से विष्णु ध्यावै। सो जीव विष्णु पुरी में जावै।।
विष्णु पुरी में निर्भय नाहीं। फिर के डार देय भूमाहीं।।
जब मरे विष्णु मुरारि। कहाँ रहेंगे विष्णु पुजारी।।
यह फल विष्णु भक्ति का भाई। सतगुरू मिले तो मुक्ति पाई।।

इसी प्रकार ब्रह्मा जी का पुजारी ब्रह्मा जी के लोक में (ब्रह्मापुरी में) तथा शिव जी का पुजारी शिव लोक में तथा ब्रह्म काल का पुजारी ब्रह्मलोक में जाता है। गीता अध्याय 8 श्लोक 16 में स्पष्ट किया है कि ब्रह्म लोक पर्यन्त सब लोकों में गए साधक जन्म-मरण में रहते हैं। वे पुनः लौटकर पृथ्वी के ऊपर आते हैं। इनसे भी गीता अध्याय 15 श्लोक 4 तथा अध्याय 18 श्लोक 62 वाली मुक्ति नहीं मिली जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर संसार में नहीं आते। सनातन परम धाम तथा परम शांति प्राप्त होगी। परम शांति उसी को प्राप्त होती है जिसका फिर जन्म कभी न हो, सदा युवा बना रहे, कभी मृत्यु नहीं हो। सब सुर यानि देवता तथा ऋषि-मुनि उपरोक्त प्रभुओं की पूजा (सेवा) करते हैं। इसलिए उनको मोक्ष प्राप्त नहीं होता।

ध्रुव-प्रहलाद ने भी विष्णु की भक्ति की। उनका भी जन्म-मरण रहेगा। चार मुक्तियों की जानकारी बताई है। 1. सामिप्य 2. सायुज्य 3. सारूपय 4. सालोक्या, ये चारों मुक्तियों को प्राप्त भी जन्म-मरण में रहते हैं।

इन्द्र का शासनकाल 72 चतुर्युग का होता है। उपरोक्त विवरण पृष्ठ 42 से 52 तक का है। उसके पश्चात् देवताओं का राजा इन्द्र भी मृत्यु को प्राप्त होकर पृथ्वी पर गधे का शरीर धारण करता है।

पृष्ठ 53 पर लिखा है :-

है अनाम अक्षर के मांही। निह अक्षर कोई जानत नाहीं।

भावार्थ :- अनाम कहा जाने वाला ''सार शब्द'' अक्षर में है, परंतु वह वेदों, गीता, पुराण में लिखे अक्षर ज्ञान में नहीं है। इसलिए निह अक्षर कहा जाता है।

भवतारण बोध पृष्ठ 54 पर धर्मदास जी ने कहा कि मैंने सत्य कबीर नाम आपका जाना, आपने कबीर नाम किसलिए रखा? भवतारण बोध पृष्ठ 55 पर परमेश्वर कबीर जी ने उत्तर दिया:-

कबीर, देह नहीं और दर्शै देही। रहो सदा जहां पुरूष विदेही।।
आदि पुरूष निह अक्षर जाना। देही धर मैं प्रकट आना।।

भावार्थ है कि जैसे निह अक्षर कहा है, वह अक्षर है, परंतु निराला है। वह वेदों, गीता, पुराणों में नहीं है। इसलिए निह अक्षर कहा है। उसी प्रकार मेरी देही (शरीर) विचित्र है, अन्य किसी देव तथा मानव का नहीं, इसलिए विदेही कहा जाता है। इसी प्रकार कबीर नाम समझ।

चार युगों में प्रकट होने का वर्णन है। परमात्मा का सत्ययुग में सत सुकृत नाम रहा है। त्रेतायुग में मुनीन्द्र, द्वापर में करूणामय और कलयुग में कबीर नाम होता है।

ऋषि मुनि और असंखन भेषा। सत्य ठौर सपने नहीं देखा।।

भावार्थ :- ऋषि-मुनि तथा अन्य जितने भेष यानि पंथ हैं, किसी ने भी सत्य ठौर यानि सत्यलोक के दर्शन स्वपन में भी नहीं हुए हैं अर्थात् इनको मुक्ति प्राप्त नहीं हुई है। भवतारण बोध पृष्ठ 56 पर विशेष ज्ञान नहीं है, सामान्य ज्ञान है। भवतारण बोध पृष्ठ 57 का सारांश :-

इसमें आठ कमलों तक का ज्ञान है :-

1. प्रथम कमल :- मूल कमल गुदा द्वार के पास है। यह चार पंखुड़ियों का कमल है, देवता गणेश है।

2. अनाहत यानि स्वाद कमल :- मूल कमल से ऊपर है। छः पंखुड़ियों का कमल है। सावित्री-ब्रह्मा देव हैं।

3. नाभि कमल :- यह नाभि के सामने रीढ़ की हड्डी पर बना है। आठ पंखुड़ियों का कमल है। लक्ष्मी तथा विष्णु जी देवता हैं।

4. हृदय कमल :- यह सीने के दोनों स्तनों के मध्य में रीढ़ की हड्डी के ऊपर है। यह 12 पंखुड़ियों का कमल है। पार्वती और शिव देव हैं।

5. कण्ठ कमल :- यह गले में रीढ़ की हड्डी पर बना है। सोलह पंखुड़ियां हैं। देवी दुर्गा (अविद्या बाई) देव है।

6. छठा कमल त्रिकुटी के तीर यानि किनारे है। त्रिकुटी से पहले है। तीन पंखुड़ियां हैं। परमात्मा कबीर रूप में परमेश्वर देव हैं।

7. सातवां कमल त्रिकुटी में है। इसकी दो पंखुड़ी (काली तथा सफेद) हैं।

8. अष्टम कमल :- आठवां कमल ब्रह्माण्ड के मांही यानि सिर के ऊपरी भाग को ब्रह्माण्ड कहा जाता है, उस आठवें कमल की 1000 (हजार) पंखुड़ियां हैं। इसका निरंजन काल देव है।

काल के इक्कीस (21) ब्रह्माण्ड हैं। सात सुन्न हैं। सात सूरति हैं। आठवें कमल में निरंजन की सुरति यानि साकार शरीर नहीं दिखता, गुप्त है। केवल एक हजार पंखुड़ियों में ज्योतियां ही दिखाई देती हैं। कमलों का ज्ञान कबीर सागर के अध्याय ''अनुराग सागर'' के पृष्ठ 151 पर भी आठ कमलों का वर्णन है। कमलों का ज्ञान कबीर सागर के अध्याय ''कबीर बानी'' के पृष्ठ 111 पर भी है। वहाँ पर नौवें कमल का भी ज्ञान है। कृप्या कमलों का संपूर्ण ज्ञान पढ़ें इसी पुस्तक में अनुराग सागर के सारांश में पृष्ठ 151 के सारांश में पृष्ठ 152 से 161 तक।

भवतारण बोध पृष्ठ 58 पर सामान्य ज्ञान है।

भवतारण बोध पृष्ठ 59-60 का सारांश :- परमेश्वर कबीर जी ने गीता अध्याय 7 श्लोक 12-

15 तथा अध्याय 14 श्लोक 5 वाले तीनों गुणों को स्पष्ट किया है।

कबीर, रज, सत, तम तीनों गुण जाना। ब्रह्मा, विष्णु, महेश बखाना।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने बताया है कि रजगुण ब्रह्मा है, सतगुण विष्णु तथा तमगुण महेश है। यही प्रमाण मार्कण्डेय पुराण (गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित केवल हिन्दी सचित्र मोटा टाईप) के पृष्ठ 123 है। लिखा है कि ब्रह्म (काल निरंजन) की तीन प्रधान शक्तियां हैं ब्रह्मा, विष्णु, महेश। ये ही तीन देवता हैं, ये ही तीनों गुण हैं। देवी पुराण (श्री वैंकेटेश्वर प्रैस मुंबई से प्रकाशित संस्कृत-हिन्दी सहित) के तीसरे स्कंद में पाँचवें अध्याय के आठवें श्लोक में कहा है :- श्री शिव जी ने कहा कि हे मातः यदि आप हम पर दयावान हैं तो मुझे तमगुण, ब्रह्मा को रजगुण तथा विष्णु को सतगुण क्यों बनाया?

विवेचन :- विचार करें पाठकजन! जो ज्ञान पुराणों, गीता, वेदों में अंकित है, जिसको धर्मगुरू, ब्राह्मण नहीं जान सके, उस ज्ञान को काशी वाला जुलाहा (धाणक) कबीर जी जानते हैं। जिनको वे ब्राह्मण अशिक्षित तथा अज्ञानी कहते थे तो अब कबीर जी को आप क्या कहेंगे? परमेश्वर सर्वज्ञ परमात्मा, सच्चा सतगुरू कहेंगे, जगत गुरू कहेंगे। और विचार करते हैं। परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि :-

तीन देव की जो करते भक्ति। उनकी कबहु ना होवै मुक्ति।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि जो साधक भूलवश तीनों देवताओं रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु, तमगुण शिव की भक्ति करते हैं, उनकी कभी मुक्ति नहीं हो सकती। यही प्रमाण श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 तथा 20 से 23 में भी है। कहा है कि साधकों ने त्रिगुण यानि तीनों देवताओं (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) को कर्ता मानकर उनकी भक्ति करते हैं। अन्य किसी की बात सुनने को तैयार नहीं हैं। जिनका ज्ञान हरा जा चुका है यानि जिनकी अटूट आस्था इन्हीं तीनों देवताओं पर लगी है, वे राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए हैं, मनुष्यों में नीच, दूषित कर्म (बुरे कर्म) करने वाले मूर्ख हैं। गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि वे मेरी (काल ब्रह्म यानि ज्योति निरंजन की) भक्ति नहीं करते। उन देवताओं को मैंने कुछ शक्ति दे रखी है। परंतु इनकी पूजा करने वाले अल्पबुद्धियों (अज्ञानियों) की यह पूजा क्षणिक सुख देती है। स्वर्ग लोक को प्राप्त करके शीघ्र जन्म-मरण के चक्र में गिर जाते हैं।

पृष्ठ 59 की वाणियों में स्पष्ट किया है कि भक्ति उसी की सफल होती है जो काल के लोक में भोले व्यक्ति कुल मर्यादा का बंधन बनाकर रहते हैं, उस लोक लाज यानि कुल मर्यादा से ऊपर उठकर भक्ति करता है। भक्ति करनी चाहिए।

पृष्ठ 60 पर सामान्य ज्ञान है।

भक्ति करे मुक्ति फल पावै। हमरे सत्यलोक में आवै।।

भवतारण बोध पृष्ठ 61-62 पर वाणी है :-

माया और ब्रह्म काल अरू, रज सत तम हैं त्रयदेव।
इन सबही को छोड़कर करो निह अक्षर की सेव (पूजा)।।

भावार्थ :- दुर्गा देवी तथा काल ब्रह्म तथा तीनों देवताओं को इष्ट मानकर भक्ति त्यागकर निःअक्षर यानि पूर्ण परमात्मा की भक्ति आदि नाम (सारनाम) से करो।

कबीर सागर के अध्याय ''भवतारण बोध'' का सारांश सम्पूर्ण हुआ।

।।सत साहेब।।

अध्याय ''मुक्ति बोध'' का सारांश

कबीर सागर में 20वां अध्याय ''मुक्ति बोध'' पृष्ठ 63 पर है। पृष्ठ 63 पर आदिनाम की महिमा है।

(कबीर) साखी, पद बोलें बहु बानी। आदि नाम कोई बिरला जानी।।
आदि नाम निज सार है, बूझ लियो हो हंस। जिन जाना निज नाम को, अमर भये ते वंश।।
आदि नाम निज मंत्र है, और मंत्र सब छार। कहे कबीर निज नाम बिना, बूड़ मरा संसार।।

मुक्ति बोध पृष्ठ 64 का सारांश :-

आदिनाम निःअक्षर सांचा। जाते जीव काल सों बाचा।।
निःअक्षर धुन जहवां होई। ताहि जपे नर बिरला होई।।
जाके बल आवे संसारा। ताहि जपे नर हो भव पारा।।
गुप्त नाम गुरू बिन नहिं पावे। पूरा गुरू हो सोइ लखावे।।
सार मंत्र लखे जो कोई। विषधर मंडवा निर्मल होई।।
आदि नाम मुक्तामणि सांचा। जो सुमरे जिव सबसों बाचा।।
आदि नाम निज सार है भाई। जमराजा तेहि निकट न आई।।
जब लग गुप्त जाप नहीं जाने। तब लग काल हटा नहिं माने।।
गुप्त जाप ध्वनि जहंवा होई। जो जन जाने बिरला कोई।।
मूल मंत्र जेहि पुरूष के पासा। सोई जनको खोज ले दासा।।
सार मन्त्र मूल है औ सब साखा। कहैं कबीर मैं निज के भाखा।।
लिखो न जाय कहै को पारा। है अक्षर में जो पावै निरबारा।।
लिखो न जाय लिखा में नाहीं। गुरू बिन भेंट न होवे ताहीं।।

भावार्थ :- उपरोक्त वाणी जो पृष्ठ 63-64 पर लिखी है। उनका भावार्थ है कि साखी तथा शब्द आदि बहुत संत गाते हैं, समझाते हैं, परंतु आदिनाम यानि सार शब्द कोई बिरला ही जानता है। आदि नाम मोक्ष का खास मंत्र है। अन्य मंत्र सब राख हैं। मोक्षदायक न होने से व्यर्थ हैं। आदिनाम ही निज मंत्र है। उसके जाप बिना सर्व प्राणी डूब मरे हैं यानि संसार के जन्म-मरण के जाल में फँसे हैं, कष्ट उठा रहे हैं। आदि नाम कहो, उसे निरक्षर कहो, यह सच्चा नाम है। इसी से काल से बचा जा सकता है। निःअक्षर यानि सारशब्द के जाप से स्मरण करते समय जो अंदर आवाज होती है, स्मरण करते समय उस पर ध्यान रखना चाहिए। ऐसे कोई बिरला ही जाप करता है। भावार्थ है कि सार शब्द के स्मरण की विधि पूर्ण संत बताता है, उससे ठीक समझ कर कोई बिरला ही शिष्य ठीक से जाप करता है। जब तक गुप्त जाप का ज्ञान नहीं होगा, तब तक काल दूर नहीं जाएगा। हे भक्त! जिस संत के पास सार शब्द के जाप की गुप्त विधि है, उसको खोज लो।

लिखो न जाय लिखा मैं नाही। गुरू बिन भैंट न होवै ताही।।
लिखो न जाय कहे को पारा। है अक्षर में जो पावै निरबारा।।

भावार्थ :- जो गुप्त जाप है, उसके स्मरण की विधि लिखी नहीं जा सकती, न मैंने लिखी है यानि न ग्रन्थ में लिखाई है। जाप की विधि सबके सामने कही नहीं जा सकती। उसको पूर्ण गुरू ही निखार कर यानि निर्णायक तरीके से बता सकता है। उसके बिना कोई बता नहीं सकता। सार शब्द के जाप की विधि भी अक्षर में है यानि बोलकर बताई-समझाई जाती है।

पष्ठ 65 पर कोई विशेष ज्ञान नहीं है, पहले वर्णन हो चुका है। पष्ठ 66 पर भी कोई विशेष ज्ञान नहीं है।

कहै कबीर सुन धर्मदास सुजानी। अकह हतो ताही कहो बखानी।।

भावार्थ :- जो नाम अकह था यानि जिसका जाप बोलकर नहीं करना, उस मंत्र के स्मरण की विधि को बोलकर बताया है।

पष्ठ 67 पर सामान्य ज्ञान है।

पष्ठ 68 पर कोई भिन्न ज्ञान नहीं है।

यहाँ वहाँ हम दोनों ठाऊं। सत्य कबीर कलि में मेरा नाऊं।।
गुप्त जाप है अगम अपारा। ताहि जपै नर उतरै पारा।।
कबीर, जैसे फनपति मंत्र सुन, राखै फन सुकोड़। ऐसे बीरा सारनाम से, काल रहै मुख मोड़।।
सोहं शब्द निरक्षर बासा। ताहि भिन्न कर जपिये दासा।।
साखी :– जो जन है जौहरी लेगा शब्द बिलगाय। सोहं सोहं जप मरे, मिथ्या जन्म गंवाय।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने स्पष्ट किया है कि मैं दोनों स्थानों पर हूँ। यहाँ पथ्वी पर सतगुरू रूप में तथा सतलोक में सतपुरूष रूप में। कलियुग में मेरा सत्य कबीर नाम चलेगा।

गुप्त नाम का जाप किया जाता है जिसकी शक्ति अपार है। मेरे सारनाम के सामने काल ब्रह्म ऐसे मुख मोड़कर भाग जाता है जैसे गारडू के मंत्र को सुनकर सर्प अपने फन को इकट्ठा करके भाग जाता है।

सोहं शब्द का योग सार नाम के साथ है। उसका जाप भिन्न-भिन्न करके किया जाता है।

यदि कोई अकेले सोहं मंत्र का जाप करता है, वह अपना जन्म व्यर्थ कर रहा है। जो भक्त जौहरी यानि स्मरण भेद का जानने वाला है, वह भिन्न-भिन्न (बिलगाय) करके जाप करेगा।

मुक्ति बोध पष्ठ 69 का सारांश :-

तब साहेब अस बोले बाती। लेऊँ छुड़ाय राखूं निज साथी।।
तुमको दीन्ही भक्ति अपारा। नाम जपो तुम अजर हमारा।।
श्रवण माहीं कहै दीन्हा भाई। तो न विवेक आ बैठाई।।
नाम सुने मोर मो कहं पावै। जम जालिम तेहि देख डरावै।।
सब कहं नाम सुनावहूं, जो आवै हम पास।
शब्द हमारा सत्य है, मानो दढ़ विश्वास।।

भावार्थ :- धर्मदास जी ने बताया है कि मेरे को परमेश्वर कबीर जी ने ऐसे कहा कि जो मेरा नाम जपता है, उसको काल से छुड़ाकर अपने पास रखूंगा। जो मेरा नाम सतगुरू से सुनकर जाप करेगा, वह मेरे पास आएगा। मैंने तेरे कान में आदिनाम बोलकर सुना दिया है। उसका विवेक करा दिया है।

जब मैं (कबीर परमेश्वर) तेरे को नाम दान का आदेश दूंगा, तब वह सारनाम अधिकारी को नाम सुनाओ। इस बात का विश्वास रख धर्मदास! हमारा मोक्ष मंत्र सत्य है।

पष्ठ 70 पर सामान्य ज्ञान है।

मुक्ति बोध पष्ठ 71 पर :-

जिन–जिन नाम सुना है काना। नरक न परे होय मुक्ति निदाना।।
आदिनाम जेहि श्रवण नाहीं। निश्चय सो जीव जम घर जाई।।

अक्षर गुप्त सोई में भाषा। और शब्द स्वाल अभिलाषा।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि जिन-जिन के कान में सारनाम पड़ा है यानि जिनको सारनाम सुनाया गया है। जैसे कई भक्त आसपास बैठे हों तो सार शब्द कान में सुनाया जाता है। जब अधिक भक्त सारनाम लेने वाले हैं तो ऊँचा बोलकर सुनाया जाता है। वह भी कान में सुनाना ही कहा जाता है। जिन-जिन ने नाम सुन लिया यानि प्राप्त कर लिया, वे काल जाल में नहीं रहेंगे, वे नरक में नहीं गिरेंगे। उनकी अवश्य मुक्ति होगी। जिनके कान में सार शब्द नहीं सुनाया गया यानि जिनको सारनाम पूर्ण गुरू से प्राप्त नहीं हुआ। वे अवश्य यम लोक में जाएंगे। (जो गुरू कहते हैं कि सारनाम को बोलकर नहीं सुनाया जाता, आत्मा में प्रवेश किया जाता है, वे गलत कहते हैं।)

जो गुप्त अक्षर यानि गुप्त सारनाम अक्षर में है, वह मैंने बोल सुनाया है।

मुक्ति बोध पृष्ठ 72 का सारांश :-

जब लग भक्ति अंग नहीं आवा। सार शब्द कैसे को पावा।।
सत्यनाम श्रवण महं वोषै। ज्यों माता बालक कहं पोषै।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने स्पष्ट किया है कि जब तक प्रथम नाम तथा सत्यनाम के जाप से भक्ति के शरीर में भक्ति प्रवेश नहीं होगी यानि दोनों मंत्रों की भक्ति कमाई संग्रह नहीं होगी, उसको सार शब्द कैसे दिया जा सकता है?

सत्यनाम जो दो अक्षर का है, उसको भी बोलकर सुनाया जाता है। कान में सुनता है यानि सब मंत्र कहे और सुने जाते हैं। नाम के जाप से आत्मा को ऐसे बल मिलता है जैसे बालक का माता के दूध से पोषण होता है।

मुक्ति बोध पृष्ठ 73 का सारांश :-

इस पृष्ठ पर भी सामान्य ज्ञान है।

जब लग सार नाम गुरू नहीं बतावै। तब तक प्राणी मुक्ति नहीं पावै।।
सार नाम बिन सीप बिन मोती। उपज खपे बिना हर खेती।।
आदि नाम है अक्षर माहीं। बिन गुरू नरक छूटै नाहीं।।
सोहं में निःअक्षर रहाही। बिन गुरू कौन दे है लखाई।।

भावार्थ :- जब तक शिष्य सार शब्द को प्राप्त करने योग्य नहीं होता तो उसको सार शब्द नहीं दिया जाता। जब तक सार शब्द नहीं मिलेगा। तब तक मोक्ष नहीं हो सकता। आदि नाम अक्षर में है और उसको गुरू से प्राप्त किए बिना काल लोक का नरक का जीवन नहीं छुटता यानि मोक्ष प्राप्त नहीं होता। सोहं शब्द के साथ सार शब्द का संयोग है। उसको गुरू ही शिष्य को बताता है। अन्य किसी को तो सार शब्द का ज्ञान भी नहीं होता। सार शब्द बिना तो यह मानव शरीर ऐसा है जैसे सीप में मोती न हो तो उसकी कोई कीमत नहीं होती। इसी प्रकार मानव शरीरधारी प्राणी सार शब्द बिना व्यर्थ जीवन जीता है।

मुक्ति बोध पृष्ठ 74 का सारांश :-

इस पृष्ठ पर भी सामान्य ज्ञान है जो पूर्व के अध्यायों में वर्णन किया जा चुका है। इससे वाणी लेकर सार निकालता हूँ।

जाको है गुरू का विश्वासा। निश्चय जाय पुरूष के पासा।।
अक्षर आदि निज नाम सुनाऊँ। जरा मरण का भ्रम मिटाऊँ।।

सोहं संग आए संसारा। सो गुरू दीजे मोहे उपचारा।।

पृष्ठ 75 का सारांश :- इस पृष्ठ पर भी सामान्य ज्ञान है, कुछ वाणी लेता हूँ।

''सारनाम को निःअक्षर किसलिए कहा है?''

अकह अनाम पुरूष जब रहेऊ। नाम निःअक्षर तासें भयऊ।।

''आदिनाम का स्मरण किया जाता है''

आदि नाम को सुमरे कोई। सुर नर मुनि इन्द्र वश होई।।

पांच पचीसों तीन गुण, एक महल में राखै।

आदिनाम अनभय उच्चारो, तन मन धन सो चाख।।

शब्द रूप हम हो आये। हमही होय कड़िहार कहाये।।

पृष्ठ 74 की वाणियों का भावार्थ :- जिनको गुरू जी पर विश्वास है, उसको परमेश्वर प्राप्ति अवश्य होती है। आदिनाम सुना कर यानि आदिनाम की दीक्षा देकर जरा यानि वृद्धावस्था तथा मरण का भर्म यानि शंका समाप्त कर दूंगा।

सोहं शब्द के साथ काल लोक में फँसने के कारण (सोहं शब्द का अर्थ जीव भी है।) हम अपने मालिक से बिछुड़े तो जीव संज्ञा में आ गए। सतलोक में हंस रूप में थे यानि यहाँ के ब्रह्मा, विष्णु, शिव से भी उत्तम स्थिति में थे। अब सोहं नाम अक्षर पुरूष का जाप भी है। अब इस जाप को करके ऊपर उठेंगे, यह उपचार है। जन्म-मरण के रोग से ग्रस्त आत्मा का उपचार सोहं तथा आदि नाम के संयोग से होगा।

पृष्ठ 75 की वाणियों का भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने स्पष्ट कर दिया है कि सारनाम अर्थात् आदिनाम को निरक्षर इसलिए कहा जाने लगा। परमेश्वर जब अकह तथा अनाम स्थिति में थे तो उसका निःअक्षर नाम पड़ा था। अब वह कबीर रूप में हैं तो आदि नाम-सार शब्द कहा जाता है। भाव एक ही है। अन्य वाणियों में स्पष्ट है कि सारनाम का स्मरण किया जाता है। परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि हम ही सतपुरूष हैं और हम ही कड़िहार यानि जीवों को सार शब्द देकर काल लोक से काड़ने (निकालने) वाले सतगुरू हैं।

''मुक्ति बोध'' अध्याय के पृष्ठ 76 से 80 तक सामान्य ज्ञान है तथा पहले के अध्यायों में वर्णन हो चुका है।

कबीर सागर के अध्याय ''मुक्ति बोध'' का सारांश सम्पूर्ण हुआ।

।।सत साहेब।।

अध्याय ''चौका स्वरोदय'' का सारांश

कबीर सागर में 21वां (इक्कीसवां) अध्याय ''चौंका स्वरोदय'' पष्ठ 81(927) पर है। इस अध्याय में परमेश्वर जी ने मुख्य बात यह कही है कि सारनाम का स्मरण प्राणायाम विधि से किया जाता है। श्वांस-उश्वांस से नाम जाप करने से मोक्ष प्राप्ति होती है। शेष तो मिलावटी तथा बनावटी बाते हैं जो चौके की विधि लिखी है। यह धर्मदास के वंशजों की करामात है।

अध्याय ''अलिफनामा'' का सारांश

कबीर सागर में 22वां अध्याय ''अलिफनामा'' पष्ठ 91 पर है। इस अध्याय में दो पष्ठ हैं। इसमें अरबी भाषा की क-ख-ग वाला ज्ञान करवाया तथा प्रत्येक अक्षर से परमात्मा की महिमा का वर्णन किया है। जैसे :-

सीन=स=सरासरी, सिर सांई का सब सीनों के अंदर,
सांच्चा बचन सुनो साधो–जन स्वाती बरसै समुन्दर।
काफ=क=कलब है अरस जमी का सुनकर और नकीरा।
नेकी करो बदी बिसारो कुल से कहत कबीरा।

इस अध्याय का इतना ही ज्ञान पर्याप्त है।

अध्याय ''कबीर बानी'' का सारांश

कबीर सागर में 23वां (तेइसवां) अध्याय ''कबीर बानी'' पष्ठ 92 पर है। इस अध्याय में पष्ठ 101 तक सष्टि रचना का अधूरा तथा मिलावटी ज्ञान है। सष्टि रचना का यथार्थ ज्ञान आप इसी पुस्तक के पष्ठ 603 से 670 तक पढ़ें।

कबीर बानी पष्ठ 102 तथा 103 का सारांश :-

धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से प्रश्न किया कि हे परमेश्वर! मुझे आपने अंश तथा वंश दोनों का ज्ञान दिया है। अंश है नाद यानि वचन के पुत्र अर्थात् शिष्य परंपरा। वंश है बिन्द यानि शरीर के पुत्र। (जो धर्मदास जी के वंश हैं) धर्मदास जी ने पूछा है कि जो मेरे वंश वाले दीक्षा देंगे, वो किस लोक में जाएंगे और जो अंश वाले से दीक्षा लेगा, उसके अनुयाई किस लोक या द्वीप में जाएंगे?

धर्मदास-उवाच

धर्मदास विनती असलाई। तुम्हरे चरण मुक्ति गति पाई।।
उत्पत्ति कारण हम पावा। वंश–अंश दोनों निरतावा।।
लोक द्वीप ठौर बतायो। बैठक अस्नेह हंस हंस चिन्हायो।।
कैसा स्वरूप समर्थ है, कैसे हैं सब हंस।
केहि करनी ते पाईए, कैसे कटै काल की फंस।।

''सतगुरू वचन'' चौपाई

कहें कबीर सुनो धर्मदासा। अल्प बुद्धि घट मांह निवासा।।
सत्य लोक है अधर अनूपा। तामें है सत्ताविस (27) दीपा।।
सत्त शब्द का टेका दीना। अगम पोहुमीरचीतिन लीन्हा।।

सागर सात ताहि विस्तारा। हंस चलै तहां करै विस्तारा।।
अग्रवास वह सुवरन कांती। तहां बैठे हंसन की पांती।।
पुहुपद्वीप है मध्य सिहांसन। कल्पदीप हंसन को आसन।।
अविगत भूषण अविगत सिंगारा। अविगत वस्त्र अविगत अहारा।।
कमल स्वरूप भौमी है भाई। वहाँ की उपमा देउ बताई।।
आभा चन्द्र सूर्य नहिं पावहिं। भूल चूक के शीश नवावहिं।।
कला अनेक सुख सदा होई। वह सुख भेद यहां लहे न कोई।।
निरतै हंस पुरूष के संगा। नखशिख रूप बन्यो बहु अंगा।।
पुरूष रूप को बरनै भाई। कोटि भानु शशि पार न जाई।।
छत्र सरूप को वरणै भाई। अविगत रूप सदा अधिकाई।।
सत्ताइस द्वीप में करे अनन्दा। जो पहुँचे सो काटें फन्दा।।
हंस हिरम्भर और सोहंगा। श्वेत अरूण रूप दोउ अंगा।।
विमल जोत को है उजियारा। झलकै कला पुरूष में भरा।।
चारि शब्द का लोक बनावा। पांच सरूप लै हंस समावा।।
सत्य शब्द की भूमि बनाई। क्षमा शब्द आसन निरमाई।।
धिर्ज शब्दसों छत्र उजियारा। सुमत शब्दसों वस्त्र पसारा।।
प्रेम शब्दसों हंस निरमाई। आप शब्दते लोक समाई।।
दीपन करै दीप हंस बिहारा। तहां पुरूष निर्मल उजियारा।।
जब विहंसे मुख मोड़ सुहाई। निरत हेरि विहंसे चितलाई।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे धर्मदास! तेरी बुद्धि फिर से अल्प हो गई है यानि मंद बुद्धि की बातें कर रहा है। अब सुन, तेरे प्रश्न का उत्तरः- सतलोक में सताईस (27) द्वीप हैं। सात सागर हैं। उन द्वीपों में बहु संख्या में मुक्त भक्त यानि हंस रहते हैं। सुंदर वस्त्र पहनते हैं। श्रंगार किए हैं। आभूषण पहने हैं। परमेश्वर के रूप की शोभा बताऊँ सुन! करोड़ सूर्य और चन्द्रमा जितनी शोभा यानि प्रकाश एक रोम (शरीर के बाल) का है। सिर का छत्र भी स्वप्रकाशित है।

कबीर बानी पष्ठ 104, 105 का सारांश :-

धर्मदास जी ने प्रश्न किया था कि किस करनी (भक्ति साधना) से सत्यलोक तथा किस करनी (भक्ति साधना) से अन्य द्वीपों की प्राप्ति होती है। उसका उत्तर देते हुए परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि दीक्षा तीन चरणों में दी जाती है। (पाठकजन याद रखें कि कबीर सागर में मिलावट है, उसी की झलक आप पष्ठ 104 पर भी पढ़ सकते हैं। अब यथार्थ ज्ञान बताया जा रहा है।) जो तीनों चरणों की दीक्षा प्राप्त करके मर्यादा में रहकर साधना करके शरीर त्यागकर जाते हैं, वे सत्यलोक में जाते हैं। जो नकली गुरूओं से दीक्षा लेकर साधना करते हैं, वे काल के द्वारा निर्मित नकली लोकों में चले जाते हैं जो ब्रह्मलोक में बनाए हैं, काल जाल में रह जाते हैं।

पष्ठ 105 पर धर्मदास तथा उनकी पत्नी आमिनी देवी को दीक्षा देने का प्रकरण है :-

तीनि अंश की लगन विचारी। नारी तथा पुरूष उबारी।।
नारी–पुरूष होए एक संगा। सतगुरू वचन दीन्ह सोहंगा (सोहं)।।
सोहं शब्द है अगम अपारा। ताका धर्मनि मैं कहूँ विचारा।।
सोहं पेड़ का तना और डारा। शाखा अन्य तीन प्रकारा।।

अमृत वस्तु बहु प्रकारा। सोहं शब्द है सुमरन सारा।।
सोहं शब्द निश्चय हो पावै। सोहं डोर गह लोक सिधावै।।
जा घट होई सोहं मत सारा। सोई आवहु लोक हमारा।।
सुरति नाम सोहं में राखो। परचे ज्ञान तुम जग में भाषो।।
एति सिद्धि (शक्ति) सोहं की भाई। धर्मदास तुम लेओ चितलाई।।
धर्मदास लीन्हा परवाना। भए आधीन छुटा अभिमाना।।
सोहं करनी ऊँच विचारा। सोहं शब्द है जीव उजियारा।।

पृष्ठ 106 का सारांश :-

कबीर, धर्मदास उन–मन बसो, करो सत्य शब्द की आश।
सोहं सार सुमरन है, मुनिवर मरें पियास।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को तीन चरण में दीक्षा क्रम पूर्ण होने की बात कही तो धर्मदास को दीक्षा लेने की लगन लगी। स्त्री तथा पुरूष यानि पति-पत्नी (धर्मदास तथा आमिनी देवी) ने दीक्षा ली। सोहं शब्द की दीक्षा ली और बताया कि :-

कबीर, अक्षर पुरूष एक पेड़ है, क्षर पुरूष (निरंजन) वाकी डार। तीनों देवा शाखा भये, पात रूप संसार।।

वृक्ष का भाग जो पृथ्वी से बाहर दिखाई देता है, वह तना तो अक्षर पुरूष है, उसका मंत्र सोहं है। डार को क्षर पुरूष यानि निरंजन जानो। उसका भी मंत्र दिया जाता है। तीनों देवता (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु, तमगुण शिव) उस वृक्ष की शाखा जानों। जो पृथ्वी के अंदर वृक्ष की मूल (जड़ें) है, उसको सत्य पुरूष जानो, उसका भी मंत्र जाप का दिया जाता है, वह मंत्र गुप्त रखा जाता है। उपदेशी को बताया तथा सुनाया, समझाया जाता है। परमेश्वर कबीर जी ने प्रथम मंत्र देकर फिर सत्यनाम की दीक्षा दी थी। इस सत्यनाम में दो अक्षर हैं, एक ॐ तथा दूसरा सोहं। धर्मदास जी को प्रथम मंत्र के पाँचों नामों तथा सत्यनाम के ओम् (ॐ) मंत्र तक तो कोई शंका नहीं हुई, अपितु हर्ष हुआ कि जिस विष्णु-लक्ष्मी जी को मैं चाहता था, उन्हीं के मंत्र मिले हैं। ॐ नाम भी जाना-माना तथा विश्वसनीय माना, परंतु सोहं शब्द को सुनकर अजीब सा महसूस किया। परमेश्वर कबीर जी अंतर्यामी हैं, सब समझ गए कि धर्मदास जी को शंका है। तब कहा कि यह सोहं मंत्र सार सुमरण है, यह विशेष मंत्र है। इसके बिना तो ऋषि-मुनि भी प्यासे मर रहे हैं अर्थात् मुक्ति प्राप्त नहीं कर सके।

पृष्ठ 108, पृष्ठ 109 पर सामान्य ज्ञान है जो पहले वर्णन किया जा चुका है।

कबीर बानी पृष्ठ 110 पर सामान्य ज्ञान है। गुरू के प्रति शिष्य की कैसी भावना होनी चाहिए, यह खास ज्ञान है।

''गुरू के प्रति शिष्य का भाव कैसा हो?''

गुरूसों अंतर कबहु न राखै। प्रेम प्रीति सों दीनता भाखै।।
जे गुरूको निंदे अक्षरकू ध्यावै। बिन गुरू अक्षर कैसे पावे।।
गुरू संगाती शब्द लखावै। जाके बल हंसा धर आवै।।
गुरूस्वाती, गुरूरूप स्वरूपा। गुरू पार्स है आदि अनूपा।।
गुरूभृंगी गुरू सो बहुरंगी। कीटते करही आप हितसंगी।।
गुरू है सांचे सिद्ध समाना। गुरू मलयागिर वास प्रमाना।।

शिष्य का स्नेह

जैसे स्नेह कमल और भौंरा। जैहे स्नेह चन्द्र अरू चकोरा।।
जैसे स्नेह लहर जल अंगा। जैसे स्नेह है दीप पतंगा।।
जैसे स्नेह मंगा और जंत्री। जैसे स्नेह चकमक और पथरी।।
जैसे स्नेह स्वाति और पपीहा। जैसे स्नेह चुम्बक अरू लोहा।।
जैसे स्नेह मीन अरू नीरा। जल बिछुरै वह तजै शरीरा।।
ऐसे गुरू शिष्य को सन्देशा। मुक्ति होय गुरू मिटायो अंदेशा।।
एते स्नेह शिष्य सहिदानी। इतने गुरू के तत्त्व बखानी।।
गुरू की दया चलौ रे भाई। बिन गुरू पार न पावै कोई।।
गुरू सोई सत्य शब्द बतावै। और गुरू कोई काम न आवै।।
साखी—उपमा कहा दीजिये, पटतर कोहू नाहि।
पलपल करो जु बन्दगी, छिन छिन देखो ताहि।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को माध्यम बनाकर सर्व भक्त समाज को गुरू जी के प्रति शिष्य का कैसा भाव, श्रद्धा होनी चाहिए, वह बताया है। कहा है कि गुरू जी के समक्ष छल-कपट न करें, शुद्ध हृदय से बात करें और विनम्र भाव से बोलें। जो गुरू की निन्दा करता है और सत्य साधना त्यागकर काल की भक्ति करता है, उसको गुरू के बिना अविनाशी परमात्मा कैसे मिल सकता है?

गुरू शिष्य पतंग दीप सम होई। ऐसा स्नेह कर जो कोई।।

जैसे फूल पर भंवरा बैठ जाता है। उसमें इतना मस्त हो जाता है, रात्रि के समय फूल बंद हो जाता है। भंवरा मर जाता है, परंतु साथ नहीं छोड़ता।

❖ अन्य उदाहरण चाँद तथा चकोर पक्षी का बताया है कि एक चकोर पक्षी रात्रि में चन्द्रमा की ओर उसी समय से देखना शुरू कर देता है जिस समय उदय होता है। एकटक दृष्टि जमाए रहता है। चन्द्रमा ऊपर होता है तो चकोर पक्षी गर्दन ऊपर करता चला जाता है। चन्द्रमा जब पीछे को जाता है तो वृक्ष पर बैठा चकोर पक्षी गर्दन ऊपर से पीछे की ओर करता चला जाता है। एक पल भी चन्द्रमा से नजर भी नहीं हटाता है। कई बार वृक्ष से गिर जाता है, उसकी गर्दन टूट जाती है, फिर भी पृथ्वी पर पड़ा-पड़ा भी चन्द्रमा से दृष्टि नहीं हटाता। कई बार अंधेरी कृष्ण पक्ष की रात्रि में अग्नि के अंगारे को उदय होता चन्द्रमा जानकर चौंच में भर लेता है, जीभ जल जाती है, मर जाता है अंगार को छोड़ता नहीं है। ऐसा प्रेम गुरू के प्रति शिष्य का होना चाहिए, तब परमात्मा प्राप्त होता है। चकोर पक्षी को चाँद से कुछ मिलना भी नहीं होता, फिर भी फिदा हो जाता है। गुरू से अनमोल पदार्थ सत्य भक्ति तथा परमेश्वर मिलता है, इस सौदे में हानि तो है ही नहीं। हिरण (मृग) को वश में करने वाला शिकारी एक यंत्र से धुन निकालता है। उस धुन को सुनकर हिरण शिकारी की ओर खींचा चला जाता है। दुश्मन के सामने अपना मुख रख देता है, शिकारी उसको पकड़ ले जाता है, मारकर अपना स्वार्थ सिद्ध करता है। परंतु मृग पीछे नहीं हटता। गुरू के साथ ऐसा प्रेम शिष्य का होना चाहिए। मोक्ष अवश्य मिलेगा।

❖ जैसे पपीहा पक्षी पृथ्वी पर खड़ा पानी नहीं पीता चाहे प्यास से मर जाए। वह आकाश से वर्षा का पानी पीता है। इसी प्रकार शिष्य को अपने गुरू के अतिरिक्त अन्य गुरू से कोई वास्ता नहीं होना चाहिए।

❖ जैसे मछली पानी के बिना पल भी नहीं रह सकती। यदि जल से दूर हो जाती है तो मर जाती है। जिस शिष्य का ज्ञान योग खुल जाता है यानि जिसको मोक्ष के महत्त्व का पता चल जाता है तो उसकी दशा मछली (मीन) जैसी हो जाती है। यदि किन्हीं कारणों से गुरू से दूर हो जाता है तो जीना हराम हो जाता है। गुरू भी वही पूर्ण है जो सत्य मंत्र देता है, अन्य गुरु कुछ काम नहीं आता। गुरू को पल-पल देखो और प्रणाम करो।

कबीर, नैनों अंदर आवै तू, जब ही नैने झपेऊँ। ना मैं देखूं और को, ना तुझे देखन देऊँ।।

भावार्थ :- सच्चा प्रेम जब किसी से होता है तो इतना बेईमान हो जाता है। कहा कि गुरुदेव यदि आँखों में समाने योग्य होता तो आपको आँखों में डालकर आँखें बंद कर लेता। न तो मैं आपके अतिरिक्त किसी को देखूँ और न आपको देखने दूँ यानि इतना अपनापन शिष्य का गुरू के प्रति होना अनिवार्य है।

''विशेष ज्ञान''

धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से शरीर में बने कमलों के विषय में जानना चाहा तो परमेश्वर कबीर जी ने कमलों का ज्ञान करवाया। कबीर परमेश्वर जी ने कबीर सागर के अध्याय ''अनुराग सागर'' के पृष्ठ 151 तथा भवतारण बोध पृष्ठ 57 पर केवल 8 कमलों का ज्ञान दिया है। कबीर बानी अध्याय पृष्ठ 111 पर नौ कमलों का ज्ञान करवाया है। बताया है कि नौवें कमल में पूर्ण ब्रह्म हैं।

कबीर बानी पृष्ठ 111 का सारांश :-

इस पृष्ठ पर परमेश्वर कबीर जी ने विशेष गुप्त ज्ञान दिया है। इसमें नौवें कमल का ज्ञान बताया है तथा उस नौवें कमल में पूर्ण ब्रह्म का निवास है।

कमलों के विषय में संपूर्ण ज्ञान कृपा पढ़ें अनुराग सागर के सारांश में पृष्ठ 151 के सारांश में इसी पुस्तक के पृष्ठ 152 से 161 तक।

कबीर बानी पृष्ठ 112, 113 का सारांश :- पृष्ठ 111 पर तो स्थूल शरीर के कमलों का ज्ञान करवाया है। इन पृष्ठों पर सूक्ष्म शरीर में बने कमलों का ज्ञान बताया है।

''सूक्ष्म शरीर के कमलों का ज्ञान''

1. प्रथम कमल में शुक्ल हंस रहते हैं। बहुत बड़ा विस्तार है।
2. दूसरे कमल में सहज दास जी का निवास है।
3. तीसरे कमल में इच्छा का निवास है।
4. चौथे कमल में मूल सुरति है।
5. पाँचवें कमल में सोहं सुरति है, साथ में इसके अंश भी हैं।
6. छटे कमल में अचिन्त का निवास है।
7. सातवें कमल में अक्षर का निवास है।
8. आठवें कमल में तेज का निवास है।
9. नौवें कमल में सत्य पुरूष जी रहते हैं।

सब कमलन का किया निरवारा। ज्ञानी पंडित करो विचारा।।

अन्य सामान्य ज्ञान है जो पूर्व के अध्यायों के सारांश में वर्णन हो चुका है।

कबीर बानी पृष्ठ 114, 115 पर सामान्य ज्ञान है, साधक को इसकी आवश्यकता नहीं है,

यह संष्टि रचना का विषय है जो संष्टि रचना में पढ़ें, वह पर्याप्त है।

पंष्ठ 116 पर गलत ज्ञान है, मिलावटी है।

पंष्ठ 117 पर संष्टि रचना का आंशिक ज्ञान है। अण्डे से ज्योति निरंजन की उत्पत्ति का ज्ञान है।

पंष्ठ 118, 119 पर भी संष्टि रचना का अधूरा तथा कुछ गलत, कुछ ठीक ज्ञान है जो पहले के अध्यायों में लिखा जा चुका है। पंष्ठ 119 पर भी ज्योति निरंजन की उत्पत्ति अण्डे से हुई, का ज्ञान है।

पंष्ठ 120, 121 पर ऐसा ज्ञान है जो पहले कई बार वर्णन किया गया है। अचिन्त आदि की उत्पत्ति का ज्ञान है।

पंष्ठ 122, 123 में संष्टि रचना का अंश है। सम्पूर्ण संष्टि रचना पंष्ठ 625 पर पढ़ें।

पंष्ठ 124, 125 पर सामान्य ज्ञान है। पंष्ठ 124 पर कबीर बानी में लिखा है कि धर्मदास जी ने नाम के प्रताप को जानने की जिज्ञासा की जिसके बल से सत्यलोक में जा सके।

परमेश्वर कबीर जी ने बताया कि पंथ्वी लोक से सतलोक तक जाने के रास्ते में सात शुन्य यानि खाली स्थान है और प्रत्येक शुन्य के पहले और बाद में कुल दस लोक हैं।

सात शुन्य दशलोक प्रमाना। अंश जो लोक लोक को शाना।।
नौ स्थान (मुकाम) हैं दशवां घर साच्चा। तेहि चढ़ि जीव सब बाचा।।
सोरा (16) शंख पर लागी तारी। तेहि चढ़ि हंस भए लोक दरबारी।।

भावार्थ :- पंथ्वी लोक तथा स्वर्ग लोक के बीच में खाली स्थान है। एक ब्रह्माण्ड में ब्रह्म लोक है। शेष सर्व लोकों का एक समूह बनाया है। जैसे पंथ्वी लोक, स्वर्ग लोक तथा सात पाताल लोक, श्री विष्णु लोक, श्री शिव लोक, श्री ब्रह्मा लोक, 88 हजार पुरियाँ (खेड़े), यह एक समूह है। ब्रह्मलोक और समूह के बीच में एक सुन्न है। दूसरी सुन्न ब्रह्मलोक के चारों ओर है। तीसरी सुन्न पाँच ब्रह्माण्डों के चारों ओर है। चौथी सुन्न 20 ब्रह्माण्डों के चारों ओर है। पाँचवीं सुन्न काल ब्रह्म के 21 ब्रह्माण्डों के चारों ओर है। छठी सुन्न अक्षर पुरूष के निज स्थान जिसे अक्षर पुरूष लोक कहा जाता है जो एक ब्रह्माण्ड में है। अक्षर पुरूष का ब्रह्माण्ड एक शंख ब्रह्माण्डों का है। अक्षर पुरूष ने एक ब्रह्माण्ड अपने लिए रखा है। शेष छः महाब्रह्माण्डों में छः शंख ब्रह्माण्डों को घेरा है। जो अक्षर पुरूष का निजी ब्रह्माण्ड है। उसके और भंवर गुफा के बीच में छठी सुन्न है। सातवीं सुन्न अक्षर पुरूष के लोक (7 शंख ब्रह्माण्डों का क्षेत्र) और सत्यलोक के बीच में है। इस प्रकार नौ स्थान (मुकाम) हैं। दसवां लोक सत्यलोक है जिसको सच्चा लोक कहा है। नौ स्थान कौन से हैं?

''नौ स्थानों तथा सतलोक का ज्ञान''

जीव पंथ्वी लोक पर विराजमान है। भक्ति की कमाई इन्हीं दो (पाताल तथा स्वर्ग) लोकों में नष्ट करता है। पाताल लोक, स्वर्ग लोक में फंसा है। यहाँ से निकलना है। ये दो लोक दो स्थान। फिर तीनों देवताओं के लोक ब्रह्मा लोक, विष्णु लोक, शिव लोक व दुर्गा का लोक, ये चार स्थान। फिर ब्रह्मलोक यह एक स्थान, कुल (2+4+1=7) स्थान ये हैं। फिर इक्कीसवां ब्रह्माण्ड जो काल ब्रह्म का निजी स्थान है। वह आठवाँ मुकाम है तथा अक्षर पुरूष का लोक, ये कुल 9 स्थान (मुकाम) हैं और दसवां लोक सतलोक है। इस प्रकार ये दस मुकाम हैं। शरीर में बने कमलों में भी यही व्यवस्था है। 1. पाताल लोक में गणेश का लोक है। 2. उसके पश्चात् ब्रह्मा-सावित्री का लोक 3. विष्णु तथा लक्ष्मी का लोक 4. फिर महादेव तथा पार्वती का लोक 5. दुर्गा का लोक है। 6. त्रिकुटी स्थान स्वर्गलोक के अंदर है। 7. सातवां काल ब्रह्मलोक है। अन्य दो लोक ऊपर हैं। ज्योति निरंजन

का निज स्थान तथा अक्षर पुरूष का निज स्थान। पृथ्वी लोक को इसलिए नहीं गिना जाता कि यह रास्ते में नहीं आता, यहाँ से जीव प्रस्थान करता है। दसवां सत्य पुरूष का लोक सत्यलोक है।

पृष्ठ 125 पर सोलह लोकों का ज्ञान है। यह सत्यलोक के अंदर द्वीप हैं जो 27 द्वीपों से भिन्न है। इनमें परमेश्वर के वे वचन पुत्र तथा उनका परिवार रहता है जो सृष्टि प्रारम्भ में 16 वचनों से उत्पन्न किए थे। सृष्टि रचना में पढ़ें इनकी उत्पत्ति तथा नाम।

इस पृष्ठ पर यह भी स्पष्ट किया है कि भजन (नाम जाप के) प्रताप से सब द्वार खुलेंगे यानि प्रत्येक कमल से मार्ग मिलेगा तथा लोकों के द्वार (दरवाजे) खुलेंगे।

पाताल पांजी से जीव उबारा। भजन प्रताप से उधरे द्वारा।।

कबीर बानी पृष्ठ 126 से 129 का सारांश :-

इन पृष्ठों पर अचिंत तथा अक्षर पुरूष के द्वीपों में जाकर ज्ञान देने का प्रकरण है जो काल ब्रह्म के लोकों में रहने वालों को जानना आवश्यक नहीं है क्योंकि यह ज्ञान है जो उच्च स्तर का है। काल जाल में फंसे प्राणियों को जो आवश्यक है, उसका खुलासा यानि स्पष्टीकरण किया जाएगा। यह ज्ञान सतलोक में बने लोकों में रहने वालों के लिए आवश्यक है।

पृष्ठ 130-131 पर सामान्य ज्ञान है।

कबीर बानी पृष्ठ 132 से पृष्ठ 137 का सारांश :-

इन पृष्ठों में बारह पंथों का ज्ञान है। यह विस्तृत जानकारी इसी पुस्तक ''कबीर सागर का सरलार्थ'' में ज्ञान सागर के सारांश में पृष्ठ 88 से 91 पर पढ़ें। कुछ संक्षिप्त जानकारी लिखता हूँ:-

कबीर बानी के पृष्ठ 132-133 पर स्पष्ट है। धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से प्रार्थना की कि हे परमेश्वर! :-

धर्मदास विनती अनुसारी। पायो बोल बचन में हारी।।
मैं तरों और तरें हमारी शाखा। और पिछले सबही पुरखा (पुरषा)।।

भावार्थ :- धर्मदास जी ने कहा कि हे प्रभु! मेरा मोक्ष हो और मेरी 42 पीढ़ी की सब शाखाओं की जीवों का मोक्ष हो तथा पिछले जो पहले दादा-परदादा हैं, वे भी पार हों।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे भोले भक्त! आप तो केवल अपनी-अपनी संतान तथा पीढ़ियों को पार करने की बात कर रहे हो। मैं तो विश्व के प्राणियों का उद्धार करने की बात कर रहा हूँ।

''सतगुरू वचन''

तब सतगुरू मन में विहंसाने (हंसे)। तें क्या मांगा कुछ मांग न जाने।।
सर्व सृष्टि तारों भाई। तुम तो आपन वंश ठहराई।।
यह प्रपंच काल सब कीन्हा। तुम्हरी बुद्धि काल खींच लीन्हा।।
तब धर्मदास भये मलीना (लज्जित)। जैसे कमल फूल मुरझीना।।
तब सतगुरू बोध विचारा। धर्मदास तुम अंश हमारा।।
एक वस्तु गोय (गुप्त) हम राखी। सो निर्णय नहीं तुम सों भाखी।।
नौतम सुरति हमरी शाखा। सात सुरति जो उत्पत्ति भाखा।।
आठवीं सुरति तुम चलि आए। नौतम सुरति हम गुप्त छिपाए।।
नौतम सुरति बचन निज मोरा। जाहितें पल्ला न पकरे चोरा।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी से कहा है कि हे धर्मदास! तेरी बुद्धि काल ने खैंच ली यानि संकीर्ण बुद्धि कर दी। तूने क्या माँगा कि मेरे वंश के पहले और आगे वाले पार हो जाएं, ऐसी कपा करो। तूने माँगना भी नहीं आया। मैं तो सर्व संष्टि को तारने के लिए प्रयत्न कर रहा हूँ। यह सुनकर धर्मदास शर्मिन्दा हो गए। कबीर परमेश्वर जी ने बताया कि मेरी योजना क्या है? यह मैंने तेरे को पहले नहीं बताया, यह गुप्त रखी थी। अभी तक तो मैंने सात सुरति का ज्ञान दिया है। यानि सात अच्छी आत्माओं का ज्ञान बताया है। आप (धर्मदास) आठवीं सुरति हो यानि मेरे द्वारा भेजी गई आत्मा हो। आपके पुत्र चुड़ामणि (मुक्तामणि) को मैं गुरू पद दूँगा। परंतु उस परंपरा (बिंद परंपरा) में छठी पीढ़ी यानि छठी गुरू गद्दी वाले को काल के चलाए 12 पंथों में से पाँचवां टकसारी पंथ वाला भ्रमित कर देगा। तब तेरी वंश गद्दी वाले उस काल पंथ (टकसारी पंथ) वाली आरती चौंका और यथार्थ मंत्र को छोड़कर अन्य मंत्र (अजर नाम, अमर नाम, अमीनाम आदि-आदि व्यर्थ मंत्र) दीक्षा में देना शुरू कर देंगे। इस प्रकार तेरी बिंद परंपरा से यथार्थ भक्ति समाप्त हो जाएगी। फिर जब कलयुग 5505 (पाँच हजार पाँच सौ पाँच) बीत जाएगा, तब मेरा यथार्थ पंथ यानि सत्य साधना शुरू होगी। {अनुराग सागर पंष्ठ 140-141 पर लिखा है कि तेरी छठी पीढ़ी वाले को टकसारी पंथ का मुखिया भ्रमित करेगा।}

''बहुत महत्त्वपूर्ण प्रमाण''

परमेश्वर कबीर जी ने बताया कि हे धर्मदास! तू मेरा अंश है। मैं तुझे एक अति गुप्त भेद बताता हूँ जो मैंने अभी तक तुझसे छुपा रखा है। सात सुरति तो उत्पत्ति करने वाली हैं। तुम आठवीं सुरति हो तथा नौतम सुरति मेरा निज वचन है यानि उसको पूर्ण मोक्ष मंत्र देने का अधिकार मैंने दिया है। जो उससे दीक्षा लेगा, उसको काल चोर रोक नहीं सकता। धर्मदास ने प्रार्थना की कि हे परमात्मा! मुझे वह वचन बताओ जिससे जीव जन्म-मरण के चक्र में न आए। परमात्मा कबीर जी ने कहा कि आठ बून्द यानि सतलोक में स्त्री-पुरूष से उत्पन्न अच्छी आत्माओं (हंसों) द्वारा काल लोक से जीव मुक्त कराने की युक्ति (योजना) बनाई थी। तुम आठवीं बून्द हो। तुम सबको काल ने भ्रमित कर दिया। अब नौंवी बून्द (नौतम सुरति) को संसार में भेजूंगा। उसका जन्म भी तुम्हारी तरह बून्द से यानि माता-पिता से होगा। (तब युग बन्द हुए धर्मदास। नौतम सुरत बून्द प्रकाशा। आठ बून्द की जुगति बनाई। नौतम से आठों बून्द मुक्ताई।) **उस एक बून्द से तेरे सहित आठों बून्द तथा तेरे बून्द (बिन्द) वाले बयालीस वंश पार कर दिए यानि आशीर्वाद दे दिया।** (वंश बयालीस बून्द तुम्हारा। सो मैं एक बून्द से तारा।) **हे धर्मदास! तू मेरी आठवीं सुरति है जो संसार में भेजा है। कलयुग पाँच हजार पाँच सौ पाँच वर्ष बीत जाने पर मेरा यथार्थ तेरहवां पंथ चलेगा, उसको चलाने वाली मेरी नौतम सुरति होगी। वह नौंवी (9वीं) आत्मा मेरा निज बचन यानि सत्य नाम, सार शब्द लेकर जन्मेगा, उसके द्वारा चलाए पंथ में जो नाम दीक्षा लेगा तो काल चोर उसको रोक नहीं सकेगा।**

धर्मदास-उवाच

धर्मदास दोई कर जोरा। कहो बचन सोई सतगुरू मोरा।।
सोई बचन कहो समुझाई। जेहि तें जीव संष्टि में न आई।।

सतगुरू उवाच

आठ बून्द की जुगति बनाई। नौतम तें आठों बून्द मुक्ताई।।

बिना गुरू कोऊ भेद नहीं पावै। युगबन्ध होवै तो हंस कहावै।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे धर्मदास! मेरी योजना आठ अच्छी आत्माओं को काल लोक में जन्म देकर जीव उद्धार करने की थी, परंतु वे आठों भी काल के वश होकर भटक रही हैं। जन्म से आठवीं बूंद यानि माता-पिता के बीज से बने मानव शरीर वाली आठवीं आत्मा तुम हो। उन आठों का भी उद्धार नौंवीं बूंद यानि मानव जन्म प्राप्त अच्छी आत्मा से होगा।

कबीर बानी पष्ठ 133 पर अधिकतर मिलावटी तथा बनावटी वाणी हैं जिनका प्रसंग से मेल नहीं होता।

केवल धर्मदास की विनती ठीक है जिसमें परमेश्वर से पूछा है कि मेरे नारायण पुत्र की शिक्षा-दीक्षा कैसी चलेगी?

धर्मदास विनती अनुसारी। साहब विनती सुनो हमारी।।
नारायण दास हमारे पुत्र सोई। उनकी सिखावन कैसी होई।।

सतगुरू उवाच

तब सतगुरू यह वचन पुकारा। चूड़ामणि वंश छत्र उजियारा।।
और सब जीव काल धर खाई। नारायण जीव काल का भाई।।
चूड़ामणी नाम से काल डराई। सत्य नाम है तो जीव मुक्ताई।।
तिनकी सनंद चलै संसारा। उनके हाथ नाम सत हमारा।।

ये वाणी उचित हैं, शेष बनावटी हैं।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने स्पष्ट कर दिया है कि नारायण दास तो काल का भेजा जीव है। वह हमारे मार्ग पर नहीं चलेगा। उसने तो श्री कष्ण की महिमा बताई थी। चूड़ामणी को मैं गुरूपद दूँगा। उसके सिर पर गुरू पद का छत्र लगेगा। अनुराग सागर के पष्ठ 140 पर स्पष्ट किया है कि चूड़ामणि की परंपरा भी भ्रमित होकर काल जाल में रह जाएगी। उपरोक्त वाणी में यह भी स्पष्ट कर दिया है कि यदि गुरू पद पर विराजमान के पास सतनाम है तो जीव मुक्त होंगे। उनकी सनद यानि प्रमाणिकता संसार में मुक्ति के लिए मान्य होगी। उनके हाथ में हमारा सत शब्द भी रहेगा। अन्यथा न गुरू का मोक्ष होगा, न अनुयाईयों का। सतनाम तथा सारशब्द चुड़ामणि जी के पास नहीं था। वह तो अब तक (सन् 1997 तक) छुपाकर रखना था।

❖ **कबीर बानी पष्ठ 134 का सारांश :-**

कबीर परमेश्वर जी ने पष्ठ 134 पर अंकित अमतवाणी में स्पष्ट किया है कि चूड़ामणी से तेरे बिन्द (पीढ़ी) का पंथ चलेगा। यह मेरी उत्तम आत्मा है। परंतु आगे तेरे पंथ में यानि कबीर जी के नाम से चले 12 पंथों में प्रथम पंथ में विरोध चलेगा। छठी पीढ़ी के पश्चात् काल साधना शुरू हो जाएगी। यह पंथ भी काल पंथ ही होगा।

‘‘तेरह पंथों के मुखिया कैसे होंगे?’’

वंश प्रकार

1. **प्रथम वंश उत्तम (यह चुड़ामणि जी के विषय में कहा है।)**
2. **दूसरा वंश अहंकारी (यह जागु दास जी है।)**
3. **तीसरा वंश प्रचंड (यह सूरत गोपाल जी है।)**
4. **चौथा वंश बीरहे (यह मूल निरंजन पंथ है।)**

5. पाँचवां वंश निन्द्रा (यह टकसारी पंथ का मुखिया है।)

6. छठा वंश उदास विरोध (यह भगवान दास जी का पंथ है।)

7. सातवां वंश ज्ञान चतुराई (यह सतनामी पंथ है।)

8. आठवां वंश द्वादश पंथ विरोध (यह कमाल जी का कमालीय पंथ है।)

9. नौवां वंश पंथ पूजा (यह राम कबीर पंथ है।)

10. दसवां वंश प्रकाश (यह परम धाम की वाणी पंथ है।)

11. ग्यारहवां वंश प्रकट पसारा (यह जीवा पंथ के विषय में है।)

12. बारहवां वंश प्रकट होय उजियारा (यह संत गरीबदास जी गाँव-छुड़ानी जिला-झज्जर, प्रान्त-हरियाणा वाले के विषय में है।)

13. तेरहवें वंश मिटे सकल अंधियारा (यह रामपाल दास के विषय में है जिसको नौतम सुरति कहा है।)

{स्वसमवेद बोध पष्ठ 155 पर भी 12 पंथों के नाम लिखे हैं, लिखा है :-

जब तेरही पीढ़ी चली आवै। मुक्तामनि तबही प्रकटाई।।
धर्म कबीर होये प्रचारा। जहाँ तहाँ सतगुरू सुयस उचारा।।}

कबीर बानी पष्ठ 135(981) पर अधूरा तथा मिलावटी ज्ञान है।

कबीर बानी के पष्ठ 136(982)-137(983) का सारांश :-

कबीर बानी अध्याय में 12 पंथों का ज्ञान है।

''द्वादश पंथ चलो सो भेद''

{12 पंथों के विषय में कबीर चरित्र बोध पष्ठ 1835, 1870 पर तथा स्वस्मबेद बोध पष्ठ 155 पर भी लिखा है।}

कबीर परमेश्वर जी ने स्पष्ट किया है कि काल मेरे नाम से 12 पंथ चलाएगा, उनसे दीक्षा प्राप्त जीव वास्तविक ठिकाने यानि यथार्थ सत्य स्थान अमर लोक को प्राप्त नहीं कर सकेंगे। इसलिए धर्मदास भविष्य का ज्ञान मैंने कह दिया है जो इस प्रकार है। प्रथम वंश जो उत्तम कहा है, वह प्रथम पंथ का प्रवर्तक चूड़ामणी यानि मुक्तामणी होगा और अन्य शाखा जो चूड़ामणी के वंश में शाखाऐं होंगी, वे भी काल के पंथ होंगे। {पाठकों से निवेदन है कि यहाँ पर धर्मदास के वंश वाले महंतों ने चूड़ामणी को 12 काल के पंथों से भिन्न करने की कुचेष्टा की है। यहाँ वाणी में गड़बड़ की है। प्रथम पंथ जागु दास वाला बताया है। कबीर सागर के कबीर चरित्र बोध अध्याय में पष्ठ 1870 पर जागु दास का दूसरा पंथ लिखा है और नारायण दास का प्रथम पंथ लिखा है। नारायण दास जी तो कबीर पंथी था ही नहीं, वह तो कष्ण पुजारी था। वहाँ पष्ठ 1870 कबीर चरित्र बोध में भी चालाकी करके चूड़ामणी जी को हटाकर नारायण दास लिखा है, परंतु कबीर बानी पष्ठ 134 पर प्रथम वंश उत्तम चूड़ामणी रख दिया जो कबीर बानी अध्याय के इस पष्ठ 136 पर बारह पंथों में जो प्रथम पंथ जागु दास का लिखा है। उससे लेकर आगे 12 पंथ पूरे नहीं होते। चूड़ामणी जी को मिलाकर पूरे बारह पंथ होते हैं। यहाँ पर नारायण दास का नाम नहीं है, पष्ठ 1870 कबीर चरित्र बोध पर ''नारायण दास''का प्रथम पंथ लिखा है। बारहवां पंथ संत गरीबदास जी वाला है। चूड़ामणी जी का प्रथम पंथ है जिसकी मुख्य गद्दी दामाखेड़ा (छत्तीसगढ़) में है तथा इसी दामाखेड़ा से स्वयंभू गुरू खरसीया (बिहार) में काल प्रचारक गुरू बना। इन सबका विस्तार अब तक कबीर जी के नाम से चल रहा है। अब पढ़ें वह अमतवाणी अध्याय कबीर बानी पष्ठ 136-

137 से जो परमात्मा जी ने बोली हैं :-

द्वादश पंथ चलो सो भेद

द्वादश पंथ काल फुरमाना। भूले जीव न जाय ठिकाना।।
(1) ताते आगम कहि हम राखा। वंश हमार चूरामणि शाखा।।
(2) प्रथम जग में जागू भ्रमावै। बिना भेद ओ ग्रन्थ चुरावे।।
(3) दुसरि सुरति गोपालहि होई। अक्षर जो जोग दृढ़ावे सोई।।
(4) तिसरा मूल निरञ्जन बानी। लोकवेद की निर्णय ठानी।।
(5) चौथे पंथ टकसार भेद लै आवै। नीर पवन को सन्धि बतावै।।
सो ब्रह्म अभिमानी जानी। सो बहुत जीवन की करी है हानी।।
(6) पांचौ पंथ बीज को लेखा। लोक प्रलोक कहें हममें देखा।।
पांच तत्त्व का मर्म दृढ़ावै। सो बीजक शुक्ल ले आवै।।
(7) छठवाँ पंथ सत्यनामि प्रकाशा।घटके माहीं मार्ग निवासा।।
(8) सातवां जीव पंथ ले बोले बानी। भयो प्रतीत मर्म नहिं जानी।।
(9) आठवे राम कबीर कहावै। सतगुरू भ्रमलै जीव दृढ़ावै।।
(10) नौमे ज्ञान की काल दिखावै। भई प्रतीत जीव सुख पावै।।
(11) दसवें भेद परमधाम की बानी। साख हमारी निर्णय ठानी।।
साखी भाव प्रेम उपजावै। ब्रह्मज्ञान की राह चलावै।।
तिनमें वंश अंश अधिकारा। तिनमें सो शब्द होय निरधारा।।
(12) संवत सत्रासै पचहत्तर होई। तादिन प्रेम प्रकटें जग सोई।।
आज्ञा रहै ब्रह्म बोध लावे। कोली चमार सबके घर खावे।।
साखि हमार लै जिव समुझावै। असंख्य जन्म में ठौर ना पावै।।
बारवै पन्थ प्रगट होवै बानी। शब्द हमारे की निर्णय ठानी।।
अस्थिर घर का मरम न पावैं। ये बारा पंथ हमहीको ध्यावैं।।
बारहें पन्थ हमही चलि आवैं। सब पंथ मिट एक ही पंथ चलावैं।।
तब लगि बोधो कुरी चमारा। फेरी तुम बोधो राज दर्बारा।।
प्रथम चरन कलजुग नियराना। तब मगहर माडौ मैदाना।।
धर्मराय से मांडौ बाजी। तब धरि बोधो पंडित काजी।।
बावन वीर कबीरं कहाऊ। भवसागर सों जीव मुकताऊ।।

कलियुग को अंत पठयते

ग्रहण परै चौंतीस सो वारा। कलियुग लेखा भयो निर्धारा।।
3400 ग्रहण परै सो लेखा कीन्हा। कलियुग अंतहु पियाना दीन्हा।।
पांच हजार पांच सौ पांचा ५५०५। तब ये शब्द हो गया सांचा।।
सहस्त्र वर्ष ग्रहण निर्धारा। आगम सत्य कबीर पोकारा।।

क्रिया सोगंद

धर्मदास मोरी लाख दोहाई। मूल शब्द बाहर न जाई।।
पवित्र ज्ञान तुम जगमों भाखौ। मूलज्ञान गोइ तुम राखौ।।
मूल ज्ञान जो बाहेर परही। बिचले पीढ़ी वंश हंस नहिं तरही।।

तेतिस अरब ज्ञान हम भाखा। मूल ज्ञान गोए हम राखा।।
मूल ज्ञान तुम तब लगि छपाई। जब लगि द्वादश पंथ मिटाई।।

द्वादश पंथ का जीव अस्थान

द्वादश पंथ अंशन के भाई। जीव बांधि अपने लोक ले जाई।।
द्वादश पंथ में पुरूष न पावै। जीव अंश में जाइ समावै।।

भावार्थ :- कबीर परमेश्वर जी ने काल के 12 पंथों का वर्णन करके तेरहवें पंथ का ज्ञान भी दिया है।

प्रथम पंथ चूड़ामणी जी जो धर्मदास जी के दूसरे पुत्र थे जो परमेश्वर कबीर जी के आशीर्वाद से आमिनी देवी की कोख से जन्मे थे।

फिर उनको परमेश्वर जी ने गुरू पद प्रदान किया था। अनुराग सागर पृष्ठ 140-141 पर स्पष्ट कर ही रखा है कि चूड़ामणी यानि मुक्तामणी की बिन्द परंपरा अर्थात् संतान की चलाई गुरू गद्दी में छठी पीढ़ी से सत्य भक्ति समाप्त हो जाएगी और काल वाले नकली कबीर पंथ टकसारी (पाँचवें) पंथ वाला आरती चौंका तथा कबीर सागर में अध्याय ''सुमिरन बोध'' पृष्ठ 22 पर लिखा शब्द यानि पूरा शब्द आरती का तरह दीक्षा में देना शुरू कर दिया।

वर्तमान में धर्मदास जी की गद्दी पर चल रहा दीक्षा मंत्र यह है जो सुमिरन बोध के पृष्ठ 22 पर लिखा है जो इस प्रकार है :-

''स्मरण पाँच नाम''

आदिनाम, अजर नाम, अमीनाम, पाताले सप्त सिंधु नाम।
आकाशे अदली निज नाम, यही नाम हंस को काम।
खोलो कूंची खोलो कपाट, पांजी चढे मूल के घाट।।
भ्रम भूत का बांधो गोला, कह कबीर प्रमान। पांच नाम ले हंसा, सत्यलोक समान।।

यह पूरी आरती उनका नाम मंत्र है जो धर्मदास जी की छठी पीढ़ी से शुरू किया गया था जो वर्तमान (2013) तक चल रहा है, इसको पाँच नाम कहते हैं। वास्तविक पाँच नाम कमलों को खोलने के हैं जो मेरे द्वारा (तेरहवें पंथ वाले रामपाल दास द्वारा) दिए जा रहे हैं। यही मंत्र जो मैं प्रथम चरण दीक्षा में देता हूँ, इसके बीच वाले पाँच नाम श्री चूड़ामणी पुत्र श्री धर्मदास जी को परमेश्वर कबीर जी ने दिए थे। सतनाम और सार शब्द नहीं दिया था। इन्हीं पाँच नामों को आगे दीक्षा रूप में देने के लिए चूड़ामणी जी को आज्ञा दी थी। जिनको पाँचवें काल पंथी टकसारी पंथ वाले ने यह तर्क देकर छुड़वा दिए कि ये भक्ति तो देवी-देवताओं की है। कबीर साहब ने तो सत पुरूष की भक्ति करने को कहा है, यह तो काल पूजा है। उसने कबीर सागर के ''सुमिरन बोध'' पृष्ठ 22 पर लिखी पाँच नाम की महिमा की वाणी ही दीक्षा रूप में देनी शुरू कर दी। इस वाणी में तो बताया है कि जो पाँच नाम का मंत्र यानि दीक्षा है, यह अजर, अमर है, आदि से चला आ रहा है। इससे और सतनाम-सारनाम की संधि से पूर्ण मोक्ष होगा। यह दीक्षा धर्मदास जी की संतान जो वर्तमान में दामाखेड़ा (प्रान्त-छत्तीसगढ़) में महंत गद्दी चलाकर प्रदान कर रहे हैं।

अब उपरोक्त कबीर बानी पृष्ठ 136 तथा 137 पर लिखी अमृत वाणी को समझाते हैं।

1. इसमें प्रथम पंथ = चूड़ामणी जी तथा उसके आगे जितने भी धर्मदास वाली संतान से शाखाऐं चल रही हैं, ये सब नकली कबीर पंथ हैं जो काल द्वारा चलाए गए हैं। यह सब एक पंथ माना जाता है क्योंकि सबमें वही टकसारी पंथ वाली काल साधना प्रचलित है।

2. दूसरा जागु दास 3. सूरत गोपाल 4. मूल निरंजन पंथ 5. टकसारी पंथ 6. बीज का लेखा यानि भगवान दास पंथ 7. सतनामी पंथ 8. कमाल का पंथ 9. राम कबीर पंथ 10. जीवा पंथ 11. परमधाम की बानी पंथ 12. संत गरीबदास (गाँव-छुड़ानी धाम प्रान्त-हरियाणा) पंथ।

कबीर बानी अध्याय के पृष्ठ 136 पर अंतिम पंक्ति से बारहवें पंथ का वर्णन प्रारम्भ होता है।

संवत् सतरा सौ पचहत्तर होई। ता दिन प्रेम प्रकटै जग सोई।।

भावार्थ :- विक्रमी संवत् 1774 में संत गरीबदास जी का जन्म हुआ था। यहाँ पर गलती से 1775 लिखा गया है। फिर पृष्ठ पर 137 पर वाणी लिखी हैं :-

बारहवें पंथ प्रगट होय बानी। शब्द हमारे का निर्णय ठानी।।
साखी हमारी ले जीवन समझावै। असंख्य जन्म ठौर नहीं पावै।।
अस्थिर (स्थाई) घर का मर्म नहीं पावै। ये बारह पंथ हमही को ध्यावैं।।
बारहवें पंथ हम ही चलि आवैं। सब पंथ मिटा एक पंथ चलावैं।।
प्रथम चरण कलयुग निरयाना। तब मगहर मांडौ मैदाना।।

भावार्थ :- कबीर परमेश्वर जी ने बताया है कि बारहवें पंथ का प्रवर्तक संवत् 1774 में जन्म लेगा। संत गरीबदास जी के विषय में कहा है। यह कबीर चरित्र बोध अध्याय के पृष्ठ 1870 पर भी स्पष्ट है कि बारहवां पंथ गरीबदास जी का है। फिर कहा है कि बारहवें पंथ में मेरी महिमा की वाणी प्रकट होगी यानि गरीबदास जी जो बारहवें पंथ वाला वह मेरी महिमा की वाणी बोलेगा। उसके अनुयाई तथा अन्य ग्यारह पंथों के अनुयाई मेरी साखी यानि वाणी को आधार बनाकर उसको अपनी बुद्धि से अनुवाद करके जीवों को समझाऐंगे। मेरी वाणी में लिखे पद-छन्द, शब्द तथा दोहों के अर्थों का अपनी बुद्धि से निर्णय किया करेंगे। ठीक से न समझकर उल्टा-पुल्टा अर्थ लगाकर व्याखान करके असंख्यों जन्म तक स्थाई स्थान यानि सत्यलोक प्राप्त नहीं कर सकते। ये बारह पंथों से दीक्षित मेरी साधना करने का दावा करेंगे, परंतु यथार्थ भक्ति मंत्र नहीं होने के कारण स्थिर घर यानि अचल लोक की प्राप्ति का ज्ञान न होने से सत्यलोक नहीं जा सकेंगे।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि फिर बारहवें पंथ में हम ही चलकर जाऐंगे यानि गरीबदास के पंथ में आगे चलकर हम स्वयं आएंगे। कबीर बानी पृष्ठ 132 पर भी स्पष्ट किया है कि :-

एक वस्तु गोय (गुप्त) हम राखी। सो निर्णय तुम सो नहीं भाखी।।
नौतम सुरति हमारी साखा। सात सुरति की उत्पत्ति भाखा।।
आठवीं सुरति तुम चलि आए। नौतम (नौवीं) सुरति हम गुप्त छिपाए।।
नौतम सुरति बचन निज मोरा। जे हिते पल्ला न पकरे काल चोरा।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने स्पष्ट कर दिया है कि धर्मदास तुम आठवीं अच्छी आत्मा हो। आप आ चुके हो। अब नौवी अच्छी आत्मा आएगी, वह मेरा निज (खास) वचन है यानि उसके पास मेरी पूर्ण शक्ति है। यह मैंने तेरे से छुपा रखा था। पृष्ठ 137 पर स्पष्ट ही कर दिया है कि 12वें (बारहवें) पंथ में हम आएंगे। अब वह बारहवें पंथ में परमेश्वर की नौतम सुरति (रामपाल दास) आ चुका है। जैसे कबीर सागर में मिलावट करके धर्मदास जी की संतान वाले गद्दी वालों ने भ्रम फैलाया है कि धर्मदास जी तथा उनकी संतान, चूड़ामणी की संतान जो 42 पीढ़ी चलेगी। उनसे जगत का उद्धार होगा। यहाँ तक भ्रम फैलाया है कि कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि जब तक धर्मदास की 42 पीढ़ी की गुरू परंपरा चलेगी, तब तक मैं (कबीर जी) पृथ्वी पर नहीं आऊँगा। विचार करें कि यदि यह सत्य होती तो यह नहीं कहते कि मैं बारहवें पंथ में चलकर आऊँगा। यदि

ऐसा होता तो संत गरीबदास जी को संवत् 1784 (सन् 1727) में गाँव-छुड़ानी में नहीं मिलने आते।

पष्ठ 137 पर आगे कहा है कि :-

''कलयुग का प्रथम चरण कब था?''

प्रथम चरण कलयुग निरयाना। तब मगहर मांडौ मैदाना।।

परमेश्वर कबीर जी ने बताया है कि मैं मगहर में एक लीला करूंगा। ब्राह्मणों के साथ आध्यात्मिक मैदान माँडूँगा यानि ज्ञान गोष्टी करूँगा। (मैदान माँडने का भावार्थ है कि किसी के साथ कुश्ती करना या लड़ाई करना या ज्ञान चर्चा यानि शास्त्रार्थ करने के लिए चैलेंज करना) पंडितजन कहा करते थे कि जो काशी शहर में मरता है वह स्वर्ग में जाता है तथा जो मगहर शहर में मरता है, वह गधा बनता है। इसलिए मगहर में कोई मत मरना। परमेश्वर कबीर जी कहते थे कि सत्य साधना करने वाला मगहर मरे तो भी स्वर्ग तथा स्वर्ग से भी उत्तम लोक में जाता है। {मगहर नगर उत्तर प्रदेश में जिला-संत कबीर नगर में है। गोरखपुर से 25 कि.मी. अयोध्या की ओर है।} कबीर परमेश्वर जी ने कहा कि मैं मगहर में मरूँगा और उत्तम लोक में जाऊँगा। विक्रमी संवत् 1575 (सन् 1518) माघ के महीने की शुक्ल पक्ष की एकादशी को परमेश्वर कबीर जी ने सतलोक जाने की सूचना दे दी। काशी से मगहर सीधे रास्ते से 150 कि.मी. है। उस समय कबीर परमेश्वर जी की लीलामय आयु 120 वर्ष थी। पैदल चलकर तीन दिन में काशी शहर से मगहर स्थान पर पहुँचे। काशी नरेश बीर सिंह बघेल कबीर परमेश्वर जी का शिष्य था तथा मगहर नगर का नवाब बिजली खान पठान भी परमेश्वर कबीर जी का शिष्य था। दोनों अपनी-अपनी सेना लेकर मगहर के बाहर आधा कि.मी. दूर आमी नदी के किनारे जहाँ पर कबीर जी बैठे थे, वहीं पहुँच गए। परमेश्वर कबीर जी ने एक चद्दर अपने नीचे बिछवाई, भक्तों ने श्रद्धा से दो-दो इंच फूल बिछा दिए। कबीर जी उस पर लेट गए तथा कहा कि मैं संसार छोड़कर जाऊँगा, उस समय हजारों की संख्या में लोग तथा सेना के जवान उपस्थित थे। ब्राह्मण भी देखने आए थे। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि मेरा शरीर नहीं मिलेगा क्योंकि बिजली खान पठान मुसलमान था। वह कह रहा था कि हम अपने गुरू का अंतिम संस्कार मुसलमान रीति से करेंगे। बीर देव सिंह हिन्दू था, उसने कहा कि हम अपने गुरू जी का अंतिम संस्कार हिन्दू रीति से करेंगे। यदि बातों से बात नहीं बनी तो युद्ध करके लेंगे। परमेश्वर जी ने कहा कि आपको मेरी शिक्षा का क्या असर हुआ? आप आज भी हिन्दू तथा मुसलमान को भिन्न-भिन्न मान रहे हो। आप लड़ाई करोगे तो ठीक नहीं होगा, परंतु उनको कोई असर नहीं था, वे अंदर से लड़ाई करने के लिए पूरी तरह तैयार थे। परमेश्वर अंतर्यामी थे। उन्होंने कहा कि यदि मेरा शरीर मिल जाए तो आप मेरे शरीर को आधा-आधा बाँट लेना, एक-एक चद्दर ले लेना, लड़ाई न करना। परमेश्वर कबीर जी ने एक चद्दर ऊपर ओढ़ ली। कुछ देर पश्चात् आकाश से आवाज आई कि चद्दर उठाकर देखो, मुर्दा नहीं है। देखा तो शरीर के स्थान पर सुगंधित ताजे फूलों का ढ़ेर शव के समान मिला। हिन्दू तथा मुसलमान कहाँ तो मारने-काटने पर तुले थे, कहाँ एक-दूसरे को गले लगाकर रो रहे थे। पंडित भी आश्चर्य चकित थे कि मगहर मरने वाला सशरीर स्वर्ग चला गया क्योंकि पंडितों को सतलोक का ज्ञान नहीं है। दोनों धर्मों ने एक-एक चद्दर तथा आधे-आधे फूल ले लिए। दोनों ने मगहर में यादगार बनाई जो पास-पास बनी है। बिजली खान पठान ने दोनों यादगारों के नाम 500-500 बीघा जमीन दे दी जो आज भी प्रमाण है। (एक बीघा पुराना = 2.75 बीघा नया। एक एकड़ पाँच नए बीघों का है।) वह समय कलयुग

का प्रथम चरण था जिस समय परमेश्वर कबीर जी मगहर से सशरीर सतलोक गए थे।

''कलयुग का बिचली पीढ़ी का समय''

परमेश्वर कबीर जी ने बताया था कि जिस समय कलयुग पाँच हजार पाँच सौ पाँच (5505) वर्ष बीत जाएगा, तब हम तेरहवां पंथ चलाएंगे। सन् 1997 में कलयुग 5505 वर्ष बीत चुका है। वह तेरहवां पंथ प्रारम्भ हो चुका है।

''कलयुग का अंतिम चरण''

कबीर परमेश्वर जी ने बताया था कि जिस समय 3400 (चौंतीस सौ) ग्रहण सूर्य के लग चुके होंगे। तब कलयुग का अंत हो जाएगा। कलयुग पयाना यानि प्रस्थान कर जाएगा। कबीर बानी पृष्ठ 137 पर पंक्ति नं. 14 गलत लिखी है। यथार्थ चौपाई इस प्रकार है :-

तेरहवां पंथ चले रजधानी। नौतम सुरति प्रगट ज्ञानी।।

पंक्ति नं. 13 भी गलत लिखी है, ठीक इस प्रकार है :-

संहस्र वर्ष पंथ चले निर्धारा। आगम (भविष्य) सत्य कबीर पोकारा।।

वाणी नं. 12 भी गलत है, ठीक नीचे पढ़ें :-

कलयुग बीते पाँच हजार पाँच सौ पाँचा। तब यह बचन होयगा साचा।।

पंक्ति नं. 15 भी गलत लिखी है, ठीक निम्न है :-

कबीर भक्ति करें सब कोई। सकल सृष्टि प्रवानिक (दीक्षित) होई।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने तीनों चरण कलयुग के बताए हैं। फिर धर्मदास जी से प्रतिज्ञा (सोगंध) दिलाई कि मूल ज्ञान यानि तत्त्वज्ञान तथा मूल शब्द (सार शब्द) किसी को उस समय तक नहीं बताना है, जब तक द्वादश (बारह) पंथ मिट न जाएं। विचार करें बारह पंथ मिटाकर एक पंथ चलाना था, उस समय जिस समय कलयुग पाँच हजार पाँच सौ पाँच वर्ष बीत जाएगा। कलयुग का वह समय सन् 1997 में है तो इससे पहले यह नाम बताना ही नहीं था तो दामाखेड़ा (छत्तीसगढ़) वाले धर्मदास जी के बिन्द (संतान) गद्दी वालों के पास तो सार शब्द तथा तत्त्वज्ञान है ही नहीं, न तो वे मुक्त कर सकते हैं और न ही मुक्त हो सकते हैं। उसके लिए परमेश्वर कबीर जी ने अनुराग सागर पृष्ठ 140-141 पर स्पष्ट कर दिया है कि हे धर्मदास! तेरी छठी पीढ़ी से यथार्थ प्रथम नाम की साधना भी समाप्त हो जाएगी। काल पंथी टकसारी जो काल के द्वारा चलाए कबीर नाम से चले पंथों में पाँचवां पंथ है, उसकी आरती चौंका तथा नाम दीक्षा प्रारम्भ करेगा जो दामाखेड़ा में वर्तमान में चल रही है। फिर पृष्ठ 137 कबीर बानी पर पंक्ति नं. 19 में यह भी स्पष्ट कर दिया है कि मैंने (कबीर परमेश्वर जी ने) तेतीस अरब ज्ञान बोला है, परंतु तत्त्वज्ञान (मूल ज्ञान) गुप्त रखा है। यह तो उसी समय खोलना है, जब कलयुग का बिचला चरण चलेगा।

तेतीस अरब ज्ञान हम भाखा। मूल ज्ञान गोए हम राखा।।

''काल वाले कबीर पंथ के जीव कहाँ जाऐंगे?''

द्वादश पंथ अंशन के भाई। जीव बोध अपने लोक ले जाई।।
द्वादश पंथ में पुरूष नहीं आवै। जीव अंश में जाई समावै।।

भावार्थ :- बारह पंथ काल अंश के चलेंगे। वे जीवों को गलत ज्ञान देकर अपने-अपने लोकों

में ले जाएंगे, सतलोक नहीं जा सकते। यह ऊपर स्पष्ट हो चुका है।

पृष्ठ 138 से 156 तक दामाखेड़ा वालों ने यथार्थ वाणी को घुमाकर मिलावट करके बिगाड़कर यह सिद्ध करने की कोशिश की है कि धर्मदास जी की 42 पीढ़ियों से जीव मुक्त होंगे। वास्तविकता यह है कि परमेश्वर कबीर जी ने बताया था कि तेरी कुल संतान इतनी हो जाएगी यदि तेरी संतान काल जाल में नहीं फंसेगी तो यह सम्भव होगा जो पृष्ठ 138 से 156 तक लिखा है।

विचार करें :- यदि इन पृष्ठों के ज्ञान को सत्य मानें तो पृष्ठ 148 पर पंक्ति नं. 14 में लिखा है कि :-

बीस दिन और वर्ष पचीसा। इतना कुल में चले संदीसा।।

भावार्थ :- प्रत्येक गद्दी वाला 25 वर्ष और 20 दिन तक गद्दी पर रहेगा। विचार करें क्या वर्तमान तक 13 पीढ़ी चल चुकी हैं। इनमें कोई 25 वर्ष 20 दिन गुरू पद पर रहा है? नहीं तो अपने आप वाणी का अर्थ सिद्ध होता है कि यदि काल छठे पीढ़ी वाले को नहीं ठगता तो यह समय सही रहता।

कबीर बानी पृष्ठ 149 पर पीढ़ी नं. 6 का वर्णन है :-

छठे वंश अंश अधिकारा। ताते काल आनि पेठारा।।
पुनि आवै पुरूषहि सहदानी। तरै कड़ीहार तिनही के प्रवानी।।
तीन सै सतर सात हजारा। वंश अंश संग उतरे पारा।।

भावार्थ :- ये स्वयं मान रहे हैं कि छठी पीढ़ी में काल घुसपैठ करेगा। फिर कहा कि पुरूष फिर आवैगा, उनसे पार हुए।

विचार करें :- वाणी में लिखा है कि "अंश-वंश उतरे पारा" यह वाणी भविष्य में होने वालों का संकेत नहीं कर रही। इसका भावार्थ है कि 7370 अंश-वंश पार उतर गए। यदि सत्य वाणी होती तो लिखते ''उतरेंगे पारा''

फिर इसी पृष्ठ 149 पर पीढ़ी नं. 4 की वाणी में लिखा है कि :-

"1303 कड़िहार तिनके संग उतरि गयो पारा।।"

भावार्थ है कि 1303 कड़िहार उनके साथ पार उतर गए। यह भी भविष्य का संकेत नहीं है। यह तो भूतकाल यानि बीते समय का ज्ञान है। इसलिए सब वाणी पृष्ठ 138 से 156 तक बनावटी तथा मिलावटी हैं।

पृष्ठ 156 से 160 तक का सारांश :-

पृष्ठ 156 के नीचे की वाणी तथा पृष्ठ 157-158-159-160 पर परमेश्वर ने स्पष्ट किया है कि जो नौतम सुरति (तेरहवें पंथ) से दीक्षा लेकर गुरू मर्यादा में रहकर भक्ति की कमाई करेंगे, वे सत्यलोक में विशेष स्थान पर रहेंगे। उनके सिर पर छत्र होगा। उनको परमेश्वर अपने समान शोभा प्रदान करेंगे। वे परमेश्वर कबीर जी के विशेष लाडले होंगे। उनके शरीर की शोभा तो 16(सोलह) सूर्यों के प्रकाश जितनी ही रहेगी।

इन पृष्ठों पर भी अधिक वाणी मिलावटी-बनावटी हैं। उदाहरण के लिए पृष्ठ 160 पर अंत में वाणी लिखी है :-

सुनो धर्मदास मैं तुम्हें बखानी। आदि अंत की सुधि तुम जानी।।
संवत् पन्द्रहसै उन्हतर (1569) आवै। सतगुरू चलि उड़ीसा जावै।।
जब लग वंश करै गुरूवाई। तब लग धरती धरों नहीं पांई (पाँव)।।

जब लग वंश ब्यालीस संसारा। तब लग नहीं आऊँ पीछ बारा।।
बचन वंश हम ब्यालीस भाखा। जग की मुक्ति वचन की शाखा।।

इन वाणियों में कहा है कि कबीर पुरूष ने कहा था कि संवत् 1569 में सतगुरू उड़ीसा जाएगा। इस वाणी से ही स्पष्ट है कि कोई वाणी कहने वाला परमेश्वर कबीर जी से अन्य है। जो कह रहा है कि सतगुरू (कबीर जी) {क्योंकि धर्मदास जी के सतगुरू कबीर परमेश्वर जी थे।} संवत् 1569 में उड़ीसा जाएंगे, उसके पश्चात् जब तक धर्मदास जी के बयालीस (42) पीढ़ी वाले दीक्षा देते रहेंगे, मैं धरती के ऊपर पैर नहीं रखूंगा। मैं (कबीर जी) फिर संसार में नहीं आऊँगा।

विचार करें :- परमेश्वर कबीर जी विक्रमी संवत् 1575 (सन् 1518) को मगहर स्थान से सशरीर सतलोक गए थे। वाणी में लिखकर सिद्ध किया है कि विक्रमी संवत् 1569 को उड़ीसा से सतलोक गए थे। पहली झूठ।

दूसरी झूठ :- उसके पश्चात् यानि संवत् 1575 को सतलोक जाने के पश्चात् परमेश्वर कबीर जी संत गरीबदास जी को संवत् सतरह सौ चौरासी (1784) सन् 1727 में फाल्गुन मास की सुदी (चाँदनी) द्वादशी (दवास) को परमेश्वर कबीर जी मिले।

गुरू ज्ञान अमान अडोल अबोल है सतगुरू शब्द सेरी पिछानी।।
दास गरीब कबीर सतगुरू मिले आन स्थान रोप्या छुड़ानी।।

अन्य को भी परमेश्वर कबीर जी सतलोक जाने के पश्चात् मिले हैं। संत दादू दास जी को मिले। संत घीसा दास जी को मिले। मुझ दास (रामपाल दास) को सन् 1997 (संवत् 2054) को फाल्गुन मास सुदी एकम को मिले। इससे स्पष्ट है कि कबीर सागर में काल द्वारा चलाए कबीर पंथ वालों ने बहुत गड़बड़ी कर रखी है। परंतु अब भी बहुत कुछ सच्चाई शेष है जो उनकी कुदृष्टि से बच गई। इसकी पूर्ति संत गरीबदास जी द्वारा परमेश्वर कबीर जी ने कराई है तथा पुराने कबीर सागर से भी शुद्धियाँ करके यह ''कबीर सागर का सरलार्थ'' पुस्तक परमेश्वर कबीर जी की कृपा से मेरे पूज्य गुरू जी स्वामी रामदेवानन्द जी के आशीर्वाद से तैयार की गई है।

कबीर सागर के अध्याय ''कबीर बानी'' का सारांश सम्पूर्ण हुआ।

।।सत साहेब।।

अध्याय ''कर्म बोध'' का सारांश

कबीर सागर में 24वां अध्याय कर्म बोध पृष्ठ 162 पर है।

परमेश्वर कबीर जी ने कर्मों का उल्लेख किया है :-

मेरे हंसा भाई शुद्ध स्वरूप था जब तू आया।
कर्मों के बंधन में फंस गया तातें जीव कहाया।।

परमेश्वर कबीर जी ने बताया कि सत्यलोक से जीव स्वेच्छा से काल ब्रह्म के षड़यंत्र में फंसकर यहाँ आ गया। इसलिए जीव कहलाया। सत्यलोक में बिना कर्म किए सर्व पदार्थ उपलब्ध थे। यहाँ काल ब्रह्म ने कर्म का विधान बनाया है कि कर्म करेगा तो फल मिलेगा।

श्रीमद् भगवत गीता अध्याय 3 श्लोक 14-15 में कहा है कि सर्व प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं। अन्न खाने से बीज (वीर्य) बनता है जिससे सर्व प्राणी उत्पन्न होते हैं। अन्न वर्षा से होता है। वर्षा यज्ञ से यानि शास्त्र अनुकूल कर्म से होती है। कर्म काल ब्रह्म से उत्पन्न हुए यानि कर्म का विधान ब्रह्म (क्षर पुरूष) ने बनाया। जैसे कर्म जीव करेगा, वैसे ही भोगेगा। ब्रह्म (क्षर पुरूष) की उत्पत्ति अक्षर यानि अविनाशी परमेश्वर से हुई। अविनाशी परमेश्वर ही सदा यज्ञों यानि धार्मिक अनुष्ठानों में प्रतिष्ठित है यानि ईष्ट देव रूप में मानकर पूजा करनी होती है।

प्रश्न :- कर्म कितने प्रकार के हैं?

उत्तर :- कर्म दो प्रकार के हैं। एक शुभ कर्म, दूसरा अशुभ यानि एक पुण्य और दूसरा पाप कर्म कहा जाता है।

1. पुण्य कर्म :- शास्त्र विधि अनुसार भक्ति कर्म, दान, परमार्थ, भूखों को भोजन देना, असहाय की हर संभव सहायता, दया भाव रखना, अपने से दुर्बल से भी मित्र जैसा व्यवहार करना। परनारी को माता तथा बहन के भाव से देखना, सत्य बोलना, अहिंसा में विश्वास रखना, साधु-संतों, भक्तों की सेवा व सम्मान करना, माता-पिता तथा वृद्धों की सेवा करना आदि-आदि शुभ यानि पुण्य कर्म हैं।

2. पाप कर्म :- शास्त्र विधि त्यागकर मनमाना आचरण करके भक्ति कर्म करना, चोरी , परस्त्री से बलात्कार, परस्त्री को दोष दृष्टि से देखना, माँस-मदिरा, नशीली वस्तुओं का सेवन, रिश्वत लेना, डाके मारना, हिंसा करना आदि-आदि अशुभ कर्म हैं यानि पाप कर्म हैं।

प्रश्न :- कर्म बंधन कैसे बनता है?

उत्तर :- काल ब्रह्म ने जीव के कर्मों को तीन प्रकार से बाँटा है।

1. संचित कर्म 2. प्रारब्ध कर्म 3. क्रियावान कर्म।

1. संचित कर्म :- संचित कर्म वे पाप तथा पुण्य कर्म हैं जो जीव ने जन्म-जन्मातरों में किए थे। उनका भोग प्राप्त नहीं हुआ है। वे जमा हैं।

2. प्रारब्ध कर्म :- प्रारब्ध कर्म वे कर्म हैं जो जीव को जीवन काल में भोगने होते हैं जो संचित कर्मों से औसत करके बनाए जाते हैं। उदाहरण के लिए यदि पाप कर्म एक हजार (1000) हैं और पुण्य कर्म पाँच सौ (500) हैं तो दोनों से औसत में लिए जाते हैं। प्रारब्ध कर्म यानि जीव का भाग संचित कर्मों से Average में लेकर बनाया जाता है। यदि 20-20 प्रतिशत लेकर प्रारब्ध बना तो पाप कर्म 50 और पुण्य कर्म 25 बने। इस प्रकार प्रारब्ध कर्म यानि जीव का भाग्य बनता है। इनको प्रारब्ध कर्म कहते हैं।

3. क्रियावान कर्म :- अपने जीवन काल में जो कर्म प्राणी करता है, वे क्रियावान कर्म कहे जाते हैं। ये 75% तो प्रारब्ध कर्म होते हैं यानि जो संस्कार यानि भाग्य में लिखे हैं, वे किए जाते हैं, 25% कर्म करने में जीव स्वतंत्र है। 75% कर्म करने में जीव बाध्य है क्योंकि वे प्रारब्ध में लिखे होते हैं, परतंत्र हैं। परंतु पूर्ण संत मिलने पर परिस्थिति बदल जाती है।

प्रश्न :- कहते हैं कि जीव कर्म करने में स्वतंत्र है।

उत्तर :- जीव 25% कर्म तो स्वतंत्र रूप से करता है। अपने जीवन काल में 75% कर्म तो प्रारब्ध वाले करने में परतंत्र है, विवश है। केवल 25% कर्म करने में स्वतंत्र है। पंरतु पूर्ण संत मिलने के पश्चात् परिस्थिति बदल जाती है। प्रारब्ध में सुसंगत तथा कुसंगत भी लिखी होती है।

उदाहरण :- जैसे राजा दशरथ जी ने यज्ञ किया था। सुयोग्य पुत्र प्राप्ति के लिए यह क्रियावान स्वतंत्र कर्म था। अन्य संतान तीन पुत्र (भरत, लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न) तथा पुत्री शारदा थे, प्रारब्ध से मिले थे।

श्री रामचन्द्र जी का सीता से विवाह प्रारब्ध था, 14 वर्ष का बनवास सीता, राम, लक्ष्मण का प्रारब्ध था। जंगल में बनवास के समय पशु शिकार करके मारे, वह स्वतंत्र कर्म था। स्वरूपणखां का नाक काटना लक्ष्मण का स्वतंत्र कर्म था। सीता का अपहरण प्रारब्ध कर्म सीता तथा रावण दोनों का था। यह कारण अन्य भी हो सकता था जो शुर्पणखा बनी थी।

तेतीस करोड़ देवताओं का कैद में रहना प्रारब्ध कर्म था। सुग्रीव के भाई बाली को राम ने मारा, यह स्वतंत्र कर्म था। फिर वह संचित कर्मों में जमा होकर प्रारब्ध बना और श्री कृष्ण रूप में श्री रामचन्द्र जी वाली आत्मा को भोगना पड़ा। जो शिकारी था, जिसने श्री कृष्ण के पैर में विषाक्त तीर मारकर हत्या की, वह शिकारी बाली वाली आत्मा थी। रावण की मृत्यु, तेतीस करोड़ देवताओं को कैद से मुक्ति प्रारब्ध था।

श्री कृष्ण जी ने जो आठ विवाह किए, वह प्रारब्ध था। राधा से प्रेम भी प्रारब्ध था। गोपियों के साथ भोग-विलास यह प्रारब्ध कर्म था यानि परतंत्र होकर किया कर्म था, परंतु 16 हजार स्त्रियों को एक राजा की कैद से छुड़वाकर अपने पास रखकर उनसे भोग-विलास करना यह स्वतंत्र कर्म था। कुब्जा को स्वस्थ करना प्रारब्ध कर्म था। उसके साथ भोग-विलास करना स्वतंत्र कर्म था। कंस को मारना प्रारब्ध कर्म था। केशी, चाणूर, पुतना का वध स्वतंत्र कर्म था क्योंकि वे कंस के द्वारा प्रलोभन या दबाव से भेजे गए थे। इस प्रकार कर्मों का लेखा जानें, कम लिखे को अधिक समझें।

प्रश्न :- क्या स्वतंत्र कर्म फल भी वर्तमान जीवन में प्राप्त होता है?

उत्तर :- कुछ कर्मों का फल वर्तमान जीवन में भी प्राप्त होता है, परंतु यह विशेष परिस्थिति में भोगना पड़ता है। उदाहरण :-

राजा दशरथ रात्रि के समय एक सरोवर पर रखवाली कर रहे थे। उस सरोवर का ऋषि लोग पानी पीते थे। उसे वन्य (जंगली) जानवर खराब कर देते थे। यह सेवा स्वयं राजा ने ली थी क्योंकि राजा दशरथ मान रहे थे कि ऋषियों के आशीर्वाद से उनको श्री रामचन्द्र, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न पुत्र प्राप्त हुए थे। वैसे श्री राम का जन्म उनके यज्ञ की देन नहीं थी। यह प्रारब्ध में थे। यज्ञ ऋषियों के द्वारा किया गया था। जिस कारण से वे महिमा के पात्र थे। एक श्रवण नामक श्रेष्ठ पुत्र अपने अंधे माता-पिता को बहंगी (एक बाँस के दोनों सिरों पर पालने बाँधकर बहंगी बनाई जाती थी) में बैठाकर तीर्थ स्नान के लिए निकला था। माता-पिता को प्यास लगी। अन्धेरी रात्रि में श्रवण पानी का लोटा लेकर सरोवर पर गया और पानी का लोटा भरने लगा। उसकी आवाज

सुनकर राजा दशरथ ने कोई जंगली जानवर समझकर शब्द भेदी बाण मारा जो श्रवण को लगा और वह हाय राम कहकर गिर गया। राजा दशरथ ने पशु समझकर तीर मारा था। हाय राम की आवाज सुनकर राजा समझ गया कि किसी व्यक्ति को तीर लगा है। श्रवण दर्द के कारण तड़फ रहा था। हाय-हाय कर रहा था। राजा दशरथ ने जाकर नाम-गाँव पूछा और सच्चाई बताई तो श्रवण ने कहा कि मैं तो बचूँगा नहीं, मेरे माता-पिता अंधे हैं, बहुत प्यास लगी है। आप उनको पानी पिला देना। उनको पानी पिलाने से पहले नहीं बताना कि तुम्हारा श्रवण मर गया है। वे पानी नहीं पीएंगे और प्यासे मर जाएंगे। इतनी बात कहकर श्रवण प्राण त्याग गया। राजा दशरथ जल का लोटा भरकर श्रवण के माता-पिता के पास गये। पैरों के कदमों की आवाज सुनकर पिता बोला कि बेटा श्रवण! पानी मिल गया। राजा दशरथ बिना बोले ही पानी पिलाने लगा। माता-पिता ने कहा कि बेटा बोलता क्यों नहीं? लगता है तू हमसे तंग आ गया है, सच्ची बात बता, यदि दुःखी हो चुका है तो हमें यहीं छोड़कर घर लौट जा बेटा, हम तुझे दुःखी नहीं देख सकते। जब तू बोलकर माँ-पिता नहीं कहेगा, हम पानी नहीं पीएंगे। विवश होकर राजा दशरथ ने सच्चाई बतानी पड़ी। तब दोनों ने हाय-हाय करना शुरू कर दिया तथा राजा दशरथ को शॉप दे दिया कि आज हम अपने पुत्र के वियोग में प्राण त्याग रहे हैं, एक दिन राजा तू भी अपने पुत्र के वियोग में मरेगा। यह कहकर रो-रोकर प्राण त्याग दिए। राजा दशरथ ने बहुत कहा कि मैं आपका पोषण करूँगा, नौकर-नौकरानी सेवा में रख दूँगा, आप ऐसा न कहें और न मरें। परंतु कुछ ही घण्टों में दोनों तड़फ-तड़फकर मर गए। उस कर्म का फल राजा दशरथ को उसी जीवन में भोगना पड़ा जो शॉप का प्रभाव था। श्री रामचन्द्र जी जब बनवास को चले तो राजा दशरथ अपने महल की सबसे ऊँची छत (चौबारे) पर चढ़कर देखता रहा। जब रामचन्द्र जी कुछ ओझल हुए तो चौबारे की मंडेर पर खड़े हो गए। पंजों के बल ऐडी उठाकर खड़े होकर पुत्र को देखने लगे तो वहाँ से गिरकर मर गए। यह राजा दशरथ का प्रारब्ध कर्म नहीं था। श्रवण तथा उसके माता-पिता के श्राप से राजा दशरथ की दुर्घटना के कारण अकाल मत्यु हुई थी। जिस कारण से भूत-पितर योनि को प्राप्त हुए। जब सीता जी ने बनवास काल में अपने पूर्वजों के श्राद्ध किए तो राजा दशरथ भी पितरों की पंक्ति में बैठे दिखाई दिए। राजा दशरथ की मत्यु क्रियावान यानि वर्तमान कर्म का फल था।

अन्य उदाहरण :- राजा द्रुपद की पुत्री द्रोपदी वैसे उसका नाम कष्णा था, राजा द्रोपद की बेटी होने के कारण द्रोपदी नाम से प्रसिद्ध हुई थी। द्रोपदी कंवारी थी। उसके पिता जी ने एक नदी के किनारे स्त्रियों के स्नान के लिए जनाना घाट बनवा रखा था। गर्मी का मौसम था। द्रोपदी प्रतिदिन की तरह अपनी सैंकड़ों सहेलियों के साथ उस दरिया के घाट पर स्नान करने गई तो देखा एक साधु दरिया के अंदर सीने तक गहरे जल में खड़ा था। हाथ इधर-उधर चला रहा था। द्रोपदी ने कुछ देर संत की क्रिया को देखा तो लगा कि साधु स्नान नहीं कर रहा, किनारे पर देखा तो वस्त्र नहीं रखे थे, वह साधु अँधा था। घाट से लगभग सौ फुट दूरी पर दरिया में स्नान करने के उद्देश्य से आया था। उसको यह नहीं ज्ञान था कि आसपास कोई जनाना घाट (Ladies Ghat) है। जब लड़कियों की आवाज सुनाई दी, तब उसको समझते देर नहीं लगी कि तू गलत स्थान पर आ गया है। राजा की स्त्रियों के स्नान का स्थान आसपास है। शर्म के मारे वह संत दरिया में गहरे पानी में चला गया। छाती तक गहरे पानी में जाकर खड़ा हो गया। उसके पास एक कोपीन (छः इन्च चौड़ा दो फुट लंबा कपड़ा जो पर्दे पर साधु बाँधते हैं, उसको कोपीन कहते हैं।) थी। दूसरी नहीं थी। अन्य कोई वस्त्र नहीं था। स्नान करके उसको कुछ देर घास पर डालकर सुखाकर पुनः

बाँध लेता था या गर्मी के मौसम में पहने-पहने ही सूख जाती थी। उस दिन वह कोपीन दरिया के पानी में बह गई, संत नग्न जल में खड़ा-खड़ा आसपास हाथों को हिला रहा था कि कोई कपड़ा बहता हुआ आ जाए तो बाहर जाने योग्य बनूँ। उस घाट से नीचे की ओर यानि जिधर पानी बहकर जा रहा था। उस ओर पानी में संत स्नान कर रहा था। द्रोपदी बुद्धिमान तथा भक्त आत्मा थी। पहले तो द्रोपदी ने विचार किया था कि स्नान करके संत से परमात्मा की चर्चा करूँगी। स्नान करने के पश्चात् भी देखा कि संत तो उसी स्थिति में खड़ा है तो समझते देर नहीं लगी। बहन द्रोपदी ने अपनी साड़ी से आठ-नौ इंच चौड़ा और तीन-चार फुट लंबा टुकड़ा फाड़कर दरिया में छोड़ दिया। परंतु संत के हाथ नहीं लगा। ऐसे-ऐसे सात-आठ टुकड़े साड़ी से फाड़-फाड़कर डाले, परंतु व्यर्थ रहे क्योंकि संत को दिखाई नहीं दे रहा था। लड़की होने के नाते द्रोपदी बोलना नहीं चाहती थी कि कहीं मेरे बोलने से संत शर्म के मारे और गहरा दरिया में चला न जाए, आगे दरिया बहुत गहरी है। पानी का बहाव भी बहुत तेज है। बहन द्रोपदी जी ने एक टुकड़ा और फाड़ा (यानि साड़ी आधे से अधिक फाड़ दी) और जंगल से एक लंबी लकड़ी उठाकर उसके सिरे से कपड़े का टुकड़ा लपेटकर संत के हाथों के पास कर दिया। संत के हाथों से कपड़ा लगा तो तुरंत पकड़ लिया। पहले तो सोचा कि किसी बहन-बेटी का कोई कपड़ा बहकर आ गया होगा। परंतु कोपीन आकार का कपड़ा हाथों से पहचानकर समझ गया कि किसी बेटी ने अपनी साड़ी फाड़कर कोपीन बनाई है। संत ने कहा, हे बेटी! तेरा भला करे करतार, तूने मेरे पर्दे की ओट करके मेरी लाज रखी है, तेरे को परमात्मा अनन्त वस्त्र दे तथा तेरे पर्दे (गुप्तांग) की लाज रखे। कहते हैं :-

साधु बोलै सहज सुभाय। साधु का बोला मिथ्या न जाय।।

विचार करने की बात है। राजा की लड़की के साथ दो-चार नौकरानी भी होती हैं। द्रोपदी उनको भी कह सकती थी कि तुम अपनी साड़ी से कपड़ा फाड़कर डाल दो, परंतु उसको अध्यात्म ज्ञान था तथा पूर्व जन्म का शुभ संस्कार था। जिस कारण से उसने विचार किया कि मैं रोटी खाऊँगी तो मेरा पेट भरेगा। बांदी खाएगी तो बांदी का पेट भरेगा यानि मैं दान करूँगी तो मुझे लाभ होगा। बांदी (नौकरानी) करेगी तो उसको लाभ होगा। द्रोपदी ने इसलिए यह अवसर हाथ से नहीं जाने दिया। संत कोपीन बाँधकर चला गया। लड़कियाँ पहले चली गई थी। द्रोपदी का विवाह अर्जुन के साथ हुआ। माता की आज्ञा अनुसार वह पाँचों पांडवों की पत्नी बनी। जिस समय राजा युधिष्ठर जूए के खेल में दुर्योधन से सर्व राज तथा द्रोपदी को भी हार गए, तब भरी सभा में दुर्योधन ने द्रोपदी को नंगी करने की योजना बनाई। दुर्योधन ने अपने भाई दुःशासन से कहा कि द्रोपदी को नंगा करके मेरी जांघ पर बैठा। सभा में पाँचों पांडव, 101 कौरव तथा गुरू द्रोणाचार्य, दानवीर कर्ण, भीष्म पितामह, चाचा विदुर तथा अन्य सेनापति उपस्थित थे। दुर्योधन का आदेश पाकर दुःशासन द्रोपदी की साड़ी का पल्ला पकड़कर साड़ी उतारने लगा। द्रोपदी ने पहले तो अपने पाँचों पतियों की ओर देखा। वे जूए में हार चुके थे। मर्यादा में बँधे थे, नीचे गर्दन कर ली, देखा तक नहीं। अन्य उपस्थित महानुभावों की ओर देखा और रक्षा की प्रार्थना की, परंतु वे दुर्योधन का मलीन अन्न खाकर मलीन आत्मा हो चुके थे। उस सभा में एक संत विदुर जी विराजमान था जो इंसान बीज था। विदुर जी खड़ा हुआ और दुर्योधन से कहने लगा कि हे दुर्योधन! आप किसकी बेइज्जती कर रहे हो? आपका एक कुल-एक परिवार है। जनता कहेगी कि अपनी इज्जत आप ही खराब कर दी। कुछ विचार से काम लो। अहंकार में अँधा न हो। यह बात सुनकर दुर्योधन अपने चाचा विदुर को बुरा-भला कहने लगा कि तू गुलाम सोच का व्यक्ति है। तू तो बांदी

(नौकरानी) का पुत्र है। तू तो पाण्डवों का सदा ही पक्ष लेता रहा है। यह सुनकर भीष्मपितामह, गुरू द्रोणाचार्य तथा कर्ण मुस्कुराए। दुर्योधन ने उठकर अपने चाचा के मुख पर थप्पड़ मारा। विदुर सभा छोड़कर चला गया। भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य या कर्ण में से कोई एक भी खड़ा होकर यह कह देता कि दुर्योधन तुम भाई-भाई कुछ भी करो, परंतु सभा में अबला के साथ दुर्व्यव्हार ठीक नहीं, यह क्षत्रीय धर्म के विरूद्ध है तो कौरवों की क्या मजाल थी कि वे द्रोपदी के चीर को हाथ लगा दें। उन्होंने कुछ भी प्रतिक्रिया नहीं की। सभा में बैठे रहे।

पाठकजन! विचार करें :- उनका सभा में बैठा रहना क्या दर्शाता है? उनके मन की घोर नीचता, सामने द्रोपदी को नंगा करने का प्रयत्न, भीष्म पितामह, कर्ण, द्रोणाचार्य सहित सर्व सभासद तमाशा देख रहे थे। वे द्रोपदी के गुप्तांग को देखने के लिए बैठे थे। यह स्पष्ट है। और क्या वहाँ रीछ नचाया जा रहा था? यही कारण था कि तीनों (द्रोणाचार्य, भीष्म तथा कर्ण) बाणों से छलनी किए गए थे। यह उनको उसी जन्म के कर्म के पाप का फल था। उनको दुर्योधन को रोकना चाहिए था। यदि नहीं तो सभा छोड़कर चला जाना चाहिए था। तब वे पाप के भागी नहीं बनते। जो अधिकारी है और वह अपने कर्तव्य से गिरता है, वह महापाप का भागी होता है। द्रोपदी ने देखा कि सांसारिक सहारा तो नकली निकला, तब सबकी आशा त्यागकर परमात्मा की आशा लगाई तो परमेश्वर ने उस अँधे महात्मा को दिए चीर के लीर (टुकड़े) के प्रतिफल में और साधु के आशीर्वाद के प्रताप से द्रोपदी चीर अनन्त कर दिया। दुशासन में सौ हाथियों जितनी शक्ति थी। द्रोपदी तो उसके सामने कमल की फूल थी। दुशासन को पसीना छूट गया। साड़ी को खींचते-खींचते थक गया। साड़ी का ढ़ेर लग गया, परंतु अंत नहीं आया। तब द्रोपदी को श्री कष्ण जी ने बाद में बताया कि यह जो तेरा चीर बढ़ा है, यह उस अँधे महात्मा को दिए कपड़े का फल है जो तूने विवाह से पहले दरिया में स्नान करते समय दिया था।

एक चीर के कारणे बढ़ गया चीर अपार।
जो मैं पहले जानती तो, सर्वस देती वार।।(न्यौछावर कर देती)

यह कर्म फल द्रोपदी को उसी जन्म के कर्म का फल मिला था। यह एक -आध विशेष आत्मा के साथ ही होता है। कर्म फल को समझने के लिए उपरोक्त उल्लेख पर्याप्त है।

प्रश्न :- क्या प्रारब्ध कर्म जो भाग्य में लिखा है, बदला जा सकता है।

उत्तर :- जब पूर्ण संत जो परमेश्वर कबीर जी स्वयं या उनका कपा पात्र संत मिल जाता है तो पाप कर्म जो प्रारब्ध में हैं या संचित कर्मों में हैं, वह सत्य साधना से समाप्त हो जाता है।

कबीर, जब ही सतनाम हृदय धर्यो, भयो पाप को नाश।
जैसे चिनगी अग्नि की, पड़ै पुरानै घास।।
गरीब, मासा घटै न तिल बधै, विधना लिखे जो लेख।
साच्चा सतगुरू मेटि कर, ऊपर मारै मेख।।
गरीब, जम जौरा जा से डरें, मिटे कर्म के लेख।
अदली असल कबीर हैं, कुल के सतगुरू एक।।

जब तक पूर्ण संत कबीर जी की भक्ति नहीं करता और करवाता है। तब तक (कबीर जी ने कहा है) कर्म रेख टारी न टरे।

वशिष्ठ मुनि से त्रिकाली योगी, सोध कै लग्न धरै।
सीता हरण मरण दशरथ का, बन—बन राम फिरै।।

भावार्थ :- ऋषि वशिष्ठ जी राजा दशरथ के कुल गुरू थे। वे त्रिकालदर्शी (भूत-भविष्य तथा वर्तमान की जानने वाले) माने जाते थे। उन्होंने जनकपुरी में राम-सीता के विवाह को तीन दिन आगे कर दिया था, बारात वहीं रूकी रही थी। उसी के पश्चात् बारात को तीन दिन रोकने की परंपरा शुरू हुई थी जो कालांतर में समाप्त प्रायः हो गई है। किसलिए विवाह का लग्न तीन दिन आगे किया था? ऋषि जी ने कारण बताया था कि यह मुहूर्त ठीक नहीं है, तीन दिन बाद शुभ लग्न मुहूर्त है। शुभ लग्न में किये विवाह से बच्चों के गृहस्थ जीवन में कोई आपत्ति नहीं आएगी। सुखी जीवन व्यतीत करेंगे। श्री रामचन्द्र जी तथा सीता जी का विवाह ऋषि वशिष्ठ जी के बताए अनुसार शोध की गई मुहूर्त में किया गया था। कबीर परमेश्वर जी ने बताया कि उस शुभ लग्न से भाग्य (प्रारब्ध) में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। विवाह के तुरंत पश्चात् श्री रामचन्द्र तथा सीता व लक्ष्मण का बनवास हुआ। बन से सीता का अपहरण हुआ। श्री रामचन्द्र जी बन-बन भटक रहा था। पुत्र वियोग में राजा दशरथ की मृत्यु हो गई। घर में कहर हो गया। पूर्ण संत बिना कर्म का फल भोगना ही पड़ता है।

कर्म बोध पृष्ठ 165 पर :-

कबीर, कर्म फांस छूटे नहीं, केतो करो उपाय।
सद्गुरू मिले तो उबरै, नहीं तो प्रलय जाय।।

कबीर सागर के अध्याय ''कर्म बोध'' का सारांश सम्पूर्ण हुआ।

।।सत साहेब।।

अध्याय ''अमर मूल'' का सारांश

कबीर सागर में 25वां अध्याय ''अमर मूल'' पष्ठ 191 पर है। अमर मूल अध्याय में जो उल्लेख है, वह पूर्व के अध्यायों में सब आ चुका है। यह उल्लेख बार-बार बताया जा चुका है। यहाँ अधिक विस्तार की आवश्यकता नहीं है। थोड़ा ही विवरण लिख रहा हूँ जो पर्याप्त है।

''सत्यलोक में स्त्री-पुरूष प्रेम से रहते हैं''

पष्ठ 191 से 201 तक पहले लिखा गया वर्णन है। पष्ठ 202 पर सतलोक में कैसी सष्टि है? कैसा जीवन है? स्त्री-पुरूष हैं। आपस में प्रेम से रहते हैं। कोई भी अहित की वाणी नहीं यानि बुरे वचन नहीं बोलता।

सतलोक में सब व्यक्तियों (स्त्री-पुरूष) का अविनाशी शरीर है। मानसरोवर पर मनुष्य के शरीर की शोभा तथा स्त्रियों की शोभा 4 सूर्यों जितनी है। परंतु अमर लोक में प्रत्येक स्त्री, पुरूष के शरीर की शोभा 16 सूर्यों के प्रकाश जितनी है। सतपुरूष का भी अविनाशी शरीर है। परमेश्वर के शरीर के एक बाल (रोम) का प्रकाश करोड़ सूर्यों तथा करोड़ चाँद के प्रकाश से भी अधिक प्रकाश है। अमर लोक में परमात्मा रहता है।

सतलोक में सतनाम के सहारे सब हंस गए हैं। सतलोक में अमत फल का भोजन खाते हैं। काल लोक में युगों से भूखे प्राणियों की भूख तप्त सतलोक में होती है। सब आत्माएें स्त्री-पुरूष सुधा यानि अमत पीते हैं। जन्म-जन्म की प्यास समाप्त हो जाती है। कामिनी रूप यानि जवान स्त्रियां हैं। वे अपने-अपने पतियों के लिए प्राणों से भी प्यारी हैं। सत्यलोक के निवासी पुरूष सब स्त्रियों को प्रेम भाव से निहारते (देखते) हैं। दोष दष्टि से नहीं देखते। कोई भी व्यक्ति अनहित यानि कटु वचन व्यंग्यात्मक वचन या अभद्र भाषा नहीं बोलते। सब प्रेम भाव से अपनी-अपनी प्रिय रानी यानि पत्नी के साथ मधुर भाव से रहते हैं। उन स्त्रियों की शोभा मन को बहुत लुभाने वाली है। सब स्त्रियां (कामिनी) हंस रूप यानि पवित्र आत्माऐं हैं। उनका रंग चढ़ा रहता है यानि सदा यौवन बना रहता है। वहाँ स्त्री वद्ध नहीं होती, न पुरूष वद्ध होते हैं। सदा जवान रहते हैं।

यह उपरोक्त प्रमाण ज्ञान प्रकाश पष्ठ 57-58 तथा मुहम्मद बोध पष्ठ 20-21 पर दश मुकामी रेखता में भी है तथा ज्ञान स्थिति बोध पष्ठ 82-83 पर परमेश्वर के प्रत्येक अंगों का वर्णन है।

''सार शब्द के विषय में''

है निःशब्द शब्द से कहेऊ। ज्ञानी सोई जो वह पद लेहऊ।।
धर्मदास मैं तोही सुझावा। सार शब्द का भेद बतावा।।

अमर मूल पष्ठ 203 का सारांश :-

सार शब्द निःअक्षर भाई। गहै नाम तेहि संशय नाहीं।।
सार शब्द जो प्राणी पावै। सतलोक माहीं जाय रहावै।।
कोटि जन्म को पातक (पाप) होई। नाम प्रताप से जाय सब खोई।।

पष्ठ 204 से 208 तक सामान्य ज्ञान है।

अमर मूल पष्ठ 209 पर :-

धर्मदास जी ने प्रश्न किया है कि हे परमेश्वर! क्या नारी (स्त्री) भी पार हो सकती हैं?

परमेश्वर कबीर जी ने उत्तर दिया कि :-

नारी तिरै सुनों धर्मदास। कहैं कबीर नाम विश्वास।।
गुरू के चरण निछावर जाई। तन मन धन सब देय चढ़ाई।।
गुरू की सेवा निशदिन करही। सो त्रिया भवसागर तरही।।

अमर मूल पष्ठ 210 से 214 तक सामान्य ज्ञान है।

अमर मूल पष्ठ 215 पर धर्मदास की पत्नी ने नाम लिया, पलंग बिछाकर सतगुरू कबीर जी को बैठाया और आमिनी देवी ने परमेश्वर कबीर जी के चरणों की चरण चंपी यानि पैर दबाकर सेवा की।

आमिनी तब ही पलंग बिछावा। सतगुरू तहां आन पौढ़ावा।।(लेटाया)
धर्मदास तब पंखा डुलावैं। आमिनी चरण चापि सुख पावै।।
साहेब तब ही दाया कीन्हा। मस्तिक हाथ आमिनी के दीन्हा।।

अमर मूल पष्ठ 216 से 232 तक सामान्य ज्ञान है।

अमर मूल में काल प्रेरित कबीर पंथियों ने अपने खाने व धन लेने के लिए आरती करने में कन्चन यानि सोने के थार (थाली), सोने की झारी (सुराही), सोने का घड़ा लाने को कहा है। यह गलत है।

अमर मूल पष्ठ 234 से पष्ठ 244 तक सामान्य ज्ञान है।

अमर मूल पष्ठ 245 का सारांश :-

एक काल (समय) जब आवै भाई। सबै सष्टि लोक सिधाई।।

भावार्थ :- एक काल यानि जब कलयुग पाँच हजार पाँच सौ पाँच बीतेगा। वह काल यानि समय जब आवैगा, तब सब सष्टि सतलोक जाएगी।

अमर मूल पष्ठ 246 से 258 तक सामान्य ज्ञान है।

अमर मूल पष्ठ 259 पर सुमरन की महिमा है।

''सुमरन करना चाहिए''

चौपाई

तुम कहँ शब्द दीन्हा टकसारा। सो हंसन सों कहो पुकारा।।
शब्द सार का सुम्रन करिहै। सहजै सत्यलोक निस्तरिहै।।
सुम्रन का बल ऐसा होई। कर्म काट सब पलमहँ खोई।।
जाके कर्म काट सब डारा। दिव्य ज्ञान सहजै उजियारा।।
जा कहँ दिव्यज्ञान परकाशा। आपहि में सब लोक निवासा।।
लोक अलोक शब्द हैं भाई। जिन जाना तिन संशय नाहीं।।
तत्त्व सार सुमरण है भाई। जातें यमकी तपन बुझाई।।
सुमरण सों सब कर्म बिनाशा। सुमरण सों दिव्यज्ञान प्रकाशा।।
सुमरण सों जाय है सतलोका। सुमरण सों मिटे है सब धोका।।
धर्मन सुमरण देहु लखाई। जासों हंस सबै मुक्ताई।।

उपरोक्त वाणियों से स्पष्ट है कि स्मरण करना चाहिए।

अमर मूल पष्ठ 260 से 264 तक सामान्य ज्ञान है जो पहले वर्णन हो चुका है।

''दीक्षा तीन चरणों में पूरी की जाती है''

अध्याय ''अमर मूल'' के पृष्ठ 265 पर तीन बार में दीक्षा क्रम पूरा करने का प्रमाण है। कबीर जी ने दीक्षा क्रम तीन चरणों में पूरा करने को कहा है :-

साहिब कबीर-वचन

तब कबीर अस कहिबे लीन्हा। ज्ञान भेद सकल कहि दीन्हा।।
धर्मदास मैं कहौं विचारी। जिहितैं निबहै सब संसारी।।
प्रथमहि शिष्य होय जो आई। ता कहँ पान देहु तुम भाई।।
जब देखहु तुम दृढ़ता ज्ञाना। ता कहँ कहहू शब्द प्रवाना।।
शब्द मांहि जब निश्चय आवै। ता कहँ ज्ञान अगाध सुनावै।।
अनुभवका जब करै विचारा। सो तौ तीन लोकसों न्यारा।।
अनुभव ज्ञान प्रगट जब होई। आतमराम चीन्ह है सोई।।
शब्द निहशब्द आप कहलावा। आपहि बोल अबोल सुनावा।।

चौपाई

यह मति हम तौ तुम कहँ दीन्हा। बिरला शिष्य कोइ पावै चीन्हा।।
धर्मदास तुम कहौ सन्देशा। जो जस जीव ताहि उपदेशा।।
बालक सम जाकर है ज्ञाना। तासौं कहहू वचन प्रवाना।।(1)
जा कहँ सूक्ष्म ज्ञान है भाई। ता कहँ सुम्रन देहु लखाई।।(2)
ज्ञान गम्य जा कहँ पुनि होई। सार शब्द जा कहँ कहु सोई।।(3)
जा कहँ दिव्य ज्ञान परवेशा। ता कहँ तत्त्व ज्ञान उपदेशा।।
तत्त्वज्ञान जाहि कहँ होई। दूसर कितहु न देखै सोई।।

यही प्रमाण अध्याय बीर सिंह बोध पृष्ठ 113-114-115 पर भी प्रत्यक्ष प्रमाण है कि राजा बीर देव सिंह बघेल को तीन बार दीक्षा का क्रम पूरा किया था, पढ़ें इसी पुस्तक में अध्याय ''बीर सिंह बोध'' के सारांश में इसी पुस्तक के पृष्ठ 190 से 208 तक।

कबीर सागर के अध्याय 'अमर मूल'' का सारांश सम्पूर्ण हुआ।

।।सत साहेब।।

अध्याय ''उग्र गीता'' का सारांश

कबीर सागर में 25वां अध्याय उग्र गीता पृष्ठ 5 पर है।

गीता का ज्ञान धर्मदास जी को समझाया है। कृपा पढ़ें इसी पुस्तक के अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' के पृष्ठ 3 से 65 तक। (धर्मदास जी को शरण में लिया तथा गीता का ज्ञान समझाया।)

अध्याय ''ज्ञान स्थिति बोध'' का सारांश

कबीर सागर में 26वां अध्याय ज्ञान स्थिति बोध पृष्ठ 77 पर है। ज्ञान स्थिति बोध में कुछ भी भिन्न नहीं है। ज्ञान प्रकाश बोध तथा ज्ञान बोध, मुक्ति बोध में विस्तार से कहा है। इस अध्याय ज्ञान स्थिति में केवल पृष्ठ 83 पर सत्य पुरूष के शरीर का वर्णन विशेष है। परमेश्वर नर आकार (मानव सदृश) स्पष्ट किया है। हाथ, पैर, नाक, कान, सिर, मस्तक सबकी शोभा बताई है। गले में पुष्प की माला पहने हैं। कृपा पढ़ें ज्ञान स्थिति बोध के पृष्ठ 83 पर लिखी वाणी :-

''सत पुरूष साकार (नराकार) है''

साखी—अब मैं कहब तोहि सों चित करो विचार।
कहे कबीर परूष को, याही रूप निज सार।।

चौपाई

कहै कबीर सुनो धर्मदासा। अग्रमूल बिदेह परकाशा।।
इच्छा पुरूष काया बंधाना। लीलागर दीप कीन्ह अस्थाना।।
सुजन हंस जन कीन्ह विश्रामा। धरै ध्यान पुरूषकर नामा।।
तहँवा पुरूष कीन्ह अस्थाना। अस्थल रूपको कहों ठिकाना।।
कंठमाल पुहुपन की राजे। सिर प्रभु के छत्र विराजे।।
हाथ अमी अंकूर बिचारी। जगर मगर शोभा उजियारी।।
उपमा काकहि बरनों भाई। कोटि भानु सो जायें लजाई।।
भालरूप बरनन कहि कैसा। बीस सहस्त्र भानु लखि जैसा।।
श्रवण (कान) शाभा देहु बताई। रवि सहस्त्र तहाँ रहे लजाई।।
चक्षु अमीकर चितवन कैसी। सुधा सिंधु लारें उठ जैसी।।
नासा ग्रीवा कंठ कपोला। शोभा इनकी आइ अतोला।।
मुखारविंद अरविंदहि जानी। उदय कोटि सूरजकी खानी।।
उभय हंस अधरमो विहरै। दामिनि दर्शन उठत जनु लहरै।।
भुजा बाँह मन चिकुर बनाई। हृदय राखि उर कलित लजाई।।
साखि—कटि नाभि पिंडुरी जंघनि, नख सिख बहुत अनूप।
झलझलात झलकत महा, शब्दहि रूप सुरूप।।

चौपाई

निगम नेति नेतिहि करिधावै। तिनको रूप बरन को पावै।।
मन बुधि चित पहुँचे नहिं तहाँ। अबरण पुरूष विराजे जहाँ।।
जहाँ लों निजमन दर्शन पावा। तहाँ लगि वरणि कबीर सुनावा।।

अगम अगाध गाधमो नाहीं। ज्योंके त्यों प्रभु सदा रहाहीं।।
अग्र नाम पुरूष के बरणी। भवसारकी है यह तरणी।।

पष्ठ 82 पर वाणी में लिखा है :-

पुरूष गले पुष्प की माला। हाथ अमर अंकुर रिसाला।।

भावार्थ :- उपरोक्त वाणियों में स्पष्ट है कि परमेश्वर का मानव जैसा शरीर है। उसका प्रत्येक अंग प्रकाशमान है। परमात्मा अविनाशी है। अमर लोक में विद्यमान है।

''पाँच नाम का वर्णन''

पष्ठ 86 पर लिखा है कि मोक्ष मार्ग में पाँच तथा सात नाम का मंत्र भी सहयोगी है।

पाँच नाम ताही को परवाना। जो कोई साधु हृदय में आना।।
सप्त नाल सातों नामा। बीरा बिहंग करैं सब कामा।।

पष्ठ 101 पर :-

यह गुण ज्ञान स्थिति ही के, जो पावै निज नाम।
अजपा जपै कबीर को, सो पहुँचे निज धाम।।
नाम हृदय धरै और जपै सही जाप।
मूल शब्द की रटना करै, मूल शब्द प्रभु आप।।

''ओहं-सोहं का वर्णन''

पष्ठ 105 पर :-

ओहं–सोहं ताको जापा। लिखत परै नहीं पुण्य और पापा।।
मूल शब्द (सार शब्द) काहु नहीं पावा। मूल नाम मैं गुप्त छिपावा।।

पष्ठ 107 पर :-

सार नाम जिन हिये समोई। काल जाल सब जाय बिगोई।।

पष्ठ 126 पर :-

ओहं सोहं के होई सवारा। छोड़ जब देह जावै दरबारा।।

''अक्षर तथा निःअक्षर भिन्न नहीं है''

पष्ठ 144 पर :-

अक्षर निर अक्षर दुजा नाहीं। दूजा कहै हो बिगुचन ताही।।
कह कबीर धर्मदास सों, अक्षर सुमिरहू सार।
निःअक्षर सों प्रीत कर, उतरहू भवजल पार।।

उपरोक्त वाणियों में परमात्मा के नराकार स्वरूप तथा वास्तविक मोक्ष मंत्रों का संकेत है।

कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान स्थिति बोध'' का सारांश सम्पूर्ण हुआ।

।।सत साहेब।।

अध्याय ''संतोष बोध'' का सारांश

कबीर सागर में संतोष बोध 27वां अध्याय पृष्ठ 151 पर है। परमेश्वर कबीर जी ने कबीर बानी अध्याय के पृष्ठ 137 पर कहा है कि ''तेतीस अरब ज्ञान हम भाखा। मूल ज्ञान हम गोय ही राखा।।'' **संतोष बोध उस तेतीस अरब वाणियों में से है।**

संतोष का अर्थ है सब्र। परमात्मा जैसे रखे और जो दे, उसमें संतुष्ट रहना संतोष है। भक्त को भक्ति मार्ग में 16 साधन करते होते हैं जो भक्त का आभूषण कहा है। उनमें से एक संतोष है। कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि :-

गज (हाथी) धन, राज धन और धन न की खान। जब आया संतोष धन, सब धन धूर समान।।

संतोष धन का व्याख्यान पर्याप्त है। अध्याय का नाम गलत रखा है तो भी इसके ज्ञान को 33 अरब वाला जानकर छोड़ देना चाहिए।

संतोष बोध पृष्ठ 158 पर नौ तत्त्व बताए हैं। 1. पृथ्वी 2. जल 3. वायु 4. अग्नि 5. आकाश 6. तेज 7. सुरति 8. निरति 9. शब्द लिखे हैं। इसमें शब्द ''तत्त्व'' गलत लिखा है। शब्द तो आकाश तत्त्व का गुण है। यह ''मन'' तत्त्व है। शेष पृष्ठों पर कमलों का ज्ञान है वह भी अधूरा। सृष्टि रचना का ज्ञान भी आंशिक लिखा है। इसलिए यह सर्व ज्ञान पूर्व के अध्यायों में लिखा जा चुका है।

अध्याय ''काया पांजी'' का सारांश

कबीर सागर में 28वां अध्याय ''काया पांजी'' है। पृष्ठ 173 पर है। परमेश्वर कबीर जी ने शरीर में बने कमलों का ज्ञान तथा जीव जब सतलोक चलता है तो कौन-कौन से मार्ग से जाता है? यह बताया है। परंतु इस अध्याय में यथार्थ वाणी को अपनी बुद्धि से काल वाले कबीर पंथियों ने निकाल दिया और अपनी अल्प बुद्धि से अड़ंगा करके गलत वाणी लिख दी। प्रमाण के लिए पृष्ठ 175 पर प्रथम पंक्ति में लिखा है :-

दहिने घाट चन्द्र का बासा। बाँवें सूर (सूर्य) करे प्रकाशा।।

भावार्थ :- दायें नाक वाला छिद्र चन्द्र यानि शीतल है और बायां छिद्र सूर्य यानि गर्म है। जबकि वास्तविकता यह है कि दायां स्वर तो गर्म यानि सूरज द्वार कहा जाता है। इसको पिंगल नाड़ी भी कहते हैं। बायां स्वर चन्द्र द्वार यानि शीतल द्वार कहते हैं, इसको इंगला नाड़ी कहते हैं और मध्य वाली को सुषमणा नाड़ी कहते हैं। इस प्रकार ज्ञान का अज्ञान करके लिखा है। मेरे पास पुराना यथार्थ कबीर ग्रन्थ है। उससे तथा संत गरीबदास जी के ग्रन्थ से सारांश तथा वाणी लिखकर सार ज्ञान प्रस्तुत कर रहा हूँ।

यथार्थ ज्ञान

कृपा पढ़ें यह शब्द ''कर नैनों दीदार महल में प्यारा है'', इसी पुस्तक के पृष्ठ 154 पर अध्याय अनुराग सागर के सारांश में पृष्ठ 151 के सारांश में।

अब पढ़ें संत गरीबदास जी की वाणी :-

''ब्रह्म बेदी''

ब्रह्म बेदी का अर्थ परमात्मा की भक्ति का सुसज्जित आसन जिसके ऊपर छतर या चाँदनी लगी हो, सुन्दर स्वच्छ गलीचा या गद्दा बिछा हो जैसे पाठ प्रकाश के समय श्री सद्ग्रन्थ साहेब का आसन

तैयार करते हैं। भावार्थ है कि आत्मा में परमात्मा की बेदी बनाकर परमेश्वर को आसन-सिहांसन पर विराजमान करके उसकी स्तुति करें। संत गरीबदास जी की वाणी :-

वाणी :- ज्ञान सागर अति उजागर, निर्विकार निरंजनं। ब्रह्मज्ञानी महाध्यानी, सत सुकृत दुःख भंजनं।।1

❖ **सरलार्थ :- हे परमेश्वर! आप सर्व ज्ञान सम्पन्न हो, ज्ञान के सागर हो। आप अति उजागर अर्थात् पूर्ण रूप मान्य हो। सर्व को आपका ज्ञान है कि परमात्मा परम शक्ति है। इस प्रकार आपका सर्व को ज्ञान है। यह तो उजागर अर्थात् स्पष्ट है कि परमात्मा समर्थ है। आप निर्-विकार निरंजन हो। आप में कोई दोष नहीं, कोई विषय-विकार नहीं है। आप वास्तव में निरंजन हैं। निरंजन का अर्थ है माया रहित अर्थात् निर्लेप परमात्मा। काल भी निरंजन कहलाता है। वास्तव में वह निरंजन नहीं है, वह ज्योति निरंजन है। काल निरंजन है, वह निर्विकार निरंजन नहीं है। हे परमात्मा! आप ब्रह्म ज्ञानी अर्थात् परमात्मा का ज्ञान अर्थात् अपनी जानकारी आप ही प्रकट होकर बताते हैं। इसलिए आप ब्रह्म ज्ञानी हो। अन्य नकली ब्रह्म ज्ञानी हैं। हे परमात्मा! आप महाध्यानी हैं। आप सर्व प्राणियों का ध्यान रखते हो। इस कारण से आप जैसा ध्यानी कोई नहीं। आप सत सुकृत अर्थात् सच्चे कल्याणकर्ता हो। आप अपने भक्त का दुःख नाश करने वाले हैं।(1)**

अब ब्रह्म बेदी की वाणी सँख्या 2 से 8 तक मानव शरीर में बने कमलों का वर्णन संत गरीबदास जी ने किया है। साथ में उनके कमलों को विकसित करने के मंत्र भी बताए हैं। परंतु इन मंत्रों के जाप की विधि केवल मेरे को (संत रामपाल दास को) पता है तथा भक्तों को नाम दान करने की आज्ञा भी मुझे ही है। यदि कोई इन मंत्रों को पढ़कर स्वयं जाप करेगा तो उसको कोई लाभ नहीं होगा।

पहले यह मानव शरीर में बने कमलों का चित्र देखें :-



शरीर (पिण्ड) में कमलों (चक्रों) का चित्र

वाणी :- मूल चक्र गणेश बासा, रक्त वर्ण जहां जानिये।
किलियं जाप कुलीन तज सब, शब्द हमारा मानिये।।2

❖ सरलार्थ :- मानव शरीर में एक रीढ़ की हड्डी (Spine) है जिसे Back Bone भी कहते हैं। गुदा के पास इसका निचला सिरा है। इस रीढ़ की हड्डी के साथ शरीर की ओर गुदा से एक इन्च ऊपर मूल चक्र (कमल) है जिसका रक्त वर्ण अर्थात् खून जैसा लाल रंग है। इस कमल की चार पंखुड़ियाँ हैं। इस कमल में श्री गणेश देव का निवास है। हे साधक! इस कमल को खोलने यानि मार्ग प्राप्त करने के लिए ''किलियम्'' नाम का जाप कर और सब कुलीन अर्थात् नकली व्यर्थ नामों का जाप त्याग दे, हमारे वचन पर विश्वास करके मान लेना।(2)

वाणी :- स्वाद चक्र ब्रह्मादि बासा, जहां सावित्री ब्रह्मा रहैं।
ॐ जाप जपंत हंसा, ज्ञान जोग सतगुरु कहैं।।3

❖ सरलार्थ :- मूल चक्र से एक इन्च ऊपर स्वाद कमल है। इस कमल में सावित्री तथा ब्रह्मा जी का निवास है। इस कमल को खोलने अर्थात् मार्ग प्राप्त करने के लिए ओम् (ॐ) नाम का जाप कर। यह भेद परमेश्वर कबीर जी ने मुझे (संत गरीबदास जी से) सतगुरू रूप में प्रकट होकर कहा है। (3)

वाणी :- नाभि कमल में विष्णु विशम्भर, जहां लक्ष्मी संग बास है।
हरियं जाप जपन्त हंसा, जानत बिरला दास है।।4

❖ सरलार्थ :- शरीर में बनी नाभि तो पेट के ऊपर स्पष्ट दिखाई देती है। इसके ठीक पीछे रीढ़ की हड्डी के ऊपर यह नाभि चक्र (कमल) है। इसमें लक्ष्मी जी तथा विष्णु जी का निवास है। इस कमल को विकसित करने और मार्ग खोलने के लिए हरियम् नाम का जाप करना चाहिए। इस गुप्त मंत्र को कोई बिरला ही जानता है जो सतगुरू का भक्त होगा।(4)

वाणी :- हृदय कमल महादेव देवं, सती पार्वती संग है।
सोहं जाप जपंत हंसा, ज्ञान जोग भल रंग है।।5

❖ सरलार्थ :- हृदय कमल की स्थिति इस प्रकार है :- छाती में बने दोनों स्तनों के मध्य स्थान में ठीक पीछे रीढ़ की हड्डी पर यह हृदय कमल बना है, दिल अलग अंग है। हृदय मध्य को भी कहते हैं। जैसे यह बीच (मध्य) का कमल है। तीन इससे नीचे तथा तीन ऊपर बने हैं। इस कारण से इसको हृदय कमल के नाम से जाना जाता है। इस कमल में महादेव शंकर जी तथा सती जी (पार्वती जी) रहते हैं। इस कमल (चक्र) को विकसित करने और मार्ग खोलने का मंत्र ''सोहम्'' जाप साधक को जपना चाहिए। जो ज्ञान योग में वास्तविक ज्ञान मिला है, यह अच्छा रंग अर्थात् शुभ लगन का कार्य है। इस यथार्थ ज्ञान के रंग में रंग जाओ।(5)

वाणी :- कंठ कमल में बसै अविद्या, ज्ञान ध्यान बुद्धि नासही।
लील चक्र मध्य काल कर्मम्, आवत दम कुं फांसही।।6

❖ सरलार्थ :- गले के पीछे रीढ़ की हड्डी के ऊपर यह कण्ठ कमल बना है। इसमें अविद्या अर्थात् दुर्गा जी का निवास है। जिसके प्रभाव से जीव का ज्ञान तथा भक्ति के समय ध्यान समाप्त होता है तथा दुर्गा बुद्धि को भ्रष्ट करती है। यह लील चक्र अर्थात् 16 पंखुड़ियों का यह चक्र है। इसी के साथ सूक्ष्म रूप में काल निरंजन भी रहता है। दुर्गा देवी जी काल निरंजन की पत्नी है। काल ने गुप्त रहने की प्रतिज्ञा कर रखी है। ये दोनों मिलकर भक्त के अध्यात्म ज्ञान तथा ध्यान को तथा श्वांस से किए जाने वाले नाम स्मरण को भुलाते हैं। इस कमल को विकसित करने और मार्ग खोलने का श्रीयम् मंत्र है।(6)

वाणी :- त्रिकुटी कमल परम हंस पूर्ण, सतगुरु समरथ आप है।
मन पौना सम सिंध मेलो, सुरति निरति का जाप है।।7

❖ **सरलार्थ :- मस्तिष्क का वह स्थान जो दोनों आँखों के ऊपर बनी भौवों (सेलियों) के मध्य जहाँ टीका लगाते हैं, उसके पीछे की ओर आँखों के पीछे यह त्रिकुटी कमल है। इसमें पूर्ण परमात्मा सतगुरू रूप में विराजमान हैं। इस कमल की दो पंखुड़ियाँ हैं। एक का सफेद रंग है, दूसरी का काला रंग है। यहाँ सफेद स्थान पर विराजमान सतगुरू के सारनाम का जाप सुरति निरति से किया जाता है। वह उपदेशी को बताया जाता है।(7)**

वाणी :- सहंस कमल दल भी आप साहिब, ज्यूं फूलन मध्य गन्ध है।
पूरण रह्या जगदीश जोगी, सत् समरथ निर्बन्ध है।।8

❖ **सरलार्थ :- सहंस्र कमल दल का स्थान सिर के ऊपरी भाग में कुछ पीछे की ओर है जहाँ पर कुछ साधक बालों की चोटी रखते हैं। वैसे भी बाल छोटे करवाने पर वहाँ एक भिन्न निशान-सा नजर आता है। इस कमल की हजार पंखुड़ियाँ हैं। इस कारण से इसे सहंस्र कमल कहा जाता है। इसमें काल निरंजन के साथ-साथ परमेश्वर की निराकार शक्ति भी विशेष तौर से विद्यमान है। जैसे भूमध्य रेखा पर सूर्य की उष्णता अन्य स्थानों की अपेक्षा अधिक रहती है। वह जगदीश ही सच्चा समर्थ है, वह निर्बन्ध है। काल तो 21 ब्रह्माण्डों में बँधा है। सत्य पुरूष सर्व का मालिक है।(8)**

वाणी :- मीनी खोज हनोज हरदम, उलट पन्थ की बाट है।
इला पिंगुला सुषमन खोजो, चल हंसा औघट घाट है।।9

❖ **सरलार्थ :- जैसे मछली ऊपर से गिर रहे जल की धारा में उल्टी चढ़ जाती है। इसी प्रकार भक्त को ऊपर की ओर सतलोक में चलना है। उसके लिए इला (इड़ा अर्थात् बाईं नाक से श्वांस) तथा पिंगुला (दांया स्वर नाक से) तथा दोनों के मध्य सुष्मणा नाड़ी है। उसको खोजो। फिर हे भक्त! ऊपर को चल जो औघट घाट अर्थात् उलट मार्ग है। संसार के साधकों का मार्ग त्रिकुटी तक है। संत मार्ग (घाट) इससे और ऊपर उल्टा चढ़ने का मार्ग (घाट) है। यह सुष्मणा सतनाम के जाप से खुल जाता है।(9)**

वाणी :- ऐसा जोग विजोग वरणो, जो शंकर ने चित धरया।
कुम्भक रेचक द्वादस पलटे, काल कर्म तिस तैं डरया।।10

❖ **सरलार्थ :- संत गरीबदास जी ने बताया है कि मुझे सतगुरू रूप में परमेश्वर मिले थे। उन्होंने तत्त्वज्ञान बताया, मैनें अभ्यास करके देखा जो खरा उतरा। मैं आपको ऐसा जोग (योग, साधना) तथा विजोग (वियोग अर्थात् विशेष साधना) का वर्णन करता हूँ जो साधना (योग) शंकर जी ने चित्त धर्या (ध्यान किया = समाधि लगाई) सामान्य योग (साधना) तो यह है कि कुम्भक (श्वांस को अंदर लेने की क्रिया को कहते हैं, श्वांस को कुछ समय अंदर रोकना होता है) तथा रेचक (श्वांस को बाहर छोड़ने की क्रिया को रेचक क्रिया कहते हैं) करके किया जाता है। विजोग अर्थात् विशेष योग का ज्ञान परमेश्वर जी ने ही बताया है जो हमारे पास है जिसके करने से द्वादश वायु पलटती हैं अर्थात् नीचे की बजाय ऊपर को रूख कर लेती हैं। शरीर में पाँच वायु (पान, अपान, वियान, धन्जय, प्राण वायु) का ज्ञान तो सामान्य योग करने वाले योगियों (साधकों) को भी होता है। इसके अतिरिक्त 7 वायु शरीर में ओर हैं जिनका ज्ञान वियोग करने वाले योगियों (साधकों) को ही होता है। वियोग को करने से कर्मनाश होता है। अन्य साधना से कर्म नाश नहीं होते। इसी आधार से काल भगवान दण्डित करता है। कर्मनाश होने के कारण काल भी उस साधक से भय मानता है कि इसको विजोग (विशेष योग) का ज्ञान है। यह परम अक्षर पुरूष का भक्त है।(10)**

वाणी :- सुन्न सिंघासन अमर आसन, अलख पुरुष निर्बान है।
अति ल्यौलीन बेदीन मालिक, कादर कुं कुर्बान है।।11

❖ **सरलार्थ :- परम अक्षर पुरूष अर्थात् पूर्ण ब्रह्म तो निर्बान (निर्वाण अर्थात् पूर्ण मुक्त) अर्थात् स्वतंत्र है। उसका सिहांसन (तख्त) ऊपर सुन्न स्थान में है जो अमर आसन है अर्थात् अविनाशी ठिकाना है। वह परम अक्षर ब्रह्म अति ल्यौलीन है अर्थात् संसार के धारण-पोषण करने में व्यस्त है। वह बेदीन है अर्थात् कभी पथ्वी पर लीला करने आता है, कभी ऊपर के अमर लोक में बैठकर दुनिया (संसार) को देखता है। परमात्मा का कोई दीन (धर्म) नहीं है, वह सर्व धर्म के व्यक्तियों का धारण-पोषण करता है। {वह परमात्मा ऐसे स्थान पर ऊपर के लोक में रहता है जिसे हम पथ्वी से नहीं देख सकते। जिस कारण से उसको अलख पुरूष कहते हैं। लख का अर्थ है देखना, जो देखा ना जाए, वह अलख कहलाता है।} संत गरीबदास जी कह रहे हैं कि ऐसे कादिर (समर्थ) परमात्मा को मैं कुर्बान हूँ, बलिहारी हूँ।(11)**

वाणी :- है निरसिंघ अबंध अबिगत, कोटि बैकुण्ठ नखरूप है।
अपरंपार दीदार दर्शन, ऐसा अजब अनूप है।।12

❖ **सरलार्थ :- परमात्मा सीमा रहित, बंधन रहित है जिसकी गति (स्थिति) को कोई नहीं जानता(परमात्मा अविगत है)। उसके नाखून जितने स्थान पर करोड़ों स्वर्ग स्थापित हैं। भावार्थ है कि परमात्मा की अध्यात्मिक शक्ति जिसे निराकार शक्ति कहते हैं, इतनी विशाल तथा शक्तियुक्त है कि उसके अंश मात्र पर करोड़ों स्वर्ग स्थापित हैं। जैसे सत्य लोक (सतलोक) में जितने भी ब्रह्माण्ड हैं, वे सर्व स्वर्ग हैं अर्थात् सुखदायी स्थान हैं। स्वर्ग नाम सुखमय स्थान का है। काल लोक के स्वर्ग की तुलना में सत्यलोक का स्वर्ग असँख्य गुणा अच्छा है। वह परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् सत्यपुरूष अपरमपार है। उसकी लीला का कोई वार-पार अर्थात् सीमा नहीं है। उसका दीदार करने से (देखने से) पता चलता है कि वह ऐसा अजब (अनोखा) अर्थात् अनूप है। जिसकी तुलना करने को दूसरा नहीं है।**

नोट :- संत गरीबदास जी का दष्टिकोण रहा है कि वाणी में सभी भाषाओं का समावेश किया जाए ताकि पथ्वी के सब मानव तत्त्वज्ञान से परिचित हो सकें। इस वाणी में दीदार शब्द के साथ दर्शन शब्द भी लिखा है। दोनों का अर्थ एक ही है 'देखना', दोहे में लिखा है दीदार दर्शन, यह पद्य भाग है। इसमें कोष्ठ (Baract) का प्रयोग नहीं होता। यदि गद्य भाग में कहानी की तरह लिखते समय दीदार (दर्शन) लिख सकते हैं। इससे दीदार का अर्थ 'दर्शन' है, स्पष्ट हो जाता है। 'दीदार' शब्द उर्दू भाषा का है और 'दर्शन' शब्द हिन्दी भाषा का। इसी प्रकार 'अजब' शब्द उर्दू भाषा का है जिसका अर्थ है अनोखा और 'अनूप' शब्द हिन्दी भाषा का है जिसका अर्थ भी अनोखा होता है।(12)

वाणी :- घुरैं निसान अखण्ड धुन सुन, सोहं बेदी गाईये।
बाजैं नाद अगाध अग है, जहां ले मन ठहराइये।।13

❖ **सरलार्थ :- सतलोक में निशान (झण्डे=पताका) फहरा रहे हैं तथा वहाँ पर अखण्ड (निरंतर) धुन बज रही है। हे साधक! उसको सुनकर सोहं मन्त्र की स्तुति करना। भावार्थ है कि 'सोहं' मंत्र पथ्वी के किसी ग्रन्थ में नहीं है। यह शब्द परमात्मा कबीर जी ने पथ्वी पर प्रकट किया है। कहा भी है कि :-**

सोहं शब्द हम जग में लाए। सार शब्द हमने गुप्त छिपाए।।

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 95 मन्त्र 2 में भी कहा है कि परमात्मा पथ्वी पर प्रकट होकर अपनी वाणी बोलकर मानव को भक्ति करने की प्रेरणा करता है। परमेश्वर भक्ति के गुप्त नामों का आविष्कार करता है। इसलिए कहा है कि सोहं मन्त्र के बिना साधना अधूरी थी। यदि साधक को सोहं मंत्र मिल

जाता है तो साधक परमेश्वर के सतलोक में पहुँच सकता है। इसलिए सोहं नाम की बेदी (स्तुति) कीजिए कि यह न मिलता तो मोक्ष सम्भव नहीं था। उस सतलोक में और भी अनेकों नाद (शब्द) गूँज रहे हैं जो अगाद अर्थात् दुर्लभ और आगे के (सतलोक के) हैं। वहाँ पर अर्थात् उन शब्दों की आवाज पर अपने मन को रोकना। मार्ग की चकाचौंध में भ्रमित न होना।(13)

वाणी :- सुरति निरति मन पवन पलटे, बंकनाल सम कीजिए।
सरबै फूल असूल अस्थिर, अमी महारस पीजिए।।14

❖ **सरलार्थ :-** उस अमर स्थान को प्राप्त करने के लिए सुरति (ध्यान की प्रक्रिया) निरति (ध्यान में वस्तु का निरीक्षण करने की प्रक्रिया) जैसे आप जी दूर स्थान पर कोई पशु देखते हैं तो सुरति ने अन्दाजा लगाया कि शायद वह पशु गाय है। फिर निकट जाने पर निरति ने निर्णय किया कि वह बैल है। सुरति ध्यान में किसी पदार्थ को देखती है, निरति निरीक्षण करती है, मन निर्णय करता है।

मानव की रीढ़ की हड्डी के अंदर की ओर एक नाड़ी टेढ़ी-मेढ़ी (बांकी) है, वह रीढ़ की हड्डी के निचले सिरे से त्रिकुटी तक जाती है। कमर को सीधा करने से उसका बंक (टेढ़ापन) कम हो जाता है, अवरोध समाप्त हो जाता है। जैसे रबड़ की पाईप मुड़ जाने से तरल पदार्थ आगे नहीं जाता। सीधी करने से अवरोध समाप्त हो जाता है। इसलिए वाणी में कहा है कि बंकनाल (बंक नली) को सम् अर्थात् समकोण 90° के कोण पर करके सतनाम के मंत्र का जाप कर। सुरति-निरति, मन तथा पवन अर्थात् श्वांस को संसार के चिंतन से उल्टकर नाम पर केन्द्रित करके स्मरण करो। जिससे आपकी भक्ति रूपी बगीची के फूल खिल जाएंगे तथा असूल अर्थात् काँटों (दुःखों) रहित जीवन हो जाएगा। सतलोक में जन्म-मरण रहित होकर अस्थिर (स्थाई) जीवन प्राप्त होगा। फिर वहाँ पर महासुख रूपी अमी (अमत जीवन) का महारस अर्थात् महान सुख को पीजिए अर्थात् आनन्द लीजिए।(14)

वाणी :- सप्त पुरी मेरूदण्ड खोजो, मन मनसा गह राखिये।
उड़हैं भंवर आकाश गमनं, पांच पचीसों नाखिये।।15

❖ **सरलार्थ :-** वाणी सँख्या 2 से 8 तक कहे गए सात कमलों को इस वाणी में सांकेतिक सप्तपुरी (सात नगरी) कहा है। इन सप्त पुरियों को खोजने का भावार्थ है इनको पार करना है। इसलिए मेरूदण्ड अर्थात् रीढ़ की हड्डी को मेरूदण्ड कहा है। मेरू का पूरा शब्द सुमेरू पर्वत है। वास्तव में सर्व पूर्वोक्त देवताओं की नगरियाँ (लोक) सुमेरू पर्वत पर स्थित माने गए हैं। परंतु वे नगरियाँ शरीर में बने चक्रों में दिखाई देती हैं। जब कमल (चक्र) खुल जाते हैं। ये कमल रीढ़ की हड्डी पर चिपके हैं, इसलिए रीढ़ की हड्डी को मेरूदण्ड कहा जाता है। मेरू का अर्थ है सुमेरू पर्वत तथा डण्ड का अर्थ है डण्डा अर्थात् वह वास्तविक सुमेरू पर्वत शरीर में डण्डे के समान सीधा दिखाई देता है।

उदाहरण :- जैसे टेलीविजन (T.V.) में चैनल बने हैं। कार्यक्रम दिल्ली के स्टूडियो में चलता है, दिखाई देता है बरवाला (जिला-हिसार) में टी.वी. में। प्रधानमंत्री जी भाषण दे रहे हैं मुंबई में, दिखाई दे रहे हैं T.V. चैनल पर। ठीक इसी प्रकार शरीर को T.V. जानें तथा शरीर में बने कमलों (चक्रों) को चैनल समझें। जिस टी.वी. का जो चैनल ऑन (On) अर्थात् शुरू हो जाता है, उसी का कार्यक्रम (Program) दर्शक देखते हैं। ठीक इसी प्रकार वाणी सँख्या 15 में कहा है कि अपने शरीर के चक्रों अर्थात् चैनलों को खोजो (सर्च करो)। उसके लिए कमर सीधी करके ध्यान द्वारा शरीर में देखो। आप जी का जो कमल विकसित हो जाएगा (जो चैनल ऑन हो जाएगा) तो आप उसका नजारा देख सकोगे, कमल खुलेंगे। कमलों के मन्त्रों से जो वाणी सँख्या 2 से 5 तक बताए हैं, कुछ ओर भी हैं जो साधक को प्रथम बार दी जाने वाली दीक्षा में दिए जाते हैं। मन्त्रों का जाप करते समय तथा कमलों को

खोजने के लिए अन्तर्मुख होने के समय मन मनसा (मन की कल्पनाओं) को गह राखिए अर्थात् रोककर नाम पर लगाकर रखिएगा। फिर आपका भंवर (भंवरा) अर्थात् आत्मा आकाश मण्डल में बने सतलोक की ओर नाम जाप से प्राप्त भक्ति की शक्ति से उड़कर गमन करेगा अर्थात् प्रस्थान करेगा। साधना काल में तथा सतलोक प्रस्थान के समय पाँच तत्त्व तथा इनकी 25 प्रकति अर्थात् उन लक्षणों से बने संसारिक परिवार, अपना शरीर तथा अन्य कार-कोठी संपत्ति का मोह नाखिए अर्थात् भूल जाईये, समाप्त कर दीजिए (छोड़ दीजिए), तब ही आप ऊपर सुख स्थान पर पहुँच पाओगे।(15)

वाणी :- गगन मण्डल की सैल कर ले, बहुरि न ऐसा दाव है।
चल हंसा परलोक पठाऊँ, भौ सागर नहीं आव है।।16

❖ **सरलार्थ :- मानव शरीर में सत्य भक्ति करके आप आकाश में बने लोकों का भ्रमण भी कर सकते हैं। यह दॉव अर्थात् अवसर मानव शरीर में ही प्राप्त है। फिर अन्य प्राणियों के शरीर में यह सुविधा नहीं है। हे हंस अर्थात् निर्विकार भक्त! हमारे कहे अनुसार चल अर्थात् भक्ति की साधना कर ले, तेरे को सत्यलोक में भेज दूँगा। फिर इस संसार सागर में नहीं आएगा अर्थात् पूर्ण मोक्ष प्राप्त हो जाएगा। भावार्थ है कि गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहे परमेश्वर के उस परम धाम को प्राप्त हो जाता है जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर संसार में कभी नहीं आता।(16)**

वाणी :- कन्द्रप जीत उदीत जोगी, षट करमी यौह खेल है।
अनभै मालनि हार गूदें, सुरति निरति का मेल है।।17

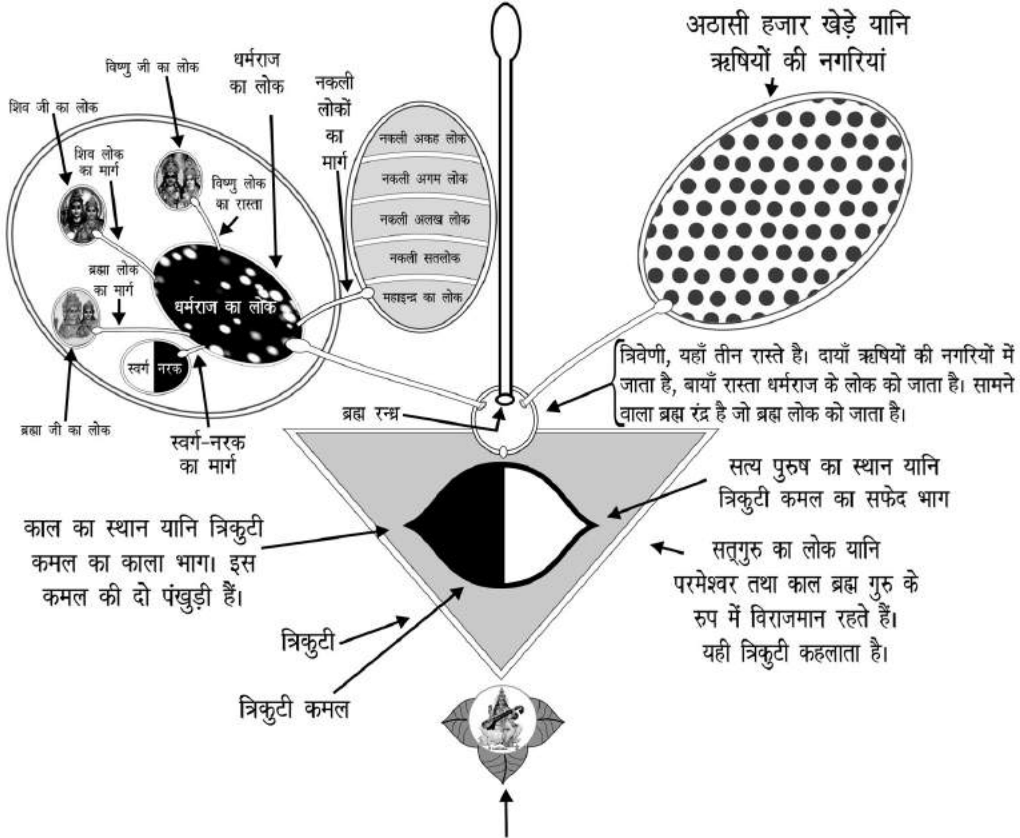
❖ **सरलार्थ :- कंदर्प जीत अर्थात् ब्रह्मचर्य का पालन करके उदीत योगी बनता है। {जिस साधक का कंदर्प(शुक्राणु=वीर्य) उर्धव=ऊपर की ओर चलकर शरीर में समाने लगता है, उसको उदीत योगी कहते हैं। उसके लिए सिद्ध आसन पर बैठकर साधना करनी होती है। षट कर्म अर्थात् धोती, नेती, न्यौली, गज करनी, प्राणायाम तथा ध्यान आदि छः क्रिया करके उदीत योगी बनता है।} यह क्रियाऐं तो भक्ति मार्ग में बच्चों के खेल के तुल्य कर्म हैं। मोक्ष मार्ग तो सहज क्रियाओं (नाम स्मरण-पाँचों यज्ञों) द्वारा प्राप्त होता है। जिससे अनभय मालिन अर्थात् निर्भय हुई आत्मा हार गुदें अर्थात् सत्य मंत्रों का स्मरण सुरति-निरति अर्थात् विधिवत् ध्यानपूर्वक करती है। उससे परमात्मा से मिला जाता है।(17)**

वाणी :- सोहं जाप अजाप थरपो, त्रिकुटी संयम धुनि लगै।
मान सरोवर न्हान हंसा, गंग् सहंस मुख जित बगै।।18

❖ **सरलार्थ :- कमलों को छेदकर अर्थात् प्रथम दीक्षा मंत्र के जाप से कमलों का अवरोध साफ करके सत्यनाम के मंत्र का जाप करके उससे प्राप्त भक्ति शक्ति से साधक त्रिकुटी पर पहुँच जाता है। त्रिकुटी के पश्चात् ब्रह्मरंद्र को खोलना होगा जो त्रिवैणी (जो त्रिकुटी के आगे तीन मार्ग वाला स्थान है) के मध्यम भाग में है। ब्रह्मरंद्र केवल सतनाम के स्मरण से खुलता है। इसलिए कहा है कि सोहं नाम का जाप विशेष कसक के साथ जाप करने से (थरपने) ब्रह्मरंद्र खुलता है। सोहं जाप की शक्ति त्रिकुटी तथा त्रिवैणी के संजम (संगम) पर बने ब्रह्मरंद्र को खोलने की धुन अर्थात् विशेष लगन लगे तो वह द्वार खुल जाता है। हे हंस अर्थात् सच्चे भक्त! उसके पश्चात् ब्रह्म लोक में बने मानसरोवर पर स्नान करना, वहाँ से गंगा हजारों भागों में बहती है, निकलती है, अन्य लोकों में जाती है।(18)**

त्रिकुटी तथा त्रिवेणी का चित्र

इस चित्र को कबीर सागर के अध्याय 'भवतारण बोध' पृष्ठ 57, अध्याय 'कबीर बानी' पृष्ठ 111 तथा अध्याय 'पंच मुद्रा' पृष्ठ 190-191 से प्रमाण से बनाया है। इनके अतिरिक्त कमलों का वर्णन अध्याय 'अनुराग सागर' पृष्ठ 151 पर भी है जो अस्पष्ट है। चित्र में मेरा (संत रामपाल दास का) अनुभव भी विशेष है।



यह छठा संगम कमल सरस्वती का निवास है। वास्तव में दुर्गा ही सरस्वती रुप में रहती है। तीन पंखुड़ी हैं। यहाँ पर धर्मराज ने जीवों को काल जाल में फंसाए रखने के लिये 72 करोड़ उर्वशी (सुन्दर परियाँ) रखी हैं। सरस्वती मधुर आवाज में स्वयं भी गाती हैं तथा सब उर्वशियां भी गाती हैं तथा अर्धनग्न शरीर में विचरण करती रहती हैं। यहाँ भक्तों की कठिन परिक्षा होती है। बहुत बड़ा बाड़ा है। कई एकान्त स्थान हैं। यहाँ पर अज्ञानी मार खा जाता है। इसकी एक पंखुड़ी में काल अन्य रूप में निवास करता है जो उन भक्तों को पकड़ लेता है जो सुंदर स्त्रियों को देखकर भ्रमित होते हैं। इसके साथ करोड़ों की संख्या में युवा रहते हैं जो भक्तमतियों को अपनी ओर आकर्षित करके काल-जाल में रखते हैं। इसी छठे कमल की तीसरी पंखुड़ी जो दांई ओर है। उसमें सतपुरूष भी अन्य रूप में रहते हैं जो भक्तों को वाणी सुनाकर काल-जाल से सचेत करते हैं और उनको अपनी ओर आने का संकेत करते हैं। भक्त सैन (ईशारा-संकेत) समझ जाते हैं और दौड़कर उनके पक्ष में चले जाते हैं। फिर दो दल के कमल में भक्त-भक्तमति जाते हैं।

वाणी :- कालइंद्री कुरबान कादर, अबिगत मूरति खूब है।
छत्र श्वेत विशाल लोचन, गलताना महबूब है।।19

❖ **सरलार्थ :- 'कालिन्द्री' का अर्थ यमुना दरिया भी है, परंतु यहाँ पर काल इन्द्री का अर्थ है कि परमेश्वर कबीर जी के लिए काल अर्थात् 21 ब्रह्माण्ड के स्वामी ब्रह्म जैसे तो इन्द्र जैसे हैं। जैसे काल लोक में एक ब्रह्माण्ड में एक इन्द्र का लोक है जिसके आधीन 33 करोड़ देवता हैं, इन्द्र उनका राजा है। जिस कारण से देवराज भी कहा जाता है। परंतु ब्रह्म 21 ब्रह्माण्डों का राजा है। जैसे ब्रह्म की तुलना में इन्द्र की महिमा कुछ नहीं है। इसी के आधार से संत गरीबदास जी ने परमेश्वर कबीर जी की उपमा की है कि उस कादिर (समर्थ) परमात्मा की शक्ति-महिमा के सामने काल ब्रह्म की महिमा उस इन्द्र के तुल्य है जो काल लोक में इन्द्र बना है। इसलिए परमेश्वर को कालइन्द्री अर्थात् काल ब्रह्म जैसे जिसके सामने इन्द्र तुल्य हैं। जैसे चार भुजा वाले को चतुर्भुजी कहते हैं। ऐसे ही परमेश्वर को कालइन्द्री कहा है। ऐसे कादिर यानि समर्थ परमात्मा पर मैं (संत गरीबदास जी) कुर्बान हूँ। उस अविगत (जिसकी गति अर्थात् स्थिति से कोई परिचित न होने से उसे अविगत कहा जाता है) परमात्मा की मूर्ति अर्थात् जीवित साकार तस्वीर खूब है अर्थात् वास्तव में परमेश्वर सुन्दर शक्ल में है। वह परमात्मा विशाल लोचन अर्थात् बड़ी-बड़ी नेत्रों वाला है, मस्त महबूब है अर्थात् आत्मा का प्रेमी है। जिस सिंहासन (तख्त) पर परमात्मा विराजमान है, उसके ऊपर सफेद छत्र लगा है। जैसे राजा-महाराजाओं के सिर पर छातानुमा चाँदी या सोने का छत्र लगाया जाता था। उसी प्रकार परमेश्वर की स्थिति आँखों देखकर संत गरीबदास जी ने बताई है।(19)**

वाणी :- दिल अन्दर दीदार दर्शन, बाहर अन्त न जाइये।
काया माया कहां बपुरी, तन मन शीश चढाइये।।20

❖ **सरलार्थ :- परमात्मा के दर्शन आप अपने हृदय में कर सकते हैं। भावार्थ है कि जिस समय आप सच्चे दिल से भक्ति करके परमात्मा को पुकारोगे तो आपको हृदय कमल में परमात्मा दर्शन देंगे क्योंकि परमात्मा सर्व कमलों में भी विद्यमान है। जैसे किसी कमरे के द्वार पर किसी पात्र में जल रखा है और द्वार के ऊपर बल्ब या ट्यूब लगी है और दिन में जग रही है। उधर से सूर्य भी उदय है तो उस पात्र में सूर्य तथा ट्यूब या बल्ब दोनों का प्रतिबिंब दिखाई देता है। ट्यूब का प्रतिबिंब तो केवल कमरे में रखे पात्र के जल में दिखाई देता है परंतु सूर्य का प्रतिबिंब बाहर व अंदर के सर्व पात्रों में दिखाई देता है। इसलिए कहा है कि परमात्मा प्राप्ति के लिए शरीर से साधना करके दर्शन कर लो। हृदय कमल में परमात्मा दिखाई देगा। शिव अलग दिखाई देगा। परमात्मा भी उसी कमल में भिन्न दिखाई देगा। कहीं अन्य स्थानों-तीर्थों आदि पर न जाईये। परमात्मा प्राप्ति के लिए शरीर तो क्या वस्तु है, सर्वस्व अर्पण कर दो।(20)**

वाणी :- अबिगत आदि जुगादि जोगी, सत पुरुष ल्यौलीन है।
गगन मंडल गलतान गैबी, जात अजात बेदीन है।21

❖ **सरलार्थ :- सत्यपुरूष परमात्मा गगन मण्डल अर्थात् आकाश में बने सतलोक में रहता है, वह आदि से ही विद्यमान है। वही सच्चा जोगी अर्थात् साधु-बाबा है जो तत्त्वज्ञान देने के लिए पथ्वी पर आता है।(21)**

वाणी :- सुखसागर रतनागर निर्भय, निज मुखबानी गावहीं।
झिन आकर अजोख निर्मल, दृष्टि मुष्टि नहीं आवहीं।22

❖ **सरलार्थ :- परमेश्वर सुख रूपी रत्नों का आगार अर्थात् डिपो (खान) है। इसलिए सुख सागर कहा**

जाता है। वह वास्तव में निर्भय है और अपने निजी मुख कमल से तत्त्वज्ञान की वाणी कविताओं, भजनों, चौपाईयों, दोहों को राग बनाकर गाता है। उस परमात्मा का सूक्ष्म आकार है। जिस कारण से चर्मदष्टि से नहीं दिखता। उस परमात्मा का सूक्ष्म शरीर अजोख अर्थात् जिसको कोई जोखिम (खतरा) नहीं है, उनका शरीर नष्ट नहीं होता। उनका शरीर अविनाशी है, निर्मल है अर्थात् निर्विकार है।(22)

वाणी :- झिल मिल नूर जहूर जोति, कोटि पद्म उजियार है।
उल्ट नैन बेसुन्य बिस्तर, जहाँ तहाँ दीदार है।।23

❖ **सरलार्थ :- उस परमेश्वर का शरीर झिलमिल-झिलमिल करता है। उसके नूर (प्रकाश) का जहूर (नजारा) तथा ज्योति करोड़ पद्मों के प्रकाश के तुल्य प्रकाश है। जैसे श्री कष्ण जी के पैर में एक पद्म था। उसका प्रकाश सौ (100) वॉट के बल्ब जितना था। परमात्मा के शरीर की ज्योति दूर से करोड़ों पद्मों जैसी दिखाई देती है। उसको देखने के लिए अपने नैनों (नेत्रों) को संसार से उल्टकर (हटाकर) ऊपर उस सुन्न रूप आकाश में लगा जहाँ परमात्मा का बिस्तर अर्थात् पलंग है और उस पर बिछौना बिछा है। वहाँ उस परमेश्वर का वास्तविक दर्शन होता है। जिसके एक रोम अर्थात् शरीर के बाल का प्रकाश करोड़ों सूर्यों तथा करोड़ों चन्द्रमाओं से भी अधिक है।(23)**

वाणी :- अष्ट कमल दल सकल रमता, त्रिकुटी कमल मध्य निरख हीं।
स्वेत ध्वजा सुन्न गुमट आगै, पचरंग झण्डे फरक हीं।।24

❖ **सरलार्थ :- जैसे वाणी सँख्या 20 के सरलार्थ में स्पष्ट किया कि कमरे का बल्ब तो केवल कमरे में रखे पात्रों के जल में ही दिखाई देता है। परंतु सूर्य कमरे के अंदर तथा बाहर भी जल में दिखाई देता है। उसी का प्रमाण इस वाणी सँख्या 24 में स्पष्ट किया है कि एक आठवाँ कमल दल (समूह) है जो काल के लोकों से बाहर अक्षर पुरूष पर ब्रह्म के लोक में है। उसमें भी परमात्मा (परम अक्षर ब्रह्म) है। इसके साथ-साथ सकल अर्थात् सर्व स्थानों पर उसकी सत्ता है। उसको त्रिकुटी कमल में भी देखा जाता है। सुन्न अर्थात् आकाश में सुन्न स्थान वाले सतलोक में परमात्मा के गुमट (स्तूप) के ऊपर सफेद (White) ध्वजा फरक रही है, लहरा रही है। उस गुम्बजनुमा महल में परमेश्वर सिहांसन (तख्त) पर विराजमान है। उस गुम्बज के आगे मैदान में ऊँचे स्तंभ पर पाँच रंग का झंडा अलग से फरक रहा है।(24)**

वाणी :- सुन्न मंडल सतलोक चलिये, नौ दर मुंद बिसुन्न है।
दिव्य चिसम्यों एक बिम्ब देख्या, निज श्रवण सुनिधुनि है।।25

❖ **सरलार्थ :- ऊपर सुन्न रूप आकाश में बने सतलोक में चलो, उसके लिए बाहर के नौ दर (द्वारों) को मूंदकर (बंद करके) दिव्य चिसम्यों (नेत्रों) से एक बिम्ब अर्थात् चमकता चेहरा देखा। अपने कानों से सतलोक की धुन अर्थात् शब्द की आवाज सुनी है।(25) {नौ दर द्वार हैं। दो नाक के छिद्र, दो आँखें, दो कान, मुख, गुदा तथा पेशाब द्वार कुल नौ द्वार हैं। दसवां सुष्मणा द्वार है जो दोनों नाकों इड़ा (बायें नाक का छिद्र) तथा पिंगला (दायें नाक का छिद्र) इनके मध्य सुष्मणा द्वार है।}**

वाणी :- चरण कमल में हंस रहते, बहुरंगी बरियाम हैं।
सूक्ष्म मूरति श्याम सूरति, अचल अभंगी राम हैं।।26

❖ **सरलार्थ :- उस परमेश्वर के चरण कमलों में अर्थात् उनके लोक में (उनकी शरण में) हंस (निर्विकार भक्तजन) रहते हैं। वह परमात्मा बहुत भांति से बरियाम अर्थात् श्रेष्ठ है, महिमा करने योग्य है। वह सूक्ष्म मूर्ति अर्थात् स्वरूप में श्याम सुरति है। यहाँ पर शाम सुरति है, जिसका अर्थ है कि शाम**

के समय सूर्य का प्रकाश धीमा रहता है। उसी प्रकार जब परमात्मा पथ्वी लोक में आता है तो उनके शरीर का तेज हल्का रहता है। इसलिए श्याम (शाम) सुरति (स्वरूप) कहा है। वह परमात्मा अचल अर्थात् कभी न चलने वाला, सदा रहने वाला है। अभंगी जो कभी भंग न हो, कभी टूटे ना अर्थात् जिसका किसी समय में विनाश न हो अर्थात् अविनाशी राम है।(26)

वाणी :- नौ सुर बन्ध निसंक खेलो, दसमें दर मुखमूल है।
माली न कुप अनूप सजनी, बिन बेली का फूल है।।27

❖ **सरलार्थ :- भक्त को हिदायत दी है कि नौ सुर (जो शरीर में नौ सुराख हैं जैसे - दो नाक, दो कान, दो आँखें, एक मुख, पेशाब इन्द्री तथा मल द्वार, ये नौ सुराख नौ द्वार कहे हैं।) को बंद करके अर्थात् इनसे हटकर दसवाँ द्वार (सुषमणा द्वार) है। उस दसवें द्वार में मुख अर्थात् मुख्य मूल अर्थात् मोक्ष की जड़ें हैं। वहाँ से ऊपर की कठिन चढ़ाई प्रारम्भ होती है। हे सजनी (सखी) अर्थात् आत्मा! सतलोक में न कोई माली अर्थात् बाग लगाने वाला तथा ना सिंचाई के लिए कूप (कूंआ) है क्योंकि जिस समय यह वाणी संत गरीबदास जी ने बोली थी (सन् 1730 से 1778 तक) उस समय उस क्षेत्र में सिंचाई कुओं से होती थी। सतलोक में अपने आप प्रभु कपा से बाग लगे हैं। सिंचाई भी अपने आप होती रहती है। सतपुरूष किसी माता से नहीं जन्मा है, वह बिन बेल का फूल है अर्थात् अजन्मा है।(27)**

वाणी :- स्वांस उस्वांस पवन कुं पलटै, नाग फुनी कुं भूंच है।
सुरति निरति का बांध बेड़ा, गगन मण्डल कुं कूंच है।।28

❖ **सरलार्थ :- श्वांस जो बाहर छोड़ते हैं तथा उश्वांस जो अन्दर लेते हैं, इस विधि से जो नाम के जाप को करके वायु को अर्थात् श्वांस को सूक्ष्म करके नागफनी अर्थात् सर्पनुमा नाड़ी जो नाभि के चारों ओर 2½ लपेटे लगाए है, उसको ढ़ीला (Loose) करना है। तब ऊपर चलने का मार्ग मिलता है। फिर सतनाम का श्ंवास से स्मरण करता है, आकाश में बने सतलोक की ओर प्रस्थान करना होता है। सुरति-निरति का बेड़ा बाँधने का अभिप्राय है कि सतनाम का जाप श्वांस से मन तथा सुरति-निरति का समूह बनाकर करने को बेड़ा बाँधना कहा है। पुराने समय में दरिया को पार करने के लिए सुखी लकड़ियों को इकट्ठा करके लगभग 20 फुट लंबा तथा 10 फुट चौड़ा बेड़ा बनाते थे, दरिया में डालकर उसके ऊपर बैठकर नदी को पार करते थे। उसी का प्रमाण देकर कहा है कि आत्मा भव सागर से पार होने के लिए सुरति-निरति, मन तथा पवन (श्वांस) को इकट्ठा करके बेड़ा बाँध ले। भावार्थ है कि स्मरण करते समय मन, सुरति, निरति और श्वांस मन्त्र के जाप पर लगी रहे। ऐसा स्मरण सफल होता है। मन कहीं गया है, श्वांस चल रहा है, माला हाथ में चल रही है, यह स्मरण सफल नहीं होता।(28)**

परमेश्वर कबीर जी ने भी कहा है :-

कबीर, माला तो कर में फिरे, जीभ फिरे मुख माहीं।
मनवा तो दशों दिशा फिरे, यह तो सुमिरन नाहीं।।

वाणी :- सुन ले जोग विजोग हंसा, शब्द महल कुं सिद्ध करो।
योह गुरुज्ञान विज्ञान बानी, जीवत ही जग में मरो।।29

❖ **सरलार्थ :- हे हंस अर्थात् भक्त! ध्यान से जोग अर्थात् सामान्य साधना तथा विजोग अर्थात् विशेष साधना दोनों को सुन, इनमें शब्द (नाम) महल अर्थात् सम्पूर्ण मंत्रों के समूह को सिद्ध करो। भावार्थ है कि मन को संसारिक विषय विकारों से हटाकर नाम-स्मरण पर लगाकर अभ्यास करके साध ले। मन का स्वभाव बदल ले। यह है गुरू ज्ञान और विज्ञान अर्थात् तत्त्वज्ञान की वाणी अर्थात् वचन और जीवित**

ही जग में मर ले। जीवित जग में मरने का भाव है कि मन की कल्पनाओं को रोककर इच्छाओं का दमन कर। जैसे व्यक्ति की अचानक मत्यु हो जाती है, उसके मन की सारी योजना फैल हो जाती है। साधक पहले से ही यह धारणा बनाकर संसार में निर्वाह करता है, लम्बी-चौड़ी योजनाऐं न बनाकर इच्छाओं को सीमित रखता है। वह यह विचार करके सत्संग में जाता है कि मान लें मेरी आज मत्यु हो जाती तो भी घर, ऑफिस (कार्यालय) का कार्य नहीं कर सकते थे। इसलिए मान लें हमारी मत्यु हो गई, हम चले सत्संग में। तीन-चार दिन के लिए जीवित मर गए। विचार करें मत्यु तो किसी की भी कभी भी हो सकती है, तब भी कार्य से सब्र करना पड़ता है। सर्व कार्य सदा के लिए छूट जाता है। वह हानि भी हो जाती है जो मरने वाले की कमाई (मेहनत-व्यापार) न करने से होनी है। उसकी क्षतिपूर्ति कभी नहीं हो सकती। जो भक्त जीवित मरकर सत्संग में तीन-चार दिन के लिए गया था। उसके अभाव में तीन-चार दिन में जो व्यवसाय में हानि होनी थी, उसकी क्षतिपूर्ति तो वह फिर से कर सकता है क्योंकि वह परमानेंट नहीं मरा है, वह तो जीवित मरा है। वैसे तो भक्तों के सत्संग में जाने से कभी हानि नहीं होती, लाभ ही होता है। इसको कहते हैं जीवित मरना। संत गरीबदास जी ने कहा है कि गुरूजी द्वारा बताए ज्ञान तथा तत्त्वज्ञान का सारांश यह है कि यदि भक्ति करना तथा मोक्ष पाना चाहता है तो जीवित मर ले।(29)

प्रिय पाठको! यह है यथार्थ काया पाँजी बोध का सारांश है और जो कबीर सागर में पष्ठ 173 से 179 तक है, वह मिलावटी तथा कांट-छांट किया गया है। उस पर ध्यान न दें।

कबीर सागर के अध्याय ''काया पांजी'' का सारांश सम्पूर्ण हुआ।

।।सत साहेब।।

अध्याय ''पंच मुद्रा'' का सारांश

कबीर सागर में 29वां अध्याय ''पंचमुद्रा'' पष्ठ 181 पर है। यह भी 33 अरब वाणी वाला ज्ञान है। (तेतीस अरब ज्ञान हम भाखा, मूल ज्ञान गोय हम राखा।) **मूल ज्ञान निम्न पढ़ें :-**

परम पूज्य कबीर साहेब (कविर् देव) की अमतवाणी

संतो शब्दई शब्द बखाना।।टेक।।
शब्द फांस फँसा सब कोई शब्द नहीं पहचाना।।
प्रथमहिं ब्रह्म स्वं इच्छा ते पाँचौ शब्द उचारा।
सोहँग ज्योति, निरंजन, रंरकार, शक्ति और ओंकारा।।
पाँचौ तत्त्व प्रकति तीनों गुण उपजाया।
लोक द्वीप चारों खान चौरासी लख बनाया।।
शब्दइ काल कलंदर कहिये शब्दइ भर्म भुलाया।
पाँच शब्द की आशा में सर्वस मूल गंवाया।।
शब्दइ ब्रह्म प्रकाश मेंट के बैठे मूंदे द्वारा।
शब्दइ निरगुण शब्दइ सरगुण शब्दइ वेद पुकारा।।
शुद्ध ब्रह्म काया के भीतर बैठ करे स्थाना।
ज्ञानी योगी पंडित औ सिद्ध शब्द में उरझाना।।
पाँचइ शब्द पाँच हैं मुद्रा काया बीच ठिकाना।
जो जिहसंक आराधन करता सो तिहि करत बखाना।।
शब्द ज्योति निरंजन चांचरी मुद्रा है नैनन के माँही।
ताको जाने गोरख योगी महा तेज तप माँही।।
शब्द ओंकार भूचरी मुद्रा त्रिकुटी है स्थाना।
व्यास देव ताहि पहिचाना चांद सूर्य तिहि जाना।।
सोहं शब्द अगोचरी मुद्रा भंवर गुफा स्थाना।
शुकदेव मुनी ताहि पहिचाना सुन अनहद को काना।।
शब्द रंरकार खेचरी मुद्रा दसवें द्वार ठिकाना।
ब्रह्मा विष्णु महेश आदि लो रंरकार पहिचाना।।
शक्ति शब्द ध्यान उनमुनी मुद्रा बसे आकाश सनेही।
झिलमिल–2 जोत दिखावे जाने जनक विदेही।।
पाँच शब्द पाँच हैं मुद्रा सो निश्चय कर जाना।
आगे पुरुष पुरान निःअक्षर तिनकी खबर न जाना।।
नौ नाथ चौरासी सिद्धि लो पाँच शब्द में अटके।
मुद्रा साध रहे घट भीतर फिर ओंधे मखु लटके।।
पाँच शब्द पाँच है मुद्रा लोक द्वीप यमजाला।
कहैं कबीर अक्षर के आगे निःअक्षर का उजियाला।।

जैसा कि इस शब्द ''संतो शब्दई शब्द बखाना'' **में लिखा है कि सभी संत जन शब्द (नाम) की महिमा**

सुनाते हैं। पूर्णब्रह्म कबीर साहिब जी ने बताया है कि शब्द सतपुरुष का भी है जो कि सतपुरुष का प्रतीक है व ज्योति निरंजन (काल) का प्रतीक भी शब्द ही है। जैसे शब्द ज्योति निरंजन यह चांचरी मुद्रा को प्राप्त करवाता है इसको गोरख योगी ने बहुत अधिक तप करके प्राप्त किया जो कि आम (साधारण) व्यक्ति के बस की बात नहीं है और फिर गोरख नाथ काल तक ही साधना करके सिद्ध बन गए। मुक्त नहीं हो पाए। इसीलिए ज्योति निरंजन नाम का जाप करने वाले काल जाल से नहीं बच सकते अर्थात् सत्यलोक नहीं जा सकते। शब्द ओंकार (ओ३म) का जाप करने से भूंचरी मुद्रा की स्थिति में साधक आ जाता हे। जो कि वेद व्यास ने साधना की और काल जाल में ही रहा। सोहं नाम के जाप से अगोचरी मुद्रा की स्थिति हो जाती है और काल के लोक में बनी भंवर गुफा में पहुँच जाते हैं। जिसकी साधना सुखदेव ऋषि ने की और केवल श्री विष्णु जी के लोक में बने स्वर्ग तक पहुँचा। शब्द रंरकार खेंचरी मुद्रा दसमें द्वार (सुष्मणा) तक पहुँच जाते हैं। ब्रह्मा विष्णु महेश तीनों ने ररंकार को ही सत्य मान कर काल के जाल में उलझे रहे। शक्ति (श्रीयम्) शब्द ये उनमनी मुद्रा को प्राप्त करवा देता है जिसको राजा जनक ने प्राप्त किया परन्तु मुक्ति नहीं हुई। कई संतों ने पाँच नामों में शक्ति की जगह सत्यनाम जोड़ दिया है जो कि सत्यनाम कोई जाप नहीं है। ये तो सच्चे नाम की तरफ इशारा है जैसे सत्यलोक को सच्च खण्ड भी कहते हैं ऐसे ही सत्यनाम व सच्चा नाम है। केवल सत्यनाम-सत्यनाम जाप करने का नहीं है। इन पाँच शब्दों की साधना करने वाले नौ नाथ तथा चौरासी सिद्ध भी इन्हीं तक सीमित रहे तथा शरीर में (घट में) ही धुनि सुनकर आनन्द लेते रहे। वास्तविक सत्यलोक स्थान तो शरीर (पिण्ड) से (अण्ड) ब्रह्मण्ड से पार है, इसलिए फिर माता के गर्भ में आए (उलटे लटके) अर्थात् जन्म-मत्यु का कष्ट समाप्त नहीं हुआ। जो भी उपलब्धि (घट) शरीर में होगी वह तो काल (ब्रह्म) तक की ही है, क्योंकि पूर्ण परमात्मा का निज स्थान (सत्यलोक) तथा उसी के शरीर का प्रकाश तो परब्रह्म आदि से भी अधिक तथा बहुत आगे (दूर) है। उसके लिए तो पूर्ण संत ही पूरी साधना बताएगा जो पाँच नामों (शब्दों) से भिन्न है।

यह है पंच मुद्रा बोध जो मूल यानि यथार्थ ज्ञान है।

काल वाले बारह पंथियों की अल्प बुद्धि का एक प्रमाण दिखाता हूँ। पंच मुद्रा के पष्ठ 190-191 पर कमलों का वर्णन है। यह पहले भी तीन अध्यायों में लिखा है। दो अध्यायों में तो आठवें कमल तक की जानकारी है। एक अध्याय ''कबीर बानी'' में पष्ठ 111 पर नौ कमलों का ज्ञान है। सर्व कबीर पंथी केवल आठ कमल ही मानते हैं जबकि पंच मुद्रा में पष्ठ 190 तथा 191 पर नौ कमलों का ज्ञान है। अपनी अल्प बुद्धि से पष्ठ 191 पर तीसरी वाणी में अष्ट कमल कुल कमल लिख दिए हैं जबकि पष्ठ 190-191 पर लिखी वाणी में नौ कमल भिन्न-भिन्न लिखे हैं। कपा पष्ठ 190-191 की कुछ वाणी पढ़ें :-

योगजीत वचन

हे सुक्रित मैं तुम्हैं लखाऊं। कमलनको प्रमान बताऊं।।
प्रथमहि कमल चतुरदल कहिये। देवगणेश पुन तामों लहिये।।
रिद्धिसिद्ध जहाँ सक्त उपासा। तहाँ जा पूछै सो प्रकाशा।।
षटदल कमल ब्रह्म को बासा। सावित्री तहाँ कीन्ह निवासा।।
षटसहस्त्र तहाँ जाप बखाना। देवन सहित इंद्र अस्थाना।।
अष्टदल कमल हरि लक्ष्मी वासा। षटसहस्त्र तहाँ जाप निवासा।।

द्वादश कमलमों शिवको जाना। षटहजार जाप बंधाना।।
तहाँ शिव योग लगावें तारी पारवती संग सहित विचारी।।
षोडश कमल जीव मन वासा। एक सहस्त्र जाप प्रकाशा।।
त्रैदल कमल भारथी वासा। सोतो उज्ज्वल कमल निवासा।।
एक सहस्त्र जाप तहाँ कीजै। यह संकल्प जाय तहाँ दीजै।।
दोय दल कमल हंस अस्थान। तामह पर्म हंसको जाना।।
एक सहस्त्र जाप प्रकाशा। कर्म भ्रमको है तहाँ नाशा।।
सहस्त्रदल कमलमों झिलमिल जाना। ज्योति सरूप तहाँ पहिचाना।।
ताहै रंगहै अलख अपारा। अलख पुर्ष है सबते सारा।।
नवें कमल आद को जानो। जाते निरगुण पुरूष बखानो।।
एक इस हजार छैसे जाप कहिये। सो सब पुरूष ध्यानमों लहिये।।
अष्ट कमल को भेद बताई। और ज्ञान अब भाषो भाई।।

विचार करें :- वाणी तो नौ कमल स्पष्ट भिन्न-भिन्न प्रमाणित कर रही है और अंतिम पंक्ति में लिख दिया कि :- ''अष्ट (आठ) कमल को भेद बताई और ज्ञान अब भाषों भाई।'' **यह इनकी अल्प बुद्धि का प्रमाण है। यथार्थ ज्ञान आप जी ने ऊपर पढ़ा, वह पर्याप्त है। यथार्थ वाणी है :-**

सर्व कमलन को भेद बताई। और ज्ञान अब भाषो भाई।।

कबीर सागर में कई अध्यायों में कमलों की जानकारी है। जैसे अनुराग सागर के पृष्ठ 151 पर आठ कमलों की जानकारी है। आठवां कमल दो दल का कहा है और ज्योति निरंजन का ठिकाना कहा है। भवतारण बोध के पृष्ठ 57 पर आठ कमलों का वर्णन है। इसमें छठे कमल में तीन पंखुड़ी लिखी हैं। सरस्वती का निवास लिखा है तथा सातवें कमल की दो पंखुड़ी लिखी हैं। आठवें कमल में काल निरंजन का निवास कहा है। यह सही वर्णन है, परंतु अधूरा है। सम्पूर्ण वर्णन कबीर सागर के अध्याय पंच मुद्रा पृष्ठ 190-191 पर तथा अध्याय कबीर बानी पृष्ठ 111 पर है। जिनमें नौ कमलों का क्रमानुसार वर्णन है। यदि कमलों के वर्णन से छेड़छाड़ न की होती तो कोई भ्रम उत्पन्न नहीं होता। यथार्थ ज्ञान पढ़ें इसी पुस्तक में अध्याय ''अनुराग सागर'' के सारांश में पृष्ठ 152 पर तथा अंत में लगे कमलों के चित्र में तथा उसके पीछे लिखे उल्लेख में।

कबीर सागर के अध्याय ''पंच मुद्रा'' का सारांश सम्पूर्ण हुआ।

।।सत साहेब।।

अध्याय ''आत्म बोध'' का सारांश

कबीर सागर में 30वां अध्याय ''आत्म बोध'' पष्ठ 6 पर है। आत्म बोध का अर्थ है आत्मा को परमात्मा की भक्ति का ज्ञान करना। आत्म बोध=आत्म ज्ञान।

आत्म बोध का अर्थ है कि आत्मा क्या है? यानि आत्मा की जानकारी आत्मा को उसका अस्तित्व बताना यानि जीव को उसकी स्थिति, सामर्थ्य, कर्म, अकर्म का ज्ञान कराना। ऋषिजन कहते हैं कि आत्म ज्ञान हो जाने से जीव मुक्त हो जाता है। यह गलत है क्योंकि यदि किसी रोगी को किसी ने ज्ञान करा दिया कि आपको अमूक रोग है। इतना जानने से वह व्यक्ति रोगमुक्त नहीं हो गया। उसको वैद्य का ज्ञान भी कराना पड़ेगा। तब रोग समाप्त होगा। जीव को ज्ञान हो गया कि आप जन्म-मरण के रोग से ग्रस्त हैं। जब तक जन्म-मरण समाप्त नहीं होगा। तब तक जीव को परम शांति नहीं हो सकती जो गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में कही है। ''कूप की छाया कूप के मांही ऐसा आत्म ज्ञाना।'' भावार्थ है कि जैसे कूए की छाया कूए में सीमित है। उसका बाहर कोई लाभ नहीं है। इसी प्रकार यदि आत्म ज्ञान करा दिया, समाधान हुआ नहीं तो उस ज्ञान का कोई लाभ नहीं है। इस अध्याय में परमेश्वर कबीर जी ने आत्म तथा परमात्म दोनों का ज्ञान करवाया है।

आत्म और परमात्म एकै नूर जहूर। बीच में झांई कर्म की तातें कहिए दूर।।

भावार्थ है कि आत्मा और परमात्मा का मिलता-जुलता अस्तित्व है क्योंकि आत्मा का जनक परमात्मा है। सोने (Gold) के पहाड़ से आभूषण बने हैं तो दोनों सोना यानि गोल्ड (Gold) ही हैं। यदि आभूषण वाले सोने में मिलावट है तो उसका मूल्य कम हो जाता है। उसे शुद्ध करने के पश्चात् ही वह शुद्ध सोना कहलाता है। शुद्ध करने की प्रक्रिया का ज्ञान होना अनिवार्य है। इसी प्रकार आत्मा कर्म के मैल से जीव बनी है। इसको शुद्ध करने के लिए यानि मोक्ष प्राप्ति के लिए ज्ञान कराना आवश्यक है। परमेश्वर कबीर जी ने इस ''आत्म-बोध'' अध्याय में आत्म बोध, परमात्म बोध तथा मोक्ष प्राप्ति की विधि बताई है।

पष्ठ 5 पर वाणी लिखी है :-

रेखता

भक्ति भगवान की बहुत बारीक है, शीश सौंपे बिना भक्ति नाहीं।।
होय अवधूत सब आशा तन की तजै, जीवता मरै सो भक्ति पाही।।
नाचना कूदना, ताल का पीटना, रांडियाँ का खेल है भक्ति नाहीं।।
रैन दिन तारी करतार सों लागी रहै, कहै कबीर सतलोक जाही।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी सतगुरू रूप में अपने पाने यानि जीव को मोक्ष दिलाने की विधि स्वयं बताने के लिए प्रकट होते हैं। वे बता रहे हैं कि परमात्मा की भक्ति बहुत नाजुक है। बड़ी सावधानी से साथ करना चाहिए। यदि परमात्मा भक्ति के लिए सिर भी देना पड़े तो चूकना नहीं चाहिए। यह सिर अर्थात् मानव शरीर तथा उसका अंग सिर परमात्मा का प्रदान किया हुआ है। यदि भक्ति मार्ग में सिर देने से चूक गए तो बहुत बड़ी भूल होगी। काल ब्रह्म कभी भी यह शरीर नष्ट करा देगा। दुर्घटना, रोग, जल में डूबने से, अग्नि लगने से कभी भी यह शरीर नष्ट हो सकता है। यदि परमात्मा प्राप्ति के लिए समर्पित करना पड़े तो सौभाग्य जाने और पीछे मुड़कर न देखें। परमात्मा प्राप्ति के लिए जीवित मरना अनिवार्य है।

जीवित मरना क्या है :- आप जी को गुरू दर्शन या सत्संग सुनने के लिए जाना है। दूसरी ओर कोई अनिवार्य काम भी करना है तो आप जी को अनिवार्य कार्य छोड़कर सत्संग सुनने तथा सतगुरू सेवा में जाना चाहिए। यह कार्य वही कर सकेगा जो जीवित मर चुका है। एक व्यक्ति को अति अनिवार्य कार्य था। जिस कारण से उसने रातो-रात जाकर वापिस आकर उस कार्य को करना था। रात्रि सेवा बस (Night Service Bus) से दिल्ली से चण्डीगढ़ रवाना हुआ। सुबह तक वापिस लौटना था। वह बस दुर्घटनाग्रस्त हो गई। वह व्यक्ति मारा गया। जिस अनिवार्य कार्य के लिए रातो-रात भागा था, उस कार्य को अब कभी नहीं कर सकेगा। भक्तजन जीवित मर जाते हैं, वे अनिवार्य कार्य को छोड़कर सत्संग तथा सतगुरू सेवा में अवश्य जाते हैं। वे विचार करते हैं कि यदि आज मेरी मत्यु हो जाए तो फिर इस अनिवार्य कार्य को कौन करेगा? इसलिए दो या तीन दिन के लिए मरकर सत्संग तथा सतगुरू सेवा में चले जाते हैं। उनको ज्ञान होता है कि दो-तीन दिन के पश्चात् फिर कार्य करके क्षतिपूर्ति कर लेंगे। यदि स्थाई (Parmanent) मत्यु हो गई, तब कौन करेगा? इसको जीवित मरना कहते हैं। नाचना-कूदना, ताल-मदंग का बजाना रंडियां यानि हिजड़ों के खेल के समान है। जो जागरण में या अन्य धार्मिक कार्यक्रम में नाचते-कूदते हैं, वह भक्ति नहीं है।

रात-दिन सुरति का तार करतार में लगा रहे, वह मोक्षदायक है।

पष्ठ 8 पर :-

रैन–दिन संत यूं सोवता देखिऐ। संसार की तरफ सूं पीठ दिया।।
मन अरू पवन फिर फूट चालै नहीं। चंद अरू सूर कूं सम किया।।
टकटकी चन्द चकोर की तरह। सुरति अरू निरति का तार बाजै।।
नौबत तहाँ रैन दिन शून्य में धुरत है। कहैं कबीर यों गगन गाजै।।

भावार्थ :- संत संसार की ओर से पीठ करके सोता है यानि संसारिक भोग-विलास तथा शानो-शौकत से मुख मोड़ लेता है। मन, पवन, सुरति-निरति को परमात्मा के भजन में लगाए रहता है। वह तो आकाश में परमात्मा के बाजों की धुन को सुनता रहता है। परमात्मा के भजन में ऐसे ध्यान लगाता है जैसे चकोर पक्षी एक पल भी चाँद से अपनी नजर नहीं हटाता। वह चन्द्रमा को देखते-देखते गर्दन को ऊपर करता रहता है और चन्द्रमा शिखर से नीचे को जाता है तो अपनी गर्दन को ऊपर से नीचे को करते समय वक्ष से गिर जाता है। उसकी गर्दन टूट जाती है। वह पंख भी नहीं फैलाता, कहीं ध्यान भंग होने से चन्द्रमा को देखना न छूट जाए, ऐसे एकटक देखता रहता है। जमीन पर गिरा-गिरा गर्दन टूटने पर भी चन्द्रमा से नजर नहीं हटाता। संत इसी प्रकार परमात्मा के भजन में टकटकी लगाकर सुरति-निरति, मन तथा पवन से स्मरण में मग्न रहता है। नाम-स्मरण यानि मंत्र के जाप को करते समय मन, सुरति, निरति तथा पवन (श्वांस-उश्वांस) को नाम पर लगाया जाता है।

पष्ठ 10 पर :-

नाभि में कस्तूरी का मगा बाहरै फिरै। उलटि कर आप में नाहीं जोवै।।
भागता भ्रमता योनि पूरी करै। अंध होय आपुनी वस्तु खोवै।।
नाभि निज नाम सो ठाम पावै नाहीं। जगत सब जावै तीर्थ भूला।।
कहैं कबीर हरि पंथ यूं नाल है। अंध भवसागर में फिरत फूला।।

उलिट कर वजूद में भ्रमना दूरि कर। बाछिकै भटकनै सिद्धि नाहीं।।
फिरै बाहर और वस्तु नास में। वस्तु विचार तूं देख माहीं।।
आप में आप है अजपा जपो। जाप जपते आप पावै।।
कहें कबीर ये सत्य की सैंन है। सत का शब्द सब सन्त गावै।।

भावार्थ :- मंग की नाभि में कस्तूरी विकसित हो जाती है। हिरण जब घास चरता है तो उसके श्वासों से कस्तूरी की सुगन्ध निकलती है। वह घास तथा धरती से टकरवाकर मंग के नाक में जाती है तो उस खुशबू का आनन्द लेने के लिए मंग घास को सूंघता है। फिर सोचता है कि वह सुगंधित वस्तु कहीं घास में गिरी है। वह सुगंध है इसकी नाभि में, उसी के शरीर में। वह पशु बिना ज्ञान के कस्तूरी कहाँ है, वह इधर-उधर भटक कर खोज कहाँ रहा है? जब वह मंग थककर बैठ जाता है तो उसको अपने श्वासों से वह सुगंध निकली महसूस होती है। जब घास चरने लगता है, तब फिर भ्रमित होकर कस्तूरी की खोज में लगा रहता है। इस प्रकार अपना जीवन नष्ट कर जाता है। यही दशा उन भोले भक्तों की है जो तीर्थों पर भ्रमण करके परमात्मा को खोज रहे हैं। जब सतगुरू मिल जाता है तो उसको श्वांस-उश्वांस का स्मरण अजपा-जाप बताया जाता है, तब परमात्मा अपने शरीर द्वारा भक्ति साधना करने से प्राप्त होता है।

आत्म बोध पंष्ठ 18 पर :-

साधु के संग साधु होत है, जगत के संते जगत होवै।
साधु के संग परम सुख उपजै, जगत के संग ते जन्म खोवै।।
साधु के संग ते परम पद पाईये, जगत के संग ते दुःख भारी।
कहैं कबीर यह संत का शब्द, सुनो रे जीव सब पुरूष नारी।।

भावार्थ :- संत की शरण में आने से जीवन में सुख होता है। परमात्मा का वह परम पद प्राप्त होता है जो गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में कहा है। जगत के व्यक्तियों के साथ रहने से जगत भाव ही रहता है और अनमोल मानुष जन्म नष्ट हो जाता है।

आत्म बोध पंष्ठ 21 पर :-

नर को बाँधने को एक नारी बनी, दूसरा और नहीं बँधा है रे।
ज्यों चोर को रोकने को एक बेड़ी बनी, काठ बिन नहीं दूसरा फंद रे।।
उबरै कोई कोटि में संत जन, जाल काल काटी हरि नाम लागे।
कहै कबीर फिर फंद में ना पड़े, शब्द गुरू के सुरति लागे।।

भावार्थ :- जिनको गुरू की शरण नहीं है। उनके लिए स्त्री भक्ति में बाधक मानी गई है। जब नर दीक्षा ले लेता है तो वह ज्ञान आधार से नारी के साथ बर्ताव करता है। उस नर के लिए नारी बाधा नहीं। स्त्री भी भक्ति करती है तो घर स्वर्ग समान हो जाता है। फिर कोई भी किसी के लिए बंधन नहीं होता।

आत्मा को आगे ज्ञान दिया है, पढ़ें।

{संत गरीबदास जी, गाँव-छुड़ानी हरियाणा की अमंतवाणी}

मन तू चलि रे सुख के सागर, जहाँ शब्द सिंधु रत्नागर। (टेक)
कोटि जन्म तोहे मरतां होगे, कुछ नहीं हाथ लगा रे।
कुकर–सुकर खर भया बौरे, कौआ हँस बुगा रे।।(1)

कोटि जन्म तू राजा किन्हा, मिटि न मन की आशा।
भिक्षुक होकर दर–दर हांड्या, मिल्या न निर्गुण रासा।।(2)
इन्द्र कुबेर ईश की पद्वी, ब्रह्मा, वरूण धर्मराया।
विष्णुनाथ के पुर कूं जाकर, बहुर अपूठा आया।।(3)
असँख्य जन्म तोहे मरते होगे, जीवित क्यूं ना मरै रे।
द्वादश मध्य महल मठ बौरे, बहुर न देह धरै रे।।(4)
दोजख बहिश्त सभी तै देखे, राज–पाट के रसिया।
तीन लोक से तप्त नाहीं, यह मन भोगी खसिया।।(5)
सतगुरू मिलै तो इच्छा मेटैं, पद मिल पदै समाना।
चल हँसा उस लोक पठाऊँ, जो आदि अमर अस्थाना।।(6)
चार मुक्ति जहाँ चम्पी करती, माया हो रही दासी।
दास गरीब अभय पद परसै, मिलै राम अविनाशी।।(7)

सूक्ष्मवेद की वाणी का सरलार्थ :-

आत्मा अपने साथी मन को अमर लोक के सुख तथा इस काल ब्रह्म के लोक के दुख को बताकर सुख के सागर रूपी अमर लोक (सत्यलोक) में चलने के लिए प्ररित कर रही हैं। काल (ब्रह्म) के लोक (इक्कीस ब्रह्माण्डों) में रहने वाले प्राणी को क्या-क्या कष्ट होते हैं, पहले यह जानकारी बताई है। कहा है कि :-

काल (ब्रह्म) के लोक का अटल विधान है कि जो जन्मता है, उसकी मत्यु निश्चित है और जो मर जाता है, उसका जन्म निश्चित है।

प्रमाण गीता जी में देखें :-

श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 2 श्लोक 22 में इस प्रकार कहा है :-

❖ जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर दूसरे नये वस्त्र ग्रहण करता है, वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीरों को त्यागकर दूसरे नये शरीरों को प्राप्त करता है।

❖ गीता अध्याय 2 श्लोक 27 :- क्योंकि जन्में हुए की मत्यु निश्चित है और मरे हुए का जन्म निश्चित है। इसलिए बिना उपाय वाले विषय में तू शोक करने के योग्य नहीं है।

श्रीमद् भगवत गीता शास्त्र से स्पष्ट हुआ कि काल (ब्रह्म) के लोक का अटल नियम है कि जन्म तथा मत्यु सदा बने रहेंगे। जैसे गीता अध्याय 2 श्लोक 12 में भी कहा है कि :- हे अर्जुन! तू, मैं (गीता ज्ञान दाता) तथा ये सर्व राजा लोग पहले भी जन्मे, ये आगे भी जन्मेंगे।

❖ गीता अध्याय 4 श्लोक 5 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि हे अर्जुन! तेरे और मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं, उन सबको तू नहीं जानता, मैं जानता हूँ।

❖ गीता अध्याय 10 श्लोक 2 में गीता ज्ञान ने यह भी स्पष्ट किया है कि मेरी उत्पत्ति को न तो ऋषिजन जानते हैं, न देवता जानते हैं क्योंकि ये सर्व मेरे से उत्पन्न हुए हैं।

इसलिए गीता अध्याय 8 श्लोक 15 में कहा है कि :-

माम् उपेत्य पुनर्जन्मः दुःखालयम् अशाश्वतम्।
न आप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिम् परमाम् गता।।

अनुवाद :- गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि (माम्) मुझे (उपेत्य) प्राप्त होकर तो (दुःखालयम्

अशाश्वतम्) दुःखों के घर व नाशवान संसार में (पुनर्जन्मः) पुनर्जन्म है। (महात्मानः) महात्माजन जो (संसिद्धिम् परमाम्) परम सिद्धि को (गता) प्राप्त हो गए हैं, (न अप्नुवन्ति) पुनर्जन्म को प्राप्त नहीं होते।

विशेष :- पाठकजनों से निवेदन है कि मुझ (लेखक संत रामपाल दास) से पहले सर्व अनुवादकों ने गीता के इस श्लोक का गलत (Wrong) अनुवाद किया है। (गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि मुझे प्राप्त होकर पुनर्जन्म को प्राप्त नहीं होते।)

विचार करें :- पहले लिखे अनेकों गीता के श्लोकों में आप जी ने पढ़ा कि गीता ज्ञान दाता ने स्वयं कहा है कि मेरे तथा तेरे अनेकों जन्म हो चुके हैं। फिर भी इस श्लोक का यह अर्थ करना कि मुझे प्राप्त महात्मा का पुनर्जन्म नहीं होता, गीता की यथार्थता के साथ खिलवाड़ करना तथा अर्थों का अनर्थ करना मात्र है।

❖ फिर गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में तथा गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि :-

गीता अध्याय 18 श्लोक 62 :- हे भारत! तू सर्वभाव से उस परमेश्वर की शरण में जा। उस परमेश्वर की कृपा से तू परम शांति तथा सनातन परम धाम को प्राप्त होगा।

गीता अध्याय 15 श्लोक 4 :- तत्त्वज्ञान की प्राप्ति के पश्चात् परमेश्वर के उस परमपद की खोज करनी चाहिए। जहाँ जाने के पश्चात् साधक लौटकर संसार में कभी नहीं आते अर्थात् उनका पुनर्जन्म कभी नहीं होता। जिस परमेश्वर से संसार रूपी वृक्ष की प्रवृत्ति विस्तार को प्राप्त हुई है अर्थात् जिस परमेश्वर ने सर्व ब्रह्माण्डों की रचना की है तथा जिससे सर्व प्राणियों की उत्पत्ति हुई है, उसी आदिनारायण की (प्रपद्ये) भक्ति करो। यही प्रमाण गीता अध्याय 18 श्लोक 46 में भी है:-

❖ गीता अध्याय 18 श्लोक 46 :- गीता ज्ञान दाता ने बताया है कि जिस परमेश्वर से संपूर्ण प्राणियों की उत्पत्ति हुई है और जिससे यह समस्त जगत व्याप्त है अर्थात् जिसकी शक्ति से उत्पन्न होकर स्थित है। उस परमेश्वर की अपने स्वाभाविक कर्मों द्वारा अर्थात् अपने सांसारिक कार्य करते हुए पूजा करके मानव परम सिद्धि को प्राप्त हो जाता है।

❖ गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में विशेष ज्ञान कहा है :-

गीता अध्याय 15 श्लोक 16 :- इस संसार में दो पुरूष अर्थात् प्रभु हैं। 1. क्षर पुरूष 2. अक्षर पुरूष। ये दोनों तथा इनके लोकों में इनके अंतर्गत जितने प्राणी हैं, वे सर्व नाशवान हैं। जीवात्मा तो किसी की नहीं मरती।

गीता अध्याय 15 श्लोक 17 :- उत्तम पुरूष अर्थात् पुरूषोत्तम जो श्रेष्ठ प्रभु है, वह तो ऊपर कहे (क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष) दोनों पुरूषों से अन्य है। वही 'परमात्मा' कहा जाता है। जो तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है, वह वास्तव में अविनाशी परमेश्वर है।

❖ गीता अध्याय 8 श्लोक 1 में अर्जुन ने प्रश्न किया कि आप जी ने जो गीता अध्याय 7 श्लोक 29 में ''तत् ब्रह्म'' कहा है, वह क्या है? गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 8 के ही श्लोक 3 में उत्तर दिया है कि ''वह परम अक्षर ब्रह्म'' है। गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में भी इसी के विषय में कहा है।

गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 8 श्लोक 5 तथा 7 में तो अपनी भक्ति करने को कहा है। उसका परिणाम गीता अध्याय 2 श्लोक 12, अध्याय 4 श्लोक 5, अध्याय 10 श्लोक 2 में बता

दिया कि अर्जुन! तेरे और मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं। इससे सिद्ध हुआ कि गीता ज्ञान दाता की भक्ति से जन्म-मरण का चक्र समाप्त नहीं हो सकता।

फिर गीता अध्याय 8 के ही श्लोक 8, 9, 10 में गीता ज्ञान दाता ने अपने से अन्य परम अक्षर ब्रह्म की भक्ति करने को कहा है कि जो उस परम अक्षर ब्रह्म की भक्ति करता है, वह उसी मेरे से अन्य दिव्य पुरूष अर्थात् परम अक्षर पुरूष को प्राप्त होता है। ऊपर आपने पढ़ा कि उस परमेश्वर की भक्ति करने से परम शांति को प्राप्त होता है तथा सनातन परम धाम (शाश्वत स्थान) को प्राप्त होता है जो अविनाशी राम है और जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर संसार में कभी नहीं आते अर्थात् जिनका जरा (वृद्ध अवस्था) तथा मरण सदा के लिए समाप्त हो जाता है, उनका पुनर्जन्म कभी नहीं होता।

❖ सूक्ष्मवेद की अमृतवाणी का यह भावार्थ है :-

वाणी का सरलार्थ :- आत्मा और मन को पात्र बनाकर संत गरीबदास जी ने संसार के मानव को समझाया है। कहा है कि ''यह संसार दुःखों का घर है। इससे भिन्न एक और संसार है। जहाँ कोई दुःख नहीं है। वह शाश्वत् स्थान है (सनातन परम धाम = सत्यलोक) वह सुख सागर है तथा वहाँ का प्रभु (अविनाशी परमेश्वर) भी सुखदायी है जो उस सुख सागर में निवास करता है।

सुख सागर अर्थात् अमर लोक की संक्षिप्त परिभाषा बताई है :-

शंखों लहर मेहर की ऊपजैं, कहर नहीं जहाँ कोई।
दास गरीब अचल अविनाशी, सुख का सागर सोई।।

भावार्थ :- जिस समय मैं (लेखक) अकेला होता हूँ, तो कभी-कभी ऐसी हिलोर अंदर से उठती है, उस समय सब अपने-से लगते हैं। चाहे किसी ने मुझे कितना ही कष्ट दे रखा हो, उसके प्रति द्वेष भावना नहीं रहती। सब पर दया भाव बन जाता है। यह स्थिति कुछ मिनट ही रहती है। उसको मेहर की लहर कहा है। सतलोक अर्थात् सनातन परम धाम में जाने के पश्चात् प्रत्येक प्राणी को इतना आनन्द आता है। वहाँ पर ऐसी असँख्यों लहरें आत्मा में उठती रहती हैं। जब वह लहर मेरी आत्मा से हट जाती है तो वही दुःखमय स्थिति प्रारम्भ हो जाती है। उसने ऐसा क्यों कहा?, वह व्यक्ति अच्छा नहीं है, वो हानि हो गई, यह हो गया, वह हो गया। यह कहर (दुःख) की लहर कही जाती है।

उस सतलोक में असँख्य लहर मेहर (दया) की उठती हैं, वहाँ कोई कहर (भयँकर दुःख) नहीं है। वैसे तो सतलोक में कोई दुःख नहीं है। कहर का अर्थ भयँकर कष्ट होता है। जैसे एक गाँव में आपसी रंजिस के चलते विरोधियों ने दूसरे पक्ष के एक परिवार के तीन सदस्यों की हत्या कर दी, कहीं पर भूकंप के कारण हजारों व्यक्ति मर जाते हैं, उसे कहते हैं कहर टूट पड़ा या कहर कर दिया। ऊपर लिखी वाणी में सुख सागर की परिभाषा संक्षिप्त में बताई है। कहा है कि वह अमर लोक अचल अविनाशी अर्थात् कभी चलायमान नहीं है, कभी ध्वस्त नहीं होता तथा वहाँ रहने वाला परमेश्वर अविनाशी है। वह स्थान तथा परमेश्वर सुख का समन्दर है। जैसे समुद्री जहाज बंदरगाह के किनारे से 100 या 200 किमी. दूर चला जाता है तो जहाज के यात्रियों को जल अर्थात् समंदर के अतिरिक्त कुछ भी दिखाई नहीं देता। सब और जल ही जल नजर आता है। इसी प्रकार सतलोक (सत्यलोक) में सुख के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है अर्थात् वहाँ कोई दुःख नहीं है।

अब पूर्व में लिखी वाणी का सरलार्थ किया जाता है :-

मन तू चल रे सुख के सागर, जहाँ शब्द सिंधु रत्नागर।।(टेक)
कोटि जन्म तोहे भ्रमत होगे, कुछ नहीं हाथ लगा रे।
कुकर शुकर खर भया बौरे, कौआ हँस बुगा रे।।

परमेश्वर कबीर जी ने अपनी अच्छी आत्मा संत गरीबदास जी को सूक्ष्मवेद समझाया, उसको संत गरीबदास जी (गाँव-छुड़ानी जिला-झज्जर, हरियाणा प्रान्त) ने आत्मा तथा मन को पात्र बनाकर विश्व के मानव को काल (ब्रह्म) के लोक का कष्ट तथा सतलोक का सुख बताकर उस परमधाम में चलने के लिए सत्य साधना जो शास्त्रोक्त है, करने की प्रेरणा की है। मन तू चल रे सुख के सागर अर्थात् हे मन! तू सनातन परम धाम में चल। शब्द को अविनाशी अर्थ दिया है क्योंकि शब्द नष्ट नहीं होता। इसलिए शब्द का अर्थ अविनाशीपन से है कि वह स्थान अमरत्व का सिंधु अर्थात् सागर है और मोक्षरूपी रत्न का आगार अर्थात् खान है। इस काल ब्रह्म के लोक में आप जी ने भक्ति भी की। परंतु शास्त्रानुकूल साधना बताने वाले तत्त्वदर्शी संत न मिलने के कारण आप करोड़ों जन्मों से भटक रहे हो। करोड़ों-अरबों रूपये संग्रह करने में पूरा जीवन लगा देते हो। अचानक मत्यु हो जाती है। वह जोड़ा हुआ धन जो आपके पूर्व के संस्कारों से प्राप्त हुआ था, उसे छोड़कर संसार से चला गया। उस धन के संग्रह करने में जो पाप किए, वे आप जी के साथ गए। आप जी ने उस मानव जीवन में तत्त्वदर्शी संत से दीक्षा लेकर शास्त्रविधि अनुसार भक्ति की साधना नहीं की। जिस कारण से आपको कुछ हाथ नहीं आया। पूर्व के पुण्यों के बदले धन ले लिया। वह धन यहीं रह गया, आपको कुछ भी नहीं मिला। आपको मिले धन संग्रह तथा भक्ति शास्त्रानुकूल न करने के पाप।

जिनके कारण आप कुकर = कुत्ता, खर = गधा, सुकर = सूअर, कौआ = काग पक्षी, हँस = एक पक्षी जो केवल सरोवर में मोती खाता है, बुगा = बुगला पक्षी आदि-आदि की योनियों को प्राप्त करके कष्ट उठाया।

कोटि जन्म तू राजा कीन्हा, मिटि न मन की आशा।
भिक्षुक होकर दर–दर हांड्या, मिला न निर्गुण रासा।।

सरलार्थ :- हे मानव! आप जी ने काल (ब्रह्म) की कठिन से कठिन साधना की। घर त्यागकर जंगल में निवास किया, फिर भिक्षा प्राप्ति के लिए गाँव व नगर में घर-घर के द्वार पर हांड्या अर्थात् घूमा। जंगल में साधनारत साधक निकट के गाँव या शहर में जाता है। एक घर से भिक्षा पूरी नहीं मिलती तो अन्य घरों से भोजन लेकर जंगल में चला जाता है। कभी-कभी तो साधक एक दिन भिक्षा माँगकर लाते हैं, उसी से दो-तीन दिन निर्वाह करते हैं। रोटियों को पतले कपड़े रूमाल जैसे कपड़े को छालना कहते हैं। छालने में लपेटकर वक्ष की टहनियों से बाँध देते थे। वे रोटियाँ सूख जाती हैं। उनको पानी में भिगोकर नर्म करके खाते थे। वे प्रतिदिन भिक्षा माँगने जाने में जो समय व्यर्थ होता था, उसकी बचत करके उस समय को काल ब्रह्म की साधना में लगाते थे। भावार्थ है कि जन्म-मरण से छुटकारा पाने के लिए अर्थात् पूर्ण मोक्ष प्राप्ति के लिए वेदों में वर्णित विधि तथा लोकवेद से घोरतप करते थे। उनको तत्त्वदर्शी संत न मिलने के कारण निर्गुण रासा अर्थात् गुप्त ज्ञान जिसे तत्त्वज्ञान कहते हैं। वह नहीं मिला क्योंकि यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 10 में तथा चारों वेदों का सारांश रूप श्रीमद् भगवत गीता अध्याय 4 श्लोक 32 तथा 34 में कहा है कि जो यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों का विस्तत ज्ञान स्वयं सच्चिदानन्द घन ब्रह्म अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म अपने मुख

कमल से बोलकर सुनाता है, वह तत्त्वज्ञान अर्थात् सूक्ष्मवेद है। गीता ज्ञान दाता ब्रह्म ने कहा है कि उस तत्त्वज्ञान को तू तत्त्वज्ञानियों के पास जाकर समझ, उनको दण्डवत् प्रणाम करने से नम्रतापूर्वक प्रश्न करने से वे परमात्म तत्त्व को भली-भाँति जानने वाले तत्त्वदर्शी संत तुझे तत्त्वज्ञान का उपदेश करेंगे। इससे सिद्ध हुआ कि तत्त्वज्ञान न वेदों में है और न ही गीता शास्त्र में। यदि होता तो एक अध्याय और बोल देता। कह देता कि तत्त्वज्ञान उस अध्याय में पढ़ें। संत गरीबदास जी ने मन के बहाने मानव शरीरधारी प्राणियों को समझाया है कि वह निर्गुण रासा अर्थात् तत्त्वज्ञान न मिलने के कारण काल ब्रह्म की साधना करके आप जी करोड़ों जन्मों में राजा बने। फिर भी मन की इच्छा समाप्त नहीं हुई क्योंकि राजा सोचता है कि स्वर्ग में सुख है, यहाँ राज में कोई सुख-चैन नहीं है, शान्ति नहीं है।

निर्गुण रासा का भावार्थ :- निर्गुण का अर्थ है कि वह वस्तु तो है परंतु उसका लाभ नहीं मिल रहा। वृक्ष के बीज में फल तथा वृक्ष निर्गुण रूप में है, उस बीज को मिट्टी में बीजकर सिंचाई करके वह सरगुण वस्तु (वृक्ष, वृक्ष को फल) प्राप्त की जाती है। यह ज्ञान न होने से आम के फल व छाया से वंचित रह जाते हैं। रासा = झंझट अर्थात् उलझा हुआ कार्य। सूक्ष्मवेद में परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि :-

नौ मन (360 कि.ग्रा.) सूत = कच्चा धागा

कबीर, नौ मन सूत उलझिया, ऋषि रहे झख मार।
सतगुरू ऐसा सुलझा दे, उलझे न दूजी बार।।

सरलार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि अध्यात्म ज्ञान रूपी नौ मन सूत उलझा हुआ है। एक कि.ग्रा. उलझे हुए सूत को सीधा करने में एक दिन से भी अधिक जुलाहों का लग जाता था। यदि सुलझाते समय धागा टूट जाता तो कपड़े में गाँठ लग जाती। गाँठ-गठीले कपड़े को कोई मोल नहीं लेता था। इसलिए परमेश्वर कबीर जुलाहे ने जुलाहों का सटीक उदाहरण बताकर समझाया है कि अधिक उलझे हुए सूत को कोई नहीं सुलझाता था। अध्यात्म ज्ञान उसी नौ मन उलझे हुए सूत के समान है जिसको सतगुरू अर्थात् तत्त्वदर्शी संत ऐसा सुलझा देगा जो पुनः नहीं उलझेगा। बिना सुलझे अध्यात्म ज्ञान के आधार से अर्थात् लोकवेद के अनुसार साधना करके स्वर्ग-नरक, चौरासी लाख प्रकार के प्राणियों के जीवन, पृथ्वी पर किसी टुकड़े का राज्य, स्वर्ग का राज्य प्राप्त किया, पुनः फिर जन्म-मरण के चक्र में गिरकर कष्ट पर कष्ट उठाया। परंतु काल ब्रह्म की वेदों में वर्णित विधि अनुसार साधना करने से वह परम शांति तथा सनातन परम धाम प्राप्त नहीं हुआ जो गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में कहा है और न ही परमेश्वर का वह परम पद प्राप्त हुआ जहाँ जाने के पश्चात् साधक लौटकर संसार में कभी नहीं आते जो गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है। काल ब्रह्म की साधना से निम्न लाभ होता रहता है।

वाणी नं 3 :- इन्द्र–कुबेर, ईश की पदवी, ब्रह्मा वरूण धर्मराया।
विष्णुनाथ के पुर कूं जाकर, बहुर अपूठा आया।।

सरलार्थ :- काल ब्रह्म की साधना करके साधक इन्द्र का पद भी प्राप्त करता है। इन्द्र स्वर्ग के राजा का पद है। इसको देवराज अर्थात् देवताओं का राजा तथा सुरपति भी कहते हैं। यह सिंचाई विभाग अर्थात् वर्षा मंत्रालय भी अपने आधीन रखता है।

प्रश्न :- इन्द्र की पदवी कैसे प्राप्त होती है?

उत्तर :- अधिक तप करने से या सौ मन (4 हजार कि.ग्रा.) गाय-भैंस के घी का प्रयोग करके धर्मयज्ञ करने से एक धर्मयज्ञ सम्पन्न होती है। ऐसी-ऐसी सौ धर्मयज्ञ निर्विघ्न करने से इन्द्र की पदवी साधक प्राप्त करता है। तप या यज्ञ के दौरान यज्ञ या तप की मर्यादा भंग हो जाती है तो नए सिरे से यज्ञ तथा तप करना पड़ता है। सफल होने पर ही इन्द्र की पदवी प्राप्त होती है। इस प्रकार इन्द्र की पदवी प्राप्त होती है।

प्रश्न :- इन्द्र का शासन काल कितना है? मत्यु उपरांत इन्द्र के पद को छोड़कर प्राणी किस योनि को प्राप्त करता है?

उत्तर :- इन्द्र स्वर्ग के राजा के पद पर 72 चौकड़ी अर्थात् 72 चतुर्युग तक बना रहता है। {एक चतुर्युग में सत्ययुग+त्रेतायुग+द्वापरयुग तथा कलयुग का समय होता है। जो 1728000 + 1296000 + 864000 + 432000 क्रमशः सत्ययुग + त्रेतायुग + द्वापरयुग + कलयुग का समय अर्थात् 43 लाख 20 हजार वर्ष का समय एक चतुर्युग में होता है। ऐसे बने 72 चतुर्युग तक वह साधक इन्द्र के पद पर स्वर्ग के राजा का सुख भोगता है।} एक कल्प अर्थात् ब्रह्मा जी के एक दिन में (जो एक हजार आठ (1008) चतुर्युग का होता है) 14 जीव इन्द्र के पद पर रहकर अपना किया पुण्य-कर्म भोगते हैं। इन्द्र के पद को भोगकर वे प्राणी गधे का जीवन प्राप्त करते हैं।

''कथा-मार्कण्डेय ऋषि तथा अप्सरा का संवाद''

एक समय बंगाल की खाड़ी में मार्कण्डेय ऋषि तप कर रहा था। इन्द्र के पद पर विराजमान को यह शर्त होती है कि तेरे शासनकाल में 72 चौकड़ी युग के दौरान यदि पथ्वी पर कोई व्यक्ति इन्द्र पद प्राप्त करने योग्य तप या धर्मयज्ञ कर लेता है और उसकी क्रिया में कोई बाधा नहीं आती है तो उस साधक को इन्द्र का पद दे दिया जाता है और वर्तमान इन्द्र से वह पद छीन लिया जाता है। इसलिए जहाँ तक संभव होता है, इन्द्र अपने शासनकाल में किसी साधक का तप या धर्मयज्ञ पूर्ण नहीं होने देता। उसकी साधना भंग करा देता है, चाहे कुछ भी करना पड़े।

जब इन्द्र को उसके दूतों ने बताया कि बंगाल की खाड़ी में मार्कण्डेय नामक ऋषि तप कर रहे हैं। इन्द्र ने मार्कण्डेय ऋषि का तप भंग करने के लिए उर्वशी भेजी। सर्व श्रंगार करके देवपरी मार्कण्डेय ऋषि के सामने नाचने-गाने लगी। उर्वशी ने अपनी सिद्धि से उस स्थान पर बसंत ऋतु जैसा वातावरण बना दिया। मार्कण्डेय ऋषि ने कोई उत्सुकता नहीं दिखाई। उर्वशी ने कमर-नाड़ा तोड़ दिया, निःवस्त्र हो गई। तब मार्कण्डेय ऋषि बोले, हे बेटी!, हे बहन!, हे माई! आप यह क्या कर रही हो? आप यहाँ गहरे जंगल में अकेली किसलिए आई? उर्वशी ने कहा कि ऋषि जी मेरे रूप को देखकर इस आरण्य खण्ड (बन-खण्ड) के सर्व साधक अपना संतुलन खो गए परंतु आप डगमग नहीं हुए, न जाने आपकी समाधि कहाँ थी? कप्या आप मेरे साथ इन्द्रलोक में चलो, नहीं तो मुझे सजा मिलेगी कि तू हार कर आ गई। मार्कण्डेय ऋषि ने कहा कि मेरी समाधि ब्रह्मलोक में गई थी, जहाँ पर मैं उन उर्वशियों का नाच देख रहा था जो इतनी सुंदर हैं कि तेरे जैसी तो उनकी 7-7 बांदियाँ अर्थात् नौकरानियाँ हैं। इसलिए मैं तेरे को क्या देखता, तेरे पर क्या आसक्त होता? यदि तेरे से कोई सुंदर हो तो उसे ले आ। तब देवपरी ने कहा कि इन्द्र की पटरानी अर्थात् मुख्य पत्नी मैं ही हूँ। मुझसे सुन्दर स्वर्ग में कोई औरत नहीं है।

तब मार्कण्डेय ऋषि ने पूछा कि इन्द्र की मत्यु होगी, तब तू क्या करेगी? उर्वशी ने उत्तर

दिया कि मैं 14 इन्द्र भोगूँगी। भावार्थ है कि श्री ब्रह्मा जी के एक दिन में 1008 चतुर्युग होते हैं जिसमें 72-72 चतुर्युग का शासनकाल पूरा करके 14 इन्द्र मत्यु को प्राप्त होते हैं। इन्द्र की रानी वाली आत्मा ने किसी मानव जन्म में इतने अत्यधिक पुण्य किए थे। जिस कारण से वह 14 इन्द्रों की पटरानी बनकर स्वर्ग सुख तथा पुरूष सुख को भोगेगी।

मार्कण्डेय ऋषि ने कहा कि वे 14 इन्द्र भी मरेंगे, तब तू क्या करेगी? उर्वशी ने कहा कि फिर मैं मत्यु लोक में गधी बनाई जाऊँगी और जितने इन्द्र मेरे पति होंगे, वे भी पथ्वी पर गधे की योनि प्राप्त करेंगे।

मार्कण्डेय ऋषि बोले कि फिर मुझे ऐसे लोक में क्यों ले जा रही थी जिसका राजा गधा बनेगा और रानी गधी की योनि प्राप्त करेगी? उर्वशी बोली कि अपनी इज्जत रखने के लिए, नहीं तो वे कहेंगे कि तू हारकर आई है।

मार्कण्डेय ऋषि ने कहा कि गधियों की कैसी इज्जत? तू वर्तमान में भी गधी है क्योंकि तू चौदह खसम करेगी और मत्यु उपरांत तू स्वयं स्वीकार रही है कि मैं गधी बनूंगी। विधानानुसार अपना इन्द्र का राज्य मार्कण्डेय ऋषि को देने के लिए वहीं पर इन्द्र आ गया और कहा कि ऋषि जी हम हारे और आप जीते। आप इन्द्र की पदवी स्वीकार करें। मार्कण्डेय ऋषि बोले अरे-अरे इन्द्र! इन्द्र की पदवी मेरे किसी काम की नहीं। मेरे लिए तो काग (कौवे) की बीट के समान है। मार्कण्डेय ऋषि ने इन्द्र से फिर कहा कि तू मेरे बताए अनुसार साधना कर, तेरे को ब्रह्मलोक ले चलूँगा। इस इन्द्र के राज्य को छोड़ दे। इन्द्र ने कहा कि हे ऋषि जी अब तो मुझे मौज-मस्ती करने दो। फिर कभी देखूंगा।

पाठकजनो! विचार करो :- इन्द्र को पता है कि मत्यु के उपरांत गधे का जीवन मिलेगा, फिर भी उस क्षणिक सुख को त्यागना नहीं चाहता। कहा कि फिर कभी देखूंगा। फिर कब देखेगा? गधा बनने के पश्चात् तो कुम्हार देखेगा। कितना वजन गधे की कमर पर रखना है? कहाँ-सी डण्डा मारना है? ठीक इसी प्रकार इस पथ्वी पर कोई छोटे-से टुकड़े का प्रधानमंत्री, मंत्री, मुख्यमंत्री या राज्य में मंत्री बना है या किसी पद पर सरकारी अधिकारी या कर्मचारी बना है या धनी है। उसको कहा जाता है कि आप भक्ति करो नहीं तो गधे बनोगे। वे या तो नाराज हो जाते हैं कि क्यों बनेंगे गधे? फिर से मत कहना। कुछ सभ्य होते हैं, वे कहते हैं कि किसने देखा है, गधे बनते हैं? फिर उनको बताया जाता है कि सब संत तथा ग्रन्थ बताते हैं। तो अधिकतर कहते हैं कि देखा जाएगा।

उनसे निवेदन है कि मत्यु के पश्चात् गधा बनने के बाद आप क्या देखोगे, फिर तो कुम्हार देखेगा कि आप जी के साथ कैसा बर्ताव करना है? देखना है तो वर्तमान में देख। बुराई छोड़कर शास्त्रानुकूल साधना करो जो वर्तमान में विश्व में केवल मेरे पास (लेखक रामपाल दास के पास) है। आओ ग्रहण करो और अपने जीव का कल्याण कराओ।

ऊपर लिखी वाणी नं. 3 में बताया है कि इन्द्र-कुबेर तथा ईश की पदवी प्राप्त करने वाले तथा ब्रह्मा जी का पद वरूण, धर्मराय का पद प्राप्त करके तथा विष्णु जी के लोक को प्राप्त कर देव पद प्राप्त भी वापिस जन्म-मरण के चक्र में रहता है।

स्वर्ग लोक में 33 करोड़ देव पद हैं। जैसे भारत वर्ष की संसद में 540 सांसदों के पद हैं। व्यक्ति बदलते रहते हैं। उन्हीं सांसदों में से प्रधानमंत्री तथा अन्य केंद्रीय मंत्री आदि बनते हैं।

इसी प्रकार उन 33 करोड़ देवताओं में से ही कुबेर का पद अर्थात् धन के देवता का पद

प्राप्त होता है जैसे वित्त मंत्री होता है। ईश की पदवी का अर्थ है प्रभु पद जो कुल तीन माने गए हैं :- 1. श्री ब्रह्मा जी 2. श्री विष्णु जी तथा 3. श्री शिव जी।

वरूणदेव जल का देवता है। धर्मराय मुख्य न्यायधीश है जो सब जीवों को कर्मों का फल देता है, उसे धर्मराज भी कहते हैं। ये सर्व काल ब्रह्म की साधना करके पद प्राप्त करते हैं। पुण्य क्षीण होने के पश्चात् पद से मुक्त होकर पशु-पक्षियों आदि की 84 लाख प्रकार की योनियों में चले जाते हैं। फिर नए ब्रह्मा जी, नए विष्णु जी तथा नए शिव जी इन पदों पर विराजमान होते हैं।

उपरोक्त सर्व देवता जन्मते-मरते हैं। ये अविनाशी नहीं हैं। इनकी स्थिति आप जी को ''सष्टि रचना'' अध्याय में इसी पुस्तक में स्पष्ट होगी कि ये कितने प्रभु हैं? किसके पुत्र हैं तथा कौन इनकी माता जी हैं?

अन्य प्रमाण :- श्री देवी पुराण (सचित्र मोटा टाईप केवल हिन्दी, गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित) के तीसरे स्कंद में पष्ठ 123 पर लिखा है कि तुम शुद्ध स्वरूपा हो, यह सारा संसार आप से ही उद्भाषित हो रहा है। मैं (विष्णु), ब्रह्मा और शंकर आपकी कप्या से विद्यमान हैं। हमारा तो अविर्भाव अर्थात् जन्म तथा तिरोभाव अर्थात् मत्यु हुआ करता है। आप प्रकति देवी हैं।

शंकर भगवान बोले कि हे देवी! यदि विष्णु के पश्चात् उत्पन्न होने वाले ब्रह्मा आपसे उत्पन्न हुए हैं तो क्या मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर क्या आपकी संतान नहीं हुआ अर्थात् मुझे भी उत्पन्न करने वाली तुम ही हो। हम तो केवल नियमित कार्य ही कर सकते हैं अर्थात् जिसके भाग्य में जो लिखा है, हम वही प्रदान कर सकते हैं। न अत्यधिक कर सकते, न कम कर सकते।

पाठकजनो! इस श्री देवी पुराण के उल्लेख से स्पष्ट हुआ कि श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शंकर जी नाशवान हैं। इनकी माता जी का नाम श्री देवी दुर्गा है। अधिक जानकारी आप ''सष्टि रचना'' अध्याय से ग्रहण करेंगे जो इसी पुस्तक में लिखी है। ये प्रधान देवता हैं। अन्य इनसे निम्न स्तर के देव हैं। ये सर्व जन्मते-मरते हैं, अविनाशी राम यानि अविनाशी परमात्मा नहीं हैं।

श्रीमद् भगवत गीता अध्याय 10 श्लोक 2 में लिखा है कि गीता ज्ञान दाता काल ब्रह्म ने कहा है कि ''मेरी उत्पत्ति को न तो देवता जानते और न महर्षिजन जानते क्योंकि इन सबका आदि कारण मैं ही हूँ अर्थात् ये सर्व मेरे से उत्पन्न हुए हैं।''

गीता अध्याय 14 श्लोक 3 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि हे अर्जुन! मेरी प्रकति अर्थात् दुर्गा तो गर्भ धारण करती है, मैं उसके गर्भ में बीज स्थापित करता हूँ जिससे सर्व प्राणियों की उत्पत्ति होती है।

गीता अध्याय 14 श्लोक 4 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि हे अर्जुन! नाना प्रकार की सब योनियों में जितने शरीरधारी मूर्तियाँ उत्पन्न होती हैं (महत्) प्रकति तो उन सबकी गर्भ धारण करने वाली माता है। (अहम् ब्रह्म) मैं ब्रह्म बीज स्थापित करने वाला पिता हूँ।

गीता अध्याय 14 श्लोक 5 :- गीता ज्ञान दाता ने स्पष्ट किया है कि हे अर्जुन! सत्वगुण श्री विष्णु जी, रजगुण श्री ब्रह्मा जी तथा तमगुण श्री शिव जी, ये प्रकति अर्थात् दुर्गा देवी से उत्पन्न तीनों देवता अर्थात् तीनों गुण अविनाशी जीवात्मा को कर्मों के अनुसार शरीर में बाँधते हैं।

उपरोक्त प्रमाणों से स्पष्ट हुआ कि उपरोक्त देवता नाशवान हैं तथा काल ब्रह्म के पुत्र हैं।

प्रसंग चल रहा है कि वाणी सँख्या 3 का सरलार्थ :-

इन्द्र, कुबेर, ईश अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु, शिव तक को प्राप्त करके तथा वरूण, धर्मराय की

पदवी तथा श्री विष्णुनाथ के लोक को प्राप्त करके भी जन्म-मरण के चक्र में रहते हैं।

❖ मार्कण्डेय ऋषि जी ब्रह्म साधना कर रहे थे। उसी को सर्वोत्तम मान रहे थे। इसीलिए इन्द्र को कह रहे थे कि आ तेरे को ब्रह्म साधना का ज्ञान कराऊँ। ब्रह्म लोक की तुलना में स्वर्ग का राज्य लापसी (बिना देशी घी से बना भोजन जो हलवे जेसा दिखाई देता है) की तुलना में जैसे कौवे की बीट है।

पाठकजनो! सत्यलोक को हलवा जानों! आप जी ने ब्रह्म साधना करने वाले श्री चुणक ऋषि, श्री दुर्वासा ऋषि तथा कपिल मुनि की दशा जान ली, उनकी साधना को गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में अनुत्तम अर्थात् घटिया बताया है। उसी श्रेणी की साधना मार्कण्डेय ऋषि जी की थी। जिसको अति उत्तम मानकर कर रहे थे तथा इन्द्र जी को भी राय दे रहे थे कि ब्रह्म साधना कर ले।

सूक्ष्मवेद में कहा है कि :- औरों पंथ बतावहीं, आप न जाने राह।

भावार्थ :- अन्य को मार्गदर्शन करते हैं, स्वयं भक्ति मार्ग का ज्ञान नहीं। श्रीमद् भगवत गीता अध्याय 4 श्लोक 25 से 29 तक यही बताया है कि जो साधक जैसी भी साधना करता है, उसे उत्तम मानकर कर रहा होता है, सर्व साधक अपनी-अपनी भक्ति को पापनाशक जानते हैं।

गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में स्पष्ट किया है कि यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों का ज्ञान स्वयं सच्चिदानन्द घन ब्रह्म ने अपने मुख कमल से बोली वाणी में विस्तार के साथ कहा है, वह तत्त्वज्ञान है। जिसे जानकर साधक सर्व पापों से मुक्त हो जाता है।

गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में स्पष्ट किया है कि उस तत्त्वज्ञान को तत्त्वदर्शी संत जानते हैं, उनको दण्डवत प्रणाम करने से, नम्रतापूर्वक प्रश्न करने से वे तत्त्वज्ञान को जानने वाले ज्ञानी महात्मा तुझे तत्त्वज्ञान का उपदेश करेंगे।

वह तत्त्वज्ञान जिसे ऊपर की वाणी में निर्गुण रासा कहा है, नहीं मिलने से सर्व साधक जन्म-मरण के चक्र में रह गए।

मार्कण्डेय ऋषि ब्रह्म साधना कर रहा था। श्रीमद् भगवत गीता अध्याय 8 श्लोक 16 में कहा है कि ब्रह्मलोक में गए साधक भी पुनरावर्ती अर्थात् बार-बार जन्म-मरण के चक्र में ही रहते हैं।

वाणी सँख्या 4 :- असंख जन्म तोहे मरतां होगे, जीवित क्यों न मरै रे।
द्वादश मध्य महल मठ बोरे, बहुर न देह धरै रे।।

सरलार्थ :- हे मानव! तू अनन्त बार जन्म और मर चुका है। सत्य साधना कर तथा जीवित मर। जीवित मरने का तात्पर्य है कि भक्त को ज्ञान हो जाता है कि इस संसार की प्रत्येक वस्तु अस्थाई है। यह शरीर भी स्थाई नहीं है। जन्म-मत्यु का बखेड़ा भी भयँकर है। इस संसार में दुख के अतिरिक्त कुछ नहीं है। मानव शरीर प्राप्त करके मोक्ष प्राप्त नहीं किया तो पशु जैसा जीवन जीया। जैसे गीता अध्याय 7 श्लोक 29 में कहा है कि जो साधक केवल जरा अर्थात् वद्धावस्था के कष्ट तथा मरण के दुःख से ही मुक्ति के लिए जो साधनारत हैं, वे तत् ब्रह्म को तथा सम्पूर्ण अध्यात्म को तथा कर्मों को जानते हैं।

इसी प्रकार तत्त्वज्ञान होने के पश्चात् मानव को अनावश्यक वस्तुओं की इच्छा नहीं होती, तम्बाकू, शराब-माँस सेवन नहीं करता। नाच-गाना मूर्खों का काम लगता है। जैसा भोजन मिल जाए, उसी में संतुष्ट रहता है।

❖ आत्म कल्याण कराने के लिए साधक विचार करता है कि यदि मैं सत्संग में नहीं आऊँगा तो गुरू जी के दर्शन नहीं कर पाऊँगा। सत्संग विचार न सुनने से मन फिर से विकार करने लगेगा। वह साधक सर्व कार्य छोड़कर सत्संग सुनने के लिए चल पड़ता है। वह विचार करता है कि हम प्रतिदिन सुनते हैं तथा देखते हैं कि छोटे-छोटे बच्चों को छोड़कर पिता संसार से चला जाता है, मर जाता है। बड़े-बड़े पूंजीपति दुर्घटना में मर जाते हैं। सर्व सम्पत्ति जो सारे जीवन में जोड़ी थी, उसे छोड़कर चले जाते हैं, दोबारा उस सम्पत्ति को सँभालने नहीं आते। मत्यु से पहले एक दिन भी कार्य छोड़ने का दिल नहीं करता था, अब स्थाई (**Parmanent**) कार्य छूट गया।

एक भक्त सत्संग में जाने लगा। दीक्षा ले ली, ज्ञान सुना और भक्ति करने लगा। अपने मित्र से भी सत्संग में चलने तथा भक्ति करने के लिए प्रार्थना की। परंतु दोस्त नहीं माना। कह देता कि कार्य से फुर्सत नहीं है। छोटे-छोटे बच्चे हैं। इनका पालन-पोषण भी करना है। काम छोड़कर सत्संग में जाने लगा तो सारा धँधा चौपट हो जाएगा।

वह सत्संग में जाने वाला भक्त जब भी सत्संग में चलने के लिए अपने मित्र से कहता तो वह यही कहता कि अभी काम से फुर्सत नहीं है। एक वर्ष पश्चात् उस मित्र की मत्यु हो गई। उसकी अर्थी उठाकर नगरवासी चले, साथ-साथ सैंकड़ों नगर-मौहल्ले के व्यक्ति भी साथ-साथ चले। सब बोल रहे थे कि राम नाम सत् है, सत् बोले गत् है।

भक्त कह रहा था कि राम नाम तो सत् है परंतु आज भाई को फुर्सत है। नगरवासी कह रहे थे कि सत् बोले गत् है, भक्त कह रहा था कि आज भाई को फुर्सत है। अन्य व्यक्ति उस भक्त से कहने लगे कि ऐसे मत बोल, इसके घर वाले बुरा मानेंगे। भक्त ने कहा कि मैं तो ऐसे ही बोलूँगा। मैंने इस मूर्ख से हाथ जोड़कर प्रार्थना की थी कि सत्संग में चल, कुछ भक्ति कर ले। यह कहता था कि अभी फुर्सत अर्थात् समय नहीं है। आज इसको परमानैंट फुर्सत है। छोटे-छोटे बच्चे भी छोड़ चला जिनके पालन-पोषण का बहाना करके परमात्मा से दूर रहा। भक्ति करता तो खाली हाथ नहीं जाता। कुछ भक्ति धन लेकर जाता। बच्चों का पालन-पोषण परमात्मा करता है। भक्ति करने से साधक की आयु भी परमात्मा बढ़ा देता है। भक्तजन ऐसा विचार करके भक्ति करते हैं, कार्य त्यागकर सत्संग सुनने जाते हैं।

भक्त विचार करते हैं कि परमात्मा न करे, हमारी मत्यु हो जाए। फिर हमारे कार्य कौन करेगा? हम यह मान लेते हैं कि हमारी मत्यु हो गई। हम तीन दिन के लिए सत्संग में चलें, अपने को मत मान लें और सत्संग में चले गए। वैसे तो परमात्मा के भक्तों का कार्य बिगड़ता नहीं, फिर भी हम मान लेते हैं कि हमारी गैर-हाजिरी में कुछ कार्य खराब हो गया तो तीन दिन बाद जाकर ठीक कर लेंगे। वास्तव में टिकट कट गई अर्थात् मत्यु हो गई तो परमानैंट कार्य बिगड़ गया। फिर कभी ठीक करने नहीं आ सकते। इस स्थिति को जीवित मरना कहते हैं।

वाणी का शेष सरलार्थ :-

द्वादश मध्य महल मठ बौरे, बहुर न देहि धरै रे।

सरलार्थ :- श्रीमद् भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि तत्त्वज्ञान की प्राप्ति के पश्चात् परमेश्वर के उस परमपद की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक लौटकर संसार में कभी नहीं आते अर्थात् उनका पुनर्जन्म नहीं होता। वे फिर देह धारण नहीं करते। सूक्ष्मवेद की यह वाणी यही स्पष्ट कर रही है कि वह परम धाम द्वादश अर्थात् 12वें द्वार को पार करके उस

परम धाम में जाया जाता है। आज तक सर्व ऋषि-महर्षि, संत, मंडलेश्वर केवल 10 द्वार बताया करते। परंतु परमेश्वर कबीर जी ने अपने स्थान को प्राप्त कराने का सत्यमार्ग, सत्य स्थान स्वयं ही बताया है। उन्होंने 12वां द्वार बताया है। इससे भी स्पष्ट हुआ कि आज तक (सन् 2012 तक) पूर्व के सर्व ऋषियों, संतों, पंथों की भक्ति काल ब्रह्म तक की थी। जिस कारण से जन्म-मत्यु का चक्र चलता रहा।

वाणी सँख्या 5 :- दोजख बहिश्त सभी तै देखे, राजपाट के रसिया।
तीन लोक से तप्त नाहीं, यह मन भोगी खसिया।।

सरलार्थ :- तत्त्वज्ञान के अभाव में पूर्णमोक्ष का मार्ग न मिलने के कारण कभी दोजख अर्थात् नरक में गए, कभी बहिश्त अर्थात् स्वर्ग में गए,कभी राजा बनकर आनन्द लिया। यदि इस मानव को तीन लोक का राज्य भी दे दें तो भी तप्ति नहीं होती।

उदाहरण :- यदि कोई गाँव का सरपंच बन जाता है तो वह इच्छा करता है कि विधायक बने तो मौज हो जाए। विधायक इच्छा करता है कि मन्त्री बनूँ तो बात कुछ अलग हो जाएगी। मंत्री बनकर इच्छा करता है कि मुख्यमंत्री बनूँ तो पूरी चौधर (महिमा) हो। आनन्द ही न्यारा होगा। सारे प्रान्त पर कमांड चलेगी। मुख्यमंत्री बनने के पश्चात् प्रबल इच्छा होती है कि प्रधानमंत्री बनूँ तो जीवन की सफलता है। तब तक जीवन लीला समाप्त हो जाएगी। फिर गधा बनकर कुम्हार के लठ खा रहा होगा। इसलिए तत्त्वज्ञान में समझाया है कि काल ब्रह्म द्वारा बनाई स्वर्ग-नरक तथा राजपाट प्राप्ति की भूल-भुलईया में सारा जीवन व्यर्थ कर दिया।

एक अब्राहिम सुल्तान अधम नाम का बलख शहर का राजा था। वह पूर्व जन्म का बहुत अच्छा भक्त था। परंतु वर्तमान के ऐश्वर्य में मस्त होकर परमात्मा को भूल चुका था। राज के ठाठ में तथा महलों में आनंदमान बैठा था। एक दिन परमात्मा कबीर जी सत्यलोक से आकर एक यात्री का रूप बनाकर राजा के महल में गए तथा कहा कि सराय वाले! एक कमरा किराए पर दे, पैसे बता, रात्रि बितानी है। राजा ने कहा हे भोले यात्री! आपको यह सराय दिखाई देती है। मैं राजा हूँ और यह मेरा महल है। यात्री रूप में परमात्मा ने पूछा कि आपसे पहले इस महल में कौन रहते थे? राजा ने कहा कि मेरे पिता, दादा-परदादा रहते थे। यात्री रूप में परमेश्वर ने कहा कि आप कितने दिन रहोगे इस महल में? राजा ने कहा एक दिन मैं भी चला जाऊँगा इन्हें छोड़कर। परमेश्वर बोले कि यह सराय (धर्मशाला) नहीं तो क्या है? यह सराय है। जैसे तेरे बाप-दादा गए, ऐसे ही तू चला जाएगा, इसलिए मैंने महलों को धर्मशाला बताया है। राजा को वास्तविकता का ज्ञान हुआ। संसार की इच्छा त्यागकर आत्म-कल्याण करवाया। सदा रहने वाला सुख तथा अमर जीवन प्राप्त करने के लिए दीक्षा ली और आजीवन भक्ति की, अपना मानव जीवन सफल किया।

वाणी सँख्या 6 :-सतगुरू मिलैं तो इच्छा मेटैं, पद मिल पदे समाना।
चल हंसा उस लोक पठाऊँ, जो आदि अमर अस्थाना।।

सरलार्थ :- यदि तत्त्वदर्शी संत सतगुरू मिलें तो उपरोक्त ज्ञान बताकर काल ब्रह्म के लोक की सर्व वस्तुओं से तथा पदों से इच्छा समाप्त करके ''पद मिल पदे समाना'' इसमें एक 'पद' का अर्थ है पद्धति अर्थात् शास्त्रविधि अनुसार साधना। दूसरे पद का अर्थ है अमर लोक स्थान। सतगुरू साधना करवाकर परमेश्वर के उस परम पद की प्राप्ति करा देता है जहाँ जाने के पश्चात् फिर लौटकर संसार में कभी नहीं आते। हे भक्त! चल तुझे उस लोक में भेज दूँ जो आदि अमर

अस्थान है अर्थात् गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में वर्णित सनातन परम धाम है जहाँ पर परम शांति है।

वाणी सँख्या 7 :- चार मुक्ति जहाँ चम्पी करती, माया हो रही दासी।
दास गरीब अभय पद परसै, मिले राम अविनाशी।।

सरलार्थ :- उस सनातन परम धाम में परम शान्ति तथा अत्यधिक सुख है। काल ब्रह्म के लोक में चार मुक्ति मानी जाती है, जिनको प्राप्त करके साधक अपने को धन्य मानता है। परंतु वे स्थाई नहीं हैं। कुछ समय उपरांत पुण्य समाप्त होते ही फिर 84 लाख प्रकार की योनियों में कष्ट उठाता है। परंतु उस सत्यलोक में चारों मुक्ति वाला सुख सदा बना रहेगा। माया आपकी नौकरानी बनकर रहेगी।

संत गरीबदास जी ने बताया है कि अमर लोक में जाने के पश्चात् प्राणी निर्भय हो जाता है और उस सनातन परम धाम में वह अविनाशी राम अर्थात् परमेश्वर मिलेगा। इसलिए पूर्ण मोक्ष के लिए शास्त्रानुकूल भक्ति करनी चाहिए जिससे उस परमात्मा तक जाया जा सकता है।

उपरोक्त वाणी तथा पूर्वोक्त विवरण से स्पष्ट हुआ कि श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा शिव जी और इनके पिता काल ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरूष व अक्षर पुरूष सर्व राम अर्थात् प्रभु नाशवान हैं। केवल परम अक्षर ब्रह्म ही अविनाशी राम अर्थात् प्रभु है। उस परमेश्वर की भक्ति से ही परमशांति तथा सनातन परम धाम अर्थात् पूर्ण मोक्ष प्राप्त होगा जहाँ पर चार मुक्ति का सुख सदा बना रहेगा। माया अर्थात् सर्व सुख-सुविधाऐं साधक के नौकर की तरह हाजिर रहती हैं।

सूक्ष्मवेद में कहा है कि :-

कबीर, माया दासी संत की, उभय दे आशीष।
विलसी और लातों छड़ी, सुमर–सुमर जगदीश।।

भावार्थ :- सर्व सुख-सुविधाऐं धन से होती हैं। वह धन शास्त्रविधि अनुसार भक्ति करने वाले संत-भक्त की भक्ति का अन् उदेशित उत्पाद (By Product) होता है। जैसे जिसने गेहूँ की फसल बीजी तो उसका उद्देश्य गेहूँ का अन्न प्राप्त करना है। परंतु भूस अर्थात् चारा भी अवश्य प्राप्त होता है। चारा, तूड़ा गेहूँ के अन्न का अन् उदेशित उत्पाद (By Product) है। इसी प्रकार सत्य साधना करने वाले को अपने आप धन माया मिलती है। साधक उसको भोगता है, वह चरणों में पड़ी रहती है अर्थात् धन का अभाव नहीं रहता अपितु आवश्यकता से अधिक प्राप्त रहती है। परमेश्वर की भक्ति करके माया का भी आनन्द भक्त, संत प्राप्त करते हैं तथा पूर्ण मोक्ष भी प्राप्त करते हैं।

कबीर सागर के अध्याय ''आत्म बोध'' का सारांश सम्पूर्ण हुआ।

।।सत साहेब।।

अध्याय ''जैन धर्म बोध'' का सारांश

कबीर सागर में 31वां अध्याय ''जैन धर्म बोध'' पष्ठ 45(1389) पर है।

परमेश्वर कबीर जी ने जैन धर्म की जानकारी इस प्रकार बताई है।

अयोध्या का राजा नाभिराज था। उनका पुत्र ऋषभ देव था जो अयोध्या का राजा बना। धार्मिक विचारों के राजा थे। जनता के सुख का विशेष ध्यान रखते थे। दो पत्नी थी। कुल 100 पुत्र तथा एक पुत्री थी। बड़ा पुत्र भरत था।

कबीर परमेश्वर जी अपने विधान अनुसार अच्छी आत्मा को मिलते हैं। उसी गुणानुसार ऋषभ देव के पास एक ऋषि रूप में गए। अपना नाम कबि ऋषि बताया। उनको आत्म बोध करवाया। शब्द सुनाया, मन तू चल रे सुख के सागर, जहाँ शब्द सिंधु रत्नागर जो आप जी ने पढ़ा आत्म बोध के सारांश में पष्ठ 373-374 पर।

यह सत्संग सुनकर राजा ऋषभ देव जी की आत्मा को झटका लगा जैसे कोई गहरी नीन्द से जागा हो। ऋषभ देव जी के कुल गुरू जो ऋषिजन थे, उनसे परमात्मा प्राप्ति का मार्ग जानना चाहा। उन्होंने ॐ नाम तथा हठयोग करके तप करने की विधि दढ़ कर दी। राजा ऋषभ देव को परमात्मा प्राप्ति करने तथा जन्म-मरण के दुःखद चक्र से छूटने के लिए वैराग्य धारण करने की ठानी। अपने बड़े बेटे भरत जी को अयोध्या का राज्य दे दिया तथा अन्य पुत्रों को भी अन्य नगरियों का राज्य प्रदान करके घर त्यागकर जंगल में चले गए। परमेश्वर कबीर जी भी जंगल में गए। परमेश्वर कबीर जी जंगल में ऋषभ देव जी से फिर मिले और कहा कि हे भोली आत्मा! ''आसमान से गिरे और खजूर पर अटके'' वाली बात चित्रार्थ कर दी है। राज्य त्यागकर जंगल में निवास किया, परंतु साधना पूर्ण मोक्ष की प्राप्त नहीं हुई। यह तो जन्म-मरण का चक्र में रहने वाली साधना आप कर रहे हो। मेरे पास सत्य साधना है। आप मेरे से दीक्षा ले लो, आपका जन्म-मरण सदा के लिए समाप्त हो जाएगा। ऋषभ देव जी अपने गुरू जी के बताए मार्ग को पूर्ण रूप से सत्य मान चुके थे। इसलिए उन्होंने कबि ऋषि की बातों पर विशेष ध्यान नहीं दिया। प्रभु कबीर देव चले गए। राजा ऋषभ देव जी पहले एक वर्ष तक निराहार रहे। फिर एक हजार वर्ष तक हठ योग तप किया। उसके पश्चात् धर्मदेशना (दीक्षा) देने लगे। उन्होंने प्रथम धर्म देशना (दीक्षा) अपने पौत्र मारीचि को दी जो भरत का पुत्र था। मारीचि वाला जीव ही आगे चलकर चौबीसवें तीर्थकंर बने जिनका नाम महाबीर जैन था। राजा ऋषभदेव जी यानि प्रथम तीर्थकंर जैन धर्म के प्रवर्तक से दीक्षा प्राप्त करने के पश्चात् मारीचि जी वाला जीव 60 करोड़ बार गधा बना। 30 करोड़ बार कुत्ता, करोड़ों बार बिल्ली, करोड़ों बार घोड़ा, करोड़ों बार नपुसंक, करोड़ों बार वैश्या तथा वक्षों आदि के जन्मों में कष्ट उठाता रहा। कभी-कभी राजा बना और 80 लाख बार देवता बना तथा नरक भी भोगा और फिर ये उपरोक्त दुःख भोगकर महाबीर जैन भगवान बना। नंगे रहते थे। श्री महाबीर जैन जी के जीव ने 363 पाखंड मत चलाए।

''भोगेगा अपना किया रे''

एक समय महाबीर जैन वाला जीव यानि मारीचि वाला जीव राजा था। उसका एक विशेष नौकर था। राजा का मनोरंजन करने के लिए एक वाद्य यंत्र बजाने वाली पार्टी होती थी। राजा

धुन सुनते-सुनते सो जाता तो वह तान बंद करा दी जाती थी। राजा अपने महल में पलंग पर लेटा-लेटा धुन सुना करता। अपने नौकर को कह रखा था कि जब मुझे नींद आ जाए तो बाजा बंद करा देना। एक दिन नौकर आनन्द मग्न होकर धुन सुनने में लीन हो गया। उसको पता नहीं चला कि राजा कब सो गए? शोर से राजा की निन्द्रा भंग हो गई। राजा जब उठा तो मंडली बाजा बजा रही थी। राजा को क्रोध आया। उस नौकर को दण्डित करने का आदेश सुना दिया कि इसने मेरे आदेश को अनसुना किया है। इसके कानों में काँच (Glass) पिघलाकर गर्म-गर्म डालो। नौकर ने बहुत प्रार्थना की, क्षमा कर दो। आगे से कभी ऐसी गलती नहीं करूंगा, परंतु अहंकारवश राजा ने उसकी एक नहीं सुनी और सिपाहियों ने उस नौकर को पकड़कर जमीन पर लेटाकर दोनों कानों में पिघला हुआ गर्म काँच (शीशा) डाल दिया। नौकर की चीख हृदय विदारक थी। महीनों तक दर्द के मारे रोता रहा। समय आने पर राजा का देहान्त हुआ। फिर वही जीव महाबीर जैन रूप में जन्मा। घर त्यागकर जंगल में साधना करने लगा। उसी क्षेत्र में एक व्यक्ति अपनी गायों को घास चराने ले जाता था। दोनों में मित्रता हो गई। वह व्यक्ति गाँव से भोजन ले आता था, महाबीर जी को खिलाता था। एक दिन उस गौपाल को किसी कार्यवश घर जाना पड़ा तो उसने साधक से कहा कि मेरे को गाँव जाकर आना है। आप मेरी गायों का ध्यान रखना, कहीं गुम न हो जाऐं। महाबीर जी ने आश्वासन दिया कि आप निश्चिंत होकर जाओ, मैं ध्यान रखूंगा। महाबीर जी साधना करने लगे। उनको ध्यान नहीं रहा, गायें दूर जंगल में चली गई। जब वह ग्वाला आया और साधक से पूछा कि मेरी गायें कहाँ हैं? तो साधक निरूत्तर हो गए और कारण बताया कि मैं साधना में लगा था और ध्यान नहीं रहा। ग्वाले को पता था कि गौवें जंगल में गहरा जाने के पश्चात् जीवित नहीं बचती क्योंकि वहाँ शेर, चीते आदि खूंखार जानवर बहु सँख्या में रहते थे। अपने धन की हानि का कारण साधक को मानकर बाँस की लाठी को तोड़कर उससे पतली-पतली दो टुकड़ी छः-2 इंच लंबी (फाटकी) लेकर साधक को पकड़कर बलपूर्वक धरती के ऊपर गिराकर दोनों कानों में वे टुकड़ी ठोककर अंदर तोड़ दी। साधक बुरी तरह से चिल्लाता रहा। वह ग्वाला चला गया। फिर उधर कभी नहीं गया। एक महीने के पश्चात् दैव योग से एक वैद्य किसी औषधि की खोज करता-करता गया तो महाबीर जैन की पीड़ा का पता चला। उसने साधक के कानों से वे फाटकी निकाली तो लकड़ी की सली (बाँस के फटने से उसमें पतली-पतली सूई जैसी नुकीली सींख बन जाती हैं, उनको सली कहते हैं) कानों को चीरती हुई बाहर आई। रक्त व मवाद की पिचकारी लगी और साधक की किलकारी निकली यानि महावीर जी बुरी तरह चिल्लाए। वैद्य ने उपचार किया। कई महीनों में पीड़ा ठीक हुई, परंतु बहरे हो गए, मत्यु हो गई। फिर अन्य जीवन भोगकर फिर महावीर जैन बने।

महाबीर जैन जी ने 363 पाखण्ड मत चलाए जो वर्तमान में जैन धर्म में पाखण्ड मत वाली साधना चल रही हैं।

इस कथा से शिक्षा मिलती है कि जो अपनी शक्ति का दुरूपयोग करके किसी को तंग करता है तो उसका बदला भी उसको कभी न कभी देना पड़ता है। इसलिए कभी अपनी शक्ति का दुरूपयोग न करें। अब ऋषभ देव जी की कथा सुनाता हूँ।

ऋषभ देव निवस्त्र रहने लगे क्योंकि उनको अपनी स्थिति का ज्ञान नहीं था। वे परमात्मा के वैराग्य में इतने मस्त थे कि उनको ध्यान ही नहीं था कि वे नंगे हैं। उनका ध्यान परमात्मा

में रहता था। वर्तमान के जैनी महात्माओं ने वह नकल कर ली और नंगे रहने लगे। यह मात्र परंपरा का निर्वाह है।

ऋषभ देव जी अपने मुख में पत्थर का टुकड़ा लेकर नग्न अवस्था में कुटक के जंगलों में दिन-रात फिरते थे। एक बार बाँसों के आपस में घिसने से जंगल में अग्नि लग गई। दावानल इतनी भयंकर हुई कि सब जंगल जलकर राख हो गए। ऋषभ देव जी भी जलकर मर गए।

ऋषभ देव जी का जीव ही बाबा आदम के रूप में जन्मा जो मुसलमानों, ईसाईयों तथा यहूदियों का प्रथम पुरूष तथा नबी माना जाता है।

जैन धर्म में दो प्रकार के साधु हैं :-

1. बिल्कुल नंगे रहते हैं जो पूर्व के महापुरूषों की नकल कर रहे हैं। जैन धर्म की स्त्री, पुरूष, युवा लड़के-लड़कियां, बच्चे-वद्ध सब उन नंगे साधुओं की पूजा करते हैं।

इनको दिगंबर साधु कहा जाता है। इनमें स्त्रियों को साधु नहीं बनाया जाता। विचारणीय विषय है कि क्या स्त्री को मोक्ष नहीं चाहिए। यदि आपका मार्ग सत्य है तो स्त्रियों को भी करो नंगा, निकालो जुलूस। सच्चाई को न मानकर मात्र परंपरा का निर्वाह करने से परमात्मा प्राप्ति नहीं होती।

2. दूसरे साधु श्वेताम्बर हैं। वे सफेद वस्त्र, मुख पर कपड़े की पट्टी रखते हैं। इसमें स्त्रियां भी साधु हैं। मारीचि जी के जीव ने प्रथम तीर्थंकर ऋषभ देव जी से दीक्षा लेकर साधना की थी जो ऋषभ देव जी की बताई साधना विधि थी। उसके परिणामस्वरूप गधा, कुत्ता, घोड़ा, बिल्ली, धोबी, वैश्या का जीवन भोगा और स्वर्ग-नरक में भटके। फिर महाबीर जैन बने। महाबीर जी ने तो किसी से धर्मदेशना (दीक्षा) भी नहीं ली थी यानि गुरू नहीं बनाया था। उन्होंने तो मनमाना आचरण करके साधना की जिसको गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में व्यर्थ बताया है। कबीर जी ने कहा है कि :-

गुरू बिन माला फेरते, गुरू बिन देते दान।
गुरू बिन दोनों निष्फल है, पूछो वेद पुराण।।

इसी कारण से महाबीर जी का मोक्ष संभव नहीं है। महाबीर जी ने अपने अनुभव से 363 पाखण्ड मत चलाए जो वर्तमान में जैन धर्म में प्रचलित हैं। विचार करें महाबीर जैन की आगे क्या दुर्दशा हुई होगी? यह स्पष्ट है क्योंकि राजा ऋषभ देव वेदों अनुसार साधना करते थे। वही दीक्षा मारीचि जी को दी थी। वेदों अनुसार साधना करने से मारीचि वाले जीव को ऊपर लिखित लाभ-हानि हुई। जन्म-मरण जारी है तो महाबीर जी ने तो वेदों के विरूद्ध शास्त्र विधि त्यागकर मनमाना आचरण किया था। गुरू से दीक्षा भी नहीं ली थी। उनको तो स्वपन में भी स्वर्ग नहीं मिलेगा। अन्य वर्तमान के जैनी भाई-बहनों को क्या मिलेगा?

जैनी मानते हैं कि 1. संष्टि का कोई कर्ता नहीं है। यह अनादि काल से चली आ रही है। नर-मादा के संयोग से उत्पत्ति होती है, मरते हैं।

2. जैनी मूर्ति पूजा में विश्वास रखते हैं। किसी परमात्मा की मूर्ति नहीं रखते जिनको हिन्दु समाज प्रभु मानता है जैसे श्री विष्णु, श्री शिव जी, श्री ब्रह्मा जी या देवी जी। ये अपने तीर्थंकर को ही प्रभु मानते हैं, उन्हीं की मूर्ति मंदिरों में रखते हैं। ॐ मंत्र का स्वरूप तथा उच्चारण बिगाड़कर ओंकार को ''णोंकार'' बनाकर जाप करते हैं।

3. जो स्त्री या पुरूष श्वेताम्बरों से दीक्षा लेता है, उनके सिर तथा दाढ़ी के बाल हाथों से नोंच-नोंचकर उखाड़ते हैं, महान पीड़ा होती है। भक्ति में शरीर को अधिक कष्ट देना लाभदायक मानते हैं। (इस तरह की साधना तथा विधान निराधार तथा नरक दायक है। मोक्ष तो स्वपन में भी नहीं है।)

जैनियों का विधान है कि संष्टि को रचने वाला कोई नहीं है। नर-मादा से उत्पन्न होते हैं, मरते रहते हैं। यह पढ़कर गीता अध्याय 16 श्लोक 8-9 याद आया।

गीता अध्याय 16 श्लोक 8 :- वे आसुरी प्रकंति वाले कहा करते हैं कि जगत आश्रय रहित सर्वथा असत्य तथा (अनीश्वरम्) बिना ईश्वर के अपने आप केवल स्त्री-पुरुष के संयोग से उत्पन्न होता है। केवल काम (Sex) ही इसका कारण है। इसके सिवा क्या है?

गीता अध्याय 16 श्लोक 9 :- इस मिथ्या ज्ञान को अवलम्बन करके जिनका स्वभाव नष्ट हो गया है, जिनकी बुद्धि मंद है यानि ज्ञानहीन है। सबका अपकार (बुरा) करने वाले यानि भ्रमित करके गलत ज्ञान, गलत साधना द्वारा अनमोल जीवन नष्ट कराने वाले (उग्रकर्माणः) क्रूरकर्मी सर्व बालों को नौंच-नौचकर उखाड़ना, निःवस्त्र फिरना, गर्मी-सर्दी से शरीर को बिना वस्त्र के कष्ट देना, व्रत करने के उद्देश्य से कई-कई दिन तक भोजन न करना। फिर संथारा द्वारा भूखे-प्यासे रहकर देहान्त करना आदि-आदि क्रूरकर्म हैं। ऐसे क्रूरकर्मी मनुष्य केवल जगत के नाश के लिए ही उत्पन्न होते हैं।

यह जैन धर्म का ज्ञान आपको परमेश्वर कबीर जी के बताए अनुसार लेखक ने बताया है।

कबीर सागर के अध्याय ''जैन धर्म बोध'' का सारांश सम्पूर्ण हुआ।

।।सत साहेब।।

अध्याय ''स्वसमवेद बोध'' का सारांश

कबीर सागर में 32वां अध्याय ''स्वसमवेद बोध'' पष्ठ 77 पर है। जैसा कि पूर्व में लिख आया हूँ कि कबीर सागर ग्रन्थ को काल द्वारा चलाए 12 कबीर पंथों के कुछ अनुयाईयों ने अपनी बुद्धि अनुसार कबीर ज्ञान से कुछ वाणी काटी हैं, कुछ मिलाई हैं। कुछ प्रकरण कांट-छांट करके लिखे हैं। यही दशा ''स्वसमवेद बोध'' में की है। इस अध्याय वाला ज्ञान पहले ''अनुराग सागर'' में ज्ञान प्रकाश, ज्ञान बोध, मुक्ति बोध में वर्णित है। कुछ ज्ञान जो परमेश्वर कबीर जी की लीला वाला है। वह कबीर चरित्र बोध में है, उसको वहाँ लिखेंगे।

कुछ ज्ञान जो ''कलयुग में सर्व सष्टि उपदेश लेकर भक्ति करेगी, सतयुग जैसा वातावरण होगा'' है, इसका विवरण पहले भी अध्याय अनुराग सागर तथा कबीर बानी में आंशिक लिखा है। यहाँ पर शब्दार्थ करके लिखूंगा। स्वसमबेद बोध पष्ठ 77 से 86 तक शरीरों की सँख्या बताई है। तत्त्वों तथा उनकी प्रकति का ज्ञान है।

शरीर पाँच बताए हैं :- 1. स्थूल शरीर 2. इसके अंदर सूक्ष्म यानि लिंग शरीर 3. इसके अंदर कारण शरीर 4. इसके अंदर महाकारण शरीर 5. इसके अंदर कैवल्य शरीर है। जीव के ऊपर इतने सुंदर शरीर (वस्त्र) डाल रखे हैं।

स्वस्मवेद बोध पष्ठ 86 से 90 का सारांश :- इन पष्ठों में प्रथम दीक्षा मंत्र बताए हैं।

''यथार्थ पाँच नामों का ज्ञान''

ॐ=ओम्, श्रीं=श्रीयम्, ह्रीं=हरियम्, सों=सोहं, कीलं=किलियम्

ये पाँच नाम गायत्री मंत्र के हैं जो प्रथम दीक्षा रूप में परमेश्वर कबीर जी प्रदान करते थे जो चूड़ामणी जी को यही मंत्र परमेश्वर कबीर जी ने दिए थे तथा आगे इन्हीं को दीक्षा रूप में देने का आदेश दिया था। ये मंत्र शरीर में बने कमलों में विराजमान पाँचों देवी-देवताओं के हैं।

1. मूल कमल में गणेश देव हैं, इनका किलियं (किलं) जाप है।

2. अधिष्ठान यानि संत भाषा में स्वाद कमल में सावित्री-ब्रह्मा जी हैं, इनका ॐ (ओम्) नाम जाप है।

3. नाभि कमल में लक्ष्मी-विष्णु जी हैं, इनका हरियं (ह्रीं) जाप है।

4. हृदय कमल में पार्वती-शिव जी हैं, इनका सोहं (सों) जाप है।

5. कण्ठ कमल में देवी दुर्गा जी हैं, इनका श्रीयम् (श्रीं) जाप है।

ये पाँच नाम हैं जो प्रथम दीक्षा रूप में परमेश्वर कबीर जी दिया करते थे। इन्हीं मंत्रों का संकेत श्री नानक देव साहेब जी ने अपनी अमतवाणी में दिया है। एक पुस्तक जो गुरू अमर दास जी द्वारा ''तेइये ताप'' की कथा में लिखे हैं, बाद में इनको देवी-देवताओं के मंत्र पूजा जानकर त्याग दिया गया। यही समस्या धर्मदास जी की छठी पीढ़ी वाले के सामने टकसारी पंथ वाले (काल वाले कबीर पंथ के पाँचवें) ने पैदा करके ये वास्तविक मंत्र छुड़वा दिए थे और नकली पाँच नाम आदिनाम, अजरनाम, अमर नाम, पाताले सप्त सिंधु नाम आदि-आदि जो अध्याय ''सुमरण बोध'' पष्ठ 22 पर अंकित है, दीक्षा में देने लगा।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा था कि जिस समय कलयुग का दूसरा चरण भक्ति का चलेगा, तब सात नाम का प्रथम मंत्र दिया जाया करेगा और सतनाम तथा सारनाम देकर सर्व उपदेशियों

को मुक्त करेंगे। जो तेरहवां कबीर पंथ चलेगा, तब सम्पूर्ण मंत्र उपदेशी को दिए जाएंगे। अब तक मूल ज्ञान तथा मूल शब्द यानि सार शब्द छुपाकर रखना था। प्रमाण कबीर बानी अध्याय में पृष्ठ 137 पर तथा अध्याय ''जीव धर्म बोध'' पृष्ठ 1937 पर कहा है।

धर्मदास तोहे लाख दुहाई। सार शब्द बाहर नहीं जाई।।
सार शब्द बाहर जो परि है। बिचली पीढ़ी (दूसरे चरण वाली) हंस नहीं तरि है।।
युगन–युगन तुम सेवा कीनी। ता पीछे हम इहां पग दीनी।।
कोटि जन्म भक्ति जब कीन्हा। सार शब्द तबही मैं दीन्हा।।
अंकूरी जीव होय जो कोई। सार शब्द का अधिकारी होई।।
सत्य कबीर प्रमाण बखाना। ऐसो कठिन है पद निर्वाणा।।

(यह वाणी जीव धर्म बोध पृष्ठ 1937 पर लिखा है।)

कबीर बानी अध्याय में पृष्ठ 137(983) पर :-

धर्मदास मेरी लाख दोहाई। मूल शब्द (सार शब्द) बाहर न जाई।।
पवित्र ज्ञान तुम जग में भाखो। मूल (तत्त्व) ज्ञान तुम गोई कर राखो।।
मूल ज्ञान जो बाहर परही। बिचले पीढ़ी हंस नहीं तरही।।
तेतीस अरब ज्ञान हम भाषा। मूल ज्ञान गोए हम राखा।।
मूल ज्ञान तुम तब लगि छिपाई। जब लग द्वादश पंथ मिटाई।।

उपरोक्त अमृतवाणी के प्रमाण से स्पष्ट हुआ कि मूल ज्ञान यानि तत्त्वज्ञान तथा सार शब्द अब छुपा कर रखना था। इसी पृष्ठ 137(983) कबीर बानी में यह भी लिखा है :-

बारहवें पंथ प्रगट होव बानी। शब्द हमारे की निर्णय ठानी।।
अस्थिर घर का मर्म ना पावै। ये बारा पंथ हमीं को ध्यावैं।।
बारहे पंथ हम ही चलि आवैं। सब पंथ मिटा एक ही पंथ चलावैं।।

भावार्थ :- बारहवां पंथ संत गरीबदास जी का है। प्रमाण कबीर सागर में कबीर चरित्र बोध के पृष्ठ 1870 पर। संत गरीबदास जी का जन्म विक्रमी संवत् 1774 में सन् 1717 में) गाँव छुड़ानी में हुआ। फिर उनका पंथ चला। सन् 1988 में मुझ दास का आध्यात्मिक जन्म संत गरीबदास जी यानि बारहवें पंथ में हुआ अर्थात् स्वामी रामदेवानन्द जी गरीबदासिय (गरीबदास पंथी) संत से मुझे (रामपाल दास को) 17 फरवरी 1988 को दीक्षा प्राप्त हुई। अब तक मूल ज्ञान यानि तत्त्व ज्ञान तथा सार शब्द (मूल शब्द) छुपाकर रखना था। इससे सिद्ध है कि संत धर्मदास जी के पीढ़ी वालों के पास न तो तत्त्वज्ञान था और न सार शब्द। यह दशा सर्व कबीर पंथियों की है। अब जो नया तेरहवां पंथ चल रहा है, सर्व नाम तथा तत्त्वज्ञान सार्वजनिक किया जाएगा। सात नाम दिए जाएंगे। सात नाम तथा पाँच नामों का प्रमाण कबीर सागर में ज्ञान स्थिति बोध पृष्ठ 85 तथा पृष्ठ 86 परः-

पृष्ठ 85 पर :-

मूल शब्द गुप्त है सारा। बिरले पावैं शब्द हमारा।।
बिहंग शब्द बिहंग है बीरा। निज सो नाम ये कहै कबीरा।।
सातों नाल जो आय बिहंगा। बिहंग ताल आहि जल रंगा।।

पृष्ठ 86 पर :-

सोई सिद्ध संत है भाई। सोहं नाल चिन्ह जिन पाई।।
पाँच नाम ताही को परवाना। जो कोई साधु हृदय में आना।।

यही सप्त नाल हे सही। यही हंस नाम रिबही।।
सप्त नाल के सातों नामा। बीर बिहंग करै सब कामा।।

कबीर सागर में अनुराग सागर अध्याय में पृष्ठ 72 पर :-

पाँच शब्द कहि दल फेरा। पुरूष नाम लीन्हो तिहि बेरा।।

उपरोक्त अमृतवाणी में पाँच तथा सात नामों का संकेत है और स्वस्मबेद बोध पृष्ठ 86 पर प्रकट लिखे हैं जो रं=रम् तथा रौं=रौम् हैं। ये सांकेतिक हैं।

नामों का लाभ क्या है?

पृष्ठ 87 पर स्मस्मबेद बोध में सोहं नाम के जाप का लाभ बताया है:-

सोहं बीज को अंकुर ज्ञाना। आल बाल भक्ति मय साना।।

भावार्थ :- सोहं मंत्र का जाप पूर्ण संत से लेकर करने से आलबाल अर्थात् औली-बौली यानि अथाह भक्ति जमा होती है। पृष्ठ 89 स्वस्मबेद बोध में लिखा है कि :-

ह्रीं (हरियम्) स्थिति बीज षष्ठ होई। आल बाल तिहि माया होई।।

भावार्थ :- हरियम् नाम के जाप से आलबाल यानि अथाह धन (माया) हो जाता है। आप जी को बताया है कि परमेश्वर जी ने स्पष्ट कर रखा है कि मूल ज्ञान पहले नहीं बताया। उसमें अधूरा ज्ञान बताया है। सार नाम तथा मूल ज्ञान अब स्पष्ट किया जा रहा है।

पृष्ठ 91 स्वस्मबेद बोध पर अस्पष्ट सत्यनाम भी लिखा है :-

जाते ओहं पुरूष भये अंशा। ओहं सोहं भये द्वै अंशा।।

पृष्ठ 92 से 107 तक सृष्टि रचना का अधूरा ज्ञान है। सृष्टि रचना का सम्पूर्ण ज्ञान पढ़ें इसी पुस्तक ''कबीर सागर का सरलार्थ'' के सारांश में पृष्ठ 603 से 670 तक।

पृष्ठ 105-106 पर बताया है कि :-

जीव जिस योनि से मानव शरीर प्राप्त करता है, उसका कैसा स्वभाव होता है? इसको पहले बताया जा चुका है।

स्मसमबेद बोध पृष्ठ 108 तथा 110 पर :-

काल जाल बताया है कि काल कैसे तीनों देवताओं से अपनी सृष्टि को चलवा रहा है? यह पहले के अध्यायों में वर्णन हो चुका है।

स्वसमबेद बोध पृष्ठ 111 पर :-

''तप्त शिला पर जीवों से वार्ता''

{वास्तव में ज्ञानी, जोगजीत तथा सहजदास रूप में परमेश्वर कबीर जी ही आए थे। वे स्वयं ही सत्य पुरूष हैं। यदि बार-बार कहते कि मैं ही परमात्मा हूँ तो धर्मदास जी को विश्वास नहीं होता। इसलिए घुमा-फिराकर धर्मदास जी की बुद्धि अनुसार पात्र बनाकर सत्य कथा सुनाई है।}

तप्त शिला यक नाम पुकारा। सब जिव पकरि ताहि परजारा।।
तप्त शिलापर जो जिव परही। हाय हाय करि चटपट करही।।
तड़फ तड़फ जिव तहँ रहिजाही। भूनि भूनि सब यमधारिखाही।।
केते युग जीवन धरि खायौ। जारी वारि के योनि भ्रमायौ।।
जरत जीव जब कीन पुकारा। काल देत है कष्ट अपारा।।

यमको कष्ट सहो नहिं जाई। हो साहिब दुःख टारो आई।।
यहि बिधि जिव कीन पुकारा। पुरूष दयाल दया उरधारा।।
तब पुरूष ज्ञानी को टेरो। ज्ञानी सुनिये आज्ञा मेरो।।

सत्य कबीर वचन

छंद—जब देखि जीवन कहँ बिकल तब दया पुरूष जनाइया।।
दया निधी सतपुरूष साहिब तबै मोहि बोलाइया।।
कह्यौ मोहि समुझाय बहुविधि जीव जाय चितावहो।।
तुव दरशते जिव होय शीतल जाय तपत बुझावहो।।
सोरठा—आज्ञा लीनी मानि, पुरूष सिखावन शिर धरयो।।
तत्क्षण कीन पयान, शीस नाय सतपुरूषको।।

चौपाई

आयो जहाँ काल जीव सतावै। काल निरंजन जीव नचावै।।
चटक चटक करे जीव तहँ भाई। ठाढ भयो मैं तहँ पुनि जाई।।
मोहि देखि जिव कीन पुकारा। हो साहिब मोहि लेव उबारा।।
तब हम सत्य शब्द गोहरावा। पुरूष शब्द ते जीव तप्त बुझावा।।
सब जीवन मिलि अस्तुति लाई। धन्य पुरूष यह तपन बुझाई।।
यमते छोरि लेहु मोहिं स्वामी। दया करो प्रभु अंतरयामी।।

सत्यकबीर वचन-चौपाई

तब हम कहा जीव समुझाई। जोर करो तो बचन नसाई।।
जब तुम जाय धरो नर देहा। तब तुम करिहो सत्य शब्द सनेहा।।
पुरूष नाम सुमिरन सहिदानी। बीरा सार करो परमानी।।
देह धरे सत शब्द समाई। तब हंसा सतलोकहि जाई।।
देह धरे कीने जहँ आसा। अन्तकाल लीनो तहँ बासा।।
अब तोहि कष्ट भयौ जिव आनी। ताते यहि बिधि बोलो बानी।।
जब तुम देह धरो जग जाई। बिसरे पुरूष काल धरि खाई।।

जीव वचन-चौपाई

बेद को मर्म विप्र नहीं जाना। तातें काल को निराकार बखाना।।
बेद कहैं कर्ता अन्य है भाई। ताका भेद काहु नहीं पाई।।
नेति—नेति बेद पुकारें। पंडित अपना मता प्रचारें।।
कहै जीव सुन पुरूष पुराना। देह धरे बिसरों नहिं ज्ञाना।।
पुरूष जानि सुमिरौं यमराई। वेद पुरान कहैं समुझाई।।
वेद पुरान कहै मत येहा। निराकार से कीजै नेहा।।
सुर नर मुनि तैंतीस क्रोरी। बंधे सबहि निरंजन डोरी।।
ताके मत कीने हम आसा। अब हमें जानि परा यमफांसा।।

ज्ञानी वचन-चौपाई

सुनो जीव यह छल यमकेरा। यह यमफन्दा कीन घनेरा।।
छंद—कला कला अनेक कीनो जीव कारन ठाठ हो।

वेद पुरानो शास्त्र स्मती याते रूँध्यो बाट हो।।
आप तनधरि प्रकट है यम सिफत आपन कीन हो।
नाना रूप धरि जीव बंधन दीन हो।।
सोरठा—कला कला परचण्ड, जीव परे बस कालके।
जन्म जन्म सहै दण्ड, सत्यनाम चीन्हे बिना।।
छन यक जीवनको सुख दैऊ। जिव बँध मेटि पुरूषपहँ गैऊ।।

अथ जीवमुक्तावना हेत सत्य कबीर को संसार में आगमन कथा-चौपाई

यहि विधि काल जक्त धरि खायौ। जिव नहिं कोई मुक्तिपद पायौ।।
तीनों पुर पसरा यमजाला। सकल जीव कहँ कीन बिहाला।।
कालके जाप करतें जीव न छूटे। बहुविधि योग युक्ति में जूटे।।
बिन सत शब्द न जीव उबारा। तब समरथ अस बचन उचारा।।

सत्य पुरूष वचन-चौपाई

कैल सकल जग धरि खाई। एको जीव लोक नहिं आई।
तातै समरथ मोहि फरमाई। साँचे जीव आन मुक्ताई।।
पुरूष वचन कीने तिहि बारा। ज्ञानी बेगि जाहु संसारा।।
प्रथमहि चल्यौ जीव के काजा। पुरूष प्रताप शीस पर छाजा।।
सतयुग सत्य सुकृत मोर नाऊँ। आज्ञा पुरूष जीव बर आऊँ।।
करि परनाम तब पगधारा। पहुँच्यौ आय धर्म दरबारा।।
द्वीप झांझरी नाम बखानी। कैल पुरूष की सो रजधानी।।
पगके देत झांझरी गाजा। कैल पुरूष बैठा तहँ राजा।।
गये झाझरी द्वीप मँजारा। गर्बित काल न बुद्धि विचारा।।
मोकहँ देखि धर्म ढिग आई। महाक्रोध बोले अतुराई।।
योगजीत इहवाँ कस आवो। सो तुम हम से बचन सुनावो।।

योगजीत वचन-चौपाई

तासो कह्यौ सुनो धर्मराई। जीवकाज संसार सिधाई।।
तुम तो कष्ट जिवनको दीना। तबहि पुरूष मोहि आज्ञा कीना।।
जीव चिताय लोक ले आवो। काल कष्टते जीव छोड़ावो।।
ताते मैं संसारहि आवो। देय परवाना जीव लोक पठावो।।

अथ कालपुरूष और सत्यकबीर का युद्धवर्णन-चौपाई

काल क्रोध करि वचन उचारा। भवसागरमें राज हमारा।।
तुम कस जिव मुक्तावन आवा।। मारों तोहि अबहि भलदावा।।
काल अनंत रूप तब धारा। योगजीत कह आनि ललकारा।।
महाभयंकर रूप काल बनावा। गज स्वरूप है सम्मुख धावा।।
सत्तरयुग हम सेवा कीना। पुरूष मोहि भवसागर दीना।।
परमपुरूष सेवा वस भैऊ। राज तिहूँ पुरको मोहिं दैऊ।।
तब तुम मारि निकारा मोही। योगजीत नहिं छोडो तोही।।
अस कहि धाय सुंड फटकारा। दंतसो योगजीत पर मारा।।

योगजीत कैल ही ललकारा। गहि कर सुंड दूर तिहि डारा।।
पुरूष प्रताप सुमिर मन माहीं। मारयो सत्य शब्द से ताहीं।।
ततछन ताहि दष्टि पर हेरा। श्याम लिलार भयौ तिहिकेरा।।
पंख घात जिमि होयै पखेरू। तैसे कैल मही (पथ्वी) पर हेरू।।
जब फटकार कर गहे डाला। भागा काल पैंठा पाताला।।
गयौ पाताल कूर्मके आगे। योगजीत गये पीछे लागे।।
बिनती करे कूर्म से जाई। राखो कूर्म शरन हम आई।।
योगजीत मोहि मारि निकारा। जिव ले जाय पुरूष दरबारा।।
युगन युगन हम सेवा कीना। पुरूष मोहि भवसागर दीना।।
एक पायँ हम ठाढे रहेऊ। तबहि पुरूष सेवा बस भैऊ।।
तीन लोक दीना मोहि विचारी। अब कस मोकहँ मारि निकारी।।
जाय कूर्मकी शरन जो परेऊ। तब ताते दाया उर धरेऊ।।

कूर्म वचन-चौपाई

तबै कूर्म उठि बिनती लाई। को तुम आहु कहाँ ते आई।।
अपनो नाम कहो मोहि स्वामी। पुरूष अंश तुम अंतरयामी।।

योगजीत वचन-चौपाई

तब हम कहा नाम मोर ज्ञानी। योगजीत हम अंश बखानी।।
समरथ बचन ताही में आवा। काल फाँस से जीवन मुक्तावा।।

कूर्म वचन

तबै कूर्म बोले अस बानी। बिनती एक सुनो हो ज्ञानी।।
जो तुम बिनती मानो मोरा। तौ हम तुमसे करें निहोरा।।
ज्ञानी तुम बड़े महाना। बड़े क्षमा करें नादान।।
गलती कैल करी बड़भारी। याको बकसो यह अर्ज हमारी।।
छोटन को उत्पात ही भावै। बड़न की बड़ाई क्षमा करावै।।
कूर्म जबै अस बिनती ठानी। ज्ञानी कैल दोहू मुख मानी।।
फिरके कैल झांझरी आनो। ज्ञानी कैलको बचन बखानो।।

निरंजन वचन

सोरठा–तुमहुँ करो बखशीश, पुरूष जो दीनो राज मोहि।
षोडशमें तुम ईश, ज्ञानी पुरूष एक सम।।

ज्ञानी वचन-चौपाई

ज्ञानी कहै सुनो धर्मराई। जीवनकहँ मैं आन बचाई।।
पुरूष आज्ञाते मैं चलि आवों। भवसागरते जीव मुक्तावों।।
पुरूष अवाज टार यहि बारी। तौ मैं तोकहँ देब निकारी।।

निरंजन वचन-चौपाई

धर्मराय अस बिनती ठानी। मैं सेवक दुतिया न मानी।।
ज्ञानी बिनती एक हमारा। सो न करो मोर होय बिगारा।।
पूरूष मोकहँ दीनो राजू। तुमहू देव होय तब काजू।।

बिनती एक करो हो ताता। दृढ़ करि जान्यौ हमरी बाता।।
सतयुग त्रेता द्वापर माहीं। तीनों युग जिव थोरे जाही।।
चौथा युग जब कलऊ आई। तब तुव शरन जीव बहु जाई।।
जो लेवै नाम तुम्हारा। वह जाए तुम्हरे दरबारा।।
जो कोई नाम हमारा लेवै। रह काल जाल जो हमकूँ सेवै।।
जोर ना करना तारण तरणा। आपन ज्ञान दे मुक्ति करना।।
त्रेतायुग में अंश राम जावै। समन्दर पर सेत बंधावै।।
समन्दर को राम धमकावै। ताका ओवल द्वापर में पावै।।
कृष्ण मोर अंश मंदिर बनवावै। समन्दर वाक तोड़ बगावै।।
समन्दर पर सेतु बादियो दाता। जगन्नाथ मंदिर थापियो ताता।।
ऐसे वचन हरि मोहि दीजे। तब संसार गौन तुम कीजे।।

ज्ञानी वचन-चौपाई

जो तें मांगा दिन्हा तोकूं। यह चाल काल लागत है मोकूं।।
तीनों युग जीव रहें भुलाई। चौथे युग देऊँ चिताई।।
जो जीव नाम मोर लेवैं। जावें लोक तो सिर पग देवैं।।
सबै जीव नाम रस लागैं। घर–घर ज्ञान ध्यान अनुरागैं।।

निरंजन वचन-चौपाई

जाना ज्ञानी कलयुग मंझारा। जीव ना माने कहा तुम्हारा।।
कहा तुमार जीव नहिं मानै। हमरी दिशभै बाद बखानै।।
मैं दृढ़ फंदा रच्यौ बनाई। जामें जीव परा अरूझाई।।
वेद शास्त्र सुमिरन गुन नाना। पुत्र हैं तीन देव परधाना।।
देवल देव पाषान पुजाई। तीरथ व्रत जप तप मन लाई।।
यज्ञ होम अरू नियम अचारा। और अनेक फंद हम डारा।।
जब ज्ञानी जैहो संसारा। जीव न मानै कहा तुमारा।।

ज्ञानी वचन-चौपाई

ज्ञानी कहै सुनो धर्मराई। काटो फंद जीव ले जाई।।
जेतो फंद रची तुम भारी। सत्य शब्द ले सकल बिडारी।।
जिहि जिवको हम शब्द दृढै हैं। फंद तुम्हार सबै मुक्तैहैं।।
अरे काल परपंच पसारा। तीनो युग जीवन दुख डारा।।
बिनती तोरि लीन मैं मानी। मोकहँ ठगे काल अभिमानी।।
चौथा युग जब कलऊ आई। तब हम अपनो अंश पठाई।।
काल फन्द छूटे नर लोई। सकल सृष्टि परवानिक होई।।
घर घर देखो बोध विचारा। सत्य नाम सब ठौर उचारा।।
पांच हजार पांच सौ पांचा। तब यह वचन होयगा सांचा।।
कलियुग बीत जाय जब येता। सब जिव परम पुरूष पद चेता।।

(स्वसमबेद बोध पृष्ठ 171 से वाणी)

दोहा–पांच सहंस अरू पाँच सौ पाँच, जब कलियुग बीत जाय।

महापुरूष फरमान तब, जग तारन को आय।।
हिन्दु तुर्क आदिक सबै, जेते जीव जहान। सत्य नाम की साख गहि, पावैं पद निर्बान।।
यथा सरितगण आपही, मिलैं सिन्धु में धाय। सत्य सुकृत के मध्ये तिमि, सबही पंथ समाय।।
जब लगि पूरण होय नहीं, ठीके को तिथि वार। कपट चातुरी तबहिलों, स्वसमबेद निरधार।।
सबहिं नारि नर शुद्ध तब, जब ठीके का दिन आवन्त। कपट चातुरी छोड़ि के, शरण कबीर गहंत।।
एक अनेक है गयो, पुनि अनेक हों एक। हंस चलै सतलोक सब, सत्यनाम की टेक।।
घर घर बोध विचार हो, दुर्मति दूर बहाय। कलियुग में इक होय सब, बरते सहज सुभाय।।
कहा उग्र कहा छुद्र हो, हरै सबकी भव पीर (पीड़)। सो समान समदृष्टि है, समरथ सत्य कबीर।।

उपरोक्त वाणियों का सारांश है :-

परमेश्वर कबीर जी रूपान्तर करके प्रथम कलयुग में जीवों को सूक्ष्मवेद बोध कराने आए तो पहले तो काल निरंजन ने परमात्मा से झगड़ा किया। कहा कि एक जीव भी नहीं ले जाने दूँगा। परमेश्वर की शक्ति से डरकर कूर्म के पास भाग गया। परमात्मा भी जोगजीत रूप में वहीं पहुँच गए। कूर्म ने बीच-बचाव करके जान बचाई। फिर काल के निज द्वीप (झांझरी द्वीप) में दोनों आ गए। काल निरंजन ने चापलूसी करके प्रतिज्ञा करवाकर तीन युगों (सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग) में कम जीव ले जाने और चौथे युग में जितने चाहो जीव ले जाने की अर्जी की जो परमात्मा ने स्वीकार कर ली। उसके तुरंत बाद अपनी चाल यानि छल-कपट को सार्वजनिक किया तथा कहा कि कलयुग में मैं अपने काल दूत प्रचारक भेजकर अपना अज्ञान प्रचार कर दूँगा। सब मंदिर, तीर्थों पर जाना, मूर्ति पूजा, व्रत रखना तथा देवी-देवताओं की पूजा, श्राद्ध, पितर पूजा, ऊत-भूत की पूजा और जंत्र-मंत्र पाखण्ड का ज्ञान देकर दृढ़ कर दूँगा। जब आप या आपका प्रचारक संत जाएगा, तब कोई जीव आपके ज्ञान को स्वीकार नहीं करेगा। हमारे पक्ष में होकर तुम्हारे साथ वाद-विवाद करेगा और आप एक पंथ कबीर नाम से चलाओगे। मैं 12 (द्वादश) पंथ कबीर नाम से चलाऊँगा और अनेक पंथ चलाऊँगा जो सतलोक की महिमा कहेंगे, परंतु नाम मेरे जाल में रहने वाले दान करेंगे। जिनका जाप करके मेरे लोक में ही रहे जाऐंगे। काल ने त्रेतायुग में समुद्र पर पुल तथा जगन्नाथ के मंदिर को द्वापर में रक्षा करने का वचन भी लिया था।

जब काल ने परमेश्वर कबीर जी से कहा कि मैं तेरे नाम से अनेकों पंथ चलाऊँगा, तुम्हारी बातों को कोई नहीं सुनेगा। तब परमेश्वर कबीर जी ने कहा था कि जब कलयुग 5505 (पाँच हजार पाँच सौ पाँच) वर्ष बीत जाएगा, तब मैं अपना अंश भेजूंगा, वह सर्व सृष्टि को भक्ति की प्रेरणा देकर मेरी भक्ति पर लगाएगा। उस समय मेरा (कबीर जी का) ज्ञान घर-घर में चलेगा। सर्व सृष्टि विकार रहित होकर दीक्षा लेकर कल्याण कराएगी। सत्ययुग जैसा वातावरण होगा, आपसी भाईचारा बनेगा। कोई चोर-लुटेरा, डाकू-शराबी, तम्बाकू सेवन करने वाला, माँस खाने वाला व्यक्ति नहीं होगा। माया (धन) के स्थान पर परमात्मा के धन को जोड़ने की होड़ लगेगी।

नोट :- उपरोक्त कबीर सागर की वाणियों में कुछ वाणियाँ आगे-पीछे लिखी हैं, यथार्थ ज्ञान में अध्याय ''ज्ञान सागर'' के सारांश में अनुराग सागर के पृष्ठ 60-67 तक के सारांश में पृष्ठ 82 से 88 तक पढ़ें।

स्वस्मबेद बोध पृष्ठ 122 से 136 पर :-

चारों युगों में प्रकट होने का ज्ञान है, परंतु आधा गलत लिखा है। यथार्थ ज्ञान इसी पुस्तक के पृष्ठ 473 से 573 तक कबीर चरित्र बोध बोध के सारांश में पढ़ें।

स्मस्मबेद बोध पष्ठ 137 से 145 पर :-

कबीर परमेश्वर जी की लीलाओं का अधूरा तथा कुछ गलत ज्ञान है। यथार्थ ज्ञान पढ़ें कबीर चरित्र बोध में इसी पुस्तक कबीर सागर के पष्ठ 473 से 573 तक।

स्मस्मबेद बोध पष्ठ 146 से 151 पर तीर्थ-व्रत करना मना है। उनसे होने वाला क्षणिक लाभ तथा जीवन व्यर्थ होना बताया है जो पहले अध्यायों में लिखा जा चुका है।

स्मस्मबेद बोध पष्ठ 152 से 153 तक धर्मदास के वंशों का वर्णन है जो कुछ ठीक अधिक गलत है। यथार्थ ज्ञान पढ़ें इसी पुस्तक ''कबीर सागर का सरलार्थ'' के पष्ठ 138 से 152 तक अनुराग सागर के सारांश में।

स्मस्मबेद बोध पष्ठ 153 स्वस्मबेद बोध पर फिर स्पष्ट किया है कि जब 13वीं पीढ़ी आएगी तो वह मुक्तामणी होगा। सर्व सष्टि में कबीर धर्म का प्रचार होगा।

जब तेरही पीढ़ी चलि आवै। मुक्तामणी तबही प्रकटावै।।
धर्म कबीर होये प्रचारा। जहाँ तहाँ सतगुरू सुयश उचारा।।

भावार्थ :- उपरोक्त वाणी में मुक्तामणि को तेरहवां महंत बताया है। वह गलत है। वास्तव में परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि जब तेरहवां अंश मेरा प्रकट होगा, तब पूरे विश्व में मेरे ज्ञान का कबीर धर्म का प्रचार होगा, मेरी महिमा का प्रचार होगा।

विवेचन :- कबीर पंथियों ने कांट-छांट करके यथार्थता को समाप्त कर रखा है। फिर भी सच्चाई कहीं-कहीं से स्पष्ट हो जाती है। स्वस्मबेद बोध पष्ठ 152 पर धर्मदास की बयालीस (42) पीढ़ी वालों के नाम भी लिखे हैं। परंतु उनमें तेरहवां नाम मुक्तामणि नहीं लिखा है। वहाँ पर उदै (उदित) नाम लिखा है। इससे सिद्ध है कि पष्ठ 153 पर लिखा कि तेरी तेरहवीं पीढ़ी में मुक्तामणि आएगा, यह गलत है। पष्ठ 152 पर धर्मदास जी की बयालीस पीढ़ी के नाम लिखे हैं। उनमें बयालीसवीं पीढ़ी वाले का नाम मुक्तामणि लिखा है।

स्मस्मबेद बोध पष्ठ 154 पर सामान्य ज्ञान है।

स्मस्मबेद बोध पष्ठ 155 पर 12 पंथों का नाम है।

स्वस्मबेद बोध पष्ठ 156-157 पर सामान्य ज्ञान है।

स्मस्मबेद बोध पष्ठ 158 से 159 पर श्री नानक देव जी को शरण में लेने का प्रकरण है।

''श्री नानक देव जी को प्रभु मिले''

अथ नानक शाह जी की कथा-चौपाई

नानकशाह कीन तप भारी। सब विधि भये ज्ञान अधिकारी।।
भक्ति भाव ताको लखियाया पाया। तापर सतगुरू कीनो दाया।।
जिंदा रूप धरयो हम जाई। जिन्दा रूप पंजाब देश चलि आई।।
अनहद बानी कियौ पुकारा। सुनिकै नानक दरश निहारा।।
सुनिके अमर लोक की बानी। जानि परा निज समरथ ज्ञानी।।

नानक वचन

आवा पुरूष महागुरू ज्ञानी। अमरलोकको सुनी न बानी।।
अर्ज सुनो प्रभु जिंदा स्वामी। कहँ अमरलोक रहा निजु धामी।।
काहु न कही अमर निजुबानी। धन्य कबीर परमगुरू ज्ञानी।।

कोई न पावै तुमरो भेदा। खोज थके ब्रह्मा चहुँ वेदा।।

जिन्दा वचन

जब नानक बहुतै तप कीना। निरंकार बहुते दिन चीन्हा।।
निरंकारते पुरूष निनारा। अजर द्वीप ताकी टकसारा।।
पुरूष बिछोह भयौ तुव जबते। काल कठिन मग रोंक्यौ तबते।।
इत तुव सरिस भक्त नहिं होई। क्योंकि परपुरूष न भेटेंउ कोई।।
जबते हमते बिछुरे भाई। साठि हजार भल जन्म तुम पाई।।
धरि धरि जन्म भक्ति भलकीना। फिर काल चक्र निरंजन दीना।।
गहु मम शब्द तो उतरो पारा। बिन सतशब्द लहै यम द्वारा।।
तुम बड़ भक्त भवसागर आवा। और जीव को कौन चलावा।।
निरंकार सब संष्टि भुलावा। तुम करि भक्ति लौटि क्यों आवा।।

नानक वचन

धन्य पुरूष तुम यह पद भाखी। यह पद अमर गुप्त कह राखी।।
जबलों हम तुमको नहिं पावा। अगम अपार भर्म फैलावा।।
कहो गोसाँई हमते ज्ञाना। परमपुरूष हम तुमको जाना।।
धनि जिंदा प्रभु पुरूष पुराना। बिरले जन तुमको पहिचाना।।

जिन्दा वचन

भये दयाल पुरूष गुरू ज्ञानी। गहो पान परवाना बानी।।
भली भई तुम हमको पावा। सकलो पंथ काल को धावा।।
तुम इतने अब भये निनारा। फेरि जन्म ना होय तुम्हारा।।
भली सुरति तुम हमको चीन्हा। अमरमंत्र हम तुमको दीन्हा।।
स्वसमवेद हम कहि निज बानी। परमपुरूष गति तुम्हैं बखानी।।

नानक वचन

धन्य पुरूष ज्ञानी करतारा। जीवकाज प्रकटे संसारा।।
धनि करता तुम बंदी छोरा। ज्ञान तुम्हार महा बल जोरा।।
दिया नाम दान गुरू किया उबारा। नानक अमरलोक पग धारा।।

इति

चौपाई

यहि विधि नानक गुरू पद गहेऊ। शिष शाखा तेहि जग में रहेऊ।।
गुरूपद तजि बहु पंथ चलाये। अन्य देवकी सेव गहाये।।
परमपुरूष पद नहिं पहिचाना। भांति अनेक बनायो बाना।।
अजहूँ गुरू की तीन निशानी। गहै कछुक गुरू की निज बानी।।
द्वितिये सत्यनाम की साका। तंतिये देखा श्वेत पताका।।
खत्री कुल नानक तन धारी। ताको सुयश गाव संसारी।।

इति

पंष्ठ 160 से केवल ''अथ कबीर आचार वर्णन चौपाई'' :-

सत्यनाम की सेवा धारा। सुमिरण ध्यान नाम निरधारा।।

सतगुरू वर्णन प्रीति सुहाये। मूरति को नहिं शीस नवाये।।
तीरथ व्रत मूरति भ्रमजाला। सत्य भक्ति गहिये सत चाला।।
निरगुण सरगुण को तजि दीजै। सत्य पुरूष की भक्ति गहीजै।।
संत गुरू की सेवा धारे। तन मन धन अर्पण करि डारे।।
कोटिन तीर्थ गुरू के चरना। संशय शोक दोष सब हरना।।
दुखी दीन देखत दुख लागा। परमारथ पथ तन धन त्यागा।।
गंही साधु दोउ एक समाना। परमदयाल दोहू को बाना।।
मद्य मांस भष जग में जोई। महा मलीन जानिये सोई।।
परम दया सब जिव पर पालौ। अधो दृष्टि मारग में चालौ।।
हिंसा कर्म जेते जगमांही। ताके कबहूँ निकट न जाहीं।।
सब जीवन की कर रखवाली। जीव घात कहुँ बात न चाली।।
वर्षा ऋतु जब जिव अधिकारा। तब नहिं कबहुं पंथ पग धारा।।

अगम निगम बोध के पृष्ठ 44 पर नानक जी का शब्द है :-''वाह–वाह कबीर गुरू पूरा है''

शब्द

वाह–वाह कबीर गुरू पूरा है।(टेक)
पूरे गुरू की मैं बली जाऊँ जाका सकल जहूरा है।
अधर दुलीचे परे गुरूवन के, शिव ब्रह्मा जहाँ शूरा है।
श्वेत ध्वजा फरकत गुरूवन की, बाजत अनहद तूरा है।
पूर्ण कबीर सकल घट दरशै, हरदम हाल हजूरा है।
नाम कबीर जपै बड़भागी, नानक चरण को धूरा है।

''नानक जी का संक्षिप्त यथार्थ परिचय''

आदरणीय श्री नानक साहेब जी प्रभु कबीर(धाणक) जुलाहा के साक्षी - श्री नानक देव का जन्म विक्रमी संवत् 1526 (सन् 1469) कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को हिन्दू परिवार में श्री कालु राम मेहत्ता (खत्री) के घर माता श्रीमती तप्ता देवी की पवित्र कोख (गर्भ) से पश्चिमी पाकिस्तान के जिला लाहौर के तलवंडी नामक गाँव में हुआ। इन्होंने फारसी, पंजाबी, संस्कृत भाषा पढ़ी हुई थी। श्रीमद् भगवत गीता जी को श्री बृजलाल पांडे से पढ़ा करते थे। श्री नानक देव जी के श्री चन्द तथा लखमी चन्द दो लड़के थे।

श्री नानक जी अपनी बहन नानकी की सुसराल शहर सुल्तान पुर में अपने बहनोई श्री जयराम जी की कृपा से सुल्तान पुर के नवाब के यहाँ मोदी खाने की नौकरी किया करते थे। प्रभु में असीम प्रेम था क्योंकि यह पुण्यात्मा युगों-युगों से पवित्र भक्ति ब्रह्म भगवान(काल) की करते हुए आ रहे थे। सत्ययुग में यही नानक जी राजा अम्ब्रीष थे तथा ब्रह्म भक्ति विष्णु जी को इष्ट मानकर किया करते थे। दुर्वासा जैसे महान तपस्वी भी इनके दरबार में हार मानकर क्षमा याचना करके गए थे।

त्रेता युग में श्री नानक जी की आत्मा राजा जनक विदेही बने। जो सीता जी के पिता कहलाए। उस समय सुखदेव ऋषि जो महर्षि वेदव्यास के पुत्र थे जो अपनी सिद्धि से आकाश में उड़ जाते थे। परन्तु गुरु से उपदेश नहीं ले रखा था। जब सुखदेव विष्णुलोक के स्वर्ग में गए तो गुरु न होने के कारण वापिस आना पड़ा। विष्णु जी के आदेश से राजा जनक को गुरु बनाया तब स्वर्ग में स्थान

प्राप्त हुआ। फिर कलियुग में यही राजा जनक की आत्मा एक हिन्दु परिवार में श्री कालुराम महत्ता (खत्री) के घर उत्पन्न हुए तथा श्री नानक नाम रखा गया।

''नानक जी तथा परमेश्वर कबीर जी की ज्ञान चर्चा''

बाबा नानक देव जी प्रातःकाल प्रतिदिन सुल्तानपुर के पास बह रही बेई दरिया में स्नान करने जाया करते थे तथा घण्टों प्रभु चिन्तन में बैठे रहते थे।

एक दिन एक जिन्दा फकीर बेई दरिया पर मिले तथा नानक जी से कहा कि आप बहुत अच्छे प्रभु भक्त नजर आते हो। कप्या मुझे भी भक्ति मार्ग बताने की कपा करें। मैं बहुत भटक लिया हूँ। मेरा संशय समाप्त नहीं हो पाया है।

श्री नानक जी ने पूछा कि आप कहाँ से आए हो? आपका क्या नाम है? क्या आपने कोई गुरु धारण किया है?

तब जिन्दा फकीर का रूप धारण किए कबीर जी ने कहा मेरा नाम कबीर है, बनारस (काशी) से आया हूँ। जुलाहे का काम करता हूँ। मैंने पंडित रामानन्द स्वामी जी से उपदेश ले रखा है।

श्री नानक जी ने बन्दी छोड़ कबीर जी को एक जिज्ञासु जानकर भक्ति मार्ग बताना प्रारम्भ किया :-

श्री नानक जी ने कहा हे जिन्दा! गीता में लिखा है कि एक 'ओ३म' मंत्र का जाप करो। सतगुण श्री विष्णु जी (जो श्री कष्ण रूप में अवतरित हुए थे) ही पूर्ण परमात्मा है। स्वर्ग प्राप्ति का एक मात्र साधारण-मार्ग है। गुरु के बिना मोक्ष नहीं, निराकार ब्रह्म की एक 'ओम् 'मंत्र की साधना से स्वर्ग प्राप्ति होती है।

जिन्दा रूप में कबीर परमेश्वर ने कहा गुरु किसे बनाऊँ? कोई पूरा गुरु मिल ही नहीं रहा जो संशय समाप्त करके मन को भक्ति में लगा सके।

स्वामी रामानन्द जी मेरे गुरु हैं परन्तु उनसे मेरा संशय निवारण नहीं हो पाया है(यहाँ पर कबीर परमेश्वर अपने आप को छुपा कर लीला करते हुए कह रहे हैं तथा साथ में यह उद्देश्य है कि इस प्रकार श्री नानक जी को समझाया जा सकता है।)।

श्री नानक जी ने कहा मुझे गुरु बनाओ, आपका कल्याण निश्चित है।

जिन्दा महात्मा के रूप में कबीर परमेश्वर ने कहा कि मैं आपको गुरु धारण करता हूँ, परन्तु मेरे कुछ प्रश्न हैं, उनका आपसे समाधान चाहूँगा। श्री नानक जी बोले - पूछो।

जिन्दा महात्मा के रूप में कबीर परमेश्वर ने कहा हे गुरु नानक जी! आपने बताया कि तीन लोक के प्रभु (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) है। त्रिगुण माया सष्टि, स्थिति तथा संहार करती है। श्री कष्ण जी ही श्री विष्णु रूप में स्वयं आए थे, जो सर्वेश्वर, अविनाशी, सर्व लोकों के धारण व पोषण कर्ता हैं। यह सर्व के पूज्य हैं तथा सष्टि रचनहार भी यही हैं। इनसे ऊपर कोई प्रभु नहीं है। इनके माता-पिता नहीं है, ये तो अजन्मा हैं। श्री कष्ण ने ही गीता ज्ञान दिया है(यह ज्ञान श्री नानक जी ने श्री बजलाल पाण्डे से सुना था, जो उन्हें गीता जी पढ़ाया करते थे)। परन्तु गीता अध्याय 2 श्लोक 12, अध्याय 4 श्लोक 5 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि अर्जुन! मैं तथा तू पहले भी थे तथा यह सर्व सैनिक भी थे, हम सब आगे भी उत्पन्न होंगे। तेरे तथा मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं, तू नहीं जानता मैं जानता हूँ। इससे तो सिद्ध है कि गीता ज्ञान दाता भी नाशवान है, अविनाशी नहीं है। गीता अध्याय 7 श्लोक 15 में गीता ज्ञान दाता प्रभु कह रहा है कि जो त्रिगुण

माया (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिवजी) के द्वारा मिलने वाले क्षणिक लाभ के कारण इन्हीं की पूजा करके अपना कल्याण मानते हैं, इनसे ऊपर किसी शक्ति को नहीं मानते अर्थात् जिनकी बुद्धि इन्हीं तीन प्रभुओं(त्रिगुणमयी माया) तक सीमित है वे राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए, मनुष्यों में नीच, दुष्कर्म करने वाले, मूर्ख मुझे भी नहीं पूजते। इससे तो सिद्ध हुआ कि श्री विष्णु (सतगुण) आदि पूजा के योग्य नहीं है तथा अपनी साधना के विषय में गीता ज्ञान दाता प्रभु ने गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में कहा है कि मेरी (गति) पूजा भी (अनुत्तमाम्) अति घटिया है। इसलिए गीता अध्याय 15 श्लोक 4, अध्याय 18 श्लोक 62 में कहा है कि उस परमेश्वर की शरण में जा जिसकी कपा से ही तू परम शान्ति तथा सनातन परम धाम सतलोक चला जाएगा। जहाँ जाने के पश्चात् साधक का जन्म-मत्यु का चक्र सदा के लिए छूट जाएगा। वह साधक फिर लौट कर संसार में नहीं आता अर्थात् पूर्ण मोक्ष प्राप्त करता है। उस परमात्मा के विषय में गीता ज्ञान दाता प्रभु ने कहा है कि मैं नहीं जानता। उसके विषय में पूर्ण (तत्त्व) ज्ञान तत्त्वदर्शी संतों से पूछो। जैसे वे कहें वैसे साधना करो। प्रमाण गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में। श्री नानक जी से परमेश्वर कबीर साहेब जी ने कहा कि क्या वह तत्त्वदर्शी संत आपको मिला है जो पूर्ण परमात्मा की भक्ति विधि बताएगा ? श्री नानक जी ने कहा नहीं मिला। परमेश्वर कबीर जी ने कहा जो भक्ति आप कर रहे हो यह तो पूर्ण मोक्ष दायक नहीं है। उस पूर्ण परमात्मा के विषय में पूर्ण ज्ञान रखने वाला मैं ही वह तत्त्वदर्शी संत हूँ। बनारस (काशी) में धाणक (जुलाहे) का कार्य करता हूँ। गीता ज्ञान दाता प्रभु स्वयं को नाशवान कह रहा है, जब स्वर्ग तथा महास्वर्ग (ब्रह्मलोक) भी नहीं रहेगा तो साधक का क्या होगा ? जैसे आप ने बताया कि श्रीमद् भगवत गीता में लिखा है कि ओ३म मंत्र के जाप से स्वर्ग प्राप्ति हो जाती है। वहाँ स्वर्ग में साधक जन कितने दिन रह सकते हैं?

श्री नानक जी ने उत्तर दिया जितना भजन तथा दान के आधार पर उनका स्वर्ग का समय निर्धारित होगा उतने दिन स्वर्ग में आनन्द से रह सकते हैं।

जिन्दा फकीर ने प्रश्न किया कि तत् पश्चात् कहाँ जाएँगे?

उत्तर (नानक जी का) - फिर इस मत लोक में आना होता है तथा कर्माधार पर अन्य योनियाँ भी भोगनी पड़ती हैं।

प्रश्न (जिन्दा रूप में कबीर साहेब का) रू- क्या जन्म-मरण मिट सकता है?

उत्तर (श्री नानक जी का) - नहीं, गीता में कहा है अर्जुन तेरे मेरे अनेक जन्म हो चुके हैं और आगे भी होंगे अर्थात् जन्म-मरण बना रहेगा(गीता अध्याय 2 श्लोक 12 तथा अध्याय 4 श्लोक 5)। शुभ कर्म ज्यादा करने से स्वर्ग का समय अधिक हो जाता है।

प्रश्न {जिन्दा फकीर (कबीर जी) का} - गीता अध्याय न. 8 के श्लोक न. 16 में लिखा है कि ब्रह्मलोक से लेकर सर्वलोक नाशवान हैं। उस समय कहाँ रहोगे? जब न पथ्वी रहेगी, न श्री विष्णु रहेगा, न विष्णुलोक, न स्वर्ग लोक तथा पूरे ब्रह्मण्ड का विनाश होगा। इसलिए गीता ज्ञान दाता प्रभु कह रहा है कि किसी तत्त्वदर्शी संत की खोज कर, फिर जैसे उस पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति की विधि वह संत बताए उसके अनुसार साधना कर। उसके पश्चात् उस परम पद परमेश्वर की खोज करनी चाहिए, जहाँ पर जाने के पश्चात् साधक का फिर जन्म-मत्यु कभी नहीं होता अर्थात् फिर लौट कर संसार में नहीं आते। जिस परमेश्वर से सर्व ब्रह्मण्डों की उत्पत्ति हुई है। मैं (गीता ज्ञान दाता) भी उसी पूर्ण परमात्मा की शरण में हूँ (गीता अध्याय 4 श्लोक 34, अध्याय 15 श्लोक 4) इसलिए कहा है कि अर्जुन सर्व भाव से उस परमेश्वर की शरण में जा जिसकी कपा से ही तू परम

शान्ति तथा सतलोक स्थान अर्थात् सच्चखण्ड में चला जाएगा(गीता अध्याय 18 श्लोक 62)। उस पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति का ओम-तत्-सत् केवल यही मंत्र है(गीता अध्याय 17 श्लोक 23)।

उत्तर नानक जी का - इसके बारे में मुझे ज्ञान नहीं।

जिन्दा फकीर (कबीर साहेब) ने श्री नानक जी को बताया कि यह सर्व काल की कला है। गीता अध्याय न. 11 के श्लोक न. 32 में स्वयं गीता ज्ञान दाता ब्रह्म ने कहा है कि मैं काल हूँ और सभी को खाने के लिए आया हूँ। वही निरंकार कहलाता है। उसी काल का ओंकार (ओम्) मंत्र है।

गीता अध्याय न. 11 के श्लोक न. 21 में अर्जुन ने कहा है कि आप तो ऋषियों को भी खा रहे हो, देवताओं को भी खा रहे हो जो आपका ही स्मरण स्तुति वेद विधि अनुसार कर रहे हैं। इस प्रकार काल वश सर्व साधक साधना करके उसी के मुख में प्रवेश करते रहते हैं।

आपने इसी काल (ब्रह्म) की साधना करते करते असंख्यों युग हो गए। साठ हजार जन्म तो आपके महर्षि तथा महान भक्त रूप में हो चुके हैं। फिर भी काल के लोक में जन्म-मत्यु के चक्र में ही रहे हो।

सर्व सष्टि रचना सुनाई तथा श्री ब्रह्मा (रजगुण), श्री विष्णु (सतगुण) तथा श्री शिव (तमगुण) की स्थिति बताई। श्री देवी महापुराण तीसरा स्कंद (पष्ठ 123, गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, मोटा टाईप) में स्वयं विष्णु जी ने कहा है कि मैं (विष्णु) तथा ब्रह्मा व शिव तो नाशवान हैं, अविनाशी नहीं हैं। हमारा तो आविर्भाव (जन्म) तथा तिरोभाव (मत्यु) होता है। आप (दुर्गा/अष्टांगी) हमारी माता हो। दुर्गा ने बताया कि ब्रह्म (ज्योति निरंजन) आपका पिता है। श्री शंकर जी ने स्वीकार किया कि मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर भी आपका पुत्र हूँ तथा ब्रह्मा भी आपका बेटा है। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे नानक जी! आप इन्हें अविनाशी, अजन्मा, इनके कोई माता-पिता नहीं हैं आदि उपमा दे रहे हो। यह दोष आप का नहीं है। यह दोष दोनों धर्मों(हिन्दू तथा मुसलमान) के ज्ञानहीन गुरुओं का है जो अपने-अपने धर्म के सद्ग्रन्थों को ठीक से न समझ कर अपनी-अपनी अटकल से दंत कथा (लोकवेद) सुना कर वास्तविक भक्ति मार्ग के विपरीत शास्त्र विधि रहित मनमाना आचरण (पूजा) का ज्ञान दे रहे हैं। दोनों ही पवित्र धर्मों के पवित्र शास्त्र एक पूर्ण प्रभु का(मेरा) ही ज्ञान करा रहे हैं। कुर्आन शरीफ में सूरत फुर्कानि 25 आयत 52 से 59 में भी मुझ कबीर का वर्णन है।

श्री नानक जी ने कहा कि यह तो आज तक किसी ने नहीं बताया। इसलिए मन स्वीकार नहीं कर रहा है। तब जिन्दा फकीर जी (कबीर साहेब जी) श्री नानक जी की अरूचि देखकर चले गए। उपस्थित व्यक्तियों ने श्री नानक जी से पूछा यह भक्त कौन था जो आप को गुरुदेव कह रहा था? नानक जी ने कहा यह काशी में रहता है, नीच जाति का जुलाहा(धाणक) कबीर था। बेतुकी बातें कर रहा था। कह रहा था कि कष्ण जी तो काल के चक्र में है तथा मुझे भी कह रहा था कि आपकी साधना ठीक नहीं है। तब मैंने बताना शुरू किया तब हार मान कर चला गया। {इस वार्ता से सिक्खों ने श्री नानक जी को परमेश्वर कबीर साहेब जी का गुरु मान लिया।}

श्री नानक जी प्रथम वार्ता पूज्य कबीर परमेश्वर के साथ करने के पश्चात् यह तो जान गए थे कि मेरा ज्ञान पूर्ण नहीं है तथा गीता जी का ज्ञान भी उससे कुछ भिन्न ही है जो आज तक हमें बताया गया था। इसलिए हृदय से प्रतिदिन प्रार्थना करते थे कि वही संत एक बार फिर आए। मैं उससे कोई वाद-विवाद नहीं करूंगा, कुछ प्रश्नों का उत्तर अवश्य चाहूँगा। परमेश्वर कबीर जी तो अन्तर्यामी हैं तथा आत्मा के आधार व आत्मा के वास्तविक पिता हैं, अपनी प्यारी आत्माओं को

ढूंढते रहते हैं। कुछ समय के उपरान्त जिन्दा फकीर रूप में कबीर जी ने उसी बेई नदी के किनारे पहुँच कर श्री नानक जी को राम-राम कहा। उस समय श्री नानक जी कपड़े उतार कर स्नान के लिए तैयार थे। जिन्दा महात्मा केवल श्री नानक जी को दिखाई दे रहे थे अन्य को नहीं। श्री नानक जी से वार्ता करने लगे। कबीर जी ने कहा कि आप मेरी बात पर विश्वास करो। एक पूर्ण परमात्मा है तथा उसका सतलोक स्थान है जहाँ की भक्ति करने से जीव सदा के लिए जन्म-मरण से छूट सकता है। उस स्थान तथा उस परमात्मा की प्राप्ति की साधना का केवल मुझे ही पता है अन्य को नहीं तथा गीता अध्याय न. 18 के श्लोक न. 62, अध्याय 15 श्लोक 4 में भी उस परमात्मा तथा स्थान के विषय में वर्णन है।

पूर्ण परमात्मा गुप्त है उसकी शरण में जाने से उसी की कपा से तू (शाश्वतम्) अविनाशी अर्थात् सत्य (स्थानम्) लोक को प्राप्त होगा। गीता ज्ञान दाता प्रभु भी कह रहा है कि मैं भी उसी आदि पुरुष परमेश्वर नारायण की शरण में हूँ। श्री नानक जी ने कहा कि मैं आपकी एक परीक्षा लेना चाहता हूँ। मैं इस दरिया में छिपुंगा और आप मुझे ढूंढ़ना। यदि आप मुझे ढूंढ दोगे तो मैं आपकी बात पर विश्वास कर लूँगा। यह कह कर श्री नानक जी ने बेई नदी में डुबकी लगाई तथा मछली का रूप धारण कर लिया। जिन्दा फकीर (कबीर पूर्ण परमेश्वर) ने उस मछली को पकड़ कर जिधर से पानी आ रहा था उस ओर लगभग तीन किलो मीटर दूर ले गए तथा श्री नानक जी बना दिया।

(प्रमाण श्री गुरु ग्रन्थ साहेब सीरी रागु महला पहला, घर 4 पष्ठ 25) -

तू दरीया दाना बीना, मैं मछली कैसे अन्त लहा।
जह–जह देखा तह–तह तू है, तुझसे निकस फूट मरा।
न जाना मेऊ न जाना जाली। जा दुःख लागै ता तुझै समाली।।1 ।रहाऊ।।

नानक जी ने कहा कि मैं मछली बन गया था, आपने कैसे ढूंढ लिया? हे परमेश्वर! आपतो दरिया के अंदर सूक्ष्म से भी सूक्ष्म वस्तु को जानने वाले हो। मुझे तो जाल डालने वाले(जाली) ने भी नहीं जाना तथा गोताखोर(मेऊ) ने भी नहीं जाना अर्थात् नहीं जान सका। जबसे आप के सतलोक से निकल कर अर्थात् आप से बिछुड़ कर आए हैं तब से कष्ट पर कष्ट उठा रहा हूँ। जब दुःख आता है तो आपको ही याद करता हूँ, मेरे कष्टों का निवारण आप ही करते हो? (उपरोक्त वार्ता बाद में काशी में प्रभु के दर्शन करके हुई थी)।

तब नानक जी ने कहा कि अब मैं आपकी सर्व वार्ता सुनने को तैयार हूँ।

कबीर परमेश्वर ने वही सष्टि रचना पुनः सुनाई तथा कहा कि मैं पूर्ण परमात्मा हूँ मेरा स्थान सच्चखण्ड (सत्यलोक) है। आप मेरी आत्मा हो। काल (ब्रह्म) आप सर्व आत्माओं को भ्रमित ज्ञान से विचलित करता है तथा नाना प्रकार से प्राणियों के शरीर में बहुत परेशान कर रहा है। मैं आपको सच्चानाम (सत्यनाम/वास्तविक मंत्र जाप) दूँगा जो किसी शास्त्र में नहीं है। जिसे काल (ब्रह्म) ने गुप्त कर रखा है।

श्री नानक जी ने कहा कि मैं अपनी आँखों अकाल पुरुष तथा सच्चखण्ड को देखूँ तब आपकी बात को सत्य मानूँ। तब कबीर साहेब जी श्री नानक जी की पुण्यात्मा को सत्यलोक ले गए। सचखण्ड में श्री नानक जी ने देखा कि एक असीम तेजोमय मानव सदश शरीर युक्त प्रभु तख्त पर बैठे थे। अपने ही दूसरे स्वरूप पर कबीर साहेब जिन्दा महात्मा के रूप में चंवर करने लगे। तब श्री नानक जी ने सोचा कि अकाल मूर्त तो यह रब है जो गद्दी पर बैठा है। कबीर तो यहाँ का

सेवक होगा। उसी समय जिन्दा रूप में परमेश्वर कबीर साहेब उस गद्दी पर विराजमान हो गए तथा जो तेजोमय शरीर युक्त प्रभु का दूसरा रूप था वह खड़ा होकर तख्त पर बैठे जिन्दा वाले रूप पर चंवर करने लगा। फिर वह तेजोमय रूप नीचे से गये जिन्दा (कबीर) रूप में समा गया तथा गद्दी पर अकेले कबीर परमेश्वर जिन्दा रूप में बैठे थे और चंवर अपने आप ढुरने लगा।

तब नानक जी ने कहा कि वाहे गुरु, सत्यनाम से प्राप्ति तेरी। इस प्रक्रिया में तीन दिन लग गए। नानक जी की आत्मा को साहेब कबीर जी ने वापस शरीर में प्रवेश कर दिया। तीसरे दिन श्री नानक जी होश में आऐ।

उधर श्री जयराम जी ने (जो श्री नानक जी का बहनोई था) श्री नानक जी को दरिया में डूबा जान कर दूर तक गोताखोरों से तथा जाल डलवा कर खोज करवाई। परन्तु कोशिश निष्फल रही और मान लिया कि श्री नानक जी दरिया के अथाह वेग में बह कर मिट्टी के नीचे दब गए। तीसरे दिन जब नानक जी उसी नदी के किनारे सुबह-सुबह दिखाई दिए तो बहुत व्यक्ति एकत्रित हो गए, बहन नानकी तथा बहनोई श्री जयराम भी दौड़े गए, खुशी का ठिकाना नहीं रहा तथा घर ले आए।

श्री नानक जी अपनी नौकरी पर चले गए। मोदी खाने का दरवाजा खोल दिया तथा कहा जिसको जितना चाहिए, ले जाओ। पूरा खजाना लुटा कर शमशान घाट पर बैठ गए। जब नवाब को पता चला कि श्री नानक खजाना समाप्त करके शमशान घाट पर बैठा है। तब नवाब ने श्री जयराम की उपस्थिति में खजाने का हिसाब करवाया तो सात सौ साठ रूपये अधिक मिले। नवाब ने क्षमा याचना की तथा कहा कि नानक जी आप सात सौ साठ रूपये जो आपके सरकार की ओर अधिक हैं ले लो तथा फिर नौकरी पर आ जाओ। तब श्री नानक जी ने कहा कि अब सच्ची सरकार की नौकरी करूँगा। उस पूर्ण परमात्मा के आदेशानुसार अपना जीवन सफल करूँगा। वह पूर्ण परमात्मा है जो मुझे बेई नदी पर मिला था।

नवाब ने पूछा वह पूर्ण परमात्मा कहाँ रहता है तथा यह आदेश आपको कब हुआ?

श्री नानक जी ने कहा वह सच्चखण्ड में रहता है। बेई नदी के किनारे से मुझे स्वयं आकर वही पूर्ण परमात्मा सचखण्ड (सत्यलोक) लेकर गया था। वह इस पथ्वी पर भी आकार में आया हुआ है। उसकी खोज करके अपना आत्म कल्याण करवाऊँगा। उस दिन के बाद श्री नानक जी घर त्याग कर पूर्ण परमात्मा की खोज पथ्वी पर करने के लिए चल पड़े।

श्री नानक जी सतनाम तथा वाहिगुरु की रटना लगाते हुए बनारस पहुँचे। इसीलिए अब पवित्र सिक्ख समाज के श्रद्धालु केवल सत्यनाम श्री वाहिगुरु कहते रहते हैं। सत्यनाम क्या है तथा वाहिगुरु कौन है यह मालूम नहीं है। जबकि सत्यनाम(सच्चानाम) गुरु ग्रन्थ साहेब में लिखा है, जो अन्य मंत्र है।

जैसा कि कबीर साहेब ने बताया था कि मैं बनारस (काशी) में रहता हूँ। धाणक (जुलाहे) का कार्य करता हूँ। मेरे गुरु जी काशी में सर्व प्रसिद्ध पंडित रामानन्द जी हैं। इस बात को आधार रखकर श्री नानक जी ने संसार से उदास होकर पहली उदासी यात्रा बनारस (काशी) के लिए प्रारम्भ की (प्रमाण के लिए देखें ''जीवन दस गुरु साहिब'' (लेखक :- सोढ़ी तेजा सिंह जी, प्रकाशक=चतर सिंघ, जीवन सिंघ) पष्ठ न. 50 पर।)।

परमेश्वर कबीर साहेब जी स्वामी रामानन्द जी के आश्रम में प्रतिदिन जाया करते थे। जिस दिन श्री नानक जी ने काशी पहुँचना था उससे पहले दिन कबीर साहेब ने अपने पूज्य गुरुदेव रामानन्द जी से कहा कि स्वामी जी कल मैं आश्रम में नहीं आ पाऊँगा। क्योंकि कपड़ा बुनने का

कार्य अधिक है। कल सारा दिन लगा कर कार्य निपटा कर फिर आपके दर्शन करने आऊँगा।

काशी(बनारस) में जाकर श्री नानक जी ने पूछा कोई रामानन्द जी महाराज है। सबने कहा वे आज के दिन सर्व ज्ञान सम्पन्न ऋषि हैं। उनका आश्रम पंचगंगा घाट के पास है। श्री नानक जी ने श्री रामानन्द जी से वार्ता की तथा सच्चखण्ड का वर्णन शुरू किया। तब श्री रामानन्द स्वामी ने कहा यह पहले मुझे किसी शास्त्र में नहीं मिला परन्तु अब मैं आँखों देख चुका हूँ, क्योंकि वही परमेश्वर स्वयं कबीर नाम से आया हुआ है तथा मर्यादा बनाए रखने के लिए मुझे गुरु कहता है परन्तु मेरे लिए प्राण प्रिय प्रभु है। पूर्ण विवरण चाहिए तो मेरे व्यवहारिक शिष्य परन्तु वास्तविक गुरु कबीर से पूछो, वही आपकी शंका का निवारण कर सकता है।

श्री नानक जी ने पूछा कि कहाँ हैं (परमेश्वर स्वरूप) कबीर साहेब जी ? मुझे शीघ्र मिलवा दो। तब श्री रामानन्द जी ने एक सेवक को श्री नानक जी के साथ कबीर साहेब जी की झोपड़ी पर भेजा। उस सेवक से भी सच्चखण्ड के विषय में वार्ता करते हुए श्री नानक जी चले तो उस कबीर साहेब के सेवक ने भी सच्चखण्ड व सष्टि रचना जो परमेश्वर कबीर साहेब जी से सुन रखी थी सुनाई। तब श्री नानक जी ने आश्चर्य हुआ कि मेरे से तो कबीर साहेब के चाकर (सेवक) भी अधिक ज्ञान रखते हैं। इसीलिए गुरुग्रन्थ साहेब पष्ठ 721 पर अपनी अमतवाणी महला 1 में श्री नानक जी ने कहा है कि -

"हक्का कबीर करीम तू, बेएब परवरदीगार। नानक बुगोयद जनु तुरा, तेरे चाकरां पाखाक"

जिसका भावार्थ है कि हे कबीर परमेश्वर जी मैं नानक कह रहा हूँ कि मेरा उद्धार हो गया, मैं तो आपके सेवकों के चरणों की धूर तुल्य हूँ।

गुरू ग्रन्थ साहेब के पष्ठ 731 पर कहा है कि :-

नीच जाति प्रदेशी मेरा, खिन आवै तिल जावै। जाकि संगत नानक रहेंदा, क्यूंकर मौंडा पावै।।

जब नानक जी ने देखा यह धाणक (जुलाहा) वही परमेश्वर है जिसके दर्शन सत्यलोक (सच्चखण्ड) में किए तथा बेई नदी पर हुए थे। वहाँ यह जिन्दा महात्मा के वेश में थे यहाँ धाणक (जुलाहे) के वेश में हैं। यह स्थान अनुसार अपना वेश बदल लेते हैं परन्तु स्वरूप (चेहरा) तो वही है। वही मोहिनी सूरत जो सच्चखण्ड में भी विराजमान था। वही करतार आज धाणक रूप में बैठा है। श्री नानक जी की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। आँखों में आँसू भर गए।

तब श्री नानक जी अपने सच्चे स्वामी अकाल मूर्ति को पाकर चरणों में गिरकर सत्यनाम (सच्चानाम) प्राप्त किया। तब शान्ति पाई तथा अपने प्रभु की महिमा देश विदेश में गाई।

पहले श्री नानकदेव जी एक ओंकार(ओम) मन्त्र का जाप करते थे तथा उसी को सत मान कर कहा करते थे एक ओंकार। उन्हें बेई नदी पर कबीर साहेब ने दर्शन दे कर सतलोक(सच्चखण्ड) दिखाया तथा अपने सतपुरुष रूप को दिखाया। जब सतनाम का जाप दिया तब नानक जी की काल लोक से मुक्ति हुई। नानक जी ने कहा कि :

इसी का प्रमाण गुरु ग्रन्थ साहिब के राग ''सिरी'' महला 1 पष्ठ नं. 24 पर शब्द नं. 29

शब्द – एक सुआन दुई सुआनी नाल, भलके भौंकही सदा बिआल
कुड़ छुरा मुठा मुरदार, धाणक रूप रहा करतार।।1।।
मै पति की पंदि न करनी की कार। उह बिगड़ै रूप रहा बिकराल।।
तेरा एक नाम तारे संसार, मैं ऐहो आस एहो आधार।
मुख निंदा आखा दिन रात, पर घर जोही नीच मनाति।।

काम क्रोध तन वसह चंडाल, धाणक रूप रहा करतार।।2।।
फाही सुरत मलूकी वेस, उह ठगवाड़ा ठगी देस।।
खरा सिआणां बहुता भार, धाणक रूप रहा करतार।।3।।
मैं कीता न जाता हरामखोर, उह किआ मुह देसा दुष्ट चोर।
नानक नीच कह बिचार, धाणक रूप रहा करतार।।4।।

इसमें स्पष्ट लिखा है कि एक(मन रूपी) कुत्ता तथा इसके साथ दो (आशा-तष्णा रूपी) कुतिया अनावश्यक भौंकती(उमंग उठती) रहती हैं तथा सदा नई-नई आशाएँ उत्पन्न(ब्याती हैं) होती हैं। इनको मारने का तरीका(जो सत्यनाम तथा तत्त्व ज्ञान बिना) झूठा(कुड़) साधन(मुठ मुरदार) था। मुझे धाणक के रूप में हक्का कबीर (सत कबीर) परमात्मा मिला। उन्होनें मुझे वास्तविक उपासना बताई।

नानक जी ने कहा कि उस परमेश्वर(कबीर साहेब) की साधना बिना न तो पति(साख) रहनी थी और न ही कोई अच्छी करनी(भक्ति की कमाई) बन रही थी। जिससे काल का भयंकर रूप जो अब महसूस हुआ है उससे केवल कबीर साहेब तेरा एक(सत्यनाम) नाम पूर्ण संसार को पार(काल लोक से निकाल सकता है) कर सकता है। मुझे(नानक जी कहते हैं) भी एही एक तेरे नाम की आश है व यही नाम मेरा आधार है। पहले अनजाने में बहुत निंदा भी की होगी क्योंकि काम क्रोध इस तन में चंडाल रहते हैं।

मुझे धाणक(जुलाहे का कार्य करने वाले कबीर साहेब) रूपी भगवान ने आकर सतमार्ग बताया तथा काल से छुटवाया। जिसकी सुरति(स्वरूप) बहुत प्यारी है मन को फंसाने वाली अर्थात् मन मोहिनी है तथा सुन्दर वेश-भूषा में(जिन्दा रूप में) मुझे मिले उसको कोई नहीं पहचान सकता। जिसने काल को भी ठग लिया अर्थात् दिखाई देता है धाणक(जुलाहा) फिर बन गया जिन्दा। काल भगवान भी भ्रम में पड़ गया भगवान(पूर्णब्रह्म) नहीं हो सकता। इसी प्रकार परमेश्वर कबीर साहेब अपना वास्तविक अस्तित्व छुपा कर एक सेवक बन कर आते हैं। काल या आम व्यक्ति पहचान नहीं सकता। इसलिए नानक जी ने उसे प्यार में ठगवाड़ा कहा है और साथ में कहा है कि वह धाणक(जुलाहा कबीर) बहुत समझदार है। दिखाई देता है कुछ परन्तु है बहुत महिमा(बहुता भार) वाला जो धाणक जुलाहा रूप में स्वयं परमात्मा पूर्ण ब्रह्म(सतपुरुष) आया है। प्रत्येक जीव को आधीनी समझाने के लिए अपनी भूल को स्वीकार करते हुए कि मैंने(नानक जी ने) पूर्णब्रह्म के साथ बहस(वाद-विवाद) की तथा उन्होनें (कबीर साहेब ने) अपने आपको भी (एक लीला करके) सेवक रूप में दर्शन दे कर तथा(नानक जी को) मुझको स्वामी नाम से सम्बोधित किया। इसलिए उनकी महानता तथा अपनी नादानी का पश्चाताप करते हुए श्री नानक जी ने कहा कि मैं(नानक जी) कुछ करने कराने योग्य नहीं था। फिर भी अपनी साधना को उत्तम मान कर भगवान से सम्मुख हुआ(ज्ञान संवाद किया)। मेरे जैसा नीच दुष्ट, हरामखोर कौन हो सकता है जो अपने मालिक पूर्ण परमात्मा धाणक रूप(जुलाहा रूप में आए करतार कबीर साहेब) को नहीं पहचान पाया? श्री नानक जी कहते हैं कि यह सब मैं पूर्ण सोच समझ से कह रहा हूँ कि परमात्मा यही धाणक (जुलाहा कबीर) रूप में है।

भावार्थ :- श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि यह फाँसने वाली अर्थात् मनमोहिनी शक्ल सूरत में तथा जिस देश में जाता है वैसा ही वेश बना लेता है, जैसे जिंदा महात्मा रूप में बेई नदी पर मिले, सतलोक में पूर्ण परमात्मा वाले वेश में तथा यहाँ उतर प्रदेश में धाणक(जुलाहे) रूप में स्वयं करतार (पूर्ण प्रभु) विराजमान है। आपसी वार्ता के दौरान हुई नोंक-झोंक को याद करके क्षमा याचना करते हुए अधिक भाव से कह रहे हैं कि मैं अपने सत्भाव से कह रहा हूँ कि यही धाणक(जुलाहे) रूप में सत्पुरुष अर्थात् अकाल मूर्त ही है।

दूसरा प्रमाण :- नीचे प्रमाण है जिसमें कबीर परमेश्वर का नाम स्पष्ट लिखा है। श्री गु.ग्र.पष्ठ नं. 721 राग तिलंग महला पहला में है।

और अधिक प्रमाण के लिए प्रस्तुत है ''राग तिलंग महला 1'' पंजाबी गुरु ग्रन्थ साहेब पष्ठ नं. 721

यक अर्ज गुफतम पेश तो दर गोश कुन करतार। **हक्का कबीर** करीम तू बेएब परवरदिगार।।
दूनियाँ मुकामे फानी तहकीक दिलदानी। मम सर मुई अजराईल गिरफ्त दिल हेच न दानी।।
जन पिसर पदर बिरादराँ कस नेस्त दस्तं गीर। आखिर बयफ्तम कस नदारद चूँ शब्द तकबीर।।
शबरोज गशतम दरहवा करदेम बदी ख्याल। गाहे न नेकी कार करदम मम ई चिनी अहवाल।।
बदबख्त हम चु बखील गाफिल बेनजर बेबाक। नानक बुगोयद जनु तुरा तेरे चाकरा पाखाक।।

सरलार्थ :-- (कुन करतार) हे शब्द स्वरूपी कर्ता अर्थात् शब्द से सर्व सष्टि के रचनहार (गोश) निर्गुणी संत रूप में आए (करीम) दयालु (हक्का कबीर) सत कबीर (तू) आप (बेएब परवरदिगार) निर्विकार परमेश्वर हैं। (पेश तोदर) आपके समक्ष अर्थात् आपके द्वार पर (तहकीक) पूरी तरह जान कर (यक अर्ज गुफतम) एक हृदय से विशेष प्रार्थना है कि (दिलदानी) हे महबूब (दुनियां मुकामे) यह संसार रूपी ठिकाना (फानी) नाशवान है (मम सर मूई) जीव के शरीर त्यागने के पश्चात् (अजराईल) अजराईल नामक फरिश्ता यमदूत (गिरफ्त दिल हेच न दानी) बेरहमी के साथ पकड़ कर ले जाता है। उस समय (कस) कोई (दस्तं गीर) साथी (जन) व्यक्ति जैसे (पिसर) बेटा (पदर) पिता (बिरादरां) भाई चारा (नेस्तं) साथ नहीं देता। (आखिर बेफ्तम) अन्त में सर्व उपाय (तकबीर) फर्ज अर्थात् (कस) कोई क्रिया काम नहीं आती (नदारद चूं शब्द) तथा आवाज भी बंद हो जाती है (शबरोज) प्रतिदिन (गशतम) गसत की तरह न रूकने वाली (दर हवा) चलती हुई वायु की तरह (बदी ख्याल) बुरे विचार (करदेम) करते रहते हैं (नेकी कार करदम) शुभ कर्म करने का (मम ई चिनी) मुझे कोई (अहवाल) जरीया अर्थात् साधन (गाहे न) नहीं मिला (बदबख्त) ऐसे बुरे समय में (हम चु) हमारे जैसे (बखील) नादान (गाफील) ला परवाह (बेनजर बेबाक) भक्ति और भगवान का वास्तविक ज्ञान न होने के कारण ज्ञान नेत्र हीन था तथा ऊवा-बाई का ज्ञान कहता था। (नानक बुगोयद) नानक जी कह रहे हैं कि हे कबीर परमेश्वर आपकी कपा से (तेरे चाकरां पाखाक) आपके सेवकों के चरणों की धूर डूबता हुआ (जनु तुरा) बंदा पार हो गया।

केवल हिन्दी अनुवाद :- हे शब्द स्वरूपी राम अर्थात् शब्द से सर्व सष्टि रचनहार दयालु ''सतकबीर'' आप निर्विकार परमात्मा हैं। आपके समक्ष एक हृदय से विनती है कि यह पूरी तरह जान लिया है हे महबूब यह संसार रूपी ठिकाना नाशवान है। हे दाता! इस जीव के मरने पर अजराईल नामक यम दूत बेरहमी से पकड़ कर ले जाता है कोई साथी जन जैसे बेटा पिता भाईचारा साथ नहीं देता। अन्त में सभी उपाय और फर्ज कोई क्रिया काम नहीं आता। प्रतिदिन गश्त की तरह न रूकने वाली चलती हुई वायु की तरह बुरे विचार करते रहते हैं। शुभ कर्म करने का मुझे कोई जरीया या साधन नहीं मिला। ऐसे बुरे समय कलियुग में हमारे जैसे नादान लापरवाह, सत मार्ग का ज्ञान न होने से ज्ञान नेत्र हीन था तथा लोकवेद के आधार से अनाप-सनाप ज्ञान कहता रहता था। नानक जी कहते हैं कि मैं आपके सेवकों के चरणों की धूर डूबता हुआ बन्दा नानक पार हो गया।

भावार्थ - श्री गुरु नानक साहेब जी कह रहे हैं कि हे हक्का कबीर (सत् कबीर)! आप निर्विकार दयालु परमेश्वर हो। आप से मेरी एक अर्ज है कि मैं तो सत्यज्ञान वाली नजर रहित तथा आपके सत्यज्ञान के सामने तो निरूत्तर अर्थात् जुबान रहित हो गया हूँ। हे कुल मालिक! मैं तो आपके दासों के चरणों की धूल हूँ, मुझे शरण में रखना।

इसके पश्चात् जब श्री नानक जी को पूर्ण विश्वास हो गया कि पूर्ण परमात्मा तो गीता ज्ञान दाता प्रभु से अन्य ही है। वही पूजा के योग्य है। पूर्ण परमात्मा की भक्ति तथा ज्ञान के विषय में गीता ज्ञान दाता प्रभु भी अनभिज्ञ है। परमेश्वर स्वयं ही तत्त्वदर्शी संत रूप से प्रकट होकर तत्त्वज्ञान को जन-जन को सुनाता है। जिस ज्ञान को वेद भी नहीं जानते वह तत्त्वज्ञान केवल पूर्ण परमेश्वर (सतपुरुष) ही स्वयं आकर ज्ञान करवाता है। श्री नानक जी का जन्म पवित्र हिन्दू धर्म में होने के कारण पवित्र गीता जी के ज्ञान पर पूर्ण रूपेण आश्रित थे। फिर स्वयं प्रत्येक हिन्दू श्रद्धालु तथा ब्राह्मण गुरुओं, आचार्यों से गीता जी के सात श्लोकों के विषय में पूछते थे। सर्व गुरुजन निरुत्तर हो जाते थे, परन्तु श्री नानक जी के विरोधी हो जाते थे। उस समय शिक्षा का अभाव था। उन झूठे गुरुओं की दाल गलती रही। गुरुजन जनता को यह कह कर श्री नानक जी के विरुद्ध भड़काते थे कि श्री नानक झूठ कह रहा है। गीता जी में ऐसा नहीं लिखा है कि श्री कष्ण जी से ऊपर कोई शक्ति है। कबीर प्रभु से तत्त्वज्ञान से परिचित होकर श्री नानक जी पवित्र मुसलमान धर्म के श्रद्धालुओं तथा काजी व मुल्लाओं तथा पीरों (गुरुओं) से पूछा करते थे कि पवित्र कुर्आन शरीफ की सूरत फुर्कानि स. 25 आयत 19, 21, 52 से 58, 59 में कुर्आन शरीफ बोलने वाला प्रभु (अल्लाह) कह रहा है कि सर्व ब्रह्मण्डों का रचनहार, सर्व पाप (गुनाहों) का नाश (क्षमा) करने वाला जिसने छः दिन में सष्टि रचना की तथा सातवें दिन तख्त पर जा विराजा, जो सर्व के पूजा(इबादिह कबीरा) योग्य है, वह कबीर परमेश्वर है। काफिर लोग (अल्लाह कबीर) कबीर प्रभु को समर्थ नहीं मानते, आप उनकी बातों में मत आना। मेरे द्वारा दिए इस कुर्आन शरीफ के ज्ञान पर विश्वास रखकर उनके साथ ज्ञान चर्चा रूपी संघर्ष करना। उस अल्लाहु अकबिर् अर्थात् अल्लाहु अकबर (कबीर प्रभु) की भक्ति तथा प्राप्ति के विषय में मैं (कुर्आन शरीफ का ज्ञान दाता प्रभु) नहीं जानता। उसके विषय में किसी तत्त्वदर्शी संत (बाखबर) से पूछो। पवित्र मुसलमान धर्म के मार्ग दर्शकों से पूछा कि यह स्पष्ट है कि श्री कुर्आन शरीफ के ज्ञान दाता प्रभु (जिसे हजरत मुहम्मद जी अपना अल्लाह मानते थे) के अतिरिक्त कोई और समर्थ परमेश्वर है जिसने सारे संसार की रचना की है। वही पूजा के योग्य है। कुर्आन शरीफ का ज्ञान दाता प्रभु अपनी साधना के विषय में तो बता चुका है कि पाँच समय नमाज करो, रोजे रखो, बंग दो। फिर वही प्रभु किसी अन्य समर्थ प्रभु की पूजा के लिए कह रहा है। क्या वह बाखबर(तत्त्वदर्शी) संत आप किसी को मिला है ? यदि मिला होता तो यह साधना नहीं करते। इसलिए आपकी पूजा वास्तविक नहीं है। क्योंकि पूजा के योग्य पूर्ण मोक्ष दायक पाप विनाशक तो केवल कबीर नामक प्रभु है। आप प्रभु को निराकार कहते हो। कुर्आन शरीफ में सूरत फुर्कानि स. 25 आयत 58-59 में स्पष्ट किया है कि कबीर अल्लाह (कबीर प्रभु) ने छः दिन में सष्टि रची तथा ऊपर तख्त पर जा बैठा। इससे तो स्पष्ट हुआ कि कबीर नामक अल्लाह साकार है। क्योंकि निराकार के विषय में एक स्थान पर बैठना नहीं कहा जाता। इसी की पुष्टि 'पवित्र बाईबल' उत्पत्ति विषय में कहा है कि प्रभु ने छः दिन में सष्टि की रचना की तथा सातवें दिन विश्राम किया अर्थात् आकाश में जा बैठा तथा प्रभु ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया। इससे भी स्वसिद्ध है कि परमात्मा का शरीर भी मनुष्य जैसा है अर्थात् प्रभु साकार है।

आपकी कुर्आन शरीफ सही है परन्तु आप न समझ कर अपना तथा अपने अनुयाईयों का जीवन व्यर्थ कर रहे हो। आओ आपको अल्लाह कबीर सशरीर दिखाता हूँ। बहुत से श्रद्धालु श्री नानक जी के साथ पूज्य कबीर परमेश्वर की झोपड़ी के पास गए। श्री नानक जी ने कहा कि यही है वह अल्लाहु अकबर, मान जाओ मेरी बात। परन्तु भ्रमित ज्ञान में रंगे श्रद्धालुओं को विश्वास नहीं हुआ।

मुल्ला, काजी तथा पीरों ने कहा कि नानक जी झूठ बोल रहे हैं, कुर्आन शरीफ में उपरोक्त विवरण कहीं नहीं लिखा। क्योंकि सर्व समाज अशिक्षित था, वही अज्ञान अंधेरा अभी तक छाया रहा, अब तत्त्वज्ञान रूपी सूर्य उदय हो चुका है। गुरु ग्रन्थ साहेब, राग आसावरी, महला 1 के कुछ अंश -

साहिब मेरा एको है। एको है भाई एको है।
आपे रूप करे बहु भांती नानक बपुड़ा एव कह।। (पृ. 350)
जो तिन कीआ सो सचु थीआ, अमृत नाम सतगुरु दीआ।। (पृ. 352)
गुरु पुरे ते गति मति पाई। (पृ. 353)
बूडत जगु देखिआ तउ डरि भागे।
सतिगुरु राखे से बड़ भागे, नानक गुरु की चरणों लागे।। (पृ. 414)
मैं गुरु पूछिआ अपणा साचा बिचारी राम। (पृ. 439)

उपरोक्त अमतवाणी में श्री नानक साहेब जी स्वयं स्वीकार कर रहे हैं कि साहिब(प्रभु) एक ही है तथा मेरे गुरु जी ने मुझे उपदेश नाम मन्त्र दिया, वही नाना रूप धारण कर लेता है अर्थात् वही सतपुरुष है वही जिंदा रूप बना लेता है। वही धाणक रूप में भी विराजमान होकर आम व्यक्ति अर्थात् भक्त की भूमिका करता है। शास्त्रविरुद्ध पूजा करके सारे जगत् को जन्म-मत्यु व कर्मफल की आग में जलते देखकर जीवन व्यर्थ होने के डर से भागकर मैंने गुरुजी के चरणों में शरण ली।

बलिहारी गुरु आपणे दिउहाड़ी सदवार।
जिन माणस ते देवते कीए करत न लागी वार।
आपीनै आप साजिओ आपीनै रचिओ नाउ।
दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ।
दाता करता आपि तूं तुसि देवहि करहि पसाउ।
तूं जाणोइ सभसै दे लैसहि जिंद कवाउ करि आसणु डिठो चाउ। (पृ. 463)

भावार्थ है कि पूर्ण परमात्मा जिंदा का रूप बनाकर बेई नदी पर आए अर्थात् जिंदा कहलाए तथा स्वयं ही दो दुनियाँ ऊपर(सतलोक आदि) तथा नीचे(ब्रह्म व परब्रह्म के लोक) को रचकर ऊपर सत्यलोक में आकार में आसन पर बैठ कर चाव के साथ अपने द्वारा रची दुनियाँ को देख रहे हो तथा आप ही स्वयम्भू अर्थात् माता के गर्भ से जन्म नहीं लेते, स्वयं प्रकट होते हो। यही प्रमाण पवित्र यजुर्वेद अध्याय 40 मं. 8 में है कि कविर् मनीषि स्वयम्भूः परिभू व्यवधाता, भावार्थ है कि कबीर परमात्मा सर्वज्ञ है (मनीषि का अर्थ सर्वज्ञ होता है) तथा अपने आप प्रकट होता है। वह सनातन (परिभू) अर्थात् सर्वप्रथम वाला प्रभु है। वह सर्व ब्रह्मण्डों का (व्यवधाता)अर्थात् भिन्न-भिन्न सर्व लोकों का रचनहार है।

एहू जीउ बहुते जनम भरमिआ, ता सतिगुरु शबद सुणाइया।। (पृ. 465)

भावार्थ है कि श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि मेरा यह जीव बहुत समय से जन्म तथा मत्यु के चक्र में भ्रमता रहा अब पूर्ण सतगुरु ने वास्तविक नाम प्रदान किया।

श्री नानक जी के पूर्व जन्म - सतयुग में राजा अम्ब्रीष, त्रेतायुग में राजा जनक हुए थे और फिर नानक जी हुए तथा अन्य योनियों के जन्मों की तो गिनती ही नहीं है।

इस निम्न लेख में प्रमाणित है कि कबीर साहेब तथा नानक जी की वार्ता हुई है। यह भी प्रमाण है कि राजा जनक विदेही भी श्री नानक जी थे तथा श्री सुखदेव जी भी राजा जनक का शिष्य हुआ था।

पराण संगली (पंजाबी लीपी में) संपादक : डॉ. जगजीत सिह खानपुरी पब्लिकेशन ब्यूरो पंजाबी युनिवर्सिटी, पटियाला। प्रकाशित सन् 1961 के पृष्ठ न. 399 से सहाभार

गोष्टी बाबे नानक और कबीर जी की

(कबीर जी)उह गुरु जी चरनि लागि करवै, बीनती को पुन करीअहु देवा।
अगम अपार अभै पद कहिए, सो पाईए कित सेवा।।
मुहि समझाई कहहु गुरु पूरे, भिन्न–भिन्न अर्थ दिखावहु।
जिह बिधि परम अभै पद पाईये, सा विधि मोहि बतावहु।
मन बच करम कृपा करि दीजै, दीजै शब्द उचारं।।
कहै कबीर सुनहु गुरु नानक, मैं दीजै शब्द बीचारं।।1।।
(नानक जी)नानक कह सुनों कबीर जी, सिखिया एक हमारी।
तन मन जीव ठौर कह ऐकै, सुंन लागवहु तारी।।
करम अकरम दोऊँ तियागह, सहज कला विधि खेलहु।
जागत कला रहु तुम निसदिन, सतगुरु कल मन मेलहु।।
तजि माया र्निमायल होवहु, मन के तजहु विकारा।
नानक कह सुनहु कबीर जी, इह विधि मिलहु अपारा।।2।।
(कबीर जी)गुरु जी माया सबल निरबल जन तेरा, क्युं अस्थिर मन होई।
काम क्रोध व्यापे मोकु, निस दिन सुरति निरत बुध खोई।।
मन राखऊ तवु पवण सिधारे, पवण राख मन जाही।
मन तन पवण जीवैं होई एकै, सा विधि देहु बुझााई।।3।।
(नानक जी) दृिढ करि आसन बैठहु वाले, उनमनि ध्यान लगावहु।
अलप–अहार खण्ड कर निन्द्रा, काम क्रोध उजावहु।।
नौव दर पकड़ि सहज घट राखो, सुरति निरति रस उपजै।
गुरु प्रसादी जुगति जीवु राखहु, इत मंथत साच निपजै।।4।।
(कबीर जी) (कबीर कवन सुखम कवन स्थूल कवन डाल कवन है मूल)
गुरु जी किया लै बैसऊ, किआ लेहहु उदासी।
कवन अग्नि की धुणी तापऊ कवन मड़ी महि बासी।।5।।
(नानक जी) (नानक ब्रह्म सुखम सुंन असथुल, मन है पवन डाल है मूल)
करम लै सोवहु सुरति लै जागहु, ब्रह्म अग्नि ले तापहु।
निस बासर तुम खोज खुजावहु, सुंन मण्डल ले डूम बापहु।।6।।
(सतगुरु कहै सुनहे रे चेला, ईह लछन परकासे)
(गुरु प्रसादि सरब मैं पेखहु, सुंन मण्डल करि वासे)
(कबीर जी) सुआमी जी जाई को कहै, ना जाई वहाँ क्या अचरज होई जाई।
मन भै चक्र रहऊ मन पूरे, सा विध देहु बताई।।7।।
(अपना अनभऊ कहऊ गुरु जी, परम ज्योति किऊं पाई।)
(नानक जी) ससी अर चड़त देख तुम लागे, ऊहाँ कीटी भिरणा होता।
नानक कह सुनहु कबीरा, इत बिध मिल परम तत जोता।।8।।
(कबीर जी) धन धन धन गुरु नानक, जिन मोसो पतित उधारो।

निर्मल जल बतलाइया मो कऊ, राम मिलावन हारो।।9।।

(नानक जी) <u>जब हम भक्त भए सुखदेवा, जनक विदेह किया गुरुदेवा।</u>

कलि महि जुलाहा नाम कबीरा, ढूंड थे चित भईआ न थीरा।।
बहुत भांति कर सिमरन कीना, इहै मन चंचल तबहु न भिना।
जब करि ज्ञान भए उदासी, तब न काटि कालहि फांसी।।
जब हम हार परे सतिगुरु दुआरे, दे गुरु नाम दान लीए उधारे।।10।।

(कबीर जी) सतगुरु पुरुख सतिगुरु पाईया, सतिनाम लै रिदै बसाईआ।
जात कमीना जुलाहा अपराधि, गुरु कृपा ते भगति समाधी।।
मुक्ति भइआ गुरु सतिगुरु बचनी, गईया सु सहसा पीरा।
जुग नानक सतिगुरु जपीअ, कीट मुरीद कबीरा।।11।।
सुनि उपदेश सम्पूर्ण सतगुरु का, मन महि भया अनंद।
मुक्ति का दाता बाबा नानक, रिंचक रामानन्द।।12।।

ऊपर लिखी वाणी 'प्राण संगली' नामक पुस्तक से लिखी हैं। इसमें स्पष्ट लिखा है कि वाणी संख्या 9 तक दोहों में पूरी पंक्ति के अंतिम अक्षर मेल खाते हैं। परन्तु वाणी संख्या 10 की पाँच पंक्तियां तथा वाणी संख्या 11 की पहली दो पंक्तियां चौपाई रूप में हैं तथा फिर दो पंक्तियां दोहा रूप में है तथा फिर वाणी संख्या 12 में केवल दो पंक्तियां हैं जो फिर दोहा रूप में है। इससे सिद्ध है कि वास्तविक वाणी को निकाला गया है जो वाणी कबीर साहेब जी के विषय में श्री नानक जी ने सतगुरु रूप में स्वीकार किया होगा। नहीं तो दोहों में चलती आ रही वाणी फिर चौपाईयों में नहीं लिखी जाती। फिर बाद में दोहों में लिखी है। यह सब जान-बूझ कर प्रमाण मिटाने के लिए किया है। वाणी संख्या 10 की पहली पंक्ति 'जब हम भक्त भए सुखदेवा, जनक विदेही किया गुरुदेवा' **स्पष्ट करती है कि श्री नानक जी कह रहे हैं कि मैं जनक रूप में था उस समय मेरा शिष्य (भक्त) श्री सुखदेव ऋषि हुए थे। इस वाणी संख्या 10 को नानक जी की ओर से कही मानी जानी चाहिए तो स्पष्ट है कि नानक जी कह रहे है कि मैं हार कर गुरू कबीर के चरणों में गिर गया उन्होंने नाम दान देकर उद्धार किया। वास्तव में यह 10 नं. वाणी कही अन्य वाणी से है। यह पंक्ति भी परमेश्वर कबीर साहेब जी की ओर से वार्ता में लिख दिया है। क्योंकि परमेश्वर कबीर साहेब जी ने अपनी शक्ति से श्री नानक जी को पिछले जन्म की चेतना प्रदान की थी। तब नानक जी ने स्वीकार किया था कि वास्तव में मैं जनक था तथा उस समय सुखदेव मेरा भक्त हुआ था।**

वाणी संख्या 11 में चार पंक्तियां हैं जबकि वाणी संख्या 10 में पाँच पंक्तियां लिखी हैं। वास्तव में प्रथम पंक्ति 'जब हम भक्त भए सुखदेवा ..' वाली में अन्य तीन पंक्तियां थी, जिनमें कबीर परमेश्वर को श्री नानक जी ने गुरु स्वीकार किया होगा। उन्हें जान बूझ कर निकाला गया लगता है।

वाणी संख्या 1 व 2 में 6-6 पंक्तियाँ हैं। वाणी संख्या 3 व 4 में 4-4 पंक्तियाँ हैं। वाणी संख्या 5 व 6 में 3-3 पंक्तियाँ हैं। वाणी संख्या 7 में 4 पंक्तियाँ हैं। वाणी संख्या 8 में 3 पंक्तियाँ हैं। वाणी संख्या 9 में 2 पंक्तियाँ हैं। वाणी संख्या 10 में 5 पंक्तियाँ हैं। वाणी संख्या 11 में 4 पंक्तियाँ हैं तथा वाणी संख्या 12 में 2 पंक्तियाँ हैं। यदि ये वाणी पूरी होती तो सर्व वाणियों (कलियों) में एक जैसी वाणी संख्या होती।

श्री नानक जी ने दोनों की वार्ता जो प्रभु कबीर जी से हुई थी, लिखी थी। परन्तु बाद में प्राण संगली तथा गुरु ग्रन्थ साहिब में उन वाणियों को छोड़ दिया गया जो कबीर परमेश्वर जी को श्री

नानक जी का गुरुदेव सिद्ध करती थी। इसी का प्रमाण कृप्या निम्न देखें। दो शब्दों में प्रत्यक्ष प्रमाण है(श्री गुरू ग्रन्थ साहेब पष्ठ 1189, 929, 930 पर)।

आगे श्री गुरु ग्रन्थ पृष्ठ नं. 1189

राग बसंत महला 1

चंचल चित न पावै पारा, आवत जात न लागै बारा।
दुख घणों मरीऐ करतारा, बिन प्रीतम के कटै न सारा।।1।।
सब उत्तम किस आखवु हीना, हरि भक्ति **सचनाम** पतिना(रहावु)।
औखद कर थाकी बहुतेरे, किव दुख चुकै बिन गुरु मेरे।।
बिन हर भक्ति दुःख घणोरे, दुख सुख दाते ठाकुर मेरे।।2।।
रोग वडो किंवु बांधवु धिरा, रोग बुझै से काटै पीरा।
मैं अवगुण मन माहि सरीरा, ढूँढ़त खोजत गुरूि मेले बीरा।।3।।

नोट :-- यहाँ पर स्पष्ट है कि अक्षर कबीरा की जगह 'गुरु मेले बीरा' लिखा है। जबकि लिखना था 'ढूँढ़त खोजत गुरि मेले कबीरा'

गुरु का शब्द दास हर नावु, जिवै तू राखहि तिवै रहावु।
जग रोगी कह देखि दिखाऊ, हरि निमाईल निर्मल नावु।।4।।
घट में घर जो देख दिखावै, गुरु महली सो महलि बुलावै।
मन में मनुवा चित्त में चीता, ऐसे हर के लोग अतीता।।5।।
हरख सोग ते रहैहि निरासा, अमृत चाख हरि नामि निवासा।।
आप पीछाणे रह लिव लागा, जनम जीति गुरुमति दुख भागा।।6।।
गुरु दिया सच अमृत पिवैऊ, सहज मखु जीवत ही जीवऊ।
अपणे करि राखहु गुरु भावै, तुमरो होई सु तुझहि समावै।।8।।
भोगी कऊ दुःख रोग बिआपै, घटि–घटि रवि रहिया प्रभु आपै।
सुख दुःख ही तै गुरु शब्द अतीता, नानक राम रमै हरि चीता।।9(4)।।

इस ऊपर के शब्द में प्रत्यक्ष प्रमाण है कि श्री नानक जी का कोई आकार रूप में गुरु था जिसने सच्चनाम (सतनाम) दिया तथा उस गुरुदेव को ढूंढ़ते-खोजते काशी में कबीर गुरु मिला तथा वह सतनाम प्राणियों को कर्म-कष्ट रहित करता है तथा हरदम गुरु के वचन में रह कर गुरुदेव द्वारा दिए सत्यनाम (सच्चनाम) का जाप करते रहना चाहिए।

राग रामकली महला 1 दखणी औंकार

गुरु ग्रन्थ पृष्ठ नं. 929-30

औंकार ब्रह्मा उत्पत्ति। औंकार किया जिन चित।।
औंकार सैल जुग भए। औंकार वेद निरमए।।
औंकार शब्द उधरे। औंकार गुरु मुख तरे।।
ओंम अखर सुन हुँ विचार। ओम अखर त्रिभूवण सार।।
सुण पाण्डे किया लिखहु जंजाला, लिख राम नाम गुरु मुख गोपाला।।1।।रहाऊ।।
ससै सभ जग सहज उपाइया, तीन भवन इक जोती।
गुरु मुख वस्तु परापत होवै, चुण लै मानक मोती।।
समझै सुझै पड़ि–पड़ि बुझै अति निरंतर साचा।

गुरु मुख देखै साच समाले, बिन साचे जग काचा।।2।।

धधै धरम धरे धरमा पुरि गुण करी मन धीरा। {ग्रन्थ साहेब में एक ही पंक्ति है।}

यहाँ पंक्ति अधूरी(अपूर्ण) छोड़ रखी है। प्रत्येक पंक्ति में अंतिम अक्षर दो एक जैसे है। जैसे ऊपर लिखी वाणी में ''ज्योति'' फिर दूसरी में ''मोती''। फिर ''साचा'' दूसरी में ''काचा''। यहाँ पर ''धीरा'' अंतिम अक्षर वाली एक ही पंक्ति है। इसमें साहेब कबीर का नाम प्रत्यक्ष था जो कि मान वस होकर ग्रन्थ की छपाई करते समय निकाल दी गई है(छापाकारों ने काटा होगा, संत कभी ऐसी गलती नहीं करते) क्योंकि कबीर साहेब जुलाहा जाति में माने जाते हैं जो उस समय अछूत जानी जाती थी। कहीं गुरु नानक जी का अपमान न हो जाए कि एक जुलाहा नानक जी का पूज्य गुरु व भगवान था।

फिर प्रमाण है ''राग बसंत महला पहला'' पौड़ी नं. 3 आदि ग्रन्थ(पंजाबी) पृष्ठ नं. 1188

नानक हवमों शब्द जलाईया, सतगुरु साचे दरस दिखाईया।।

इस वाणी से भी अति स्पष्ट है कि नानक जी कह रहे हैं कि सत्यनाम (सत्यशब्द) से विकार-अहम्(अभिमान) जल गया तथा मुझे सच्चे सतगुरु ने दर्शन दिए अर्थात् मेरे गुरुदेव के दर्शन हुए। स्पष्ट है कि नानक जी को कोई सतगुरु आकार रूप में अवश्य मिला था। वह ऊपर तथा नीचे पूर्ण प्रमाणित है। स्वयं कबीर साहेब पूर्ण परमात्मा(अकाल मूर्त) स्वयं सच्चखण्ड से तथा दूसरे रूप में काशी बनारस से आकर प्रत्यक्ष दर्शन देकर सच्चखण्ड (सत्यलोक) भ्रमण करवा के सच्चा नाम उपदेश काशी (बनारस) में प्रदान किया।

आदरणीय गरीबदास जी महाराज {गाँव-छुड़ानी, जिला-झज्जर(हरियाणा)} को भी परमेश्वर कबीर जिन्दा महात्मा के रूप में जंगल में मिले थे। इसी प्रकार सतलोक दिखा कर वापिस छोड़ा था। परमेश्वर ने बताया कि मैंने ही श्री नानक जी तथा श्री दादू जी को पार किया था। जब श्री नानक जी ने पूर्ण परमात्मा को सतलोक में भी देखा तथा फिर बनारस (काशी) में जुलाहे का कार्य करते देखा तब उमंग में भरकर कहा था ''वाहेगुरु सत्यनाम'' वाहेगुरु-वाहेगुरु तथा इसी उपरोक्त वाक्य का उच्चारण करते हुए काशी से वापिस आए। जिसको श्री नानक जी के अनुयाईयों ने जाप मंत्र रूप में जाप करना शुरु कर दिया कि यह पवित्र मंत्र श्री नानक जी के मुख कमल से निकला था, परन्तु वास्तविकता को न समझ सके। अब उनसे कौन छुटाए, इस नाम के जाप को जो सही नहीं है। क्योंकि वास्तविक मंत्र को बोलकर नहीं सुनाया जाता। उसका सांकेतिक मंत्र 'सत्यनाम' है तथा वाहे गुरु कबीर परमेश्वर को कहा है। इसी का प्रमाण संत गरीबदास साहेब ने अपने सतग्रन्थ साहेब में फुटकर साखी का अंग पष्ठ न. 386 पर दिया है।

गरीब, झांखी देख कबीर की, नानक कीती वाह। वाह सिक्खों के गल पड़ी, कौन छुटावै ताह।।

गरीब, हम सुलतानी नानक तारे, दादू कुं उपदेश दिया। जाति जुलाहा भेद ना पाया, कांशी माहे कबीर हुआ।।

प्रमाण के लिए ''जीवन दस गुरु साहिबान'' पष्ठ न. 42 से 44 तक

(लेखक - सोढी तेजा सिंघ जी) - (प्रकाशक - चतर सिंघ जीवन सिंघ)

बेई नदी में प्रवेश

"जीवन दस गुरु साहेब से ज्यों का त्यों सहाभार"

गुरु जी प्रत्येक प्रातः बेई नदी में जो कि शहर सुलतानपुर के पास ही बहती है, स्नान करने के लिए जाते थे। एक दिन जब आपने पानी में डुबकी लगाई तो फिर बाहर न आए। कुछ समय ऊपरान्त आप जी के सेवक

ने, जो कपड़े पकड़ कर नदी के किनारे बैठा था, घर जाकर जै राम जी को खबर सुनाई कि नानक जी डूब गए हैं तो जै राम जी तैराकों को साथ लेकर नदी पर गए। आप जी को बहुत ढूंढा किन्तु आप नहीं मिले। बहुत देखने के पश्चात् सब लोग अपने अपने घर चले गए।

भाई जैराम जी के घर बहुत चिन्ता और दुःख प्रकट किया जा रहा था कि तीसरे दिन सवेरे ही एक स्नान करने वाले भक्त ने घर आकर बहिन जी को बताया कि आपका भाई नदी के किनारे बैठा है। यह सुनकर भाईआ जैराम जी बेई की तरफ दौड़ पड़े और जब जब पता चलता गया और बहुत से लोग भी वहाँ पहुँच गए। जब इस तरह आपके चारों तरफ लोगों की भीड़ लग गई आप जी चुपचाप अपनी दुकान पहुँच गए। आप जी के साथ स्त्री और पुरूषों की भीड़ दुकान पर आने लगी। लोगों की भीड़ देख कर गुरु जी ने मोदीखाने का दरवाजा खोल दिया और कहा जिसको जिस चीज की जरूरत है वह उसे ले जाए। मोदीखाना लुटाने के पश्चात् गुरु जी फकीरी चोला पहन कर शमशानघाट में जा बैठे। मोदीखाना लुटाने और गुरु जी के चले जाने की खबर जब नवाब को लगी तो उसने मुंशी द्वारा मोदीखाने की किताबों का हिसाब जैराम को बुलाकर पड़ताल करवाया। हिसाब देखने के पश्चात् मुंशी ने बताया कि गुरु जी के सात सौ साठ रूपये सरकार की तरफ अधिक हैं। इस बात को सुनकर नवाब बहुत खुश हुआ। उसने गुरु जी को बुलाकर कहा कि उदास न हो। अपना फालतू पैसा और मेरे पास से ले कर मोदीखाने का काम जारी रखें। पर गुरु जी ने कहा अब हमने यह काम नहीं करना हमें कुछ और काम करने का भगवान् की तरफ से आदेश हुआ है। नवाब ने पूछा क्या आदेश हुआ है ? तब गुरु जी ने मूल–मंत्र उच्चारण किया।

1 ओंकार सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरू
अकाल मूरति अजूनी सब गुरप्रसादि।

नवाब ने पूछा कि यह आदेश आपके भगवान् ने कब दिया ? गुरु जी ने बताया कि जब हम बेई में स्नान करने गए थे तो वहाँ से हम सच्चखण्ड अपने स्वामी के पास चले गए थे वहाँ हमें आदेश हुआ कि नानक जी यह मंत्र आप जपो और बाकियों को जपा कर कलयुग के लोगों को पार लगाओ। इसलिए अब हमें अपने मालिक के इस हुक्म की पालना करनी है। इस सन्दर्भ को भाई गुरदास जी वार 1 पउड़ी 24 में लिखते हैं—

बाबा पैधा सचखण्ड नउनिधि नाम गरीबी पाई।।

अर्थात्—बाबा नानक जी सचखण्ड गए। वहाँ आप को नौनिधियों का खजाना नाम और निर्भयता प्राप्त हुई। यहाँ बेई किनारे जहाँ गुरु जी बेई से बाहर निकल कर प्रकट हुए थे, गुरु द्वारा संत घाट अथवा गुरुद्वारा बेर साहिब, बहुत सुन्दर बना हुआ है। इस स्थान पर ही गुरु जी प्रातः स्नान करके कुछ समय के लिए भगवान् की तरफ ध्यान करके बैठते थे।

जीवन दस गुरु साहेब नामक पुस्तक से लेख समाप्त

''भाई बाले वाली जन्म साखी में अद्भुत प्रमाण''

भाई बाले वाली ''जन्म साखी'' एक मान्य ग्रन्थ है जो गुरू ग्रन्थ की तरह ही सत्यज्ञान का प्रतीक माना जाता है जिसके ज्ञान को सिक्ख समाज परम सत्य मानता है क्योंकि यह जन्म साखी भाई बाला जी द्वारा आँखों देखा कानों सुना ज्ञान है जो श्री नानक देव साहेब जी ने बोला था तथा बाला जी ने बताया तथा दूसरे गुरू श्री अंगद जी ने लिखा था। जन्म साखी के पृष्ठ 299-300 पर ''साखी कूना पर्वत की चली'' में ''गोष्टि सिद्धां नाल होई'' है। इसमें प्रकरण है कि श्री गुरू नानक जी कूना पर्वत पर गए। उनके साथ भाई बाला जी तथा मर्दाना जी थे। कूना पर्वत की गुफा में

कुछ सिद्ध पुरूष नाथ पंथ के रहते थे। उनके साथ ज्ञान गोष्ठी में श्री नानक जी ने प्रश्न के उत्तर में कहा था कि ''ऐकंकार हमारा नाबं अपने गुरू की बलि जाऊँ।'' (मर्दाने ने पूछा कि हे गुरू जी! क्या आपका भी कोई गुरू जी है?) तब नानक जी ने कहा कि हे मर्दाना! मेरा इतना बड़ा गुरू है जो बिना करतार की कृपा के अपनी दृष्टि में नहीं आता।

इससे आगे ''साखी और चली'' मीना पर्वत चले गए। तब मर्दाने ने पूछा कि हे गुरू जी! हम तो आपके साथ ही रहे हैं। आप जी को वह गुरू जी कब मिला था? गुरू नानक जी ने उत्तर दिया कि उस समय तक तुम मेरे पास नहीं आए थे। जब हम मिलने गए थे। तब मर्दाने ने कहा कि जी! कब मिलने गए थे? तब श्री नानक जी ने कहा कि जब सुल्तानपुर में बेई नदी में डुबकी लगाई थी। तब तीन दिन उसी के साथ रहे थे। हे मर्दाना! भाई बाला जानता है। हे मर्दाना! ऐसा गुरू है जिसकी सत्ता संपूर्ण संसार में आश्रय दे रही है। उसको जिन्दा बाबा कहते हैं। हे मर्दाना! जिन्दा उसी को कहते हैं जो काल के आधीन न आवै। अपितु काल उसके आधीन है।

श्री नानक जी का गुरू था, अन्य प्रमाण :-

''साखी कंधार देश की चली'' जन्म साखी के पृष्ठ 470-471 पर :-

एक मुगल पठान ने पूछा कि आपका गुरू कौन है? श्री नानक जी ने उत्तर दिया कि जिन्दा पीर है। वह परमेश्वर ही गुरू रूप में आया था। उसका शिष्य सारा जहाँ है। फिर ''साखी रूकनदीन काजी के साथ होई'' जन्म साखी के पृष्ठ 183 पर कुछ वाणी इस प्रकार हैं :-

नानके आखे रूकनदीन सच्चा सुणहू जवाब। खालक आदम सिरजिया आलम बड़ा कबीर।
कायम दायम कुदरती सिर पिरां दे पीर। सजदे करे खुदाई नू आलम बड़ज्ञ कबीर।।

भावार्थ :- श्री नानक जी ने कहा है कि रूकनदीन काजी! जिस खुदा ने आदम जी की उत्पत्ति की है। वह बड़ा परमात्मा कबीर है। वह ही पृथ्वी पर सतगुरू की भूमिका करता है। वह सिर पीरां दे पीर यानि सब गुरूओं का सिरताज है। सब से उत्तम ज्ञान रखता है। वह कायम यानि श्रेष्ठ दायम यानि समर्थ परमात्मा (कुदरती) है। मुसलमान अल्लाह कबीर कहते हैं। कबीर का अर्थ बड़ा करके बड़ा अल्लाह अर्थ करते हैं। श्री नानक जी ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि वह बड़ा आलम कबीर है। मुसलमान जिसे अल्लाह कबीर कहते हैं यानि बड़ा अल्लाह कहते हैं। जन्म साखी में कबीर तथा बड़ा दोनों शब्द लिखे हैं जिससे कबीर का अर्थ कबीर ही रहेगा तथा बड़ा शब्द भी रहेगा। इसलिए स्पष्ट हुआ कि बड़ा परमात्मा कबीर है। वह बड़ा आलम कबीर है जो धाणक रूप में काशी में लीला करके गया है जिसका प्रमाण श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी के पृष्ठ 24, 721, 731 पर पूर्व में लिख दिया है। उसमें स्पष्ट है तथा कबीर सागर पवित्र ग्रन्थ भी भाई बाला जी ने जैसे प्रत्यक्ष सुना लिखा है, ऐसे ही धनी धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से सुना ज्ञान लिखा है जो पहले भी पढ़ा, अब नीचे पढ़ें।

"पवित्र कबीर सागर में प्रमाण"

विशेष विचार :- पूरे गुरु ग्रन्थ साहेब में कहीं प्रमाण नहीं है कि श्री नानक जी, परमेश्वर कबीर जी के गुरु जी थे। जैसे गुरु ग्रन्थ साहेब आदरणीय तथा प्रमाणित है, ऐसे ही पवित्र कबीर सागर भी आदरणीय तथा प्रमाणित सद्ग्रन्थ है तथा श्री गुरुग्रन्थ साहेब से पहले का है। इसीलिए तो सैंकड़ों वाणी 'कबीर सागर' सद्ग्रन्थ से गुरु ग्रन्थ साहिब में ली गई हैं।

पवित्र कबीर सागर में विस्तृत विवरण है नानक जी तथा परमेश्वर कबीर साहेब जी की वार्ता का

तथा श्री नानक जी के पूज्य गुरुदेव कबीर परमेश्वर जी थे। कृप्या निम्न पढ़ें।

विशेष प्रमाण के लिए कबीर सागर (स्वसमबेदबोध) पष्ठ न. 158 से 159 से सहाभार :-

नानकशाह कीन्हा तप भारी। सब विधि भये ज्ञान अधिकारी।।
भक्ति भाव ताको समिझाया। तापर सतगुरु कीनो दाया।।
जिंदा रूप धरयो तब भाई। हम पंजाब देश चलि आई।।
अनहद बानी कियौ पुकारा। सुनिकै नानक दरश निहारा।।
सुनिके अमर लोककी बानी। जानि परा निज समरथ ज्ञानी।।

नानक वचन

आवा पुरूष महागुरु ज्ञानी। अमरलोकी सुनी न बानी।।
अर्ज सुनो प्रभु जिंदा स्वामी। कहँ अमरलोक रहा निजधामी।।
काहु न कही अमर निजबानी। धन्य कबीर परमगुरु ज्ञानी।।
कोई न पावै तुमरो भेदा। खोज थके ब्रह्मा चहुँ वेदा।।

जिन्दा वचन

नानक तुम बहुतै तप कीना। निरंकार बहुते दिन चीन्हा।।
निरंकारते पुरूष निनारा। अजर द्वीप ताकी टकसारा।।
पुरूष बिछोह भयौ तव(त्व) जबते। काल कठिन मग रोंक्यौ तबते।।
इत तव(त्व) सरिस भक्त नहिं होई। क्यों कि परमपुरूष न भेटेंउ कोई।।
जबते हमते बिछुरे भाई। साठि हजार जन्म भक्त तुम पाई।।
धरि धरि जन्म भक्ति भलकीना। फिर काल चक्र निरंजन दीना।।
गहु मम शब्द तो उतरो पारा। बिन सत शब्द लहै यम द्वारा।।
तुम बड़ भक्त भवसागर आवा। और जीवकी कौन चलावा।।
निरंकार सब सृष्टि भुलावा। तुम करि भक्तिलौटि क्यों आवा।।

नानक वचन

धन्य पुरूष तुम यह पद भाखी। यह पद हमसे गुप्त कह राखी।।
जबलों हम तुमको नहिं पावा। अगम अपार भर्म फैलावा।।
कहो गोसाँई हमते ज्ञाना। परमपुरूष हम तुमको जाना।।
धनि जिंदा प्रभु पुरूष पुराना। बिरले जन तुमको पहिचाना।।

जिन्दा वचन

भये दयाल पुरूष गुरु ज्ञानी। दियो पान परवाना बानी।।
भली भई तुम हमको पावा। सकलो पंथ काल को ध्यावा।।
तुम इतने अब भये निनारा। फेरि जन्म ना होय तुम्हारा।।
भली सुरति तुम हमको चीन्हा। अमर मंत्र हम तुमको दीन्हा।।
स्वसमवेद हम कहि निज बानी। परमपुरूष गति तुम्हैं बखानी।।

नानक वचन

धन्य पुरूष ज्ञानी करतारा। जीवकाज प्रकटे संसारा।।
धनि (धन्य) करता तुम बंदी छोरा। ज्ञान तुम्हार महाबल जोरा।।
दिया नाम दान किया उबारा। नानक अमरलोक पग धारा।।

भावार्थ :- परम पूज्य कबीर प्रभु एक जिन्दा महात्मा का रूप बना कर श्री नानक जी से मिलने पंजाब में गए तब श्री नानक साहेब जी से वार्ता हुई। तब परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि आप जैसी पुण्यात्मा जन्म-मत्यु का कष्ट भोग रहे हो फिर आम जीव का कहाँ ठिकाना है? जिस निरंकार को आप प्रभु मान कर पूज रहे हो पूर्ण परमात्मा तो इससे भी भिन्न है। वह मैं ही हूँ। जब से आप मेरे से बिछुड़े हो साठ हजार जन्म तो अच्छे-2 उच्च पद भी प्राप्त कर चुके हो (जैसे सतयुग में यही पवित्र आत्मा राजा अम्ब्रीष तथा त्रेतायुग में राजा जनक(जो सीता जी के पिता जी थे) हुए तथा कलियुग में श्री नानक साहेब जी हुए।) फिर भी जन्म मत्यु के चक्र में ही हो। मैं आपको सतशब्द अर्थात् सच्चा नाम जाप मन्त्र बताऊँगा उससे आप अमर हो जाओगे। श्री नानक साहेब जी ने प्रभु कबीर से कहा कि आप बन्दी छोड़ भगवान हो, आपको कोई बिरला सौभाग्यशाली व्यक्ति ही पहचान सकता है।

कबीर सागर के अध्याय ''अगम निगम बोध'' में पष्ठ नं. 44 पर शब्द है :-

।।नानक वचन।।

।।शब्द।।

वाह वाह कबीर गुरु पूरा है।
पूरे गुरु की मैं बलि जावाँ जाका सकल जहूरा है।।
अधर दुलिच परे है गुरुनके शिव ब्रह्मा जह शूरा है।।
श्वेत ध्वजा फहरात गुरुनकी बाजत अनहद तूरा है।।
पूर्ण कबीर सकल घट दरशै हरदम हाल हजूरा है।।
नाम कबीर जपै बड़भागी नानक चरण को धूरा है।।

विशेष विवेचन :- बाबा नानक जी ने उस कबीर जुलाहे (धाणक) काशी वाले को सत्यलोक (सच्चखण्ड) में आँखों देखा तथा फिर काशी में धाणक (जुलाहे) का कार्य करते हुए तथा बताया कि वही धाणक रूप (जुलाहा) सत्यलोक में सत्यपुरुष रूप में भी रहता है तथा यहाँ भी वही है।

श्री नानक जी ने बचपन में श्री बजलाल पाण्डे जी से गीता जी को समझा था। पूर्ण परमेश्वर कबीर जी के दर्शन के पश्चात् उन्हीं से प्राप्त तत्त्वज्ञान के आधार से उसी पाण्डे से गीता जी के सात श्लोकों के विषय में पूछा। श्री बजलाल पाण्डे निरूत्तर हो गया। अपनी बेइज्जती जान कर श्री नानक जी से ईर्ष्या करने लगा तथा श्री नानक जी के माता-पिता को तथा अन्य हिन्दुओं को कहा कि श्री नानक तो अपने भगवानों का अपमान करता है। जिससे लोगों ने श्री नानक जी की बातों को ध्यान से नहीं सुना। वे सात श्लोक निम्न हैं -

श्री बजलाल पाण्डे से श्री नानक जी ने पूछा आप कहते हो कि गीता जी का ज्ञान श्री कष्ण जी ने बोला तथा श्री कष्ण जी ही श्री विष्णु अवतार हैं। श्री विष्णु जी अजन्मा, सर्वेश्वर, अविनाशी हैं। इनके कोई माता-पिता नहीं हैं। आप यह भी कहते हो कि रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव है। यही त्रिगुण माया है। परन्तु गीता ज्ञान दाता प्रभु (1). गीता अध्याय 2 श्लोक 12 में तथा (2). अध्याय 4 श्लोक 5 में अपने आप को नाशवान कह रहा है कि मेरे तो जन्म तथा मत्यु होते हैं तथा (3). अध्याय 15 श्लोक 4 तथा (4). अध्याय 18 श्लोक 62 में गीता ज्ञान दाता प्रभु किसी अन्य परमेश्वर की शरण में जाने को कह रहा है तथा उसी की साधना से सर्व सुख तथा पूर्ण मोक्ष संभव है। मैं (गीता ज्ञान दाता) भी उसी की शरण में हूँ। (5). गीता अध्याय 7 श्लोक 15 में गीता ज्ञान दाता प्रभु कह रहा है कि जिनका ज्ञान त्रिगुण माया के द्वारा हरा जा चुका है।

भावार्थ है कि जो साधक तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) की पूजा करते हैं। इनसे अन्य प्रभु की साधना नहीं करते। जिनकी बुद्धि इन्हीं तक सीमित है वे राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए मनुष्यों में नीच, दुष्कर्म करने वाले, मूर्ख मुझे नहीं भजते। उपरोक्त तीनों प्रभुओं (गुणों) की पूजा मना है। फिर गीता ज्ञान दाता ब्रह्म (काल) (6). अध्याय 7 श्लोक 18 में अपनी साधना को (अनुत्तमाम्) अति घटिया कह रहा है। इसलिए गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में कहा है कि पूर्ण मोक्ष तथा परम शान्ति के लिए उस परमेश्वर की शरण में जा, (7). गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में प्रमाण है कि उसके लिए किसी तत्त्वदर्शी संत की खोज कर। मैं उस परमात्मा के विषय में पूर्ण जानकारी नहीं रखता। उसी तत्त्वदष्टा संत द्वारा बताए ज्ञान अनुसार उस परमेश्वर की भक्ति कर। यही प्रश्न परमेश्वर कबीर साहेब जी ने श्री नानक जी से बेई दरिया के किनारे किया था। जिस तत्त्वज्ञान को समझ कर तथा कबीर परमेश्वर के सतपुरुष रूप में सतलोक (सच्चखण्ड) में तथा धाणक रूप में बनारस (काशी में) दर्शन करके समर्पण करके तत्त्वज्ञान को जन-जन तक पहुँचाया तथा पूर्ण मोक्ष प्राप्त किया।

विशेष :- पवित्र सिक्ख समाज इस बात से सहमत नहीं है कि श्री नानक साहेब जी के गुरु जी काशी वाला धाणक (जुलाहा) कबीर साहेब जी थे। इसके विपरीत श्री नानक साहेब जी को पूर्ण ब्रह्म कबीर साहेब जी का गुरु जी कहा है। परन्तु श्री नानक साहेब जी के पूज्य गुरु जी का नाम क्या है? इस विषय में पवित्र सिक्ख समाज मौन है, जबकि स्वयं श्री गुरु नानक साहेब जी श्री गुरु ग्रन्थ साहेब जी में महला 1 की अमतवाणी में स्वयं स्वीकार करते हैं कि मुझे गुरु जी जिंदा रूप में आकार में मिले। वही धाणक(जुलाहा) रूप में सत् कबीर (हक्का कबीर) नाम से पथ्वी पर भी थे तथा ऊपर अपने सच्चखण्ड में भी वही विराजमान है जिन्होंने मुझे अमत नाम प्रदान किया।

आदरणीय श्री नानक साहेब जी का आविर्भाव सन् 1469 तथा सतलोक वास सन् 1539 ''पवित्र पुस्तक जीवनी दस गुरु साहिबान''। आदरणीय कबीर साहेब जी धाणक रूप में मतमण्डल में सन् 1398 में सशरीर प्रकट हुए तथा सशरीर सतलोक गमन सन् 1518 में ''पवित्र कबीर सागर''। दोनों महापुरुष 49 वर्ष तक समकालीन रहे। श्री गुरु नानक साहेब जी का जन्म पवित्र हिन्दू धर्म में हुआ। प्रभु प्राप्ति के बाद कहा कि ''न कोई हिन्दू न मुसलमाना'' अर्थात् अज्ञानतावश दो धर्म बना बैठे। सर्व एक परमात्मा सतपुरुष के बच्चे हैं। श्री नानक देव जी ने कोई धर्म नहीं बनाया, बल्कि धर्म की बनावटी जंजीरों से मानव को मुक्त किया तथा शिष्य परम्परा चलाई। जैसे गुरुदेव से नाम दीक्षा लेने वाले भक्तों को शिष्य बोला जाता है, उन्हें पंजाबी भाषा में सिक्ख कहने लगे। जैसे आज इस दास के लाखों शिष्य हैं, परन्तु यह धर्म नहीं है। सर्व पवित्र धर्मों की पुण्यात्माएं आत्म कल्याण करवा रही हैं। यदि आने वाले समय में कोई धर्म बना बैठे तो वह दुर्भाग्य ही होगा। भेदभाव तथा संघर्ष की नई दीवार ही बनेगी, परन्तु लाभ कुछ नहीं होगा।

विशेष :- केवल एक ही बात को ''कि कौन किसका गुरु तथा कौन किसका शिष्य है'' वाद-विवाद का विषय न बना कर सच्चाई को स्वीकार करना चाहिए। कुछ देर के लिए श्री नानक साहेब जी को परमात्मा कबीर साहेब (कविर्देव) जी का गुरु जी मान लें। यह विचार करें कि इन महापुरुषों ने गुरु-शिष्य की भूमिका करके हमें कितनी अनमोल वाणी रच कर दी हैं तथा हम कितना उनका अनुशरण कर पा रहे हैं।

आज किसी व्यक्ति का जन्म पवित्र हिन्दू धर्म में है, वह अपनी साधना तथा ईष्ट को सर्वोच्च मान रहा है। मत्यु उपरान्त उसी पुण्यात्मा का जन्म पवित्र सिक्ख धर्म में हुआ तो फिर वह उसी

साधना को उत्तम मान कर निश्चिंत हो जाएगा, फिर पवित्र मुसलमान धर्म में जन्म मिला तो उपरोक्त साधनाओं के विपरीत पूजा पर आरूढ़ होगा तथा फिर पवित्र ईसाई धर्म में जन्म हुआ तो केवल उसी पूजा पर आधारित हो जाएगा। फिर कभी पवित्र आर्य समाज में वही पुण्यात्मा जन्म लेगी तो केवल हवन यज्ञ करने को ही मुक्ति मार्ग कहेगा। यदि वही पुण्यात्मा पवित्र जैन धर्म में पहुँचेगी तो हो सकता है निवस्त्र रह कर या मुख पर कपड़ा बांध कर नंगे पैरों चलना ही मुक्ति का अन्तिम साधन होगा। उपरोक्त जन्म पूर्ण परमात्मा की भक्ति न मिलने तक होते रहेंगे, क्योंकि द्वापर युग तक अपने पूर्वज एक ही थे तथा वेदों अनुसार पूजा करते थे, अन्य धर्मों की स्थापना नहीं हुई थी। जब श्री गुरु गोबिन्द साहेब जी ने पाँच प्यारों को चुना उनमें से 1. श्री दयाराम जी लाहौर के खत्री परिवार से हिन्दू थे। 2. श्री धर्मदास जी इन्द्रप्रस्थ(दिल्ली) के जाट(हिन्दू) थे। 3. भाई मुहकम चन्द जी 'छीबे' हिन्दू द्वारका वासी 4. भाई साहिब चन्द जी 'नाई' हिन्दू बीदर निवासी 5. भाई हिम्मतमल जी 'झींवर' हिन्दू जगन्नाथ पुरी (उड़ीसा) निवासी थे(''जीवन दस गुरु साहिबान'' लेखक सोढ़ी तेजा सिंह, प्रकाशक भाई चतर सिंघ, जीवन सिंघ अमतसर, पष्ठ नं. 343-344)। इसलिए अपने संस्कार मिले-जुले हैं। भले ही उपरोक्त पंच प्यारे उस समय अपनी भक्ति साधना गुरुग्रन्थ साहेब के अनुसार गुरूओं की आज्ञा अनुसार कर रहे थे परन्तु सर्व हिन्दू समाज से सम्बन्ध रखते थे। उस समय गुरूओं के अनुयाईयों को सिक्ख कहते थे। हिन्दी भाषा में शिष्य कहते हैं। इस कारण से एक अलग भक्ति मार्ग पर चलने वाले जन समूह को सिक्ख कहने लगे। अब यह एक अलग धर्म का रूप धारण कर गया है। जैसे वर्तमान में कई पंथों के लाखों अनुयाई हैं। उनको भी अन्य नामों से सम्बोधित किया जाता है। जैसे राधास्वामी पंथ के अनुयाईयों को कहते हैं ये तो राधास्वामी हैं। परन्तु ये सर्व धर्मों के व्यक्त्यिों का समूह है। हो सकता है आने वाले समय में यह एक अलग धर्म का रूप धारण करले परन्तु वर्तमान में अधिकतर हिन्दू समाज और सिक्ख समाज के व्यक्ति हैं।

जो व्यक्ति मांस आहार, मदिरापान तथा अन्य नशीली वस्तु जैसे तम्बाकु(बीड़ी, सिगरेट, हुक्का आदि में) सेवन करता है तथा लूट-खसौट, जीव हिंसा करता है तथा बहन-बेटियों को बुरी नजर से देखता है वह न तो हिन्दू है - न मुसलमान - न सिक्ख - न ईसाई। क्या उपरोक्त बुराई करने का सर्व पवित्र धर्मों के सद्ग्रन्थों में विवरण है? नहीं। उपरोक्त बुराई युक्त व्यक्ति कभी प्रभु प्राप्ति नहीं कर सकता तथा न ही वह धार्मिक हो सकता।

एक समय यह दास एक दोस्त सिक्ख अधिकारी के साथ किसी सिक्ख की शादी में गया। वहाँ पर श्री गुरु ग्रन्थ साहेब जी के अखण्ड पाठ का भोग पड़ा। सर्व उपस्थित व्यक्तियों ने प्रसाद लिया। फिर खाना खाने के लिए साथ में ही लगे टैंट में प्रवेश हुए। जहाँ पवित्र अमतवाणी का भोग पड़ा था तथा जहाँ खाना खाया, दोनों के बीच केवल कनात(कपड़ा) लगी थी। खाने को मांस तथा पीने को मदिरा सरे आम थी। जो पाठ कर रहे थे वे भी सर्व प्रथम उसी आहार को प्रेम पूर्वक कर रहे थे। इसलिए सर्व प्रथम हिन्दू तो हिन्दू बनें, मुसलमान बनें मुसलमान, ईसाई बनें ईसाई तथा सिक्ख बनें सिक्ख। फिर हम प्रभु भक्ति करने योग्य होंगे। प्रभु साधना भी अपने सद्ग्रन्थों में वर्णित विधि अनुसार करने से प्रभु प्राप्ति होगी अन्यथा मानव शरीर व्यर्थ हो जाएगा।

हम एक कुल मालिक की संतान हैं। सत्ज्ञान न होने से हिन्दू-मुसलमान के झगड़े, हिन्दू-सिक्ख के झगड़े, मुसलमान-ईसाई के झगड़े धर्म के श्रेष्ठता और अश्रेष्ठता के कारण हैं। विश्व युद्ध में भी इतना रक्तपात नहीं हुआ होगा, जितना धर्म के खतरे की आड़ में हो चुका है। धार्मिकता के खतरे

की तरफ ध्यान न देने से अनेक बुराईयां सर्व पवित्र धर्मों में घर कर चुकी हैं। सर्व पवित्र धर्मों में एक प्रतिशत व्यक्ति होते हैं जो 99 प्रतिशत को आपस में लड़वा कर मरवा देते हैं। इसके विपरीत हिन्दू-हिन्दू को मार रहा है, सिक्ख-सिक्ख को काट रहा है, मुसलमान - मुसलमान को परेशान कर रहा है, ईसाई - ईसाई का दुश्मन बना हुआ है, आर्य समाजी - आर्य समाजी पर ही मुकद्मे किए बैठा है, कबीर पंथी - कबीर पंथियों के दुश्मन बने हैं तथा अन्य आश्रमों तथा डेरों के महन्तों व सन्तों के आपस में कत्ले आम तथा मुकद्में तत्त्वज्ञान के अभाव के कारण ही हो रहे हैं।

मुझ दास का जन्म पवित्र हिन्दू धर्म में हुआ तथा वर्तमान में जो भी पूजाऐं उपलब्ध थी सभी कर रहा था। 17 फरवरी 1988 (फाल्गुन मास की अमावस्या विक्रमी संवत् 2045) को तत्त्वदर्शी संत परम पूज्य स्वामी रामदेवानन्द जी महाराज के दर्शन हुए। उन्होंने जब मुझे यह शास्त्र आधारित तत्त्वज्ञान सुनाया, प्रथम बार ऐसा लगा जैसे किसी नास्तिक से मिलन हो गया हो और मन में आया कि ऐसे व्यक्ति के तो दर्शन भी व्यर्थ होते हैं जो हमारे देवी-देवताओं, ब्रह्मा-विष्णु-महेश तथा ब्रह्म से भी ऊपर कोई शक्ति बता रहा है। जब इस दास ने महाराज जी के द्वारा बताए शास्त्रों का अध्ययन उनकी पोल खोलने के लिए किया तो मेरी ही पोल खुल गई कि मैं सर्व साधना अपने ही पवित्र शास्त्रों (पवित्र गीता जी व पवित्र वेदों) के विरूद्ध ही कर रहा था। अब दास की प्रार्थना है कि सर्व भक्तजनों को एक बार अवश्य खेद होगा, परन्तु उपरोक्त सद्ग्रन्थों को प्रभु को साक्षी रख कर पुनः पढें तथा मुझ दास के पास सर्व पवित्र धर्मों के सदग्रन्थों के आधार पर वास्तविक भक्ति मार्ग है। निःशुल्क उपदेश प्राप्त करके अपना तथा अपने प्यारे परिवार का कल्याण करवायें।

जीव हमारी जाति है, मानव धर्म हमारा। हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, धर्म नहीं कोई न्यारा।।
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, आपस में हैं भाई–भाई। आर्य, जैनी और बिश्नोई, एक प्रभु के बच्चे सोई।।
कबीरा खड़ा बाजार में, सब की माँगे खैर। ना काहूँ से दोस्ती, ना काहूँ से बैर।।

स्वस्मबेद बोध पृष्ठ 160 से 162 पर सामान्य ज्ञान है।

स्वस्मबेद बोध पृष्ठ 163 का सारांश :-

''मृत्यु के समय जीव जिस रास्ते से जाता है, उसके भविष्य का ज्ञान''

''अथ जीव के अंत काल वाली वाणी''

अंतकाल जब जिवको आवै। यथा कर्म तस देही पावै।।
हेठ (गुदा) द्वार जब जीव निकाशा। नरक खानिमें ताको बासा।।
गिरे नरक शीस बल जाई। ताही में पुनि रहै समाई।।
नाभिद्वार जो प्रान चलाना। जलचर योनि माहिं प्रकटाना।।
मुत्रद्वार कर जीव पयाना। पशु योनिमें तासु ठिकाना।।
मुख द्वारते जिव कढ़ि आवै। अन्न खानि में बासा पावै।।
श्वास द्वारते जिव जब जाता। अंडज खानि में सो प्रकटाता।।
नेत्र द्वार जब जीव सिधारा। मक्खी आदिक तन सो धारा।।
श्रवण द्वारते जिव जब चाला। प्रेत देह पावै ततकाला।।
दशमद्वारते निकसै प्राना। राजा होय भोग विधि नाना।।
रंभ द्वारते जिव जब जाता। परम पुरूष के लोक समाता।।

इन वाणियों में ''नाभि द्वार'' का भी वर्णन है। इसको संत गरीबदास जी ने कहा है ''बड़वानल का द्वार है नाभि–नाभि के नीचे'' **अन्य दस द्वार तो सामान्य संत-भक्त भी जानता है, परंतु बारहवें**

द्वार का ज्ञान केवल इस लेखक (रामपाल दास) को है। अन्य को नहीं है। नाभि द्वार शरीर के अंदर ही खुलता है। इसलिए इसको मुख्य द्वारों में नहीं गिना जाता।

पष्ठ 164 से 170 तक चार मुक्तियों तथा कबीर परमेश्वर का अंतर्ध्यान होने का गलत प्रकरण है। ठीक पढ़ें इसी पुस्तक में कबीर चरित्र बोध के सारांश में।

स्वस्मबेद बोध पष्ठ 165 पर सतनाम का कुछ सांकेतिक वर्णन है।

तीन अंश आगे परमाना। ओहं–सोहं को अस्थाना।।
आठ अंश तहवां उपजाए। अंश बंश अस्थान बनाए।।
ओहं–सोहं होत उचारा। जन्म रोगा का यही उपचारा।।

स्वस्मबेद बोध पष्ठ 171 का सारांश :-

इस पष्ठ पर वह अमतवाणी लिखी है जिसमें महापुरूष कलयुग के पाँच हजार पाँच सौ पाँच (5505) वर्ष बीत जाने के पश्चात् यथार्थ कबीर पंथ प्रारम्भ होगा और जो महापुरूष उस पंथ का संचालक-प्रवर्तक होगा, वह अपने ज्ञान को पूरे विश्व में फैलाएगा। परमेश्वर कबीर जी का ज्ञान संसार में फैलेगा तथा सारा संसार भक्ति करेगा।

स्वस्मबेद बोध पष्ठ 170 पर कुछ वाणी लिखी हैं :-

''स्वस्मबेद बोध की स्फुट वार्ता-चौपाई''

एक लाख असी हजारा। पीर पैगंबर और औतारा।।
सो सब आही निरंजन बंशा। तन धर करें निज पिता प्रशंसा।।६७०

दश औतार निरंजन केरे। राम कष्ण सब मांही बडेरे।।
पूरण आप निरंजन होई। यामें फेर फार नहीं कोई।।

भावार्थ :- जो मुसलमान धर्म में एक लाख अस्सी हजार पैगंबर माने गए हैं। हजरत मुहम्मद जी अंतिम नबी (पैगम्बर) माने गए हैं। ये तथा अन्य अवतार जो हिन्दू धर्म में माने जाते हैं। ये सबके सब काल निरंजन के अंश थे और संसार में जन्म लेकर काल की महिमा बताकर काल के पंथ का प्रचार करने आए थे। हिन्दू धर्म में दश अवतार माने गए हैं। उनमें से मुख्य श्री रामचन्द्र तथा श्री कष्ण चन्द्र जी हैं। काल निरंजन इनमें सर्व शक्तिशाली है। कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि मैं जो कह रहा हूँ, इसमें कोई हेरफेर नहीं है अर्थात् यह सत्य है। पष्ठ 171 पर अंकित वाणियों में कहा है कि पूर्ण परमात्मा का यथार्थ ज्ञान देने के लिए मेरा भेजा हुआ मेरा अंश उस समय आएगा, जब कलयुग पाँच हजार पाँच सौ पाँच (5505) वर्ष बीत जाएगा। वह मेरी सत्य साधना का फरमान (संदेश) लेकर आएगा। उस समय हिन्दू तुर्क यानि मुसलमान या अन्य सब धर्मों में जितने जीव संसार में हैं, वे सत्यनाम की महिमा से परिचित होकर निर्वाण (मोक्ष) मार्ग को ग्रहण करेंगे। जितने भी धर्म के नाम के पंथ हैं तथा काल द्वारा भ्रमित करके परमेश्वर कबीर जी के नाम से 12 पंथ चलाए गए हैं, वे सब तत्त्वज्ञान जो वह महापुरूष प्रमाणित करके बताएगा, उसको सुनकर तथा समझकर उस महापुरूष द्वारा चलाए गए तेरहवें यथार्थ कबीर पंथ में स्वतः आकर ऐसे मिल जाएंगे जैसे सरित गण यानि दरियाओं का समूह अपने आप विवश हुआ समुद्र में मिलकर एक हो जाते हैं। इसी प्रकार सर्व धर्म समूह एक हो जाएंगे। जब तक वह निर्धारित समय नहीं आता (5505 वर्ष कलयुग का) तब तक मनुष्यों में छल-कपट, चतुराई करके कर्म खराब करना बना रहेगा और जो यह ज्ञान मैं स्वस्मबेद बोध में कह रहा हूँ, यह भी निराधार लगेगा। जब

वह समय आएगा, सब ही स्त्री-पुरूष शुद्ध आचरण वाले होकर कपट-चतुराई त्यागकर कबीर परमेश्वर जी की शरण प्राप्त करेंगे।

जो धर्म के नाम पर भ्रमित करके काल द्वारा चलाए गए अनेकों पंथ हैं। ये सब फिर से एक हो जाएंगे। उस महापुरूष से सतनाम आदि सर्व मंत्रों की दीक्षा लेकर सब दीक्षित हंस सत्यलोक को जाएंगे। घर-घर में मेरे ज्ञान की चर्चा होगी। कपा पढ़ें निम्न वाणियाँ :-

''स्वसमबेद बोध'' पष्ठ 171 से कुछ वाणियाँ :-

दोहा–पांच सहंस अरू पाँच सौ पाँच, जब कलियुग बीत जाय।
महापुरूष फरमान तब, जग तारन को आय।।
हिन्दु तुर्क आदिक सबै, जेते जीव जहान।
सत्य नाम की साख गहि, पावैं पद निर्बान।।
यथा सरितगण आपही, मिलैं सिन्धु में धाय।
सत्य सुकत के मध्ये तिमि, सबही पंथ समाय।।
जब लगि पूरण होय नहीं, ठीके को तिथि वार।
कपट चातुरी तबहिलों, स्वसमबेद निरधार।।
सबहिं नारि नर शुद्ध तब, जब ठीके का दिन आवन्त।
कपट चातुरी छोड़ि के, शरण कबीर गहंत।।
एक अनेक है गयो, पुनि अनेक हो एक।
हंस चलै सतलोक सब, सत्यनाम की टेक।।
घर–घर बोध विचार हो, दुमर्ति दूर बहाय।
कलयुग में सब एक होई। बरतें सहज सुभाय।।
कहाँ उगर कहाँ शुद्र हो। हरै सबकी भव पीर(पीड़)।
सो समान समदष्टि है। समरथ सत्य कबीर।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने बताया है कि मेरी महिमा के ज्ञान की घर-घर चर्चा चलेगी। सबकी दुर्मति समाप्त हो जाएगी। सब परमात्मा से डरने वाले होंगे, कोई शराब, तम्बाकू, माँस का सेवन नहीं करेगा। चोरी, जारी (व्याभिचार), डाके डालना, रिश्वत लेना पाप जानकर सब छोड़ देंगे। शुद्ध होकर सहज स्वभाव से रहा करेंगे। माया जोड़ने की प्रवति समाप्त हो जाएगी। चाहे कोई डाकू हो, चाहे अन्य मलीन कर्म करने वाला व्यक्ति हो, वह सब बुरे कर्म त्यागकर उस पंथ में दीक्षा लेंगे। सब साधकों की भवपीर यानि संसारिक कष्ट हरेगा यानि सर्व दुःख दूर करेगा। उस पंथ का प्रवर्तक स्वयं कबीर परमेश्वर समान भक्ति-शक्ति समर्थ होगा। सबको समान दष्टि से देखेगा यानि ऊँच-नीच जाति आधार से किसी में अंतर नहीं करेगा, न राजा तथा रंक में कोई अंतर रहेगा। राजा भी अपने को जनता का सेवक मानकर अपना कर्तव्य करेगा तथा भक्ति को प्राथमिकता देकर जीवन सफल करने के उद्देश्य से कार्य करेगा। इस प्रकार सर्व संसार मोक्ष प्राप्ति का उद्देश्य लेकर जीया करेगा। सबका मोक्ष होगा जो उस संत से दीक्षा लेकर आजीवन मर्यादा में रहकर भक्ति करेगा। स्वस्मवेद बोध अध्याय का सारांश सम्पूर्ण हुआ।

कबीर सागर के अध्याय ''स्वस्मवेद बोध'' का सारांश सम्पूर्ण हुआ।

।।सत साहेब।।

अध्याय ''धर्म बोध'' का सारांश

कबीर सागर में 33वां अध्याय ''धर्म बोध'' पृष्ठ 177(1521) पर है। इस अध्याय में परमेश्वर कबीर जी ने धर्म करने का विशेष ज्ञान बताया है। यह भी स्पष्ट किया है कि कबीर परमेश्वर के सच्चे पंथ में दिन में तीन बार संध्या की जाती है। संध्या का अर्थ है दो वक्त का मिलन। एक संध्या सुबह उससे दिन और रात्रि का मिलन होता है, रात्रि विदा हाती है, दिन का शुभारंभ होता है। दूसरी संध्या दिन के बारह बजे होती है। उस समय चढ़ते दिन का दोपहर पूरा होता है, ढ़लते दिन की शुरूआत होती है, यह मध्य दिन की संध्या है। तीसरी संध्या शाम के समय होती है। उस समय दिन और रात्रि का मिलन होता है। वैसे आम जन शाम को संध्या कहते हैं। संध्या का अर्थ परमात्मा की स्तुति करना भी होता है।

वेदों में प्रमाण है कि जो जगत का तारणहार होगा, वह तीन बार की संध्या करता तथा करवाता है। सुबह और शाम पूर्ण परमात्मा की स्तुति-आरती तथा मध्यदिन में विश्व के सब देवताओं की स्तुति करने को कहता है। प्रमाण :- ऋग्वेद मण्डल नं. 8 सूक्त 1 मंत्र 29 में तथा यजुर्वेद अध्याय 19 मंत्र 26 में है।

कबीर सागर में धर्म बोध अध्याय में पृष्ठ 177 पर भी यही प्रमाण है।

सांझ सकार मध्याह सन्ध्या तीनों काल।
धर्म कर्म तत्पर सदा कीजै सुरति सम्भाल।।

भावार्थ :- भक्तजनों को चाहिए कि तीनों काल (समय) की संध्या करे। सांझ यानि शाम को सकार यानि सुबह तथा मध्याहन् यानि दोपहर (दिन के मध्य) में संध्या करते समय सुरति यानि ध्यान आरती में बोली गई वाणी में रहे और धर्म के कार्य में सदा तैयार रहे, आलस नहीं करे।

धर्म बोध पृष्ठ 178(1522) पर :-

कबीर कोटिन कंटक घेरि ज्यों नित्य क्रिया निज कीन्ह।
सुमिरन भजन एकांत में मन चंचल गह लीन।।

भावार्थ :- भक्त के ऊपर चाहे करोड़ों कष्ट पड़े, परंतु अपनी नित्य की क्रिया (तीनों समय की संध्या) अवश्य करनी चाहिए तथा चंचल मन को रोककर एकान्त में परमात्मा की दीक्षा वाले नाम का जाप करें।

कबीर भक्तों अरू गुरू की सेवा कर श्रद्धा प्रेम सहित।
परम प्रभु (सत्य पुरूष) ध्यावही करि अतिश्य मन प्रीत।।

भावार्थ :- अपने गुरूदेव तथा सत्संग में या घर पर आए भक्तों की सदा आदर के साथ सेवा करें। श्रद्धा तथा प्रेम से सेवा करनी चाहिए। परम प्रभु यानि परम अक्षर पुरूष की भक्ति अत्यधिक प्रेम से करें।

''भक्त जती तथा सती होना चाहिए''

''जति के लक्षण''

पुरूष यति (जति) सो जानिये, निज त्रिया तक विचार। माता बहन पुत्री सकल और जग की नार।।

भावार्थ :- यति पुरूष उसको कहते हैं जो अपनी स्त्री के अतिरिक्त अन्य स्त्री में पति-पत्नी वाला भाव न रखें। परस्त्री को आयु अनुसार माता, बहन या बेटी के भाव से जानें।

''सति स्त्री के लक्षण''

स्त्रि सो जो पतिव्रत धर्म धरै, निज पति सेवत जोय।।
अन्य पुरूष सब जगत में पिता भ्रात सुत होय।।
अपने पति की आज्ञा में रहै, निज तन मन से लाग।।
पिया विपरीत न कछु करै, ता त्रिया को बड़ भाग।।

भावार्थ :- सती स्त्री उसको कहते हैं जो अपने पति से लगाव रखे। अपने पति के अतिरिक्त संसार के अन्य पुरूषों को आयु अनुसार पिता, भाई तथा पुत्र के भाव से देखे यानि बरते। अपने पति की आज्ञा में रहे। मन-तन से सेवा करे, कोई कार्य पति के विपरीत न करे।

''दान करना कितना अनिवार्य है''

कबीर, मनोकामना बिहाय के हर्ष सहित करे दान। ताका तन मन निर्मल होय, होय पाप की हान।।
कबीर, यज्ञ दान बिन गुरू के, निश दिन माला फेर। निष्फल वह करनी सकल, सतगुरू भाखै टेर।।
प्रथम गुरू से पूछिए, कीजै काज बहोर। सो सुखदायक होत है, मिटै जीव का खोर।।

भावार्थ :- कबीर परमेश्वर जी ने बताया है कि बिना किसी मनोकामना के जो दान किया जाता है, वह दान दोनों फल देता है। वर्तमान जीवन में कार्य की सिद्धि भी होगी तथा भविष्य के लिए पुण्य जमा होगा और जो मनोकामना पूर्ति के लिए किया जाता है। वह कार्य सिद्धि के पश्चात् समाप्त हो जाता है। बिना मनोकामना पूर्ति के लिए किया गया दान आत्मा को निर्मल करता है, पाप नाश करता है।

❖ पहले गुरू धारण करो, फिर गुरूदेव जी के निर्देश अनुसार दान करना चाहिए। बिना गुरू के कितना ही दान करो और कितना ही नाम-स्मरण की माला फेरो, सब व्यर्थ प्रयत्न है। यह सतगुरू पुकार-पुकारकर कहता है।

❖ प्रथम गुरू की आज्ञा लें, तब अपना नया कार्य करना चाहिए। वह कार्य सुखदायक होता है तथा मन की सब चिंता मिटा देता है।

कबीर, अभ्यागत आगम निरखि, आदर मान समेत। भोजन छाजन, बित यथा, सदा काल जो देत।।

भावार्थ :- आपके घर पर कोई अतिथि आ जाए तो आदर के साथ भोजन तथा बिछावना अपनी वित्तीय स्थिति के अनुसार सदा समय देना चाहिए।

सोई म्लेच्छ सम जानिये, गंही जो दान विहीन। यही कारण नित दान करे, जो नर चतुर प्रविन।।

भावार्थ :- जो ग्रहस्थी व्यक्ति दान नहीं करता, वह तो म्लेच्छ यानि दुष्ट व्यक्ति के समान है। इसलिए हे बुद्धिमान! नित (सदा) दान करो।

पात्र कुपात्र विचार के तब दीजै ताहि दान। देता लेता सुख लह अन्त होय नहीं हान।।

भावार्थ :- दान कुपात्र को नहीं देना चाहिए। सुपात्र को दान हर्षपूर्वक देना चाहिए। सुपात्र गुरूदेव बताया है। फिर कोई भूखा है, उसको भोजन देना चाहिए। रोगी का उपचार अपने वित सामने धन देकर करना, बाढ़ पीड़ितों, भूकंप पीड़ितों को समूह बनाकर भोजन-कपड़े अपने हाथों देना सुपात्र को दिया दान कहा है। इससे कोई हानि नहीं होती।

''धर्म बोध पृष्ठ 179 का सारांश''

कबीर, फल कारण सेवा करै, निशदिन याचै राम। कह कबीर सेवा नहीं, जो चाहै चौगुने दाम।।

भावार्थ :- जो किसी कार्य की सिद्धि के लिए सेवा करता है, दिन-रात परमात्मा से माँगता रहता है। परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि वह सेवा सेवा नहीं जो चार गुणा धन सेवा के बदले

इच्छा करता है।

कबीर, सज्जन सगे कुटम्ब हितु, जो कोई द्वारै आव। कबहु निरादर न कीजिए, राखै सब का भाव।।

भावार्थ :- भद्र पुरूषों, सगे यानि रिश्तेदारों, कुटम्ब यानि परिवारजनों तथा हितु यानि आपके हितैषियों का आपके द्वार पर आना हो तो कभी अनादर नहीं करना चाहिए। सबका भाव रखना चाहिए।

कबीर, कोड़ी–कोड़ी जोड़ी कर कीने लाख करोर। पैसा एक ना संग चलै, केते दाम बटोर।।

भावार्थ :- दान धर्म पर पैसा खर्च किया नहीं, लाखों-करोड़ों रूपये जमा कर लिए। संसार छोड़कर जाते समय एक पैसा भी साथ नहीं चलेगा चाहे कितना ही धन संग्रह कर लो।

जो धन हरिके हेत नहीं, धर्म राह नहीं लगात। सो धन चोर लबार गह, धर छाती पर लात।।

भावार्थ :- जो धन परमात्मा के निमित खर्च नहीं होता, कभी धर्म कर्म में नहीं लगता, उसके धन को डाकू, चोर, लुटेरे छाती ऊपर लात धरकर यानि डरा-धमकाकर छीन ले जाते हैं।

सत का सौदा जो करै, दम्भ छल छिद्र त्यागै। अपने भाग का धन लहै, परधन विष सम लागै।।

भावार्थ :- अपने जीवन में परमात्मा से डरकर सत्य के आधार से सर्व कर्म करने चाहिएं जो अपने भाग्य में धन लिखा है, उसी में संतोष करना चाहिए। परधन को विष के समान समझें।

भूखा जहि घर ते फिरै, ताको लागै पाप। भूखों भोजन जो देत है, कटैं कोटि संताप।।

भावार्थ :- जिस घर से कोई भूखा लौट जाता है, उसको पाप लगता है। भूखों को भोजन देने वालों के करोड़ों विघ्न टल जाते हैं।

प्रथम संत को जीमाइए। पीछे भोजन भोग। ऐसे पाप को टालिये, कटे नित्य का रोग।।

भावार्थ :- यदि आपके घर पर कोई संत (भक्त) आ जाए तो पहले उसको भोजन कराना चाहिए, पीछे आप भोजन खाना चाहिए। इस प्रकार अपने सिर पर नित्य आने वाले पाप के कारण कष्ट को टालना चाहिए।

धर्म बोध पृष्ठ 180 का सारांश :-

कबीर, यद्यपि उत्तम कर्म करि, रहै रहित अभिमान। साधु देखी सिर नावते, करते आदर मान।।

भावार्थ :- अभिमान त्यागकर श्रेष्ठ कर्म करने चाहिऐं। संत, भक्त को आता देखकर शीश झुकाकर प्रणाम तथा सम्मान करना चाहिए।

कबीर, बार–बार निज श्रवणतें, सुने जो धर्म पुराण। कोमल चित उदार नित, हिंसा रहित बखान।।

भावार्थ :- भक्त को चाहिए कि वह बार-बार धर्म-कर्म के विषय में सत्संग ज्ञान सुने और अपना चित कोमल रखे। अहिंसा परम धर्म है। ऐसे अहिंसा संबंधी प्रवचन सुनने चाहिऐं।

कबीर, न्याय धर्मयुक्त कर्म सब करैं, न कर ना कबहू अन्याय। जो अन्यायी पुरूष हैं, बन्धे यमपुर जाऐं।।

भावार्थ :- सदा न्याययुक्त कर्म करने चाहिऐं। कभी भी अन्याय नहीं करना चाहिए। जो अन्याय करते हैं, वे यमराज के लोक में नरक में जाते हैं।

धर्म बोध पृष्ठ 181 का सारांश :-

कबीर, गृह कारण में पाप बहु, नित लागै सुन लोय। ताहिते दान अवश्य है, दूर ताहिते होय।।

कबीर, चक्की चौंकै चूल्ह में, झाडू अरू जलपान। गृह आश्रमी को नित्य यह, पाप पाँचै विधि जान।।

भावार्थ :- गृहस्थी को चक्की से आटा पीसने में, खाना बनाने में चूल्हे में अग्नि जलाई जाती है। चौंका अर्थात् स्थान लीपने में तथा झाडू लगाने तथा खाने तथा पीने में पाँच प्रकार से पाप लगते हैं। हे संसारी लोगो! सुनो! इन कारणों से आपको नित पाप लगते हैं। इसलिए दान करना आवश्यक

है। ये पाप दान करने से ही नाश होंगे।

कबीर, कछु कटें सत्संग ते, कछु नाम के जाप। कछु संत के दर्शते, कछु दान प्रताप।।

भावार्थ :- भक्त के पाप कई धार्मिक क्रियाओं से समाप्त होते हैं। कुछ सत्संग-वचन सुनने से ज्ञान यज्ञ के कारण, कुछ नाम के जाप से, कुछ संत के दर्शन करने से तथा कुछ दान के प्रभाव से समाप्त होते हैं।

जैसे वस्त्र पहनते हैं। मिट्टी-धूल लगने से मैले होते हैं। उनको पानी-साबुन से धोया जाता है। इसी प्रकार नित्य कार्य में पाप लगना स्वाभाविक है। इसी प्रकार वस्त्र की तरह सत्संग वचन, नाम स्मरण, दान व संत दर्शन रूपी साबुन-पानी से नित्य धोने से आत्मा निर्मल रहती है। भक्ति में मन लगा रहता है।

कबीर, जो धन पाय न धर्म करत, नाहीं सद् व्यौहार। सो प्रभु के चोर हैं, फिरते मारो मार।।

भावार्थ :- जो धन परमात्मा ने मानव को दिया है, उसमें से जो दान नहीं करते और न अच्छा आचरण करते हैं, वे परमात्मा के चोर हैं जो माया जोड़ने की धुन में मारे-मारे फिरते हैं। संत गरीबदास जी ने भी कहा है कि :-

जिन हर की चोरी करी और गए राम गुण भूल। ते विधना बागुल किए, रहे ऊर्ध मुख झूल।।

यही प्रमाण गीता अध्याय 3 श्लोक 10 से 13 में कहा है कि जो धर्म-कर्म नहीं करते, जो परमात्मा द्वारा दिए धन से दान आदि धर्म कार्य नहीं करते, वे तो चोर हैं। वे तो अपना शरीर पोषण के लिए ही अन्न पकाते हैं। धर्म में नहीं लगाते, वे तो पाप ही खाते हैं।

''बच्चों को शिक्षा अवश्य दिलानी चाहिए''

कबीर, मात पिता सो शत्रु हैं, बाल पढ़ावैं नाहिं। हंसन में बगुला यथा, तथा अनपढ़ सो पंडित माहीं।।

भावार्थ :- जो माता-पिता अपने बच्चों को पढ़ाते नहीं, वे अपने बच्चों के शत्रु हैं। अशिक्षित व्यक्ति शिक्षित व्यक्तियों में ऐसा होता है जैसे हंस पक्षियों में बगुला। यहाँ पढ़ाने का तात्पर्य धार्मिक ज्ञान कराने से है, सत्संग आदि सुनने से है।

यदि किसी व्यक्ति को आध्यात्मिक ज्ञान नहीं है तो वह शुभ-अशुभ कर्मों को नहीं जान पाता। जिस कारण से वह पाप करता रहता है। जो सत्संग सुनते हैं। उनको सम्पूर्ण कर्मों का तथा अध्यात्म का ज्ञान हो जाता है। वह कभी पाप नहीं करता। वह हंस पक्षी जैसा है जो सरोवर से केवल मोती खाता है, जीव-जंतु, मछली आदि-आदि नहीं खाता। इसके विपरीत अध्यात्म ज्ञानहीन व्यक्ति बुगले पक्षी जैसे स्वभाव का होता है। बुगला पक्षी मछली, कीड़े-मकोड़े आदि-आदि जल के जंतु खाता है। शरीर से दोनों (हंस पक्षी तथा बुगला पक्षी) एक जैसे आकार तथा सफेद रंग के होते हैं। उनको देखकर नहीं पहचाना जा सकता। उनके कर्मों से पता चलता है। इसी प्रकार तत्त्वज्ञान युक्त व्यक्ति शुभ कर्मों से तथा तत्त्वज्ञानहीन व्यक्ति अशुभ कर्मों से पहचाना जाता है।

कबीर, पहले अपने धर्म को, भली भांति सिखलाय। अन्य धर्म की सीख सुनि, भटकि बाल बुद्धि जाय।।

भावार्थ :- बच्चों को या परिवार के अन्य सदस्यों को पहले अपने धर्म का ज्ञान पूर्ण रूप से कराना चाहिए। जिनको अपने धर्म यानि धार्मिक क्रियाओं का ज्ञान नहीं, वह बालक जैसी बुद्धि का होता है। वे अन्य धर्म पंथ की शिक्षा सुनकर भटक जाते हैं। जिनको अपने धर्म (पंथ) का सम्पूर्ण ज्ञान है, वह भ्रमित नहीं होता।

धर्म बोध पृष्ठ 182 का सारांश :-

कबीर, जो कछु धन का लाभ हो, शुद्ध कमाई कीन। ता धन के दशवें अंश को, अपने गुरू को दीन।।

दसवां अंश गुरू को दीजै। अपना जन्म सफल कर लीजै।।

भावार्थ :- शुद्ध नेक कमाई से जो लाभ होता है, उसका दसवां भाग अपने गुरूदेव को दान करना चाहिए।

कबीर, जे गुरू निकट निवास करै, तो सेवा कर नित्य। जो कछु दूर बसै, पल–पल ध्यान से हित।।

भावार्थ :- यदि गुरू जी का स्थान आपके निवास के निकट हो तो प्रतिदिन सेवा के लिए जाइये। यदि दूर है तो उनकी याद पल-पल करनी चाहिए। इससे साधक का हित होता है यानि लाभ प्राप्त होता है।

कबीर, छठे मास गुरू दर्श करन ते, कबहु ना चुको हंस। गुरू दर्श अरू सत्संग, विचार सो उधरै जात है वंश।।
कबीर, छठे मास ना करि सके, वर्ष में करो धाय। वर्ष में दर्श नहिं करे, सो भक्त साकिट ठहराय।।
कबीर, जै गुरू परलोक गमन करे, सीख मानियो शीश। हरदम गुरू को साथ जानि, सुमरो नित जगदीश।।
कबीर, गुरू मरा मत जानियो, वस्त्र त्यागा स्थूल। सूक्ष्म देही गमन करि, खिला अमर वह फूल।।
कबीर, सतलोक में बैठी कर, गुरू निरखै तोहे। गुरू तज ना और मानियो, अध्यात्म हानि होय।।
कबीर, गुरू के शिष्य की जगदीश करै सहाय। नाम जपै अरू दान धर्म में कबहू न अलसाय।।
कबीर, जैसे रवि आकाश से, सबके साथ रहाय। उष्णता अरू प्रकाश को दूरही ते पहुँचाय।।
कबीर, ऐसे गुरू जहाँ बसे सब पर करे रजा। गुरू समीप जानकर सकल विकार करत लजा।।

भावार्थ :- गुरू जी के दर्शन छठे महीने अवश्य करें। सत्संग और गुरू दर्शन से पूरा वंश मुक्त हो जाता है। यदि छठे मास दर्शन नहीं कर सकता तो वर्ष में बेसब्रा होकर यानि अति उत्साह के साथ दर्शन करने जाए। यदि एक वर्ष में गुरू दर्शन नहीं करता है तो वह शिष्य भक्तिहीन माना जाता है।

यदि गुरू जी सतलोक चले गए तो उनकी शिक्षा को आधार मानकर अपना धर्म-कर्म करते रहिए। अपने गुरूदेव को पल-पल अपने साथ समझकर परमेश्वर का भजन करो, जो गुरू जी ने दीक्षा मंत्र दिए हैं, उनका जाप करते रहो।

गुरू जी को मरा नहीं समझे, यह तो स्थूल शरीर त्यागा है जैसे वस्त्र उतार दिए जाते हैं। शरीर तो सुरक्षित रहता है। इसी प्रकार स्थूल शरीर रूपी वस्त्र त्यागा है। नूरी शरीर से सतलोक चले गए हैं। वहाँ पर अमरत्व प्राप्त कर लिया है। आपका इंतजार कर रहे हैं। आपजी को भी तो जाना है। बिना मरे (स्थूल शरीर त्यागे) सत्यलोक जाया नहीं जा सकता। यह तो शिष्यों को भी त्यागना है। फिर गुरू जी के शरीर त्यागने का शोक न करके उनके द्वारा बताई गई साधना करे तथा मर्यादा का पालन करते हुए अपना जीवन सफल बनाऐं।

गुरूदेव सतलोक में बैठकर आपको देख रहा होता है। गुरू जी के संसार छोड़कर जाने के पश्चात् अन्य को गुरू रूप में नहीं देखना, नहीं तो भक्ति की हानि हो जाएगी।

गुरू जी के उपदेशी शिष्य की परमेश्वर सहायता करता है। शिष्य को गुरू जी के बताए नाम जाप तथा दान-धर्म करने में कभी आलस नहीं करना चाहिए।

जैसे सूर्य दूर आकाश से सबको उष्णता तथा प्रकाश प्रदान करता है, सबको अपने साथ दिखाई देता है। इसी प्रकार गुरू जी कहीं पर भी बैठा है, वहीं से अपने भक्तों पर कृपा करता है। गुरू जी को समीप तथा दृष्टा जानकर सब विषय-विकारों को करने में शर्म करके परहेज करे।

धर्म बोध पृष्ठ 183 का सारांश :-

कबीर, केते जनकादिक गही जो निज धर्म प्रवीन। पायो शुभगति आप ही औरनहू मति दीन।।

भावार्थ :- राजा जनक जैसे गृहस्थी अपने धर्म के विद्वान थे यानि मानव कर्म के ज्ञानी थे। जिस कारण से स्वयं भी शुभगति प्राप्त की यानि स्वर्ग प्राप्त किया तथा औरों को भी स्वर्ग प्राप्ति का मार्ग बताया।

कबीर, हरि के हेत न देत, धन देत कुमार्ग माहीं। ऐसे अन्यायी अधम, बांधे यमपुर जाहीं।।

भावार्थ :- जो व्यक्ति धर्म नहीं करते और पैसे का गलत प्रयोग करते हैं, शराब पीते हैं, माँस खाते हैं, तम्बाकू सेवन करते हैं या व्यर्थ के दिखावे में खर्च करते हैं, ऐसे अन्यायी नीच यमलोक यानि नरकलोक में बाँधकर ले जाए जाते हैं।

''भक्त ब्यौहार कैसा हो?''

निजधन के भागी जेते सगे बन्धु परिवार। जैसा जाको भाग है दीजै धर्म सम्भार।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि संपत्ति के जो भी जितने भी भाग के कानूनी अधिकारी हैं, उनको पूरा-पूरा भाग देना चाहिए अपने धर्म-कर्म को ध्यान में रखकर यानि भक्त को चाहिए कि जिसका जितना हिस्सा बनता है, परमात्मा से डरकर पूरा-पूरा बाँट दे।

धर्म बोध पृष्ठ 184 का सारांश :-

कबीर, खाट पड़े तब झखई नयनन आवै नीर। यतन तब कछु बनै नहीं, तनु व्याप मृत्यु पीर।।

भावार्थ :- वृद्ध होकर या रोगी होकर जब मानव चारपाई पर पड़ा होता है और आँखों में आँसू बह रहे होते हैं, उस समय कोई बचाव नहीं हो सकता, मृत्यु के समय होने वाली पीड़ा हो रही होती है। कहते हैं कि जो भक्ति नहीं करते, उनका अन्त समय महाकष्टदायक होता है। उसके प्राण सरलता से नहीं निकलते, उसको इतनी पीड़ा होती है जैसे एक लाख बिच्छुओं ने डंक लगा दिया हो। उस समय यम के दूत उसका गला बंद कर देते हैं। व्यक्ति न बोल सकता है, न पूरा श्वांस ले पाता है। केवल आँखों से आँसू निकल रहे होते हैं। इसलिए भक्ति तथा शुभ कर्म जो ऊपर बताए हैं, मानव को अवश्य करने चाहिऐं।

कबीर, देखे जब यम दूतन को, इत उत जीव लुकाय। महा भयंकर भेष लखी, भयभीत हो जाय।।

भावार्थ :- यम के दूतों का भयंकर रूप होता है। मृत्यु के समय यमदूत उसी धर्म व भक्तिहीन व्यक्ति को ही दिखाई देते हैं। उनको देखकर भय के मारे वह प्राणी शरीर में ही इधर-उधर छुपने की कोशिश करता है।

कबीर, भक्ति दान किया नहीं, अब रह कास की ओट। मार पीट प्राण निकालहीं, जम तोड़ेंगे होठ।।

भावार्थ :- न गुरू किया, न भक्ति और न दान-धर्म किया, अब किसकी ओट में बचेगा? यम के दूत मारपीट करके प्राण निकालेंगे और बिना विचारे चोट मारेंगे यानि बेरहम होकर पीट-पीटकर तेरे होठ फोड़ेंगे। होठ फोड़ना बेरहमी से पीटना अर्थात् निर्दयता से मारेंगे।

धर्म बोध पृष्ठ 185-186 पर सामान्य ज्ञान है।

धर्म बोध पृष्ठ 187 का सारांश :-

कबीर, मान अपमान सम कर जानै, तजै जगत की आश। चाह रहित संस्य रहित, हर्ष शोक नहीं तास।।

भावार्थ :- भक्त को चाहे कोई अपमानित करे, उस और ध्यान न दे। उसकी बुद्धि पर रहम करे और जो सम्मान करता है, उस पर भी ध्यान न दे यानि किसी के सम्मानवश होकर अपना धर्म खराब न करे। हानि-लाभ को परमात्मा की देन मानकर संतोष करे।

कबीर, मार्ग चलै अधो गति, चार हाथ मांही देख। पर तरिया पर धन ना चाहै समझ धर्म के लेख।।

भावार्थ :- भक्त मार्ग पर चलते समय नीचे देखकर चले। भक्त की दृष्टि चलते समय चार

हाथ यानि 6 फुट दूर सामने रहनी चाहिए। धर्म-कर्म के ज्ञान का विचार करके परस्त्री तथा परधन को देखकर दोष दृष्टि न करे।

कबीर, पात्र कुपात्र विचार कर, भिक्षा दान जो लेत। नीच अकर्मी सूम का, दान महा दुःख देत।।

भावार्थ :- संत यानि गुरू को अपने शिष्य के अतिरिक्त दान-भिक्षा नहीं लेनी चाहिए। कुकर्मी तथा अधर्मी का धन बहुत दुःखी करता है।

पृष्ठ 188 पर सामान्य ज्ञान है।

धर्म बोध पृष्ठ 189 पर :-

कबीर, इन्द्री तत्त्व प्रकृति से, आत्म जान पार। जाप एक पल नहीं छूटै, टूट न पावै तार।।

भावार्थ :- आत्मा को पाँचों तत्त्वों से भिन्न जानै। शरीर आत्मा नहीं है। निरंतर सतनाम का जाप करे।

कबीर, जब जप करि के थक गए, हरि यश गावे संत। कै जिन धर्म पुराण पढ़े, ऐसो धर्म सिद्धांत।।

भावार्थ :- यदि भक्त जाप करते-करते थक जाए तो परमात्मा की महिमा की वाणी पढ़े, यदि याद है तो गाए या अपने धर्म की पुस्तकों को पढ़े, यह धार्मिक सिद्धांत है।

धर्म बोध पृष्ठ 190 का सारांश :-

कबीर, ज्ञानी रोगी अर्थार्थी जिज्ञासू ये चार। सो सब ही हरि ध्यावते ज्ञानी उतरे पार।।

भावार्थ :- परमात्मा की भक्ति चार प्रकार के व्यक्ति करते हैं :-

1. ज्ञानी :- ज्ञानी को विश्वास हो जाता है कि मानव जीवन केवल परमात्मा की भक्ति करके जीव का कल्याण कराने के लिए प्राप्त होता है। उनको यह भी समझ होती है कि केवल एक पूर्ण परमात्मा की भक्ति से मोक्ष होगा, अन्य देवी-देवताओं की भक्ति से जन्म-मरण का क्लेश नहीं कटेगा। पूर्ण सतगुरू से दीक्षा लेकर बात बनेगी। इसलिए ज्ञानी भक्त पार होते हैं।

2. अर्थार्थी :- जो धन लाभ के लिए ही भक्ति करते हैं।

3. आर्त यानि संकट ग्रस्त :- केवल अपने संकट का नाश करने के लिए भक्ति करते हैं।

4. जिज्ञासु :- जिज्ञासु परमात्मा का ज्ञान अधूरा समझते हैं और वक्ता बनकर महिमा की भूख में जीवन नाश कर जाते हैं। यही प्रमाण गीता अध्याय 7 श्लोक 16-17 में भी है।

धर्म बोध पृष्ठ 191 का सारांश :-

कबीर, क्षमा समान न तप, सुख नहीं संतोष समान। तृष्णा समान नहीं ब्याधी कोई, धर्म न दया समान।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि क्षमा करना बहुत बड़ा तप है। इसके समान तप नहीं है। संतोष के तुल्य कोई सुख नहीं है। किसी वस्तु की प्राप्ति की इच्छा के समान कोई आपदा नहीं है और दया के समान धर्म नहीं है।

कबीर, योग (भक्ति) के अंग पाँच हैं, संयम मनन एकान्त। विषय त्याग नाम रटन, होये मोक्ष निश्चिन्त।।

भावार्थ :- भक्ति के चार आवश्यक पहलु हैं। संयम यानि प्रत्येक कार्य में संयम बरतना चाहिए। धन संग्रह करने में, बोलने में, खाने-पीने में, विषय भोगों में संयम रखे यानि भक्त को कम बोलना चाहिए, विषय विकारों का त्याग करना चाहिए। परमात्मा का भजन तथा परमात्मा की वाणी प्रवचनों का मनन करना अनिवार्य है। ऐसे साधना तथा मर्यादा पालन करने से मोक्ष निश्चित प्राप्त होता है।

धर्म बोध पृष्ठ 192 से 206 तक सामान्य ज्ञान है।

।।सत साहेब।।

अध्याय ''कमाल बोध'' का सारांश

कबीर सागर में 34वां अध्याय कमाल बोध पष्ठ 1 पर है। कबीर सागर में कमाल बोध अधिकतर गलत लिखा है।

यथार्थ कमाल बोध :- किसी कबीले ने अपने 12 वर्षीय मत लड़के का अंतिम संस्कार दरिया में जल प्रवाह करके कर दिया था। वह बहता हुआ जा रहा था। दिल्ली के राजा सिकंदर लोधी के गुरू शेखतकी को विश्वास दिलाने के लिए कबीर परमेश्वर जी ने उस मत बालक को आशीर्वाद से जीवित कर दिया और कबीर जी ने अपने साथ रखा।

(विस्तत कथा पढ़ें इसी पुस्तक में ''कबीर चरित्र बोध'' के सारांश में पष्ठ 541 से 542 पर।)

''मत कमाल बालक को जीवित करना''

कबीर जी तथा राजा सिकंदर शेखतकी तथा सर्व सेना को लेकर दिल्ली को चल पड़े। रास्ते में एक दरिया के किनारे पड़ाव किया। सुबह उठकर स्नान आदि कर रहे थे। सिकंदर लोधी उठकर पीर शेखतकी के टैण्ट में गए। शेखतकी को सलाम वालेकम की। शेख ने कोई उत्तर नहीं दिया। कई बार कहने पर कहा कि अब आपको काफिर गुरू मिल गया है। मुसलमान गुरू की क्या आवश्यकता है? उसको अपने हाथी पर चढ़ाकर लाए हैं, अपने टैण्ट में रखा है। मैं दिल्ली जाकर मुसलमानों को बोल दूँगा कि राजा सिकंदर मुसलमान नहीं रहा, इसने हिन्दू धर्म स्वीकार कर लिया है। बादशाह सिकंदर के पैरों के नीचे से पथ्वी खिसकती महसूस हुई। कहा कि शेख जी! आप क्या चाहते हो? शेखतकी ने कहा कि कबीर मेरे सामने कोई मुर्दा जीवित करे तो मैं मानूँ। यह सब समस्या परमेश्वर कबीर जी को बताई गई। परमेश्वर कबीर जी ने राजा सिकंदर जी से कहा कि उस शेखतकी से कह दो, कोई मुर्दा ले आए। सिकंदर लोधी शीघ्र शेखतकी जी के टैण्ट में गया और कबीर जी की बात बताई कि कोई मुर्दा लाओ। कबीर जी कह रहे हैं कि जीवित कर दूँगा। शेखतकी ने कहा कि अब मैं किसे मारूँ। कभी कोई मरेगा, तब देख लेंगे। सिकंदर लोधी को फिर चिंता हो गई कि मुर्दा छः महीने नहीं मिला तो मेरा राजपाट चौपट कर देगा। कबीर जी तो जानीजान हैं। सिकंदर के अंदर की चिन्ता समझ गए। परमेश्वर कबीर जी को पता था कि शेखतकी ने तो मानना नहीं है, परंतु राजा को हृदय घात (Heart Attack) हो जाएगा। उसी समय एक लगभग 12 वर्ष के बच्चे का शव दरिया में बहता हुआ आता दिखाई दिया जिसको अंतिम संस्कार के रूप में जल प्रवाह कर दिया गया था। उसी समय शेखतकी भी आ गया। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे शेखतकी जी! पहले आप कोशिश करो मुर्दे को जीवित करने की, कहीं बाद में कहो कि मैं भी कर देता। सब उपस्थित सैनिकों ने कहा कि ठीक कह रहे हैं, आप भी संत होने का दावा कर रहे हो, आप भी मुर्दा जीवित करके दिखाओ। शेखतकी ने अपना जंत्र-मंत्र किया, सब व्यर्थ रहा। फिर परमेश्वर कबीर जी बारी आई, तब तक मुर्दा दो फर्लांग यानि एक कि.मी. दूर जा चुका था। परमेश्वर कबीर जी ने हाथ के संकेत से मुर्दे को वापिस बुलाया। शव नदी के पानी के बहाव के विपरीत आया और सामने आकर स्थिर हो गया। लहरें नीचे-नीचे उछल रही थी। पानी नीचे से बह रहा था, मुर्दा स्थिर था। तब परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे जीवात्मा, जहाँ भी है, कबीर के आदेश से आओ और इस बालक के शरीर में प्रवेश करके बाहर

आओ। उसी समय शव में कंपन हुई और बालक दरिया के पानी से बाहर आया। कबीर जी को दण्डवत् प्रणाम किया। सब उपस्थित व्यक्तियों ने कहा कि कबीर जी ने कमाल कर दिया, कमाल कर दिया। लड़के का नाम कमाल रखा और कबीर जी ने अपने साथ रखा। बच्चे की तरह पालन किया तथा भक्ति रंग में रंगा। ज्ञान समझाया। कमाल दास परमेश्वर कबीर जी की बहुत सेवा करता था। उसको अपनी सेवा का अभिमान हो गया था। कबीर परमेश्वर जी के सामने ही कहता था कि मेरे जैसी सेवा गुरूदेव की कोई नहीं कर सकता। कबीर परमेश्वर जी से ज्ञान सुनकर कमाल जी को अपने वक्तापन का भी गर्व हो गया था। कुछ ज्ञानहीन संगत भी कमाल जी की प्रसंशा करने लगी थी। कहते थे कि कमाल तो गुरू जी से भी अच्छा सत्संग करता है। कमाल को गुरू जी से भी अधिक मानने लगे थे। परमेश्वर कबीर जी बार-बार कहते थे कि :-

कबीर, गुरू को तजै भजै जो आना। ता पशुवा को फोकट ज्ञाना।।

परंतु फिर भी बुद्धि पर पत्थर पड़े थे। जब भक्त को अभिमान हो जाता है और गुरू जी से अपने को उत्तम समझता है या कोई मर्यादा भंग करता है तो उसका नाम भंग हो जाता है। उसके पश्चात् वह सब उल्टा ही करता चला जाता है और अंत में काल से प्रेरित होकर गुरू जी को त्यागकर चला जाता है। या तो किसी अन्य काल के दूत संत को गुरू बनाता है या स्वयं गुरू बनकर भोली जनता को काल के मुख में डालता है, स्वयं भी नरक का भागी बनता है।

परमेश्वर कबीर जी ने कमाल दास जी के अभिमान को भंग करने के लिए एक लीला की। जैसे अर्जुन को अभिमान हो गया था कि मेरे जैसा सेवक श्री कृष्ण जी का कोई नहीं है। अर्जुन के अभिमान को भंग करने के लिए श्री कृष्ण जी ने एक लीला की थी। श्री कृष्ण जी अर्जुन को साथ लेकर राजा मोरध्वज के पास गए, उनके बाग में जाकर ठहरे। दोनों ने संत वेशभूषा पहन रखी थी। श्री कृष्ण जी ने माया से उत्पन्न करके एक सिंह अपने साथ ले रखा था। राजा मोरध्वज श्री कृष्ण जी का शिष्य था। राजा ने अपने पुत्र ताम्रध्वज का राजतिलक करना था यानि अपना उत्तराधिकारी राजा नियुक्त करना था। उस उपलक्ष्य में एक धर्मयज्ञ का आयोजन किया था। उस दिन श्री कृष्ण जी ने अपना स्वरूप बदला था। जिस कारण से मोरध्वज तथा परिवार पहचान नहीं सका था। राजा ने दोनों संतों को खाने के लिए प्रार्थना की तो श्री कृष्ण जी ने कहा कि पहले हमारे शेर (सिंह) को भोजन कराओ, यह मनुष्य का माँस खाता है। एक विशेष बात यह है कि जो इस सिंह का आहार बनेगा, वह स्वर्ग को प्राप्त होगा। यह संत का वचन है। सुनो! किसी पल्लेदार मजदूर को मत पकड़ लाना। आज यह आपके परिवार के किसी सदस्य का माँस खाएगा। पहले राजा ने अपनी पत्नी तथा पुत्र से कहा कि पुत्र राज करे और इसकी माँ बच्चे का ध्यान रखे। मैं संतों के सिंह का भोजन बनूँगा। रानी ने कहा कि मैं पतिव्रता स्त्री हूँ। पति की मृत्यु से पहले मैं मरूँगी, सिंह का भोजन बनूँगी। लड़के ने कहा कि मैंने माता-पिता की सेवा नहीं की। यदि आप दोनों में से एक भी मर जाएगा तो मेरा पुत्र का कर्तव्य पूरा न होने से मैं पाप का भागी बनूँगा। इसलिए मैं आपके जीवन की रक्षा करके अपना पुत्र का फर्ज पूरा करके उज्जवल मुख से परमात्मा के दरबार में जाऊँगा। अंत में श्री कृष्ण जी ने फैसला किया कि ताम्रध्वज लड़के को आप दोनों पति-पत्नी बीचों-बीच काटकर दो भाग कर दो। बायां भाग फैंक देना, केवल दांया भाग ही शेर खाएगा। बायां भाग पवित्र नहीं है। उसी समय राजा तथा रानी ने लकड़ी काटने का आरा मँगाया और दोनों जनों ने अपने पुत्र को आरे से चीरना शुरू कर दिया। संत वेश में श्री कृष्ण जी ने यह

भी चेतावनी दी थी कि यदि आप तीनों में से किसी की आँखों में आँसू आ गए तो भी शेर भोजन नहीं खाएगा। पति-पत्नी ने बच्चे को बैठाकर सिर के ऊपर आरा रखकर चीरना शुरू कर दिया। राजा-रानी रोए नहीं, पत्थर जैसा दिल कर लिया। लड़के की आँखों में आँसू आ गए, तब तक लड़के को दो भाग कर दिया गया। श्री कृष्ण जी ने कहा कि ताम्रध्वज की आँखों में आँसू आ गए हैं। इनकी सच्ची श्रद्धा नहीं है। इसलिए हम तथा शेर खाना नहीं खाऐंगे, हम रूष्ट होकर जा रहे हैं। लड़के के शरीर से आवाज आई कि हे भगवन! आप तो अंतर्यामी हैं, दिल में बैठकर जान सकते हैं कि मैं क्यों रोया हूँ। मैं इसलिए रोया हूँ कि मैं पापी हूँ, मेरा सारा शरीर भी आपकी सेवा के योग्य नहीं है। बड़ी कठिनाई से यह अवसर मिला था आपकी सेवा में शरीर सौंपने का। श्री कृष्ण जी ने कहा था कि जो आज इस मुहूर्त में सिंह के लिए शरीर भोजन रूप में दान करेगा, वह सीधा स्वर्ग जाएगा। तीनों प्राणियों की कोशिश थी कि मेरा नंबर लगे। तीनों जन कह रहे थे कि मेरा शरीर ले लो, दूसरा कह रहा था मेरा शरीर ले लो। उस बीच में श्री कृष्ण जी ने निर्णय किया था कि लड़के ताम्रध्वज का शरीर सिंह खाएगा। तब लड़के का नम्बर लगा था। इसलिए ताम्रध्वज ने कहा था कि बड़ी मुश्किल से तो शरीर दान करने का दॉव लगा था। मेरा शरीर आधा ही आपके काम आया, मेरे को आधा लाभ मिलेगा। उसी समय श्री कृष्ण जी प्रसन्न हुए तथा लड़के के शरीर से आरा निकालकर उसको जीवित कर दिया और तीनों को स्वर्ग का अधिकारी बनाया। यह लीला देखकर अर्जुन मारे शर्म के पानी-पानी हो गया तथा कहा हे भगवन! मैं तो मान बैठा था कि आपका मेरे जैसा सेवक कोई नहीं है। मैं तो इनके बलिदान के सामने कुछ भी नहीं हूँ। इसी प्रकार परमेश्वर कबीर जी ने कमाल जी को समझाना चाहा था।

''नेकी-सेऊ-सम्मन के बलिदान की कथा''

एक समय साहेब कबीर अपने भक्त सम्मन के यहाँ अचानक दो सेवकों (कमाल व शेखफरीद) के साथ पहुँच गए। सम्मन के घर कुल तीन प्राणी थे। सम्मन, सम्मन की पत्नी नेकी और सम्मन का पुत्र सेऊ (शिव)। भक्त सम्मन इतना गरीब था कि कई बार अन्न भी घर पर नहीं होता था। सारा परिवार भूखा सो जाता था। आज वही दिन था। भक्त सम्मन ने अपने गुरुदेव कबीर साहेब से पूछा कि साहेब खाने का विचार बताएँ, खाना कब खाओगे? कबीर साहेब ने कहा कि भाई भूख लगी है। भोजन बनाओ। सम्मन अन्दर घर में जा कर अपनी पत्नी नेकी से बोला कि अपने घर अपने गुरुदेव भगवान आए हैं। जल्दी से भोजन तैयार करो। तब नेकी ने कहा कि घर पर अन्न का एक दाना भी नहीं है। सम्मन ने कहा पड़ोस वालों से उधार मांग लाओ। नेकी ने कहा कि मैं मांगने गई थी लेकिन किसी ने भी उधार आटा नहीं दिया। उन्होंने आटा होते हुए भी जान बूझ कर नहीं दिया और कह रहे हैं कि आज तुम्हारे घर तुम्हारे गुरु जी आए हैं। तुम कहा करते थे कि हमारे गुरु जी भगवान हैं। आपके गुरु जी भगवान हैं तो तुम्हें माँगने की आवश्यकता क्यों पड़ी? ये ही भर देगें तुम्हारे घर को आदि-2 कह कर मजाक करने लगे। सम्मन ने कहा लाओ आपका चीर गिरवी रख कर तीन सेर आटा ले आता हूँ। नेकी ने कहा यह चीर फटा हुआ है। इसे कोई गिरवी नहीं रखता। सम्मन सोच में पड़ जाता है और अपने दुर्भाग्य को कोसते हुए कहता है कि मैं कितना अभागा हूँ। आज घर भगवान आए और मैं उनको भोजन भी नहीं करवा सकता। हे परमात्मा! ऐसे पापी प्राणी को पृथ्वी पर क्यों भेजा। मैं इतना नीच रहा हूँगा कि पिछले जन्म में कोई पुण्य नहीं किया। अब सतगुरु को क्या मुंह दिखाऊँ? यह कह कर अन्दर कोठे

में जा कर फूट-2 कर रोने लगा। तब उसकी पत्नी नेकी कहने लगी कि हिम्मत करो। रोवो मत। परमात्मा आए हैं। इन्हें ठेस पहुँचेगी। सोचेंगे हमारे आने से तंग आ कर रो रहा है। सम्मन चुप हुआ। फिर नेकी ने कहा आज रात्रि में दोनों पिता पुत्र जा कर तीन सेर (पुराना बाट किलो ग्राम के लगभग) आटा चुरा कर लाना। केवल संतों व भक्तों के लिए। तब लड़का सेऊ बोला माँ - गुरु जी कहते हैं चोरी करना पाप है। फिर आप भी मुझे शिक्षा दिया करती कि बेटा कभी चोरी नहीं करनी चाहिए। जो चोरी करते हैं उनका सर्वनाश होता है। आज आप यह क्या कह रही हो माँ? क्या हम पाप करेंगे माँ? अपना भजन नष्ट हो जाएगा। माँ हम चौरासी लाख योनियों में कष्ट पाएंगे। ऐसा मत कहो माँ। माँ आपको मेरी कसम। तब नेकी ने कहा पुत्र तुम ठीक कह रहे हो। चोरी करना पाप है परंतु पुत्र हम अपने लिए नहीं बल्कि संतों के लिए करेंगे। जिस नगर में निर्वाह किया है। इसकी रक्षा के लिए चोरी करेंगे। नेकी ने कहा बेटा - ये नगर के लोग अपने से बहुत चिढ़ते हैं। हमने इनको कहा था कि हमारे गुरुदेव कबीर साहेब (पूर्ण परमात्मा) पथ्वी पर आए हुए हैं। इन्होंने एक मतक गऊ तथा उसके बच्चे को जीवित कर दिया था जिसके टुकड़े सिंकदर लौधी ने करवाए थे। एक लड़के तथा एक लड़की को जीवित कर दिया। सिंकदर लौधी राजा का जलन का रोग समाप्त कर दिया तथा श्री स्वामी रामानन्द जी (कबीर साहेब के गुरुदेव) को सिंकदर लौधी ने तलवार से कत्ल कर दिया था वे भी कबीर साहेब ने जीवित कर दिए थे। इस बात का ये नगर वाले मजाक कर रहे हैं और कहते हैं कि आपके गुरु कबीर तो भगवान हैं तुम्हारे घर को भी अन्न से भर देंगे। फिर क्यों अन्न (आटे) के लिए घर घर डोलती फिरती हो?

बेटा ये नादान प्राणी हैं यदि आज साहेब कबीर इस नगरी का अन्न खाए बिना चले गए तो काल भगवान भी इतना नाराज हो जाएगा कि कहीं इस नगरी को समाप्त न कर दे। हे पुत्र! इस अनर्थ को बचाने के लिए अन्न की चोरी करनी है। हम नहीं खाएंगे। केवल अपने सतगुरु तथा आए भक्तों को प्रसाद बना कर खिलाएगें। यह कह कर नेकी की आँखों में आँसू भर आए और कहा पुत्र नाटियो मत अर्थात् मना नहीं करना। तब अपनी माँ की आँखों के आँसू पौंछता हुआ लड़का सेऊ कहने लगा - माँ रो मत, आपका पुत्र आपके आदेश का पालन करेगा। माँ आप तो बहुत अच्छी हो न।

अर्ध रात्रि के समय दोनों पिता (सम्मन) पुत्र (सेऊ) चोरी करने के लिए चले दिए। एक सेठ की दुकान की दीवार में छिद्र किया। सम्मन ने कहा कि पुत्र मैं अन्दर जाता हूँ। यदि कोई व्यक्ति आए तो धीरे से कह देना मैं आपको आटा पकड़ा दूंगा और ले कर भाग जाना। तब सेऊ ने कहा नहीं पिता जी, मैं अन्दर जाऊँगा। यदि मैं पकड़ा भी गया तो बच्चा समझ कर माफ कर दिया जाऊँगा। सम्मन ने कहा पुत्र यदि आपको पकड़ कर मार दिया तो मैं और तेरी माँ कैसे जीवित रहेंगे? सेऊ प्रार्थना करता हुआ छिद्र द्वार से अन्दर दुकान में प्रवेश कर गया। तब सम्मन ने कहा पुत्र केवल तीन सेर आटा लाना, अधिक नहीं। लड़का सेऊ लगभग तीन सेर आटा अपनी फटी पुरानी चद्दर में बाँध कर चलने लगा तो अंधेरे में तराजू के पलड़े पर पैर रखा गया। जोर दार आवाज हुई जिससे दुकानदार जाग गया और सेऊ को चोर-चोर करके पकड़ लिया और रस्से से बाँध दिया। इससे पहले सेऊ ने वह चद्दर में बँधा हुआ आटा उस छिद्र से बाहर फैंक दिया और कहा पिता जी मुझे सेठ ने पकड़ लिया है। आप आटा ले जाओ और सतगुरु व भक्तों को भोजन करवाना। मेरी चिंता मत करना। आटा ले कर सम्मन घर पर गया तो सेऊ को न पा कर नेकी ने पूछा लड़का कहाँ है? सम्मन ने कहा उसे सेठ जी ने पकड़ कर थम्ब से बाँध दिया। तब नेकी ने कहा कि आप वापिस जाओ और लड़के सेऊ का सिर काट लाओ क्योंकि लड़के को पहचान कर अपने घर पर लाएंगे। फिर सतगुरु को देख कर नगर वाले कहेंगे कि ये हैं जो

चोरी करवाते हैं। हो सकता है सतगुरु देव को परेशान करें। हम पापी प्राणी अपने दाता को भोजन के स्थान पर कैद न करवा दें। यह कह कर माँ अपने बेटे का सिर काटने के लिए अपने पति से कह रही है वह भी गुरुदेव जी के लिए। सम्मन ने हाथ में कर्द (लम्बा छुरा) लिया तथा दुकान पर जा कर कहा सेऊ बेटा, एक बार गर्दन बाहर निकाल। कुछ जरूरी बातें करनी हैं। कल तो हम नहीं मिल पाएंगे। हो सकता है ये आपको मरवा दें। तब सेऊ उस सेठ (बनिए) से कहता है कि सेठ जी बाहर मेरा बाप खड़ा है। कोई जरूरी बात करना चाहता है। कृप्या करके मेरे रस्से को इतना ढीला कर दो कि मेरी गर्दन छिद्र से बाहर निकल जाए। तब सेठ ने उसकी बात को स्वीकार करके रस्सा इतना ढीला कर दिया कि गर्दन आसानी से बाहर निकल गई। तब सेऊ ने कहा पिता जी मेरी गर्दन काट दो। यदि आप मेरी गर्दन नहीं काटोगे तो आप मेरे पिता नहीं हो। मुझे पहचानकर घर तक सेठ पहुँचेगा। राजा तक इसकी पहुँच है। यह अपने गुरूदेव को मरवा देगा। पिताजी हम क्या मुख दिखाऐंगे? सम्मन ने एकदम करद मारी और सिर काट कर घर ले गया। सेठ ने लड़के का कत्ल हुआ देख कर उसके शव को घसीट कर साथ ही एक पजावा (ईटें पकाने का भट्ठा) था उस खण्डहर में डाल गया।

जब नेकी ने सम्मन से कहा कि आप वापिस जाओ और लड़के का धड़ भी बाहर मिलेगा उठा लाओ। जब सम्मन दुकान पर पहुँचा उस समय तक सेठ ने उस दुकान की दीवार के छिद्र को बंद कर लिया था। सम्मन ने शव की घसीट (चिन्हों) को देखते हुए शव के पास पहुँच कर उसे उठा लाया। ला कर अन्दर कोठे में रख कर ऊपर पुराने कपड़े (गुदड़) डाल दिए और सिर को अलमारी के ताख (एक हिस्से) में रख कर खिड़की बंद कर दी।

कुछ समय के बाद सूर्य उदय हुआ। नेकी ने स्नान किया। सतगुरु व भक्तों का खाना बनाया। सतगुरु कबीर साहेब जी से भोजन करने की प्रार्थना की। नेकी ने साहेब कबीर व दोनों भक्त (कमाल तथा शेख फरीद), तीनों के सामने आदर के साथ भोजन परोस दिया। साहेब कबीर ने कहा इसे छः दौनों में डाल कर आप तीनों भी साथ बैठो। यह प्रेम प्रसाद पाओ। बहुत प्रार्थना करने पर भी साहेब कबीर नहीं माने तो छः दौनों में प्रसाद परोसा गया। पाँचों प्रसाद के लिए बैठ गए।

तब साहेब कबीर जी ने कहा :-

आओ सेऊ जीम लो, यह प्रसाद प्रेम।
शीश कटत हैं चोरों के, साधों के नित्य क्षेम।।

साहेब कबीर ने कहा कि सेऊ आओ भोजन पाओ। सिर तो चोरों के कटते हैं। संतों (भक्तों) के नहीं। उनकी तो रक्षा होती है। उनको तो क्षमा होती है। साहेब कबीर ने इतना कहा था उसी समय सेऊ के धड़ पर सिर लग गया। कटे हुए का कोई निशान भी गर्दन पर नहीं था तथा पंगत (पंक्ति) में बैठ कर भोजन करने लगा। बोलो कबीर साहेब (कविरमितौजा) की जय। (कविर् = कविर्देव = कबीर परमेश्वर, अमित + औजा = जिसकी शक्ति का कोई वार-पार न हो।)

सम्मन तथा नेकी ने देखा कि गर्दन पर कोई चिन्ह भी नहीं है। लड़का जीवित कैसे हुआ? अन्दर जा कर देखा तो वहाँ शव तथा शीश नहीं था। केवल रक्त के छीटें लगे थे जो इस पापी मन के संशय को समाप्त करने के लिए प्रमाण बकाया था। सत साहिब।।

ऐसी-2 बहुत लीलाएँ साहेब कबीर (कविरग्नि) ने की हैं जिनसे यह स्वसिद्ध है कि ये ही पूर्ण परमात्मा हैं। सामवेद संख्या नं. 822 तथा ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 162 मंत्र 2 में कहा है कि कविर्देव अपने विधिवत् साधक साथी की आयु बढ़ा देता है।

''कमाल का गुरू विमुख होना''

इस लीला को देखकर कमाल को समझ आई कि मैं तो इनकी सेवा-बलिदान के सामने सूर्य के समक्ष दीपक हूँ, परंतु अभिमान नहीं गया। नाम खण्ड हो चुका था। कुछ समय पश्चात् काल प्रेरणा से एक दिन परमेश्वर कबीर जी को त्यागकर अपने प्रशंसकों के साथ अन्य ग्राम में जाकर रहने लगा। दीक्षा देने लगा। पहले तो बहुत से अनुयाई हो गए, परंतु बाद में उनको हानि होने लगी। कोई माता पूजने लगा, कोई मसानी। कारण यह हुआ कि जो भक्ति साधकों ने परमेश्वर कबीर जी से दीक्षा लेकर की थी। वह जब तक चली, उनको लाभ होते रहे। वे मानते रहे कि यह लाभ कमाल गुरू जी के मंत्रों से हो रहे हैं। कमाल जी के आशीर्वाद से हमें लाभ हो रहा है। पूर्व की भक्ति समाप्त होते ही वे पुनः दुःखी रहने लगे। कमाल जी के पास कभी-कभी औपचारिकता करने जाने लगे। जैसे इन्वर्टर की बैटरी को चार्जर लगा रखा था, वह कुछ चार्ज हुई थी। चार्जर हट गया। फिर भी इन्वर्टर अपना काम कर रहा होता है। बैटरी की क्षमता समाप्त होते ही सर्व सुविधा जो इन्वर्टर से प्राप्त थी, वे बंद हो गई। इसी प्रकार उन मूर्ख भक्तों का जीवन व्यर्थ हो गया। कमाल जी को नामदान की आज्ञा नहीं थी। वह स्वयंभू गुरू बनकर श्रद्धालुओं का जीवन नष्ट करता हुआ अपना भी जीवन महिमा की भूख में नष्ट कर दिया।

एक दिन कमाल ने सोचा कि भक्तों का आना कम हो गया है। कमाल के लिए एक छोटा-सा आश्रम भी बना दिया था। आसपास के गाँवों में कबीर परमेश्वर जी के बहुत से शिष्य हैं जो कमाल के षड़यंत्र में नहीं फंसे थे। कमाल ने आसपास तथा उसी गाँव में कहलवा दिया कि कबीर गुरू जी का जन्म ज्येष्ठ पूर्णमासी को मनाया जा रहा है। सब आऐं तथा भण्डारे में दान करें। बाहर के गाँव से कोई नहीं आया। गाँव के व्यक्ति सुबह सूर्य उदय से पहले उठकर अपने अपने-अपने घरों से प्रतिवर्ष की तरह भण्डारे में दूध दान करने चले। कमाल ने आश्रम में रहने वाले शिष्यों से कहा कि गाँव वाले दूध डालने आएंगे, एक कड़ाहा रख दो। उसको कपड़े से ढ़क तो ताकि रेत-मिट्टी न गिरे। चेलों ने ऐसा ही कर दिया। गाँव वालों में परमेश्वर कबीर जी ने ऐसी प्रेरणा कर दी कि ज्यादातर विचार किया कि सारा गाँव दूध डालकर आएगा, मेरे घर में दूध कम है, मैं पानी डाल आता हूँ। प्रत्येक के मन में यह प्रेरणा हो गई। दो-चार ही दूध डालकर आए। वैसे अपनी हाजिरी सब घरों से एक-एक सदस्य ने लगवाई। सब अंधेरे का लाभ उठाकर सब कार्य कर गए। सुबह आश्रम के शिष्यों ने खीर बनाने के लिए दूध देखा तो सफेद पानी था। कमाल को तो लगा था कि सारा गाँव दूध लेकर आया है। सब मेरे साथ हैं, परंतु दूध देखा तो सब पानी था। यह देखकर कमाल को अपनी करतूत का अहसास हुआ कि गुरू से दूर होने के कारण मेरे को यह हानि हुई है। घर का रहा न घाट का। उसी दौरान कमाल ने अहमदाबाद में एक दरीयाखान मुसलमान शिष्य बनाया था। फिर उसको शॉप दे दिया कि तू भूत योनि में जाएगा। इस प्रकार अपनी शक्ति को कमाल ने नष्ट किया। कबीर परमेश्वर जी ने कमाल से कह दिया था कि तेरा पंथ नहीं चलेगा। तूने मर्यादा का कोई ध्यान नहीं रखा।

कबीर परमेश्वर जी ने भी कहा था कि :- {अनुराग सागर पष्ठ 138}

कमाल पुत्र जो मतक जिवाया। ताके घट (शरीर) में काल समाया।।
पुत्रवत ताको पाला पोखा। वाने हम संग कीन्हा धोखा।।
पिता जान तिन अहँग (अहंकार) कीन्हा। तातें ताको दिल से उतार दीन्हा।।

हम हैं प्रेम भक्ति के साथी। चाहुँ नहीं तुरी (घोड़ी) अरू हाथी।।

कुछ दिनों के पश्चात् कमाल भक्त उस आश्रम को त्यागकर रात्रि में अज्ञात स्थान पर चला गया। उसके पश्चात् न जाने कहाँ मरा होगा?

विचार करें :- यह प्राणी कितना कतघ्नी हो चुका है। जिस मालिक ने जीवन दान दिया। पाला-पोसा, अनुपम अध्यात्म ज्ञान दिया। फिर भी अपनी महिमा की हवस के कारण उस परम पिता को धोखा दिया।

इस प्रसंग से यह भी स्पष्ट हुआ कि हम श्री कष्ण जी को प्रभु मानते हैं। कारण यह है कि उन्होंने ताम्रध्वज को जीवित किया था। परमेश्वर कबीर जी ने शिव पुत्र सम्मन को जीवित किया था। उसको मोक्ष भी दिया। श्री कष्ण ने केवल स्वर्ग दिया। स्वर्ग में गए व्यक्ति पुनः जन्म-मरण में आते हैं।

परमेश्वर कबीर जी द्वारा बताए भक्ति मार्ग से पूर्ण मोक्ष प्राप्त होता है जो शिव (सेऊ) तथा नेकी को प्राप्त हुआ तथा सम्मन को भी परमात्मा तीसरे जन्म में इब्राहिम अधम सुल्तान रूप में पूर्ण मोक्ष मंत्र देकर मोक्ष प्राप्त करवाया।

कमाल ने परमेश्वर के साथ धोखा किया। इसलिए अपनी मूर्खता के कारण जीवन व्यर्थ कर गया।

कबीर सागर के अध्याय ''कमाल बोध'' का सारांश सम्पूर्ण हुआ।

।।सत साहेब।।

अध्याय ''स्वांस गुंजार = शब्द गुंजार'' का सारांश

कबीर सागर में 35वां अध्याय ''स्वांस गुंजार'' पष्ठ 1(1579) पर है। वास्तव में यह शब्द गुंजार है। गलती से श्वांस गुंजार लिखा गया है। इस अध्याय में कुछ भी भिन्न नहीं है। जो प्रकरण पूर्व के अध्यायों में कहा गया है। उसी की आवर्ती की गई है। बार-बार प्रकरण कहा गया है। बचन से यानि शब्द से जो सष्टि की उत्पत्ति की गई है, उसी का ज्ञान है।

''यह शब्द गुंजार अध्याय है, न कि स्वांस गुंजार''

प्रमाण पष्ठ 4 पर :-

शब्द हिते है पुरूष अस्थूला। शब्दहि में है सबको मूला।।
शब्द हिते बहु शब्द उच्चारा। शब्दै शब्द भया उजियारा।।
शब्द हिते भव सकल पसारा। सोई शब्द जीव का रखवारा।।
प्रथम शब्द भया अनुसारा। नीह तत्त्व एक कमल सुधारा।।

इन उपरोक्त वाणियों से स्पष्ट है कि परमात्मा शब्द रूप में सूक्ष्म शरीर युक्त थे। वह सूक्ष्म शरीर काल लोक वाले शरीर जैसा नहीं है। परमात्मा जब चाहे शब्द (वचन) से जैसा चाहे स्थूल शरीर धारण कर लेते हैं। पुरूष यानि परमेश्वर जी ने शब्द से सब रचना की है। अन्य अध्यायों में भी स्पष्ट है कि परमात्मा ने शब्द (वचन) से सब पुत्र उत्पन्न किए, वचन से ही सतलोक, अलख लोक, अगम लोक, अकह लोक की रचना की। यहाँ कुछ पंक्तियों में श्वांस से सोलह पुत्रों की उत्पत्ति लिखी है, यह गलत है।

श्वांसों की महिमा तथा महत्त्व पथ्वी लोक पर है। स्थूल शरीर के लिए ऑक्सीजन यानि शुद्ध वायु की आवश्यकता है। सूक्ष्म शरीर में प्राण (श्वांस) काम करता है। सतलोक में शरीर श्वांसों से नहीं अध्यात्म शक्ति से चलता है।

काल लोक में भक्ति करके सत्यलोक प्राप्ति करनी होती है। स्थूल शरीर से साधना करनी है। स्थूल शरीर मानव का जब प्राप्त होता है, तब ही मोक्ष का मार्ग खुलता है। इसलिए इस अध्याय में श्वांस का जो महत्त्व बताया है, वह पथ्वी लोक पर साधना से सम्बन्ध रखता है।

कबीर, श्वांस–उश्वांस में नाम जपो, व्यर्था श्वांस ना खोय।
ना बेरा इस श्वांस का, आवन होके ना होय।।
श्वासा पारस भेद हमारा, जो खोजै सो उतरे पारा।
श्वासा पारस आदि निशानी, जो खोजे तो होय दरबानी।।
हरदम नाम सोहं सोई। आवागवन बहोर न होई।।

श्वांस गुंजार पष्ठ 94(1672) पर भी प्रमाण है :-

श्वासा सार गहै सहिदानी। शशि के घर महं सूर्य उगानै।।
श्वासा सार गहै गुंजारा। जाप जपै सतनाम पियारा।।
अजपा जाप जपै सुखदाई। आवै न जावै रह ठहराई।।

इस प्रकार श्वांस का महत्त्व बताया है। श्वांस से स्मरण करने से यानि जाप की धुन (लगन के साथ जाप करने) से जीव मोक्ष प्राप्ति करता है।

यह श्वांस (शब्द) गुंजार है। अध्याय का सारांश सम्पूर्ण हुआ।

।।सत साहेब।।

अध्याय ''अगम निगम बोध'' का सारांश

कबीर सागर में 36वां अध्याय ''अगम निगम बोध'' पष्ठ 1(1691) पर है। इस अध्याय में वेद-शास्त्रों का ज्ञान है तथा काल ब्रह्म के साधकों को होने वाली उपलब्धियों का वर्णन है। नौ नाथों, चौरासी (84) सिद्धों, अष्ट (8) सिद्धियों, चारों मुक्तियों, 24 अवतारों के नाम, काम तथा शंकराचार्यों के मार्ग तथा उनके द्वारा निर्मित चारों मठों तथा प्रथम मठाधीशों के नाम हैं।

आप जी को बार-बार याद दिला रहा हूँ कि कबीर सागर के अनमोल ज्ञान का अड़ंगा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। फिर भी परमात्मा ने सच्चाई की रक्षा की है। अपनी प्यारी आत्मा गरीबदास जी महाराज (गाँव-छुड़ानी, जिला-झज्जर, हरियाणा) को सत्यलोक ले जाकर अपनी यथार्थ महिमा तथा यथार्थ अध्यात्म ज्ञान उनके हृदय में प्रवेश करके वापिस छोड़ा था जिन्होंने उस क्षति की पूर्ति की है जो काल द्वारा चलाए अन्य कबीर पंथियों ने कालवश वाणियों में काँट-छाँट तथा मिलावट की थी। एक बहुत पुराना कबीर सागर मिल गया, उससे भी सच्चाई प्रकट कर रहा हूँ। साथ-साथ वर्तमान कबीर सागर में की गई त्रुटियों को भी प्रमाण के साथ स्पष्ट कर रहा हूँ। यह सब परमेश्वर कबीर जी की दया से गुरु जी स्वामी रामदेवानंद जी के आशीर्वाद से संभव हो सका है। अगम निगम बोध पष्ठ 1(1691) से प्रारम्भ है।

''अथ ब्रह्म और जगत उत्पत्ति चौपाई''

यह गलत लिखा है। यह सही ऐसे है :-

<u>''अथ ब्रह्म और जगत की उत्पत्ति''</u>

वाणी :- आदि ब्रह्म अब वर्ण करेऊ। अहं शब्द सो चित धरेऊ।।
ताहि शब्द करि चित फुरि आया। चित दढ़ता करि मन प्रकटाया।।

पष्ठ 2(1692) का सारांश :-

इस पष्ठ पर लिखी वाणियों में त्रुटि की है, लिखा है :-

मन ते तन मात्रा में पाँचों। मन स्वरूप ब्रह्म को बाँचो।।
मन ब्रह्म, ब्रह्मा मन सोई। जस संकल्प करे जस होई।।

स्पष्टीकरण :- वाणी में ब्रह्मा के स्थान पर ब्रह्म है, गलती से ब्रह्मा लिखा है। जैसे अनुराग सागर में प्रकति देवी (दुर्गा जी) ने श्री विष्णु जी को बताया कि मन ही कर्ता है, मन ही ज्योति निरंजन है, मन ही ब्रह्म है। यहाँ मन को ब्रह्मा लिखना गलत है।

वेदों में लिखा है कि विराट परमात्मा यानि काल ब्रह्म के मुख से ब्राह्मण, भुजाओं से क्षत्रीय, हाथों से वैश्य तथा पैरों से शुद्र उत्पन्न हुए। यही वर्णन अगम निगम बोध के पष्ठ 2(1692) पर है, परंतु वाणी में लिखा है कि ब्रह्मा मुख ब्राह्मण प्रकटाए। यह लिखने में गलती है। वास्तव में ब्रह्म से चारों की उत्पत्ति लिखी है। वेद में तो अन्य भी उत्पत्ति बताई है।

चार वर्ण तो स्वयंभू मनु ने बनाए थे जो ब्रह्मा की संतान है। पष्ठ नं. 3 में चित्रगुप्त का वर्णन भी गलत लिखा है। वास्तव में चित्र अलग गुप्त अलग है जिसका वर्णन पूर्व के अध्यायों में भी कर दिया है। यहाँ पष्ठ 3(1693) पर इन दोनों को एक लिखा है, परंतु सत्य यह है कि ब्रह्म काल ऊपर आकर ही रहता है।

''अथ चित्र-गुप्त की उत्पत्ति कथा वर्णन''

ब्रह्मा चारों वरण बनाई। ताके मन पुनि चिंता आई।।

बिना लेखक जग काज न सरहै। लेखक गणक कर्म को करि है।।
यह विधि ब्रह्मा जो कीन विचारा। चित्र गुप्त प्रकट तेहि बारा।।
लीने कर लेखनि मसिदानी। प्रकटे चित्रगुप्त गुणखानी।।
ब्रह्मा की अस्तुत उच्चारे। सो धुनिसुनि बिधि पलक उघारे।।
ब्रह्मा की तब आज्ञा पाई। तपको चित्रगुप्त बन जाई।।
वारह वर्ष कीन तप गाढ़े। पुनि भे ब्रह्मा के सन्मुख ठाढे।।
तब ब्रह्मा निज सभा लगाये। सुरनर मुनि भूपति चलि आये।।
ऋषी सिसिरसा तहँ पगुधारा। निजकन्या वरहेतु बिचारा।।
कन्या चित्रगुप्त को व्याहा। महिप मन्वंतर पुनि अस चाहा।।
भूप मन्वंतर सूरज को पोता। ताहि सभा तिहि औसर होता।।
सोऊ अपनी पुत्री देऊ। दोऊ तिय चित्रगुप्त वर गहेऊ।।
पुत्र यउपो दोनों नारी। एकते आठ एकते चारी।।
माथुर गौड अरू कर्न भनीजै। वाल्मीकि श्रीध्वजहि गनीजै।।
सकसैना श्रीवास्तव ऐसे। श्रेठाना श्रम सक हैं तैसे।।

भावार्थ :- ऊपर लिखी वाणी में बताया है कि चित्र गुप्त का विवाह ऋषि सिश्रशा की बेटी से हुआ। फिर लिखा है कि सूरज ऋषि का पोता भूप मन्वन्तर नाम का था। उसने अपनी बेटी का विवाह चित्र गुप्त से किया था। वास्तव में ऋषि सिश्रशा की पुत्री से चित्र का विवाह हुआ था तथा मन्वन्तर की पुत्री का विवाह गुप्त से हुआ था।

संत गरीबदास जी ने भी कहा है कि :- ''चित्र गुप्त दो लिखवा ठाढ़े''

पृष्ठ 4(1694)-5(1695)

इन पृष्ठों पर चार आश्रमों (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा सन्यासी) का वर्णन है तथा चारों वेदों के चार महावाक्यों का वर्णन है जो शंकराचार्यों की परंपरा में चलते हैं।

1. ऋग्वेद से लिया है ''प्रज्ञानम् ब्रह्म''

2. यजुर्वेद से लिया है ''अहं ब्रह्म अस्मि''

3. सामवेद से लिया है ''तत्त्वमसि'' = ''तत् त्वम् असि''

4. अथर्ववेद से लिया है ''अयम् आत्मा ब्रह्म''

चारों का अर्थ है कि मैं यानि जीव ही ब्रह्म (भगवान) हूँ। परमात्मा कबीर जी ने अगम निगम बोध इसलिए कहा है कि कोई यह न समझ बैठे कि कबीर जी को क्या ज्ञान था? वे परमेश्वर थे। संसार की दृष्टि में अशिक्षित थे। फिर भी विश्व के सर्व प्रचलित धर्म ग्रन्थों का संपूर्ण ज्ञान बताया है जिससे बुद्धिमान आसानी से समझ सकता है कि वे परमात्मा थे।

पृष्ठ 5-6(1695-1696) पर छः शास्त्रों के नाम बताए हैं :-

1. न्याय शास्त्र :- गौतम ऋषि ने बनाया ऋग्वेद को पढ़कर।

2. मीमान्सा शास्त्र :- जैमीनि ऋषि ने बनाया यजुर्वेद को पढ़कर।

3. वेदान्त शास्त्र :- वेद ब्यास ने बनाया सामवेद को पढ़कर।

4. सांख्य शास्त्र :- कपिल मुनि ने बनाया अथर्ववेद को पढ़कर।

5. पंताजल शास्त्र :- पंताजलि ऋषि ने बनाया आयुर्वेद को पढ़कर।

6. वैशेषिक शास्त्र :- कणांद मुनि ने बनाया अर्थवेद को पढ़कर।

भावार्थ :- छः शास्त्र छः ऋषियों ने वेदों को पढ़कर अपनी बुद्धि अनुसार वेदों को निष्कर्ष निकालकर अपना-अपना अनुभव लिखा है। किसी का भी अनुभव एक-दूसरे से मेल नहीं करता।

अगम निगम बोध पृष्ठ 7(1697) का सारांश :-

चार उपवेद बताए हैं :-

1. आयुर्वेद 2. धनुर्वेद 3. गन्धर्ववेद 4. अर्थवेद।

1. आयुर्वेद :- इसकी रचना करने वाले ऋषि धन्वन्तरी तथा दो अश्वनी कुमार ऋषि हैं। (स्रत तथा नासत्य दो ऋषियों को अश्वनी कुमार कहते हैं। इनकी उत्पत्ति घोड़ी के मुख की ओर से हुई थी। ये सूर्य के पुत्र हैं। इसमें औषधि का ज्ञान है।

2. धनुर्वेद :- इसकी रचना ऋषि विश्वामित्र ने की है। आयुध यानि शस्त्रों का ज्ञान है।

3. गंधर्व वेद :- इसकी रचना श्री भरथरी जी ने की थी। इसमें नृत्य, सुर-ताल का ज्ञान है यानि नाचने-गाने का ज्ञान है।

4. अर्थ वेद :- इसकी रचना विश्वकर्मा जी ने की है। इसमें शिल्प का ज्ञान व धन उपार्जन का ज्ञान है।

''चार उपवेद षट अंग का ज्ञान''

1. शिक्षा सुत्र 2. कल्प सुत्र 3. व्याकरण 4. निरूक्तः

अगम निगम बोध पृष्ठ 8(1698) से 12(1702) तक इसी प्रकार का ज्ञान है जिसकी कबीर जी के उपासक को आवश्यकता नहीं है।

पृष्ठ 12(1702) पर :-

कबीर परमेश्वर जी ने स्पष्ट कर दिया है कि :-

कबीर, बेद मेरा भेद है, हम बेदन के माहीं। जौन बेद से मैं मिलूं, बेद जानते नाहीं।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने बताया है कि चारों वेद मेरी महिमा बता रहे हैं। वेदों में वर्णित भक्ति विधि अधूरी है। इसलिए इन चारों वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) में वर्णित विधि से मैं नहीं मिल सकता। जिस सूक्ष्म वेद (सूक्ष्मज्ञान=तत्त्वज्ञान) में मेरे पाने की सम्पूर्ण विधि है, उसका ज्ञान चारों वेदों में नहीं है।

''विष्णु जी के चौबीस (24) अवतारों का वर्णन है''

पृष्ठ 13(1703) पर :-

❖ ब्रह्मा के छः अवतार लिखे हैं :-

1. गौतम 2. कणांद 3. व्यास ऋषि 4. जैमनी 5. मंडनमिश्र 6. मीमासंकहि

शिव जी के ग्यारह रूद्रों के नाम बताए हैं :-

1. सर्प कपाली 2. त्र्यंबक 3. कपि 4. मृग 5. व्याधि 6. बहुरूप 7. वृष 8. शम्भु 9. हरि 10. रैवत 11. बीरभद्र।

❖ ब्रह्मा जी के दैहिक तथा मानस पुत्रों के नाम :-

सर्व प्रथम दो पुत्रों का जन्म श्री ब्रह्मा जी से हुआ :- 1. दक्ष 2. अत्री। इससे आगे शाखा चली हैं।

पृष्ठ 14(1704) से 16(1706) तक :-

❖ चौदह (14) विष्णु के नाम, चौदह (14) इन्द्र के नाम, चौदह मनु के नाम, सप्त स्वर्ग के नाम {भूः, भवः, स्वर्ग, महरलोक, जनलोक, तपलोक, सतलोक(नकली)}

सर्व पातालों के नाम :- अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, पाताल व रसातल।

❖ नौ धरों के नाम :-

1. भूः लोक (भूमि) 2. भुवर् लोक = भूवः लोक यानि जल तत्त्व से निर्मित स्थान जैसे बर्फ जम जाने के पश्चात् उसके ऊपर खेल का मैदान बनाकर शीतल देशों में बच्चे खेलते हैं। 3. स्वर = स्वः = स्वर्ग लोक जो अग्नि तत्त्व से निर्मित है। जैसे काष्ठ में अग्नि है, उससे जापान देश में भवन बनाए जाते हैं। जैसे प्लाईवुड पर चित्रकारी करके चमकाया जाता है। ऐसा स्वर्ग लोक है। 4. पितर लोक = यह वायु तत्त्व से निर्मित है। जैसे ट्यूब में हवा भरकर उससे सैंकड़ों टन सामान बड़े ट्रकों में भरकर ले जाया जाता है। ऐसे वायु को सिद्धि से रोककर उससे पितर लोक बना है। 5. शुन्य 6. अन्तर लोक यानि अन्तः लोक 7. महत लोक :- इसे सत्य लोक (नकली सत्यलोक) भी कहते हैं। 8. लोका लोक = यह एक प्रर्वात पर निर्मित है। 9. निरंजन का (झांझरी) लोक। फिर बताया है कि निरंजन के शब्द से माया यानि काल जाल उत्पन्न हुआ। माया से महतत्त्व उत्पन्न हुआ। महतत्त्व से अहंकार, अहंकार से आकाश, आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से पानी, जल से भू यानि पंथ्वी की उत्पत्ति हुई।

❖ सात द्वीपों के नाम :- जम्बूद्वीप, शाकद्वीप, क्रौंच द्वीप, कुशा द्वीप, शलमल्प द्वीप, पल्क्षो तथा पुष्कद्वीप।

❖ अष्ट (8) वसुओं के नाम :- 1. द्रौंन 2. प्राणक 3. द्यौ 4. अर्क 5. अग्नि 6. दोषा 7. प्रमान 8. विभासू बसु।

❖ चारों युगों की आयु :-

1. सत्ययुग = सतरह लाख अठाईस हजार वर्ष (1728000)
2. त्रेतायुग = बारह लाख छियानवे हजार वर्ष (1296000)
3. द्वापरयुग = आठ लाख चौंसठ हजार वर्ष (864000)
4. कलयुग = चार लाख बत्तीस हजार वर्ष (432000)

चारों युगों का कुल समय :- तिरालीस लाख बीस हजार वर्ष (4320000)।

चारों युगों के समय को एक महायुग यानि चतुर्युग कहते हैं।

कल्प की आयु :- एक हजार चतुर्युग = 14 मन्वन्तर।

एक मन्वन्तर की आयु :- 72 चतुर्युग।

इन्द्र का शासन काल :- एक मन्वन्तर = 72 चतुर्युग।

ब्रह्मा जी का एक दिन :- एक कल्प = एक हजार चतुर्युग। वैसे एक हजार आठ चतुर्युग का ब्रह्मा का एक दिन होता है, परंतु कहने में एक हजार चतुर्युग आता है। उदाहरण :- जैसे मनुष्यों के वर्ष में 365 ¼ दिन होते हैं, परंतु कहने में 365 दिन ही आते हैं।

''ब्रह्मा जी की आयु''

ब्रह्मा का दिन :- एक हजार चतुर्युग, रात्रि :- एक हजार चतुर्युग।

महीना :- 30 दिन-रात का। वर्ष :- 12 महीनों का।

ब्रह्मा जी की आयु :- 100 वर्ष की।

नोट :- इस अगम निगम बोध पंष्ठ 16(1706) पर ब्रह्मा, विष्णु, महेश जी की आयु का अधूरा ज्ञान और गलत ज्ञान लिखा है। कबीर पंथियों की अज्ञानता की करामात है।

वास्तविक ज्ञान है कि :-

विष्णु की आयु :- 7 ब्रह्मा की मंत्यु के पश्चात् एक विष्णु की मंत्यु होती है।

शिव की आयु :- 7 विष्णु की मत्यु के पश्चात् एक शिव की मत्यु होती है।

अगम निगम बोध पष्ठ 17(1707) से 33(1723) तक का सारांश :-

चौदह रत्नों के नाम, पाँच प्रकार की यज्ञ, कर्म उपासना, ज्ञान का वर्णन जो वेदान्ती करते हैं। कबीर जी के भक्त के लिए आवश्यक नहीं हैं।

''चार खानियों (योनियों) की जानकारी''

चार खानी के नाम :- श्वेतज, अण्डज, जेरज, पिंडज।

''जीव शरीर धारण कैसे करता है''

मत्यु के उपरांत प्राणी धर्मराज के दरबार में जाता है। जिसको जो शरीर प्राप्त होना है, वहाँ से उसके कर्मानुसार भेज दिया जाता है। वह जीव अन्न या फल में प्रवेश कर जाता है। जब शरीरधारी उस अन्न या फल, मेवा, घास को खाता है, वह संस्कारी जीव उसी शरीरधारी के वीर्य में चला जाता है, वहाँ से मादा के गर्भ में दोनों (स्त्री-पुरूष) के वीर्य से शरीर का निर्माण होता है। समय आने पर बाहर आ जाता है। जो स्वर्ग का अधिकारी होता है। उसे स्वर्ग में देव शरीर प्राप्त होता है। जो नरक का भागी होता है। वह सूक्ष्म शरीर में नरक में चला जाता है। जो प्रेत-पितर का अधिकारी है। वह उन योनियों को प्राप्त करता है।

''संप्रदाओं के नाम हैं''

पष्ठ 25(1715) पर रामानुज की गुरू पीढ़ी का गलत वर्णन किया है। जिस समय यह कबीर सागर धनी धर्मदास द्वारा लिखा गया था (विक्रमी संवत् 1550 में), तब तक रामानन्द स्वामी तथा उसका शिष्य अनन्तानंद तक गद्दी चली थी। उसके पश्चात् रामानन्द स्वामी जी ने तो अपना भक्ति मार्ग ही बदल दिया था। वे तो कबीर पंथी हो गए थे। अनन्तानंद महिमा की भूख के कारण नहीं माना था। उससे आगे रामानुज परंपरा चलती रही है, परंतु विक्रमी संवत् 1550 के लेख में अनन्तानंद से आगे की गुरू पीढ़ी के नाम कैसे आ गए? इससे सिद्ध है कि काल के दूतों ने गड़बड़ी की है जिससे उनकी बुद्धि के विकास का भी पता चलता है। पष्ठ 26(1716) पर तो स्पष्ट कर दिया है कि विक्रमी संवत् 1913 तक की पीढ़ी लिखी है, गड़बड़ी स्पष्ट है।

''शिव परंपरा, विष्णु परंपरा का वर्णन है''

पष्ठ 32(1722) पर बावन द्वारों का वर्णन है जो गलत है।

पष्ठ 33(1723) से 39(1729) तक :-

''स्वामी रामानंद जी तथा परमेश्वर सत्य कबीर जी की कथा''

परमेश्वर कबीर जी द्वारा स्वामी रामानंद जी को गुरू धारण करने का वर्णन है। अगम निगम बोध अध्याय में वर्णन गलत है। यथार्थ प्रकरण पढ़ें कबीर चरित्र बोध के सारांश में पष्ठ 525 से 539 तक।

(यह शब्द अगम निगम बोध के पष्ठ 34 पर लिखा है।)

गुरू रामानंद जी समझ पकड़ियो मोरी बाहीं।। जो बालक रून झुनियां खेलत सो बालक हम नाहीं।।
हम तो लेना सत का सौद हम ना पाखण्ड पूजा चाहीं।। बांह पकड़ो तो दढ़ का पकड़ बहुर छुट न जाई।।
जो माता से जन्मा वह नहीं इष्ट हमारा।। राम–कष्ण मरै विष्णु साथै जामण हारा।।
तीन गुण हैं तीनों देवता, निरंजन चौथा कहिए। अविनाशी प्रभु इस सब से न्यारा, मोकूं वह चाहिए।।
पांच तत्त्व की देह ना मेरी, ना कोई माता जाया। जीव उदारन तुम को तारन, सीधा जग में आया।।
राम–राम और ओम् नाम यह सब काल कमाई। सतनाम दो मोरे सतगुरू तब काल जाल छुटाई।।
सतनाम बिन जन्में–मरें परम शान्ति नाहीं। सनातन धाम मिले न कबहु, भावें कोटि समाधि लाई।।

सार शब्द सरजीवन कहिए, सब मन्त्रन का सरदारा। कह कबीर सुनो गुरू जी या विधि उतरें पारा।।

''शब्द''

(यह शब्द अगम निगम बोध के पष्ठ 38 पर लिखा है।)

मेरा नाम कबीरा हूँ जगत गुरू जाहिरा।(टेक)

तीन लोक में यश है मेरा, त्रिकुटी है अस्थाना। पाँच–तीन हम ही ने किन्हें, जातें रचा जिहाना।।
गगन मण्डल में बासा मेरा, नौवें कमल प्रमाना। ब्रह्म बीज हम ही से आया, बनी जो मूर्ति नाना।।
संखो लहर मेहर की उपजैं, बाजै अनहद बाजा। गुप्त भेद वाही को देंगे, शरण हमरी आजा।।
भव बंधन से लेऊँ छुड़ाई, निर्मल करूं शरीरा। सुर नर मुनि कोई भेद न पावै, पावै संत गंभीरा।।
बेद–कतेब में भेद ना पूरा, काल जाल जंजाला। कह कबीर सुनो गुरू रामानन्द, अमर ज्ञान उजाला।।

अगम निगम बोध पष्ठ 39(1729) का सारांश :-

पष्ठ 39(1729) से 44(1734) तक गोरखनाथ से गोष्ठी का वर्णन है।

साहेब कबीर व गोरख नाथ की गोष्ठी

एक समय गोरखनाथ (सिद्ध महात्मा) काशी (बनारस) में स्वामी रामानन्द जी (जो साहेब कबीर के गुरु जी थे) से शास्त्रार्थ यानि गोष्ठी करने के लिए आए। जब ज्ञान गोष्ठी के लिए एकत्रित हुए तब कबीर साहेब भी अपने पूज्य गुरुदेव स्वामी रामानन्द जी के साथ पहुँचे थे। एक उच्च आसन पर रामानन्द जी बैठे उनके चरणों में बालक रूप में कबीर साहेब (पूर्ण परमात्मा) बैठे थे। गोरख नाथ जी भी एक उच्च आसन पर बैठे थे तथा अपना त्रिशूल अपने आसन के पास ही जमीन में गाड़ रखा था। गोरख नाथ जी ने कहा कि रामानन्द मेरे से चर्चा करो। उसी समय बालक रूप (पूर्ण ब्रह्म) कबीर जी ने कहा - नाथ जी पहले मेरे से चर्चा करें। पीछे मेरे गुरुदेव जी से बात करना।

योगी गोरखनाथ प्रतापी, तासो तेज पृथ्वी कांपी। काशी नगर में सो पग परहीं, रामानन्द से चर्चा करहीं।
चर्चा में गोरख जय पावै, कंठी तोरै तिलक छुड़ावै। सत्य कबीर शिष्य जो भयऊ, यह वृतांत सो सुनि लयऊ।
गोरखनाथ के डर के मारे, वैरागी नहीं भेष सवारे। तब कबीर आज्ञा अनुसारा, वैष्णव सकल स्वरूप संवारा।
सो सुधि गोरखनाथ जो पायौ, काशी नगर शीघ्र चल आयौ। रामानन्द को खबर पठाई, चर्चा करो मेरे संग आई।
रामानन्द की पहली पौरी, सत्य कबीर बैठे तीस ठौरी। कह कबीर सुन गोरखनाथा, चर्चा करो हमारे साथा।
प्रथम चर्चा करो संग मेरे, पीछे मेरे गुरु को टेरे। बालक रूप कबीर निहारी, तब गोरख ताहि वचन उचारी।

इस पर गोरख नाथ जी ने कहा तू बालक कबीर जी कब से योगी बन गया। कल जन्मा अर्थात् छोटी आयु का बच्चा और चर्चा मेरे (गोरख नाथ के) साथ। तेरी क्या आयु है? और कब वैरागी (संत) बन गए?

गोरखनाथ जी का प्रश्न :-

कबके भए वैरागी कबीर जी, कबसे भए वैरागी।

कबीर जी का उत्तर :-

नाथ जी जब से भए वैरागी मेरी, आदि अंत सुधि लागी।।

धूंधूकार आदि को मेला, नहीं गुरु नहीं था चेला। जब का तो हम योग उपासा, तब का फिरूं अकेला।।
धरती नहीं जद की टोपी दीना, ब्रह्मा नहीं जद का टीका। शिव शंकर से योगी, न थे जदका झोली शिका।।
द्वापर को हम करी फावड़ी, त्रेता को हम दंडा। सतयुग मेरी फिरी दुहाई, कलियुग फिरौ नो खण्डा।।
गुरु के वचन साधु की संगत, अजर अमर घर पाया। कहैं कबीर सुनों हो गोरख, मैं सब को तत्त्व लखाया।।

साहेब कबीर जी ने गोरख नाथ जी को बताया हैं कि मैं कब से वैरागी बना। साहेब कबीर ने उस समय वैष्णों संतों जैसा वेष बना रखा था। जैसा श्री रामानन्द जी ने बाणा (वेष) बना रखा था। मस्तिक में चन्दन का टीका, टोपी व झोली सिक्का एक फावड़ी (जो भजन करने के लिए लकड़ी की अंग्रेजी के अक्षर '' T'' के आकार की होती है) तथा एक डण्डा (लकड़ी का लट्ठा) साथ लिए हुए थे। ऊपर के शब्द में कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि जब कोई सष्टि (काल सष्टि) नहीं थी तथा न सतलोक सष्टि थी तब मैं (कबीर) अनामी लोक में था और कोई नहीं था। चूंकि साहेब कबीर ने ही सतलोक सष्टि शब्द से रची तथा फिर काल (ज्योति निरंजन-ब्रह्म) की सष्टि भी सतपुरुष ने रची। जब मैं अकेला रहता था जब धरती (पथ्वी) भी नहीं थी तब से मेरी टोपी जानो। ब्रह्मा जो गोरखनाथ तथा उनके गुरु मच्छन्दर नाथ आदि सर्व प्राणियों के शरीर बनाने वाला पैदा भी नहीं हुआ था। तब से मैंने टीका लगा रखा है अर्थात् मैं (कबीर) तब से सतपुरुष आकार रूप मैं ही हूँ।

सतयुग-त्रेतायुग-द्वापर तथा कलियुग ये चार युग तो मेरे सामने असंख्यों जा लिए। कबीर परमेश्वर जी ने कहा कि हमने सतगुरु वचन में रह कर अजर-अमर घर (सतलोक) पाया। इसलिए सर्व प्राणियों को तत्त्व (वास्तविक ज्ञान) बताया है कि पूर्ण गुरु से उपदेश ले कर आजीवन गुरु वचन में चलते हुए पूर्ण परमात्मा का ध्यान सुमरण करके उसी अजर-अमर सतलोक में जा कर जन्म-मरण रूपी अति दुःखमयी संकट से बच सकते हो।

इस बात को सुनकर गोरखनाथ जी ने पूछा हैं कि आपकी आयु तो बहुत छोटी है अर्थात् आप लगते तो हो बालक से।

जो बूझे सोई बावरा, क्या है उम्र हमारी। असंख युग प्रलय गई, तब का ब्रह्मचारी।।टेक।।
कोटि निरंजन हो गए, परलोक सिधारी। हम तो सदा महबूब हैं, स्वयं ब्रह्मचारी।।
अरबों तो ब्रह्मा गए, उनन्चास कोटि कन्हैया। सात कोटि शम्भू गए, मोर एक नहीं पलैया।।
कोटिन नारद हो गए, मुहम्मद से चारी। देवतन की गिनती नहीं है, क्या सृष्टि विचारी।।
नहीं बुढ़ा नहीं बालक, नाहीं कोई भाट भिखारी। कहैं कबीर सुन हो गोरख, यह है उम्र हमारी।।

श्री गोरखनाथ सिद्ध को सतगुरु कबीर साहेब अपनी आयु का विवरण देते हैं। असंख युग प्रलय में गए। तब का मैं वर्तमान हूँ अर्थात् अमर हूँ। करोड़ों ब्रह्म (क्षर पुरूष अर्थात् काल) भगवान मत्यु को प्राप्त होकर पुनर्जन्म प्राप्त कर चुके हैं।

एक ब्रह्मा की आयु 100 (सौ) वर्ष की है।

ब्रह्मा का एक दिन = 1000 (एक हजार) चतुर्युग तथा इतनी ही रात्रि।

दिन-रात = 2000 (दो हजार) चतुर्युग।

{नोट – ब्रह्मा जी के एक दिन में 14 इन्द्रों का शासन काल समाप्त हो जाता है। एक इन्द्र का शासन काल बहतर चतुर्युग का होता है। इसलिए वास्तव में ब्रह्मा जी का एक दिन (72 गुणा 14 =) 1008 चतुर्युग का होता है तथा इतनी ही रात्रि, परन्तु इसको एक हजार चतुर्युग ही मान कर चलते हैं।}

महीना= 30 गुणा 2000 = 60000 (साठ हजार) चतुर्युग।

वर्ष = 12 गुणा 60000 = 720000 (सात लाख बीस हजार) चतुर्युग की।

ब्रह्मा जी की आयु -

720000 गुणा 100= 72000000 (सात करोड़ बीस लाख) चतुर्युग की।

ब्रह्मा से सात गुणा विष्णु जी की आयु -

72000000 गुणा 7 = 504000000 (पचास करोड़ चालीस लाख) चतुर्युग की विष्णु की आयु है।

विष्णु से सात गुणा शिव जी की आयु -

504000000 गुणा 7 = 3528000000 (तीन अरब बावन करोड़ अस्सी लाख) चतुर्युग की शिव की आयु हुई।

ऐसी आयु वाले सत्तर हजार शिव भी मर जाते हैं तब सदाशिव रूप में विराजमान एक ज्योति निरंजन (ब्रह्म) मरता है। पूर्ण परमात्मा के द्वारा पूर्व निर्धारित किए समय पर एक ब्रह्मण्ड में महाप्रलय होती है। यह (सत्तर हजार शिव की मत्यु अर्थात् एक सदाशिव/ज्योति निरंजन की मत्यु होती है) एक युग होता है परब्रह्म का। परब्रह्म का एक दिन एक हजार युग का होता है इतनी ही रात्रि होती है तीस दिन-रात का एक महिना तथा बारह महिनों का परब्रह्म का एक वर्ष हुआ तथा सौ वर्ष की परब्रह्म की आयु है। परब्रह्म की भी मत्यु होती है। ब्रह्म अर्थात् ज्योति निरंजन की मत्यु परब्रह्म के एक दिन के पश्चात् होती है परब्रह्म के सौ वर्ष पूरे होने के पश्चात् एक शंख बजता है सर्व ब्रह्मण्ड नष्ट हो जाते हैं। केवल सतलोक व ऊपर तीनों लोक ही शेष रहते हैं। इस प्रकार कबीर परमात्मा ने कहा है कि करोड़ों ज्योति निरंजन मर लिए मेरी एक पल भी आयु कम नहीं हुई है अर्थात् मैं वास्तव में अमर पुरुष हूं। अन्य भगवान जिसका तुम आश्रय ले कर भक्ति कर रहे हो वे नाशवान हैं। फिर आप अमर कैसे हो सकते हो? अरबों तो ब्रह्मा गए, 49 कोटि कन्हैया। सात कोटि शंभु गए, मोर एक नहीं पलैया।

यहाँ देखें अमर पुरुष कौन है? 343 करोड़ त्रिलोकिय ब्रह्मा मर जाते हैं, 49 करोड़ त्रिलोकिय विष्णु तथा 70 हजार त्रिलोकिय शिव मर जाते हैं तब 21 ब्रह्माण्ड का विनाश होता है एक ज्योति निरंजन (काल-ब्रह्म) ब्रह्म काल रूप में मरता है। जिसे गीता जी के अध्याय 15 के श्लोक 16 में क्षर -पुरुष (नाशवान) भगवान कहा है इसे ब्रह्म भी कहते हैं तथा इसी श्लोक में जिसे अक्षर पुरूष (अविनाशी) कहा है वह परब्रह्म है जिसे अक्षर पुरुष भी कहते हैं। अक्षर पुरुष अर्थात् परब्रह्म भी नष्ट होता है। यह काल भी करोड़ों समाप्त हो जाएंगे। तब सर्व अण्डों अर्थात् ब्रह्मण्डों का नाश होगा। केवल सतलोक व उससे ऊपर के लोक शेष रहेगें। अचिंत, सत्यपुरूष के आदेश से सष्टि रचेगा। यही क्षर पुरुष तथा अक्षर पुरुष की सष्टि पुनः प्रारम्भ होगी।

जो गीता जी के अध्याय 15 के श्लोक 17 में कहा है कि वह उत्तम पुरुष (पूर्ण परमात्मा) तो कोई और ही है जिसे अविनाशी परमात्मा नाम से जाना जाता है। वह पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर सतपुरुष स्वयं कबीर साहेब है। केवल सतपुरुष अजर-अमर परमात्मा है तथा उसी का सतलोक (सतधाम) अमर है जिसे अमर लोक भी कहते हैं। वहाँ की भक्ति करके भक्त आत्मा पूर्ण मुक्त होती है। जिसका कभी मरण नहीं होता। कबीर साहेब ने कहा कि यह उपलब्धि सत्यनाम के जाप से प्राप्त होती है जो उसके मर्म भेदी गुरु से मिले तथा उसके बाद सारनाम मिले तथा साधक आजीवन मर्यादा में रहकर तीनों मन्त्रों (ओम् तथा तत् जो सांकेतिक है तथा सत् भी सांकेतिक है) का जाप करे तब सतलोक में वास तथा सतपुरुष प्राप्ति होती है। करोड़ों नारद तथा मुहम्मद जैसी पाक (पवित्र) आत्मा भी आकर (जन्म कर) जा (मर) चुके हैं, देवताओं की तो गिनती नहीं। मानव शरीर धारी प्राणियों तथा जीवों का तो हिसाब क्या लगाया जा सकता है? मैं (कबीर साहेब) न बूढ़ा न बालक, मैं तो जवान रूप में रहता हूँ जो ईश्वरीय शक्ति का प्रतीक है। यह तो मैं लीलामई शरीर में आपके समक्ष हूँ। कहै कबीर सुनों जी गोरख, मेरी आयु (उम्र) यह है जो आपको ऊपर बताई है।

यह सुन कर श्री गोरखनाथ जी जमीन में गड़े लगभग 7 फूट ऊँचें त्रिशूल के ऊपर के भाग पर अपनी सिद्धि शक्ति से उड़ कर बैठ गए और कहा कि यदि आप इतने महान् हो तो मेरे बराबर में (जमीन से लगभग सात फूट) ऊँचा उठ कर बातें करो। यह सुन कर कबीर साहेब बोले नाथ जी! ज्ञान

गोष्टी के लिए आए हैं न कि नाटक बाजी करने के लिए। आप नीचे आएं तथा सर्व भक्त समाज के सामने यथार्थ भक्ति संदेश दें।

श्री गोरखनाथ जी ने कहा कि आपके पास कोई शक्ति नहीं है। आप तथा आपके गुरुजी दुनियाँ को गुमराह कर रहे हो। आज तुम्हारी पोल खुलेगी। ऐसे हो तो आओ बराबर। तब कबीर साहेब के बार-2 प्रार्थना करने पर भी नाथ जी बाज नहीं आए तो साहेब कबीर ने अपनी पराशक्ति (पूर्ण सिद्धि) का प्रदर्शन किया। साहेब कबीर की जेब में एक कच्चे धागे की रील (कुकड़ी) थी जिसमें लगभग 150 (एक सौ पचास) फुट लम्बा धागा लिपटा (सिमटा) हुआ था, को निकाला और धागे का एक सिरा (आखिरी छौर) पकड़ा और आकाश में फैंक दिया। वह सारा धागा उस बंडल (कुकड़ी) से उधड़ कर सीधा खड़ा हो गया। साहेब कबीर जमीन से आकाश में उड़े तथा लगभग 150 (एक सौ पचास) फुट सीधे खड़े धागे के ऊपर वाले सिरे पर बैठ कर कहा कि आओ नाथ जी! बराबर में बैठकर चर्चा करें। गोरखनाथ जी ने ऊपर उड़ने की कोशिश की लेकिन उल्टा जमीन पर टिक गए।

पूर्ण परमात्मा (पूर्णब्रह्म) के सामने सिद्धियाँ निष्क्रिय हो जाती हैं। जब गोरख नाथ जी की कोई कोशिश सफल नहीं हुई, तब जान गए कि यह कोई मामूली भक्त या संत नहीं है। जरूर कोई अवतार (ब्रह्मा, विष्णु, महेश में से) है। तब साहेब कबीर से कहा कि हे परम पुरुष! कृपया नीचे आएँ और अपने दास पर दया करके अपना परिचय दें। आप कौन शक्ति हो? किस लोक से आना हुआ है? तब कबीर साहेब नीचे आए और कहा कि -

शब्द (यह शब्द अगम निगम बोध के पृष्ठ 41 पर है।)

अवधु अविगत से चल आया, कोई मेरा भेद मर्म नहीं पाया।।टेक।।

ना मेरा जन्म न गर्भ बसेरा, बालक है दिखलाया। काशी नगर जल कमल पर डेरा, तहाँ जुलाहे ने पाया।।
माता-पिता मेरे कछु नहीं, ना मेरे घर दासी। जुलहा को सुत आन कहाया, जगत करे मेरी हांसी।।
पांच तत्त्व का धड़ नहीं मेरा, जानूं ज्ञान अपारा। सत्य स्वरूपी नाम साहिब का, सो है नाम हमारा।।
अधरदीप (सतलोक) गगन गुफा में, तहां निज वस्तु सारा। ज्योति स्वरूपी अलख निरंजन (ब्रह्म), भी धरता ध्यान हमारा।।
हाड चाम लोहू नहीं मोरे, जाने सत्यनाम उपासी। तारन तरन अभै पद दाता, मैं हूं कबीर अविनासी।।

साहेब कबीर ने कहा कि हे अवधूत गोरखनाथ जी मैं तो अविगत स्थान (जिसकी गति/भेद कोई नहीं जानता उस सतलोक) से आया हूँ। मैं तो स्वयं शक्ति से बालक रूप बना कर काशी (बनारस) में एक लहर तारा तालाब में कमल के फूल पर प्रकट हुआ हूँ। वहाँ पर नीरू-नीमा नामक जुलाहा दम्पति को मिला जो मुझे अपने घर ले आया। मेरे कोई मात-पिता नहीं हैं। न ही कोई घर दासी (पत्नी) है और जो उस परमात्मा का वास्तविक नाम है, वही कबीर नाम मेरा है। आपका ज्योति स्वरूप जिसे आप अलख निरंजन (निराकार भगवान) कहते हो वह ब्रह्म भी मेरा ही जाप करता है। मैं सतनाम का जाप करने वाले साधक को प्राप्त होता हूँ अर्थात् वहीं मेरे विषय में सही जानता है। हाड-चाम तथा लहु रक्त से बना मेरा शरीर नहीं है। कबीर साहेब सतनाम की महिमा बताते हुए कहते हैं कि मेरे मूल स्थान (सतलोक) में सतनाम के आधार से जाया जाता है। अन्य साधकों को संकेत करते हुए प्रभु कबीर (कविर्देव) जी कह रहे हैं कि मैं उसी का जाप करता रहता हूँ। इसी मन्त्र (सतनाम) से सतलोक जाने योग्य होकर फिर सारनाम प्राप्ति करके जन्म-मरण से पूर्ण छुटकारा मिलता है। यह तारन तरन पद (पूजा विधि) मैंने (कबीर साहेब अविनाशी भगवान ने) आपको बताई है। इसे कोई नहीं जानता। गोरख नाथ जी को बताया कि हे पुण्य आत्मा! आप काल क्षर पुरुष (ज्योति निरंजन) के जाल में ही हो। न जाने कितनी बार आपके जन्म हो चुके हैं। कभी चौरासी लाख योनियों में कष्ट पाया। आपकी चारों युगों

की भक्ति को काल अब (कलियुग में) नष्ट कर देता यदि आप मेरी शरण में नहीं आते।

यह काल इक्कीस ब्रह्मण्डों का मालिक है। इसको शाप लगा है कि एक लाख मानव शरीर धारी (देव व ऋषि भी) जीव प्रतिदिन खायेगा तथा सवा लाख मानव शरीरधारी प्राणियों को नित्य उत्पन्न करेगा। इस प्रकार प्रतिदिन पच्चीस हजार बढ़ रहे हैं। उनको ठिकाने लगाए रखने के लिए तथा कर्म भुगताने के लिए अपना कानून बना कर चौरासी लाख योनियाँ बना रखी हैं। इन्हीं 25 हजार अधिक उत्पन्न जीवों के अन्य प्राणियों के शरीर में प्रवेश करता है। जैसे खून में जीवाणु, वायु में जीवाणु आदि-2। इसकी पत्नी आदि माया (प्रकति देवी) है। इसी से काल (ब्रह्म/अलख निरंजन) ने (पत्नी-पति के संयोग से) तीन पुत्र ब्रह्मा-विष्णु-शिव उत्पन्न किए। इन तीनों को अपने सहयोगी बना कर ब्रह्मा को शरीर बनाने का, विष्णु को पालन-पोषण का और शिव को संहार करने का कार्य दे रखा है। इनसे प्रथम तप करवाता है फिर सिद्धियाँ भर देता है जिसके आधार पर इनसे अपना उल्लू सीधा करता है और अंत में इन्हें (जब ये शक्ति रहित हो जाते हैं) भी मार कर तप्त शिला पर भून कर खाता है तथा अन्य पुत्र पूर्व ही उत्पन्न करके अचेत रखता है उनको सचेत करके अपना उत्पत्ति, स्थिति तथा संहार का कार्य करता है। ऐसे अपने काल लोक को चला रहा है। इन सबसे ऊपर पूर्ण परमात्मा है। उसका ही अवतार मुझ (कबीर परमेश्वर) को जान।

गोरख नाथ के मन में विश्वास हो गया कि कोई शक्ति है जो कुल का मालिक है। गोरखनाथ ने कहा कि मेरी एक शक्ति और देखो। यह कह कर गंगा की ओर चल पड़ा। सर्व दर्शकों की भीड़ भी साथ ही चली। लगभग 500 फुट पर गंगा नदी थी। उसमें जाकर छलांग लगाते हुए कहा कि मुझे ढूंढ दो। फिर मैं (गोरखनाथ) आपका शिष्य बन जाऊँगा। गोरखनाथ मछली बन गए। साहेब कबीर ने उसी मछली को पानी से बाहर निकाल कर सबके सामने गोरखनाथ बना दिया। तब गोरखनाथ जी ने परमेश्वर कबीर जी को पूर्ण परमात्मा स्वीकार किया और शिष्य बने। परमेश्वर कबीर जी से सतनाम ले कर भक्ति की तथा सिद्धियाँ प्राप्त करने वाली साधना त्याग दी।

गीता जी के अध्याय 14 के श्लोक 26,27 का भाव है कि साधक अव्याभिचारिणी भक्ति अर्थात् पूर्ण आश्रित मुझ (काल-ब्रह्म) पर हो कर (अन्य देवी-देवताओं तथा माता, रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु, तमगुण शिव आदि की पूजा त्याग कर) केवल मेरी भक्ति करता है तथा एक मेरे मन्त्र ऊँ का जाप करता है वह उपासक उस परमात्मा को पाने योग्य हो जाता है और आगे की साधना करके उस परमानन्द के परम सुख को भी मेरे माध्यम से प्राप्त करता है।

जैसे कोई विधार्थी मैट्रिक, बी.ए., एम.ए. करके किसी कोर्स में प्रवेश ले कर सर्विस प्राप्त करके रोजी प्राप्त करके सुखी होता है तो उसके लिए उसने मैट्रिक की शिक्षा प्राप्त की जिसके बाद कोर्स (ट्रेनिंग) में प्रवेश किया। उसको मैट्रिक की शिक्षा प्रतिष्ठा (अवस्था) अर्थात् सहयोगी हुआ। सर्विस प्रदान कर्त्ता नहीं हुआ। ठीक इसी प्रकार काल भगवान (ब्रह्म) कह रहा है कि उस अविनाशी परमात्मा के अमरत्व का और नित्य रहने वाले स्वभाव का तथा धर्म का और अखण्ड स्थाई रहने के आनन्द का सहयोगी मैं (ब्रह्म) हूँ। इसी का प्रमाण गीता जी के अध्याय 18 के श्लोक 66 में कहा है कि सर्व मेरे सत्र की साधनाओं (ओम् एक अक्षर के जाप तथा पांचों यज्ञों की कमाई) को मुझमें त्याग कर एक (पूर्णब्रह्म) की शरण में जा तब तेरे सर्व पाप क्षमा करवा दूंगा। जिन भक्त आत्माओं ने काल (ब्रह्म) के ऊँ मन्त्र का जाप अनन्य मन से किया। उनको कबीर भगवान ने आगे की उस पूर्ण परमात्मा की भक्ति प्रदान करके काल लोक से पार किया। जैसे नामदेव नामक परम भक्त केवल एक नाम ऊँ का जाप करते थे। उससे उनको बहुत सिद्धियाँ प्राप्त हो गई थी फिर भी मुक्ति नहीं थी। फिर कबीर साहेब श्री नामदेव जी को

मिले तथा सतलोक व सतपुरुष का ज्ञान करवाया। सोहं मन्त्र दिया जो परब्रह्म का जाप है। फिर सार शब्द दिया जो पूर्णब्रह्म का जाप है। जब नामदेव जी मुक्त हुए।

ऐसे ही गोरखनाथ जी ने भी एक मन्त्र अलख निरंजन का जाप तथा चांचरी मुद्रा की साधना की। तब साहेब कबीर ने उन्हें ऊँ तथा सोहं मन्त्र दिया तथा काल जाल से बाहर किया।

मलूक दास जी को परमेश्वर कबीर जी संत रूप में मिले थे। उनको सत्यलोक ले जाकर वापिस छोड़ा था। अपनी महिमा से परिचित करवाया। उसके पश्चात् संत मलूक दास जी ने कबीर जी की महिमा का गुणगान किया।

अगम निगम बोध के पंष्ठ 45(1735) पर मलूक दास जी का शब्द है :-

जपो रे मन साहेब नाम कबीर।(टेक)
एक समय गुरू बंशी बजाई कालिंद्री के तीर। सुरनर मुनि सब चकित भये, रूक गया यमुना नीर।।
काशी तज गुरू मगहर गए, दोऊ दीन के पीर।।
कोई गाड़े कोई अग्नि जलावै, नेक न धरते धीर। चार दाग से सतगुरू न्यारा। अजरो–अमर शरीर।।
जगन्नाथ का मंदिर बचाया, ऐसे गहर गम्भीर। दास मलूक सलूक कहत है, खोजो खसम कबीर।।

''संत दादू दास जी को कबीर जी ने शरण में लिया''

श्री दादू जी को सात वर्ष की आयु में जिन्दा बाबा जी के स्वरूप में परमेश्वर जी मिले थे। उस समय कई अन्य हमउम्र बच्चे भी खेल रहे थे। परमेश्वर कबीर जी ने अपने कमण्डल (लोटे) से कुछ जल पान के पत्ते को कटोरे की तरह बनाकर पिलाया तथा प्रथम नाम देकर सत्यलोक ले गए। दादू जी तीन दिन-रात अचेत (Coma में) रहे। फिर सचेत हुए तथा कबीर जी का गुणगान किया। जो बच्चे श्री दादू जी के साथ खेल रहे थे। उन्होंने गाँव में आकर बताया कि एक बूढ़ा बाबा आया था। उसने जादू-जंत्र का जल दादू को पिलाया था। परंतु दादू जी ने बताया था किः-

जिन मोकूं निज नाम दिया, सोई सतगुरू हमार। दादू दूसरा कोई नहीं, कबीर सिरजनहार।।
दादू नाम कबीर की, जे कोई लेवे ओट। ताको कबहू लागै नहीं, काल वज्र की चोट।।
केहरी नाम कबीर है, विषम काल गजराज। दादू भजन प्रताप से, भागै सुनत आवाज।।
अब हो तेरी सब मिटे, जन्म–मरण की पीर। श्वांस–उश्वांस सुमरले, दादू नाम कबीर।।

स्पष्टीकरण :- संत मलूक दास जी तथा संत दादू दास जी को परमेश्वर संत गरीबदास जी की तरह सतलोक जाने के पश्चात् मिले थे। यह प्रकरण कबीर सागर में नहीं था, बाद में लिखा गया है।

अगम निगम बोध पंष्ठ 44(1734) पर नानक जी का शब्द है :-''वाह–वाह कबीर गुरू पूरा है''

वाह–वाह कबीर गुरू पूरा है।(टेक)
पूरे गुरू की मैं बली जाऊँ जाका सकल जहूरा है।
अधर दुलीचे परे गुरूवन के, शिव ब्रह्मा जहाँ शूरा है।
श्वेत ध्वजा फरकत गुरूवन की, बाजत अनहद तूरा है।
पूर्ण कबीर सकल घट दरशै, हरदम हाल हजूरा है।
नाम कबीर जपै बड़भागी, नानक चरण को धूरा है।

अगम निगम बोध पंष्ठ 46 पर प्रमाण दिया है कि महादेव जी के पूज्य इष्ट देव कबीर परमेश्वर जी हैं।

(४६) बोधसागर

श्रीमहादेव उवाच

श्लोक–यः सुखसागरो दाता बीजज्ञानं तथैव च ।
आद्यन्तरहितो लोके यः कबीर इहोच्यते ॥
कलांशेन गतो भूम्यां विलासा सत्य संज्ञकः ।
दीनोद्धारेतिदक्षः कबीरसंज्ञः इहोच्यते ॥
कर्ताकोन्यायकारी च व्यक्ताव्यक्तःसनातनः ।
रमते सत्यलोके यः स कबीर इहोच्यते ॥

पारवतीजीने पूछा कि कबीर किसको कहते हैं ? उनके उत्तरमें शिवजीने कबीर साहिबकी स्तुतिमें सौ एक श्लोक कहे हैं उस ग्रन्थको कबीर एकोत्तर कहते हैं जो सामवेद और पाताल खण्डमें हैं उसमेंसे यह तीन श्लोक लिखे हैं ।

यह फोटोकॉपी कबीर सागर के अध्याय अगम निगम बोध के पष्ठ 46 की है। इसमें किसी अन्य ने यह महादेव-पार्वती का प्रकरण लिखा है। यह शुद्ध संस्कत नहीं है। फिर भी सच्चाई यह है कि पार्वती ने पूछा कि आप जिस कबीर की महिमा बताते हो, वह कौन है? श्री शिव जी ने गोलमोल उत्तर दिया है। क से कर्ता, ब से ब्रह्म तथा र से सबमें रमण करने के कारण परमात्मा कबीर कहलाता है।

वास्तव में परमेश्वर कबीर जी तीनों देवताओं (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी) को उनके लोकों में जाकर मिले थे। उनको शिष्य बनाया था। संत गरीबदास जी ने इसको बहुत अच्छा सत्य वर्णन किया है, वह इस प्रकार है:-

आदि अन्त हमरे नहीं, नहीं मध्य मिलावा मूल। ब्रह्मा ज्ञान सुनाईया, धरि पिण्डा अस्थूल।।
श्वेत भूमि को हम गए, जहाँ विष्णु विश्वम्भर नाथ। हरियं हिरा नाम दे, अष्ट कमल दल स्वांत।।
हम बैरागी ब्रह्म पद, सन्यासी महादेव। सोहं नाम दिया शंकर को, करे हमारी सेव।।

आप जी ने पढ़ा कि शिव जी ने कबीर जी को अपना प्रभु माना है।

उपरोक्त वर्णन में परमेश्वर कबीर जी ने काल ब्रह्म तथा उसके पुत्रों की पूजा का ज्ञान तथा लाभ-हानि बताई। परमेश्वर जी ने स्पष्ट किया है कि :-

कबीर, तीन देव की जो करते भक्ति। उनकी कबहु ना होवे मुक्ति।।
ब्रह्मा, विष्णु, महेश, माया और धर्मराया (काल) कहिए। इन पाँचों मिल प्रपंच बनाया, बानी हमरी लहिए।।

कबीर सागर के अध्याय ''अगम निगम बोध'' का सारांश सम्पूर्ण हुआ।

।।सत साहेब।।

अध्याय ''सुमिरन बोध'' का सारांश

कबीर सागर में 37वां अध्याय सुमिरन बोध पृष्ठ 1742 पर है।

विवेचन :- पाठकों से बार-बार निवेदन किया है कि काल प्रेरित ज्ञानहीन कबीर पंथियों ने कबीर सागर के यथार्थ ज्ञान को समाप्त कर रखा है। उसकी पूर्ति परमेश्वर कबीर जी ने अपने अंश संत गरीबदास जी (गाँव-छुड़ानी, जिला-झज्जर, प्रान्त-हरियाणा) से कराई है। सुमिरन बोध के प्रारम्भ में आदि गायत्री का वर्णन है जो काटा गया है। फिर भी जो शेष है, उससे भी हमारा सत्य स्पष्ट हो जाता है।

पृष्ठ 1 पर छोटा सुमिरन बोध प्रारम्भ होता है। सुमिरन बोध के दो भाग लिखे हैं जबकि यह एक ही भाग है। प्रथम यानि छोटा सुमिरन बोध की वाणी।

''सुमिरन आदि गायत्री''

आदि गायत्री सुमिरन सारा। सुमिरन हंस उतारे पारा।।
कोटि अठासी घाट हैं। यम बैठे तहं रोक। आदि गायत्री सुमिरिके। हंसा होय निशोक।।
घाटि घाटिन नाखी आगे तब जाई। सकल दूत रहे पछताई।।
आगे मकर तार है डोरी। जहां यम रहे मुख मोरी।।
ओहं सोहं नाम के आगे करे पियान। अजर लोक बासा करे, जग मग द्वीप स्थान।।
आदि गायत्री सुमिरिके। आवा गमन नशाया।। सत्यलोक बासा करे। कह कबीर समझाय।।

भावार्थ :- ज्ञानहीन कबीर पंथियों ने कबीर परमेश्वर के यथार्थ ज्ञान को अज्ञान बना अड़ंगा करके लिखा है।

जैसा कि आप जी को बताया है कि यथार्थ ज्ञान परमेश्वर कबीर जी ने अपनी प्यारी आत्मा अपने नाद के सपूत यानि शिष्य गरीबदास जी द्वारा यथार्थ ज्ञान उजागर करवाया है। संत गरीबदास जी ने गायत्री मंत्र जो बताया है, वह शरीर में बने कमलों में विराजमान देवताओं की साधना का है जो जीव के घाट (मार्ग) को रोके बैठे हैं। इन देवताओं द्वारा रोके गए मार्ग गायत्री मंत्र से खुल जाते हैं। इन मंत्रों का नाम संत गरीबदास जी ने ब्रह्म गायत्री मंत्र कहा है। इनके द्वारा मार्ग छोड़ देने के पश्चात् सर्व देव अपने आप रास्ता छोड़ते चले जाते हैं। फिर यम के दूत भी उस साधक को बाधा नहीं करते। कबीर सागर के अध्याय ''अनुराग सागर'' में पृष्ठ पर भी पाँच नामों के स्मरण का प्रमाण है। वाणी :-

पाँच नाम कही तब दल फेरा। पुरूष नाम लीन्हो तीहीं बारा।।

इन्हीं पाँच नामों वाले मंत्र ब्रह्म गायत्री का ज्ञान संत गरीबदास जी ने ''ब्रह्म बेदी'' नामक अध्याय यानि अंग में दिया है। ब्रह्मबेदी का कुछ अंश आगे लिखा है :-

''ब्रह्म बेदी''

ब्रह्म बेदी का अर्थ परमात्मा की भक्ति का सुसज्जित आसन जिसके ऊपर छतर या चाँदनी लगी हो, सुन्दर स्वच्छ गलीचा या गद्दा बिछा हो जैसे पाठ प्रकाश के समय श्री सद्ग्रन्थ साहेब का आसन तैयार करते हैं। भावार्थ है कि आत्मा में परमात्मा की बेदी बनाकर परमेश्वर को आसन-सिहांसन पर विराजमान करके उसकी स्तुति करें। संत गरीबदास जी की वाणी :-

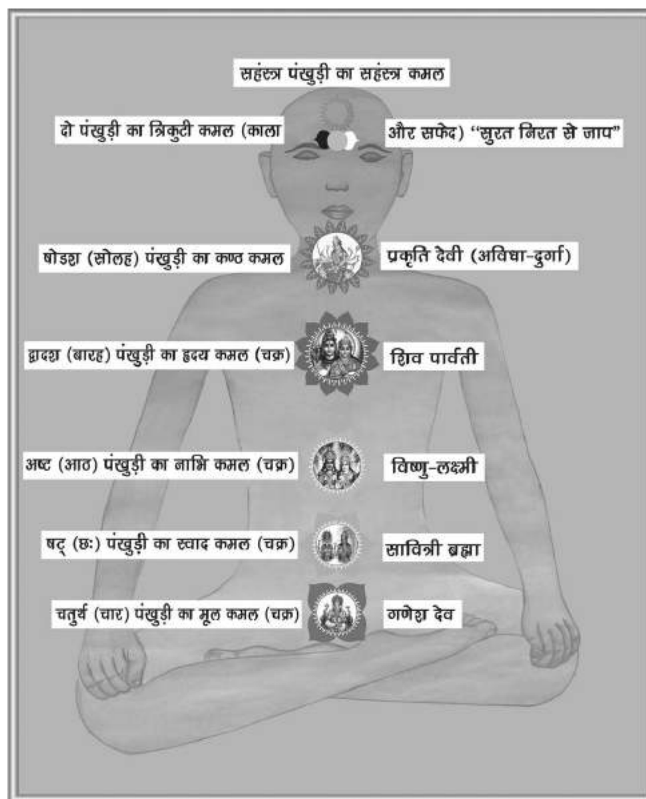
वाणी :- ज्ञान सागर अति उजागर, निर्विकार निरंजनं।

ब्रह्मज्ञानी महाध्यानी, सत सुकृत दुःख भंजनं।।1

❖ **सरलार्थ :- हे परमेश्वर! आप सर्व ज्ञान सम्पन्न हो, ज्ञान के सागर हो। आप अति उजागर अर्थात् पूर्ण रूप मान्य हो। सर्व को आपका ज्ञान है कि परमात्मा परम शक्ति है। इस प्रकार आपका सर्व को ज्ञान है। यह तो उजागर अर्थात् स्पष्ट है कि परमात्मा समर्थ है। आप निर्-विकार निरंजन हो। आप में कोई दोष नहीं, कोई विषय-विकार नहीं है। आप वास्तव में निरंजन हैं। निरंजन का अर्थ है माया रहित अर्थात् निर्लेप परमात्मा। काल भी निरंजन कहलाता है। वास्तव में वह निरंजन नहीं है, वह ज्योति निरंजन है। काल निरंजन है, वह निर्विकार निरंजन नहीं है। हे परमात्मा! आप ब्रह्म ज्ञानी हैं। परमात्मा का ज्ञान अर्थात् अपनी जानकारी आप ही प्रकट होकर बताते हैं। इसलिए आप ब्रह्म ज्ञानी हो। अन्य नकली ब्रह्म ज्ञानी हैं। हे परमात्मा! आप महाध्यानी हैं। आप सर्व प्राणियों का ध्यान रखते हो। इस कारण से आप जैसा ध्यानी कोई नहीं। आप सत सुकत अर्थात् सच्चे कल्याणकर्ता हो। आप अपने भक्त का दुःख नाश करने वाले हैं।(1)**

अब वाणी सँख्या 2 से 8 तक मानव शरीर में बने कमलों का वर्णन संत गरीबदास जी ने किया है। साथ में उनके कमलों को विकसित करने के मंत्र भी बताए हैं। परंतु इन मंत्रों के जाप की विधि केवल मेरे को (संत रामपाल दास को) पता है तथा भक्तों को नाम देने की आज्ञा भी मुझे ही है। यदि कोई इन मंत्रों को जान पढ़कर जाप करेगा तो उसको कोई लाभ नहीं होगा।

पहले यह मानव शरीर में बने कमलों का चित्र देखें :-



शरीर (पिण्ड) में कमलों (चक्रों) का चित्र

वाणी :- मूल चक्र गणेश बासा, रक्त वर्ण जहां जानिये।
किलियं जाप कुलीन तज सब, शब्द हमारा मानिये।।2

❖ **सरलार्थ :- मानव शरीर में एक रीढ़ की हड्डी (Spine) है जिसे Back Bone भी कहते हैं। गुदा के पास इसका निचला सिरा है। इस रीढ़ की हड्डी के साथ शरीर की ओर गुदा से एक इन्च ऊपर मूल चक्र (कमल) है जिसका रक्त वर्ण अर्थात् खून जैसा लाल रंग है। इस कमल की चार पंखुड़ियाँ हैं। इस कमल में श्री गणेश देव का निवास है। हे साधक! इस कमल को खोलने के लिए किलियम् नाम का जाप कर और सब कूलीन अर्थात् नकली व्यर्थ नामों का जाप त्याग दे, हमारे वचन पर विश्वास करके मान लेना।(2)**

वाणी :- स्वाद चक्र ब्रह्मादि बासा, जहां सावित्री ब्रह्मा रहैं।
ॐ जाप जपंत हंसा, ज्ञान जोग सतगुरु कहैं।।3

❖ **सरलार्थ :- मूल चक्र से एक इन्च ऊपर स्वाद कमल है। इस कमल में सावित्री तथा ब्रह्मा जी का निवास है। इस कमल को विकसित करने के लिए ओम् (ॐ) नाम का जाप कर। यह भेद परमेश्वर कबीर जी ने मुझे (संत गरीबदास जी से) सतगुरू रूप में प्रकट होकर कहा है। (3)**

वाणी :- नाभि कमल में विष्णु विशम्भर, जहां लक्ष्मी संग बास है।
हरियं जाप जपन्त हंसा, जानत बिरला दास है।।4

❖ **सरलार्थ :- शरीर में बनी नाभि तो पेट के ऊपर स्पष्ट दिखाई देती है। इसके ठीक पीछे रीढ़ की हड्डी के ऊपर यह नाभि चक्र (कमल) है। इसमें लक्ष्मी जी तथा विष्णु जी का निवास है। इस कमल को विकसित करने के लिए हरियम् नाम का जाप करना चाहिए। इस गुप्त मंत्र को कोई बिरला ही जानता है जो सतगुरू का भक्त होगा।(4)**

वाणी :- हृदय कमल महादेव देवं, सती पार्वती संग है।
सोहं जाप जपंत हंसा, ज्ञान जोग भल रंग है।।5

❖ **सरलार्थ :- हृदय कमल की स्थिति इस प्रकार है :- छाती में बने दोनों स्तनों के मध्य स्थान में ठीक पीछे रीढ़ की हड्डी पर यह हृदय कमल बना है, दिल अलग अंग है। हृदय मध्य को भी कहते हैं। जैसे यह बीच (मध्य) का कमल है। तीन इससे नीचे तथा तीन ऊपर बने हैं। इस कारण से इसको हृदय कमल के नाम से जाना जाता है। इस कमल में महादेव शंकर जी तथा सती जी (पार्वती जी) रहते हैं। इस कमल (चक्र) को विकसित करने का नाम मंत्र सोहम् जाप साधक को जपना चाहिए। जो ज्ञान योग में वास्तविक ज्ञान मिला है, यह अच्छा रंग अर्थात् शुभ लगन का कार्य है। इस यथार्थ ज्ञान के रंग में रंगे जाओ।(5)**

वाणी :- कंठ कमल में बसै अविद्या, ज्ञान ध्यान बुद्धि नासही।
लील चक्र मध्य काल कर्मम्, आवत दम कुं फांसही।।6

❖ **सरलार्थ :- गले के पीछे रीढ़ की हड्डी के ऊपर यह कण्ठ कमल बना है। इसमें अविद्या अर्थात् दुर्गा जी का निवास है। जिसके प्रभाव से जीव का ज्ञान तथा भक्ति के समय ध्यान समाप्त होता है तथा बुद्धि को भ्रष्ट करती है दुर्गा। यह लील चक्र अर्थात् 16 पंखुड़ियों का यह चक्र है। इसी के साथ सूक्ष्म रूप में काल निरंजन भी रहता है। दुर्गा देवी जी काल निरंजन की पत्नी है। काल ने गुप्त रहने की प्रतिज्ञा कर रखी है। ये दोनों मिलकर भक्त के अध्यात्म ज्ञान तथा ध्यान को तथा श्वांस से किए जाने वाले नाम स्मरण को भुलाते हैं। इस कमल को विकसित करने का श्रीयम् मंत्र है।(6)**

वाणी :- त्रिकुटी कमल परम हंस पूर्ण, सतगुरु समरथ आप है।

मन पौना सम सिंध मेलो, सुरति निरति का जाप है।।7

❖ **सरलार्थ :- मस्तिष्क का वह स्थान जो दोनों आँखों के ऊपर बनी भौवों (सेलियों) के मध्य जहाँ टीका लगाते हैं, उसके पीछे की ओर आँखों के पीछे यह त्रिकुटी कमल है। इसमें पूर्ण परमात्मा सतगुरू रूप में विराजमान हैं। इस कमल की दो पंखुड़ियाँ हैं। एक का सफेद रंग है, दूसरी का काला रंग है। यहाँ पर विराजमान सतगुरू के सारनाम का जाप सुरति निरति से किया जाता है। वह उपदेशी को बताया जाता है।(7)**

वाणी :- सहंस कमल दल भी आप साहिब, ज्यूं फूलन मध्य गन्ध है।

पूर रह्या जगदीश जोगी, सत् समरथ निर्बन्ध है।।8

❖ **सरलार्थ :- सहंस्र कमल दल का स्थान सिर के ऊपरी भाग में कुछ पीछे की ओर है जहाँ पर कुछ साधक बालों की चोटी रखते हैं। वैसे भी बाल छोटे करवाने पर वहाँ एक भिन्न निशान-सा नजर आता है। इस कमल की हजार पंखुड़ियाँ हैं। इस कारण से इसे सहंस्र कमल कहा जाता है। इसमें काल निरंजन के साथ-साथ परमेश्वर की निराकार शक्ति भी विशेष तौर से विद्यमान है। जैसे भूमध्य रेखा पर सूर्य की उष्णता अन्य स्थानों की अपेक्षा अधिक रहती है। वह जगदीश ही सच्चा समर्थ है, वह निर्बन्ध है। काल तो 21 ब्रह्माण्डों में बँधा है। सत्य पुरूष सर्व का मालिक है।(8)**

वाणी :- मीनी खोज हनोज हरदम, उलट पन्थ की बाट है।

इला पिंगुला सुषमन खोजो, चल हंसा औघट घाट है।।9

❖ **सरलार्थ :- जैसे मछली ऊपर से गिर रहे जल की धारा में उल्टी चढ़ जाती है। इसी प्रकार भक्त को ऊपर की ओर सतलोक में चलना है। उसके लिए इला (इड़ा अर्थात् बाईं नाक से श्वांस) तथा पिंगुला (दांया स्वर नाक से) तथा दोनों के मध्य सुष्मणा नाड़ी है। उसको खोजो। फिर हे भक्त! ऊपर को चल जो औघट घाट अर्थात् उलट मार्ग है। संसार के साधकों का मार्ग त्रिकुटी तक है। संत मार्ग (घाट) इससे और ऊपर उल्टा चढ़ने का मार्ग (घाट) है। यह सुष्मणा सतनाम के जाप से खुल जाता है।(9)**

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट हुआ कि ब्रह्म गायत्री में किन-किन देवों की साधना है। ये मंत्र इनकी पूजा के नहीं हैं। ये मार्ग खाली कराने के हैं।

आगे लिखा है कि :-

ओहं (ओम्) सोहं नाम से आगे करे पयान। अजर लोक बासा करे जगमग द्वीप स्थान।।

भावार्थ :- सतनाम की ओर संकेत है। सत्यनाम दो मंत्रों का है। ॐ-सोहं। इसका जाप श्वांस-उश्वांस से करना होता है। इसके स्मरण से संहस्र कमल से आगे चलना है।

कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' के पष्ठ 62(486) पर परमेश्वर कबीर जी ने अपने परम भक्त धर्मदास जी को सत्यनाम की दीक्षा दी थी। उनको यह दो अक्षर का नाम जाप करने को कहा था।

सतगुरू सो सतनाम लखावै। सतलोक ले हंसन पहुँचावै।।

ओहं (ओम्) सोहं जावन बीरू। धर्मदास सों कहै कबीरू।।

भावार्थ :- सतगुरू वही पूर्ण है जो सत्यनाम बताता है और सत्यनाम को देकर सतलोक ले जाता है। वह सत्यनाम दो अक्षर ओहं (ओम्) तथा सोहं है जो परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को बताया था। इसके बारे में परमेश्वर कबीर जी ने सतर्क किया था कि :-

धरि हो गोय कहिहौ जी ना काही। नाद सुशील लखैंहो ताही।।

सुमिरण दया सेवा चित धरई। सत्यनाम गहि हंसा तरई।।

ज्ञान प्रकाश पष्ठ 63 पर :-

सत्यनाम सुमिरण करै, सतगुरू पद निज ध्यान। आत्म पूजा जीव दया, लहै सो मुक्ति अमान।।

ज्ञान प्रकाश पष्ठ 62 पर :-

पुरूष नाद सुत षोडश आही। नाद पुत्र शिष्य शब्द जो लैही।।

भावार्थ :- सत्यनाम का सुमिरण करना है। गुरू जी द्वारा पद यानि पद्धति के अनुसार स्मरण करना है। जैसे परमेश्वर ने वचन (नाद) से 16 पुत्र उत्पन्न किए तो वे नाद पुत्र कहलाए। इसी प्रकार गुरु का नाद पुत्र वह कहा जाता है जो उपदेश लेकर शिष्य बनता है।

सतनाम की भक्ति की कमाई (स्मरण का संग्रह) अधिक हो जाने के पश्चात् ''सार शब्द'' दिया जाता है। इस प्रकार दीक्षा को तीन चरणों में पूरा किया जाता है। यही प्रमाण कबीर सागर के अध्याय ''अमर मूल'' पष्ठ 265(1111) पर है। कहा है कि :-

धर्मदास मैं कहों बिचारी। जिहितें निबहै सब संसारी।।

प्रथम शिष्य होय जो आई। ता कहूं पान देहुं तुम भाई।।

यह प्रथम मंत्र के लिए कहा है। फिर सतनाम देने को कहा है :-

जब देखो तुम दढ़ता ज्ञाना। ता कहं कहूं (सत) शब्द प्रवाना।।

यह सत्यनाम देने को कहा है। इसके पश्चात् सार शब्द देने का संकेत दिया है।

शब्द माहीं जब निश्चय आवै। ता कहं ज्ञान अगम सुनावै।।

इसी प्रक्रिया को दोबारा स्पष्ट किया है।

धर्मदास तुम कहौ सन्देशा। जो जस जीव ताहि उपदेशा।।

बालक सम जाकर है ज्ञाना। तासौं कहहू बचन प्रवाना।।

यह प्रथम मंत्र यानि ब्रह्म गायत्री देने के लिए कहा है।

जा कहं सूक्ष्म ज्ञान है भाई। ता कहं सुमरन देहु लखाई।।

यह सत्यनाम देने को कहा है।

ज्ञान गम्य जा कहं पुनि होई। सार शब्द जा कहं कहु सोई।।

कबीर सागर के अध्याय ''बीर सिंह बोध'' में पष्ठ 113(537) पर बीर सिंह राजा को प्रथम नाम देने का वर्णन है। पष्ठ 114(538) पर सत्यनाम देने का वर्णन है। पष्ठ 115(539) पर सार शब्द देने का वर्णन है।

बीर सिंह राजा तथा उसकी रानी को प्रथम नाम दिया :-

बीर सिंह बोध पष्ठ 113(537) :-

कबीर बचन-चौपाई

करि आरति तब नारियर मोरा। कारी आरति पुनि भयो भोरा।।

तिनका तोरी पान लिखि दयऊ। रान–राय (राजा) अपन करि लयऊ।।

बहुतक जीव पान मम् पाये। ता घट पुरूष नाम सात आये।।

इसके कुछ दिन पश्चात् राजा ने सतनाम देने की प्रार्थना की।

बीर सिंह बोध पष्ठ 114(538) पर :-

भव सिन्धु अति विकराल दारूण, तासु तत्त्व बुझायऊ।

अजर बीरा नाम दै मोहि, पुरूष दरश करायऊ।।

कबीर वचन

राय श्रवण (कान) नाम सुनायी। तब प्रतीत (विश्वास) राजा जीव आई।।
सत्य पुरूष सत्य फूला। सत्य शब्द (सतनाम) है जीव को मूला।।
सत्यनाम जीव जो पावै। सोई जीव तेहि लोक समावै।।
सोई नाम राजा जो पाये। सत्य पुरूष दर्शन चित लाये।।

बीर सिंह बोध पष्ठ 115(539) पर सार शब्द देने का प्रमाण :-

''राजा बीर सिंह बचन-चौपाई''

साहब सार शबद मोहि दीजै। आपन करि प्रभु निज कै लीजै।।

बीर सिंह बोध पष्ठ 116(540) पर :-

''कबीर बचन''

अजर नाम चौका विस्तारो। जेहि ते पुरूष (जीव) तरै तुम्हारो।।
गाँव तुम्हारे। ब्राह्मणी जाति। धोती वाने कीन्ही बहु भांति।।
बारी मांही कपास लगायी। बहुत नेम से काती बुनायी।।
सो धोती तुम राजा लाओ। पीछै चौका जुगति बनाऊ।।

विवेचन :- सार शब्द देने के लिए परमेश्वर कबीर जी ने शर्त रखी थी कि हे राजन्! तेरी काशी नगरी में एक ब्राह्मणी रहती है। वह मेरी शिष्या है। उसने एक धोती बनाई है। वह धोती आप लाओ तो सार शब्द मिलेगा। पाठकों से निवेदन है कि पूरी जानकारी के लिए कपया पढ़ें इसी पुस्तक के बीर सिंह बोध के सारांश में पष्ठ 195 पर।

अध्याय ''बीर सिंह बोध'' पष्ठ 119(543) पर कबीर परमेश्वर जी ने उसको सार शब्द दिया:-

''कबीर बचन''

जब हम राजा दीन बुझाई। अजर आरती साज मंगाई। अगर चौंका तब कर दीना। मन प्रतीत राजा गह लीना।।

''राजा बीर सिंह वचन''

सोरठा–तव चरण बलिहार, पाछिल पुरूषा मम तारे। धन–धन धनी हमार, काग ते हंसा किये।।

भावार्थ :- उपरोक्त प्रमाणों से स्पष्ट हुआ कि कबीर परमेश्वर जी तीन बार में यानि तीन चरणों में पूर्ण मोक्षा दीक्षा का क्रम पूरा करते थे। यही यथार्थ नाम तथा दीक्षा क्रम यह दास (रामपाल दास) सन् 1994 से दे रहा है।

❖ **सुमिरण बोध (छोटा) पष्ठ 2 पर :-**

ओहं सोहं नाम से आगे करै पयान। अजर लोक वासा करै जगमग द्वीप स्थान।।

यह दो अक्षर का सत्यनाम है जिसके विषय में पहले वर्णन किया है। परमेश्वर कबीर जी ने यही नाम संत गरीबदास जी (गाँव-छुड़ानी, जिला-झज्जर, प्रान्त-हरियाणा) को दिया था। संत गरीबदास जी ने कहा :-

राम नाम जप कर थिर होई। ओहं–सोहं मंत्र दोई।।

भावार्थ :- राम नाम जपकर पूर्ण मोक्ष प्राप्त करो। वह राम नाम दो अक्षर का ओहं-सोहं है।

सार शब्द :- इसका वर्णन नहीं करूँगा। यह उपदेश लेने वाले को दीक्षा के समय सुनाया-समझाया जाएगा।

संत गरीबदास जी ने सुमरण के अंग में कहा है :-

सोहं ऊपर और है, सत्य सुकत एक नाम। सब हंसों का बंस है, नई बस्ती नई ठाम।।

पूर्ण मंत्र तीन नाम का बनता है जिसके विषय में श्रीमद् भगवत गीता में अध्याय 17 श्लोक 23 में कहा है :-

ओम् (ॐ) तत् सत् इति निर्देशः ब्रह्मणः त्रिविधैः स्मतः। ब्राह्मणा तेन वेदा च यज्ञा विहिता पुराः।।

सरलार्थ :- पूर्ण परमात्मा यानि सच्चिदानंद घन ब्रह्म के स्मरण का तीन मंत्र ॐ-तत्-सत् का निर्देश है। संष्टि की आदि में तत्त्वज्ञानी इसी ज्ञान के आधार से यज्ञ यानि धार्मिक अनुष्ठान करते थे तथा तीन नाम का स्मरण करते थे।

परमेश्वर कबीर जी का एक शब्द है ''कर नैनों दीदार महल में प्यारा है'' इसमें ब्रह्म गायत्री के पाँचों नाम का वर्णन है जो संत गरीबदास जी ने ''ब्रह्म बेदी'' में बताए हैं। कंप्या पढ़ें इसी पुस्तक में ''अनुराग सागर'' के सारांश में पंष्ठ 154 पर।

❖ सुमिरन बोध (छोटा-बड़ा) पंष्ठ 2 से 14 तक कर्म काण्ड लिखा है जो कबीर पंथियों की अपनी रोजी-रोटी के लिए रचना की गई है।

सुमिरण बोध पंष्ठ 15 पर :-

पुहुप दीप मण्डप गुरू सांचा। हंस सोहंग नाम बीच राजा।।
सोहं शब्द नाम है सारा। सत्य बचन बोले कड़िहारा।।
एकोतर (101) नाम जानै विस्तारा। सो जानों साचा कड़िहारा।।
पांच नाम इन्हीं में भाषा। सहज पक्ष पालन है साषा।।

सुमिरण बोध पंष्ठ 16 पर :-

सुरति सोहं शब्द है गगन ध्यान लौलीन। एकटक सुमरो संतों जम होय बलहीन।।
सोहं शब्द निज साच है जपो अजपा जाप। कहै कबीर धर्मदास सों सारशब्द गरगाप।।
सोहं शब्द निज साच है गहि राखो तुम पास। सोहं शब्द में मुक्ति है सत्य मानो धर्मदास।।

विवेचन :- सुमिरन बोध का सार यह है :-

धर्मदास की गद्दी वाले जो नाम देते हैं, सुमिरन बोध पंष्ठ 22 पर लिखा है :-

माला कण्ठी नाम की, सतगुरू शब्द विचार। बाद विवाद जो करै, ताके मुख परे छार।।

''स्मरण पाँच नाम''

आदि नाम, अजर नाम, अमीनाम, पाताले सप्त सिंधु नाम।
आकाशे अदली निज नाम, एही नाम हंस को काम।।
खोलो कुंची खोलो कपाट। पांजी चढ़े मूल के घाट।।
भ्रम भूत का बांधो गोला, कहैं कबीर प्रवान।
पाँच नाम ले हंसा सत्यलोक समान।।

भावार्थ :- ये उपरोक्त नाम जाप करने के नहीं हैं। ये तो पाँच नामों की महिमा बताई जो इसी अध्याय में ब्रह्म बेदी वाले लिखे हैं। वे नाम अजर हैं, आदि के हैं। अमंत स्वरूप हैं। सप्त सिंधु का अर्थ है पंथ्वी। पाताल से तात्पर्य है नीचे के सात पाताल। आकाश का अर्थ है ऊपर के ब्रह्म लोक तथा ब्रह्मा, विष्णु, शिव के लोक। इनसे सब कमलों के कपाट यानि किवाड़ खुल जाते हैं। यह इन कमलों को खोलने की कूंजी यानि Key है। पांजी यानि पाँच नाम प्राप्त भक्त मूल घाट यानि मूल कमल (गणेश जी का है) से चलेगा। ऊपर के सब कमल पाँच नामों से खुलते चले जाएंगे।

''स्मरण दीक्षा मंत्र''

सत्य सुकंत की रहनी रहै, अजर अमर गहै सत्यनाम। कहै कबीर मूल दीक्षा सत्य (सार) शब्द प्रवान।।

भावार्थ :- इसमें सत्यनाम तथा सार शब्द की महिमा बताई है। कहा है कि मर्यादा में रहकर शुभ कर्म करे और मोक्ष करने के मंत्र अजर-अमर करते हैं। वे सत्यनाम तथा सार शब्द मूल दीक्षा यानि मुख्य दीक्षा है।

कबीर पंथी दामाखेड़ा वाले उपरोक्त नामों को दीक्षा में देते हैं जो धर्मदास की छठी पीढ़ी वाले गद्दी वाले महंत ने वास्तविक मंत्र त्यागकर शुरू किए थे जिसका टकसारी पंथ जो बारह (12) कबीर पंथों में पाँचवां है। उसने धर्मदास की छठी पीढ़ी वाले को भ्रमित कर शुरू कराए थे जो गलत है।

सुमिरन बोध पष्ठ 23 से 30 तक व्यर्थ की मनघड़न्त बातें हैं।

सुमिरन बोध पष्ठ 31 पर :-

"चार गुरूओं के नाम लोक के और भवसागर के"

सुमिरनबोध 1823 (३१)

पांचे हिरण्मय अंश

तिनको बैठक सुमत अण्डमों दिया अंडको प्रवान पालंग ॥६४॥ वंश सात ॥ ७ ॥

वंशनके नाम

प्रथम वंशपारन, दूसरे स्वांतसनेही, तीसरे भृंगसनेही, चौथे ॥ लरसिंध, पांचेदीपकजोत, छटें जलभाव, सातें मलयागिरि॥७॥ तिनको राजसुमत अंडमें पुरुषके हजूरी ॥

चार गुरुके नाम-लोकके और भवसागरके

प्रथमनाम लोकमें जो हंस कहिये औरभवसागरमेंगुरु चतुर्भुज गोसाई तिनके वंश सोरह ॥ १६ ॥ दक्षिण दिशा सामवेद प्लक्षद्वीप दरभंगा शहर तथा प्रकट भये ॥ तिनकोमूलज्ञानबानी ता बानीले पंथ चलायो, ब्राह्मणकुलप्रकट भये ॥१॥ दूसरे नाम लोकमें अकह अंश कहिये ॥ २७ ॥ पूर्वदिशा यजुर्वेदकुशद्वीप करनाटक शहर तहाँ प्रकट भये। तिनको टकसारज्ञानतावाणीले पंथ चलायो ॥ २ ॥ कायस्थकुल शूद्र, तीसरेनामलोकमें सुकृत अंश कहिये और भवसागरमें गुरुधर्मदास गोसांईकहिये तिनके वंश ब्यालिस ॥ २४ ॥ उत्तरदिशा ऋग्वेद जम्बूद्वीपभरतखण्ड बांधो शहर तथा प्रकट भये, तिनके कोट ज्ञान बानी ताबानी लै पंथ चलाये ॥ ३ ॥ चौथे नाम लोकमेंहिरण्मयअंशकहिये। और भवसागरमें गुरुसहेतेजी गोसांई कहिये तिनके वंश सात ॥ ७ ॥ पश्चिम दिशा अथर्वण वेद सिलमिल द्वीप मानिकपुर शहर तहां प्रकट भये। तिनको बीजक ज्ञान बानी ता बानीले पंथ चलाये क्षत्रियकुल ॥ ४ ॥

दश सोहंगकेनाम

प्रथम पुरुष सोहं दूसरे सहज सोहंग तीसरे इच्छा सोहंग ॥

विवेचन :- पृष्ठ 31 की इस फोटोकॉपी से स्पष्ट है कि ये वाणी कांट-छांटकर लिखी हैं। चार गुरू के नाम-लोक और परलोक में दोहा नं. 16 है। फिर दोहा नं. 27 है, फिर दोहा नं. 24 है। ये कहीं-कहीं से उठाकर लिखे हैं, सत्य वाणी छोड़ दी है।

इसमें यह भी स्पष्ट है कि 1. चतुर्भुज गुरू ''सामवेद'' का ज्ञान प्रचार करता था, मूल ज्ञान की वाणी लेकर पंथ चलाया। यह काल पुरूष द्वारा चलाए 12 पंथों में भी है। 2. यह बंकेजी के विषय में है और यह यजुर्वेद का प्रचार करता था। यह टकसारी पंथ वाला है जो काल द्वारा कबीर नाम से चलाए बारह पंथों में पाँचवां है जिसने धर्मदास की छठी पीढ़ी वाले से वास्तविक मंत्र जो परमेश्वर कबीर जी ने दिए थे, छुड़वाकर नकली नाम तथा आरती-चौंका प्रारम्भ करवाया था जो वर्तमान सन् 2013 तक चल रहा है।

3. धर्मदास जी ने बताया है और कहा है कि यह ऋग्वेद का प्रचार करता था। जम्बूदीप (भारत) में बांधवगढ़ में उत्पन्न हुए। 4. चौथे सहत जी बताऐ हैं। ये अथर्ववेद का प्रचार करते थे। उपरोक्त वर्णन पहले लिए इन्हीं चार गुरूओं का आपस में मेल नहीं करता।

विशेष बात यह है कि चारों गुरू एक-एक वेद का प्रचार करते थे तो वे पूर्ण ब्रह्म का प्रचार नहीं करते थे। इन चारों वेदों में सम्पूर्ण यथार्थ ज्ञान नहीं है तो अज्ञानी गुरू सिद्ध हुए। कॉंट-छॉंट भी आप जी ने स्पष्ट देखी है।

इससे स्पष्ट है कि कबीर सागर के ज्ञान का नाश कर रखा है जो अब मुझ दास द्वारा परमेश्वर कबीर जी की कृपा से मेरे पूज्य गुरू स्वामी रामदेवानंद जी के आशीर्वाद से यथार्थ ज्ञान बताया जा रहा है।

सुमिरन बोध के पृष्ठ 32 से 34 तक व्यर्थ वाणी लिखी हैं जिनका कोई सिर-पैर नहीं है।

सुमिरन बोध पृष्ठ 35 से 50 तक गुरू महिमा है।

सूक्ष्मवेद (तत्त्वज्ञान) से स्वंय परमात्मा अपने मुखकमल से बोलते हैं। विस्तार के साथ यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों का ज्ञान कराते हैं। गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में भी कहा है कि ब्रह्मणः मुखे = सच्चिदानन्द घन ब्रह्म की वाणी में यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों की जानकारी विस्तार के साथ कही गई है। वही ज्ञान कबीर वाणी है। कबीर जी ने गुरु की महिमा बताई है :-

वाणी :- गुरु ते अधिक न कोई ठहरायी। मोक्षपंथ नहिं गुरु बिनु पाई।।(1)
राम कृष्ण बड़ तिहुँपुर राजा। तिन गुरु बंदि कीन्ह निज काजा।।(2)

❖ सरलार्थ :- गुरु से अधिक किसी को नहीं मानें। गुरु के बिना मोक्ष का रास्ता (भक्ति विधि) प्राप्त नहीं हो सकती। उदाहरण बताया है कि श्री राम तथा श्री कृष्ण जी को तो आप हिन्दू भगवान मानते हैं। इनसे बड़े तो आप नहीं हैं। जब श्री राम तथा श्री कृष्ण ने भी गुरु बनाए और उनको अर्थात् अपने गुरुदेवों को नमन किया। उनके सामने एक भक्त की तरह आधीन बनकर रहे। उनकी आज्ञा का पालन किया तो आप जी को भी गुरु बनाकर उपदेश दीक्षा लेकर साधना करनी चाहिए। श्री राम तथा श्री कृष्ण तो तीन लोक में बड़े हैं। उन्होंने भी गुरु को बन्दगी (प्रणाम) करके अपने निजी कार्यों को किया, उनकी आज्ञा मानी।(1-2)

वाणी :- गेही भक्ति सतगुरु की करहीं। आदि नाम निज हृदय धरहीं।।(3)
गुरु चरणन से ध्यान लगावै। अंत कपट गुरु से ना लावै।।(4)

❖ सरलार्थ :- ग्रहस्थी व्यक्ति को गुरु धारण करके गुरुजी के बताए अनुसार भक्ति करनी चाहिए तथा आदि नाम जो वास्तविक तथा सनातन साधना के नाम मन्त्र हैं, उनको हृदय से स्मरण करना

चाहिए। गुरुजी के चरणों में ध्यान रखें अर्थात् गुरु जी को किसी समय भी दिल से दूर न करें तथा अंत = अर्थात् अन्तः करण में कभी भी गुरु से छल-कपट नहीं रखना चाहिए।(3-4)

वाणी :- गुरु सेवा में फल सर्बस आवै। गुरु विमुख नर पार न पावै।। (5)
गुरु वचन निश्चय कर मानै। पूरे गुरु की सेवा ठानै।।(6)

❖ सरलार्थ :- गुरुजी की सेवा में सब फल यानि सब सुख आदि प्राप्त होते हैं तो गुरु धारण करके फिर गुरुजी से दूर हो जाते हैं। गुरुजी में कोई दोष निकालते हैं। जो भक्ति नहीं करते हैं या भक्ति त्याग देते हैं, गुरु विमुख कहे जाते हैं। वे व्यक्ति कभी संसार सागर से पार नहीं हो सकते। पूर्ण गुरु से दीक्षा लेकर गुरु सेवा करते हुए साधना करनी चाहिए और गुरुजी के वचनों का पालन निश्चय अर्थात् विश्वास के साथ करें।(5-6)

वाणी :- गुरुकी शरणा लीजै भाई। जाते जीव नरक नहीं जाई।।(7)
गुरु कृपा कटे यम फांसी। विलम्ब ने होय मिले अविनाशी।।(8)

❖ सरलार्थ :- हे भाई! हे मानव! गुरुजी की शरण प्राप्त कर, जिस कारण से जीव नरक में नहीं जाएगा। या तो पार हो जाएगा या पुनः मानव जन्म (स्त्री-पुरुष) का प्राप्त करेगा। मानव जन्म मिलेगा तो फिर सतगुरु भी मिलेगा। इस प्रकार गुरु बनाकर भक्ति करने से मोक्ष मिलता है। गुरुजी की कपा से यम द्वारा लगाई गई कर्मो का बन्धन रूपी गले की फाँस कट जाती है, अविलम्ब अविनाश परमात्मा (सत्य साहेब) मिल जाता है।(7-8)

वाणी :- गुरु बिनु काहु न पाया ज्ञाना। ज्यों थोथा भुस छड़े किसाना।।(9)

❖ सरलार्थ :- गुरु जी के बिना किसी को आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त नहीं होता। जो नकली गुरु से ज्ञान प्राप्त करके शास्त्रविरुद्ध साधना करते हैं या मनमुखी साधना स्वयं एक-दूसरे को देखकर करते हैं, वे तो ऐसा कर रहे हैं कि जैसे मूर्ख किसान थोथे भूस अर्थात् धान की पराल (भूसा) या सरसों का झोड़ा (भूसा) जिसमें से चावल या धान तथा सरसों निकल गयी हो और भूखा पड़ा हो, इस भूसे को कूट रहा हो या छिड़ रहा हो। वर्तमान में धान को पटक-पटककर धान तथा भूसा भिन्न-भिन्न करते हैं, परन्तु केवल भूस को छिड़ाने यानि कूटने से धान-सरसों प्राप्त नहीं होती। प्रयत्न मेहनत उतनी ही करता है जो व्यर्थ रहती है और कुछ हाथ नहीं लगता। ठीक उसी प्रकार पूर्ण गुरु से दीक्षा तथा ज्ञान प्राप्त किए बिना किया गया भक्ति कर्म उसी प्रकार व्यर्थ है जैसे भूसा छिड़ाने (कूटने) वाले को कुछ भी प्राप्ति नहीं होती। श्री मद्भगवत गीता अध्याय 4 श्लोक 32 से 41 तक भी यही प्रमाण है कि यथार्थ भक्ति ज्ञान अर्थात् तत्त्वज्ञान को यज्ञ अर्थात् धार्मिक अनुष्ठान का विस्तार से ज्ञान (तत्त्वज्ञान = सूक्ष्मवेद) ब्रह्मणः मुखे अर्थात् सच्चिदानन्द घन ब्रह्म के मुख कमल से बोली अमतवाणी में कहा गया है। उसे जानकर तू सब पापों से मुक्त हो जाएगा।(गीता अध्याय 4 श्लोक 32)

❖ हे अर्जुन! द्रव्यमय यज्ञ की अपेक्षा ज्ञान यज्ञ (तत्त्वज्ञान) श्रेष्ठ है। सर्व कर्म जो शास्त्र विरुद्ध साधना द्वारा किए जाते है, वे सम्पूर्ण ज्ञान में समाप्त हो जाते हैं। भावार्थ है कि शास्त्रों के अनुकूल ज्ञान (तत्त्वज्ञान) न होने के कारण लोकवेद (दंत कथा) के आधार से कोई कम्बल दान कर देता है, कोई प्याऊ लगवा देता है, कोई भोजन-भण्डारा (लंगर) लगवा देता है, कोई सवा मणी (50 सेर मिठाई बाँटने का धर्म में) लगाते हैं। यदि तत्त्व ज्ञान नहीं है तो यह द्रव्यमय यज्ञ (जो धन से होने वाले धार्मिक अनुष्ठान जो बताऐ हैं) की अपेक्षा ज्ञान यज्ञ अर्थात् जो धार्मिक यज्ञ हम कर रहे हैं, ये शास्त्रनुकूल भी है कि नहीं, यह ज्ञान होना श्रेष्ठ है। उसके पश्चात् धार्मिक कर्म करना उचित

है।(गीता अध्याय 4 श्लोक 33)

❖ जो ज्ञान गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में स्वयं परमेश्वर बताते हैं, वह तत्त्वज्ञान है। उस ज्ञान को तू तत्त्वदर्शी सन्तों के पास जाकर समझ। उनको दण्डवत् प्रणाम करने से नम्रतापूर्वक प्रश्न करने से वे तत्त्वदर्शी सन्त जो परमात्म तत्त्व को भली-भांति जानने वाले हैं, तुझे तत्त्वज्ञान का उपदेश करेंगे। (गीता अध्याय 4 श्लोक 34)

❖ जिस तत्त्वज्ञान को जानकर फिर तू इस प्रकार मोह को नहीं प्राप्त होगा तथा हे अर्जुन! जिस ज्ञान के द्वारा तू प्राणियों को पूर्ण रूप से पूर्ण परमात्मा जो आत्मा के साथ अभेद रूप में रहता है, उस पूर्ण परमात्मा में और पीछे मुझे देखेगा कि मैं काल हूँ, यह जान जाएगा।(गीता अध्याय 4 श्लोक 35)

❖ यदि तू सब पापियों से भी अधिक पाप करने वाला है, तो भी तू ज्ञान रुपी नौका द्वारा सम्पूर्ण पाप समुद्र से भली-भाँति तर जाएगा।(गीता अध्याय 4 श्लोक 36)

❖ हे अर्जुन! जैसे अग्नि घास को जला देती है, वैसे ही तत्त्वज्ञान में बताई शास्त्रानुकूल भक्ति की साधना पाप कर्मों को जलाकर भस्म कर देती है।(गीता अध्याय 4 श्लोक 37)

सूक्ष्मवेद में भी कहा है कि :-

वाणी :- गुरु बिन वेद पढ़े जो प्राणी। समझे ना सार रहे अज्ञानी।।
जब ही सत्य नाम हृदय धरो, भयो पाप को नाश। जैसे चिंगारी अग्नि की, पड़ी पुराने घास।।

❖ सरलार्थ :- इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला कुछ भी नहीं है। जिस ज्ञान की साधना कर्मयोग द्वारा (कर्म भी करो तथा भक्ति भी करो, इस प्रकार) शुद्ध अन्तःकरण वाला अपने आप ही कुछ समय में मोक्ष प्राप्ति कर लेता है।(गीता अध्याय 4 श्लोक 38)

❖ अपनी इन्द्रियों का संयम करके तत्त्वज्ञान द्वारा श्रद्धावान मनुष्य सत्य भक्ति ज्ञान को प्राप्त है। उस सत्य साधना के ज्ञान को प्राप्त होकर अविलम्ब अर्थात् शीघ्र ही परम शान्ति को प्राप्त हो जाता है।(गीता अध्याय 4 श्लोक 39)

❖ विवेकहीन, श्रद्धाहीन और संशययुक्त मनुष्य कभी भी भ्रमित होकर विनाश को प्राप्त हो जाएगा अर्थात् जिसको पूर्ण ज्ञान नहीं होता, वह किसी के द्वारा भ्रमित होकर सत्य साधना त्यागकर शास्त्रविरुद्ध साधना करके अपना अनमोल मानुष जन्म नष्ट कर जाएगा। संशययुक्त आत्मा को न तो इस लोक में सुख है, न परलोक में क्योंकि शास्त्रानुकूल साधना से सुख होता है, उससे संसार में भी सुख मिलता है तथा मत्यु उपरान्त सत्यलोक में भी सुखी होता है।(गीता अध्याय 4 श्लोक 40) सूक्ष्मवेद में कहा है :-

कबीर, ज्ञान सम्पूर्ण हुआ, नहीं हृदय नहीं छिदाया। देखा देखी भक्ति का रंग नहीं ठहराया।।
कबीर, मां मूडूं उस सन्त की, जिससे संशय न जाय। काल खावें थोड़े संशय सबहन कूं खाय।।

❖ हे धनंजय! जिस साधक ने तत्त्वज्ञान के आधार से सर्व शास्त्रविधिविरुद्ध भक्ति कर्मों को त्याग दिया है और जिसने तत्त्वज्ञान से सब संशयों को नाश कर दिया है। उस आत्मज्ञानी को कर्म नहीं बाँधते।(गीता अध्याय 4 श्लोक 41)

इसलिए अपने हृदय में अज्ञानजनित इस संशय को तत्त्वज्ञान रुपी तलवार से काटकर (योगम्) भक्ति साधना में (उत्तिष्ठ) खड़ा होना अर्थात् जाग जा (आतिष्ठ) और इस भक्ति में स्थित हो जा।(गीता अध्याय 4 श्लोक 42)

उपरोक्त प्रमाणों से सिद्ध हुआ कि जब तक पूर्ण सन्त (सतगुरु) नहीं मिलता, तब तक साधक का कल्याण सम्भव नहीं है।(9)

वाणी :- तीर्थ व्रत अरू सब पूजा। गुरु बिन दाता और न दूजा।।(10)
नौ नाथ चौरासी सिद्धा। गुरु के चरण सेवे गोविन्दा।।(11)

❖ सरलार्थ :- चाहे कोई तीर्थ भ्रमण करता है, चाहे व्रत करता है, चाहे स्वयं या नकली गुरुओं से दीक्षा लेकर पूजा भी करता है, वह भक्ति कर्म कोई लाभ नहीं देता। गुरु (जो तत्त्वदर्शी है) जो सत्य साधना देते हैं जिससे इस लोक में तथा परलोक में सर्व सुख प्राप्त होता है। इसलिए कहा है कि गुरु के समान दाता (सुख व मोक्ष दाता) नहीं है। तीर्थ, व्रत तथा नकली गुरुओं द्वारा बताई भक्ति सुखदाई नहीं है। जितने भी महापुरुष या अवतार हुए हैं, उन्होंने गुरु बनाए हैं चाहे वो नाथ हुए हैं, चाहे 84 सिद्ध तथा अवतारधारी गोविन्द (श्री राम तथा श्री कष्ण) हुए हैं, सबने गुरु धारण करके उनकी चरण सेवा की थी।(10-11)

वाणी :- गुरु बिन प्रेत जन्म सब पावै। वर्ष सहंस्र गरभ सो रहावै।।(12)

❖ सरलार्थ :- जो साधक गुरु से दीक्षा न लेकर अपने आप साधना करते हैं, वे प्रेत योनि को प्राप्त होते हैं तथा हजारों वर्षों तक जन्म-मरण के चक्र में कष्ट उठाते रहते हैं। जिस कारण से सहंस्त्र (हजार) वर्ष तक गर्भ का कष्ट उठाते हैं।

उदाहरण : राधास्वामी पंथ के प्रवर्तक श्री शिवदयाल सिंह सेठ जी आगरा शहर के मोहल्ला पन्नी गली (उत्तर प्रदेश) में रहा करते थे। उनके जीवन चरित्र में लिखा है कि श्री शिवदयाल सिंह सन् 1861 से 1878 (17) वर्ष तक गुरु दीक्षा देते थे, परंतु उनका कोई गुरु नहीं था।

1878 में उनकी मत्यु हो गई थी। श्री शिवदयाल सिंह जी हुक्का (तम्बाकु) पीते थे। उनकी एक बुक्की नाम की परम शिष्या (चेली) थी। मत्यु के एक महीने पश्चात् श्री शिवदयाल सिंह जी प्रेत बनकर बुक्की के शरीर में प्रवेश करके अपने अन्य शिष्यों से बातें करते थे। अपने भाई सेठ प्रताप सिंह के प्रश्नों का उत्तर देते थे। पहले बुक्की हुक्का नहीं पीती थी, परंतु श्री शिवदयाल जी प्रेत बनकर बुक्की में प्रवेश होने के पश्चात् बुक्की हुक्का पीने लगी अर्थात् श्री शिवदयाल सिंह जी (राधास्वामी पंथ का प्रवर्तक) प्रेत बनकर बुक्की के शरीर में प्रवेश करके हुक्का पीता था। उसी पलंग (चारपाई) पर बैठकर हुक्का पीता था, जिस पर मत्य से पहले बैठा करता था। यह प्रकरण पुस्तक जीवन चरित्र स्वामी जी महाराज में लिखा है जो आगरा से प्रकाशित है। प्रताप सिंह सेठ द्वारा लिखी है जो श्री शिवदयाल जी के छोटे भाई थे। परमात्मा कबीर जी की वाणी सिद्ध हुई।(12)

वाणी :- गुरु बिन दान पुण्य जो करई। मिथ्या होय कबहूँ नहीं फलहीं।।(13)
गुरु बिनु भर्म न छूटे भाई।कोटि उपाय करे चतुराई।।(14)

❖ सरलार्थ :- पहले गुरु से ज्ञान समझें, फिर दीक्षा लेकर गुरुजी के बताए अनुसार दान-पुण्य करने से आध्यात्मिक सफलता मिलती है। गुरु बिन दान आदि कर्म करने से कोई लाभ नहीं होता। गुरु के बिना भ्रम (शंका) का नाश नहीं हो सकता चाहे व्यक्ति कितनी ही चतुरता करता रहे।(13-14)

गुरु के मिले कटे दुःख पापा। जन्म जन्म के मिटें संतापा।।(15)
गुरु के चरण सदा चित्त दीजै। जीवन जन्म सुफल कर लीजै।। (16)

❖ सरलार्थ :- गुरु मिलने पर ही सर्व दुःख जो पाप के कारण होता है, वह समाप्त हो जाता है। जन्म-जन्म के संताप (दुःख) समाप्त हो जाते हैं। सदा गुरुजी के चरणों में ध्यान रखें। इस प्रकार साधना करके अपना मानव जीवन सफल करना चाहिए।(15-16)

वाणी :- गुरु भगता मम आतम सोई। वाके हृदय रहूँ समोई।।(17)
अड़सठ तीर्थ भ्रम भ्रम आवे। सो फल गुरु के चरनों पावे।।(18)

❖ **सरलार्थ :- परमात्मा ने स्वयं बताया है कि गुरु के भक्त मेरी आत्मा हैं, शेष काल के जाल में फँसकर काल की आत्मा हैं। जो मेरे कपापात्र सन्त को गुरु बनाए हैं, मै उसके हृदय में रहता हूँ अर्थात् मेरा आशीर्वाद सदा गुरु भक्त पर बना रहता है।**

अड़सठ प्रकार के तीर्थ स्थान माने गए हैं। पुराणों में कहा है कि अड़सठ तीर्थों का भ्रमण करने से मोक्ष प्राप्त होता है। परमेश्वर ने कहा है कि वैसे तो तीर्थ भ्रमण से कोई लाभ नहीं होता, हानि होती है क्योंकि तीर्थों पर जाने का निर्देश श्रीमद्भगवत गीता में नहीं है। जिस कारण से शास्त्रविरुद्ध साधना होने के कारण व्यर्थ है। (प्रमाण गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में) फिर भी यदि आप मानते हैं कि 68 तीर्थों पर जाने से मोक्ष लाभ है तो 68 तीर्थों का भ्रमण करने में पुराने समय में लगभग एक वर्ष लगता था। वर्तमान में तीन महीने तथा तीन-चार लाख रुपये का गाड़ी खर्च होता है। 68 तीर्थों का फल पूर्ण सन्त के चरणों की धूल (चरणामत) से ही आप जी को प्राप्त हो जाएगा, परंतु गुरु पूरा हो। इसलिए गुरु की महिमा अपार तथा लाभदायक है।(17-18)

वाणी :- दशवाँ अंश गुरु को दीजै। जीवन जन्म सफल कर लीजै।।(19)
गुरु बिन होम यज्ञ नहिं कीजे। गुरु की आज्ञा माहिं रहीजे।।(20)

❖ **सरलार्थ :- अपनी कमाई का दसवां अंश अर्थात् 10% प्रतिशत दान गुरुजी को करें और अपना मानव जीवन सफल करें। गुरु के बिना कोई भी धार्मिक अनुष्ठान (होम यज्ञ = हवन यज्ञ आदि) नहीं करना चाहिए। गुरुजी की आज्ञा का सदा पालन करना चाहिए।(19-20)**

वाणी :- गुरु सुरतरु सुरधेनु समाना। पावै चरन मुक्ति परवाना।।(21)
तन मन धन अरपि गुरु सेवै। होय गलतान उपदेशहिं लेवै।।(22)

❖ **सरलार्थ :- पौराणिक कथाओं में वर्णन है कि स्वर्ग में कई सुरतरु (देववक्ष) हैं। वक्ष के नीचे बैठकर मन इच्छा वस्तु प्राप्त करते हैं। इसी प्रकार स्वर्ग में सुरधेनु (कामधेनु = देवताओं की गाय) है। जिसके पास जाकर जो भी मनोकामना करते हैं, वह पूरी कर देती है। परमात्मा कबीर जी कहते हैं कि आपके सुरतरु तथा सुरधेनु (कामधेनु) तो स्वर्ग में हैं। आपकी साधना शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण होने से व्यर्थ है। (प्रमाण : गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में) आप जी स्वर्ग ही नहीं जा सकते। जो सुविधा पुराणों में बताई है, वे स्वर्ग में ही मिलती हैं। फिर पथ्वी पर तो साधक भूखा-प्यासा तथा दुःखी ही रहा। गुरु (पूर्ण सतगुरु = तत्त्वदर्शी सन्त) तो पथ्वी पर सुरतरु (देव वक्ष) तथा देवधेनु (काम धेनु) अर्थात् सुरधेनु है जो इस लोक में तथा परलोक में दोनों स्थानों पर सर्व सुख प्रदान करता है। गुरु के चरणों में मुक्ति का प्रवाना अर्थात् मोक्ष मन्त्र भी प्राप्त होता है।**

गुरु जी का उपदेश उस समय लेना चाहिए जब आप जी उनके ज्ञान से पूर्ण रुप से संतुष्ट हो जायें। फिर आप जी गलताना अर्थात् गुरुजी पर मस्त होकर न्यौछावर हो जाओगे। इसलिए कहा है कि गुरुजी से गलताना अर्थात् पूर्ण रुप से समर्पित होकर मस्त होकर उपदेश लें और अपना तन-मन तथा धन भी सतगुरु को अर्पण कर दें अर्थात् सब कुछ परमात्मा का है, यह भाव मन में उठे।(21-22)

वाणी :- सतगुरुकी गति हृदय धारे। और सकल बकवाद निवारै।।(23)
गुरु के सन्मुख वचन न कहै। सो शिष्य रहनिगहनि सुख लहै।।(24)

❖ **सरलार्थ :- जो ज्ञान सतगुरु जी बतायें, उसी के अनुसार भक्ति-साधना करनी चाहिए तथा अन्य जो व्यर्थ की भक्ति साधना तथा ज्ञान व नाचना-गाना, माँस-मदिरा सेवन, तम्बाकू सेवन, चोरी-जारी**

दुराचार करना आदि-आदि छोड़ दे। गुरु जी से वाद-विवाद नहीं करना चाहिए। वही शिष्य रहनी (जो वस्तु गुरु ने मना की है, उनका परहेज रखना) गहनी (गूढ़ ज्ञान तथा उससे प्राप्त सुख) का आनन्द प्राप्त करता है। भावार्थ है कि जो शिष्य गुरु के सामने मर्यादा में रहता है, वह भगवान की भक्ति का पूर्ण लाभ प्राप्त करता है।(23-24)

वाणी :- गुरु से शिष्य करै चतुराई। सेवा हीन नर्क में जाई।।(25)
शिष्य होय सरबस नहीं वारै। हिये कपट मुख प्रीति उचारे।।(26)
जो जिव कैसे लोक सिधाई। बिन गुरु मिले मोहे नहिं पाई।।(27)

❖ **सरलार्थ :-** जो शिष्य गुरु के साथ हेराफेरी (चतुराई) करता है। उसकी सेवा (भक्ति) नष्ट हो जाती है। वह नरक का अधिकारी होता है। जो दीक्षा लेने के पश्चात् भी सतगुरु के प्रति समर्पित नहीं होता और मुख से प्यारा बोलता है और दिल में गुरु के प्रति दोष रखता है। वह भी सतलोक कैसे जा सकता है? क्योंकि गुरु के मिले बिना अर्थात् गुरु के ऊपर पूर्ण विश्वास तथा श्रद्धा लगाए हुए बिना मुझे (परमात्मा को) प्राप्त नहीं हो सकता।(25-26-27)

वाणी :- गुरु से करै कपट चतुराई। सो हंसा भव भरमें आई।।(28)
गुरु से कपट शिष्य जो राखै। यम राजा के मुगदर चाखै।।(29)

❖ **सरलार्थ :-** जो हंस (भक्त) गुरु जी से कपट युक्त व्यवहार करता है, वह हंस (भक्त) संसार में पुनः पशु-पक्षियों के जीवन प्राप्त करके कष्ट उठाता भटकता रहता है। जो शिष्य गुरु से कपटयुक्त बर्ताव करता है, मत्यु उपरान्त यमराजा (यमराज) उसको मुगदरों (मोटे लट्ठों से) से पीटता है।(28-29)

वाणी :- जो जन गुरु की निंदा करई। सूकर श्वान गरभमें परई।।(30)
गुरु की निंदा सुने जो काना। ताको निश्चय नरक निदाना।।(31)
अपने मुख निंदा जो करई। परिवार सहित नर्क में पड़ही।।(32)

❖ **सरलार्थ :-** जो शिष्य गुरु जी की निन्दा करता है, उसकी भक्ति समाप्त हो जाती है। फिर शुकर (सूअर) तथा श्वान (कुत्ते) के जन्म प्राप्त करता है। जो शिष्य गुरु जी की निन्दा अपने कानों से सुनता है उसको नरक प्राप्ति होती है, यह निश्चय कर मानें।

❖ **स्पष्टीकरण :** यदि कोई व्यक्ति आपके गुरूदेव जी की निन्दा कर रहा है और आप उसके पास बैठे हैं। आपको लग रहा है कि यह व्यक्ति जो कह रहा है, हो सकता है यह दोष गुरुजी में हो तो आपने वह निन्दा अपने कानों सुन ली। आपकी भक्ति नष्ट हो गई। उस शिष्य को चाहिए अपनी गलती माने और पुनः उपदेश प्राप्त करे, फिर किसी सिरफिरे की बकवास सुनकर गुरु में दोष न देखे। यदि कोई व्यक्ति आपके गुरु जी की निन्दा करता है और आप वहाँ बैठे हो। आपको लगे कि यह व्यर्थ की बकवास कर रहा है। हमसे अधिक यह व्यक्ति हमारे गुरुजी के विषय में कैसे जान सकता है तो उस शिष्य ने निन्दा अपने कानों नहीं सुनी। उस शिष्य की भक्ति सुरक्षित है। वह पक्का भक्त है।

जो शिष्य होकर अपने मुख से गुरु जी की निन्दा करता है तो वह पूरे परिवार सहित नरक में गिरता है क्योंकि उससे सुनी मिथ्या बातों को उसका परिवार जगह-जगह जाकर सुनाएगा। जिस कारण से अन्य भोली-भाली जनता भी उस सन्त से घणा (नफरत) करने लगेंगे और उस परम सन्त से दीक्षा न ले सकेंगे। जिस कारण से अनमोल जीवन नष्ट कर जायेंगे। अन्य व्यक्तियों को परमात्मा से दूर करने का पाप भी उस परिवार को लगेगा। जिस कारण से वह गुरु की निन्दा करने वाला

शिष्य अपना जीवन तो नष्ट करता ही है, साथ में अपने परिवार को भी नरक का अधिकारी बनाता है।(30-31-32)

वाणी :- गुरु को तजै भजै जो आना। ता पशुवा को फोकट ज्ञाना।।(33)
गुरु से बैर करै शिष्य जोई। भजन नाश अरु बहुत बिगोई।।(34)

❖ सरलार्थ :- जो शिष्य अपने गुरु से अधिक किसी अन्य सन्त या भक्त में आस्था रखता है तो उस पशु को कोई ज्ञान नहीं है क्योंकि गुरु के प्रति परमात्मा जैसा भाव रहना चाहिए। हमने सत्यलोक में भी यही गलती की थी। हम अपने मालिक को छोड़कर इस काल ब्रह्म में आस्था रखने लगे थे। जिस कारण से हम पतिव्रत धर्म (एक मालिक के अतिरिक्त अन्य को न चाहने वाली स्त्री को पतिव्रता कहा जाता है) से गिर गए और परमेश्वर जी ने हमारे को दिल से त्याग दिया और हम इस गन्दे लोक में आ गिरे। इसी प्रकार गुरुजी से अधिक किसी को स्थान अपने हृदय में न दें, सत्कार सबका करें। जो शिष्य गुरुजी से शत्रुता करता है। उसकी भक्ति नष्ट हो जाती है और भी बहुत विनाश होता है।(33-34)

वाणी :- पीढ़ी सहित नरकमें परिहै। गुरु आज्ञा शिष्य लोप जो करि है।।(35)
चेलो अथवा उपासक होई। गुरु सन्मुख ले झूठ संजोई।।(36)
निश्चय नर्क परै शिष्य सोई। वेद पुराण भाषत सब कोई।।(37)

❖ सरलार्थ :- जो शिष्य गुरु की आज्ञा को अनदेखा करता है। वह पीढ़ी सहित नरक में गिरता है अर्थात् पूरे वंश को डुबो देता है। चेला (जो घर त्यागकर संत वेश धारण करके गुरु के साथ आश्रम में रहता है। उसको सन्तजन चेला कहते हैं) हो अथवा उपासक (जो ग्रहस्थ आश्रम में रहकर साधना करता है व दीक्षा लेकर गुरुजी के बताए भक्ति कर्म को करता है, उसे उपासक कहा है) हो, जो गुरुजी के आगे झूठ बोलता है। वह शिष्य नरक में अवश्य गिरता है। यह प्रमाण वेदों तथा पुराणों में भी लिखा है अर्थात् वेद-पुराण भी यही कहते (भाषत) हैं।(35-36-37)

वाणी :- सन्मुख गुरु की आज्ञा धारै। अरू पिछे तै सकल निवारै।।(38)
सो शिष्य घोर नर्कमें परिहै। रुधिर राध पीवै नहिं तरि है।।(39)
मुख पर वचन करै परमाना। घर पर जाय करै विज्ञाना।।(40)
जहाँ जावै तहाँ निंदा करई। सो शिष्य क्रोध अग्नि में जरई।।(41)
ऐसे शिष्य को ठाहर नाहीं। गुरु विमुख लोचत है मनमाहीं।।(42)
बेद पुराण कहै सब साखी। साखी शब्द सबै यों भाखी।।(43)
मानुष जन्म पाय कर खोवै। सतगुरु विमुखा जुगजुग रोवै।।(44)

❖ सरलार्थ :- गुरुजी के सामने तो हाँ जी-हाँ जी करता है और घर पर जाकर सब व्यर्थ की बातें बताता है। वह शिष्य महाकष्टदायक घोर (भंयकर) नरक में गिरता है। इस नरक कुण्ड में रुधिर (खून) तथा राध (मवाद) पीता है, कभी भवसागर से पार नहीं हो सकता। गुरु के सामने तो कहता है कि गुरुजी आप सत्य कह रहे हैं, परंतु घर पर जाकर गुरु की बातों में त्रुटि देखता है। अपने को विद्वान सिद्ध करता है। जहाँ भी जाता है, गुरुजी की निन्दा करता है। वह शिष्य क्रोध रुपी अग्नि में सदैव जलता रहता है। ऐसे शिष्य को कोई ठाहर (सहारा) परमेश्वर का नहीं मिलता। गुरुजी से विमुख (गुरु से उल्टा चलना) मन-मन में लोचता (तड़फता) रहता है। वेदों के मन्त्र तथा पुराणों के श्लोक भी यही कहते हैं तथा महापुरुषों की वाणी साखी (दोहे) तथा शब्द भी यही कहते हैं। जो शिष्य गुरु से विमुख हो जाता है, वह व्यक्ति युगों-युगों रोता रहता है। अनमोल मनुष्य

जीवन को प्राप्त करके गुरु से दूर होकर अर्थात् गुरु की निन्दा करके गुरुद्रोही होकर नष्ट कर देता है।(38-39-40-41-42-43-44)

वाणी :- गरीब, गुरु द्रोही की पैड़ पर, जे पग आवै बीर।
चौरासी निश्चय पड़ै, सतगुरु कहैं कबीर।।(45)

❖ **सरलार्थ :- संत गरीबदास जी ने अपने गुरु भगवान कबीर जी को साक्षी बनाकर कहा है कि यदि गुरुद्रोही की पैड़ पर किसी भक्त-भाई का पैर भी रखा जाता है तो वह 84 लाख प्रकार के प्राणियों के शरीरों में कष्ट उठाएगा। फिर गुरुद्रोही की तो और भी बुरी दशा होगी। पैड़ (पैर का मिट्टी पर चिन्ह) पर किसी का पैर रखा जाता है और वह भी 84 लाख योनियों में भटकता है तो जो गुरु के साथ शत्रुता करता है या निन्दा करता है, वह गुरु द्रोही कहलाता है, उसकी कितनी बुरी दशा होगी? यह आसानी से जान सकते हैं।**

भावार्थ : पैड़ पर पैर रखा जाना का अर्थ केवल यह नहीं है कि किसी रास्ते से चला जा रहा हो और उसके पैर के चिन्ह हो, उन पर किसी का पैर रखा जाने से नरक में व 84 लाख योनियों में गिर जाएगा। नहीं, भावार्थ यह है कि गुरुद्रोही गुरु जी की निन्दा कर रहा है और अन्य शिष्य उसकी हाँ में हाँ मिलाए, उसने गुरुद्रोही के पैर पर पैर रख दिया। उस शिष्य का नाम खण्डित हो जाएगा, भक्ति नष्ट हो जाएगी। जिस कारण से गुरुद्रोही की हाँ में हाँ मिलाने वाला 84 लाख प्रकार की योनियों में कष्ट उठाता है और गुरुद्रोही को तो कितना कष्ट उठाना पड़ेगा, उसका तो वर्णन ही नहीं किया जा सकता।(45)

वाणी :- कबीर, जान बूझ साची तजै, करैं झूठे से नेह।
जाकि संगत हे प्रभु, स्वपन में भी ना देह।।(46)

❖ **सरलार्थ :- सूक्ष्मवेद में परमेश्वर कबीर जी की वाणी में भी कहा है कि शिष्य वही होता है जो गुरुजी को तथा उनके भक्ति ज्ञान को उत्तम मानकर दीक्षा लेता है। फिर लालच या अभिमानवश गुरु जी को त्यागकर चला आता है जहाँ उसको सम्मान मिलता है। जो कुछ दान कर देता है, नकली गुरु उसको विशेष सम्मान देते हैं। जिस कारण से वह मंदभागी व्यक्ति गुरु जी को त्यागकर झूठे गुरु तथा झूठे ज्ञान को स्वीकार कर लेता है। परमात्मा कबीर जी ने कहा है कि हे परमात्मा! ऐसे दुष्ट व्यक्ति के दर्शन जगत में तो बुरे होते ही हैं, परंतु स्वपन में भी दर्शन नहीं हों अर्थात् ऐसे व्यक्ति का संग स्वपन में भी न देना।(46)**

वाणी :- तातै सतगुरु सरना लीजे। कपट भाव सब दूर करीजै।।(47)
योग यज्ञ जप दान करावै। गुरु विमुख फल कबहुँ न पावै।(48)

❖ **सरलार्थ :- इसलिए गुरुजी की शरण प्राप्त करें, दीक्षा लें और मन में कपट नहीं रखना चाहिए। छल-कपट को छोड़कर दीक्षा लेनी चाहिए। यदि गुरु से विमुख होकर कोई यज्ञ, दान, जप करता-कराता है तो उसको कोई आध्यात्मिक लाभ प्राप्त नहीं होता।(47-48)**

पृष्ठ 43 सुमिरन बोध पर :-

गुरू से दीक्षा लीजे भाई। सदा गुरू की कीजे सेवकाई।।
दीक्षा लेई चले जो आडा। सात जन्म सो पावई पाडा (काटड़ा)।।
सतगुरू की जो अदब (शर्म) ना राखै। ताको नरक यह शास्त्र भाखै।।
गुरू संग आडा टेडा बोलै। श्वान (कुत्ता) होके घर–घर डोलै।।
गुरू संग ज्ञान गर्ब दिखावै। कोटि जन्म शूकर (सूअर) के पावै।।

साखी—कबीर गुरू सीढ़ी (मर्यादा) से उतरे, शब्द (नाम) बिहूना (रहित) होय।
ताको काल घसीटही, राख सकै ना कोय।।

भावार्थ :- गुरूदेव से दीक्षा लेकर आजीवन गुरू जी की सेवा करो, अपना कल्याण कराओ।

जो दीक्षा लेकर मर्यादा तोड़ देता है। वह अगले जन्म में भैंस के काटड़े के रूप में जन्म लेगा। जो गुरू जी से आडा-टेढ़ा बोलता है, वह पशु बनेगा।

जो शिष्य गुरू की शर्म (लाज) नहीं करता, शास्त्र बताते हैं कि वह नरक में जाता है।

जो गुरू के साथ आडा-टेढ़ा बोलता है, वह कुत्ते का जन्म पाता है। घर-घर भौंकता हुआ भटकता है।

जो गुरू के सामने यह सिद्ध करने की कुचेष्टा करे कि मैं अधिक ज्ञानवान हूँ, वह करोड़ों जन्म सूअर के भोगता है।

जो शिष्य गुरू जी की सीढ़ी यानि भक्ति मार्ग से उतर जाता है यानि गुरू जी द्वारा बताई भक्ति छोड़ देता है, उसका नाम समाप्त हो जाता है।उसको काल घसीटकर ले जाएग, उसको कोई नहीं छुड़वाएगा।

गुरू का ज्ञान मेटि मत थापी। तीन लोक में बड़ा वह पापी।।
गुरू से ऊँचा चढ़ि कर बैठे। सातवें कुण्ड नरक में पैठे।।
गुरू से उलटा बचन सुनावै। सात जन्म कोढ़ी के पावै।।
गुरू को उलट सुनावै बैना। सात जन्म ताके फूटे नैना।।
साखी—कबीर शिव पूजा में बैठि के, गुरू से कियो अभिमान।
काक भुशण्ड शिव शापते, पड़यो नरक की खान।।

सुमिरन बोध पृष्ठ 44 पर :-

गुरू निंदा जाके मुख होई। ताको मुख ना देखो कोई।।
गुरू निदंक जब वचन सुनावै। भक्त कान मूंद के जावै।।

सुमिरन बोध पृष्ठ 54 पर :-

गुरू सतपद भज अमृतबानी। गुरू बिन मोक्ष नहीं रे प्रानी।।
गुरू हैं आदि अनादि विख्याता। गुरू हैं मोक्ष मुक्ति के दाता।।
अड़सठ तीर्थ भ्रम—भ्रम आवै। सो फल गुरू के चरणा पावै।।
गुरू को तजै भजै जो आना। ता पशुवा को फोकट ज्ञाना।।
गुरू पारस परसै जो कोई। लोहे तै जैसे कंचन होई।।
शुक (सुखदेव) गुरू किये जनक विदेही। वो भये गुरू के परम स्नेही।।
नारद ध्रुव, प्रहलाद पढ़ाये। भक्ति हेत जिन भजन कराए।।
ब्रह्मा गुरू अग्नि ऋषि कीन्हा। आगम निगम की पैड़ी चीन्हा।।
वशिष्ठ मुनि गुरू किये रघुनाथा। पाये दर्शन भये सुनाथा।।
कृष्ण गये दुर्वासा शरणा। पाये भक्ति तारन तरना।।
नारद उपदेश धीमर से पाये। चौरासी से तुरंत बचाये।।
साखी—कबीर राम कृष्ण से कौन बड़ा, तिनहु भी गुरू कीन्ह।
तीन लोक के वे धनी, गुरू आगै आधीन।।

कबीर सागर के अध्याय ''सुमिरन बोध'' का सारांश सम्पूर्ण हुआ।

अध्याय ''कबीर चरित्र बोध'' का सारांश

कबीर सागर में 38वां अध्याय ''कबीर चरित्र बोध'' पृष्ठ 1789 पर है। कबीर सागर के यथार्थ ज्ञान को बिगाड़कर कहीं का नहीं छोड़ा। कबीर पंथ धर्मदास जी के द्वितीय पुत्र श्री चूड़ामणी (जिसको मुक्तामणी भी कहते हैं) से चला है। इससे काल के 10 पंथ और निकले हैं। बारहवां (12वां) पंथ संत गरीबदास जी (गाँव-छुड़ानी, जिला-झज्जर, प्रान्त-हरियाणा) से चला है। संत गरीबदास जी को स्वयं कबीर परमेश्वर जी मिले थे। उनको संत धर्मदास जी की तरह सत्यलोक लेकर गए थे। फिर वापिस पृथ्वी पर शरीर में प्रवेश किया था। अपनी यथार्थ महिमा का परिचय दिया जो संत गरीबदास जी ने आँखों देखा, कानों सुना ज्ञान अपनी अमृतवाणी में बताया है जिसको हम ''सद्ग्रन्थ'' कहते हैं। संत गरीबदास जी ने कबीर सतगुरू के विषय में बताया हैः-

गरीब, गुरू ज्ञान अमान अडोल अबोल है, सतगुरू शब्द सेरी पिछानी।
दास गरीब कबीर सतगुरू मिले, आन अस्थान रोप्या छुड़ानी।।

स्पष्ट हुआ कि संत गरीबदास जी को सन् 1727 (वि.सं. 1784 में) कबीर परमेश्वर जी सतगुरू रूप में मिले थे। कौन से कबीर मिले थे?

गरीब, हम सुल्तानी नानक तारे, दादू कूं उपदेश दिया। जाति जुलाहा भेद न पाया, काशी मांही कबीर हुआ।

स्पष्ट हुआ कि संत गरीबदास जी को काशी वाला जुलाहा कबीर सतगुरू मिले थे। वही कबीर जी श्री नानक देव जी (सिक्ख धर्म के प्रवर्तक) को मिले थे।

उस समय परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी काशी शहर में जुलाहे की लीला कर रहे थे। सुल्तानपुर शहर के पास बह रही बेई नदी के किनारे श्री नानक देव जी को मिले थे। उस समय श्री नानक देव जी नदी पर सुबह स्नान करने के लिए गए हुए थे। कुछ देर ज्ञान चर्चा हुई। फिर तीन दिन तक उनको संत धर्मदास जी तथा संत गरीबदास जी की तरह सत्यलोक (सच्चखण्ड) में लेकर गए थे। फिर श्री नानक देव जी को वापिस पृथ्वी पर छोड़ा। उन्होंने भी आँखों देखा तथा कानों सुना परमेश्वर की महिमा का ज्ञान अपनी अमृतवाणी में बताया। वही परमेश्वर कबीर जी श्री संत दादू दास साहेब जी को मिले थे। उनको भी तीन दिन तक ऊपर सत्यलोक में लेकर गए थे। वह सतगुरू कबीर जी माघ (माह) महीने की शुक्ल पक्ष की एकादशी (ग्यास) को विक्रमी संवत् 1575 (सन् 1518) को मगहर नगर से सशरीर सत्यलोक में अपने निज घर में चले गए थे। उस समय कई हजार दर्शक उपस्थित थे तथा मगहर नगर का नवाब बिजली खान पठान तथा काशी शहर का नरेश बीर देव सिंह बघेल भी अपनी-अपनी सेना सहित मगहर नगर में उपस्थित थे। उन सबके देखते-देखते आकाश में परमात्मा सशरीर गए थे। जब शव के ऊपर की चादर को उठाकर देखा तो शव के आकार में सुगन्धित फूल मिले थे। उसके पश्चात् विक्रमी संवत् 1784(सन् 1727) में संत गरीबदास जी को सतलोक से आकर छुड़ानी गाँव के जंगल (खेतों) में मिले थे। उस समय संत गरीबदास जी की आयु 10 वर्ष की थी। संत गरीबदास जी ने कहा है कि :-

गरीब, अजब नगर में ले गए, मुझको सतगुरू आन।(आकर) झिलके बिम्ब अगाध गति, सूते चादर तान।।
गरीब, अलल पंख अनुराग है, सुन्न मण्डल रहे थीर। दास गरीब उधारिया, सतगुरू मिले कबीर।।
गरीब, सोलह शंख पर सतगुरू का तकिया, गगन मण्डल के जिंदा। हुकम हिसाबी हम चलि आए, काटन यम का फंदा।।

भावार्थ :- संत गरीबदास जी ने बताया है कि सतगुरू कबीर जी मुझे सतलोक से आकर अजब नगर यानि अद्भुत नगर (सत्यलोक) में ले गए। वहाँ हम निश्चिंत होकर सोए यानि उस

परमात्मा तथा उस अमर लोक की महिमा सुनकर मैं निश्चिंत हो गया कि जो सत्य साधना परमेश्वर कबीर जी ने बताई है, उससे उस सत्यलोक में चला जाऊँगा जहाँ जाकर साधक फिर लौटकर संसार में नहीं आते। वहाँ पर जीव को वद्ध अवस्था नहीं होती। वहाँ जीव की कभी मत्यु नहीं होती। इसी कबीर परमेश्वर ने धनी धर्मदास जी बाँधवगढ़ वाले का उद्धार किया था।

गरीब, जिन्दा जोगी जगत गुरू, मालिक मुरशद पीर। दोहूं दीन झगड़ा मंड्या, पाया नहीं शरीर।।
गरीब, जम जौरा जासे डरें, मिटैं कर्म के लेख। अदली असल कबीर हैं, कुल के सतगुरू एक।।
गरीब, ऐसा सतगुरू हम मिल्या, है जिंदा जगदीश। सुन्न विदेशी मिल गया, छत्र मुकुट है शीश।।
गरीब, सब पदवी के मूल हैं, सकल सिद्धि हैं तीर। दास गरीब सतपुरूष भजो, अवगत कला कबीर।।
गरीब, अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड का, एक रति नहीं भार। सतगुरू पुरूष कबीर हैं, कुल के सिरजनहार।।

भावार्थ :- संत गरीबदास जी ने स्पष्ट कर दिया है कि मुझे सतगुरू रूप में स्वयं संजनहार मिले थे जिन्होंने सर्व ब्रह्माण्डों की रचना की है। वह परमेश्वर कबीर जी हैं जो काशी शहर (भारतवर्ष) में जुलाहे की लीला करके गए थे। वे सब पदवी के मूल हैं यानि पूर्ण सतगुरू की पदवी भी उन्हीं के पास है। पूर्ण कवि की पदवी भी उन्हीं के पास है। पूर्ण परमात्मा का पद यानि पद्वी भी उन्हीं के पास है। सर्व सिद्धियां भी उन्हीं के पास है। वे स्वयं सत्यपुरूष कबीर जी हैं, उसकी भक्ति करो।

श्री नानक देव जी ने भी कहा है कि :-

फाई सूरत मलूकि भेष, इह ठगवाड़ा ठगी देश। खरा सियाणा बहुते भार, धाणक रूप रहा करतार।।

(गुरू ग्रन्थ साहेब पष्ठ 24 पर)

गुरू ग्रन्थ साहेब पष्ठ 721 पर कहा है कि :-

एक अर्ज गुफतम पेश तो दर कून करतार। हक्का कबीर करीम तू बेअब परवरदिगार।।
नानक बुगोयद जन तुरा तेरे चाकरां पाखाक।।

गुरू ग्रन्थ साहेब पष्ठ 731 पर कहा है कि :-

नीच जाति प्रदेशी मेरा, खिन्न आवै तिल जावै। जाकि संगत नानक रहंदा, क्यूकर मौड़ा पावै।।

भावार्थ :- श्री नानक देव जी ने स्पष्ट कर दिया है कि जो धाणक यानि जुलाहा कबीर है, वह ही करतार यानि संष्टि का रचनहार परवरदिगार यानि पालनकर्ता है। वह नीच जाति वाला कभी तो ऊपर सतलोक में चला जाता है, कभी यहाँ पथ्वी पर विचर रहा होता है। वह बहुत बुद्धिमान है। उसका बहुत भार है यानि वह समर्थ है। इस कारण से सबसे गुरू (भारी) है। गुरू माने वजनी=भारी भी होता है। गुरू माने बड़ा भी तथा मार्गदर्शक अर्थ भी होता है।

❖ **श्री संत दादू दास जी को भी परमेश्वर कबीर जी मिले थे। उन्होंने भी कहा है कि जिसने मुझे निजनाम (वास्तविक भक्ति मंत्र) दिया है, वह मेरा गुरू है, वही संजनहार है, अन्य कोई नहीं है।**

जिन मोकूं निज नाम दिया, सोई सतगुरू हमार। दादू दूसरा कोई नहीं, कबीर संजनहार।।

संत धर्मदास जी बांधवगढ़ वाले ने भी कहा है। ज्ञान प्रकाश बोध पष्ठ 57(481) से 59(483) पर प्रमाण है।

धर्मदास जी ने बहुत हठ किया कि हे सतगुरू! मुझे वह सतलोक दिखा दो जिसकी महिमा आपने बताई है तथा मुझे उस सतपुरूष के दर्शन करा दो जिसने आपको नीचे भेजा है। जो सर्व का उत्पत्तिकर्ता है। परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को बहुत समझाया कि आप यह हठ क्यों कर रहे हो? मैं जैसी साधना बताऊँ, करते रहो, जब शरीर त्यागकर जाओगे तो उस लोक तथा

सतपुरूष को देख लेना। लेकिन धर्मदास जी ने बहुत अधिक विनय की कि हे प्रभु! मैं आपके निहोरे निकालता हूँ यानि आपसे बार-बार विनय कर रहा हूँ, मुझे पुरूष के दर्शन कराओ।

हो प्रभु चिन्तागण करू मोरा। पुरूष दरश कराओ करों निहोरा।।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि :-

धर्मदास यह हठ का करहू। मानहू शब्द शीश पर धरहू।।
हमरा नाम गहें पुरूष पर जैह। बिना नाम उहां जान न पंहै।।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे धर्मदास! यह हठ क्यों कर रहे हो, आप हमारे से दीक्षा लो। दीक्षा मंत्र लिए बिना वहाँ जाया नहीं जा सकता। धर्मदास जी ने कहा कि हे प्रभु! आपके ज्ञान के आप ही साक्षी हैं। किसी अन्य ने यह भेद बताया नहीं। इसलिए परमेश्वर का दर्शन करने से सब संशय समाप्त हो जाएंगे अन्यथा दिल में रेख यानि शंका बनी रहेगी।

धर्मदास चित बहुत सकाने। चरण टेकि बहुत बिनती ठाने।।
हो प्रभु! सत्य कहौं तोहि पाहीं। तुम्हते कछु दुचिताई नाहीं।।
हो प्रभु! बरणेऊ जो लोक की शोभा। ताते आही मोर मन लोभा।।
तव लीला बहुतै हम देखा। पुरूष दरश बिनु रहै हिय रेखा।।

धर्मदास जी के बार-बार विनती करने पर परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को प्रथम मंत्र जो पाँच नाम का ब्रह्म गायत्री मंत्र है, उसकी दीक्षा दी। यह भूर्भवः स्वः वाला नहीं, अन्य मंत्र है। फिर धर्मदास का शरीर पृथ्वी पर छोड़कर आत्मा को ऊपर सत्यलोक में लेकर गए। तीन दिन-रात ऊपर रखे। वहाँ कबीर जी ही परमेश्वर के सिहांसन पर विराजमान थे। उनके शरीर के बाल (रोम) का प्रकाश करोड़ सूर्यों तथा करोड़ चन्द्रमाओं के मिले-जुले प्रकाश से भी अधिक था। वहाँ पर स्त्री-पुरूष रूप में मानव रहते हैं। उनके शरीर का प्रकाश पुरुष का 16 सूर्यों जितना है। वहाँ पर सब एक-दूसरे से प्रेम से मिलते हैं। बहुत से सतलोकवासी नर-नारी मिलकर नाचते-गाते हुए धर्मदास जी को उस स्थान पर ले गए जहाँ पर स्वयं कबीर जी ही तेजोमय शरीर में तख्त यानि सिहांसन पर बैठे थे। सर्व लोक तथा सतपुरूष के दर्शन करके एक स्थान पर धर्मदास जी को आदर के साथ वहाँ के निवासियों ने बैठाया। फिर परमेश्वर कबीर जी तेजोमय शरीर में सिंहासन छोड़कर वहाँ पर आए। धर्मदास जी शर्मिन्दा हो गए। लज्जावश होकर कहने लगे कि :-

पुरूष अरू कबीर देखा एक भाई। धर्मदास पुनि रहे लज्जाई।।
पुरूष दरश करि आये तहवां। प्रथम कबीर बैठाये जवहाँ।।
इहाँ कबीर बैठे पुनि देखा। कला पुरूष तन अचरज पेखा।।
का अजगुत किन्हेऊ भाई। वहाँ (पृथ्वी पर) मोहे प्रतीत (विश्वास) न आई।।
धाये चरण अति सकुचाई। हे प्रभु! तव परिचय अब हम पाई।।
यह शोभा कस वहाँ (पृथ्वी पर) छुपावा। कैसे नहीं जग महँ प्रकट दिखावा।।

भावार्थ :- जब धर्मदास जी ने परमेश्वर को सत्यलोक अपने वास्तविक सत्यपुरूष रूप में देखा तो कहा कि मेरे को अब आपका वास्तविक परिचय हुआ है। आप सत्य पुरूष स्वयं ही संसार में कबीर दास कहलाते हो। आपने यह वास्तविक शोभा नीचे पृथ्वी पर क्यों छुपा रखी है? तब परमेश्वर ने कहा कि यदि मैं इसी प्रकाश युक्त शरीर से संसार में चला जाऊँ तो काल निरंजन विकल यानि परेशान हो जाएगा। सब जीव मेरे से लग्न लगाएंगे। यह मैं नहीं करूँगा क्योंकि जब तक जीव को ज्ञान नहीं होगा और उसकी भक्ति की शक्ति पूरी नहीं होगी, तब तक सत्य लोक

में स्थाई स्थान नहीं मिल सकता। इसलिए मैं वास्तविक यानि तत्त्वज्ञान तथा सत्य भक्ति मंत्र बताने संसार में जाता हूँ। जो मुझ पर विश्वास करके मंत्र जाप करेगा तो वह निश्चय मुक्ति प्राप्त करके इस लोक में आएगा।

धर्मदास जी ने भी यह प्रार्थना की थी कि मुझको यहीं रख लो, उस काल के लोक में ना भेजो भगवान।

हे साहेब अब वहाँ न जांही। यह सुख तज कहाँ झुराही।।
वह तो यमदेश अपरबल काला। नहीं जानों वहाँ होत बेहाला।।

परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को समझाया कि आप पथ्वी पर जाओ, मैं सदा तुम्हारे साथ रहूँगा। आपने जो आँखों सतलोक की शोभा-सुख तथा परमेश्वर देखा है, यह संसार के जीवों को बताओ, अपना साक्ष्य देकर उनको विश्वास दिलाओ। सत्य भक्ति करके भक्ति धन संचित करके यहाँ आओ।

धर्मदास तोहे चिन्ता नाहीं। तुमरे संग हम सदा रहाहीं।।
तुम देख सत्यलोक प्रभावो। हंसन सतपुरूष संदेश सुनावो।।

धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी के आदेश का पालन करके पथ्वी पर शरीर में प्रवेश किया तथा परिजन मत जानकर रो रहे थे, उनको शांति हुई। धर्मदास जी को विश्वास हुआ कि मैंने कोई स्वपन नहीं देखा है? वास्तव में शरीर त्यागकर सूक्ष्म शरीर से परमेश्वर तथा सत्यलोक के दर्शन करके लौटा हूँ।

छिन एक महं जग में चलि आए। पैठि देह में धर्मनि अकुलाये।।
कई दिवस इहाँ मन नहीं लागा। जैसे गहरी नींद जन जागा।।
धर्मदास गए सतगुरू शरणा। बैठे काशी तारण तरना।।
परेऊ चरण गहि साहब केरा। करी बिनती सुख घनेरा।।
धन्य साहेब तुम सतगुरू अरू सत्य पुरूष आप हो।।
तव लीला को लखै तुम्हरो अनन्त प्रताप हो।।
त्रिदेव–मुनि नारद कोई ना पार तुम्हारा पाये हो।।
ता हंस के भाग सराहिए जो शरण तुम्हारी आये हो।।
निर्गुण–सरगुण अनादि तुम हो। अविगत अगम अथाह।।
गुप्त भये जग में फिरो को पावै तुम्हरो थाह।।

इस प्रकार उपरोक्त सर्व प्रत्यक्ष दष्टा महापुरूषों ने स्पष्ट किया कि जो काशी में धाणक यानि जुलाहे की भूमिका भी किया करता था। वह स्वयं सत्य पुरूष है। परमेश्वर कबीर जी ने भी स्वामी रामानंद जी आचार्य को अपना परिचय दिया था। कहा था कि :-

हम ही अलख अल्लाह हैं, कुतुब गोस अरू पीर। गरीब दास खालिक धनी, हमरा नाम कबीर।।
ऐ स्वामी सष्टा मैं, सष्टि हमारे तीर। दास गरीब अधर बसूं, अविगत सत्य कबीर।।

स्वामी रामानंद काशी वाले आचार्य को भी परमेश्वर कबीर जी संत धर्मदास जी, संत गरीबदास जी, संत दादू जी तथा संत नानक देव जी की तरह सत्यलोक में ले जाकर अपना परिचय करवाकर पथ्वी पर शरीर में छोड़ा था। स्वामी रामानन्द जी ने भी कहा था कि :-

तहां वहां चित चक्रित भया, देख फजल दरबार। दास गरीब सिजदा किया, हम पाये दीदार।।
बोलत रामानंद जी, सुनो कबीर करतार। गरीबदास सब रूप में तुम ही बोलनहार।।

तुम साहेब तुम संत हो, तुम सतगुरू तुम हंस। गरीबदास तुम रूप बिना, और न दूजा अंश।।
मैं भक्ता मुक्ता भया, किया कर्म कुल नाश। गरीबदास अविगत मिले, मेटी मन की प्यास।।
दोनों ठौर है एक तू, भया एक से दोय। गरीबदास हम कारणें, आये हो मग जोय।।
बोले रामानंद जी, सुनो कबीर शुभान। गरीबदास मुक्त भये, उधरे पिंड और प्रान।।
गोष्टि रामानंद से काशी नगर मंझार। गरीबदास जिन्द पीर के, हम पाये दीदार।।

उपरोक्त प्रमाणों से स्पष्ट हुआ कि काशी में कपड़ा बुनने वाला जुलाहा कबीर ही पूर्ण परमात्मा है। सर्व का रचनहार है।

बड़ी विडम्बना है कि मुझ दास (रामपाल दास) के अतिरिक्त सब कबीर पंथी कहते हैं कि सत्य पुरूष तो निराकार है, सत्यलोक में केवल प्रकाश है। कबीर जी उस सत्य पुरूष द्वारा भेजे गए ज्ञानी पुरूष थे यानि सतगुरू थे। वे सत्य पुरूष नहीं थे। इससे स्पष्ट हो जाता है कि जो कबीर पंथ चला रहे हैं, वे वास्तविकता से परिचित नहीं हैं। केवल ऊवाबाई का ज्ञान बताते हैं।

कबीर सागर में पष्ठ 1790 पर ''कबीर चरित्र बोध'' में गलत लिखा है कि:-

''सत्य पुरूष की आज्ञा''

सत्य पुरूष ने ज्ञानी जी से कहा कि हे ज्ञानी जी! काल पुरूष ने समस्त जीवों को फँसाकर मार लिया है। जीव मेरे लोक में नहीं आता। मैंने सुकत जी (धर्मदास) को सत्य पंथ के प्रचार के लिए पथ्वी पर भेजा था। उसको काल पुरूष ने धोखा देकर लोकवेद में फँसा लिया है। आप पथ्वी पर जाओ और सुकत जी को चेताकर मुक्ति पंथ प्रकट करो। तब ज्ञानी जी (कबीर जी) सत्य पुरूष की आज्ञा शिरोधार्य कर दण्डवत् प्रणाम करके सत्यलोक से विदा हुए।

कबीर साहेब का काशी में प्रकट होना भी गलत लिखा है :-

इसमें लिखा है कि विक्रमी संवत् चौदह सौ पचपन ज्येष्ठ पूर्णिमा सोमवार के दिन सत्य पुरूष का तेज काशी में लहर तालाब में उतरा। उस समय पथ्वी और आकाश प्रकाशित हो गए। उस समय अष्टानन्द वैष्णव तालाब पर बैठे थे। वष्टि (वर्षा) हो रही थी। बिजली चमक रही थी।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि लेखक महोदय की बुद्धि कितना कार्य कर रही है। कहा है कि वर्षा हो रही थी। वैष्णव अष्टानन्द जी तालाब पर बैठे थे।

विचार करें :- वर्षा में ऋषि अष्टानंद तालाब पर बैठकर क्या कर रहे थे? वर्षा में मूर्ख भी नहीं बैठे, वह भी इधर-उधर कोई मकान या झोंपड़ी खोजता है। वास्तविकता यह है कि अष्टानन्द साधक थे। प्रतिदिन स्नान करने जाते थे। सरोवर के पास बैठकर साधना किया करते थे। प्रतिदिन की तरह उस दिन भी स्नान करके अपनी साधना कर रहे थे। उस दिन ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा थी। मौसम साफ था।

फिर लिखा है कि नीरू अपनी पत्नी को ससुराल से प्रथम बार लिए चला आ रहा था। नीमा को प्यास लगी। वह पानी पीने तालाब पर गई, वहाँ से बालक उठा लाई। फिर नीरू-नीमा को जन्मजात मुसलमान बताया है। जैसा कि आप जी ने कबीर चरित्र बोध पष्ठ 1790 पर लिखा विवरण पढ़ा कि लेखक ने सत्य पुरूष की आज्ञा से यानि कबीर जी का पथ्वी पर आना लिखा है। इससे स्पष्ट है कि ये पुराने कबीर पंथी श्रद्धालु वास्तविकता से अपरिचित होने से कबीर जी का गलत प्रचार कर रहे थे। यथार्थ कबीर चरित्र बोध कप्या निम्न पढ़ें :-

''यथार्थ कबीर प्राकाट्य प्रकरण'' (कबीर साहेब चारों युगों में आते हैं)

गरीब, सतगुरु पुरुष कबीर हैं, चारों युग प्रवान। झूठे गुरुवा मर गए, हो गए भूत मसान।।

"सतयुग में कविर्देव (कबीर साहेब) का सत्सुकृत नाम से प्राकाट्य"

तत्त्वज्ञान के अभाव से श्रद्धालु शंका व्यक्त करते हैं कि जुलाहे रूप में कबीर जी तो वि. सं. 1455 (सन् 1398) में काशी में हुए थे। वेदों में कविर्देव यही काशी वाला जुलाहा (धाणक) कैसे पूर्ण परमात्मा हो सकता है?

इस विषय में दास (सन्त रामपाल दास) की प्रार्थना है कि यही पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) वेदों के ज्ञान से भी पूर्व सतलोक में विद्यमान थे तथा अपना वास्तविक ज्ञान (तत्त्वज्ञान) देने के लिए चारों युगों में भी स्वयं प्रकट हुए हैं। सतयुग में सतसुकृत नाम से, त्रेतायुग में मुनिन्द्र नाम से, द्वापर युग में करूणामय नाम से तथा कलयुग में वास्तविक कविर्देव (कबीर प्रभु) नाम से प्रकट हुए हैं। इसके अतिरिक्त अन्य रूप धारण करके कभी भी प्रकट होकर अपनी लीला करके अन्तर्ध्यान हो जाते हैं। उस समय लीला करने आए परमेश्वर को प्रभु चाहने वाले श्रद्धालु नहीं पहचान सके, क्योंकि सर्व महर्षियों व संत कहलाने वालों ने प्रभु को निराकार बताया है। वास्तव में परमात्मा आकार में है। मनुष्य सदृश शरीर युक्त हैं। परंतु परमेश्वर का शरीर नाड़ियों के योग से बना पांच तत्त्व का नहीं है। एक नूर तत्त्व से बना है। पूर्ण परमात्मा जब चाहे यहाँ प्रकट हो जाते हैं वे कभी मां से जन्म नहीं लेते क्योंकि वे सर्व के उत्पत्ति कर्त्ता हैं। धर्मदास जी के प्रश्न का उत्तर देते हुए कबीर परमेश्वर जी ने बताया कि हे धर्मदास! मैं चारों युगों में आता हूँ। जब चाहूँ, उसी क्षण सतलोक से आ जाता हूँ। अन्य रूप में वहाँ भी रहता हूँ। जब मैं ब्रह्मा से मिला, उसको तत्त्वज्ञान में सृष्टि रचना का ज्ञान करवाया तो वह प्रभावित हुआ तथा कहा कि आपका ज्ञान अद्वितीय है। प्रथम मन्त्र प्राप्त किया। ब्रह्मा तथा सावित्री को मैंने ओम् मन्त्र दिया। यह देखने के लिए कि यह कितना विश्वास करता है? इसके पश्चात् मैं श्री विष्णु के पास विष्णु लोक गया उससे भी ज्ञान चर्चा की तथा विष्णु भी मेरा शिष्य हुआ। उसको तथा लक्ष्मी को हरियं मन्त्र प्रथम मन्त्र रूप में दिया गया। यह देखने के लिए कि यह काल ब्रह्म के द्वारा डगमग तो नहीं हो जाएगा? इसके पश्चात् शिव शंकर के पास शंकर लोक में गया उसको तथा पार्वती को सोहं नाम दिया। यह देखने के लिए कहीं ये भी काल ब्रह्म द्वारा फिर तो भ्रमित नहीं कर दिए जाऐंगे। उसके पश्चात् अन्य ऋषियों मनु आदि से ज्ञान चर्चा की परन्तु मनु आदि ऋषियों ने काल प्रभाव के कारण मेरे ज्ञान पर विश्वास नहीं किया। मेरे को उल्टा ज्ञान देने वाला ''वामदेव'' उर्फ नाम से पुकारने लगे जबकि पृथ्वी पर मेरा नाम सत्ययुग में ''सत्यसुकृत'' था।

कुछ दिनों पश्चात् मैं फिर से ब्रह्मा के पास गया। ब्रह्मा से ज्ञान चर्चा करनी चाही तो ब्रह्मा जी ने अरूचि दिखाई। क्योंकि जब काल ब्रह्म ने देखा कि मेरे ज्येष्ठ पुत्र ब्रह्मा को तत्वज्ञान से परिचित किया जा रहा है। उसने सोचा यदि मेरा पुत्र तत्त्वज्ञान से परिचित हो गया तो मेरे से घृणा करेगा तथा जीव उत्पत्ति नहीं हो पाएगी। मेरा उदर कैसे भरेगा? क्योंकि काल ब्रह्म को एक लाख मानव शरीरधारी जीवों को प्रतिदिन खाने का शाप लगा है। इसलिए काल ब्रह्म ने अपने ज्येष्ठ पुत्र ब्रह्मा की बुद्धि को परिवर्तित कर दिया। ब्रह्मा के मन में विचार भर दिए कि काल ब्रह्म (ज्योति निरंजन) ही पूज्य है। वह निराकार है। इससे भिन्न कोई अन्य परमात्मा नहीं हैं। जो तुझे ज्ञान दिया जा रहा है वह मिथ्या है। यह अग्नि ऋषि जो तेरे पास आया था वह अज्ञानी है। इसकी बातों में नहीं आना है। हे धर्मदास! ब्रह्मा ने काल

ब्रह्म के प्रभाव से प्रभावित होकर मेरे ज्ञान को ग्रहण नहीं किया तथा कहा हे ऋषिवर! जो ज्ञान आप बता रहे हो यह अप्रमाणित है। इसलिए विश्वास के योग्य नहीं है। वेदों में केवल एक परमात्मा की पूजा का विधान है। उसका केवल एक ओं (ॐ) ही जाप करने का है। मुझे पूर्ण ज्ञान है मुझे आप का ज्ञान अस्वीकार्य है।

हे धर्मदास! मैंने बहुत कोशिश की ब्रह्मा को समझाने की तथा बताया कि वेद ज्ञान दाता ब्रह्म किसी अन्य पूर्ण ब्रह्म के विषय में कह रहा है। उसकी प्राप्ति के लिए तथा उसके विषय में तत्त्व से जानने के लिए किसी तत्त्वदर्शी सन्त (धीराणाम्) की खोज करो फिर उनसे वह तत्त्वज्ञान सुनों।

प्रमाणः- यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 10 व 13 में स्पष्ट वर्णन है तथा गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में भी स्पष्ट कहा है। प्रमाणों को देख कर भी काल ब्रह्म के अति प्रभाव के कारण ब्रह्मा ने मेरे विचारों में रूचि नहीं ली। मैंने जान लिया कि ब्रह्मा को काल ने भ्रमित कर दिया है। इसलिए विष्णु जी ने भी अरूचि की तो मैं वहाँ से शिव शंकर के पास गया। यही स्थिति शिव की देख कर मैं नीचे पथ्वी लोक में आया।

वर्तमान में चल रही चतुर्युगी के प्रथम सत्ययुग में मैंने (परमेश्वर कबीर जी ने) एक सरोवर में कमल के फूल पर शिशु रूप धारण किया। एक ब्राह्मण दम्पति निःसन्तान था। वह विद्याधर नामक ब्राह्मण अपनी पत्नी दीपिका के साथ अपनी ससुराल से आ रहा था। उनकी आधी आयु बीत चुकी थी। कोई संतान नहीं थी। दीपिका को अपने पिता के घर पर कुछ औरतों ने हमदर्दी जताते हुए कई बार कहा था कि संतान बिना स्त्री का कोई सम्मान नहीं करता। एक संतान तो होनी ही चाहिए। इन बातों को याद करके दीपिका रो रही थी तथा सुबकी लेकर अपने ईष्ट शिव जी से संतान की प्रार्थना कर रही थी। विचार कर रही थी कि वद्धावस्था में हमारी ऊँगली पकड़ने वाला भी नहीं है। वह समय कैसे बीतेगा? इतने में एक सरोवर दिखाई दिया। प्यास लगी थी। वे सरोवर पर विश्राम हेतु रूके। वहाँ एक नवजात् शिशु को कमल के फूल पर प्राप्त करके अति प्रसन्न हुए। उसे परमेश्वर शिव की कपा से प्राप्त जान कर घर ले आए। एक अन्य ब्राह्मण से नाम रखवाया उसने मेरा नाम सत्सुकत रखा। मेरी प्रेरणा से कंवारी गायों ने दूध देना प्रारम्भ किया। उनके दूध से मेरी परवरिश लीला हुई। गुरूकुल में शिक्षा की लीला की। ऋषि जी जो वेद मन्त्र भूल जाते तो मैं खड़ा होकर पूरा करता। ऋषि जी वेद मन्त्रों का गलत अर्थ करते मैं विरोध करता। इस कारण से मुझे गुरूकुल से निकाल दिया। पथ्वी पर घूम कर मैंने बहुत से ऋषियों से ज्ञान चर्चा की परन्तु शास्त्रविरूद्ध ज्ञान पर आधारित होने के कारण किसी भी ऋषि-महर्षि ने ज्ञान सुनने की चेष्टा ही नहीं की। महर्षि मनु से भी मेरी वेद ज्ञान पर भी चर्चा हुई। महर्षि मनु ने ब्रह्मा जी से ही ज्ञान ग्रहण किया था। महर्षि मनु जी ने मुझे उल्टा ज्ञान देने वाला बताया तथा मेरा उपनाम वाम देव रख दिया। मैंने महर्षि मनु व अन्य ऋषियों से यहाँ तक कहा कि वह पूर्ण परमात्मा मैं ही हूँ। उन्होंने मेरा उपहास किया तथा कहा आप यहाँ है तो आपका सतलोक तो आपके बिना सुनसान पड़ा होगा वहाँ सतलोक में जाने का क्या लाभ? वहाँ गये प्राणी तो अनाथ हैं। मैंने कहा मैं ऊपर भी विराजमान हूँ। तब मनु जी सहित सर्व ऋषियों ने ठहाका लगा कर कहा फिर तो आपका नाम वामदेव उचित है। वामदेव का अर्थ है कि दो स्थानों पर निवास करने वाला, भी है। वाम अक्षर दो का बोधक है। इस प्रकार उन ज्ञानहीन व्यक्तियों ने मेरे तत्त्वज्ञान को ग्रहण नहीं किया। (वामदेव का प्रमाण शिवपुराण पष्ठ 606-607 कैलाश संहिता प्रथम अध्याय में है।) बहुत से प्रयत्न करने पर कुछ पुण्यात्माओं ने मेरा उपदेश ग्रहण किया। मैंने स्वस्म वेद (कविगिरः=कविर्वाणी) की रचना की जिसकी काल द्वारा प्रेरित ज्ञानहीन ऋषियों ने बहुत निन्दा की तथा जनता से इसे न पढ़ने का आग्रह किया। सतयुग के प्राणी मुझे केवल एक अच्छा कवि ही मानते थे। इस कारण से सतयुग में बहुत ही कम जीवों ने मेरी शरण् ग्रहण की। सतयुग में मानव की आयु एक लाख वर्ष से प्रारम्भ होती है तथा सतयुग के

अन्त में दस हजार वर्ष रह जाती है। सत्ययुग में बहुत ही पुण्यकर्मी प्राणी जन्म लेते हैं। सतयुगमें स्त्री विधवा नहीं होती। पिता से पहले पुत्र की मत्यु नहीं होती। आपसी भाई चारा बहुत अच्छा होता है। चोरी-जारी अन्य बुराईयाँ नाम मात्र में ही होती है। तथा शराब, मांस, तम्बाकु आदि का सेवन सत्ययुग के आदि में प्राणी नहीं करते। ब्राह्मण विद्याधर वाली आत्मा त्रेता युग में वेदविज्ञ ऋषि हुए तथा कलयुग में ऋषि रामानन्द हुए तथा दीपिका वाली आत्मा त्रेता में सूर्या हुई तथा कलयुग में कमाली हुई तथा सतयुग में बहुत ही कम प्राणियों ने मेरी शरण ली।

पूर्ण प्रभु कबीर जी (कविर्देव) सतयुग में सतसुकृत नाम से स्वयं प्रकट हुए थे। उस समय गरुड़ जी, श्री ब्रह्मा जी श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी आदि को सतज्ञान समझाया था।

आदि अंत हमरै नाहीं, मध्य मिलावा मूला। ब्रह्मा को ज्ञान सुनाइया, धर पिण्डा अस्थूल।।

श्वेत भूमि को हम गए, जहाँ विश्वम्भर नाथ। हरियम् हीरा नाम देय, अष्ट कमल दल स्वांति।।

हम बैरागी ब्रह्म पद, सन्यासी महादेव। सोहं नाम दिया शंकर कूं, करे हमारी सेव।।

इस प्रकार सतयुग में परमेश्वर कविर्देव जी जो सतसुकृत नाम से आए थे उस समय के ऋषियों व साधकों को वास्तविक ज्ञान समझाया करते थे। परन्तु ऋषियों ने स्वीकार नहीं किया। सतसुकृत जी के स्थान पर परमेश्वर को ''वामदेव'' कहने लगे।

इसी लिए यजुर्वेद अध्याय 12 मंत्र 4 में विवरण है कि यजुर्वेद के वास्तविक ज्ञान को वामदेव ऋषि ने सही जाना तथा अन्य को समझाया।

सुपर्णोऽसि गरुत्माँस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ। स्तोमऽआत्मा छन्दाᳬंस्यङ्गानि यजूᳬंषि नाम। साम ते तनूर्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियं पुच्छं धिष्ण्याः शफाः। सुपर्णोऽसि गरुत्मान्दिवं गच्छ स्वः पत ॥४॥

पदार्थः—हे विद्वन्! जिस कारण (**ते**) आपका (**त्रिवृत्**) तीन कर्म्म, उपासना और ज्ञानों से युक्त (**शिरः**) दुःखों का जिस से नाश हो (**गायत्रम्**) गायत्री छन्द से कहे विज्ञानरूप अर्थ (**चक्षुः**) नेत्र (**बृहद्रथन्तरे**) बड़े २ रथों के सहाय से दुःखों को छुड़ाने वाले (**पक्षौ**) इधर उधर के अवयव (**स्तोमः**) स्तुति के योग्य ऋग्वेद (**आत्मा**) अपना स्वरूप (**छन्दांसि**) उष्णिक् आदि छन्द (**अंगानि**) कान आदि अंग, (**यजूंषि**) यजुर्वेद के मन्त्र (**नाम**) नाम (**यज्ञायज्ञियम्**) ग्रहण करने और छोड़ने योग्य व्यवहारों के योग्य (**वामदेव्यम्**) वामदेव ऋषि ने जाने वा पढ़ाये (**साम**) तीसरे सामवेद (**ते**) आपका (**तनूः**) शरीर है इससे आप (**गरुत्मान्**) महात्मा (**सुपर्णः**) सुन्दर सम्पूर्ण लक्षणों से युक्त (**असि**) हैं। जिस से (**धिष्ण्याः**) शब्द करने के हेतुओं में साधु (**शफा**) खुर तथा (**पुच्छम्**) बढ़ी पूँछ के समान अन्त्य का अवयव है उस के समान जो (**गरुत्मान्**) प्रशंसित शब्दोच्चारण से युक्त (**सुपर्णः**) सुन्दर उड़ने वाले (**असि**) है उस पक्षी के समान आप (**दिवम्**) सुन्दर विज्ञान को (**गच्छ**) प्राप्त हूजिये और (**स्वः**) सुख को (**पत**) ग्रहण कीजिये ॥४॥

भावार्थः—इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सुन्दर शाखा पत्र पुष्प फल और मूलों से युक्त वृक्ष शोभित होते हैं वैसे ही वेदादि शास्त्रों के पढ़ने और पढ़ानेहारे सुशोभित होते हैं। जैसे पशु पूंछ आदि अवयवों से अपने काम करते और जैसे पक्षी पंखों से आकाश मार्ग से जाते आते आनन्दित होते हैं वैसे मनुष्य विद्या और अच्छी शिक्षा को प्राप्त हो पुरुषार्थ के साथ सुखों को प्राप्त हों ॥४॥

यह यजुर्वेद अध्याय 12 मंत्र 4 की फोटोकॉपी है जिसका अनुवाद महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने किया है तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा छपाया गया है। इसमें स्पष्ट है कि वेदों के ज्ञान को वामदेव ऋषि ने ठीक से समझा तथा अन्य को समझाया।

पवित्र वेदों के ज्ञान को समझने के लिए कृपया विचार करें :-

''वेदों में कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर का प्रमाण''

(पवित्र वेदों में प्रवेश से पहले)

प्रभु जानकारी के लिए पवित्र चारों वेद प्रमाणित शास्त्र हैं। पवित्र वेदों की रचना उस समय हुई थी जब कोई अन्य धर्म नहीं था। इसलिए पवित्र वेदवाणी किसी धर्म से सम्बन्धित नहीं है, केवल आत्म कल्याण के लिए है। इनको जानने के लिए निम्न व्याख्या बहुत ध्यान तथा विवेक के साथ पढ़नी तथा विचारनी होगी।

प्रभु की विस्तृत तथा सत्य महिमा वेद बताते हैं। (अन्य शास्त्र''श्री गीता जी व चारों वेदों तथा पूर्वोक्त प्रभु प्राप्त महान संतों तथा स्वयं कबीर साहेब(कविर्देव) जी की अपनी पूर्ण परमात्मा की अमृत वाणी के अतिरिक्त'' अन्य किसी ऋषि साधक की अपनी उपलब्धि है। जैसे छः शास्त्र ग्यारह उपनिषद् तथा सत्यार्थ प्रकाश आदि। यदि ये वेदों की कसौटी में खरे नहीं उतरते हैं तो यह सम्पूर्ण ज्ञान नहीं है।)

पवित्र वेद तथा गीता जी स्वयं काल प्रभु(ब्रह्म) दत्त हैं। जिन में भक्ति विधि तथा उपलब्धि दोनों सही तौर पर वर्णित हैं। इनके अतिरिक्त जो पूजा विधि तथा अनुभव हैं वह अधूरा समझें। यदि इन्हीं के अनुसार कोई साधक अनुभव बताए तो सत्य जानें। क्योंकि कोई भी प्राणी प्रभु से अधिक नहीं जान सकता।

वेदों के ज्ञान से पूर्वोक्त महात्माओं का विवरण सही मिलता है। इससे सिद्ध हुआ कि वे सर्व महात्मा पूर्ण थे। पूर्ण परमात्मा का साक्षात्कार हुआ है तथा बताया है वह परमात्मा कबीर साहेब(कविर् देव) है।

वही ज्ञान चारों पवित्र वेद तथा पवित्र गीता जी भी बताते हैं।

कलियुगी ऋषियों ने वेदों का टीका (भाषा भाष्य) ऐसे कर दिया जैसे कहीं दूध की महिमा कही गई हो और जिसने कभी जीवन में दूध देखा ही न हो और वह अनुवाद कर रहा हो, वह ऐसे करता है :-

पोष्टिकाहार असि। पेय पदार्थ असि। श्वेदसि।
अमृत उपमा सर्वा मनुषानाम पेय्याम् सः दूग्धः असिः।

(पौष्टिकाहार असि)=कोई शरीर पुष्ट कर ने वाला आहार है (पेय पदार्थ) पीने का तरल पदार्थ (असि) है। (श्वेत्) सफेद (असि) है। (अमृत उपमा) अमृत सदृश है (सर्व) सब (मनुषानाम्) मनुष्यों के (पेय्याम्) पीने योग्य (सः) वह (दूग्धः) पौष्टिक तरल (असि) है।

भावार्थ किया :- कोई सफेद पीने का तरल पदार्थ है जो अमृत समान है, बहुत पौष्टिक है, सब मनुष्यों के पीने योग्य है, वह स्वयं तरल है। फिर कोई पूछे कि वह तरल पदार्थ कहाँ है? उत्तर मिले वह तो निराकार है। प्राप्त नहीं हो सकता। यहाँ पर दूग्धः को तरल पदार्थ लिख दिया जाए तो उस वस्तु ''दूध'' को कैसे पाया व जाना जाए जिसकी उपमा ऊपर की है? यहाँ पर (दूग्धः) को दूध लिखना था जिससे पता चले कि वह पौष्टिक आहार दूध है। फिर व्यक्ति दूध नाम से उसे

प्राप्त कर सकता है।

विचार :- यदि कोई कहे दुग्धः को दूध कैसे लिख दिया? यह तो वाद-विवाद का प्रत्यक्ष प्रमाण ही हो सकता है। जैसे दुग्ध का दूध अर्थ गलत नहीं है। भाषा भिन्न होने से हिन्दी में दूध तथा क्षेत्रीय भाषा में दूधू लिखना भी संस्कत भाषा में लिखे दुग्ध का ही बोध है। जैसे पलवल शहर के आसपास के ग्रामीण परवर कहते हैं। यदि कोई कहे कि परवर को पलवल कैसे सिद्ध कर दिया, मैं नहीं मानता। यह तो व्यर्थ का वाद विवाद है। ठीक इसी प्रकार कोई कहे कि कविर्देव को कबीर परमेश्वर कैसे सिद्ध कर दिया यह तो व्यर्थ का वाद-विवाद ही है। जैसे ''यजुर्वेद'' है यह एक धार्मिक पवित्र पुस्तक है जिसमें प्रभु की यज्ञिय स्तुतियों की ऋचाऐं लिखी हैं तथा प्रभु कैसा है? कैसे पाया जाता है? सब विस्तत वर्णन है।



अब पवित्र यजुर्वेद की महिमा कहें कि प्रभु की यज्ञीय स्तुतियों की ऋचाओं का भण्डार है। बहुत अच्छी विधि वर्णित है। एक अनमोल जानकारी है और यह लिखें नहीं कि वह ''यजुर्वेद'' है अपितु यजुर्वेद का अर्थ लिख दें कि यज्ञीय स्तुतियों का ज्ञान है। तो उस वस्तु(पवित्र पुस्तक) को कैसे पाया जा सके? उसके लिए लिखना होगा कि वह पवित्र पुस्तक ''यजुर्वेद'' है जिसमें यज्ञीय ऋचाऐं हैं।

अब यजुर्वेद की सन्धिच्छेद करके लिखें। यजुर्+वेद, भी वही पवित्र पुस्तक यजुर्वेद का ही बोध है। यजुः+वेद भी वही पवित्र पुस्तक यजुर्वेद का ही बोध है। जिसमें यज्ञीय स्तुति की ऋचाऐं हैं। उस धार्मिक पुस्तक को यजुर्वेद कहते हैं। ठीक इसी प्रकार चारों पवित्र वेदों में लिखा है कि वह कविर्देव(कबीर परमेश्वर) है। जो सर्व शक्तिमान, जगत्पिता, सर्व सष्टि रचनहार, कुल मालिक तथा पाप विनाशक व काल की कारागार से छुटवाने वाला अर्थात् बंदी छोड़ है।

इसको कविर्+देव लिखें तो भी कबीर परमेश्वर का बोध है। कविः+देव लिखें तो भी कबीर परमेश्वर अर्थात् कविर् प्रभु का ही बोध है।



इसलिए कविर्देव उसी कबीर साहेब का ही बोध करवाता है :- सर्व शक्तिमान, अजर-अमर, सर्व ब्रह्मण्डों का रचनहार कुल मालिक है क्योंकि पूर्वोक्त प्रभु प्राप्त सन्तों ने अपनी-अपनी मातभाषा में 'कविर्' को 'कबीर' बोला है तथा 'वेद' को 'बेद' बोला है। इसलिए 'व' और 'ब' के अंतर हो जाने पर भी पवित्र शास्त्र वेद का ही बोध है।

विचार :- जैसे कोई अंग्रेजी भाषा में लिखें कि **God (Kavir) Kaveer is all mighty** इसका हिन्दी अनुवाद करके लिखें कविर या कवीर परमेश्वर सर्व शक्तिमान है।

अब अंग्रेजी भाषा में तो हलन्त (्) की व्यवस्था ही नहीं है। फिर मात्र भाषा में इसी को कबीर कहने तथा लिखने लगे।

यही परमात्मा कविर्देव(कबीर परमेश्वर) तीन युगों में नामान्तर करके आते हैं जिनमें इनके नाम रहते हैं - सतयुग में सत सुकत, त्रेतायुग में मुनिन्द्र, द्वापरयुग में करुणामय तथा कलयुग में कबीर देव (कविर्देव)। वास्तविक नाम उस पूर्ण ब्रह्म का कविर् देव ही है। जो सष्टि रचना से पहले भी अनामी लोक में विद्यमान थे। इन्हीं के उपमात्मक नाम सतपुरुष, अकाल मूर्त, पूर्ण ब्रह्म, अलख पुरुष, अगम पुरुष, परम अक्षर ब्रह्म आदि हैं। उसी परमात्मा को चारों पवित्र वेदों में ''कविरमितौजा'', ''कविरघांरि'', ''कविरग्नि'' तथा ''कविर्देव'', कहा है तथा सर्वशक्तिमान, सर्व सष्टि रचनहार

बताया है। पवित्र कुरान शरीफ में सुरत फुर्कानी नं. 25 आयत नं. 19,21,52,58,59 में भी प्रमाण है।

कई एक का विरोध है कि जो शब्द कविर्देव' है इसको सन्धिच्छेद करने से कविः+देवः बन जाता है यह कबिर् परमेश्वर या कबीर साहेब कैसे सिद्ध किया? व को ब तथा छोटी इ (ि) की मात्रा को बड़ी ई (ी) की मात्रा करना बेसमझी है।

विचार :- एक ग्रामीण लड़के की सरकारी नौकरी लगी। जिसका नाम कर्मवीर पुत्र श्री धर्मवीर सरकारी कागजों में तथा करमबिर पुत्र श्री धरमबिर पुत्र परताप गाँव के चौकीदार की डायरी में जन्म के समय का लिखा था। सरकार की तरफ से नौकरी लगने के बाद जाँच पड़ताल कराई जाती है। एक सरकारी कर्मचारी जाँच के लिए आया। उसने पूछा कर्मवीर पुत्र श्री धर्मवीर का मकान कौन-सा है, उसकी अमूक विभाग में नौकरी लगी है। गाँव में कर्मवीर को कर्मा तथा उसके पिता जी को धर्मा तथा दादा जी को प्रता आदि उर्फ नामों से जानते थे। व्यक्तियों ने कहा इस नाम का लड़का इस गाँव में नहीं है। काफी पूछताछ के बाद एक लड़का जो कर्मवीर का सहपाठी था, उसने बताया यह कर्मा की नौकरी के बारे में है। तब उस बच्चे ने बताया यही कर्मबीर उर्फ कर्मा तथा धर्मबीर उर्फ धर्मा ही है। फिर उस कर्मचारी को शंका उत्पन्न हुई कि कर्मबीर नहीं कर्मवीर है। उसने कहा चौकीदार की डायरी लाओ, उसमें भी लिखा था - ''करमबिर पुत्र धरमबिर पुत्र परताप'' पूरा ''र'' ''व'' के स्थान पर ''ब'' तथा छोटी ''ि'' की मात्रा लगी थी। तो भी वही बच्चा कर्मवीर ही सिद्ध हुआ, क्योंकि गाँव के नम्बरदारों तथा प्रधानों ने भी गवाही दी कि बेशक मात्रा छोटी बड़ी या ''र'' आधा या पूरा है, लड़का सही इसी गाँव का है। सरकारी कर्मचारी ने कहा नम्बरदार अपने हाथ से लिख दे। नम्बरदार ने लिख दिया मैं करमविर पूतर धरमविर को जानता हूँ जो इस गाम का बासी है और हस्ताक्षर कर दिए। बेशक नम्बरदार ने विर में छोटी ई(ि) की मात्रा का तथा करम में बड़े ''र'' का प्रयोग किया है, परन्तु हस्ताक्षर करने वाला गाँव का गणमान्य व्यक्ति है। किसी को कोई आपत्ति नहीं हो सकती, क्योंकि नाम की स्पेलिंग गलत नहीं होती।

ठीक इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा का नाम सरकारी दस्तावेज(वेदों) में कविर्देव है, परन्तु गाँव(पथ्वी) पर अपनी-2 मात भाषा में कबीर, कबिर, कबीरा, कबीरन् आदि नामों से जाना जाता है। इसी को नम्बरदारों(आँखों देखा विवरण अपनी पवित्र वाणी में ठोक कर गवाही देते हुए आदरणीय पूर्वोक्त सन्तों) ने कविर्देव को हक्का कबीर, सत् कबीर, कबीरा, कबीरन्, खबीरा, खबीरन् आदि लिख कर हस्ताक्षर कर रखे हैं।

वर्तमान (सन् 2006)से लगभग 600 वर्ष पूर्व जब परमात्मा कबीर जी (कविर्देव जी) स्वयं प्रकट हुए थे उस समय सर्व सद्ग्रन्थों का वास्तविक ज्ञान लोकोक्तियों (दोहों, चोपाईयों, शब्दों अर्थात् कविताओं) के माध्यम से साधारण भाषा में जन साधारण को बताया था। उस तत्त्व ज्ञान को उस समय के संस्कत भाषा व हिन्दी भाषा के ज्ञाताओं ने यह कह कर ठुकरा दिया कि कबीर जी तो अशिक्षित है। इस के द्वारा कहा गया ज्ञान व उस में उपयोग की गई भाषा व्याकरण दष्टिकोण से ठीक नहीं है। जैसे कबीर जी ने कहा है :-

कबीर बेद मेरा भेद है, मैं ना बेदों माहीं।
जौण बेद से मैं मिलु ये बेद जानते नाहीं।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी ने कहा है कि जो चार वेद है ये मेरे विषय में ही ज्ञान बता रहे हैं परन्तु इन चारों वेदों में वर्णित विधि द्वारा मैं (पूर्ण ब्रह्म) प्राप्त नहीं हो सकता। जिस वेद (स्वसम अर्थात् सूक्ष्म वेद) में मेरी प्राप्ति का ज्ञान है। उस को चारों वेदों के ज्ञाता नहीं

जानते। इस वचन को सुनकर। उस समय के आचार्यजन कहते थे कि कबीर जी को भाषा का ज्ञान नहीं है। देखो वेद का बेद कहा है। नहीं का नाहीं कहा है। ऐसे व्यक्ति को शास्त्रों का क्या ज्ञान हो सकता है? इसलिए कबीर जी मिथ्या भाषण करते हैं। इस की बातों पर विश्वास नहीं करना। स्वामी दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास ग्यारह पृष्ठ 306 पर कबीर जी के विषय में यही कहा है। वर्तमान में मुझ दास (संत रामपाल दास) के विषय में विज्ञापनों में लिखे लेख पर आर्य समाज के आचार्यों ने यही आपत्ति व्यक्त की थी कि रामपाल को हिन्दी भाषा भी सही नहीं लिखनी आती व को ब लिखता है छोटी-बड़ी मात्राओं को गलत लिखता है। कोमा व हलन्त भी नहीं लगाता। इसका ज्ञान कैसे सही माना जाए।

विचार :- किसी लड़के का विवाह एक सुन्दर सुशील युवती से हो गया। उसने साधारण वस्त्र पहने थे। मेकअप (हार, सिंगार) नहीं कर रखा था। उस के विषय में कोई कहे कि ''यह भी कोई विवाह है। वधु ने मेकअप (हार, सिंगार-आभूषण आदि नहीं पहने) नहीं किया है। विचार करें विवाह का अर्थ है पुरूष को पत्नी प्राप्ति। यदि मेकअप (श्रंगार) नहीं कर रखा तो वांच्छित वस्तु प्राप्त है। यदि श्रंगार कर रखा है लड़की ने तो भी बुरा नहीं किया, परन्तु एक श्रंगार के अभाव से विवाह को ही नकार देना कौन सी बुद्धिमता है। ठीक इसी प्रकार परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ तथा संत रामपाल दास जी महाराज द्वारा दिया तत्त्व ज्ञान है। वास्तविक ज्ञान प्राप्त है। यदि भाषा में श्रंगार का अभाव अर्थात् मात्राओं व हलन्तों की कमी है तो विद्वान पुरूष कृप्या ठीक करके पढ़ें।

इस तरह इस उलझी हुई ज्ञानगुत्थी को सुलझाया जाएगा। इसमें भाषा तथा व्याकरण की भूमिका क्या है?

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अपने द्वारा रचे पवित्र उपनिषद् ''सत्यार्थ प्रकाश'' के सातवें समुलास में (पृष्ठ नं. 217, 212 अजमेर से प्रकाशित तथा पृष्ठ संख्या 173 दीनानगर दयानन्द मठ पंजाब से प्रकाशित) लिखा है, उसका भावार्थ है कि ब्रह्म ने वेद वाणी चार ऋषियों में जीवस्थ रूप से बोले। जैसे लग रहा था कि ऋषि वेद बोल रहे थे, परन्तु ब्रह्म बोल रहा था तथा ऋषियों का मुख प्रयोग कर रहा था। (''जीवस्थ रूप'' का भावार्थ है जैसे ऋषियों के अन्दर कोई और जीव स्थापित होकर बोल रहा हो) बाद में उन ऋषियों को कुछ मालूम नहीं कि क्या बोला, क्या लिखा?

(जैसे कोई प्रेतात्मा किसी के शरीर में प्रवेश करके बोलती है। उस समय लग रहा होता है कि शरीर वाला जीव ही बोल रहा है, परन्तु प्रेत के निकल जाने के बाद उस शरीर वाले जीव को कुछ मालूम नहीं होता, मैंने क्या बोला था)।

इसी प्रकार बाद में ऋषियों ने वेद भाषा को जानने के लिए व्याकरण निघटु आदि की रचना की। जो स्वामी दयानन्द जी के शब्दों में सत्यार्थ प्रकाश तीसरे समुल्लास (पृष्ठ नं. 80, अजमेर से प्रकाशित तथा पृष्ठ संख्या 64 दीनानगर पंजाब से प्रकाशित) में पवित्र चारों वेद ईश्वर कृत होने से निभ्रात हैं, वेदों का प्रमाण वेद ही हैं। चारों ब्राह्मण, व्याकरण, निघटु आदि ऋषियों कृत होने से त्रुटि युक्त हो सकते हैं। उपरोक्त विचार स्वामी दयानन्द जी के हैं।

विचार करें वेद पढ़ने वाले ऋषियों के अपने विचारों से रचे उपनिषद् एक दूसरे के विपरीत व्याख्या कर रहे हैं। इसलिए वेद ज्ञान को तत्त्वज्ञान से ही समझा जा सकता है। तत्त्वज्ञान (स्वसम वेद) पूर्ण ब्रह्म कविर्देव ने स्वयं आकर बताया है तथा चारों वेदों का ज्ञान ब्रह्म द्वारा बताया गया है और वेदों को बोलने वाला ब्रह्म स्वयं पवित्र यजुर्वेद अध्याय नं. 40 मन्त्र नं. 10 में कह रहा है कि उस पूर्ण ब्रह्म को कोई तो (सम्भवात्) जन्म लेकर प्रकट होने वाला अर्थात् आकार में(आहु:)

कहता है तथा कोई (असम्भवात्) जन्म न लेने वाला अर्थात् व निराकार(आहुः) कहते हैं। परन्तु इसका वास्तविक ज्ञान तो(धीराणाम्) पूर्ण ज्ञानी अर्थात् तत्त्वदर्शी संतजन (विचचक्षिरे) पूर्ण निर्णायक भिन्न भिन्न बताते हैं (शुश्रुम्) उसको ध्यानपूर्वक सुनो। इससे स्वसिद्ध है कि वेद बोलने वाला ब्रह्म भी स्वयं कह रहा है कि उस पूर्ण ब्रह्म के बारे में मैं भी पूर्ण ज्ञान नहीं रखता। उसको तो कोई तत्त्वदर्शी संत ही बता सकता है। इसी प्रकार इसी अध्याय के मन्त्र नं. 13 में कहा है कि कोई तो (विद्याया) अक्षर ज्ञानी एक भाषा के जानने वाले को ही विद्वान कहते हैं, दूसरे (अविद्याया) निरक्षर को अज्ञानी कहते हैं, यह जानकारी भी (धीराणाम्) तत्त्वदर्शी संतजन ही (विचचक्षिरे) विस्तृत व्याख्या ब्यान करते हैं (तत्) उस तत्त्वज्ञान को उन्हीं से (शुश्रुम्) ध्यानपूर्वक सुनो अर्थात् वही तत्त्वदर्शी संत ही बताएगा कि विद्वान अर्थात् ज्ञानी कौन है तथा अज्ञानी अर्थात् अविद्वान कौन है।

विशेष :- उपरोक्त प्रमाणों को विवेचन करके सद्भावना पूर्वक पुनर्विचार करें तथा व को ब तथा छोटी बड़ी मात्राओं की शुद्धि-अशुद्धि से ही ज्ञानी व अज्ञानी की पहचान नहीं होती, वह तो तत्त्वज्ञान से ही होती है।

(कविर् देव) = कबीर परमेश्वर के विषय में 'व' को 'ब' कैसे सिद्ध किया है? छोटी इ (ि) की मात्रा बड़ी ई(ी) की मात्रा कैसे सिद्ध हो सकती है? इस वाद-विवाद में न पड़कर तत्त्वज्ञान को समझना है।

जैसे यजुर्वेद है, यह एक पवित्र पुस्तक है। इसके विषय में कहीं संस्कृत भाषा में विवरण किया हो जहां यजुः या यजुम् आदि शब्द लिखें हो तो भी पवित्र पुस्तक यजुर्वेद का ही बोध समझा जाता है। इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा का वास्तविक नाम कविर्देव है। इसी को भिन्न-भिन्न भाषा में कबीर साहेब, कबीर परमेश्वर कहने लगे। कई श्रद्धालु शंका व्यक्त करते हैं कि कविर् को कबीर कैसे सिद्ध कर दिया। व्याकरण दृष्टिकोण से कविः का अर्थ सर्वज्ञ होता है। दास की प्रार्थना है कि प्रत्येक शब्द का कोई न कोई अर्थ तो बनता ही है। रही बात व्याकरण की। भाषा प्रथम बनी क्योंकि वेद वाणी प्रभु द्वारा कही है, तथा व्याकरण बाद में ऋषियों द्वारा बनाई है। यह त्रुटियुक्त हो सकती है। वेद के अनुवाद (भाषा-भाष्य) में व्याकरण व्यतय है अर्थात् असंगत तथा विरोध भाव है। क्योंकि वेद वाणी मंत्रों द्वारा पदों में है। जैसे पलवल शहर के आस-पास के व्यक्ति पलवल को परवर बोलते हैं। यदि कोई कहे कि पलवल को कैसे परवर सिद्ध कर दिया। यही कविर् को कबीर कैसे सिद्ध कर दिया कहना मात्र है। जैसे क्षेत्रीय भाषा में पलवल शहर को परवर कहते हैं। इसी प्रकार कविर् को कबीर बोलते हैं, प्रभु वही है। महर्षि दयानन्द जी ने ''सत्यार्थ प्रकाश'' समुल्लास 4 पृष्ठ 100 पर (दयानन्द मठ दीनानगर पंजाब से प्रकाशित पर) ''देवृकामा''का अर्थ देवर की कामना करने किया है देवृ को पूरा '' र '' लिख कर देवर किया है। कविर् को कविर फिर भाषा भिन्न कबीर लिखने व बोलने में कोई आपत्ति या व्याकरण की त्रुटि नहीं है। पूर्ण परमात्मा कविर्देव है, यह प्रमाण यजुर्वेद अध्याय 29 मंत्र 25 तथा सामवेद संख्या 1400 में भी है जो निम्न है :-

यजुर्वेद के अध्याय नं. 29 के श्लोक नं. 25 **(संत रामपाल दास द्वारा भाषा-भाष्य) :-**

समिद्धो▪अद्य मनुषो दुरोणे देवो देवान्यजसि जातवेदः।
आ च वह मित्रमहश्चिकित्वान्त्वं दूतः कविरसि प्रचेताः।।25।।

समिद्धः–अद्य–मनुषः–दुरोणे–देवः–देवान्–यज्–असि–जातवेदः– आ– च–वह–मित्रमहः–चिकित्वान्–त्वम्–दूतः–कविर्–असि–प्रचेताः

अनुवाद :– (अद्य) आज अर्थात् वर्तमान में (दुरोणे) शरीर रूप महल में दुराचार पूर्वक (मनुषः) झूठी

पूजा में लीन मननशील व्यक्तियों को (समिद्धः) लगाई हुई आग अर्थात् शास्त्र विधि रहित वर्तमान पूजा जो हानिकारक होती है, उसके स्थान पर (देवान्) देवताओं के (देवः) देवता (जातवेदः) पूर्ण परमात्मा सतपुरूष की वास्तविक (यज्) पूजा (असि) है। (आ) दयालु (मित्रमहः) जीव का वास्तविक साथी पूर्ण परमात्मा ही अपने (चिकित्वान्) स्वस्थ ज्ञान अर्थात यथार्थ भक्ति को (दूतः) संदेशवाहक रूप में (वह) लेकर आने वाला (च) तथा (प्रचेताः) बोध कराने वाला (त्वम्) आप (कविरसि) कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर हैं।

भावार्थ - जिस समय पूर्ण परमात्मा प्रकट होता है उस समय सर्व ऋषि व सन्त जन शास्त्र विधि त्याग कर मनमाना आचरण अर्थात् पूजा द्वारा सर्व भक्त समाज को मार्ग दर्शन कर रहे होते हैं। तब अपने तत्त्वज्ञान अर्थात् स्वस्थ ज्ञान का संदेशवाहक बन कर स्वयं ही कविर्देव अर्थात् कबीर प्रभु ही आता है।

संख्या नं. 1400 सामवेद उतार्चिक अध्याय नं. 12 खण्ड नं. 3 श्लोक नं. 5

(संत रामपाल दास द्वारा भाषा-भाष्य):-

भद्रा वस्त्रा समन्या३वसानो महान् कविर्निवचनानि शंसन्।
आ वच्यस्व चम्वोः पूयमानो विचक्षणो जागविर्देववीतौ।।5।।

भद्रा—वस्त्रा—समन्या—वसानः—महान्—कविर्—निवचनानि—शंसन्— आवच्यस्व—चम्वोः— पूयमानः—विचक्षणः— जागविः—देव—वीतौ

अनुवाद :— (सम् अन्या) अपने शरीर जैसा अन्य (भद्रा वस्त्रा) सुन्दर चोला यानि शरीर (वसानः) धारण करके (महान् कविर्) समर्थ कविर्देव यानि कबीर परमेश्वर (निवचनानि शंसन्) अपने मुख कमल से वाणी बोलकर यथार्थ अध्यात्म ज्ञान बताता है, यथार्थ वर्णन करता है। जिस कारण से (देव) परमेश्वर की (वितौ) भक्ति के लाभ को (जागविः) जागत यानि प्रकाशित करता है। (विचक्षणः) कथित विद्वान सत्य साधना के स्थान पर (आ वच्यस्व) अपने वचनों से (पूयमानः) आन—उपासना रूपी मवाद (चम्वोः) आचमन करा रखा होता है यानि गलत ज्ञान बता रखा होता है।

भावार्थ :- जैसे यजुर्वेद अध्याय 5 मंत्र एक में कहा है कि 'अग्नेः तनुः असि = परमेश्वर सशरीर है। विष्णवे त्वा सोमस्य तनुः असि = उस अमर प्रभु का पालन पोषण करने के लिए अन्य शरीर है जो अतिथि रूप में कुछ दिन संसार में आता है। तत्त्व ज्ञान से अज्ञान निंद्रा में सोए प्रभु प्रेमियों को जगाता है। वही प्रमाण इस मंत्र में है कि कुछ समय के लिए पूर्ण परमात्मा कविर्देव अर्थात् कबीर प्रभु अपना रूप बदलकर सामान्य व्यक्ति जैसा रूप बनाकर पथ्वी मण्डल पर प्रकट होता है तथा कविर्निवचनानि शंसन् अर्थात् कविर्वाणी बोलता है। जिसके माध्यम से तत्त्वज्ञान को जगाता है तथा उस समय महर्षि कहलाने वाले चतुर प्राणी मिथ्याज्ञान के आधार पर शास्त्र विधि अनुसार सत्य साधना रूपी अमत के स्थान पर शास्त्र विधि रहित पूजा रूपी मवाद को श्रद्धा के साथ आचमन अर्थात् पूजा करा रहे होते हैं। उस समय पूर्ण परमात्मा स्वयं प्रकट होकर तत्त्वज्ञान द्वारा शास्त्र विधि अनुसार साधना का ज्ञान प्रदान करता है।

पवित्र ऋग्वेद के निम्न मंत्रों में भी पहचान बताई है कि जब वह पूर्ण परमात्मा कुछ समय संसार में लीला करने आता है तो शिशु रूप धारण करता है। उस पूर्ण परमात्मा की परवरिश (अध्न्य धेनवः) कंवारी गाय द्वारा होती है। फिर लीलावत् बड़ा होता है तो अपने पाने व सतलोक जाने अर्थात् पूर्ण मोक्ष मार्ग का तत्त्वज्ञान (कविर्गिभिः) कबीर बाणी द्वारा कविताओं द्वारा बोलता है, जिस कारण से प्रसिद्ध कवि कहलाता है, परन्तु वह स्वयं कविर्देव पूर्ण परमात्मा ही होता है जो तीसरे मुक्ति धाम सतलोक में

रहता है।

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 1 मंत्र 9 तथा सूक्त 96 मंत्र 17 से 20 :-

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 1 मंत्र 9

अभी इमं अध्न्या उत श्रीणन्ति धेनवः शिशुम्। सोममिन्द्राय पातवे।।9।।

अभी इमम्–अध्न्या उत श्रीणन्ति धेनवः शिशुम् सोमम् इन्द्राय पातवे।

अनुवाद : –(उत) विशेष कर (इमम्) इस (शिशुम्) बालक रूप में प्रकट (सोमम्) पूर्ण परमात्मा अमर प्रभु की (इन्द्राय) सुख सुविधाओं द्वारा अर्थात् खाने–पीने द्वारा जो शरीर वद्धि को प्राप्त होता है उसे (पातवे) वद्धि के लिए (अभी) पूर्ण तरह (अध्न्या धेनवः) जो गाय, सांड द्वारा कभी भी परेशान न की गई हो अर्थात् कंवारी गाय द्वारा (श्रीणन्ति) परवरिश की जाती है।

भावार्थ - पूर्ण परमात्मा अमर पुरुष जब लीला करता हुआ बालक रूप धारण करके स्वयं प्रकट होता है उस समय कंवारी गाय अपने आप दूध देती है जिससे उस पूर्ण प्रभु की परवरिश होती है।

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 17

शिशुम् जज्ञानम् हर्य तम् मंजन्ति शुम्भन्ति वह्निमरूतः गणेन।

कविर्गीर्भि काव्येना कविर् सन्त् सोमः पवित्रम् अत्येति रेभन्।।17।।

अनुवाद – पूर्ण परमात्मा (हर्य शिशुम्) मनुष्य के बच्चे के रूप में (जज्ञानम्) जान बूझ कर प्रकट होता है तथा अपने तत्त्वज्ञान को (तम्) उस समय (मंजन्ति) निर्मलता के साथ (शुम्भन्ति) शुभ वाणी उच्चारण करता है। (वह्नि) प्रभु प्राप्ति की लगी विरह अग्नि वाले (मरुतः) वायु की तरह शीतल भक्त (गणेन) समूह के लिए (काव्येना) कविताओं द्वारा कवित्व से (पवित्रम् अत्येति) अत्यधिक निर्मलता के साथ (कविर गीर्भि) कविर वाणी अर्थात् कबीर वाणी द्वारा (रेभन्) ऊंचे स्वर से सम्बोधन करके बोलता है, (कविर् सन्त् सोमः) वह अमर पुरुष अर्थात् सतपुरुष ही संत अर्थात् ऋषि रूप में स्वयं कविर्देव ही होता है। परन्तु उस परमात्मा को न पहचान कर कवि कहने लग जाते हैं।

भावार्थ - वेद बोलने वाला ब्रह्म कह रहा है कि विलक्षण मनुष्य के बच्चे के रूप में प्रकट होकर पूर्ण परमात्मा कविर्देव अपने वास्तविक ज्ञानको अपनी कविर्गिभिः अर्थात् कबीर बाणी द्वारा निर्मल ज्ञान अपने हंसात्माओं अर्थात् पुण्यात्मा अनुयाइयों को कवि रूप में कविताओं, लोकोक्तियों के द्वारा सम्बोधन करके अर्थात् उच्चारण करके वर्णन करता है। वह स्वयं सतपुरुष कबीर ही होता है।

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 18

ऋषिमना य ऋषिकत् स्वर्षाः सहस्राणीथः पदवीः कवीनाम्।

ततीयम् धाम महिषः सिषा सन्त् सोमः विराजमानु राजति स्टुप्।।18।।

अनुवाद – वेद बोलने वाला ब्रह्म कह रहा है कि (य) जो पूर्ण परमात्मा विलक्षण बच्चे के रूप में आकर (कवीनाम्) प्रसिद्ध कवियों की (पदवीः) उपाधी प्राप्त करके अर्थात् एक संत या ऋषि की भूमिका करता है उस (ऋषिकत्) संत रूप में प्रकट हुए प्रभु द्वारा रची (सहस्राणीथः) हजारों वाणी (ऋषिमना) संत स्वभाव वाले व्यक्तियों अर्थात् भक्तों के लिए (स्वर्षाः) स्वर्ग तुल्य आनन्द दायक होती हैं। (सन्त् सोमः) ऋषि/संत रूप से प्रकट वह अमर पुरुष अर्थात् सतपुरुष ही होता है, वह पूर्ण प्रभु (ततीया) तीसरे (धाम) मुक्ति लोक अर्थात् सतलोक की (महिषः) सुदढ़ पथ्वी को (सिषा) स्थापित करके (अनु) पश्चात् मानव सदश संत रूप में (स्टुप्) गुबंद अर्थात् गुम्बज में ऊँचे टिले रूपी सिंहासन पर (विराजमनु राजति) उज्जवल स्थूल आकार में अर्थात् मानव सदश शरीर में विराजमान है।

भावार्थ - मंत्र 17 में कहा है कि कविर्देव शिशु रूप धारण कर लेता है। लीला करता हुआ बड़ा होता है। कविताओं द्वारा तत्त्वज्ञान वर्णन करने के कारण कवि की पदवी प्राप्त करता है अर्थात् उसे कवि कहने लग जाते हैं, वास्तव में वह पूर्ण परमात्मा कविर् (कबीर प्रभु) ही है। उसके द्वारा रची अमतवाणी कबीर वाणी (कविर्गीर्भिः अर्थात् कविर्वाणी) कही जाती है, जो भक्तों के लिए स्वर्ग तुल्य सुखदाई होती है। वही परमात्मा तीसरे मुक्ति धाम अर्थात् सतलोक की स्थापना करके एक गुबंद अर्थात् गुम्बज में सिंहासन पर तेजोमय मानव सदश शरीर में आकार में विराजमान है।

इस मंत्र में तीसरा धाम सतलोक को कहा है। जैसे एक ब्रह्म का लोक जो इक्कीस ब्रह्मण्ड का क्षेत्र है, दूसरा परब्रह्म का लोक जो सात शंख ब्रह्मण्ड का क्षेत्र है, तीसरा परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् पूर्ण ब्रह्म का ऋतधाम अर्थात् सतलोक है।

(फोटोकॉपी ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 96 मन्त्र 19)

चमूषच्छ्येनः शकुनो विभृत्वा गोविन्दुर्द्रप्स आयुधानि बिभ्रत्।
अपामूर्मिं सचमानः समुद्रं तुरीयं धाम महिषो विवक्ति ॥१९॥

पदार्थः—(अपामूर्मिम्) प्रकृति की सूक्ष्म से सूक्ष्म शक्तियों के साथ (सचमानः) जो संगत है और (समुद्रम्) "सम्यक् द्रवन्ति भूतानि यस्मात् स समुद्रः" जिससे सब भूतों की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय होता है। वह (तुरीयम्) चौथा (धाम) परमपद परमात्मा है। उसको (महिषः) मह्यते इति महिषः महिष इति महन्नामसु पठितम् नि० ३—१३। महापुरुष उक्त तुरीय परमात्मा का (विवक्ति) वर्णन करता है। वह परमात्मा (चमूसत्) जो प्रत्येक बल में स्थित है (श्येनः) सर्वोपरि प्रशंसनीय है और (शकुनः) सर्वशक्तिमान् है। (गोविन्दुः) यजमानों को तृप्त करके जो (द्रप्सः) शीघ्रगति वाला है (आयुधानि, बिभ्रत्) अनन्त शक्तियों को धारण करता हुआ इस सम्पूर्ण संसार का उत्पादक है ॥१९॥

विवेचन :- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मन्त्र 19 का भी आर्य समाज के विद्वानों ने अनुवाद किया है। इसमें भी बहुत सारी गलतियाँ है। पुस्तक विस्तार के कारण केवल अपने मतलब की जानकारी प्राप्त करते हैं।

इस मन्त्र में चौथे धाम का वर्णन है जो आप जी सष्टि रचना में पढ़ेंगे, उससे पूर्ण जानकारी होगी पढ़ें इसी पुस्तक के पष्ठ 603 पर।

परमात्मा ने ऊपर के चार लोक अजर-अमर रचे हैं। 1. अनामी लोक जो सबसे ऊपर है। 2. अगम लोक 3. अलख लोक 4. सत्यलोक।

हम पथ्वी लोक पर हैं, यहाँ से ऊपर के लोकों की गिनती करेंगे तो 1. सत्यलोक 2. अलख लोक 3. अगम लोक तथा 4. अनामी लोक गिना जाता है। उस चौथे धाम में बैठकर परमात्मा ने सर्व ब्रह्माण्डों व लोकों की रचना की। शेष रचना सत्यलोक में बैठकर की थी। आर्य समाज के अनुवादकों ने तुरिया परमात्मा अर्थात् चौथे परमात्मा का वर्णन किया है। यह चौथा धाम है। उसमें मूल पाठ मन्त्र 19 का भावार्थ है कि तत्त्वदर्शी सन्त चौथे धाम तथा चौथे परमात्मा का (विवक्ति) भिन्न-भिन्न वर्णन करता है। पाठक जन कपया पढ़ें सष्टि रचना इसी पुस्तक के पष्ठ 603 पर जिससे आप जी को ज्ञान होगा कि लेखक (संत रामपाल दास) ही वह तत्त्वदर्शी संत है जो तत्त्वज्ञान से परिचित है।

(फोटोकॉपी ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 96 मन्त्र 20)

मर्यो न शुभ्रस्तन्वं मृजानोऽत्यो न सृत्वा सनये धनानाम् ।
वृषेव यूथा परि कोशमर्षन्कनिक्रदच्चम्वोऽरा विवेश ॥२०॥

पदार्थः—वह परमात्मा (**यूथा, वृषेव**) जिस प्रकार एक संघ को उसका सेनापति प्राप्त होता है, इसी प्रकार (**कोशम्**) इस ब्रह्माण्डरूपी कोश को (**अर्षन्**) प्राप्त होकर (**कनिक्रदत्**) उच्च स्वर से गर्जता हुआ (**चम्वोः**) इस ब्रह्माण्ड रूपी विस्तृत प्रकृति-खण्ड में (**पर्याविवेश**) भली-भांति प्रविष्ट होता है और (**न**) जैसे कि (**मर्यः**) मनुष्य (**शुभ्रस्तन्वं, मृजानः**) शुभ्र शरीर को धारण करता हुआ (**अत्योन**) अत्यन्त गतिशील पदार्थों के समान (**सनये**) प्राप्ति के लिए (**सृत्वा**) गतिशील होता हुआ (**धनानाम्**) धनों के लिए कटिबद्ध होता है; इसी प्रकार प्रकृति-रूपी ऐश्वर्य को धारण करने के लिए परमात्मा सदैव उद्यत है ॥२०॥

विवेचन :- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मन्त्र 20 का यथार्थ ज्ञान जानते हैं:-

इस मन्त्र का अनुवाद महर्षि दयानन्द के चेलों द्वारा किया गया है, इनका दृष्टिकोण यह रहा है कि परमात्मा निराकार है क्योंकि महर्षि दयानन्द जी ने यह बात दृढ़ की है कि परमात्मा निराकार है। इसलिए अनुवादक ने सीधे मन्त्र का अनुवाद घुमा-फिराकर किया है। जैसे मूल पाठ में लिखा है :-

मर्य न शभ्रः तन्वा मृजानः अत्यः न सृत्वा सनये धनानाम्।
वृषेव यूथा परि कोशम अर्षन् कनिक्रदत् चम्वोः आविवेश।।

अनुवाद :- (न) जैसे (मर्यः) मनुष्य सुन्दर वस्त्र धारण करता है, ऐसे परमात्मा (शुभ्रः तन्व) सुन्दर शरीर (मृजानः) धारण करके (अत्यः) अत्यन्त गति से चलता हुआ (सनये धनानाम्) भक्ति धन के धनियों अर्थात् पुण्यात्माओं को (सनये) प्राप्ति के लिए आता है। (यूथा वृषेव) जैसे एक समुदाय को उसका सेनापति प्राप्त होता है, ऐसे वह परमात्मा संत व ऋषि रूप में प्रकट होता है तो उसके बहुत सँख्या में अनुयाई बन जाते हैं और परमात्मा उनका गुरू रूप में मुखिया होता है। वह परमात्मा (कोशम्) अर्थात् (परि कोशम्) प्रथम ब्रह्माण्ड में (अर्षन्) प्राप्त होकर अर्थात् आकर (कनिक्रदत्) ऊँचे स्वर में सत्यज्ञान उच्चारण करता हुआ (चम्वोः) पृथ्वी खण्ड में (अविवेश) प्रविष्ट होता है।

भावार्थ :- जैसे पूर्व में वेद मन्त्रों में कहा है कि परमात्मा ऊपर के लोक में रहता है, वहाँ से गति करके पृथ्वी पर आता है, अपने रूप को अर्थात् शरीर के तेज को सरल करके आता है। इस ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मन्त्र 20 में उसी की पुष्टि की है। कहा है कि परमात्मा ऐसे अन्य शरीर धारण करके पृथ्वी पर आता है जैसे मनुष्य वस्त्र धारण करता है और (धनानाम्) दृढ़ भक्तों (अच्छी पुण्यात्माओं) को प्राप्त होता है, उनको वाणी उच्चारण करके तत्त्वज्ञान सुनाता है।

(फोटोकॉपी ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 82 मन्त्र 1-2)

असावि सोमो अरुषो वृषा हरी राजेव दस्मो अभि गा अचिक्रदत् ।
पुनानो वारं पर्येत्यव्ययं श्येनो न योनिं घृतवन्तमासदम् ॥१॥

पदार्थः—(**सोमः**) जो सर्वोत्पादक प्रभु(**अरुषः**) प्रकाशस्वरूप (**वृषा**) सद्गुणों की वृष्टि करने वाला (**हरिः**) पापों के हरण करने वाला है, वह (**राजेव**) राजा के समान (**दस्मः**) दर्शनीय है। और वह (**गाः**) पृथिव्यादि लोक-लोकान्तरों के चारों ओर (**अभि अचिक्रदत्**) शब्दायमान हो रहा है। वह (**वारं**) वर्णीय पुरुष को जो (**अव्ययं**) दृढ़भक्त है उसको (**पुनानः**) पवित्र करता हुआ (**पर्य्येति**) प्राप्त होता है। (**न**) जिस प्रकार (**श्येनः**) विद्युत् (**घृतवन्तं**) स्नेहवाले (**आसदं**) स्थानों को (**योनिं**) आधार बनाकर प्राप्त होता है। इसी प्रकार उक्त गुण वाले परमात्मा ने (**असावि**) इस ब्रह्माण्ड को उत्पन्न किया ॥१॥

कविर्वेधस्या पर्येषि माहिनमत्यो न मृष्टो अभि वाजमर्षसि ।
अपसेधन्दुरिता सोम मृळय घृतं वसानः परि यासि निर्णिजम् ॥२॥

पदार्थः—हे परमात्मन् ! (**वेधस्या**) उपदेश करने की इच्छा से आप (**माहिनं**) महापुरुषों को (**पर्येषि**) प्राप्त होते हो। और आप (**अत्यः**) अत्यन्त गतिशील पदार्थ के (**न**) समान (**अभिवाजं**) हमारे आध्यात्मिक यज्ञ को (**अभ्यर्षसि**) प्राप्त होते हैं। आप (**कविः**) सर्वज्ञ हैं (**मृष्टः**) शुद्ध स्वरूप हैं (**दुरिता**) हमारे पापों को (**अपसेधन्**) दूर करके (**सोम**) हे सोम ! (**मृळय**) आप हमको सुख दें। और (**घृतं वसानः**) प्रेम-भाव को उत्पन्न करते हुए (**निर्निजं**) पवित्रता को (**परियासि**) उत्पन्न करें ॥२॥

विवेचन :- ऊपर ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 82 मन्त्र 1-2 की फोटोकापी हैं, यह अनुवाद महर्षि दयानन्द जी के दिशा-निर्देश से उन्हीं के चेलों ने किया है और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली से प्रकाशित है।

इनमें स्पष्ट है कि :- मन्त्र 1 में कहा है ''सर्व की उत्पत्ति करने वाला परमात्मा तेजोमय शरीर युक्त है, पापों को नाश करने वाला और सुखों की वर्षा करने वाला अर्थात् सुखों की झड़ी लगाने वाला है, वह ऊपर सत्यलोक में सिंहासन पर बैठा है जो देखने में राजा के समान है।

यही प्रमाण सूक्ष्मवेद में है कि :-

अर्श कुर्श पर सफेद गुमट है, जहाँ परमेश्वर का डेरा। श्वेत छत्र सिर मुकुट विराजे, देखत न उस चेहरे नूं।।

यही प्रमाण बाईबल ग्रन्थ तथा कुर्आन् शरीफ में है कि परमात्मा ने छः दिन में सष्टि रची और सातवें दिन ऊपर आकाश में तख्त अर्थात् सिंहासन पर जा विराजा। (बाईबल के उत्पत्ति ग्रन्थ 2/26-30 तथा कुर्आन् शरीफ की सुर्त ''फुर्कानि 25 आयत 52 से 59 में है।)

वह परमात्मा अपने अमर धाम से चलकर पथ्वी पर शब्द वाणी से ज्ञान सुनाता है। वह वर्णीय अर्थात् आदरणीय श्रेष्ठ व्यक्तियों को प्राप्त होता है, उनको मिलता है। {जैसे 1. सन्त धर्मदास जी बांधवगढ(मध्य प्रदेश वाले को मिले) 2. सन्त मलूक दास जी को मिले, 3. सन्त दादू दास जी को आमेर (राजस्थान) में मिले 4. सन्त नानक देव जी को मिले 5. सन्त गरीब दास जी गाँव छुड़ानी जिला झज्जर हरियाणा वाले को मिले 6. सन्त घीसा दास जी गाँव खेखड़ा जिला बागपत (उत्तर प्रदेश) वाले को मिले 7. सन्त जम्भेश्वर जी (बिश्नोई धर्म के प्रवर्तक) को गाँव समराथल राजस्थान वाले को मिले}

वह परमात्मा अच्छी आत्माओं को मिलते हैं। जो परमात्मा के दढ़ भक्त होते हैं, उन पर परमात्मा का विशेष आकर्षण होता है। उदाहरण भी बताया है कि जैसे विद्युत अर्थात् आकाशीय बिजली स्नेह वाले स्थानों को आधार बनाकर गिरती है। जैसे कांशी धातु पर बिजली गिरती है, पहले कांशी धातु के कटोरे, गिलास-थाली, बेले आदि-आदि होते थे। वर्षा के समय तुरन्त उठाकर घर के अन्दर रखा करते थे। वद्ध कहते थे कि कांशी के बर्तन पर बिजली अमूमन गिरती है, इसी प्रकार परमात्मा अपने प्रिय भक्तों पर आकर्षित होकर मिलते हैं।

मन्त्र नं. 2 में तो यह भी स्पष्ट किया है कि परमात्मा उन अच्छी आत्माओं को उपदेश करने की इच्छा से स्वयं महापुरूषों को मिलते हैं। उपदेश का भावार्थ है कि परमात्मा तत्त्वज्ञान बताकर उनको दीक्षा भी देते हैं। उनके सतगुरू भी स्वयं परमात्मा होते हैं। यह भी स्पष्ट किया है कि परमात्मा अत्यन्त गतिशील पदार्थ अर्थात् बिजली के समान तीव्रगामी होकर हमारे धार्मिक अनुष्ठानों में आप पहुँचते हैं। आप जी ने पीछे पढ़ा कि सन्त धर्मदास को परमात्मा ने यही कहा था कि मैं वहाँ पर अवश्य जाता हूँ जहाँ धार्मिक अनुष्ठान होते हैं क्योंकि मेरी अनुस्थिति में काल कुछ भी उपद्रव कर देता है। जिससे साधनों की आस्था परमात्मा से छूट जाती है। मेरे रहते वह ऐसी गड़बड़ नहीं कर सकता। इसीलिए गीता अध्याय 3 श्लोक 15 में कहा है कि वह अविनाशी परमात्मा जिसने ब्रह्म को भी उत्पन्न किया, सदा ही यज्ञों में प्रतिष्ठित है अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों में उसी को ईष्ट रूप में मानकर आरती स्तुति करनी चाहिए।

इस ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 82 मन्त्र 2 में यह भी स्पष्ट किया है कि आप (कविर्वेधस्य) कविर्देव है जो सर्व को उपदेश देने की इच्छा से आते हो, आप पवित्र परमात्मा हैं। हमारे पापों को छुड़वाकर अर्थात् नाश करके हे अमर परमात्मा! आप हम को सुःख दें और (द्युतम् वसानः निर्निजम् परियसि) हम आप की सन्तान हैं। हमारे प्रति वह वात्सल्य वाला प्रेम भाव उत्पन्न करते हुए उसी (निर्निजम्) सुन्दर रूप को (परियासि) उत्पन्न करें अर्थात् हमारे को अपने बच्चे जानकर जैसे पहले और जब चाहें तब आप अपनी प्यारी आत्माओं को प्रकट होकर मिलते हैं, उसी तरह हमें भी दर्शन दें।

(फोटोकॉपी ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 86 मन्त्र 26-27)

इन्दुः पुनानो अति गाहते मृधो विश्वानि कृण्वन्त्सुपथानि यज्यवे ।
गाः कृण्वानो निर्णिजं हर्यतः कविरत्यो न क्रीळन्परि वारमर्षति ॥२६॥

पदार्थः—(**यज्यवे**) यज्ञ करने वाले यजमानों के लिये परमात्मा (**विश्वानि सुपथानि**) सब रास्तों को (**कृण्वन्**) सुगम करता हुआ (**मृधः**) उनके विघ्नों को (**अतिगाहते**) मर्द्दन करता है। और (**पुनानः**) उनको पवित्र करता हुआ और (**निर्णिजं**) अपने रूप को (**गाः कृण्वानः**) सरल करता हुआ (**हर्य्यतः**) वह कान्तिमय परमात्मा (**कविः**) सर्वज्ञ (**अत्यो न**) विद्युत् के समान (**क्रीळन्**) क्रीड़ा करता हुआ (**वारं**)वरणीय पुरुष को (**पर्य्यर्षति**) प्राप्त होता है ॥२६॥

विवेचन :- यह फोटोकापी ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 86 मन्त्र 26 की है जो आर्यसमाज के आचार्यों व महर्षि दयानन्द के चेलों द्वारा अनुवादित है जिसमें स्पष्ट है कि यज्ञ करने वाले अर्थात् धार्मिक अनुष्ठान करने वाले यजमानों अर्थात् भक्तों के लिए परमात्मा, सब रास्तों को सुगम करता हुआ अर्थात् जीवन रूपी सफर के मार्ग को दुःखों रहित करके सुगम बनाता हुआ। उनके विघ्नों अर्थात् संकटों का मर्दन करता है अर्थात् संकटों को समाप्त करता है। भक्तों को पवित्र अर्थात् पाप रहित, विकार रहित करता है। जैसा की अगले मन्त्र 27 में कहा है कि ''जो परमात्मा द्यूलोक अर्थात् सत्यलोक के तीसरे पृष्ठ पर विराजमान है, वहाँ पर परमात्मा के शरीर का प्रकाश बहुत अधिक है।'' उदाहरण के लिए परमात्मा के एक रोम (शरीर के बाल) का प्रकाश करोड़ सूर्य तथा इतने ही चन्द्रमाओं के मिले-जुले प्रकाश से भी अधिक है। यदि वह परमात्मा उसी प्रकाश युक्त शरीर से पृथ्वी पर प्रकट हो जाए तो हमारी चर्म दृष्टि उन्हें देख नहीं सकती। जैसे उल्लु पक्षी दिन में सूर्य के प्रकाश के कारण कुछ भी नहीं देख पाता है। यही दशा मनुष्यों की हो जाए। इसलिए वह परमात्मा अपने रूप अर्थात् शरीर के प्रकाश को सरल करता हुआ उस स्थान से जहाँ परमात्मा ऊपर रहता है, वहाँ से गति करके बिजली के समान क्रीड़ा अर्थात् लीला करता हुआ चलकर आता है, श्रेष्ठ पुरूषों को मिलता है। यह भी स्पष्ट है कि आप कविः अर्थात् कविर्देव हैं। हम उन्हें कबीर साहेब कहते हैं।

असश्चतः शतधारा अभिश्रियो हरिं नवन्तेऽव ता उदन्युवः ।
क्षिपो मृजन्ति परि गोभिरावृतं तृतीये पृष्ठे अधि रोचने दिवः ॥२७॥

पदार्थः—(**उदन्युवः**) प्रेम की (**ताः**) वे (**शतधाराः**) सैंकड़ों धाराए (**असश्चतः**) जो नानारूपों में (**अभिश्रियः**) स्थिति को लाभ कर रही हैं। वे (**हरिं**) परमात्मा को (**अवनवन्ते**) प्राप्त होती हैं। (**गोभिरावृतं**) प्रकाशपुञ्ज परमात्मा को (**क्षिपः**) बुद्धिवृत्तियां (**मृजन्ति**) विषय करती हैं। जो परमात्मा (**दिवस्तृतीये पृष्ठे**) द्युलोक के तीसरे पृष्ठ पर विराजमान है और (**रोचने**) प्रकाशस्वरूप है उसको बुद्धिवृत्तियाँ प्रकाशित करती हैं ॥२७॥

विवेचन :- यह फोटोकापी ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 86 के मन्त्र 27 की है। इसमें स्पष्ट है कि

''परमात्मा द्यूलोक अर्थात् अमर लोक के तीसरे पष्ठ अर्थात् भाग पर विराजमान है। सत्यलोक अर्थात् शाश्वत् स्थान (गीता अध्याय 18 श्लोक 62) में तीन भाग है। एक भाग में वन-पहाड़-झरने, बाग-बगीचे आदि हैं। यह बाह्य भाग है अर्थात् बाहरी भाग है। (जैसे भारत की राजधानी दिल्ली भी तीन भागों में बँटी है। बाहरी दिल्ली जिसमें गाँव खेत-खलिहान और नहरें हैं, दूसरा बाजार बना है। तीसरा संसद भवन तथा कार्यालय हैं।)

इसके पश्चात् द्यूलोक में बस्तियाँ हैं। सपरिवार मोक्ष प्राप्त हंसात्माऐं रहती हैं। (पथ्वी पर जैसे भक्त को भक्तात्मा कहते हैं, इसी प्रकार सत्यलोक में हंसात्मा कहलाते हैं।) (3) तीसरे भाग में सर्वोपरि परमात्मा का सिंहासन है। उसके आस-पास केवल नर आत्माऐं रहती हैं, वहाँ स्त्री-पुरूष का जोड़ा नहीं है। वे यदि अपना परिवार चाहते हैं तो शब्द (वचन) से केवल पुत्र उत्पन्न कर लेते हैं। इस प्रकार शाश्वत् स्थान अर्थात् सत्यलोक तीन भागों में परमात्मा ने बाँट रखा है। वहाँ यानि सत्यलोक में प्रत्येक स्थान पर रहने वालों में वद्धावस्था नहीं है, वहाँ मत्यु नहीं है। इसीलिए गीता अध्याय 7 श्लोक 29 में कहा है कि जो जरा अर्थात् वद्ध अवस्था तथा मरण अर्थात् मत्यु से छूटने का प्रयत्न करते हैं, वे तत् ब्रह्म अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म को जानते हैं। सत्यलोक में सत्यपुरूष रहता है, वहाँ पर जरा-मरण नहीं है, बच्चे युवा होकर सदा युवा रहते हैं।

(फोटोकॉपी ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 54 मन्त्र 3)

अयं विश्वानि तिष्ठति पुनानो भुवनोपरि।
सोमो देवो न सूर्यः ॥३॥

पदार्थः—(सूर्यः, न) सूर्य के समान जगत्प्रेरक (अयम्) यह परमात्मा (सोमः, देवः) सौम्य स्वभाव वाला और जगत्प्रकाशक है और (विश्वानि, पुनानः) सब लोकों को पवित्र करता हुआ (भुवनोपरि, तिष्ठति) सम्पूर्ण ब्रह्माण्डों के ऊर्ध्व भाग में भी वर्तमान है ॥३॥

विवेचनः- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 54 मन्त्र 3 की फोटोकापी में आप देखें, इसका अनुवाद आर्यसमाज के विद्वानों ने किया है। उनके अनुवाद में भी स्पष्ट है कि वह परमात्मा (भूवनोपरि) सम्पूर्ण ब्रह्माण्डों के ऊर्ध्व अर्थात् ऊपर (तिष्ठति) विराजमान है, ऊपर बैठा हैः-

इसका यथार्थ अनुवाद इस प्रकार है :-

(अयं) यह (सोमः देव) अमर परमेश्वर (सूर्यः) सूर्य के (न) समान (विश्वानि) सर्व को (पुनानः) पवित्र करता हुआ (भूवनोपरि) सर्व ब्रह्माण्डों के ऊर्ध्व अर्थात् ऊपर (तिष्ठति) बैठा है।

भावार्थ :- जैसे सूर्य ऊपर है और अपना प्रकाश तथा उष्णता से सर्व को लाभ दे रहा है। इसी प्रकार यह अमर परमेश्वर जिसका ऊपर के मन्त्रों में वर्णन किया है। सर्व ब्रह्माण्डों के ऊपर बैठकर अपनी निराकार शक्ति से सर्व प्राणियों को लाभ दे रहा है तथा सर्व ब्रह्माण्डों का संचालन कर रहा है।

(फोटोकॉपी ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 20 मन्त्र 1)

प्र कविर्देववीतयेऽव्यो वारेभिरर्षति ।
साह्वान्विश्वा अभि स्पृधः ॥१॥

पदार्थः—वह परमात्मा (कविः) मेधावी है और (अव्यः) सबका रक्षक है (देववीतये) विद्वानों की तृप्ति के लिये (अर्षति) ज्ञान देता है (साह्वान्) सहनशील है (विश्वाः, स्पृधः) सम्पूर्ण दुष्टों को संग्रामों में (अभि) तिरस्कृत करता है ॥१॥

विवेचन :- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 20 मन्त्र 1 का अनुवाद भी आर्यसमाज के विद्वानों ने किया है। इसका अनुवाद ठीक कम गलत अधिक है। इसमें मूल पाठ में लिखा है:-

'प्र कविर्देव वीतये अव्यः वारेभिः अर्षति साह्वान् बिश्वाः अभि स्पंर्धः

सरलार्थ :- (प्र) वेद ज्ञान दाता से जो दूसरा (कविर्देव) कविर्देव कबीर परमेश्वर है, वह विद्वानों अर्थात् जिज्ञासुओं को, (वीतये) ज्ञान धन की तप्ति के लिए (वारेभिः) श्रेष्ठ आत्माओं को (अर्षति) ज्ञान देता है। वह (अव्यः) अविनाशी है, रक्षक है, (साह्वान्) सहनशील (विश्वाः) तत्त्वज्ञान हीन सर्व दुष्टों को (स्पंधः) अध्यात्म ज्ञान की कपा स्पर्धा अर्थात् ज्ञान गोष्टी रूपी वाक् युद्ध में (अभि) पूर्ण रूप से तिरस्कत करता है, उनको फिट्टे मुँह कर देता है।

विशेष :- (क) इस मन्त्र के अनुवाद में आप फोटोकॉपी में देखेंगे तो पता चलेगा कि कई शब्दों के अर्थ आर्य विद्वानों ने छोड़ रखे हैं जैसे = ''प्र'' ''वारेभिः'' जिस कारण से वेदों का यथार्थ भाव सामने नहीं आ सका।

(ख) मेरे अनुवाद से स्पष्ट है कि वह परमात्मा अच्छी आत्माओं (दढ़ भक्तों) को ज्ञान देता है, उसका नाम भी लिखा है :- ''कविर्देव''। हम कबीर परमेश्वर कहते हैं।

(प्रमाण ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 95 मन्त्र 2)

हरिः सृजानः पथ्यामृतस्येयर्ति वाचमरितेव नावम् ।
देवो देवानां गुह्यानि नामाविष्कृणोति बर्हिषि प्रवाचे ॥२॥

पदार्थः—(हरिः) वह पूर्वोक्त परमात्मा (सृजानः) साक्षात्कार को प्राप्त हुआ (ऋतस्य पथ्यां) वाक् द्वारा मुक्ति मार्ग की (इयर्ति) प्रेरणा करता है। (अरितेव नावम्) जैसा कि नौका के पार लगाने के समय में नाविक प्रेरणा करता है और (देवानां देवः) सब देवों का देव (गुह्यानि) गुप्त (नामाविष्कृणोति) संज्ञाओं को प्रकट करता है (बर्हिषि प्रवाचे) वाणीरूप यज्ञ के लिए ॥२॥

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 95 मन्त्र 2 का अनुवाद महर्षि दयानन्द के चेलों ने किया है जो बहुत ठीक किया है।

इसका भावार्थ है कि पूर्वोक्त परमात्मा अर्थात् जिस परमात्मा के विषय में पहले वाले मन्त्रों में ऊपर कहा गया है, वह (संजानः) अपना शरीर धारण करके (ऋतस्य पथ्यां) सत्यभक्ति का मार्ग अर्थात् यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान अपनी अमंतमयी वाक् अर्थात् वाणी द्वारा मुक्ति मार्ग की प्रेरणा करता है।

वह मन्त्र ऐसा है जैसे (अरितेव नावम्) नाविक नौका में बैठाकर पार कर देता है, ऐसे ही परमात्मा सत्यभक्ति मार्ग रूपी नौका के द्वारा साधक को संसार रूपी दरिया के पार करता है। वह (देवानाम् देवः) सब देवों का देव अर्थात् सब प्रभुओं का प्रभु परमेश्वर (बर्हिषि प्रवाचे) वाणी रूपी ज्ञान यज्ञ के लिए (गुह्यानि) गुप्त (नामा आविष्कणोति) नामों का आविष्कार करता है अर्थात् जैसे गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में ''ॐ तत् सत्'' में तत् तथा सत् ये गुप्त मन्त्र हैं जो उसी परमेश्वर ने मुझे (संत रामपाल दास) को बताए हैं। उनसे ही पूर्ण मोक्ष सम्भव है।

सूक्ष्म वेद में परमेश्वर ने कहा है कि :-

''सोहं'' शब्द हम जग में लाए, सारशब्द हम गुप्त छिपाए।

भावार्थ :- परमेश्वर ने स्वयं ''सोहं'' शब्द भक्ति के लिए बताया है। यह सोहं मन्त्र किसी भी प्राचीन ग्रन्थ (वेद, गीता, कुर्आन, पुराण तथा बाईबल) में नहीं है। फिर सूक्ष्म वेद में कहा है किः-

सोहं ऊपर और है, सत्य सुकत एक नाम।
सब हंसो का जहाँ बास है, बस्ती है बिन ठाम।।

भावार्थ :- ''सोहं'' नाम तो परमात्मा ने प्रकट कर दिया, आविष्कार कर दिया परन्तु सार शब्द को गुप्त रखा था। अब मुझे (लेखक संत रामपाल को) बताया है जो साधकों को दीक्षा के समय बताया जाता है। इसका गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में कहे ''ॐ तत् सत्'' से सम्बन्ध है।

(प्रमाण ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 94 मन्त्र 1)

अधि यदस्मिन्वाजिनीव शुभः स्पर्धन्ते धियः सूर्ये न विशः।
अपो वृणानः पवते कवीयन्व्रजं न पशुवर्धनाय मन्म ।।१।।

पदार्थः—(सूर्य्ये) सूर्य के विषय में (न) जैसे (विशः) रश्मियां प्रकाशित करती हैं। उसी प्रकार (धियः) मनुष्यों की बुद्धियें (स्पर्धन्ते) अपनी-अपनी उत्कट शक्ति से विषय करती हैं। (अस्मिन् अधि) जिस परमात्मा में (वाजिनीव) सर्वोपरि बलों के समान (शुभः) शुभ बल है वह परमात्मा (अपोवृणानः) कर्मों का अध्यक्ष होता हुआ (पवते) सबको पवित्र करता हैं। (कवीयन्) कवियों की तरह आचरण करता हुआ (पशुवर्धनाय) सर्वद्रष्टृत्व पद के लिए (व्रजं, न) इन्द्रियों के अधिकरण मन के समान 'व्रजन्ति इन्द्रियाणि यस्मिन् तद्व्रजम्' (मन्म) जो अधिकरणरूप है वही श्रेय का धाम है ।।१।।

विवेचन :- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 94 मन्त्र 1 का अनुवाद भी आर्यसमाज के विद्वानों द्वारा किया गया है।

विवेचन :- पुस्तक विस्तार को ध्यान में रखते हुए उन्हीं के अनुवाद से अपना मत सिद्ध करते हैं। जैसे पूर्व में लिखे वेदमन्त्रों में बताया गया है कि परमात्मा अपने मुख कमल से वाणी उच्चारण करके तत्त्वज्ञान बोलता है, लोकोक्तियों के माध्यम से, कवित्व से दोहों, शब्दों, साखियों, चौपाईयों के द्वारा वाणी बोलने से प्रसिद्ध कवियों में से भी एक कवि की उपाधि प्राप्त करता है। उसका नाम कविर्देव अर्थात् कबीर साहेब है।

इस ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 94 मन्त्र 1 में भी यही कहा है कि जो सर्वशक्तिमान परमेश्वर है, वह (कवियन् व्रजम् न) कवियों की तरह आचरण करता हुआ पथ्वी पर विचरण करता है।

''त्रेतायुग में कबीर परमेश्वर जी का प्रकट होना''

प्रश्न :- धर्मदास जी ने पूछा हे बन्दी छोड़ आप त्रेता युग में मुनिन्द्र ऋषि के नाम से अवतरित हुए थे। क्या उस युग में किन-2 पुण्यात्माओं ने आप की शरण ग्रहण की?

उत्तरः- हे धर्मदास! त्रेता युग में मैं मुनिन्द्र ऋषि के नाम से प्रकट हुआ। त्रेता युग में भी मैं एक शिशु रूप धारण करके कमल के फूल पर प्रकट हुआ था। एक वेदविज्ञ नामक ऋषि तथा सूर्या नामक उसकी साधवी पत्नी थी। वे प्रतिदिन सरोवर पर स्नान करने जाते थे। उनकी आयु आधी से अधिक हो चुकी थी। वह निःसन्तान दम्पति मुझे अपने साथ ले गए तथा सन्तान रूप में पालन किया। प्रत्येक युग में जिस समय मैं एक पूरे जीवन रहने की लीला करने आता हूँ। मेरी परवरिश कंवारी गायों से होती है। बाल्यकाल से ही मैं तत्त्वज्ञान की वाणी उच्चारण करता हूँ। जिस कारण से मुझे प्रसिद्ध कवि की उपाधि प्राप्त होती है। परन्तु ज्ञानहीन ऋषियों द्वारा भ्रमित जनता मुझे न पहचान कर एक कवि की उपाधि प्रदान कर देती है। केवल मुझ से परिचित श्रद्धालु ही मुझे समझ पाते हैं तथा वे अपना कल्याण करवा लेते हैं। त्रेता युग में कविर्देव का ऋषि मुनिन्द्र नाम से प्राकाट्य'' लेखक के शब्दों में निम्न पढ़ें :-

"त्रेतायुग में कविर्देव (कबीर परमेश्वर) का मुनिन्द्र नाम से प्राकाट्य"

"नल तथा नील को शरण में लेना"

त्रेतायुग में स्वयंभु कविर्देव(कबीर परमेश्वर) रूपान्तर करके मुनिन्द्र ऋषि के नाम से आए हुए थे। एक दिन अनल अर्थात् नल तथा अनील अर्थात् नील ने मुनिन्द्र साहेब का सत्संग सुना। दोनों भक्त आपस में मौसी के पुत्र थे। माता-पिता का देहान्त हो चुका था। नल तथा नील दोनों शारीरिक व मानसिक रोग से अत्यधिक पीड़ित थे। सर्व ऋषियों व सन्तों से कष्ट निवारण की प्रार्थना कर चुके थे। सर्व ऋषियों व सन्तों ने बताया था कि यह आप का प्रारब्ध का पाप कर्म का दण्ड है, यह आपको भोगना ही पड़ेगा। इसका कोई समाधान नहीं है। दोनों दोस्त जीवन से निराश होकर मत्यु की प्रतीक्षा कर रहे थे।

सत्संग के उपरांत ज्यों ही दोनों ने परमेश्वर कविर्देव (कबीर परमेश्वर) उर्फ मुनिन्द्र ऋषि जी के चरण छुए तथा परमेश्वर मुनिन्द्र जी ने सिर पर हाथ रखा तो दोनों का असाध्य रोग छू मन्त्र हो गया अर्थात् दोनों नल तथा नील स्वस्थ हो गए। इस अद्भुत चमत्कार को देख कर प्रभु के चरणों में गिर कर घण्टों रोते रहे तथा कहा आज हमें प्रभु मिल गया। जिसकी हमें वर्षों से खोज थी उससे प्रभावित होकर ऋषि मुनिन्द्र जी से नाम (दीक्षा) ले लिया मुनिन्द्र साहेब जी के साथ ही सेवा में रहने लगे। पहले ऋषियों व संतों का समागम पानी की व्यवस्था देख कर नदी के किनारे होता था। नल और नील दोनों बहुत प्रभु प्रेमी तथा भोली आत्माएँ थी। परमात्मा में श्रद्धा बहुत हो गई थी। सेवा बहुत किया करते थे। समागमों में रोगी व वद्ध व विकलांग भक्तजन आते तो उनके कपड़े धोते तथा बर्तन साफ करते। उनके लोटे और गिलास साफ कर देते थे। परंतु थे भोले से दिमाग के। कपड़े धोने लग जाते तो सत्संग में जो प्रभु की कथा सुनी होती उसकी चर्चा करने लग जाते। दोनों भक्त प्रभु चर्चा में बहुत मस्त हो जाते और वस्तुएँ दरिया के जल में कब डूब जाती उनको पता भी नहीं चलता। किसी की चार वस्तु ले कर जाते तो दो वस्तु वापिस ला कर देते थे। भक्तजन कहते कि भाई आप सेवा तो बहुत करते हो, परंतु हमारा तो बहुत काम बिगाड़ देते हो। अब ये खोई हुई वस्तुएँ हम कहाँ से ले कर आयें? आप हमारी सेवा ही करनी छोड़ दो। हम अपनी सेवा आप ही कर लेंगे। नल तथा नील रोने लग जाते थे कि हमारी सेवा न

छीनों। अब की बार नहीं खोएँगे। परन्तु फिर वही काम करते। प्रभु की चर्चा में लग जाते और वस्तुएँ डूब जाती। भक्तजनों ने मुनिन्द्र जी से प्रार्थना की कि कृप्या आप नल तथा नील को समझाओ। ये न तो मानते हैं और कहते हैं तो रोने लग जाते हैं। हमारी तो आधी भी वस्तुएँ वापिस नहीं लाते। बर्तन व वस्त्र धोते समय वे दोनों भगवान की चर्चा में मस्त हो जाते हैं और वस्तुएँ डूब जाती हैं। मुनिन्द्र साहेब ने एक दो बार नल-नील को समझाया। वे रोने लग जाते थे कि साहेब हमारी ये सेवा न छीनों। सतगुरु मुनिन्द्र साहेब ने आशीर्वाद देते हुए कहा बेटा नल तथा नील खूब सेवा करो, आज के बाद आपके हाथ से कोई भी वस्तु चाहे पत्थर या लोहा भी क्यों न हो जल में नहीं डूबेगी।

''समुन्द्र पर रामचन्द्र के पुल के लिए पत्थर तैराना''

एक समय की बात है कि सीता जी को रावण उठा कर ले गया। भगवान राम को पता भी नहीं कि सीता जी को कौन उठा ले गया? श्री रामचन्द्र जी इधर उधर खोज करते हैं। हनुमान जी ने खोज करके बताया कि सीता माता लंकापति रावण की कैद में है। पता लगने के बाद भगवान राम ने रावण के पास शान्ति दूत भेजे तथा प्रार्थना की कि सीता लौटा दे। परन्तु रावण नहीं माना। युद्ध की तैयारी हुई। तब समस्या यह आई कि समुद्र से सेना कैसे पार करें?

भगवान श्री रामचन्द्र ने तीन दिन तक घुटनों पानी में खड़ा होकर हाथ जोड़कर समुद्र से प्रार्थना की कि रास्ता दे। परन्तु समुद्र टस से मस न हुआ। जब समुद्र नहीं माना तब श्री राम ने उसे अग्नि बाण से जलाना चाहा। भयभीत समुद्र एक ब्राह्मण का रूप बनाकर सामने आया और कहा कि भगवन् सबकी अपनी-अपनी मर्यादाएँ हैं। मुझे जलाओ मत। मेरे अंदर न जाने कितने जीव-जंतु वसे हैं। अगर आप मुझे जला भी दोगे तो भी आप मुझे पार नहीं कर सकते, क्योंकि यहाँ पर बहुत गहरा गड्डा बन जायेगा, जिसको आप कभी भी पार नहीं कर सकते।

समुद्र ने कहा भगवन ऐसा काम करो कि सर्प भी मर जाए और लाठी भी न टूटे। मेरी मर्यादा भी रह जाए और आपका पुल भी बन जाए। तब भगवान श्री राम ने समुद्र से पूछा कि वह क्या है? ब्राह्मण रूप में खड़े समुद्र ने कहा कि आपकी सेना में नल और नील नाम के दो सैनिक हैं। उनके पास उनके गुरुदेव से प्राप्त एक ऐसी शक्ति है कि उनके हाथ से पत्थर भी तैर जाते हैं। हर वस्तु चाहे वह लोहे की हो, तैर जाती है। श्री रामचन्द्र ने नल तथा नील को बुलाया और उनसे पूछा कि क्या आपके पास कोई ऐसी शक्ति है? तो नल तथा नील ने कहा कि हाँ जी, हमारे हाथ से पत्थर भी नहीं डूबेंगे। तो श्रीराम ने कहा कि परीक्षण करवाओ।

उन नादानों(नल-नील) ने सोचा कि आज सब के सामने तुम्हारी बहुत महिमा होगी। उस दिन उन्होंने अपने गुरुदेव मुनिन्द्र जी (कबीर परमेश्वर जी) को यह सोचकर याद नहीं किया कि अगर हम उनको याद करेंगे तो कहीं श्रीराम ये न सोच लें कि इनके पास शक्ति नहीं है, यह तो कहीं और से मांगते हैं। उन्होंने पत्थर उठाकर समुन्द के जल में डाला तो वह पत्थर डूब गया। नल तथा नील ने बहुत कोशिश की, परन्तु उनसे पत्थर नहीं तैरे। तब भगवान राम ने समुद्र की ओर देखा मानो कहना चाह रहे हों कि आप तो झूठ बोल रहे थे। इनमें तो कोई शक्ति नहीं है। समुद्र ने कहा कि नल-नील आज तुमने अपने गुरुदेव को याद नहीं किया। कृप्या अपने गुरुदेव को याद करो। वे दोनों समझ गए कि आज तो हमने गलती कर दी। उन्होंने सतगुरु मुनिन्द्र साहेब जी को याद किया। सतगुरु मुनिन्द्र (कबीर परमेश्वर) वहाँ पर पहुँच गए। भगवान रामचन्द्र जी ने कहा कि हे ऋषिवर! मेरा दुर्भाग्य है कि आपके सेवकों से पत्थर नहीं तैर रहे हैं। मुनिन्द्र साहेब ने कहा कि अब इनके हाथ से कभी तैरेंगे भी

नहीं, क्योंकि इनको अभिमान हो गया है। सतगुरु की वाणी प्रमाण करती है कि:-

गरीब, जैसे माता गर्भ को, राखे जतन बनाय। ठेस लगे तो क्षीण होवे, तेरी ऐसे भक्ति जाय।

उस दिन के बाद नल तथा नील की वह शक्ति समाप्त हो गई। श्री रामचन्द्र जी ने परमेश्वर मुनिन्द्र साहेब जी से कहा कि हे ऋषिवर! मुझ पर बहुत आपत्ति पड़ी हुई है। दया करो किसी प्रकार सेना परले पार हो जाए। जब आप अपने सेवकों को शक्ति दे सकते हो तो प्रभु! मुझ पर भी कुछ रजा करो। मुनिन्द्र साहेब जी ने कहा कि यह जो सामने वाला पहाड़ है, मैंने उसके चारों तरफ एक रेखा खींच दी है। इसके बीच-बीच के पत्थर उठा लाओ, वे नहीं डूबेंगे। श्री राम ने परीक्षण के लिए पत्थर मंगवाया। उसको पानी पर रखा तो वह तैरने लग गया। नल तथा नील कारीगर(शिल्पकार) भी थे। हनुमान जी प्रतिदिन भगवान याद किया करते थे। उसने अपनी दैनिक क्रिया भी करते रहने के लिए राम राम भी लिखता रहा और पहाड़ के पहाड़ उठा कर ले आता था। नल नील उनको जोड़-तोड़ कर पुल में लगा देते थे। इस प्रकार पुल बना था। धर्मदास जी कहते हैं :-

रहे नल नील जतन कर हार, तब सतगुरू से करी पुकार।
जा सत रेखा लिखी अपार, सिन्धु पर शिला तिराने वाले।
धन—धन सतगुरु सत कबीर, भक्त की पीर मिटाने वाले।

कोई कहता था कि हनुमान जी ने पत्थर पर राम का नाम लिख दिया था इसलिए पत्थर तैर गये। कोई कहता था कि नल-नील ने पुल बनाया था। कोई कहता था कि श्रीराम ने पुल बनाया था। परन्तु यह सतकथा ऐसे है, जो ऊपर लिखी है।

(सत कबीर की साखी - पष्ठ 179 से 182 तक)

-: पीव पिछान को अंग :-

कबीर— तीन देव को सब कोई ध्यावै, चौथे देव का मरम न पावै।
चौथा छाड़ पंचम को ध्यावै, कहै कबीर सो हम पर आवै।।3।।
कबीर— ओंकार निश्चय भया, यह कर्ता मत जान।
साचा शब्द कबीर का, परदे मांही पहचान।।5।।
कबीर— राम कृष्ण अवतार हैं, इनका नांही संसार।
जिन साहेब संसार किया, सो किन्हूं न जन्म्या नार।।17।।
कबीर — चार भुजा के भजन में, भूलि परे सब संत।
कबिरा सुमिरो तासु को, जाके भुजा अनंत।।23।।
कबीर — समुद्र पाट लंका गये, सीता को भरतार।
ताहि अगस्त मुनि पीय गयो, इनमें को करतार।।26।।
कबीर — गिरवर धारयो कृष्ण जी, द्रोणागिरि हनुमंत।
शेष नाग सब सृष्टि सहारी, इनमें को भगवंत।।27।।
कबीर — काटे बंधन विपति में, कठिन किया संग्राम।
चिन्हों रे नर प्राणियां, गरुड बड़ो की राम।।28।।
कबीर — कह कबीर चित चेतहूं, शब्द करौ निरूवार।
श्रीरामहि कर्ता कहत हैं, भूलि परयो संसार।।29।।
कबीर — जिन राम कृष्ण व निरंजन कियो, सो तो करता न्यार।
अंधा ज्ञान न बूझई, कहै कबीर विचार।।30।।

"कबीर परमेश्वर द्वारा विभीषण तथा मंदोदरी को शरण में लेना"

परमेश्वर मुनिन्द्र जी अनल अर्थात् नल तथा अनील अर्थात् नील को शरण में लेने के उपरान्त श्री लंका में गए। वहाँ पर एक परम भक्त विचित्र चन्द्रविजय जी का सोलह सदस्यों का परिवार रहता था। वे भाट जाति में उत्पन्न पुण्यकर्मी प्राणी थे। परमेश्वर मुनिन्द्र(कविर्देव) जी का उपदेश सुन कर पूरे परिवार ने नाम दान प्राप्त किया। परम भक्त विचित्र चन्द्रविजय जी की पत्नी भक्तमति कर्मवती लंका के राजा रावण की रानी मन्दोदरी के पास नौकरी(सेवा) करती थी। रानी मंदोदरी को हँसी-मजाक अच्छे-मंदे चुटकुले सुना कर उसका मनोरंजन कराती थी। भक्त चन्द्रविजय, राजा रावण के पास दरबार में नौकरी(सेवा) करता था। राजा की बड़ाई के गाने सुना कर उसे प्रसन्न करता था। भक्त विचित्र चन्द्रविजय की पत्नी भक्तमति कर्मवती परमेश्वर से उपदेश प्राप्त करने के उपरान्त रानी मंदोदरी को प्रभु चर्चा जो सष्टि रचना अपने सतगुरुदेव मुनिन्द्र जी से सुनी थी प्रतिदिन सुनाने लगी।

भक्तमति मंदोदरी रानी को अति आनन्द आने लगा। कई-कई घण्टों तक प्रभु की सत कथा को भक्तमति कर्मवती सुनाती रहती तथा मंदोदरी की आँखों से आँसू बहते रहते। एक दिन रानी मंदोदरी ने कर्मवती से पूछा आपने यह ज्ञान किससे सुना? आप तो बहुत अनाप-शनाप बातें किया करती थी। इतना बदलाव परमात्मा तुल्य संत बिना नहीं हो सकता। तब कर्मवती ने बताया कि हमने एक परम संत से अभी-अभी उपदेश लिया है। रानी मंदोदरी ने संत के दर्शन की अभिलाषा व्यक्त करते हुए कहा, आप के गुरु अब की बार आयें तो उन्हें हमारे घर बुला कर लाना। अपनी मालकिन का आदेश प्राप्त करके शीश झुकाकर सत्कार पूर्वक कहा कि जो आप की आज्ञा, आप की नौकरानी वही करेगी। मेरी एक विनती है, कहते हैं कि संत को आदेशपूर्वक नहीं बुलाना चाहिए। स्वयं जा कर दर्शन करना श्रेयकर होता है और जैसे आप की आज्ञा वैसा ही होगा। महारानी मंदोदरी ने कहा कि अब के आपके गुरुदेव जी आयें तो मुझे बताना मैं स्वयं उनके पास जाकर दर्शन करूंगी। परमेश्वर ने फिर श्री लंका में कपा की। मंदोदरी रानी ने उपदेश प्राप्त किया। कुछ समय उपरान्त अपने प्रिय देवर भक्त विभीषण जी को उपदेश दिलाया। भक्तमति मंदोदरी उपदेश प्राप्त करके अहर्निश प्रभु स्मरण में लीन रहने लगी। अपने पति रावण को भी सतगुरु मुनिन्द्र जी से उपदेश प्राप्त करने की कई बार प्रार्थना की परन्तु रावण नहीं माना तथा कहा करता था कि मैंने परम शक्ति महेश्वर मत्युंजय शिव जी की भक्ति की है। इसके तुल्य कोई शक्ति नहीं है। आपको किसी ने बहका लिया है।

कुछ ही समय उपरान्त वनवास प्राप्त श्री सीता जी का अपहरण करके रावण ने अपने नौ लखा बाग में कैद कर लिया। भक्तमति मंदोदरी के बार-बार प्रार्थना करने से भी रावण ने माता सीता जी को वापिस छोड़ कर आना स्वीकार नहीं किया। तब भक्तमति मंदोदरी जी ने अपने गुरुदेव मुनिन्द्र जी से कहा महाराज जी, मेरे पति ने किसी की औरत का अपहरण कर लिया है। मुझ से सहन नहीं हो रहा है। वह उसे वापिस छोड़ कर आना किसी कीमत पर भी स्वीकार नहीं कर रहा है। आप दया करो मेरे प्रभु। आज तक जीवन में मैंने ऐसा दुःख नहीं देखा था।

परमेश्वर मुनिन्द्र जी ने कहा कि बेटी मंदोदरी यह औरत कोई साधारण स्त्री नहीं है। श्री विष्णु जी को शापवश पथ्वी पर आना पड़ा है, वे अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र रामचन्द्र नाम से जन्में हैं। इनको 14 वर्ष का वनवास प्राप्त है तथा लक्ष्मी जी स्वयं सीता रूप में इनकी पत्नी

रूप में वनवास में श्री राम के साथ थी। उसे रावण एक साधु वेश बना कर धोखा देकर उठा लाया है। यह स्वयं लक्ष्मी ही सीता जी है। इसे शीघ्र वापिस करके क्षमा याचना करके अपने जीवन की भिक्षा याचना रावण करें तो इसी में इसका शुभ है।

भक्तमति मंदोदरी के अनेकों बार प्रार्थना करने से रावण नहीं माना तथा कहा कि वे दो मसखरे जंगल में घूमने वाले मेरा क्या बिगाड़ सकते हैं। मेरे पास अनीगनत सेना है। मेरे एक लाख पुत्र तथा सवा लाख नाती हैं। मेरे पुत्र मेघनाद ने स्वर्ग राज इन्द्र को पराजित कर उसकी पुत्री से विवाह कर रखा है। तेतीस करोड़ देवताओं को हमने कैद कर रखा है। तू मुझे उन दो बेसहारा बन में बिचर रहे बनवासियों को भगवान बता कर डराना चाहती है। इस स्त्री को वापिस नहीं करूँगा। मंदोदरी ने भक्ति मार्ग का ज्ञान जो अपने पूज्य गुरुदेव से सुना था, रावण को बहुत समझाया। विभीषण ने भी अपने बड़े भाई को समझाया। रावण ने अपने भाई विभीषण को पीटा तथा कहा कि तू ज्यादा श्री रामचन्द्र का पक्षपात कर रहा है, उसी के पास चला जा।

एक दिन भक्तमति मंदोदरी ने अपने पूज्य गुरुदेव से प्रार्थना की कि हे गुरुदेव मेरा सुहाग उजड़ रहा है। एक बार आप भी मेरे पति को समझा दो। यदि वह आप की बात को नहीं मानेगा तो मुझे विधवा होने का दुःख नहीं होगा।

अपनी बचन की बेटी मंदोदरी की प्रार्थना स्वीकार करके राजा रावण के दरबार के समक्ष खड़े होकर परमेश्वर मुनिन्द्र जी ने द्वारपालों से राजा रावण से मिलने की प्रार्थना की। द्वारपालों ने कहा ऋषि जी इस समय हमारे राजा जी अपना दरबार लगाए हुए हैं। इस समय अन्दर का संदेश बाहर आ सकता है, बाहर का संदेश अन्दर नहीं जा सकता। हम विवश हैं। तब पूर्ण प्रभु अंतर्ध्यान हुए तथा राजा रावण के दरबार में प्रकट हो गए। रावण की दष्टि ऋषि पर गई तो गरज कर पूछा कि इस ऋषि को मेरी आज्ञा बिना किसने अन्दर आने दिया है उन द्वारपालों को लाकर मेरे सामने कत्ल कर दो। तब परमेश्वर ने कहा राजन् आप के द्वारपालों ने स्पष्ट मना किया था। उन्हें पता नहीं कि मैं कैसे अन्दर आ गया। रावण ने पूछा कि तू अन्दर कैसे आया? तब पूर्ण प्रभु मुनिन्द्र वेश में अदश होकर पुनर् प्रकट हो गए तथा कहा कि मैं ऐसे आ गया। रावण ने पूछा कि आने का कारण बताओ। तब प्रभु ने कहा कि आप योद्धा हो कर एक अबला का अपहरण कर लाए हो। यह आप की शान व शूरवीरता के विपरीत है। सीता कोई साधारण औरत नहीं है यह स्वयं लक्ष्मी जी का अवतार है। श्री रामचन्द्र जी जो इसके पति हैं वे स्वयं विष्णु हैं। इसे वापिस करके अपने जीवन की भिक्षा माँगो। इसी में आप का श्रेय है। इतना सुन कर तमोगुण (भगवान शिव) का उपासक रावण क्रोधित होकर नंगी तलवार लेकर सिंहासन से दहाड़ता हुआ कूदा तथा उस नादान प्राणी ने तलवार के अंधाधुंध सत्तर वार ऋषि जी को मारने के लिए किए। परमेश्वर मुनिन्द्र जी ने एक झाडू की सींक हाथ में पकड़ी हुई थी। उसको ढाल की तरह आगे कर दिया। रावण के सत्तर वार उस नाजुक सींक पर लगे। ऐसे आवाज हुई जैसे लोहे के खम्बे (पीलर) पर तलवार लग रही हो। सींक टस से मस नहीं हुई। रावण को पसीने आ गए। फिर भी अपने अहंकारवश नहीं माना। यह तो जान लिया कि यह कोई साधारण ऋषि नहीं है। रावण ने अभिमान वश कहा कि मैंने आप की एक भी बात नहीं सुननी, आप जा सकते हैं। परमेश्वर अंतर्ध्यान हो गए तथा मंदोदरी को सर्व वतान्त सुनाकर प्रस्थान किया। रानी मंदोदरी ने कहा गुरुदेव अब मुझे विधवा होने में कोई कष्ट नहीं होगा।

श्री रामचन्द्र व रावण का युद्ध हुआ। रावण का वध हुआ। जिस लंका के राज्य को रावण ने

तमोगुण भगवान शिव की कठिन साधना करके, दस बार शीश न्यौछावर करके प्राप्त किया था। वह क्षणिक सुख भी रावण का चला गया तथा नरक का भागी हुआ। इसके विपरीत पूर्ण परमात्मा के सतनाम साधक विभीषण को बिना कठिन साधना किए पूर्ण प्रभु की सत्य साधना व कपा से लंकादेश का राज्य भी प्राप्त हुआ। हजारों वर्षों तक विभीषण ने लंका का राज्य का सुख भोगा तथा प्रभु कपा से राज्य में पूर्ण शान्ति रही। सभी राक्षस वति के व्यक्ति विनाश को प्राप्त हो चुके थे। भक्तमति मंदोदरी तथा भक्त विभीषण तथा परम भक्त चन्द्रविजय जी के परिवार के पूरे सोलह सदस्य तथा अन्य जिन्होंने पूर्ण परमेश्वर का उपदेश प्राप्त करके आजीवन मर्यादावत् सतभक्ति की वे सर्व साधक यहाँ पथ्वी पर भी सुखी रहे तथा अन्त समय में परमेश्वर के विमान में बैठ कर सतलोक (शाश्वतम् स्थानम्) में चले गए। इसीलिए पवित्र गीता अध्याय 7 मंत्र 12 से 15 में कहा है कि तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी) की साधना से मिलने वाली क्षणिक सुविधाओं के द्वारा जिनका ज्ञान हरा जा चुका है, वे राक्षस स्वभाव वाले, मनुष्यों में नीच, दुष्कर्म करने वाले मूर्ख मुझ (काल-ब्रह्म) को भी नहीं भजते।

फिर गीता अध्याय 7 मंत्र 18 में गीता बोलने वाला (काल-ब्रह्म) प्रभु कह रहा है कि कोई एक उदार आत्मा मेरी (ब्रह्म की) ही साधना करता है क्योंकि उनको तत्त्वदर्शी संत नही मिला। वे भी नेक आत्माऐं मेरी (अनुत्तमाम्) अति अश्रेष्ठ (गतिम्) गति में आश्रित रह गए। वे भी पूर्ण मुक्त नहीं हैं। इसलिए पवित्र गीता अध्याय 18 मंत्र 62 में कहा है कि हे अर्जुन तू सर्व भाव से उस परमेश्वर (पूर्ण परमात्मा अर्थात् तत् ब्रह्म) की शरण में जा। उसकी कपा से ही तू परम शान्ति तथा सतलोक अर्थात् सनातन परम धाम को प्राप्त होगा।

इसलिए पुण्यात्माओं से निवेदन है कि आज इस दासन् के भी दास (रामपाल दास) के पास पूर्ण परमात्मा प्राप्ति की वास्तविक विधि प्राप्त है। निःशुल्क उपदेश लेकर लाभ उठाऐं।

प्रश्नः- धर्मदास जी ने प्रश्न किया हे प्रभु कुछ श्रद्धालु श्री हनुमान जी की पूजा करते हैं। यह शास्त्रविरूद्ध है या अनुकूल।

उत्तरः- कबीर देव ने कहा हे धर्मदास! अर्जुन को काल ब्रह्म ने श्रीमदभगवत् गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में कहा है कि हे अर्जुन! जो व्यक्ति शास्त्रविधि को त्याग कर अपनी इच्छा से मनमाना आचरण (पूजा) करता है। वह न सिद्धि को प्राप्त होता है न परमगति को न सुख को ही (गीता अ. 16/मं.23) इस से तेरे लिए कर्तव्य अर्थात् करने योग्य भक्ति कर्म तथा अकर्त्तव्य अर्थात् न करने योग्य जो त्यागने योग्य कर्म हैं उनकी व्यवस्था में शास्त्र में लिखा उल्लेख ही प्रमाण है। ऐसा जानकर तू शास्त्रविधि से नियत भक्ति कर्म अर्थात् साधना ही करने योग्य है। (गीता अ.16/ श्लोक 24)

हे धर्मदास जी! गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 व 20 से 23 तथा गीता अध्याय 9 श्लोक 20 से 23 तथा 25 में गीता ज्ञान दाता काल ब्रह्म ने तीनों देवताओं (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) की पूजा करना भी व्यर्थ कहा है, भूतों की पूजा, पितरों की पूजा व अन्य सर्व देवताओं की पूजा को भी अविधिपूर्वक (शास्त्रविधि विरूद्ध) बताया है। हनुमान तो रामभक्त थे। वे स्वयं भी भक्ति करते थे तथा अन्य को भी राम की भक्ति करने को ही कहते थे। यदि कोई भक्त दूसरे भक्त की पूजा करता है। वह शास्त्रविधि विरूद्ध होने से व्यर्थ है। त्रेता युग में मैंने हनुमान को भी शरण् में लिया था।

प्रश्नः- धर्मदास ने प्रश्न किया हे कबीर परमेश्वर! आपने तो मेरे आश्चर्य को अधिक बढ़ा दिया। श्री हनुमान जी को तो अपनी शक्ति तथा श्री राम की भक्ति पर अत्यधिक अभिमान था। हे दीनानाथ!

आपने हनुमान जी की बुद्धि को कैसे बदला? मुझ किंकर पर कपा करके बताईए?

उत्तरः- कपा पढ़ें हनुमान बोध के सारांश में पष्ठ 235 पर।

''पूर्ण परमात्मा कबीर जी का द्वापर युग में प्रकट होना''

प्रश्नः- हे परमेश्वर! अपने दास धर्मदास पर कपा करके द्वापर युग में प्रकट होने की कथा सुनाऐं जिस से तत्त्वज्ञान प्राप्त हो?

उत्तरः- कबीर परमेश्वर (कबिर्देव) ने कहा हे धर्मदास! द्वापर युग में भी मैं रामनगर नामक नगरी में एक सरोवर में कमल के फूल पर शिशु रूप में प्रकट हुआ। एक निःसन्तान वाल्मिकी (कालू तथा गोदावरी) दम्पति अपने घर ले गया। एक ऋषि से मेरा नामकरण करवाया। उसने भगवान विष्णु की कपा से प्राप्त होने के आधार से मेरा नाम करूणामय रखा। मैंने 25 दिन तक कोई आहार नहीं किया मेरी पालक माता अति दुःखी हुई। पिता जी भी कई साधु सन्तों के पास गए मेरे ऊपर झाड़-फूंक भी कराई। वे विष्णु के पुजारी थे। उनको अति दुःखी देखकर मैंने विष्णु को प्रेरणा दी। विष्णु भगवान एक ऋषि रूप में वहाँ आए तथा पिता कालू से कुशल मंगल पूछा। पिता कालू तथा माता गोदावरी (कलयुग में सम्मन तथा नेकी रूप में दिल्ली में जन्में थे) ने अपना दुःख ऋषि जी को बताया कि हमें वद्ध अवस्था में एक पुत्र रत्न भगवान विष्णु की कपा से सरोवर में कमल के फूल पर प्राप्त हुआ है। यह बच्चा 25 दिन से भूखा है कुछ भी नहीं खाया है। अब इसका अन्त निकट है। परमात्मा विष्णु ने हमें अपार खुशी प्रदान की है। अब उसे छीन रहे हैं। हम प्रार्थना करते हैं कि हे विष्णु भगवान यह खिलौना दे कर मत छीनों। हम अपराधियों से ऐसा क्या अपराध हो गया? इस बच्चे में हमारा इतना मोह हो गया है कि यदि इसकी मत्यु हो गई तो हम दोनों उसी सरोवर में डूब कर मरेंगे जहाँ पर यह बालक रत्न हमें मिला था।

हे धर्मदास! ऋषि रूप में उपस्थित विष्णु भगवान ने मेरी ओर देखा। मैं पालने में झूल रहा था। मेरे अति स्वस्थ शरीर को देखकर विष्णु भगवान आश्चर्य चकित हुए तथा बोले हे कालू भक्त! यह बच्चा तो पूर्ण रूप से स्वस्थ है। आप कह रहे हो यह कुछ भी आहार नहीं करता। यह बालक तो ऐसा स्वस्थ है जैसे एक सेर दूध प्रतिदिन पीता हो। यह नहीं मरने वाला। इतना कह कर विष्णु मेरे पास आया। मैंने विष्णु से बात की तथा कहा हे विष्णु भगवान! आप मेरे माता पिता से कहो एक कुँवारी गाय लाऐं उस गाय को आप आशीर्वाद देना व कंवारी गाय दूध देने लगेगी उस गाय का दूध मैं पीऊंगा। मेरे द्वारा अपना परिचय जान कर विष्णु भगवान समझ गए यह कोई सिद्ध आत्मा है जिसने मुझे पहचान लिया है। मुझे ऋषि के साथ बातें करते हुए मेरे पालक माता-पिता हैरान रह गए। अन्दर ही अन्दर खुशी की लहर दौड़ गई। ऋषि ने कहा कालू एक कुंवारी गाय लाओ। वह दूध देगी उस दूध को यह होनहार बच्चा पीएगा। कालू पिता तुरन्त एक गाय ले आया। भगवान विष्णु ने मेरी प्रार्थना पर उस कुंवारी गाय की कमर पर हाथ रख दिया। उसी समय उस गाय की बछिया के थनों से दूध की धार बहने लगी तथा वह तीन सेर का पात्र भरने के पश्चात् रूक गई। वह दूध मैंने पीया।

मेरी तथा विष्णु जी की वार्ता की भाषा को कालू व गोदावरी समझ नही सके। वे मुझ पच्चीस दिन के बालक को बोलते देखकर उस ऋषि रूप विष्णु का ही चमत्कार मान रहे थे तथा कुंवारी गाय द्वारा दूध देना भी उस ऋषि की कपा जानकर दोनों ऋषि के चरणों में लिपट गए। मेरी पालक माता ने मुझे पालने से उठाया तथा उस ऋषि रूप में विराजमान विष्णु के चरणों में डाला। मैं जमीन पर नहीं गिरा। माता के हाथों से निकल कर जमीन से चार फुट ऊपर हवा में पालने की तरह स्थित हो गया। जब गोदावरी ने मुझे ऋषि के चरणों की ओर किया भगवान विष्णु तीन कदम पीछे हट गए तथा बोले माई!

यह बालक परम शक्ति युक्त है, बड़ा होकर जनता का उपकार करेगा। इतना कह कर ऋषि रूप धारी विष्णु अपने लोक को चल दिए। मैं पुनः पालने में विराजमान हो गया।

उस वाल्मीकि दम्पति (कालू तथा गोदावरी) ने मेरा हवा में स्थित होना भी ऋषि का ही करिश्मा जाना इस कारण से मुझे कोई अवतारी पुरूष नहीं समझ सके मैं भी यही चाहता था, कि ये मुझे एक साधारण बालक ही समझें जिससे इनकी वद्ध अवस्था का समय मेरे लालन पालन में बीत जाए। मैं शिशु काल में ही तत्त्वज्ञान की वाणी उच्चारण करने लगा। उस नगरी में अकाल गिर गया। मेरे माता पिता मुझे लेकर बनारस (काशी) आए तथा वहाँ रहने लगे। कलयुग में कालू का जन्म सम्मन रूप में तथा गोदावरी का जन्म नेकी रूप में दिल्ली में हुआ जो कबीर जी की शरण में आए। उनका एक पुत्र सेऊ (शिव) भी परमात्मा की शरण में आया था।

काशी नगर में एक सुदर्शन नाम का वाल्मीकि जाति का पुण्यात्मा मेरी वाणी सुनकर बहुत प्रभावित हुआ। मैंने सुदर्शन भक्त को सष्टि रचना सुनाई। सुदर्शन मेरी हम उमर था। उस समय मेरी लीलामय आयु 12 वर्ष थी। जब काशी के विद्वानों से ज्ञान चर्चा होती थी, सुदर्शन भी मेरे साथ जाता था। एक दिन सुदर्शन ने कहा हे करूणामय! आप जो ज्ञान सुनाते हो इसका समर्थन कोई भी ऋषि नहीं करता। आप के ज्ञान पर कैसे विश्वास हो? हे करूणामय! आप ऐसी कपा करो जिससे मेरा भ्रम दूर हो जाए। हे धर्मदास मैंने उस प्यासी आत्मा सुदर्शन को सत्यलोक के दर्शन कराए आप की तरह उसको भी तीन दिन तक ऊपर के सर्व लोकों में ले गया। सुदर्शन का पंच भौतिक शरीर अचेत हो गया। सुदर्शन भी अपने माता-पिता का इकलौता पुत्र था। अपने इकलौते पुत्र को मत तुल्य देखकर उसके माता-पिता विलाप करने लगे तथा हमारे घर आकर मेरे मात-पिता से झगड़ा करने लगे। कहा कि तुम्हारे करूण ने हमारे बच्चे को जादू-जन्त्र कर दिया। वह सेवड़ा है। हमारा पुत्र मर गया तो हम आप के विरूद्ध राजा को शिकायत करेगें। मेरे माता-पिता ने मेरे से उन्ही के सामने पूछा हे करूण ! सच बता तूने क्या कर दिया उस सुदर्शन को। मैंने कहा वह सतलोक देखना चाहता था। इसलिए उसे सतलोक दर्शन के लिए भेजा है। शीघ्र ही लौट आएगा। कई वैद्य बुलाएं कई झाड़-फूँक करने वाले बुलाए कोई लाभ नहीं हुआ। तीसरे दिन सुदर्शन के मात-पिता रोते हुए मेरे पास आए बोले बेटा करूण! हमारे पुत्र को ठीक कर दे हम तेरे आगे हाथ जोड़ते हैं। मैंने कहा माई तुम्हारा पुत्र नहीं मरेगा।

मेरे (परमेश्वर कबीर साहेब) को अपने साथ अपने घर ले गए। मेरे माता-पिता भी साथ गए आस-पास के व्यक्ति भी वहाँ उपस्थित थे। मैंने सुदर्शन के शीश को पकड़ कर हिलाया तथा कहा हे सुदर्शन! वापिस आ जा तेरे माता-पिता बहुत व्याकुल हैं। इतना कहते ही सुदर्शन ने आँखें खोली चारों ओर देखा, अपने सिर की ओर मुझे नहीं देख सका। उठ-बैठकर बोला परमेश्वर करूणामय कहाँ हैं? रोने लगा-कहाँ गए परमेश्वर करूणामय। उपस्थित व्यक्तियों ने पूछा, क्या करूण को ढूँढ़ रहा है? देख यह बैठा तेरे पीछे। मुझे देखते ही चरणों में शीश रख कर विलाप करने लगा तथा रोता हुआ बोला हे काशी के रहने वालों। यह पूर्ण परमात्मा है। यह सर्व सष्टि रचनहार अपने शहर में विराजमान है। आप इसे नहीं पहचान सके। यह मेरे साथ ऊपर के लोक में गया। ऊपर के लोक में यह पूर्ण परमात्मा के रूप में एक सफेद गुबन्द में विराजमान है। यही दोनों रूपों में लीला कर रहा है। सर्व व्यक्ति कहने लगे इस कालू के पुत्र ने भीखू के पुत्र पर जादू जन्त्र किया है। जिस कारण से इसका दिमाग चल गया है। इस करूण को ही परमात्मा कह रहा है। भला हो भगवान का भीखू का बेटा जीवित हो गया नहीं तो बेचारों का कोई और बूढ़ापे का सहारा भी नहीं था। यह कह कर सर्व अपने-2 घर चले गए।

भीखू तथा उसकी पत्नी सुखी (सुखवन्ती) अपने पुत्र को जीवित देखकर अति प्रसन्न हुए भगवान

विष्णु का प्रसाद बनाया पूरे मौहल्ले (कालोनी) में प्रसाद बांटा। सुदर्शन ने मुझसे उपदेश लिया। अपने माता-पिता भीखू तथा सुखी को भी मेरे से उपदेश लेने को कहा। दोनों ने बहुत विरोध किया तथा कहा यह कालू का पुत्र पूर्ण परमात्मा नहीं है बेटा! इसने तेरे ऊपर जादू-जन्त्र करके मूर्ख बनाया हुआ है। भगवान विष्णु से बड़ा कोई नहीं है। सुदर्शन ने मुझ से कहा हे प्रभु! कप्या मुझे अपनी शरण में रखना। मेरे माता-पिता का कोई दोष नहीं है सर्व मानव समाज इसी ज्ञान पर अटका है। जिस पर आपकी कपा होगी केवल वही आप को जान व मान सकता है। इस काल-ब्रह्म ने तो पूरे विश्व (ब्रह्मा-विष्णु-शिव सहित) को भ्रमित किया हुआ है। हे धर्मदास! सुदर्शन भक्त ने काल के जाल को समझ कर सच्चे मन से मेरी भक्ति की तथा मेरा साक्षी बना कि पूर्ण परमात्मा कोई अन्य है जो ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव से भिन्न तथा अधिक शक्तिशाली है। हे धर्मदास! पाण्डवों की अश्वमेघ यज्ञ को जिस सुदर्शन द्वारा सम्पूर्ण की गई आप सुनते हो यह वही सुदर्शन वाल्मीकि मेरा शिष्य था। द्वापर युग में मैं 404 वर्ष तक करूणामय शरीर में लीला करता रहा तथा सशरीर सतलोक चला गया।

प्रश्नः- धर्मदास ने प्रश्न किया हे प्रभु आपकी कपा द्वापर युग में और किस पुण्यात्मा पर हुई?

उत्तरः- कबीर परमेश्वर (कविर्देव) ने कहा द्वापर युग में एक चन्द्रविजय नामक राजा की रानी इन्द्रमती को पार किया तथा राजा चन्द्रविजय पर भी कपा की। परमेश्वर कबीर जी द्वारा बताई ''रानी इन्द्रमती को पार करने वाली कथा'' लेखक (संत रामपाल दास जी महाराज) के शब्दों में :-

"द्वापर युग में इन्द्रमती को शरण में लेना"

द्वापरयुग में चन्द्रविजय नाम का एक राजा था। उसकी पत्नी इन्द्रमती बहुत ही धार्मिक प्रवति की औरत थी। संत-महात्माओं का बहुत आदर किया करती थी। उसने एक गुरुदेव भी बना रखा था। उनके गुरुदेव ने बताया था कि बेटी साधु-संतों की सेवा करनी चाहिए। संतों को भोजन खिलाने से बहुत लाभ होता है। एकादशी का व्रत, मन्त्र के जाप आदि साधनायें जो गुरुदेव ने बताई थी। उस भगवत् भक्ति में रानी बहुत दढ़ता से लगी हुई थी। गुरुदेव ने बताया था कि संतों को भोजन खिलाया करेगी तो तू आगे भी रानी बन जाएगी और तुझे स्वर्ग प्राप्ति होगी। रानी ने सोचा कि प्रतिदिन एक संत को भोजन अवश्य खिलाया करूँगी। उसने यह प्रतिज्ञा मन में ठान ली कि मैं खाना बाद में खाया करूँगी, पहले संत को खिलाया करूँगी। इससे मुझे याद बनी रहेगी, कहीं मुझे भूल न पड़ जाये। रानी प्रतिदिन पहले एक संत को भोजन खिलाती फिर स्वयं खाती। वर्षों तक ये क्रम चलता रहा।

एक समय हरिद्वार में कुम्भ के मेले का संयोग हुआ। जितने भी त्रिगुण माया के उपासक संत थे सभी गंगा में स्नान के लिए (प्रभी लेने के लिए) प्रस्थान कर गये। इस कारण से कई दिन रानी को भोजन कराने के लिए कोई संत नहीं मिला। रानी इन्द्रमती ने स्वयं भी भोजन नहीं किया। चौथे दिन अपनी बांदी से कहा कि बांदी देख ले कोई संत मिल जाए तो, नहीं तो आज तेरी मालकिन जीवित नहीं रहेगी। चाहे मेरे प्राण निकल जाएँ परन्तु मैं खाना नहीं खाऊँगी। वह दीन दयाल कबीर परमेश्वर अपने पूर्व वाले भक्त को शरण में लेने के लिए न जाने क्या कारण बना देता है ? बांदी ने ऊपर अटारी पर चढ़कर देखा कि सामने से सफेद कपड़े पहने एक संत आ रहा था। द्वापर युग में परमेश्वर कबीर करूणामय नाम से आये थे। बांदी नीचे आई और रानी से कहा कि एक व्यक्ति है जो साधु जैसा नजर आता है। रानी ने कहा कि जल्दी से बुला ला। बांदी महल से बाहर गई तथा प्रार्थना की कि साहेब आपको हमारी रानी ने याद किया है। करूणामय साहेब ने कहा कि रानी ने मुझे क्यों याद किया है, मेरा और रानी का क्या सम्बन्ध? नौकरानी ने सारी बात बताई।

करूणामय (कबीर) साहेब ने कहा कि रानी को आवश्यकता पड़े तो यहाँ आ जाए, मैं यहाँ खड़ा हूँ। तू बांदी और वह रानी। मैं वहाँ जाऊँ और यदि वह कह दे कि तुझे किसने बुलाया था या उसका राजा ही कुछ कह दे बेटी संतों का अनादर बहुत पापदायक होता है। बांदी फिर वापिस आई और रानी से सब वार्ता कह सुनाई। तब रानी ने कहा कि बांदी मेरा हाथ पकड़ और चल। जाते ही रानी ने दण्डवत् प्रणाम करके प्रार्थना की कि हे परवरदिगार! चाहती तो ये हूँ कि आपको कंधे पर बैठा लूं। करूणामय साहेब ने कहा बेटी! मैं यही देखना चाहता था कि तेरे में कोई श्रद्धा भी है या वैसे ही भूखी मर रही है। रानी ने अपने हाथों खाना बनाया। करूणामय रूप में आए कविर्देव ने कहा कि मैं खाना नहीं खाता। मेरा शरीर खाना खाने का नहीं है। तो रानी ने कहा कि मैं भी खाना नहीं खाऊँगी। करूणामय साहेब जी ने कहा कि ठीक है बेटी लाओ खाना खाते हैं, क्योंकि समर्थ उसी को कहते हैं जो, जो चाहे, सो करे। करूणामय साहेब ने खाना खा लिया, फिर रानी से पूछा कि जो यह तू साधना कर रही है यह तेरे को किसने बताई है? रानी ने कहा कि मेरे गुरुदेव ने आदेश दिया है? कबीर साहेब ने पूछा क्या आदेश दिया है तेरे गुरुदेव ने? इन्द्रमती ने कहा कि विष्णु-महेश की पूजा, एकादशी का व्रत, तीर्थ भ्रमण, देवी पूजा, श्राद्ध निकालना, मन्दिर में जाना, संतों की सेवा करना। करूणामय (कबीर) साहेब ने कहा कि जो साधना तेरे गुरुदेव ने दी है तेरे को जन्म और मत्यु तथा स्वर्ग-नरक व चौरासी लाख योनियों के कष्ट से मुक्ति प्रदान नहीं करा सकती। रानी ने कहा कि महाराज जी जितने भी संत हैं, अपनी-अपनी प्रभुता आप ही बनाने आते हैं। मेरे गुरुदेव के बारे में कुछ नहीं कहोगे। मैं चाहे मुक्त होऊँ या न होऊँ।

करूणामय (कबीर) साहेब ने सोचा कि इस भोले जीव को कैसे समझाऐं? इन्होंने जो पूंछ पकड़ ली उसको छोड़ नहीं सकते, मर सकते हैं। करूणामय साहेब ने कहा कि बेटी वैसे तो तेरी इच्छा है, मैं निंदा नहीं कर रहा। क्या मैंने आपके गुरुदेव को गाली दी है या कोई बुरा कहा है? मैं तो भक्तिमार्ग बता रहा हूँ कि यह भक्ति शास्त्र विरूद्ध है। तुझे पार नहीं होने देगी और न ही तेरा कोई आने वाला कर्म दण्ड कटेगा और सुन ले आज से तीसरे दिन तेरी मत्यु हो जाएगी। न तेरा गुरु बचा सकेगा और न तेरी यह नकली साधना बचा सकेगी। (जब मरने की बारी आती है फिर जीव को डर लगता है। वैसे तो नहीं मानता) रानी ने सोचा कि संत झूठ नहीं बोलते। कहीं ऐसा न हो कि मैं तीसरे दिन ही मर जाऊँ। इस डर से करूणामय साहेब से पूछा कि साहेब क्या मेरी जान बच सकती है? कबीर साहेब (करूणामय) ने कहा कि बच सकती है। अगर तू मेरे से उपदेश लेगी, मेरी शिष्या बनेगी, पिछली पूजाएँ त्यागेगी, तब तेरी जान बचेगी। इन्द्रमती ने कहा मैंने सुना है कि गुरुदेव नहीं बदलना चाहिए, पाप लगता है।

कबीर साहेब (करूणामय) ने कहा कि नहीं पुत्री यह भी तेरा भ्रम है। एक वैद्य (डाक्टर) से औषधि न लगे तो क्या दूसरे से नहीं लेते? एक पाँचवीं कक्षा का अध्यापक होता है। फिर एक उच्च कक्षा का अध्यापक होता है। बेटी अगली कक्षा में जाना होगा। क्या सारी उम्र पाँचवीं कक्षा में ही लगी रहेगी ? इसको छोड़ना पड़ेगा। तू अब आगे की पढ़ाई पढ़, मैं पढ़ाने आया हूँ। वैसे तो नहीं मानती परन्तु मत्यु दिखने लगी कि संत कह रहा है तो कहीं बात न बिगड़ जाए। ऐसा विचार करके इन्द्रमती ने कहा कि जैसे आप कहोगे मैं वैसे ही करूँगी। करूणामय (कबीर) साहेब ने उपदेश दिया। कहा कि तीसरे दिन मेरे रूप में काल आयेगा, तू उससे बोलना मत। जो मैंने नाम दिया है दो मिनट तक इसका जाप करना। दो मिनट के बाद उसको देखना है। उसके बाद सत्कार करना है। वैसे तो गुरुदेव आए तो अति शीघ्र चरणों में गिर जाना चाहिए। ये मेरा केवल इस बार आदेश है। रानी ने कहा ठीक है जी।

रानी को तो चिंता बनी हुई थी। श्रद्धा से जाप कर रही थी। (कबीर साहेब) करूणामय साहेब का रूप बना कर गुरुदेव रूप में काल आया, आवाज लगाई इन्द्रमती, इन्द्रमती। उसको तो पहले ही डर था, स्मरण करती रही। काल की तरफ नहीं देखा। दो मिनट के बाद जब देखा तो काल का स्वरूप बदल गया। काल का ज्यों का त्यों चेहरा दिखाई देने लगा। करूणामय साहेब का स्वरूप नहीं रहा। जब काल ने देखा कि तेरा तो स्वरूप बदल गया। वह जान गया कि इसके पास कोई शक्ति युक्त मंत्र है। यह कहकर चला गया कि तुझे फिर देखूँगा। अब तो बच गई। रानी बहुत खुश हुई, फूली नहीं समाई। कभी अपनी बांदियों को कहने लगी कि मेरी मत्यु होनी थी, मेरे गुरुदेव ने मुझे बचा दिया। राजा के पास गई तथा कहा कि आज मेरी मत्यु होनी थी, मेरे गुरुदेव ने रक्षा कर दी। मुझे लेने के लिए काल आया था। राजा ने कहा कि तू ऐसे ही ड्रामें करती रहती है, काल आता तो क्या तुझे छोड़ जाता? ये संत वैसे बहका देते हैं। अब इस बात को वह कैसे माने? खुशी-खुशी में रानी लेट गई। कुछ देर के बाद सर्प बनकर काल फिर आया और रानी को डस लिया। ज्यों ही सर्प ने डसा रानी को पता चल गया। रानी जोर से चिल्लाई। मुझे साँप ने डंस लिया। नौकर भागे। देखते ही देखते एक मोरी (पानी निकलने का छोटा छिद्र) में से वह सर्प घर से बाहर निकल गया। अपने गुरुदेव को पुकार कर रानी बेहोश हो गई।

करूणामय (कबीर) साहेब वहाँ प्रकट हो गए। लोगों को दिखाने के लिए मंत्र बोला और (वे तो बिना मंत्र भी जीवित कर सकते हैं, किसी जंत्र-मंत्र की आवश्यकता नहीं) इन्द्रमती को जीवित कर दिया। रानी ने बड़ा शुक्र मनाया कि हे बंदी छोड़ ! यदि आज आपकी शरण में नहीं होती तो मेरी मत्यु हो जाती। साहेब ने कहा कि इन्द्रमती इस काल को मैं तेरे घर में घुसने भी नहीं देता और यह तेरे ऊपर यह हमला भी नहीं करता। परन्तु तुझे विश्वास नहीं होता। तू यह सोचती कि मेरे ऊपर कोई आपत्ति नहीं आनी थी। गुरुजी ने मुझे बहका कर नाम दे दिया। इसलिए तेरे को थोड़ा-सा झटका दिखाया है, नहीं तो बेटी तेरे को विश्वास नहीं होता।

धर्मदास यहाँ घना अंधेरा, बिन परचय (शक्ति प्रदर्शन) जीव जम का चेरा।।

कबीर साहेब (करूणामय) ने कहा कि अब जब मैं चाहूँगा, तब तेरी मत्यु होगी। गरीबदास जी कहते हैं कि :-

गरीब, काल डरै करतार से, जय जय जय जगदीश। जौरा जौरी झाड़ती, पग रज डारे शीश।।

यह काल, कबीर परमेश्वर से डरता है और यह मौत कबीर साहेब के जूते झाड़ती है अर्थात् नौकर तुल्य है। फिर उस धूल को अपने सिर पर लगाती है कि आप जिसको मारने का आदेश दोगे उसके पास जाऊँगी, नहीं मैं नहीं जाऊँगी।

गरीब, काल जो पीसै पीसना, जौरा है पनिहार। ये दो असल मजूर हैं, मेरे साहेब के दरबार।।

यह काल जो यहाँ का 21 ब्रह्मण्ड का भगवान (ब्रह्म) है जो ब्रह्मा, विष्णु, महेश का पिता है। ये तो मेरे कबीर साहेब का आटा पीसता है अर्थात पक्का नौकर है और जौरा (मौत) मेरे कबीर साहेब का पानी भरती है अर्थात् एक विशेष नौकरानी है। यह दो असल मजूर मेरे साहेब के दरबार में हैं।

कुछ दिनों के बाद करूणामय (कबीर जी) साहेब फिर आए। रानी इन्द्रमती को सतनाम प्रदान किया। फिर कुछ समय के उपरान्त करूणामय साहेब ने रानी इन्द्रमती की अति श्रद्धा देखकर सारनाम दिया। परम पद की उपलब्धि करवाई। परमेश्वर करूणामय रूप से रानी के घर दर्शन देने जाते रहते थे तो इन्द्रमती प्रार्थना किया करती थी कि मेरे पति राजा को समझाओ मालिक, यह भी मान जाये। आपके चरणों में आ जाये तो मेरा जीवन सफल हो जाये। चन्द्रविजय से कबीर साहेब ने प्रार्थना की कि

चन्द्रविजय आप भी नाम लो, यह दो दिन का राज और ठाठ है। फिर चौरासी लाख योनियों में प्राणी चला जाएगा। चन्द्रविजय ने कहा कि भगवन मैं तो नाम लूं नहीं और आपकी शिष्या को मना करूँ नहीं, चाहे सारे खजाने को ही दान करो, चाहे किसी प्रकार का सत्संग करवाओ, मैं मना नहीं करूँगा। कबीर साहेब (करूणामय) ने पूछा आप नाम क्यों नहीं लोगे? चन्द्रविजय राजा ने कहा कि मैंने तो बड़े-बड़े राजाओं की पार्टियों में जाना पड़ता है। करूणामय (कबीर साहेब) ने कहा कि पार्टियों में जाने में नाम क्या बाधा करेगा? सभा में जाओ, वहाँ काजू खाओ, दूध पी लो, शरबत (जूस) पी लो, शराब मत प्रयोग करो। शराब पीना महापाप है। परन्तु राजा नहीं माना।

रानी की प्रार्थना पर करूणामय (कबीर) साहेब ने राजा को फिर समझाया कि नाम के बिना ये जीवन ऐसे ही व्यर्थ हो जायेगा। आप नाम ले लो। राजा ने फिर कहा कि गुरु जी मुझे नाम के लिए मत कहना। आपकी शिष्या को मैं मना नहीं करूँगा। चाहे कितना दान करे, कितना सत्संग करवाए। साहेब ने कहा कि बेटी इस दो दिन के झूठे सुख को देखकर इसकी बुद्धि भ्रष्ट हो चुकी है। तू प्रभु के चरणों में लगी रह। अपना आत्मकल्याण करवा। मत्यु के उपरान्त कोई किसी का पति नहीं, कोई किसी की पत्नी नहीं। दो दिन का सम्बन्ध है। अपना कर्म बना बेटी। जब इन्द्रमती 80 वर्ष की वद्धा हुई (कहाँ 40 साल की उम्र में मर जाना था)। जब शरीर भी हिलने लगा, तब करूणामय साहेब बोले अब बोल इन्द्रमती क्या चाहती है? चलना चाहती है सतलोक? इन्द्रमती ने कहा कि प्रभु तैयार हूँ, बिल्कुल तैयार हूँ दाता! करूणामय साहेब ने कहा कि तेरी पोते या पोती या किसी अन्य सदस्य में कोई ममता तो नहीं है? रानी ने कहा बिल्कुल नहीं साहेब। आपने ज्ञान ही ऐसा निर्मल दे दिया। इस गंदे लोक की क्या इच्छा करूँ ? कबीर साहेब (करूणामय) जी ने कहा कि चल बेटी। रानी प्राण त्याग गई।

परमेश्वर कबीर जी (करूणामय) रानी इन्द्रमती की आत्मा को ऊपर ले गए। इसी ब्रह्मण्ड में एक मानसरोवर है। उस मान सरोवर में इस आत्मा को स्नान कराना होता है। इन्द्रमती को वहाँ पर कुछ समय तक रखा। करूणामय रूप में कबीर परमेश्वर जी ने रानी से पूछा की तेरी कुछ इच्छा तो नहीं यदि इच्छा रही तो दुबारा जन्म लेना पड़ेगा। यदि मन में सन्तान व सम्पत्ति या पति, पत्नी आदि की इच्छा थोड़ी सी भी रह गई तो आत्मा सतलोक नहीं जा सकती। इन्द्रमती ने कहा साहेब आप तो अंतर्यामी हो, कोई इच्छा नहीं है। आपके चरणों की इच्छा है। लेकिन एक मन में शंका बनी हुई है कि मेरा जो पति था, उसने मुझे किसी भी धार्मिक कर्म के लिए कभी मना नहीं किया। नहीं तो आजकल के पति अपनी पत्नियों को बाधा कर देते हैं। यदि वह मुझे मना कर देता तो मैं आपके चरणों में नहीं लग पाती। मेरा कल्याण नहीं होता। उसका इस शुभ कर्म में सहयोग का कुछ लाभ मिलता हो तो कभी उस पर भी दया करना दाता। करूणामय जी ने देखा कि यह नादान इसके पीछे फिर अटक गई। साहेब बोले ठीक है बेटी, अभी तू दो चार वर्ष यहाँ रह।

अब दो वर्ष के बाद राजा भी मरने लगा। क्योंकि नाम ले नहीं रखा था। यम के दूत आए। राजा चौक में चक्कर खाकर गिर गया। यम के दूतों ने उसकी गर्दन को दबाया। राजा की टट्टी और पेशाब निकल गया। करूणायम (कबीर) परमेश्वर ने रानी को कहा कि देख तेरे राजा की क्या हालत हो रही है? वहाँ से कबीर परमेश्वर दिखा रहे हैं। तब रानी ने कहा कि देख लो दाता यदि उसका भक्ति में सहयोग का कोई फल बनता हो तो दया कर लो। रानी को फिर भी थोड़ी-सी ममता बनी थी। परमेश्वर कबीर (करूणामय) ने सोचा की यह फिर काल जाल में फँसेगी। यह सोचकर मानसरोवर से वहाँ गए जहाँ राजा चन्द्रविजय अपने महल में अचेत पड़ा था। यमदूत उसके प्राण निकाल रहे थे। कबीर परमेश्वर जी के आते ही यमदूत ऐसे आकाश में उड़ गए जैसे मुर्दे से गिद्ध उड़ जाते हैं। चन्द्रविजय

होश में आ गया। सामने करूणामय रूप में परमेश्वर कबीर जी खड़े थे। केवल चन्द्रविजय को दिखाई दे रहे थे, किसी अन्य को दिखाई नहीं दे रहे थे। चन्द्रविजय चरणों में गिर कर याचना करने लगा मुझे क्षमा कर दो दाता, मेरी जान बचाओ। क्योंकि उसने देखा कि तेरी जान जाने वाली है। (जब इस जीव की आँख खुलती है कि अब तो बात बिगड़ गई) राजा चन्द्र विजय गिड़गिड़ाता हुआ बोला मुझे क्षमा कर दो दाता, मेरी जान बचा लो मालिक। कबीर परमेश्वर ने कहा राजा आज भी वही बात है, उस दिन भी वही बात थी, नाम लेना होगा। राजा ने कहा मैं नाम ले लूँगा जी, अभी ले लूँगा नाम। कबीर परमेश्वर ने नाम उपदेश दिया तथा कहा कि अब मैं तुझे दो वर्ष की आयु दूँगा, यदि इसमें एक स्वांस भी खाली चला गया तो फिर कर्मदण्ड रह जाएगा।

कबीर, जीवन तो थोड़ा भला, जै सत सुमरण हो। लाख वर्ष का जीवना, लेखे धरे ना को।।

शुभ कर्म में सहयोग दिया हुआ पिछला कर्म और साथ में श्रद्धा से दो वर्ष के स्मरण से तथा तीनों नाम प्रदान करके कबीर साहेब चन्द्रविजय को भी पार कर ले गये। बोलो सतगुरु देव की जय ''जय बन्दी छोड़।''

प्रश्नः- धर्मदास जी ने कहा हे कबीर परमेश्वर! हमारे को तो ब्राह्मणों (विद्वानों) ने यही बताया था कि पाण्डवों की अश्वमेघ यज्ञ को श्री कष्ण भक्त सुदर्शन सुपच ने सफल की थी तथा भगवान कष्ण जी ने गीता में कहा है कि अर्जुन! युद्ध कर तुझे कोई पाप नहीं लगेगा। ये सर्व योद्धा मेरे द्वारा पहले से मार दिए गए हैं। तू निमित्त मात्र बन जा। यदि तू युद्ध में मारा गया तो स्वर्ग जाएगा, यदि युद्ध में जीत गया तो पथ्वी के राज्य का सुख भोगेगा।

उत्तरः- कबीर परमेश्वर ने कहा धर्मदास! सुदर्शन सुपच श्री कष्ण भक्त नहीं था वह पूर्ण ब्रह्म का उपासक था। सुन पाण्डवों के यज्ञ के सम्पूर्ण होने की कथा। कप्या निम्न पढ़ें पाठक जन परमेश्वर कबीर जी द्वारा बताया पाण्डव यज्ञ का प्रकरण जो धर्मदास जी ने स्वसम वेद के पद्य भाग में लिखा है (लेखक के शब्दों में निम्नः-)

।। पाण्डवों की यज्ञ में सुपच सुदर्शन द्वारा शंख बजाना।।

जैसा कि सर्व विदित है कि महाभारत के युद्ध में अर्जुन ने युद्ध करने से मना कर दिया था तथा शस्त्र त्याग कर युद्ध के मैदान में दोनों सेनाओं के बीच में खड़े रथ के पिछले हिस्से में आंखों से आँसू बहाता हुआ बैठ गया था। तब भगवान कष्ण के अन्दर प्रवेश काल शक्ति (ब्रह्म) अर्जुन को युद्ध करने की राय देने लगा था। तब अर्जुन ने कहा था कि भगवान यह घोर पाप मैं नहीं करूंगा। इससे अच्छा तो भिक्षा का अन्न भी खा कर गुजारा कर लेंगे। तब भगवान काल श्री कष्ण जी के शरीर में प्रवेश करके बोला था कि अर्जुन युद्ध कर। तुझे कोई पाप नहीं लगेगा। देखें गीता जी के अध्याय 11 के श्लोक 33, अध्याय 2 के श्लोक 37, 38 में।

महाभारत में लेख (प्रकरण) आता है कि कष्ण जी के कहने से अर्जुन ने युद्ध करना स्वीकार कर लिया। घमासान युद्ध हुआ। करोड़ों व्यक्ति व सर्व कौरव युद्ध में मारे गए और पाण्डव विजयी हुए। तब पाण्डव प्रमुख युधिष्ठिर को राज्य सिंहासन पर बैठाने के लिए स्वयं भगवान कष्ण ने कहा तो युधिष्ठिर ने यह कहते हुए गद्दी पर बैठने से मना कर दिया कि मैं ऐसे पाप युक्त राज्य को नहीं करूंगा। जिसमें करोड़ों व्यक्ति मारे गए थे। उनकी पत्नियाँ विधवा हो गई, करोड़ों बच्चे अनाथ हो गए, अभी तक उनके आँसू भी नहीं सूखे हैं। किसी प्रकार भी बात बनती न देख कर श्री कष्ण जी ने कहा कि आप भीष्म जी से राय लो। क्योंकि जब व्यक्ति स्वयं फैसला लेने में असफल रहे तब किसी स्वजन से विचार कर लेना

चाहिए। युधिष्ठिर ने यह बात स्वीकार कर ली। तब श्री कष्ण जी युधिष्ठिर को साथ ले कर वहाँ पहुँचे जहाँ पर श्री भीष्म शर (तीरों की) शैय्या (चारपाई) पर अंतिम स्वांस गिन रहे थे, वहाँ जा कर श्री कष्ण जी ने भीष्म से कहा कि युधिष्ठिर राज्य गद्दी पर बैठने से मना कर रहे हैं। कपा आप इन्हें राजनीति की शिक्षा दें।

भीष्म जी ने बहुत समझाया परंतु युधिष्ठिर अपने उद्देश्य ये विचलित नहीं हुआ। यही कहता रहा कि इस पाप से युक्त रुधिर से सने राज्य को भोग कर मैं नरक प्राप्ति नहीं चाहूँगा। श्री कष्ण जी ने कहा कि आप एक धर्म यज्ञ करो। जिससे आपको युद्ध में हुई हत्याओं का पाप नहीं लगेगा। इस बात पर युधिष्ठिर सहमत हो गया और एक धर्म यज्ञ की। फिर राज गद्दी पर बैठ गया। हस्तिनापुर का राजा बन गया।

प्रमाण सुखसागर के पहले स्कन्ध के आठवें तथा नौवें अध्याय से सहाभार पष्ठ नं. 48 से 53)

कुछ वर्षो पर्यन्त युधिष्ठिर को भयानक स्वपन आने शुरु हो गए। जैसे बहुत सी औरतें रोती-बिलखती हुई अपनी चूड़ियाँ तोड़ रहीं हैं तथा उनके मासूम बच्चे अपनी माँ के पास खड़े कुछ बैठे पिता-पिता कह कर रो रहे हैं मानों कह रहे हो हे राजन्! हमें भी मरवा दे, भेज दे हमारे पिता के पास। कई बार बिना शीश के धड़ दिखाई देते है। किसी की गर्दन कहीं पड़ी है, धड़ कहीं पड़ा है, हा-हा कार मची हुई है। युधिष्ठिर की नींद उचट जाती, घबरा कर बिस्तर पर बैठ कर हाँफने लग जाता। सारी-2 रात बैठ कर या महल में घूम कर व्यतीत करता है। एक दिन द्रौपदी ने बड़े पति की यह दशा देखी परेशानी का कारण पूछा तो युधिष्ठिर कुछ नहीं- कुछ नहीं कह कर टाल गए। जब द्रौपदी ने कई रात्रियों में युधिष्ठिर की यह दुर्दशा देखी तो एक दिन चारों (अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव) को बताया कि आपका बड़ा भाई बहुत परेशान है। कारण पूछो। तब चारों भाईयों ने बड़े भईया से प्रार्थना करके पूछा कि कप्या परेशानी का कारण बताओ। ज्यादा आग्रह करने पर अपनी सर्व कहानी सुनाई। पाँचों भाई इस परेशानी का कारण जानने के लिए भगवान श्रीकष्णजी के पास गए तथा बताया कि बड़े भईया युधिष्ठिर जी को भयानक स्वपन आ रहे हैं। जिनके कारण उनकी रात्रि की नींद व दिन का चैन व भूख समाप्त हो गई। कप्या कारण व समाधान बताएँ। सारी बात सुनकर श्री कष्ण जी बोले युद्ध में किए हुए पाप परेशान कर रहे हैं। इन पापों का निवारण यज्ञ से होता है।

गीता जी के अध्याय 3 के श्लोक 13 का हिन्दी अनुवाद : यज्ञ में प्रतिष्ठित ईष्ट (पूर्ण परमात्मा) को भोग लगाने के बाद बने प्रसाद को खाने वाले श्रेष्ठ पुरुष सब पापों से मुक्त हो जाते हैं जो पापी लोग अपना शरीर पोषण करने के लिये ही अन्न पकाते हैं वे तो पाप को ही खाते हैं अर्थात् यज्ञ करके सर्व पापों से मुक्त हो जाते हैं। और कोई चारा न देख कर पाण्डवों ने श्री कष्ण जी की सलाह स्वीकार कर ली। यज्ञ की तैयारी की गई। सर्व पथ्वी के मानव, ऋषि, सिद्ध, साधु व स्वर्ग लोक के देव भी आमन्त्रित करने को, श्री कष्ण जी ने कहा कि जितने अधिक व्यक्ति भोजन पाएंगें उतना ही अधिक पुण्य होगा। परंतु संतों व भक्तों से विशेष लाभ होता है उनमें भी कोई परम शक्ति युक्त संत होगा वह पूर्ण लाभ दे सकता है तथा यज्ञ पूर्ण होने का साक्षी एक पांच मुख वाला (पंचजन्य) शंख एक सुसज्जित ऊँचे आसन पर रख दिया जाएगा तथा जब इस यज्ञ में कोई परम शक्ति युक्त संत भोजन खाएगा तो यह शंख स्वयं आवाज करेगा। इतनी गूँज होगी की पूरी पथ्वी पर तथा स्वर्ग लोक तक आवाज सुनाई देगी।

यज्ञ की तैयारी हुई। निश्चित दिन को सर्व आदरणीय आमन्त्रित भक्तगण, अठासी हजार ऋषि, तेतीस करोड़ देवता, नौ नाथ, चौरासी सिद्ध, ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि पहुँच गए। यज्ञ कार्य शुरु हुआ। बाद में सब ने यज्ञ का बचा प्रसाद (भण्डारा) सर्व उपस्थित महानुभावों व भक्तों तथा जनसाधारण को

बरताया (खिलाया)। स्वयं भगवान कष्ण जी ने भी भोजन खा लिया। परंतु शंख नहीं बजा। शंख नहीं बजा तो यज्ञ सम्पूर्ण नहीं हुई। उस समय युधिष्ठिर ने श्री कष्ण जी से पूछा - हे मधुसूदन! शंख नहीं बजा। सर्व महापुरुषों व आगन्तुकों ने भोजन पा लिया। कारण क्या है? श्री कष्ण जी ने कहा कि इनमें कोई पूर्ण सन्त (सतनाम व सारनाम उपासक) नहीं है। तब युधिष्ठिर को बड़ा आश्चर्य हुआ कि इतने महा मण्डलेश्वर जिसमें वशिष्ठ मुनि, मार्कण्डेय, लोमष ऋषि, नौ नाथ (गोरखनाथ जैसे), चौरासी सिद्ध आदि-2 व स्वयं भगवान श्री कष्ण जी ने भी भोजन खा लिया। परंतु शंख नहीं बजा। इस पर कष्ण जी ने कहा ये सर्व मान बड़ाई के भूखे हैं। परमात्मा चाहने वाला कोई नहीं तथा अपनी मनमुखी साधना करके सिद्धि दिखा कर दुनियाँ को आकर्षित करते हैं। भोले लोग इनकी वाह-2 करते हैं तथा इनके इर्द-गिर्द मण्डराते हैं। ये स्वयं भी पशु जूनी में जाएंगे तथा अपने अनुयाईयों को नरक ले जाएंगे।

गरीब, साहिब के दरबार में, गाहक कोटि अनन्त। चार चीज चाहै हैं, रिद्धि सिद्धि मान महंत।।
गरीब, ब्रह्म रन्द्र के घाट को, खोलत है कोई एक। द्वारे से फिर जाते हैं, ऐसे बहुत अनेक।।
गरीब, बीजक की बातां कहैं, बीजक नाहीं हाथ। पृथ्वी डोबन उतरे, कह—कह मीठी बात।।
गरीब, बीजक की बातां कहैं, बीजक नाहीं पास। ओरों को प्रमोदही, अपन चले निरास।।

।।प्रमाण के लिए गीता जी के कुछ श्लोक।।

अध्याय 9 का श्लोक 20

त्रैविद्याः, माम्, सोमपाः, पूतपापाः, पूतपापाः, यज्ञैः, इष्टवा, स्वर्गतिम्, प्रार्थयन्ते,
ते, पुण्यम्, आसाद्य, सुरेन्द्रलोकम्, अश्नन्ति, दिव्यान्, दिवि, देवभोगान्।।20।।

अनुवाद : (त्रैविद्याः) तीनों वेदोंमें विधान (सोमपाः) सोमरसको पीनेवाले (पूतपापाः) पापरहित पुरुष (माम्) मुझको (यज्ञैः) यज्ञोंके द्वारा (इष्टवा) पूज्य देव के रूप में पूज कर (स्वर्गतिम्) स्वर्गकी प्राप्ति (प्रार्थयन्ते) चाहते हैं (ते) वे पुरुष (पुण्यम्) अपने पुण्योंके फलरूप (सुरेन्द्रलोकम्) स्वर्गलोकको (आसाद्य) प्राप्त होकर (दिवि) स्वर्गमें (दिव्यान्) दिव्य (देवभोगान्) देवताओंके भोगोंको (अश्नन्ति) भोगते हैं।

केवल हिन्दी अनुवाद : तीनों वेदोंमें विधान सोमरसको पीनेवाले पापरहित पुरुष मुझको यज्ञोंके द्वारा पूज्य देव के रूप में पूज कर स्वर्गकी प्राप्ति चाहते हैं वे पुरुष अपने पुण्योंके फलरूप स्वर्गलोकको प्राप्त होकर स्वर्गमें दिव्य देवताओंके भोगोंको भोगते हैं।

अध्याय 9 का श्लोक 21

ते, तम्, भुक्त्वा, स्वर्गलोकम्, विशालम्, क्षीणे, पुण्ये, मर्त्यलोकम्, विशन्ति,
एवम्, त्रयीधर्मम्, अनुप्रपन्नाः, गतागतम्, कामकामाः, लभन्ते।।21।।

अनुवाद : (ते) वे (तम्) उस (विशालम्) विशाल (स्वर्गलोकम्) स्वर्गलोकको (भुक्त्वा) भोगकर (पुण्ये) पुण्य (क्षीणे) क्षीण होनेपर (मर्त्यलोकम्) मृत्युलोकको (विशन्ति) प्राप्त होते हैं। (एवम्) इस प्रकार (त्रयीधर्मम्) तीनों वेदोंमें कहे हुए पूजा कर्मों का (अनुप्रपन्नाः) आश्रय लेनेवाले और (कामकामाः) भोगोंकी कामनावस (गतागतम्) बार—बार आवागमनको (लभन्ते) प्राप्त होते हैं।

केवल हिन्दी अनुवाद : वे उस विशाल स्वर्गलोकको भोगकर पुण्य क्षीण होनेपर मत्युलोकको प्राप्त होते हैं। इस प्रकार तीनों वेदोंमें कहे हुए पूजा कर्मों का आश्रय लेनेवाले और भोगोंकी कामनावस बार-बार आवागमन को प्राप्त होते हैं।

अध्याय 16 का श्लोक 17

आत्सम्भाविताः, स्तब्धाः, धनमानमदान्विताः, यजन्ते, नामयज्ञैः, ते, दम्भेन, अविधिपूर्वकम्।।17।।

अनुवाद : (ते) वे (आत्मसम्भाविताः) अपनेआपको ही श्रेष्ठ माननेवाले (स्तब्धाः) घमण्डी पुरुष (धनमानमदान्विताः) धन और मानके मदसे युक्त होकर (नामयज्ञैः) केवल नाममात्रके यज्ञोंद्वारा (दम्भेन) पाखण्डसे (अविधिपूर्वकम्) शास्त्रविधि रहित पूजन करते हैं।

केवल हिन्दी अनुवाद : वे अपनेआपको ही श्रेष्ठ माननेवाले घमण्डी पुरुष धन और मानके मदसे युक्त होकर केवल नाममात्रके यज्ञोंद्वारा पाखण्डसे शास्त्रविधि रहित पूजन करते हैं।

अध्याय 16 का श्लोक 18

अहंकारम्, बलम्, दर्पम्, कामम्, क्रोधम्, च, संश्रिताः,
माम्, आत्मपरदेहेषु, प्रद्विषन्तः, अभ्यसूयकाः।।18।।

अनुवाद : (अहंकारम्) अहंकार (बलम्) बल (दर्पम्) घमण्ड (कामम्) कामना और (क्रोधम्) क्रोधादिके (संश्रिताः) परायण (च) और (अभ्यसूयकाः) दूसरोंकी निन्दा करनेवाले पुरुष (आत्मपरदेहेषु) प्रत्येक शरीर में परमात्मा आत्मा सहित तथा (माम्) मुझसे (प्रद्विषन्तः) द्वेष करनेवाले होते हैं।

केवल हिन्दी अनुवाद : अहंकार बल घमण्ड कामना और क्रोधादिके परायण और दूसरोंकी निन्दा करनेवाले पुरुष प्रत्येक शरीर में परमात्मा आत्मा सहित तथा मुझसे द्वेष करनेवाले होते हैं।

अध्याय 16 का श्लोक 19

तान् अहम्, द्विषतः, क्रूरान्, संसारेषु, नराधमान्,
क्षिपामि, अजस्त्रम्, अशुभान्, आसुरीषु, एव, योनिषु।।19।।

अनुवाद : (तान्) उन (द्विषतः) द्वेष करनेवाले (अशुभान्) पापाचारी और (क्रूरान्) क्रूरकर्मी (नराधमान्) नराधमोंको (अहम्) मैं (संसारेषु) संसारमें (अजस्त्रम्) बार–बार (आसुरीषु) आसुरी (योनिषु) योनियोंमें (एव) ही (क्षिपामि) डालता हूँ।

केवल हिन्दी अनुवाद : उन द्वेष करनेवाले पापाचारी और क्रूरकर्मी नराधमोंको मैं संसारमें बार-बार आसुरी योनियोंमें ही डालता हूँ।

अध्याय 16 का श्लोक 20

आसुरीम्, योनिम्, आपन्नाः, मूढाः, जन्मनि, जन्मनि,
माम् अप्राप्य, एव, कौन्तेय, ततः, यान्ति, अधमाम्, गतिम्।।20।।

अनुवाद : (कौन्तेय) हे अर्जुन! (मूढाः) वे मूर्ख (माम्) मुझको (अप्राप्य) न प्राप्त होकर (एव) ही (जन्मनि) जन्म (जन्मनि) जन्ममें (आसुरीम्) आसुरी (योनिम्) योनिको (आपन्नाः) प्राप्त होते हैं फिर (ततः) उससे भी (अधमाम्) अति नीच (गतिम्) गतिको (यान्ति) प्राप्त होते हैं अर्थात् घोर नरकोंमें पड़ते हैं।

केवल हिन्दी अनुवाद : हे अर्जुन! वे मूर्ख मुझको न प्राप्त होकर ही जन्म जन्ममें आसुरी योनिको प्राप्त होते हैं फिर उससे भी अति नीच गतिको प्राप्त होते हैं अर्थात् घोर नरकोंमें पड़ते हैं।

अध्याय 16 का श्लोक 23

यः, शास्त्रविधिम्, उत्सृज्य, वर्तते, कामकारतः,
न, सः, सिद्धिम्, अवाप्नोति, न, सुखम्, न, पराम्, गतिम्।।23।।

अनुवाद : (यः) जो पुरुष (शास्त्रविधिम्) शास्त्रविधिको (उत्सृज्य) त्यागकर (कामकारतः) अपनी इच्छासे मनमाना (वर्तते) आचरण करता है (सः) वह (न) न (सिद्धिम्) सिद्धिको (अवाप्नोति) प्राप्त होता है (न)न (पराम्)परम (गतिम्)गतिको और(न) न (सुखम्) सुखको ही।

केवल हिन्दी अनुवाद : जो पुरुष शास्त्रविधिको त्यागकर अपनी इच्छासे मनमाना आचरण करता है वह न सिद्धिको प्राप्त होता है न परम गतिको और न सुखको ही।

''शेष कथा''

श्री कष्ण भगवान ने अपनी शक्ति से युधिष्ठिर को उन सर्व महा मण्डलेश्वरों के आगे होने वाले जन्म दिखाए जिसमें किसी ने कैंचवे का, किसी ने भेड़-बकरी, भैंस व शेर आदि के रूप धारण किए थे।

यह सब देख कर युधिष्ठिर ने कहा - हे भगवन! फिर तो पथ्वी संत रहित हो गई है।। भगवान कष्ण जी ने कहा जब पथ्वी संत रहित हो जाएगी तो यहाँ आग लग जाएगी। सर्व जीव-जन्तु आपस में लड़ मरेंगे। यह तो पूरे संत की शक्ति से सन्तुलन बना रहता है। समय-समय पर मैं (भगवान विष्णु) पथ्वी पर आ कर राक्षस वत्ति के लोगों को समाप्त करता हूँ जिससे संत सुखी हो जाते है। जिस प्रकार जमींदार अपनी फसल से हानि पहुँचने वाले अन्य पौधों को जो झाड़-खरपतवार आदि को काट-काट कर बाहर डाल देता है तब वह फसल स्वतन्त्रता पूर्वक फलती-फूलती है। यानी ये संत उस फसल में सिचांई का सुख प्रदान करते हैं। पूर्ण संत सबको समान सुख देते हैं। जिस प्रकार वर्षा व सिंचाई का जल दोनों प्रकार के पौधों (फसल व खरपतवार) का पोषण करते हैं। उनमें सर्व जीव के प्रति दया भाव होता है। अब मैं आपको पूर्ण संत के दर्शन करवाता हूँ। एक महात्मा काशी में रहते हैं। उसको बुलवाना है। तब युधिष्ठिर ने कहा कि उस ओर संतों को आमन्त्रित करने का कार्य भीमसेन को सौंपा था। पूछते हैं कि वह उन महात्मा तक पहुँचा या नहीं। भीमसेन को बुलाकर पूछा तो उसने बताया कि मैं उस से मिला था। उनका नाम स्वपच सुदर्शन है। बाल्मीकि जाति में गहस्थी संत हैं। एक झौंपड़ी में रहता है। उन्होंने यज्ञ में आने से मना कर दिया। इस पर श्री कष्ण जी ने कहा कि संत मना नहीं किया करते। सर्व वार्ता जो उनके साथ हुई है वह बताओ।

तब भीम सेन ने आगे बताया कि मैंने उनको आमन्त्रित करते हुए कहा कि हे संत परवर ! हमारी यज्ञ में आने का कष्ट करना। उनको पूरा पता बताया। उसी समय वे (सुदर्शन संत जी) कहने लगे भीम सैन आप के पाप के अन्न को खाने से संतों को दोष लगेगा। करोड़ों सैनिकों की हत्या करके आपने तो घोर पाप कर रखा है। आज आप राज्य का आनन्द ले रहे हो। युद्ध में वीरगति को प्राप्त सैनिकों की विधवा पत्नी व अनाथ बच्चे रह-रह कर अपने पति व पिता को याद करके फूट-फूट कर घंटों रोते हैं। बच्चे अपनी माँ से लिपट कर पूछ रहे हैं - माँ, पापा छुट्टी नहीं आए? कब आएंगे? हमारे लिए नए वस्त्र लाएंगे। दूसरी लड़की कहती है कि मेरे लिए नई साड़ी लाएंगे। बड़ी होने पर जब मेरी शादी होगी तब मैं उसे बाँधकर ससुराल जाऊँगी। वह लड़का (जो दस वर्ष की आयु का है) कहता है कि मैं अब की बार पापा (पिता जी) से कहूँगा कि आप नौकरी पर मत जाना। मेरी माँ तथा भाई-बहन आपके बिना बहुत दुःख पाते हैं। माँ तो सारा दिन-रात आपकी याद करके जब देखो एकांत स्थान पर रो रही होती है। या तो हम सबको अपने पास बुला लो या आप हमारे पास रहो। छोड़ दो नौकरी को। मैं जवान हो गया हूँ। आपकी जगह मैं फौज में जा कर देश सेवा करूँगा। आप अपने परिवार में रहो। आने दो पिता जी को, बिल्कुल नहीं जाने दूँगा। (उन बच्चों को दुःखी होने से बचाने के लिए उनकी माँ ने उन्हें यह नहीं बताया कि आपके पिता जी युद्ध में मर चुके हैं क्योंकि उस समय वे बच्चे अपने मामा के घर गए हुए थे। केवल छोटा बच्चा जो डेढ़ वर्ष की आयु का था वही घर पर था। अन्य बच्चों को जान बूझ कर नहीं बुलाया था।)

इस प्रकार उन मासूम बच्चों की आपसी वार्ता से दुःखी होकर उनकी माता का हृदय पति की याद के दुःख से भर आया। उसे हल्का करने के लिए (रोने के लिए) दूसरे कमरे में जा कर फूट-फूट कर रोने लगी। तब सारे बच्चे माँ के ऊपर गिरकर रोने लगे। सम्बन्धियों ने आकर शांत करवाया। कहा कि

बच्चों को स्पष्ट बताओ कि आपके पिता जी युद्ध में वीरगति को प्राप्त हो गए। जब बच्चों को पता चला कि हमारे पापा (पिता जी) अब कभी नहीं आएंगे तब उस स्वार्थी राजा को कोसने लगे जिसने अपने भाई बटवारे के लिए दुनियाँ के लालों का खून पी लिया। यह कोई देश रक्षा की लड़ाई भी नहीं थी जिसमें हम संतोष कर लेते कि देश के हित में प्राण त्याग दिए हैं। इस खूनी राजा ने अपने ऐशो-आराम के लिए खून की नदी बहा दी। अब उस पर मौज कर रहा है। आगे संत सुदर्शन (सुपच) बता रहे हैं कि भीम ऐसे-2 करोड़ों प्राणी युद्ध की पीड़ा से पीड़ित हैं। उनकी हाय आपको चैन नहीं लेने देगी चाहे करोड़ यज्ञ करो। ऐसे दुष्ट अन्न को कौन खाए ? यदि मुझे बुलाना चाहते हो तो मुझे पहले किए हुए सौ (100) यज्ञों का फल देने का संकल्प करो अर्थात् एक सौ यज्ञों का फल मुझे दो तब मैं आपके भोजन पाऊँ।

सुदर्शन जी के मुख से इस बात को सुन कर भीम ने बताया कि मैं बोला आप तो कमाल के व्यक्ति हो, सौ यज्ञों का फल मांग रहे हो। यह हमारी दूसरी यज्ञ है। आपको सौ का फल कैसे दें? इससे अच्छा तो आप मत आना। आपके बिना कौन सी यज्ञ सम्पूर्ण नहीं होगी। जब स्वयं भगवान कष्ण जी हमारे साथ हैं। तो तेरे न आने से क्या यज्ञ पूर्ण नहीं होगा। सर्व वार्ता सुन कर श्री कष्ण जी ने कहा भीम संतों के साथ ऐसा आपत्तिजनक व्यवहार नहीं करना चाहिए। सात समुद्रों का अंत पाया जा सकता है परंतु सतगुरु (कबीर साहेब) के संत का पार नहीं पा सकते। उस महात्मा सुदर्शन वाल्मीकि के एक बाल के समान तीन लोक भी नहीं हैं। मेरे साथ चलो, उस परमपिता परमात्मा के प्यारे हंस को लाने के लिए। तब पाँचों पाण्डव व श्री कष्ण भगवान स्वपच सुदर्शन की झोंपड़ी की ओर रथ में बैठकर चले। एक योजन अर्थात् 12 किलोमीटर पहले रथ से उतरकर नंगे पैरों चले तथा रथ को खाली लेकर रथवान पीछे-पीछे चला।

उस समय स्वयं कबीर साहेब सुदर्शन सुपच का रूप बना कर झोपड़ी में बैठ गए व सुदर्शन को अपनी गुप्त प्रेरणा से मन में संकल्प उठा कर कहीं दूर के संत या भक्त से मिलने भेज दिया जिसमें आने व जाने में कई रोज लगने थे। तब सुदर्शन के रूप में सतगुरु की चमक व शक्ति देख कर सर्व पाण्डव बहुत प्रभावित हुए। स्वयं श्रीकष्णजी ने लम्बी दण्डवत् प्रणाम की। तब देखा देखी सर्व पाण्डवों ने भी ऐसा ही किया। कष्ण जी की तरफ नजर करके सुपच सुदर्शन ने आदर पूर्वक कहा कि - हे त्रिभुवननाथ! आज इस दीन के द्वार पर कैसे? मेरा अहोभाग्य है कि आज दीनानाथ विश्वम्भरनाथ मुझ तुच्छ को दर्शन देने स्वयं चल कर आए हैं। सबको आदर पूर्वक बैठा दिया तथा आने का कारण पूछा। उस समय श्री कष्ण जी ने कहा कि हे जानी-जान! आप सर्व गति (स्थिति) से परिचित हैं। पाण्डवों ने यज्ञ की है। वह आपके बिना सम्पूर्ण नहीं हो रही है। कपा इन्हें कतार्थ करें। उसी समय वहां उपस्थित भीम की ओर संकेत करते हुए सुदर्शन रूप धारी परमेश्वर जी ने कहा कि यह वीर मेरे पास आया था तथा अपनी मजबूरी से इसे अवगत करवाया था। उस समय श्री कष्ण जी ने कहा कि - हे पूर्णब्रह्म! आपने स्वयं अपनी वाणी में कहा है कि -

''संत मिलन को चालिए, तज माया अभिमान। जो–जो पग आगे धरै, सो–सो यज्ञ समान।।''

आज पांचों पाण्डव राजा हैं तथा मैं स्वयं द्वारिकाधीश आपके दरबार में राजा होते हुए भी नंगे पैरों उपस्थित हूँ। अभिमान का नामों निशान भी नहीं है तथा स्वयं भीम ने भी खड़ा हो कर उस दिन कहे हुए अपशब्दों की चरणों में पड़ कर क्षमा याचना की। श्री कष्ण जी ने कहा हे नाथ! आज यहाँ आपके दर्शनार्थ आए आपके छः सेवकों के कदमों के यज्ञ समान फल को स्वीकार करते हुए सौ आप रखो तथा शेष हम भिक्षुकों को दान दीजिए ताकि हमारा भी कल्याण हो। इतना आधीन भाव सर्व उपस्थित जनों में देख कर जगतगुरु साहेब करूणामय सुदर्शन रूप में अति प्रसन्न हुए।

कबीर, साधू भूखा भाव का, धन का भूखा नाहिं।जो कोई धन का भूखा, वो तो साधू नाहिं।।

उठ कर उनके साथ चल पड़े। जब सुदर्शन जी यज्ञशाला में पहुँचे तो चारों ओर एक से एक ऊँचे सुसज्जित आसनों पर विराजमान महा मण्डलेश्वर सुदर्शन जी के रूप व वेश (दोहरी धोती घुटनों से थोड़ी नीचे तक, छोटी-2 दाड़ी, सिर के बिखरे केश न बड़े न छोटे, टूटी-फूटी जूती। मैले से कपड़े, तेजोमय शरीर) को देखकर अपने मन में सोच रहे हैं कि ऐसे अपवित्र व्यक्ति से शंख सात जन्म भी नहीं बज सकता है। यह तो हमारे सामने ऐसे है जैसे सूर्य के सामने दीपक। श्रीकष्ण जी ने स्वयं उस महात्मा का आसन अपने हाथों लगाया (बिछाया) क्योंकि श्री कष्ण जी श्रेष्ठ आत्मा हैं, (भगवान है) उन्होंने सुदामा व भिलनी को भी हृदय से चाहा। यहाँ तो स्वयं परमेश्वर पूर्णब्रह्म सतपुरुष, अकाल मूर्ति आए हैं। फिर द्रौपदी से कहा कि हे बहन! सुदर्शन महात्मा जी आए हैं, भोजन तैयार करो। बहुत पहुँचे हुए संत हैं। द्रौपदी देख रही है कि संत लक्षण तो एक भी नहीं दिखाई देते हैं। यह तो एक दरिद्र गहस्थी व्यक्ति है। न तो वस्त्र भगवां, न गले में माला, न तिलक, न सिर पर बड़ी जटा, न मुण्ड ही मुण्डवा रखा और न ही कोई चिमटा, झोली, कमण्डल लिए हुए था। श्री कष्ण जी के कहते ही स्वादिष्ट भोजन कई प्रकार का बनाकर एक सुन्दर थाल (चांदी का) में परोस कर सुदर्शन जी के सामने रख कर द्रोपदी ने मन में विचार किया कि आज तो यह भक्त भोजन को खाएगा तो ऊँगली चाटता रह जाएगा। जिन्दगी में ऐसा भोजन कभी नहीं खाया होगा।

सुदर्शन जी ने नाना प्रकार के भोजन को थाली में इक्ट्ठा किया तथा खिचड़ी सी बनाई। उस समय द्रौपदी ने देखा कि इसने तो सारा भोजन (खीर, खांड, हलुवा, सब्जी, दही, दही-बड़े आदि) घोल कर एक कर लिया। तब मन में दुर्भावना पूर्वक विचार किया कि इस मूर्ख हब्शी ने तो खाना खाने का भी ज्ञान नहीं। यह काहे का संत? कैसा शंख बजाएगा। (क्योंकि खाना बनाने वाली स्त्री की यह भावना होती है कि मैं ऐसा स्वादिष्ट भोजन बनाऊँ कि खाने वाला मेरे भोजन की प्रशंसा कई जगह करे)। प्रत्येक बहन की यही आशा होती है।

{वह बेचारी एक घंटे तक धुएँ से आँखें खराब करे और मेरे जैसा कह दे कि नमक तो है ही नहीं, तब उसका मन बहुत दुःखी होता है। इसलिए संत जैसा मिल जाए उसे खा कर सराहना ही करते हैं। यदि कोई न खा सके तो नमक कह कर 'संत' नहीं मांगता। संतों ने नमक का नाम राम–रस रखा हुआ है। कोई ज्यादा नमक खाने का अभ्यस्त हो तो कहेगा कि भईया– रामरस लाना। घर वालों को पता ही न चले कि क्या मांग रहा है? क्योंकि सतसंग में सेवा में अन्य सेवक ही होते हैं। न ही भोजन बनाने वालों को दुःख हो। एक समय एक नया भक्त किसी सतसंग में पहली बार गया। उसमें किसी ने कहा कि भक्त जी रामरस लाना। दूसरे ने भी कहा कि रामरस लाना तथा थोड़ा रामरस अपनी हथेली पर रखवा लिया। उस नए भक्त ने खाना खा लिया था। परंतु पंक्ति में बैठा अन्य भक्तों के भोजन पाने का इंतजार कर रहा था कि इकट्ठे ही उठेंगे। यह भी एक औपचारिकता सतसंग में होती है। उसने सोचा रामरस कोई खास मीठा खाद्य पदार्थ होगा। यह सोच कर कहा मुझे भी रामरस देना। तब सेवक ने थोड़ा सा रामरस (नमक) उसके हाथ पर रख दिया। तब वह नया भक्त बोला – ये के कान कै लाना है, चौखा सा (ज्यादा) रखदे। तब उस सेवक ने दो तीन चमच्च रख दिया। उस नए भक्त ने उस बारीक नमक को कोई खास मीठा खाद्य प्रसाद समझ कर फांका मारा। तब चुपचाप उठा तथा बाहर जा कर कुल्ला किया। फिर किसी भक्त से पूछा रामरस किसे कहते हैं? तब उस भक्त ने बताया कि नमक को रामरस कहते हैं। तब वह नया भक्त कहने लगा कि मैं भी सोच रहा था कि कहें तो रामरस परंतु है बहुत खारा। फिर विचार आया कि हो सकता है नए भक्तों पर परमात्मा प्रसन्न नहीं हुए हों। इसलिए खारा लगता हो। मैं एक बार फिर कोशिश करता, अच्छा हुआ जो मैंने आपसे स्पष्ट कर लिया। फिर

उसे बताया गया कि नमक को रामरस किस लिए कहते हैं ?}

सुपच सुदर्शन जी ने थाली वाले मिले हुए उस सारे भोजन को पाँच ग्रास बना कर खा लिया। पाँच बार शंख ने आवाज की। उसके पश्चात् शंख ने आवाज नहीं की।

व्यंजन छतीसों परोसिया जहाँ द्रौपदी रानी। बिन आदर सतकार के, कही शंख न बानी।।
पंच गिरासी वाल्मीकि, पंचै बर बोले। आगे शंख पंचायन, कपाट न खोले।।
बोले कृष्ण महाबली, त्रिभुवन के साजा। बाल्मिक प्रसाद से, कण कण क्यों न बाजा।।
द्रोपदी सेती कृष्ण देव, जब ऐसे भाखा। बाल्मिक के चरणों की, तेरे न अभिलाषा।।
प्रेम पंचायन भूख है, अन्न जग का खाजा। ऊँच नीच द्रोपदी कहा, शंख कण कण यूँ नहीं बाजा।।
बाल्मिक के चरणों की, लई द्रोपदी धारा। शंख पंचायन बाजीया, कण–कण झनकारा।।

युधिष्ठर जी श्री कष्ण जी के पास आए तथा कहा हे भगवन्! आप की कपा से शंख ने आवाज की है हमारा कार्य पूर्ण हुआ। श्री कष्ण जी ने सोचा कि इन महात्मा सुदर्शन के भोजन खा लेने से भी शंख अखण्ड क्यों नहीं बजा? फिर अपनी दिव्य दष्टि से देखा ? तो पाया कि द्रोपदी के मन में दोष है जिस कारण से शंख ने अखण्ड आवाज नहीं की केवल पांच बार आवाज करके मौन हो गया है। श्री कष्ण जी ने कहा युधिष्ठर यह शंख बहुत देर तक बजना चाहिए तब यज्ञ पूर्ण होगी। युधिष्ठर ने कहा भगवन्! अब कौन संत शेष है जिसे लाना होगा। श्री कष्ण जी ने कहा युधिष्ठर इस सुदर्शन संत से बढ़कर कोई भी सत्यभक्ति युक्त संत नहीं है। इसके एक बाल समान तीनों लोक भी नहीं हैं। अपने घर में ही दोष है उसे शुद्ध करते हैं। श्री कष्ण जी ने द्रौपदी से कहा - द्रौपदी, भोजन सब प्राणी अपने-2 घर पर रूखा-सूखा खा कर ही सोते हैं। आपने बढ़िया भोजन बना कर अपने मन में अभिमान पैदा कर लिया। बिना आदर सत्कार के किया हुआ धार्मिक अनुष्ठान (यज्ञ, हवन, पाठ) सफल नहीं होता। आपने इस साधारण से व्यक्ति को क्या समझ रखा है? यह पूर्णब्रह्म हैं। इसके एक बाल के समान तीनों लोक भी नहीं हैं। आपने अपने मन में इस महापुरुष के बारे में गलत विचार किए हैं उनसे आपका अन्तःकरण मैला (मलिन) हो गया है। इनके भोजन ग्रहण कर लेने से तो यह शंख की स्वर्ग तक आवाज जाती तथा सारा ब्रह्मण्ड गूंज उठता। यह केवल पांच बार बोला है। इसलिए कि आपका भ्रम दूर हो जाए क्योंकि और किसी ऋषि के भोजन पाने से तो यह टस से मस भी नहीं हुआ। आप अपना मन साफ करके इन्हें पूर्ण परमात्मा समझकर इनके चरणों को धो कर पीओ, ताकी तेरे हृदय का मैल (पाप) साफ हो जाए।

उसी समय द्रौपदी ने अपनी गलती को स्वीकार करते हुए संत से क्षमा याचना की और सुपच सुदर्शन के चरण अपने हाथों धो कर चरणामत बनाया। रज भरे (धूलि युक्त) जल को पीने लगी। जब आधा पी लिया तब भगवान कष्ण जी ने कहा द्रौपदी कुछ अमत मुझे भी दे दो ताकि मेरा भी कल्याण हो। यह कह कर कष्ण जी ने द्रौपदी से आधा बचा हुआ चरणामत पीया। उसी समय वही पंचायन शंख इतने जोरदार आवाज से बजा कि स्वर्ग तक ध्वनि सुनि। तब पाण्डवों की वह यज्ञ सफल हुई।

प्रमाण के लिए अमत वाणी(पारख का अंग)

गरीब, सुपच शंक सब करत हैं, नीच जाति बिश चूक। पौहमी बिगसी स्वर्ग सब, खिले जो पर्वत रूंख।।
गरीब, करि द्रौपदी दिलमंजना, सुपच चरण पी धोय। बाजे शंख सर्व कला, रहे अवाजं गोय।।
गरीब, द्रौपदी चरणामृत लिये, सुपच शंक नहीं कीन। बाज्या शंख अखंड धुनि, गण गंधर्व ल्यौलीन।।
गरीब, फिर पंडौं की यज्ञ में, शंख पचायन टेर। द्वादश कोटि पंडित जहां, पड़ी सभन की मेर।।
गरीब, करी कृष्ण भगवान कूं, चरणामृत स्यौं प्रीत। शंख पंचायन जब बज्या, लिया द्रोपदी सीत।।

गरीब, द्वादश कोटि पंडित जहां, और ब्रह्मा विष्णु महेश। चरण लिये जगदीश कूं, जिस कूं रटता शेष।।
गरीब, वाल्मीकि के बाल समि, नाहीं तीनौं लोक। सुर नर मुनि जन कृष्ण सुधि, पंडौं पाई पोष।।
गरीब, वाल्मीकि बैंकुठ परि, स्वर्ग लगाई लात। शंख पचायन घुरत हैं, गण गंर्धव ऋषि मात।।
गरीब, स्वर्ग लोक के देवता, किन्हैं न पूरया नाद। सुपच सिंहासन बैठतैं, बाज्या अगम अगाध।।
गरीब, पंडित द्वादश कोटि थे, सहिदे से सुर बीन। संहस अठासी देव में, कोई न पद में लीन।
गरीब, बाज्या शंख स्वर्ग सुन्या, चौदह भवन उचार। तेतीसौं तत्त न लह्या, किन्हैं न पाया पार।।

।। अचला का अंग।।

गरीब, सुपच रूप धरि आईया, सतगुरु पुरुष कबीर। तीन लोक की मेदनी, सुर नर मुनिजन भीर।।97।।
गरीब, सुपच रूप धरि आईया, सब देवन का देव। कृष्णचन्द्र पग धोईया, करी तास की सेव।।98।।
गरीब, पांचौं पंडौं संग हैं, छठ्ठे कृष्ण मुरारि। चलिये हमरी यज्ञ में, समर्थ सिरजनहार।।99।।
गरीब, सहंस अठासी ऋषि जहां, देवा तेतीस कोटि। शंख न बाज्या तास तैं, रहे चरण में लोटि।।100।।
गरीब, पंडित द्वादश कोटि हैं, और चौरासी सिद्ध। शंख न बाज्या तास तैं, पिये मान का मध।।101।।
गरीब, पंडौं यज्ञ अश्वमेघ में, सतगुरु किया पियान। पांचौं पंडौं संग चलैं, और छठा भगवान।।102।।
गरीब, सुपच रूप को देखि करि, द्रौपदी मानी शंक। जानि गये जगदीश गुरु, बाजत नाहीं शंख।।103।।
गरीब, छप्पन भोग संजोग करि, कीनें पांच गिरास। द्रौपदी के दिल दुई हैं, नाहीं दृढ़ विश्वास।।104।।
गरीब, पांचौं पंडौं यज्ञ करी, कल्पवृक्ष की छांहिं। द्रौपदी दिल बंक हैं, कण कण बाज्या नांहि।।105।।
गरीब, छप्पन भोग न भोगिया, कीन्हें पंच गिरास। खड़ी द्रौपदी उनमुनी, हरदम घालत श्वास।।107।।
गरीब, बोलै कृष्ण महाबली, क्यूं बाज्या नहीं शंख। जानराय जगदीश गुरु, काढत है मन बंक।।108।।
गरीब, द्रौपदी दिल कूं साफ करि, चरण कमल ल्यौ लाय। वाल्मीकि के बाल सम, त्रिलोकी नहीं पाय।।109।।
गरीब, चरण कमल कूं धोय करि, ले द्रौपदी प्रसाद। अंतर सीना साफ होय, जरैं सकल अपराध।।110।।
गरीब, बाज्या शंख सुभान गति, कण कण भई अवाज। स्वर्ग लोक बानी सुनी, त्रिलोकी में गाज।।111।।
गरीब, पंडौं यज्ञ अश्वमेघ में, आये नजर निहाल। जम राजा की बंधि में, खल हल पर्या कमाल।।113।।

''अन्य वाणी सतग्रन्थ से''

तेतीस कोटि यज्ञ में आए सहंस अठासी सारे, द्वादश कोटि वेद के वक्ता, सुपच का शंख बज्या रे।।

''अर्जुन सहित पाण्डवों को युद्ध में की गई हिंसा के पाप लगे''

परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को बताया कि उपरोक्त विवरण से सिद्ध हुआ कि पाण्डवों को युद्ध की हत्याओं का पाप लगा। आगे सुन और सुनाता हूँ :-

दुर्वासा ऋषि के शाप वश यादव कुल आपस में लड़कर प्रभास क्षेत्र में यमुना नदी के किनारे नष्ट हो गया। श्री कष्ण जी भगवान को एक शिकारी ने पैर में विषाक्त तीर मार कर घायल कर दिया था। उस समय श्री कष्ण जी ने उस शिकारी को बताया कि आप त्रेता युग में सुग्रीव के बड़े भाई बाली थे तथा मैं रामचन्द्र था। आप को मैंने धोखा करके वक्ष की ओट लेकर मारा था। आज आपने वह बदला (प्रतिशोध) चुकाया है। पाँचों पाण्डवों को पता चला कि यादव आपस में लड़ मरे हैं वे द्वारिका पहुँचे। वहाँ गए जहाँ पर श्री कष्ण जी तीर से घायल तड़फ रहे थे। पाँचों पाण्डवों के धार्मिक गुरू श्री कष्ण जी थे। श्री कष्ण जी ने पाण्डवों से कहा! आप मेरे अतिप्रिय हो। मेरा अन्त समय आ चुका है। मैं कुछ ही समय का मेहमान हूँ। मैं आपको अन्तिम उपदेश देना चाहता हूँ कप्या ध्यान पूर्वक सुनों। यह कह कर श्री कष्ण जी ने कहा (1) आप द्वारिका की स्त्रियों को इन्द्रप्रस्थ ले जाना। यहाँ कोई नर यादव शेष नहीं

बचा है (2) आप अति शीघ्र राज्य त्याग कर हिमालय चले जाओ वहाँ अपने शरीर के नष्ट होने तक तपस्या करते रहो। इस प्रकार हिमालय की बर्फ में गल कर नष्ट हो जाओ। युधिष्ठर ने पूछा हे भगवन्! हे गुरूदेव श्री कष्ण! क्या हम हिमालय में गल कर मरने का कारण जान सकते हैं? यदि आप उचित समझें तो बताने की कपा करें। श्री कष्ण ने कहा युधिष्ठर! आप ने युद्ध में जो प्राणियों की हिंसा करके पाप किया है। उस पाप का प्रायश्चित् करने के लिए ऐसा करना अनिवार्य है। इस प्रकार तपस्या करके प्राण त्यागने से आप के महाभारत युद्ध में किए पाप नष्ट हो जाऐंगे।

कबीर जी बोले हे धर्मदास! श्री कष्ण जी के श्री मुख से उपरोक्त वचन सुन कर अर्जुन आश्चर्य में पड़ गया। सोचने लगा श्री कष्ण जी आज फिर कह रहे हैं कि युद्ध में किए पाप नष्ट इस विधि से होगें। अर्जुन अपने आपको नहीं रोक सका। उसने श्री कष्ण जी से कहा हे भगवन्! क्या मैं आप से अपनी शंका का समाधान करा सकता हूँ। वैसे तो गुरूदेव! यह मेरी गुस्ताखी है, क्षमा करना क्योंकि आप ऐसी स्थिति में हैं कि आप से ऐसी-वैसी बातें करना उचित नहीं जान पड़ता। यदि प्रभु! मेरी शंका का समाधान नहीं हुआ तो यह शंका रूपी कांटा आयु पर्यन्त खटकता रहेगा। मैं चैन से जी नहीं सकूंगा। श्री कृष्ण ने कहा हे अर्जून! तू जो पूछना चाहता है निःसंकोच होकर पूछ। मैं अन्तिम स्वांस गिन रहा हूँ जो कहूंगा सत्य कहूंगा। अर्जुन बोला हे श्री कष्ण! आपने श्री मद्भगवत् गीता का ज्ञान देते समय कहा था कि अर्जुन! तू युद्ध कर तुझे युद्ध में मारे जाने वालों का पाप नहीं लगेगा तू केवल निमित्त मात्र बन जा ये सर्व योद्धा मेरे द्वारा पहले ही मारे जा चुके हैं (प्रमाण गीता अध्याय 11 श्लोक 32-33) आपने यह भी कहा कि अर्जुन युद्ध में मारा गया तो स्वर्ग को चला जाएगा, यदि युद्ध जीत गया तो पथ्वी के राज्य का सुख भोगेगा। तेरे दोनों हाथों में लड्डू हैं। (प्रमाण श्री मदभगवत् गीता अध्याय 2 श्लोक 37) तू युद्ध के लिए खड़ा हो जो जय-पराजय की चिन्ता छोड़कर युद्ध कर इस प्रकार तू पाप को प्राप्त नहीं होगा (गीता अध्याय 2 श्लोक 38)

जिस समय बड़े भईया को बुरे-2 स्वपन आने लगे हम आप के पास कष्ट निवारण के लिए विधि जानने गए तो आपने बताया कि जो युद्ध में बन्धुघात अर्थात् अपने नातियों (राजाओं, सैनिकों, चाचा, भतीजा आदि) की हत्या का पाप दुःखी कर रहा है। मैं (अर्जुन) उस समय भी आश्चर्य में पड़ गया था कि भगवन् गीता ज्ञान में कह रहे थे कि तुम्हें कोई पाप नहीं लगेगा युद्ध करो। आज कह रहे है कि युद्ध में की गई हिंसा का पाप दुःखी कर रहा है। आपने पाप नाश होने का समाधान बताया ''अश्वमेघ यज्ञ'' करना जिसमें करोड़ों रूपये का खर्च हुआ। उस समय मैं अपने मन को मार कर यह सोच कर चुप रहा कि यदि मैं आप (श्री कष्ण जी) से वाद-विवाद करूँगा कि आप तो कह रहे थे तुम्हें युद्ध में होने वाली हत्याओं का कोई पाप नहीं लगेगा। आज कह रहे हो तुम्हें महाभारत युद्ध में की हत्याओं का पाप दुःख दे रहा है। कहाँ गया आप का वह गीता वाला ज्ञान। किसलिए हमारे साथ धोखा किया, गुरू होकर विश्वासघात किया। तो बड़े भईया (युधिष्ठर जी) यह न सोच लें कि मेरी चिकित्सा में धन लगना है। इस कारण अर्जुन वाद-विवाद कर रहा है। यह (अर्जुन) मेरे कष्ट निवारण में होने वाले खर्च के कारण विवाद कर रहा है यह नहीं चाहता कि मैं (युधिष्ठर) कष्ट मुक्त हो जाऊं। अर्जुन को भाई के जीवन से धन अधिक प्रिय है। उपरोक्त विचारों को ध्यान में रखकर मैंने सोचा था कि यदि युधिष्ठर भईया को थोड़ा सा भी यह आभास हो गया कि अर्जुन! इस दष्टि कोण से विवाद कर रहा है तो भईया! अपना समाधान नहीं कराएगा। आजीवन कष्ट को गले लगाए रहेगा। हे कष्ण! आप के कहे अनुसार हमने यज्ञ किया। आज फिर आप कह रहे हो कि तुम्हें युद्ध की हत्याओं का पाप लगा है उसे नष्ट करने के लिए शीघ्र राज्य त्याग कर हिमालय में तपस्या करके गल मरो। आपने हमारे साथ यह विश्वास घात

किसलिए किया? यदि आप जैसे सम्बन्धी व गुरू हों तो शत्रुओं की आवश्यकता ही नहीं। हे कष्ण हमारे हाथ में तो एक भी लड्डू नहीं रहा न तो युद्ध में मर कर स्वर्ग गए न पथ्वी के राज्य का सुख भोग सके। क्योंकि आप कह रहे हो कि राज्य त्याग कर हिमालय में गल मरो।

आँसू टपकाते हुए अर्जुन के मुख से उपरोक्त वचन सुनकर युधिष्ठर बोला, अर्जुन! जिस परिस्थिति में भगवान है। इस समय ये शब्द बोलना शोभा नहीं देता। श्री कष्ण जी बोले हे अर्जुन! सुन मैं आप को सत्य-2 बताता हूँ। गीता के ज्ञान में मैंने क्या कहा था मुझे कुछ भी ज्ञान नहीं। यह जो कुछ भी हुआ है यह होना था इसे टालना मेरे वश नहीं था। कोई अन्य शक्ति है जो आप और हम को कठपुतली की तरह नचा रही है। वह तेरे वश न मेरे वश। परन्तु जो मैं आपको हिमालय में तपस्या करके शरीर अन्त करने की राय दे रहा हूँ। यह आप को लाभदायक है। आप मेरे इस वचन का पालन अवश्य करना। यह कह कर श्री कष्ण जी शरीर त्याग गए। जहाँ पर उनका अन्तिम संस्कार किया गया। उस स्थान पर यादगार रूप में श्री कष्ण जी के नाम पर द्वारिका में द्वारिकाधीश मन्दिर बना है।

श्री कष्ण ने पाण्डवों से कहा था कि मेरे शरीर का संस्कार करके राख तथा अधजली अस्थियों को एक काष्ठ के संदूक (Box) में डालकर उसको पूरी तरह से बंद करके यमुना में प्रवाह कर देना। पाण्डवों ने वैसा ही किया। वह संदूक बहता हुआ समुद्र में उस स्थान पर चला गया जिस स्थान पर उड़ीसा प्रान्त में जगन्नाथ का मंदिर बना है। एक समय उड़ीसा का राजा इन्द्रदमन था जो श्री कष्ण जी का परम भक्त था। स्वपन में श्री कष्ण जी ने बताया कि एक काष्ठ के संदूक में मेरे कष्ण वाले शरीर की अस्थियाँ हैं। उस स्थान पर वह संदूक बहकर आ चुका है। उसी स्थान पर उनको जमीन में दबाकर एक मंदिर बनवा दें। राजा ने स्वपन अपनी धार्मिक पत्नी तथा मंत्रियों के साथ साझा किया और उस स्थान पर गए तो वास्तव में एक लकड़ी का संदूक मिला। उसको जमीन में दबाकर जगन्नाथ नाम से मंदिर बनवाया। संपूर्ण जानकारी पढ़ें इसी पुस्तक ''कबीर सागर का सरलार्थ'' में पष्ठ 245 पर।

धर्मदास जी को परमेश्वर कबीर जी ने बताया। हे धर्मदास! सर्व (छप्पन करोड़) यादव का जो आपस में लड़कर मर गए थे, अन्तिम संस्कार करके अर्जुन को द्वारिका में छोड़ कर चारों भाई इन्द्रप्रस्थ चले गए। अकेला अर्जुन द्वारिका की स्त्रियों तथा श्री कष्ण जी की गोपियों को लेकर आ रहे थे। रास्ते में जंगली लोगों ने अर्जुन को पकड़ कर पीटा। अर्जुन के पास अपना गांडीव धनुष भी था जिस से महाभारत का युद्ध जीता था। परन्तु उस समय अर्जुन से वही धनुष नहीं चला। अपने आप को शक्तिहीन जानकर अर्जुन कायरों की तरह सब देखता रहा। वे जंगली व्यक्ति स्त्रियों के गहने लूट ले गए तथा कुछ स्त्रियों को भी अपने साथ ले गए। शेष स्त्रियों को साथ लेकर अर्जुन ने इन्द्रप्रस्थ को प्रस्थान किया तथा मन में विचार किया कि श्री कष्ण जी महाधोखेबाज (विश्वासघाती) था। जिस समय मेरे से युद्ध कराना था तो शक्ति प्रदान कर दी। उसी धनुष से मैंने लाखों व्यक्तियों को मौत के घाट उतार दिया। आज मेरा बल छीन लिया, मैं कायरों की तरह पिटता रहा मेरे से वही धनुष नहीं चला। कबीर परमेश्वर जी ने बताया धर्मदास! श्री कष्ण जी छलिया नहीं था। वह सर्व कपट काल ब्रह्म ने किया है जो ब्रह्मा-विष्णु व शिव का पिता है। जिसके समक्ष श्री विष्णु (कष्ण) तथा श्री शिव आदि की कुछ पेश नहीं चलती।

उपरोक्त कथा सुनकर धर्मदास जी ने प्रश्न किया :- धर्मदास ने कहा हे परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी! आप ने तो मेरी आँखे खोल दी हे प्रभु! हिमालय में तपस्या कर युधिष्ठर का तो केवल एक पैर का पंजा ही बर्फ से नष्ट हुआ तथा अन्य के शरीर गल गए थे। सुना है वे सर्व पापमुक्त होकर स्वर्ग चले गए?

उत्तरः- परमेश्वर कबीर जी ने कहा हे धर्मदास! हिमालय में जो तप पाण्डवों ने किया वह शास्त्र

विधि त्याग कर मनमाना आचरण (पूजा) होने के कारण व्यर्थ प्रयत्न था। (प्रमाण-गीता अध्याय 16 श्लोक 23 तथा गीता अध्याय 17 श्लोक 5-6 में कहा है कि जो मनुष्य शास्त्रविधि से रहित केवल कल्पित घोर तप को तपते हैं वे शरीरस्थ परमात्मा को कश करने वाले हैं उन अज्ञानियों को नष्ट हुए जान।) क्योंकि जैसी तपस्या पाण्डवों ने की वह गीता जी व वेदों में वर्णित नहीं है अपितु ऐसे शरीर को पीड़ा देकर साधना करना व्यर्थ बताया है। यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 15 में कहा है ओम् (ॐ) नाम का जाप कार्य करते-2 कर, विशेष कसक के साथ कर मनुष्य जन्म का मुख्य कर्त्तव्य जान के कर। यही प्रमाण गीता अध्याय 8 श्लोक 7 व 13 में कहा है कि मेरा तो केवल ॐ नाम है इस का जाप अन्तिम सांस तक करने से लाभ होता है इसलिए अर्जुन! तू युद्ध भी कर तथा स्मरण (भक्ति जाप) भी कर अतः हे धर्मदास ! जैसी तपस्या पाण्डवों ने की वह व्यर्थ सिद्ध हुई।

गीता अध्याय 3 श्लोक 6 से 8 में कहा है कि जो मूढ़ बुद्धि मनुष्य समस्त कर्म इन्द्रयों को रोककर अर्थात् हठ योग द्वारा एक स्थान पर बैठ कर या खड़ा होकर साधना करता है। वह मन से इन्द्रियों का चिन्तन करता रहता है। जैसे सर्दी लगी तो शरीर की चिन्ता, सर्दी का चिन्तन, भूख लगी तो भूख का चिन्तन आदि होता रहता है। वह हठ से तप करने वाला मिथ्याचारी अर्थात् दम्भी कहा जाता है। कार्य न करने अर्थात् एक स्थान पर बैठ या खड़ा होकर साधना करने की अपेक्षा कर्म करना तथा भक्ति भी करना श्रेष्ठ है। यदि कर्म नहीं करेगा तो तेरा शरीर निर्वाह भी नहीं सिद्ध होगा।

विशेष विचार :- श्री मद्भगवत गीता में ज्ञान दो प्रकार का है। एक तो वेदों वाला तथा दूसरा काल ब्रह्म द्वारा सुनाया लोक वेद वाला। यह ज्ञान (गीता अध्याय 3 श्लोक 6 से 8 वाला ज्ञान) वेदों वाला ज्ञान ब्रह्म काल ने बताया है। श्री कष्ण जी द्वारा भी काल ब्रह्म ने पाण्डवों को लोक वेद सुनाया जिस से तप हो जाता है। तप से फिर कभी राजा बन जाता है कुछ सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं। मोक्ष नहीं होता तथा न पाप ही नष्ट होते हैं।

हे धर्मदास! पाँचों पाण्डवों ने विचार करके अभिमन्यु पुत्र परीक्षित को राज तिलक कर दिया। द्रोपदी, कुन्ती (अर्जुन, भीम व युधिष्ठर की माता) तथा पाँचों पाण्डव श्री कष्ण जी के आदेशानुसार हिमालय पर्वत पर जाकर तप करने लगे कुछ ही दिनों में आहार अभाव से उनके शरीर समाप्त हो गए। केवल युधिष्ठर का शरीर शेष रहा। उसके पैर का एक पंजा बर्फ में गल पाया था। युधिष्ठर ने देखा कि उस के परिजन मर चुके है। उनके शरीर की आत्माऐं निकल चुकी हैं सूक्ष्म शरीर युक्त आकाश को जाने लगी। तब युधिष्ठर ने भी अपना शरीर त्याग दिया तथा सूक्ष्म शरीर युक्त युधिष्ठर कर्मों के संस्कार वश अपने पिता धर्मराज के लोक में गया। धर्मराज ने अपने पुत्र को बहुत प्यार किया तथा उसको रहने का मकान बताया। कुछ समय पश्चात् काल ब्रह्म ने युधिष्ठर में प्रेरणा की। उसे अपने भाईयों व पत्नी द्रोपदी तथा माता कुन्ती की याद सताने लगी। युधिष्ठर ने अपने पिता धर्मराज से कहा हे धर्मराज! मुझे मेरे परिजनों से मिलाईए मुझे उनकी बहुत याद सता रही है। धर्मराज ने कहा युधिष्ठर! वह तेरा परिवार नहीं था। तेरा परिवार तो यह है। तू मेरा पुत्र है। अर्जुन-स्वर्ग के राजा इन्द्र का पुत्र है, भीम-पवन देव का पुत्र है, नकुल-नासत्य का पुत्र है तथा सहदेव-दस्र का पुत्र है। {नासत्य तथा दस्र ये दोनों अश्वनी कुमार हैं जो अश्व रूप धारी सूर्य देव तथा अश्वी (घोड़ी) रूप धारी सूर्य की पत्नी संज्ञा के सम्भोग से उत्पन्न हुए थे। सूर्य को घोड़े रूप में न पहचान कर सूर्य पत्नी जो घोड़ी रूप धार कर जंगल में तप कर रही थी अपने धर्म की रक्षा के लिए घोड़ा रूपधारी सूर्य को पृष्ठ भाग (पीछे) की ओर नहीं जाने दिया वह उस घोड़े से अभिमुख रही। कामवासना वश घोड़ा रूपधारी सूर्य घोड़ी रूपधारी अपनी पत्नी (विश्वकर्मा की पुत्री) के मुख की ओर चढ़कर सम्भोग करने के कारण वीर्य का कुछ अंश घोड़ी रूपधारी सूर्य की पत्नी के पेट

में मुख द्वारा प्रवेश कर गया जिससे दो लड़कों (नासत्य तथा दस्र) का जन्म घोड़ी रूपी सूर्य पत्नी के मुख से हुआ जिस कारण ये दोनों बच्चे अश्विनी कुमार कहलाए। यह पुराण कथा है।}

धर्मराज ने अपने पुत्र युधिष्ठर को बताया कि आप सब का वहाँ पथ्वी लोक में इतना ही संयोग था। वह समाप्त हो चुका है। वे सर्व युद्ध में किए पाप कर्मों तथा अन्य जीवन में किए पाप कर्मों का फल भोगने के लिए नरक में डाल रखे हैं। आप के पुण्य अधिक है इसलिए आप नरक में नहीं डाल रखे हैं। अतः आप उन से नहीं मिल सकते काल ब्रह्म कि प्रबल प्रेरणा वश होकर युधिष्ठर ने उन सर्व (भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव, द्रोपदी तथा कुन्ती) को मिलने का हठ किया। धर्मराज ने एक यमदूत से कहा आप युधिष्ठर को इसके परिवार से मिला कर शीघ्र लौटा लाना। यमदूत युधिष्ठर को लेकर नरक में प्रवेश हुआ। वहाँ पर आत्माऐं हा-हाकार मचा रहे थे, कह रहे थे, हे युधिष्ठर हमें नरक से निकलवा दो। मैं अर्जुन हूँ ,कोई कह रहा था, मैं भीम हूँ, मैं नकुल, मैं सहदेव हूँ, मैं कुन्ती, मैं द्रोपदी हूँ। इतने में यमदूत ने कहा हे युधिष्ठर अब आप लौट चलिए। युधिष्ठर ने कहा मैं भी अपने परिवार जनों के साथ यहीं नरक में ही रहूँगा। तब धर्मराज ने आवाज लगाई युधिष्ठर यहाँ आओ मैं तेरे को एक युक्ति बताता हूँ। यह आवाज सुन कर युधिष्ठर अपने पिता धर्मराज के पास लौट आया।

धर्मराज ने युधिष्ठर को समझाया कि बेटा आपने एक झूठ बोला था कि अश्वथामा मर गया फिर दबी आवाज में कहा था पता नहीं मनुष्य था या हाथी। जबकि आप को पता था कि हाथी मरा है। उस झूठ बोलने के पाप का कर्मदण्ड देने के लिए आप को कुछ समय इसी बहाने नरक में रखना पड़ा नहीं तो वह युक्ति मैं पहले ही आप को बता देता। युधिष्ठर ने कहा कप्या आप वह विधि बताईए जिस से मेरे परिजन नरक से निकल सकें। धर्मराज ने कहा उनको एक शर्त पर नरक से निकाला जा सकता है कि आप अपने कुछ पुण्य उनको संकल्प कर दो। युधिष्ठर ने कहा मुझे स्वीकार है। यह कह कर युधिष्ठर अपने आधे पुण्य उन छः के निमित्त संकल्प कर दिए। वे छःओं नरक से बाहर आकर धर्मराज के पास जहाँ युधिष्ठर खड़ा था उपस्थित हो गए। उसी समय इन्द्र देव आया अपने पुत्र अर्जुन को साथ लेकर चला गया, पवन देवता आया अपने पुत्र भीम को साथ लेकर चला गया। इसी प्रकार अश्विनी कुमार (नासत्य, दस्र) आए नकुल व सहदेव को लेकर चले गए। कुन्ती स्वर्ग में चली गई तथा देखते-2 द्रोपदी ने दुर्गा रूप धारण किया तथा आकाश को उड़ चली कुछ ही समय में सर्व की आँखों से ओझल हो गई। वहाँ अकेला युधिष्ठर अपने पिता धर्मराज के पास रह गया। परमेश्वर कबीर जी ने अपने शिष्य धर्मदास जी को उपरोक्त कथा सुनाई तत्पश्चात् इस सर्व काल के जाल को समझाया।

कबीर परमेश्वर जी ने बताया हे धर्मदास! काल ब्रह्मकी प्रेरणा से इक्कीस ब्रह्मण्डों के प्राणी कर्म करते हैं। जैसा आपने सुना युधिष्ठर पुत्र धर्मराज, अर्जुन पुत्र इन्द्र, भीम पुत्र पवन देव, नकुल पुत्र नासत्य तथा सहदेव पुत्र दस्र थे। द्रोपदी शापवश दुर्गा की अवतार थी जो अपना कर्म भोगने आई थी तथा कुन्ती भी दुर्गा लोक की पुण्यात्मा थी। ये सर्व काल प्रेरणा से पथ्वी पर एक फिल्म (चलचित्र) बनाने गए थे। जैसे एक करोड़पति का पुत्र किसी फिल्म में रिक्शा चालक का अभिनय करता है। फिल्म निर्माण के पश्चात् अपनी 20 लाख की कार गाड़ी में बैठ कर आनन्द करता है। भोले-भाले सिनेमा दर्शक उसे रिक्शा चालक मान कर उस पर दया करते हैं। उसके बनावटी अभिनय को देखने के लिए अपना बहुमूल्य समय तथा धन नष्ट करते हैं। ठीक इसी प्रकार उपरोक्त पात्रों (युधिष्ठर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव, द्रोपदी तथा कुन्ती) द्वारा बनाई फिल्म महाभारत के इतिहास को पढ़-2 कर पथ्वी लोक के प्राणी अपना समय व्यर्थ करते हैं। तत्त्वज्ञान को न सुनकर मानव शरीर को व्यर्थ कर जाते हैं। काल ब्रह्म यही चाहता है कि मेरे अन्तर्गत जितने भी जीव हैं। वे तत्त्वज्ञान से अपरिचित रहे तथा मेरी प्रेरणा से

मेरे द्वारा भेजे गुरूओं द्वारा शास्त्रविधि विरुद्ध साधना प्राप्त करके जन्म-मृत्यु के चक्र में पड़े रहे। काल ब्रह्म की प्रेरणा से तत्त्वज्ञान हीन सन्तजन व ऋषिजन कुछ वेद ज्ञान अधिक लोक वेद के आधार से ही सत्संग वचन श्रद्धालुओं को सुनाते हैं। जिस कारण से साधक पूर्ण मोक्ष प्राप्त न करके काल के जाल में ही रह जाते हैं।

हे धर्मदास! मैं पूर्ण परमात्मा की आज्ञा लेकर तत्त्वज्ञान बताने काल लोक में कलयुग में आया हूँ।

''क्या पाण्डव सदा स्वर्ग में ही रहेंगे?''

धर्मदास जी ने बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर जी के चरण पकड़ कर कहा हे परमेश्वर! आप स्वयं सत्यपुरूष हो धर्मदास जी ने अति विनम्र होकर आधीन भाव से प्रश्न किया।

प्रश्नः- हे बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर जी! क्या पाण्डव अब सदा स्वर्ग में ही रहेगें?

उत्तरः- नहीं धर्मदास! जो पुण्य युधिष्ठर ने उनको प्रदान किए हैं। उन पुण्यों का तथा स्वयं किए यज्ञ आदि धार्मिक अनुष्ठानों का पुण्य जब स्वर्ग में समाप्त हो जाएगा तब सर्व पुनः नरक में डाले जाऐंगे। युद्ध में किए पाप कर्म तथा उस जीवन में किए पाप कर्म तथा संचित पाप कर्मों के फल को भोगने के लिए नरक में अवश्य गिरना होगा। युधिष्ठर भी अपने आधे पुण्य दान करके पुण्यहीन हो गया है। वह भी शेष पुण्यों को स्वर्ग में समाप्त करके संचित पाप कर्मों के आधार से अवश्य नरक में डाला जाएगा भले ही पाप कर्म कम होने के कारण नरक समय थोड़ा ही भोगना पड़े परन्तु नरक में अवश्य जाना पड़ेगा। जैसे युधिष्ठर ने अश्वथामा मरने की झूठ बोली थी उसका भी पाप कर्मदण्ड भोगने के लिए नरक में कुछ समय के लिए उसी समय ही जाना पड़ा।

इसी प्रकार पूर्व जन्मों के संचित पाप कर्मों का दण्ड नरक में भोगना पड़ेगा। पश्चात् पृथ्वी पर सर्व को अन्य प्राणियों की योनियों में भी जाना होगा। यह काल ब्रह्म का अटल विधान है। परन्तु हे धर्मदास! जो साधक पूर्ण परमात्मा की भक्ति पूर्ण गुरू से उपदेश प्राप्त करके आजीवन मर्यादा में रह कर करता है उसके सर्व पाप कर्म ऐसे नष्ट हो जाते है जैसे सुखे घास के बहुत बड़े ढेर को अग्नि की छोटी सी चिंगारी जला कर भस्म कर देती है। उसकी राख को हवा उड़ा कर इधर-उधर कर देती है ठीक इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा की भक्ति का सत्यनाम मन्त्र रूपी अग्नि घास के ढेर रूपी पाप कर्मों को भस्म कर देता है।

कबीर, जब ही सत्यनाम हृदय धरा, भयो पाप का नाश।
मानो चिंगारी अग्नि की, पड़ी पुराने घास।।

''क्या द्रोपदी भी नरक जाएगी तथा अन्य प्राणियों के शरीर धारण करेगी?''

प्रश्न :- हे सद्गुरू! क्या द्रोपदी भी पुनः नरक व अन्य योनियों में जाएगी (धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से प्रश्न किया)?

उत्तर :- हाँ धर्मदास! द्रोपदी, दुर्गा का अंश है। अंश का अर्थ है कि दुर्गा के शब्द से शरीर धारण करने वाली आत्मा, द्रोपदी, दुर्गा से अन्य आत्मा है परन्तु जो कष्ट द्रोपदी को होता है उसका प्रभाव दुर्गा को भी होता है। जैसे किसी की बेटी दुःखी होती है तो माता अत्यधिक दुःखी होती है। इस प्रकार द्रोपदी अब दुर्गा लोक में विशेष स्थान पर है। पुण्य समाप्त होने पर फिर नरक तथा अन्य प्राणियों के शरीर अवश्य धारण करेगी। यही दशा कुन्ती वाली आत्मा की होगी।

''कबीर परमेश्वर जी का कलयुग में अवतरण''

लेखक के शब्दों में :- बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर जी ने द्वापर युग में अपने प्रिय शिष्य सुदर्शन वाल्मीकि जी को शरण में लिया था। भक्त सुदर्शन जी के माता-पिता ने परमेश्वर कबीर जी के ज्ञान को स्वीकार नहीं किया था जिनके नाम थे पिता जी का नाम ''भीखू राम'' तथा माता जी का नाम ''सुखवन्ती''। जिस समय दोनों (माता तथा पिता) शरीर त्याग गए तो भक्त सुदर्शन जी अत्यन्त व्याकुल रहने लगे। भक्ति भी कम करते थे। अन्तर्यामी करूणामय जी (द्वापर युग में कबीर परमेश्वर करूणामय नाम से लीला कर रहे थे) ने अपने भक्त के मन की बात जान कर पूछा हे भक्त सुदर्शन! आप को कौन सी चिन्ता सता रही है। क्या माता-पिता का वियोग सता रहा है? या कोई अन्य पारिवारिक परेशानी है ? मुझे बताईए।

भक्त सुदर्शन जी ने कहा हे बन्दी छोड़! हे अन्तर्यामी! आप सर्वज्ञ हैं आप बाहर-भीतर की सर्व स्थिति से परिचित है। हे प्रभु! मुझे मेरे माता-पिता के निधन का दुःख नहीं है क्योंकि वे बहुत वद्ध हो चुके थे। आप ने बताया है कि यह पाँच तत्त्व का पुतला एक दिन नष्ट होना है। मुझे चिन्ता सता रही है कि मेरे माता-पिता अत्यन्त पुण्यात्मा, दयालु तथा धर्मात्मा थे। उन्होंने अपनी भक्ति लोकवेद अनुसार की थी। जो शास्त्रविधि के विरूद्ध थी। जिस कारण से उनका मानव जीवन व्यर्थ गया। अब पता नहीं किस प्राणी की योनी में कष्ट उठा रहे होंगे? आप से नम्र निवेदन आप का दास करता है कि कभी मेरे माता-पिता मानव शरीर प्राप्त करें तो उन्हें अपनी शरण में लेना परमेश्वर तथा उन्हें भी भवसागर से (काल ब्रह्म के लोक से) पार करना मेरे दाता ! मुझे यही चिन्ता सता रही है। परमेश्वर कबीर जी ने सोचा कि यह भोला भक्त सुदर्शन माता-पिता के मोह में फंस कर काल जाल में ही रहेगा। काल ब्रह्म ने मोह रूपी पाश बहुत दढ़ बना रखा है। यह विचार कर परमेश्वर कबीर जी ने कहा हे भक्त सुदर्शन ! आप चिन्ता मत करो मैं आप के माता-पिता को अवश्य शरण में लूंगा तथा पार करके ही दम लूंगा। आप सत्य लोक जाओ। यह चिन्ता छोड़ो। परमेश्वर कबीर जी के आश्वासन के पश्चात् भक्त सुदर्शन जी सत्य साधना करके सत्यलोक को गया। पूर्ण मोक्ष प्राप्त किया।

''भक्त सुदर्शन के माता-पिता वाले जीवों के कलयुग के अन्य मानव जन्मों की जानकारी''

प्रथम बार कुलपति ब्राह्मण (पिता) तथा महेश्वरी (माता) रूप में जन्में। दोनों का विवाह हुआ। संतान नहीं हुई। एक दिन महेश्वरी जी सूर्य की उपासना करते हुए हाथ फैलाकर पुत्र माँग रही थी। उसी समय कबीर परमेश्वर जी उसके हाथों में बालक रूप बनाकर प्रकट हो गए। सूर्य का पारितोष (तोहफा) जानकर बालक को घर ले गई। वे बहुत निर्धन थे। उनको प्रतिदिन एक तोला सोना परमात्मा के बिछौने के नीचे मिलने लगा। यह भी उन्होंने सूर्यदेव की कपा माना। पाँच वर्ष की आयु का होने पर उनको भक्ति बताई, परंतु बालक जानकर उनको परमात्मा की एक बात पर भी विश्वास नहीं हुआ। उस जन्म में उन्होंने परमात्मा को नहीं पहचाना। जिस कारण से परमेश्वर कबीर जी बालक रूप अंतर्ध्यान हो गए। दोनों पति-पत्नी पुत्र मोह में व्याकुल हुए। परमात्मा की सेवा के फलस्वरूप उनको अगला जन्म भी मानव का मिला। चन्दवारा शहर में पुरूष का नाम चंदन तथा स्त्री का नाम उद्धा था। ब्राह्मण कुल में जन्म हुआ। दोनों निःसंतान थे। एक दिन उद्धा सरोवर पर स्नान करने गई। वहाँ कबीर परमेश्वर जी कमल के फूल पर शिशु रूप धारण करके विराजमान हुए। उद्धा बालक कबीर जी को उठाकर घर ले गई। लोकलाज के कारण चन्दन ने पत्नी से कहा कि इस बालक को जहाँ से लाई थी,

वहीं छोड़कर आ। कुल के लोग मजाक करेंगे। दोनों पति-पत्नी परमात्मा को लेकर जल में डालने चले तो परमात्मा उनके हाथों से गायब हो गए। दोनों बहुत व्याकुल हुए। परमात्मा का पारितोष न लेने के भय से सारी आयु रोते रहे। अगला जन्म भी मानव का हुआ। कथा इस प्रकार है :-

भक्त सुदर्शन वाल्मीकि के माता-पिता वाले जीवों को कलयुग में तीसरा भी मानव शरीर प्राप्त हुआ। भारत वर्ष के काशी शहर में सुदर्शन के पिता वाले जीव ने एक ब्राह्मण के घर जन्म लिया तथा गौरीशंकर नाम रखा गया तथा सुदर्शन जी की माता वाले जीव ने भी एक ब्राह्मण के घर कन्या रूप में जन्म लिया तथा सरस्वती नाम रखा। युवा होने पर दोनों का विवाह हुआ। गौरी शंकर ब्राह्मण भगवान शिव का उपासक था तथा शिव पुराण की कथा करके भगवान शिव की महिमा का गुणगान किया करता। गौरीशंकर निर्लोभी था। कथा करने से जो धन प्राप्त होता था उसे धर्म में ही लगाया करता था। जो व्यक्ति कथा कराते थे तथा सुनते थे सर्व गौरी शंकर ब्राह्मण के त्याग की प्रसंशा करते थे।

जिस कारण से पूरी काशी में गौरी शंकर की प्रसिद्धि हो रही थी। अन्य स्वार्थी ब्राह्मणों का कथा करके धन इकत्रित करने का धंधा बन्द हो गया। इस कारण से वे ब्राह्मण उस गौरीशंकर ब्राह्मण से ईर्ष्या रखते थे। इस बात का पता मुसलमानों को लगा कि एक गौरीशंकर ब्राह्मण काशी में हिन्दू धर्म के प्रचार को जोर-शोर से कर रहा है। इसको किस तरह बन्द करें। मुसलमानों को पता चला कि काशी के सर्व ब्राह्मण गौरीशंकर से ईर्ष्या रखते हैं। इस बात का लाभ मुसलमानों ने उठाया। गौरीशंकर व सरस्वती के घर के अन्दर अपना पानी छिड़क दिया। अपना झूठा पानी उनके मुख पर लगा दिया। कपड़ों पर भी छिड़क दिया तथा आवाज लगा दी कि गौरीशंकर तथा सरस्वती मुसलमान बन गए हैं। पुरूष का नाम नूरअली उर्फ नीरू तथा स्त्री का नाम नियामत उर्फ नीमा रखा। अन्य स्वार्थी ब्राह्मणों को पता चला तो उनका दाव लग गया। उन्होंने तुरन्त ही ब्राह्मणों की पंचायत बुलाई तथा फैसला कर दिया कि गौरीशंकर तथा सरस्वती मुसलमान बन गए हैं अब इनका ब्राह्मण समाज से कोई नाता नहीं रहा है। इनका गंगा में स्नान करने, मन्दिर में जाने तथा हिन्दू ग्रन्थों को पढ़ने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है।

गौरीशंकर (नीरू) जी कुछ दिन तो बहुत परेशान रहे। जो कथा करके धन आता था उसी से घर का निर्वाह चलता था। उसके बन्द होने से रोटी के भी लाले पड़ गए। नीरू ने विचार करके अपने निर्वाह के लिए कपड़ा बुनने का कार्य प्रारम्भ किया। जिस कारण से जुलाहा कहलाया। कपड़ा बुनने से जो मजदूरी मिलती थी उसे अपना तथा अपनी पत्नी का पेट पालता था। जिस समय धन अधिक आ जाता तो उसको धर्म में लगा देता था। विवाह को कई वर्ष बीत गए थे। उनको कोई सन्तान नहीं हुई। दोनों पति-पत्नी ने बच्चे होने के लिए बहुत अनुष्ठान किए। साधु सन्तों का आशीर्वाद भी लिया परन्तु कोई सन्तान नहीं हुई। हिन्दुओं द्वारा उन दोनों का गंगा नदी में स्नान करना बन्द कर दिया गया था। उनके निवास स्थान से लगभग चार कि.मी. दूर एक लहर तारा नामक सरोवर था जिस में गंगा नदी का ही जल लहरों के द्वारा नीची पटरी के ऊपर से उछल कर आता था। इसलिए उस सरोवर का नाम लहरतारा पड़ा। उस तालाब में बड़े-2 कमल के फूल उगे हुए थे। मुसलमानों ने गौरीशंकर का नाम नूर अल्ली रखा जो उर्फ नाम से नीरू कहलाया तथा पत्नी का नाम नियामत रखा जो उर्फ नाम से नीमा कहलाई। नीरू-नीमा भले ही मुसलमान बन गए थे परन्तु अपने हृदय से साधना भगवान शंकर जी की ही करते थे तथा प्रतिदिन सवेरे सूर्योदय से पूर्व लहरतारा तालाब में स्नान करने जाते थे।

ज्येष्ठ मास की शुक्ल पूर्णमासी विक्रमी संवत् 1455 (सन् 1398) सोमवार को भी ब्रह्म मुहूर्त (ब्रह्म मुहूर्त का समय सूर्योदय से लगभग डेढ़ घण्टा पहले होता है) में स्नान करने के लिए जा रहे थे। नीमा

रास्ते में भगवान शंकर से प्रार्थना कर रही थी कि हे दीनानाथ! आप अपने दासों को भी एक बच्चा-बालक दे दो आप के घर में क्या कमी है प्रभु ! हमारा भी जीवन सफल हो जाएगा। दुनिया के व्यंग्य सुन-2 कर आत्मा दुःखी हो जाती है। मुझ पापिन से ऐसी कौन सी गलती किस जन्म में हुई है जिस कारण मुझे बच्चे का मुख देखने को तरसना पड़ रहा है। हमारे पापों को क्षमा करो प्रभु! हमें भी एक बालक दे दो।

यह कह कर नीमा फूट-2 कर रोने लगी तब नीरू ने धैर्य दिलाते हुए कहा हे नीमा! हमारे भाग्य में सन्तान नहीं है यदि भाग्य में सन्तान होती तो प्रभु शिव अवश्य प्रदान कर देते। आप रो-2 कर आँखे खराब कर लोगी। बालक भाग्य में है नहीं जो वद्ध अवस्था में ऊंगली पकड़ लेता। आप मत रोओ आप का बार-2 रोना मेरे से देखा नहीं जाता। यह कह कर नीरू की आँखे भी भर आई। इसी तरह प्रभु की चर्चा व बालक प्राप्ति की याचना करते हुए उसी लहरतारा तालाब पर पहुँच गए। प्रथम नीमा ने प्रवेश किया, पश्चात् नीरू ने स्नान करने को तालाब में प्रवेश किया। सुबह का अंधेरा शीघ्र ही उजाले में बदल जाता है। जिस समय नीमा ने स्नान किया था उस समय तक तो अंधेरा था। जब कपड़े बदल कर पुनः तालाब पर उस कपड़े को धोने के लिए गई, जिसे पहन कर स्नान किया था, उस समय नीरू तालाब में प्रवेश करके गोते लगा-2 कर मल मल कर स्नान कर रहा था।

नीमा की दष्टि एक कमल के फूल पर पड़ी जिस पर कोई वस्तु हिल रही थी। प्रथम नीमा ने जाना कोई सर्प है जो कमल के फूल पर बैठा अपने फन को उठा कर हिला रहा है। उसने सोचा कहीं यह सर्प मेरे पति को न डस ले नीमा ने उसको ध्यानपूर्वक देखा वह सर्प नहीं है कोई बालक था। जिसने एक पैर अपने मुख में ले रखा था तथा दूसरे को हिला रहा था। नीमा ने अपने पति से ऊँची आवाज में कहा देखियो जी! एक छोटा बच्चा कमल के फूल पर लेटा है। वह जल में डूब न जाए। नीरू स्नान करते-2 उस की ओर न देख कर बोला नीमा! बच्चों की चाह ने तुझे पागल बना दिया है। अब तुझे जल में भी बच्चे दिखाई देने लगे हैं। नीमा ने अधिक तेज आवाज में कहा मैं सच कह रही हूँ, देखो सचमुच एक बच्चा कमल के फूल पर, वह रहा, देखो! देखो--- नीमा की आवाज में परिवर्तन व अधिक कसक देखकर नीरू ने उस ओर देखा जिस ओर नीमा हाथ से संकेत कर रही थी। कमल के फूल पर नवजात शिशु को देखकर नीरू ने आव देखा न ताव झपट कर कमल के फूल सहित बच्चा उठाकर अपनी पत्नी को दे दिया।

नीमा ने परमेश्वर कबीर जी को सीने से लगाया, मुख चूमा, पुत्रवत् प्यार किया जिस परमेश्वर की खोज में ऋषि-मुनियों ने जीवन भर शास्त्रविधि विरूद्ध साधना की उन्हें नहीं मिला। वही परमेश्वर भक्तमति नीमा की गोद में खेल रहा था। जिस शान्तिदायक परमेश्वर को आन्नद की प्राप्ति के लिए प्राप्त करने की इच्छा से साधना की जाती है वही परमेश्वर नीमा के हाथों में सीने से लगा हुआ था। उस समय जो शीतलता व आनन्द का अनुभव भक्तमति नीमा को हो रहा होगा उस की कल्पना ही की जा सकती है। नीरू स्नान करके जल से बाहर आया। नीरू ने सोचा यदि हम इस बच्चे को नगर में ले जाऐंगे तो शहर वासी हम पर शक करेंगे सोचेंगे कि ये किसी के बच्चे को चुरा कर लाए हैं। कहीं हमें नगर से निकाल दें। इस डर से नीरू ने अपनी पत्नी से कहा नीमा! इस बच्चे को यहीं छोड़ दे इसी में अपना हित है। नीमा बोली हे पति देव ! यह भगवान शंकर का दिया खिलौना है। इस बच्चे ने पता नहीं मुझ पर क्या जादू कर दिया है कि मेरा मन इस बच्चे के वश हो गया है। मैं इस बच्चे को नहीं त्याग सकती। नीरू ने नीमा को अपने मन की बात से अवगत करवाया। बताया कि यह बच्चा नगर वासी हम से छीन लेगें, पूछेंगे कहाँ से लाए हो? हम कहेंगे लहरतारा तालाब में कमल के फूल पर मिला है।

हमारी बात पर कोई भी विश्वास नहीं करेगा। हो सकता है वे हमें नगर से भी निकाल दें। तब नीमा ने कहा मैं इस बालक के साथ देश निकाला भी स्वीकार कर लूँगी। परन्तु इस बच्चे को नहीं त्याग सकती। मैं अपनी मत्यु को भी स्वीकार कर लूँगी। परन्तु इस बच्चे से भिन्न नहीं रह सकूँगी।

नीमा का हठ देख कर नीरू को क्रोध आ गया तथा अपने हाथ को थप्पड़ मारने की स्थिति में उठा कर आँखों में आँसू भरकर करूणाभरी आवाज में बोला नीमा मैंने आज तक तेरी किसी भी बात को नहीं ठुकरवाया। यह जान कर कि हमारे कोई बच्चा नहीं है मैंने तुझे पति तथा पिता दोनों का प्यार दिया है। तू मेरे नम्र स्वभाव का अनुचित लाभ उठा रही है। आज मेरी स्थिति को न समझ कर अपने हठी स्वभाव से मुझे कष्ट दे रही है। विवाहित जीवन में नीरू ने प्रथम बार अपनी पत्नी की और थप्पड़ मारने के लिए हाथ उठाया था तथा कहा कि या तो इस बच्चे को यहीं रख दे वरना आज मैं तेरी बहुत पिटाई करूँगा।

उसी समय नीमा के सीने से चिपके बालक रूपधारी परमेश्वर बोले हे नीरू! आप मुझे अपने घर ले चलो आप पर कोई आपत्ति नहीं आएगी। मैं सतलोक से चलकर तुम्हारे हित के लिए यहाँ आया हूँ। नवजात शिशु के मुख से उपरोक्त वचन सुनकर नीरू (नूर अल्ली) डर गया कहीं यह कोई देव या पितर या कोई सिद्ध पुरूष न हो और मुझे शाप न दे दे। इस डर से नीरू कुछ नहीं बोला घर की ओर चल पड़ा। पीछे-2 उसकी पत्नी परमेश्वर को प्यार करती हुई चल पड़ी।

प्रतिदिन की तरह ज्येष्ठ मास की पूर्णमासी विक्रमी संवत् 1455 (1398ई.) सोमवार को भी एक अष्टानन्द नामक ऋषि, जो स्वामी रामानन्द ऋषि जी के शिष्य थे काशी शहर से बाहर बने लहरतारा तालाब के स्वच्छ जल में स्नान करने के लिए प्रतिदिन की तरह गए। ब्रह्म मुहूर्त का समय था (ब्रह्म मुहूर्त का समय सूर्योदय से लगभग डेढ़ घण्टा पूर्व का होता है) ऋषि अष्टानन्द जी ने लहरतारा तालाब में स्नान किया। वे प्रतिदिन वहीं बैठ कर कुछ समय अपनी पाठ पूजा किया करते थे। ऋषि अष्टानन्द जी ध्यान मग्न होने की चेष्टा कर ही रहे थे उसी समय उन्होंने देखा कि आकाश से एक प्रकाश पुंज नीचे की ओर आता दिखाई दिया। वह इतना तेज प्रकाश था उसे ऋषि जी की चर्म दष्टि सहन नहीं कर सकी। जिस प्रकार आँखे सूर्य की रोशनी को सहन नहीं कर पाती। सूर्य के प्रकाश को देखने के पश्चात् आँखे बन्द करने पर सूर्य का आकार दिखाई देता है उसमें प्रकाश अधिक नहीं होता।

इसी प्रकार प्रथम बार परमेश्वर के प्रकाश को देखने से ऋषि जी की आँखे बन्द हो गई बन्द आँखों में शिशु को देख कर फिर से आँखे खोली। ऋषि अष्टानन्द जी ने देखा कि वह प्रकाश लहरतारा तालाब पर उतर गया। जिससे पूरा सरोवर प्रकाश मान हो गया तथा देखते ही देखते वह प्रकाश जलाशय के एक कोने में सिमट गया। ऋषि अष्टानन्द जी ने सोचा यह कैसा दश्य मैंने देखा? यह मेरी भक्ति की उपलब्धि है या मेरा दष्टिदोष है? इस के विषय में गुरूदेव, स्वामी रामानन्द जी से पूछूँगा। यह विचार करके ऋषि अष्टानन्द जी अपनी शेष साधना को छोड़ कर अपने पूज्य गुरूदेव के पास गए। स्वामी रामानन्द जी को सर्व घटनाक्रम बताकर पूछा हे गुरूदेव! यह मेरी भक्ति की उपलब्धि है या मेरी भ्रमणा है? मैंने प्रकाश आकाश से नीचे की ओर आते देखा जिसे मेरी आँखे सहन नहीं कर सकी। आँखे बन्द हुई तो नवजात शिशु दिखाई दिया। पुनः आँखें खोली तो उस प्रकाश से पूरा जलाशय ही जगमगा गया, पश्चात् वह प्रकाश उस तालाब के एक कोने में सिमट गया। मैं आप से कारण जानने की इच्छा से अपनी साधना बीच में ही छोड़ कर आया हूँ। कप्या मेरी शंका का समाधान कीजिए।

ऋषि रामानन्द स्वामी जी ने अपने शिष्य अष्टानन्द से कहा हे ब्राह्मण! यह न तो तेरी भक्ति की उपलब्धि है न आप का दष्टिदोष ही है। इस प्रकार की घटनाऐं उस समय होती हैं। जिस समय ऊपर

के लोकों से कोई देव पथ्वी पर अवतार धारण करने के लिए आते हैं। वह किसी स्त्री के गर्भ में निवास करता है। फिर बालक रूप धारण करके नर लीला करके अपना अपेक्षित कार्य पूर्ण करता है। कोई देव ऊपर के लोकों से आया है। वह काशी नगर में किसी के घर जन्म लेकर अपना प्रारब्ध पूरा करेगा। उपरोक्त वचनों द्वारा ऋषि रामानन्द स्वामी जी ने अपने शिष्य अष्टानन्द की शंका का समाधान किया। उन ऋषियों की यही धारणा थी की सर्व अवतार गण माता के गर्भ से ही जन्म लेते हैं।

बालक को लेकर नीरू तथा नीमा अपने घर जुलाहा मोहल्ला (कॉलोनी) में आए। जिस भी नर व नारी ने नवजात शिशु रूप में परमेश्वर कबीर जी को देखा वह देखता ही रह गया। परमेश्वर का शरीर अति सुन्दर था। आँख जैसे कमल का फूल हो, घुँघराले बाल, लम्बे हाथ। लम्बी-2 अँगुलियाँ शरीर से मानो नूर झलक रहा हो। पूरी काशी नगरी में ऐसा अद्भुत बालक नहीं था। जो भी देखता वहीं अन्य को बताता कि नूर अली को एक बालक तालाब पर मिला है आज ही उत्पन्न हुआ शिशु है। डर के मारे लोक लाज के कारण किसी विधवा ने डाला होगा। बालक को देखने के पश्चात् उसके चेहरे से दष्टि हटाने को दिल नहीं करता, आत्मा अपने आप खिंची जाती है। पता नहीं बालक के मुख पर कैसा जादू है? पूरी काशी परमेश्वर के बालक रूप को देखने को उमड़ पड़ी। स्त्री-पुरूष झुण्ड के झुण्ड बना कर मंगल गान गाते हुए, नीरू के घर बच्चे को देखने को आए।

बच्चे (कबीर परमेश्वर) को देखकर कोई कह रहा था, यह बालक तो कोई देवता का अवतार है, कोई कह रहा था। यह तो साक्षात् विष्णु जी ही आए लगते हैं। कोई कह रहा था यह भगवान शिव ही अपनी काशी नगरी को कत्तार्थ करने को उत्पन्न हुए हैं। कोई कह रहा था। यह तो किन्नर का अवतार है, कोई कह रहा था। यह पितर नगरी से आया है। यह सर्व वार्ता सुनकर नीमा अप्रसन्न हो कर कहती थी कि मेरे बच्चे के विषय में कुछ मत कहो। हे अल्लाह ! मेरे बच्चे की इनकी नजर से रक्षा करना। तुमने कभी बच्चा देखा भी है कि नहीं। ऐसे समूह के समूह मेरे बालक को देखने आ रहे हो। आने वाले स्त्री-पुरूष बोले हे नीमा। हमने बालक तो बहुत देखे हैं परन्तु आप के बालक जैसा नहीं देखा। इसीलिए हम इसे देखने आए हैं। ऊपर अपने-2 लोकों से श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिवजी भी झांक कर देखने लगे। काशी के वासियों के मुख से अपने में से (श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा शिव में से) एक यह बालक होने की बात सुनकर बोले कि यह बालक तो किसी अन्य लोक से आया है। इस के मूल स्थान से हम भी अपरिचित हैं परन्तु है बहुत शक्ति युक्त कोई सिद्ध पुरूष है।

''शिशु कबीर परमेश्वर का नामांकन''

नीरू (नूर अल्ली) तथा नीमा पहले हिन्दू ब्राह्मण-ब्राह्मणी थे। इस कारण लालच वश ब्राह्मण लड़के का नाम रखने आए। उसी समय काजी मुसलमान अपनी पुस्तक कुर्आन शरीफ को लेकर लड़के का नाम रखने के लिए आ गए। उस समय दिल्ली में मुगल बादशाहों का शासन था जो पूरे भारतवर्ष पर शासन करते थे। जिस कारण हिन्दू समाज मुसलमानों से दबता था। काजियों ने कहा लड़के का नाम करण हम मुसलमान विधि से करेंगे अब ये मुसलमान हो चुके हैं। यह कहकर काजियों में मुख्य काजी ने कुर्आन शरीफ पुस्तक को कहीं से खोला। उस पष्ठ पर प्रथम पंक्ति में प्रथम नाम ''कबीरन्'' लिखा था। काजियों ने सोचा ''कबीर'' नाम का अर्थ बड़ा होता है। इस छोटे जाति (जुलाहे अर्थात् धाणक) के बालक का नाम कबीर रखना शोभा नहीं देगा। यह तो उच्च घरानों के बच्चों के नाम रखने योग्य है। शिशु रूपधारी परमेश्वर काजियों के मन के दोष को जानते थे। काजियों ने पुनः पवित्र कुरान शरीफ को नाम रखने के उद्देश्य से खोला। उन दोनों पष्ठों पर कबीर-कबीर-कबीर अखर लिखे थे अन्य

लेख नहीं था। काजियोंने फिर कुर्आन शरीफ को खोला उन पष्ठों पर भी कबीर-कबीर-कबीर अक्षर ही लिखा था। काजियों ने पूरी कुर्आन का निरीक्षण किया तो उनके द्वारा लाई गई कुर्आन शरीफ में सर्व अक्षर कबीर-कबीर-कबीर-कबीर हो गए काजी बोले इस बालक ने कोई जादू मन्त्र करके हमारी कुर्आन शरीफ को ही बदल डाला। तब कबीर परमेश्वर शिशु रूप में बोले हे काशी के काजियों। मैं कबीर अल्ला अर्थात् अल्लाहुअकबर, हूँ। मेरा नाम ''कबीर'' ही रखो। काजियों ने अपने साथ लाई कुरान को वहीं पटक दिया तथा चले गए। बोले इस बच्चे में कोई प्रेत आत्मा बोलती है।

''शिशु कबीर देव द्वारा कुँवारी गाय का दूध पीना''

बालक कबीर को दूध पिलाने की कोशिश नीमा ने की तो परमेश्वर ने मुख बन्द कर लिया। सर्व प्रयत्न करने पर भी नीमा तथा नीरू बालक को दूध पिलाने में असफल रहे। 25 दिन जब बालक को निराहार बीत गए तो माता-पिता अति चिन्तित हो गए। 24 दिन से नीमा तो रो-2 कर विलाप कर रही थी। सोच रही थी यह बच्चा कुछ भी नहीं खा रहा है। यह मरेगा, मेरे बेटे को किसी की नजर लगी है। 24 दिन से लगातार नजर उतारने की विधि भिन्न भिन्न-2 स्त्री-पुरूषों द्वारा बताई प्रयोग करके थक गई। कोई लाभ नहीं हुआ। आज पच्चीसवाँ दिन उदय हुआ। माता नीमा रात्रि भर जागती रही तथा रोती रही कि पता नहीं यह बच्चा कब मर जाएगा। मैं भी साथ ही फाँसी पर लटक जाऊँगी। मैं इस बच्चे के बिना जीवित नहीं रह सकती बालक कबीर का शरीर पूर्ण रूप से स्वस्थ था तथा ऐसे लग रहा था जैसे बच्चा प्रतिदिन एक किलो ग्राम (एक सेर) दूध पीता हो। परन्तु नीमा को डर था कि बिना कुछ खाए पीए यह बालक जीवित रह ही नहीं सकता। यह कभी भी मत्यु को प्राप्त हो सकता है। यह सोच कर फूट-2 कर रो रही थी। भगवान शंकर के साथ-साथ निराकार प्रभु की भी उपासना तथा उससे की गई प्रार्थना जब व्यर्थ रही तो अति व्याकुल होकर रोने लगी।

भगवान शिव, एक ब्राह्मण (ऋषि) का रूप बना कर नीरू की झोंपड़ी के सामने खड़े हुए तथा नीमा से रोने का कारण जानना चाहा। नीमा रोती रही हिचकियाँ लेती रही। सन्त रूप में खड़े भगवान शिव जी के अति आग्रह करने पर नीमा रोती-2 कहने लगी हे ब्राह्मण ! मेरे दुःख से परिचित होकर आप भी दुःखी हो जाओगे। फकीर वेशधारी शिव भगवान बोले हे माई! कहते है अपने मन का दुःख दूसरे के समक्ष कहने से मन हल्का हो जाता है। हो सकता है आप के कष्ट को निवारण करने की विधि भी प्राप्त हो जाए। आँखों में आँसू जिव्हा लड़खड़ाते हुए गहरे साँस लेते हुए नीमा ने बताया हे महात्मा जी! हम निःसन्तान थे। पच्चीस दिन पूर्व हम दोनों प्रतिदिन की तरह काशी में लहरतारा तालाब पर स्नान करने जा रहे थे। उस दिन ज्येष्ठ मास की शुक्ल पूर्णमासी की सुबह थी। रास्ते में मैंने अपने इष्ट भगवान शंकर से पुत्र प्राप्ति की हृदय से प्रार्थना की थी मेरी पुकार सुनकर दीनदयाल भगवान शंकर जी ने उसी दिन एक बालक लहरतारा तालाब में कमल के फूल पर हमें दिया। बच्चे को प्राप्त करके हमारे हर्ष का कोई ठिकाना नहीं रहा। यह हर्ष अधिक समय तक नहीं रहा। इस बच्चे ने दूध नहीं पीया। सर्व प्रयत्न करके हम थक चुके हैं। आज इस बच्चे को पच्चीसवां दिन है कुछ भी आहार नहीं किया है। यह बालक मरेगा। इसके साथ ही मैं आत्महत्या करूँगी। मैं इसकी मत्यु की प्रतिक्षा कर रही हूँ। सर्व रात्रि बैठ कर तथा रो-2 व्यतीत की है। मैं भगवान शंकर से प्रार्थना कर रही हूँ कि हे भगवन्! इससे अच्छा तो यह बालक न देते। अब इस बच्चे में इतनी ममता हो गई है कि मैं इसके बिना जीवित नहीं रह सकूंगी।

नीमा के मुख से सर्वकथा सुनकर साधु रूपधारी भगवान शंकर ने कहा। आप का बालक मुझे दिखाईए। नीमा ने बालक को पालने से उठाकर ऋषि के समक्ष प्रस्तुत किया। दोनों प्रभुओं की आपस

में दष्टि मिली। भगवान शंकर जी ने शिशु कबीर जी को अपने हाथों में ग्रहण किया तथा मस्तिष्क की रेखाऐं व हस्त रेखाऐं देख कर बोले नीमा! आप के बेटे की लम्बी आयु है यह मरने वाला नहीं है। देख कितना स्वस्थ है। कमल जैसा चेहरा खिला है। नीमा ने कहा हे विप्रवर! बनावटी सांत्वना से मुझे सन्तोष होने वाला नहीं है। बच्चा दूध पीएगा तो मुझे सुख की साँस आएगी। पच्चीस दिन के बालक का रूप धारण किए परमेश्वर कबीर जी ने भगवान शिव जी से कहा हे भगवन्! आप इन्हें कहो एक कुँवारी गाय लाऐं। आप उस कंवारी गाय पर अपना आशीर्वाद भरा हस्त रखना, वह दूध देना प्रारम्भ कर देगी। मैं उस कुँवारी गाय का दूध पीऊँगा। वह गाय आजीवन बिना ब्याए (अर्थात् कुँवारी रह कर ही) दूध दिया करेगी उस दूध से मेरी परवरिश होगी। परमेश्वर कबीर जी तथा भगवान शंकर (शिव) जी की सात बार चर्चा हुई।

शिवजी ने नीमा से कहा आप का पति कहाँ है? नीमा ने अपने पति को पुकारा वह भीगी आँखों से उपस्थित हुआ तथा ब्राह्मण को प्रणाम किया। ब्राह्मण ने कहा नीरू! आप एक कुँवारी गाय लाओ। वह दूध देवेगी। उस दूध को यह बालक पीएगा। नीरू कुँवारी गाय ले आया तथा साथ में कुम्हार के घर से एक ताजा छोटा घड़ा (चार कि.ग्रा. क्षमता का मिट्टी का पात्र) भी ले आया। परमेश्वर कबीर जी के आदेशानुसार विप्ररूपधारी शिव जी ने उस कंवारी गाय की पीठ पर हाथ मारा जैसे थपकी लगाते हैं। गऊ माता के थन लम्बे-2 हो गए तथा थनों से दूध की धार बह चली। नीरू को पहले ही वह पात्र थनों के नीचे रखने का आदेश दे रखा था। दूध का पात्र भरते ही थनों से दूध निकलना बन्द हो गया। वह दूध शिशु रूपधारी कबीर परमेश्वर जी ने पीया। नीरू नीमा ने ब्राह्मण रूपधारी भगवान शिव के चरण लिए तथा कहा आप तो साक्षात् भगवान शिव के रूप हो। आपको भगवान शिव ने ही हमारी पुकार सुनकर भेजा है। हम निर्धन व्यक्ति आपको क्या दक्षिणा दे सकते हैं? हे विप्र! 24 दिनों से हमने कोई कपड़ा भी नहीं बुना है। विप्र रूपधारी भगवान शंकर बोले! साधु भूखा भाव का, धन का भूखा नाहीं। जो है भूखा धन का, वह तो साधु नाहीं। यह कहकर विप्र रूपधारी शिवजी ने वहाँ से प्रस्थान किया।

1.ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 1 मंत्र 9

अभी इमं अध्न्या उत श्रीणन्ति धेनवः शिशुम्। सोममिन्द्राय पातवे।।9।।

अभी इमम्–अध्न्या उत श्रीणन्ति धेनवः शिशुम् सोमम् इन्द्राय पातवे।

(उत) विशेष कर (इमम्) इस (शिशुम्) बालक रूप में प्रकट (सोमम्) पूर्ण परमात्मा अमर प्रभु की (इन्द्राय) सुखदायक सुविधा के लिए जो आवश्यक पदार्थ शरीर की (पातवे) वृद्धि के लिए चाहिए वह पूर्ति (अभी) पूर्ण तरह (अध्न्या धेनवः) जो गाय, सांड द्वारा कभी भी परेशान न की गई हों अर्थात् कुँवारी गायों द्वारा (श्रीणन्ति) परवरिश की जाती है।

भावार्थ - पूर्ण परमात्मा अमर पुरुष जब लीला करता हुआा बालक रूप धारण करके स्वयं प्रकट होता है सुख-सुविधा के लिए जो आवश्यक पदार्थ शरीर वद्धि के लिए चाहिए वह पूर्ति कुँवारी गायों द्वारा की जाती है अर्थात् उस समय (अध्नि धेनु) कुँवारी गाय अपने आप दूध देती है जिससे उस पूर्ण प्रभु की परवरिश होती है।

''नीरू को धन की प्राप्ति''

बालक की प्राप्ति से पूर्व दोनों जने (पति-पत्नी) मिलकर कपड़ा बुनते थे। 25 दिन बच्चे की चिन्ता में कपड़ा बुनने का कोई कार्य न कर सके। जिस कारण से कुछ कर्ज नीरू को हो गया। कर्ज मांगने वाले भी उसी पच्चीसवें दिन आ गए तथा बुरी भली कह कर चले गए। कुछ दिन तक कर्ज न

चुकाने पर यातना देने की धमकी सेठ ने दे डाली। दोनों पति -पत्नी अति चिन्तित हो गए। अपने बुरे कर्मों को कोसने लगे। एक चिन्ता का समाधान होता है, दूसरी तैयार हो जाती है। माता-पिता को चिन्तित देख बालक बोला हे माता-पिता! आप चिन्ता न करो। आपको प्रतिदिन एक सोने की मोहर (दस ग्राम स्वर्ण) पालने के बिछौने के नीचे मिलेगी। आप अपना कर्ज उतार कर अपना तथा गऊ का खर्च निकाल कर शेष बचे धन को धर्म कर्म में लगाना। उस दिन के पश्चात् दस ग्राम स्वर्ण प्रतिदिन नीरू के घर परमेश्वर कबीर जी की कपा से मिलने लगा। यह क्रिया एक वर्ष तक चलती रही।

परमेश्वर कबीर जी ने मुहर (सोने का सिक्का) मिलने वाली लीला को गुप्त रखने को कहा था एक दिन नीमा की प्रिय सखी उसी समय नीरू के घर पर आई जिस समय वह कबीर जी को जगाने का प्रयत्न कर रही थी। नीमा की सखी ने वह स्वर्ण मुहर देख ली तथा बोली इतना सोना आपके पास कैसे आया। नीमा ने अपनी प्रिय सखी से सर्व गुप्त भेद कह सुनाया कि हमें तो एक वर्ष से यह मुहर प्रतिदिन प्राप्त हो रही है। हमारे घर पर भाग्यशाली लड़का कबीर जब से आया है। हम तो आनन्द से रहते हैं। अगले दिन ही सोना मिलना बंद हो गया। नीरू तथा नीमा दोनों मिलकर कपड़ा बुनकर अपने परिवार का पालन पोषण करने लगे। बड़ा होकर बालक कबीर भी पिता के काम में हाथ बटाने लगा। थोड़े ही समय में अधिक बुनाई करने लगा।

''ऋषि रामानन्द, सेऊ, समन तथा नेकी व कमाली के पूर्व जन्मों का ज्ञान''

ऋषि रामानन्द जी का जीव सत्ययुग में विद्याधर ब्राह्मण था जिसे परमेश्वर सत्य सुकत नाम से मिले थे। त्रेता युग में वह वेदविज्ञ नामक ऋषि था जिसको परमेश्वर मुनिन्द्र नाम से शिशु रूप में प्राप्त हुए थे तथा कमाली वाली आत्मा सत्य युग में विद्याधर की पत्नी दीपिका थी। त्रेता युग में सूर्या नाम की वेदविज्ञ ऋषि की पत्नी थी। उस समय इन्होनें परमेश्वर को पुत्रवत् पाला तथा प्यार किया था। उसी पुण्य के कारण ये आत्माऐं परमात्मा को चाहने वाली थी। कलयुग में भी इनका परमेश्वर के प्रति अटूट विश्वास था। ऋषि रामानन्द व कमाली वाली आत्माऐं ही सत्ययुग में ब्राह्मण विद्याधर तथा ब्राह्मणी दीपीका वाली आत्माऐं थी जिन्हें ससुराल से आते समय कबीर परमेश्वर एक तालाब में कमल के फूल पर शिशु रूप में मिले थे। यही आत्माऐं त्रेता युग में (वेदविज्ञ तथा सूर्या) ऋषि दम्पति थे। जिन्हें परमेश्वर शिशु रूप में प्राप्त हुए थे। समन तथा नेकी वाली आत्माऐं द्वापर युग में कालू वाल्मीकि तथा उसकी पत्नी गोदावरी थी। जिन्होंने द्वापर युग में परमेश्वर कबीर जी का शिशु रूप में लालन पालन किया था। उसी पुण्य के फल स्वरूप परमेश्वर ने उन्हें अपनी शरण में लिया था। सेऊ (शिव) वाली आत्मा द्वापर में ही एक गंगेश्वर नामक ब्राह्मण का पुत्र गणेश था। जिसने अपने पिता के घोर विरोध के पश्चात् भी मेरे उपदेश को नहीं त्यागा था तथा गंगेश्वर ब्राह्मण वाली आत्मा कलयुग में शेख तकी बना। वह द्वापर युग से ही परमेश्वर का विरोधी था। गंगेश्वर वाली आत्मा शेख तकी को काल ब्रह्म ने फिर से प्रेरित किया। जिस कारण से शेख तकी (गंगेश्वर) परमेश्वर कबीर जी का शत्रु बना। भक्त श्री कालू तथा गोदावरी का गणेश माता-पिता तुल्य सम्मान करता था। रो-2 कर कहता था काश आज मेरा जन्म आप (वाल्मीकि) के घर होता। मेरे (पालक) माता-पिता (कालू तथा गोदावरी) भी गणेश से पुत्रवत् प्यार करते थे। उनका मोह भी उस बालक में अत्यधिक हो गया था। इसी कारण से वे फिर से उसी गणेश वाली आत्मा अर्थात् सेऊ के माता-पिता (नेकी तथा समन) बने। समन की आत्मा ही नौशेरवाँ शहर में नौशेरखाँ राजा बना। फिर बलख बुखारे का बादशाह अब्राहिम अधम सुलतान हुआ तब उसको पुनः भक्ति पर लगाया।

''शिशु कबीर की सुन्नत करने का असफल प्रयत्न''

शिशु रूपधारी कबीर देव की सुन्नत करने का समय आया तो पूरा जन समूह सम्बन्धियों का इकट्ठा हो गया। नाई जब शिशु कबीर जी के लिंग को सुन्नत करने के लिए कैंची लेकर गया तो परमेश्वर ने अपने लिंग के साथ एक लिंग और बना लिया। फिर उस सुन्नत करने को तैयार व्यक्ति की आँखों के सामने तीन लिंग और बढ़ते दिखाए कुल पाँच लिंग एक बालक के देखकर वह सुन्नत करने वाला आश्चर्य में पड़ गया। तब कबीर जी शिशु रूप में बोले भईया एक ही लिंग की सुन्नत करने का विधान है ना मुसलमान धर्म में। बोल शेष चार की सुन्नत कहाँ करानी है? जल्दी बोल! शिशु को ऐसे बोलते सुनकर तथा पाँच लिंग बालक के देख कर नाई ने अन्य उपस्थित व्यक्तियों को बुलाकर वह अद्भुत दृश्य दिखाया।

सर्व उपस्थित जन समूह यह देखकर अचम्भित हो गया। आपस में चर्चा करने लगे यह अल्लाह का कैसा कमाल है एक बच्चे को पाँच पुरूष लिंग। यह देखकर बिना सुन्नत किए ही चला गया। बच्चे के पाँच लिंग होने की बात जब नीरू व नीमा को पता चला तो कहने लगे आप क्या कह रहे हो। यह नहीं हो सकता। दोनों बालक के पास गए तो शिशु को केवल एक ही पुरुष लिंग था पाँच नहीं थे। तब उन दोनों ने उन उपस्थित व्यक्तियों से कहा आप क्या कह रहे थे देखो कहाँ हैं बच्चे के पाँच लिंग केवल एक ही है। उपस्थित सर्व व्यक्तियों ने पहले आँखों देखे थे पांच पुरूष लिंग तथा उस समय केवल एक ही लिंग (पेशाब इन्द्री) को देखकर आश्चर्य चकित हो गए। तब शिशु रूप धारी परमेश्वर बोले है भोले लोगो! आप लड़के का लिंग किसलिए काटते हो? क्या लड़के को बनाने में अल्लाह (परमेश्वर) से चूक रह गई जिसे आप ठीक करते हो। क्या आप परमेश्वर से भी बढ़कर हो? यदि आप लड़के के लिंग की चमड़ी आगे से काट कर (सुन्नत करके) उसे मुसलमान बनाते हो तो लड़की को मुसलमान कैसे बनाओगे। यदि मुसलमान धर्म के व्यक्ति अन्य धर्मों के व्यक्तियों से भिन्न होते तो परमात्मा ही सुन्नत करके लड़के को जन्म देता। हे भोले इन्सानों! परमेश्वर के सर्व प्राणी हैं। कोई वर्तमान में मुसलमान समुदाय में जन्मा है तो वह मृत्यु उपरान्त हिन्दू या ईसाई धर्म में भी जन्म ले सकता है। इसी प्रकार अन्य धर्मों में जन्में व्यक्ति भी मुसलमान धर्म व अन्य धर्म में जन्म लेते हैं। ये धर्म की दिवारे खड़ी करके आपसी भाई चारा नष्ट मत करो। यह सर्व काल ब्रह्म की चाल है। कलयुग से पहले अन्य धर्म नहीं थे। केवल एक मानव धर्म (मानवता धर्म) ही था। अब कलयुग में काल ब्रह्म ने भिन्न-2 धर्मों में बांट कर मानव की शान्ति समाप्त कर दी है। सुन्नत के समय उपस्थित व्यक्ति बालक मुख से सद्उपदेश सुनकर सर्व दंग रह गए। माता-नीमा ने बालक के मुख पर कपड़ा ढक दिया तथा बोली घना मत बोल। काजी सुन लेंगे तो तुझे मार डालेंगे वो बेरहम हैं बेटा। परमेश्वर कबीर जी माता के हृदय के कष्ट से परिचित होकर सोने का बहाना बना कर खराटे भरने लगे। तब नीमा ने सुख की सांस ली तथा अपने सर्व सम्बन्धियों से प्रार्थना की आप किसी को मत बताना कि कबीर ने कुछ बोला है। कहीं मुझे बेटे से हाथ धोने पड़ें। छः महीने की आयु में परमेश्वर पैरों चलने लगे।

''ऋषि रामानन्द का उद्धार करना''

''ऋषि रामानन्द स्वामी को गुरु बना कर शरण में लेना''

स्वामी रामानन्द जी अपने समय के सुप्रसिद्ध विद्वान कहे जाते थे। वे द्राविड़ से काशी नगर में वेद व गीता ज्ञान के प्रचार हेतु आए थे। उस समय काशी में अधिकतर ब्राह्मण शास्त्रविरूद्ध भक्तिविधि

के आधार से जनता को दिशा भ्रष्ट कर रहे थे। भूत-प्रेतों के झाड़े जन्त्र करके वे काशी शहर के ब्राह्मण अपना स्वार्थ सिद्ध कर रहे थे। स्वामी रामानन्द जी ने काशी शहर में वेद ज्ञान व गीता जी तथा पुराणों के ज्ञान को अधिक महत्त्व दिया तथा वह भूत-प्रेत उतारने वाली पूजा का अन्त किया अपने ज्ञान के प्रचार के लिए चौदह सौ ऋषि बना रखे थे। {स्वामी रामानन्द जी ने कबीर परमेश्वर जी की शरण में आने के पश्चात् चौरासी शिष्य और बनाए थे जिनमें रविदास जी नीरू-नीमा, गीगनौर (राजस्थान) के राजा पीपा ठाकुर आदि थे कुल शिष्यों की संख्या चौदह सौ चौरासी कही जाती है } वे चौदह सौ ऋषि विष्णु पुराण, शिव पुराण तथा देवी पुराण आदि मुख्य-2 पुराणों की कथा करते थे। प्रतिदिन बावन (52) सभाऐं ऋषि जन किया करते थे। काशी के क्षेत्र विभाजित करके मुख्य वक्ताओं को प्रवचन करने को स्वामी रामानन्द जी ने कह रखा था। स्वयं भी उन सभाओं में प्रवचन करने जाते थे। स्वामी रामानन्द जी का बोल बाला आस-पास के क्षेत्र में भी था। सर्व जनता कहती थी कि वर्तमान में महर्षि रामानन्द स्वामी तुल्य विद्वान वेदों व गीता जी तथा पुराणों का सार ज्ञाता पथ्वी पर नहीं है। परमेश्वर कबीर जी ने अपने स्वभाव अनुसार अर्थात् नियमानुसार रामानन्द स्वामी को शरण में लेना था। कबीर जी ने सन्त गरीबदास जी को अपना सिद्धान्त बताया है जो सन्त गरीबदास जी (बारहवें पंथ प्रवर्तक, छुड़ानी धाम, हरियाणा वाले) ने अपनी वाणी में लिखा है:-

गरीब जो हमरी शरण है, उसका हूँ मैं दास। गेल–गेल लाग्या फिरूं जब तक धरती आकाश।।
गोता मारूं स्वर्ग में जा पैठू पाताल। गरीबदास ढूढत फिरूं अपने हीरे माणिक लाल।
हरदम संगी बिछुड़त नाहीं है महबूब सल्लौना वो। एक पलक में साहेब मेरा फिरता चौदह भवना वो।
ज्यों बच्छा गऊ की नजर में यूं साई कूँ सन्त। भक्तों के पीछे फिरै भक्त वच्छल भगवन्त।
कबीर कमाई आपनी कबहूँ न निष्फल जायें। सात समुन्दर आढे पड़ैं मिले अगाऊ आय।।

सतयुग में विद्याधर नामक ब्राह्मण के रूप में तथा त्रेतायुग में वेदविज्ञ ऋषि के रूप में जन्में स्वामी रामानन्द जी वाले जीव ने परमेश्वर कबीर जी को बालक रूप में प्राप्त किया था। भक्तमति कमाली वाला जीव उस समय दीपिका नाम की विद्याधर ब्राह्मण की पत्नी थी। वही दीपिका वाली आत्मा वेदविज्ञ ब्राह्मण की पत्नी सूर्या थी। जो कलयुग में कमाली बनी। यही दोनों आत्माऐं त्रेता युग में ऋषि दम्पति (वेदविज्ञ तथा सूर्या) था। उस समय भी परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी शिशु रूप में इन्हें मिले थे। इस के पश्चात् भी इन दोनों जीवों को अनेकों जन्म व स्वर्ग प्राप्ति भी हुई थी। वही आत्माऐं कलयुग में परमेश्वर कबीर जी के समकालीन हुई थी। पूर्व जन्म के सन्त सेवा के पुण्य अनुसार परमेश्वर कबीर जी ने उन पुण्यात्माओं को शरण में लेने के लिए लीला की।

स्वामी रामानन्द जी की आयु 104 वर्ष थी उस समय कबीर देव जी के लीलामय शरीर की आयु 5 (पाँच) वर्ष थी। स्वामी रामानन्द जी महाराज का आश्रम गंगा दरिया के आधा किलो मीटर दूर स्थित था। स्वामी रामानन्द जी प्रतिदिन सूर्योदय से पूर्व गंगा नदी के तट पर बने पंचगंगा घाट पर स्नान करने जाते थे। पाँच वर्षीय कबीर देव ने अढ़ाई (दो वर्ष छः महीने) वर्ष के बच्चे का रूप धारण किया तथा पंच गंगा घाट की पौड़ियों (सीढ़ियों) में लेट गए। स्वामी रामानन्द जी प्रतिदिन की भांति स्नान करने गंगा दरिया के घाट पर गए। अंधेरा होने के कारण स्वामी रामानन्द जी बालक कबीर देव को नहीं देख सके। स्वामी रामानन्द जी के पैर की खड़ाऊ (लकड़ी का जूता) सीढ़ियों में लेटे बालक कबीर देव के सिर में लगी। बालक कबीर देव लीला करते हुए रोने लगे जैसे बच्चा रोता है। स्वामी रामानन्द जी को ज्ञान हुआ कि उनका पैर किसी बच्चे को लगा है जिस कारण से बच्चा पीड़ा से रोने लगा है। स्वामी जी बालक को उठाने तथा चुप करने के लिए शीघ्रता से झुके तो उनके गले की माला (एक

रूद्राक्ष की कण्ठी माला) बालक कबीर देव के गले में डल गई। जिसे स्वामी रामानन्द जी नहीं देख सके। स्वामी रामानन्द जी ने बच्चे को प्यार से कहा बेटा राम-राम बोल राम नाम से सर्व कष्ट दूर हो जाता है। ऐसा कह कर बच्चे के सिर को सहलाया। आशीर्वाद देते हुए सिर पर हाथ रखा। बालक कबीर परमेश्वर अपना उद्देश्य पूरा होने पर चुप होकर पौड़ियों पर बैठ गए तथा एक शब्द गाया और चल पड़े :-

(यह शब्द अगम निगम बोध के पष्ठ 34 पर लिखा है।)

गुरू रामानंद जी समझ पकड़ियो मोरी बाहीं।। जो बालक रून झुनियां खेलत सो बालक हम नाहीं।।
हम तो लेना सत का सौद हम ना पाखण्ड पूजा चाहीं।। बांह पकड़ो तो दढ़ का पकड़ बहुर छुट न जाई।।
जो माता से जन्मा वह नहीं इष्ट हमारा।। राम–कष्ण मरै विष्णु साथै जामण हारा।।
तीन गुण हैं तीनों देवता, निरंजन चौथा कहिए। अविनाशी प्रभु इस सब से न्यारा, मोकूं वह चाहिए।।
पांच तत्त्व की देह ना मेरी, ना कोई माता जाया। जीव उदारन तुम को तारन, सीधा जग में आया।।
राम–राम और ओम् नाम यह सब काल कमाई। सतनाम दो मोरे सतगुरू तब काल जाल छुटाई।।
सतनाम बिन जन्में–मरें परम शान्ति नाहीं। सनातन धाम मिले न कबहु, भावें कोटि समाधि लाई।।
सार शब्द सरजीवन कहिए, सब मन्त्रन का सरदारा। कह कबीर सुनो गुरू जी या विधि उतरें पारा।।

स्वामी रामानन्द जी ने विचार किया कि वह बच्चा रात्रि में रास्ता भूल जाने के कारण यहाँ आकर सो गया होगा। इसे अपने आश्रम में ले जाऊँगा। वहाँ से इसे इनके घर भिजवा दूँगा। ऐसा विचार करके स्नान करने लगे। परमेश्वर कबीर जी वहाँ से अन्तर्ध्यान हुए तथा अपनी झोंपड़ी में सो गए। कबीर परमेश्वर ने इस प्रकार स्वामी रामानन्द जी को गुरु धारण किया।

''ऋषि विवेकानन्द जी से ज्ञान चर्चा''

स्वामी रामानन्द जी का एक शिष्य ऋषि विवेकानन्द जी बहुत ही अच्छे प्रवचन कर्त्ता रूप में प्रसिद्ध था। ऋषि विवेकानन्द जी को काशी शहर के एक क्षेत्र का उपदेशक नियुक्त किया हुआ था। उस क्षेत्र के व्यक्ति ऋषि विवेकानन्द जी के धारा प्रवाह प्रवचनों को सुनकर उनकी प्रसंशा किये बिना नहीं रहते थे। उसकी कालोनी में बहुत प्रतिष्ठा बनी थी। प्रतिदिन की तरह ऋषि विवेकानन्द जी विष्णु पुराण से कथा सुना रहे थे। कह रहे थे, भगवान विष्णु सर्वेश्वर हैं, अविनाशी, अजन्मा हैं। सर्व सष्टि रचनहार तथा पालन हार हैं। इनके कोई जन्मदाता माता-पिता नहीं है। ये स्वयंभू हैं। ये ही त्रेतायुग में अयोध्या के राजा दशरथ जी के घर माता कौशल्या देवी की पवित्र कोख से उत्पन्न हुए थे तथा श्री रामचन्द्र नाम से प्रसिद्ध हुए। समुद्र पर सेतु बनाया, जल पर पत्थर तैराए। लंकापति रावण का वध किया। श्री विष्णु भगवान ही ने द्वापर युग में श्री कष्णचन्द्र भगवान का अवतार धार कर वासुदेव जी के रूप में माता देवकी के गर्भ से जन्म लिया तथा कंस, केशि,शिशुपाल, जरासंध आदि दुष्टों का संहार किया। पाँच वर्षीय बालक कबीर देव जी भी उस ऋषि विवेकानन्द जी का प्रवचन सुन रहे थे तथा सैंकड़ों की संख्या में अन्य श्रोता गण भी उपस्थित थे। ऋषि विवेकानन्द जी ने अपने प्रवचनों को विराम दिया तथा उपस्थित श्रोताओं से कहा यदि किसी को कोई प्रश्न करना है तो वह निःसंकोच अपनी शंका का समाधान करा सकता है।

बालक कबीर परमेश्वर खड़े हुए तथा ऋषि विवेकानन्द जी से करबद्ध होकर प्रार्थना कि हे ऋषि जी ! आपने भगवान विष्णु जी के विषय में बताया कि ये अजन्मा हैं, अविनाशी है। इनके कोई माता-पिता नहीं हैं। एक दिन एक ब्राह्मण श्री शिव पुराण के रूद्र संहिता अध्याय 6,7 को पढ़ कर

श्रोताओं को सुना रहे थे, यह दास भी उस सत्संग में उपस्थित था। शिव पुराण में लिखा है कि निराकार परमात्मा आकार में आया वह सदाशिव, काल रूपी ब्रह्म कहलाया। उसने अपने अन्दर से एक स्त्री प्रकट की जो प्रकति देवी, अष्टांगी, त्रिदेव जननी, शिवा आदि नामों से जानी जाती है। काल रूपी ब्रह्म ने एक काशी नामक सुन्दर स्थान बनाया वहाँ दोनों शिव तथा शिवा अर्थात् काल रूपी ब्रह्म तथा दुर्गा पति-पत्नी रूप में निवास करने लगे। कुछ समय पश्चात् दोनों के सम्भोग से एक लड़का उत्पन्न हुआ। उसका नाम विष्णु रखा। इसी प्रकार दोनों के रमण करने से एक पुत्र उत्पन्न हुआ उसका नाम ब्रह्मा रखा तथा कमल के फूल पर डाल कर अचेत कर दिया। फिर अध्याय 9 के अन्त में लिखा है कि ''ब्रह्मा रजगुण है, विष्णु सतगुण है तथा शंकर तमगुण है परन्तु सदा शिव इनसे भिन्न है वह गुणातीत है। यहाँ पर सदाशिव के अतिरिक्त तीन देव श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिवजी भी है। इससे सिद्ध हुआ कि इन त्रिदेवों की जननी दुर्गा अर्थात् प्रकति देवी है तथा पिता काल ब्रह्म है। इन तीनों प्रभुओं विष्णु आदि का जन्म हुआ है इनके माता-पिता भी है।

एक दिन मैंने एक ब्राह्मण द्वारा श्री देवी पुराण के तीसरे स्कंद में अध्याय 4-5 में सुना था कि जिसमें भगवान विष्णु ने कहा है ''इन प्रकति देवी अर्थात् दुर्गा को मैंने पहले भी देखा था मुझे अपने बचपन की याद आई है। मैं एक वट वक्ष के नीचे पालने में लेटा हुआ था। यह मुझे पालने में झूला रही थी। उस समय में बालक रूप में था। प्रकति देवी के निकट जाकर तीनों देव (त्रिदेव) श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिवजी करबद्ध होकर खड़े हो गए। भगवान विष्णु ने देवी की स्तुति की ''तुम शुद्ध स्वरूपा हो, यह संसार तुम ही से उद्भाषित हो रहा है। हमारा अविर्भाव अर्थात् जन्म तथा तिरोभाव अर्थात् मत्यु होती है। हम अविनाशी नहीं है। तुम अविनाशी हो। प्रकति देवी हो। भगवान शंकर बोले, हे माता! यदि आप ही के गर्भ से भगवान विष्णु तथा भगवान ब्रह्मा का जन्म हुआ है तो क्या मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर आपका पुत्र नहीं हुआ? अर्थात् मुझे भी जन्म देने वाली तुम ही हो।

हे ऋषि विवेकानन्द जी! आप कह रहे हो कि पुराणों में लिखा है कि भगवान विष्णु के तो कोई माता-पिता नहीं। ये अविनाशी हैं। इन पुराणों का ज्ञान दाता एक श्री ब्रह्मा जी हैं तथा लेखक भी एक ही श्री व्यास जी हैं। जबकि पुराणों में तो भगवान विष्णु नाशवान लिखे हैं। इनके माता-पिता का नाम भी लिखा है। क्यों जनता को भ्रमित कर रहे हो।

कबीर, बेद पढे पर भेद ना जाने, बाचें पुराण अठारा। जड़ को अंधा पान खिलावें, भूले सिर्जन हारा।।

कबीर परमेश्वर जी के मुख कमल से उपरोक्त पुराणों में लिखा उल्लेख सुनकर ऋषि विवेकानन्द अति क्रोधित हो गया तथा उपस्थित श्रोताओं से बोले यह बालक झूठ बोल रहा है। पुराणों में ऐसा नहीं लिखा है। उपस्थित श्रोताओं ने भी सहमति व्यक्त की कि हे ऋषि जी आप सत्य कह रहे हो यह बालक क्या जाने पुराणों के गूढ़ रहस्य को? आप विद्वान पुरूष परम विवेकशील हो। आप इस बच्चे की बातों पर ध्यान न दो। ऋषि विवेकानन्द जी ने पुराणों को उसी समय देखा जिसमें सर्व विवरण विद्यमान था। परन्तु मान हानि के भय से अपने झूठे व्यक्तव्य पर ही दढ़ रहते हुए कहा हे बालक तेरा क्या नाम है? तू किस जाति में जन्मा है। तूने तिलक लगाया है। क्या तूने कोई गुरु धारण किया है? शीघ्र बताइए।

कबीर परमेश्वर जी ने बोलने से पहले ही श्रोता बोले हे ऋषि जी! इसका नाम कबीर है, यह नीरू जुलाहे का पुत्र है। कबीर जी बोले ऋषि जी मेरा यही परिचय है जो श्रोताओं ने आपको बताया। मैंने गुरु धारण कर रखा है। ऋषि विवेकानन्द जी ने पूछा क्या नाम है तेरे गुरुदेव का? परमेश्वर कबीर जी ने कहा मेरे पूज्य गुरुदेव वही हैं जो आपके गुरुदेव हैं। उनका नाम है पंडित रामानन्द स्वामी। जुलाहे

के बालक कबीर परमेश्वर जी के मुख कमल से स्वामी रामानन्द जी को अपना गुरु जी बताने से ऋषि विवेकानन्द जी ने ज्ञान चर्चा का विषय बदल कर परमेश्वर कबीर जी को बहुत बुरा-भला कहा तथा श्रोताओं को भड़काने व वास्तविक विषय भूलाने के उद्देश्य से कहा देखो रे भाईयो! यह कितना झूठा बालक है। यह मेरे पूज्य गुरुदेव श्री 1008 स्वामी रामानन्द जी को अपना गुरु जी कह रहा है। मेरे गुरु जी तो इन अछूतों के दर्शन भी नहीं करते। शुद्रों का अंग भी नहीं छूते। अभी जाता हूँ गुरु जी को बताता हूँ। भाई श्रोताओ! आप सर्व कल स्वामी जी के आश्रम पर आना सुबह-2। इस झूठे की कितनी पिटाई स्वामी रामानन्द जी करेगें? इसने हमारे गुरुदेव का नाम मिट्टी में मिलाया है। सर्व श्रोता बोले यह बालक मूर्ख, झूठा, गंवार है आप विद्वान हो। कबीर जी ने कहा:-

निरंजन धन तेरा दरबार–निरंजन धन तेरा दरबार। जहां पर तनिक ना न्याय विचार। (टेक)
वैश्या ओढे मल–मल खासा गल मोतियों का हार। पतिव्रता को मिले न खादी सूखा निरस आहार।।
पाखण्डी की पूजा जग में सन्त को कहे लबार। अज्ञानी को परम विवेकी, ज्ञानी को मूढ गंवार।।
कह कबीर सुनो भाई साधो सब उल्टा व्यवहार। सच्चों को तो झूठ बतावें, इन झूठों का एतबार।।

बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर जी अपने घर चले गए। वह ऋषि विवेकानन्द अपने गुरु रामानन्द स्वामी जी के आश्रम में गया तथा सर्व घटना की जानकारी बताई। हे स्वामी जी! एक छोटी जाति का जुलाहे का लड़का कबीर अपने आप को बड़ा विद्वान् सिद्ध करने के लिए भगवान् विष्णु जी को नाशवान बताता है। हे ऋषि जी! उसने तो हम ब्रह्मणों का घर से निकलना भी दूभर कर दिया है। हमारी नाक काट डाली अर्थात् हमें महा शर्मिन्दा (लज्जित) होना पड़ रहा है। उसने कल भरी सभा में कहा है कि पंड़ित रामानन्द स्वामी मेरे गुरु जी हैं। मैंने उनसे दिक्षा ले रखी है। उस कबीर ने तिलक भी लगा रखा था जैसा हम वैष्णव सन्त लगाते है। अपने शिष्य विवेकानन्द की बात सुनकर स्वामी रामानन्द जी बहुत क्रोधित होकर बोले हे विवेकानन्द कल सुबह उसे मेरे सामने उपस्थित करो। देखना सर्व के समक्ष उसकी झूठ का पर्दाफाश करूँगा।

''कबीर जी द्वारा स्वामी रामानन्द के मन की बात बताना''

दूसरे दिन विवेकानन्द ऋषि अपने साथ नौ व्यक्तियों को लेकर जुलाहा कॉलोनी में नीरू के मकान के विषय में पूछने लगा कि नीरू का मकान कौन सा है? कालोनी के एक व्यक्ति को उनके आव-भाव से लगा कि ये कोई अप्रिय घटना करने के उद्देश्य से आए हैं। उसने शीघ्रता से नीरू को जाकर बताया कि कुछ ब्राह्मण आपके घर आ रहे हैं। उनकी नीयत झगड़ा करने की है। नीमा भी वहीं खड़ी उस व्यक्ति की बातें सुन रही थी उसी समय वे ब्राह्मण गली में नीरू के मकान की ओर आते दिखाई दिए। नीमा समझ गई कि अवश्य कबीर ने इन ब्राह्मणों से ज्ञान चर्चा की है। वे ईर्ष्यालु व्यक्ति मेरे बेटे को मार डालेगें। इतना विचार करके सोए हुए बालक कबीर को जगाया तथा अपनी झोंपड़ी के पीछे ले गई वहाँ लेटा कर रजाई डाल दी तथा कहा बेटा बोलना नहीं है। कुछ व्यक्ति झगड़ा करने के उद्देश्य से अपने घर आ रहे हैं। नीमा अपने घर के द्वार पर गली में खड़ी हो गई। तब तक वे ब्राह्मण घर के निकट आ चुके थे। उन्होंने पूछा क्या नीरू का घर यही है ? नीमा ने उत्तर दिया हाँ ऋषि जी! यही है कहो कैसे आना हुआ। ऋषि विवेकानन्द बोला कहाँ है तुम्हारा शरारती बच्चा कबीर? कल उसने भरी सभा में मेरे गुरुदेव का अपमान किया है। आज उस की पिटाई गुरु जी सर्व के समक्ष करेंगे। इसको सबक सिखाऐंगे। नीमा बोली मेरा बेटा निर्दोष है वह किसी का अपमान नहीं कर सकता। आप मेरे बेटे से ईर्ष्या रखते हो। कभी कोई ब्राह्मण उलहाने (शिकायत) लेकर आता है कभी कोई तो कभी कोई

आता है। आप मेरे बेटे की जान के शत्रु क्यों बने हो? लौट जाइए।

सर्व ब्राह्मण बलपूर्वक नीरू की झोंपड़ी में प्रवेश करके कपड़ों को उठा-2 कर बालक को खोजने लगे। चारपाइयों को भी उल्ट कर पटक दिया। जोर-2 से ऊंची आवाज में बोलने लगे। मात-पिता को दुःखी जानकर बालक रूपधारी कबीर परमेश्वर जी रजाई से निकल कर खड़े हो गए तथा कहा ऋषि जी मैं झोपड़ी के पीछे छुपा हूँ। बच्चे की आवाज सुनकर सर्व ब्राह्मण पीछे गए। वहाँ खड़े कबीर जी को पकड़ कर अपने साथ ले जाने लगे। नीमा तथा नीरू ने विरोध किया। नीमा ने बालक कबीर जी को सीने से लगाकर कहा मेरे बच्चे को मत ले जाओ। मत ले जाओ----- ऐसे कह कर रोने लगी। निर्दयों ने नीमा को धक्का मार कर जमीन पर गिरा दिया। नीमा फिर उठ कर पीछे दौड़ी तथा बालक कबीर जी का हाथ उनसे छुटवाने का प्रयत्न किया। एक व्यक्ति ने ऐसा थप्पड़ मारा नीमा के मुख व नाक से रक्त टपकने लगा। नीमा रोती हुई गली में अचेत हो गई। नीरू ने भी बच्चे को छुड़वाने की कोशिश की तो उसे भी पीट-2 कर मत सम कर दिया। कालोनी वाले उठा कर उनके घर ले गए। बहुत समय पश्चात् दोनों सचेत हुए। बच्चे के वियोग में रो-2 कर दोनों का बुरा हाल था। नीरू चोट के कारण चल-फिरने में असमर्थ जमीन पर गिर कर विलाप कर रहा था। कभी चुप होकर भयभीत हुआ गली की ओर देख रहा था। मन में सोच रहा था कि कहीं वे लौट कर ना आ जाऐं तथा मुझे जान से न मार डालें। फिर बच्चे को याद करके विलाप करने लगता। मेरे बेटे को मत मारो-मत मारो इसने क्या बिगाड़ा है तुम्हारा। ऐसे पागल जैसी स्थिति नीरू की हो गई थी। नीमा होश में आती थी फिर अपने बच्चे के साथ हो रहे अत्याचार की कल्पना कर बेहोश (अचेत) हो जाती थी। मोहल्ले (कालोनी) के स्त्री पुरूष उनकी दशा देखकर अति दुःखी थे।

प्रातःकाल का समय था। स्वामी रामानन्द जी गंगा नदी पर स्नान करके लौटे ही थे। अपनी कुटिया (Hut) में बैठे थे। जब उन्हें पता चला कि उस बालक कबीर को पकड़ कर ऋषि विवेकानन्द जी की टीम ला रही है तो स्वामी रामानन्द जी ने अपनी कुटिया के द्वार पर कपड़े का पर्दा लगा लिया। यह दिखाने के लिए कि मैं पवित्र जाति का ब्राह्मण हूँ तथा शुद्रों को दीक्षा देना तो दूर की बात है, सुबह-2 तो दर्शन भी नहीं करता।

ऋषि विवेकानन्द जी ने बालक कबीर देव जी को कुटिया के समक्ष खड़ा करके कहा हे गुरुदेव। यह रहा वह झूठा बच्चा कबीर जुलाहा। उस समय ऋषि विवेकानन्द जी ने अपने प्रचार क्षेत्र के व्यक्तियों को विशेष कर बुला रखा था। यह दिखाने के लिए कि यह कबीर झूठ बोलता है। स्वामी रामानन्द जी कहेंगे मैंने इसको कभी दीक्षा नहीं दी। जिससे सर्व उपस्थित व्यक्तियों को यह बात जचेगी कि कबीर पुराणों के विषय में भी झूठ बोल रहा था जिन के बारे में कबीर जी ने लिखा बताया था कि श्री विष्णु जी, श्री शिव जी तथा ब्रह्मा जी नाशवान हैं। इनका जन्म होता है तथा मत्यु भी होती है तथा इनकी माता का नाम प्रकति देवी (दुर्गा) है तथा पिता का नाम सदाशिव अर्थात् काल ब्रह्म है। जिन हाथों से कबीर परमेश्वर को पकड़ कर लाए थे। उन सर्व व्यक्तियों ने अपने हाथ मिट्टी से रगड़-रगड़ कर धोए तथा सर्व उपस्थित व्यक्तियों के समक्ष बाल्टी में जल भर कर स्नान किया सर्व वस्त्र जो शरीर पर पहन रखे थे वे भी कूट-2 कर धोए।

स्वामी रामानन्द जी ने अपनी कुटिया के द्वार पर खड़े पाँच वर्षीय बालक कबीर से ऊँची आवाज में प्रश्न किया। हे बालक ! आपका क्या नाम है? कौन जाति में जन्म है? आपका भक्ति पंथ (मार्ग) कौन है? उस समय लगभग हजार की संख्या में दर्शक उपस्थित थे। बालक कबीर जी ने भी आधीनता से ऊँची आवाज में उत्तर दिया :-

जाति मेरी जगत्गुरु, परमेश्वर है पंथ। गरीबदास लिखित पढे, मेरा नाम निरंजन कंत।।
हे स्वामी संष्टा मैं संष्टि मेरे तीर। दास गरीब अधर बसूँ अविगत सत् कबीर।
गोता मारूं स्वर्ग में जा पैठूं पाताल। गरीब दास ढूंढत फिरू हीरे माणिक लाल।

भावार्थ :- कबीर जी ने कहा हे स्वामी रामानन्द जी! परमेश्वर के घर कोई जाति नहीं है। आप विद्वान पुरूष होते हुए वर्ण भेद को महत्त्व दे रहे हो। मेरी जाति व नाम तथा भक्ति पंथ जानना चाहते हो तो सुनों। मेरा नाम वही कविर्देव है जो वेदों में लिखा है जिसे आप जी पढ़ते हो। मैं वह निरंजन (माया रहित) कंत (सर्व का पति) अर्थात् सबका स्वामी हूँ। मैं ही सर्व संष्टि रचनहार (संष्टा) हूँ। यह संष्टि मेरे ही आश्रित (तीर यानि किनारे) है। मैं ऊपर सतलोक में निवास करता हूँ। मैं वह अमर अव्यक्त (अविगत सत्) कबीर हूँ। जिसका वर्णन गीता अध्याय 8 श्लोक सं.20 से 22 में है। हे स्वामी जी गीता अध्याय 7 श्लोक 24 में गीता ज्ञान दाता अर्थात् काल ब्रह्म (क्षर पुरूष) अपने विषय में बताता है कि! यह मूर्ख मनुष्य समुदाय मुझ अव्यक्त को कंष्ण रूप में व्यक्ति मान रहे हैं। मैं सबके समक्ष प्रकट नहीं होता। यह मनुष्य समुदाय मेरे इस अश्रेष्ठ अटल नियम से अपरिचित हैं (24) गीता अ. 7 श्लोक 25 में कहा है कि मैं (गीता ज्ञान दाता) अपनी योगमाया (सिद्धिशक्ति) से छिपा हुआ अपने वास्तविक रूप में सबके समक्ष प्रत्यक्ष नहीं होता। यह अज्ञानी जन समुदाय मुझ कंष्ण व राम आदि की तरह माता से जन्म न लेने वाले प्रभु को तथा अविनाशी (जो अन्य अव्यक्त परमेश्वर है) को नहीं जानते।

हे स्वामी रामानन्द जी गीता अध्याय 7 श्लोक 24-25 में गीता ज्ञान दाता काल ब्रह्म (क्षर पुरूष) ने अपने को अव्यक्त कहा है यह प्रथम अव्यक्त प्रभु हुआ। अब सुनो दूसरे तथा तीसरे अव्यक्त प्रभुओं के विषय में। गीता अध्याय 8 श्लोक 18-19 में गीता ज्ञान दाता ने अपने से अन्य अव्यक्त परमात्मा का वर्णन किया है कहा है :- यह सर्व चराचर प्राणी दिन के समय अव्यक्त परमात्मा से उत्पन्न होते है रात्रि के समय उसी में लीन हो जाते हैं। यह जानकारी काल ब्रह्म ने अपने से अन्य अव्यक्त प्रभु (परब्रह्म) अर्थात् अक्षर ब्रह्म के विषय में दी है। यह दूसरा अव्यक्त (अविगत) प्रभु हुआ तीसरे अव्यक्त (अविगत) परमात्मा अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म के विषय में गीता अध्याय 8 श्लोक 20 से 22 में कहा है कि जिस अव्यक्त प्रभु का गीता अध्याय 8 श्लोक 18-19 में वर्णन किया है वह पूर्ण प्रभु नहीं है। वह भी वास्तव में अविनाशी प्रभु नहीं है। परन्तु उस अव्यक्त (जिसका विवरण उपरोक्त श्लोक 18-19 में है) से भी अति परे दूसरा जो सनातन अव्यक्त भाव है वह परम दिव्य परमेश्वर सब भूतों (प्राणियों) के नष्ट होने पर भी नष्ट नहीं होता। वह अक्षर अव्यक्त अविनाशी अविगत अर्थात् वास्तव में अविनाशी अव्यक्त प्रभु इस नाम से कहा गया है। उसी अक्षर अव्यक्त की प्राप्ति को परमगति कहते हैं। जिस दिव्य परम परमात्मा को प्राप्त होकर साधक वापस लौट कर इस संसार में नहीं आते (इसी का विवरण गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा श्लोक 16-17 में भी है) वह धाम अर्थात् जिस लोक (धाम) में वह अविनाशी (अव्यक्त) परमात्मा रहता है वह धाम (स्थान) मेरे वाले लोक (ब्रह्मलोक) से श्रेष्ठ है। हे पार्थ! जिस अविनाशी परमात्मा के अन्तर्गत सर्व प्राणी हैं। जिस सच्चिदानन्द घन परमात्मा से यह समस्त जगत परिपूर्ण है, वह सनातन अव्यक्त परमेश्वर तो अनन्य भक्ति से प्राप्त होने योग्य है (गीता अ. 8/मं. 20,21,22) हे स्वामी रामानन्द जी मैं वही तीसरी श्रेणी वाला अविगत (अव्यक्त) सत् (सनातन अविनाशी भाव वाला परमेश्वर) कबीर हूँ। जिसे वेदों में कविर्देव कहा है वही कबीर देव मैं कहलाता हूँ।

हे स्वामी रामानन्द जी! सर्व संष्टि को रचने वाला (संष्टा) मैं ही हूँ। मैं ही आत्मा का आधार जगतगुरु जगत् पिता, बन्धु तथा जो सत्य साधना करके सत्यलोक जा चुके हैं उनको सत्यलोक पहुँचाने वाला मैं ही हूँ। काल ब्रह्म की तरह धोखा न देने वाले स्वभाव वाला कबीर देव (कविर्देव) मैं ही

हूँ। जिसका प्रमाण अर्थववेद काण्ड 4 अनुवाक 1 मन्त्र 7 में लिखा है।

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र 7

योऽथर्वाणं पित्तरं देवबन्धुं बृहस्पतिं नमसाव च गच्छात्।
त्वं विश्वेषां जनिता यथासः कविर्देवो न दभायत् स्वधावान्।।7।।

यः अथर्वाणम् पित्तरम् देवबन्धुम् बृहस्पतिम् नमसा अव च गच्छात् त्वम् विश्वेषाम् जनिता यथा सः कविर्देवः न दभायत् स्वधावान्

अनुवाद :— (यः) जो (अथर्वाणम्) अचल अर्थात् अविनाशी (पित्तरम्) जगत पिता (देव बन्धुम्) भक्तों का वास्तविक साथी अर्थात् आत्मा का आधार (बृहस्पतिम्) बड़ा स्वामी अर्थात् परमेश्वर व जगत्गुरु (च) तथा (नमसाव) विनम्र पुजारी अर्थात् विधिवत् साधक को सुरक्षा के साथ (गच्छात्) सतलोक गए हुओं को यानि जो मोक्ष प्राप्त कर चुके हैं, उनको सतलोक ले जाने वाला (विश्वेषाम्) सर्व ब्रह्मण्डों की (जनिता) रचना करने वाला जगदम्बा अर्थात् माता वाले गुणों से भी युक्त (न दभायत्) काल की तरह धोखा न देने वाले (स्वधावान्) स्वभाव अर्थात् गुणों वाला (यथा) ज्यों का त्यों अर्थात् वैसा ही (सः) वह (त्वम्) आप (कविर्देवः/ कविर्देवः) कविर्देव है अर्थात् भाषा भिन्न इसे कबीर परमेश्वर भी कहते हैं।

केवल हिन्दी अनुवाद :- जो अचल अर्थात् अविनाशी जगत पिता भक्तों का वास्तविक साथी अर्थात् आत्मा का आधार बड़ा स्वामी अर्थात् परमेश्वर व जगत्गुरु तथा विनम्र पुजारी अर्थात् विधिवत् साधक को सुरक्षा के साथ सतलोक गए हुओं को यानि जो मोक्ष प्राप्त कर चुके हैं, उनको सतलोक ले जाने वाला सर्व ब्रह्मण्डों की रचना करने वाला जगदम्बा अर्थात् माता वाले गुणों से भी युक्त काल की तरह धोखा न देने वाले स्वभाव अर्थात् गुणों वाला ज्यों का त्यों अर्थात् वैसा ही वह आप कविर्देव है अर्थात् भाषा भिन्न इसे कबीर परमेश्वर भी कहते हैं।

भावार्थ :- इस मंत्र में यह भी स्पष्ट कर दिया कि उस परमेश्वर का नाम कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर है, जिसने सर्व रचना की है।

जो परमेश्वर अचल अर्थात् वास्तव में अविनाशी (गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में भी प्रमाण है) जगत् गुरु, परमेश्वर आत्माधार, जो पूर्ण मुक्त होकर सत्यलोक गए हैं यानि जो मोक्ष प्राप्त कर चुके हैं, उनको सतलोक ले जाने वाला, सर्व ब्रह्मण्डों का रचनहार, काल (ब्रह्म) की तरह धोखा न देने वाला ज्यों का त्यों वह स्वयं कविर्देव अर्थात् कबीर प्रभु है। यही परमेश्वर सर्व ब्रह्मण्डों व प्राणियों को अपनी शब्द शक्ति से उत्पन्न करने के कारण (जनिता) माता भी कहलाता है तथा (पित्तरम्) पिता तथा (बन्धु) भाई भी वास्तव में यही है तथा (देव) परमेश्वर भी यही है। इसलिए इसी कविर्देव (कबीर परमेश्वर) की स्तुति किया करते हैं। त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव, त्वमेव विद्या च द्रविणंम त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम् देव देव। इसी परमेश्वर की महिमा का पवित्र ऋग्वेद मण्डल नं. 1 सूक्त नं. 24 में विस्तृत विवरण है।

पाँच वर्षीय बालक के मुख से वेदो व गीता जी के गूढ़ रहस्य को सुनकर ऋषि रामानन्द जी आश्चर्य चकित रह गए तथा क्रोधित होकर अपशब्द कहने लगे। वाणीः-

रामानंद अधिकार सुनि, जुलहा अक जगदीश। दास गरीब बिलंब ना, ताहि नवावत शीश।।407।।
रामानंद कूं गुरु कहै, तनसैं नहीं मिलात। दास गरीब दर्शन भये, पैडे लगी जुं लात।।408।।
पंथ चलत ठोकर लगी, रामनाम कहि दीन। दास गरीब कसर नहीं, सीख लई प्रबीन।।409।।
आडा पड़दा लाय करि, रामानंद बूझंत। दास गरीब कुलंग छबि, अधर डांक कूदंत।।410।।
कौन जाति कुल पंथ है, कौन तुम्हारा नाम। दास गरीब अधीन गति, बोलत है बलि जांव।।411।।

जाति हमारी जगतगुरु, परमेश्वर पद पंथ। दास गरीब लिखति परै, नाम निंरजन कंत।।412।।
रे बालक सुन दुर्बद्धि, घट मठ तन आकार। दास गरीब दरद लग्या, हो बोले सिरजनहार।।413।।
तुम मोमन के पालवा, जुलहै के घर बास। दास गरीब अज्ञान गति, एता दंढ़ विश्वास।।414।।
मान बड़ाई छाड़ि करि, बोलौ बालक बैंन। दास गरीब अधम मुखी, एता तुम घट फैंन।।415।।
तर्क तलूसैं बोलतै, रामानंद सुर ज्ञान। दास गरीब कुजाति है, आखर नीच निदान।।423।।

परमेश्वर कबीर जी (कविर्देव) ने प्रेमपूर्वक उत्तर दिया -

महके बदन खुलास कर, सुनि स्वामी प्रबीन। दास गरीब मनी मरै, मैं आजिज आधीन।।428।।
मैं अविगत गति सैं परै, च्यारि बेद सैं दूर। दास गरीब दशौं दिशा, सकल सिंध भरपूर।।429।।
सकल सिंध भरपूर हूँ, खालिक हमरा नाम। दासगरीब अजाति हूँ, तैं जो कह्या बलि जांव।।430।।
जाति पाति मेरे नहीं, नहीं बस्ती नहीं गाम। दासगरीब अनिन गति, नहीं हमारै चाम।।431।।
नाद बिंद मेरे नहीं, नहीं गुदा नहीं गात। दासगरीब शब्द सजा, नहीं किसी का साथ।।432।।
सब संगी बिछरू नहीं, आदि अंत बहु जांहि। दासगरीब सकल वंसु, बाहर भीतर माँहि।।433।।
ए स्वामी संष्टा मैं, संष्टि हमारै तीर। दास गरीब अधर बसूं, अविगत सत्य कबीर।।434।।
पौहमी धरणि आकाश में, मैं व्यापक सब ठौर। दास गरीब न दूसरा, हम समतुल नहीं और।।436।।
हम दासन के दास हैं, करता पुरुष करीम। दासगरीब अवधूत हम, हम ब्रह्मचारी सीम।।439।।
सुनि रामानंद राम हम, मैं बावन नरसिंह। दास गरीब कली कली, हमहीं से कंष्ण अभंग।।440।।
हमहीं से इंद्र कुबेर हैं, ब्रह्मा बिष्णु महेश। दास गरीब धर्म ध्वजा, धरणि रसातल शेष।।447।।
सुनि स्वामी सती भाखहूँ, झूठ न हमरै रिंच। दास गरीब हम रूप बिन, और सकल प्रपंच।।453।।
गोता लाऊं स्वर्ग सैं, फिरि पैठूं पाताल। गरीबदास ढूंढत फिरूं, हीरे माणिक लाल।।476।।
इस दरिया कंकर बहुत, लाल कहीं कहीं ठाव। गरीबदास माणिक चुगैं, हम मुरजीवा नांव।।477।।
मुरजीवा माणिक चुगैं, कंकर पत्थर डारि। दास गरीब डोरी अगम, उतरो शब्द अधार।।478।।

स्वामी रामानन्द जी ने कहाः- अरे कुजात! अर्थात् शुद्र! छोटा मुंह बड़ी बात, तू अपने आपको परमात्मा कहता है। तेरा शरीर हाड़-मांस व रक्त निर्मित है। तू अपने आपको अविनाशी परमात्मा कहता है। तेरा जुलाहे के घर जन्म है फिर भी अपने आपको अजन्मा अविनाशी कहता है तू कपटी बालक है। परमेश्वर कबीर जी ने कहाः-

ना मैं जन्मु ना मरूँ, ज्यों मैं आऊँ त्यों जाऊँ। गरीबदास सतगुरु भेद से लखो हमारा ढांव।।
सुन रामानन्द राम मैं, मुझसे ही बावन नंसिंह। दास गरीब युग–2 हम से ही हुए कंष्ण अभंग।।

भावार्थः- कबीर जी ने उत्तर दिया हे रामानन्द जी, मैं न तो जन्म लेता हूँ ? न मंत्यु को प्राप्त होता हूँ। मैं चौरासी लाख प्राणियों के शरीरों में आने (जन्म लेने) व जाने (मंत्यु होने) के चक्र से भी रहित हूँ। मेरी विशेष जानकारी किसी तत्त्वदर्शी सन्त (सतगुरु) के ज्ञान को सुनकर प्राप्त करो। गीता अध्याय 4 श्लोक 34 तथा यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 10-13 में वेद ज्ञान दाता स्वयं कह रहा है कि उस पूर्ण परमात्मा के तत्व (वास्तविक) ज्ञान से मैं अपरिचित हूँ। उस तत्त्वज्ञान को तत्त्वदर्शी सन्तों से सुनों उन्हें दण्डवत् प्रणाम करो, अति विनम्र भाव से परमात्मा के पूर्ण मोक्ष मार्ग के विषय में ज्ञान प्राप्त करो, जैसी भक्ति विधि से तत्त्वदंष्टा सन्त बताऐं वैसे साधना करो। गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में लिखा है कि श्लोक 16 में जिन दो पुरूषों (भगवानों) 1. क्षर पुरुष अर्थात् काल ब्रह्म तथा 2. अक्षर पुरुष अर्थात् परब्रह्म का उल्लेख है, वास्तव में अविनाशी परमेश्वर तथा सर्व का पालन पोषण व धारण करने वाला

परमात्मा तो उन उपरोक्त दोनों से अन्य ही है। हे स्वामी रामानन्द जी! वह उत्तम पुरूष अर्थात् सर्व श्रेष्ठ प्रभु मैं ही हूँ।

इस बात को सुनकर स्वामी रामानन्द जी बहुत क्षुब्ध हो गए तथा कहा कि रे बालक! तू निम्न जाति का और छोटा मुँह बड़ी बात कर रहा है। तू अपने आप भगवान बन बैठा। बुरी गालियाँ भी दी। कबीर साहेब बोले कि गुरुदेव! आप मेरे गुरुजी हैं। आप मुझे गाली दे रहे हो तो भी मुझे आनन्द आ रहा है। लेकिन मैं जो आपको कह रहा हूँ, मैं ज्यों का त्यों पूर्णब्रह्म ही हूँ, इसमें कोई संशय नहीं है। इस बात को सुनकर रामानन्द जी ने कहा कि ठहर जा तेरी तो लम्बी कहानी बनेगी, तू ऐसे नहीं मानेगा। मैं पहले अपनी पूजा कर लेता हूँ। रामानन्द जी ने कहा कि इसको बैठाओ। मैं पहले अपनी कुछ क्रिया रहती है वह कर लेता हूँ, बाद में इससे निपटूंगा।

स्वामी रामानन्द जी क्या क्रिया करते थे?

भगवान विष्णु जी की एक काल्पनिक मूर्ति बनाते थे। सामने मूर्ति दिखाई देने लग जाती थी (जैसे कर्मकाण्ड करते हैं, भगवान की मूर्ति के पहले वाले सारे कपड़े उतार कर, उनको जल से स्नान करवा कर, फिर स्वच्छ कपड़े भगवान ठाकुर को पहना कर गले में माला डालकर, तिलक लगा कर मुकुट रख देते हैं।) रामानन्द जी कल्पना कर रहे थे। कल्पना करके भगवान की काल्पनिक मूर्ति बनाई। श्रद्धा से जैसे नंगे पैरों जाकर आप ही गंगा जल लाए हों, ऐसी अपनी भावना बना कर ठाकुर जी की मूर्ति के कपड़े उतारे, फिर स्नान करवाया तथा नए वस्त्र पहना दिए। तिलक लगा दिया, मुकुट रख दिया और माला (कण्ठी) डालनी भूल गए। कण्ठी न डाले तो पूजा अधूरी और मुकुट रख दिया तो उस दिन मुकुट उतारा नहीं जा सकता। उस दिन मुकुट उतार दे तो पूजा खण्डित। स्वामी रामानन्द जी अपने आपको कोस रहे हैं कि इतना जीवन हो गया मेरा कभी, भी ऐसी गलती जिन्दगी में नहीं हुई थी। प्रभु आज मुझ पापी से क्या गलती हुई है? यदि मुकुट उतारूँ तो पूजा खण्डित। उसने सोचा कि मुकुट के ऊपर से कण्ठी (माला) डाल कर देखता हूँ (कल्पना से कर रहे हैं कोई सामने मूर्ति नहीं है और पर्दा लगा है कबीर साहेब दूसरी ओर बैठे हैं)। मुकुट में माला फँस गई है आगे नहीं जा रही थी। जैसे स्वपन देख रहे हों। रामानन्द जी ने सोचा अब क्या करूं? हे भगवन्! आज तो मेरा सारा दिन ही व्यर्थ गया। आज की मेरी भक्ति कमाई व्यर्थ गई (क्योंकि जिसको परमात्मा की कसक होती है उसका एक नित्य नियम भी रह जाए तो उसको दर्द बहुत होता है। जैसे इंसान की जेब कट जाए और फिर बहुत पश्चाताप करता है। प्रभु के सच्चे भक्तों को इतनी लगन होती है।) इतने में बालक रूपधारी कबीर परमेश्वर जी ने कहा कि स्वामी जी माला की घुण्डी खोलो और माला गले में डाल दो। फिर गाँठ लगा दो, मुकुट उतारना नहीं पड़ेगा। रामानन्द जी काहे का मुकुट उतारे था, काहे की गाँठ खोले था। कुटिया के सामने लगा पर्दा भी स्वामी रामानन्द जी ने अपने हाथ से फैंक दिया और ब्राह्मण समाज के सामने उस कबीर परमेश्वर को सीने से लगा लिया। रामानन्द जी ने कहा कि हे भगवन् ! आपका तो इतना कोमल शरीर है जैसे रूई हो। आपके शरीर की तुलना में मेरा तो पत्थर जैसा शरीर है। एक तरफ तो प्रभु खड़े हैं और एक तरफ जाति व धर्म की दीवार है। प्रभु चाहने वाली पुण्यात्माऐं धर्म की बनावटी दीवार को तोड़ना श्रेयकर समझते हैं। वैसा ही स्वामी रामानन्द जी ने किया। सामने पूर्ण परमात्मा को पा कर न जाति देखी न धर्म देखा, न छूआ-छात, केवल आत्म कल्याण देखा। इसे ब्राह्मण कहते हैं।

बोलत रामानंदजी, हम घर बड़ा सुकाल। गरीबदास पूजा करैं, मुकुट फही जदि माल।।
सेवा करौं संभाल करि, सुनि स्वामी सुर ज्ञान। गरीबदास शिर मुकुट धरि,माला अटकी जान।।

स्वामी घुंडी खोलि करि, फिरि माला गल डार। गरीबदास इस भजन कूं, जानत है करतार।।
ड्यौढी पड़दा दूरि करि, लीया कंठ लगाय। गरीबदास गुजरी बौहत, बदनैं बदन मिलाय।।
मनकी पूजा तुम लखी, मुकुट माल परबेश। गरीबदास गति को लखै, कौन वरण क्या भेष।।
यह तौ तुम शिक्षा दई, मानि लई मनमोर। गरीबदास कोमल पुरूष, हमरा बदन कठोर।।

''कबीर देव द्वारा ऋषि रामानन्द के आश्रम में दो रूप धारण करना''

स्वामी रामानन्द जी ने परमेश्वर कबीर जी से कहा कि ''आपने झूठ क्यों बोला?'' कबीर परमेश्वर जी बोले! कैसा झूठ स्वामी जी? स्वामी रामानन्द जी ने कहा कि आप कह रहे थे कि आपने मेरे से नाम ले रखा है। आपने मेरे से उपदेश कब लिया? बालक रूपधारी कबीर परमेश्वर जी बोले एक समय आप स्नान करने के लिए पँचगंगा घाट पर गए थे। मैं वहाँ लेटा हुआ था। आपके पैरों की खड़ाऊँ मेरे सिर में लगी थी! आपने कहा था कि बेटा राम नाम बोलो। रामानन्द जी बोले-हाँ, अब कुछ याद आया। परन्तु वह तो बहुत छोटा बच्चा था (क्योंकि उस समय पाँच वर्ष की आयु के बच्चे बहुत बड़े हो जाया करते थे तथा पाँच वर्ष के बच्चे के शरीर तथा ढ़ाई वर्ष के बच्चे के शरीर में दुगुना अन्तर हो जाता है)। **कबीर परमेश्वर जी ने कहा स्वामी जी देखो, मैं ऐसा था। स्वामी रामानन्द जी के सामने भी खड़े हैं और एक ढाई वर्षीय बच्चे का दूसरा रूप बना कर किसी सेवक की वहाँ पर चारपाई बिछी थी उसके ऊपर विराजमान हो गए।**

रामानन्द जी ने छः बार तो इधर देखा और छः बार उधर देखा। फिर आँखें मलमल कर देखा कि कहीं तेरी आँखें धोखा तो नहीं खा रही हैं। इस प्रकार देख ही रहे थे कि इतने में कबीर परमेश्वर जी का छोटे वाला रूप हवा में उड़ा और कबीर परमेश्वर जी के बड़े पाँच वर्ष वाले स्वरूप में समा गया। पाँच वर्ष वाले स्वरूप में कबीर परमेश्वर जी रह गए।

रामानन्द जी बोले कि मेरा संशय मिट गया कि आप ही पूर्ण ब्रह्म हो। हे परमेश्वर! आपको कैसे पहचान सकते हैं। आप किस जाति में उत्पन्न तथा कैसी वेश भूषा में खड़े हो। हम नादान प्राणी आप के साथ वाद-विवाद करके दोषी हो गए, क्षमा करना परमेश्वर कविर्देव, मैं आपका अनजान बच्चा हूँ। रामानन्द जी ने फिर अपनी अन्य शंकाओं का निवारण करवाया।

शंका :- हे कविर्देव! मैं राम-राम कोई मन्त्र शिष्यों को जाप करने को नहीं देता। यदि आपने मुझसे दीक्षा ली है तो वह मन्त्र बताईए जो मैं शिष्य को जाप करने को देता हूँ।

उत्तर कबीर देव का :- हे स्वामी जी! आप ओम् नाम जाप करने को देते हो तथा ओ३म् भगवते वासुदेवाय नमः का जाप तथा विष्णु स्त्रोत की आवर्ती की भी आज्ञा देते हो।

शंका :- आपने जो मन्त्र बताया यह तो सही है। एक शंका और है उसका भी निवारण कीजिए। मैं जिसे शिष्य बनाता हूँ उसे एक चिन्ह देता हूँ। वह आपके पास नहीं है।

उत्तर :- बन्दी छोड़ कबीर देव बोले हे गुरुदेव! आप तुलसी की लकड़ी के एक मणके की कण्ठी (माला) गले में पहनने के लिए देते हो। यह देखो गुरु जी उसी दिन आपने अपनी कण्ठी गले से निकाल कर मेरे गले में पहनाई थी। यह कहते हुए कविर्देव ने अपने कुर्ते के नीचे गले में पहनी वही कण्ठी (माला) सार्वजनिक कर दी। रामानन्द जी समझ गए यह कोई साधारण बच्चा नहीं है। यह प्रभु का भेजा हुआ कोई तत्त्वदर्शी आत्मा है। इस से ज्ञान चर्चा करनी चाहिए। चर्चा के विषय को आगे बढ़ाते हुए स्वामी रामानन्द जी बोले हे बालक कबीर! आप अपने आपको परमेश्वर कहते हो परमात्मा ऐसा अर्थात् मनुष्य जैसा थोड़े ही है।

हे कबीर जी! उस स्थान (परम धाम) को यदि एक बार दिखा दे तो मन शान्त हो जाएगा। मैं वर्षों से ध्यान योग अर्थात् हठयोग करता हूँ। मैं समाधिस्थ होकर आकाश में बहुत ऊपर तक सैर कर आता हूँ। परमेश्वर कबीर जी ने कहा है स्वामी जी! आप समाधिस्थ होइए।

स्वामी रामानन्द जी का हठयोग ध्यान (मैडिटेशन) करना नित्य का अभ्यास था तुरन्त ही समाधिस्थ हो गए। समाधि दशा में स्वामी जी की सूरति (ध्यान) त्रिवेणी तक जाती थी। त्रिवेणी पर तीन रास्ते हो जाते हैं। बाँया रास्ता धर्मराज के लोक तथा ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जी के लोकों तथा स्वर्ग लोक आदि को जाता है। दायाँ रास्ता अठासी हजार खेड़ों (नगरियों) की ओर जाता है। सामने वाला रास्ता ब्रह्म लोक को जाता है। वह ब्रह्मरंद्र भी कहा जाता है। स्वामी रामानन्द जी कई जन्मों से साधना करते हुए आ रहे थे। इस कारण से इनका ध्यान तुरन्त लग जाता था। बालक रूपधारी परमेश्वर कबीर जी स्वामी रामानन्द जी को ध्यान में आगे मिले तथा वहाँ का सर्व भेद रामानन्द जी को बताया। हे स्वामी जी! आप की भक्ति साधना कई जन्मों की संचित है। जिस समय आप शरीर त्याग कर जाओगे इस बाऐं रास्ते से जाओगे इस रास्ते में स्वचालित द्वार (एटोमैटिक खुलने वाले गेट) लगे है। जिस साधक की जिस भी लोक की साधना होती है। वह धर्मराय के पास जाकर अपना लेखा (Account) करवाकर इसी रास्ते से आगे चलता है। उसी लोक का द्वार अपने आप खुल जाता है। वह द्वार तुरन्त बन्द हो जाता है। वह प्राणी पुनः उस रास्ते से लौट नहीं सकता। उस लोक में समय पूरा होने के पश्चात् पुनः उसी मार्ग से धर्मराज के पास आकर अन्य जीवन प्राप्त करता है।

धर्मराय का लोक भी उसी बाई और जाने वाले रास्ते में सर्व प्रथम है। उस धर्मराज के लोक में प्रत्येक की भक्ति अनुसार स्थान तय होता है। आप (स्वामी रामानन्द) जी की भक्ति का आधार विष्णु जी का लोक है। आप अपने पुण्यों को इस लोक में समाप्त करके पुनः पृथ्वी लोक पर शरीर धारण करोगे। यह हरहट के कूएं जैसा चक्र आपकी साधना से कभी समाप्त नहीं होगा। यह जन्म मृत्यु का चक्र तो केवल मेरे द्वारा बताए तत्त्वज्ञान द्वारा ही समाप्त होना सम्भव है। परमेश्वर कबीर जी ने फिर कहा हे स्वामी जी! जो सामने वाला द्वार है यह ब्रह्मरन्द्र है। यह वेदों में लिखे किसी भी मन्त्र जाप से नहीं खुलता यह तो मेरे द्वारा बताए सत्यनाम (जो दो मन्त्र का होता है एक ॐ मन्त्र तथा दूसरा तत् यह तत् सांकेतिक है वास्तविक नाम मन्त्र तो उपदेश लेने वाले को बताया जाएगा) के जाप से खुलता है। ऐसा कह कर परमेश्वर कबीर जी ने सत्यनाम (दो मन्त्रों के नाम) का जाप किया। तुरन्त ही सामने वाला द्वार (ब्रह्मरन्द्र) खुल गया। परमेश्वर कबीर जी अपने साथ स्वामी रामानन्द जी की आत्मा को लेकर उस ब्रह्मरन्द्र में प्रवेश कर गए। पश्चात् वह द्वार तुरन्त बन्द हो गया। उस द्वार से निकल कर लम्बा रास्ता तय किया ब्रह्मलोक में गए आगे फिर तीन रास्ते हैं। बाई ओर एक रास्ता महास्वर्ग में जाता है। उस महास्वर्ग में नकली (Duplicate) सत्यलोक, अलख लोक, अगम लोक तथा अनामी लोकों की रचना काल ब्रह्म ने अपनी पत्नी दुर्गा से करा रखी है। प्राणियों को धोखा देने के लिए। उन सर्व नकली लोकों को दिखा कर वापस आए। दाई और सप्तपुरी, ध्रुव लोक आदि हैं। सामने वाला द्वारा वहाँ जाता है जहाँ पर गीता ज्ञान दाता काल ब्रह्म अपनी योग माया से छुपा रहता है। वह तीन स्थान बनाए हैं। एक रजोगुण प्रधान क्षेत्र है। जिसमें काल ब्रह्म तथा दुर्गा (प्रकृति) देवी पति-पत्नी रूप में साकार रूप में रहते हैं। उस समय जिस पुत्र का जन्म होता है वह रजोगुण युक्त होता है। उसका नाम ब्रह्मा रख देता है उस बालक को युवा होने तक अचेत रखकर परवरिश करते हैं। युवा होने पर काल ब्रह्म स्वयं विष्णु रूप धारण करके अपनी नाभी से कमल का फूल प्रकट करता है। उस कमल के फूल पर युवा अवस्था प्राप्त होने पर ब्रह्मा जी को रख कर सचेत कर देता है। इसी प्रकार एक सतोगुण प्रधान क्षेत्र बनाया है।

उसमें दोनों (दुर्गा व काल ब्रह्म) पति-पत्नी रूप में रह कर अन्य पुत्र सतोगुण प्रधान उत्पन्न करते हैं। उसका नाम विष्णु रखते हैं। उसे भी युवा होने तक अचेत रखते हैं। शेष शय्या पर सचेत करते हैं। अन्य शेषनाग ब्रह्म ही अपनी शक्ति से उत्पन्न करता है। इसी प्रकार एक तमोगुण प्रधान क्षेत्र बनाया है। उस में वे दोनों (दुर्गा तथा काल ब्रह्म) पति-पत्नी व्यवहार से तमोगुण प्रधान पुत्र उत्पन्न करते हैं। उसका नाम शिव रखते हैं। उसे भी युवा अवस्था प्राप्त होने तक अचेत रखते हैं। युवा होने पर तीनों को सचेत करके इनका विवाह, प्रकृति (दुर्गा) द्वारा उत्पन्न तीनों लड़कियों से करते हैं। इस प्रकार यह काल ब्रह्म अपना सृष्टि चक्र चलाता है।

परमेश्वर कबीर जी ने स्वामी रामानन्द जी को वह रास्ता दिखाया तथा इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में फिर तीन रास्ते है बाई ओर फिर नकली सतलोक अलख लोक, अगम लोक तथा अनामी लोक की रचना की हुई है। दाई ओर बारह भक्तों का निवास स्थान बनाया है, जिनको अपना ज्ञान प्रचारक बनाकर जनता को शास्त्र विरुद्ध ज्ञान पर आधारित करवाता है। सामने वाला द्वार तप्त शिला की ओर जाता है। जहाँ पर यह काल ब्रह्म एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों के सुक्ष्म शरीरों को तपाकर उनसे मैल निकाल कर खाता है। उस काल ब्रह्म के उस लोक के ऊपर एक द्वार है जो परब्रह्म (अक्षर पुरूष) के सात शंख ब्रह्मण्डों में खुलता है। परब्रह्म के ब्रह्मण्डों के अन्तिम सिरे पर एक द्वार है जो सत्यपुरूष (परम अक्षर ब्रह्म) के लोक सत्यलोक की भंवर गुफा में खुलता है। फिर आगे सत्यलोक है जो वास्तविक सत्यलोक है। सत्यलोक में पूर्ण परमात्मा कबीर जी अन्य तेजोमय मानव सदृश शरीर में एक गुबन्द (गुम्मज) में एक ऊँचे सिंहासन पर विराजमान हैं। वहाँ सत्यलोक की सर्व वस्तुऐं तथा सत्यलोक वासी सफेद प्रकाश युक्त हैं। सत्यपुरूष के शरीर का प्रकाश अत्यधिक सफेद है। सत्यपुरूष के एक रोम कूप का प्रकाश एक लाख सूर्यों तथा इतने ही चन्द्रमाओं के मिले जुले प्रकाश से भी अधिक है।

परमेश्वर कबीर जी स्वामी रामानन्द जी की आत्मा को साथ लेकर सत्यलोक में गए। वहाँ सर्व आत्माओं का भी मानव सदृश शरीर है। उनके शरीर का भी सफेद प्रकाश है। परन्तु सत्यलोक निवासियों के शरीर का प्रकाश सोलह सूर्यों के प्रकाश के समान है। बालक रूपधारी कविर्देव ने अपने ही अन्य स्वरूप पर चंवर किया। जो स्वरूप अत्यधिक तेजोमय था तथा सिंहासन पर एक सफेद गुबन्द में विराज मान था। स्वामी रामानन्द जी ने सोचा कि पूर्ण परमात्मा तो यह है जो तेजोमय शरीर युक्त है। यह बाल रूपधारी आत्मा कबीर यहाँ का अनुचर अर्थात् सेवक होगा। स्वामी रामानन्द जी ने इतना विचार ही किया था। उसी समय सिंहासन पर विराजमान तेजोमय शरीर युक्त परमात्मा सिंहासन त्यागकर खड़ा हो गया तथा बालक कबीर जी को सिंहासन पर बैठने के लिए प्रार्थना की नीचे से रामानन्द जी के साथ गया बालक कबीर जी उस सिंहासन पर विराजमान हो गए तथा वह तेजोमय शरीर धारी प्रभु बालक के सिर पर श्रद्धा से चंवर करने लगा। रामानन्द जी ने सोचा यह परमात्मा इस बच्चे पर चंवर करने लगा। यह बालक यहां का नौकर (सेवक) नहीं हो सकता। इतने में तेजोमय शरीर वाला परमात्मा उस बालक कबीर जी के शरीर में समा गया। बालक कबीर जी का शरीर उसी प्रकार उतने ही प्रकाश युक्त हो गया जितना पहले सिंहासन पर बैठे पुरुष (परमेश्वर) का था।

इतनी लीला करके स्वामी रामानन्द जी की आत्मा को वापस शरीर में भेज दिया। महर्षि रामानन्द जी ने आँखे खोल कर देखा तो बालक रूपधारी परमेश्वर कबीर जी को सामने भी बैठा पाया। महर्षि रामानन्द जी को पूर्ण विश्वास हो गया कि यह बालक कबीर जी ही परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् वासुदेव (कुल का मालिक) है। दोनों स्थानों (ऊपर सत्यलोक में तथा नीचे पृथ्वी लोक में) पर स्वयं ही लीला कर रहा है। यही परम दिव्य पुरूष अर्थात् आदि पुरूष है। सत्यलोक में जहाँ पर यह परमात्मा

मूल रूप में निवास करता है वह सनातन परमधाम है। परमेश्वर कबीर जी ने इसी प्रकार सन्त गरीबदास जी महाराज छुड़ानी (हरयाणा) वाले को सर्व ब्रह्मण्डों को प्रत्यक्ष दिखाया था। उनका ज्ञान योग खोल दिया था तथा परमेश्वर ने गरीबदास जी महाराज को स्वामी रामानन्द जी के विषय में बताया था कि किस प्रकार मैंने स्वामी जी को शरण में लिया था। महाराज गरीबदास जी ने अपनी अमतवाणी में उल्लेख किया है।

तहाँ वहाँ चित चक्रित भया, देखि फजल दरबार। गरीबदास सिजदा किया, हम पाये दीदार।।
बोलत रामानन्द जी सुन कबिर करतार। गरीबदास सब रूप में तुमही बोलनहार।।
दोहु ठोर है एक तू, भया एक से दोय। गरीबदास हम कारणें उतरे हो मग जोय।।
तुम साहेब तुम सन्त हो तुम सतगुरु तुम हंस। गरीबदास तुम रूप बिन और न दूजा अंस।।
तुम स्वामी मैं बाल बुद्धि भर्म कर्म किये नाश। गरीबदास निज ब्रह्म तुम, हमरै दढ विश्वास।।
सुन बे सुन से तुम परे, ऊरै से हमरे तीर। गरीबदास सरबंग में, अविगत पुरूष कबीर।।
कोटि–2 सिजदा किए, कोटि–2 प्रणाम। गरीबदास अनहद अधर, हम परसे तुम धाम।।
बोले रामानन्द जी, सुनों कबीर सुभान। गरीबदास मुक्ता भये, उधरे पिण्ड अरू प्राण।।

उपरोक्त वाणी का भावार्थ :- सत्यलोक में तथा काशी नगर में पथ्वी पर दोनों स्थानों पर परमात्मा कबीर जी को देख कर स्वामी रामानन्द जी ने कहा है कबीर परमात्मा आप दोनों स्थानों पर लीला कर रहे हो। आप ही निज ब्रह्म अर्थात् गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में कहा है कि उत्तम पुरूष अर्थात् वास्तविक परमेश्वर तो क्षर पुरुष (काल ब्रह्म) तथा अक्षर पुरूष (परब्रह्म) से अन्य ही है। वही परमात्मा कहा जाता है। जो तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण पोषण करता है वह परम अक्षर ब्रह्म आप ही हैं। आप ही की शक्ति से सर्व प्राणी गति कर रहे हैं। मैंने आप का वह सनातन परम धाम आँखों देखा है तथा वास्तविक अनहद धुन तो ऊपर सत्यलोक में है। ऐसा कह कर स्वामी रामानन्द जी ने कबीर परमेश्वर के चरणों में कोटि-2 प्रणाम किया तथा कहा आप परमेश्वर हो, आप ही सतगुरु तथा आप ही तत्त्वदर्शी सन्त हो आप ही हंस अर्थात् नीर-क्षीर को भिन्न-2 करने वाले सच्चे भक्त के गुणों युक्त हो। कबीर भक्त नाम से यहाँ पर प्रसिद्ध हो वास्तव में आप परमात्मा हो। मैं आपका भक्त आप मेरे गुरु जी।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा हे स्वामी जी ! गुरु जी तो आप ही रहो। मैं आपका शिष्य हूँ। यह गुरु परम्परा बनाए रखने के लिए अति आवश्यक है। यदि आप मेरे गुरु जी रूप में नहीं रहोगे तो भविष्य में सन्त व भक्त कहा करेंगे कि गुरु बनाने की कोई अवश्यकता नहीं है। सीधा ही परमात्मा से ही सम्पर्क करो। ''कबीर'' ने भी गुरु नहीं बनाया था।

हे स्वामी जी! काल प्रेरित व्यक्ति ऐसी-2 बातें बना कर श्रद्धालुओं को भक्ति की दिशा से भ्रष्ट किया करेंगे तथा काल के जाल में फाँसे रखेंगे। इसलिए संसार की दष्टि में आप मेरे गुरु जी की भूमिका कीजिये तथा वास्तव में जो साधना की विधि मैं बताऊँ आप वैसे भक्ति कीजिए। स्वामी रामानन्द जी ने कबीर परमेश्वर जी की बात को स्वीकार किया। कबीर परमेश्वर जी एक रूप में स्वामी रामानन्द जी को तत्त्वज्ञान सुना रहे थे तथा अन्य रूप धारण करके कुछ ही समय उपरान्त अपने घर पर आ गए। क्योंकि वहाँ नीरू तथा नीमा अति चिन्तित थे। बच्चे को सकुशल घर लौट आने पर नीरू तथा नीमा ने परमेश्वर का शुक्रिया किया। अपने बच्चे कबीर को सीने से लगा कर नीमा रोने लगी तथा बच्चे को अपने पति नीरू के पास ले गई। नीरू ने भी बच्चे कबीर से प्यार किया। नीरू ने पूछा बेटा! आपको उन ब्राह्मणों ने मारा तो नहीं? कबीर जी बोले नहीं पिता जी! स्वामी रामानन्द जी बहुत अच्छे

हैं। मैंने उनको गुरु बना लिया है। उन्होंने मुझको सर्व ब्राह्मण समाज के समक्ष सीने से लगा कर कहा यह मेरा शिष्य है। आज से मैं सर्व हिन्दू समाज के सर्व जातियों के व्यक्तियों को शिष्य बनाया करूँगा। माता-पिता (नीरू तथा नीमा) अति प्रसन्न हुए तथा घर के कार्य में व्यस्त हो गए।

स्वामी रामानन्द जी ने कहा हे कबीर जी! हम सर्व की बुद्धि पर पत्थर पड़े थे आपने ही अज्ञान रूपी पत्थरों को हटाया है। बड़े पुण्यकर्मों से आपका दर्शन सुलभ हुआ है।

(यह शब्द अगम निगम बोध के पष्ठ 38 पर लिखा है।)

मेरा नाम कबीरा हूँ जगत गुरू जाहिरा।(टेक)

तीन लोक में यश है मेरा, त्रिकुटी है अस्थाना। पाँच–तीन हम ही ने किन्हें, जातें रचा जिहाना।।
गगन मण्डल में बासा मेरा, नौवें कमल प्रमाना। ब्रह्म बीज हम ही से आया, बनी जो मूर्ति नाना।।
संखो लहर मेहर की उपजैं, बाजै अनहद बाजा। गुप्त भेद वाही को देंगे, शरण हमरी आजा।।
भव बंधन से लेऊँ छुड़ाई, निर्मल करूं शरीरा। सुर नर मुनि कोई भेद न पावै, पावै संत गंभीरा।।
बेद–कतेब में भेद ना पूरा, काल जाल जंजाला। कह कबीर सुनो गुरू रामानन्द, अमर ज्ञान उजाला।।

''नेकी-सेऊ(शिव)-सम्मन के बलिदान की कथा''

एक समय साहेब कबीर अपने भक्त सम्मन के यहाँ अचानक दो सेवकों (कमाल व शेखफरीद) के साथ पहुँच गए। सम्मन के घर कुल तीन प्राणी थे। सम्मन, सम्मन की पत्नी नेकी और सम्मन का पुत्र सेऊ। भक्त सम्मन इतना गरीब था कि कई बार अन्न भी घर पर नहीं होता था। सारा परिवार भूखा सो जाता था। आज वही दिन था। भक्त सम्मन ने अपने गुरुदेव कबीर साहेब से पूछा कि साहेब खाने का विचार बताएँ, खाना कब खाओगे? कबीर साहेब ने कहा कि भाई भूख लगी है। भोजन बनाओ। सम्मन अन्दर घर में जा कर अपनी पत्नी नेकी से बोला कि अपने घर अपने गुरुदेव भगवान आए हैं। जल्दी से भोजन तैयार करो। तब नेकी ने कहा कि घर पर अन्न का एक दाना भी नहीं है। सम्मन ने कहा पड़ोस वालों से उधार मांग लाओ। नेकी ने कहा कि मैं मांगने गई थी लेकिन किसी ने भी उधार आटा नहीं दिया। उन्होंने आटा होते हुए भी जान बूझ कर नहीं दिया और कह रहे हैं कि आज तुम्हारे घर तुम्हारे गुरु जी आए हैं। तुम कहा करते थे कि हमारे गुरु जी भगवान हैं। आपके गुरु जी भगवान हैं तो तुम्हें माँगने की आवश्यकता क्यों पड़ी? ये ही भर देगें तुम्हारे घर को आदि-2 कह कर मजाक करने लगे। सम्मन ने कहा लाओ आपका चीर गिरवी रख कर तीन सेर आटा ले आता हूँ। नेकी ने कहा यह चीर फटा हुआ है। इसे कोई गिरवी नहीं रखता। सम्मन सोच में पड़ जाता है और अपने दुर्भाग्य को कोसते हुए कहता है कि मैं कितना अभागा हूँ। आज घर भगवान आए और मैं उनको भोजन भी नहीं करवा सकता। हे परमात्मा! ऐसे पापी प्राणी को पथ्वी पर क्यों भेजा। मैं इतना नीच रहा हूँगा कि पिछले जन्म में कोई पुण्य नहीं किया। अब सतगुरु को क्या मुँह दिखाऊँ? यह कह कर अन्दर कोठे में जा कर फूट-2 कर रोने लगा। तब उसकी पत्नी नेकी कहने लगी कि हिम्मत करो। रोवो मत। परमात्मा आए हैं। इन्हें ठेस पहुँचेगी। सोचेंगे हमारे आने से तंग आ कर रो रहा है। सम्मन चुप हुआ। फिर नेकी ने कहा आज रात्रि में दोनों पिता पुत्र जा कर तीन सेर (पुराना बाट किलो ग्राम के लगभग) आटा चुरा कर लाना। केवल संतों व भक्तों के लिए। तब लड़का सेऊ बोला माँ - गुरु जी कहते हैं चोरी करना पाप है। फिर आप भी मुझे शिक्षा दिया करती कि बेटा कभी चोरी नहीं करनी चाहिए। जो चोरी करते हैं उनका सर्वनाश होता है। आज आप यह क्या कह रही हो माँ? क्या हम पाप करेंगे माँ? अपना भजन नष्ट हो जाएगा। माँ हम चौरासी लाख योनियों में कष्ट पाएंगे। ऐसा मत कहो माँ। माँ आपको मेरी कसम। तब

नेकी ने कहा पुत्र तुम ठीक कह रहे हो। चोरी करना पाप है परंतु पुत्र हम अपने लिए नहीं बल्कि संतों के लिए करेंगे। नेकी ने कहा बेटा - ये नगर के लोग अपने से बहुत चिढ़ते हैं। हमने इनको कहा था कि हमारे गुरुदेव कबीर साहेब (पूर्ण परमात्मा) आए हुए हैं। इन्होंने एक मतक गऊ तथा उसके बच्चे को जीवित कर दिया था जिसके टुकड़े सिंकदर लोधी ने करवाए थे। एक लड़के तथा एक लड़की को जीवित कर दिया। सिंकदर लोधी राजा का जलन का रोग समाप्त कर दिया तथा श्री रामानन्द जी (कबीर साहेब के गुरुदेव) जो सिंकदर लोधी ने तलवार से कत्ल कर दिया था वे भी कबीर साहेब ने जीवित कर दिए थे। इस बात का ये नगर वाले मजाक कर रहे हैं और कहते हैं कि आपके गुरु कबीर तो भगवान हैं तुम्हारे घर को भी अन्न से भर देंगे। फिर क्यों अन्न (आटे) के लिए घर घर डोलती फिरती हो?

बेटा ये भोले प्राणी हैं यदि आज साहेब कबीर इस नगरी का अन्न खाए बिना चले गए तो काल भगवान भी इतना नाराज हो जाएगा कि कहीं इस नगरी को समाप्त न कर दे। हे पुत्र! इस अनर्थ को बचाने के लिए अन्न की चोरी करनी है। हम नहीं खाएंगे। केवल अपने सतगुरु तथा आए भक्तों को प्रसाद बना कर खिलाएगें। यह कह कर नेकी की आँखों में आँसू भर आए और कहा पुत्र नाटियो मत अर्थात् मना नहीं करना। तब अपनी माँ की आँखों के आँसू पौंछता हुआ लड़का सेऊ कहने लगा - माँ रो मत, आपका पुत्र आपके आदेश का पालन करेगा। माँ आप तो बहुत अच्छी हो न।

अर्ध रात्रि के समय दोनों पिता (सम्मन) पुत्र (सेऊ) चोरी करने के लिए चले दिए। एक सेठ की दुकान की दीवार में छिद्र किया। सम्मन ने कहा कि पुत्र मैं अन्दर जाता हूँ। यदि कोई व्यक्ति आए तो धीरे से कह देना मैं आपको आटा पकड़ा दूँगा और लेकर भाग जाना। तब सेऊ ने कहा नहीं पिता जी, मैं अन्दर जाऊँगा। यदि मैं पकड़ा भी गया तो बच्चा समझ कर माफ कर दिया जाऊँगा। सम्मन ने कहा पुत्र यदि आपको पकड़ कर मार दिया तो मैं और तेरी माँ कैसे जीवित रहेंगे? सेऊ प्रार्थना करता हुआ छिद्र द्वार से अन्दर दुकान में प्रवेश कर गया। तब सम्मन ने कहा पुत्र केवल तीन सेर आटा लाना, अधिक नहीं। लड़का सेऊ लगभग तीन सेर आटा अपनी फटी पुरानी चद्दर में बाँध कर चलने लगा तो अंधेरे में तराजू के पलड़े पर पैर रखा गया। जोर दार आवाज हुई जिससे दुकानदार जाग गया और सेऊ को चोर-चोर करके पकड़ लिया और रस्से से बाँध दिया। इससे पहले सेऊ ने वह चद्दर में बँधा हुआ आटा उस छिद्र से बाहर फैंक दिया और कहा पिता जी मुझे सेठ ने पकड़ लिया है। आप आटा ले जाओ और सतगुरु व भक्तों को भोजन करवाना। मेरी चिंता मत करना। आटा ले कर सम्मन घर पर गया तो सेऊ को न पा कर नेकी ने पूछा लड़का कहाँ है? सम्मन ने कहा उसे सेठ जी ने पकड़ कर थाम्ब (Pillar) से बाँध दिया। तब नेकी ने कहा कि आप वापिस जाओ और लड़के सेऊ का सिर काट लाओ। क्योंकि लड़के को पहचान कर अपने घर पर लाएंगे। फिर सतगुरु को देख कर नगर वाले कहेंगे कि ये हैं जो चोरी करवाते हैं। हो सकता है सतगुरु देव को परेशान करें। हम पापी प्राणी अपने दाता को भोजन के स्थान पर कैद न दिखा दें। यह कह कर माँ अपने बेटे का सिर काटने के लिए अपने पति से कह रही है वह भी गुरुदेव जी के लिए। सम्मन ने हाथ में कर्द (लम्बा छुरा) लिया तथा दुकान पर जा कर कहा सेऊ बेटा, एक बार गर्दन बाहर निकाल। कुछ जरूरी बातें करनी हैं। कल तो हम नहीं मिल पाएंगे। हो सकता है ये आपको मरवा दें। तब सेऊ ने उस सेठ (बनिए) से कहा कि सेठ जी बाहर मेरा बाप खड़ा है। कोई जरूरी बात करना चाहता है। कप्या करके मेरे रस्से को इतना ढीला कर दो कि मेरी गर्दन छिद्र से बाहर निकल जाए। तब सेठ ने उसकी बात को स्वीकार करके रस्सा इतना ढीला कर दिया कि गर्दन आसानी से बाहर निकल गई। तब सेऊ ने कहा पिता जी मेरी गर्दन काट दो। यदि आप मेरी गर्दन नहीं काटोगे तो आप मेरे पिता नहीं हो। सम्मन ने एक दम करद मारी और

सिर काट कर घर ले गया। सेठ ने लड़के का कत्ल हुआ देख कर उसके शव को घसीट कर साथ ही एक पजावा (ईटें पकाने का भट्ठा) था उस खण्डहर में डाल आया।

जब नेकी ने सम्मन से कहा कि आप वापिस जाओ और लड़के का धड़ भी बाहर मिलेगा उठा लाओ। जब सम्मन दुकान पर पहुँचा उस समय तक सेठ ने उस दुकान की दीवार के छिद्र को बंद कर लिया था। सम्मन ने शव की घसीट (चिन्हों) को देखते हुए शव के पास पहुँच कर उसे उठा लाया। ला कर अन्दर कोठे में रख कर ऊपर पुराने कपड़े (गुदड़) डाल दिए और सिर को अलमारी के ताख (एक हिस्से) में रख कर खिड़की बंद कर दी।

कुछ समय के बाद सूर्य उदय हुआ। नेकी ने स्नान किया। सतगुरु व भक्तों का खाना बनाया। सतगुरु कबीर साहेब जी से भोजन करने की प्रार्थना की। नेकी ने साहेब कबीर व दोनों भक्त (कमाल तथा शेख फरीद), तीनों के सामने आदर के साथ भोजन परोस दिया। साहेब कबीर ने कहा इसे छः दोनों (मिट्टी का बर्तन) में डाल कर आप तीनों भी साथ बैठो। यह प्रेम प्रसाद खाओ। बहुत प्रार्थना करने पर भी साहेब कबीर नहीं माने तो छः दौनों में प्रसाद परोसा गया। पाँचों प्रसाद खाने के लिए बैठ गए। तब साहेब कबीर ने कहा --

आओ सेऊ जीम लो, यह प्रसाद प्रेम। शीश कटत हैं चोरों के, साधों के नित्य क्षेम।।
सेऊ धड़ पर शीश चढ़ा, बैठा पंगत मांही। नहीं घरैरा गर्दन पर, वही सेऊ अक नाहीं।।

साहेब कबीर ने कहा कि हे सेऊ! आओ भोजन खाओ। सिर तो चोरों के कटते हैं। संतों (भक्तों) के नहीं। उनको तो क्षमा होती है। साहेब कबीर ने इतना कहा था उसी समय सेऊ के धड़ पर सिर लग गया। कटे हुए का कोई निशान भी गर्दन पर नहीं था तथा पंगत (पंक्ति) में बैठ कर भोजन करने लगा। बोलो कबीर साहेब (कविरमितौजा) की जय।

सम्मन तथा नेकी ने देखा कि गर्दन पर कोई चिन्ह भी नहीं है। लड़का जीवित कैसे हुआ? अन्दर जा कर देखा तो वहाँ शव तथा शीश नहीं था। केवल रक्त के छीटें लगे थे जो इस पापी मन के संशय को समाप्त करने के लिए प्रमाण बकाया था। सत साहिब।।

ऐसी-2 बहुत लीलाएँ साहेब कबीर (कविरग्नि) ने की हैं जिनसे यह स्वसिद्ध है कि ये ही पूर्ण परमात्मा हैं। सामवेद संख्या नं. 822 में कहा है कि कविर्देव अपने विधिवत् साधक साथी की आयु बढ़ा देता है।

"मत लड़के कमाल को जीवित करना"

शेखतकी महाराजा सिकंदर से मुख चढ़ाए फिर रहा था। सिकंदर ने पूछा कि क्या बात है पीर जी? शेखतकी ने कहा कि क्या तुझे बात नहीं मालूम? सिकंदर ने पूछा कि क्या बात है? शेखतकी ने कहा कि इस कबीर काफिर को साथ किसलिए रखा है? सिकंदर ने कहा कि ये तो भगवान (अल्लाह) है। शेखतकी ने कहा कि अच्छा अल्लाह अब आकार में आने लग गया। अल्लाह कैसे है? सिकंदर ने कहा कि पहले तो अल्लाह ऐसे कि मेरा रोग ऐसा था कि किसी से भी ठीक नहीं हो पा रहा था। इस कबीर प्रभु ने हाथ ही लगाया था मैं स्वस्थ हो गया। शेखतकी ने कहा कि ये जादूगर होते हैं। सिकंदर ने फिर कहा दूसरा भगवान ऐसे है कि मैंने उनके गुरुदेव का सिर काट दिया था और उन्होंने उसे मेरी आँखों के सामने तुरंत जीवित कर दिया। शेखतकी ने कहा कि अगर यह कबीर अल्लाह है तो मैं इसकी परीक्षा लूँगा। यदि कबीर जी मेरे सामने कोई मुर्दा जीवित करे तो इसे अल्लाह मान लूँगा। नहीं तो दिल्ली जाकर मैं पूरे मुसलमान समाज को कह

दूँगा कि यह राजा हिन्दू हो गया है। सिकंदर लोधी डर गया कि कहीं ऐसा न हो कि यह जाते ही राज पलट दे। (राज को देने वाला पास बैठा है और उस मूर्ख से डर लगता है।) राजा ने शेखतकी से कहा कि आप कैसे प्रसन्न होंगे। शेखतकी ने कहा कि मैं तब प्रसन्न होऊँगा जब मेरे सामने यह कबीर कोई मुर्दा जीवित कर दे। साहेब से प्रार्थना हुई तो कबीर साहेब ने कहा कि ठीक है। (कबीर साहेब ने सोचा कि यह अनाड़ी आत्मा शेखतकी है। अगर यह मेरी बात मान गया तो आधे से ज्यादा मुसलमान इसकी बात स्वीकार करते हैं। क्योंकि यह दिल्ली के बादशाह का पीर है और अगर यह सही ढंग से मुसलमानों को बता देगा तो बेचारी भोली आत्माऐं इन गुरूओं पर आधारित होती हैं।)

इसलिए कहा कि ठीक है शेखतकी ढूँढ़ ले कोई मुर्दा। सुबह एक 10-12 वर्ष की आयु के लड़के का शव पानी में तैरता हुआ आ रहा था। शेखतकी ने कहा कि वह आ रहा है मुर्दा, इसे जिन्दा कर दो। कबीर साहेब ने कहा पहले आप प्रयत्न करो, कहीं फिर पीछे नम्बर बनाओ। उपस्थित मन्त्रियों तथा सैनिकों ने कहा कि पीर जी आप कोशिश करके देख लो। शेखतकी जन्त्र-मन्त्र करता रहा। इतने में वह मुर्दा तीन फर्लांग आगे चला गया। शेखतकी ने कहा कि यह कबीर चाहता था कि यह बला सिर से टल जाए। कहीं मुर्दे जीवित होते हैं? मुर्दे तो कयामत के समय ही जीवित होते हैं। कबीर साहेब बोले महात्मा जी आप बैठ जाओ, शान्ति करो। कबीर साहेब ने उस मुर्दे को हाथ से वापिस आने का संकेत किया। बारह वर्षीय बच्चे का मत शरीर दरिया के पानी के बहाव के विपरीत चलकर कबीर जी के सामने आकर रूक गया। पानी की लहर नीचे-नीचे जा रही और शव ऊपर रूका था। कबीर साहेब ने कहा कि हे जीवात्मा जहाँ भी है कबीर हुक्म से मुर्दे में प्रवेश कर और बाहर आ। कबीर साहेब ने इतना कहा ही था कि शव में कम्पन हुई तथा जीवित होकर बाहर आ गया। कबीर साहेब के चरणों में दण्डवत् प्रणाम किया। "बोलो कबीर परमेश्वर की जय"

सर्व उपस्थित जनों ने कहा कि कबीर साहेब ने तो कमाल कर दिया। उस लड़के का नाम कमाल रख दिया। लड़के को अपने साथ रखा। अपने बच्चे की तरह पालन-पोषण किया और नाम दिया। उसके बाद दिल्ली में आ गए। सभी को पता चला कि यह लड़का जो इनके साथ है यह परमेश्वर कबीर साहेब ने जीवित किया है। दूर तक बात फैल गई। शेखतकी की तो माँ सी मर गई सोचा यह कबीर अच्छा दुश्मन हुआ। इसकी तो और ज्यादा महिमा हो गई।

शेखतकी की इर्ष्या बढ़ती ही चली गई। उसकी तेरह वर्षीय लड़की को मत्यु पश्चात् कब्र में जमीन में दबा रखा था। शेखतकी ने कहा यदि कबीर मेरी लड़की को जो कब्र में दफना रखी है। अगर उसको जीवित करेगा तो मैं इसे अल्लाह मान लूँगा।

"शेखतकी की मत लड़की कमाली को जीवित करना"

शेखतकी ने देखा कि यह कबीर तो किसी प्रकार भी काबू नहीं आ रहा है। तब शेखतकी ने जनता से कहा कि यह कबीर तो जादूगर है। ऐसे ही जन्त्र-मन्त्र दिखाकर इसने बादशाह सिकंदर की बुद्धि भ्रष्ट कर रखी है। सारे मुसलमानों से कहा कि तुम मेरा साथ दो, वरना बात बिगड़ जाएगी। भोले मुसलमानों ने कहा पीर जी हम तेरे साथ हैं, जैसे तू कहेगा ऐसे ही करेंगे। शेखतकी ने कहा इस कबीर को तब प्रभु मानेंगे जब मेरी लड़की को जीवित कर देगा जो कब्र में दबी हुई है।

पूज्य कबीर साहेब से प्रार्थना हुई। कबीर साहेब ने सोचा यह नादान आत्मा ऐसे ही मान जाए। {क्योंकि ये सभी जीवात्माऐं कबीर साहेब के बच्चे हैं। यह तो काल ने (मजहब) धर्म का हमारे ऊपर

कवर चढ़ा रखा है। एक-दूसरे के दुश्मन बना रखे हैं।} शेखतकी की लड़की का शव कब्र में दबा रखा था। शेखतकी ने कहा कि यदि मेरी लड़की को जीवित कर दे तो हम इस कबीर को अल्लाह स्वीकार कर लेंगे और सभी जगह ढिंढ़ोरा पिटवा दूँगा कि यह कबीर जी भगवान है। कबीर साहेब ने कहा कि ठीक है। वह दिन निश्चित हुआ। कबीर साहेब ने कहा कि सभी जगह सूचना दे दो, कहीं फिर किसी को शंका न रह जाए। हजारों की संख्या में वहाँ पर भक्त आत्मा दर्शनार्थ एकत्रित हुई। कबीर साहेब ने कब्र खुदवाई। उसमें एक बारह-तेरह वर्ष की लड़की का शव रखा हुआ था। कबीर साहेब ने शेखतकी से कहा कि पहले आप जीवित कर लो। सभी उपस्थित जनों ने कहा है कि महाराज जी यदि इसके पास कोई ऐसी शक्ति होती तो अपने बच्चे को कौन मरने देता है? अपने बच्चे की जान के लिए व्यक्ति अपना तन मन धन लगा देता है। हे दीन दयाल आप कृपा करो। पूज्य कबीर परमेश्वर ने कहा कि हे शेखतकी की लड़की जीवित हो जा। तीन बार कहा लेकिन लड़की जीवित नहीं हुई। शेखतकी ने तो भंगड़ा पा दिया। नाचे-कूदे कि देखा न पाखण्डी का पाखंड पकड़ा गया। कबीर साहेब उसको नचाना चाहते थे कि इसको नाचने दे।

कबीर, राज तजना सहज है, सहज त्रिया का नेह। मान बड़ाई ईर्ष्या, दुर्लभ तजना ये।।

मान-बड़ाई, ईर्ष्या का रोग बहुत भयानक है। अपनी लड़की के जीवित न होने का दुःख नहीं, कबीर साहेब की पराजय की खुशी मना रहा था। कबीर साहेब ने कहा कि बैठ जाओ महात्मा जी, शान्ति रखो। कबीर साहेब ने आदेश दिया कि हे जीवात्मा जहाँ भी है कबीर आदेश से इस शव में प्रवेश करो और बाहर आओ।

कबीर साहेब का कहना ही था कि इतने में शव में कम्पन हुआ और वह लड़की जीवित होकर बाहर आई, कबीर साहेब के चरणों में दण्डवत् प्रणाम किया। (बोलो सतगुरु देव की जय।)

उस लड़की ने डेढ घण्टे तक कबीर साहेब की कृपा से प्रवचन किए। कहा हे भोली जनता ये भगवान आए हुए हैं। पूर्ण ब्रह्म अन्नत कोटि ब्रह्मण्ड के परमेश्वर हैं। क्या तुम इसको एक मामूली जुलाहा(धाणक) मान रहे हो। हे भूले-भटके प्राणियो! ये आपके सामने स्वयं परमेश्वर आए हैं। इनके चरणों में गिरकर अपने जन्म-मरण का दीर्घ रोग कटवाओ और सत्यलोक चलो। जहाँ पर जाने के बाद जीवात्मा जन्म-मरण के चक्कर से बच जाती है। कमाली ने बताया कि इस काल के जाल से बन्दी छोड़ कबीर साहेब के बिना कोई नहीं छुटवा सकता। चाहे हिन्दू पद्धति से तीर्थ-व्रत, गीता-भागवत, रामायण, महाभारत, पुराण, उपनिषद्ध, वेदों का पाठ करना, राम, कृष्ण, ब्रह्मा-विष्णु-शिव, शेराँवाली(आदि माया, आदि भवानी, प्रकृति देवी), ज्योति निरंजन की उपासना भी क्यों न करें, जीव चौरासी लाख प्राणियों के शरीर में कष्ट से नहीं बच सकता और मुसलमान पद्धति से भी जीव काल के जाल से नहीं छूट सकता। जैसे रोजे रखना, ईद बकरीद मनाना, पाँच वक्त नमाज करना, मक्का-मदीना में जाना, मस्जिद में बंग देना आदि सर्व व्यर्थ है। कमाली ने सर्व उपस्थित जनों को सम्बोधित करते हुए अपने पिछले जन्मों की कथा सुनाई जो उसे कबीर साहेब की कृपा से याद हो आई थी। जो कि आप पूर्व पढ़ चुके हो।

कबीर साहेब ने कहा कि बेटी अपने पिता के साथ जाओ। वह लड़की बोली मेरे वास्तविक पिता तो आप हैं। यह तो नकली पिता है। इसने तो मैं मिट्टी में दबा दी थी। मेरा और इसका हिसाब बराबर हो चुका है। सभी उपस्थित व्यक्तियों ने कहा कि कबीर परमेश्वर ने कमाल कर दिया। कबीर साहेब ने लड़की का नाम कमाली रख दिया और अपनी बेटी की तरह रखा और नाम दिया। उपस्थित व्यक्तियों ने हजारों की संख्या में कबीर परमेश्वर से उपदेश ग्रहण किया। अब शेखतकी

ने सोचा कि यह तो और भी बात बिगड़ गई। मेरी तो सारी प्रभुता गई।

"सिकंदर लोधी बादशाह का असाध्य जलन का रोग ठीक करना"

एक बार दिल्ली के बादशाह सिकन्दर लोधी को जलन का रोग हो गया। जलन का रोग ऐसा होता है जैसे किसी का आग में हाथ जल जाए उसमें पीड़ा बहुत होती है। जलन के रोग में कहीं से शरीर जला दिखाई नहीं देता है परन्तु पीड़ा अत्यधिक होती है। उसको जलन का रोग कहते हैं। जब प्राणी के पाप बढ़ जाते हैं तो दवाई भी व्यर्थ हो जाती हैं। दिल्ली के बादशाह सिकन्दर लौधी के साथ भी वही हुआ। सभी प्रकार की औषधि सेवन की। बड़े-बड़े वैद्य बुला लिए और मुँह बोला इनाम रख दिया कि मुझे ठीक कर दो, जो माँगोगे वही दूँगा। दुःख में व्यक्ति पता नहीं क्या संकल्प कर लेता है? सर्व उपाय निष्फल हुए। उसके बाद अपने धार्मिक काजी, मुल्ला, संतों आदि सबसे अपना आध्यात्मिक इलाज करवाया। परन्तु सब असफल रहा। {जब हम दुःखी हो जाते हैं तो हिन्दू और मुसलमान नहीं रहते। फिर तो कहीं पर रोग कट जाए, वही पर चले जाते हैं। वैसे तो हिन्दू कहते हैं कि मुसलमान बुरे और मुसलमान कहते हैं कि हिन्दू बुरे और बीमारी हो जाए तो फिर हिन्दू व मुसलमान नहीं देखते। जब कष्ट आए तब तो कोई बुरा नहीं। बुरा कोई नहीं है। जो मुसलमान बुरे हैं वे बुरे हैं और जो हिन्दू बुरे हैं वे बुरे भी हैं और दोनों में अच्छे भी है। हर मज़हब में अच्छे और बुरे व्यक्ति होते हैं। लेकिन हम जीव हैं। हमारी कोई जाति व्यवस्था नहीं है। हमारी जीव जाति है हमारा धर्म मानव है-परमात्मा को पाना है।} हिन्दू वैद्य तथा आध्यात्मिक संत भी बुलाए, स्वयं भी उनसे जाकर मिला और सबसे आशीर्वाद व जंत्र-मंत्र करवाए, परन्तु सर्व चेष्टा निष्फल रही।

किसी ने बताया कि काशी शहर में एक कबीर नाम का महापुरूष है। यदि वह कपा कर दे तो आपका दुःख निवारण अवश्य हो जाएगा।

जब बादशाह सिकंदर ने सुना कि एक काशी के अन्दर महापुरूष रहता है तो उसको कुछ-कुछ याद आया कि वह तो नहीं है जिसने गाय को भी जीवित कर दिया था। हजारों अंगरक्षकों सहित दिल्ली से काशी के लिए चल पड़ा। बीर सिंह बघेला काशी नरेश पहले ही कबीर साहेब की महिमा और ज्ञान सुनकर कबीर साहेब के शिष्य हो चुके थे और पूर्ण रूप से अपने गुरुदेव में आस्था रखते थे। उनको कबीर साहेब की महिमा का ज्ञान था क्योंकि कबीर परमेश्वर वहाँ पर बहुत लीलाएँ कर चुके थे। जब सिकंदर लोधी बनारस(काशी) गया तथा बीर सिंह से कहा बीर सिंह मैं बहुत दुःखी हो गया हूँ। अब तो आत्महत्या ही शेष रह गई है। यहाँ पर कोई कबीर नाम का संत है? आप तो जानते होंगे कि वह कैसा है? इतनी बात सिकंदर बादशाह के मुख से सुनी थी। काशी नरेश बीर सिंह की आँखों में पानी भर आया और कहा कि अब आप ठीक स्थान पर आ गए। अब आपके दुःख का अंत हो जाएगा। बादशाह सिकंदर ने पूछा कि ऐसी क्या बात है? बीर सिंह ने कहा कि वह कबीर जी स्वयं भगवान आए हुए हैं। परमेश्वर स्वरूप हैं। यदि उनकी दयादष्टि हो गई तो आपका रोग ठीक हो जाएगा। राजा सिकंदर ने कहा कि जल्दी बुला दो। काशी नरेश बीरदेवसिंह बघेल ने विनम्रता से प्रार्थना की कि आपकी आज्ञा शिरोधार्य है, आदेश भिजवा देता हूँ। लेकिन ऐसा सुना है कि संतो को बुलाया नहीं करते। यदि वे आ भी गए और रजा नहीं बख्शी तो भी आने का कोई लाभ नहीं। बाकी आपकी ईच्छा। सिकंदर ने कहा कि ठीक है मैं स्वयं ही चलता हूँ। इतनी दूर आ गया हूँ वहाँ पर भी अवश्य चलूँगा।

शाम का समय हो गया था। बीर सिंह को पता था कि इस समय साहेब कबीर जी अपने औपचारिक गुरुदेव स्वामी रामानन्द जी के आश्रम में ही होते हैं। यह समय परमेश्वर कबीर जी का वहाँ मिलने का है। बीर देव सिंह बघेल काशी नरेश तथा सिकंदर लोधी दिल्ली के बादशाह दोनों, स्वामी रामानन्द जी के आश्रम के सामने खड़े हो गए। वहाँ जाकर पता चला कि कबीर साहेब अभी नहीं आए हैं, आने ही वाले हैं। बीर सिंह अन्दर नहीं गए। बाहर सेवक खड़ा था उससे ही पूछा। सिकंदर ने कहा कि ''तब तक आश्रम में विश्राम कर लेते हैं।'' राजा बीर सिंह ने स्वामी रामानन्द जी के द्वारपाल सेवक से कहा कि रामानन्द जी से प्रार्थना करो कि दिल्ली के बादशाह सिकंदर लौधी आपके दर्शन भी करना चाहते हैं और साहेब कबीर का इन्तजार भी आपके आश्रम में ही करना चाहते है। सेवक ने अन्दर जाकर रामानन्द जी को बताया कि दिल्ली के बादशाह सिकंदर लौधी आए हैं। रामानन्द जी मुसलमानों से घणा करते थे। रामानन्द जी ने कहा कि मैं इन मलेच्छों (मुसलमानों) की शक्ल भी नहीं देखता। कह दो कि बाहर बैठ जाएगा। जब सिकंदर लोधी ने यह सुना तो क्रोध में भरकर (क्योंकि राजा में अहंकार बहुत होता है और वह दिल्ली का बादशाह) कहा कि यह दो कौड़ी का महात्मा दिल्ली के बादशाह का अनादर कर सकता है तो साधारण मुसलमान के साथ यह कैसा व्यवहार करता होगा? इसको मज़ा चखा दूँ। रामानन्द जी अलग आसन पर बैठे थे। सिकंदर लोधी ने जाकर रामानन्द जी की गर्दन तलवार से काट दी। वापिस चल पड़ा और फिर उसको याद आया कि मैं जिस कार्य के लिए आया था? और वह काम अब पूरा नहीं होगा। कहा कि बीर सिंह देख मैं क्या जुल्म कर बैठा? मेरे बहुत बुरे दिन हैं। चाहता हूँ अच्छा करना और होता है बुरा। कबीर साहेब के गुरुदेव की हत्या कर दी। अब वे कभी भी मेरे ऊपर दयादष्टि नहीं करेंगे। मुझे तो यह दुःख भोग कर ही मरना पड़ेगा। मैं बहुत पापी जीव हूँ। यह कहता हुआ आश्रम से बाहर की ओर चल पड़ा। बीर सिंह अपने बादशाह के आगे क्या बोलता। ज्योंही आश्रम से बाहर आए, कबीर साहेब आते दिखाई दिए। बीर सिंह ने कहा कि महाराज जी मेरे गुरुदेव कबीर साहेब आ गए। ज्योंही कबीर साहेब थोड़ी दूर रह गए बीर सिंह ने जमीन पर लेटकर उनको दण्डवत् प्रणाम किया। अब सिकंदर बहुत घबराया हुआ था। {अगर उसने यह जुल्म नहीं किया होता तो वह दण्डवत् नहीं करता और दण्डवत् नहीं करता तो साहेब उस पर रजा भी नहीं बख्श पाते क्योंकि यह नियम होता है।

अति आधीन दीन हो प्राणी, ताते कहिए ये अकथ कहानी। ऊँचे पात्र जल ना जाई, ताते नीचा हुजै भाई।
आधीनी के पास हैं पूर्ण ब्रह्म दयाल। मान बड़ाई मारिए बे अदबी सिर काल।।

कबीर परमेश्वर ने यहाँ पर एक तीर से दो शिकार किए। स्वामी रामानंद जी में धर्म भेद-भाव की भावना शेष थी, वह भी निकालनी थी। रामानंद जी मुसलमानों को हिन्दुओं से अभी भी भिन्न तथा हेय मानते थे। सिकंदर में अहंकार की भावना थी। यदि वह नम्र नहीं होता तो कबीर साहेब कपा नहीं करते तथा सिकंदर स्वस्थ नहीं होता} बीर सिंह को देखकर तथा डरते हुए सिकंदर लौधी ने भी दण्डवत् प्रणाम किया। कबीर परमेश्वर जी ने दोनों के सिर पर हाथ रखा और कहा कि दो-2 नरेश आज मुझ गरीब के पास कैसे आए हैं? मुझ गरीब को कैसे दर्शन दिए? परमेश्वर कबीर जी ने अपना हाथ उठाया भी नहीं था कि सिकंदर का जलन का रोग समाप्त हो गया। सिकंदर लोधी की आँखों में पानी आ गया। (संत के सामने यह मन भाग जाता है और ये आत्मा ऊपर आ जाती है क्योंकि परमात्मा आत्मा का साथी है। ''अन्तर्यामी एक तू आत्म के आधार।'' आत्मा का आधार कबीर भगवान है।)

''स्वामी रामानंद जी को जीवित करना''

सिकंदर लोधी ने पैर पकड़ कर छोड़े नहीं और रोता ही रहा। परमेश्वर जानी जान होते हुए भी कबीर साहेब ने सिकन्दर लोधी दिल्ली के बादशाह से पूछा क्या बात है?। सिकंदर ने कहा कि दाता मैंने घोर अपराध कर दिया। आप मुझे क्षमा नहीं कर सकते। जिस काम के लिए मैं आया था वह असाध्य रोग तो आपके स्पर्श मात्र से ठीक हो गया। इस पापी को क्षमा कर दो। कबीर साहेब ने कहा क्षमा कर दिया। यह तो बता कि क्या हुआ? सिकंदर ने कहा कि आप क्षमा कर नहीं सकते। मैंने ऐसा पाप किया है। कबीर साहेब ने कहा कि क्षमा कर दिया। सिकंदर ने फिर कहा कि सच में माफ कर दिया? कबीर साहेब ने कहा कि हाँ क्षमा कर दिया। अब बता क्या कष्ट है? सिकंदर ने कहा कि दाता मुझ पापी ने गुस्से में आकर आपके गुरुदेव का सिर कलम कर दिया और फिर सारी कहानी बताई। कबीर साहेब बोले कोई बात नहीं। जो हुआ प्रभु इच्छा से ही हुआ है आप स्वामी रामानन्द जी का अन्तिम संस्कार करवा कर जाना नहीं तो आप निंदा के पात्र बनोगे। परमेश्वर कबीर साहेब जी नाराज नहीं हुए। सिकंदर लोधी ने बीर सिंह के मुख की और देखा और कहा कि बीर सिंह यह तो वास्तव में भगवान है। देखिए मैंने गुरुदेव का सिर काट दिया और कबीर जी को क्रोध भी नहीं आया। बीर सिंह चुप रहा और साथ-साथ हो लिया और मन ही मन में सोचता है कि अभी क्या है, अभी तो और देखना। यह तो शुरूआत है।

कबीर परमेश्वर जी द्वारा शिष्यों की परीक्षा लेना''

बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर जी द्वारा अनेकों अनहोनी लीला करने से प्रभावित होकर चौंसठ लाख शिष्य बने थे। परमेश्वर तो भूत-भविष्य तथा वर्तमान की जानते हैं। उनको पता था कि ये सब चमत्कार देखकर तथा इनको मेरे आशीर्वाद से हुए भौतिक लाभों के कारण मेरी जय-जयकार कर रहे हैं। इनको मुझ पर विश्वास नहीं है कि मैं परमात्मा हूँ। परंतु देखा-देखी कहते अवश्य हैं कि कबीर जी हमारे सद्गुरू जी तो स्वयं परमात्मा आए हैं। अपने लाभ भी बताते थे।

कबीर, गुरू मानुष कर जानते, ते नर कहिए अंध। होवें दुःखी संसार में, आगे यम के फंद।।
कबीर, गुरू को मानुष जो गिनै, और चरणामंत को पान। ते नर नरक में जाएंगे, जुग जुग होवैं श्वान।।

एक वैश्या थी जो काशी में बहुत बदनाम थी। एक दिन उसे रात्रि के समय अपने घर की छत पर बैठी को कबीर परमेश्वर जी का सत्संग सुनने को मिला जो उसके मकान से कुछ ही दूरी पर किसी के घर पर किया गया था। सत्संग वचनों से प्रभावित होकर वह काँपने लगी। विचार किया कि मैंने तो अपना अनमोल जीवन व्यर्थ कर दिया। बदनाम होकर जो धन संग्रह किया है, वह यहीं रह जाएगा। इस धन को संग्रह करने में जो पाप किए हैं, ये मेरे साथ जाएंगे क्योंकि सत्संग में यही विचार बताए गए थे। वह बहन घर से निकलकर सत्संग स्थल पर गई। सतगुरूदेव कबीर जी से अपना परिचय बताया तथा कहा कि मैंने जीवन में प्रथम बार ऐसा ज्ञान सुना है। मैं अपना कल्याण कराना चाहती हूँ। क्या मेरा कल्याण भी संभव है गुरूदेव? क्या मेरे जैसी पतित का भी उद्धार हो सकता है? इस जीवन से तो मैं मरना उचित समझती हूँ। मुझे ज्ञान नहीं था कि मैं मनुष्य जीवन के मूल उद्देश्य को छोड़कर नीच कर्म में लिप्त थी।

उस लड़की की दास्तां सुनकर परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि बेटी! कपड़ा मैला है तो साबुन-पानी से धोने से साफ हो जाता है। जब तक प्राणी सत्संग रूपी साबुन-पानी के सम्पर्क में

नहीं आता तो उसके पाप कर्म रूपी मैल साफ नहीं होते। सांसारिक कार्यों में तथा अपराधिक कर्मों से आत्मा मलीन हो जाती है। जैसे वस्त्र पहनते हैं तो मैले हो जाते हैं। उनको प्रतिदिन साबुन तथा पानी से धोया जाता है तो मैल प्रतिदिन साफ हो जाता है। वस्त्र उज्जवल रहता है। इसी प्रकार अपराधिक कार्य त्यागकर करने योग्य सांसारिक कार्य करने में भी पाप होता है। जैसे पथ्वी पर चलते हैं तो जीव-जन्तु मरते हैं। भोजन पकाते हैं तो अग्नि में जीव मरते हैं। मजदूरी करते हैं, खेती करते हैं, उनमें भी जीव मरते हैं। खाना खाते हैं, पानी पीते हैं, श्वांस लेते हैं, इनमें भी जीव मरते हैं। जो शास्त्रविधि अनुसार साधना नहीं करते तथा अपराधिक कार्य भी करते हैं। उनके पाप कर्म संचित होते रहते हैं। जो अपराधिक कर्म त्यागकर शास्त्रविधि अनुसार साधना करते हैं तो उनके पाप प्रतिदिन वस्त्र के मैल की तरह नष्ट होते रहते हैं। आप दीक्षा लो तथा पाप कर्म त्यागकर मर्यादा में रहकर साधना करो, कल्याण अवश्य होगा।

बहन ने प्रश्न किया कि हे प्रभु! जो मेरे आज तक पाप संचित हो चुके हैं, उनको कैसे नष्ट किया जाएगा? परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि :- हे बेटी!

कबीर, जब ही सत्यनाम हृदय धरो, भयो पाप को नाश। जैसे चिनगी अग्नि की, पड़ै पुराने घास।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि मेरे पास साधना का सत्य मंत्र है। उसको दीक्षा में देता हूँ। साधक श्रद्धा के साथ मर्यादा में रहकर भक्ति करता है तो उसके सब पाप कर्म ऐसे जलकर नष्ट हो जाते हैं जैसे पुराने सूखे हजारों मन घास में अग्नि की चिंगारी लगने से सर्व घास जलकर भस्म (राख) हो जाता है। फिर पवन चलती है तो उड़ जाता है। वह स्थान भी साफ हो जाता है।

गरीब, जैसे सूरज के आगे बदरा, ऐसे कर्म छया रे। प्रेम की पवन करै चित मंजन, झलके तेज नया रे।।

भावार्थ :- कबीर परमेश्वर जी ने संत गरीबदास जी को भी यही ज्ञान बताया था। वही ज्ञान उस गणिका बेटी को बताया कि जैसे सूर्य के सामने बादल छा जाते हैं तो सूर्य का प्रकाश दिखाई नहीं देता। जब तेज हवा चलती है तो बादल बिखर जाते हैं। सूरज का प्रकाश स्पष्ट दिखाई देता है। इसी प्रकार आत्मा तथा परमात्मा के बीच में पाप कर्मों की छाया हो जाती है। सतगुरू से दीक्षा लेकर श्रद्धा प्रेम से साधना करने से प्रभु में प्रेम उत्पन्न होगा। आँखों से आँसू गिरने लगेंगे। उस प्रेम रूपी पवन से पाप कर्म कट जाएंगे। आत्मा को परमात्मा का दर्शन होगा। इस प्रकार घोर से घोर अपराधी भी सतगुरू शरण में आने से सत्य साधना करके मोक्ष को प्राप्त हो जाता है। उस बहन ने उसी समय परमेश्वर कबीर जी के चरणों में गिरकर दीक्षा की भीख माँगी। दयालु सतगुरू जी ने उस जीव पर दया की, दीक्षा देकर कतार्थ किया। उस लड़की ने अपना सर्व धन सतगुरू के आगे रख दिया। सतगुरू जी ने कहा कि बेटी! मजदूरी करके निर्वाह कर। यह धन भण्डारा करके धर्म में खर्च कर दे। सतगुरू कबीर जी की आज्ञा से धर्म भण्डारा किया और सच्ची श्रद्धा से भक्ति करने लगी। अधिक से अधिक समय सत्संग सुनने में तथा सतगुरू जी की सेवा तथा दर्शन करने में व्यतीत करने लगी। जैसे ज्वर के उतर जाने के पश्चात् व्यक्ति स्वस्थ हो जाता है तो पहले से अधिक भोजन खाता है। ज्वर के कारण भूख नहीं लगती थी, परंतु ज्वर उतर जाने के पश्चात् स्वस्थ व्यक्ति दिन में कई-कई बार भोजन खाता है। इसी प्रकार उस भूखी आत्मा को सत्संग सुनने तथा सतगुरू के दर्शन करने की अधिक भूख लगती है। वही दशा उस बहन की हो गई थी। सतगुरू कबीर जी के शिष्य विवेकहीन थे। वे केवल लाभ मिलने के कारण ही सत्संग में आते थे। ज्ञान पर अमल नहीं करते थे। वे एक-दूसरे से कहते थे कि यह बदनाम औरत सत्संग में आने लगी है। शहर में गुरू जी की निंदा हो रही है। लोग कह रहे हैं कि यह कैसा गुरू है जो वैश्या को

अपने पास बैठाता है। अपने चरण पापी कर रहा है। एक दिन सब सामने आ जाएगा। कबीर के मन में दोष आ गया है। संगत वाले उस लड़की को धमकाने लगे कि तू सत्संग में मत आया कर। तेरे कारण गुरूजी बदनाम हो रहे हैं। यह वचन सुनकर वह बहन जोर-जोर से रोने लगी। बात सतगुरू कबीर जी तक पहुँची। कारण पूछा तो लड़की ने बताया कि हे प्रभु! मैं कहाँ जाऊँ? मेरा क्या होगा? बताया कि कुछ भाई-बहन सत्संगी ऐसे-ऐसे कह रहे हैं। कबीर जी ने कहा कि बेटी! आप सत्संग में आना बंद ना करना। कहने वालों को कहने दे। कबीर जी सत्संग वचनों के द्वारा उन मूर्ख शिष्यों को समझाते थे, परंतु वे ज्ञान को महत्त्व नहीं देते थे। अपनी बुद्धि से ही काम ले रहे थे। परमेश्वर कबीर जी सत्संग में बताते थे कि :-

कुष्टि होवे संत बंदगी कीजिए। हो वैश्या कै विश्वास चरण चित दीजिए।।

भावार्थ :- यदि सत्संग में कोढ़ी भी आता है तो उसको भी करबद्ध प्रणाम करना चाहिए। यदि वैश्या भी सत्संग में विश्वास के साथ आती है तो उसका सत्कार कीजिए। उसके चेहरे पर निगाह न करके अपनी माता-बहन की तरह देखें, सामने देखने की बजाय पैरों की ओर नीची नजर से देखें।

श्रीमद्भगवत गीता में अध्याय 9 श्लोक 30 में कहा कि यदि अतिश्य दुराचारी व्यक्ति भी क्यों न हो, यदि उसका परमात्मा में विश्वास है और साधना करता है तो उसको साधु-महात्मा के समान समझना चाहिए।

इस प्रकार परमेश्वर कबीर जी संकेत करके उन दुर्बुद्धि शिष्यों को समझाना चाहते थे। परंतु वे लोकलाज को परमात्मा के वचनों से अधिक तवज्जो (महत्त्व) देते थे। वे खुलकर तो सतगुरू जी को कह नहीं पाते थे, परंतु उस लड़की को अवश्य बाधा करते थे।

एक दिन परमेश्वर कबीर जी ने शिष्यों की परीक्षा लेनी चाही कि देखूँ तो कितने ज्ञान को समझे हैं। यदि इनको विश्वास ही नहीं है तो ये मोक्ष के अधिकारी नहीं हैं। ये तो मेरे सिर पर व्यर्थ का भार हैं। यह विचार करके एक योजना बनाई। अपने परम शिष्य रविदास से कहा कि एक हाथी किराए पर लाओ। उस लड़की से कहा कि बेटी! आप मेरे साथ हाथी पर बैठकर चलोगी। लड़की ने कहा, जो आज्ञा गुरूदेव! अगले दिन सुबह लगभग 10:00 बजे हाथी के ऊपर तीनों सवार होकर काशी नगर के मुख्य बाजार में से गुजरने लगे। संत रविदास जी हाथी को चला रहे थे। लड़की रविदास जी के पीछे कबीर जी के आगे यानि दोनों के बीच में बैठी थी। कबीर जी ने एक बोतल में गंगा का पानी भर लिया। उस बोतल को मुख से लगाकर घूँट-घूँटकर पी रहे थे। लोगों को लगा कि कबीर जी शराब पी रहे हैं। शराब के नशे में वैश्या को सरेआम बाजार में लिये घूम रहे हैं। काशी के व्यक्ति एक-दूसरे को बता रहे हैं कि देखो! बड़े-बड़े उपदेश दिया करता कबीर जुलाहा, आज इसकी पोल-पट्टी खुल गई है। ये लोग सत्संग के बहाने ऐसे कर्म करते हैं। काशी के व्यक्ति कबीर जी के शिष्यों को पकड़-पकड़ लाकर दिखा रहे थे कि देख तुम्हारे परमात्मा की करतूत। शराब पी रहे हैं, वैश्या को लिए सरेआम घूम रहा है। यह लीला देखकर वे चौंसठ लाख नकली शिष्य कबीर जी को त्यागकर चले गए। पहले वाली साधना करने लगे। लोक-लाज में फँसकर गुरू विमुख हो गए। संत गरीबदास जी ने अपनी अमवाणी में इस प्रकार वर्णन किया है :-

फिर गणिका कै संग चले, शीशी भरी शराब। गरीबदास उस पुरीमें, जुलहा भया खराब।।
तारी बाजी पुरी में, भिष्ट जुलहदी नीच। गरीबदास गनिका सजी, दहूं संतौं कै बीच।।
गावत बैंन बिलासपद, गंगाजल पीवंत। गरीबदास विह्वल भये, मतवाले घूमंत।।
भड़ुवा भड़ुवा सब कहैं, कोई न जानैं खोज। दासगरीब कबीर कर्म, बांटत शिरका बोझ।।

देखो गनिका संगि लई, कहते कौंम छतीस। गरीबदास इस जुलहदी का, दर्शन आन हदीस।।

परमात्मा कबीर जी काशी के बाजार में घूमकर वापिस आ गए तथा रविदास जी हाथी वाले का हाथी देकर अपने घर चले गए। कबीर जी उस लड़की के साथ उसी के मकान में जाकर उसके चौंक में बैठ गए। वह लड़की सतगुरू जी के चरणों की सेवा करने लगी।

कबीर परमेश्वर जी के शिष्यों में अर्जुन तथा सर्जुन नाम के शिष्य शहर से बाहर गए हुए थे। वे भी उसी दिन लौटकर आए थे। अन्य शिष्यों ने उनको सब बात बताई तो उनको विश्वास नहीं हुआ और उल्टा गुरू भाईयों से कहने लगे कि आप क्या कह रहे हो? आप परमात्मा में दोष देख रहे हो। पाप में गल जाओगे। एक व्यक्ति ने कहा कि चलो अपनी आँखों देख लो। उन दोनों को वेश्या के मकान के सामने ले जाकर कहा कि देखो सामने क्या हो रहा है? अर्जुन तथा सर्जुन भी विचलित हो गए।

उस मकान में प्रवेश करके बिना दण्डवत् प्रणाम किए कहने लगे कि हे सतगुरू! आप इस बदनाम नीच औरत के घर ना बैठा करो। कबीर जी ने कहा कि हे अर्जुन तथा सर्जुन! आप तो गुरू जी को शिक्षा देने लग गए। आप तो मेरे शिष्य नहीं रहे, आप तो गुरू बन गए हो। मैं कण-कण में व्यापक हूँ। ऊँच तथा नीच में निवास करता हूँ। आपका शरीर भी हाड-चाम, रक्त का बना है। इस लड़की का शरीर भी उसी पदार्थ का बना है। आपको मैंने जो नाम जाप को दिया है, उस पर विश्वास करके जाप करो। आपका केवल इतना कार्य है। अर्जुन-सर्जुन को अपनी गलती का एहसास हुआ। सतगुरू जी के चरणों में गिरकर क्षमा याचना की। परमेश्वर जी ने कहा कि अर्जुन-सर्जुन! आपका मोक्ष अब मेरे इस शरीर से नहीं हो सकता क्योंकि आपको ग्लानि हो चुकी है। आप मेरे में दोष देख रहे हो। ऊपर से क्षमा याचना कर रहे हो। अपने मन का दोष सतगुरू से सुनकर रो-रोकर पूछा कि हम पापियों का उद्धार कब होगा? फिर मानव जन्म पता नहीं कौन-से युग में मिलेगा। फिर सतगुरू मिलना कठिन है। यह वचन कहकर चरणों में गिर गए और अपने इसी मानव शरीर में मोक्ष कराने की विनय की।

तब कबीर परमेश्वर जी ने कहा कि वि.संवत् 1774 में दिल्ली से लगभग 30 मील पश्चिम की ओर एक छोटे-से गाँव में मेरा अंश जन्म लेगा। उसके द्वारा तुम्हारा कल्याण होगा। दस वर्ष की आयु में उसको मैं सत्यलोक से आकर गुरू पद प्रदान करूंगा। आप उससे दीक्षा लेकर अपना कल्याण कराना। उसका जब जन्म होगा और मैं उसको गुरू पद प्रदान कर दूँगा, तब तुम्हें एक स्वपन आएगा। उसमें मैं तुमको उस गाँव का नाम, उसके पिता का नाम बता दूँगा। वहाँ जाकर दीक्षा लेकर सावधान रहकर भक्ति करना, तुम्हारा कल्याण इसी शरीर में हो जाएगा। तुम्हारा यह शरीर मेरी कपा से 250 वर्ष तक बना रहेगा। ऐसा लगेगा जैसे 60-70 वर्ष का शरीर है। वे दोनों दिल्ली की दिशा को चल पड़े। अपनी मूर्खता पर रो रहे थे। कह रहे थे कि हमने अविश्वास करके परमात्मा को खो दिया। अब कभी ऐसी गलती नहीं करेंगे। उन्होंने कभी नहीं सोचा कि 250 वर्ष तक यह शरीर कैसे रहेगा? पूर्ण विश्वास किया इस डर से कि कहीं फिर से नाम खण्डित न हो जाए। वे दोनों खरखौदा के पास छोटे-से गाँव हमायूँपुर में एक किसान के घर रहने लगे। संत गरीबदास जी का जन्म विक्रमी संवत् 1774 में वैशाख पूर्णमासी को ब्रह्म मुहूर्त में छोटे-से गाँव छुड़ानी में हुआ।(जो बहादुरगढ़ से 15 कि.मी. दूर झज्जर रोड़ से 2½ कि.मी. अंदर पश्चिम की ओर गाँव-दुल्हेड़ा से लिंक रोड़ जाता है, वहाँ पर है।) जब संत गरीबदास जी दस वर्ष के हुए तो अपने खेतों में गाय चराने जाते थे। फाल्गुन मास की शुक्ल द्वादशी को दिन के लगभग 10 बजे नला

नामक खेत में गाँव-कबलाना की सीमा के पास परमेश्वर कबीर जी सत्यलोक से चलकर आए। बालक गरीबदास जी को मिले। कुँवारी गाय का दूध पीया। संत गरीबदास जी को दीक्षा दी तथा सत्यलोक ले गए। फिर पृथ्वी पर शरीर में छोड़ा। उसी रात्रि में अर्जुन-सर्जुन को स्वपन में बताया कि गाँव-छुड़ानी, नाम-गरीबदास, पिता का नाम-बलराम, नाना का नाम-शिवलाल जाट, जाओ और दीक्षा ले लो। दोनों ने सुबह उठकर एक-दूसरे को अपना-अपना स्वपन बताया। जिस किसान के घर रह रहे थे। उसी के रेहडू (छोटी बैलगाड़ी) में बैठकर छुड़ानी गए तो नाम पूछा, सही पाया। संत गरीबदास जी ने कहा कि आओ अर्जुन-सर्जुन! परमात्मा का आदेश है, दीक्षा लो। उन्होंने दीक्षा ली। कुछ वर्ष छुड़ानी गाँव में संत गरीबदास जी के पास रहे। फिर शरीर त्यागकर चले गए। उनका भी पुनर्जन्म होगा जो इस भक्ति समय में होगा। अब उनका मोक्ष होगा। अन्यथा गुरू द्रोही भी हो सकते थे। इसलिए उनको शरीर में रखकर उनकी श्रद्धा बनाए रखी। कारण यह था कि वे घर त्यागकर सतगुरू कबीर जी के शिष्य बने थे। वे कबीर जी से विमुख होकर किसी काल के दूत गुरू के आश्रम में रहते, उनका रंग चढ़ना ही था। वे भक्तिहीन हो जाते। उनके ऊपर विशेष कृपा परमेश्वर कबीर जी ने की थी। वैसे तो यह गलती क्षमा योग्य नहीं होती।

''गंगा दरिया में डुबोकर मारने की कुचेष्टा''

कबीर परमेश्वर जी की यह लीला देखकर काशी के लोग कहने लगे कि यह जुलाहा भ्रष्ट हो गया है। भरे बाजार में दिन के समय शराब पीकर वैश्या के साथ घूम रहा है। लोकलाज समाप्त कर दी है। हमारी बहन-बेटियों का बाहर निकलना मुश्किल कर दिया है। बाप-बेटी, भाई-बहन कैसे यह अभद्र क्रिया सहन करेंगे। चलो राजा बीर सिंह बघेल जी को शिकायत करते हैं। हजारों की सँख्या में जनता राज दरबार के सामने जाकर कबीर जी को सजा दो। सजा दो के नारे लगाने लगी। उस दिन दिल्ली का सम्राट सिकंदर लोधी भी काशी में आया था। उस दिन राज दरबार में ही उपस्थित था। दोनों नरेश बाहर आए। जनता की शिकायत सुनी तो सिकंदर राजा क्रोधित होकर बोला कि कबीर को बुलाकर लाओ। परमात्मा को सिपाही पकड़कर लाए।

राजा सिकंदर ने कहा :- (संत गरीबदास जी की वाणी)

कहो कबीर यह क्या किया, गणिका लीन्ही संग। गरीबदास शाह कह, पड़्या भक्ति में भंग।।
कह कबीर शाह से सुनो अर्ज आवाज। गरीबदास वह राखसी जिन्ह यो साज्या साज।।

भावार्थ :- सिकंदर राजा ने कहा कि हे कबीर जी! यह क्या गलती कर दी। आपकी भक्ति में विघ्न पड़ गया है। आपने वैश्या को साथ लेकर महान गलती की है। कबीर जी ने कहा कि हे बादशाह! मेरी अर्ज सुनो। मेरी तथा मेरी भक्ति की रक्षा भी वही करेगा जिसने यह कर्म मेरे से करवाया है जिसने सर्व सृष्टि की रचना की है।

शाह सिकंदर कूं सुनी, भिष्ट हुये दो संत। गरीबदास च्यारों वरण, उठि लागे सब पंथ।।
च्यारि वरण षट आश्रम, दोनौं दीन खुशाल। गरीबदास हिंदू तुरक, पड़्या शहर गलि जाल।।
शाह सिकंदरकै गये, सुनि कबले अरदास। गरीबदास तलबां हुई, पकरे दोनौं दास।।
कहौ कबीर यौह क्या किया, गनिका लिन्हीं संग। गरीबदास भूले भक्ति, पर्‌या भजन में भंग।।
सुनौं सिकंदर बादशाह, हमरी अरज अवाज। गरीबदास वह राखिसी, जिन यौह साज्या साज।।

सिकंदर लोधी ने जनता को शांत करने के लिए अपने प्राण दाता का भी अनादर किया। अपने हाथों से कबीर जी के हाथों में हथकड़ियाँ लगाई, पैरों में बेड़ी तथा गले में तौक (लोहे की भारी

बेल) डाली और आदेश दिया कि जनता की इच्छा अनुसार नौका में बैठाकर गंगा दरिया के मध्य में डालकर डुबोकर मार दो। राजा की आज्ञा मिलते ही सिपाही तथा जनता के कुछ व्यक्ति कबीर जी को नौका में बैठाकर गंगा दरिया के मध्य ले जाकर उठाकर दरिया के जल में फैंक दिया। गंगा दरिया में अथाह जल था। कबीर परमेश्वर जी की हथकड़ी, बेड़ी तथा गले की तोक अपने आप टूट गई। कबीर परमेश्वर जी जल के ऊपर सुखासन (आलती-पालती) लगाकर बैठे रहे। जल में डूबे नहीं। यह अचरज देखकर भी उन मूर्खों ने परमेश्वर को नहीं समझा। उनके साथ राजा सिकंदर का धार्मिक पीर शेखतकी भी था जिसने यह मोर्चा संभाल रखा था। उसने कहा कि यह कबीर जंत्र-मंत्र जानता है। इसने जल को बाँध दिया है। इसलिए नहीं डूब रहा है। इसको नौका में बैठाकर किनारे लाओ। ऐसा ही किया गया। शेखतकी ने कहा कि इसके शरीर के साथ भारी पत्थर बाँधकर पुनः गंगा के मध्य ले जाकर जल में फैंक दो। ऐसा ही किया गया। इस बार भी सब पत्थर बँधन मुक्त होकर जल में डूब गए, परंतु परमेश्वर कबीर जी जल के ऊपर सुखासन लगाए बैठे रहे। नीचे से गंगा जल की लहरें बह रही थी। परमेश्वर आराम से जल के ऊपर बैठे थे।

शेखतकी ने कहा कि सब उपस्थित जनता कबीर को पत्थर मार-मारकर मार डालो। ऐसा ही किया गया। फिर तीर चलाने वाले सैनिकों से कहा कि तीर मार-मारकर कबीर की हत्या कर दो। परंतु परमेश्वर कबीर जी की ओर न तो पत्थर आया, न तीर। शेखतकी कबीर जी को मारने का अवसर हाथ से जाने नहीं देना चाहता था। शेखतकी ने कहा कि तोप मँगाओ। उससे गोले मारकर काम-तमाम कर दो। ऐसा ही किया गया। तोप यंत्र से गोले चलाए गए, परंतु कबीर परमेश्वर के आसपास एक भी नहीं गया। कोई तो वहीं किनारे पर जाकर गंगा जल में गिर जाए। कई दूसरे किनारे पर जाकर गंगा किनारे शांत हो जाऐं। कोई कुछ दूर तालाब में जाकर गिरे। परंतु परमेश्वर के निकट एक भी न जाए। इस प्रकार चार पहर (12 घण्टे) तक यह जुल्म शेखतकी करता रहा। जनता का विवेक धर्मगुरूओं ने हर रखा था। परमेश्वर कबीर जी ने दया करी। जल के अंदर समा गए। शेखतकी खुशी से नाचने लगा कि डूब गया दुश्मन। अब शव पर गारा (रेग) तथा रेत चढ़ जाएगी। मिट्टी में दफन हो जाएगा।

परमेश्वर कबीर जी अंतर्ध्यान होकर रविदास जी की कुटिया पर गए और दोनों परमात्मा की महिमा के शब्द गाने लगे। शेखतकी ने अपने साथियों से कहा कि चलो! रविदास से बताते हैं कि आपका अविनाशी परमात्मा गंगा के जल में डूबकर मर गया है।

''खूनी हाथी से मरवाने की व्यर्थ चेष्टा''

शेखतकी अपने प्रशंसकों के साथ संत रविदास जी की कुटिया पर पहुँचा तो देखा कबीर जी उपस्थित थे और इकतारे से शब्द गा रहे थे। शेखतकी की तो माँ-सी मर गई। शर्म और क्रोधवश होकर सीधा सिकंदर लोधी राजा के पास विश्राम गृह में गया तथा बताया कि कबीर न तो जल में डूबा, न तोप से मरा। वह जादूगर है, जंत्र-मंत्र जानता है। जिस कारण से बच जाता है। अबकी बार इसको जनता के सामने खूनी हाथी से मरवाते हैं। राजा ने आज्ञा दे दी। नगर में मुनादी (**Announcement**) कर दी कि कल सुबह 10 बजे कबीर को खूनी हाथी से कुचलवा (रौंदवा) कर मारा जाएगा। सब देखने आना। वह एक निश्चित स्थान था। वर्तमान में बने स्टेडियम की तरह बनावट होती थी। उस ऊँचे मचान (स्टेज) पर राजा-मंत्री तथा अन्य उच्च अधिकारी बैठते थे। उस दिन राजा सिकंदर तथा काशी राजा बीर देव सिंह बघेल के अतिरिक्त मंत्री तथा अन्य उच्च

अधिकारी भी विराजमान थे।

शेखतकी पीर ने महावत (हाथी को चलाने वाले) से कहा कि हाथी को एक-दो शीशी शराब की पिला दे ताकि शीघ्र कबीर को मार डाले। ऐसा ही किया गया। तीनों ओर दर्शकों की भीड़ थी। एक और ऊँचे मचान पर बैठे राजा तथा मंत्री देख रहे थे। हाथी को लेकर महावत कबीर जी की ओर चला तो हाथी मस्ती में भरकर कबीर परमेश्वर को मारने चला। कबीर जी के हाथ-पैर बाँधकर पंथ्वी पर डाल रखा था। जब हाथी परमेश्वर कबीर जी से दस कदम (50 फुट) दूर रह गया तो परमेश्वर कबीर के पास बब्बर शेर खड़ा केवल हाथी को दिखाई दिया। हाथी डर से चिल्लाकर (चिंघाड़ मारकर) दुम दबाकर मुंडी धुनकर (सिर को आपत्ति के समय भय से ऊपर-नीचे हाथी किया करता है, उसको मुंडी धुनना कहते हैं) वापिस भागने लगा तो महावत ने उसको अंकुश मारा। फिर भी हाथी वापिस भागने लगा। साथ खड़े सैनिकों ने हाथी की हींकों में (पशु के अगले पैरों के ऊपर के जोड़ को हींक कहते हैं जो शरीर से लगे होते हैं) भाले मारे। हाथी की कुखों में भाले मारे। (कुख पशु के पेट का वह भाग है जो बराबर में दोनों ओर हड्डी रहित होता है। चारा चरने के पश्चात् वह भाग ऊपर उठ जाता है। पशु के भूखा होने पर वह अंदर को चला जाता है। वह कोमल भाग होता है। वहाँ पर लाठी-डण्डे के सिरे से खोद मारने से भी पशु को बहुत पीड़ा होती है।) परंतु हाथी परमेश्वर कबीर जी की ओर न जाकर अन्य दिशा को भागने की कोशिश कर रहा था। तब परमेश्वर कबीर जी ने महावत को भी सिंह के दर्शन करा दिए। डर के मारे वह भी हाथी से गिर गया। हाथी भाग गया। तब परमेश्वर कबीर जी के सब रस्से टूट गए और परमात्मा खड़े हुए, अंगड़ाई ली तथा जम्माही (मुख खोलकर क्रिया की जाती है) ली तो इतने लम्बे बढ़ गए कि सिर आसमान को लगा दिखाई दे रहा था। शरीर से अजब प्रकाश निकल रहा था। उसे देखकर दिल्ली का सम्राट सिकंदर भयभीत होकर मचान से उतरकर परमेश्वर के चरणों में गिर गया और बोला कि हे अल्लाह! सिर्फ अबकी बार मेरा गुनाह (अपराध) क्षमा कर दो। यह दंश्य केवल सिकंदर राजा को ही नजर आ रहा था। फिर कबीर जी ने अपना सामान्य स्वरूप बना लिया और राजा को समझाकर अपनी कुटिया पर चले गए। सिकंदर राजा को तथा बीर सिंह बघेल राजा को कबीर जी के चरणों में गिरते देख शेखतकी ईर्ष्या से जल-भुन गया तथा उपस्थित जनता से कहा कि कबीर जी ने जन्त्र-मन्त्र करके हाथी को भगा दिया। राजा सिकंदर तथा काशी नरेश बीर सिंह भी अपराधी जुलाहे का सम्मान कर रहे हैं। आपका इस नगरी में रहने का कोई औचित्य नहीं रह गया है। यह बात सुनकर सब जनताजन कहने लगे कि पीर जी! आप ठीक कह रहे हो। हम काशी त्यागकर चले जाएंगे। सिकंदर लोधी राजा तथा बीर सिंह ने स्वयं उनको समझाया तथा नगरी न त्यागने के लिए राजी (खुश) किया। किसी भी व्यक्ति ने इतने चमत्कार देखकर भी परमात्मा को नहीं पहचाना।

''शास्त्रार्थ महर्षि सर्वानन्द तथा परमेश्वर कबीर(कविर्देव) का''

एक सर्वानन्द नाम के महर्षि थे। उसकी आदरणीय माता श्रीमती शारदा देवी पाप कर्म फल से पीड़ित थी। उसने सर्व पूजाऐं व जन्त्र-मन्त्र कष्ट निवारण के लिए वर्षों किए। शारीरिक पीड़ा निवारण के लिए वैद्यों की दवाईयाँ भी खाई, परन्तु कोई राहत नहीं मिली। उस समय के महर्षियों से उपदेश भी प्राप्त किया, परन्तु सर्व महर्षियों ने कहा कि बेटी शारदा यह आप का पाप कर्म दण्ड प्रारब्ध कर्म का है, यह क्षमा नहीं हो सकता, यह भोगना ही पड़ता है। भगवान श्री राम ने बाली

का वध किया था, उस पाप कर्म का दण्ड श्री राम(विष्णु) वाली आत्मा ने श्री कष्ण बन कर भोगा। श्री बाली वाली आत्मा शिकारी बनी। जिसने श्री कष्ण जी के पैर में विषाक्त तीर मारकर वध किया। इस प्रकार गुरु जी व महन्तों व संतों-ऋषियों के विचार सुनकर दुःखी मन से भक्तमति शारदा अपना प्रारब्ध पापकर्म का कष्ट रो-रोकर भोग रही थी। एक दिन किसी निजी रिश्तेदार के कहने पर काशी में (स्वयंभू) स्वयं सशरीर प्रकट हुए (कविर्देव) कविर परमेश्वर अर्थात् कबीर प्रभु से उपदेश प्राप्त किया तथा उसी दिन कष्ट मुक्त हो गई। क्योंकि पवित्र यजुर्वेद अध्याय 5 मंत्र 32 में लिखा है कि ''कविरंघारिरसि'' अर्थात् (कविर्) कबीर (अंघारि) पाप का शत्रु (असि) है। फिर इसी पवित्र यजुर्वेद अध्याय 8 मंत्र 13 में लिखा है कि परमात्मा (एनसः एनसः) अधर्म के अधर्म अर्थात् पापों के भी पाप घोर पाप को भी समाप्त कर देता है। प्रभु कविर्देव(कबीर परमेश्वर) ने कहा बेटी शारदा यह सुख आप के भाग्य में नहीं था, मैंने अपने कोष से प्रदान किया है तथा पाप विनाशक होने का प्रमाण दिया है। आप का पुत्र महर्षि सर्वानन्द जी कहा करता है कि प्रभु पाप क्षमा (विनाश) नहीं कर सकता तथा आप मेरे से उपदेश प्राप्त करके आत्म कल्याण करो। भक्तमति शारदा जी ने स्वयं आए परमेश्वर कबीर प्रभु (कविर्देव) से उपदेश लेकर अपना कल्याण करवाया। महर्षि सर्वानन्द जी को जो भक्तमति शारदा का पुत्र था, शास्त्रार्थ का बहुत चाव था। उसने अपने समकालीन सर्व विद्वानों को शास्त्रार्थ करके पराजित कर दिया। फिर सोचा कि जन - जन को कहना पड़ता है कि मैंने सर्व विद्वानों पर विजय प्राप्त कर ली है। क्यों न अपनी माता जी से अपना नाम सर्वाजीत रखवा लूं। यह सोच कर अपनी माता श्रीमति शारदा जी के पास जाकर प्रार्थना की। कहा कि माता जी मेरा नाम बदल कर सर्वाजीत रख दो। माता ने कहा कि बेटा सर्वानन्द क्या बुरा नाम है ? महर्षि सर्वानन्द जी ने कहा माता जी मैंने सर्व विद्वानों को शास्त्रार्थ में पराजित कर दिया है। इसलिए मेरा नाम सर्वाजीत रख दो। माता जी ने कहा कि बेटा एक विद्वान मेरे गुरु महाराज कविर्देव (कबीर प्रभु) को भी पराजित कर दे, फिर अपने पुत्र का नाम आते ही सर्वाजीत रख दूंगी। माता के ये वचन सुन कर श्री सर्वानन्द पहले तो हँसा, फिर कहा माता जी आप भी भोली हो। वह जुलाहा (धाणक) कबीर तो अशिक्षित है। उसका क्या पराजित करना? अभी गया अभी आया।

महर्षि सर्वानन्द जी सर्व शास्त्रों को एक बैल पर रख कर उस मोहल्ले (Colony) में गया जिसमें कबीर परमेश्वर जी की झोंपड़ी थी। परमेश्वर कबीर जी की धर्म की बेटी कमाली कूएँ पर मिली। वह जल निकाल रही थी। सर्वानन्द को अचानक भयंकर प्यास लगी। उसने लड़की से कहा कि लड़की! शीघ्र पानी पिला, मेरे प्राण जाने वाले हैं। लड़की ने बाल्टी से पानी निकालकर सर्वानन्द को पिलाया। उस समय जुलाहा कॉलोनी के व्यक्ति अपने-अपने घर से देख रहे थे तथा विचार कर रहे थे कि यह ब्राह्मण लगता है जो गलती से यहाँ आ गया है। प्यास शांत होने के बाद सर्वानन्द ने इधर-उधर देखा कि किसी ने मुझे जुलाहों के कूएं का पानी पीते हुए देख तो नहीं लिया। देखा तो बहुत सारे स्त्री-पुरूष देख रहे थे, हँस रहे थे। अपनी लाज रखने के उद्देश्य से पूछा कि हे लड़की! यह किस जाति वालों का कुँआ है। कमाली ने कहा कि विप्र जी! जुलाहों की कॉलोनी में तो जुलाहों का ही कुँआ होता है, ब्राह्मणों का नहीं होता। सर्वानन्द ऊँची आवाज में बोला कि हे मूर्ख लड़की! पहले क्यों नहीं बताया कि यह शूद्रों का कूप है। मेरा धर्म भ्रष्ट कर दिया। लड़की कमाली ने कहा कि विप्र जी! तब आपकी जान जाने वाली थी, अब प्यास बुझ गई तो जाति याद आई। सर्वानन्द ने कहा कि हे लड़की! कबीर का घर कहाँ है? बताईयेगा। कमाली बोली :-

कबीर का घर शिखर में, जहाँ सलैली गैल। पाँव ना टिकैं पपील (चींटी) के, पंडित लादे बैल।।

भावार्थ :- कमाली बहन ने बताया कि कबीर जी का वास्तविक घर सतलोक में है। वहाँ जाने का मार्ग फिसलना है। सत्य साधना करके उनके घर को प्राप्त किया जाता है। वहाँ तो चींटी भी नहीं जा सकती। आप तो बैल के ऊपर ग्रन्थों को लादे फिर रहे हो जिनमें परमेश्वर प्राप्ति की विधि नहीं है। सर्वानन्द ने कहा, लड़की! सीधी बात कर, यहाँ कॉलोनी में बता कि वे कहाँ रहते हैं? कमाली बहन ने कहा कि हे विप्र जी! मेरे पीछे-पीछे आ जाओ। मैं उन्हीं की बेटी हूँ। बहन कमाली ने अपने घर के द्वार पर आकर कहा आओ महर्षि जी यही है परमपिता कबीर का घर। श्री सर्वानन्द जी ने लड़की कमाली से अपना लोटा पानी से इतना भरवाया कि यदि जरा-सा जल और डाले तो बाहर निकल जाए तथा कहा कि बेटी यह लोटा धीरे-धीरे ले जाकर कबीर को दे तथा जो उत्तर वह देवें वह मुझे बताना। लड़की कमाली द्वारा लाए लोटे में परमेश्वर कबीर (कविर्देव) जी ने एक कपड़े सीने वाली बड़ी सुई डाल दी, कुछ जल लोटे से बाहर निकल कर पथ्वी पर गिर गया तथा कहा पुत्री यह लोटा श्री सर्वानन्द जी को लौटा दो। लोटा वापिस लेकर आई लड़की कमाली से सर्वानन्द जी ने पूछा कि क्या उत्तर दिया कबीर ने? कमाली ने प्रभु द्वारा सुई डालने का वतांत सुनाया। तब महर्षि सर्वानन्द जी ने परम पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर्देव) से पूछा कि आपने मेरे प्रश्न का क्या उत्तर दिया? प्रभु कबीर जी ने पूछा कि क्या प्रश्न था आपका?

श्री सर्वानन्द महर्षि जी ने कहा ''मैंने सर्व विद्वानों को शास्त्रार्थ में पराजित कर दिया है। मैंने अपनी माता जी से प्रार्थना की थी कि मेरा नाम सर्वाजीत रख दो। मेरी माता जी ने आपको पराजित करने के पश्चात् मेरा नाम परिवर्तन करने को कहा है। आपके पास लोटे को पूर्ण रूपेण जल से भर कर भेजने का तात्पर्य है कि मैं ज्ञान से ऐसे परिपूर्ण हूँ जैसे लोटा जल से। इसमें और जल नहीं समाएगा, वह बाहर ही गिरेगा अर्थात् मेरे साथ ज्ञान चर्चा करने से कोई लाभ नहीं होगा। आपका ज्ञान मेरे अन्दर नहीं समाएगा, व्यर्थ ही थूक मथोगे। इसलिए हार लिख दो, इसी में आपका हित है।

पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर्देव) ने कहा कि आपके जल से परिपूर्ण लोटे में लोहे की सूई डालने का अभिप्राय है कि मेरा ज्ञान (तत्त्वज्ञान) इतना भारी (सत्य) है कि जैसे सुई लोटे के जल को बाहर निकालती हुई नीचे जाकर रूकी है। इसी प्रकार मेरा तत्त्वज्ञान आपके असत्य ज्ञान(लोक वेद) को निकाल कर आपके हृदय में समा जाएगा।

महर्षि सर्वानन्द जी ने कहा प्रश्न करो। एक बहु चर्चित विद्वान को जुलाहों (धाणकों) के मोहल्ले (कॉलोनी) में आया देखकर आस-पास के भोले-भाले अशिक्षित जुलाहे शास्त्रार्थ सुनने के लिए एकत्रित हो गए।

पूज्य कविर्देव ने प्रश्न किया :

कौन ब्रह्मा का पिता है, कौन विष्णु की माँ। शंकर का दादा कौन है, सर्वानन्द दे बताए।।

उत्तर महर्षि सर्वानन्द जी का : - श्री ब्रह्मा जी रजोगुण हैं तथा श्री विष्णु जी सतगुण युक्त हैं तथा श्री शिव जी तमोगुण युक्त हैं। यह तीनों अजर-अमर अर्थात् अविनाशी हैं, सर्वेश्वर - महेश्वर - मत्युं जय हैं। इनके माता-पिता कोई नहीं। आप अज्ञानी हो। आपको शास्त्रों का ज्ञान नहीं है। ऐसे ही उट-पटांग प्रश्न किया है। सर्व उपस्थित अशिक्षित श्रोताओं ने ताली बजाई तथा महर्षि सर्वानन्द जी का समर्थन किया।

पूज्य कबीर प्रभु (कविर्देव) जी ने कहा कि महर्षि जी आप श्रीमद्देवी भागवत पुराण के तीसरे स्कंद तथा श्री शिव पुराण का छटां तथा सातवां रूद्र संहिता अध्याय प्रभु को साक्षी रखकर गीता जी पर हाथ रख कर पढ़ें तथा अनुवाद सुनाऐं। महर्षि सर्वानन्द जी ने पवित्र गीता जी पर हाथ

रख कर शपथ ली की सही-सही सुनाऊँगा।

पवित्र पुराणों को प्रभु कबीर (कविर्देव) जी के कहने के पश्चात् ध्यान पूर्वक पढ़ा। श्री शिव पुराण (गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, जिसके अनुवादक हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार) में पष्ठ नं. 100 से 103 पर लिखा है कि सदाशिव अर्थात् काल रूपी ब्रह्म तथा प्रकति (दुर्गा) के संयोग (पति-पत्नी व्यवहार) से सतगुण श्री विष्णु जी, रजगुण श्री ब्रह्मा जी तथा तमगुण श्री शिवजी का जन्म हुआ। यही प्रकति (दुर्गा) जो अष्टंगी कहलाती है, त्रिदेव जननी(तीनों ब्रह्मा, विष्णु, शिव जी) की माता कहलाती है।

पवित्र श्री मद्देवी पुराण(गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, अनुवादक श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार तथा चिमन लाल गोस्वामी) तीसरे स्कंध में पष्ठ नं. 114 से 123 तक में स्पष्ट वर्णन है कि भगवान विष्णु जी कह रहे हैं कि यह प्रकति (दुर्गा) हम तीनों की जननी है। मैंने इसे उस समय देखा था जब मैं छोटा-सा बच्चा था। माता की स्तुति करते हुए श्री विष्णु जी ने कहा कि हे माता मैं (विष्णु), ब्रह्मा तथा शिव तो नाशवान हैं। हमारा तो आविर्भाव(जन्म) तथा तिरोभाव(मत्यु) होती है। आप प्रकति देवी हो। भगवान शंकर ने कहा कि हे माता यदि ब्रह्मा व विष्णु आप से उत्पन्न हुए हैं तो मैं शंकर भी आप (दुर्गा) से ही उत्पन्न हुआ हूँ अर्थात् आप मेरी भी माता हो।

महर्षि सर्वानन्द जी पहले सुने सुनाए अधूरे शास्त्र विरुद्ध ज्ञान (लोकवेद) के आधार पर तीनों श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव को अविनाशी व अजन्मा कहा करता था। पुराणों को पढ़ता भी था फिर भी अज्ञानी ही था। क्योंकि ब्रह्म(काल) पवित्र गीता जी अध्याय 7 श्लोक 10 में कहता है कि मैं सर्व प्राणियों (जो मेरे इक्कीस ब्रह्मण्डों में मेरे अधीन हैं) की बुद्धि हूँ। जब चाहूँ ज्ञान प्रदान कर दूं तथा जब चाहूँ अज्ञान भर दूं। उस समय पूर्ण परमात्मा द्वारा पुराणों के अध्याय तथा पष्ठ बताने के बाद काल (ब्रह्म) का दबाव हट गया तथा सर्वानन्द जी को स्पष्ट ज्ञान हुआ। वास्तव में ऐसा ही लिखा है। परन्तु मान-हानि के भय से कहा कि मैंने सब पढ़ लिया। ऐसा कहीं नहीं लिखा है। कविर्देव (कबीर परमेश्वर) से कहा तू झूठा है। तू क्या जाने शास्त्रों के विषय में। हम प्रतिदिन पढ़ते हैं। फिर क्या था, सर्वानन्द जी ने धारा प्रवाहित संस्कत बोलना प्रारम्भ कर दिया। बीस मिनट तक कण्ठस्थ की हुई कोई और ही वेदवाणी बोलता रहा, पुराण नहीं सुनाया।

सर्व उपस्थित भोले-भाले श्रोतागण जो संस्कत भाषा को समझ भी नहीं रहे थे, प्रभावित होकर सर्वानन्द महर्षि जी के समर्थन में वाह-वाह महाज्ञानी कहने लगे। भावार्थ है कि परमेश्वर कबीर (कविर्देव) जी को पराजित कर दिया तथा महर्षि सर्वानन्द जी को विजयी घोषित कर दिया। परम पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर्देव) जी ने कहा कि सर्वानन्द जी आपने पवित्र गीता जी की कसम खाई थी, वह भी भूल गए। जब आप सामने लिखी शास्त्रों की सच्चाई को भी नहीं मान रहे हो सोए हुए व्यक्ति को जगाया जा सकता है जो जान बूझ कर सोने का बहाना कर रहा हो उसे जगाया नहीं जा सकता।

कबीर जान बूझ साची तजे करै झूठ से नेह। ताकी संगति हे प्रभु स्वपन में भी न दे।

इसलिए हे सर्वानन्द! मैं हारा तुम जीते।

एक जमींदार का पुत्र सातवीं कक्षा में पढ़ता था। उसने कुछ अंग्रेजी भाषा को जान लिया था। एक दिन दोनों पिता पुत्र खेतों में बैल गाड़ी लेकर जा रहे थे। सामने से एक अंग्रेज कार लेकर आ गया। उसने बैलगाड़ी वालों से अंग्रेजी भाषा में रास्ता जानना चाहा। पिता ने पुत्र से कहा बेटा यह अंग्रेज अपने आपको ज्यादा ही शिक्षित सिद्ध करना चाहता है। आप भी तो अंग्रेजी भाषा जानते

हो। निकाल दे इसकी मरोड़। सुना दे अंग्रेजी बोल कर। किसान के लड़के ने अंग्रेजी भाषा में बीमारी की छुट्टी के लिए प्रार्थना-पत्र पूरा सुना दिया। अंग्रेज उस नादान बच्चे की नादानी को भांप कर कि पूछ रहा हूँ रास्ता, सुना रहा है बीमारी की छुट्टी का प्रार्थना - पत्र। अपनी कार लेकर माथे में हाथ मार कर चल पड़ा। किसान ने अपने विजेता पुत्र की कमर थप-थपाई तथा कहा वाह पुत्र! मेरा तो जीवन सफल कर दिया। आज तुने अंग्रेज को अंग्रेजी भाषा में पराजित कर दिया। तब पुत्र ने कहा पिता जी मुझे माई बैस्ट फ्रेंड एस्से (मेरा खास दोस्त नामक प्रस्ताव) भी याद है। वह सुना देता तो अंग्रेज कार गाड़ी छोड़ कर भाग जाता। इसी प्रकार कविर्देव जी पूछ कुछ रहें हैं और सर्वानन्द जी उत्तर कुछ दे रहे हैं। इस प्रकार शास्त्रार्थ ने तत्त्वज्ञान को उलझा रखा है।

परम पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर्देव) ने कहा कि सर्वानन्द जी आप जीते मैं हारा। महर्षि सर्वानन्द जी ने कहा लिख कर दे दो, मैं कच्चा कार्य नहीं करता। परमात्मा कबीर (कविर्देव) जी ने कहा कि यह कपा भी आप कर दो। लिख लो जो लिखना है, मैं अँगूठा लगा दूँगा। महर्षि सर्वानन्द जी ने लिख लिया कि शास्त्रार्थ में सर्वानन्द विजयी हुआ तथा कबीर साहेब पराजित हुआ तथा कबीर परमेश्वर से अँगूठा लगवा लिया। अपनी माता जी के पास जाकर सर्वानन्द जी ने कहा कि माता जी लो आपके गुरुदेव को पराजित करने का प्रमाण। भक्तमति शारदा जी ने कहा पुत्र पढ़ कर सुनाओ। जब सर्वानन्द जी ने पढ़ा उसमें लिखा था कि शास्त्रार्थ में सर्वानन्द पराजित हुआ तथा कबीर परमेश्वर (कविर्देव) विजयी हुआ। सर्वानन्द जी की माता जी ने कहा पुत्र आप तो कह रहे थे कि मैं विजयी हुआ हूँ, तुम तो हार कर आये हो। महर्षि सर्वानन्द जी ने कहा माता जी मैं कई दिनों से लगातार शास्त्रार्थ में व्यस्त था, इसलिए निंद्रा वश होकर मुझ से लिखने में गलती लगी है। फिर जाता हूँ तथा सही लिख कर लाऊँगा। माता जी ने शर्त रखी थी कि विजयी होने का कोई लिखित प्रमाण देगा तो मैं मानूँगी, मौखिक नहीं। महर्षि सर्वानन्द जी दोबारा गए तथा कहा कि कबीर साहेब मेरे लिखने में कुछ त्रुटि रह गई है, दोबारा लिखना पड़ेगा। साहेब कबीर जी ने कहा कि फिर लिख लो। सर्वानन्द जी ने फिर लिख कर अँगूठा लगवाकर माता जी के पास आया तो फिर विपरीत ही पाया। कहा माता जी फिर जाता हूँ। तीसरी बार लिखकर लाया तथा मकान में प्रवेश करने से पहले पढ़ा ठीक लिखा था। सर्वानन्द जी ने उस लेख से दष्टि नहीं हटाई तथा चलकर अपने मकान में प्रवेश करता हुआ कहने लगा कि माता जी सुनाऊँ, यह कह कर पढ़ने लगा तो उसकी आँखों के सामने अक्षर बदल गए। तीसरी बार फिर यही प्रमाण लिखा गया कि शास्त्रार्थ में सर्वानन्द पराजित हुए तथा कबीर साहेब विजयी हुए। सर्वानन्द बोल नहीं पाया। तब माता जी ने कहा पुत्र बोलता क्यों नहीं? पढ़कर सुना क्या लिखा है। माता जानती थी कि नादान पुत्र पहाड़ से टकराने जा रहा है। माता जी ने सर्वानन्द जी से कहा कि पुत्र परमेश्वर आए हैं, जाकर चरणों में गिर कर अपनी गलती की क्षमा याचना कर ले तथा उपदेश ले कर अपना जीवन सफल कर ले। सर्वानन्द जी अपनी माता जी के चरणों में गिर कर रोने लगा तथा कहा माता जी यह तो स्वयं प्रभु आए हैं। आप मेरे साथ चलो, मुझे शर्म लगती है। सर्वानन्द जी की माता अपने पुत्र को साथ लेकर प्रभु कबीर के पास गई तथा सर्वानन्द जी को भी कबीर परमेश्वर से उपदेश दिलाया। तब उस महर्षि कहलाने वाले नादान प्राणी का पूर्ण परमात्मा के चरणों में आने से ही उद्धार हुआ। पूर्ण ब्रह्म कबीर परमेश्वर (कविर्देव) ने कहा सर्वानन्द आपने अक्षर ज्ञान के आधार पर भी शास्त्रों को नहीं समझा। क्योंकि मेरी शरण में आए बिना ब्रह्म(काल) किसी की बुद्धि को पूर्ण विकसित नहीं होने देता। अब फिर पढ़ो इन्हीं पवित्र वेदों व पवित्र गीता जी तथा पवित्र पुराणों

को। अब आप ब्राह्मण हो गए हो। ''ब्राह्मण सोई ब्रह्म पहचाने'' विद्वान वही है जो पूर्ण परमात्मा को पहचानकर अपना कल्याण करवाए।

विशेष :- आज सन् 2013 से लगभग 608 वर्ष पूर्व यही पवित्र वेदों, पवित्र गीता जी व पवित्र पुराणों में लिखा ज्ञान कबीर परमेश्वर (कविर्देव) जी ने अपनी साधारण वाणी में भी दिया था। (जब वे पाँच वर्ष के हुए। उसी समय अमृत ज्ञान कहना शुरू कर दिया था जो सन् 1550 में धर्मदास जी द्वारा लिखा गया था।) जो उस समय से तथा आज तक के महर्षियों ने व्याकरण त्रुटि युक्त भाषा कह कर पढ़ना भी आवश्यक नहीं समझा तथा कहा कि कबीर तो अज्ञानी है, इसे अक्षर ज्ञान तो है ही नहीं। यह क्या जाने संस्कृत भाषा में लिखे शास्त्रों में छुपे गूढ़ रहस्य को। हम विद्वान हैं जो हम कहते हैं वह सब शास्त्रों में लिखा है तथा श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी व श्री शिव जी के कोई माता-पिता नहीं हैं। ये तो अजन्मा-अजर-अमर-अविनाशी तथा सर्वेश्वर, महेश्वर, मृत्युं जय हैं। सर्व सृष्टि रचन हार हैं, तीनों गुण युक्त हैं। आदि आदि व्याख्या ठोक कर अभी तक कहते रहें। आज वे ही पवित्र शास्त्र अपने पास हैं। जिनमें तीनों प्रभुओं (श्री ब्रह्मा जी रजगुण, श्री विष्णु जी सतगुण, श्री शिव जी तमगुण) के माता-पिता का स्पष्ट विवरण है। उस समय अपने पूर्वज अशिक्षित थे तथा शिक्षित वर्ग को शास्त्रों का पूर्ण ज्ञान नहीं था। फिर भी कबीर परमेश्वर (कविर्देव) के द्वारा बताए सत्यज्ञान को जान बूझकर झुठला दिया कि कबीर झूठ कह रहा है किसी शास्त्र में नहीं लिखा है कि श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी व श्री शिव जी के कोई माता-पिता हैं।

आज सर्व मानव समाज (बहन-भाई, बालक व जवान तथा बुजुर्ग, बेटे तथा बेटियाँ शिक्षित हैं।) आज कोई यह नहीं बहका सकता कि शास्त्रों में ऐसा नहीं लिखा जैसा कबीर परमेश्वर (कविर्देव) साहेब जी की अमृत वाणी में लिखा है।

अमृतवाणी पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर्देव) की :-

धर्मदास यह जग बौराना। कोइ न जाने पद निरवाना।।
यहि कारन मैं कथा पसारा। जगसे कहियो एक राम नियारा।।
यही ज्ञान जग जीव सुनाओ। सब जीवोंका भरम नशाओ।।
अब मैं तुमसे कहों चिताई। त्रयदेवनकी उत्पत्ति भाई।।
कुछ संक्षेप कहों गुहराई। सब संशय तुम्हरे मिट जाई।।
भरम गये जग वेद पुराना। आदि राम का भेद न जाना।।
राम राम सब जगत बखाने। आदि राम कोइ बिरला जाने।।
ज्ञानी सुने सो हिरदै लगाई। मूर्ख सुने सो गम्य ना पाई।।
मां अष्टंगी पिता निरंजन। वे जम दारुण वंशन अंजन।।
पहिले कीन्ह निरंजन राई। पीछेसे माया उपजाई।।
माया रूप देख अति शोभा। देव निरंजन तन मन लोभा।।
कामदेव धर्मराय सत्ताये। देवी को तुरतही धर खाये।।
पेट से देवी करी पुकारा। हे साहेब मेरा करो उबारा।।
टेर सुनी तब हम तहाँ आये। अष्टंगी को बंद छुड़ाये।।
सतलोक में कीन्हा दुराचारि, काल निरंजन दिन्हा निकारि।।
माया समेत दिया भगाई, सोलह शंख कोस दूरी पर आई।।
अष्टंगी और काल अब दोई, मंद कर्म से गए बिगोई।।

धर्मराय को हिकमत कीन्हा। नख रेखा से भगकर लीन्हा।।
धर्मराय किन्हाँ भोग विलासा। मायाको रही तब आसा।।
तीन पुत्र अष्टंगी जाये। ब्रह्मा विष्णु शिव नाम धराये।।
तीन देव विस्तार चलाये। इनमें यह जग धोखा खाये।।
पुरुष गम्य कैसे को पावै। काल निरंजन जग भरमावै।।
तीन लोक अपने सुत दीन्हा। सुन्न निरंजन बासा लीन्हा।।
अलख निरंजन सुन्न ठिकाना। ब्रह्मा विष्णु शिव भेद न जाना।।
तीन देव सो उसको धावें। निरंजन का वे पार ना पावें।।
अलख निरंजन बड़ा बटपारा। तीन लोक जिव कीन्ह अहारा।।
ब्रह्मा विष्णु शिव नहीं बचाये। सकल खाय पुन धूर उड़ाये।।
तिनके सुत हैं तीनों देवा। आंधर जीव करत हैं सेवा।।
अकाल पुरुष काहू नहिं चीन्हां। काल पाय सबही गह लीन्हां।।
ब्रह्म काल सकल जग जाने। आदि ब्रह्मको ना पहिचाने।।
तीनों देव और औतारा। ताको भजे सकल संसारा।।
तीनों गुणका यह विस्तारा। धर्मदास मैं कहों पुकारा।।
गुण तीनों की भक्ति में, भूल परो संसार। कहै कबीर निज नाम बिन, कैसे उतरैं पार।।

इसके पश्चात् महर्षि सर्वानन्द जी ने चारों वेदों को तत्त्वज्ञान के आधार से समझा। वास्तविकता से परिचित स्वयं हुआ तथा अन्य को भी समझाया।

''श्री नानक देव जी (सिक्ख धर्म के प्रवर्तक) को शरण में लेना''

पाठकों से निवेदन है कि श्री नानक जी को शरण में लेने वाला प्रकरण इसी पुस्तक में स्वस्मबेद बोध में पंष्ठ 398 पर पढ़ें तथा गोरखनाथ से गोष्ठी इसी पुस्तक के पंष्ठ 444 पर पढ़ें।

''भैंसे से वेद मन्त्र बुलवाना''

स्वामी रामानन्द जी ने पंथ्वी पर प्रकट कबीर परमेश्वर जी को पहचान लिया था। परन्तु परमात्मा के आदेशानुसार वे यह गुप्त रखे थे तथा कबीर परमात्मा जी के गुरू भी उन्हीं के आग्रह से बने थे। स्वामी रामानन्द जी जहाँ भी किसी सत्संग-समागम में जाते थे तो कबीर जी को अवश्य साथ लेकर जाते थे। एक समय एक तोताद्री नाम के स्थान पर सत्संग था। दूर-दूर के ब्राह्मण विद्वान निमन्त्रण पर पहुँचे। स्वामी रामानन्द जी भी परमेश्वर कबीर जी के साथ उस सत्संग में शामिल हुए। सत्संग में एक ब्राह्मण जो वहाँ का प्रमुख मण्डलेश्वर था जो समागम कर रहा था। वह प्रवचन कर रहा था कि भगवान रामचन्द्र जी ने शुद्र भीलनी (शबरी) के झूठे बेर खाए, तनिक भी संकोच नहीं किया, ऐसे ही साधु-संतों की समदंष्टि होनी चाहिए।

सत्संग के पश्चात् भोजन-भण्डारा शुरू हुआ। प्रमुख पाण्डे को पता चला कि स्वामी रामानन्द जी के साथ कबीर जुलाहा शुद्र आया है। वह रामानन्द ब्राह्मण के साथ हम ब्राह्मणों वाले भोजनालय में भोजन करने साथ आएगा। यदि मना करेंगे तो रामानन्द जी नाराज हो जाऐंगे। इसलिए युक्ति से काम लिया। कहा कि जो ब्राह्मणों वाले भण्डारे में भोजन करने आएगा, उसे वेद के चार मन्त्र सुनाने पर ही प्रवेश मिलेगा। सर्व ब्राह्मण चार-चार वेद मन्त्र सुना कर प्रवेश पा रहे थे। जब

परमेश्वर कबीर जी की बारी आई तो उनसे भी कहा कि चार वेद मन्त्र सुनाओ। तब परमेश्वर ने देखा कि थोड़ी-सी दूरी पर एक भैंसा (झोटा) घास चर रहा था। परमेश्वर कबीर जी ने मूल मन्त्र (हुर्र-हुर्र) से पुकारा, भैंसा दौड़ा-दौड़ा आया। तब कबीर जी ने उस भैंसे की कमर पर थपकी हाथ से लगाई और कहा कि भैंसा जी इन पंडितों को वेद के चार मन्त्र सुना दे। भैंसे ने छः मन्त्र सुना दिए।

भैंसे ने यजुर्वेद अध्याय 5 मन्त्र 32, अध्याय 29 मन्त्र 25, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मन्त्र 26, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 96, मन्त्र 17, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 94 मन्त्र 1 तथा सुक्त 95 का मन्त्र 2 सुना दिया। परमेश्वर कबीर जी ने भैंसे से कहा कि भैंसा राम! पंडितों को इन सर्व वेद मन्त्रों का अनुवाद भी करके सुना दे। इनको वेदों के मन्त्रों का अनुवाद भी ठीक से ज्ञात नहीं है। झोटा राम ने अनुवाद सुनाया :- गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में जिस परमात्मा की शरण में गीता ज्ञान दाता ने जाने के लिए कहा है, इन वेद मन्त्रों में उसी का नाम यहां पर स्पष्ट किया है जो परम शान्ति दायक है। (अंघारी) सर्व पापों का शत्रु अर्थात् पापनाशक है। वह (कविर्) कबीर (बम्भारी) बंधनों का शत्रु अर्थात् कर्म बन्धन को नाश करने वाला = बन्दी छोड़ है।

भावार्थ :- वह पाप नाश करने वाला बन्दी छोड़ कबीर है। वह पूर्ण परमात्मा अपने तेजोमय स्वरूप को सरल करके अपने सत्यलोक से चल कर आता है। अच्छी आत्माओं को मिलता है, अपने मुख कमल से यथार्थ भक्ति का ज्ञान करवाता है। वह कवियों की तरह आचरण करता हुआ पृथ्वी पर भी विचरण करता है। भक्ति के गुप्त मन्त्र भी वही बताता है। वह परमेश्वर मेरे और आपके पास यह कबीर जुलाहा (धाणक) खड़ा है।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा हे विद्वान भैंसा! आप ब्राह्मणों वाले लंगर में भोजन-प्रसाद खाऐं। मैं तो सामान्य भण्डारे में प्रसाद ग्रहण कर लूंगा। उपस्थित पंडित शर्म से पानी-पानी हो गए और क्षमा मांगी। परमेश्वर कबीर जी ने कहा ''हे विद्वानो! आप सत्संग में क्या प्रवचन कर रहे थे कि श्री राम जी ने सबरी (भीलनी) शुद्र के झूठे बेर रूचि-रूचि खाए थे। तनिक भी भेदभाव नहीं किया, स्वयं भेदभाव कर रहे हो।''

कबीर, करनी तज कथनी कथैं, अज्ञानी दिन–रात। कुक्कर ज्यों भौंकत फिरैं, सुनी–सुनाई बात।।

वेदों के मन्त्र तो ब्राह्मण को भी कंठस्थ थे परन्तु अनुवाद का ज्ञान नहीं था। उसी समय सर्व विद्वान व परमात्मा चाहने वाले ब्राह्मणों ने कबीर परमेश्वर जी से दीक्षा ली। इस प्रकार परमेश्वर कबीर जी ने अपनी प्रिय आत्माओं को काल के जाल से निकाल कर अपनी शरण में लिया। उस सत्संग में उपस्थित हजारों की संख्या में अन्य श्रोताओं ने भी यह लीला देखी और दीक्षा प्राप्त करके अपना जीवन धन्य किया।

कबीर चरित्र बोध पृष्ठ 1862-1863 पर :-

यहाँ पर चार गुरूओं का वृतांत तोड़-मरोड़कर गलत किया है। यथार्थ ज्ञान पढ़ें इसी पुस्तक में पृष्ठ 317 पर तथा कबीर सागर में ज्ञान बोध पृष्ठ 35(881) पर तथा अनुराग सागर में पृष्ठ 104(222)-105(223) तथा 113(231) पर।

कबीर चरित्र बोध पृष्ठ 1863 पर :-

''धर्मदास के बयालीस वंश का वृत्तान्त वर्णन''

इस पृष्ठ पर धर्मदास जी के बयालीस (42) वंश की जानकारी बताई है। इसमें लिखा है कि ''कबीर जी ने आदेश दिया था कि प्रत्येक गद्दी वाला महंत पच्चीस (25) वर्ष और बीस दिवसों

तक गद्दी पर बैठा करे। इससे अधिक या न्यून (कम) कोई न रहे।''

विचार करें :- यदि धर्मदास जी के वंश गद्दी वाले महंत अपनी मर्यादा पर रहते तो यह नियम चलता जो परमेश्वर कबीर जी का आदेश है। परमेश्वर कबीर जी ने स्पष्ट कर दिया था कि धर्मदास तेरी छठी पीढ़ी वाले को टकसारी पंथ वाला भ्रमित करेगा। उसके पश्चात् तेरी वंश गद्दी से यथार्थ भक्ति लुप्त हो जाएगी।

''चार गुरू की कथा प्रसंग-उर्दू सेर''

यह सेर नकली तथा बनावटी है। इससे सिद्ध करने की कुचेष्टा की गई है कि ''चार गुरू'' कबीर जी ने स्थापित किए थे और अब तक केवल धर्मदास जी प्रकट हुए हैं। यह प्रकरण पृष्ठ 1862-1863 पर लिखा है। वह गलत है। उसी के समर्थन में यह नकली सेर बनाया है जबकि यथार्थ ज्ञान ''अनुराग सागर पृष्ठ 104(222)-105(223), 113(231) तथा ज्ञान बोध पृष्ठ 35(881) तथा गुरू महात्मय पृष्ठ 1896 पर है।

अनुराग सागर पृष्ठ पर स्पष्ट किया है कि कबीर परमेश्वर जी ने बताया है कि प्रथम राय बंके जी को चेताया। यही प्रमाण गुरू महात्मय पृष्ठ 1896 पर है कि कबीर जी ने बताया है कि मैं सतयुग में सत सुकृत नाम से संसार में प्रकट हुआ था। उस समय श्रीनगर के राजा वंकेज को मिला था। उसकी 17 स्त्रियों तथा 50 पुत्रों ने तथा राजा वंकेज ने दीक्षा ली थी। ज्ञान बोध पृष्ठ 35(881) पर भी लिखा है जो लिखने में गड़बड़ी है, परंतु यह बात स्पष्ट है कि धर्मदास चौथा गुरू है प्रथम नहीं, जैसा कि कबीर चरित्र बोध पृष्ठ 1862-1863 पर गलत लिखा है। प्रथम धर्मदास और उसके बयालीस वंश को मोक्ष देने का अधिकारी बनाया है। इसके पश्चात् तीन गुरू, दूसरे चतुर्भुज, तीसरे राजा वंकेजी, चौथे सहत जी। यह गलत है। ज्ञान बोध पृष्ठ 35(881) पर इस प्रकार लिखा है :-

सतजुग शिष्य सहेत जी कहाये। द्वापर चतुर्भुज नाम सुनाये।।
त्रेता शिष्य वंकेजी भाई। कलयुग धर्मदास गुसांई।।

अनुराग सागर पृष्ठ 104(222)-105(223) पर लिखा है कि :-

''कबीर वचन'' (1. राय वंकेजी)

प्रथम गुरू = राय वंकेजी नाम तेही आही। दीनेउ सार शब्द पुनि ताही।।
कीन्हो ताहि जीवन कड़िहारा। सो जीवन का करे उबारा।।

2. सहते जी

झिल मिली दीप तहाँ चलि आये। सहते जी एक संत चिताये।।
ताहू को कड़िहारी दीन्हा। जब उन मोकहं निज कर चीन्हा।।

3. चतुर्भुज

तहां ते चलि आये धर्मदासा। राय चतुर्भुज जहां बासा।।
ताहूं कहँ कड़िहारी दीन्हा। चतुर्भुज शब्द हेत कर लीन्हा।।
छन्द चतुर्भुज वंकेज, और सहतेज तुम चौथे सही। चारि कड़िहार जीव के गिरा निश्चल हम कही।।

अनुराग सागर पृष्ठ 113(231) पर फिर एक दोहे में स्पष्ट किया :-

चतुर्भुज वंकेज सहतेज और चौथे तुम अहौ। चार कड़िहार जग के बचन यह निश्चय गहौ।।

उपरोक्त प्रकरणों में लिखने वालों ने गड़बड़ी की है। जैसे ज्ञान बोध पृष्ठ 35(881) पर तो

सतयुग में ''सहते जी'' बताया है। अनुराग सागर में राय वंकेजी, तो गुरू महात्मय पष्ठ 1896 पर स्पष्ट किया है कि सतयुग में राय (राजा) वंकेज को शरण में लिया।

अनुराग सागर पष्ठ 104(222) पर भी प्रथम राय बंकेज ही प्रथम लिखा है। इसलिए 1. प्रथम राय वंकेज जो सतयुग में प्रकट हो चुका है, 2. त्रेता में सहते जी दूसरा प्रकट हो चुका है। 3. द्वापर में चतुर्भुज प्रकट हो चुका है। 4. कलयुग में धर्मदास भी प्रकट हो चुका है और धर्मदास की छठी गद्दी (पीढ़ी) वाले ने सत्य साधना छोड़ दी। उसके पश्चात् धर्मदास जी की चौदहवीं गद्दी चल रही है जिस पर श्री प्रकाश मुनि नाम साहेब विराजमान हैं जो वही दीक्षा दे रहे हैं जो टकसारी पंथ वाले ने धर्मदास जी की छठी पीढ़ी वाले को गलत साधना तथा आरती-चौंका बताया था। फिर कबीर बानी पष्ठ 137(983) पर तथा स्वस्मबेद बोध पष्ठ 121(1465) तथा 171(1515) पर स्पष्ट किया है कि जिस समय कलयुग पाँच हजार पाँच सौ पाँच वर्ष बीत जाएगा, तब मैं अपना अंश भेजूंगा। वह यथार्थ कबीर पंथ चलाएगा, वह तेरहवां (13वां) पंथ चलाएगा। सारा विश्व उससे नाम दीक्षा लेगा। तब मेरी महिमा पूरे विश्व में घर-घर में होगी। सब प्राणी भक्ति करेंगे तथा सब जीव बुराईयों को त्यागकर शांतिपूर्वक रहेंगे। सतयुग जैसा वातावरण होगा। उपरोक्त प्रमाणों से यह स्पष्ट हुआ कि जो कबीर चरित्र बोध पष्ठ 1862-1863 पर लिखा है कि प्रथम धर्मदास, शेष तीन गुरू सहते जी, वंकेजी, चतुर्भुज बाद में कलयुग में प्रकट होंगे। यह गलत प्रकरण है जो भोले जीवों को भ्रमित करके अपने जाल में फँसाकर काल के जाल में फांसने का षड़यंत्र है जो धर्मदास के पीढ़ी वालों द्वारा रचा गया है। इससे सावधान करने के लिए ही यह प्रयत्न किया गया है। मेरा (रामपाल दास) उद्देश्य किसी की आलोचना करना नहीं है। केवल सत्य को सार्वजनिक करना है। जिससे अनमोल मानव शरीर नष्ट होने से बच सके।

कबीर चरित्र बोध पष्ठ 1865-1866 पर उर्दू सेर है। उसमें धर्मदास जी के वंश गद्दी वालों के नाम लिखे हैं। उनसे उन गद्दी वालों के नाम मेल नहीं करते जो वास्तव में गद्दीनसीन अब तक हो चुके हैं। जैसे दामाखेड़ा गद्दी पर वास्तव में तेरहवें गुरू गंध मुनि नाम साहेब हुए हैं। बारहवीं गद्दी वाला गद्दी लेकर ''खरसीया'' नगर (बिहार) में भाग गया था। गंध मुनि जी का तो जन्म भी नहीं हुआ था। कई वर्ष पश्चात् गंध मुनि का जन्म हुआ। जब वे अढ़ाई (2½) वर्ष के बालक थे तो उनकी माता जी ने गद्दी पर बैठा दिया, बेटा महन्त बन गया। उनका पुत्र श्री प्रकाश मुनि नाम साहेब चौदहवाँ गुरू है जो वर्तमान में दामाखेड़ा (छत्तीसगढ़) में गद्दीनशीन है।(वर्तमान सन् 2013 तक) खरसीया गद्दी वाले भी दावा करते हैं कि हमारी गद्दी असली है। उसकी एक शाखा काशी नगरी में लहर तारा तालाब पर आश्रम बनाकर खोल रखी है। वे भी वही नाम रटते आ रहे हैं जो कबीर सागर में सुमिरन बोध पष्ठ 22 पर लिखे हैं। तेरहवीं गद्दी पर घासी दास को दामाखेड़ा में कार्यकारी महंत बनाया था। जब तक दामाखेड़ा के महंतों के घर कोई लड़का उत्पन्न नहीं होता। लड़का उत्पन्न होने के पश्चात् घासी दास को गद्दी से उतारकर वह लड़का बैठाया जाना था। कुछ दिन के पश्चात् घासी दास जी गद्दी लेकर भाग गया और खरसीया में जाकर स्वयंभू महंत बनकर धर्मदास जी वाली गद्दी चलाने का बीड़ा उठा लिया। नाम वही देते हैं, वही आरती-चौंका करते हैं जो धर्मदास जी की दामाखेड़ा गद्दी वाले महंत करते हैं। खरसीया तथा दामाखेड़ा वाले दोनों अपने-अपने को वास्तविक गद्दी वाले सिद्ध करने के लिए गद्दीनसीन का वही नाम रखते हैं जो कबीर जी ने बताया था और धर्मदास ने कबीर सागर में लिखा है। वे कांट-छांट करके वर्तमान कबीर सागर में कुछ बदल दिए हैं जैसे कबीर चरित्र बोध पष्ठ 1866 पर :-

बारहवें गुरू ''उग्रनाम साहेब'' लिखे हैं। उसके पश्चात् तेरहवें का नाम नहीं लिखा है। यह दामाखेड़ा वालों ने लिखा है। सेर की उन पंक्तियों का अर्थ है कि तेरहवाँ दुम दबाकर भाग गया।

चौदहवां लिखा है ''करूणामय साहेब'', फिर पंद्रहवें (15वें) का कोई नाम नहीं। फिर सोलहवां ''उदीतनाम साहेब'' लिखा है। सतरहवां (17वां) मुकुन्द नाम साहब लिखा है। अठारहवां (18वां) अरध नाम साहब लिखा है। ये नाम खरसीया वालों में सही प्रचलित है। वे क्या षड़यंत्र करते हैं जैसे वर्तमान (सन् 2003) में अरध नाम साहब लहर तारा तालाब पर खरसीया वालों की शाखा की गद्दी पर बैठा है। उसका वास्तविक नाम विजय शास्त्री था। जब मुकुन्द मुनि का देहांत हुआ तो विजय शास्त्री जी को गद्दी पर बैठाकर कबीर ग्रन्थ से नाम देखकर ''अर्धनाम साहब'' बना दिया। अब उनको अर्ध नाम साहब के नाम से जाना जाता है। यह सब ड्रामाबाजी है। वास्तविक ज्ञान तथा भक्तिविधि से अपरिचित है। यथार्थ ज्ञान तथा सत्य भक्ति साधना जो कबीर परमेश्वर जी ने बताई है, वह मेरे (रामपाल दास के) पास है।

कबीर चरित्र बोध पृष्ठ 1867 पर अंतिम गुरू यानि बयालीसवीं (42वीं) पीढ़ी वाले का नाम मुक्तामणी साहब लिखा है और कहा है कि यह सतपुरूष का नायब यानि छोटा रूप होगा।

यह भी लिखा है कि जब तक धर्मदास के बयालीस (42) पीढ़ी वालों की गद्दी चलेगी, तब तक कबीर जी का पृथ्वी पर आने का कोई काम नहीं है। विचार करें पाठकजन! यह कितना झूठ लिखा है। उसके पश्चात् यानि विक्रमी संवत् 1575(सन् 1518) में कबीर जी के सत्यलोक जाने के पश्चात् कबीर जी विक्रमी संवत् 1784 यानि सन् 1727 में संत गरीबदास जी (गाँव-छुड़ानी, जिला-झज्जर, प्रान्त-हरियाणा) को मिले तथा संत दादू साहेब जी को मिले। संत मलूक दास जी से मिले। संत घीसा दास जी (गाँव-खेखड़ा, जिला-बागपत, प्रान्त-उत्तर प्रदेश) को मिले। इससे यह कहना भी गलत है कि जब तक धर्मदास जी के वंश यानि बयालीस (42) पीढ़ी संसार में चलेंगी, कबीर परमेश्वर पृथ्वी उद्धार करने नहीं आएंगे। परमेश्वर कबीर जी ने ''कबीर बानी'' कबीर सागर में पृष्ठ 137(983) पर कहा है कि बारहवें (12वें) गरीबदास (गाँव-छुड़ानी वाले) के पंथ में हम ही चलकर आएंगे और सब पंथ मिटाकर एक तेरहवाँ पंथ चलाएंगे। यह मेरा वचन उस समय सत्य होगा जब कलयुग पाँच हजार पाँच सौ पाँच यानि पचपन सौ पाँच (5505) वर्ष बीत जाएगा। सन् 1997 में कलयुग पाँच हजार पाँच सौ पाँच (5505) वर्ष पूरा हो जाता है।

उपरोक्त प्रमाणों से दामाखेड़ा वालों का यह कहना गलत सिद्ध हुआ कि जब तक धर्मदास जी के बयालीस (42) पीढ़ी नाम नाद करेगी तो कबीर जी संसार में नहीं आएंगे।

अन्य गलत प्रचार :- कबीर चरित्र बोध पृष्ठ 1834-1835 पर लिखा है कि बादशाह सिकंदर ने तेरह गाड़ी खाली पुस्तक कबीर जी के पास लाकर कहा कि अढ़ाई दिन में लिख दे तो मानूँगा कि ये परम संत तथा सिद्ध हैं। कबीर जी ने उनके ऊपर अपनी लाठी घुमा दी तथा कहा कि ले जाओ, लिख दी हैं। उनमें पूर्ण विवरण था। मुसलमान धर्म का, हिन्दू धर्म का तथा अन्य आध्यात्मिक सम्पूर्ण ज्ञान लिखा गया था। बादशाह ने काजियों, मुल्लाओं के दबाव में उनको दिल्ली में आदर के साथ पृथ्वी में दबवा दिया। कबीर ग्रन्थ में लिखा है कि जब मुक्तामणी साहेब का समय आएगा और उसका झण्डा दिल्ली में गड़ेगा, तब वे पुस्तकें पृथ्वी से बहिर्गत (बाहर निकाली जाएंगी) होयेंगी। सो मुक्तामणी साहब का अवतार वंश (धर्मदास के वंश) की तेरहवीं पीढ़ी में होगा। तब वंश गुरू गद्दी दिल्ली में स्थिर होगी। विचार करें बुद्धिमान मानव कबीर चरित्र बोध पृष्ठ 1867 पर लिखा है कि:-

बयालीस पीढ़ी में मुक्तामणी साहब है। आखिर जामां पुरूष नायब है।।

भावार्थ :- मुक्तामणी जी धर्मदास जी की अंतिम बीयालिसवीं पीढ़ी में जन्म लेगा। कबीर चरित्र बोध पष्ठ 1835 पर लिखा है कि मुक्तामणी जी धर्मदास जी की तेरहवीं पीढ़ी में जन्म लेगा। उस समय उनका झण्डा दिल्ली में गड़ेगा। प्रिय पाठको! धर्मदास जी की तेरहवीं पीढ़ी में श्री गंध मुनि साहब जन्में थे जो ढ़ाई वर्ष की आयु में माता ने गद्दी पर बैठा दिया था। उनकी तो मत्यु को भी लगभग 12-13 वर्ष हो चुके हैं। उनके स्थान पर चौदहवें गुरू श्री प्रकाश मुनि जी वंश गद्दी पर विराजमान हैं। आज तक यानि 2013 तक तो धर्मदास जी की वंश गद्दी वालों का झण्डा दिल्ली में गड़ा नहीं है। इससे सिद्ध हुआ कि धर्मदास जी की वंश गद्दी वाले तो भ्रमित ज्ञान तथा गलत साधना कराके जनता को काल जाल में फँसाकर परमेश्वर कबीर जी के दोषी तथा पाप के भागी बन रहे हैं। उनको चाहिए कि वे कबीर सागर के उन अंगों को पढ़े जिनमें स्पष्ट किया है कि मैं स्वयं 12वें (बारहवें) पंथ में प्रकट होऊँगा। उस समय सब पंथ मिटाकर एक पंथ (तेरहवां पंथ) चलाऊँगा। यह वचन उस समय सत्य सिद्ध होगा जब कलयुग पाँच हजार पाँच सौ पाँच (5505) वर्ष पूरा हो जाएगा। कलयुग सन् 1997 में पूरा हो जाता है। वह तेरहवां पंथ मुझ दास (रामपाल दास) द्वारा चलाया जा रहा है। आओ और अपना कल्याण कराओ।

''बारह पंथो के नाम''

कबीर सागर अध्याय कबीर चरित्र बोध पष्ठ 1870 पर बारह पंथों के नाम लिखे हैं जिनमें बारहवां पंथ संत गरीबदास (गाँव-छुड़ानी वाले) का लिखा है। मैं (रामपाल दास) सन् 1988 में संत गरीबदास जी के पंथ में संत स्वामी रामदेवानन्द जी महाराज से दीक्षा लेकर जुड़ा हूँ। मैंने 17 फरवरी 1988 (फाल्गुन अमावस्या) को स्वामी रामदेवानन्द जी से दीक्षा ली थी। यह दास (रामपाल दास) हरियाणा प्रान्त में सिंचाई विभाग में सिविल कनिष्ठ अभियन्ता (Junior Engineer Civil) के पद पर सरकारी नौकरी करता था। स्वामी जी ने सितंबर 1993 में मुझे सत्संग तथा पाठ करने का आदेश दिया। मैं नौकरी भी करता था और छुट्टी वाले दिन पाठ तथा सत्संग भी करता था। फिर मार्च 1994 में मेरे को अपना उत्तराधिकारी बना दिया तथा नामदान करने का आदेश दे दिया। मैं मई 1995 तक तो छुट्टियों में सेवा करता रहा, परंतु मई 1995 में सरकारी नौकरी से त्याग पत्र दे दिया जो हरियाणा सरकार द्वारा सन् 2000 में स्वीकत किया गया है। नौकरी से त्याग पत्र देकर दिन-रात परमेश्वर की सेवा में निकल पड़ा। हजारों की सँख्या में नए भक्त मेरे शिष्य हो गए। फाल्गुन शुद्धि प्रथमा (एकम) विक्रमी संवत् 2054 यानि सन् 1997 मार्च में परमेश्वर कबीर जी मुझे कुछ समय के लिए एक साधु वेश में मिले तथा कहा कि सार शब्द प्रदान करने का समय उचित है। सार शब्द देना प्रारम्भ कर दे। उस समय से पहले न तो मेरे गुरू जी ने किसी को सार शब्द दिया था, केवल मेरे को आदेश हुआ है सार शब्द देने का। कारण यह है कि परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को तो सार शब्द दे दिया था, परंतु उसको आगे किसी को न देने की प्रतिज्ञा कराई थी। धर्मदास जी वद्ध अवस्था के कारण परिवार मोह में फँसकर प्रतिज्ञा तोड़ना चाहते थे और अपने पुत्र चूड़ामणी को सतनाम तथा सारनाम बताना चाहते थे। तब परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि धर्मदास! मेरी योजना का नाश मत कर। तेरे पुत्र को मैं दीक्षा दूँगा, मैं ही इसको गुरू पद प्रदान करूँगा। केवल प्रथम मंत्र जो ब्रह्म गायत्री मंत्र है, उस समय केवल पाँच नाम ही दिए जाते थे। वे पाँच नाम कमलों में बैठे देवी-देवताओं के हैं जो परमेश्वर कबीर जी ने शब्द ''कर नैनों

दीदार महल में प्यारा है'' **में लिखे हैं तथा वे ही संत गरीदास जी ने ब्रह्म बेदी नामक अंग में लिखे हैं। परमेश्वर कबीर जी ने ये ही पाँच नाम चूड़ामणी जी को दीक्षा में दिए थे तथा इन्हीं को आगे दीक्षा रूप में देने का आदेश दिया था। चूड़ामणी जी को तो सतनाम जो दो अक्षर का है, जिसमें एक ओम् (ॐ) है तथा एक अन्य मंत्र है, भी नहीं दिया था। जब धर्मदास जी अधिक व्याकुल हो गए। कहा कि हे प्रभु! मेरे वंशजों को न तो सतनाम मिला, ना सार शब्द मिला। इनका कल्याण कैसे होगा? आप तो कह रहे हो कि तेरे 42 वंशों को पार करूँगा। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि जब कलयुग पाँच हजार पाँच सौ पाँच (5505) वर्ष पूरा होगा तथा बारहवाँ पंथ चल चुका होगा जो काल मेरे नाम से चलाएगा, मैं उस बारहवें पंथ में चलकर आऊँगा। तब सर्व संष्टि दीक्षित होकर भक्ति करके पार होगी। तब तेरे वंश भी पार होंगे। कबीर परमेश्वर जी ने धर्मदास जी की कमजोरी समझ ली थी। कहा था कि :-**

कबीर सागर अध्याय कबीर बानी में पंष्ठ 137(983) पर :-

धर्मदास मेरी लाख दुहाई। मूल शब्द कहीं बाहर न जाई।।
पवित्र ज्ञान तुम जग में भाषो। मूल ज्ञान गोई तुम राखो।।
मूल ज्ञान बाहर जो परही। बिचली पीढ़ी हंस नहीं तिरही।।
तेतीस अरब ज्ञान हम भाखा। मूल ज्ञान गोए हम राखा।।
मूल ज्ञान तुम तब लगि छुपाई। जब लगि द्वादश पंथ मिटाई।।

फिर जीव धर्म बोध पंष्ठ 1937 पर लिखा है कि :-

''सत्य कबीर वचन''

धर्मदास मेरी लाख दुहाई। सार शब्द बाहर नहीं जाई।।
सार शब्द बाहर जो परि है। बिचली पीढ़ी हंस नहीं तरि है।।
युगन युगन तुम सेवा कीन्हा। सार शब्द तब ही पै चीन्हा।।
अंकुरी जीव होय जो कोई। सार शब्द अधिकारी सोई।।
धर्मदास तब वचन उचारा। तारो मोही सहित परिवारा।।
पितामह सखा समेता। सबहि पार कर कंपा निकेता।।
तेही अवसर सतगुरू विहसाना। का मांगे कछु मांग न जाना।।
तारों सकल संष्टि को भाई। तुम तो आप रे उरझाई।।
यामें नहिं कछु दोष तुम्हारा। काल पुरूष तुमरी मति मारा।।

परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी से कहा था कि यह वास्तविक (मूल) ज्ञान तथा सार शब्द कहीं बाहर यानि तेरे-मेरे से अन्य के पास न जाए। यदि यह सार शब्द बाहर चला गया तो बिचली पीढ़ी (यानि जब कलयुग पाँच हजार पाँच सौ पाँच वर्ष बीतेगा, वह कलयुग में भक्ति का मध्य वाला चरण होगा, वह बिचली पीढ़ी का समय कहा है।) के हंस पार नहीं हो पाएंगे। कबीर परमेश्वर जी ने कबीर सागर में कबीर बानी पंष्ठ 137(983) पर स्पष्ट किया है कि :-

प्रथम चरण कलयुग निरयाना। तब मगहर मांडो मैदाना।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने कलयुग का प्रथम चरण यानि प्रथम पीढ़ी का समय वह कहा है जिस समय वे मगहर नगर से सशरीर सत्यलोक गए थे। इसलिए कहा है कि वह प्रथम चरण होगा। फिर कलयुग कें अंत में तो कोई भी भक्ति योग्य नहीं रहेगा। सब कंतघ्नी हो जाएंगे। इसलिए बिचली पीढ़ी का समय वह बताया है जब कलयुग पाँच हजार पाँच सौ पाँच वर्ष पूरा हो

जाएगा। इसलिए कहा था कि उस समय तक यह सार शब्द तथा यथार्थ ज्ञान गुप्त रखना है। यह भी स्पष्ट किया है कि मैंने तेतीस (33) अरब वाणी बोल दी हैं, परंतु मूल ज्ञान (तत्त्वज्ञान) गुप्त ही रखा है। वह तो तेरहवें पंथ में आकर सब अंधेरा मिटाऊँगा। कबीर बानी पष्ठ 134(980) पर तेरह पंथों के गुण बताए हैं। कहा है कि :-

बारहवें पंथ होय उजियारा। तेरहवें पंथ मिटै सकल अंधियारा।।

भावार्थ :- बारहवाँ पंथ संत गरीबदास जी का है। उनके द्वारा परमेश्वर कबीर जी ने अपनी महिमा तथा यथार्थ ज्ञान की वाणी गूढ़ शब्दों में बुलवाई तथा लिखवाई है। अब यह दास (रामपाल दास) उसी संत गरीबदास जी के पंथ से जुड़ा है। यह तेरहवां पंथ है। अब सब अज्ञान अंधेरा समाप्त हो गया है। कबीर सागर में जीव धर्म बोध पष्ठ 1937-1938 पर जो वाणी ऊपर लिखी हैं, उनमें धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से याचना की है कि हे प्रभु! मेरे पितामह (दादा), पिता तथा परिवार को पार कर दो। तब परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि तूने क्या माँगा, तुम्हें माँगना भी नहीं आया। मैं तो सारी सष्टि को पार कर दूँ। यह तेरा दोष नहीं है, तेरी बुद्धि काल निरंजन ने समाप्त कर दी है। अधिक ज्ञान अनुराग सागर के सारांश में पढ़ें। उसमें स्पष्ट किया है कि तेरे बयालीस (42) पीढ़ी के यानि बिंद वालों की मुक्ति नाद वंश यानि जो शिष्य परंपरा से गुरू पद पर होगा, उससे होगी। अनुराग सागर पष्ठ 138(256) से 142(260) तक के सारांश में इसी पुस्तक में पढ़ें। अनुराग सागर के पष्ठ 142(260) पर :-

बिन्द तुम्हारा नाद संग जावै। देखत दूत मन ही पछतावै।।

परमेश्वर कबीर जी ने जान लिया कि धर्मदास को कोई भी मेरी शिक्षा प्रभाव नहीं कर रही है। वद्ध अवस्था के कारण दिमाग डगमग हो चुका है। तब धर्मदास जी को परमेश्वर कबीर जी उड़ीसा में उस स्थान पर ले गए जहाँ परमेश्वर कबीर जी ने पत्थर के चौरा (चबूतरे) पर बैठकर समुद्र को रोककर जगन्नाथ का मंदिर टूटने से बचाया था जिसे अब जगन्नाथ पुरी के नाम से जाना जाता है।

धर्मदास जी को वहाँ ले जाकर परमेश्वर कबीर जी ने ज्ञान पुनः दढ़ किया। बार-बार मन में दोष आने से कि नाम बता दूँ अपने परिवार को जो परमेश्वर कबीर जी यानि गुरू जी की आज्ञा का उल्लघंन करने का विचार था, उससे वे नाम रहित हो चुके थे। उड़ीसा में धर्मदास जी के पुनः तीनों नाम शुद्ध किये। तब धर्मदास जी सचेत हुए और परमेश्वर कबीर जी से कहा कि हे प्रभु! वद्ध अवस्था के कारण मेरा मन डगमग हो जाता है। मैं कभी गलती करके ये गुप्त भेद अपने परिवार को बता दूँगा। मुझे सत्यलोक भेज दो। मैं परिवार मोह में फँसा हूँ। तब परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी के परिवार के समक्ष (यानि उस समय चूड़ामणी पुत्र तथा पत्नी आमिनी देवी भी उपस्थित थे) जीवित को पथ्वी में समाधि दे दी यानि जीवित को मिट्टी में दबा दिया। पुण्यात्माओ! विचार करो। सत्यनाम तथा सार शब्द सुरक्षित रखने के लिए अपनी प्यारी आत्मा धर्मदास जी को भी जीवित पथ्वी में दबा दिया तो वे मंत्र कितने महत्त्वपूर्ण हैं। जैसा कि धर्मदास जी से परमेश्वर कबीर जी ने कहा है, जीव धर्म बोध पष्ठ 1934 पर किः-

युगन–युगन तुम सेवा कीन्हा। तातें सार शब्द तै चीन्हा।।

भावार्थ :- हे धर्मदास! तुमने युगों-युगों भक्ति की है। तब तुझे यह सार शब्द समझ में आया है। तब ही यह तुझे मिला है। तो हे प्रिय पाठको! विचार करो आप बिचली पीढ़ी में जन्में हो और जिन्होंने दीक्षा ले ली और अब सार शब्द भी मिल चुका है तो आप कितने पुण्यकर्मी प्राणी हो।

इसलिए यह दीक्षा लेकर मर्यादा में रहकर भक्ति करके कल्याण कराना।

संत गरीबदास जी ने कहा है कि :-

यह संसार समझदा नाहीं, कहंदा शाम दुपहरे नूं। गरीबदास यह वक्त जात है, रोवोगे इस पहरे नूं।।

कबीर चरित्र बोध पष्ठ 1870 पर बारह पंथों के नाम लिखे हैं :-

1. नारायण दास का पंथ (वास्तव में यह चूड़ामणी वाला पंथ है जो धर्मदास के वंश द्वारा दामाखेड़ा में चलाया जा रहा है, पूरा विवरण इसी पुस्तक में कबीर बानी के पष्ठ 134(980) से 137(983) तक के सारांश में पढ़ें।)

कप्या देखें कबीर सागर के अध्याय ''कबीर चरित्र बोध'' के पष्ठ 1870 की फोटोकॉपी जिसमें बारहवाँ पंथ गरीबदास जी का है। यह सत्य है। दूसरा जागु (यागु) दास, यह भी ठीक है। शेष सब सत्य है, परंतु प्रथम नारायण दास गलत है क्योंकि नारायण दास ने तो परमेश्वर कबीर जी का ज्ञान स्वीकार ही नहीं किया किया था। वे तो आजीवन श्री कष्ण पुजारी रहे थे। आज भी बाँधवगढ़ में श्री कष्ण जी का मंदिर विद्यमान है।

(१८७०) बोधसागर ८६

चौपाई

सत्य सुकृति सुमिरो मन माही। टूटत बज्र राखलेउ ताही।

साखी-सत्य सुकृतिकी बालक है, जो चितवै कर डीठ।
ताजन तोरौ चौहटे, गुनहगारकी पीठ॥
जदिया कहूँ तो जगतरैं, परकट कहो न जाय।
गुप्त परवाना देत हौं, राखो शिरे चढ़ाय॥
जिन डरपो तुम कालका, कर मेरी परतीत।
सप्तद्वीप नौ खण्डमें, चलिहौ भवजल जीत॥

यहांलों तो चार गुरु और बयालीस वंशका लेखा लग चुका है इनके अतिरिक्त कबीर साहबके बारह पंथ और भी कबीर-पन्थी ही कहलाते हैं।

कबीर साहबके पंथोंका वृत्तान्त

१-नारायणदासजीका पंथ। २-यागौदासजीकापंथ। ३-सूरत गोपाल पंथ। ४-मूलनिरञ्जनका पंथ। ५-टकसारी पंथ। ६-भगवान्दासजी का पंथ। ७-सत्यनामी पंथ। ८-कमालीपंथ। ९-राम कबीर पंथ। १०-प्रेमधामकी वाणी। ११-जीवा पंथ। १२-गरीबदास पंथ।

यह तो कबीर साहबके बारह पंथ हैं। इनमें कोई २ अच्छे हैं। और कोई निर्बल विश्वासके हैं। और रामकबीरके लोग ठाकुरपूजा करते हैं। और सत्यनामियोंके ध्यान भी विचलित प्रायः हैं। इन बारह पंथोंका यही विवरण है और इन बारह पंथोंके अतिरिक्त कबीर साहबके और पंथ भी हैं।

कबीर साहबके भिन्न २ पंथोंका वृत्तान्त

नानकपंथ-दादू पंथ-यानिप पंथ-मूलकदास पंथ-गणेश पंथ इत्यादि।

कबीर चरित्र बोध पृष्ठ 1871 पर महाप्रलय का वर्णन गलत है, यथार्थ वर्णन इसी पुस्तक में पृष्ठ 71 से 77 तक पढ़ें।

कबीर चरित्र बोध पृष्ठ 1874 से 1876 तक कबीर जी का सत्यलोक गमन का वर्णन है। यह बहुत ठीक है। यथार्थ जानकारी कृप्या आगे पढ़ें।

कबीर चरित्र बोध पृष्ठ 1876 पर लिखा है कि कबीर जी का आदि में (यानि पहले) कोई शरीर नहीं था तथा न अंत में (मगहर में) कोई शरीर था। वह तेजपुंज का प्राकाट्य था। लेखक का भावार्थ है कि कबीर जी निराकार हैं।

कबीर चरित्र बोध पृष्ठ 1884-1885 पर कबीर जी के लोक और हंसों का वर्णन गलत है। लिखा है कि जब मुक्त हंस सत्यलोक में जाता है तो उसके शरीर का प्रकाश करोड़ों सूर्य तथा चाँद से भी अधिक हो जाता है। यह गलत वर्णन है। यथार्थ ज्ञान यह है कि एक मुक्त हंस के शरीर का कुल प्रकाश 16 सूर्यों के समान होता है।

कबीर चरित्र बोध पृष्ठ 1886 पर लिखा है कि जब संसार से मुक्त होकर जीव सतलोक में प्रवेश करता है तो वहाँ के हंस (जीव) नीचे से गए हंसों की आगवानी के लिए सतलोक से बाहर निकलते हैं। गले मिलते हैं। प्रसन्न होकर कहते हैं कि बहुत दिनों के बिछुड़े हंस आज हम से मिले हैं। सब मिल-जुलकर सत्य पुरूष के दर्शन कराने को लेकर जाते हैं। सतपुरूष के निकट जाकर दण्डवत् प्रणाम करते हैं। सत्यलोक में बास (निवास) करते हैं।

आओ विचार करें :- एक तरफ तो कबीर पंथी कहते हैं कि सतलोक में सतपुरूष केवल प्रकाश है। साकार नहीं है। फिर सतपुरूष के दर्शन करना, उसके निकट जाकर दण्डवत् प्रणाम करना भी लिखा है। फिर लिखा है कि जब नीचे से मुक्त सतलोक जाते हैं तो वहाँ के निवासी सतलोक से बाहर निकलकर आते हैं। क्या सतलोक कोई चूहों का घर (बिल) है। उससे निकलकर बाहर आते हैं। यह है ऊवा-बाई का ज्ञान जो अनुभवहीन व्यक्तियों द्वारा कहा गया है। यथार्थ ज्ञान आप जी इसी पुस्तक में सृष्टि रचना में पढ़ें।

कबीर चरित्र बोध में आप जी ने सत्य तथा असत्य का ज्ञान पढ़ा। कबीर चरित्र बोध तो बहुत है, परंतु यहाँ लिखने लगूँ तो इतनी मोटी पुस्तक और तैयार हो जाएगी। इसलिए यह अलग से लिखी जाएगी। फिर भी परमेश्वर को पहचानने के लिए पर्याप्त विवरण लिखा गया है।

''प्रभु कबीर जी का मगहर से सशरीर सत्यलोक गमन तथा सूखी नदी में नीर बहाना''

उसके बाद इस भ्रम को तोड़ने के लिए कि जो मगहर में मरता है वह गधा बनता है और कांशी में मरने वाला स्वर्ग जाता है। (बन्दी छोड़ कहते थे कि सही विधि से भक्ति करने वाला प्राणी चाहे वह कहीं पर प्राण त्याग दे वह अपने सही स्थान पर जाएगा।) उन अज्ञानियों का भ्रम निवारण करने के लिए कबीर साहेब ने कहा कि मैं मगहर में मरूँगा और सभी ज्योतिषी वाले देख लेना कि मैं कहाँ जाऊँगा? नरक में जाऊँगा या स्वर्ग से भी ऊपर सतलोक में।

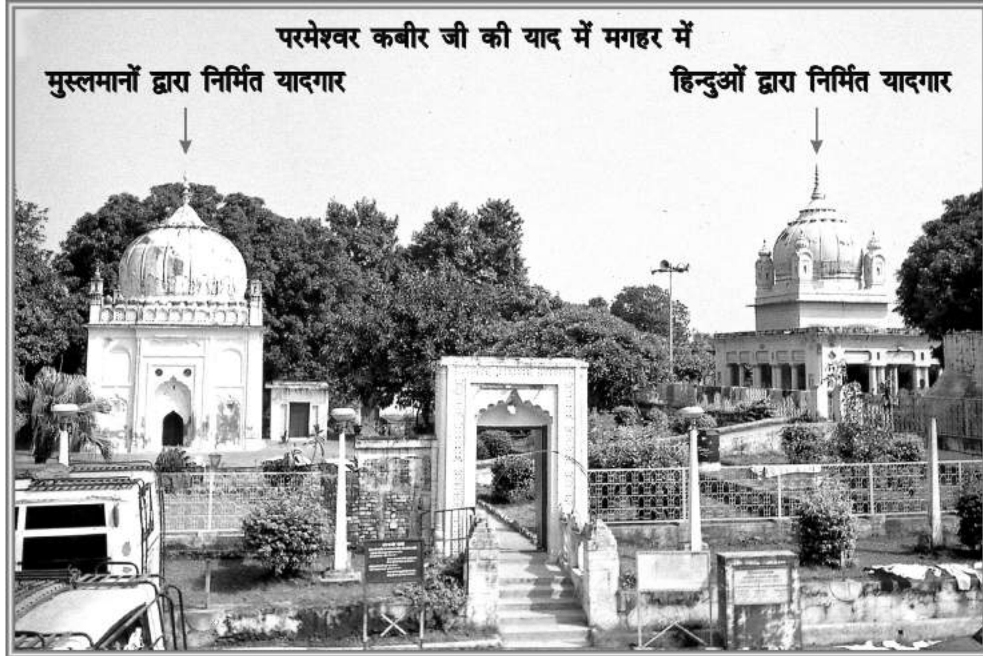
कबीर साहेब ने कॉंशी से मगहर के लिये प्रस्थान किया। बीर सिंह बघेला और बिजली खाँ पठान ये दोनों ही सतगुरू के शिष्य थे। बीर सिंह ने अपनी सेना साथ ले ली कि कबीर साहेब वहाँ पर अपना शरीर छोड़ेंगे। इस शरीर को लेकर हम कॉंशी में हिन्दू रीति से अंतिम संस्कार करेंगे। यदि मुसलमान नहीं मानेंगे तो लड़ाई कर के शव को लायेंगे। सेना भी साथ ले ली, अब

इतनी बुद्धि है हमारी। कबीर परमेश्वर जी हर रोज शिक्षा दिया करते कि हिन्दू मुसलमान दो नहीं हैं। अंत में फिर वही बुद्धि। उधर से बिजली खाँ पठान को पता चला कि कबीर साहेब यहाँ पर आ रहे हैं। बिजली खाँ पठान ने सतगुरू तथा सर्व आने वाले भक्तों तथा दर्शकों की खाने तथा पीने की सारी व्यवस्था की और कहा कि सेना तुम भी तैयार कर लो। हम अपने पीर कबीर साहेब का यहाँ पर मुसलमान विधि से अंतिम संस्कार करेंगे। कबीर साहेब के मगहर पहुँचने के बाद बिजली खाँ ने कहा कि महाराज जी स्नान करो। कबीर साहेब ने कहा कि बहते पानी में स्नान करूँगा। बिजली खान ने कहा कि सतगुरू देव यहाँ पर साथ में एक आमी नदी है, वह भगवान शिव के श्राप से सूखी पड़ी है। उसमें पानी नहीं है। जैसी व्यवस्था दास से हो पाई है पानी का प्रबंध करवाया है। आपके स्नान के लिए प्रबंध किया है। लेकिन संगत बहुत आ गई। इनके नहाने की तो बात बन नहीं पाएगी। पीने का पानी पर्याप्त मात्रा में बाहर से मंगवा रखा है। कबीर साहेब ने कहा कि वह नदी देखें कहाँ पर है? उस नदी पर जा कर साहेब ने हाथ से ऐसे इशारा किया था जैसे यातायात (ट्रैफिक) का सिपाही रूकी हुई गाड़ियों को जाने का संकेत करता है। वह आमी नदी पानी से पूरी भरकर चल पड़ी। "बोलो सतगुरू देव की जय" ''सत साहेब''। (यह आमी नदी वहाँ पर अभी भी विद्यमान है) सब ने जय जयकार की।

❖ साहेब ने कहा कि एक चददर नीचे बिछाओ, एक मैं ऊपर ओढूँगा। (क्योंकि वे जानी जान तो थे) कहने लगे कि ये सेना कैसे ला रखी है तुमने? अब बिजली खाँ पठान और बीर सिंह बघेला आमने-सामने खड़े हैं। उन्होंने तो मुँह लटका लिया और बोले नहीं। वे दूसरे हिन्दू और मुसलमान बिना नाम वाले बोले कि जी हम आपका अंतिम संस्कार अपनी विधि से करेंगे। दूसरे कहते हैं कि हम अपनी विधि से करेंगे। चढा ली बाहें, उठा लिए हथियार तथा कहने लगे कि आ जाओ। कबीर साहेब ने कहा कि नादानों क्या मैंने यही शिक्षा दी थी 120 वर्ष तक। इस मिट्टी का तुम क्या करोगे? चाहे फूँक दो या गाड़ दो, इससे क्या मिलेगा? तुमने क्या शिक्षा ली मेरे से? सुन लो यदि झगड़ा कर लिया तो मेरे से बुरा नहीं होगा। वे जानते थे कि ये कबीर साहेब परम शक्ति युक्त हैं। यदि कुछ कह दिया तो बात बिगड़ जाएगी। शांत हो गये पर मन में यही थी कि शरीर छोड़ने दो, हमने तो यही करना है। वे तो जानी जान थे। उस दिन गृहयुद्ध शुरू हो जाता, सत्यानाश हो जाता, यदि साहेब अपनी कृपा न बक्शते। कबीर साहेब ने कहा कि एक काम कर लेना तुम मेरे शरीर को आधा-आधा काट लेना। परन्तु लड़ना मत। ये मेरा अंतिम आदेश सुन लो और मानो, इसमें जो वस्तु मिले उसको आधा आधा कर लेना। महिना माघ शुक्ल पक्ष तिथि एकादशी वि. स. 1575 (एक हजार पाँच सौ पचहतर) सन् 1518 को कबीर साहेब ने एक चद्दर नीचे बिछाई और एक ऊपर ओढ़ ली। कुछ फूल कबीर साहेब के नीचे वाली चद्दर पर दो इंच मोटाई में बिछा दिये। थोड़ी सी देर में आकाश वाणी हुई कि मैं तो जा रहा हूँ सतलोक में (स्वर्ग से भी ऊपर)। देख लो चद्दर उठा कर इसमें कोई शव नहीं है। जो वस्तु है वे आधी-आधी ले लेना परन्तु लड़ना नहीं। जब चददर उठाई तो सुगंधित फूलों का ढेर शव के समान ऊँचा मिला। बोलो सतगुरू देव की जय ''सत साहेब।''

बीर देव सिंह बघेल और बिजली खाँ पठान एक दूसरे के सीने से लग कर ऐसे रोने लगे जैसे कि बच्चों की माँ मर जाती है। फिर तो वहाँ पर रूदन मच गया। हिन्दू और मुसलमानों का प्यार सदा के लिए अटूट बन गया। एक दूसरे को सीने से लगा कर हिन्दू और मुसलमान रो रहे थे। कहने लगे कि हम समझे नहीं। ये तो वास्तव में अल्लाह आए हुए थे। और ऊपर आकाश में प्रकाश का गोला जा रहा था। बोलो सतगुरू देव की जय ''सत साहेब।'' तो वहाँ मगहर में दोनों धर्मों

(हिन्दुओं तथा मुसलमानों) ने एक-एक चद्दर तथा आधे-आधे सुगंधित फूल लेकर सौ फूट के अंतर पर एक-एक यादगार भिन्न-भिन्न बनाई जो आज भी विद्यमान है तथा कुछ फूल लाकर कांशी में जहाँ कबीर साहेब एक चबूतरे(चौरा) पर बैठकर सतसंग किया करते वहाँ काँशी चौरा नाम से यादगार बनाई। अब वहाँ पर बहुत बड़ा आश्रम बना हुआ है। मगहर में दोनों यादगारों के बीच में एक साझला द्वार भी है आपस में कोई भेद-भाव नहीं है।



(मगहर स्थान पर हिंदुओं तथा मुसलमानों द्वारा बनाई गई साथ-2 यादगार)

हिन्दू और मुसलमान ऐसे रहते हैं कि जैसे माँ जाए भाई रहा करते हैं। उनसे हमने बात की थी तो उन्होंने कहा कि हमारी आज तक धर्म के नाम पर कोई लड़ाई नहीं हुई। वैसे कहा सुनी तो घर के घर में हो जाती है। फिर भी हमारी आपस में धर्म के नाम पर लड़ाई नहीं होती है। बिजली खाँ पठान ने दोनों यादगारों के नाम पाँच सौ, पाँच सौ बीघा जमीन दी जिसमें हिन्दू तथा मुसलमान अपने प्रबन्धक कमेटी बनाकर व्यवस्थित किए हैं। यह दास (संत रामपाल दास जी महाराज) अपने सैंकड़ों सेवकों सहित तीन बार इस एतिहासिक धार्मिक स्थल को देखकर आ चुके हैं। वहाँ जाकर ऐसा लगता है जैसे हमने सच्चाई का खजाना प्राप्त हो गया हो। बोलो सतगुरू देव की जय ''सत साहेब।''

गरीबदास जी महाराज की वाणी से ''पारख का अंग''

चले कबीर मगहर कै तांई, तहां वहां फूलन सेज बिछाई।
दोनौं दीन अधिक परभाऊ, दोषी दुश्मन और सब साऊ।।
तहां बिजलीखां चले पठाना, बीरसिंह बघेला पद प्रवाना।
काशी उमटी चली मगहर कूं, कोई न पावै तास डगरकूं।।

वैरागी संयासी जोगी, चले मगहर को शब्द वियोगी।
तीन रोजमैं पौहचै जाई, तहां वहां सुमरन राम खुदाई।।
दहूं दीन है बांहां जोरी, शस्त्र बांधि लिये भरि गोरी।
वै गाडै वै जारन कही, दोनू दीन अधिक सो फही।।
तहां कबीर कही एक भाषा, शस्त्र करै सो ताही तलाका।
शस्त्र करै सो हमरा द्रोही, ज्याकी पैज पिछौडी होई।।
सुन बिजलीखां बात हमारी, हम हैं शब्द रूप निराकारी।
बीरसिंबघेला बिनती करि है, हे सतगुरू तुम किसविधि मरि है।।
तहां वहां चादरि फूल बिछाये, सिज्या छांडी पदहि समाये।
दो चादर दहूं दीन उठावैं, ताके मध्य कबीर न पावैं।।
तहां वहां अविगत फूल सुवासी, मगहर घोर और चौरा काशी।
अविगतरूप अलख निरबानी, तहां वहां नीर क्षीर दियाछांनी।।
दोहा—शंख जुगन जुग जगत मैं, पद प्रवानि है न्यार।
गरीबदास कबीर हरि, अविगत अधरि अधार।।948।।

बन्दी छोड़ गरीबदास जी महाराज की वाणी से -

(सतग्रन्थ पष्ट नं. 781-782)

शब्द :

कीन्हाँ मघर पियाँना हो, दोन्यूं दीन चले संगि जाकै, हिंदू मुसलमांना हो।।टेक।।
मुक्ति खेत कूं छाडि चले है, तजि काशी अस्थाँना हो। शाह सिकन्दर कदम लेत है, पातिशाह सुलताँना हो।।1
च्यारि बेद के बकता संगि हैं, खोजी बडे बयांना हो। सालिगराम सुरति सैं सेवैं, ज्ञान समुद्र दांना हो।।2
षट्दर्शन जाकै संगि चाले, गावत वांनी नाना हो। अपनां अपनाँ ईष्ट सिंभालैं, बाचैं पोथी पांना हो।।3
चदरि फूल बिछाये सतगुरु, देखै सकल जिहांना हो। च्यारि दाग सैं रहत जुलहदी, अविगत अलख अमाँना हो।।4
बिरसिंघ बघेला करै बीनती, बिजलीखाँन पठांना हो। दो चदरि बकसीस करी हैं, दीनां यौह प्रवांना हो।।5
नूर नूर निरगुण पद मेला, देखि भये हैराँना हो। पद ल्यौलीन भये अविनाशी, पाये पिण्ड न प्राना हो।।6
शब्द सरूप साहिब सरबंगी, शब्दें शब्द समाना हो। दास गरीब कबीर अर्श में, फरकैं धजा निशाँना हो।।7

जब कबीर साहिब सतलोक जा रहे थे उस समय आदि माया प्रकति ने फिर जाल बिछाया। एक सुन्दर स्त्री(अप्सरा) का रूप बना कर कबीर साहिब को भोग विलास के लिए प्रेरित करती है।

-: शब्द :-

बन्दी छोड़ गरीबदास जी महाराज की वाणी से

(सतग्रन्थ पष्ठ नं. 782)

देख्या मघर जहूरा हो, कांशी मैं कीर्ति करि चाले, झिलमिल देही नूरा हो।।टेक।।
माया आदि अर्श तैं उतरी, बनी अपसरा हूरा हो। हम तौ बरैं कबीर पुरुष कूं, तूं है दुलहा पूरा हो।।1।।
माया कहैं कबीर पुरुष सैं, देखो बदन जहूरा हो। अर्श विमान सुरग में मंदर, भोगैं हम कूं सूरा हो।।2।।
कहै कबीर सुनौ री माया, कुटिल नजरि तुम घूरा हो। जिनि भोगी सोई कलि रोगी, हो गये धूरम धूरा हो।।3।।
माया कहै कबीर पुरुष सैं, मैं हूं जग सैं दूरा हो। मैं तुमरी पटराँनी दासी, राखौ पलक हजूरा हो।।4।।
कहै कबीर सुनौ री माया, तुम हो लड्डू बूरा हो। जो तुझि खावै सो बहजावै, तास अकलि के कूरा हो।।5।।
सेत मुकुट जहां सेत छत्र है, बाजैं अनहद तूरा हो। दास गरीब कहै सुनि माया, हम सैं रहियौ दूरा हो।।6।।

।।वाणी।।

माया सतगुरु सूं अटकी, माया सतगुरु सूं अटकी। जोगनि हमरै क्यूं भटकी, जोगनि हमरै क्यूं भटकी।।
हम तो भगलीगर जोगी, हम तो भगलीगर जोगी। हम नहीं माया के भोगी, हम नहीं माया के भोगी।।
तोमैं झगरा है भारी, तोमैं झगरा है भारी। मारे बड छत्रधारी, मारे बड छत्रधारी।।
सेवा करिसूं मैं नीकी, सेवा करिसूं मैं नीकी। हमकूं लागत है फीकी, हमकूं लागत है फीकी।।
हमरी सार नहीं जानी, हमरी सार नहीं जानी। अरीतैंतोघालि दई घानी, अरीतैंतोघालि दई घानी।।
चलती फिरती क्यूं नांहीं, चलती फिरती क्यूं नांही। हम रहते अविगतपद मांहि, हम रहते अविगतपद मांहि।।
अरी तूं गहली है गोली, अरी तूं गहली है गोली। दाग लगावैगी चोली, दाग लगावैगी चोली।।
मेरा अंजन है नूरी, मेरा अंजन है नूरी। अंदर महकै कस्तूरी, अंदर महकै कस्तूरी।।
तुम किसी राजा पै जावो, तुम किसी राजा पै जावो। हमरे मन नांहीं भावो, हमरे मन नांहीं भावो।।
मैं तो अर्धंगी दासी, मैं तो अर्धंगी दासी। हम हैं अनहदपुर बासी, हम हैं अनहदपुर बासी।।
हमरा अनहद में डेरा, हमरा अनहद में डेरा। अंत न पावैगी मेरा, अंत न पावैगी मेरा।।
हमतो आदि जुगादिनिजी, हमतो आदि जुगादिनिजी। अरी तुझ माता कहूंकधी, अरी तुझ माता कहूंकधी।।
अब मैं देऊंगी गारी, अब मैं देऊंगी गारी। हमतो जोगी ब्रह्मचारी, हमतो जोगी ब्रह्मचारी।।
आसन बंधूंगी जिंदा, आसन बंधूंगी जिंदा। गल में डारौंगी फंदा, गल में डारौंगी फंदा।।
आसन मुक्ता री माई, आसन मुक्ता री माई। तीनूं लोक न अंघाई, तीनूं लोक न अंघाई।।
हमरै द्वारै क्यूं रोवौ, हमरै द्वारै क्यूं रोवौ। किसी राजाराणेकूं जोवौ, किसी राजाराणे कूं जोवौ।।
हमरै भांग नहीं भूनी, हमरै भांग नहीं भूनी। माया शीश कूटि रूनी, माया शीश कूटि रूनी।।
तूंतो जोगनि है खंडी, तूंतो जोगनि है खंडी। मौहरा फेरि चली लंडी, मौहरा फेरि चली लंडी।।

-: शब्द :-

आज मोहे दर्शन दियो जी कबीर।।टेक।।
सत्य लोक से चल कर आए, काटन यम की जंजीर ।।1।।
थारे दर्शन से म्हारे पाप कटत हैं, निर्मल होवै जी शरीर ।।2।।
अमृत भोजन म्हारे सतगुरू जीमैं, शब्द दूध की खीर।।3।।
हिन्दू के तुम देव कहाये, मुसलमान के पीर।।4।।
दोनों दीन का झगड़ा छिड़ गया, टोहे ना पाये शरीर।।5।।
धर्मदास की अर्ज गुसाई, खेवा लंघाइयों परले तीर।।6।।

मलूक दास जी को परमेश्वर कबीर जी संत रूप में मिले थे। उनको सत्यलोक ले जाकर वापिस छोड़ा था। अपनी महिमा से परिचित करवाया। उसके पश्चात् संत मलूक दास जी ने कबीर जी की महिमा का गुणगान किया।

अगम निगम बोध के पृष्ठ 45(1735) पर मलूक दास जी का शब्द है :-

जपो रे मन साहेब नाम कबीर।(टेक)
एक समय गुरू बंशी बजाई कालिंद्री के तीर। सुरनर मुनि सब चकित भये, रूक गया यमुना नीर।।
काशी तज गुरू मगहर गए, दोऊ दीन के पीर।।
कोई गाड़ै कोई अग्नि जलावै, नेक न धरते धीर। चार दाग से सतगुरू न्यारा। अजरो–अमर शरीर।।
जगन्नाथ का मंदिर बचाया, ऐसे गहर गम्भीर। दास मलूक सलूक कहत है, खोजो खसम कबीर।।

''संत दादू दास जी को कबीर जी ने शरण में लिया''

श्री दादू जी को सात वर्ष की आयु में जिन्दा बाबा जी के स्वरूप में परमेश्वर जी मिले थे। उस समय कई अन्य हमउम्र बच्चे भी खेल रहे थे। परमेश्वर कबीर जी ने अपने कमण्डल (लोटे) से कुछ जल पान के पत्ते को कटोरे की तरह बनाकर पिलाया तथा प्रथम नाम देकर सत्यलोक ले गए। दादू जी तीन दिन-रात अचेत (Coma में) रहे। फिर सचेत हुए तथा कबीर जी का गुणगान किया। जो बच्चे श्री दादू जी के साथ खेल रहे थे। उन्होंने गाँव में आकर बताया कि एक बूढ़ा बाबा आया था। उसने जादू-जंत्र का जल दादू को पिलाया था। परंतु दादू जी ने बताया था किः-

जिन मोकूं निज नाम दिया, सोई सतगुरू हमार। दादू दूसरा कोई नहीं, कबीर सिरजनहार।।
दादू नाम कबीर की, जे कोई लेवे ओट। ताको कबहू लागै नहीं, काल वज्र की चोट।।
केहरी नाम कबीर है, विषम काल गजराज। दादू भजन प्रताप से, भागै सुनत आवाज।।
अब हो तेरी सब मिटे, जन्म–मरण की पीर। श्वांस–उश्वांस सुमरले, दादू नाम कबीर।।

स्पष्टीकरण :- संत मलूक दास जी तथा संत दादू दास जी को परमेश्वर संत गरीबदास जी की तरह सतलोक जाने के पश्चात् मिले थे। यह प्रकरण कबीर सागर में नहीं था, बाद में लिखा गया है।

अगम निगम बोध पृष्ठ 44(1734) पर नानक जी का शब्द है :-''वाह–वाह कबीर गुरू पूरा है''

वाह–वाह कबीर गुरू पूरा है।(टेक)
पूरे गुरू की मैं बली जाऊँ जाका सकल जहूरा है।
अधर दुलीचे परे गुरूवन के, शिव ब्रह्मा जहाँ शूरा है।
श्वेत ध्वजा फरकत गुरूवन की, बाजत अनहद तूरा है।
पूर्ण कबीर सकल घट दरशै, हरदम हाल हजूरा है।
नाम कबीर जपै बड़भागी, नानक चरण को धूरा है।

अगम निगम बोध पृष्ठ 46 पर प्रमाण दिया है कि महादेव जी के पूज्य इष्ट देव कबीर परमेश्वर जी हैं।

(४६) बोधसागर

श्रीमहादेव उवाच

श्लोक–यः सुखसागरो दाता बीजज्ञानं तथैव च।
आद्यन्तरहितो लोके यः कबीर इहोच्यते॥
कलांशेन गतो भूम्यां विलासा सत्य संज्ञकः।
दीनोद्धारेतिदक्षः कबीरसंज्ञः इहोच्यते॥
कर्ताकोन्यायकारी च व्यक्ताव्यक्तःसनातनः।
रमते सत्यलोके यः स कबीर इहोच्यते॥

पारवतीजीने पूछा कि कबीर किसको कहते हैं? उनके उत्तरमें शिवजीने कबीर साहिबकी स्तुतिमें सौ एक श्लोक कहे हैं उस ग्रन्थको कबीर एकोत्तर कहते हैं जो सामवेद और पाताल खण्डमें हैं उसमेंसे यह तीन श्लोक लिखे हैं।

यह फोटोकॉपी कबीर सागर के अध्याय अगम निगम बोध के पष्ठ 46 की है। इसमें किसी अन्य ने यह महादेव-पार्वती का प्रकरण लिखा है। यह शुद्ध संस्कत नहीं है। फिर भी सच्चाई यह है कि पार्वती ने पूछा कि आप जिस कबीर की महिमा बताते हो, वह कौन है? श्री शिव जी ने गोलमोल उत्तर दिया है। क से कर्ता, ब से ब्रह्म तथा र से सबमें रमण करने के कारण परमात्मा कबीर कहलाता है।

वास्तव में परमेश्वर कबीर जी तीनों देवताओं (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी) को उनके लोकों में जाकर मिले थे। उनको शिष्य बनाया था। संत गरीबदास जी ने इसको बहुत अच्छा सत्य वर्णन किया है, वह इस प्रकार हैः-

आदि अन्त हमरे नहीं, नहीं मध्य मिलावा मूल। ब्रह्मा ज्ञान सुनाईया, धरि पिण्डा अस्थूल।।
श्वेत भूमि को हम गए, जहाँ विष्णु विश्वम्भर नाथ। हरियं हिरा नाम दे, अष्ट कमल दल स्वांत।।
हम बैरागी ब्रह्म पद, सन्यासी महादेव। सोहं नाम दिया शंकर को, करे हमारी सेव।।

आप जी ने पढ़ा कि शिव जी ने कबीर जी को अपना प्रभु माना है।

उपरोक्त वर्णन में परमेश्वर कबीर जी ने काल ब्रह्म तथा उसके पुत्रों की पूजा का ज्ञान तथा लाभ-हानि बताई। परमेश्वर जी ने स्पष्ट किया है कि :-

कबीर, तीन देव की जो करते भक्ति। उनकी कबहु ना होवे मुक्ति।।
ब्रह्मा, विष्णु, महेश, माया और धर्मराया (काल) कहिए। इन पाँचों मिल प्रपंच बनाया, बानी हमरी लहिए।।

कबीर सागर के अध्याय ''कबीर चरित्र बोध'' का सारांश सम्पूर्ण हुआ।

।।सत साहेब।।

अध्याय ''गुरू महात्मय'' का सारांश

कबीर सागर में 39वां अध्याय ''गुरू महात्मय'' पष्ठ 1895 पर है। गुरू महात्मय पहले सुमिरन बोध में इसी पुस्तक के पष्ठ 451 पर लिख दिया है। इसमें केवल एक राजा बंकेज को शरण में लेने की कथा है। उसको सत्ययुग में शरण में लिया था। उसकी 17 स्त्रियों तथा 50 लड़कों ने दीक्षा ली थी। राय बंकेज को सत्य युग में धर्मदास जी की तरह शरण में लेकर गुरू पद दिया था।

अध्याय ''जीव धर्म बोध'' का सारांश

कबीर सागर में 40वां अध्याय ''जीव धर्म बोध'' पष्ठ 1913 पर है। इस अध्याय में जीव के गुण-धर्म की जानकारी दी गई है। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि जीव मानव शरीर प्राप्त करके अपने आपको प्रभु मान बैठता है। अहंकार करता है कि मैंने यह कर दिया, मैं ये कर दूँगा। मेरे पास इतना धन है व कीमती गाड़ी है। सत्संग और संत के अभाव से वह मान बैठता है कि मैं सदा ऐसे ही सुखी रहूँगा। भूलवश यह भी विचार करता है कि अगले जन्म में फिर मानव बनकर आनन्द करूँगा। परमेश्वर कबीर जी ने समझाया है कि :-

नाम सुमरले सुकर्म करले कौन जाने कल की खबर नहीं पल की।
सर्व सोने की लंका थी, रावण से रणधीरं। एक पलक में राज विराजी, जम के पड़े जंजीरं।।
दुर्योधन से राजा होते, संग इकोतर भाई। ग्यारह क्षौंणी संग चलै थी, देहि गीदन खाई।।
उदय अस्त बीच चक्र चलैं थे, ऐसे जन ठकुराई। चुणक ऋषिश्वर कल्प किया, तब खोज न पाया राही।।
साठ हजार सघड़ के होते, कपिल मुनिश्वर खाये। एक सपुत्र उतानपात का, स्वर्ग में पद पाए।।
मर्द गर्द में मिल गए, रावण से रणधीर। कंश केशी चाणूर से, हिरणाकुश बलबीर।।
तेरी क्या बुनियाद है, जीव जन्म धर लेत। गरीबदास हरि नाम बिना, खाली परसी खेत।।

कबीर, क्या माँगूं कुछ थिर ना रहाई। देखत नैन चला जग जाई।।
एक लख पूत सवा लाख नाति। ता रावण घर दीया न बाती।।
आवत संग ना जात संगाती। क्या भया दर बांधे हाथी।।
बहुत प्यारी नारी जग मांही। मात पिता जाके सम नांही।।
जा ही कारण नर शीश जो देही। मत्यु समय वह नहीं स्नेही।।
निज स्वार्थ कह रोदन करही। फिर पर नर में चित धरही।।
सुत परिजन धन स्वपन स्नेही। सत्यनाम गहो निज मति येही।।
निज तन सम प्रिय और न आना। सो भी संग ना चले नादाना।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने जीव का धर्म बताया है कि जीव कर्म बन्धन में बँधा है। कर्मानुसार राजा बन जाता है। राजा बनकर स्वयं को मालिक समझ लेता है। विरोध करने वालों को मार डालता है। कोई कमजोर राजा दिखाई देता है तो उसके राज्य को हड़पने की योजना बनाता है। यदि वह सीधे से राज्य देने को सहमत नहीं होता तो उससे युद्ध करके हजारों सैनिकों को मारता है, वह पाप अपने सिर धर लेता है। दूसरे के धन को छीनने का भी दोष अपने सिर पर धरकर कुछ समय पश्चात् मर जाता है या किसी अन्य राजा द्वारा मार दिया जाता है। मत्यु उपरांत राजा गधे का जन्म प्राप्त करता है। उसके पश्चात् कुत्ते, सूअर आदि-आदि की योनियों में महाकष्ट उठाता है। ऊपर की वाणियों में यही सिद्ध किया है कि दुर्योधन राजा था। राज्य की

लड़ाई में मारा गया। ऐसा दुर्भाग्य वाला था कि मृत्यु उपरांत उसकी देह (शरीर) पक्षियों के खाने योग्य भी नहीं थी कि उसके शरीर को खाकर कोई गीद्ध जैसा पक्षी दुआ देता क्योंकि उसकी माता गांधारी के आशीर्वाद से दुर्योधन पर्दे को छोड़कर सर्व बज्र का हो गया था। राज्य भी नहीं रहा, स्वयं भी संपत्ति छोड़कर युद्ध में मारा गया। इसी प्रकार अन्य राजाओं की दुर्दशा हुई। मानधाता राजा था जो चक्रवर्ती यानि पूरी पृथ्वी का शासक था। चुणक ऋषि से लड़ाई हुई। सर्व सेना मारी गई। स्वयं भी मृत्यु के उपरांत चूहा बनकर धरती के अंदर बिल बनाकर रहा। फिर अन्य प्राणियों की योनियों में भटक रहा है। फिर बताया है कि राजा उतानपात का एक सुपुत्र ध्रुव भक्ति करके राजा भी बना और स्वर्ग गया।

फिर बताया है कि प्रत्येक व्यक्ति की धारणा है कि मेरा वंश चले। मैं अपनी संतान को सुखी करने के लिए धन इकट्ठा कर दूँ। यह संसार स्वार्थ के रस्से से बँधा है। अपना-अपना कर्ज लेने या अदा करने के लिए नाते बनते हैं। कर्ज का लेन-देन पूरा होते ही सब संसार छोड़कर चले जाते हैं। यदि युवा मर जाता है तो परिवार वाले रोते हैं कि अभी तो कमाने योग्य था। यदि रोगी या वृद्ध मर जाता है तो कहते हैं अच्छा हुआ, मर गया, दुःखी रहता था। यदि कोई इस भ्रम में है कि मेरा कुल चलेगा, मेरा नाम रहेगा। यह महामूर्खता है। लंका देश के राजा रावण के एक लाख पुत्र तथा सवा लाख पौत्र थे। आज उस रावण के वंश में कोई दीप जलाने वाला नहीं बचा है। बात करें नाम चलने की, जगत व्यवहार में हम देखते हैं कि दादा जी जो संसार त्यागकर चले गए, कोई याद नहीं करता। कभी जमीनी लेन-देन में भले ही नाम पढ़ने को मिले। और पीछे जाऐं तो चौथे दादा का नाम तो परिवार को भी याद नहीं होता। जो यह विचार रखता है कि मेरा नाम चल जाए, यह तो आप जी ऊपर पढ़ चुके हैं कि कैसा नाम चलेगा? फिर कुत्ते का जन्म या कुतिया का जन्म प्राप्त करेगा तो फिर कुत्तों में कुल (खानदान) हो जाएगा। फिर गधा बनेगा तो गधा कुल चलेगा। इस प्रकार परमेश्वर कबीर जी ने एक बात में स्पष्ट कर दिया है कि सतनाम सुमर ले और सुकर्म (अच्छे धार्मिक कर्म) कर ले। मृत्यु कभी भी हो सकती है। फिर क्या पता कहाँ जन्मेगा? आशा तो लगाए बैठा है सौ वर्ष तक जीवित रहने की, परंतु खबर एक पल की नहीं है, कब मृत्यु हो जाए? आप तो संपत्ति को अपना मानते हैं। मृत्यु के समय संपत्ति तो दूर की बात है, आपको अपने शरीर के समान तो संपत्ति भी प्रिय नहीं है, यह शरीर भी आपके साथ नहीं जाएगा। फिर अन्य वस्तुओं या धन को अपना मानता है। यह अज्ञान की भांग पी रखी है। परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि :-

कबीर, यह माया अटपटी, सब घट आन अड़ी।
किस किस कूं समझाऊँ, कूंए भांग पड़ी।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने बताया है कि काल निरंजन ने अज्ञान फैलाकर जीव को भव बंधन में मर्यादाऐं बनाकर माया इकट्ठी करके धनी बनने की प्रेरणा करके धन इकट्ठा करने की हवस रूपी भाँग पिला रखी है यानि 21 ब्रह्माण्ड रूपी कुएं में यही विचारधारा की भाँग डाल रखी है। किस-किस को समझाऊँ कूंए भाँग पड़ी। यानि सर्व में यही धारणा बनी है कि कोठी-बंगला बनाऊँ, बड़ी गाड़ी लूँ। बड़ा राजनेता बनूँ। बड़ा अधिकारी बनूँ। यह सब कुछ करके उसको ज्ञान नहीं कि आगे क्या बनेगा? वह ऊपर बता दिया है। इसलिए जीव धर्म को जानकर भक्ति करनी चाहिए। भक्ति का ज्ञान सतगुरू बताता है। सतगुरू के लक्षण क्या हैं? वे जीव धर्म बोध पृष्ठ 1960 पर लिखे हैं जो निम्न हैं:-

चौपाई

गुरू के लक्षण चार बखाना। प्रथम बेद शास्त्र ज्ञाना।।
दूजे हरि भक्ति मन कर्म बानी। तंतीयें सम दंष्टि कर जानी।।
चौथे बेद विधि सब कर्मा। यह चार गुरू गुण जानों मर्मा।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने स्पष्ट किया है कि गुरू के चार लक्षण हैं। एक तो यह है कि वह सर्व वेदों तथा शास्त्रों का ज्ञाता होना चाहिए। दूसरे परमात्मा की भक्ति करे, अन्य देवी या देव की भक्ति नहीं करता। केवल एक पूर्ण परमात्मा की भक्ति करता तथा करवाता है। तीसरा लक्षण है कि वह सब शिष्यों को एक दंष्टि से देखता है यानि धनी या निर्धन में अंतर नहीं समझता। सबके साथ एक जैसा व्यवहार करता है। चौथा लक्षण पूर्ण सतगुरू का है कि वह सर्व भक्ति कर्म वेद विधि के अनुसार करता तथा करवाता है यानि जो प्रमाणित वेदों में भक्ति क्रियाऐं लिखी हैं, वही भक्ति करता तथा अनुयाईयों से करवाता है। संत गरीबदास जी ने अपनी अमंतवाणी में कहा हैः-

गरीब, सतगुरू के लक्षण कहूँ मधुरे बैन विनोद। चार वेद षट शास्त्र कह अठारा बोधा।।

भावार्थ :- सतगुरू सर्व शास्त्रों का ज्ञाता होता है। उन्हीं से सत्संग करके ज्ञान कहता है।

पूर्ण सतगुरू के अन्य लक्षण :-

सोई गुरू पूरा कहावै जो दो अखर का भेद बतावै। एक लखावै एक छुड़ावै जब प्राणी निज घर जावै।।

संत नानक जी ने भी कहा है कि :-

जे तू पढ़या पंडित बिन दोय अखर बिन दोय नावां। प्रणवत नानक एक लंघाए जेकर सच्च समावां।।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि :-

कह कबीर अक्षर दोय भाख, होगा खसम तो लेगा राख।।

दो अखर (अक्षर) का भेद उपरोक्त महापुरूषों श्री नानक देव जी तथा परमेश्वर कबीर जी तथा संत गरीबदास जी के अतिरिक्त कोई नहीं जानता था या अब मुझ दास पर कंपा हुई है। सतनाम में दो अक्षर हैं। एक ओं (ॐ) है, दूसरा अक्षर उपदेशी को दीक्षा के समय बताया जाता है। श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 17 मंत्र 23 में कहा है कि सच्चिदानंद घन ब्रह्म यानि परमेश्वर की भक्ति तीन मंत्रों {ॐ(ओम्) तत् सत्) का जाप करने का निर्देश है। संष्टि की आदि में तत्त्वदर्शी संत यही भक्ति करते तथा कराते थे। मनुष्य भी जीव है। यह जीव विशेष में गिना जाता है। अन्य सामान्य जीव हैं। मानव जीव को अपना मोक्ष कराने का अवसर प्राप्त होता है जो अन्य जीवों को नहीं होता। जीव धर्म बोध में मानव के लिए प्रेरणा है। मानव को बताया गया है कि जो भक्ति नहीं करते, वे अपना मानव जीवन नष्ट करके जाते हैं। जो भक्ति करते हैं, उनकी भक्ति शास्त्र अनुकूल नहीं है तो भी उनका मानव जीवन व्यर्थ हो जाता है। जिनको पूर्ण सतगुरू नहीं मिला। वे भक्ति करके भी असफल रहते हैं। जो भक्त एक पूर्ण परमात्मा की भक्ति न करके अन्य देवी-देवताओं या तीर्थों, व्रतों तक सीमित हैं, वे भी मानव जीवन का वास्तविक लाभ नहीं उठा पाते। जो ब्रह्म की साधना करते हैं, वे भी पूर्ण मोक्ष प्राप्त नहीं करते जो श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 18 श्लोक 62 तथा अध्याय 15 श्लोक 4 में बताया है :- गीता ज्ञान दाता ने कहा कि हे अर्जुन! तू सर्व भाव से उस परमेश्वर की शरण में जा, उसकी कंपा से ही तू परम शांति को तथा सनातन परम धाम (शाश्वतम् स्थानम्) को प्राप्त होगा।(गीता अध्याय 18 श्लोक 62)

परम शांति उसे कहते हैं जब जीव का जन्म-मरण का चक्र समाप्त हो जाता है, उसका जन्म नहीं होता।

गीता ज्ञानदाता ने कहा है कि तत्त्वदर्शी संत मिलने के पश्चात् परमेश्वर के उस परमपद की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर संसार में नहीं आता। उस परमेश्वर की भक्ति करो जिसने इस संसार रूपी वृक्ष की रचना की है।(गीता अध्याय 15 श्लोक 4)

गीता अध्याय 8 श्लोक 16 में कहा है कि जो ब्रह्म साधना करते हैं, वे ब्रह्म लोक में जाते हैं। ब्रह्म लोक गए प्राणी भी पुनरावर्ती (जन्म-मरण को बार-बार प्राप्त करने वाली स्थिति को पुनरावर्ती कहा है) में हैं। ब्रह्मलोक में गए साधक भी पुण्य समाप्त होने के पश्चात् पुनः लौटकर संसार में आते हैं, वे जन्म-मरण में रहते हैं।

उपरोक्त प्रमाणों से सिद्ध हुआ कि परमेश्वर की भक्ति के अतिरिक्त यदि किसी अन्य प्रभु की भक्ति इष्ट रूप में की जाती है तो उससे न तो सनातन परम धाम (सत्यलोक) प्राप्त होगा, न जन्म-मरण समाप्त होगा यानि परम शांति प्राप्त नहीं होगी। परमशांति, सनातन परम धाम केवल परमेश्वर यानि सत्य पुरूष जी की भक्ति से प्राप्त होते हैं जो पूर्ण सतगुरू ही यथार्थ साधना तथा ज्ञान बताता है। जीव धर्म बोध में बस विशेष ज्ञान तो इतना ही है, परंतु इसमें अधिक विस्तार से ज्ञान दिया है जिसको कबीर पंथियों ने बहुत खराब भी कर रखा है। मिलावट की हद पार कर रखी है। उदाहरण के लिए कबीर सागर में जो ज्ञान है, वह कबीर साहब का बताया हुआ ही सत्य है। कबीर सागर धर्मदास जी ने विक्रमी संवत् 1550 (सन् 1497) के आसपास लिखा था। उसके पश्चात् तो धर्मदास बहुत वृद्ध हो गए थे। कबीर सागर के कई अध्यायों में अंग्रेजों तक का ज्ञान दिया है। अंग्रेज तो सन् 1749 से सन् 1947 तक थे। उससे पहले सन् 1497 में अंग्रेजों का नामो-निशान भी नहीं था। तो अंग्रेजों की गतिविधि तथा उनके द्वारा किया गया कोई आध्यात्मिक बिगाड़ का वर्णन कबीर सागर में नहीं आ सकता। जैसे जीव धर्म बोध पृष्ठ 2054 पर लिखा है कि अंग्रेजों के ग्रंथों में लिखा है कि दो बंदर बिना पूँछ (दुम) के हैं। दो पैरों से मनुष्य की तरह चलते हैं। दोनों हाथों से कार्य करते हैं। फिर लिखा है कि अंग्रेजी के अखबार में लिखा है कि दो मनुष्य पूँछ (दुम) वाले देखे गए हैं।

अंगरेजों के ग्रंथन मांही। बिन पूछ वानर यह आही।।
अंगरेजी के अखबार बखाने। द्वै मानुष दुमदार लखाने।।
दोनों पगते नर ज्यूं चालें। दोनों हाथ काम में डालें।।
हबश देश के जंगल जवहां। द्वै मानुष दुम युत रहैं तहंवा।।

जीव धर्म बोठा पृष्ठ 2055 पर लिखा है कि अमेरिका में एक दादुर (मैंढ़क) है, जब वह रोता है, तब अमेरिका में क्लेश यानि झगड़ा होता है।

दादुर एक अमेरिका देशा। रूदन करे जब लहै क्लेशा।।

विचार करें :- परमेश्वर कबीर जी सशरीर सतलोक सन् 1518 में गए। उस समय तक न तो कोई अखबार प्रचलित था और न अंग्रेजी भाषा थी। न कोई अमेरिका देश का नाम जानता था। इससे सिद्ध है कि कबीर सागर में यह मिलावट की गई है। परमेश्वर कबीर जी कृपा से अब यथार्थ ज्ञान प्रकाशित किया जा रहा है। इसी प्रकार अन्य पृष्ठों पर गड़बड़ी कर रखी है जो त्यागने योग्य है। इसलिए ''कबीर सागर का सरलार्थ'' पुस्तक बनाई है जो सत्य-असत्य को भिन्न-भिन्न करके बनाई है।

जीव धर्म बोध पृष्ठ 5-6 पर दोहे हैं :-

कौन धर्म है जीव को, सब धर्मन सरदार। जाते पावै मुक्ति गति, उतरे भव निधि पार।।

जबलों नहीं सतगुरू मिले, तबलों ज्ञान नहीं होय। ऋषि सिद्धि तपते लहै, मुक्ति का पावै कोय।।

भावार्थ :- जीव क्या धर्म यानि गुण है? मनुष्य का धर्म यानि मानव धर्म सब धर्मों का मुखिया है।

जीव हमारी जाति है, मानव धर्म हमारा।
हिन्दु मुस्लिम सिक्ख ईसाई, धर्म नहीं कोई न्यारा।।

यह दोहा मुझ दास (रामपाल दास) द्वारा निर्मित किया गया है। मनुष्य जन्म प्राप्त जीव का धर्म मानवता है। यदि मानव में मानवता (इंसानियत) नेक चाल चलन अच्छा व्यवहार नहीं है तो वह अन्य जीवों जैसा तुच्छ प्राणी है। अन्य जीव यानि पशु-पक्षी, जलचर क्या करते हैं? दुर्बल का आहार छीनकर खा जाते हैं। दुर्बल के साथ मारपीट करते हैं, मारकर भी खा जाते हैं। किसी असहाय पशु को जख्म (घाव) हो जाता है तो कौवे नोंच-नोंचकर खाते हैं। वर्तमान में डिस्कवरी फिल्मों में देखने को मिलता है कि जंगल में घास चर रहे भैंसे को 5-6 शेर-शेरनी घेरकर उसके ऊपर चढ़कर तथा आगे-पीछे से फाड़कर खाते हैं। भैंसा गिर जाता है, चिल्ला रहा है। सिंह मस्ती से जीवित को खा रहे थे। अन्य पशुओं जैसे गाय, जंगली मंग, नील गाय आदि। नीलगाय को तो गर्दन दबाकर पहले मारते हैं, उसकी गर्दन को तब तक दबाए रखते हैं, जब तक मर न जाए, फिर खाते हैं। परंतु भैंसे की गर्दन उनसे दब नहीं सकती थी। इसलिए जिन्दा को खा रहे थे। इसी प्रकार वे मनुष्य हैं जो दुर्बल की संपत्ति पर कब्जा कर लेते हैं, लूट लेते हैं। चोरी कर लेते हैं। दुर्बल परिवार की बहन-बेटियों से भी बदसलूकी (दुर्व्यवहार) करते हैं। इज्जत तक लूट लेते हैं। ऐसे धर्मगुण वाला मानव पशु श्रेणी में आता है। भले ही वह मानव दिखाई देता है। उसका नाम मानव है, उसमें गुण मानव के नहीं हैं। जब तक जीव में मानवता नहीं है तो वह मानव शरीर में भी जानवर है। इस जीव धर्म बोध अध्याय का बस इतना ही सारांश है। फिर भी प्रत्येक पंष्ठ का थोड़ा-थोड़ा विश्लेषण करता हूँ :-

जीव धर्म बोध पंष्ठ 7 से 21 तक का सारांश :-

पंष्ठ 6 का सारांश ऊपर कर दिया है। अब पंष्ठ 7 से 21 तक का सारांश वर्णन करता हूँ।

पंष्ठ 7 से 21 तक बताया है कि जीव को काम (भोग-विलास की इच्छा), क्रोध, मोह, लोभ तथा अहंकार विशेष प्रभावित करते हैं। ये पाँच विकार कहे गए हैं। इनके सूक्ष्म स्वरूप को इनकी प्रकंति कहा जाता है जो सँख्या में प्रत्येक की पाँच-पाँच है जो 25 प्रकंति कहलाती हैं। जीव धर्म बोध पंष्ठ 7 पर विशेष ज्ञान है जो श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 13 से मेल करता है।

नाम शरीर क्षेत्र सो जाना। तेही अंदर बाहर का ज्ञान।।
जो विकल्प कारण गाई। चित (मन) शक्ति क्षेत्रज्ञ कहाई।।
नाम तासु क्षेत्रज्ञ कहीजै। सो सब वासना से भीजै।।

इस पंष्ठ पर एक वाणी पुराने कबीर सागर में है जो नहीं लिखी गई :-

{क्षित्री नाम जीव कहलाई। जाको यह देही दीन्ही सांई।।}

भावार्थ :- शरीर को क्षेत्र (खेत) कहते हैं। जिस जीव को शरीर प्राप्त होता है, वह क्षत्री कहा जाता है। जो इस क्षेत्र यानि शरीर की रचना को जानता है, वह क्षेत्रज्ञ कहा जाता है। क्षेत्रज्ञ मन यानि काल-निरंजन कहा जाता है क्योंकि जब तक मानव शरीरधारी जीव सतगुरू शरण में नहीं आता, तब तक मन सर्व भोग का आनंद शरीर के द्वारा लेता है। इसलिए वाणी में लिखा है कि मन सब वासना में भीजा (भीगा) रहता है। जब पूर्ण सतगुरू मिल जाता है तो इस क्षेत्र रूपी शरीर का यथार्थ प्रयोग प्रारंभ होता है।

श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 13 श्लोक 1, 2 तथा 33 में उपरोक्त प्रमाण है।

गीता ज्ञान दाता काल ब्रह्म यानि ज्योति निरंजन ने बताया है कि :-

हे अर्जुन! यह शरीर क्षेत्र इस नाम से कहा जाता है। तत्त्वदर्शी संत कहते हैं कि जो इसको जानता है, वह क्षेत्रज्ञ कहा जाता है।(अध्याय 13 श्लोक 1)

हे अर्जुन! सर्व क्षेत्रों में क्षेत्रज्ञ भी मुझे ही जान और क्षेत्र तथा क्षेत्रज्ञ का जो ज्ञान है, वह ज्ञान है, ऐसा मेरा मत है। भावार्थ है कि शरीर=क्षेत्र तथा काल ब्रह्म=क्षेत्रज्ञ का ज्ञान कराने वाला ही वास्तविक ज्ञान है। यह गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि मेरा विचार है।(अध्याय 13 श्लोक 2)

हे अर्जुन! जिस प्रकार एक ही सूर्य इस संपूर्ण लोक (पृथ्वी लोक) को प्रकाशित करता है। उसी प्रकार क्षेत्री (जीवात्मा) संपूर्ण क्षेत्र (शरीर) को प्रकाशित करता है।(अध्याय 13 श्लोक 33)

विचार करें :- गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित तथा श्री जयदयाल गोयन्दका द्वारा अनुवादित तथा अन्य सर्व अनुवादकों द्वारा गीता अध्याय 13 श्लोक 1 में क्षेत्रज्ञ का अर्थ किया है कि जो क्षेत्र को जानता है, वह क्षेत्रज्ञ कहा जाता है। फिर गीता अध्याय 13 श्लोक 2 में क्षेत्रज्ञ का अर्थ जीवात्मा किया है। यह अज्ञानता का प्रमाण है। फिर गीता अध्याय 13 के श्लोक 33 में क्षेत्री का अर्थ जीवात्मा किया है। इससे एक बात तो यह स्पष्ट हुई कि गीता का अनुवाद करने वालों को भी ज्ञान नहीं तथा दूसरी बात यह स्पष्ट हुई कि परमेश्वर कबीर जी का ज्ञान प्रमाणित सद्ग्रन्थों से मेल करता है तथा जो इनमें नहीं है, वह ज्ञान भी परमेश्वर कबीर जी ने बताया है, वह स्वतः सत्य मानने योग्य है। यही ज्ञान परमेश्वर कबीर जी द्वारा जीव धर्म बोध पृष्ठ 7 में कहा है। पृष्ठ 8 से 12 तक अभिमान की जानकारी बताई है कि :-

पृष्ठ 8 :- ज्यों ज्यों जीव में तुच्छता आई। त्यों त्यों अधिक अहंकार समाई।।
ज्यों ज्यों श्रेष्ठ पद को पावै। त्यों त्यों तामें दीनता आवै।।

भावार्थ :- जीव में ज्यों-ज्यों नीचता आती है, उसमें अहंकार बढ़ता चला जाता है तथा ज्यों-ज्यों भक्ति करके आत्मा में अध्यात्म शक्ति बढ़ती है, त्यों-त्यों उस भक्त में आधीनी यानि दीनता आती है।

जीव धर्म बोध के पृष्ठ 9 पर कहा है कि अहंकार किसी को शरीर की शक्ति का होता है। किसी को राज्य का, किसी को धन का, किसी को परिवार में अधिक सदस्यों का हो जाता है। वह नाश का कारण बनता है। इसी प्रकार पृष्ठ 12 तक ज्ञान है कि परमेश्वर की दरगाह यानि परमात्मा के न्यायालय में न्याय होगा। हजरत सुलेमान की वाणी है कि जो तपस्वी तप करते हैं, उसका अभिमान करते हैं। यदि राई भर यानि जरा-सा भी अभिमान जीव को किसी भी प्रकार का है, वह बहिश्त (स्वर्ग) में पैर भी नहीं रख सकेगा। फिर मकबूल नाम के रसूल ने कहा कि जो दीन यानि आधीन होते हैं। उनको बड़ी पदवी प्राप्त होती है। पृष्ठ 11 पर कहा है कि कोई धन का अभिमान करता है। वह भी नरक का भागी होता है।

कबीर, सब जग निर्धना, धनवन्ता ना कोई। धनवन्ता सो जानियो, राम नाम धन होई।।
प्रथम अमीर (धनवंता) कबीर भया, पुनि अकबर अल्लाह। सो कबीर अकबर सोई, कहे कि ब्रिया ताह।।
अल्लाह जब बनि बैठिऊ, पहुँची उनकी मौत। दोजख में दाखिल भये, राजा सहित सब फौज।।

भावार्थ :- संसार में कोई धनवान नहीं है, सब निर्धन हैं। यदि कोई सांसारिक धनवान है तो मृत्यु के तुरंत बाद वह निर्धन है। केवल भक्त ही धनवान है, और कोई धनवान नहीं है। संसार में या तो कबीर धनवान है, या अकबर अल्लाह है। कबीर या अल्लाह अकबर एक ही है। अन्य

व्यक्ति जो अपने आपको परमात्मा मानता है, जैसे वर्तमान में जज अपने आपको लॉर्ड मानते हैं। यदि कोई वकील खासकर हाई कोर्ट तथा सुप्रीम कोर्ट के जजों को My Lord यानि मेरे मालिक कहकर संबोधित नहीं करते तो उनको कोर्ट से लाभ मिलने का अवसर कम होता है। जीव को होना चाहिए आधीन। बिना आध्यात्मिक ज्ञान के कारण जीव स्वयं को परमात्मा के तुल्य मानता है तो उसकी भारी भूल है। वह नरक में डाला जाता है। पृष्ठ 12 पर कहा है कि जिन्होंने सिर उठाया यानि अभिमान किया, उनका सिर टूटा है।

जीव धर्म बोध पृष्ठ 13 से 16 तक काम (Sex) के अवगुण बताए हैं। इनमें कुछ वाणी छोड़ी गई हैं, कुछ जोड़ी गई हैं। यथार्थ ज्ञान संत गरीबदास जी ने बताया है जो संत गरीबदास जी की अमृतवाणी में ''नारी के अंग'' में लिखी हैं। इस जीव धर्म बोध में केवल नारी को दोषी बताया है। यह कबीर पंथियों का गलत नजरिया रहा है जिन्होंने कबीर जी के ग्रन्थ का नाश किया है। जो घर त्यागकर या तो आश्रमों में रहते थे या विचरण करते थे। जिन्होंने विवाह नहीं किया था, उन्होंने अपने आपको उत्तम सिद्ध करने के लिए एकतरफा वाणी लिखी हैं जो नारी पक्ष की वाणी थी, वे काट दी गई हैं। संत गरीबदास जी ने अपनी वाणी में परमेश्वर कबीर जी की विचारधारा लिखी है।

''संत गरीबदास जी की वाणी - कामी नर के अंग से''

गरीब, कामी कर्ता ना भजै, हिरदै शूल बंबूल। ज्ञान लहरि फीकी लगै, गये राम गुण भूल।।1
गरीब, कामी कमंद चढै नहीं, हिरदै चंचल चोर। जाका मुख नहीं देखिये, पापी कठिन कठोर।।2
गरीब, कामी तजै न कामना, अंतर बसै कुजान। साधु संगति भावै नहीं, जुगन जुगन का श्वान।।3
गरीब, कामी तजै न कामना, हिरदा जाका बंक। जमपुर निश्चय जायगा, ज्ञानी मिलो असंख।।4
गरीब, कामी तजै न कामना, काला मौंहडा ताहि। जमपुर निश्चय जायगा, मौसी गिनैं न माय।।5
गरीब, कामी तजै न कामना, ना हिरदै हरि हेत। जमपुर निश्चय जायगा, सारे कुटुंब समेत।।6
गरीब, कामी जमपुर जात है, सतगुरु सैं नहीं साट। मसक बांध जम ले गया, कुलकूं लाया काट।।7
गरीब, हमरी बानी ना सुनैं, जम किंकर की मान। छाती तोरै देख तैं, होगी खैंचा तान।।8
गरीब, हमरी बानी ना सुनैं, पूजैं घोर मसीत। मसक बांधि जम ले गये, नहीं छुटावैं भीत।।9
गरीब, हमरी बानी ना सुनैं, देवल पूजन जाय। मसक बांधि जम ले गये, जुगन जुगन डहकाय।।10
गरीब, हमरी बानी ना सुनैं, ना सतगुरु का भाव। मसक बांधि जम ले गये, देकर बहुत संताव।।11
गरीब, कामी केला वृक्ष है, अंदर सैं थोथा। सतगुरु सतगुरु कहत है, ज्यूं पिंज्जर तोता।।12
गरीब, कामी का गुरु कामिनी, जैसी मीठी खांड। जोगनि जमपुर ले गई, मारे भडवे भांड।।13
गरीब, कामी कीड़ा नरक का, अंतर नहीं बिवेक। जोगनि जमपुर ले गई, क्या जिन्दा क्या शेख।।14
गरीब, कामी कीड़ा नरक का, क्या बैराग सन्यास। जोगनि जमपुर ले गई, बीतैं बहुत तिरास।।15
गरीब, कामी कीड़ा नरका का, क्या षट् दरशन भेष। जोगनि जमपुर ले गई, टुक आपा भी देख।।16
गरीब, साकट कै तो हरता करता, संतौं कै तो दासी। ज्ञानी कै तो धूमक धामा, पकरलिया जग फांसी।।17
गरीब, साकट कै तो हरता करता, संतौं कै तो चेरी। ज्ञानी कै तो दारमदारा, जगकूं देहै लोरी।।18
गरीब, तीन लोक में नाहिं अघाई, अजब चरित्र तेरे। सुरनर मुनिजन ज्ञानी ध्यानी, कीन्हैं सकल मुजेरे।।19
गरीब, इन्द्र कै अर्धगी नारी, भई उर्बशी हूरं। तीन लोक में डंका डाकनि, मार लिये सब घूरं।।20
गरीब, लोकपाल तौ लूट लिये हैं, नारद से मुनी ध्यानी। पाराऋषि श्रंगी ऋषि मोहे, सुनिले अकथ कहानी।।21

गरीब,अजयपाल का किया अलूफा,पकरि मच्छंदर खाया। कच्छ देश में गोरख पकरे,सतगुरु आंन छुटाया।।22
गरीब, गोपीचंद भरथरी होते, छाड़ि गये अर्धंगी। शुकदेव आगै हुरंभा आई, हो नाची है नंगी।।23
गरीब, बोलै शुकदेव सुनरी दूती, तूं हमरै क्यूं आई। हमतो बाल जती बैरागी, तूं है हमरी माई।।24
गरीब, मैं तुमरी अर्धंगी नारी, तूं हमरा भर्तारं। स्वर्ग लोक सैं हम चलि आई, देखो नाच सिंगारं।।25
गरीब, तुमरी नजर कुटिल है दूती, कड़वे नैंन कटारे। माता को तो नाता राखौं, हम हैं पुत्र तुम्हारे।।26
गरीब,सुलतानी तज बलख बुखारा, सोला सहंस सहेली। ठारा लाख तुरा जिन छाड्या, बंके बाग हवेली।।27
गरीब, नारी नांही नाहरी, बाघनि बुरी बलाय। नागनि सब जग डसि लिया, सतगुरु करै सहाय।।28
गरीब, नारी नांही नाहरी, बाघनि बुरी बलाय। नागनि सब जग डसि लिया, सतगुरु लिये छुटाय।।29
गरीब, सब जग घाणैं घालिया, बड़ी मचाई रौल। तपी उदासी ठगि लिये, ले छोड़े जम पौल।।30
गरीब, नारी नाहीं नाहरी, खाती है दरवेश। बिष्णु बिसंभर से रते, मोहे शंकर शेष।।31
गरीब, नारी नाहीं नाहरी, शिर टौरा रविचंद। तेतीसों देवा डसे, पकरि लिये हैं इन्द।।32
गरीब, नारी नाहीं नाहरी, बाघनि है महमंत। ब्रह्मा का मन डिग्या, कहा करेंगे पंथ।।33
गरीब, नारी नाहीं नाहरी, बाघनि है महमंत। जीव बापरे की कौन चलावै, पकरि लिये भगवंत।।34
गरीब, नारी नाहीं नाहरी, बाघनि किये संघार। अनाथ जीव की कौन चलावै, पकर लिये अवतार।।35
गरीब, नारी नाहीं नाहरी, बाघनि है महमंत। सतगुरु के प्रताप सैं, उबरे कोईक संत।।36
बाघनि आईरे बघनी, बाघनि आईरे बघनी। नागनि खाती है ठगनी, नागनि खाती है ठगनी।।37
मुनियर मोहे हैं दूती, मुनियर मोहे हैं दूती। सतगुरु कै काली कूती, सतगुरु कै काली कूती।।38
इन्द्र कै तो पटरानी, इन्द्र कै तो पटरानी। ब्रह्मा भरता है पानी, ब्रह्मा भरता है पानी।।39
शंकर पलकौं पर राखै, शंकर पलकौं पर राखै। वंषभ पर चढि कर हांकै, वंषभ पर चढि कर हांकै।।40
बिष्णु बिलावल बीना है, बिष्णु बिलावल बीना है। लक्ष्मी स्यूं ल्यौ लीना है, लक्ष्मी स्यूं ल्यौ लीना है।।41
त्रिगुण ताना है तूरा, त्रिगुण ताना है तूरा। साधू निकसैंगे शूरा, साधू निकसैंगे शूरा।।42
याह मल मुत्र की काया, याह मल मुत्र की काया। दुर्बासा गोता खाया, दुर्बासा गोता खाया।।43
डाकनि डांडेरे डोबै, डाकनि डांडेरे डोबै। बैठी पास नहीं शोभै, बैठी पास नहीं शोभै।।44

(क)।। पूज्य कबीर जी तथा माया का संवाद।।

माया सतगुरु सूं अटकी, माया सतगुरु सूं अटकी। जोगनि हमरै क्यूं भटकी, जोगनि हमरै क्यूं भटकी।।45
हम तो भगलीगर जोगी, हम तो भगलीगर जोगी। हम नहीं मायाके भोगी, हम नहीं मायाके भोगी।।46
तोमैं झगरा है भारी, तोमैं झगरा है भारी। मारे बड़ छत्रधारी, मारे बड़ छत्रधारी।।47
सेवा करिसूं मैं नीकी, सेवा करिसूं मैं नीकी। हमकूं लागत है फीकी, हमकूं लागत है फीकी।।48
हमरी सार नहीं जानी, हमरी सार नहीं जानी। अरीतैंतोघालि दई घानी, अरीतैंतोघालि दई घानी।।49
चलती फिरती क्यूं नांहीं,चलती फिरती क्यूं नांहीं। हम रहते अबिगत पद मांही,हम रहते अबिगतपद मांहीं।।50
अरी तूं गहली है गोली, अरी तूं गहली है गोली। दाग लगावैगी चोली, दाग लगावैगी चोली।।51
मेरा अंजन है नूरी, मेरा अंजन है नूरी। अंदर महकै कस्तूरी, अंदर महकै कस्तूरी।।52
तुम किसी राजा पै जावो, तुम किसी राजा पै जावो। हमरे मन नांहीं भावो, हमरे मन नाहीं भावो।।53
मैं तो अर्धगीं दासी, मैं तो अर्धगीं दासी। हम हैं अनहदपुर बासी, हम हैं अनहदपुर बासी।।54
हमरा अनहद में डेरा, हमरा अनहद में डेरा। अंत न पावैगी मेरा, अंत न पावैगी मेरा।।55
हमतो आदि जुगादिनिजी, हमतो आदि जुगादिनिजी। अरी तुझे माता कहूंकधी,अरी तुझे माता कहूंकधी।।56

अब मैं देऊंगी गारी, अब मैं देऊंगी गारी। हमतो जोगी ब्रह्मचारी, हमतो जोगी ब्रह्मचारी।।57
आसन बंधूंगी जिंदा, आसन बंधूंगी जिंदा। गल में डारौंगी फंदा, गल में डारौंगी फंदा।।58
आसन मुक्ता री माई, आसन मुक्ता री माई। तीनूं लोक न अघाई, तीनूं लोक न अघाई।।59
हमरै द्वारै क्यूं रोवौ, हमरै द्वारै क्यूं रोवौ। किसी राजाराणेकूं जोवौ, किसी राजाराणेकूं जोवौ।।60
हमरै भांग नहीं भूनी, हमरै भांग नहीं भूनी। माया शीश कूटि रूनी, माया शीश कूटि रूनी।।61
तूंतो जोगनि है खंडी, तूंतो जोगनि है खंडी। मौहरा फेरि चली लंडी, मौहरा फेरि चली लंडी।।62
हेला दीन्हारि भाई, हेला दीन्हारि भाई। हंसा परसत ही खाई, हंसा परसत ही खाई।।63

(ख)।। बुरी नारी के विषय में।।

गरीब, बद नारी लंगर कामिनी, बोले मधुरे हेत। फेट परै छोडैं नहीं, क्या मगहर कुरुखेत।।64
गरीब, बद नारी लंगर कामिनी, बोलै मधुरे बोल। फेट परै छोड़ैं नहीं, काढै घूंघट झोल।।65
गरीब, बद नारी लंगर कामिनी, बोले मधुरे बोल। कोईक साधू ऊबरे, मुनिजन पीये घोल।।66
गरीब, बद नारी लंगर कामिनी, जामें अनगिन खोट। फांसी डारै बाहि कर, करै लाख में चोट।।67
गरीब, बद नारी लंगर कामिनी, बोलै मुधरे बैंन। जाकूं नहीं पतीजिये, घूंघट घट में सैंन।।68
गरीब, बद नारी लंगर कामिनी, बोले मधुरे बैंन। जाके पास न बैठिये, जाका कैसा दैंन।।69
गरीब, बद नारी नाहीं नाहरी, है जंगल का शेर। बाहर भीतर मारि है, मुनि जन कीये जेर।।70
गरीब, सतगुरु हेला देत हैं, सुनियों संत सुजान। बद नारी पास न बैठिये, बद नारी आई खान।।71
गरीब, नैंनौं काजर बाहि कर, खाय लिये हैं हंस। हाथौं महंदी लाय कर, डोबि दिये कुल बंश।।72
गरीब, उलटि मांग भराय कर, मंजन करि हैं गात। मीठी बोलै मगन होय, लावै बौह बिधि घात।।73
गरीब, पूत पूत करि खा गई, भाई बीरा होय। खसम खसम करि पीगई, बदनारी विष की लोय।।74
गरीब, क्या बेटी क्या बहन है, क्या माता क्या जोय। बदनारी काली नागिनी, खाते होय सो होय।।75
गरीब, माया काली नागनी, अपने जाये खात। कुंडली में छोड़ै नहीं, सौ बातौं की बात।।76
गरीब, कुंडली में सैं नीकले, रहदास दत्त संग कबीर। शुकदेव ध्रु प्रहलाद से, नहीं निकले रणधीर।।77
गरीब, कुंडली में सैं नीकले, सुलतानी बाजीद। गोपीचंद ना भरथरी, लाई डाक फरीद।।78
गरीब, जनक विदेही नहीं ऊबरे, नागनी बंधी डाढ। नानक दादू ऊबरे, ले सतगुरु की आड।।79
गरीब, तीन लोक घाणी घली, चौदाह भुवन विहंड। माया नागनि खा लिये, सकल द्वीप नौ खंड।।80
गरीब, बदनारी काली नागनी, देखत ही डसि खाय। बोले से तप खंड होय, परसे सरबस जाय।।81
गरीब, बदनारी काली नागनी, मारत है भरि डंक। सुरनर मुनिजन डसि लिये, खाये राव रु रंक।।82
गरीब, बदनारी काली नागनी, मारत है भरि डंक। शब्द गारडू जो मिले, जाकूं कछु न शंक।।83
गरीब, नाग दमन कूं नमत है, घालि पिटारे खेल। साचा सतगुरु गारडू, लहरि न व्यापै पेल।।84
गरीब, कामी कोयला हो गया, चढै न दूजा रंग। पर नारी स्यूं बंधि गया, कोटि कहो प्रसंग।।85
गरीब, पर नारी नहीं परसिये, मानों शब्द हमार। भुवन चतुरदश तास पर, त्रिलोकी का भार।।86
गरीब, परनारी नहीं परसिये, सुनों शब्द सलतंत। धर्मराय के खंभ सैं, अधमुखी लटकंत।।87
गरीब, आवत मुख नहीं देखिये, जाती की नहीं पीठ। क्या अपनी क्या और की,सब ही बद नारि अंगीठ।।88
गरीब, क्या अपनी क्या और की, सब का एकै मंत। पारस पूंजी जात है, पारा बिंद खिसंत।।89
गरीब, क्या अपनी क्या और की,सब एक सी बदनार। पारस पूंजी जात है, खिसता बिंद सिंभार।।90
गरीब, बोलूंगा निर्पक्ष हो, जो चाहै सो कीन। क्या अपनी क्या और की, सब ही बदनारि मलीन।।91

(क)।। नेक नारी की महिमा।।

गरीब, नारी नारी भेद है, एक मैली एक पाख। जा उदर ध्रुव ऊपजे, जाकी भरिये साषि।।92
गरीब, कामनि कामनि भेद है, एक मैली एक पाख। जा उदर प्रहलाद थे, जाकूं जोरौं हाथ।।93
गरीब, कामनि कामनि भेद है, एक उजल एक गंध। जा माता प्रणाम है, जहां भरथरि गोपीचंद।।94
गरीब, कामनि कामनि भेद है, एक हीरा एक लाल। दत्त गुसांई अवतरे, अनसूया कै नाल।।95
गरीब, कामनि कामनि भेद है, एक रोझं एक हंस। जनक बिदेही अवतरे, धन्य माता कुलबंश।।96
गरीब, नारी नारी क्या करै, नारी बहु गुण भेव। जा माता कुरबान है, जहां उपजे शुकदेव।।97
गरीब, नारी नारी क्या करै, नारी कंचन कूप। नारी सेती ऊपजे, नामदेव से भूप।।98
गरीब, नारी नारी क्या करै, नारी भक्ति बिलास। नारी सेती ऊपजे, धना भक्त रैदास।।99
गरीब, नारी नारी क्या करै, नारी कंचन सींध। नारी सेती ऊपजे, बाजीदा रु फरीद।।100
गरीब, नारी नारी क्या करै, नारी में बौह भांत। नारी सेती ऊपजे, शीतलपुरी सुनाथ।।101
गरीब, नारी नारी क्या करै, नारी कूं निरताय। नारी सेती ऊपजे, रामानंद पंथ चलाय।।102
गरीब, नारी नारी क्या करै, नारी नर की खान। नारी सेती ऊपजे, नानक पद निरबान।।103
गरीब, नारी नारी क्या करै, नारी सरगुण बेल। नारी सेती ऊपजे, दादू भक्त हमेल।।104
गरीब, नारी नारी क्या करै, नारी का प्रकाश। नारी सेती ऊपजे, नारदमुनि से दास।।105
गरीब, नारी नारी क्या करै, नारी निर्गुण नेश। नारी सेती ऊपजे, ब्रह्मा बिष्णु महेश।।106
गरीब, नारी नारी क्या करै, नारी मूला माय। ब्रह्म जोगनी आदि है, चरण कमल ल्यौ लाय।।107
गरीब, नारी नारी क्या करै, नारी बिन क्या होय। आदि माया ऊँकार है, देखौ सुरति समोय।।108
गरीब, शब्द स्वरूपी ऊतरे, सतगुरु सत्य कबीर। दास गरीब दयाल हैं, डिगे बंधावैं धीर।।109

भावार्थ :- संत गरीबदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से प्राप्त ज्ञान को अपने शब्दों में इस प्रकार बताया है कि जो पुरूष कामी (Sexy) यानि दुराचारी है। वह भी पाप का भागी है और नारी यदि व्याभिचारिणी है तो वह भी पाप की भागी है। जिन माताओं के गर्भ से उच्च संतों का जन्म हुआ है, वे नारी आदरणीय हैं। नारी से ब्रह्मा, विष्णु, महेश का जन्म हुआ, नारी से दत्तात्रेय जैसे महापुरूष का जन्म हुआ। नारी से धना भक्त, नानक देव, स्वामी रामानंद, संत दादू जी आदि महापुरूषों का जन्म हुआ।

गरीब, नारी नारी क्या करे, नारी नर की खान। नारी सेती उपजे, नानक पद निरबान।।

भावार्थ :- नारी-नारी के पीछे क्यों पड़े हो? नारी तो नर की खान है। खान का भावार्थ है कि सौ-सौ पुत्रों को जन्म एक नारी ने दिया है। यदि नारी न होती तो नारी को जो बुरी कहते हैं, वे कहाँ से जन्म लेते? भावार्थ स्पष्ट है कि दुराचारी चाहे स्त्री हो या पुरूष, दोनों ही पाप के भागी हैं। यदि भक्ति करते हैं तो उनके पाप क्षमा हो जाते हैं। सत्संग विचारों तथा भक्ति के प्रभाव से विकार समाप्त हो जाते हैं। कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि यदि आप किसी व्यक्ति को इस कारण से गंदा मानते हो कि उसने किसी परनारी से संबंध किया है।

कबीर, आग पराई आपनी, हाथ दियें जल जाये। नारी पराई आपनी, परसें बिन्द नसाया।।

भावार्थ :- जैसे अग्नि अपने घर की हो, चाहे दूसरे घर की, हाथ देने से हाथ जलेगा। इसी प्रकार स्त्री अपनी हो या अन्य की, मिलन करने से एक जैसी ही हानि होती है। परंतु भक्ति मार्ग पर लगने से सुधार हो जाता है। दोनों ही पार हो जाते हैं।

गीता अध्याय 9 श्लोक 30 में भी कहा है कि यदि कोई अतिश्य दुराचारी भी क्यों न हो, यदि वह परमात्मा में विश्वास रखता है तो साधु मानने योग्य है। सत्संग में आने से सुधार हो जाता है और कल्याण को प्राप्त हो जाता है।

जीव धर्म बोध पंष्ठ 17(1925) से 18(1926) तक क्रोध तथा लोभ का वर्णन है।

१७ जीवधर्मबोध (१९२५)

चैतन्यभे जड़ रूप जड़, चित चेत निजु उर आनेऊ।
शृंगार साजन लाल कहुं, कुसु कानिको मन मानेऊ !

इति काम

अथ क्रोधवर्णन-चौपाई

द्वितीये क्रोध महा बलवंता। सोसमस्त शुभ गुनको हन्ता ॥
जाको देखि बुद्धिवर कम्पत। रहै न निकट भाजिहो चंपत ॥
महा काल यह क्रोध उचारा। यह खल प्रकट होय जेहिबारा॥
धर्मको लेश रंच नहिं रहई। यह अपराधी जप तप दहई ॥
प्रलय करे सतगुनहि बिडारा। आप दाहि और न दुहि डारा॥
वर्षहजार जो मुनि तप कीने। पलमें क्रोध भ्रष्ट करि दीने ॥
नरकवास मुनि बरहि पठाई। कतहुँ न रही ज्ञान गहिराई ॥
तप जप कहां क्रोध जब होई। जिवको निश्चय नरक बिगोई ॥
सकल धर्मकी धूल उडावे। क्रोधको अंधकार जब आवै ॥
अहंकार क्रोधादि विकारा। तुच्छ जीवमें अधिक निहारा॥
कीडा एक रहे घासनमें। ऐसो क्रोध ताहिके मनमें ॥
जो कोई ताको परसे जाई। महा-क्रोध ताके उर छाई ॥
क्रोधितह्वै अस मनहि बिचारी। छूवन हार को डारो मारी ॥
कूदे उछले जो रन चलई। आपको अबल जानिके टलई॥

इति क्रोध

अथ लोभवर्णन-चौपाई

तृतिये लोभकी कथा बखानी। शुभ गति लहै न लोभी प्रानी॥
लोभी निशदिन माला फेरा। ताको पार होय नहिं बेरा ॥
सूम है नरक केर अधिकारी।जपतप कियहु न जन्म सुधारी॥
लोभी जीव जेते जग माहीं। नरक हेत सबही सो आहीं ॥
लोभ ते शुभ करनी नहिं भावै। सोई सब अघकर्म करावै ॥

(१९२६) 1990 बोधसागर १८

सो नरपर कलियुग को बासा। तेहि प्रिय कीने बुद्धि विनासा॥
सोई दुष्ट सब करे अकाजा। प्रीछित धर्म-धुरंधर राजा ॥
ताहूको सो बुद्धि बिगारा। कञ्चनपरकलि आसन धारा ॥
धर्म महम्मद करे बखाना। सोरनको भागी शैताना ॥
गहि कर कञ्चनदग न लगाये। चूमि ताहि पुनि कह गोहराये॥
कञ्चनसे जो प्रीति लगाई। सो नहिं भगवत भक्ती पाई ॥
सो लोभी इबलीसको बन्दा। निश्चय परे ताहिके फन्दा ॥
पुनि ऐसो इबलीस पुकारा। साधु सूम है मित्र हमारा ॥
सूम साधु जो जप तप करई। लोभ समस्त कृपा संहरई ॥
तैसे पापी दाता जोई। परमशत्रु मेरो है सोई ॥
जो कछु पाप करे सो दाता। दान किये सो सकल निपाता॥
सो शैतानके वश नहिं परई। दाता कोटि पाप जो करई ॥
दोय वृक्ष द्वै ठौरमें देखा। यक औदारता लोभ है एका॥
दानवृक्ष वैकुण्ठमें बरनी। गड़ी तासु जड़ ताही धरनी ॥
साष तासु दुनियामें आई। नरहित हेत सो दियो झुकाई॥
जो कोई पकरे साष सखावत। सो निश्चयबिहिशतको जावत॥
साष सखावत पकरि जो रहई। अघ औगुन सब ताको दहई ॥
नवीन प्रसंशिके बचन सुनावै। सखी अवश्य मेरे ढिग आवै ॥
ऐसहि लोभवृक्षकी लड़ है। घोर नरकमें ताकी जड़ है ॥
साष तासु जगमाह झुकाई। जो कोइ गहै नरकमें जाई ॥
शुभ करनी सब तासु नशावै। सूमको दौजखमें पहुँचावै ॥
सब धर्मनको मत है एहा। लोभी करे नरकमें गेहा ॥

अथ मोहवर्णन-चौपाई

चौथे मोह महा दुःखदानी। भव भोगनकी यही निशानी ॥
ता पिता सुहृद परिवारा। सगे सहोदर सह सुत दारा ॥

पंष्ठ 17-18 की वाणियों का भावार्थ :-

क्रोध के विषय में कहा है कि क्रोध को महाकाल कहा जाता है। यह बुद्धि का नाश करता है। क्रोध सदा अपने से निर्बल पर आता है। अपने से बलवान पर नहीं आता। प्रत्येक जीव में क्रोध परिपूर्ण है। किसी कीड़े को यदि कोई छूता है तो वह छटपटाता है। वह मन में विचार करता है कि जिसने मुझे छूआ है, उसको मार डालूं। जब बलवान दिखता है तो चुप हो जाता है। यह क्रोध का प्रभाव है।

''लोभ''

लोभ करने वाला कभी शुभ कर्म नहीं कर सकता। धन जोड़कर रख जाता है। फिर नरक का भागी बनता है। उसका धन या तो उसके सामने ही किसी कारण से नष्ट हो जाएगा या कोई चोर, डाकू, लुटेरा उसको मार-कूटकर छाती पर पैर रखकर छीन ले जाएगा। इसलिए प्रत्येक

व्यक्ति का कर्तव्य बताया है कि वह भक्ति करे, गुरू बनाए और फिर दान अवश्य करे। महाभारत ग्रन्थ में एक प्रकरण है कि राजा परिक्षित ने कलयुग को वश कर लिया था। कलयुग ने कहा था मुझे दो स्थानों पर रहने की आज्ञा दे दो। एक तो स्वर्ण (Gold) पर, दूसरे शराब पर। राजा परीक्षित ने उसको यह शर्तें मानकर छोड़ दिया। एक दिन राजा सिर पर स्वर्ण लगा मुकुट धारण करके शिकार करने जंगल में गया। कलयुग ने मारवी का रूप बनाया और राजा परिक्षित के स्वर्ण के मुकुट पर बैठ गया। जिस कारण से राजा परीक्षित का मन कलयुग के प्रभाव से दूषित हो गया। राजा ने एक भीण्डी नाम के ऋषि से जंगल से बाहर जाने का मार्ग पूछा। ऋषि साधना में लीन था, सुना नहीं। जिस कारण से कोई उत्तर नहीं दिया। राजा ने एक मृत सर्प शरारतवश ऋषि के गले में डाल दिया। ऋषि का पुत्र बच्चों में खेल रहा था। बच्चों ने उसे बताया कि राजा परीक्षित ने आपके पिता के गले में सर्प डाल दिया है। ऋषि के बच्चे ने शॉप दे दिया कि आज से सातवें दिन परीक्षित राजा को तक्षक सर्प डसेगा, उसकी मृत्यु हो जाएगी। ऐसा ही हुआ। इसलिए भक्तों को चाहिए कि वे सोने (Gold) का प्रयोग कभी न करें।

फिर कहा है कि मुसलमान धर्म में भी कहा है कि स्वर्ण में शैतान का निवास है। इबलिस नाम का शैतान बताया है। वह कहता है कि जो सूम यानि कंजूम जो धर्म नहीं करता, वह मेरा मित्र है। उसको नरक लेकर जाऊँगा।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि यदि जप, तप साधु भी करता है और दक्षिणा से पुण्य नहीं करता तो उसका वह प्रयत्न व्यर्थ है।

जो कछु पाप करे सो दाता। दान किये सो सकल निपाता।।

दान से पाप नष्ट हो जाता है। सभी धर्मों का यही मत है कि जो लोभ करता है, दान नहीं करता, वह नरक में गिरता है।

''मोह''

जिस परिवार में प्राणी जन्म लेता है, उसी में मोह हो जाता है। संपत्ति, माता-पिता, भाई-बहन फिर पति-पत्नी तथा संतान के मोह में जकड़ जाता है। जब सतगुरू मिलता है तो सर्व ज्ञान हो जाता है। फिर केवल अपना फर्ज तथा कर्ज जानकर सांसारिक कर्म करता है तथा भक्ति तथा शुभ कर्मों पर अधिक धन लगाता है। इस प्रकार उपरोक्त विकारों से छुटकारा पाकर कल्याण को प्राप्त होता है।

जीव धर्म बोध पृष्ठ 20 से 28 तक का सारांश :-

''कर भला हो भला, करे बुरा हो बुरा''

परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि कर भला यानि दूसरे का भला करने से अपना भला होता है। दूसरा का बुरा करने से अपना बुरा होता है।

उदाहरण :- एक सेठ के पास एक बैल था। उसके ऊपर सामान लादकर बाजार ले जाया करता। पुराने जमाने में ऐसे ही सामान लाने-ले जाने की सुविधा होती थी। उस समय बैलगाड़ी का विकास नहीं हुआ था। व्यापारी लोग बैलों पर गधे की तरह बोरा (थैला) रखकर सामान का लाना-ले जाना करते थे। उस सेठ के पड़ोस में एक धोबी रहता था। उसके पास एक गधा था। गधा कभी-कभी ऊँचे स्वर में बोलता था। सेठ माया का जोड़ करता था। गधा बोलने लगता, सेठ गिनती भूल जाता। सेठ कहता था कि धोबी का गधा मर जाए तो शांति हो जाए। एक दिन सेठ का बैल मर गया। फिर वह मोगल नामक सेठ परमात्मा को दोष देने लगा कि हे भगवान! तूने

यह क्या किया?

एक किसान दूसरे किसान की फसल खेत के बीच से काटकर अपने घर ले जाता था। दूसरा किसान उसकी फसल की रखवाली अपनी फसल के साथ-साथ करता था। कोई पशु उसके खेत में फसल खाने के लिए घुस जाता तो दूसरा किसान उसकी फसल से आवारा पशु को निकालता था। जो चोरी करता था, उसकी फसल को रोग लग गया। दूसरे किसान की फसल सामान्य से अधिक निकली। तब उस चोर को अहसास हुआ तथा अपनी गलती मानी। तब दूसरे किसान ने कहा, हे भाई! सतगुरू जी कहते हैं कि चोर कभी धनवान नहीं होता। चोरी करता है सौ रूपये की, उसको हानि होती है हजार रूपये की। उसको जिसके धन की चोरी चोर करता है, उसको परमात्मा अधिक देता है। इस प्रकार भला करने वाले का भला तथा बुरा करने वाले का बुरा होता है।

मोहितजि और कतहु कोइ नाही । भ्रमकरि भिन्न भाव दरसाही ॥
मेरो मन अरू तन सब मेरो । तनमें मन मनमें प्रभु डेरो ॥
लखे अलखगति झगरा टूटा । जीव काल बंधनते छूटा ॥
अपनी देह सकल जग जानी । ताते सबहीको सनमानी ॥
काहूको नहिं करे निरादर । सब कोइ ओढ़े मेरी चादर ॥
स्वर्ग नरक मृत आपै आपा । जैसो कर्म तहां ले थापा ॥
सबदिल महल वहां प्रभुको है । आपै आप सर्वमें सोहै ॥
काहूको अनभल नहिं ताका । निजु अनभल ताते परिपाका ॥
औरको अनभल ताके जोई । अनभल अवश्य ताहिको होई ॥
एक मोगल क्रमकरे जो बनियां। तेहिढ़िग रह यक बैललदनियां॥
मोगल परोसी धोबी रहई । लादनको एक गदहा गहई ॥
जिमि औसर खर करे पुकारा । मोगल दुखित होय तेहि बारा ॥
प्रभुसे नीति अस विनय उचरई । यहि धोबीको गदहा मरई ॥
यकदिन ऐसे कारन भयऊ । बैल मोगलको तब मरि गैऊ ॥
तिहि औसर मोगल गहि रोषा । परमेश्वरहि लगावै दोषा ॥
केते काल खुदाई कीना । गदहा बैल अजौ नहिं चीन्हा ॥
ऐसेहि सकल जीव अज्ञानी । प्रभु कह दोष लगावहि प्रानी ॥
सो नहिं दोष लगावन योगा । सबजिवनिजु२क्रमफल भोगा ॥
परभल किये भला हो अपना । निश्चय यह प्रमाण करिथपना ॥
जो काहूको कछु दुःख देई ।सो दुःख अवश्य आप शिरलेई॥
जो सबला अबला दुःखदानी । सो दुख अपने सिरपर आनी ॥
मांसरुधिर जिन जाको चाखा । परगल काटि आपसुख राखा ॥
औरकोशिरनहिनिजु शिरकाटा । अपनो तनकर बारह बाटा ॥
कोटिन यतन करे किन कोई । बदला अमिट छुटैं नहिं सोई ॥

''कर्म बंधन तथा छुटकारा''

अष्ट कर्म विधि जैन बखाना । बहुरि मिमांसा कर्मप्रधाना ॥
सत्यकबीर कहै पुनि ऐसे । सब जिव कर्म फन्दमें पैसे ॥

सत्यकबीर वचन-कर्मखंडकी रमैनी

कर्महि धरती पवन अकाशा । कर्महि चंद सूर परकाशा ॥
कर्महि ब्रह्मा विष्णु महेशा । कर्महि ते भये गौरि गणेशा ॥
सात वार पंद्रह तिथि साजा । नौग्रह ऊपर कर्म बिराजा ॥
कर्महि राम कृष्ण औतारा । कर्महि कंस रावन संसारा ॥
साखी-कबीर कर्म रख सागरबंध्यौ, सौ योजन मरजाद ॥
बिन अक्षर कोइ ना छुटै, सो अक्षर अगम अगाध ॥

रमैनी

सो सागर भवसागर धारा । नहिं कछु सूझै वार न पारा ॥
तहँवा बावन अक्षर लेखा । कर्मरेख सबहिन पर देखा ॥
कर्मरेख बांधा सब कोई । खानी बानी देख बिलोई ॥
वेद कतेव कर्मही गाया । कर्महिको निह कर्म बताया ॥
सतगुरु मिले तो भेद बतावे । कर्म अकर्ममध्य देखलावे ॥
कर्मरेख तहँवा लगि राखा । जहँलगि वेद व्यास कछु भाषा ॥
साखी-कबीर कर्मफांस छूटे नहीं, केतो करे उपाय ॥
सतगुरु मिले तो ऊबरे, नातो परलय जाय ॥
कबीर बहु बंधनते बांधिया, एक बिचारा जीव ॥
जीव बिचारा क्या करे, जो न छुडावे पीव ॥

रमैनी

सूरा होय सो सन्मुख जूझै । भोंदू शब्द भेद नहिं बूझै ॥
दुखिया होय रैन दिन रोवे । भोगी भोग करे सुख सोवै ॥
दुःख सुख भोग सोग सम जाने। भली बुरी कछु मन नहिं आने॥
भली बुरीको करे सो त्याग । निश्चै पावै पद वैराग ॥

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने बताया है कि सर्व प्राणी कर्मों के वश जन्मते-मरते तथा कर्म करते हैं। कर्मों के बंधन को सतगुरू छुड़ा देता है।

जीव धर्म बोध पष्ठ 29(1937)-30(1938) :-

''सार शब्द गुप्त रखने को कहना''

साखी–आसन साधे आपमें, आपा डारे खोय।
कहैं कबीर सो योगी, सहजे निर्मल होय॥

कुण्डलिया

मानुष है नहिं कोई मुवा, मुवा सो डंगर ढोर।
चौरासी भर्मत फिरे, टूटै न कर्मकी डोर॥
टूटै न कर्मकी डोर, भोर बुधि जहँ तहँ भटके।
लहे न ज्ञान अनूप, कूप भवमें पुनि पटके॥
पुनि पुनि पटके काल, कर्म बेरी पग भारी।
वचन कह यक मृग चोट, जहां लख कोट शिकारी॥

चौपाई

कृपा करे गुरु धनी दयाला। जीवहि खच लोक ले चाला॥
ताकी कृपा योग जब होना। लगे मही तब कालको टोना॥
कृपा योग जबलों नहिं लोई। कृपा कौनविधि तापर होई॥

सत्यकबीर वचन

धर्मदास तोहि लाख दोहाई। सार शब्द बाहर नहिं जाई॥
सारशब्द बाहर जो परि है। बिचले पीढी हंस नहिं तरि है॥
युगन युगन तुम सेवा कीनी। ता पीछे हम इहां पगदीनी॥
कोटिन जन्म भक्ति जबकीन्हा। सारशब्द तबही पै चीन्हा॥
अंकूरी जिव होय जो कोई। सारशब्द अधिकारी सोई॥
सत्यकबीर प्रमाण बखाना। ऐसो कठिन है पद निर्वाना॥
पै दुतिये विधि कह्यो बहोरी। जापर सद्गुरु कृपा न थोरी॥
धर्मदास प्रति ऐसे कहेऊ। मांगु जो कछु तेरो चित चहेऊ॥
धर्मदास तब वचन उचारा। तारो मोहि सहित परिवारा॥
पिता पितामह सखा समेता। सबहि पारकर कृपानिकेता॥

तेहि अवसर सतगुरु विहसाना। का मांगे कछु मांग न जाना॥
तारो सकल सृष्टिको भाई। तुम तो आप रहे अरुगाई॥
यामें नहिं कछु दोष तुम्हारा। कालपुरुष तुमरी मति मारा॥
ऐसो समरथ सत्य कबीरा। पलमें सब कम कागज चीरा॥
कोटिन जन्म जो परा भुलेषा। करे जो कृपा चुकावै लेखा॥
जहँ तहँ देख आप सद्गुरु है। नहिं कहुँ असुर नहीं कहुँ सुर है॥
असुर भाव जब सुरको आया। ता छन ताको असुर बनाया॥
सुरते असुर असुर सुर होई। नारिते पुरुष पुरुष तिय सोई॥
नीचते ऊंच ऊंचते नीचा। उत्तम मध्यम योनिमें खींचा॥
ताते देखो दृष्टि पसारी। सकलधर्म प्रभु आप बिहारी॥
मेरे मतसों सब धर्मनमें। खेले खेल सकल कर्मनमें॥
जो कोइ चीन्हे लाल बिहारी। दुबिधा सकल दूरकरि डारी॥

सत्यकबीर वचन

राम रहीम करीमा केशव हरि हजरतहै सोई।
गहना एकै दृढ है गहना दुतिया और न कोई॥

चौपाई

सब धर्मनमें आपै खेले। एक दूसरेसे नहिं मेले॥
भर्मत सारी सृष्टि भुलानी। होय चहूँदिश ऐंचातानी॥
झूठ सांच जब लख सविवेका। झूठको तज गहु सत्तको टेका॥
यह संसार सकल भ्रम छाही। भ्रमकरि सर्व सत्य दरशाही॥
एक अनेक अनेक भो एका। ज्ञानते होय सो एक अनेका॥
यथा कांचके मंदिर माहीं। कोटिन मणि मानिक रहजाहीं॥
झाड़ फनूस अनेकन टांगा। तामें यक भ्रम दीपक जागा॥
भ्रम दीपक जब तहां प्रकासा। कोटिन दीप मंदिरहि भाषा॥
यक प्रतिबिम्ब अनेकन देखो। वार न पार लेख कह लेखो॥

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी से प्रतिज्ञा कराई थी कि सार शब्द को गुप्त रखना है। अपने परिवार को भी नहीं बताना है। यदि यह सार शब्द बाहर चला गया तो बिचली पीढ़ी (यानि कलयुग के पाँच हजार पाँच सौ पाँच वर्ष बीतने पर जो भक्ति युग प्रारम्भ होगा, वह बिचली पीढ़ी परमेश्वर कबीर जी ने कही है।) के हंस पार नहीं हो पाएंगे क्योंकि यदि काल द्वारा चलाए गए कबीर जी के नाम से बारह पंथ तथा सतलोक और सतपुरूष के नाम पर चल रहे राधा स्वामी पंथ (आगरा, ब्यास, दिनौंद जिला-भिवानी में तथा धन-धन सतगुरू पंथ सच्चा सौदा सिरसा तथा जगमाल वाली जिला-सिरसा तथा मथुरा में जय गुरूदेव पंथ ये सब राधा स्वामी पंथ से निकले पंथ हैं और सब सतलोक तथा सतपुरूष की चर्चा करते हैं।) के संतों को सत्यनाम तथा सार शब्द का पता चल गया तो ये भी यही नाम मंत्र दीक्षा में दिया करेंगे। ये अधिकारी होंगे नहीं, जिस कारण से सत्यनाम तथा सार शब्द उनसे प्राप्त करके जाप करने से लाभ नहीं होगा। उस समय सन् 1997 तक ये सब पंथ चरम पर होंगे। करोड़ों अनुयाई बन चुके होंगे। जब हम जाऐंगे या अपना निजी दास भेजेंगे तो नाम तो वे ही देने हैं। उनके बिना मोक्ष नहीं हो सकता। सब मानव भ्रमित

हो जाएंगे कि दीक्षा मंत्र तो एक जैसे हैं, वे पंथ पुराने हैं क्योंकि वे काल द्वारा पहले चलाए जाऐंगे। अनुयाईयों की सँख्या भी अत्यधिक है। इसलिए उन्हीं से दीक्षा लेनी चाहिए। इस प्रकार सार शब्द का भेद अन्य को लगने से मेरे मिशन (योजना) का नाश हो जाएगा। तुझे महापाप लगेगा। फिर बताया है कि हे धर्मदास! आपने जन्म-जन्मांतर में भक्ति की थी जिस कारण से यह सार शब्द तुझे दिया है। कलयुग की बिचली पीढ़ी को पहले गायत्री पाँच नाम मंत्र को सात नाम का बनाकर दिया जाएगा। उसकी साधना कराई जाएगी। सत्यनाम की दीक्षा दी जाएगी। उसकी साधना कराई जाएगी। इस प्रकार भक्ति युक्त करके सार शब्द देकर अनगिन जीवों को उस समय (जब कलयुग 5505 वर्ष बीत जाएगा और एक यथार्थ पंथ चलाएंगे) पार करेंगे। जो तेरे परिवार की बिंद पीढ़ी चूड़ामणी को पाँच नाम गायत्री मंत्र के दिए हैं। यदि इन नामों का जाप मर्यादा में रहकर करते रहेंगे तो तेरी संतान तथा जो इन से दीक्षा लेकर इन पाँच नामों का जाप करते रहेंगे तो उनको मनुष्य (स्त्री-पुरूष) का जन्म प्राप्त होता रहेगा। फिर वे उस समय (जब कलयुग 5505 वर्ष बीत जाएगा) यानि सन् 1997 के पश्चात् तेरी पीढ़ी वाले भी उसी पंथ से दीक्षित होकर कल्याण को प्राप्त हो जाएंगे। तेरा वंश बयालीस (42) पीढ़ी तक अवश्य चलेगा, परंतु तेरी छठी गद्दी (पीढ़ी) वाले को काल द्वारा चलाए टकसारी पंथ वाला भ्रमित करेगा। जिस कारण से वह छठी पीढ़ी वाला तेरा बिंद वाला यथार्थ भक्ति त्यागकर टकसारी वाला पान-प्रवाना प्रारम्भ करेगा। आरती-चौंका भी वही प्रारम्भ करेगा। जब हम यथार्थ पंथ चलाएंगे, उस समय तेरे वंश वाले उस पंथ से दीक्षा लेकर कल्याण कराएंगे। उस समय सारा विश्व ही मेरी यथार्थ भक्ति उस मेरे अंश से दीक्षा लेकर करेगा। तब तेरे बिंद वाले भी दीक्षा लेकर मुक्ति प्राप्त करेंगे। इसलिए इस सारशब्द (मुक्ति शब्द) को तथा मूल ज्ञान (तत्त्वज्ञान) को उस समय तक छुपा कर रखना है, यह मेरी लाख दुहाई (निवेदन) है।

यही प्रमाण कबीर सागर में कबीर बानी अध्याय के पष्ठ 136-137 पर भी है जिसमें बारह पंथो का वाणी में प्रमाण है। पढ़ें वह प्रकरण इसी पुस्तक में कबीर बानी अध्याय के सारांश में पष्ठ 337 पर।

जीव धर्म बोध पष्ठ 31(1939) से 41(1949) तक सामान्य ज्ञान है।

पष्ठ 35(1943) पर लिखा है कि :-

साखी—तीर्थ गए एक फल संत मिल फल चार। सतगुरू मिले अनेक फल कहै कबीर विचार।।

भावार्थ :- तीर्थ पर जाने का एक फल यह है कि कोई पूर्ण संत मिल जाता है। जिस कारण से उस भ्रमित आत्मा को सच्चा मार्ग मिल जाता है। संत गरीबदास जी ने भी कहा है कि :-

गरीब, मेलै ठेलै जाईयो, मेले बड़ा मिलाप। पत्थर पानी पूजते, कोई साधु संत मिल जात।।

भावार्थ :- संत गरीबदास जी ने कहा है कि तीर्थों पर जो भक्तों के मेले लगते हैं। वहाँ जाते रहना। हो सकता है कभी कोई संत मिल जाए और कल्याण हो जाए। जैसे धर्मदास जी तीर्थ भ्रमण पर मथुरा-वंदावन गया था। वहाँ स्वयं परमेश्वर कबीर जी ही जिन्दा संत के रूप में मिले और धर्मदास जी का जन्म ही सुधर गया, कल्याण को प्राप्त हुआ।

संत मिले फल चार का भावार्थ है कि संत के दर्शन से परमात्मा की याद आती है। यह ध्यान यज्ञ है। संत से ज्ञान चर्चा करने से ज्ञान यज्ञ का फल मिलता है। यह दूसरा फल है। तीसरा फल जब संत घर पर आएगा तो भोजन की सेवा का फल मिलेगा तथा चौथा फल यदि संत नशा नहीं करता है तो उसको रूपया या कपड़ा वस्त्र दान अवश्य देता है। इस प्रकार संत मिले फल चार। जब सतगुरू मिल गए तो सर्व मिल गए, मोक्ष भी मिल गया।

कबीर सागर में ज्ञान का अज्ञान बनाने का प्रमाण जीव धर्म बोध पष्ठ 37 (1945) पर लिखी वाणी में है :-

कबीर खड़े बाजार में, गलकटों के पास। जो कोई करे सो भरेंगे, तुम क्यों भये उदास।।

वास्तविक वाणी इस प्रकार है :-

कबीरा तेरी झोंपड़ी, गल कटियन के पास। करेंगे सो भरेंगे, तू क्यों भया उदास।।

जीव धर्म बोध पष्ठ 38(1946) पर :-

काल कराल आप ही जानी। ब्रह्मा विष्णु महेश भवानी।।

संत गरीबदास जी ने भी कहा है कि :-

तीनों देवा काल हैं, ब्रह्मा विष्णु महेश। भूले चुके समझियो, सब काहु आशीष।।
गरीब, ब्रह्मा विष्णु महेश्वर माया, और धर्मराया (काल) कहिए।
इन पाँचों मिल प्रपंच बनाया, वाणी हमरी लहिए।।

कबीर परमेश्वर जी ने जीव धर्म बोध पष्ठ 40(1948) पर कहा है कि :-

सबही संत श्रुति कहे बखानी। नर स्वरूप नारायण जानी।।
लिखो भेद बेद वेदान्ता पुराना। जबूर, तौरेत, इंजिल, कुराना।।
सब ही मिल करते निरधारा। नर प्रभु निज स्वरूप संवारा।।
निश्चय नर नारायण देही। ऋषि मुनि प्रभु कूं निराकार कहेही।।
बेद पढ़ें पर भेद ना जानें, बांचै पुराण अठारा।
सब ग्रन्थ कहैं प्रभु नराकार, ऋषि कहैं निराकारा।।

जीव धर्म बोध पष्ठ 41(1949) पर वाणी :-

उत्तम धर्म जो कोई लखि पाये। आप गहैं औरन बताय।।
तातें सत्यपुरूष हिये हर्षे। कपा वाकि तापर बर्षे।।
जो कोई भूले राह बतावै। परम पुरूष की भक्ति में लावै।।
ऐसो पुण्य तास को बरणा। एक मनुष्य प्रभु शरणा करना।।
कोटि गाय जिनि गहे कसाई। तातें सूरा लेत छुड़ाई।।
एक जीव लगे जो परमेश्वर राह। लाने वाला गहे पुण्य अथाह।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि एक मानव (स्त्री-पुरूष) उत्तम धर्म यानि शास्त्र अनुकूल धर्म-कर्म में पूर्ण संत की शरण आता है, औरों को भी राह (मार्ग) बताता है। उसको परमेश्वर हृदय से प्रसन्न होकर प्यार करता है। जो कोई एक जीव को परमात्मा की शरण में लगाता है तो उसको बहुत पुण्य होता है। एक गाय को कसाई से छुड़वाने का पुण्य एक यज्ञ के तुल्य होता है। करोड़ गायों को छुड़वाने जितना पुण्य होता है, उतना पुण्य एक जीव को काल से हटाकर पूर्ण परमात्मा की शरण में लगाने का मध्यस्थ को होता है।

जीव धर्म बोध पष्ठ 42(1950) से 61(1969) तक का सारांश :-

पष्ठ 42-43 पर सामान्य ज्ञान है।

जीव धर्म बोध पष्ठ 44(1952) पर :-

''परमात्मा की कृपा बिना परिश्रम (कर्म) भी साथ नहीं देता''

चौपाई

पुरूषारथकी ऐसी बातें। कर अवश्य पुरूषारथ ताते।।
यथा कृषान कृषानी करई। उपजैं अन्न पेट निज भरई।।
हलबाही अवश्य तेहि करना। भली भांति निजखेत सँवरना।।
बीज बोय रखवाली कीजै। पशु पंछी से बचाव करीजै।।
करि निज श्रम बिनवै प्रभुपाही। भरे खेत वर्षाकरि ताहि।।
जौ ईश्वर वर्षा नहिं करई। वृथा कृषानी ताकी परई।।
जौ बरषैं बर्षा सुकाला। तो कृषान सो होय निहाला।।
जौ आलस करिके नर कोई। संशय पै हल जोतै नहिं सोई।।
बीज न बोय न कर रखवारी। बर्षै घन अरू भरे कियारी।।
ताहि अन्न फल हाथ न आये। मूरख मिथ्या आस लगाये।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने बताया है कि यदि कोई भक्ति करता है और उसके ऊपर परमेश्वर कृपा नहीं करता है तो उसकी साधना व्यर्थ हो जाती है। कहने का तात्पर्य है कि भक्ति करता है और मन में अभिमान भी रखता है तो उस पर परमेश्वर की कृपा वर्षा नहीं होती। जिस कारण से उसकी भक्ति नष्ट हो जाती है।

उदाहरण :- जैसे पूर्व समय में खेती (कृषि) पूर्ण रूप से वर्षा पर निर्भर थी। इसलिए कहा कि जैसे किसान खेत में बीज बोता है। परिश्रम करता है, यदि परमेश्वर समय पर वर्षा न करे तो उसकी फसल व्यर्थ हो जाती है। भले ही किसान फसल बीजने के लिए हल चलाता है, बीज बोता है। पशु-पक्षी से भी रक्षा करता है। बहुत परिश्रम करता है। वर्षा न होने से उसका सर्व परिश्रम कर्म व्यर्थ गया।

कर्म न यारी देत है, भसमागीर भस्मन्त।
कर्म व्यर्थ है तास का, जे रीझै नहीं भगवन्त।।

जो खेत में बीज नहीं बोता है। फिर वर्षा हो जाती है। यदि वह मूर्ख फसल पाने की आशा लगाता है तो भी व्यर्थ है।

भावार्थ है कि भक्ति कर्म भी करे और परमेश्वर का कृपा पात्र भी बना रहे तो जीव को लाभ मिलता है।

जीव धर्म बोध पृष्ठ 46(1954) पर :-

''मनुष्य को नित्य कर्म वर्णन-चौपाई''

भोरहि उठि नित कर्म करीजै। करि तन शुद्ध भजन चित दीजै।।
प्रभु प्रति बिनय बचनते मांगे। महा दीन है ताके आगे।।
मोर मनोरथ कर प्रभु पूरा। दीनबन्धु कीजै दुख दूरा।।
सर्व समय तुहि जग करता। तेरो हुकुम सर्वपर बर्ता।।
मोर उधार करो प्रभु सोई। विघ्न बिहाय कृपा तौ होई।।
गुरू अचारजको निज टेरे। सदा सहायक अपनो हेरे।।
बार बार कर प्रभु प्रति बिनती। यद्यपि सो न करे कछु गिनती।।

कबहुके दाया प्रभुकी होई। दुःखदरिद्र सब डारे खोई।।
लाभ–अलाभ एक सम गनिये। सदाकाल प्रभु गुनगन भनिये।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि भक्त को सुबह उठकर नित्य कर्म करना चाहिए। प्रथम वाणी में यानि पष्ठ की वाणी नं. 12 में लिखा है कि :-

भोर हि उठि नित कर्म करीजै। करि तन शुद्ध भजन चित दीजै।।

सुबह उठते ही मंगलाचरण पढ़े। यदि याद है तो मौखिक मन-मन में या बोलकर उच्चारण करे। उसके पश्चात् निम्न शब्द बोले :-

समर्थ साहेब रत्न उजागर। सतपुरूष मेरे सुख के सागर।।
जूनी संकट मेटो गुसांई। चरण कमल की मैं बलि जांही।।
भाव भक्ति दीजो प्रवाना। साधु संगति पूर्ण पद ज्ञाना।।
जन्म कर्म मेटो दुःख दुन्दा। सुख सागर में आनन्द कंदा।।
निर्मल नूर जहूर जुहारं। चन्द्रगता देखूं दिदारं।।
तुम हो बंकापुर के वासी। सतगुरू काटो यम की फांसी।।
मेहरबान हो साहिब मेरा। गगन मण्डल में दीजो डेरा।।
चकवै चिदानंद अविनाशी। रिद्धि सिद्धि दाता सब गुण रासी।।
पिण्ड प्राण जिन दीन्हे दाना। गरीबदास जाकूं कुरबाना।।

मंगलाचरण में गुरू यानि आचार्य तथा परमेश्वर दोनों की वंदना स्तुति हैं :-

गरीब, नमो–नमो सतपुरूष कूं नमस्कार गुरू कीन्ही।
सुरनर मुनिजन साधवा, संतों सर्वस दीन्ही।।
सतगुरू साहेब संत सब डण्डवतं प्रणाम।
आगे पीछे मध्य हुए तिन कूं जा कुर्बान।।

इस प्रकार प्रति सुबह मंगलाचरण तथा उपरोक्त शब्द पढ़ें। फिर प्रथम मंत्र का एक-दो या इससे अधिक बार समय अनुसार जाप करें। (एक सौ आठ बार जाप को एक मंत्र माला कहा है।) फिर सुबह का पाठ भक्ति बोध वाला करें। दिन में यदि सत्यनाम प्राप्त नहीं है तो प्रथम मंत्र का जाप करते रहें। दोपहर 12 बजे के पश्चात् दिन में असुर निकंदन रमैणी करें।

सुबह का नित्य नियम रात्रि के 12 बजे के बाद सुविधा अनुसार दिन के 12 बजे तक कर सकते हैं। मंत्र जाप कभी भी कर सकते हैं। वैसे नित्य नियम यानि सुबह के नित्य कर्म सूर्योदय से एक घण्टा पहले या बाद में किया जाता है। यदि आगे-पीछे भी करना पड़े तो समान लाभ ही मिलता है।

जिनको सत्यनाम प्राप्त है, वे दिन में सत्यनाम का जाप करें। जिनको सारनाम प्राप्त है, वे दिन में सारनाम का जाप करें। यदि इच्छा हो तो प्रथम मंत्र भी कर सकते हैं, परंतु सत्यनाम प्राप्त होने के पश्चात् सत्यनाम का जाप अधिक करना चाहिए। सारनाम में सतनाम का लाभ भी मिलता है। इसलिए सारनाम मिलने के उपरांत सतनाम के जाप की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती। यदि सारनाम के जाप में कठिनाई आए तो पहले कुछ मिनट अकेला सतनाम जाप करना चाहिए। फिर शीघ्र ही सारनाम का जाप करना चाहिए।

शाम के समय संध्या आरती करनी चाहिए। इसको करने का सही समय सूर्य अस्त के समय है। यदि किन्हीं कारणों से आगे-पीछे करनी पड़े तो भी समान लाभ मिलता है। विशेष परिस्थिति

में संध्या आरती सूर्य अस्त से एक घण्टा पहले तथा रात्रि के 12 बजे से पहले तक भी कर सकते हैं। असुर निकंदन रमैणी भी विशेष परिस्थितियों में दिन के 12 बजे से रात्रि के 12 बजे तक कर सकते हैं, समान लाभ मिलेगा। लेकिन इसको प्रतिदिन करने का अभ्यास न बनाऐं। यदि आप यात्रा में हैं तो आप यात्रा में तीनों संध्या कर सकते हैं, मंत्र भी कर सकते हैं। यदि आप सुबह भ्रमण के लिए जाते हैं और आपको सुबह का नित्य कर्म याद है तो सैर करते-करते भी कर सकते हैं। इसी प्रकार तीनों संध्या आप सैर करते-करते भी कर सकते हैं यदि याद है तो। यदि याद नहीं है तो भक्ति बोध पढ़ते हुए भी किसी पार्क या एकान्त सुरक्षित स्थान पर जहाँ दुर्घटना का भय न हो, चलते-चलते कर सकते हैं। यदि आप घर पर हैं तो बैठकर करें। यह विधान है नित्य कर्म का।

विशेष :- सुबह उठते ही आप सर्व मंत्र तथा नित्य नियम बिना स्नान किए भी कर सकते हैं। यदि स्नान करके करना चाहें तो नित्य नियम यानि वाणी पाठ स्नान करके कर सकते हैं। अन्य मंत्र कभी भी बिना स्नान किए, बिना मुख धोए भी कर सकते हैं। रात्रि में जब भी नींद से जागें, तुरंत किसी भी मंत्र का जाप लेटे-लेटे, बैठकर, चलते-फिरते कर सकते हैं। यदि आप रोग ग्रस्त हैं तो तीनों संध्या भी लेटे-लेटे कर सकते हैं। स्वस्थ होने पर बैठकर करना चाहिए।

मजदूर तथा किसान सुबह स्नान नहीं करते क्योंकि उनको कुछ देर बाद मिट्टी-धूल में कार्य करना होता है। वे शाम को ही स्नान करते हैं। उनको चाहिए कि वे अपना नित्य भक्ति करने वाली साधना बिना स्नान के भी करें, समान लाभ होगा। कबीर जी ने कहा है :-

नहाहे धोए क्या भया, जे मन का मैल न जाय। मीन सदा जल में रहे, धोए बांस न नसाए।।

शरीर की स्वच्छता के लिए स्नान करना अनिवार्य है। सो आप समय लगने पर स्नान करें। भक्तजन मंत्रों का जाप नित्य अवश्य करें। किन्हीं परिस्थितियों में तीनों समय की संध्या स्तुति न हो पाए तो कोई बात नहीं, परंतु मंत्रों के जाप को कभी न छोड़ें। जितना बन सके करें और भी अधिक करें। इस प्रकार अपना जीव धर्म समझकर भक्ति कर्म करके जीवन धन्य बनाऐं।

पृष्ठ 47(1957) से 51(1959) तक सामान्य ज्ञान है जो पहले कई अध्यायों में वर्णन किया जा चुका है।

जीव धर्म बोध पृष्ठ 52(1960) पर गुरू के लक्षण का वर्णन है।

''पूर्ण गुरू के लक्षण''

(१९६०) बोधसागर ५२

कह कबीर सो सन्त है, आवागौ न नशाय ॥
कबीरगुरु मानुषकरि जानते, चरणामृतको पान ।
ते नर नरकहि जायँगे, जन्म जन्म हो श्वान ॥
कबीरते नर अन्ध हैं, गुरुको कहते और ।
हरि रूठे तो ठौर है, गुरु रूठे नहिं ठौर ॥
कबीर गुरु है बड़े गोविन्दते, मनमें देख बिचार ।
हरि सुमिरे सो बार है, गुरु सुमिरे सो पार ॥
कबीर गुरुसे ज्ञान जो लीजिये, शीश दीजिये दान ।
केतिक भोंदू पचिमुये, राखि जीव अभिमान ॥
कबीर तीन लोक नौखंडमें, गुरुते बड़ा न कोय ।
करता करे न करि सकै, गुरू करे सो होय ॥

चौपाई

गुरुके लक्षन चार बखाना । प्रथमहि वेद शास्त्रको ज्ञाना ॥
पुनि हरि भक्त मनो क्रम बानी । तृतीये समदृष्टी कहि गानी ॥
चौथे वेदकी विधि सब कर्मा । यह चौ गुरुगुन जानो मर्मा ॥
मुख्य एक गुन गुरु कहि दीजे । चेलेको हरि सन्मुख कीजे ॥
गूको अर्थ अज्ञ तिमिराना । रू जाते प्रकटे हिय ज्ञाना ॥
दूर करे जो अज्ञ अधेरा । गुरू नाम ताही को टेरा ॥
ऐसहि शिष्य धर्म चौ भनते । गुरुकी सेवा तन मन धनते ॥
दुतिये सेव मैं विषयको त्यागे । तृतीये मन हंकार न जागे ॥
चौथे गुरुके वचन प्रतीती । जो कोइ गहै चलै यम जीती ॥
शिष्यको दोय धर्म सर्वोपर । गुरु सेवा वाती निश्चयकर ॥
जामें दोय धर्म ये बसि हैं । गुरु असीषते सब गुन लसिहैं ॥
आठ गुरु जो कीन प्रमाना । सबहि श्रेष्ठ अति उत्तम जाना॥
सर्वोपरि दीक्षा गुरु भाषी । जाते भक्ति मुक्ति पद राखी ॥

भावार्थ :- यह कबीर सागर के अध्याय ''जीव धर्म बोध'' के पष्ठ 52(1960) की फोटोकॉपी है जिसमें गुरू महिमा तथा पूर्ण गुरू की पहचान तथा उसके लक्षण बताए हैं। परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि गुरू को परमात्मा के तुल्य मानकर अपनी भक्ति करें। दूसरे शब्दों में कहें तो गुरू तो परमात्मा से भी बड़े हैं। जैसे हैंडपंप से जल मिलता है। इसी प्रकार गुरू से परमात्मा मिलता है। इस प्रकार गुरू तो परमात्मा से प्रथम सेवा करने योग्य है। पूर्ण गुरू की पहचान बताई है :-

गुरू के लक्षण चार बखाना। प्रथम बेद शास्त्र को ज्ञाना।।
दूजे हरि भक्ति मन कर्म बानी। तंतीयें सम दंष्टि कर जानी।।
चौथे बेद विधि सब कर्मा। यह चार गुरू गुण जानों मर्मा।।

भावार्थ :- पूर्ण संत सर्व वेद-शास्त्रों का ज्ञाता होता है। दूसरे वह मन-कर्म-वचन से यानि सच्ची श्रद्धा से केवल एक परमात्मा समर्थ की भक्ति स्वयं करता है तथा अपने अनुयाईयों से करवाता है। तीसरे वह सब अनुयाईयों से समान व्यवहार (बर्ताव) करता है। चौथे उसके द्वारा बताया भक्ति कर्म वेदों में वर्णित विधि के अनुसार होता है। ये चार लक्षण गुरू में होते हैं। जो इन गुणों से युक्त

नहीं है, उसको पूर्ण गुरू नहीं कहा जाता।

''गुरू के प्रति शिष्य का व्यवहार''

संत कबीर गह्यौ गुरु चरना। बारबार ताको जस वरना ॥
गुरु करिके जो दोष लगावै। सूकर श्वान केर तन पावै ॥
नारद गुरुको दोष लगायौ। चौरासी ताको भरमायौ ॥
पूरव कथा यह कागभसुंडर। उठिकेनहिंप्रनाम गुरुकोकर॥
नाथ करत शिवमंदिर मांही। गुरू तासु चलिआयौ ताही॥
गुरुको देखि न सो सनमाना। निरखि अनीत शंभु रिसियाना॥
भै अकाशबानी तेहि काला। रे खल तैं गुरुधर्म न पाला ॥
धरु जड़ माहस सर्प शरीरा। गुरु अपमान पाव बहुपीरा ॥
एक बार पथकी यह बाता। बद्रिकाश्रममहिंमें चलिजाता॥
जाता दीख महि पंथ दुहेला। एक गुरू ताको एक चेला ॥
परम प्रीति निजु गुरुसे धरई। चरनामृत बिन भोग न करई॥
लागे तहां पहारको पानी। खेदते दुःखित गुरु कहजानी॥
गुरुकी सेव शिष्य सो त्यागा। गारी देना ताहिको लागा ॥
गुरुहि दुखी तजिके चलि गेऊ। बद्रिपतिकी मारग लियऊ ॥
तहँते पलटिके सो जब आई। कुष्ठवरन ताके तन छाई ॥
बाटहि माह कुष्ठ भरि मारा। यह चरित्र निज नैन निहारा ॥
गुरु निरादरको जिमि पापा। तिमि सेवाफल अगिनित थापा॥
कोटिन जप तप करे जो कोई। गुरुविहीन सब निरफल होई॥
मुनि सुकदेवसे को बड़ि ज्ञानी। गर्भते योगयुक्ति जिन ठानी ॥
तपबल सो वैकुण्ठ सिधाया। बिन गुरु तहां रहन नहिं पाया॥
गुरुकी निंदा करे जो प्रानी। घोर नरकमें वासा ठानी ॥
गुरुते ईर्षा जो जड़ करिहै। सो यमदंड भांति बहु भरिहै॥
गुरुकह बड़ गोविंदते कीन्हा। जाकी कृपा गोविंदहि चीन्हा॥
गुरुसम और न दूजा दाता। सबको मन वेदन विख्याता ॥
रिद्धि सिद्धि गति मुक्ति अमाया। बिनगुरु दया न कहुँ कछु पाया॥

भावार्थ :- यह कबीर सागर के अध्याय ''जीव धर्म बोध'' के पष्ठ 54(1962) की फोटोकॉपी है। इसकी वाणी पढ़ने से ही स्पष्ट हो जाती है।

पष्ठ 53 से 69 तक सामान्य ज्ञान है जो पूर्व के अध्यायों में वर्णित है।

जीव धर्म बोध के पष्ठ 70(1978) से 88(1996) तक सामान्य ज्ञान है जो बार-बार पहले के अध्यायों में वर्णन किया जा चुका है। जिनमें भिन्न-भिन्न प्रकार की हठयोग साधनाओं का ज्ञान है जो शास्त्रविधि त्यागकर साधक करते हैं जिनसे मोक्ष नहीं होता, अन्य सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं। जिनके कारण संसार में प्रसिद्धि तो प्राप्त कर लेता है, परंतु मोक्ष से वंचित रहकर पशु योनि को प्राप्त होता है।

जीव धर्म बोध पृष्ठ 88(1996) पर बताया है कि सहज समाधि लगाएं और पूरे गुरू से सत्य साधना मंत्र प्राप्त करके मोक्ष प्राप्त करें।

जीव धर्म बोध पृष्ठ 89 से 90 तक सामान्य ज्ञान है जो पहले के अध्यायों में बताया जा चुका है।

जीव धर्म बोध पृष्ठ 91(1999) से 96(2004) पर :-

इन पृष्ठों पर बनावटी वाणी हैं, कुछ-कुछ ठीक हैं। सामान्य ज्ञान है जो पूर्व के अध्यायों में कई बार वर्णन हो चुका है।

पृष्ठ 93(2001) पर वाणी :-

वेद विधि से जो कोई ध्यावै। अमर लोक में बासा पावै।।
स्वस्मबेद सब बेदन का सारा। ता विधि भजैं उतरै पारा।।

जीव धर्म बोध पृष्ठ 97(2005) पर वाणी :-

कबीर जे चण्डाल में सदगुण होई। विकार कर्म करे ना कोई।।
ताको निश्चय ब्राह्मण जानो। सत्संग में जो जन आनो।।
सत्संग सब एकै जाती। लिखा भागवत में यही भांति।।

पृष्ठ 98(2006) पर वाणी :-

ब्रह्मा विष्णु शिव गुण तीन कहाया। शक्ति और निरंजन राया।।
इनकी पूजा चलै जग मांही। परम पुरूष कोई जानत नांही।।

जीव धर्म बोध पृष्ठ 99(2007) से 104(2012) तक कुछ ज्ञान पहले बताया है, कुछ वाणी बनावटी हैं।

जीव धर्म बोध पृष्ठ 105(2013) पर कुछ विशेष ज्ञान है :-

''परशुराम को किसने मारा?''

वाणी :- परसुराम तब द्विज कुल होई। परम शत्रु क्षत्रीन का सोई।।
क्षत्री मार निक्षत्री कीन्हें। सब कर्म करें कमीने।।
ताके गुण ब्राह्मण गावैं। विष्णु अवतार बता सराहवैं।।
हनिवर द्वीप का राजा जोई। हनुमान का नाना सोई।।
क्षत्री चक्रवर्त नाम पदधारा। परसुराम को ताने मारा।।
परशुराम का सब गुण गावैं। ताका नाश नहीं बतावैं।।

भावार्थ :- ब्राह्मणों ने बहुत-सा मिथ्या प्रचार किया है। सच्चाई को छुपाया और झूठ को फैलाया है। जैसे परशुराम ब्राह्मण था। एक समय ब्राह्मणों और क्षत्रियों की लड़ाई हुई तो ब्राह्मण क्षत्रियों से हार गए। उसका बदला परशुराम ने लिया। लाखों क्षत्रियों को मार डाला। यहाँ तक प्रचार किया, परंतु यह नहीं बताया कि परशुराम को किसने मारा?

परशुराम को हनुमान जी के नाना चक्रवर्त ने मारा था जो हनिवर द्वीप का राजा था।

जो भक्ति शक्ति युक्त आत्माऐं होती हैं। वे ही अवतार रूप में जन्म लेती हैं। मृत्यु के उपरांत वे पुनः स्वर्ग स्थान पर चली जाती हैं। स्वर्ग के साथ पितर लोक भी है, उसमें निवास करती हैं। वहाँ से जब चाहें नीचे पृथ्वी पर सशरीर प्रकट हो जाते हैं। जैसे सुखदेव ऋषि शरीर छोड़कर स्वर्ग चला गया था। द्वापर युग में राजा परिक्षित को भागवत कथा सुनाने के लिए विमान में बैठकर आया था। इसी प्रकार परशुराम जी का द्वापरयुग में आना हुआ था जब भीष्म के साथ युद्ध हुआ था जो

मध्यस्था करके बंद करा दिया गया था।

जीव धर्म बोध पृष्ठ 106(2014) :-

चंद्रनखा भगिनी रावण की। सरूपन खां तेहि कहें विप्रजी।।
लक्ष्मण तास से विवाह कहै नाटा। नाक चंद्रनखा का काहे कूं काटा।।
सब गलती रावण की गिनाई। लक्ष्मण की कुबुद्धि नहीं बताई।।
रामचन्द्र को राम बताया। असल राम का नाम मिटाया।।
यह ब्राह्मण की है करतुति। ज्ञान बिन सब प्रजा सूती।।

भावार्थ :- रावण की बहन का नाम चन्द्रनखा था, उसको शुर्पणखा बताया गया। वह लक्ष्मण से विवाह करना चाहती थी। लक्ष्मण ने उसका नाक काट दिया। उसके प्रतिशोध में रावण ने भी महान गलती की, परंतु ब्राह्मणों ने एक-तरफा ज्ञान कहा। कुछ लक्ष्मण की मूर्खता का भी वर्णन करना चाहिए था। रामचन्द्र को राम यानि सृष्टि का कर्ता बताया। जो वास्तव में कर्ता है, उसका नामो-निशान मिटा दिया। यह सब ब्राह्मणों की करामात है।

पृष्ठ 107 से 113 तक सामान्य तथा व्यर्थ ज्ञान है जो मिलावटी है।

जीव धर्म बोध पृष्ठ 114(2022) पर कुछ ठीक, कुछ गलत है। आप स्वयं पढ़कर निर्णय करें:-

(२०२२) बोधसागर ११४

चौपाई

रावन बहिन बिचर वन वाटा। लक्ष्मण तासु नासिका काटा ॥
सो सुनि रावन क्रोधित भैऊ। छल बल करि सीता हरि लैऊ ॥
कोई न लक्ष्मण दोष लगावै। सब औगुण रावणको गावै ॥
निश्चर कीश शृंग द्रुम धारी। रावन रघुपति सैन सँवारी ॥
विविधि भांतिको बिना समाजा। नरगह सत जो कह कविराजा ॥
राम शत्रु रावण जिमि राक्षस। कृष्णके कंसादिक वैरी तस ॥
कंस कृष्ण मामा जग जाना। कर्महि राक्षस और न आना ॥
बेद महाभारत अस कहेऊ। कौन देवता मोहित भैऊ ॥
नाम केसरी वानर चीन्हा। तासु नारिसंग भोग सो कीन्हा॥
ताते हनूमान प्रकटाना। सोई कौन पुत्र जगजाना ॥
बुधिवंतो मन देख विचारी। वानरके नहिं कोई नारी ॥
पशु पंछी कोई ब्याह न जूटी। जेहि संगर मैं सो तासु बधूटी ॥
पौन देवता गुण गण धामा। पशुलखिसोंकिमिहोय सकामा॥
जांबुवंत जम्बूको राजा। रिच्छप रामके संग विराजा ॥
कृष्णशशुर पुनि ताहि बखाना। दियौ ताहि निज कन्यादाना ॥
रीछकी पुत्री रीछिन होई। मानुष संगमेलि नहिं कोई ॥
राक्षसवंशी वानर वंशी। रीछ नाग बछरा खरवंशी ॥
इत्यादिक सब गोत कहावै। बिन जाने कोई भेद न पावै ॥
ब्रह्मन ऐसी कथा उचारा। जैनबुद्धि विष्णू औतारा ॥
तनधरि असुरनको भरमाया। यज्ञ करन से तिन्हैं हटाया ॥
असुरन यज्ञ त्यागि जब दैऊ। सो सब अबल ताहिते भैऊ ॥
करि करि यज्ञ विप्रबल पाई। असुरनको तब मारि हटाई ॥
जैन बोध दायामय धर्मा। तिनके कहा असुरके कर्मा ॥
कर्ता पुरुष जो परम विवेकी। सबके संग करै सो नेकी ॥

भावार्थ :- यह फोटोकॉपी कबीर सागर के अध्याय ''जीव धर्म बोध'' के पष्ठ 114(2022) की है। इस पष्ठ की वाणी पढ़ने से पता चलेगा कि कुछ गलत-कुछ ठीक ज्ञान है। जैसे सिद्ध करना चाहा है कि हनुमान का जन्म केसरी वानर से बताया है। इस प्रकार की मिथ्या कथा को वाणी के माध्यम से चित्रार्थ करने की कुचेष्टा की है। एक स्थान पर हनुमान जी के दुम नहीं बताई है। वास्तव में हनुमान जी के दुम थी। वह दुम सदा बाहर नहीं रहती थी। आवश्यकता पड़ने पर बाहर प्रकट कर लेते थे। उदाहरण के तौर पर गधे का गुप्तांग देखने से दिखाई नहीं देता। गधी के मिलन के समय तीन-चार फुट लंबा निकल आता है। यह उदाहरण भले ही अभद्र लगे, परंतु सटीक समझना। यह तो किसी से छुपा भी नहीं है। ऐसे पवन सुत जी अपने लंगूर (दुम) को प्रकट तथा अप्रकट करते थे। रामायण ग्रन्थ में प्रसंग है कि जब हनुमान जी लंका देश में सीता जी की खोज करने गए थे। उनको रावण के दूत पकड़कर दरबार में ले गये। रावण ऊँचे सिंहासन पर बैठा था। हनुमान जी ने अपनी दुम को बढ़ाकर उसको रस्से की तरह गोल करके रावण से ऊँचा आसन

बनाकर उस पर बैठ गए थे। फिर पूँछ पर कपड़े-रूई लपेटकर आग लगाकर दुम जलाने का आदेश रावण ने दिया। जब हनुमान जी ने दुम बहुत लंबी बढ़ा दी थी। जिसके ऊपर बहुत सारे कपड़े व रूई लपेटी थी। उसी से लंका को जलाया था। लेकिन हनुमान जी वानर नहीं थे। यह सत्य है कि रीछ, वानर, नाग, बछरा, नारा ढ़ांडा आदि ये मनुष्य के गोत्र हैं।

जीव धर्म बोध पष्ठ 115 से 124 तक व्यर्थ तथा कुछ बनावटी वाणी हैं।

जीव धर्म बोध पष्ठ 125(2033) से 127(2035) तक का सारांश :-

''आधीनी तथा जीव की स्थिति''

जैसे कथा सुनते हैं कि श्री कष्ण जी ने दुर्योधन राजा का शाही भोजन (जिसमें षटरस तथा सर्व व्यंजन थे) छोड़कर आधीन तथा निर्धन भक्त विदुर जी के घर सरसों का साग खाया था। कबीर जी कहते हैं कि हम भी इसी प्रकार अभिमानी के साथ नहीं रहते। सर्व पुराण, चारों वेद, कतेब, तौरेत, इंजिल, जबूर, कुरान भी यही बात कहते हैं।

(२०३४) 2098 बोधसागर १२६

होय अधीन प्रेम लौलावै कुल अभिमान मिटावै।
सहज शून्यमें रहे समाई पढिगुण सब बिसरावै॥
गुरुकी दया साधुकी संगती भावभक्ति चितलावै।
कहै कबीर सुनो भाई साधो कौन परमपद पावै॥
कौन हमारे आये केशव क्यौं न हमारे आये।
षट रस व्यंजन छोटि रसोई साग विदुरघर खाये॥
जहँ अभिमान तहाँ हम नाहीं वह व्यंजन विष लागे।
सोई मुनिजन पूरा कहिये अभिमानीको त्यागे॥
जातिहीन जाके कुल नाहीं है दासीको जायौ।
ताकीट परिव्या तुम जायके बैठे कहा बड़ापन पायौ॥
सत्यासत्यवचन कहो दुरयोधन सुनिले बात हमारी।
विदुर हमारे प्रानसो प्यारे तुम विषिया बेकारी॥
पुरातन कथा तुम्हारी हरिजी वनमें छाक मँगाई।
ग्वालनके संग भोजन करते सो मति तुममें आई॥
प्रेम प्रीतिके हम हैं भूखे अभिमानी नहिं भावै।
कहैं कबीर साधुकी महिमा हरि अपने मुख गावै॥

रामचंद्रवचन-चौपाई

सबहि मानप्रद आप अमानी। भरथ प्रानसम ते मम प्रानी॥
वेद प्रमान आदि ओंकारा। सो करता सोई श्रुति सारा॥
सो ओंकारको अर्थ बखानो। दीनता और गरीबी जानो॥
जहँ दीनता गरीबी बसई। सबगुण ज्ञान ताहिमें लसई॥
तौरे तो इञ्जील सोयी नय। आहि दीनता ज्ञान गुणनमय॥
पुनि जब्बूर कहे सो हेता। दीनको प्रभु सोभा गति देता॥
पुनि कुरानको सोई मत हेरी। ऊँच बोल है गर्दभ केरी॥
गदहा पर ईसा चढि चाले। सो दीनता धर्म प्रतिपाले॥

१२७ जीवधर्मबोध 2099 (२०३५)

धन्य दीनता कह इञ्जीला। ताते हो जिव बंधन ढीला॥
जूठी बेर सेवरी ल्याई। रामचन्द्र अति रुचिते खाई॥
लक्ष्मन निर आदिरकर ताही। भिलनी जूठा हम नहिं खाही॥
भई सजीवन बूटी सोई। लक्ष्मन प्रान बचायौ सोई॥
पंडो यज्ञ जुरे ऋषि भूरी। स्वपचभक्त विन यज्ञ न पूरी॥
जातिपातिकुलगुण अभिमानी। भ्रमत फिरे चौरासी खानी॥
भगते भगवा भेष बनाये। शिव शंकर निज शीश चढ़ाये॥
आदि भक्ति शिवजक्त प्रकाशी। भगवा भेष धरे संन्यासी॥
भग पृथ्वीका रूप कहाये। तात भगवा वरन बनाये॥
पृथ्वी तुल्य गरीबी आवै। संन्यासी जीवत मरिजावै॥
बैरागी जो तिलक लगाई। ले मृतिका निजमाथ चढ़ाई॥
आदम अघ तौ रेत प्रसंगा। कीनो प्रभुकी आज्ञाभंगा॥
अदन बाहर आदन भेऊ। ताते प्रभु पुनि ऐसे कहेऊ॥
खेहसे तेरी देह बनाई। जबलों बहुरि न तेहि मिलिजाई॥
तबलौं श्रम करिकरिके खैहो। अब नहिं अमृत फलको पैहो॥
ताको ऐसो गहिये ज्ञाना। जीवतही मिट्टी मिल जाना॥
मुये तो सबही मिट्टी होता। पावै कर्म बीज यश बोता॥
जीवतही लोधू मरजाना। यही सकल मतको परमाना॥
चरनामृत अरु शीत प्रसादा। ताको आहि बड़ो मरजादा॥
करिके कृपा साधु जो देही। दीनको शिष्य सेवक सो लेही॥
ताको ऐसा अर्थ बिचारी। गहो गरीबी सब नरनारी॥
बहुरि शिष्यसे भीख मंगावै। ताते तासु मान बिनसावै॥
सुरगणजो अतिगुण गण धामा। आदमको कर दंड प्रणामा॥
कारण यही तासुमें पायौ। प्रभु दीनताको श्रेष्ठ देखायौ॥
कह आदम मिट्टीकी मूरत। कह इबलीस दीप्त शुचि सूरत॥

भावार्थ :- पष्ठ 125(2033) पर परमेश्वर कबीर जी ने भक्त के लिए आधीन होने की बात कही है।

पंष्ठ 126 का सारांश :-

भावार्थ :- पंष्ठ 126 पर बताया है कि भक्त को आधीनता से रहना चाहिए जिसके साक्षी श्री रामचन्द्र तथा वेद व चारों कतेब भी बताए हैं।

जीव धर्म बोध पंष्ठ 127(2035) का सारांश :-

भावार्थ :- जैसे एक भक्तमति भीलनी थी। उसने प्रेम से बेर पहले स्वयं चखे कि कहीं खट्टे बेर श्री राम तथा लक्ष्मण को न खिला दूँ। फिर झूठे बेर श्री रामचन्द्र तथा लक्ष्मण को खाने को दिए। श्री रामचन्द्र जी ने तो खा लिये। लक्ष्मण जी ने आँखें बचाकर खाने के बहाने मुँह के साथ से पीछे फैंक दिये। फैंके गए झूठे बेर संजीवनी जड़ी रूप में द्रोणागिरी पर उगे। रावण के साथ युद्ध में लक्ष्मण को तीर लगने से मूर्छित हो गए थे। उन्हीं झूठे बेरों से बनी संजीवनी से लक्ष्मण को जीवन मिला। फिर बताया है कि आदम जी ने प्रभु की आज्ञा का पालन नहीं किया। जिस कारण अदन वन से निष्कासित हुए। इसलिए आधीन होना अनिवार्य है।

जीव धर्म बोध पंष्ठ 128(2036) से 132(2040) तक सामान्य ज्ञान है।

जीव धर्म बोध पंष्ठ 133(2041) से 135(2043) तक नानक जी तथा कबीर जी की वार्ता है।

जीव धर्म बोध पंष्ठ 136(2044) से 148(2056) तक अधिकतर बनावटी-मिलावटी वाणी लिखी हैं।

पंष्ठ 145(2053) पर लिखी वाणी :-

आठ लाख योनि भ्रमि आवै। पुनि गह जीव मनुष तन पावैं।।

जबकि चौरासी लाख योनि हैं। इसमें आठ लाख लिखी हैं।

पंष्ठ 146(2054) पर जीव धर्म बोध में अंगरेजी अखबार का वर्णन है। उस समय कोई अंग्रेजी नाम भी नहीं जानता था। अखबार तो कहाँ थे?

चौरासी लख मीन बनाये । मन मछुवा सब तिनहि फसाये॥

सत्यकबीर वचन–शब्द

तन झौपडी मन बसे मइरवा ।
नान्हेनान्हे डोभवन बीने मइजरवाडारि दिये नियक भरमसगरवा ।
गहिरेमें मइरा पैठि न सकै विन बूड़े नहिं मिलत सिकरवा ॥
यक ओर मइरा यक ओर मइरी मारि लिहे नियक मोइमछरवा ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो ताकि लिहे नियक अमर सइरवा ॥

चौपाई

तीन देवमें विष्णु बड़ेरे । तिनको हुकुम फिरे चहुं फेरे ॥
तीन लोक भवसागर माही । तीन देव तहँ राज कराही ॥
तीन लोकको सूत्र बखानो । जामें सकल जीव भरमानो ॥
प्रथमहि विष्णु सर्व शिरमौरा । तासु हेठ सुरगण सब औरा ॥
दुतिये पौरी विद्याधर है । नहीं देवता नहिं सो नर है ॥
सुर नर माह जान यह सीढी । भाषो बहुरि तीसरी पीढी ॥
नर वानर यक लेखे कहिये । यक ब्यौहार दोइमें लहिये ॥
दोनों बीच भेद अति थोरा । पशु अरु मानुषमें यह डोरा ॥
बिन दुम नर कपि पूछ समेता । नर वानर यक गुण कह केता ॥
औरँग औटँग वानर जोई । नर आकार सर्व सो होई ॥
अंगरेजीके ग्रंथन माहीं । विना पूछ वानर यह आहीं ॥
दोनों पगते नर ज्यौं चाले । दोनों हाथ काममें डाले ॥
वानर इतर जाति बहु तेरे । भिन्नभेद क्रम क्रमसे हेरे ॥
अंगरेजी अखबार बखाने । द्वै मानुष दुमदार लखाने ॥
हबशदेशको जंगल जहँवा । द्वै मानुष दुम युत रह तहँवा ॥
डेढ़ हाथकी पूछ सो गहई । मादमें पशु समान सो रहई ॥
एक जाति मानुषको आही । रहे हिमालय पर्वत माही ॥
ऐसो निकट छोड़ तनधारी । पंछिन संग मचावै रारी ॥

चील्ह गीध गहि गगन उड़ाही । तेहि मानुषको धरि धरि खाही॥
तब सो नर गण जोरि सहाई । पंछिके संग करे लड़ाई ॥
ऐसे बिबिधि भांति नरजाती । तिनकी कथा न कथे सिराती ॥
नानारूप बरण गुणधारी । जहँ तहँ पृथ्वी माह विहारी ॥
चार लक्ष मानुषकी जाती । तिनकी कथा कथे बहु भांती ॥
जलमानुष थलमानुष देखो । वनमानुष आदिक बहु लेखो ॥
पशुमानुष कछु मिश्रित होई । अकथकथा कहि जात न कोई॥
बहुरि कहो मानुष पशु ख्याला । सब परिवार जो करे उगाला ॥
भोजन पीछे पागुर करही । बिन उगाल तिनको दुःखधरही॥
पशु नर नरपशु एक सो हेरी । देखहु कुदरत करता केरी ॥
छायारूपी नर कछु सरसै । चेष्टा दीख रूप नहिं दरसै ॥
रचना विविधि भांति कहि गाई । ताको लेख लिखो नहिं जाई ॥
चौथो सूत्र बहुरि कहि गावो । जलचर मानुष मेल मिलावो ॥
रह समुद्रमें गर्गन मच्छी । अर्ध है मीन अर्ध तिय अच्छी॥
कटिके ऊपर सुन्दर नारी । अर्धहेट मच्छी तनधारी ॥
कबहूके सागर तीर सुखारी । कबहूके जलमें गोता मारी ॥
शृंगी ऋषि शिर सींग बताई । मुखमें सुण्ड गणेश गोसाई ॥
पंचम पौरी करो बखाना । पशुपंछीको मेल मिलाना ॥
चाम सुन्दरी वाको कहई । दोनों रंग ढंग गुण गहई ॥
सो नहिं खग अंडजकी जाती । चाम गूदरी है बहु भाँती ॥
नहिं पशु नहिं खग मध्यम थापू । मुरगी एकसे परसे टापू ॥
वृद्ध नारि सो सुख है जाको । जब कोइ दुःख देतहै वाको ॥
रुदन विलाप करे जस नारी । केते पशु खग नरगुण धारी ॥
दादुर एक अमेरिका देशा । रुदन करे जब लहे कलेशा ॥
छठी पौरी बरणो सोई । जो चेतन रूप जड़ होई ॥

विवेक :- ऊपर दोनों पष्ठों (146-147) की फोटोकॉपियों को पढ़कर पाठकजन समझ जाएंगे कि परमेश्वर कबीर जी के यथार्थ ज्ञान को बिगाड़कर नाश किया है। वर्तमान में जिसको सज्जन पुरूष कैसे सत्य मान सकते हैं? इसी तरह अपनी मंदबुद्धि द्वारा सत्य को अज्ञान बनाने की कुचेष्टा की है। जैसा कि इसी ग्रन्थ के अंदर प्रथम बताया है कि काल द्वारा प्रचलित पंथों के अनुयाईयों ने काल प्रेरणा से ग्रन्थ का नाश किया है। फिर भी आवश्यक सच्चाई बच गई है। जो क्षति हुई है, उसकी पूर्ति संत गरीबदास जी द्वारा परमेश्वर कबीर जी ने कराई है जो संत गरीबदास जी के सद्ग्रन्थ में लिखी है। परमेश्वर कबीर जी की कपा से उस सद्ग्रन्थ का भी सरलार्थ किया जाएगा। उसके पश्चात् विश्व के सब ग्रन्थों का सार निकालकर एक सांझा ग्रन्थ बनाया जाएगा। सर्व संसार भक्ति करेगा। सत्य को जानेगा, मानेगा और अपना कल्याण कराएगा।

कबीर सागर का सारांश सम्पूर्ण हुआ।

इस पवित्र ग्रन्थ कबीर सागर का सरलार्थ परमेश्वर जी की कपा से केवल दो महीनों में सम्पूर्ण हुआ है। यह परोपकारी शुभ कर्म परमेश्वर कबीर जी तथा परम श्रद्धेय स्वामी रामदेवानंद जी गुरू महाराज जी की असीम कपा से हुआ है। दिन-रात कई-कई घण्टे सेवा करके प्रथम तो

एक-एक पंक्ति को पढ़ा, फिर भावार्थ किया। सत्य-असत्य को जाँचा और परमेश्वर को साक्षी रखकर यथार्थ ज्ञान लिखा है। दो महीने में तो कबीर सागर पढ़ा भी नहीं जा सकता। समझना, निष्कर्ष निकालना, फिर हाथ से लिखना, बिना परमेश्वर की कृपा से कभी संभव नहीं हो सकता। जो परमेश्वर कबीर जी ने जो वचन कहा था कि :-

तेरहवें वंश मिटे शकल अंधियारा।

तथा

कबीर, नौ मन सूत उलझिया, ऋषि रहे झखमार।
सतगुरू ऐसा सुलझा दे, उलझे ना दूजी बार।।
सतगुरू नाल वड़ाइयाँ, जिन चाहे तिन दे।।

यह सब परमेश्वर कबीर जी ने ही किया है। महिमा मुझ दास (रामपाल दास) को दी है।

गरीब, समझा है तो सिर धर पाँव। बहुर नहीं रे ऐसा दाँव।।
यह संसार समझदा नांही, कहंदा शाम दोपहरे नूं।
गरीबदास यह वक्त जात है, रोवोगे इस पहरे नूं।।

भावार्थ :- हे मानव! यदि इस अमृत ज्ञान को समझ लिया है तो विलम्ब न कर। तुरंत दीक्षा ले। इतना शीघ्र दीक्षा ले, जैसे आपत्ति के समय में मानव अत्यधिक गति से दौड़ता है। जैसे रेलगाड़ी चलने वाली है, आप सौ फुट दूर हैं तो उसे पकड़ने के लिए पूर्ण गति से दौड़कर पहुँचते हैं। इसी को कहते हैं कि वह सिर पर पाँव रखकर दौड़ा, तब रेलगाड़ी में चढ़ पाया। इसी प्रकार दीक्षा लेने के लिए शीघ्रता कर। फिर इसी गति से भक्ति-साधना कर। अन्यथा यह मानव जीवन का पहर (निर्धारित समय) निकल गया तो फिर हाथ नहीं आएगा। कुत्ता बनकर गली में ऊपर को मुँह करके रोया करेगा।

।। सत साहेब ।।
।। सतगुरू देव जी की जय ।।
।। बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर जी की दया ।।

यथार्थ संष्टि रचना

परमेश्वर कबीर जी द्वारा बताया संष्टि रचना का ज्ञान तथा उसमें कबीर पंथियों द्वारा की गई मिलावट या काँट-छाँट का प्रमाण देकर शुद्धिकरण किया है।

अनुराग सागर के पंष्ठ 13 से संष्टि रचना प्रारम्भ होती है। पंष्ठ 14 पर ऊपर से 14वीं, 15वीं तथा 16वीं पंक्ति यानि नीचे से आठ पंक्तियों से पहले की तीन पंक्तियों में काल निरंजन की उत्पत्ति पूर्व के 16 पुत्रों के साथ लिखी है जो गलत है। ये तीनों वाणियाँ निम्न हैं :-

पाँचवें शब्द जब पुरूष उचारा, काल निरंजन भौ औतारा।1
तेज अंग त्वै काल है आवा, ताते जीवन कह संतावा।2
जीवरा अंश पुरूष का आहीं। आदि अंत कोउ जानत नाहीं।3

ये तीनों वाणी गलत हैं, ये मिलाई गई हैं। इनसे ऊपर की वाणी में स्पष्ट है कि पाँचवें शब्द से तेज की उत्पत्ति हुई। फिर दोबारा यह लिखना कि पाँचवें शब्द से काल निरंजन उत्पन्न हुआ, अपने आप में असत्य है। पढ़ें फोटोकॉपी अनुराग सागर पंष्ठ 14 की :-

(१४) 138 अनुरागसागर

सृष्टिकी उत्पत्ति सतपुरुषकी रचना

सत्य पुरुष जब गुपत रहाये। कारण करण नहीं निरमाये॥
समपुट कमल रह गुत सनेहा। पुहुपमाहिं रह पुरुष विदेहा॥
इच्छा कीन्ह अंश उपजाये। हंसन देखि हरष बहुपाये॥
प्रथमहिं पुरुषशब्द परकाशा। दीपलोकरचि कीन्ह निवासा॥
चारि कर सिंहासन कीन्हा। तापर पुहुप दीपकर चीन्हा॥
पुरुष कला धरि बैठे जहिया। प्रगटी अगर वासना तहिया॥
सहस अठासी दीपरचि राखा। पुरुषइच्छातैं सबअभिलाखा॥
सबै द्वीप रह अगर समायी। अगर वासना बहुत सुहायी॥

सोलह सुतका प्रगट होना

दूजे शब्द भयेजुपुरुषप्रकाशा। निकसे कूर्मचरण गहि आशा॥
तीजे शब्दभयेजुपुरुष उच्चारा। ज्ञान नाम सुत उपजे सारा॥
टेकी चरण सम्मुख ह्वै रहेऊ। आज्ञा पुरुषद्वीपतिन्ह दएऊ॥
चौथे शब्द भये पुनि जबहीं। विवेकनाम सुत उपजे तबहीं॥
आप पुरुष किये द्वीपनिवासा। पंचम शब्दसो तेज परकासा॥
पांचवे शब्द जब पुरुष उच्चारा। काल निरंजन भो औतारा॥
तेज अंगते काल ह्वै आवा। ताते जीवन कह संतावा॥
जीवरा अंश पुरुषका आहीं। आदिअन्त कोउ जानत नाहीं॥
छठे शब्द पुरुष मुख भाषा। प्रगटे सहजनाम अभिलाषा॥
सतयें शब्द भयो संतोषा। दीन्हो द्वीप पुरुष परितोषा॥
अठयें शब्द पुरुष उचारा। सुरति सुभाष द्वीप बैठारा॥
नवमें शब्द आनन्द अपारा। दशयें शब्द क्षमा अनुसारा॥
ग्यारहें शब्द नाम निष्कामा। बारहें शब्द जलरंगी नामा॥
तेरहें शब्द अचिंत सुत जाने। चौदहें शब्द सुत प्रेम बखाने॥
पन्द्रहें शब्द सुत दीन दयाला। सोलहें शब्दभे धीर्यरसाला॥

पुराने तथा वास्तविक ''अनुराग सागर'' में सत्य लिखा था जो ज्ञानहीनों ने गलत कर दिया।

प्रमाण :- कबीर सागर के अध्याय ''कबीर बानी'' के पष्ठ 98(944) तथा 99 पर ज्योति निरंजन की उत्पत्ति अण्डे से बताई है जो अनुराग सागर में यह प्रकरण काटा गया है। कबीर सागर के अध्याय ''श्वांस गुंजार'' में निरंजन की उत्पत्ति अण्डे से बताई है। कबीर बानी में भी निरंजन की उत्पत्ति अण्डे से बताई है :- पष्ठ 98 तथा 123 पर। स्वसमवेद बोध पष्ठ 90 पर निम्न वाणी में नीचे से आठवीं पंक्ति में लिखा है कि:-

प्रथमै आदि समर्थ थे सोई, दूसर अंश हतो नहीं कोई।।4
आदि अंकुश सुरति जो कीना, सत्य करी गर्भै तब लीना।।5
पाँच अण्ड तब भयो उत्पानी, तत्त्व एक है भिन्न प्रमानी।।6

नीचे से तीसरी पंक्ति :-

देखी रूप अंडन को भाई, सोहं सुरति तबै उपजाई।।7

फिर स्वसमवेद बोध के पष्ठ 91 पर प्रथम पंक्ति से प्रारम्भ :-

(वाणी की शुरूवात में पंक्ति सँख्या लिखी गई है।)

1 :– जाते ओहं (ओम्) पुरूष भे अंशा, ओहं सोहं भे द्वै अंशा।।8
3 :– मूल सुरति अरू पुरूष पुराना। रचना बाहर कीनो थाना।।9
4 :– ओहं सोहं अंडन रहेऊ। सकल सष्टि के कर्ता भयऊ।।10
6 :– ओहं सोहं कीन प्रमानी। आठ अंश भे तिनते उतपानी।।11
7 :– आठ अंश भे एक निधाना। करता सष्टि भये परमाना।।12
8 :– सात अंश के नाम बखानो। जिनते सकल सष्टि बँधानो।।13

{सात अंशों के नाम हैं :- 1. मूल 2. अंकुर 3. इच्छा 4. सहज 5. सोहंग 6. अचिन्त 7. अक्षर। परमेश्वर ने इन सातों को भिन्न-भिन्न द्वीप में बैठाया, सबने अपना-अपना सष्टि विस्तार किया।}

17 :– सोरठा–अष्ट नास्तिक हेत है, वद्धि हेत भे सात।
तिनते सब रचना भई, स्वसम वेद विख्यात।।14
18 :– द्वीपन द्वीप अंश बैठारा। सातों जहाँ तहाँ कीन पसारा।।15
19 :– अक्षर कीन जहाँ निज थाना। तहाँ समूह जल तत्त्व बखाना।।16
21 :– तब अक्षर को निन्द्रा आई। सोलह चौकड़ी सोय रिसाई।।17
22 :– अक्षर सुरति मोह में आई। ताते दूसर अंश उपाई।।18
23 :– अंड स्वरूपी जलमहं दीना। यह अविगत समर्थ ने कीना।।19

स्वसमवेद बोध के पष्ठ 92 से ऊपर से गिनकर वाणी जानें :-

1 :– अक्षर जागा निन्द्रा जाई। देखि अण्ड व्याकुलता आई।।20
4 :– अक्षर ढ़िग अंड लग आवा। तामें लिखी हकीकत पावा।।21
13 :– अक्षर दष्टि अण्ड बिदराना। तातें काल बली प्रकटाना।।22
14 :– सोई ज्योति निरंजन भयऊ। जाको सब जग कर्ता कहेऊ।।23
15 :– एक पग काल रह्यो पुनि ठाढ़ो। युग सत्तर कीनो तप गाढ़ो।।24

सरलार्थ :- कबीर सागर के अध्याय ''स्वसमवेद बोध'' के पष्ठ 91 तथा 92 की उपरोक्त वाणियों का भावार्थ :-

वाणी नं. 4 से 8 में कहा कि सर्वप्रथम एक समर्थ परमेश्वर थे। उन्होंने आगे रचना की। फिर

पाँच अण्डे उत्पन्न किये। फिर सोहं सुरति उत्पन्न की। परमेश्वर ने फिर अंश ओहं (ओम्=क्षर पुरूष का जाप) तथा सोहं (अक्षर पुरूष का जाप मंत्र) उत्पन्न किया।

वाणी नं. 9 का भावार्थ है कि मूल सुरति और पुरूष यानि परमेश्वर ने काल की रचना से बाहर निवास किया है। ओहं (क्षर पुरूष) तथा सोहं (अक्षर पुरूष) अपने-अपने अण्डों अर्थात् अण्डाकार ब्रह्माण्डों में रहे। सब अंशों को उत्पन्न करके परमेश्वर जी ने उनको भिन्न-भिन्न में रहने की आज्ञा की।

जिस द्वीप में अक्षर पुरूष को रहने के लिए आज्ञा दी थी, उसमें एक सरोवर था। अक्षर पुरूष उस सरोवर (जल समूह) में जाकर सो गया। यही प्रमाण कबीर सागर के अध्याय ''सर्वज्ञ सागर'' के पष्ठ 137 पर भी है। अक्षर पुरूष को जगाने के लिए अण्डे की उत्पत्ति परमेश्वर जी ने की थी। अण्डे की आहट से अक्षर पुरूष जागा और अण्डे को देखा। अण्डा फूट (बिदर) गया। उससे काल की उत्पत्ति हुई। अक्षर पुरूष ने उसको ज्योति निरंजन नाम से पुकारा। जिस कारण से इसे ज्योति निरंजन कहने लगे। परमेश्वर ने निरंजन को अपने तेज (शक्ति ऊर्जा) से उत्पन्न किया। जिस कारण से यह भी परमात्मा का 17वां पुत्र कहलाया। यही प्रमाण कबीर बानी पष्ठ 123 पर भी है।

परमेश्वर जी ने इन दोनों (क्षर पुरूष अर्थात् ज्योति निरंजन तथा अक्षर पुरूष) को अचिन्त के लोक (द्वीप) में रहने की आज्ञा दी। ज्योति निरंजन ने देखा कि अन्य सबको एक-एक द्वीप मिला है। हम तीनों को एक द्वीप मिला है। मैं भी अपना भिन्न द्वीप प्राप्त करूंगा। इसलिए काल निरंजन ने एक पैर पर खड़ा होकर प्रथम बार 70 युग तक तप किया। {यह प्रमाण अनुराग सागर के पष्ठ 15 पर है।} उसके प्रतिफल में सत्य पुरूष जी ने सहज दास को आज्ञा देकर ज्योति निरंजन को 21 ब्रह्माण्ड का क्षेत्र दिया।

{विवेचन :- कबीर सागर में काँट-छाँट मिलावट है। यह तो कबीर सागर के अंतिम संशोधन करने वाले स्वामी युगलानंद जी कबीर पंथी ने भी अनुराग सागर की प्रस्तावना में तथा ज्ञान प्रकाश के पष्ठ 37, 38 के नीचे की गई टिप्पणी से स्पष्ट है।}

❑ सष्टि रचना का यथार्थ प्रकरण इस प्रकार है :-

❖ ज्योति निरंजन ने प्रथम बार 70 युग तक एक पैर पर खड़ा होकर तप किया। सहज दास को परमेश्वर ने निरंजन की इच्छा जानने के लिए भेजा। सहज दास ने सत्य पुरूष को बताया कि ज्योति निरंजन अलग स्थान चाहता है। तब परमेश्वर जी ने ज्योति निरंजन को 21 ब्रह्माण्ड सतलोक में ही भिन्न स्थान पर प्रदान किए थे।

❖ काल निरंजन को फिर ब्रह्माण्डों में रचना की सामग्री की आवश्यकता हुई। तब दूसरी बार तप किया। {प्रमाण :- दूसरी बार तप करने का प्रमाण कबीर सागर के अध्याय ''अनुराग सागर'' के पष्ठ 16 पर है।} जब तप करते हुए 70 युग हो गए तो सत्य पुरूष जी ने अपने पुत्र सहज दास जी को निरंजन के पास उसका उद्देश्य जानने के लिए भेजा। पता चला कि वह रचना की सामग्री चाहता है। परमेश्वर जी ने सहज दास जी के माध्यम से ज्योति निरंजन को बताया कि वह सामग्री कूर्म के पास है और ज्योति निरंजन से कहो कि अपने बड़े भाई कूर्म के पास जाकर रचना सामग्री (**Material of Construction**) विनम्र भाव से दण्डवत् प्रणाम करके प्रसन्न करके माँगे। ज्योति निरंजन कूर्म के द्वीप में गया तो उस समय कूर्म समाधि में था। ज्योति निरंजन ने सोचा कि यह पता नहीं कब उठेगा? इसलिए कूर्म का मुकुट पकड़कर हिलाया और कहा उठ ले! कूर्म का मुकुट निरंजन के हाथों में आ गया। उससे पाँचों तत्त्व निकले। वे ज्योति निरंजन ने ले लिए। पाँचों तत्त्वों ने बताया कि नीचे वाले मुकुट में तीन गुण हैं, वे भी ले लो, तब पूर्ण रचना होगी। तब तक कूर्म की समाधि

भंग हो गई। उसी समय कूर्म के बैठे-बैठे ही निरंजन ने दूसरा मुकुट उतारना चाहा तो कूर्म ने कहा, ये क्या कर रहे हो? तब ज्योति निरंजन ने बताया कि मुझे पिताजी ने कहा है कि आपसे रचना सामग्री प्राप्त करूँ। कूर्म ने कहा कि मैं पिताजी से आज्ञा लेकर आपको दूँगा, वैसे सामग्री नहीं दे सकता क्योंकि सतपुरूष जी ने ये मुझे दिए हैं। गुप्त रखने हैं। ज्योति निरंजन तो तेज स्वभाव का काल रूप है। उसने कहा मैं क्या झूठ बोल रहा हूँ। यह कहकर कूर्म का दूसरा मुकुट उतारने लगा तो कूर्म ने विरोध किया, दोनों का कुछ झगड़ा हुआ। उसी दौरान ज्योति निरंजन के हाथ में कूर्म जी का मुकुट आ गया। उससे तीन गुण (रजगुण, सतगुण और तमगुण) निकले। निरंजन उनको लेकर दौड़ लिया और अपने 21 ब्रह्माण्ड में चला गया। कूर्म ने सत्य पुरुष कबीर जी से ज्योति निरंजन की शरारत बताई और कहा कि मैं उसकी पिटाई करूँगा। उसने मेरे साथ बद्तमीजी की है तथा आपकी आज्ञा की अवहेलना की है। परंतु परमेश्वर ने कूर्म को धैर्य दिया कि यदि आपने उसके साथ मारपीट की तो आप भी बराबर के पाप के अधिकारी बन जाओगे। फिर आप में और उस नालायक में क्या अंतर रहेगा? उसने जैसा कर्म किया है, उसको उसका फल मिलेगा। उसके लोक में सदा लड़ाई-झगड़ा, मारकाट बनी रहेगी। वह स्वयं भी अशान्त रहेगा। आप बड़े हैं, वह छोटा है। छोटों को क्षमा करना बड़ों का बड़प्पन है। आप दयावान हैं, उसे क्षमा कर दो। परमेश्वर के ये वचन सुनकर कूर्म शान्त हुआ। कूर्म का शरीर 12 पालंग ऊँचा था तथा ज्योति निरंजन का शरीर कूर्म से आधा यानि 6 पालंग का है। कूर्म उससे अधिक शक्तिशाली है। फिर भी कूर्म ने सयंम बरता और पाप का भागी नहीं बना। अनुराग सागर के पंष्ठ 18 पर बनावटी तथा मिलावटी वाणी है। यथार्थ विवरण यह दास (संत रामपाल दास) बता रहा है (लिख रहा है)। यह सत्य मानें।

❖ ज्योति निरंजन ने तीसरी बार तप किया :-

{प्रमाण अनुराग सागर के पंष्ठ 19 पर।}

ज्योति निरंजन ने विचार किया कि मैं रचना भी कर लूँगा, परंतु जीवों के बिना यहाँ अकेले का दिल नहीं लगेगा। इसलिए परमेश्वर जी से जीव आत्मा प्राप्त करूँगा।

वाणी :- एक पग तब सेवा कियेऊ। चौंसठ युगलों ठाढ़े रहेऊ।।

परमेश्वर (सत्य पुरूष) जी ने तब तक सतलोक के सर्व ब्रह्माण्डों में आत्माऐं उत्पन्न कर दी थी। वे आनन्द से रह रहे थे। जिस समय ज्योति निरंजन एक पैर पर खड़ा होकर तपस्या करने लगा तो आस-पास के द्वीपों की आत्माऐं (नर) उसके तप को देखकर उस पर आकर्षित हो गए। सत्य पुरूष जी ने आकाशवाणी की कि हे आत्माओ! (हंसो) आप परमात्मा में सुरति (ध्यान) रखो। पतिव्रता की तरह रहने वालों को उनका पति (परमेश्वर) प्यार करता है। जार (Sexy) व्यक्ति केवल अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए पाखण्ड करता है। यह सुनकर सब ऊपर से तो सावधान हो गए, परंतु दिल में भावना तपस्वी के प्रति बनी रही। जिससे वे सब आत्माऐं सत्यपुरूष जी के हृदय से गिर गई। ज्योति निरंजन ने तीसरी बार तप प्रारम्भ किया। जब 64 युग बीत गए, तब परमेश्वर जी ने अपने पुत्र सहज दास जी को निरंजन की इच्छा जानने के लिए भेजा। सहज दास जी ने परमेश्वर को तप करने का उद्देश्य बताया। सत्य पुरूष ने सहज दास से कहा कि उससे कहो कि आत्माऐं मेरी शब्द शक्ति से उत्पन्न हुई हैं। ये मेरे अंश हैं। इसलिए आत्माओं को किसी भी तप के प्रतिफल में नहीं दे सकता। हाँ, एक उपाय है। यदि कोई आत्मा स्वेच्छा से उसके साथ जाना चाहे तो जा सकते हैं। यह वचन सहज दास जी से सुनकर ज्योति निरंजन उन आत्माओं के पास आया जो उसको दिल से चाहते थे और उनको अपने साथ चलने के लिए प्रलोभन दिया कि मैंने

पिताजी से 21 ब्रह्माण्ड का स्थान प्राप्त किया है। उसमें रचना की सामग्री भी प्राप्त कर ली है। वहाँ पर सुंदर रचना करके रहूँगा। क्या आप मेरे साथ चलना चाहते हो? सबने एक स्वर में कहा कि यदि पिता जी आज्ञा कर दें तो हम चलने के लिए तैयार हैं। ज्योति निरंजन ने यह जानकारी परमेश्वर कबीर जी को दी कि कुछ आत्माऐं मेरे साथ जाने के लिए सहमत हैं। ज्योति निरंजन के साथ परमेश्वर वहाँ प्रकट हुए और सर्व आत्माओं से कहा कि कौन-कौन ज्योति निरंजन के साथ जाना चाहते हैं। कुछ देर तो सब लज्जित होकर नीचे गर्दन करके बैठे रहे। परमेश्वर के दोबारा पूछने पर सर्वप्रथम एक आत्मा खड़ा हुआ और हाथ उठाकर जाने की सहमति प्रकट की। फिर तो देखा-देखी असँख्यों आत्माओं ने स्वीकृति दे दी। जिसने सर्वप्रथम हाथ खड़ा किया था, सत्यपुरूष जी ने उस आत्मा की युवती बनाई। उसका नाम प्रकृति देवी (अष्टंगी) रखा। उन सब आत्माओं को बीज रूप में बनाकर उस कन्या के शरीर में प्रवेश कर दिया। ज्योति निरंजन को पहले ही उसके लोक में जाने को कह दिया था और कह दिया था कि आप जाओ, मैं कुछ देर में तेरे पास उन सर्व आत्माओं को भेजता हूँ जिन्होंने तेरे साथ जाने की सहमति व्यक्त की है। वह चला गया था। परमेश्वर जी ने प्रकृति कन्या से कहा पुत्री! मैंने आपके शरीर में वे सर्व आत्माऐं बीज रूप में प्रवेश कर दी हैं जो ज्योति निरंजन के साथ रहने के इच्छुक थे। आपको मैंने शक्ति प्रदान की है कि आप अपने वचन से जैसे जीव उत्पन्न करना चाहोगी, कर सकोगी। आप धर्मराय {निरंजन को धर्मराय इसलिए कहा जाता है क्योंकि परमेश्वर ने ज्योति निरंजन से कहा था कि ये सब आत्माऐं तेरे साथ जाना चाहती हैं, तू इनको परेशान न करना। ज्योति निरंजन ने प्रतिज्ञा की थी कि मैं धर्म-राज करूँगा। इसलिए इसको धर्मराय भी कहा जाता है।} के पास जाओ।

{नोट :- पवित्र कबीर सागर के अध्याय ''अनुराग सागर'' के पृष्ठ 21, 22 पर विवरण अपुष्ट है। इसकी पुष्टि अध्याय स्वांस गुंजार के पृष्ठ 15 से 21 पर की है।}

''ज्योति निरंजन का अध्या(दुर्गा) से भोग-विलास की इच्छा करना और दुर्गा जी का काल के उदर में शरण लेना''

परमेश्वर ने अपने पुत्र सहज दास जी से कहा कि तुम अपनी बहन को ज्योति निरंजन के पास छोड़कर आओ। उसको बताना कि इस कन्या को वे सब आत्माऐं दे दी हैं जिन्होंने तेरे साथ जाने की स्वीकृति दी थी। यह भी बताना कि वे सर्व आत्माऐं बीज रूप में कन्या के शरीर में प्रवेश कर दी हैं। इस कन्या को शक्ति प्रदान कर दी है। जितने जीव तू चाहेगा, उतने ही प्राणी ये वचन से उत्पन्न कर देगी।

सहज दास ने वैसा ही किया जो सत्य पुरूष जी का आदेश था। कन्या को उसके पास छोड़कर सहज दास जी अपने द्वीप में चले गए और परमेश्वर जी को सूचना दे आए कि जैसा आप जी का आदेश था, वैसा ही कर दिया है।

नोट :- प्रिय पाठकों से निवेदन है कि मुझ दास द्वारा लिखी तथा बताई (सत्संग में) सृष्टि रचना यथार्थ है। इसके लिए निवेदन है कि आप जी कबीर सागर के ''ज्ञान सागर'' अध्याय में पृष्ठ 8-9 पर पढ़ेंगे कि सहज दास अपनी बहन प्रकृति देवी को ज्योति निरंजन के पास छोड़कर आया था, परंतु यहाँ काँट-छाँट के पश्चात् भी कुछ अंश बचा है।

युवा होने के कारण लड़की अष्टंगी का रूप निखरा हुआ था। ज्योति निरंजन को काम (Sex) ने सताया। उसमें लड़की से भोग-विलास करने की प्रबल इच्छा हुई। ज्योति निरंजन ने कन्या का

अंग-अंग निहारा(देखा)। बुरी दष्टि से देखकर अपने मन की बकवाद बताई तो लड़की ने अपनी इज्जत रक्षा करने के लिए बहुत सारी चेष्टा की और कहा कि आप भी उसी परम पिता के उत्पन्न किये हो, मेरी उत्पत्ति भी उसी परमेश्वर से हुई है। आप पहले उत्पन्न हुए हो। इसलिए मेरे बड़े भाई हो, मैं आपकी छोटी बहन हूँ, बहन-भाई का यह कार्य पाप है।

❖ {इससे सम्बन्धित अमवाणी पवित्र कबीर सागर के अध्याय ''अनुराग सागर'' के पष्ठ 20 से 25 तक है, परंतु अस्पष्ट है। इसकी पुष्टि अध्याय ''स्वसमवेद बोध'' पष्ठ 94 से 96 तक है, परंतु विशेष विस्तत वर्णन अध्याय ''श्वांस गुंजार'' पष्ठ 15 से 21 तक है।

परंतु यथार्थ ज्ञान मुझ दास को परमात्मा ने प्रदान किया है। पवित्र कबीर सागर का हवाला दिए बिना यदि मैं वैसे कहानी की तरह लिख दूँ तो अन्य तो मानेंगे ही नहीं, कबीर पंथी भी नहीं स्वीकारेंगे। कबीर सागर के बिगड़े रूप में भी पर्याप्त सच्चाई शेष है जो बुद्धिमान के लिए मील का पत्थर है।}

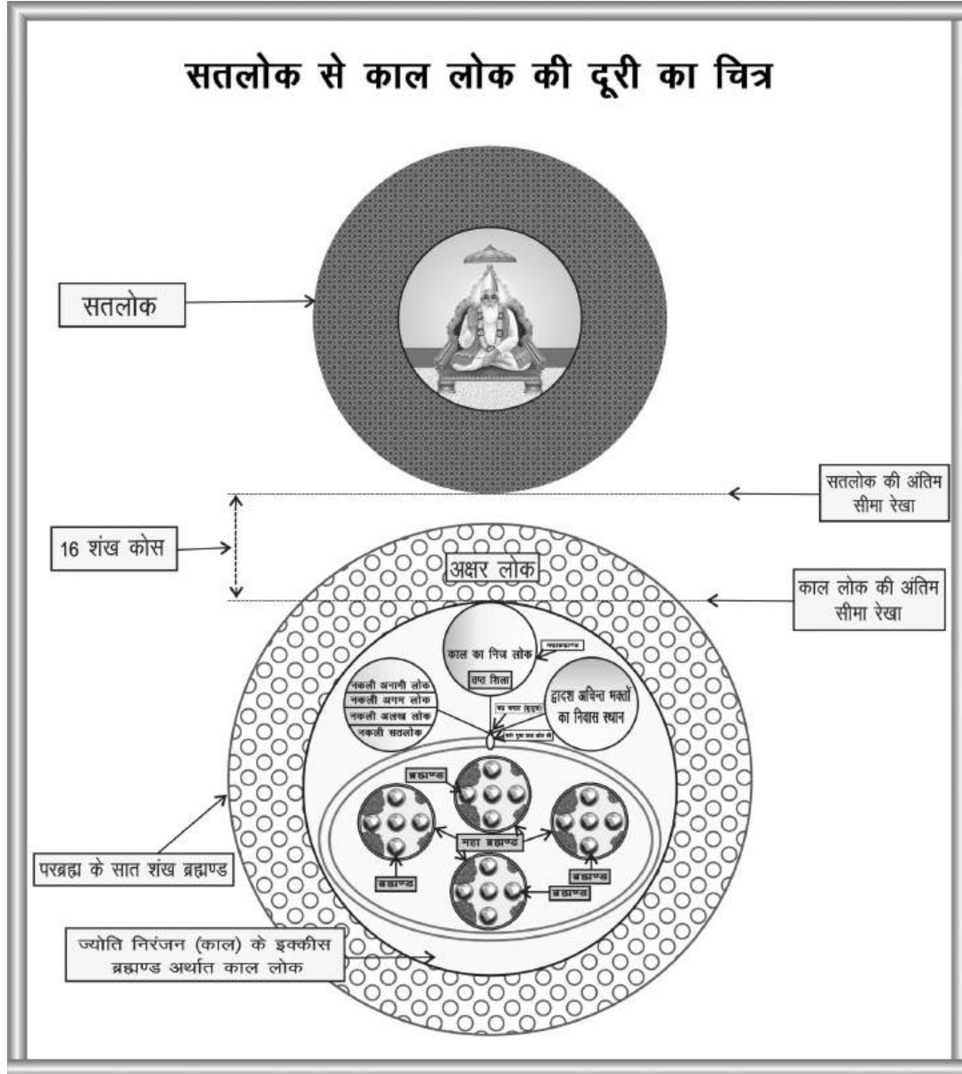
लड़की ने सब तरह से विनती कर ली, परंतु ज्योति निरंजन कामांध होकर हद से आगे बढ़ गया। लड़की के भग (प्रजनन इन्द्री) नहीं था। निरंजन ने नाखून से भग बनाया। उस समय लड़की का चुंबन करने के लिए मुँह खोल रखा था। तब कन्या ने सूक्ष्म रूप बनाया और ज्योति निरंजन के पेट में प्रवेश कर गई। ज्योति निरंजन के पेट से देवी ने परमेश्वर जी से पुकार की कि हे पिता जी! मेरी रक्षा करो। उसी समय स्वयं परमेश्वर अपने पुत्र जोगजीत का रूप बनाकर ज्योति निरंजन के सामने प्रकट हुए। देवी को निरंजन का पेट फाड़कर बाहर निकाला। अपनी शक्ति से पेट पुनः स्वस्थ कर दिया। उन दोनों से कहा कि आप सत्यलोक से निकल जाओ, यह परमेश्वर का आदेश है। देवी दुर्गा से कहा कि तूने अपने पिताजी से आस्था तोड़कर ज्योति निरंजन से प्रेम किया। जिस कारण से तू इसके साथ जा और अपने कर्म का फल भोग। तेरे साथ वे आत्माऐं भी परमेश्वर की दोषी हैं जिन्होंने तेरे साथ इस ज्योति निरंजन में आस्था की थी। यहाँ सत्यलोक में अपने पिताजी के घर में सर्व सुख था। सर्व सुविधाऐं थी। तुमने भोजन की भरी थाली को ठोकर मारी है। अब आपको पता चलेगा कि समर्थ की शरण छोड़कर जाने से कितना कष्ट और अशान्ति होती है। यहाँ पर बिना कर्म किए सब कुछ उपलब्ध था। आप सबको नैष्कर्म्य मुक्ति प्राप्त थी। ज्योति निरंजन से कहा कि आज से तेरा नाम काल होगा। तूने कन्या को खाया है। भावार्थ है कि तूने कन्या को परेशान किया। इसने अपनी इज्जत रक्षा के लिए कोई और विकल्प न देखकर तेरे मुख में जाना पड़ा जहाँ से तूने कन्या को निगल लिया था।

{एक बार जलियांवाला बाग में अंग्रेजों के विरूद्ध सभा हो रही थी। हजारों स्त्री-पुरूष, बच्चे उपस्थित थे। अंग्रेज जनरल डॉयर ने अंधाधुंध गोलियाँ चलवा दी, हजारों व्यक्ति मारे गए। एक द्वार था। लोगों को बाहर जाने का कोई रास्ता नहीं मिला। उस बाग में कूँआ था। कुछ व्यक्ति भयभीत होकर उस कूँए में कूद गए, अपनी जीवन रक्षा के लिए। कूँए में गिर गए और मर गए। यह सब भयभीत होने के कारण हुआ। इसी प्रकार देवी दुर्गा जी भयभीत होकर उसके मुँह में प्रवेश कर गई। फिर पेट में जाना स्वभाविक था।}

परमात्मा ने ज्योति निरंजन से कहा कि तू एक लाख मानव शरीरधारी प्राणियों को खाया करेगा और सवा लाख उत्पन्न किया करेगा। तेरे लोक में सदा अशांति रहेगी तथा भय का वातावरण रहेगा। अब अपने 21 ब्रह्माण्डों को लेकर सत्यलोक से निकल जा।

परमेश्वर कबीर जी ने जोगजीत के रूप में यह आदेश दिया। ज्योति निरंजन ने करबद्ध विनती

की कि हे जोगजीत! आप मुझे सत्यलोक से न निकालें। मैं कभी गलती नहीं करूँगा, मुझे क्षमा करो। परमात्मा ने कहा पहले तो तूने अपने बड़े भाई कूर्म के साथ बद्तमीजी की और अब तूने अक्षमय अपराध किया है। अपनी बहन की ही इज्जत लूटने पर उतारू हुआ। उसको इतना भयभीत कर दिया कि वह डरकर तेरे अंदर प्रवेश कर गई। सत्यलोक में ऐसी हरकत असहनीय है। आप अविलम्ब यहाँ से चले जाऐं। इतना आदेश होते ही काल निरंजन के 21 ब्रह्माण्ड विमान की तरह चले और सत्यलोक से 16 शंख कोस (48 शंख कि.मी.) दूर आकर रूक गए। यह दूरी सत्यलोक की सीमा से काल के 21 ब्रह्माण्डों की सीमा की है। {काल के एक ब्रह्माण्ड में भी सतलोक है जिसे मीनी यानि छोटा सतलोक कहते हैं। पाताल लोक से उसकी दूरी भी 16 (सोलह) शंख कोश है।}



जब काल तथा दुर्गा देवी जी 21 ब्रह्माण्डों सहित सत्यलोक से बाहर हुए। तब काल ने दुर्गा देवी जी के साथ फिर वही हरकत की। देवी ने कहा हे निरंजन! आप कुछ शर्म करो। मेरे पास

वचन शक्ति है। जितने जीव आप कहोगे, मैं वचन से उत्पन्न कर दूँगी। जो शारीरिक क्रिया करके आप अपना कर्म खराब करना चाहते हैं, यह महापाप है क्योंकि मैं पहले तो आपकी बहन हूँ। दूसरे आपके पेट से बाहर आयी हूँ। जिस कारण से आपकी बेटी हूँ। ये दोनों ही नाते पवित्र हैं। आपका और मेरा मिलन उचित नहीं है। काल निरंजन ने प्रकति देवी को अनेकों प्रलोभन दिए, परंतु देवी अपने धर्म पर अडिग रही, परंतु काल पुरूष (क्षर पुरूष) ने देवी का हाथ पकड़कर बहुत प्रकार से रिझाने की कोशिश की। अंत में बलपूर्वक विवाह किया और भोग-विलास किया। प्रथम गर्भ जब दुर्गा देवी को रहा, उससे पहले काल ने कई स्थान बना लिए थे। पहले तीन स्थान ब्रह्मलोक में बनाए थे। 1. रजगुण युक्त 2. सतगुण युक्त 3. तमगुण युक्त। इन तीनों में रहकर एक-एक गुण युक्त तीन पुत्र उत्पन्न किए। जैसे किसी घर में तीन कक्ष हैं। एक कक्ष में अश्लील चित्र लगे हैं। जब व्यक्ति उस कक्ष में प्रवेश करता है तो वह रजोगुण से प्रभावित होकर मन में विलास के लिए प्रेरित होता है। इसी प्रकार काल पुरूष ने एक स्थान रजोगुण युक्त रचा। उसमें दुर्गा जी के साथ रहकर ब्रह्मा रूप बनाकर भोग-विलास किया। उस स्थान में जो पुत्र रजगुणमय तथा पाँच मुखी उत्पन्न हुआ। उसका नाम ब्रह्मा रखा। इसी प्रकार सतोगुण प्रधान क्षेत्र में रहकर दुर्गा जी के साथ विष्णु रूप धारण करके संभोग करके काल ब्रह्म ने सतगुणमय श्री विष्णु जी को उत्पन्न किया। इसी प्रकार तमगुण युक्त स्थान पर काल ब्रह्म ने शिव रूप धारण करके दुर्गा जी से संभोग (Sex) करके श्री शिव जी को तमोगुणमय उत्पन्न किया।

दुर्गा जी के साथ काल पुरूष ने जो-जो वार्ता तथा कर्म किए जो आगे लिखे हैं, इनकी पुष्टि पवित्र कबीर सागर में है। भले ही मिलावट है या जोड़-तोड़ की गई है, फिर भी बुद्धिमान को समझने के लिए पर्याप्त है।

पवित्र कबीर सागर के अध्याय ''श्वांस गुंजार'' पष्ठ 15 से 21 तक कुछ वाणी इस प्रकार हैः-

(वाणी की शुरूवात में पंक्ति सँख्या लिखी गई है। वाणी सँख्या अंत में लिखी हैं।)

पष्ठ 15 पर :-

21 :– कामिनि धर्म भये एक ठाऊँ। अंक मिलाय कीन्हबहु भाऊ।।25
22 :– शील रंग रस कीन्ह मिलापा।धर्म रोष हो कीन्ह विलापा।।26
23 :– करै विलाप कला बहु भारी। मुख चतुराई हृदय विकारी।।27
24 :– कामिनसों कीन्हों व्यवहारा। उपजा रंग रूप रसधारा।।28
25 :– धर्म कहैं कामिनिसों बाता। गहै अंग चटकावै गाता।।29

पष्ठ 16 पर :-

4 :– कामिनि (दुर्गा) देख धर्म (काल) अकुलाना। उपजा अंग रोष अभिमाना।।30
5 :– धर्म कह कामिनि सों बानी। तोरे पास है पारस सहिदानी।।31
7 :– सो पारस देहू मोरे हाथा। तुमहु रहो हमारे साथा।।32

भावार्थ :- काल पुरूष और देवी जब अकेले रह गए। तब काल ने प्रकति देवी को बाहों में लेकर अपने अंग (शरीर) से मिलाया और प्रेमभाव बहुत दिखाया। अंदर तो मन में विकार था, परंतु ऊपर से चतुराई करके विलाप करने लगा। जैसे कामातुर पुरूष युवती को देखकर विशेष अदा करके आहें भरने का अभिनय करता है। ऐसे acting (अदा) करने लगा और अपना रूप रंग संवार लिया। काल देवी से मीठी-मीठी बातें कर रहा था और अपने शरीर को चटका-मटका रहा था यानि देवी जी को रिझाने की हर संभव कोशिश कर रहा था। देवी को देखकर काल व्याकुल हो गया। काल ने

कहा कि जो तेरे पास जीव उत्पन्न करने की शक्ति (पारस रूपी शक्ति) है, वह मुझे दे दो।

8 :– धर्मराय कही जब कुबानी। तब कामिनि चित शंका आनि।।33

9 :– कामिनि कह धर्म सो बानी। काहे धर्म होऊ अज्ञानी।।34

10 :– हम तुम एक पुरूष ने कीन्हों। तुम को दीन सो हम को दीन्हों।।35

11 :– मैं लघु तुम जेठो रे भाई। हम से काहे करो ढ़िठाई।।36

13 :– बहिन–भाई की होत कुबानी। आगे चलि है यही सहिदानी।।37

14 :– जब कामिनि कही असबानी। धर्मराय चित शंका आनी।।38

भावार्थ :- काल पुरूष के छल रूप क्रियाओं को पहचानकर देवी को शंका हुई कि यह बकवास कर रहा है और उसके मन की बात जानकर काल से कहा कि मैं तथा आप एक परमेश्वर ने उत्पन्न किए हैं। आप बड़े भाई हैं, मैं छोटी बहन हूँ। भाई-बहन का मिलन पाप का कारण है। आगे फिर तेरे लोक में यही गलत परंपरा प्रारम्भ हो जाएगी। जब देवी ने यह बात कही तो काल को लगा कि बात नहीं बनी।

कबीर सागर के अध्याय ''श्वांस गुंजार'' के पष्ठ 17 से वाणी :-

{नोट :- इस पष्ठ पर शेष वाणी उट-पटांग मिलावटकर्ता द्वारा बनाकर लिखी है। प्रमाण के लिए अन्य वाणियों में हिन्दू-मुसलमान दोनों का वर्णन है। उस समय अन्य जीवों की उत्पत्ति तो हुई ही नहीं थी।} काल ने कहा :-

5 :– जा दिन पुरूष रची तव देहा। ता दिन से मोही तोसें जुड़्या सनेहा।।39

6 :– मोहि कारण तोहे पुरूष बनावा। तू काहे मोते अंश छिपावा।।40

भावार्थ :- काम-वासना के वश हुए काल ने कामिनी (युवती) से कहा कि जब से परमेश्वर ने तुझे बनाया है। उसी दिन से मुझे तेरे से प्रेम है। मेरे लिए तो परमात्मा ने तुझे उत्पन्न किया। फिर तू मेरे से किसलिए अंश (गुप्तांग) छुपा रही है। यह बात सुनकर देवी ने कहा, हे भाई! जो बात आप कह रहे हो, यह मेरी समझ से बाहर है। कबीर सागर के अध्याय ''श्वांस गुंजार'' के पष्ठ 18 से पंक्ति सँख्या 15 की वाणी:-

15 :– जो जो वचन कहेउ तुम भाई। सो हमरे चित एक न आई।।41

काल ने कहा :- {पष्ठ 19 पंक्ति सँख्या 1, 3, 5}

1 :– अब तो पुरूष त्रास नहीं मोही। गहों बाह को राखै तोही।।42

3 :– तैं कामिनि कठोर निर्मोही। रचा पुरूष मम कारण तोही।।43

5 :– काम (Sex) सतावै निश दिन मोही। दे पारस के लीलहूँ तोही।।44

भावार्थ :- काल ने कहा कि अब तो मैं और तू सत्यलोक से दूर आ गए हैं। यहाँ तो मुझे परमात्मा का भय भी नहीं है। हे कामिनी!(युवती) तू तो कठोर और निर्मोही है। मेरे को काम-वासना (Sex) दिन-रात सता रही है। तू मेरे से मिल ले, नहीं तो मैं तुझे लीत (मार) दूँगा।

(नोट :- इस पष्ठ पर लिखी मिलावटी वाणियों में अधिक प्रकरण गलत है। काल को सत्यलोक से निकाला नहीं था। परंतु यह वाणी नं. 42 सिद्ध करती है कि काल को सतलोक से निकालने के बाद का संवाद है क्योंकि इस वाणी में काल ने कहा है कि यहाँ पर मुझे परमात्मा का त्रास (डर) नहीं है। सत्यलोक में तो पुरूष (परमात्मा) का भय था ही। निष्कासन के पश्चात् काल स्वतंत्र हुआ है।)

6 :– कामिनि कहे धर्म सुनु बाता। चढ़ि कलिम तो हरे गाता।।45

भावार्थ :- दुर्गा जी ने कहा कि हे धर्मराय! (काल) मेरी बात ध्यान देकर सुन। ऐसा कर्म करने से तेरे शरीर को पाप लगेगा। तेरे सिर पर पाप चढ़ेगा।

इस प्रकार जब देवी ने कहा तो काल ने क्या किया :-

7 :– हठ कामिनि कीन्हु ताही। धर्मराय पकरी तब बांही।।46

8 :– गही बांह कामिनि की जबहि। काम बाण घट व्यापे तबही।।47

भावार्थ :- जब देवी ने अपने धर्म की रक्षार्थ हठ करके काल का साथ नहीं दिया तो काल ने देवी की बांह पकड़ी क्योंकि उसके अंदर विषय-वासना प्रबल हो चुकी थी। जब काल ने दुर्गा जी का हाथ बाजु से पकड़ा तो देवी में भी वासना (Sex) की इच्छा जागत हो गई। मन मारकर काल का साथ देना पड़ा। (नोट :- शेष वाणी मिलावटी है। आगे पष्ठ 20 से सत्य वाणी लेता हूँ।)

कबीर सागर के अध्याय ''श्वांस गुंजार'' के पष्ठ 20 से वाणी :-

8 :– जेहि कारण कामिनि हठ कीना। पारस संग छीन सो लीन्हा।।48

9 :– उत्पत्ति पारस धर्म तब पावा। कन्या रही ताही के ठाँवा।।49

वास्तविक वाणी इस प्रकार है :-

8 :– जेहि कारण कामिनि हठ कीना। नारी धर्म छीन सो लीन्हा।।

9 :– नारी परस (मिलन कर) धर्म सुख पावा। कन्या तब रही ताही के ठाँवा।।

20 :– कामिनि कहे धर्म सों बानी। हम तो तुमरे हाथी बिकानी।।50

पष्ठ 21 से :-

6 :– बरबस (जबरदस्ती) धर्मराय हर लीन्हा। बिन लेखा रजधानी कीन्हा।।51

भावार्थ :- वाणी नं. 48 से 51 में स्पष्ट किया है कि जिस नारी धर्म की रक्षार्थ अपने सामर्थ्य अनुसार देवी ने विरोध किया था। वह धर्म काल ने बलात छीन लिया यानि इज्जत खराब कर दी। जिस कारण से देवी को काल के साथ रहना पड़ा और कहा कि मैं अब तेरे हाथ बिक चुकी हूँ। अपनी गलती का अहसास करके देवी ने कहा कि अब कुछ भी कर। मैंने अपने पैर पर आप कुहाड़ा मारा है। पष्ठ 21 की शेष वाणी मिलावटी तथा बनावटी हैं, इनकी पूर्ति अन्य अध्यायों से होती है।

कबीर सागर के अध्याय ''स्वसमवेद बोध'' के पष्ठ 94 तथा 95 पर लिखे विवरण से स्पष्ट हो जाता है। उसमें पष्ठ 95 पर लिखा है कि कामिनी यानि अध्या (दुर्गा) को अपने पास देखकर काल ने उसका अंग-अंग निरखा (गौर से देखा) जिससे उसके अंदर काम-वासना (Sex) प्रेरणा प्रबल हो गई। देवी ने बहुत से प्रश्न-उत्तर किए, परंतु अनुराग सागर तथा श्वांस गुंजार अध्यायों में यह प्रकरण नहीं है। सीधा यही लिखा है कि काल अध्या (देवी) को देखकर आसक्त हो गया और उसको खा गया, परंतु स्वसमवेद बोध पष्ठ 95 पर स्पष्ट किया है कि दुर्गा ने वहीं सत्यलोक में ही काल से बहुत विरोध किया था। दूसरी त्रुटि यह है कि इसी पष्ठ 95 स्वसमवेद बोध में लिखा है कि जब काल ने कन्या को खा लिया, अध्या ने परमात्मा से अपने आपको बचाने की पुकार की तो जोगजीत अचानक प्रकट हो गया। उसने कैल (निरंजन) को सुरति बान से फाड़ा। कन्या को निरंजन के मुख से बाहर डाला जबकि अनुराग सागर पष्ठ 23 पर लिखा है कि कन्या की पुकार सुनकर सत्य पुरूष ने जोगजीत को भेजा और कहा कि धर्म के पेट में नारी (दुर्गा) है, उसके उदर (पेट) को फाड़कर देवी को बाहर निकालो। जोगजीत ने काल निरंजन को पटक कर मारा। कन्या धर्म (काल) के पेट से निकाली। जोगजीत चला गया। जोगजीत ने जब काल को पटककर मारा, वह न्यारे देश में जा पड़ा। वहीं अध्या पेट से निकली। जोगजीत की फिर कोई भूमिका नहीं बताई

है। प्रिय पाठको! इस प्रकार कबीर सागर के सत्य ज्ञान का कबीर पंथी जो काल के दूत थे, उन्होंने अड़ंगा कर रखा है। सष्टि रचना का यथार्थ ज्ञान मुझ दास (रामपाल दास) को प्राप्त है जो सर्व शास्त्रों से मेल करता है। सष्टि रचना का संक्षिप्त यथार्थ वर्णन पुस्तक ''गीता तेरा ज्ञान अमत'' तथा ''अध्यात्मिक ज्ञान गंगा'' में किया है, परंतु विस्तार के साथ एक भिन्न पुस्तक है, ''विस्तत सष्टि रचना'', उसमें यथार्थ सष्टि की उत्पत्ति का ज्ञान परमेश्वर कबीर जी द्वारा दिया गया लिखा है।

पवित्र कबीर सागर के निर्मल ज्ञान में गंगा दरिया की तरह कचरा डालकर मलिन किया गया। जिस प्रकार गंगा को स्वच्छ करने में कितनी कठिनाई आ रही है, परंतु गंगा का जल तो निर्मल है। यदि कचरा निकल गया तो गंगा जल तो पाक साफ है ही, इसमें कोई दो राय नहीं। इसी प्रकार पवित्र कबीर सागर को स्वच्छ करने का अभियान चला है। यह सेवा (मजदूरी) मुझ दास (रामपाल दास) को प्राप्त हुई है। मेरा जीवन धन्य हो गया है। करना-कराना तो सतगुरूदेव जी ने है, मुझ दास को तो केवल बड़ाई दे रहे हैं। सूक्ष्मवेद में संत गरीबदास जी ने कहा है :-

''सतगुरू नाल बड़ाईयां, जिन चाहढ़े तिन देय।''

काल निरंजन की प्रतिज्ञा

तीनों पुत्रों रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिव जी की उत्पत्ति के उपरांत काल ब्रह्म ने अपनी पत्नी दुर्गा देवी यानि प्रकति देवी से कहा कि युवा अवस्था तक इन तीनों को अचेत (कोमा में) रखना। जब ये युवा हो जाऐं तो इनको तीन भिन्न-भिन्न स्थानों पर रखकर सचेत करना। वे तीनों स्थान मैंने निर्मित कर दिये हैं।

आज के बाद मैं किसी भी मनुष्य, देव, ऋषि आदि को दर्शन नहीं दूँगा। चाहे कोई जप करे, चाहे तप करे, चाहे योग समाधि लगाए। मेरे वास्तविक स्वरूप (ज्योति निरंजन रूप) में नहीं देख सकेगा। यह मेरी अटल प्रतिज्ञा है।

{प्रमाण :- कबीर सागर के अध्याय ''स्वसमवेद बोध'' के पष्ठ 96 तथा श्वांस गुंजार के पष्ठ 21 तथा अनुराग सागर के पष्ठ 26 पर।}

विशेष :- श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 7 श्लोक 24-25 में गीता ज्ञान दाता ब्रह्म ने गीता ज्ञान में यही स्पष्ट किया है। काल ब्रह्म श्री कष्ण जी के शरीर में प्रेतवत् प्रवेश करके बोला तथा कहा कि मैं कभी किसी के समक्ष नहीं होता। मैं अपनी योगमाया से छिपा रहता हूँ। यह मेरा अटल (अचल) अविनाशी (अव्ययम्) नियम है। यह मेरी अटल प्रतिज्ञा है। यह मूर्ख जन समुदाय मुझ अव्यक्त (अदश्य रहने वाले) को (व्यक्तिम् आपनम् मनन्यते अबुद्धय) व्यक्ति रूप में यानि कष्ण मानते हैं। मैं कष्ण नहीं हूँ।

प्रिय पाठको! आप जी ने मुझ दास (रामपाल दास) से पहले किसी भी संत, आचार्य, महर्षि, गुरू तथा शंकराचार्य जी से यह अद्भुत ज्ञान नहीं सुना है। यह ज्ञान अनादि से हमारे शास्त्रों में वर्णित है। जैसे श्रीमद्भगवत् गीता लगभग 5500 वर्ष पहले महर्षि वेदव्यास जी द्वारा लिखी गई थी। उस ऋषि जी का वास्तविक नाम श्री कष्ण द्वैपायन है, वे श्री पाराशर ऋषि जी के पुत्र थे। उनका जन्म एक नाविक की कुँवारी पालक पुत्री मच्छोदरी से हुआ था। वही लड़की फिर राजा शान्तनु से विवाही गई जिससे चित्र तथा विचित्र नाम के पुत्र उत्पन्न हुए।

पवित्र कबीर सागर का ज्ञान भी लगभग 550 वर्ष पूर्व परमेश्वर कबीर जी ने बोला और उनके

परम शिष्य श्री धर्मदास जी ने लिखा था। कबीर परमेश्वर जी को सब पता है। वे तो सर्वज्ञ हैं। उन्होंने तो सन् 1398 से 1518 के बीच यह ज्ञान बोला था जो धर्मदास जी ने कबीर सागर में लिखा था। ब्राह्मणों को आज तक ज्ञान नहीं है। यह स्पष्ट हुआ कि मुझ दास के अतिरिक्त इस गुप्त ज्ञान के विषय में किसी को नहीं पता था। कारण यह रहा कि यह परमेश्वर कबीर जी का आदेश कि इस अमत ज्ञान को यानि मूल ज्ञान को तब तक छुपाना है, जब तक कलयुग 5505(पाँच हजार पाँच सौ पाँच) वर्ष न बीत जाए। कलयुग सन् 1997 में 5505 वर्ष बीत चुका है।

{प्रमाण के लिए देखें कबीर सागर के अध्याय ''कबीर बानी'' के पष्ठ 137 पर तथा अध्याय ''स्वसमवेद बोध'' के पष्ठ 121 तथा 171 पर।}

उपरोक्त अध्यायों में स्पष्ट लिखा है कि जब कलयुग 5505 वर्ष बीतेगा, तब यह ज्ञान जगत में प्रत्यक्ष होगा। उसको प्रत्यक्ष करने वाला संत गरीबदास जी (गाँव-छुड़ानी, जिला-झज्जर, हरियाणा प्रान्त) वाले के पंथ में होगा। उस समय कलयुग की बिचली पीढ़ी चलेगी।

पूर्ण विवरण पढ़ें अध्याय ''अनुराग सागर'' तथा ''कबीर बानी'' के सारांश में।

अब प्रसंग पर आता हूँ।

आप जी ने पवित्र कबीर सागर में प्रकरण पढ़ा कि काल (ज्योति स्वरूप निरंजन) ने प्रतिज्ञा की थी कि मैं भविष्य में किसी को दर्शन नहीं दूँगा। यही प्रमाण श्रीमद्भगवत गीता के अध्याय 7 श्लोक 24-25 का वर्णन पढ़ा। पवित्र श्रीमद्भगवत गीता एक महर्षि शिक्षित विद्वान (कष्ण द्वैपायन) व्यास जी ने लिखी थी। चारों पवित्र वेद तथा पवित्र अठारह पुराणों के लेखक भी श्री व्यास जी ही हैं। परंतु कबीर सागर किसने लिखा और किसने यह ज्ञान कहा, यह पूर्व में लिख दिया है कि परमेश्वर कबीर जी ने कहा और संत धर्मदास जी ने लिखा। आप जी को यह बताने की आवश्यकता मैं नहीं समझता कि परमात्मा कबीर जी को अक्षर ज्ञान नहीं था। इसलिए वे तो श्रीमद्भगवत गीता, वेद तथा पुराण भी नहीं पढ़ सकते थे। यदि कहें कि किसी पंडित से सुन लिया होगा, यह भी सत्य नहीं होगा क्योंकि किसी पंडित से सुना होता तो उस पंडित को भी ज्ञान होता। यदि पंडितों को ज्ञान होता तो सर्व हिन्दू समाज को ज्ञान होता कि श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव जी के माता-पिता कौन हैं? गीता का ज्ञान देने वाला भगवान क्यों कह रहा है कि मैं कभी किसी के समक्ष नहीं होता। मैं योगमाया से छिपा रहता हूँ। यह मेरा अनुत्तम (घटिया) अचल (अविनाशी) नियम है। यह मूर्ख जन समुदाय मुझ अव्यक्त को व्यक्ति रूप में आया कष्ण मान रहे हैं। ये मेरे उपरोक्त घटिया (अनुत्तम) नियम से परिचित नहीं हैं। विचार करो। श्री कष्ण जी तो व्यक्ति रूप में अर्जुन के साथ थे ही, वे कैसे यह कह सकते हैं कि मैं किसी के समक्ष नहीं होता, मैं किसी को दर्शन नहीं देता। अब जो बात स्पष्ट करना चाहता हूँ, वह यह है कि जिस परमात्मा को विश्व केवल एक कवि तथा जुलाहा (धाणक=बुनकर=Weaver) के रूप में जानते हैं। यह तो वही कहावत चरित्रार्थ हो रही है कि ''लाल की परख जौहरी ही कर सकता है।'' मुझे परमेश्वर ने जौहरी बनाया है। लाल की पहचान कैसे की जाती है? वह ज्ञान हो जाता है। जिसको विश्व के मानव कबीर जुलाहा, कवि या भक्त कोई-कोई संत भी कह देता है, वह भी संकोच के साथ। वास्तव में वे परमेश्वर हैं। सर्व सष्टि के रचने वाले सजनहार हैं। परमेश्वर कबीर जी ने अपने द्वारा रची सष्टि का ज्ञान स्वयं ही बताया है जो लगभग 550 वर्ष पूर्व विक्रमी संवत् 1550 (सन् 1493) में धनी धर्मदास ने कबीर सागर के रूप में ग्रन्थ लिखा था। उस समय परमेश्वर कबीर जी को संस्कत भाषा से अपरिचित तथा अशिक्षित मानकर किसी पंडित-संत ने हिन्दू समाज और

काजी-मुल्लाओं ने मुसलमान समाज को परमात्मा को परमात्मा मानने में रोड़ा अटका दिया था जो अब मुझ दास (रामपाल दास) द्वारा परमेश्वर की शक्ति से हटाया जा रहा है। दूसरे शब्दों में कहूँ कि हटाया जा चुका है तो अधिक उचित है।

परमेश्वर कबीर जी ने अपने अमतज्ञान (तत्त्वज्ञान) में कहा है कि :-

कबीर, नौ मन सूत उलझिया, ऋषि रहे झखमार। सतगुरू ऐसा सुलझा दे, उलझै ना दूजी बार।।

भावार्थ :- पहले जुलाहे सूत से कपड़ा बुनते थे। यदि एक सेर (किलोग्राम) सूत उलझ जाता तो उनका सारा दिन उसे सुलझाने में लग जाता था। उनको उसकी कोई मजदूरी नहीं मिलती थी। यदि 9 मन (एक मन=40 सेर यानि किलोग्राम सूत अर्थात् 9×40=360 सेर सूत उलझ जाए तो बीच में ही छोड़कर जुलाहे चले जाते, धनी को वापिस दे देते थे, वह व्यर्थ जाता था।

यहाँ पर आध्यात्मिक ज्ञान रूपी सूत का वर्णन है। कहा कि यथार्थ ज्ञान किसी ऋषि-महर्षि को नहीं है। वे युगों से यानि लाखों वर्षों से प्रयत्नशील हैं। आज तक आध्यात्मिक ज्ञान को ठीक से नहीं समझ सके। किसी ने नहीं बताया कि संष्टि की रचना किसने की? वेदों तथा पुराणों को जैसा ब्रह्मा जी ने समझा, वह वेदों के अनुवाद से ज्ञात है जो ऋषिजन आपको बताते आए हैं। कहते आ रहे हैं कि परमात्मा निराकार है। केवल परमात्मा का प्रकाश देखा जा सकता है। कोई साकार बताता है तो कोई कहता है कि जो रचना (पंथ्वी, सूर्य, चाँद, तारे, नदी, पर्वत) दिखाई देती है, यही परमात्मा का साकार रूप है। कोई कहता है कि परमात्मा तो निराकार रूप है, परंतु जब वह साकार होता है तो शिव रूप धारण करता है। कोई कहता है विष्णु रूप धारण करता है। कोई ब्रह्मा जी को साकार परमात्मा मानता है। कोई कहता है कि विष्णु जी ही परमात्मा हैं। ये ही तीन रूप में विश्व की रचना, पालन तथा संहार करते हैं। ये ही निराकार हैं।

यह ज्ञान ऊवा-बाई का ज्ञान है। ये सब झख मार रहे हैं। इसलिए परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि सतगुरू ऐसा सुलझा देता है जो दोबारा कभी नहीं उलझेगा। परमात्मा कबीर जी स्वयं सतगुरू रूप में प्रकट होकर उस उलझे हुए नौ मन सूत रूपी अध्यात्म ज्ञान को सुलझाने आए थे। उस समय हम उनको समझ नहीं सके। हमारे धर्मगुरूओं में अपनी अविद्या का अभिमान था। वे आध्यात्मिक ज्ञान की चर्चा कम करते थे। व्याकरण तथा शब्दोच्चारण (Pronunciation) पर वाद-विवाद अधिक करते थे, उसी को शास्त्रार्थ कहते थे। उस समय धनी धर्मदास जी ने यह खजाना कबीर सागर में सुरक्षित कर दिया था। (कबीर सागर से ही अंश भिन्न-भिन्न छपाए गए हैं, जैसे-कबीर बीजक, कबीर साखी, कबीर शब्दावली आदि-आदि) उस समय साधारण मानव को अक्षर ज्ञान नहीं था। उस समय परमेश्वर कबीर जी ने कहा था, हे धर्मदास! कलयुग में आगे चलकर पूरी पंथ्वी पर यह ज्ञान फैलेगा। पूरा विश्व मुझे जानेगा-मानेगा तथा मेरे द्वारा बताए अनुसार भक्ति करेगा, मोक्ष प्राप्त करेगा। पुनः सत्ययुग जैसा वातावरण होगा। सब प्यार से रहा करेंगे, कोई चोरी-जारी (दुराचार) नहीं करेगा, कोई रिश्वत नहीं लेगा, भ्रष्टाचार नहीं रहेगा, शराब,तम्बाकू, माँस तथा नशीले पदार्थों का कोई सेवन नहीं करेगा। यह बात सतगुरू के मुख से सुनकर धर्मदास जी को बहुत आश्चर्य हुआ और कहा कि हे परमात्मा! आप क्या कह रहे हो? एक तरफ तो आपने बताया है कि आने वाले समय में लोग कंतघ्नी, चोर, रिश्वतखोर, शराबी-कवाबी, चरित्रहीन, निर्लज्ज हो जाऐंगे। दूसरी ओर आप कह रहे हो कि पुनः सत्य युग जैसा माहौल हो जाएगा। मुझ मंद बुद्धि को यह समझ नहीं आ रही। कंप्या यह कैसे होगा, कब होगा? बताने की दया करें।

परमेश्वर जी ने बताया कि जिस समय कलयुग पाँच हजार पाँच सौ पाँच (5505) वर्ष बीत जाएगा। उस समय मेरा यह वचन सत्य होगा। उस समय के पश्चात् विश्व का मानव शिक्षित होगा। भले ही आधा आस्तिक और आधा नास्तिक हो चुका होगा। फिर भी परमात्मा चाह उसमें उत्पन्न की जाएगी। तब काल निरंजन मेरे नाम से बारह पंथ चला चुका होगा। बारहवां पंथ गरीबदास का होगा। उसी पंथ में आगे चलकर हम ही आऐंगे और सब अज्ञान अंधेरा समाप्त करके यानि नौ मन सूत सुलझाकर तत्त्वज्ञान का प्रकाश किया जाएगा। सब पंथ समाप्त करके एक पंथ चलाऐंगे।

प्रमाण :- कबीर सागर के अध्याय ''कबीर बानी'' पष्ठ 134, 136, 137 पर तथा स्वसमवेद बोध पष्ठ 121 तथा 171 पर पद्य भाग में है।

कबीर बानी पष्ठ 137 वाला कुछ प्रकरण पहले लिख दिया है। स्वसमवेद बोध पष्ठ 121 तथा 171 वाला प्रकरण वहाँ ग्रन्थ में पढ़ने से अधिक स्पष्ट होगा। प्रसंग है कि परमेश्वर कबीर जी ने जो आध्यात्मिक ज्ञान बताया, वह वेदों, पुराणों तथा वेदों का सार रूप श्रीमद्‌भगवत गीता में भी है और वेदों में लिखा है कि जो ज्ञान यहाँ लिखा है, (वेदों में) वह पूर्ण नहीं है। अध्यात्म ज्ञान का अंत नहीं है। नेति (न इति) नेति (न इति) कहकर वेद शांत हो गए। उससे आगे का संपूर्ण अध्यात्म ज्ञान उस कवि अर्थात् कविर्देव जुलाहे (धाणक=Weaver) ने सूक्ष्मवेद (तत्त्वज्ञान) में बताया है जो कबीर सागर में लिखा है। इनके वर्णन की सत्यता की जाँच के लिए इतना जानना पर्याप्त है कि जो अक्षर ज्ञान नहीं रखते थे, अशिक्षित थे, वेद-पुराण नहीं पढ़े थे, उन्होंने अपने विचार विक्रमी संवत् 1550(ई.सन् 1493) में बताए थे। वह अध्यात्म ज्ञान आज पुराणों, वेदों तथा गीता के ज्ञान को शिक्षित होते हुए भी नहीं समझ सके। उस ज्ञान को (सद्‌ग्रन्थों वाले ज्ञान को) तथा उससे भी हटकर उनसे आगे का संपूर्ण ज्ञान जिस महापुरूष ने बताया है, वह कौन हो सकता है? वह परमात्मा है। जो ऋषि-महर्षिजन सद्‌ग्रन्थों को पढ़ा करते और हजारों वर्ष तपस्या करते थे, समाधि लगाते थे, वे वेद, पुराण तथा गीता के ज्ञान को भी नहीं समझ पाए तथा परमात्मा प्राप्ति भी नहीं कर सके।

कारण :- कारण यह रहा कि चारों वेद श्री ब्रह्मा जी को प्राप्त हुए थे। उन्हीं से वेद ज्ञान उनके पुत्रों ऋषियों यानि ब्राह्मणों को प्राप्त हुआ था। सष्टि रचना के विषय में ज्ञान भी श्री ब्रह्मा जी द्वारा बताया गया। ब्रह्मा जी ने कुछ अपना अनुभव भी बताया। वह ज्ञान ''पुराण'' कहा गया। उस एक पुराण के ज्ञान से भिन्न-भिन्न ऋषियों ने अपना अनुभव मिलाकर 18 भाग बना दिये जो वर्तमान में प्रचलित हैं।

विचार करें :- श्री देवी महापुराण सचित्र मोटा टाईप केवल हिन्दी (गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित) के तीसरे स्कंद पष्ठ 119 से 129 तक में लिखा है कि एक दिन महर्षि नारद जी ने अपने पिता ब्रह्मा जी से सष्टि की उत्पत्ति के विषय में पूछा कि इसकी रचना आपने की है या श्री विष्णु जी ने या श्री शिव जी ने या श्री देवी जी ने की है? ब्रह्मा जी ने उत्तर दिया कि बेटा नारद! मैं क्या उत्तर दूँ? जिस समय मेरी उत्पत्ति हुई, मैं अगाध जल में कमल के फूल पर बैठा था। मुझे नहीं पता कि मेरी उत्पत्ति किसने की है? फिर भी ब्रह्मा जी ने जो कुछ सत्य कुछ झूठा ज्ञान बताया, वह पुराणों में लिखा है। जब ब्रह्मा जी को अपनी उत्पत्ति का ही ज्ञान नहीं है तो अन्य सष्टि जो उसके जन्म से पहले हो चुकी थी, उसका ज्ञान ब्रह्मा जी को कैसे हो सकता है अर्थात् उनको सम्पूर्ण आध्यात्मिक ज्ञान नहीं है। इससे सिद्ध है कि सद्‌ग्रन्थों में भी सम्पूर्ण ज्ञान नहीं है। वेदों में नेति-नेति

लिखा है। पुराण अधूरे सिद्ध हुए क्योंकि वे श्री ब्रह्मा जी द्वारा दिया ज्ञान है। इसलिए सम्पूर्ण आध्यात्मिक ज्ञान (तत्त्वज्ञान) बताने के लिए स्वयं परमेश्वर अपने निवास स्थान (सत्यलोक=सनातन परम धाम) से चलकर आते हैं, अच्छी आत्माओं को मिलते हैं। यह प्रमाण पवित्र वेदों में भी है कि परमात्मा सर्व लोकों के ऊपर के लोक में निवास करते हैं। वहाँ से गति करके आते हैं। यहाँ नेक पुरूषों को मिलते हैं, उनको तत्त्वज्ञान बताते हैं। अपने द्वारा रची सष्टि का ज्ञान परमेश्वर स्वयं ही बताते हैं। उस समय वे सम्पूर्ण ज्ञान कवित्व से अर्थात् काव्यों, साखियों, दोहों, चौपाईयों के रूप में बोलते हैं जिससे एक प्रसिद्ध कवि की उपाधि भी प्राप्त करते हैं। कवियों की तरह आचरण करते हुए पथ्वी पर विचरण करते हैं। भक्ति-मुक्ति के गुप्त मंत्रों का आविष्कार करते हैं जो पूर्णमोक्षदायक होते हैं। उनके अभाव से कोई भी परमात्मा प्राप्ति नहीं कर सकता। यही कारण रहा कि कठिन साधना करके भी ऋषिजन परमात्मा प्राप्ति नहीं कर सके। यदि उनको परमात्मा प्राप्ति हुई होती तो वे परमात्मा को निराकार नहीं बताते। उनको ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जी के माता-पिता का भी ज्ञान होता।

वेदो में प्रमाण :- ऋग्वेद के मण्डल 9 के निम्न सूक्तों में :-

सूक्त 86 मंत्र 26-27, सूक्त 82 मंत्र 1-2-3, सूक्त 54 मंत्र 3, सूक्त 20 मंत्र 1, सूक्त 96 मंत्र 16 से 20, सूक्त 94 मंत्र 2 तथा सूक्त 95 मंत्र 1 (सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा) दिल्ली से प्रकाशित वेदों में उपरोक्त प्रमाण है।

इससे यह भी सिद्ध हुआ कि वेदों में सम्पूर्ण ज्ञान नहीं है। इसीलिए तो उनमें कहा है कि परमात्मा स्वयं पथ्वी पर प्रकट होकर यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करता है।

वेदों का संक्षिप्त ज्ञान श्रीमद्भगवत गीता में काल ब्रह्म (ज्योति निरंजन) द्वारा श्री कष्ण जी के शरीर में प्रवेश करके बोला गया है।

श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में कहा है कि पूर्ण परमात्मा यज्ञों यानि धार्मिक अनुष्ठानों का यथार्थ विस्तत ज्ञान अपने मुख कमल से बोलकर बताते हैं, उसे तत्त्वज्ञान कहते हैं। उसको जानकर साधक सर्व पापों से मुक्त हो जाता है।(पापों से मुक्त होने का तात्पर्य है पूर्ण मोक्ष) गीता अध्याय 4 के ही श्लोक 34 में कहा है उस ज्ञान को तू तत्त्वदर्शी संतों के पास जाकर समझ, उनको दण्डवत् प्रणाम करने से, कपट छोड़कर नम्रतापूर्वक प्रश्न करने से वे परमात्म तत्त्व को भली-भांति जानने वाले ज्ञानी महात्मा तुझे तत्त्वज्ञान का संदेश करेंगे।(गीता अध्याय 4 श्लोक 32, 33)

यही प्रमाण यजुर्वेद अध्याय 40 श्लोक 10 में भी है।

कहा कि कोई तो परमेश्वर को असम्भवात् यानि उत्पन्न न होने वाला अर्थात् निराकार कहते हैं। कोई सम्भवात् यानि उत्पन्न होने वाला कहते हैं। परमात्मा के विषय में वास्तविक ज्ञान (धीराणाम्) तत्त्वदर्शी संत बताते हैं। उनसे सुनो।(यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 10)

उपरोक्त विवरण से सिद्ध हुआ कि 1. वेदों में सम्पूर्ण आध्यात्मिक ज्ञान नहीं है, उसको जानने के लिए तत्त्वदर्शी संत के पास जाने को कहा है। 2. वेदों में परमात्मा की महिमा कही गई है। 3. वेदों के उपरोक्त ऋग्वेद मंत्रों में यह भी स्पष्ट है कि परमात्मा नराकार हैं।(निराकार नहीं हैं) वह कवि की तरह ज्ञान प्रचार करता हुआ इधर-ऊधर सर्वत्र घूमता है। अच्छी आत्माओं को मिलता है। तत्त्वज्ञान से परिचित करवाता है। इसी विधान अनुसार परमात्मा संत धर्मदास जी को मिले और सम्पूर्ण आध्यात्मिक ज्ञान बताया जो धर्मदास जी द्वारा कबीर सागर में लिखा था।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा था कि :-

कबीर, बेद मेरा भेद है, मैं ना बेदन के मांहि। जौण बेद से मैं मिलूं, बेद जानते नाहीं।।

(कबीर सागर के अध्याय ''अगम निगम बोध'' के पृष्ठ 12 पर।)

भावार्थ :- परमेश्वर ने बताया है कि चारों वेद मेरी महिमा का गुणगान करते हैं। मेरी जानकारी बताते हैं, परंतु इन वेदों में मुझे पाने की विधि नहीं। मुझे पाने की विधि सूक्ष्मवेद में है। उसके विषय में चारों वेदों में वर्णन नहीं है। इसलिए मेरी प्राप्ति चारों वेदों में वर्णित विधि से नहीं हो सकती। मेरी प्राप्ति सूक्ष्मवेद (तत्त्वज्ञान) से सम्भव है। उस तत्त्वज्ञान को जानने के लिए तत्त्वदर्शी संत के पास जाने को वेदों तथा गीता में स्पष्ट आदेश है। वह तत्त्वदर्शी यह दास (रामपाल दास) है।

अब प्रकरण को आगे बढ़ाता हूँ :-

आप जी परमेश्वर कबीर जी द्वारा बताए तत्त्वज्ञान को पढ़ रहे हैं जो कबीर सागर में धर्मदास जी ने लिखा था। उसमें कुछ त्रुटि भी काल दूतों ने की है। उसको संशोधित करके लिख रहा हूँ। परमेश्वर कबीर जी द्वारा दी बुद्धि द्वारा गुरूदेव जी के आशीर्वाद से यथार्थ रूप से लिख रहा हूँ।

प्रथम बार सागर मंथन तथा ब्रह्मा जी का पिता की खोज में जाना तथा माता से शॉप मिलना

जब काल ब्रह्म (ज्योति स्वरूप निरंजन) ने गुप्त (अव्यक्त) रहने की प्रतिज्ञा की तो भवानी (दुर्गा) जी ने कहा कि आप मेरे साथ रहो। मैं अकेली स्त्री इतने बड़े साम्राज्य (21 ब्रह्माण्डों) को कैसे सम्भालूँगी? तब काल ब्रह्म ने कहा, हे भवानी! अदृश्य रूप से सर्व कार्य मैं करूँगा। आप मुझसे मिलती रहोगी, परंतु मैं तेरे अतिरिक्त किसी को दर्शन नहीं दूँगा। मेरा यह भेद किसी से न कहना। कारण है कि मैं (काल ब्रह्म) प्रतिदिन एक लाख मानव को खाया करूँगा, प्रतिदिन हाहाकार मचेगी, मेरे पुत्र, ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव भी मेरे से घृणा करेंगे। यदि उनको सच्चाई का पता चल गया तो वे मेरा सहयोग नहीं देंगे।

मेरे लोक (21 ब्रह्माण्डों का काल लोक है, इसे क्षर पुरूष का लोक भी कहते हैं) में कोई भी अमर नहीं हो सकता। तू और मैं (काल ब्रह्म) भी नष्ट होते रहेंगे, परंतु तेरा और मेरा किसी माता के संयोग से जन्म नहीं होगा। हम दोनों प्रत्येक महाप्रलय {एक ब्रह्माण्ड का विनाश उस समय होता है जब 70 हजार बार काल का पुत्र शिव मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, उसको महाप्रलय कहते हैं। उस समय देवी दुर्गा तथा काल ब्रह्म तथा ब्रह्मा–विष्णु–शिव सहित सर्व जीव नष्ट हो जाते हैं। फिर दूसरे ब्रह्माण्ड में आत्माऐं चली जाती हैं। यह समय अक्षर पुरूष का एक युग होता है यानि अक्षर पुरूष के एक युग के पूरा होने पर काल ब्रह्म सहित सर्व की मृत्यु होती है। एक ब्रह्माण्ड का विनाश होता है। इतना समय उस ब्रह्माण्ड के पुनः निर्माण में लगता है।} **में मृत्यु को प्राप्त होंगे तथा नए ब्रह्माण्ड में नया शरीर मिला करेगा। यह भेद किसी को नहीं बताना। इतना कहकर काल पुरूष अंतर्ध्यान हो गया।**

विशेष जानने योग्य :- भवानी तथा ज्योति स्वरूप निरंजन की दूसरे ब्रह्माण्ड में तुरंत उत्पत्ति हो जाती है। कुछ समय उपरांत दुर्गा की भी उत्पत्ति हो जाती है। देवी तथा काल ब्रह्म की उत्पत्ति युवा रूप में होती है। जब तक दुर्गा की उत्पत्ति नहीं होती, तब तक काल पुरूष बहुत व्याकुल रहता है। दुर्गा की उत्पत्ति काल ब्रह्म के पश्चात् एक चतुर्युग (43 लाख बीस हजार वर्ष) बीतने के पश्चात् होती है। गीता अध्याय 10 के श्लोक 2 में लिखा है, काल ब्रह्म ने कहा है कि मेरी उत्पत्ति को न तो देवता जानते, न ऋषि व सिद्ध जानते हैं क्योंकि ये सब मेरे से उत्पन्न हैं, मैं अजन्मा हूँ। काल पुरूष का जन्म किसी माता-पिता से नहीं होता। इसलिए अजन्मा कहता है, परंतु यह भी नाशवान

है। प्रमाण :- गीता अध्याय 2 श्लोक 12, अध्याय 4 श्लोक 5, 9 में स्पष्ट किया है। काल ब्रह्म ने कहा है कि हे अर्जुन! तेरे और मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं, तू नहीं जानता, मैं जानता हूँ। मेरे जन्म और कर्म दिव्य यानि अलौकिक हैं। काल पुरूष के जन्म इस प्रकार अलौकिक हैं। अन्य सर्व प्राणियों का जन्म माता के गर्भ में कष्ट उठाकर होता है। यदि कोई वैसे प्राकतिक तरीके से काल ब्रह्म तथा दुर्गा देवी की तरह उत्पन्न होता है जैसे-सुरसी, ढ़ोरा, बालों में ढ़ेरे-जूं, चीचड़ आदि-आदि भी स्वतः उत्पन्न होते हैं, परंतु वे शीघ्र जन्मते-मरते हैं तथा उनकी योनि का जीवन महाकष्टदायक होता है। ये दोनों नर-नारी रूप में जन्मते हैं। परंतु महाप्रलय के समय एक ब्रह्माण्ड में आग लग जाती है। उस समय ये दोनों भी जलते हैं, महाकष्ट होता है। इनका शरीर अधिक मजबूत होता है, वह देर तक जलता है। ये दोनों उस समय महाकष्ट उठाते हैं, परंतु फिर अक्षर पुरूष के एक युग तक ये दोनों नहीं मरते, अन्य ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव सहित सर्व प्राणी जन्मते-मरते रहते हैं। नए ब्रह्मा, विष्णु, महेश जन्मते हैं जो नए जीव होते हैं। पहले वाले चौरासी लाख वाले चक्र में चले जाते हैं। श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शंकर जी के रूप में जो जन्म लेते हैं। उनका जन्म देवी दुर्गा तथा काल ब्रह्म के पति-पत्नी से होता है। जिस कारण से दुर्गा को ये तीनों विशेष प्रिय होते हैं। परंतु प्रत्येक पुत्र की मत्यु बारी-बारी से होती है। ब्रह्मा की मत्यु सौ वर्ष देवताओं के पूरे होने पर होती है। वह जीव अन्य योनियों में चला जाता है। उसकी मत्यु से पूर्व दुर्गा और काल ब्रह्म अन्य रजगुण युक्त पुत्र उत्पन्न कर लेते हैं। उसको अचेत रखते हैं। पहले ब्रह्मा की मत्यु के समय नए ब्रह्मा की युवा अवस्था होती है। सावित्री देवी की भी मत्यु ब्रह्मा जी के साथ होती है। उस समय नए ब्रह्मा को सचेत करके ब्रह्मा का कार्य सौंप देते हैं। नई सावित्री युवा रूप में दुर्गा वचन से करती है। दोनों का विवाह करती है। इसी तरह 7 ब्रह्मा की मत्यु के पश्चात् एक विष्णु की मत्यु लक्ष्मी सहित होती है। फिर 7 विष्णु की मत्यु के पश्चात् एक शिव तमगुण की मत्यु पार्वती के साथ होती है। ऐसे 70 हजार शिव की मत्यु के पश्चात् एक ब्रह्माण्ड का विनाश होता है। उस समय देवी तथा काल ब्रह्म भी मत्यु को प्राप्त होते हैं। अक्षर पुरूष का इतने समय का एक युग होता है।

माँ होने के नाते देवी को प्रत्येक पुत्र तथा पुत्री की मत्यु का कष्ट तो बहुत होता है, परंतु दूसरे पुत्र-पुत्री को देखकर संतोष करती है, परंतु पहले वालों की याद सताती ही रहती है, परंतु काल ब्रह्म को टैन्शन (चिंता) नहीं होती।

कबीर जी ने कहा है कि पुत्र की मत्यु का दुख माता को आजीवन बना रहता है :-

कबीर, जीवै इतने माता रोवै, बहन रोवै दस मासा(महीने)।
तेरह दिन तेरी त्रिया रोवै, फेर करै घरवासा।।

माता होने के नाते देवी जी को आजीवन सर्व संतान की मत्यु का कष्ट बना रहता है। तीनों प्रभुओं की पत्नियाँ भी अपने पतियों के साथ जन्मती-मरती रहती हैं। देवी दुर्गा पुनः नई सावित्री, लक्ष्मी तथा पार्वती युवा वचन से उत्पन्न कर देती है। उनसे विवाह करवाती रहती है। पहले वाली आत्माऐं चौरासी लाख प्राणियों के जन्म-मरण के चक्र में चली जाती हैं।

पुनः सष्टि उत्पत्ति का वर्णन शुरू करता हूँ :-

काल ब्रह्म के अंतर्ध्यान हो जाने के पश्चात् तीनों पुत्रों के युवा होने पर काल ने दुर्गा को आकाशवाणी कर बताया कि इन तीनों को सागरमंथन पर भेज दो। मैंने सर्व व्यवस्था कर दी है। तीनों पुत्रों ने अपनी माता जी से पूछा कि हमारे पिता कौन हैं? सष्टि किसने रची है? हमारा क्या कार्य है? माता ने कहा कि मैं ही आपकी माता और पिता हूँ। मेरे अतिरिक्त कोई परमात्मा नहीं

है। मैंने ही संष्टि रची है। आपका कार्य बताती हूँ। आप सागरमंथन करने जाओ। सागर मंथन करने पर चार वेद निकले जिनको काल ब्रह्म ने (ज्योति स्वरूप निरंजन) ने अपने श्वाँसों से प्रकट करके समुद्र में छिपा दिया था। वेदों को लेकर तीनों माता के पास आए। माता ने कहा कि इन वेदों को ब्रह्मा पढ़े अपने पास रखे। ब्रह्मा ने वेदों को पढ़ा। उनमें लिखा है कि परमात्मा ऊपर के लोक में विराजमान है। उसको भक्ति करके प्राप्त किया जा सकता है। जिस समय ब्रह्मा जी सचेत हुए। उस समय ये कमल के फूल पर बैठे थे। आकाशवाणी हुई कि तप करो। ब्रह्मा जी ने एक हजार वर्ष तक तप किया। फिर आकाशवाणी हुई कि संष्टि करो। ब्रह्मा ने माता से पूछा कि हे माता! ये वेद सच्चे हैं या झूठे? माता ने कहा कि इन वेदों में सब सत्य है।

ब्रह्मा ने कहा हे माता! इनमें तो लिखा है कि परमात्मा ऊपर बैठा है। उसको साधना करके देखा जा सकता है।

{यहाँ पर कुछ प्रकरण और लिखना अनिवार्य है जो इस प्रकार है :-

जिस समय परमात्मा ने ज्योति निरंजन को शॉप दिया कि तेरा नाम काल होगा, एक लाख मानव (पुरूष-स्त्री) को प्रतिदिन खाया करेगा। उसके पश्चात् काल ब्रह्म का चेहरा विकराल हो गया। जैसे माँस खाने वाले व्यक्तियों की आकंति विकराल डरावनी हो जाती है। पूर्व समय में जो व्यक्ति केवल माँस ही खाते थे, उनका स्वरूप बेढ़ंगा (बेकार) डरावना हो जाता था। उनको राक्षस जाना जाता था। यह सब भवानी जानती थी। देवी को पता था कि काल कभी भी अपना मुख अपने बच्चों को या अन्य को नहीं दिखा सकता।}

ब्रह्मा जी की बात सुनकर दुर्गा जी ने कहा कि हे बेटा! परमात्मा तो है, परंतु वह कभी किसी को दर्शन नहीं देता। माता की दो-तरफा बात सुनकर ब्रह्मा जी ने कहा कि हे माता जी! अब मुझे आपकी बात पर अविश्वास हो गया है। मैं पिता के दर्शन करके रहूँगा। वेदों में लिखी विधि अनुसार साधना करूँगा।

माता जी ने कहा कि पिता के दर्शन नहीं हुए तो क्या करेगा? ब्रह्मा जी ने कहा मैं आपको शक्ल नहीं दिखाऊँगा अर्थात् आपको दर्शन नहीं दूँगा। देवी ने कहा कि तब मानूँगी जब तू उसका सिर-मुँह देखे। दुर्गा जी ने सोचा कि हो सकता है वह पैर दिखा दे और ब्रह्मा मेरा मजाक उड़ाए, मुख तो निरंजन दिखा नहीं सकता।

ब्रह्मा जी ने चार युग तक एकान्त स्थान पर जाकर साधना की। आकाशवाणी में काल ने ब्रह्मा जी को तपस्या करने को कहा था। ब्रह्मा जी ने वह आकाशवाणी परमात्मा का आदेश माना था। उस कारण से ब्रह्मा जी तपस्या कर रहे थे, समाधि लगी थी। काल ब्रह्म ने आकाशवाणी करके अपनी पत्नी दुर्गा से पूछा कि जीवों की उत्पत्ति क्यों नहीं कर रहे? दुर्गा जी ने कहा कि आपके ज्येष्ठ पुत्र ब्रह्मा ने वेदों को पढ़ा और कहा कि पहले मैं परमात्मा को प्राप्त करूँगा। मैंने मना भी किया कि वे तुझे दर्शन नहीं देंगे, परंतु वह हठ करके तपस्या कर रहा है। काल ब्रह्म ने कहा उसको उठाओ, मैं किसी भी साधना से किसी को दर्शन नहीं दूँगा।

प्रिय पाठको! गीता अध्याय 11 श्लोक 47-48 में भी गीता ज्ञान दाता काल ब्रह्म ने श्री कंष्ण के मुख से कहा है कि हे अर्जुन! मेरा यह काल रूप आपने देखा। तेरे अतिरिक्त पहले किसी ने नहीं देखा। मेरे इस स्वरूप को कोई भी नहीं देख सकता। न तो वेदों में वर्णित विधि से, न यज्ञों से, न किसी नाम के जाप से और न ही किसी तप से मेरे दर्शन नहीं कर सकता यानि मेरी (ब्रह्म की) प्राप्ति नहीं कर सकता। इससे सिद्ध है कि वेदों में वर्णित ओम् (ॐ) नाम के जाप से तथा

यज्ञों के अनुष्ठान से ब्रह्म प्राप्ति नहीं होती, अन्य लाभ मिलता है। ब्रह्मलोक प्राप्ति, सिद्धियों की प्राप्ति हो जाती है। इसी कारण से सर्व ऋषि-महर्षिजन परमात्मा प्राप्ति न करके सिद्धियाँ प्राप्त करके प्रसिद्धि प्राप्त करते रहे और परमात्मा को निराकार बताते रहे।

दुर्गा जी ने अपनी शब्द शक्ति से एक युवती उत्पन्न की। उसका नाम गायत्री रखा। उससे कहा आप ब्रह्मा के पास जाओ। उसको वापिस लाओ। कहो कि चलो माता ने बुलाया है। तेरे बिना जीवों की उत्पत्ति नहीं हो रही। माता जी की आज्ञा लेकर गायत्री देवी ब्रह्मा जी के पास गई और उसको आवाज लगाई कि आपको माता ने बुलाया है। बार-बार कहने पर भी ब्रह्मा जी समाधि से नहीं उठे। तब गायत्री जी ने माता जी से ध्यान द्वारा सम्पर्क किया और बताया कि ब्रह्मा समाधि में है, बार-बार आवाज लगाने से भी नहीं जाग रहा। दुर्गा जी ने बताया कि उसके चरण स्पर्श कर दे। गायत्री ने वैसा ही किया। ब्रह्मा जी की समाधि टूटी। सामने समाधि भंग करने वाली युवती को देखकर क्रोधवश बोला, तू कौन है पापिन जिसने मेरी समाधि भंग कर दी? मैं तो परमात्मा के दर्शन के लिए तप कर रहा हूँ। मैं तेरे को शॉप (श्राप) देता हूँ। गायत्री भयभीत होकर बोली, पहले मेरी बात सुनो, मेरा दोष हो तो शॉप देना। मुझे माता ने भेजा है। आपको बुलाया है। जीवों की उत्पत्ति करनी है, वह आपके बिना नहीं हो पा रही है। आप शीघ्र चलें। ब्रह्मा जी ने कहा, हे गायत्री! मेरे को पिता के दर्शन हुए नहीं। मैं माता जी के सामने प्रतिज्ञा करके आया हूँ कि यदि पिता के दर्शन नहीं हुए तो मैं भी लौटकर नहीं आऊँगा। आपको शक्ल नहीं दिखाऊँगा। आप मेरी झूठी साक्षी दें कि ब्रह्मा को पिता के दर्शन हुए हैं और शीश-मुख देखा है। तब मैं तेरे साथ चल सकता हूँ। गायत्री ने विचार किया कि यदि ब्रह्मा को नहीं ले जाऊँगी तो माता जी शॉप दे सकती हैं। इसलिए गायत्री ने झूठी गवाही देने के लिए शर्त रखी कि मेरे से मिलन (Sex) करो तो मैं आपकी गवाही दे सकती हूँ। ब्रह्मा के पास और कोई विकल्प नहीं था, इसलिए गायत्री की शर्त पूरी की। गायत्री ने ब्रह्मा से कहा कि एक और गवाह हो जाए तो बात सच्ची लगेगी। इसलिए गायत्री जी ने एक लड़की शब्द से उत्पन्न की, उसका नाम पुष्पवती रखा। लड़की युवा थी। उससे गायत्री तथा ब्रह्मा दोनों ने कहा कि ऐसे-ऐसे झूठी गवाही देनी है। पुष्पवती ने भी ब्रह्मा से वही शर्त रखी जो गायत्री ने रखी थी। ब्रह्मा ने पुष्पवती से रति (Sex) क्रिया की। तीनों ने माता के पास आकर बताया कि ब्रह्मा को पिता का दर्शन हुआ है और ब्रह्मा ने सिर पर फूल अर्पित करके पूजा की। दुर्गा जी को बड़ा दुःख हुआ। सोचने लगी कि ब्रह्म ने मेरे से तो कहा है कि मैं किसी को किसी साधना से दर्शन नहीं दूँगा। ये तीनों बता रहे हैं कि हमारे सामने दर्शन दिए, हम तीनों ने देखा। तब काल ब्रह्म ने आकाशवाणी की कि मैंने किसी को दर्शन नहीं दिए हैं। ये तीनों झूठ बोल रहे हैं। तब दुर्गा पुनः उनके पास आई। तीनों से कहा कि मुझे आकाशवाणी हुई है। परमात्मा ने कहा है कि मैंने किसी को दर्शन नहीं दिए हैं। ये तीनों झूठ बोल रहे हैं। तब तीनों भयभीत होकर कहने लगे कि हाँ, हमने झूठ बोला है। ब्रह्मा जी ने कहा कि पिता के दर्शन हो नहीं रहे थे। वापिस आने में लज्जा आ रही थी। इस कारण झूठ के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं बचा था।

दुर्गा जी ने क्रोधवश तीनों को शॉप दिया :-

1. ब्रह्मा को शॉप :- तेरी पूजा जगत में नहीं होगी। तेरे वंशज (ब्राह्मण) वेदों को पढ़ेंगे। ठीक से न समझकर वेदों का नाम लेकर वेदों के विरूद्ध ज्ञान प्रचार करेंगे। जनता को स्वार्थवश झूठ बोलकर ठगेंगे और पाप के भागी होकर नरक में गिरेंगे। यह शॉप (श्राप) माता के मुख से सुनकर ब्रह्मा मूर्छित हो गया। बहुत समय उपरांत सचेत हुआ।

2. दुर्गा ने गायत्री को शॉप दिया :- इसके पश्चात् दुर्गा जी ने गायत्री को शॉप दिया कि तू मतलोक (पथ्वी पर) में गाय (Cow) बनेगी, तेरे कई वषभ (सांड-बैल) पति होंगे। (प्रमाण :- कबीर सागर के अध्याय ''स्वसमवेद बोध'' के पष्ठ 101 तथा ''अनुराग सागर'' अध्याय के पष्ठ 38 पर।)

3. पुष्पवती (पोहपवती) को शॉप देना :- भवानी ने फिर पोहपवती को शॉप दिया कि तू पथ्वी पर केवड़ा-केतकी नाम का पौधा रूप में जन्मेगी। तेरा निवास गंदगी में होगा। तुझे कोई पानी की सिंचाई करेगा तो उसका वंश नष्ट हो जाएगा। तीनों को शॉप देने के पश्चात् दुर्गा का क्रोध कम हुआ और फिर पछताई कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था।

ज्योति निरंजन द्वारा भवानी (दुर्गा) को शॉप देना :- ज्योति निरंजन ने कहा, हे भवानी! आपने उन बच्चों को शॉप नहीं देना चाहिए था। अब मैं तेरे को शॉप देता हूँ कि तू द्वापर युग में द्रोपदी रूप में जन्म लेगी, तेरे पाँच पति होंगे। कोई शक्तिशाली किसी को सताएगा तो उसका प्रतिफल मेरे से पाएगा। भवानी ने ज्योति निरंजन यानि ब्रह्म से कहा कि हे काल ब्रह्म! मैंने अपने पैर पर स्वयं कुल्हाड़ी मारी है। अपने परमात्मा से आस्था हटाकर तेरे में जोड़ी। अब मैं तेरे वश हूँ, करले जो करना है।

विष्णु जी का पिता की खोज के लिए जाना

इसके पश्चात् भवानी यानि प्रकति देवी अपने बीच वाले पुत्र विष्णु के पास गई और कहा आप भी अपने पिता की खोज कर लो। विष्णु पिता की खोज हेतु चला और शेषनाग के लोक में पहुँच गया। शेषनाग ने किसी अन्य व्यक्ति को अपनी सीमा में आते देखकर उसको रोकने के लिए विष का फुंकारा मारा जिससे विष्णु जी का शरीर काला हो गया। अपना रंग बदला देखकर विष्णु जी ने उस साँप को मारने का उद्देश्य बनाया। काल ने आकाशवाणी की, हे विष्णु! इसको मत मार। इसका बदला द्वापर युग में लेना। यह कालीदह में नाग होगा। उस समय तुम (कष्ण रूप में) अवतार धारण करोगे। आकाशवाणी सुनकर विष्णु जी शांत हो गए। आकाशवाणी में यह भी बताया कि परमात्मा के किसी कीमत पर दर्शन नहीं होंगे। आप जाकर अपनी माता से कह दो कि मुझे पिता के दर्शन नहीं हुए। यदि झूठ बोला तो तेरी भी ब्रह्मा वाली दशा होगी।

विष्णु जी ने लौटकर माता जी से सत्य-सत्य कह दिया कि मुझे पिता के दर्शन नहीं हुए। विष्णु से सत्य-सत्य सुनकर दुर्गा देवी ने उन्हें गले से लगाया और कहा बेटा! तू सत्यवादी है। मैं तेरे को जिम्मेदारी का कार्य सौंपती हूँ। तुझे जीवों के पालन का कार्य करना है। मैं तेरे साथ सदा रहूँगी।

❖ शिव जी का अमर होने का वर माँगना और अपने पिता की खोज करने से मना करना:- भवानी ने अपने छोटे बेटे शिव से कहा कि बेटा! तेरे दो भाईयों को तो पिता मिला नहीं, तू भी खोज कर ले। तब शिव जी ने कहा, माता जी! जब मेरे दो बड़े भाईयों को पिता नहीं मिले तो मैं तो प्रयत्न भी नहीं करूँगा। मुझे वरदान दे दो, मैं कभी न मरूँ, अमर हो जाऊँ।

अपने पुत्र शंकर की बात सुनकर श्री देवी जी ने कहा, बेटा! इस लोक में (काल ब्रह्म के 21 ब्रह्माण्ड के क्षेत्र में) जो जन्मा है, उसकी मत्यु तथा पुनः जन्म निश्चित है। यह कभी समाप्त नहीं हो सकता। मैं तेरे को दीर्घ आयु प्राप्त करने की विधि बताती हूँ। प्रत्येक देव व नर का जीवन श्वांस के आधार से निर्धारित है। आप श्वांस थोड़े लोगे तो आयु लम्बी हो जाएगी। इसलिए भगवान शंकर जी समाधि में अधिक रहते हैं।

स्पष्टीकरण :- कबीर सागर में कबीर पंथियों ने अपनी बुद्धि अनुसार परिवर्तन करके

अविश्वसनीय बना दिया है। कबीर सागर के ''स्वसमवेद बोध'' तथा ''अनुराग सागर'' में यह प्रकरण है। इसमें लिखा है कि तीनों पुत्रों के जन्म के बाद तीनों को सागरमंथन पर भेजा। तीन युवती निकली जो देवी दुर्गा ने अपने वचन से उत्पन्न करके सागर में छुपा दी थी। उनके नाम सावित्री, लक्ष्मी और पार्वती रखा। तीनों पुत्रों का विवाह एक-एक से कर दिया।

फिर लिखा है कि दूसरी बार सागरमंथन किया तो वेद, अमृत और विष निकला। तीनों को एक-एक बाँट दिया। वेद ब्रह्मा को मिले। उसने वेद पढ़कर पिता की खोज की ठानी। दुर्गा के मना करने पर भी दर्शन के लिए निकल गया। चार युग तक नहीं आया तो दुर्गा ने लड़की उत्पन्न की और लेने के लिए भेजा।

वास्तविक प्रकरण जैसा मैंने लिखा है, उस प्रकार है। पहले ब्रह्मा जी पिता की खोज करने जाते हैं। फिर बाद में तीनों का विवाह किया गया था। विचार करें यदि पहले विवाह हो चुका होता और ब्रह्मा जी अपने पिता की खोज में जाते और लंबे समय तक न आते तो उनकी पत्नी सावित्री को ही दुर्गा भेज देती, कहती कि अपने पति को उठा ला, वह समाधि लगाए बैठा है। इस प्रकार उलट-पुलट करके कबीर सागर का नाश कर रखा है।

कारण यह है कि :- कबीर पंथ को स्वीकार करने वाले अधिकतर हिन्दू हैं। उन्होंने पुराण पढ़ या सुन रखे होते हैं जिनमें प्रकरण आता है कि ब्रह्मा जी अपनी पुत्री शारदा (सरस्वती) को देखकर आसक्त होकर उसे बुरी नजर से देखने लगा था। भगवान शंकर ने उनका शरीर समाप्त किया। फिर से देवी दुर्गा ने उनको अपनी शब्द शक्ति से नया शरीर दिया था। एक गायत्री ब्रह्मा जी की पुत्री भी हुई है, परंतु जो गायत्री श्री दुर्गा देवी जी ने शब्द से उत्पन्न की थी, वह तो शाॅप के पश्चात् शरीर त्याग गई थी और मृतलोक में गाय का जन्म पाया था। वास्तविकता यह है जो यह दास आप जी को बता रहा है।

तीनों देवताओं का विवाह

आदि भवानी (प्रकृति देवी) ने अपने वचन से तीन कन्या उत्पन्न की। उनको समुद्र में छिपने को कहा। फिर तीनों पुत्रों को सागर मंथन के लिए भेजा। तीन युवती निकली। जो पहले निकली थी, उसका नाम सावित्री रखा और ब्रह्मा जी से विवाह कर दिया। उसके बाद जो निकली, उसका नाम लक्ष्मी रखा और विष्णु जी से विवाह कर दिया। उसके बाद तीसरे जो लड़की निकली, उसका नाम पार्वती रखा और शिव जी से विवाह कर दिया। तीनों को भिन्न-भिन्न लोक देकर उनमें निवास करने की आज्ञा देकर दुर्गा ने तीनों को भेज दिया। जिससे एक ब्रह्मण्ड में सर्व उत्पन्न हुआ है।

इसके पश्चात् जन्म-मरण तथा अन्य कष्टों का चक्र प्राणियों पर प्रारम्भ है। इस काल ब्रह्म के लोक में कोई जीव सुखी नहीं है। हाहाकार मची है।

निर्धन कहता है धनवासी सुखी। धनवान कह राजा को सुख भारी।
राजा कह इन्द्र सुखी, इन्द्र कहै सुखी है त्रिपुरारि।।

कबीर परमेश्वर जी ने कहा है :-

तन धर सुखिया कोए ना देख्या, जो देख्या सो दुखिया हो।
उदय अस्त की बात करत है, सबका किया विवेका हो।।टेक।।
घाटै बाधै सब जग दुखिया, क्या गृही बैरागी हो।
सुखदेव ने दुख के डर से, गर्भ में माया त्यागी हो।।1

साच कहूँ तो जग ना मानै, झूठ कही ना जाई हो।
ब्रह्मा विष्णु शिव जी दुखिया, जिन यह राह चलाई हो।।2
सुरपति दुखिया भूपति दुखिया, रंक दुखी बपरीति हो।
कहैं कबीर और सब दुखिया, संत सुखी मन जीती हो।।3

हम अपनी गलती के कारण इस कष्ट को झेल रहे हैं। जब तक जन्म-मरण है, तब तक सामान्य जीव से लेकर श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी तक भी सुखी नहीं हैं। सबका जन्म-मरण होता है। श्री देवी पुराण (सचित्र मोटा टाईप, केवल हिन्दी, गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित) के तीसरे स्कंद में पृष्ठ 123 पर श्री विष्णु जी स्वयं कह रहे हैं कि हमारा तो जन्म मरण होता है। हम अविनाशी नहीं हैं। श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 18 के श्लोक 62 में गीता ज्ञान दाता ब्रह्म ने कहा है कि हे अर्जुन! तू सर्व भाव से उस परमेश्वर की शरण में जा, उसकी कृपा से तू परम शांति को और सनातन परम धाम को प्राप्त होगा।

गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि तत्त्वदर्शी संत की प्राप्ति के पश्चात् परमेश्वर के उस परम पद की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक लौटकर संसार में कभी नहीं आता अर्थात् पूर्ण मुक्त हो जाता है। फिर जन्म-मरण नहीं होता और उसी परमेश्वर की भक्ति करो। गीता ज्ञान दाता काल ब्रह्म ने अपनी स्थिति गीता अध्याय 2 श्लोक 12, गीता अध्याय 4 श्लोक 5 तथा 9, गीता अध्याय 10 श्लोक 2 में स्पष्ट कर रखी है कि हे अर्जुन! तेरे और मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं, तू नहीं जानता, मैं जानता हूँ।

जब तक जन्म-मरण है, तब तक जीव को सुख नहीं हो सकता। सुखी होने के लिए परमात्मा की भक्ति ही विकल्प है।

अब आप जी सृष्टि रचना जो मैं (लेखक) सत्संगों में सुनाता हूँ, उसे पढ़ें :-

''सम्पूर्ण सृष्टि रचना''

(सूक्ष्मवेद से निष्कर्ष रूप सृष्टि रचना का वर्णन)

प्रभु प्रेमी आत्माऐं प्रथम बार निम्न सृष्टि की रचना को पढेंगे तो ऐसे लगेगा जैसे दन्त कथा हो, परन्तु सर्व पवित्र सद्ग्रन्थों के प्रमाणों को पढ़कर दाँतों तले उँगली दबाऐंगे कि यह वास्तविक अमृत ज्ञान कहाँ छुपा था? कृप्या धैर्य के साथ पढ़ते रहिए तथा इस अमृत ज्ञान को सुरक्षित रखिए। आप की एक सौ एक पीढ़ी तक काम आएगा। पवित्रात्माऐं कृप्या सत्यनारायण (अविनाशी प्रभु/सतपुरुष) द्वारा रची सृष्टि रचना का वास्तविक ज्ञान पढ़ें।

1. पूर्ण ब्रह्म :- इस सृष्टि रचना में सतपुरुष-सतलोक का स्वामी (प्रभु), अलख पुरुष-अलख लोक का स्वामी (प्रभु), अगम पुरुष-अगम लोक का स्वामी (प्रभु) तथा अनामी पुरुष-अनामी अकह लोक का स्वामी (प्रभु) तो एक ही पूर्ण ब्रह्म है, जो वास्तव में अविनाशी प्रभु है जो भिन्न-२ रूप धारण करके अपने चारों लोकों में रहता है। जिसके अन्तर्गत असंख्य ब्रह्माण्ड आते हैं।

2. परब्रह्म :- यह केवल सात शंख ब्रह्माण्ड का स्वामी (प्रभु) है। यह अक्षर पुरुष भी कहलाता है। परन्तु यह तथा इसके ब्रह्माण्ड भी वास्तव में अविनाशी नहीं है।

3. ब्रह्म :- यह केवल इक्कीस ब्रह्माण्ड का स्वामी (प्रभु) है। इसे क्षर पुरुष, ज्योति निरंजन, काल आदि उपमा से जाना जाता है। यह तथा इसके सर्व ब्रह्माण्ड नाशवान हैं।

(उपरोक्त तीनों पुरूषों (प्रभुओं) का प्रमाण पवित्र श्री मद्भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में भी है।)

4. ब्रह्मा :- ब्रह्मा इसी ब्रह्म का ज्येष्ठ पुत्र है, विष्णु मध्य वाला पुत्र है तथा शिव अंतिम तीसरा पुत्र है। ये तीनों ब्रह्म के पुत्र केवल एक ब्रह्माण्ड में एक विभाग (गुण) के स्वामी (प्रभु) हैं तथा नाशवान हैं। विस्तृत विवरण के लिए कृप्या पढ़ें निम्न लिखित सृष्टि रचना :-

{कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने सुक्ष्म वेद अर्थात् कबिर्बाणी में अपने द्वारा रची सृष्टि का ज्ञान स्वयं ही बताया है जो निम्नलिखित है}

सर्व प्रथम केवल एक स्थान 'अनामी (अनामय) लोक' था। जिसे अकह लोक भी कहा जाता है, पूर्ण परमात्मा उस अनामी लोक में अकेला रहता था। उस परमात्मा का वास्तविक नाम कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर है। सभी आत्माऐं उस पूर्ण धनी के शरीर में समाई हुई थी। इसी कविर्देव का उपमात्मक (पदवी का) नाम अनामी पुरुष है (पुरुष का अर्थ प्रभु होता है। प्रभु ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप में बनाया है, इसलिए मानव का नाम भी पुरुष ही पड़ा है।) अनामी पुरूष के एक रोम कूप का प्रकाश शंख सूर्यों की रोशनी से भी अधिक है।

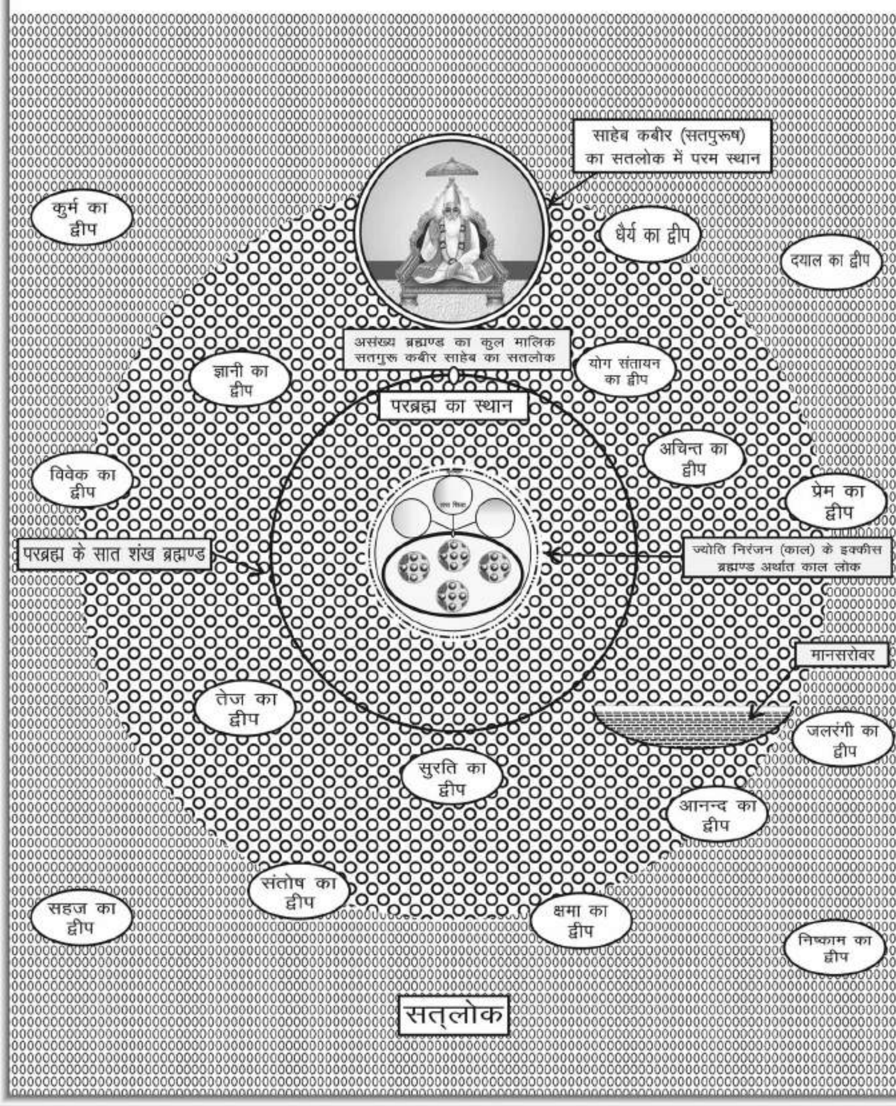
विशेष :- जैसे किसी देश के आदरणीय प्रधान मंत्री जी का शरीर का नाम तो अन्य होता है तथा पद का उपमात्मक (पदवी का) नाम प्रधानमंत्री होता है। कई बार प्रधानमंत्री जी अपने पास कई विभाग भी रख लेते हैं। तब जिस भी विभाग के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करते हैं तो उस समय उसी पद को लिखते हैं। जैसे गृहमंत्रालय के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करेगें तो अपने को गृह मंत्री लिखेगें। वहाँ उसी व्यक्ति के हस्ताक्षर की शक्ति कम होती है। इसी प्रकार कबीर परमेश्वर (कविर्देव) की रोशनी में अंतर भिन्न-२ लोकों में होता जाता है।

परमेश्वर कबीर साहेब के असंख्य ब्रह्मण्डों का लघु चित्र

अनामी लोक : इस लोक में आत्मा और परमात्मा एक रूप होकर कबीर साहेब ही अनामी रूप में है। जैसे मिट्टी के ढले (छोटे–छोटे टुकड़े) हो जाते हैं। फिर वर्षा होने पर एक पृथ्वी बन जाती है, अलग आस्तित्व नहीं रहता।

अगम लोक : इस लोक में भी कबीर साहेब अगम पुरूष रूप में रहते हैं।

अलख लोक : इस लोक में भी कबीर साहेब अलख पुरूष रूप में रहते हैं।



ठीक इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने नीचे के तीन और लोकों (अगमलोक, अलख लोक, सतलोक) की रचना शब्द(वचन) से की। यही पूर्णब्रह्म परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ही अगम लोक में प्रकट हुआ तथा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) अगम लोक का भी स्वामी है तथा वहाँ इनका उपमात्मक (पदवी का) नाम अगम पुरुष अर्थात् अगम प्रभु है। इसी अगम प्रभु का मानव सदंश शरीर बहुत तेजोमय है जिसके एक रोम कूप की रोशनी खरब सूर्य की रोशनी से भी अधिक है।

यह पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबिर देव=कबीर परमेश्वर) अलख लोक में प्रकट हुआ तथा स्वयं ही अलख लोक का भी स्वामी है तथा उपमात्मक (पदवी का) नाम अलख पुरुष भी इसी परमेश्वर का है तथा इस पूर्ण प्रभु का मानव सदंश शरीर तेजोमय (स्वर्ज्योति) स्वयं प्रकाशित है। एक रोम कूप की रोशनी अरब सूर्यों के प्रकाश से भी ज्यादा है।

यही पूर्ण प्रभु सतलोक में प्रकट हुआ तथा सतलोक का भी अधिपति यही है। इसलिए इसी का उपमात्मक (पदवी का) नाम सतपुरुष (अविनाशी प्रभु)है। इसी का नाम अकालमूर्ति - शब्द स्वरूपी राम - पूर्ण ब्रह्म - परम अक्षर ब्रह्म आदि हैं। इसी सतपुरुष कविर्देव (कबीर प्रभु) का मानव सदंश शरीर तेजोमय है। जिसके एक रोमकूप का प्रकाश करोड़ सूर्यों तथा इतने ही चन्द्रमाओं के प्रकाश से भी अधिक है। इस कविर्देव (कबीर प्रभु) ने सतपुरुष रूप में प्रकट होकर सतलोक में विराजमान होकर प्रथम सतलोक में अन्य रचना की।

एक शब्द (वचन) से सोलह द्वीपों की रचना की। फिर सोलह शब्दों से सोलह पुत्रों की उत्पत्ति की। एक मानसरोवर की रचना की जिसमें अमंत भरा। सोलह पुत्रों के नाम हैं :-(1) ''कूर्म'', (2)''ज्ञानी'', (3) ''विवेक'', (4) ''तेज'', (5) ''सहज'', (6) ''सन्तोष'', (7)''सुरति'', (8) ''आनन्द'', (9) ''क्षमा'', (10) ''निष्काम'', (11) 'जलरंगी' (12)''अचिन्त'', (13) ''प्रेम'', (14) ''दयाल'', (15) ''धैर्य'' (16) ''योग संतायन'' अर्थात् ''योगजीत''।

सतपुरुष कविर्देव ने अपने पुत्र अचिन्त को सत्यलोक की अन्य रचना का भार सौंपा तथा शक्ति प्रदान की। अचिन्त ने अक्षर पुरुष (परब्रह्म) की शब्द से उत्पत्ति की तथा कहा कि मेरी मदद करना। अक्षर पुरुष स्नान करने मानसरोवर पर गया, वहाँ आनन्द आया तथा सो गया। लम्बे समय तक बाहर नहीं आया। तब अचिन्त की प्रार्थना पर अक्षर पुरुष को नींद से जगाने के लिए कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने उसी मानसरोवर से कुछ अमंत जल लेकर एक अण्डा बनाया तथा उस अण्डे में एक आत्मा प्रवेश की तथा अण्डे को मानसरोवर के अमंत जल में छोड़ा। अण्डे की गड़गड़ाहट से अक्षर पुरुष की निंद्रा भंग हुई। उसने अण्डे को क्रोध से देखा जिस कारण से अण्डे के दो भाग हो गए। उसमें से ज्योति निंरजन (क्षर पुरुष) निकला जो आगे चलकर 'काल' कहलाया। इसका वास्तविक नाम ''कैल'' है। तब सतपुरुष (कविर्देव) ने आकाशवाणी की कि आप दोनों बाहर आओ तथा अचिंत के द्वीप में रहो। आज्ञा पाकर अक्षर पुरुष तथा क्षर पुरुष (कैल) दोनों अचिंत के द्वीप में रहने लगे (बच्चों की नालायकी उन्हीं को दिखाई कि कहीं फिर प्रभुता की तड़फ न बन जाए, क्योंकि समर्थ बिन कार्य सफल नहीं होता) फिर पूर्ण धनी कविर्देव ने सर्व रचना स्वयं की। अपनी शब्द शक्ति से एक राजेश्वरी (राष्ट्री) शक्ति उत्पन्न की, जिससे सर्व ब्रह्माण्डों को स्थापित किया। इसी को पराशक्ति परानन्दनी भी कहते हैं। पूर्ण ब्रह्म ने सर्व आत्माओं को अपने ही अन्दर से अपनी वचन शक्ति से अपने मानव शरीर सदंश उत्पन्न किया। प्रत्येक हंस आत्मा का परमात्मा जैसा ही शरीर रचा जिसका तेज 16 (सोलह) सूर्यों जैसा मानव सदंश ही है। परन्तु परमेश्वर के शरीर के

एक रोम कूप का प्रकाश करोड़ों सूर्यों से भी ज्यादा है। बहुत समय उपरान्त क्षर पुरुष (ज्योति निरंजन) ने सोचा कि हम तीनों (अचिन्त - अक्षर पुरुष - क्षर पुरुष) एक द्वीप में रह रहे हैं तथा अन्य एक-एक द्वीप में रह रहे हैं। मैं भी साधना करके अलग द्वीप प्राप्त करूँगा। उसने ऐसा विचार करके एक पैर पर खड़ा होकर सत्तर (70) युग तक तप किया।

"आत्माऐं काल के जाल में कैसे फँसी?"

विशेष :- जब ब्रह्म (ज्योति निरंजन) तप कर रहा था हम सभी आत्माऐं, जो आज ज्योति निरंजन के इक्कीस ब्रह्माण्डों में रहते हैं इसकी साधना पर आसक्त हो गए तथा अन्तरात्मा से इसे चाहने लगे। अपने सुखदाई प्रभु सत्य पुरूष से विमुख हो गए। जिस कारण से पतिव्रता पद से गिर गए। पूर्ण प्रभु के बार-बार सावधान करने पर भी हमारी आसक्ति क्षर पुरुष से नहीं हटी। {यही प्रभाव आज भी काल संष्टि में विद्यमान है। जैसे नौजवान बच्चे फिल्म स्टारों (अभिनेताओं तथा अभिनेत्रियों) की बनावटी अदाओं तथा अपने रोजगार उद्देश्य से कर रहे भूमिका पर अति आसक्त हो जाते हैं, रोकने से नहीं रूकते। यदि कोई अभिनेता या अभिनेत्री निकटवर्ती शहर में आ जाए तो देखें उन नादान बच्चों की भीड़ केवल दर्शन करने के लिए बहु संख्या में एकत्रित हो जाती हैं। 'लेना एक न देने दो' रोजी रोटी अभिनेता कमा रहे हैं, नौजवान बच्चे लुटा रहे हैं। माता-पिता कितना ही समझाऐं किन्तु बच्चे नहीं मानते। कहीं न कहीं, कभी न कभी, लुक-छिप कर जाते ही रहते हैं।}

पूर्ण ब्रह्म कविर्देव (कबीर प्रभु) ने क्षर पुरुष से पूछा कि बोलो क्या चाहते हो? उसने कहा कि पिता जी यह स्थान मेरे लिए कम है, मुझे अलग से द्वीप प्रदान करने की कंपा करें। हक्का कबीर (सत् कबीर) ने उसे 21 (इक्कीस) ब्रह्माण्ड प्रदान कर दिए। कुछ समय उपरान्त ज्योति निरंजन ने सोचा इस में कुछ रचना करनी चाहिए। खाली ब्रह्माण्ड(प्लाट) किस काम के। यह विचार कर 70 युग तप करके पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर प्रभु) से रचना सामग्री की याचना की। सतपुरुष ने उसे तीन गुण तथा पाँच तत्त्व प्रदान कर दिए, जिससे ब्रह्म (ज्योति निरंजन) ने अपने ब्रह्माण्डों में कुछ रचना की। फिर सोचा कि इसमें जीव भी होने चाहिए, अकेले का दिल नहीं लगता। यह विचार करके 64 (चौसठ) युग तक फिर तप किया। पूर्ण परमात्मा कविर् देव के पूछने पर बताया कि मुझे कुछ आत्मा दे दो, मेरा अकेले का दिल नहीं लग रहा। तब सतपुरुष कविरग्नि (कबीर परमेश्वर) ने कहा कि ब्रह्म तेरे तप के प्रतिफल में मैं तुझे और ब्रह्माण्ड दे सकता हूँ, परन्तु मेरी आत्माओं को किसी भी जप-तप साधना के फल रूप में नहीं दे सकता। हाँ, यदि कोई स्वेच्छा से तेरे साथ जाना चाहे तो वह जा सकता है। युवा कविर् (समर्थ कबीर) के वचन सुन कर ज्योति निरंजन हमारे पास आया। हम सभी हंस आत्मा पहले से ही उस पर आसक्त थे। हम उसे चारों तरफ से घेर कर खड़े हो गए। ज्योति निंरजन ने कहा कि मैंने पिता जी से अलग 21 ब्रह्माण्ड प्राप्त किए हैं। वहाँ नाना प्रकार के रमणीय स्थल बनाए हैं। क्या आप मेरे साथ चलोगे? हम सभी हंसों ने जो आज 21 ब्रह्माण्डों में परेशान हैं, कहा कि हम तैयार हैं यदि पिता जी आज्ञा दें तब क्षर पुरुष पूर्ण ब्रह्म महान् कविर् (समर्थ कबीर प्रभु) के पास गया तथा सर्व वार्ता कही। तब कविरग्नि (कबीर परमेश्वर) ने कहा कि मेरे सामने स्वीकंति देने वाले को आज्ञा दूंगा। क्षर पुरुष तथा परम अक्षर पुरुष (कविरमितौजा=कविर अमित औजा यानि जिसकी शक्ति का कोई वार नहीं, वह कबीर) दोनों हम सभी हंसात्माओं के पास आए। सत् कविर्देव ने कहा कि जो हंस आत्मा ब्रह्म के साथ जाना चाहता है हाथ ऊपर करके स्वीकंति दे। अपने पिता के सामने किसी की हिम्मत नहीं

हुई। किसी ने स्वीकति नहीं दी। बहुत समय तक सन्नाटा छाया रहा। तत्पश्चात् एक हंस आत्मा ने साहस किया तथा कहा कि पिता जी मैं जाना चाहता हूँ। फिर तो उसकी देखा-देखी (जो आज काल (ब्रह्म) के इक्कीस ब्रह्माण्डों में फंसी हैं) हम सभी आत्माओं ने स्वीकति दे दी। परमेश्वर कबीर जी ने ज्योति निरंजन से कहा कि आप अपने स्थान पर जाओ। जिन्होंने तेरे साथ जाने की स्वीकति दी है मैं उन सर्व हंस आत्माओं को आपके पास भेज दूंगा। ज्योति निरंजन अपने 21 ब्रह्माण्डों में चला गया। उस समय तक यह इक्कीस ब्रह्माण्ड सतलोक में ही थे।

तत्पश्चात् पूर्ण ब्रह्म ने सर्व प्रथम स्वीकति देने वाले हंस को लड़की का रूप दिया परन्तु स्त्री इन्द्री नहीं रची तथा सर्व आत्माओं को (जिन्होंने ज्योति निरंजन (ब्रह्म) के साथ जाने की सहमति दी थी) उस लड़की के शरीर में प्रवेश कर दिया तथा उसका नाम आष्ट्रा (आदि माया/ प्रकति देवी/ दुर्गा) पड़ा तथा सत्य पुरूष ने कहा कि पुत्री मैंने तेरे को शब्द शक्ति प्रदान कर दी है जितने जीव ब्रह्म कहे आप उत्पन्न कर देना। पूर्ण ब्रह्म कविर्देव (कबीर साहेब) ने अपने पुत्र सहज दास के द्वारा प्रकति को क्षर पुरुष के पास भिजवा दिया। सहज दास जी ने ज्योति निरंजन को बताया कि पिता जी ने इस बहन के शरीर में उन सर्व आत्माओं को प्रवेश कर दिया है जिन्होंने आपके साथ जाने की सहमति व्यक्त की थी तथा इसको पिता जी ने वचन शक्ति प्रदान की है, आप जितने जीव चाहोगे प्रकति अपने शब्द से उत्पन्न कर देगी। यह कह कर सहजदास वापिस अपने द्वीप में आ गया।

युवा होने के कारण लड़की का रंग-रूप निखरा हुआ था। ब्रह्म के अन्दर विषय-वासना उत्पन्न हो गई तथा प्रकति देवी के साथ अभद्र गति विधि प्रारम्भ की। तब दुर्गा ने कहा कि ज्योति निरंजन मेरे पास पिता जी की प्रदान की हुई शब्द शक्ति है। आप जितने प्राणी कहोगे मैं वचन से उत्पन्न कर दूँगी। आप मैथुन परम्परा शुरु मत करो। आप भी उसी पिता के शब्द से अण्डे से उत्पन्न हुए हो तथा मैं भी उसी परमपिता के वचन से ही बाद में उत्पन्न हुई हूँ। आप मेरे बड़े भाई हो, बहन-भाई का यह योग महापाप का कारण बनेगा। परन्तु ज्योति निरंजन ने प्रकति देवी की एक भी प्रार्थना नहीं सुनी तथा अपनी शब्द शक्ति द्वारा नाखुनों से स्त्री इन्द्री (भग) प्रकति को लगा दी तथा बलात्कार करने की ठानी। उसी समय दुर्गा ने अपनी इज्जत रक्षा के लिए कोई और चारा न देख सुक्ष्म रूप बनाया तथा ज्योति निरंजन के खुले मुख के द्वारा पेट में प्रवेश करके पूर्णब्रह्म कविर् देव से अपनी रक्षा के लिए याचना की। उसी समय कविर्देव (कविर् देव) अपने पुत्र योग संतायन अर्थात् जोगजीत का रूप बनाकर वहाँ प्रकट हुए तथा कन्या को ब्रह्म के उदर से बाहर निकाला तथा कहा कि ज्योति निरंजन आज से तेरा नाम 'काल' होगा। तेरे जन्म-मत्यु होते रहेंगे। इसीलिए तेरा नाम क्षर पुरुष होगा तथा एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों को प्रतिदिन खाया करेगा व सवा लाख उत्पन्न किया करेगा। आप दोनों को इक्कीस ब्रह्माण्ड सहित निष्कासित किया जाता है। इतना कहते ही इक्कीस ब्रह्माण्ड विमान की तरह चल पड़े। सहज दास के द्वीप के पास से होते हुए सतलोक से सोलह शंख कोस (एक कोस लगभग 3 कि. मी. का होता है) की दूरी पर आकर रूक गए।

विशेष विवरण - अब तक तीन शक्तियों का विवरण आया है।

1. पूर्णब्रह्म जिसे अन्य उपमात्मक नामों से भी जाना जाता है, जैसे सतपुरुष, अकालपुरुष, शब्द स्वरूपी राम, परम अक्षर ब्रह्म/पुरुष आदि। यह पूर्णब्रह्म असंख्य ब्रह्माण्डों का स्वामी है तथा वास्तव में अविनाशी है।

एक ब्रह्मण्ड का लघु चित्र

शुन्य स्थान
परमेश्वर का राजदूत भवन
महाविष्णु रूप में काल (ब्रह्म)
जटा कुण्डली झील
महाशिव रूप में काल
सतोगुण प्रधान क्षेत्र
तमोगुण प्रधान क्षेत्र
महाब्रह्मा रूप में काल
रजोगुण प्रधान क्षेत्र
ब्रह्म लोक
दुर्गा लोक
सप्तपुरी
अठासी हजार द्वीप
नकली अनामी लोक
नकली अगम लोक
नकली अलख लोक
नकली सतलोक
महाइन्द्र का द्वीप
धर्मराय का लोक
मानसरोवर
मीठे जल का समुद्र
महास्वर्ग
सुमेरू पर्वत
फलदार वृक्षों का वन
जटा कुण्डली झील
स्वर्ग
नरक
विष्णु लोक
शिव लोक
इन्द्र का लोक
सूर्य
ब्रह्मा लोक
पृथ्वी
चन्द्रमा
वितल
महातल
अतल
सूतल
तलातल
रसातल
पाताल लोक

2. परब्रह्म जिसे अक्षर पुरुष भी कहा जाता है। यह वास्तव में अविनाशी नहीं है। यह सात शंख ब्रह्माण्डों का स्वामी है।

3. ब्रह्म जिसे ज्योति निरंजन, काल, कैल, क्षर पुरुष तथा धर्मराय आदि नामों से जाना जाता है, जो केवल इक्कीस ब्रह्माण्ड का स्वामी है। अब आगे इसी ब्रह्म (काल) की संष्टि के एक ब्रह्माण्ड का परिचय दिया जाएगा, जिसमें तीन और नाम आपके पढ़ने में आयेंगे - ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव।

ब्रह्म तथा ब्रह्मा में भेद - एक ब्रह्माण्ड में बने सर्वोपरि स्थान पर ब्रह्म (क्षर पुरुष) स्वयं तीन गुप्त स्थानों की रचना करके ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव रूप में रहता है तथा अपनी पत्नी प्रकंति (दुर्गा) के सहयोग से तीन पुत्रों की उत्पत्ति करता है। उनके नाम भी ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव ही रखता है। जो ब्रह्म का पुत्र ब्रह्मा है वह एक ब्रह्माण्ड में केवल तीन लोकों (पंथ्वी लोक, स्वर्ग लोक तथा पाताल लोक) में एक रजोगुण विभाग का मंत्री (स्वामी) है। इसे त्रिलोकीय ब्रह्मा कहा है तथा ब्रह्म जो ब्रह्मलोक में ब्रह्मा रूप में रहता है उसे महाब्रह्मा व ब्रह्मलोकीय ब्रह्मा कहा है। इसी ब्रह्म (काल) को सदाशिव, महाशिव, महाविष्णु भी कहा है।

श्री विष्णु पुराण में प्रमाण :- चतुर्थ अंश अध्याय 1 पंष्ठ 230-231 पर श्री ब्रह्मा जी ने कहा :- जिस अजन्मा, सर्वमय विधाता परमेश्वर का आदि, मध्य, अन्त, स्वरूप, स्वभाव और सार हम नहीं जान पाते (श्लोक 83)

जो मेरा रूप धारण कर संसार की रचना करता है, स्थिति के समय जो पुरूष रूप है तथा जो रूद्र रूप से विश्व का ग्रास कर जाता है, अनन्त रूप से सम्पूर्ण जगत् को धारण करता है। (श्लोक 86)

"श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी व श्री शिव जी की उत्पत्ति"

काल (ब्रह्म) ने प्रकंति (दुर्गा) से कहा कि अब मेरा कौन क्या बिगाडेगा? मन मानी करूँगा प्रकंति ने फिर प्रार्थना की कि आप कुछ शर्म करो। प्रथम तो आप मेरे बड़े भाई हो, क्योंकि उसी पूर्ण परमात्मा (कविर्देव) की वचन शक्ति से आप की (ब्रह्म की) अण्डे से उत्पत्ति हुई तथा बाद में मेरी उत्पत्ति उसी परमेश्वर के वचन से हुई है। दूसरे मैं आपके पेट से बाहर निकली हूँ, मैं आपकी बेटी हुई तथा आप मेरे पिता हुए। इन पवित्र नातों में बिगाड़ करना महापाप होगा। मेरे पास पिता की प्रदान की हुई शब्द शक्ति है, जितने प्राणी आप कहोगे मैं वचन से उत्पन्न कर दूंगी। ज्योति निरंजन ने दुर्गा की एक भी विनय नहीं सुनी तथा कहा कि मुझे जो सजा मिलनी थी मिल गई, मुझे सतलोक से निष्कासित कर दिया। अब मनमानी करूँगा। यह कहकर काल पुरूष (क्षर पुरूष) ने प्रकंति के साथ जबरदस्ती शादी की तथा तीन पुत्रों (रजगुण युक्त - ब्रह्मा जी, सतगुण युक्त - विष्णु जी तथा तमगुण युक्त - शिव शंकर जी) की उत्पत्ति की। जवान होने तक तीनों पुत्रों को दुर्गा के द्वारा अचेत करवा देता है, फिर युवा होने पर श्री ब्रह्मा जी को कमल के फूल पर, श्री विष्णु जी को शेष नाग की शैय्या पर तथा श्री शिव जी को कैलाश पर्वत पर सचेत करके इक्ट्ठे कर देता है। तत्पश्चात् प्रकंति (दुर्गा) द्वारा इन तीनों का विवाह कर दिया जाता है तथा एक ब्रह्माण्ड में तीन लोकों (स्वर्ग लोक, पंथ्वी लोक तथा पाताल लोक) में एक-एक विभाग के मंत्री (प्रभु) नियुक्त कर देता है। जैसे श्री ब्रह्मा जी को रजोगुण विभाग का तथा विष्णु जी को सत्तोगुण विभाग का तथा श्री शिव शंकर जी को तमोगुण विभाग का तथा स्वयं गुप्त (महाब्रह्मा - महाविष्णु - महाशिव) रूप से मुख्य मंत्री पद को संभालता है। एक ब्रह्माण्ड में एक ब्रह्मलोक की रचना की है।

उसी में तीन गुप्त स्थान बनाए हैं। एक रजोगुण प्रधान स्थान है जहाँ पर यह ब्रह्म (काल) स्वयं महाब्रह्मा (मुख्यमंत्री) रूप में रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महासावित्री रूप में रखता है। इन दोनों के संयोग से जो पुत्र इस स्थान पर उत्पन्न होता है वह स्वतः ही रजोगुणी बन जाता है। दूसरा स्थान सतोगुण प्रधान स्थान बनाया है। वहाँ पर यह क्षर पुरुष स्वयं महाविष्णु रूप बना कर रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महालक्ष्मी रूप में रख कर जो पुत्र उत्पन्न करता है उसका नाम विष्णु रखता है, वह बालक सतोगुण युक्त होता है तथा तीसरा इसी काल ने वहीं पर एक तमोगुण प्रधान क्षेत्र बनाया है। उसमें यह स्वयं सदाशिव रूप बनाकर रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महापार्वती रूप में रखता है। इन दोनों के पति-पत्नी व्यवहार से जो पुत्र उत्पन्न होता है उसका नाम शिव रख देते हैं तथा तमोगुण युक्त कर देते हैं। (प्रमाण के लिए देखें पवित्र श्री शिव महापुराण, विद्येवेश्वर संहिता पष्ठ 24-26 जिस में ब्रह्मा, विष्णु, रूद्र तथा महेश्वर से अन्य सदाशिव है तथा रूद्र संहिता अध्याय 6 तथा 7, 9 पष्ठ नं. 100 से, 105 तथा 110 पर अनुवाद कर्ता श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित तथा पवित्र श्रीमद्देवीमहापुराण तीसरा स्कंद पष्ठ नं. 114 से 123 तक, गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित, जिसके अनुवाद कर्ता हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार चिमन लाल गोस्वामी) फिर इन्हीं को धोखे में रख कर अपने खाने के लिए जीवों की उत्पत्ति श्री ब्रह्मा जी द्वारा तथा स्थिति (एक-दूसरे को मोह-ममता में रख कर काल जाल में रखना) श्री विष्णु जी से तथा संहार (क्योंकि काल पुरुष को शापवश एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों के सूक्ष्म शरीर से मैल निकाल कर खाना होता है उसके लिए इक्कीसवें ब्रह्माण्ड में एक तप्तशिला है जो स्वतः गर्म रहती है, उस पर गर्म करके मैल पिंघला कर खाता है, जीव मरते नहीं परन्तु कष्ट असहनीय होता है, फिर प्राणियों को कर्म आधार पर अन्य शरीर प्रदान करता है) श्री शिव जी द्वारा करवाता है। जैसे किसी मकान में तीन कमरे बने हों। एक कमरे में अश्लील चित्र लगे हों। उस कमरे में जाते ही मन में वैसे ही मलिन विचार उत्पन्न हो जाते हैं। दूसरे कमरे में साधु-सन्तों, भक्तों के चित्र लगे हों तो मन में अच्छे विचार, प्रभु का चिन्तन ही बना रहता है। तीसरे कमरे में देश भक्तों व शहीदों के चित्र लगे हों तो मन में वैसे ही जोशीले विचार उत्पन्न हो जाते हैं। ठीक इसी प्रकार ब्रह्म (काल) ने अपनी सूझ-बूझ से उपरोक्त तीनों गुण प्रधान स्थानों की रचना की हुई है।

''तीनों गुण क्या हैं? प्रमाण सहित''

''तीनों गुण रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी हैं। ब्रह्म (काल) तथा प्रकति (दुर्गा) से उत्पन्न हुए हैं तथा तीनों नाशवान हैं''

प्रमाण :- गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित श्री शिव महापुराण जिसके सम्पादक हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार पष्ठ सं. 24 से 26 विद्यवेश्वर संहिता तथा पष्ठ 110 अध्याय 9 रूद्र संहिता ''इस प्रकार ब्रह्मा-विष्णु तथा शिव तीनों देवताओं में गुण हैं, परन्तु शिव (ब्रह्म-काल) गुणातीत कहा गया है।

दूसरा प्रमाण :- गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित श्रीमद् देवीभागवत पुराण जिसके सम्पादक हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार चिमन लाल गोस्वामी, तीसरा स्कंद, अध्याय 5 पष्ठ 123 :- भगवान विष्णु ने दुर्गा की स्तुति की : कहा कि मैं (विष्णु), ब्रह्मा तथा शंकर तुम्हारी कपा से विद्यमान हैं। हमारा तो आविर्भाव (जन्म) तथा तिरोभाव (मत्यु) होती है। हम नित्य (अविनाशी) नहीं हैं। तुम ही नित्य हो, जगत् जननी हो, प्रकति और सनातनी देवी हो। भगवान शंकर ने कहा : यदि भगवान ब्रह्मा तथा

भगवान विष्णु तुम्हीं से उत्पन्न हुए हैं तो उनके बाद उत्पन्न होने वाला मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर क्या तुम्हारी संतान नहीं हुआ ? अर्थात् मुझे भी उत्पन्न करने वाली तुम ही हों। इस संसार की सृष्टि-स्थिति-संहार में तुम्हारे गुण सदा सर्वदा हैं। इन्हीं तीनों गुणों से उत्पन्न हम, ब्रह्मा-विष्णु तथा शंकर नियमानुसार कार्य में तत्पर रहते हैं।

उपरोक्त यह विवरण केवल हिन्दी में अनुवादित श्री देवीमहापुराण से है, जिसमें कुछ तथ्यों को छुपाया गया है। इसलिए यही प्रमाण देखें श्री मद्देवीभागवत महापुराण सभाषटिकम् समहात्यम्, खेमराज श्री कृष्ण दास प्रकाशन मुम्बई, इसमें संस्कृत सहित हिन्दी अनुवाद किया है। तीसरा स्कंद अध्याय 4 पृष्ठ 10, श्लोक 42:-

ब्रह्मा – अहम् ईश्वरः फिल ते प्रभावात्सर्वे वयं जनि युता न यदा तू नित्याः
के अन्ये सुराः शतमख प्रमुखाः च नित्या नित्या त्वमेव जननी प्रकृतिः पुराणा। (42)

हिन्दी अनुवाद :- हे मात! ब्रह्मा, मैं तथा शिव तुम्हारे ही प्रभाव से जन्मवान हैं, नित्य नही हैं अर्थात् हम अविनाशी नहीं हैं, फिर अन्य इन्द्रादि दूसरे देवता किस प्रकार नित्य हो सकते हैं। तुम ही अविनाशी हो, प्रकृति तथा सनातनी देवी हो।

पृष्ठ 11-12, अध्याय 5, श्लोक 8 :- यदि दयार्द्रमना न सदांबिके कथमहं विहितः च तमोगुणः कमलजश्च रजोगुणसंभवः सुविहितः किमु सत्वगुणों हरिः।(8)

अनुवाद :- भगवान शंकर बोले :-हे मात! यदि हमारे ऊपर आप दयायुक्त हो तो मुझे तमोगुण क्यों बनाया, कमल से उत्पन्न ब्रह्मा को रजोगुण किस लिए बनाया तथा विष्णु को सतगुण क्यों बनाया? अर्थात् जीवों के जन्म-मृत्यु रूपी दुष्कर्म में क्यों लगाया?

श्लोक 12 :- रमयसे स्वपतिं पुरुषं सदा तव गतिं न हि विह विद्म शिवे (12)

हिन्दी - अपने पति पुरुष अर्थात् काल भगवान के साथ सदा भोग-विलास करती रहती हो। आपकी गति कोई नहीं जानता।

निष्कर्ष :- उपरोक्त प्रमाणों से प्रमाणित हुआ की रजगुण - ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव है ये तीनों नाशवान है। दुर्गा का पति ब्रह्म (काल) है यह उसके साथ भोग विलास करता है।

"ब्रह्म (काल) की अव्यक्त रहने की प्रतिज्ञा"

सूक्ष्मवेद से शेष सृष्टि रचना-------

तीनों पुत्रों की उत्पत्ति के पश्चात् ब्रह्म ने अपनी पत्नी दुर्गा (प्रकृति) से कहा मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि भविष्य में मैं किसी को अपने वास्तविक रूप में दर्शन नहीं दूँगा। जिस कारण से मैं अव्यक्त माना जाऊँगा। दुर्गा से कहा कि आप मेरा भेद किसी को मत देना। मैं गुप्त रहूँगा। दुर्गा ने पूछा कि क्या आप अपने पुत्रों को भी दर्शन नहीं दोगे? ब्रह्म ने कहा मैं अपने पुत्रों को तथा अन्य को किसी भी साधना से दर्शन नहीं दूँगा, यह मेरा अटल नियम रहेगा। दुर्गा ने कहा यह तो आपका उत्तम नियम नहीं है जो आप अपनी संतान से भी छुपे रहोगे। तब काल ने कहा दुर्गा मेरी विवशता है। मुझे एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों का आहार करने का शाप लगा है। यदि मेरे पुत्रों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) को पता लग गया तो ये उत्पत्ति, स्थिति तथा संहार का कार्य नहीं करेंगे। इसलिए यह मेरा अनुत्तम नियम सदा रहेगा। जब ये तीनों कुछ बड़े हो जाऐं तो इन्हें अचेत कर देना। मेरे विषय में नहीं बताना, नहीं तो मैं तुझे भी दण्ड दूँगा, दुर्गा इस डर के मारे वास्तविकता नहीं बताती। इसीलिए गीता अध्याय 7 श्लोक 24 में कहा है कि यह बुद्धिहीन जन समुदाय मेरे अनुत्तम नियम से अपरिचित हैं कि मैं कभी भी किसी के

सामने प्रकट नहीं होता अपनी योग माया से छुपा रहता हूँ। इसलिए मुझ अव्यक्त को मनुष्य रूप में आया हुआ अर्थात् कृष्ण मानते हैं।

(अबुद्धयः) बुद्धि हीन (मम्) मेरे (अनुत्तमम्) अनुत्तम अर्थात् घटिया (अव्ययम्) अविनाशी (परम् भावम्) विशेष भाव को (अजानन्तः) न जानते हुए (माम् अव्यक्तम्) मुझ अव्यक्त को (व्यक्तिम्) मनुष्य रूप में (आपन्नम) आया (मन्यन्ते) मानते हैं अर्थात् मैं कृष्ण नहीं हूँ। (गीता अध्याय 7 श्लोक 24)

गीता अध्याय 11 श्लोक 47 तथा 48 में कहा है कि यह मेरा वास्तविक काल रूप है। इसके दर्शन अर्थात् ब्रह्म प्राप्ति न वेदों में वर्णित विधि से, न जप से, न तप से तथा न किसी क्रिया से हो सकती है।

जब तीनों बच्चे युवा हो गए तब माता भवानी (प्रकृति, अष्टंगी) ने कहा कि तुम सागर मन्थन करो। प्रथम बार सागर मन्थन किया तो (ज्योति निरंजन ने अपने श्वांसों द्वारा चार वेद उत्पन्न किए। उनको गुप्त वाणी द्वारा आज्ञा दी कि सागर में निवास करो) चारों वेद निकले वह ब्रह्मा ने लिए। वस्तु लेकर तीनों बच्चे माता के पास आए तब माता ने कहा कि चारों वेदों को ब्रह्मा रखे व पढे।

नोट :- वास्तव में पूर्णब्रह्म ने, ब्रह्म अर्थात् काल को पाँच वेद प्रदान किए थे। लेकिन ब्रह्म ने केवल चार वेदों को प्रकट किया। पाँचवां वेद छुपा दिया। जो पूर्ण परमात्मा ने स्वयं प्रकट होकर कविर्गिर्भीः अर्थात् कविर्वाणी (कबीर वाणी) द्वारा लोकोक्तियों व दोहों के माध्यम से प्रकट किया है।

दूसरी बार सागर मन्थन किया तो तीन कन्याऐं मिली। माता ने तीनों को बाँट दिया। प्रकृति (दुर्गा) ने अपने ही अन्य तीन रूप (सावित्री,लक्ष्मी तथा पार्वती) धारण किए तथा समुन्द्र में छुपा दी। सागर मन्थन के समय बाहर आ गई। वही प्रकृति तीन रूप हुई तथा भगवान ब्रह्मा को सावित्री, भगवान विष्णु को लक्ष्मी, भगवान शंकर को पार्वती पत्नी रूप में दी। तीनों ने भोग विलास किया, सुर तथा असुर दोनों पैदा हुए।

{जब तीसरी बार सागर मन्थन किया तो चौदह रत्न ब्रह्मा को तथा अमृत विष्णु को व देवताओं को, मद्य(शराब) असुरों को तथा विष परमार्थ शिव ने अपने कंठ में ठहराया। यह तो बहुत बाद की बात है।} जब ब्रह्मा वेद पढ़ने लगा तो पता चला कि कोई सर्व ब्रह्माण्डों की रचना करने वाला कुल का मालिक पुरूष (प्रभु) और है। तब ब्रह्मा जी ने विष्णु जी व शंकर जी को बताया कि वेदों में वर्णन है कि सृजनहार कोई और प्रभु है परन्तु वेद कहते हैं कि भेद हम भी नहीं जानते, उसके लिए संकेत है कि किसी तत्त्वदर्शी संत से पूछो। तब ब्रह्मा माता के पास आया और सब वृतांत कह सुनाया। माता कहा करती थी कि मेरे अतिरिक्त और कोई नहीं है। मैं ही कर्ता हूँ। मैं ही सर्वशक्तिमान हूँ परन्तु ब्रह्मा ने कहा कि वेद ईश्वर कृत हैं यह झूठ नहीं हो सकते। दुर्गा ने कहा कि तेरा पिता तुझे दर्शन नहीं देगा, उसने प्रतिज्ञा की हुई है। तब ब्रह्मा ने कहा माता जी अब आप की बात पर अविश्वास हो गया है। मैं उस पुरूष (प्रभु) का पता लगाकर ही रहूँगा। दुर्गा ने कहा कि यदि वह तुझे दर्शन नहीं देगा तो तुम क्या करोगे? ब्रह्मा ने कहा कि मैं आपको शक्ल नहीं दिखाऊँगा। दूसरी तरफ ज्योति निरंजन ने कसम खाई है कि मैं अव्यक्त रहूँगा किसी को दर्शन नहीं दूँगा अर्थात् 21 ब्रह्माण्ड में कभी भी अपने वास्तविक काल रूप में आकार में नहीं आऊँगा।

गीता अध्याय नं. 7 का श्लोक नं. 24

अव्यक्तम्, व्यक्तिम्, आपन्नम्, मन्यन्ते, माम्, अबुद्धयः।
परम्, भावम्, अजानन्तः, मम, अव्ययम्, अनुत्तमम्।।24।।

अनुवाद : (अबुद्धयः) बुद्धिहीन लोग (मम्) मेरे (अनुतमम्) अश्रेष्ठ (अव्ययम्) अटल (परम्) परम (भावम्) भावको (अजानन्तः) न जानते हुए (अव्यक्तम्) अदृश्यमान (माम्) मुझ कालको (व्यक्तिम्) नर रूप आकार में

कृष्ण (आपन्नम्) प्राप्त हुआ (मन्यन्ते) मानते हैं।

गीता अध्याय नं. 7 का श्लोक नं. 25

न, अहम्, प्रकाशः, सर्वस्य, योगमायासमावृतः।
मूढः, अयम्, न, अभिजानाति, लोकः, माम्, अजम्, अव्ययम्।।25।।

अनुवाद : (अहम्) मैं (योगमाया समावृतः) योगमायासे छिपा हुआ (सर्वस्य) सबके (प्रकाशः) प्रत्यक्ष (न) नहीं होता अर्थात् अदृश्य अर्थात् अव्यक्त रहता हूँ इसलिये (अजम्) जन्म न लेने वाले (अव्ययम्) अविनाशी अटल भावको (अयम्) यह (मूढः) अज्ञानी (लोकः) जनसमुदाय संसार (माम्) मुझे (न) नहीं (अभिजानाति) जानता अर्थात् मुझको कृष्ण समझता है। क्योंकि ब्रह्म अपनी शब्द शक्ति से अपने नाना रूप बना लेता है, यह दुर्गा का पति है इसलिए इस मंत्र में कह रहा है कि मैं श्री कृष्ण आदि की तरह दुर्गा से जन्म नहीं लेता।

"ब्रह्मा का अपने पिता (काल/ब्रह्म) की प्राप्ति के लिए प्रयत्न"

तब दुर्गा ने ब्रह्मा जी से कहा कि अलख निरंजन तुम्हारा पिता है परन्तु वह तुम्हें दर्शन नहीं देगा। ब्रह्मा ने कहा कि मैं दर्शन करके ही लौटूँगा। माता ने पूछा कि यदि तुझे दर्शन नहीं हुए तो क्या करेगा ? ब्रह्मा ने कहा मैं प्रतिज्ञा करता हूँ। यदि पिता के दर्शन नहीं हुए तो मैं आपके समक्ष नहीं आऊँगा। यह कह कर ब्रह्मा जी व्याकुल होकर उत्तर दिशा की तरफ चल दिया जहाँ अन्धेरा ही अन्धेरा है। वहाँ ब्रह्मा ने चार युग तक ध्यान लगाया परन्तु कुछ भी प्राप्ति नहीं हुई। काल ने आकाशवाणी की कि दुर्गा सृष्टि रचना क्यों नहीं की ? भवानी ने कहा कि आप का ज्येष्ठ पुत्र ब्रह्मा जिद्द करके आप की तलाश में गया है। ब्रह्म (काल) ने कहा उसे वापिस बुला लो। मैं उसे दर्शन नहीं दूँगा। ब्रह्मा के बिना जीव उत्पत्ति का सब कार्य असम्भव है। तब दुर्गा (प्रकृति) ने अपनी शब्द शक्ति से गायत्री नाम की लड़की उत्पन्न की तथा उसे ब्रह्मा को लौटा लाने को कहा। गायत्री ब्रह्मा जी के पास गई परंतु ब्रह्मा जी समाधि लगाए हुए थे उन्हें कोई आभास ही नहीं था कि कोई आया है। तब आदि कुमारी (प्रकृति) ने गायत्री को ध्यान द्वारा बताया कि इस के चरण स्पर्श कर। तब गायत्री ने ऐसा ही किया। ब्रह्मा जी का ध्यान भंग हुआ तो क्रोध वश बोले कि कौन पापिन है जिसने मेरा ध्यान भंग किया है। मैं तुझे शाप दूँगा। गायत्री कहने लगी कि मेरा दोष नहीं है पहले मेरी बात सुनो तब शाप देना। मेरे को माता ने तुम्हें लौटा लाने को कहा है क्योंकि आपके बिना जीव उत्पत्ति नहीं हो सकती। ब्रह्मा ने कहा कि मैं कैसे जाऊँ? पिता जी के दर्शन हुए नहीं, ऐसे जाऊँ तो मेरा उपहास होगा। यदि आप माता जी के समक्ष यह कह दें कि ब्रह्मा को पिता (ज्योति निरंजन) के दर्शन हुए हैं, मैंने अपनी आँखो से देखा है तो मैं आपके साथ चलूँ। तब गायत्री ने कहा कि आप मेरे साथ संभोग (सैक्स) करोगे तो मैं आपकी झूठी साक्षी (गवाही) भरूंगी। तब ब्रह्मा ने सोचा कि पिता के दर्शन हुए नहीं, वैसे जाऊँ तो माता के सामने शर्म लगेगी और चारा नहीं दिखाई दिया, फिर गायत्री से रति क्रिया (संभोग) की।

तब गायत्री ने कहा कि क्यों न एक गवाह और तैयार किया जाए। ब्रह्मा ने कहा बहुत ही अच्छा है। तब गायत्री ने शब्द शक्ति से एक लड़की (पुहपवति नाम की) पैदा की तथा उससे दोनों ने कहा कि आप गवाही देना कि ब्रह्मा ने पिता के दर्शन किए हैं। तब पुहपवति ने कहा कि मैं क्यों झूठी गवाही दूँ ? हाँ, यदि ब्रह्मा मेरे से रति क्रिया (संभोग) करे तो गवाही दे सकती हूँ। गायत्री ने ब्रह्मा को समझाया (उकसाया) कि और कोई चारा नहीं है तब ब्रह्मा ने पुहपवति से संभोग किया तो तीनों मिलकर आदि माया (प्रकृति) के पास आए। दोनों देवियों ने उपरोक्त शर्त इसलिए रखी थी कि यदि ब्रह्मा माता के सामने हमारी झूठी गवाही को बता देगा तो माता हमें शाप दे देगी। इसलिए उसे भी दोषी बना लिया।

(यहाँ महाराज गरीबदास जी कहते हैं कि – ''दास गरीब यह चूक धुरों धुर'')

"माता (दुर्गा) द्वारा ब्रह्मा को शाप देना"

तब माता ने ब्रह्मा से पूछा क्या तुझे तेरे पिता के दर्शन हुए? ब्रह्मा ने कहा हाँ मुझे पिता के दर्शन हुए हैं। दुर्गा ने कहा साक्षी बता। तब ब्रह्मा ने कहा इन दोनों के समक्ष साक्षात्कार हुआ है। देवी ने उन दोनों लड़कियों से पूछा क्या तुम्हारे सामने ब्रह्म का साक्षात्कार हुआ है तब दोनों ने कहा कि हाँ, हमने अपनी आँखों से देखा है। फिर भवानी (प्रकृति) को संशय हुआ कि मुझे तो ब्रह्म ने कहा था कि मैं किसी को दर्शन नहीं दूँगा, परन्तु ये कहते हैं कि दर्शन हुए हैं। तब अष्टंगी ने ध्यान लगाया और काल/ज्योति निरंजन से पूछा कि यह क्या कहानी है? ज्योति निंरजन जी ने कहा कि ये तीनों झूठ बोल रहे हैं। तब माता ने कहा तुम झूठ बोल रहे हो। आकाशवाणी हुई है कि इन्हें कोई दर्शन नहीं हुए। यह बात सुनकर ब्रह्मा ने कहा कि माता जी मैं सौगंध खाकर पिता की तलाश करने गया था। परन्तु पिता (ब्रह्म) के दर्शन हुए नहीं। आप के पास आने में शर्म लग रही थी। इसलिए हमने झूठ बोल दिया। तब माता (दुर्गा) ने कहा कि अब मैं तुम्हें शॉप देती हूँ।

<u>ब्रह्मा को शॉप</u> :- तेरी पूजा जगत में नहीं होगी। आगे तेरे वंशज होंगे वे बहुत पाखण्ड करेंगे। झूठी बात बना कर जगत को ठगेंगे। ऊपर से तो कर्म काण्ड करते दिखाई देंगे अन्दर से विकार करेंगे। कथा पुराणों को पढ़कर सुनाया करेंगे, स्वयं को ज्ञान नहीं होगा कि सद्ग्रन्थों में वास्तविकता क्या है, फिर भी मान वश तथा धन प्राप्ति के लिए गुरु बन कर अनुयाइयों को लोकवेद (शास्त्र विरुद्ध दंत कथा) सुनाया करेंगे। देवी-देवों की पूजा करके तथा करवाके, दूसरों की निन्दा करके कष्ट पर कष्ट उठायेंगे। जो उनके अनुयाई होंगे उनको परमार्थ नहीं बताएंगे। दक्षिणा के लिए जगत को गुमराह करते रहेंगे। अपने आपको सबसे अच्छा मानेंगे, दूसरों को नीचा समझेंगे। जब माता के मुख से यह सुना तो ब्रह्मा मुर्छित होकर जमीन पर गिर गया। बहुत समय उपरान्त होश में आया।

<u>गायत्री को शॉप</u> : -- तेरे कई सांड पति होंगे। तू मृतलोक में गाय बनेगी।

<u>पुहपवति को शॉप</u> : -- तेरी जगह गंदगी में होगी। तेरे फूलों को कोई पूजा में नहीं लाएगा। इस झूठी गवाही के कारण तुझे यह नरक भोगना होगा। तेरा नाम केवड़ा केतकी होगा। (हरियाणा में कुसोंधी कहते हैं। यह गंदगी (कुरड़ियों) वाली जगह पर होती है।)

इस प्रकार तीनों को शाप देकर माता भवानी बहुत पछताई। {इस प्रकार पहले तो जीव बिना सोचे मन (काल निरंजन) के प्रभाव से गलत कार्य कर देता है परन्तु जब आत्मा (सतपुरूष अंश) के प्रभाव से उसे ज्ञान होता है तो पीछे पछताना पड़ता है। जिस प्रकार माता-पिता अपने बच्चों को छोटी सी गलती के कारण ताड़ते हैं (क्रोधवश होकर) परन्तु बाद में बहुत पछताते हैं। यही प्रक्रिया मन (काल-निंरजन) के प्रभाव से सर्व जीवों में क्रियावान हो रही है।} हाँ, यहाँ एक बात विशेष है कि निरंजन (काल-ब्रह्म) ने भी अपना कानून बना रखा है कि यदि कोई जीव किसी दुर्बल जीव को सताएगा तो उसे उसका बदला देना पड़ेगा। जब आदि भवानी (प्रकृति, अष्टंगी) ने ब्रह्मा, गायत्री व पुहपवति को शाप दिया तो अलख निंरजन (ब्रह्म-काल) ने कहा कि हे भवानी (प्रकृति/अष्टंगी) यह आपने अच्छा नहीं किया। अब मैं (निरंजन) आपको शाप देता हूँ कि द्वापर युग में तेरे भी पाँच पति होंगे। (द्रोपदी ही आदिमाया का अवतार हुई है।) जब यह आकाश वाणी सुनी तो आदि माया ने कहा कि हे ज्योति निंरजन (काल) मैं तेरे वश पड़ी हूँ जो चाहे सो कर ले।

"विष्णु का अपने पिता (काल/ब्रह्म) की प्राप्ति के लिए प्रस्थान व माता का आशीर्वाद पाना"

इसके बाद विष्णु से प्रकृति ने कहा कि पुत्र तू भी अपने पिता का पता लगा ले। तब विष्णु अपने पिता जी काल (ब्रह्म) का पता करते-करते पाताल लोक में चले गए, जहाँ शेषनाग था। उसने विष्णु को अपनी सीमा में प्रविष्ट होते देख कर क्रोधित हो कर जहर भरा फुंकारा मारा। उसके विष के प्रभाव से विष्णु जी का रंग सांवला हो गया, जैसे स्प्रे पेंट हो जाता है। तब विष्णु ने चाहा कि इस नाग को मजा चखाना चाहिए। तब ज्योति निरंजन (काल) ने देखा कि अब विष्णु को शांत करना चाहिए। तब आकाशवाणी हुई कि विष्णु अब तू अपनी माता जी के पास जा और सत्य-सत्य सारा विवरण बता देना तथा जो कष्ट आपको शेषनाग से हुआ है, इसका प्रतिशोध द्वापर युग में लेना। द्वापर युग में आप (विष्णु) तो कृष्ण अवतार धारण करोगे और कालीदह में कालिन्द्री नामक नाग, शेष नाग का अवतार होगा।

ऊँच होई के नीच सतावै, ताकर ओएल (बदला) मोही सों पावै।
जो जीव देई पीर पुनी काँहु, हम पुनि ओएल दिवावें ताहूँ।।

तब विष्णु जी माता जी के पास आए तथा सत्य-सत्य कह दिया कि मुझे पिता के दर्शन नहीं हुए। इस बात से माता (प्रकृति) बहुत प्रसन्न हुई और कहा कि पुत्र तू सत्यवादी है। अब मैं अपनी शक्ति से आपको तेरे पिता से मिलाती हूँ तथा तेरे मन का संशय खत्म करती हूँ।

कबीर, देख पुत्र तोहि पिता भीटाऊँ, तौरे मन का धोखा मिटाऊँ।
मन स्वरूप कर्ता कह जानों, मन ते दूजा और न मानो।
स्वर्ग पाताल दौर मन केरा, मन अस्थीर मन अहे अनेरा।
निंरकार मन ही को कहिए, मन की आस निश दिन रहिए।
देख हूँ पलटि सुन्य मह ज्योति, जहाँ पर झिलमिल झालर होती।।

इस प्रकार माता (अष्टंगी, प्रकृति) ने विष्णु से कहा कि मन ही जगत का कर्ता है, यही ज्योति निरंजन है। ध्यान में जो एक हजार ज्योतियाँ नजर आती हैं वही उसका रूप है। जो शंख, घण्टा आदि का बाजा सुना, यह महास्वर्ग में निरंजन का ही बज रहा है। तब माता (अष्टंगी, प्रकृति) ने कहा कि हे पुत्र तुम सब देवों के सरताज हो और तेरी हर कामना व कार्य मैं पूर्ण करूंगी। तेरी पूजा सर्व जगत में होगी। आपने मुझे सच-सच बताया है। काल के इक्कीस ब्रह्माण्ड़ों के प्राणियों की विशेष आदत है कि अपनी व्यर्थ महिमा बनाता है। जैसे दुर्गा जी श्री विष्णु जी को कह रही है कि तेरी पूजा जगत में होगी। मैंने तुझे तेरे पिता के दर्शन करा दिए। दुर्गा ने केवल प्रकाश दिखा कर श्री विष्णु जी को बहका दिया। श्री विष्णु जी भी प्रभु की यही स्थिति अपने अनुयाइयों को समझाने लगे कि परमात्मा का केवल प्रकाश दिखाई देता है। परमात्मा निराकार है। इसके बाद आदि भवानी रूद्र(महेश जी) के पास गई तथा कहा कि महेश तू भी कर ले अपने पिता की खोज तेरे दोनों भाइयों को तो तुम्हारे पिता के दर्शन नहीं हुए उनको जो देना था वह प्रदान कर दिया है अब आप माँगो जो माँगना है। तब महेश ने कहा कि हे जननी ! मेरे दोनों बड़े भाईयों को पिता के दर्शन नहीं हुए फिर प्रयत्न करना व्यर्थ है। कृपा मुझे ऐसा वर दो कि मैं अमर (मृत्युंजय) हो जाऊँ। तब माता ने कहा कि यह मैं नहीं कर सकती। हाँ युक्ति बता सकती हूँ, जिससे तेरी आयु सबसे लम्बी बनी रहेगी। विधि योग समाधि है (इसलिए महादेव जी ज्यादातर समाधि में ही रहते हैं)। इस प्रकार माता (अष्टंगी, प्रकृति) ने तीनों पुत्रों को विभाग बांट दिएः-

भगवान ब्रह्मा जी को काल लोक में लख चौरासी के चोले (शरीर) रचने (बनाने) का अर्थात् रजोगुण प्रभावित करके संतान उत्पत्ति के लिए विवश करके जीव उत्पत्ति कराने का विभाग प्रदान किया। भगवान विष्णु जी को इन जीवों के पालन पोषण (कर्मानुसार) करने, तथा मोह-ममता उत्पन्न करके स्थिति बनाए रखने का विभाग दिया।

भगवान शिव शंकर (महादेव) को संहार करने का विभाग प्रदान किया क्योंकि इनके पिता निरंजन को एक लाख मानव शरीर धारी जीव प्रतिदिन खाने पड़ते हैं।

यहां पर मन में एक प्रश्न उत्पन्न होगा कि ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर जी से उत्पत्ति, स्थिति और संहार कैसे होता है। ये तीनों अपने-२ लोक में रहते हैं। जैसे आजकल संचार प्रणाली को चलाने के लिए उपग्रहों को ऊपर आसमान में छोड़ा जाता है और वे नीचे पृथ्वी पर संचार प्रणाली को चलाते हैं। ठीक इसी प्रकार ये तीनों देव जहां भी रहते हैं इनके शरीर से निकलने वाले सूक्ष्म गुण की तरंगें तीनों लोकों में अपने आप हर प्राणी पर प्रभाव बनाए रहती है।

उपरोक्त विवरण एक ब्रह्माण्ड में ब्रह्म (काल) की रचना का है। ऐसे-ऐसे क्षर पुरुष (काल) के इक्कीस ब्रह्माण्ड हैं।

परन्तु क्षर पुरूष (काल) स्वयं व्यक्त अर्थात् वास्तविक शरीर रूप में सबके सामने नहीं आता। उसी को प्राप्त करने के लिए तीनों देवों (ब्रह्मा जी, विष्णु जी, शिव जी) को वेदों में वर्णित विधि अनुसार भरसक साधना करने पर भी ब्रह्म (काल) के दर्शन नहीं हुए। बाद में ऋषियों ने वेदों को पढ़ा। उसमें लिखा है कि 'अग्नेः तनूर् असि' (पवित्र यजुर्वेद अ. 1 मंत्र 15) परमेश्वर सशरीर है तथा पवित्र यजुर्वेद अध्याय 5 मंत्र 1 में लिखा है कि 'अग्नेः तनूर् असि विष्णवे त्वा सोमस्य तनूर् असि'। इस मंत्र में दो बार वेद गवाही दे रहा है कि सर्वव्यापक, सर्वपालन कर्ता सतपुरुष सशरीर है। पवित्र यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 8 में कहा है कि (कविर् मनिषी) जिस परमेश्वर की सर्व प्राणियों को चाह है, वह कविर् अर्थात् कबीर है। उसका शरीर बिना नाड़ी (अस्नाविरम्) का है, (शुक्रम्) वीर्य से बनी पाँच तत्त्व से बनी भौतिक (अकायम्) काया रहित है। वह सर्व का मालिक सर्वोपरि सत्यलोक में विराजमान है, उस परमेश्वर का तेजपुंज का (स्वर्ज्योति) स्वयं प्रकाशित शरीर है जो शब्द रूप अर्थात् अविनाशी है। वही कविर्देव (कबीर परमेश्वर) है जो सर्व ब्रह्माण्डों की रचना करने वाला (व्यदधाता) सर्व ब्रह्माण्डों का रचनहार (स्वयम्भूः) स्वयं प्रकट होने वाला (यथा तथ्य अर्थान्) वास्तव में (शाश्वत्) अविनाशी है (गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में भी प्रमाण है।) भावार्थ है कि पूर्ण ब्रह्म का शरीर का नाम कबीर (कविर देव) है। उस परमेश्वर का शरीर नूर तत्त्व से बना है। परमात्मा का शरीर अति सूक्ष्म है जो उस साधक को दिखाई देता है जिसकी दिव्य दृष्टि खुल चुकी है। इस प्रकार जीव का भी सुक्ष्म शरीर है जिसके ऊपर पाँच तत्त्व का खोल (कवर) अर्थात् पाँच तत्त्व की काया चढ़ी होती है जो माता-पिता के संयोग से (शुक्रम) वीर्य से बनी है। शरीर त्यागने के पश्चात् भी जीव का सुक्ष्म शरीर साथ रहता है। वह शरीर उसी साधक को दिखाई देता है जिसकी दिव्य दृष्टि खुल चुकी है। इस प्रकार परमात्मा व जीव की स्थिति को समझें। वेदों में ओ३म् नाम के स्मरण का प्रमाण है जो केवल ब्रह्म साधना है। इस उद्देश्य से ओ३म् नाम के जाप को पूर्ण ब्रह्म का मान कर ऋषियों ने भी हजारों वर्ष हठयोग (समाधि लगा कर) करके प्रभु प्राप्ति की चेष्टा की, परन्तु प्रभु दर्शन नहीं हुए, सिद्धियाँ प्राप्त हो गई। उन्हीं सिद्धी रूपी खिलौनों से खेल कर ऋषि भी जन्म-मृत्यु के चक्र में ही रह गए तथा अपने अनुभव के शास्त्रों में परमात्मा को निराकार लिख दिया। ब्रह्म (काल) ने कसम खाई है कि मैं अपने वास्तविक रूप में किसी को दर्शन नहीं दूँगा।

मुझे अव्यक्त जानेंगे (अव्यक्त का भावार्थ है कि कोई आकार में है परन्तु व्यक्तिगत रूप से स्थूल रूप में दर्शन नहीं देता। जैसे आकाश में बादल छा जाने पर दिन के समय सूर्य अदृश हो जाता है। वह दृश्यमान नहीं है, परन्तु वास्तव में बादलों के पार ज्यों का त्यों है, इस अवस्था को अव्यक्त कहते हैं।)। (प्रमाण के लिए गीता अध्याय 7 श्लोक 24-25, अध्याय 11 श्लोक 48 तथा 32)

पवित्र गीता जी बोलने वाला ब्रह्म (काल) श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रेतवत प्रवेश करके कह रहा है कि अर्जुन मैं बढ़ा हुआ काल हूँ और सर्व को खाने के लिए आया हूँ। (गीता अध्याय 11 का श्लोक नं. 32) यह मेरा वास्तविक रूप है, इसको तेरे अतिरिक्त न तो कोई पहले देख सका तथा न कोई आगे देख सकता है अर्थात् वेदों में वर्णित यज्ञ-जप-तप तथा ओ३म् नाम आदि की विधि से मेरे इस वास्तविक स्वरूप के दर्शन नहीं हो सकते। (गीता अध्याय 11 श्लोक नं 48) मैं कृष्ण नहीं हूँ, ये मूर्ख लोग कृष्ण रूप में मुझ अव्यक्त को व्यक्त (मनुष्य रूप) मान रहे हैं। क्योंकि ये मेरे घटिया नियम से अपरिचित हैं कि मैं कभी वास्तविक इस काल रूप में सबके सामने नहीं आता। अपनी योग माया से छुपा रहता हूँ (गीता अध्याय 7 श्लोक नं. 24-25) विचार करें :- अपने छुपे रहने वाले विधान को स्वयं अश्रेष्ठ (अनुत्तम) क्यों कह रहे हैं?

यदि पिता अपनी सन्तान को भी दर्शन नहीं देता तो उसमें कोई त्रुटि है जिस कारण से छुपा है तथा सुविधाएं भी प्रदान कर रहा है। काल (ब्रह्म) को शापवश एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों का आहार करना पड़ता है तथा 25 प्रतिशत प्रतिदिन जो ज्यादा उत्पन्न होते हैं उन्हें ठिकाने लगाने के लिए तथा कर्म भोग का दण्ड देने के लिए चौरासी लाख योनियों की रचना की हुई है। यदि सबके सामने बैठ कर किसी की पुत्री, किसी की पत्नी, किसी के पुत्र, माता-पिता को खा गए तो सर्व को ब्रह्म से घृणा हो जाए तथा जब भी कभी पूर्ण परमात्मा कविरग्नि (कबीर परमेश्वर) स्वयं आए या अपना कोई संदेशवाहक (दूत) भेंजे तो सर्व प्राणी सत्यभक्ति करके काल के जाल से निकल जाएं।

इसलिए धोखा देकर रखता है तथा पवित्र गीता अध्याय 7 श्लोक 18,24,25 में अपनी साधना से होने वाली मुक्ति (गति) को भी (अनुत्तमाम्) अति अश्रेष्ठ कहा है तथा अपने विधान (नियम)को भी (अनुत्तम) अश्रेष्ठ कहा है।

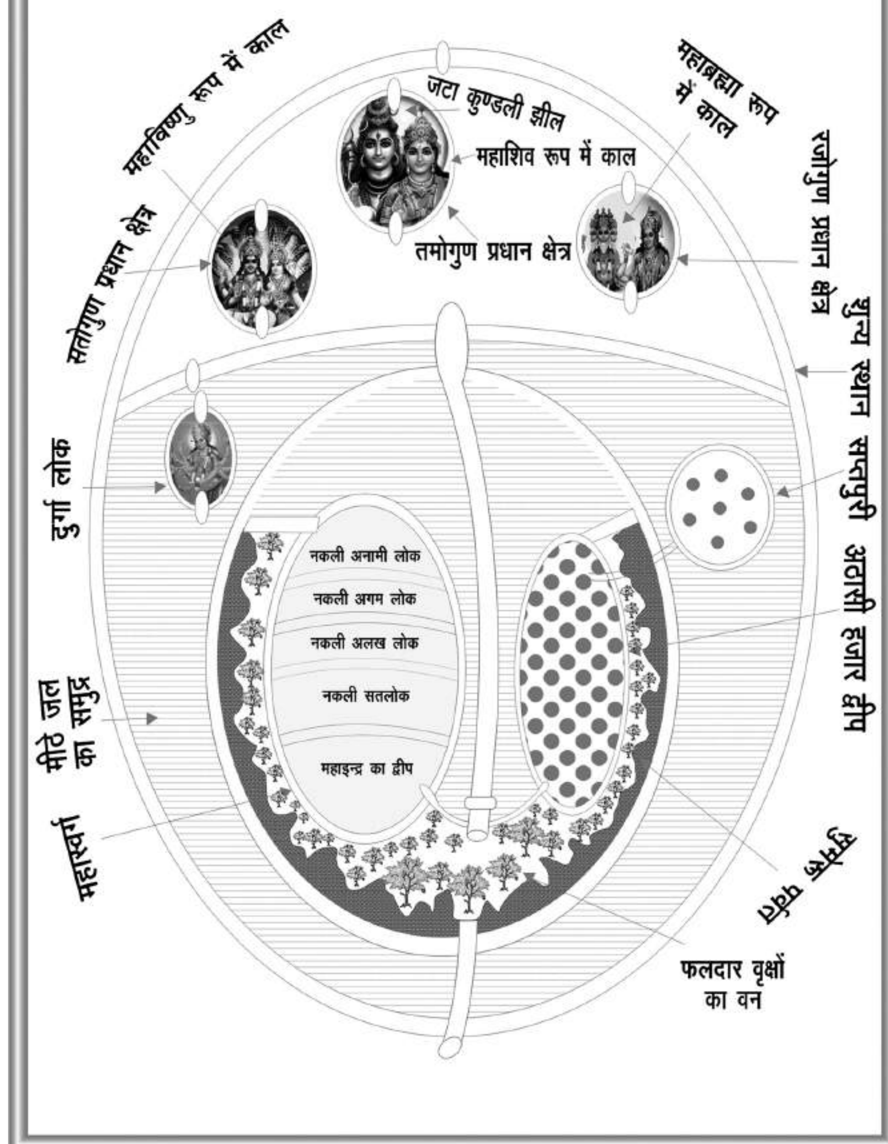
प्रत्येक ब्रह्माण्ड में बने ब्रह्मलोक में एक महास्वर्ग बनाया है। महास्वर्ग में एक स्थान पर नकली सतलोक - नकली अलख लोक - नकली अगम लोक तथा नकली अनामी लोक की रचना प्राणियों को धोखा देने के लिए प्रकृति (दुर्गा/आदि माया) द्वारा करवा रखी है। कबीर साहेब का एक शब्द है 'कर नैनों दीदार महल में प्यारा है' में वाणी है कि 'काया भेद किया निरवारा, यह सब रचना पिण्ड मंझारा है। माया अविगत जाल पसारा, सो कारीगर भारा है। आदि माया किन्ही चतुराई, झूठी बाजी पिण्ड दिखाई, अविगत रचना रचि अण्ड माहि वाका प्रतिबिम्ब डारा है।'

एक ब्रह्माण्ड में अन्य लोकों की भी रचना है, जैसे श्री ब्रह्मा जी का लोक, श्री विष्णु जी का लोक, श्री शिव जी का लोक। जहाँ पर बैठकर तीनों प्रभु नीचे के तीन लोकों (स्वर्गलोक अर्थात् इन्द्र का लोक - पृथ्वी लोक तथा पाताल लोक) पर एक - एक विभाग के मालिक बन कर प्रभुता करते हैं तथा अपने पिता काल के खाने के लिए प्राणियों की उत्पत्ति, स्थिति तथा संहार का कार्यभार संभालते हैं। तीनों प्रभुओं की भी जन्म व मृत्यु होती है। तब काल इन्हें भी खाता है। इसी ब्रह्माण्ड {इसे अण्ड भी कहते हैं क्योंकि ब्रह्माण्ड की बनावट अण्डाकार है, इसे पिण्ड भी कहते हैं क्योंकि शरीर (पिण्ड) में एक ब्रह्माण्ड की रचना कमलों में टी.वी. की तरह देखी जाती है} में एक

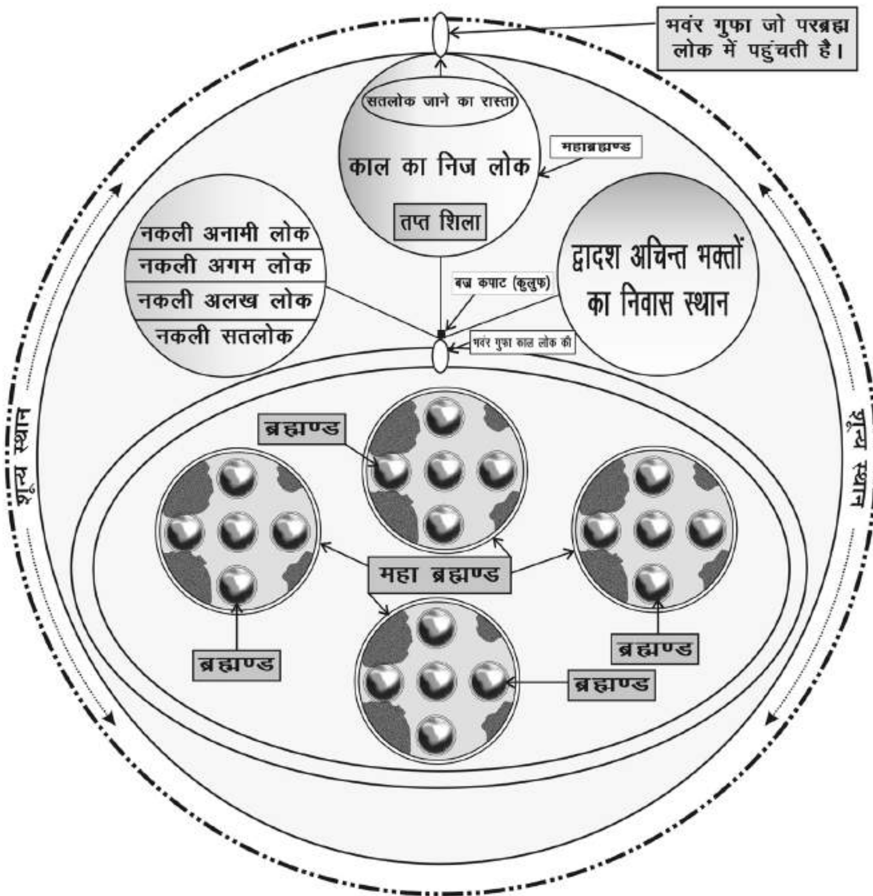
मानसरोवर तथा धर्मराय (न्यायधीश) का भी लोक है तथा एक गुप्त स्थान पर पूर्ण परमात्मा अन्य रूप धारण करके रहता है जैसे प्रत्येक देश का राजदूत भवन होता है। वहाँ पर कोई नहीं जा सकता। वहाँ पर वे आत्माऐं रहती हैं जिनकी सत्यलोक की भक्ति अधूरी रहती है। जब भक्ति युग आता है तो उस समय परमेश्वर कबीर जी अपना प्रतिनिधि पूर्ण संत सतगुरु भेजते हैं। इन पुण्यात्माओं को पृथ्वी पर उस समय मानव शरीर प्राप्त होता है तथा ये शीघ्र ही सत भक्ति पर लग जाते हैं तथा सतगुरु से दीक्षा प्राप्त करके पूर्ण मोक्ष प्राप्त कर जाते हैं। उस स्थान पर रहने वाले हंस आत्माओं की निजी भक्ति कमाई खर्च नहीं होती। परमात्मा के भण्डार से सर्व सुविधाऐं उपलब्ध होती हैं। ब्रह्म (काल) के उपासकों की भक्ति कमाई स्वर्ग-महा स्वर्ग में समाप्त हो जाती है क्योंकि इस काल लोक (ब्रह्म लोक) तथा परब्रह्म लोक में प्राणियों को अपना किया कर्मफल ही मिलता है।

क्षर पुरुष (ब्रह्म) ने अपने 20 ब्रह्माण्डों को चार महाब्रह्माण्डों में विभाजित किया है। एक महाब्रह्माण्ड में पाँच ब्रह्माण्डों का समूह बनाया है तथा चारों ओर से अण्डाकार गोलाई (परिधि) में रोका है तथा चारों महा ब्रह्माण्डों को भी फिर अण्डाकार गोलाई (परिधि) में रोका है। इक्कीसवें ब्रह्माण्ड की रचना एक महाब्रह्माण्ड जितना स्थान लेकर की है। इक्कीसवें ब्रह्माण्ड में प्रवेश होते ही तीन रास्ते बनाए हैं। इक्कीसवें ब्रह्माण्ड में भी बांई तरफ नकली सतलोक, नकली अलख लोक, नकली अगम लोक, नकली अनामी लोक की रचना प्राणियों को धोखे में रखने के लिए आदि माया (दुर्गा) से करवाई है तथा दांई तरफ बारह सर्व श्रेष्ठ ब्रह्म साधकों (भक्तों) को रखता है। फिर प्रत्येक युग में उन्हें अपने संदेश वाहक (सन्त सतगुरू) बनाकर पृथ्वी पर भेजता है, जो शास्त्र विधि रहित साधना व ज्ञान बताते हैं तथा स्वयं भी भक्तिहीन हो जाते हैं तथा अनुयाइयों को भी काल जाल में फंसा जाते हैं। फिर वे गुरु जी तथा अनुयाई दोनों ही नरक में जाते हैं। फिर सामने एक ताला (कुलुफ) लगा रखा है। वह रास्ता काल (ब्रह्म) के निज लोक में जाता है। जहाँ पर यह ब्रह्म (काल) अपने वास्तविक मानव सदृश काल रूप में रहता है। इसी स्थान पर एक पत्थर की टुकड़ी तवे के आकार की (चपाती पकाने की लोहे की गोल प्लेट सी होती है) स्वतः गर्म रहती है। जिस पर एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों के सूक्ष्म शरीर को भूनकर उनमें से गंदगी निकाल कर खाता है। उस समय सर्व प्राणी बहुत पीड़ा अनुभव करते हैं तथा हाहाकार मच जाती है। फिर कुछ समय उपरान्त वे बेहोश हो जाते हैं। जीव मरता नहीं। फिर धर्मराय के लोक में जाकर कर्माधार से अन्य जन्म प्राप्त करते हैं तथा जन्म-मृत्यु का चक्कर बना रहता है। उपरोक्त सामने लगा ताला ब्रह्म (काल) केवल अपने आहार वाले प्राणियों के लिए कुछ क्षण के लिए खोलता है। पूर्ण परमात्मा के सत्यनाम व सारनाम से यह ताला स्वयं खुल जाता है। ऐसे काल का जाल पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर साहेब) ने स्वयं ही अपने निजी भक्त धर्मदास जी को समझाया।

ब्रह्म लोक का लघु चित्र



ज्योति निरंजन (काल) ब्रह्म के लोक (21 ब्रह्मण्ड) का लघु चित्र



"परब्रह्म के सात शंख ब्रह्माण्डों की स्थापना"

कबीर परमेश्वर (कविर्देव) ने आगे बताया है कि परब्रह्म (अक्षर पुरुष) ने अपने कार्य में गफलत की क्योंकि यह मानसरोवर में सो गया तथा जब परमेश्वर (मैंनें अर्थात् कबीर साहेब ने) उस सरोवर में अण्डा छोड़ा तो अक्षर पुरुष (परब्रह्म) ने उसे क्रोध से देखा। इन दोनों अपराधों के कारण इसे भी सात शंख ब्रह्माण्ड़ों सहित सतलोक से बाहर कर दिया। अन्य कारण अक्षर पुरुष (परब्रह्म) अपने साथी ब्रह्म (क्षर पुरुष) की विदाई में व्याकुल होकर परमपिता कविर्देव (कबीर परमेश्वर) की याद भूलकर उसी को याद करने लगा तथा सोचा कि क्षर पुरुष (ब्रह्म) तो बहुत आनन्द मना रहा होगा, वह स्वतंत्र राज्य करेगा, मैं पीछे रह गया तथा अन्य कुछ आत्माऐं जो परब्रह्म के साथ सात शंख ब्रह्माण्डों में जन्म-मृत्यु का कर्मदण्ड भोग रही हैं, उन हंस आत्माओं की विदाई की याद में खो गई जो ब्रह्म (काल) के साथ इक्कीस ब्रह्माण्डों में फंसी हैं तथा पूर्ण परमात्मा, सुखदाई कविर्देव की याद भुला दी। परमेश्वर कविर् देव के बार-बार समझाने पर भी आस्था कम नहीं हुई। परब्रह्म (अक्षर पुरुष) ने सोचा कि मैं भी अलग स्थान प्राप्त करूँ तो अच्छा रहे। यह सोच कर राज्य प्राप्ति की इच्छा से सारनाम का जाप प्रारम्भ कर दिया। इसी प्रकार अन्य आत्माओं ने (जो परब्रह्म के सात शंख ब्रह्माण्डों में फंसी हैं) सोचा कि वे जो ब्रह्म के साथ आत्माऐं गई हैं वे तो वहाँ मौज-मस्ती मनाऐंगे, हम पीछे रह गये। परब्रह्म के मन में यह धारणा बनी कि क्षर पुरुष अलग होकर बहुत सुखी होगा। यह विचार कर अन्तरात्मा से भिन्न स्थान प्राप्ति की ठान ली। परब्रह्म (अक्षर पुरुष) ने हठ योग नहीं किया, परन्तु केवल अलग राज्य प्राप्ति के लिए सहज ध्यान योग विशेष कसक के साथ करता रहा। अलग स्थान प्राप्त करने के लिए पागलों की तरह विचरने लगा, खाना-पीना भी त्याग दिया। अन्य कुछ आत्माऐं जो पहले काल ब्रह्म के साथ गई आत्माओं के प्रेम में व्याकुल थी, वे अक्षर पुरूष के वैराग्य पर आसक्त होकर उसे चाहने लगी। पूर्ण प्रभु के पूछने पर परब्रह्म ने अलग स्थान माँगा तथा कुछ हंसात्माओं के लिए भी याचना की। तब कविर्देव ने कहा कि जो आत्मा आपके साथ स्वेच्छा से जाना चाहें उन्हें भेज देता हूँ। पूर्ण प्रभु ने पूछा कि कौन हंस आत्मा परब्रह्म के साथ जाना चाहता है, सहमति व्यक्त करे। बहुत समय उपरान्त एक हंस ने स्वीकृति दी, फिर देखा-देखी उन सर्व आत्माओं ने भी सहमति व्यक्त कर दी। सर्व प्रथम स्वीकृति देने वाले हंस को स्त्री रूप बनाया, उसका नाम ईश्वरी माया (प्रकृति सुरति) रखा तथा अन्य आत्माओं को उस ईश्वरी माया में प्रवेश करके अचिन्त द्वारा अक्षर पुरुष (परब्रह्म) के पास भेजा। (पतिव्रता पद से गिरने की सजा पाई।) कई युगों तक दोनों सात शंख ब्रह्माण्डों में रहे, परन्तु परब्रह्म ने दुर्व्यवहार नहीं किया। ईश्वरी माया की स्वेच्छा से अंगीकार किया तथा अपनी शब्द शक्ति द्वारा नाखुनों से स्त्री इन्द्री (योनि) बनाई। ईश्वरी देवी की सहमति से संतान उत्पन्न की। इस लिए परब्रह्म के लोक (सात शंख ब्रह्माण्डों) में प्राणियों को तप्तशिला का कष्ट नहीं है तथा वहाँ पशु-पक्षी भी ब्रह्म लोक के देवों से अच्छे चरित्र युक्त हैं। आयु भी बहुत लम्बी है, परन्तु जन्म - मृत्यु कर्माधार पर कर्मदण्ड तथा परिश्रम करके ही उदर पूर्ति होती है। स्वर्ग तथा नरक भी ऐसे ही बने हैं। परब्रह्म (अक्षर पुरुष) को सात शंख ब्रह्माण्ड उसके इच्छा रूपी भक्ति ध्यान अर्थात् सहज समाधि विधि से की उस की कमाई के प्रतिफल में प्रदान किये तथा सत्यलोक से भिन्न स्थान पर गोलाकार परिधि में बन्द करके सात शंख ब्रह्माण्डों सहित अक्षर ब्रह्म व ईश्वरी माया को निष्कासित कर दिया।

पूर्ण ब्रह्म (सतपुरुष) असंख्य ब्रह्माण्डों जो सत्यलोक आदि में हैं तथा ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्माण्डों

तथा परब्रह्म के सात शंख ब्रह्माण्डों का भी प्रभु (मालिक) है अर्थात् परमेश्वर कविर्देव कुल का मालिक है।

श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी आदि के चार-चार भुजाएं तथा 16 कलाएं हैं तथा प्रकति देवी (दुर्गा) की आठ भुजाएं हैं तथा 64 कलाएं हैं। ब्रह्म (क्षर पुरुष) की एक हजार भुजाएं हैं तथा एक हजार कलाएं है तथा इक्कीस ब्रह्माण्ड़ों का प्रभु है। परब्रह्म (अक्षर पुरुष) की दस हजार भुजाएं हैं तथा दस हजार कला हैं तथा सात शंख ब्रह्माण्डों का प्रभु है। पूर्ण ब्रह्म (परम अक्षर पुरुष अर्थात् सतपुरुष) की असंख्य भुजाएं तथा असंख्य कलाएं हैं तथा ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्माण्ड व परब्रह्म के सात शंख ब्रह्माण्डों सहित असंख्य ब्रह्माण्डों का प्रभु है। प्रत्येक प्रभु अपनी सर्व भुजाओं को समेट कर केवल दो भुजाएं भी रख सकते हैं तथा जब चाहें सर्व भुजाओं को भी प्रकट कर सकते हैं। पूर्ण परमात्मा परब्रह्म के प्रत्येक ब्रह्माण्ड में भी अलग स्थान बनाकर अन्य रूप में गुप्त रहता है। यूं समझो जैसे एक घूमने वाला कैमरा बाहर लगा देते हैं तथा अन्दर टी.वी. (टेलीविजन) रख देते हैं। टी.वी. पर बाहर का सर्व दश्य नजर आता है तथा दूसरा टी.वी. बाहर रख कर अन्दर का कैमरा स्थाई करके रख दिया जाए, उसमें केवल अन्दर बैठे प्रबन्धक का चित्र दिखाई देता है। जिससे सर्व कर्मचारी सावधान रहते हैं।

इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा अपने सतलोक में बैठ कर सर्व को नियंत्रित किए हुए हैं तथा प्रत्येक ब्रह्माण्ड में भी सतगुरु कविर्देव विद्यमान रहते हैं जैसे सूर्य दूर होते हुए भी अपना प्रभाव अन्य लोकों में बनाए हुए है।

"पवित्र अथर्ववेद में संष्टि रचना का प्रमाण"

अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 1 :-

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् वि सीमतः सुरुचो वेन आवः।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः।। 1।।

ब्रह्म—ज—ज्ञानम्—प्रथमम्—पुरस्तात्—विसिमतः—सुरुचः—वेनः—आवः—सः—बुध्न्याः —उपमा—अस्य—विष्ठाः—सतः—च—योनिम्—असतः—च—वि वः

अनुवाद :— (प्रथमम्) प्राचीन अर्थात् सनातन (ब्रह्म) परमात्मा ने (ज) प्रकट होकर (ज्ञानम्) अपनी सूझ—बूझ से (पुरस्तात्) शिखर में अर्थात् सतलोक आदि को (सुरुचः) स्वइच्छा से बड़े चाव से स्वप्रकाशित (विसिमतः) सीमा रहित अर्थात् विशाल सीमा वाले भिन्न लोकों को उस (वेनः) जुलाहे ने ताने अर्थात् कपड़े की तरह बुनकर (आवः) सुरक्षित किया (च) तथा (सः) वह पूर्ण ब्रह्म ही सर्व रचना करता है (अस्य) इसलिए उसी (बुध्न्याः) मूल मालिक ने (योनिम्) मूलस्थान सत्यलोक की रचना की है (अस्य) इस के (उपमा) सदश अर्थात् मिलते जुलते (सतः) अक्षर पुरुष अर्थात् परब्रह्म के लोक कुछ स्थाई (च) तथा (असतः) क्षर पुरुष के अस्थाई लोक आदि (वि वः) आवास स्थान भिन्न (विष्ठाः) स्थापित किए।

भावार्थ :- पवित्र वेदों को बोलने वाला ब्रह्म (काल) कह रहा है कि सनातन परमेश्वर ने स्वयं अनामय (अनामी) लोक से सत्यलोक में प्रकट होकर अपनी सूझ-बूझ से कपड़े की तरह रचना करके ऊपर के सतलोक आदि को सीमा रहित स्वप्रकाशित अजर - अमर अर्थात् अविनाशी ठहराए तथा नीचे के परब्रह्म के सात शंख ब्रह्माण्ड तथा ब्रह्म के 21 ब्रह्माण्ड व इनमें छोटी-से छोटी रचना भी उसी परमात्मा ने अस्थाई की है।

अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 2 :-

इयं पित्र्या राष्ट्र्येत्वग्रे प्रथमाय जनुषे भुवनेष्ठाः।

तस्मा एतं सुरुचं ह्वारमह्यं घर्मं श्रीणन्तु प्रथमाय धास्यवे।।2।।

इयम्–पित्र्या–राष्ट्रि–एतु–अग्रे–प्रथमाय–जनुषे–भुवनेष्ठाः–तस्मा–एतम्–सुरुचम् – हवारमह्यम्–धर्मम्–श्रीणान्तु–प्रथमाय–धास्यवे

अनुवाद :– (इयम्) इसी (पित्र्या) जगतपिता परमेश्वर ने (एतु) इस (अग्रे) सर्वोत्तम् (प्रथमाय) सर्व से पहली माया परानन्दनी (राष्ट्रि) राजेश्वरी शक्ति अर्थात् पराशक्ति जिसे आकर्षण शक्ति भी कहते हैं, को (जनुषे) उत्पन्न करके (भुवनेष्ठाः) लोक स्थापना की (तस्मा) उसी परमेश्वर ने (सुरुचम्) बड़े चाव के साथ स्वेच्छा से (एतम्) इस (प्रथमाय) प्रथम उत्पत्ति की शक्ति अर्थात्। पराशक्ति के द्वारा (ह्वारमह्यम्) एक दूसरे के वियोग को रोकने अर्थात् आकर्षण शक्ति के (श्रीणान्तु) गुरुत्व आकर्षण को परमात्मा ने आदेश दिया सदा रहो उस कभी समाप्त न होने वाले (धर्मम्) स्वभाव से (धास्यवे) धारण करके ताने अर्थात् कपड़े की तरह बुनकर रोके हुए है।

भावार्थ :- जगतपिता परमेश्वर ने अपनी शब्द शक्ति से राष्ट्री अर्थात् सबसे पहली माया राजेश्वरी उत्पन्न की तथा उसी पराशक्ति के द्वारा एक-दूसरे को आकर्षण शक्ति से रोकने वाले कभी न समाप्त होने वाले गुण से उपरोक्त सर्व ब्रह्माण्डों को स्थापित किया है।

अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 3 :-

प्र यो जज्ञे विद्वानस्य बन्धुर्विश्वा देवानां जनिमा विवक्ति।

ब्रह्म ब्रह्मण उज्जभार मध्यान्नीचैरुच्चैः स्वधा अभि प्र तस्थौ।।3।।

प्र–यः–जज्ञे–विद्वानस्य–बन्धुः–विश्वा–देवानाम्–जनिमा–विवक्ति–ब्रह्मः–ब्रह्मणः– उज्जभार–मध्यात्–निचैः–उच्चैः–स्वधा–अभिः–प्रतस्थौ

अनुवाद :– (प्र) सर्व प्रथम (देवानाम्) देवताओं व ब्रह्माण्डों की (जज्ञे) उत्पत्ति के ज्ञान को (विद्वानस्य) जिज्ञासु भक्त का (यः) जो (बन्धुः) वास्तविक साथी अर्थात् पूर्ण परमात्मा ही अपने निज सेवक को (जनिमा) अपने द्वारा सजन किए हुए को (विवक्ति) स्वयं ही ठीक–ठीक विस्तार पूर्वक बताता है कि (ब्रह्मणः) पूर्ण परमात्मा ने (मध्यात्) अपने मध्य से अर्थात् शब्द शक्ति से (ब्रह्मः) ब्रह्म–क्षर पुरूष अर्थात् काल को (उज्जभार) उत्पन्न करके (विश्वा) सारे संसार को अर्थात् सर्व लोकों को (उच्चैः) ऊपर सत्यलोक आदि (निचैः) नीचे परब्रह्म व ब्रह्म के सर्व ब्रह्माण्ड (स्वधा) अपनी धारण करने वाली (अभिः) आकर्षण शक्ति से (प्र तस्थौ) दोनों को अच्छी प्रकार स्थित किया।

भावार्थ :- पूर्ण परमात्मा अपने द्वारा रची सष्टि का ज्ञान तथा सर्व आत्माओं की उत्पत्ति का ज्ञान अपने निजी दास को स्वयं ही सही बताता है कि पूर्ण परमात्मा ने अपने मध्य अर्थात् अपने शरीर से अपनी शब्द शक्ति के द्वारा ब्रह्म (क्षर पुरुष/काल) की उत्पत्ति की तथा सर्व ब्रह्माण्डों को ऊपर सतलोक, अलख लोक, अगम लोक, अनामी लोक आदि तथा नीचे परब्रह्म के सात शंख ब्रह्माण्ड तथा ब्रह्म के 21 ब्रह्माण्डों को अपनी धारण करने वाली आकर्षण शक्ति से ठहराया हुआ है।

जैसे पूर्ण परमात्मा कबीर परमेश्वर (कविर्देव) ने अपने निजी सेवक अर्थात् सखा श्री धर्मदास जी, आदरणीय गरीबदास जी आदि को अपने द्वारा रची सष्टि का ज्ञान स्वयं ही बताया। उपरोक्त वेद मंत्र भी यही समर्थन कर रहा है।

अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 4

सः हि दिवः सः पथिव्या ऋतस्था मही क्षेमं रोदसी अस्कभायत्।

महान् मही अस्कभायद् वि जातो द्यां सद्म पार्थिवं च रजः।।4।।

:—हि—दिवः—स—पथिव्या—ऋतस्था—मही—क्षेमम्—रोदसी—अकस्भायत्—

महान् —मही—अस्कभायद्—विजातः—धाम्—सदम्—पार्थिवम्—च—रजः

अनुवाद — (सः)उसी सर्वशक्तिमान परमात्मा ने (हि) निःसंदेह (दिवः) ऊपर के चारों दिव्य लोक जैसे सत्य लोक, अलख लोक, अगम लोक तथा अनामी अर्थात् अकह लोक अर्थात् दिव्य गुणों युक्त लोकों को (ऋतस्था) सत्य स्थिर अर्थात् अजर—अमर रूप से स्थिर किए (स) उन्हीं के समान (पथिव्या) नीचे के पथ्वी वाले सर्व लोकों जैसे परब्रह्म के सात शंख तथा ब्रह्म/काल के इक्कीस ब्रह्माण्ड (मही) पथ्वी तत्त्व से (क्षेमम्) सुरक्षा के साथ (अस्कभायत्) ठहराया (रोदसी) आकाश तत्त्व तथा पथ्वी तत्त्व दोनों से ऊपर नीचे के ब्रह्माण्डों को{जैसे आकाश एक सुक्ष्म तत्त्व है, आकाश का गुण शब्द है, पूर्ण परमात्मा ने ऊपर के लोक शब्द रूप रचे जो तेजपुंज के बनाए हैं तथा नीचे के परब्रह्म (अक्षर पुरूष) के सप्त शंख ब्रह्माण्ड तथा ब्रह्म/क्षर पुरूष के इक्कीस ब्रह्माण्डों को पथ्वी तत्त्व से अस्थाई रचा} (महान्) पूर्ण परमात्मा ने (पार्थिवम्) पथ्वी वाले (वि) भिन्न—भिन्न (धाम्) लोक (च) और (सदम्) आवास स्थान (मही) पथ्वी तत्त्व से (रजः) प्रत्येक ब्रह्माण्ड में छोटे—छोटे लोकों की (जातः) रचना करके (अस्कभायत्) स्थिर किया।

भावार्थ :- ऊपर के चारों लोक सत्यलोक, अलख लोक, अगम लोक, अनामी लोक, यह तो अजर-अमर स्थाई अर्थात् अविनाशी रचे हैं तथा नीचे के ब्रह्म तथा परब्रह्म के लोकों को अस्थाई रचना करके तथा अन्य छोटे-छोटे लोक भी उसी परमेश्वर ने रच कर स्थिर किए।

अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र 5

सः बुध्न्यादाष्ट्र जनुषोऽभ्यग्रं बहस्पतिर्देवता तस्य सम्राट्।

अहर्यच्छुक्रं ज्योतिषो जनिष्टाथ द्युमन्तो वि वसन्तु विप्राः।।5।।

सः—बुध्न्यात्—आष्ट्र—जनुषेः—अभि—अग्रम्—बहस्पतिः—देवता—तस्य— सम्राट—अहः—यत्—शुक्रम्—ज्योतिषः—जनिष्ट—अथ—द्युमन्तः—वि—वसन्तु—विप्राः

अनुवाद :— (सः) उसी (बुध्न्यात्) मूल मालिक से (अभि—अग्रम्) सर्व प्रथम स्थान पर (आष्ट्र) अष्टँगी माया—दुर्गा अर्थात् प्रकति देवी (जनुषेः) उत्पन्न हुई क्योंकि नीचे के परब्रह्म व ब्रह्म के लोकों का प्रथम स्थान सतलोक है यह तीसरा धाम भी कहलाता है (तस्य) इस दुर्गा का भी मालिक यही (सम्राट) राजाधिराज (बहस्पतिः) सबसे बड़ा पति व जगतगुरु (देवता) परमेश्वर है। (यत्) जिस से (अहः) सबका वियोग हुआ (अथ) इसके बाद (ज्योतिषः) ज्योति रूप निरंजन अर्थात् काल के (शुक्रम्) वीर्य अर्थात् बीज शक्ति से (जनिष्ट) दुर्गा के उदर से उत्पन्न होकर (विप्राः) भक्त आत्माएं (वि) अलग से (द्युमन्तः) मनुष्य लोक तथा स्वर्ग लोक में ज्योति निरंजन के आदेश से दुर्गा ने कहा (वसन्तु) निवास करो, अर्थात् वे निवास करने लगी।

भावार्थ :- पूर्ण परमात्मा ने ऊपर के चारों लोकों में से जो नीचे से सबसे प्रथम अर्थात् सत्यलोक में आष्ट्रा अर्थात् अष्टंगी (प्रकति देवी/दुर्गा) की उत्पत्ति की। यही राजाधिराज, जगतगुरु, पूर्ण परमेश्वर (सतपुरुष) है जिससे सबका वियोग हुआ है। फिर सर्व प्राणी ज्योति निरंजन (काल) के (वीर्य) बीज से दुर्गा (आष्ट्रा) के गर्भ द्वारा उत्पन्न होकर स्वर्ग लोक व पथ्वी लोक पर निवास करने लगे।

अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र 6

नूनं तदस्य काव्यो हिनोति महो देवस्य पूर्व्यस्य धाम।

एष जज्ञे बहुभिः साकमित्था पूर्वे अर्धे विषिते ससन् नु।।6।।

नूनम्—तत्—अस्य—काव्यः—महः—देवस्य—पूर्व्यस्य—धाम—हिनोति—पूर्वे— विषिते—एष—जज्ञे—बहुभिः—साकम्—इत्था—अर्धे—ससन्—नु।

अनुवाद — (नूनम्) निसंदेह (तत्) वह पूर्ण परमेश्वर अर्थात् तत् ब्रह्म ही (अस्य) इस (काव्यः) भक्त

आत्मा जो पूर्ण परमेश्वर की भक्ति विधिवत करता है को वापिस (महः) सर्वशक्तिमान (देवस्य) परमेश्वर के (पूर्व्यस्य) पहले के (धाम) लोक में अर्थात् सत्यलोक में (हिनोति) भेजता है।

(पूर्वे) पहले वाले (विषिते) विशेष चाहे हुए (एष) इस परमेश्वर को व (जज्ञे) संष्टि उत्पत्ति के ज्ञान को जान कर (बहुभिः) बहुत आनन्द (साकम्) के साथ (अर्धे) आधा (ससन्) सोता हुआ (इत्था) विधिवत् इस प्रकार (नु) सच्ची आत्मा से स्तुति करता है।

भावार्थ :- वही पूर्ण परमेश्वर सत्य साधना करने वाले साधक को उसी पहले वाले स्थान (सत्यलोक) में ले जाता है, जहाँ से बिछुड़ कर आए थे। वहाँ उस वास्तविक सुखदाई प्रभु को प्राप्त करके खुशी से आत्म विभोर होकर मस्ती से स्तुति करता है कि हे परमात्मा असंख्य जन्मों के भूले-भटकों को वास्तविक ठिकाना मिल गया। इसी का प्रमाण पवित्र ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 16 में भी है।

आदरणीय गरीबदास जी को इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) स्वयं सत्यभक्ति प्रदान करके सत्यलोक लेकर गए थे, तब अपनी अमंतवाणी में आदरणीय गरीबदास जी महाराज ने आँखों देखकर कहाः-

गरीब, अजब नगर में ले गए, हमकुँ सतगुरु आन। झिलके बिम्ब अगाध गति, सुते चादर तान।।

अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र 7

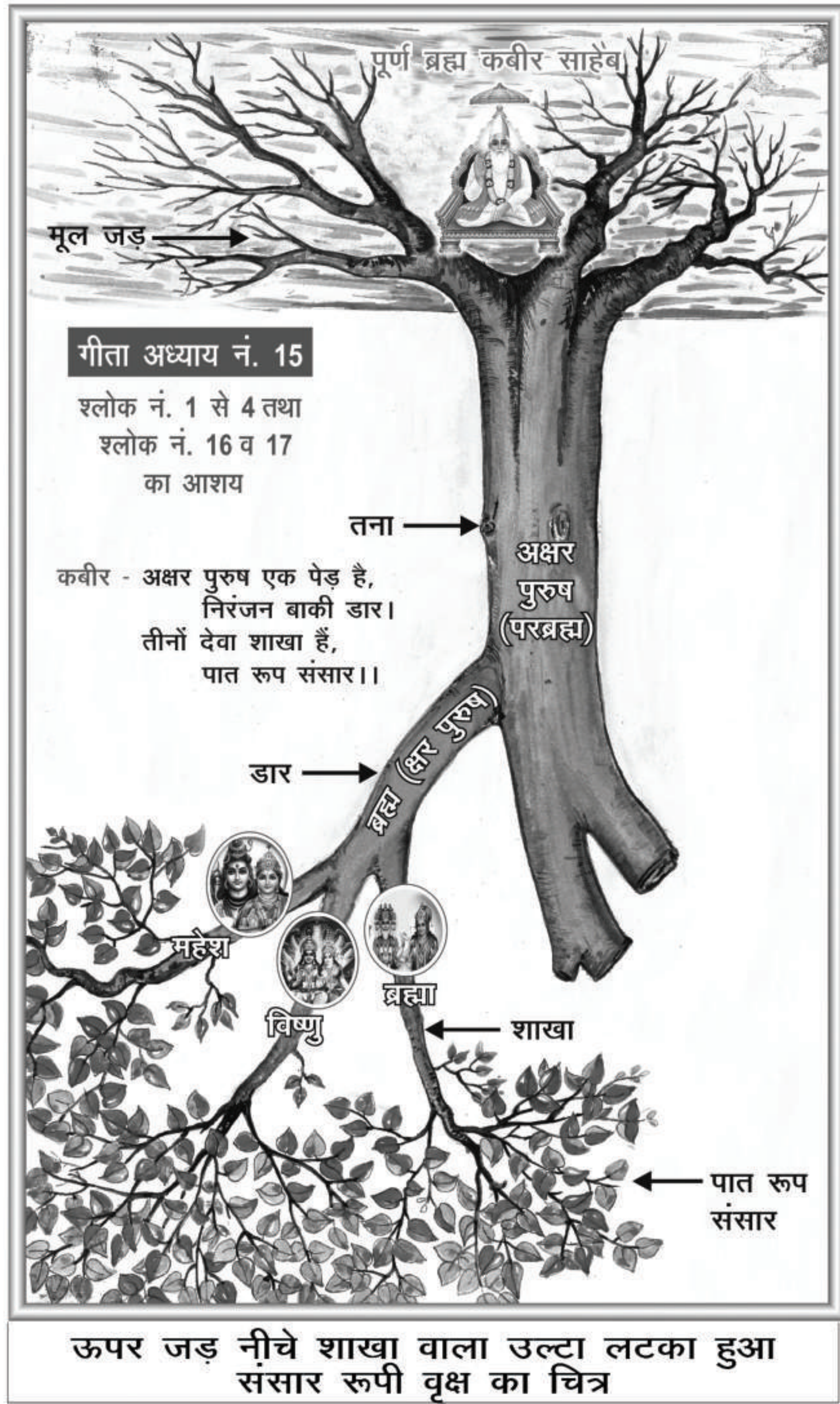
योऽथर्वाणं पित्तरं देवबन्धुं बंहस्पतिं नमसाव च गच्छात्।
त्वं विश्वेषां जनिता यथासः कविर्देवो न दभायत् स्वधावान्।।7।।

यः—अथर्वाणम्—पित्तरम्—देवबन्धुम्—बंहस्पतिम्—नमसा—अव—च— गच्छात्—त्वम्—विश्वेषाम्—जनिता—यथा—सः—कविर्देवः—न—दभायत्—स्वधावान्

अनुवाद :— (यः) जो (अथर्वाणम्) अचल अर्थात् अविनाशी (पित्तरम्) जगत पिता (देव बन्धुम्) भक्तों का वास्तविक साथी अर्थात् आत्मा का आधार (बंहस्पतिम्) जगतगुरु (च) तथा (नमसा) विनम्र पुजारी अर्थात् विधिवत् साधक को (अव) सुरक्षा के साथ (गच्छात्) सतलोक गए हुओं को अर्थात् जिनका पूर्ण मोक्ष हो गया, वे सत्यलोक में जा चुके हैं। उनको सतलोक ले जाने वाला (विश्वेषाम्) सर्व ब्रह्माण्डों की (जनिता) रचना करने वाला जगदम्बा अर्थात् माता वाले गुणों से भी युक्त (न दभायत्) काल की तरह धोखा न देने वाले (स्वधावान्) स्वभाव अर्थात् गुणों वाला (यथा) ज्यों का त्यों अर्थात् वैसा ही (सः) वह (त्वम्) आप (कविर्देवः/ कविर्देवः) कविर्देव है अर्थात् भाषा भिन्न इसे कबीर परमेश्वर भी कहते हैं।

भावार्थ :- इस मंत्र में यह भी स्पष्ट कर दिया कि उस परमेश्वर का नाम कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर है, जिसने सर्व रचना की है।

जो परमेश्वर अचल अर्थात् वास्तव में अविनाशी (गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में भी प्रमाण है) जगत् गुरु, आत्माधार, जो पूर्ण मुक्त होकर सत्यलोक गए हैं उनको सतलोक ले जाने वाला, सर्व ब्रह्माण्डों का रचनहार, काल (ब्रह्म) की तरह धोखा न देने वाला ज्यों का त्यों वह स्वयं कविर्देव अर्थात् कबीर प्रभु है। यही परमेश्वर सर्व ब्रह्माण्डों व प्राणियों को अपनी शब्द शक्ति से उत्पन्न करने के कारण (जनिता) माता भी कहलाता है तथा (पित्तरम्) पिता तथा (बन्धु) भाई भी वास्तव में यही है तथा (देव) परमेश्वर भी यही है। इसलिए इसी कविर्देव (कबीर परमेश्वर) की स्तुति किया करते हैं। त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव, त्वमेव विद्या च द्रविणंम त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम् देव देव। इसी परमेश्वर की महिमा का पवित्र ऋग्वेद मण्डल नं. 1 सूक्त नं. 24 में विस्तंत विवरण है।



ऊपर जड़ नीचे शाखा वाला उल्टा लटका हुआ
संसार रूपी वृक्ष का चित्र

"पवित्र ऋग्वेद में सष्टि रचना का प्रमाण"

ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 1

सहस्रशीर्षा पुरूषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।

स भूमिं विश्वतों वत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।1।।

सहस्रशिर्षा–पुरूषः–सहस्राक्षः–सहस्रपात्

स–भूमिम्–विश्वतः–वत्वा–अत्यातिष्ठत् –दशंगुलम्।

अनुवाद :– (पुरूषः) विराट रूप काल भगवान अर्थात् क्षर पुरूष (सहस्रशिर्षा) हजार सिरों वाला (सहस्राक्षः) हजार आँखों वाला (सहस्रपात्) हजार पैरों वाला है (स) वह काल (भूमिम्) पथ्वी वाले इक्कीस ब्रह्माण्डों को (विश्वतः) सब ओर से (दशंगुलम्) दसों अंगुलियों से अर्थात् पूर्ण रूप से काबू किए हुए (वत्वा) गोलाकार घेरे में घेर कर (अत्यातिष्ठत्) इस से बढ़कर अर्थात् अपने काल लोक में सबसे न्यारा भी इक्कीसवें ब्रह्माण्ड में ठहरा है अर्थात् रहता है।

भावार्थ :- इस मंत्र में विराट (काल/ब्रह्म) का वर्णन है। (गीता अध्याय 10-11 में भी इसी काल/ब्रह्म का ऐसा ही वर्णन है अध्याय 11 मंत्र नं. 46 में अर्जुन ने कहा है कि हे सहस्राबाहु अर्थात् हजार भुजा वाले आप अपने चतुर्भुज रूप में दर्शन दीजिए)

जिसके हजारों हाथ, पैर, हजारों आँखे, कान आदि हैं वह विराट रूप काल प्रभु अपने आधीन सर्व प्राणियों को पूर्ण काबू करके अर्थात् 20 ब्रह्माण्डों को गोलाकार परिधि में रोककर स्वयं इनसे ऊपर (अलग) इक्कीसवें ब्रह्माण्ड में बैठा है।

ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 2

पुरूष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम्।

उतामतत्त्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।2।।

पुरूष–एव–इदम्–सर्वम्–यत्–भूतम्–यत्–च–भव्यम्

उत–अमतत्त्वस्य– इशानः–यत्–अन्नेन–अतिरोहति

अनुवाद :– (एव) इसी प्रकार कुछ सही तौर पर (पुरूष) भगवान है वह अक्षर पुरूष अर्थात् परब्रह्म है (च) और (इदम्) यह (यत्) जो (भूतम्) उत्पन्न हुआ है (यत्) जो (भाव्यम्) भविष्य में होगा (सर्वम्) सब (यत्) प्रयत्न से अर्थात् मेहनत द्वारा (अन्नेन) अन्न से (अतिरोहति) विकसित होता है। यह अक्षर पुरूष भी (उत) सन्देह युक्त (अमतत्त्वस्य) मोक्ष का (इशानः) स्वामी है अर्थात् भगवान तो अक्षर पुरूष भी कुछ सही है परन्तु पूर्ण मोक्ष दायक नहीं है।

भावार्थ :- इस मंत्र में परब्रह्म (अक्षर पुरुष) का विवरण है जो कुछ भगवान वाले लक्षणों से युक्त है, परन्तु इसकी भक्ति से भी पूर्ण मोक्ष नहीं है, इसलिए इसे संदेहयुक्त मुक्ति दाता कहा है। इसे कुछ प्रभु के गुणों युक्त इसलिए कहा है कि यह काल की तरह तप्तशिला पर भून कर नहीं खाता। परन्तु इस परब्रह्म के लोक में भी प्राणियों को परिश्रम करके कर्माधार पर ही फल प्राप्त होता है तथा अन्न से ही सर्व प्राणियों के शरीर विकसित होते हैं, जन्म तथा मत्यु का समय भले ही काल (क्षर पुरुष) से अधिक है, परन्तु फिर भी उत्पत्ति प्रलय तथा चौरासी लाख योनियों में यातना बनी रहती है।

ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 3

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पुरूषः।

पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।3।।

तावान्–अस्य–महिमा–अतः–ज्यायान्–च–पुरूषः

पादः–अस्य–विश्वा– भूतानि–त्रि–पाद्–अस्य–अमृतम्–दिवि

अनुवाद :– (अस्य) इस अक्षर पुरूष अर्थात् परब्रह्म की तो (एतावान्) इतनी ही (महिमा) प्रभुता है। (च) तथा (पुरूषः) वह परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर तो (अतः) इससे भी (ज्यायान्) बड़ा है (विश्वा) समस्त (भूतानि) क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष तथा इनके लोकों में तथा सत्यलोक तथा इन लोकों में जितने भी प्राणी हैं (अस्य) इस पूर्ण परमात्मा परम अक्षर पुरूष का (पादः) एक पैर है अर्थात् एक अंश मात्र है। (अस्य) इस परमेश्वर के (त्रि) तीन (दिवि) दिव्य लोक जैसे सत्यलोक–अलख लोक–अगम लोक (अमृतम्) अविनाशी (पाद्) दूसरा पैर है अर्थात् जो भी सर्व ब्रह्माण्डों में उत्पन्न है वह सत्यपुरूष पूर्ण परमात्मा का ही अंश या अंग है।

भावार्थ :- इस ऊपर के मंत्र 2 में वर्णित अक्षर पुरुष (परब्रह्म) की तो इतनी ही महिमा है तथा वह पूर्ण पुरुष कविर्देव तो इससे भी बड़ा है अर्थात् सर्वशक्तिमान है तथा सर्व ब्रह्माण्ड उसी के अंश मात्र पर ठहरे हैं। इस मंत्र में तीन लोकों का वर्णन इसलिए है क्योंकि चौथा अनामी (अनामय) लोक अन्य रचना से पहले का है। यही तीन प्रभुओं (क्षर पुरूष-अक्षर पुरूष तथा इन दोनों से अन्य परम अक्षर पुरूष) का विवरण श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक संख्या 16-17 में है {इसी का प्रमाण आदरणीय गरीबदास साहेब जी कहते हैं कि:-

गरीब, जाके अर्ध रूम पर सकल पसारा, ऐसा पूर्ण ब्रह्म हमारा।।

गरीब, अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड का, एक रति नहीं भार।

सतगुरु पुरुष कबीर हैं, कुल के सृजनहार।।

इसी का प्रमाण आदरणीय दादू साहेब जी कह रहे हैं कि :-

जिन मोकुं निज नाम दिया, सोई सतगुरु हमार।

दादू दूसरा कोए नहीं, कबीर सृजनहार।।

इसी का प्रमाण आदरणीय नानक साहेब जी देते हैं कि :-

यक अर्ज गुफतम पेश तो दर कून करतार।

हक्का कबीर करीम तू, बेएब परवरदिगार।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब, पृष्ठ नं. 721, महला 1, राग तिलंग)

कून करतार का अर्थ होता है सर्व का रचनहार, अर्थात् शब्द शक्ति से रचना करने वाला शब्द स्वरूपी प्रभु, हक्का कबीर का अर्थ है सत् कबीर, करीम का अर्थ दयालु, परवरदिगार का अर्थ परमात्मा है।}

ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 4

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरूषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः।

ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि।।4।।

त्रि–पाद–ऊर्ध्वः–उदैत्–पुरूषः–पादः–अस्य–इह–अभवत्–पूनः

ततः– विश्वङ्– व्यक्रामत्–सः–अशनानशने–अभि

अनुवाद :– (पुरूषः) यह परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् अविनाशी परमात्मा (ऊर्ध्वः) ऊपर (त्रि) तीन लोक जैसे सत्यलोक–अलख लोक–अगम लोक रूप (पाद) पैर अर्थात् ऊपर के हिस्से में (उदैत्) प्रकट होता है अर्थात् विराजमान है (अस्य) इसी परमेश्वर पूर्ण ब्रह्म का (पादः) एक पैर अर्थात् एक हिस्सा जगत रूप (पुनर्) फिर (इह) यहाँ (अभवत्) प्रकट होता है (ततः) इसलिए (सः) वह अविनाशी पूर्ण परमात्मा (अशनानशने) खाने वाले

काल अर्थात् क्षर पुरूष व न खाने वाले परब्रह्म अर्थात् अक्षर पुरूष के भी (अभि)ऊपर (विश्वङ्)सर्वत्र (व्यक्रामत्)व्याप्त है अर्थात् उसकी प्रभुता सर्व ब्रह्माण्डों व सर्व प्रभुओं पर है वह कुल का मालिक है। जिसने अपनी शक्ति को सर्व के ऊपर फैलाया है।

भावार्थ :- यही सर्व संष्टि रचन हार प्रभु अपनी रचना के ऊपर के हिस्से में तीनों स्थानों (सतलोक, अलखलोक, अगमलोक) में तीन रूप में स्वयं प्रकट होता है अर्थात् स्वयं ही विराजमान है। यहाँ अनामी लोक का वर्णन इसलिए नहीं किया क्योंकि अनामी लोक में कोई रचना नहीं है तथा अकह (अनामय) लोक शेष रचना से पूर्व का है फिर कहा है कि उसी परमात्मा के सत्यलोक से बिछुड़ कर नीचे के ब्रह्म व परब्रह्म के लोक उत्पन्न होते हैं और वह पूर्ण परमात्मा खाने वाले ब्रह्म अर्थात् काल से (क्योंकि ब्रह्म/काल विराट शाप वश एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों को खाता है) तथा न खाने वाले परब्रह्म अर्थात् अक्षर पुरुष से (परब्रह्म प्राणियों को खाता नहीं, परन्तु जन्म-मंत्यु, कर्मदण्ड ज्यों का त्यों बना रहता है) भी ऊपर सर्वत्र व्याप्त है अर्थात् इस पूर्ण परमात्मा की प्रभुता सर्व के ऊपर है, कबीर परमेश्वर ही कुल का मालिक है। जिसने अपनी शक्ति को सर्व के ऊपर फैलाया है जैसे सूर्य अपने प्रकाश को सर्व के ऊपर फैला कर प्रभावित करता है, ऐसे पूर्ण परमात्मा ने अपनी शक्ति रूपी रेंज (क्षमता) को सर्व ब्रह्माण्डों को नियन्त्रित रखने के लिए छोड़ा हुआ है जैसे मोबाईल फोन का टावर एक देशीय होते हुए अपनी शक्ति अर्थात् मोबाइल फोन की रेंज (क्षमता) चहुं ओर फैलाए रहता है। इसी प्रकार पूर्ण प्रभू ने अपनी निराकार शक्ति सर्व व्यापक की है जिससे पूर्ण परमात्मा सर्व ब्रह्माण्डों को एक स्थान पर बैठ कर नियन्त्रित रखता है।

इसी का प्रमाण आदरणीय गरीबदास जी महाराज दे रहे हैं (अमंतवाणी राग कल्याण)

तीन चरण चिन्तामणी साहेब, शेष बदन पर छाए। माता, पिता, कुल न बन्धु, ना किन्हें जननी जाये।।

ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 5

तस्माद्विराळजायत विराजो अधि पूरूषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः।।5।।

तस्मात्—विराट्—अजायत—विराजः—अधि—पुरूषः
स—जातः—अत्यरिच्यत— पश्चात् —भूमिम्—अथः—पुरः।

अनुवाद :– (तस्मात्) उसके पश्चात् उस परमेश्वर सत्यपुरूष की शब्द शक्ति से (विराट्) विराट अर्थात् ब्रह्म, जिसे क्षर पुरूष व काल भी कहते हैं (अजायत) उत्पन्न हुआ है (पश्चात्) इसके बाद (विराजः) विराट पुरूष अर्थात् काल भगवान से (अधि) बड़े (पुरूषः) परमेश्वर ने (भूमिम्) पंथ्वी वाले लोक, काल ब्रह्म तथा परब्रह्म के लोक को (अत्यरिच्यत) अच्छी तरह रचा (अथः) फिर (पुरः) अन्य छोटे—छोटे लोक (स) उस पूर्ण परमेश्वर ने ही (जातः) उत्पन्न किया अर्थात् स्थापित किया।

भावार्थ :- उपरोक्त मंत्र 4 में वर्णित तीनों लोकों (अगमलोक, अलख लोक तथा सतलोक) की रचना के पश्चात पूर्ण परमात्मा ने ज्योति निरंजन (ब्रह्म) की उत्पत्ति की अर्थात् उसी सर्व शक्तिमान परमात्मा पूर्ण ब्रह्म कविर्देव (कबीर प्रभु) से ही विराट अर्थात् ब्रह्म (काल) की उत्पत्ति हुई। यही प्रमाण गीता अध्याय 3 मन्त्र 15 में है कि अक्षर पुरुष अर्थात् अविनाशी प्रभु से ब्रह्म उत्पन्न हुआ यही प्रमाण अर्थववेद काण्ड 4 अनुवाक 1 सूक्त 3 में है कि पूर्ण ब्रह्म से ब्रह्म की उत्पत्ति हुई उसी पूर्ण ब्रह्म ने (भूमिम्) भूमि आदि छोटे-बड़े सर्व लोकों की रचना की। वह पूर्णब्रह्म इस विराट भगवान अर्थात् ब्रह्म से भी बड़ा है अर्थात् इसका भी मालिक है।

ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 15

सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।

देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरूषं पशुम्।।15।।

प्त—अस्य—आसन्—परिधयः—त्रिसप्त—समिधः—कृताः

देवा—यत्—यज्ञम्— तन्वानाः— अबध्नन्—पुरूषम्—पशुम्।

अनुवाद :— (सप्त) सात शंख ब्रह्माण्ड तो परब्रह्म के तथा (त्रिसप्त) इक्कीस ब्रह्माण्ड काल ब्रह्म के (समिधः) कर्मदण्ड दुःख रूपी आग से दुःखी (कृताः) करने वाले (परिधयः) गोलाकार घेरा रूप सीमा में (आसन्) विद्यमान हैं (यत्) जो (पुरूषम्) पूर्ण परमात्मा की (यज्ञम्) विधिवत् धार्मिक कर्म अर्थात् पूजा करता है (पशुम्) बलि के पशु रूपी काल के जाल में कर्म बन्धन में बंधे (देवा) भक्तात्माओं को (तन्वानाः) काल के द्वारा रचे अर्थात् फैलाये पाप कर्म बंधन जाल से (अबध्नन्) बन्धन रहित करता है अर्थात् बन्दी छुड़ाने वाला बन्दी छोड़ है।

भावार्थ :- सात शंख ब्रह्माण्ड परब्रह्म के तथा इक्कीस ब्रह्माण्ड ब्रह्म के हैं जिन में गोलाकार सीमा में बंद पाप कर्मों की आग में जल रहे प्राणियों को वास्तविक पूजा विधि बता कर सही उपासना करवाता है जिस कारण से बलि दिए जाने वाले पशु की तरह जन्म-मृत्यु के काल (ब्रह्म) के खाने के लिए तप्त शिला के कष्ट से पीड़ित भक्तात्माओं को काल के कर्म बन्धन के फैलाए जाल को तोड़कर बन्धन रहित करता है अर्थात् बंधन छुड़वाने वाला बन्दी छोड़ है। इसी का प्रमाण पवित्र यजुर्वेद अध्याय 5 मंत्र 32 में है कि कविरंघारिसि (कविर्) कबिर परमेश्वर (अंघ) पाप का (अरि) शत्रु (असि) है अर्थात् पाप विनाशक कबीर है। बम्भारिसि (बम्भारि) बन्धन का शत्रु अर्थात् बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर (असि) है।

ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 16

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।16।।

यज्ञेन—यज्ञम्—अ—यजन्त—देवाः—तानि—धर्माणि—प्रथमानि— आसन्—ते— ह—नाकम्— महिमानः— सचन्त— यत्र—पूर्वे—साध्याः—सन्ति देवाः।

अनुवाद :— जो (देवाः) निर्विकार देव स्वरूप भक्तात्माएं (अयज्ञम्) अधूरी गलत धार्मिक पूजा के स्थान पर (यज्ञेन) सत्य भक्ति धार्मिक कर्म के आधार पर (अयजन्त) पूजा करते हैं (तानि) वे (धर्माणि) धार्मिक शक्ति सम्पन्न (प्रथमानि) मुख्य अर्थात्] उत्तम (आसन्) हैं (ते ह) वे ही वास्तव में (महिमानः) महान भक्ति शक्ति युक्त होकर (साध्याः) सफल भक्त जन (नाकम्) पूर्ण सुखदायक परमेश्वर को (सचन्त) भक्ति निमित कारण अर्थात् सत्भक्ति की कमाई से प्राप्त होते हैं, वे वहाँ चले जाते हैं। (यत्र) जहाँ पर (पूर्वे) पहले वाली सृष्टि के (देवाः) पापरहित देव स्वरूप भक्त आत्माएं (सन्ति) रहती हैं।

भावार्थ :- जो निर्विकार (जिन्होने मांस,शराब, तम्बाकू सेवन करना त्याग दिया है तथा अन्य बुराईयों से रहित है वे) देव स्वरूप भक्त आत्माएं शास्त्र विधि रहित पूजा को त्याग कर शास्त्रानुकूल साधना करते हैं वे भक्ति की कमाई से धनी होकर काल के ऋण से मुक्त होकर अपनी सत्य भक्ति की कमाई के कारण उस सर्व सुखदाई परमात्मा को प्राप्त करते हैं अर्थात् सत्यलोक में चले जाते हैं जहाँ पर सर्व प्रथम रची सृष्टि के देव स्वरूप अर्थात् पाप रहित हंस आत्माएं रहती हैं।

जैसे कुछ आत्माएं तो काल (ब्रह्म) के जाल में फँसकर यहाँ आ गई, कुछ परब्रह्म के साथ सात शंख ब्रह्माण्डों में आ गई, फिर भी असंख्य आत्माएं जिनका विश्वास पूर्ण परमात्मा में अटल रहा, जो पतिव्रता पद से नहीं गिरी वे वहीं रह गई, इसलिए यहाँ वही वर्णन पवित्र वेदों ने भी सत्य

बताया है। यही प्रमाण गीता अध्याय 8 के श्लोक संख्या 8 से 10 में वर्णन है कि जो साधक पूर्ण परमात्मा की सतसाधना शास्त्रविधि अनुसार करता है वह भक्ति की कमाई के बल से उस पूर्ण परमात्मा को प्राप्त होता है अर्थात् उसके पास चला जाता है। इससे सिद्ध हुआ कि तीन प्रभु हैं ब्रह्म - परब्रह्म - पूर्णब्रह्म। इन्हीं को 1. ब्रह्म - ईश - क्षर पुरुष 2. परब्रह्म - अक्षर पुरुष/अक्षर ब्रह्म ईश्वर तथा 3. पूर्ण ब्रह्म - परम अक्षर ब्रह्म - परमेश्वर - सतपुरुष आदि पर्यायवाची शब्दों से जाना जाता है।

यही प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 17 से 20 में स्पष्ट है कि पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) शिशु रूप धारण करके प्रकट होता है तथा अपना निर्मल ज्ञान अर्थात् तत्त्वज्ञान (कविर्गीर्भिः) कबीर वाणी के द्वारा अपने अनुयाइयों को बोल-बोल कर वर्णन करता है। वह कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ब्रह्म (क्षर पुरुष) के धाम तथा परब्रह्म (अक्षर पुरुष) के धाम से भिन्न जो पूर्ण ब्रह्म (परम अक्षर पुरुष) का तीसरा ऋतधाम (सतलोक) है, उसमें आकार में विराजमान है तथा सतलोक से चौथा अनामी लोक है, उसमें भी यही कविर्देव (कबीर परमेश्वर) अनामी पुरुष रूप में मनुष्य सदृश आकार में विराजमान है।

''पवित्र श्रीमद्देवी महापुराण में सृष्टि रचना का प्रमाण''

''ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव के माता–पिता''

(दुर्गा और ब्रह्म के योग से ब्रह्मा, विष्णु और शिव का जन्म)

पवित्र श्रीमद्देवी महापुराण तीसरा स्कन्द अध्याय 1-3(गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, अनुवादकर्ता श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार तथा चिमन लाल गोस्वामी जी, पृष्ठ नं. 114 से)

पृष्ठ नं. 114 से 118 तक विवरण है कि कितने ही आचार्य भवानी को सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण करने वाली बताते हैं। वह प्रकृति कहलाती है तथा ब्रह्म के साथ अभेद सम्बन्ध है जैसे पत्नी को अर्धांगनी भी कहते हैं अर्थात् दुर्गा ब्रह्म (काल) की पत्नी है। एक ब्रह्माण्ड की सृष्टि रचना के विषय में राजा श्री परिक्षित के पूछने पर श्री व्यास जी ने बताया कि मैंने श्री नारद जी से पूछा था कि हे देवर्षे ! इस ब्रह्माण्ड की रचना कैसे हुई? मेरे इस प्रश्न के उत्तर में श्री नारद जी ने कहा कि मैंने अपने पिता श्री ब्रह्मा जी से पूछा था कि हे पिता श्री इस ब्रह्माण्ड की रचना आपने की या श्री विष्णु जी इसके रचयिता हैं या शिव जी ने रचा है? सच-सच बताने की कृपा करें। तब मेरे पूज्य पिता श्री ब्रह्मा जी ने बताया कि बेटा नारद, मैंने अपने आपको कमल के फूल पर बैठा पाया था, मुझे नहीं मालूम इस अगाध जल में मैं कहाँ से उत्पन्न हो गया। एक हजार वर्ष तक पृथ्वी का अन्वेषण करता रहा, कहीं जल का ओर-छोर नहीं पाया। फिर आकाशवाणी हुई कि तप करो। एक हजार वर्ष तक तप किया। फिर सृष्टि करने की आकाशवाणी हुई। इतने में मधु और कैटभ नाम के दो राक्षस आए, उनके भय से मैं कमल का डण्ठल पकड़ कर नीचे उतरा। वहाँ भगवान विष्णु जी शेष शैय्या पर अचेत पड़े थे। उनमें से एक स्त्री (प्रेतवत प्रविष्ट दुर्गा) निकली। वह आकाश में आभूषण पहने दिखाई देने लगी। तब भगवान विष्णु होश में आए। अब मैं तथा विष्णु जी दो थे। इतने में भगवान शंकर भी आ गए। देवी ने हमें विमान में बैठाया तथा ब्रह्म लोक में ले गई। वहाँ एक ब्रह्मा, एक विष्णु तथा एक शिव और देखा फिर एक देवी देखी,उसे देख कर विष्णु जी ने विवेक पूर्वक निम्न वर्णन किया (ब्रह्म काल ने भगवान विष्णु को चेतना प्रदान कर दी, उसको अपने बाल्यकाल की याद आई तब बचपन की कहानी सुनाई)।

पष्ठ नं. 119-120 पर भगवान विष्णु जी ने श्री ब्रह्मा जी तथा श्री शिव जी से कहा कि यह हम तीनों की माता है, यही जगत् जननी प्रकति देवी है। मैंने इस देवी को तब देखा था जब मैं छोटा सा बालक था, यह मुझे पालने में झुला रही थी।

तीसरा स्कंद पष्ठ नं. 123 पर श्री विष्णु जी ने श्री दुर्गा जी की स्तुति करते हुए कहा - तुम शुद्ध स्वरूपा हो, यह सारा संसार तुम्हीं से उद्भासित हो रहा है, मैं (विष्णु), ब्रह्मा और शंकर हम सभी तुम्हारी कपा से ही विद्यमान हैं। हमारा आविर्भाव (जन्म) और तिरोभाव (मत्यु) हुआ करता है अर्थात् हम तीनों देव नाशवान हैं, केवल तुम ही नित्य (अविनाशी) हो, जगत जननी हो, प्रकति देवी हो।

भगवान शंकर बोले - देवी यदि महाभाग विष्णु तुम्हीं से प्रकट (उत्पन्न) हुए हैं तो उनके बाद उत्पन्न होने वाले ब्रह्मा भी तुम्हारे ही बालक हुए। फिर मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर क्या तुम्हारी संतान नहीं हुआ अर्थात् मुझे भी उत्पन्न करने वाली तुम्हीं हो।

विचार करें :- उपरोक्त विवरण से सिद्ध हुआ कि श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी नाशवान हैं। मत्युंजय (अजर-अमर) व सर्वेश्वर नहीं हैं तथा दुर्गा (प्रकति) के पुत्र हैं तथा ब्रह्म (काल-सदाशिव) इनका पिता है।

तीसरा स्कंद पष्ठ नं. 125 पर ब्रह्मा जी के पूछने पर कि हे माता! वेदों में जो ब्रह्म कहा है वह आप ही हैं या कोई अन्य प्रभु है ? इसके उत्तर में यहाँ तो दुर्गा कह रही है कि मैं तथा ब्रह्म एक ही हैं। फिर इसी स्कंद अ. 6 के पष्ठ नं. 129 पर कहा है कि अब मेरा कार्य सिद्ध करने के लिए विमान पर बैठ कर तुम लोग शीघ्र पधारो (जाओ)। कोई कठिन कार्य उपस्थित होने पर जब तुम मुझे याद करोगे, तब मैं सामने आ जाऊँगी। देवताओं मेरा (दुर्गा का) तथा ब्रह्म का ध्यान तुम्हें सदा करते रहना चाहिए। हम दोनों का स्मरण करते रहोगे तो तुम्हारे कार्य सिद्ध होने में तनिक भी संदेह नहीं है।

उपरोक्त व्याख्या से स्वसिद्ध है कि दुर्गा (प्रकति) तथा ब्रह्म (काल) ही तीनों देवताओं के माता-पिता हैं तथा ब्रह्मा, विष्णु व शिव जी नाशवान हैं व पूर्ण शक्ति युक्त नहीं हैं।

तीनों देवताओं (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी) की शादी दुर्गा (प्रकति देवी) ने की।(प्रमाण :- पष्ठ नं. 128-129 पर, तीसरे स्कंद में।)

गीता अध्याय नं. 7 का श्लोक नं. 12

ये, च, एव, सात्विकाः, भावाः, राजसाः, तामसाः, च, ये,
मतः, एव, इति, तान्, विद्धि, न, तु, अहम्, तेषु, ते, मयि।।

अनुवाद : (च) और (एव) भी (ये) जो (सात्विकाः) सत्वगुण विष्णु जी से स्थिति (भावाः) भाव हैं और (ये) जो (राजसाः) रजोगुण ब्रह्मा जी से उत्पत्ति (च) तथा (तामसाः) तमोगुण शिव से संहार हैं (तान्) उन सबको तू (मतः,एव) मेरे द्वारा सुनियोजित नियमानुसार ही होने वाले हैं (इति) ऐसा (विद्धि) जान (तु) परन्तु वास्तवमें (तेषु) उनमें (अहम्) मैं और (ते) वे (मयि) मुझमें (न) नहीं हैं।

''पवित्र शिव महापुराण में सष्टि रचना का प्रमाण''

(काल ब्रह्म व दुर्गा से विष्णु, ब्रह्मा व शिव की उत्पत्ति)

इसी का प्रमाण पवित्र श्री शिव पुराण गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित, अनुवादकर्ता श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, इसके अध्याय 6 रूद्र संहिता, पष्ठ नं. 100 पर कहा है कि जो मूर्ति रहित परब्रह्म है, उसी की मूर्ति भगवान सदाशिव है। इनके शरीर से एक शक्ति निकली, वह शक्ति अम्बिका, प्रकति (दुर्गा), त्रिदेव जननी (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी को उत्पन्न करने वाली माता)

कहलाई। जिसकी आठ भुजाऐं हैं। वे जो सदाशिव हैं, उन्हें शिव, शंभू और महेश्वर भी कहते हैं। (पृष्ठ नं. 101 पर) वे अपने सारे अंगों में भस्म रमाये रहते हैं। उन काल रूपी ब्रह्म ने एक शिवलोक नामक क्षेत्र का निर्माण किया। फिर दोनों ने पति-पत्नी का व्यवहार किया जिससे एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसका नाम विष्णु रखा (शिव पुराण पृष्ठ नं. 102)।

फिर रूद्र संहिता अध्याय नं. 7 पृष्ठ नं. 103 पर ब्रह्मा जी ने कहा कि मेरी उत्पत्ति भी भगवान सदाशिव (ब्रह्म-काल) तथा प्रकृति (दुर्गा) के संयोग से अर्थात् पति-पत्नी के व्यवहार से ही हुई। फिर मुझे बेहोश कर दिया।

फिर रूद्र संहिता अध्याय नं. 9 पृष्ठ नं. 110 पर कहा है कि इस प्रकार ब्रह्मा, विष्णु तथा रूद्र इन तीनों देवताओं में गुण हैं, परन्तु शिव (काल-ब्रह्म) गुणातीत माने गए हैं।

यहाँ पर चार सिद्ध हुए अर्थात् सदाशिव (काल-ब्रह्म) व प्रकृति (दुर्गा) से ही ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव उत्पन्न हुए हैं। तीनों भगवानों (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी) की माता जी श्री दुर्गा जी तथा पिता जी श्री ज्योति निरंजन (ब्रह्म) है। यही तीनों प्रभु रजगुण-ब्रह्मा जी, सतगुण-विष्णु जी, तमगुण-शिव जी हैं।

''पवित्र श्रीमद्भगवत गीता जी में सृष्टि रचना का प्रमाण''

इसी का प्रमाण पवित्र गीता जी अध्याय 14 श्लोक 3 से 5 तक है। ब्रह्म (काल) कह रहा है कि प्रकृति (दुर्गा) तो मेरी पत्नी है, मैं ब्रह्म (काल) इसका पति हूँ। हम दोनों के संयोग से सर्व प्राणियों सहित तीनों गुणों (रजगुण - ब्रह्मा जी, सतगुण - विष्णु जी, तमगुण - शिवजी) की उत्पत्ति हुई है। मैं (ब्रह्म) सर्व प्राणियों का पिता हूँ तथा प्रकृति (दुर्गा) इनकी माता है। मैं इसके उदर में बीज स्थापना करता हूँ जिससे सर्व प्राणियों की उत्पत्ति होती है। प्रकृति (दुर्गा) से उत्पन्न तीनों गुण (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) जीव को कर्म आधार से शरीर में बांधते हैं।

यही प्रमाण अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 16, 17 में भी है।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 1

ऊर्ध्वमूलम्, अधःशाखम्, अश्वत्थम्, प्राहुः, अव्ययम्,
छन्दांसि, यस्य, पर्णानि, यः, तम्, वेद, सः, वेदवित्।।

अनुवाद : (ऊर्ध्वमूलम्) ऊपर को पूर्ण परमात्मा आदि पुरुष परमेश्वर रूपी जड़ वाला (अधःशाखम्) नीचे को तीनों गुण अर्थात् रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु व तमगुण शिव रूपी शाखा वाला (अव्ययम्) अविनाशी (अश्वत्थम्) विस्तारित पीपल का वृक्ष है, (यस्य) जिसके (छन्दांसि) जैसे वेद में छन्द है ऐसे संसार रूपी वृक्ष के भी विभाग छोटे–छोटे हिस्से टहनियाँ व (पर्णानि) पत्ते (प्राहुः) कहे हैं (तम्) उस संसाररूप वृक्षको (यः) जो (वेद) इसे विस्तार से जानता है (सः) वह (वेदवित्) पूर्ण ज्ञानी अर्थात् तत्त्वदर्शी है।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 2

अधः, च, ऊर्ध्वम्, प्रसृताः, तस्य, शाखाः, गुणप्रवृद्धाः,
विषयप्रवालाः, अधः, च, मूलानि, अनुसन्ततानि, कर्मानुबन्धीनि, मनुष्यलोके।।

अनुवाद : (तस्य) उस वृक्षकी (अधः) नीचे (च) और (ऊर्ध्वम्) ऊपर (गुणप्रवृद्धाः) तीनों गुणों ब्रह्मा–रजगुण, विष्णु–सतगुण, शिव–तमगुण रूपी (प्रसृता) फैली हुई (विषयप्रवालाः) विकार– काम क्रोध, मोह, लोभ अहंकार रूपी कोपल (शाखाः) डाली ब्रह्मा, विष्णु, शिव (कर्मानुबन्धीनि) जीवको कर्मों में बाँधने की (मूलानि) जड़ें अर्थात् मुख्य कारण हैं (च) तथा (मनुष्यलोके) मनुष्यलोक – अर्थात् पृथ्वी लोक में (अधः) नीचे – नरक,

चौरासी लाख जूनियों में (ऊर्ध्वम्) ऊपर स्वर्ग लोक आदि में (अनुसन्ततानि) व्यवस्थित किए हुए हैं।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 3

न, रूपम्, अस्य, इह, तथा, उपलभ्यते, न, अन्तः, न, च, आदिः, न, च,
सम्प्रतिष्ठा, अश्वत्थम्, एनम्, सुविरूढमूलम्, असंगशस्त्रेण, दृढेन, छित्वा।।

अनुवाद : (अस्य) इस रचना का (न) नहीं (आदिः) शुरूवात (च) तथा (न) नहीं (अन्तः) अन्त है (न) नहीं (तथा) वैसा (रूपम्) स्वरूप (उपलभ्यते) पाया जाता है (च) तथा (इह) यहाँ विचार काल में अर्थात् मेरे द्वारा दिया जा रहा गीता ज्ञान में पूर्ण जानकारी मुझे भी (न) नहीं है (सम्प्रतिष्ठा) क्योंकि सर्वब्रह्माण्डों की रचना की अच्छी तरह स्थिति का मुझे भी ज्ञान नहीं है (एनम्) इस (सुविरूढमूलम्) अच्छी तरह स्थाई स्थिति वाला (अश्वत्थम्) मजबूत स्वरूपवाले संसार रूपी वृक्ष के ज्ञान को (असङ्गशस्त्रेण) पूर्ण ज्ञान रूपी (दृढेन्) दृढ़ सूक्षम वेद अर्थात् तत्त्वज्ञान के द्वारा जानकर (छित्वा) काटकर अर्थात् निरंजन की भक्ति को क्षणिक अर्थात् क्षण भंगुर जानकर ब्रह्मा, विष्णु, शिव, ब्रह्म तथा परब्रह्म से भी आगे पूर्णब्रह्म की तलाश करनी चाहिए।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 4

ततः, पदम्, तत्, परिमार्गितव्यम्, यस्मिन्, गताः, न, निवर्तन्ति, भूयः,
तम्, एव्, च, आद्यम्, पुरुषम्, प्रपद्ये, यतः, प्रवृतिः, प्रसृता, पुराणी।।

अनुवाद : जब तत्त्वदर्शी संत मिल जाए (ततः) इसके पश्चात् (तत्) उस परमात्मा के (पदम्) पद स्थान अर्थात् सतलोक को (परिमार्गितव्यम्) भली भाँति खोजना चाहिए (यस्मिन्) जिसमें (गताः) गए हुए साधक (भूयः) फिर (न, निवर्तन्ति) लौटकर संसार में नहीं आते (च) और (यतः) जिस परमात्मा–परम अक्षर ब्रह्म से (पुराणी) आदि (प्रवृतिः) रचना–सृष्टि (प्रसृता) उत्पन्न हुई है (तम्) अज्ञात (आद्यम्) आदि यम अर्थात् मैं काल निरंजन (पुरुषम्) पूर्ण परमात्मा की (एव) ही (प्रपद्ये) मैं शरण में हूँ तथा उसी की पूजा करता हूँ।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 16

द्वौ, इमौ, पुरुषौ, लोके, क्षरः, च, अक्षरः, एव, च,
क्षरः, सर्वाणि, भूतानि, कूटस्थः, अक्षरः, उच्यते।।

अनुवाद : (लोके) इस संसारमें (द्वौ) दो प्रकारके (क्षरः) नाशवान् (च) और (अक्षरः) अविनाशी (पुरुषौ) भगवान हैं (एव) इसी प्रकार (इमौ) इन दोनों प्रभुओं के लोकों में (सर्वाणि) सम्पूर्ण (भूतानि) प्राणियों के शरीर तो (क्षरः) नाशवान् (च) और (कूटस्थः) जीवात्मा (अक्षरः) अविनाशी (उच्यते) कहा जाता है।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 17

उत्तमः, पुरुषः, तु, अन्यः, परमात्मा, इति, उदाहृतः,
यः, लोकत्रयम् आविश्य, बिभर्ति, अव्ययः, ईश्वरः।।

अनुवाद : (उत्तमः) उत्तम (पुरुषः) प्रभु (तु) तो (अन्यः) उपरोक्त दोनों प्रभुओं ''क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष'' से भी अन्य ही है (इति) यह वास्तव में (परमात्मा) परमात्मा (उदाहृतः) कहा गया है (यः) जो (लोकत्रयम्) तीनों लोकों में (आविश्य) प्रवेश करके (बिभर्ति) सबका धारण पोषण करता है एवं (अव्ययः) अविनाशी (ईश्वरः) ईश्वर (प्रभुओं में श्रेष्ठ अर्थात् समर्थ प्रभु) है।

भावार्थ - गीता ज्ञान दाता प्रभु ने केवल इतना ही बताया है कि यह संसार उल्टे लटके वृक्ष तुल्य जानो। ऊपर जड़ें (मूल) तो पूर्ण परमात्मा है। नीचे टहनियां आदि अन्य हिस्से जानो। इस संसार रूपी वृक्ष के प्रत्येक भाग का भिन्न-भिन्न विवरण जो संत जानता है वह तत्त्वदर्शी संत है जिसके विषय में गीता अध्याय 4 श्लोक नं. 34 में कहा है। गीता अध्याय 15 श्लोक नं. 2-3 में केवल इतना ही बताया है कि तीन गुण रूपी शाखा हैं। यहां विचारकाल में अर्थात् गीता में आपको मैं (गीता ज्ञान दाता) पूर्ण

जानकारी नहीं दे सकता क्योंकि मुझे इस संसार की रचना के आदि व अंत का ज्ञान नहीं है। उसके लिए गीता अध्याय 4 श्लोक नं. 34 में कहा है कि किसी तत्त्व दर्शी संत से उस पूर्ण परमात्मा का ज्ञान जानों इस गीता अध्याय 15 श्लोक 1 में उस तत्त्वदर्शी संत की पहचान बताई है कि वह संसार रूपी वक्ष के प्रत्येक भाग का ज्ञान कराएगा। उसी से पूछो। गीता अध्याय 15 के श्लोक 4 में कहा है कि उस तत्त्वदर्शी संत के मिल जाने के पश्चात् उस परमपद परमेश्वर की खोज करनी चाहिए अर्थात् उस तत्त्वदर्शी संत के बताए अनुसार साधना करनी चाहिए जिससे पूर्ण मोक्ष (अनादि मोक्ष) प्राप्त होता है। गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में स्पष्ट किया है कि तीन प्रभु हैं एक क्षर पुरूष (ब्रह्म) दूसरा अक्षर पुरूष (परब्रह्म) तीसरा परम अक्षर पुरूष (पूर्ण ब्रह्म)। क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष वास्तव में अविनाशी नहीं हैं। वह अविनाशी परमात्मा तो इन दोनों से अन्य ही है। वही तीनों लोकों में प्रवेश करके सर्व का धारण पोषण करता है।

उपरोक्त श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 16-17 में यह प्रमाणित हुआ कि उल्टे लटके हुए संसार रूपी वक्ष की मूल अर्थात् जड़ तो परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् पूर्ण ब्रह्म है जिससे पूर्ण वक्ष का पालन होता है तथा वक्ष का जो हिस्सा पथ्वी के तुरन्त बाहर जमीन के साथ दिखाई देता है वह तना होता है उसे अक्षर पुरुष अर्थात् परब्रह्म जानों। उस तने से ऊपर चल कर अन्य मोटी डार निकलती है उनमें से एक डार को ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरुष जानों तथा उसी डार से अन्य तीन शाखाएं निकलती हैं उन्हें ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जानों तथा शाखाओं से आगे पत्ते रूप में सांसारिक प्राणी जानों। उपरोक्त गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में स्पष्ट है कि क्षर पुरुष (ब्रह्म) तथा अक्षर पुरुष (परब्रह्म) तथा इन दोनों के लोकों में जितने प्राणी हैं उनके स्थूल शरीर तो नाशवान हैं तथा जीवात्मा अविनाशी है अर्थात् उपरोक्त दोनों प्रभु व इनके अन्तर्गत सर्व प्राणी नाशवान हैं। भले ही अक्षर पुरुष (परब्रह्म) को अविनाशी कहा है परन्तु वास्तव में अविनाशी परमात्मा तो इन दोनों से अन्य है। वह तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका पालन-पोषण करता है। उपरोक्त विवरण में तीन प्रभुओं का भिन्न-भिन्न विवरण दिया है।

"पवित्र बाईबल तथा पवित्र कुरान शरीफ में सष्टि रचना का प्रमाण"

इसी का प्रमाण पवित्र बाईबल में तथा पवित्र कुरान शरीफ में भी है।

कुरान शरीफ में पवित्र बाईबल का भी ज्ञान है, इसलिए इन दोनों पवित्र सद्ग्रन्थों ने मिल-जुल कर प्रमाणित किया है कि कौन तथा कैसा है सष्टि रचनहार तथा उसका वास्तविक नाम क्या है।

पवित्र बाईबल (उत्पत्ति ग्रन्थ पष्ठ नं. 2 पर, अ. 1:20 - 2:5 पर)

छटवां दिन :– प्राणी और मनुष्य :

अन्य प्राणियों की रचना करके 26. फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं, जो सर्व प्राणियों को काबू रखेगा। 27. तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके मनुष्यों की सष्टि की।

29. प्रभु ने मनुष्यों के खाने के लिए जितने बीज वाले छोटे पेड़ तथा जितने पेड़ों में बीज वाले फल होते हैं वे भोजन के लिए प्रदान किए हैं, (माँस खाना नहीं कहा है।)

सातवां दिन :– विश्राम का दिन :

परमेश्वर ने छः दिन में सर्व सष्टि की उत्पत्ति की तथा सातवें दिन विश्राम किया।

पवित्र बाईबल ने सिद्ध कर दिया कि परमात्मा मानव सदृश शरीर में है, जिसने छः दिन में सर्व सृष्टि की रचना की तथा फिर विश्राम किया।

पवित्र कुरान शरीफ (सुरत फुर्कानि 25, आयत नं. 52, 58, 59)

आयत 52 :– फला तुतिअल् – काफिरन् व जहिद्हुम बिही जिहादन् कबीरा (कबीरन्)।।52।

इसका भावार्थ है कि हजरत मुहम्मद जी का खुदा (प्रभु) कह रहा है कि हे पैगम्बर ! आप काफिरों (जो एक प्रभु की भक्ति त्याग कर अन्य देवी–देवताओं तथा मूर्ति आदि की पूजा करते हैं) का कहा मत मानना, क्योंकि वे लोग कबीर को पूर्ण परमात्मा नहीं मानते। आप मेरे द्वारा दिए इस कुरान के ज्ञान के आधार पर अटल रहना कि कबीर ही पूर्ण प्रभु है तथा कबीर अल्लाह के लिए संघर्ष करना (लड़ना नहीं) अर्थात् अडिग रहना।

आयत 58 :– व तवक्कल् अलल् – हरूिल्लजी ला यमूतु व सब्बिह् बिहम्दिही व कफा बिही बिजुनूबि अिबादिही खबीरा (कबीरा)।।58।

भावार्थ है कि हजरत मुहम्मद जी जिसे अपना प्रभु मानते हैं वह अल्लाह (प्रभु) किसी और पूर्ण प्रभु की तरफ संकेत कर रहा है कि ऐ पैगम्बर उस कबीर परमात्मा पर विश्वास रख जो तुझे जिंदा महात्मा के रूप में आकर मिला था। वह कभी मरने वाला नहीं है अर्थात् वास्तव में अविनाशी है। तारीफ के साथ उसकी पाकी (पवित्र महिमा) का गुणगान किए जा, वह कबीर अल्लाह (कविर्देव) पूजा के योग्य है तथा अपने उपासकों के सर्व पापों को विनाश करने वाला है।

आयत 59 :– अल्ल्जी खलकस्समावाति वल्अर्ज व मा बैनहुमा फी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अलल्अर्शि अर्रह्मानु फस्अल् बिही खबीरन्(कबीरन्)।।59।।

भावार्थ है कि हजरत मुहम्मद को कुरान शरीफ बोलने वाला प्रभु (अल्लाह) कह रहा है कि वह कबीर प्रभु वही है जिसने जमीन तथा आसमान के बीच में जो भी विद्यमान है सर्व सृष्टि की रचना छः दिन में की तथा सातवें दिन ऊपर अपने सत्यलोक में सिंहासन पर विराजमान हो (बैठ) गया। उसके विषय में जानकारी किसी (बाखबर) तत्त्वदर्शी संत से पूछो

उस पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति कैसे होगी तथा वास्तविक ज्ञान तो किसी तत्त्वदर्शी संत (बाखबर) से पूछो, मैं नहीं जानता।

उपरोक्त दोनों पवित्र धर्मों (ईसाई तथा मुसलमान) के पवित्र शास्त्रों ने भी मिल-जुल कर प्रमाणित कर दिया कि सर्व सृष्टि रचनहार, सर्व पाप विनाशक, सर्व शक्तिमान, अविनाशी परमात्मा मानव सदृश शरीर में आकार में है तथा सत्यलोक में रहता है। उसका नाम कबीर है, उसी को अल्लाहु अकबिरू भी कहते हैं।

आदरणीय धर्मदास जी ने पूज्य कबीर प्रभु से पूछा कि हे सर्वशक्तिमान ! आज तक यह तत्त्वज्ञान किसी ने नहीं बताया, वेदों के मर्मज्ञ ज्ञानियों ने भी नहीं बताया। इससे सिद्ध है कि चारों पवित्र वेद तथा चारों पवित्र कतेब (कुरान शरीफ आदि) झूठे हैं। पूर्ण परमात्मा ने कहा :-

कबीर, बेद कतेब झूठे नहीं भाई, झूठे हैं जो समझे नाहिं।

भावार्थ है कि चारों पवित्र वेद (ऋग्वेद - अथर्ववेद - यजुर्वेद - सामवेद) तथा पवित्र चारों कतेब (कुरान शरीफ - जबूर - तौरात - इंजिल) गलत नहीं हैं। परन्तु जो इनको नहीं समझ पाए वे नादान हैं।

"पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर् देव) जी की अमतवाणी में संष्टि रचना"

विशेष :- निम्न अमतवाणी सन् 1403 से {जब पूज्य कविर्देव (कबीर परमेश्वर) लीलामय शरीर में पाँच वर्ष के हुए} सन् 1518 {जब कविर्देव (कबीर परमेश्वर) मगहर स्थान से सशरीर सतलोक गए} के बीच में लगभग 600 वर्ष पूर्व परम पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर्देव) जी द्वारा अपने निजी सेवक (दास भक्त) आदरणीय धर्मदास साहेब जी को सुनाई थी तथा धनी धर्मदास साहेब जी ने लिपिबद्ध की थी। परन्तु उस समय के पवित्र हिन्दुओं तथा पवित्र मुसलमानों के नादान गुरुओं (नीम-हकीमों) ने कहा कि यह धाणक (जुलाहा) कबीर झूठा है। किसी भी सद् ग्रन्थ में श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी के माता-पिता का नाम नहीं है। ये तीनों प्रभु अविनाशी हैं इनका जन्म मत्यु नहीं होता। न ही पवित्र वेदों व पवित्र कुरान शरीफ आदि में कबीर परमेश्वर का प्रमाण है तथा परमात्मा को निराकार लिखा है। हम प्रतिदिन पढ़ते हैं। भोली आत्माओं ने उन विचक्षणों (चतुर गुरुओं) पर विश्वास कर लिया कि सचमुच यह कबीर धाणक तो अशिक्षित है तथा गुरु जी शिक्षित हैं, सत्य कह रहे होंगे। आज वही सच्चाई प्रकाश में आ रही है तथा अपने सर्व पवित्र धर्मों के पवित्र सद्ग्रन्थ साक्षी हैं। इससे सिद्ध है कि पूर्ण परमेश्वर, सर्व संष्टि रचनहार, कुल करतार तथा सर्वज्ञ कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ही है जो काशी (बनारस) में कमल के फूल पर प्रकट हुए तथा 120 वर्ष तक वास्तविक तेजोमय शरीर के ऊपर मानव सदंश शरीर हल्के तेज का बना कर रहे तथा अपने द्वारा रची संष्टि का ठीक-ठीक (वास्तविक तत्त्व) ज्ञान देकर सशरीर सतलोक चले गए। कंपा प्रेमी पाठक पढ़ें निम्न अमतवाणी परमेश्वर कबीर साहेब जी द्वारा उच्चारित :-

धर्मदास यह जग बौराना। कोइ न जाने पद निरवाना।।
यहि कारन मैं कथा पसारा। जगसे कहियो राम नियारा।।
यही ज्ञान जग जीव सुनाओ। सब जीवोंका भरम नशाओ।।
अब मैं तुमसे कहों चिताई। त्रयदेवनकी उत्पत्ति भाई।।
कुछ संक्षेप कहों गुहराई। सब संशय तुम्हरे मिट जाई।।
भरम गये जग वेद पुराना। आदि रामका का भेद न जाना।।
राम राम सब जगत बखाने। आदि राम कोइ बिरला जाने।।
ज्ञानी सुने सो हिरदै लगाई। मूर्ख सुने सो गम्य ना पाई।।
माँ अष्टंगी पिता निरंजन। वे जम दारुण वंशन अंजन।।
पहिले कीन्ह निरंजन राई। पीछेसे माया उपजाई।।
माया रूप देख अति शोभा। देव निरंजन तन मन लोभा।।
कामदेव धर्मराय सत्ताये। देवी को तुरतही धर खाये।।
पेट से देवी करी पुकारा। साहब मेरा करो उबारा।।
टेर सुनी तब हम तहाँ आये। अष्टंगी को बंद छुड़ाये।।
सतलोक में कीन्हा दुराचारि, काल निरंजन दिन्हा निकारि।।
माया समेत दिया भगाई, सोलह शंख कोस दूरी पर आई।।
अष्टंगी और काल अब दोई, मंद कर्म से गए बिगोई।।
धर्मराय को हिकमत कीन्हा। नख रेखा से भगकर लीन्हा।।

धर्मराय किन्हाँ भोग विलासा। मायाको रही तब आसा।।
तीन पुत्र अष्टंगी जाये। ब्रह्मा विष्णु शिव नाम धराये।।
तीन देव विस्तार चलाये। इनमें यह जग धोखा खाये।।
पुरुष गम्य कैसे को पावै। काल निरंजन जग भरमावै।।
तीन लोक अपने सुत दीन्हा। सुन्न निरंजन बासा लीन्हा।।
अलख निरंजन सुन्न ठिकाना। ब्रह्मा विष्णु शिव भेद न जाना।।
तीन देव सो उनको धावें। निरंजन का वे पार ना पावें।।
अलख निरंजन बड़ा बटपारा। तीन लोक जिव कीन्ह अहारा।।
ब्रह्मा विष्णु शिव नहीं बचाये। सकल खाय पुन धूर उड़ाये।।
तिनके सुत हैं तीनों देवा। आंधर जीव करत हैं सेवा।।
अकाल पुरुष काहू नहिं चीन्हां। काल पाय सबही गह लीन्हां।।
ब्रह्म काल सकल जग जाने। आदि ब्रह्मको ना पहिचाने।।
तीनों देव और औतारा। ताको भजे सकल संसारा।।
तीनों गुणका यह विस्तारा। धर्मदास मैं कहों पुकारा।।
गुण तीनों की भक्ति में, भूल परो संसार।
कहै कबीर निज नाम बिन, कैसे उतरैं पार।।

उपरोक्त अमृतवाणी में परमेश्वर कबीर साहेब जी अपने निजी सेवक श्री धर्मदास साहेब जी को कह रहे हैं कि धर्मदास यह सर्व संसार तत्त्वज्ञान के अभाव से विचलित है। किसी को पूर्ण मोक्ष मार्ग तथा पूर्ण सृष्टि रचना का ज्ञान नहीं है। इसलिए मैं आपको मेरे द्वारा रची सृष्टि की कथा सुनाता हूँ। बुद्धिमान व्यक्ति तो तुरंत समझ जायेंगे। परन्तु जो सर्व प्रमाणों को देखकर भी नहीं मानेंगे तो वे नादान प्राणी काल प्रभाव से प्रभावित हैं, वे भक्ति योग्य नहीं। अब मैं बताता हूँ तीनों भगवानों (ब्रह्मा जी, विष्णु जी तथा शिव जी) की उत्पत्ति कैसे हुई? इनकी माता जी तो अष्टंगी (दुर्गा) है तथा पिता ज्योति निरंजन (ब्रह्म, काल) है। पहले ब्रह्म की उत्पत्ति अण्डे से हुई। फिर दुर्गा की उत्पत्ति हुई। दुर्गा के रूप पर आसक्त होकर काल (ब्रह्म) ने गलती (छेड़-छाड़) की, तब दुर्गा (प्रकृति) ने इसके पेट में शरण ली। मैं वहाँ गया जहाँ ज्योति निरंजन काल था। तब भवानी को ब्रह्म के उदर से निकाल कर इक्कीस ब्रह्माण्ड समेत 16 शंख कोस की दूरी पर भेज दिया। ज्योति निरंजन (धर्मराय) ने प्रकृति देवी (दुर्गा) के साथ भोग-विलास किया। इन दोनों के संयोग से तीनों गुणों (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी) की उत्पत्ति हुई। इन्हीं तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी) की ही साधना करके सर्व प्राणी काल जाल में फंसे हैं। जब तक वास्तविक मंत्र नहीं मिलेगा, पूर्ण मोक्ष कैसे होगा?

विशेषः- प्रिय पाठक विचार करें कि श्री ब्रह्मा जी श्री विष्णु जी तथ श्री शिव जी की स्थिति अविनाशी बताई गई थी। सर्व हिन्दू समाज अभी तक तीनों परमात्माओं को अजर, अमर व जन्म-मृत्यु रहित मानते रहे जबकि ये तीनों नाशवान हैं। इनके पिता काल रूपी ब्रह्म तथा माता दुर्गा (प्रकृति/अष्टांगी) हैं जैसा आपने पूर्व प्रमाणों में पढ़ा यह ज्ञान अपने शास्त्रों में भी विद्यमान है परन्तु हिन्दू समाज के कलयुगी गुरूओं, ऋषियों, सन्तों को ज्ञान नहीं। जो अध्यापक पाठ्यक्रम (सलेबस) से ही अपरिचित है वह अध्यापक ठीक नहीं (विद्वान नहीं) है, विद्यार्थियों के भविष्य का शत्रु है। इसी प्रकार जिन गुरूओं को अभी तक यह नहीं पता कि श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव

जी के माता-पिता कौन हैं? तो वे गुरू, ऋषि,सन्त ज्ञान हीन हैं। जिस कारण से सर्व भक्त समाज को शास्त्र विरूद्ध ज्ञान (लोक वेद अर्थात् दन्त कथा) सुना कर अज्ञान से परिपूर्ण कर दिया। शास्त्रविधि विरूद्ध भक्तिसाधना करा के परमात्मा के वास्तविक लाभ (पूर्ण मोक्ष) से वंचित रखा सबका मानव जन्म नष्ट करा दिया क्योंकि श्री मद्भगवत गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में यही प्रमाण है कि जो शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण पूजा करता है। उसे कोई लाभ नहीं होता पूर्ण परमात्मा कबीर जी ने सन् 1403 से ही सर्व शास्त्रों युक्त ज्ञान अपनी अमृतवाणी (कविरवाणी) में बताना प्रारम्भ किया था। परन्तु उन अज्ञानी गुरूओं ने यह ज्ञान भक्त समाज तक नहीं जाने दिया। जो वर्तमान में स्पष्ट हो रहा है इससे सिद्ध है कि कर्विदेव (कबीर प्रभु) तत्त्वदर्शी सन्त रूप में स्वयं पूर्ण परमात्मा ही आए थे।

"आदरणीय गरीबदास साहेब जी की अमृतवाणी में सृष्टि रचना का प्रमाण"

आदि रमैणी (सद् ग्रन्थ पृष्ठ नं. 690 से 692 तक)

आदि रमैंणी अदली सारा। जा दिन होते धुंधुंकारा।।1।।
सतपुरुष कीन्हा प्रकाशा। हम होते तखत कबीर खवासा ।।2।।
मन मोहिनी सिरजी माया। सतपुरुष एक ख्याल बनाया।।3।।
धर्मराय सिरजे दरबानी। चौसठ जुगतप सेवा ठांनी।।4।।
पुरुष पृथिवी जाकूं दीन्ही। राज करो देवा आधीनी।।5।।
ब्रह्माण्ड इकीस राज तुम्ह दीन्हा। मन की इच्छा सब जुग लीन्हा।।6।।
माया मूल रूप एक छाजा। मोहि लिये जिनहूँ धर्मराजा।।7।।
धर्म का मन चंचल चित धार्या। मन माया का रूप बिचारा।।8।।
चंचल चेरी चपल चिरागा। या के परसे सरबस जागा।।9।।
धर्मराय कीया मन का भागी। विषय वासना संग से जागी।।10।।
आदि पुरुष अदली अनरागी। धर्मराय दिया दिल सें त्यागी।।11।।
पुरुष लोक सें दीया ढहाही। अगम दीप चलि आये भाई।।12।।
सहज दास जिस दीप रहंता। कारण कौंन कौंन कुल पंथा।।13।।
धर्मराय बोले दरबानी। सुनो सहज दास ब्रह्मज्ञानी।।14।।
चौसठ जुग हम सेवा कीन्ही। पुरुष पृथिवी हम कूं दीन्ही।।15।।
चंचल रूप भया मन बौरा। मनमोहिनी ठगिया भौंरा।।16।।
सतपुरुष के ना मन भाये। पुरुष लोक से हम चलि आये।।17।।
अगर दीप सुनत बड़भागी। सहज दास मेटो मन पागी।।18।।
बोले सहजदास दिल दानी। हम तो चाकर सत सहदानी।।19।।
सतपुरुष सें अरज गुजारूं। जब तुम्हारा बिवाण उतारूं।।20।।
सहज दास को कीया पीयाना। सत्यलोक लीया प्रवाना।।21।।
सतपुरुष साहिब सरबंगी। अविगत अदली अचल अभंगी।।22।।
धर्मराय तुम्हरा दरबानी। अगर दीप चलि गये प्रानी।।23।।
कौंन हुकम करी अरज अवाजा। कहां पठावौ उस धर्मराजा।।24।।

भई अवाज अदली एक साचा। विषय लोक जा तीन्यूं बाचा।।25।।
सहज विमाँन चले अधिकाई। छिन में अगर दीप चलि आई।।26।।
हमतो अरज करी अनरागी। तुम्ह विषय लोक जावो बड़भागी।।27।।
धर्मराय के चले विमाना। मानसरोवर आये प्राना।।28।
मानसरोवर रहन न पाये। दरै कबीरा थांना लाये।।29।।
बंकनाल की विषमी बाटी। तहां कबीरा रोकी घाटी।।30।।
इन पाँचों मिलि जगत बंधाना। लख चौरासी जीव संताना।।31।।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर माया। धर्मराय का राज पठाया।।32।।
यौह खोखा पुर झूठी बाजी। भिसति बैकुण्ठ दगासी साजी।।33।।
कंतिम जीव भुलांनें भाई। निज घर की तो खबरि न पाई।।34।।
सवा लाख उपजें नित हंसा। एक लाख विनशें नित अंसा।।35।।
उपति खपति प्रलय फेरी। हर्ष शोक जौंरा जम जेरी।।36।।
पाँचों तत्त्व हैं प्रलय माँही। सत्त्वगुण रजगुण तमगुण झांई।।37।।
आठों अंग मिली है माया। पिण्ड ब्रह्माण्ड सकल भरमाया।।38।।
या में सुरति शब्द की डोरी। पिण्ड ब्रह्माण्ड लगी है खोरी।।39।।
श्वासा पारस मन गह राखो। खोल्हि कपाट अमीरस चाखो।।40।।
सुनाऊं हंस शब्द सुन दासा। अगम दीप है अग है बासा।।41।।
भवसागर जम दण्ड जमाना। धर्मराय का है तलबांना।।42।।
पाँचों ऊपर पद की नगरी। बाट बिहंगम बंकी डगरी।।43।।
हमरा धर्मराय सों दावा। भवसागर में जीव भरमावा।।44।।
हम तो कहैं अगम की बानी। जहाँ अविगत अदली आप बिनानी।।45।।
बंदी छोड़ हमारा नामं। अजर अमर है अस्थीर ठामं।।46।।
जुगन जुगन हम कहते आये। जम जौंरा सें हंस छुटाये।।47।।
जो कोई मानें शब्द हमारा। भवसागर नहीं भरमें धारा।।48।।
या में सुरति शब्द का लेखा। तन अंदर मन कहो कीन्ही देखा।।49।।
दास गरीब अगम की बानी। खोजा हंसा शब्द सहदानी।।50।।

उपरोक्त अमंतवाणी का भावार्थ है कि आदरणीय गरीबदास साहेब जी कह रहे हैं कि यहाँ पहले केवल अंधकार था तथा पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब जी सत्यलोक में तख्त (सिंहासन) पर विराजमान थे। हम वहाँ चाकर थे। परमात्मा ने ज्योति निरंजन को उत्पन्न किया। फिर उसके तप के प्रतिफल में इक्कीस ब्रह्माण्ड प्रदान किए। फिर माया (प्रकंति) की उत्पत्ति की। युवा दुर्गा के रूप पर मोहित होकर ज्योति निरंजन (ब्रह्म) ने दुर्गा (प्रकंति) से बलात्कार करने की चेष्टा की। ब्रह्म को उसकी सजा मिली। उसे सत्यलोक से निकाल दिया तथा शॉप लगा कि एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों का प्रतिदिन आहार करेगा, सवा लाख उत्पन्न करेगा। यहाँ सर्व प्राणी जन्म-मंत्यु का कष्ट उठा रहे हैं। यदि कोई पूर्ण परमात्मा का वास्तविक शब्द (सच्चानाम जाप मंत्र) हमारे से प्राप्त करेगा, उसको काल की बंद से छुड़वा देंगे। हमारा बन्दी छोड़ नाम है। आदरणीय गरीबदास जी अपने गुरु व प्रभु कबीर परमात्मा के आधार पर कह रहे हैं कि सच्चे मंत्र अर्थात् सत्यनाम व सारशब्द की प्राप्ति कर लो, पूर्ण मोक्ष हो जायेगा। नहीं तो नकली नाम दाता संतों

व महन्तों की मीठी-मीठी बातों में फंस कर शास्त्र विधि रहित साधना करके काल जाल में रह जाओगे। फिर कष्ट पर कष्ट उठाओगे।

।।गरीबदास जी महाराज की वाणी।।

(सत ग्रन्थ साहिब पृष्ठ नं. 690 से सहाभार)

माया आदि निरंजन भाई, अपने जाऐ आपै खाई। ब्रह्मा विष्णु महेश्वर चेला, ऊँ सोहं का है खेला।।
सिखर सुन्न में धर्म अन्यायी, जिन शक्ति डायन महल पठाई। लाख ग्रास नित उठ दूती, माया आदि तख्त की कुती।।
सवा लाख घड़िये नित भांडे, हंसा उत्पत्ति परलय डांडे। ये तीनों चेला बटपारी, सिरजे पुरुषा सिरजी नारी।।
खोखापुर में जीव भुलाये, स्वपना बहिस्त वैकुंठ बनाये। यो हरहट का कुआ लोई, या गल बंध्या है सब कोई।।
कीड़ी कुजंर और अवतारा, हरहट डोरी बंधे कई बारा। अरब अलील इन्द्र हैं भाई, हरहट डोरी बंधे सब आई।।
शेष महेश गणेश्वर ताहिं, हरहट डोरी बंधे सब आहिं। शुक्रादिक ब्रह्मादिक देवा, हरहट डोरी बंधे सब खेवा।।
कोटिक कर्ता फिरता देख्या, हरहट डोरी कहूँ सुन लेखा। चतुर्भुजी भगवान कहावैं, हरहट डोरी बंधे सब आवैं।।
यो है खोखापुर का कुआ, या में पड़ा सो निश्चय मुवा।

ज्योति निरंजन (कालबली) के वश होकर के ये तीनों देवता (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिव) अपनी महिमा दिखाकर जीवों को स्वर्ग नरक तथा भवसागर में (लख चौरासी योनियों में) भटकाते रहते हैं। ज्योति निरंजन अपनी माया से नागिनी की तरह जीवों को पैदा करते हैं और फिर मार देते हैं। जिस प्रकार उसको नागिनी खा जाती है। फन मारते समय कई अण्डे फूट जाते हैं क्योंकि नागिनी के काफी अण्डे होते हैं। जो अण्डे फूटते हैं उनमें से बच्चे निकलते हैं यदि कोई बच्चा नागिनी अपनी दुम से अण्डों के चारों ओर कुण्डली बनाती है फिर उन अण्डों पर अपना फन मारती है। जिससे अण्डा फूट जाता है। उसमें से बच्चा निकल जाता है। कुण्डली (सर्पनी की दुम का घेरा) से बाहर निकल जाता है तो वह बच्चा बच जाता है नहीं तो कुण्डली में वह (नागिनी) छोड़ती नहीं। जितने बच्चे उस कुण्डली के अन्दर होते हैं उन सबको खा जाती है।

माया काली नागिनी, अपने जाये खात। कुण्डली में छोड़े नहीं, सौ बातों की बात।।

इसी प्रकार यह कालबली का जाल है। निरंजन तक की भक्ति पूरे संत से नाम लेकर करेगें तो भी इस निरंजन की कुण्डली (इक्कीस ब्रह्माण्डों) से बाहर नहीं निकल सकते। स्वयं ब्रह्मा, विष्णु, महेश, आदि माया शेराँवाली भी निरंजन की कुण्डली में है। ये बेचारे अवतार धार कर आते हैं और जन्म-मृत्यु का चक्कर काटते रहते हैं। इसलिए विचार करें सोहं जाप जो कि ध्रुव व प्रहलाद व शुकदेव ऋषि ने जपा, वह भी पार नहीं हुए। क्योंकि श्री विष्णु पुराण के प्रथम अंश के अध्याय 12 के श्लोक 93 में पृष्ठ 51 पर लिखा है कि ध्रुव केवल एक कल्प अर्थात् एक हजार चतुर्युग तक ही मुक्त है। इसलिए काल लोक में ही रहे तथा 'ऊँ नमः भगवते वासुदेवाय' मन्त्र जाप करने वाले भक्त भी कृष्ण तक की भक्ति कर रहे हैं, वे भी चौरासी लाख योनियों के चक्कर काटने से नहीं बच सकते। यह परम पूज्य कबीर साहिब जी व आदरणीय गरीबदास साहेब जी महाराज की वाणी प्रत्यक्ष प्रमाण देती हैं।

अनन्त कोटि अवतार हैं, माया के गोविन्द। कर्ता हो हो अवतरे, बहुर पड़े जग फंध।।

सतपुरुष कबीर साहिब जी की भक्ति से ही जीव मुक्त हो सकता है। जब तक जीव सतलोक में वापिस नहीं चला जाएगा तब तक काल लोक में इसी तरह कर्म करेगा और की हुई नाम व दान धर्म की कमाई स्वर्ग रूपी होटलों में समाप्त करके वापिस कर्म आधार से चौरासी लाख प्रकार के प्राणियों के शरीर में कष्ट उठाने वाले काल लोक में चक्कर काटता रहेगा। माया (दुर्गा) से उत्पन्न हो कर करोड़ों गोबिन्द(ब्रह्मा-विष्णु-शिव) मर चुके हैं। भगवान का अवतार बन कर आये थे। फिर कर्म बन्धन में बन्ध

कर कर्मों को भोग कर चौरासी लाख योनियों में चले गए। जैसे भगवान विष्णु जी को देवर्षि नारद का शॉप लगा। वे श्री रामचन्द्र रूप में अयोध्या में आए। फिर श्री राम जी रूप में बाली का वध किया था। उस कर्म का दण्ड भोगने के लिए श्री क ष्ण जी का जन्म हुआ। फिर बाली वाली आत्मा शिकारी बना तथा अपना प्रतिशोध लिया। श्री क ष्ण जी के पैर में विषाक्त तीर मार कर वध किया। महाराज गरीबदास जी अपनी वाणी में कहते हैं :

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर माया, और धर्मराय कहिये। इन पाँचों मिल परपंच बनाया, वाणी हमरी लहिये।।
इन पाँचों मिल जीव अटकाये, जुगन–जुगन हम आन छुटाये। बन्दी छोड़ हमारा नामं, अजर अमर है अस्थिर ठामं।।
पीर पैगम्बर कुतुब औलिया, सुर नर मुनिजन ज्ञानी। येता को तो राह न पाया, जम के बंधे प्राणी।।
धर्मराय की धूमा–धामी, जम पर जंग चलाऊँ। जोरा को तो जान न दूगां, बांध अदल घर ल्याऊँ।।
काल अकाल दोहूँ को मोसूं, महाकाल सिर मूंडू। मैं तो तख्त हजूरी हुकमी, चोर खोज कूं ढूंढू।।
मूला माया मग में बैठी, हंसा चुन–चुन खाई। ज्योति स्वरूपी भया निरंजन, मैं ही कर्ता भाई।।
हस अठासी दीप मुनीश्वर, बंधे मुला डोरी। ऐत्यां में जम का तलबाना, चलिए पुरुष कीशोरी।।
मूला का तो माथा दागूं, सतकी मोहर करूंगा। पुरुष दीप कूं हंस चलाऊँ, दरा न रोकन दूंगा।।
हम तो बन्दी छोड़ कहावां, धर्मराय है चकवै। सतलोक की सकल सुनावां, वाणी हमरी अखवै।।
नौ लख पटट्न ऊपर खेलूं, साहदरे कूं रोकूं। द्वादस कोटि कटक सब काटूं, हंस पठाऊँ मोखूं।।
चौदह भुवन गमन है मेरा, जल थल में सरबंगी। खालिक खलक खलक में खालिक, अविगत अचल अभंगी।।
अगर अलील चक्र है मेरा, जित से हम चल आए। पाँचों पर प्रवाना मेरा, बंधि छुटावन धाये।।
जहाँ ओंकार निरंजन नाहीं, ब्रह्मा विष्णु वेद नहीं जाहीं। जहाँ करता नहीं जान भगवाना, काया माया पिण्ड न प्राणा।।
पाँच तत्त्व तीनों गुण नाहीं, जोरा काल दीप नहीं जाहीं। अमर करूं सतलोक पठाँऊ, तातैं बन्दी छोड़ कहाऊँ।।

कबीर परमेश्वर (कविर्देव) की महिमा बताते हुए आदरणीय गरीबदास साहेब जी कह रहे हैं कि हमारे प्रभु कविर् (कविर्देव) बन्दी छोड़ हैं। बन्दी छोड़ का भावार्थ है काल की कारागार से छुटवाने वाला, काल ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्माण्डों में सर्व प्राणी पापों के कारण काल के बंदी हैं। पूर्ण परमात्मा (कविर्देव) कबीर साहेब पाप का विनाश कर देते हैं। पापों का विनाश न ब्रह्म, न परब्रह्म, न ही ब्रह्मा, विष्णु, शिव जी कर सकते हैं। केवल जैसा कर्म है, उसका वैसा ही फल दे देते हैं। इसीलिए यजुर्वेद अध्याय 5 के मन्त्र 32 में लिखा है 'कविरंघारिरसि' कविर्देव (कबीर परमेश्वर) पापों का शत्रु है, 'बम्भारिरसि' बन्धनों का शत्रु अर्थात् बन्दी छोड़ है।

इन पाँचों (ब्रह्मा-विष्णु-शिव-माया और धर्मराय) से ऊपर सतपुरुष परमात्मा (कविर्देव) है। जो सतलोक का मालिक है। शेष सर्व परब्रह्म-ब्रह्म तथा ब्रह्मा-विष्णु-शिव जी व आदि माया नाशवान परमात्मा हैं। महाप्रलय में ये सब तथा इनके लोक समाप्त हो जाएंगे। आम जीव से कई हजार गुणा ज्यादा लम्बी इनकी उम्र है। परन्तु जो समय निर्धारित है वह एक दिन पूरा अवश्य होगा। आदरणीय गरीबदास जी महाराज कहते हैं :-

शिव ब्रह्मा का राज, इन्द्र गिनती कहां। चार मुक्ति वैकुंण्ठ समझ, येता लह्या।।
संख जुगन की जुनी, उम्र बड़ धाारिया। जा जननी कुर्बान, सु कागज पारिया।।
येती उम्र बुलंद मरैगा अंत रे। सतगुरु लगे न कान, न भैंटे संत रे।।

चाहे शंख युग की लम्बी उम्र भी क्यों न हो वह एक दिन समाप्त जरूर होगी। यदि सतपुरुष परमात्मा (कविर्देव) कबीर साहेब के नुमाँयदे पूर्ण संत(गुरु) जो तीन नाम का मंत्र (जिसमें एक ओ३म + तत् + सत् सांकेतिक हैं) देता है तथा उसे पूर्ण संत द्वारा नाम दान करने का आदेश है, उससे

उपदेश लेकर नाम की कमाई करेंगे तो हम सतलोक के अधिकारी हंस हो सकते हैं। सत्य साधना बिना बहुत लम्बी उम्र कोई काम नहीं आएगी क्योंकि निरंजन लोक में दुःख ही दुःख है।

कबीर, जीवना तो थोड़ा ही भला, जै सत सुमरन होय। लाख वर्ष का जीवना, लेखै धरै ना कोय।।

कबीर साहिब अपनी (पूर्णब्रह्म की) जानकारी स्वयं बताते हैं कि इन परमात्माओं से ऊपर असंख्य भुजा का परमात्मा सतपुरुष है जो सत्यलोक (सच्च खण्ड, सतधाम) में रहता है तथा उसके अन्तर्गत सर्वलोक [ब्रह्म (काल) के 21 ब्रह्माण्ड व ब्रह्मा, विष्णु, शिव शक्ति के लोक तथा परब्रह्म के सात शंख ब्रह्माण्ड व अन्य सर्व ब्रह्माण्ड] आते हैं और वहाँ पर सत्यनाम-सारनाम के जाप द्वारा जाया जाएगा जो पूरे गुरु से प्राप्त होता है। सच्चखण्ड (सतलोक) में जो आत्मा चली जाती है उसका पुनर्जन्म नहीं होता। सतपुरुष (पूर्णब्रह्म) कबीर साहेब (कविर्देव) ही अन्य लोकों में स्वयं ही भिन्न-भिन्न नामों से विराजमान हैं। जैसे अलख लोक में अलख पुरुष, अगम लोक में अगम पुरुष तथा अकह लोक में अनामी पुरुष रूप में विराजमान हैं। ये तो उपमात्मक नाम हैं, परन्तु वास्तविक नाम उस पूर्ण पुरुष का कविर्देव (भाषा भिन्न होकर कबीर साहेब) है।

"आदरणीय नानक साहेब जी की वाणी में संष्टि रचना का संकेत"

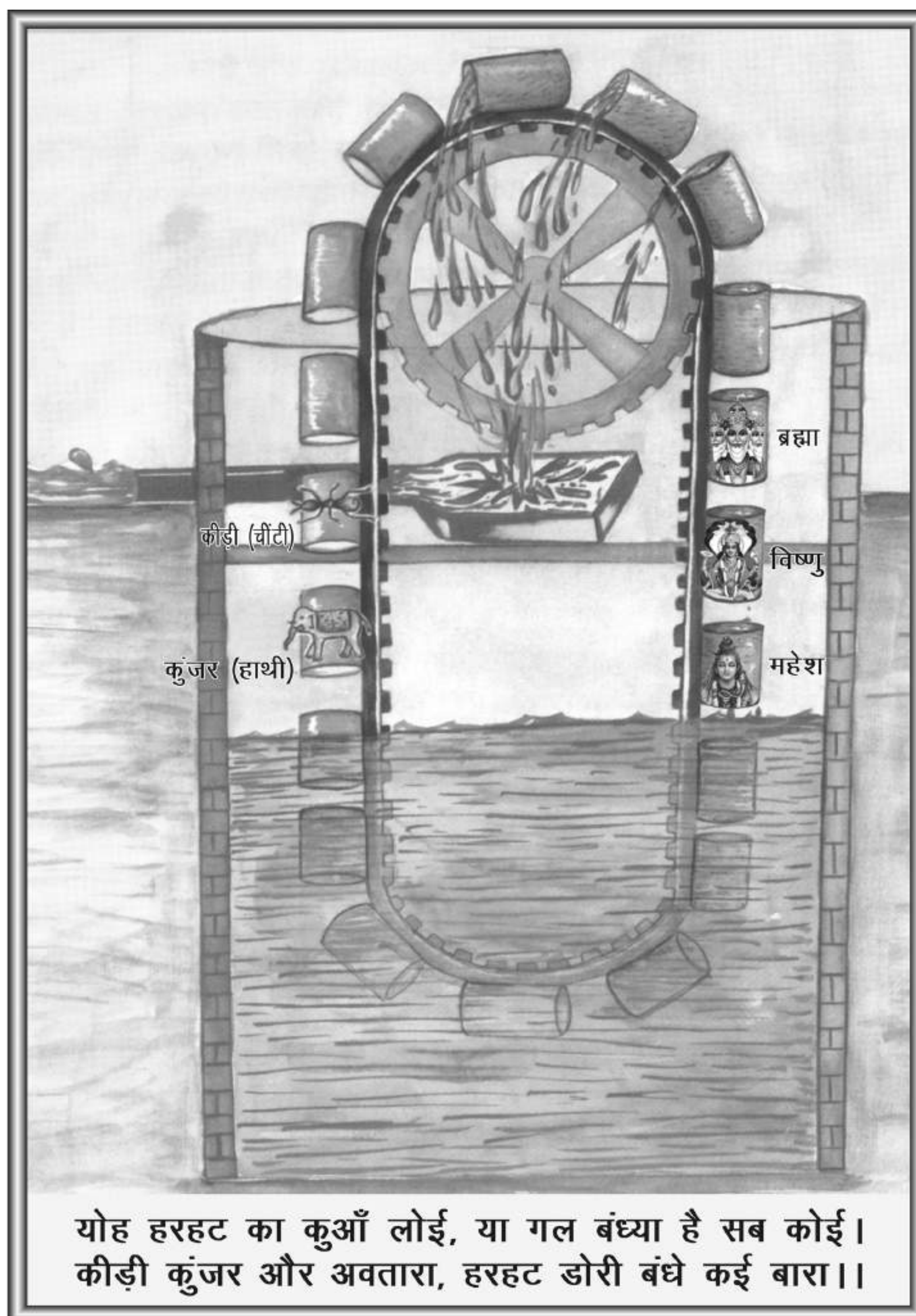
श्री नानक साहेब जी की अमंतवाणी, महला 1, राग बिलावलु, अंश 1 (गु.ग्र. पं. 839)

आपे सचु कीआ कर जोड़ि। अंडज फोड़ि जोडि विछोड़।।
धरती आकाश कीए बैसण कउ थाउ। राति दिनंतु कीए भउ–भाउ।।
जिन कीए करि वेखणहारा।(3)
त्रितीआ ब्रह्मा–बिसनु–महेसा। देवी देव उपाए वेसा।।(4)
पउण पाणी अगनी बिसराउ। ताही निरंजन साचो नाउ।।
तिसु महि मनुआ रहिआ लिव लाई। प्रणवति नानकु कालु न खाई।।(10)

उपरोक्त अमंतवाणी का भावार्थ है कि सच्चे परमात्मा (सतपुरुष) ने स्वयं ही अपने हाथों से सर्व संष्टि की रचना की है। उसी ने अण्डा बनाया फिर फोड़ा तथा उसमें से ज्योति निरंजन निकला। उसी पूर्ण परमात्मा ने सर्व प्राणियों के रहने के लिए धरती, आकाश, पवन, पानी आदि पाँच तत्त्व रचे। अपने द्वारा रची संष्टि का स्वयं ही साक्षी है। दूसरा कोई सही जानकारी नहीं दे सकता। फिर अण्डे के फूटने से निकले निरंजन के बाद तीनों श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी की उत्पत्ति हुई तथा अन्य देवी-देवता उत्पन्न हुए तथा अनगिनत जीवों की उत्पत्ति हुई। उसके बाद अन्य देवों के जीवन चरित्र तथा अन्य ऋषियों के अनुभव के छः शास्त्र तथा अठारह पुराण बन गए। पूर्ण परमात्मा के सच्चे नाम (सत्यनाम) की साधना अनन्य मन से करने से तथा गुरु मर्यादा में रहने वाले (प्रणवति) को श्री नानक जी कह रहे हैं कि काल नहीं खाता।

राग मारु(अंश) अमंतवाणी महला 1(गु.ग्र.पं. 1037)

सुनहु ब्रह्मा, बिसनु, महेसु उपाए। सुने वरते जुग सबाए।।
इसु पद बिचारे सो जनु पुरा। तिस मिलिए भरमु चुकाइदा।।(3)
साम वेदु, रुगु जुजरु अथरबणु। ब्रहमें मुख माइआ है त्रैगुण।।
ता की कीमत कहि न सकै। को तिउ बोले जिउ बुलाईदा।।(9)



काल लोक में जन्म–मरण रूपी हरहट (चक्र)

उपरोक्त अमृतवाणी का सारांश है कि जो संत पूर्ण सृष्टि रचना सुना देगा तथा बताएगा कि अण्डे के दो भाग होकर कौन निकला, जिसने फिर ब्रह्मलोक की सुन्न में अर्थात् गुप्त स्थान पर ब्रह्मा-विष्णु-शिव जी की उत्पत्ति की तथा वह परमात्मा कौन है जिसने ब्रह्म (काल) के मुख से चारों वेदों (पवित्र ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) को उच्चारण करवाया, वह पूर्ण परमात्मा जैसा चाहे वैसे ही प्रत्येक प्राणी को बुलवाता है। इस सर्व ज्ञान को पूर्ण बताने वाला सन्त मिल जाए तो उसके पास जाइए तथा जो सभी शंकाओं का पूर्ण निवारण करता है, वही पूर्ण सन्त अर्थात् तत्त्वदर्शी है।

श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ 929 अमृत वाणी श्री नानक साहेब जी की राग रामकली महला 1 दखणी ओअंकार

ओअंकारि ब्रह्मा उत्पत्ति। ओअंकारू कीआ जिनि चित। ओअंकारि सैल जुग भए। ओअंकारि बेद निरमए। ओअंकारि सबदि उधरे। ओअंकारि गुरुमुखि तरे। ओनम अखर सुणहू बीचारु। ओनम अखरु त्रिभवण सारु।

उपरोक्त अमृतवाणी में श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि ओंकार अर्थात् ज्योति निरंजन (काल) से ब्रह्मा जी की उत्पत्ति हुई। कई युगों मस्ती मार कर ओंकार (ब्रह्म) ने वेदों की उत्पत्ति की जो ब्रह्मा जी को प्राप्त हुए। तीन लोक की भक्ति का केवल एक ओउम् मंत्र ही वास्तव में जाप करने का है। इस ओउम् शब्द को पूरे संत से उपदेश लेकर अर्थात् गुरू धारण करके जाप करने से उद्धार होता है।

विशेष :– श्री नानक साहेब जी ने तीनों मंत्रों (ओउम् + तत् + सत्) का स्थान-स्थान पर रहस्यात्मक विवरण दिया है। उसको केवल पूर्ण संत (तत्त्वदर्शी संत) ही समझ सकता है तथा तीनों मंत्रों के जाप को उपदेशी को समझाया जाता है।

(पृ. 1038) उत्तम सतिगुरु पुरुष निराले, सबदि रते हरि रस मतवाले।
रिधि, बुधि, सिधि, गिआन गुरु ते पाइए, पूरे भाग मिलाईदा।।(15)
सतिगुरु ते पाए बीचारा, सुन समाधि सचे घरबारा।
नानक निरमल नादु सबद धुनि, सचु रामैं नामि समाइदा (17)

उपरोक्त अमृतवाणी का भावार्थ है कि वास्तविक ज्ञान देने वाले सतगुरु तो निराले ही हैं, वे केवल नाम जाप को जपते हैं, अन्य हठयोग साधना नहीं बताते। यदि आप को धन दौलत, पद, बुद्धि या भक्ति शक्ति भी चाहिए तो वह भक्ति मार्ग का ज्ञान पूर्ण संत ही पूरा प्रदान करेगा, ऐसा पूर्ण संत बड़े भाग्य से ही मिलता है। वही पूर्ण संत विवरण बताएगा कि ऊपर सुन्न (आकाश) में अपना वास्तविक घर (सत्यलोक) परमेश्वर ने रच रखा है।

उसमें एक वास्तविक सार नाम की धुन (आवाज) हो रही है। उस आनन्द में अविनाशी परमेश्वर के सार शब्द से समाया जाता है अर्थात् उस वास्तविक सुखदाई स्थान में वास हो सकता है, अन्य नामों तथा अधूरे गुरुओं से नहीं हो सकता।

आंशिक अमृतवाणी महला पहला (श्री गु. ग्र. पृ. 359-360)

सिव नगरी महि आसणि बैसउ कलप त्यागी वादं।(1)
सिंडी सबद सदा धुनि सोहै अहिनिसि पूरै नादं।(2)
हरि कीरति रह रासि हमारी गुरु मुख पंथ अतीत (3)
सगली जोति हमारी संमिआ नाना वरण अनेकं।

कह नानक सुणि भरथरी जोगी पारब्रह्म लिव एकं।(4)

उपरोक्त अमंतवाणी का भावार्थ है कि श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि हे भरथरी योगी जी आपकी साधना भगवान शिव तक है, उससे आपको शिव नगरी (लोक) में स्थान मिला है और शरीर में जो सिंगी शब्द आदि हो रहा है वह इन्हीं कमलों का है तथा टेलीविजन की तरह प्रत्येक देव के लोक से शरीर में सुनाई दे रहा है।

हम तो एक परमात्मा पारब्रह्म अर्थात् सर्व से पार जो पूर्ण परमात्मा है अन्य किसी और एक परमात्मा में लौ (अनन्य मन से लग्न) लगाते हैं।

हम ऊपरी दिखावा (भस्म लगाना, हाथ में दंडा रखना) नहीं करते। मैं तो सर्व प्राणियों को एक पूर्ण परमात्मा (सतपुरुष) की सन्तान समझता हूँ। सर्व उसी शक्ति से चलायमान हैं। हमारी मुद्रा तो सच्चा नाम जाप गुरु से प्राप्त करके करना है तथा क्षमा करना हमारा बाणा (वेशभूषा) है। मैं तो पूर्ण परमात्मा का उपासक हूँ तथा पूर्ण सतगुरु का भक्ति मार्ग इससे भिन्न है।

अमंतवाणी राग आसा महला 1 (श्री गु. ग्र. पं. 420)

।।आसा महला 1।। जिनी नामु विसारिआ दूजै भरमि भुलाई। मूलु छोड़ि डाली लगे किआ पावहि छाई।।1।। साहिबु मेरा एकु है अवरु नहीं भाई। किरपा ते सुखु पाइआ साचे परथाई।।3।। गुर की सेवा सो करे जिसु आपि कराए। नानक सिरु दे छूटीऐ दरगह पति पाए।।8।।18।।

उपरोक्त वाणी का भावार्थ है कि श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि जो पूर्ण परमात्मा का वास्तविक नाम भूल कर अन्य भगवानों के नामों के जाप में भ्रम रहे हैं वे तो ऐसा कर रहे हैं कि मूल (पूर्ण परमात्मा) को छोड़ कर डालियों (तीनों गुण रूप रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिवजी) की सिंचाई (पूजा) कर रहे हैं। उस साधना से कोई सुख नहीं हो सकता अर्थात् पौधा सूख जाएगा तो छाया में नहीं बैठ पाओगे। भावार्थ है कि शास्त्र विधि रहित साधना करने से व्यर्थ प्रयत्न है। कोई लाभ नहीं। इसी का प्रमाण पवित्र गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में भी है। उस पूर्ण परमात्मा को प्राप्त करने के लिए मनमुखी (मनमानी) साधना त्याग कर पूर्ण गुरुदेव को समर्पण करने से तथा सच्चे नाम के जाप से ही मोक्ष संभव है, नहीं तो मंत्यु के उपरांत नरक जाएगा।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पंष्ठ नं. 843-844)

।।बिलावलु महला 1।। मैं मन चाहु घणा साचि विगासी राम। मोही प्रेम पिरे प्रभु अबिनासी राम।। अविगतो हरि नाथु नाथह तिसै भावै सो थीऐ। किरपालु सदा दइआलु दाता जीआ अंदरि तूं जीऐ। मैं आधारु तेरा तू खसमु मेरा मै ताणु तकीआ तेरओ। साचि सूचा सदा नानक गुरसबदि झगरु निबेरओ।।4।।2।।

उपरोक्त अमंतवाणी में श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि अविनाशी पूर्ण परमात्मा नाथों का भी नाथ है अर्थात् देवों का भी देव है (सर्व प्रभुओं श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी तथा ब्रह्म व परब्रह्म पर भी नाथ है अर्थात् स्वामी है) मैं तो सच्चे नाम को हृदय में समा चुका हूँ। हे परमात्मा ! सर्व प्राणी का जीवन आधार भी आप ही हो। मैं आपके आश्रित हूँ आप मेरे मालिक हो। आपने ही गुरु रूप में आकर सत्यभक्ति का निर्णायक ज्ञान देकर सर्व झगड़ा निपटा दिया अर्थात् सर्व शंका का समाधान कर दिया।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पंष्ठ नं. 721, राग तिलंग महला 1)

यक अर्ज गुफतम् पेश तो दर कून करतार। हक्का कबीर करीम तू बेअब परवरदिगार।

नानक बुगोयद जन तुरा तेरे चाकरां पाखाक।

उपरोक्त अमंतवाणी में स्पष्ट कर दिया कि हे (हक्का कबीर) आप सत्कबीर (कून करतार)

शब्द शक्ति से रचना करने वाले शब्द स्वरूपी प्रभु अर्थात् सर्व सृष्टि के रचन हार हो, आप ही बेएब निर्विकार (परवरदिगार) सर्व के पालन कर्ता दयालु प्रभु हो, मैं आपके दासों का भी दास हूँ।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ नं. 24, राग सीरी महला 1)

तेरा एक नाम तारे संसार, मैं ऐहा आस ऐहो आधार। नानक नीच कहै बिचार, धाणक रूप रहा करतार।।

उपरोक्त अमृतवाणी में प्रमाण किया है कि जो काशी में धाणक (जुलाहा) है यही (करतार) कुल का सृजनहार है। अति आधीन होकर श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि मैं सत कह रहा हूँ कि यह धाणक अर्थात् कबीर जुलाहा ही पूर्ण ब्रह्म (सतपुरुष) है।

विशेष :- उपरोक्त प्रमाणों के सांकेतिक ज्ञान से प्रमाणित हुआ सृष्टि रचना कैसे हुई? पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति करनी चाहिए जो पूर्ण संत से नाम लेकर ही संभव है।

''अन्य संतों द्वारा सृष्टि रचना की दन्त कथा''

अन्य संतों द्वारा जो सृष्टि रचना का ज्ञान बताया है वह कैसा है? कृप्या निम्न पढ़ेः- सृष्टि रचना के विषय में राधास्वामी पंथ के सन्तों के व धन-धन सतगुरू पंथ के सन्त के विचार :-

पवित्र पुस्तक जीवन चरित्र परम संत बाबा जयमल सिंह जी महाराज'' पृष्ठ नं. 102-103 से ''सृष्टि की रचना'' (सावन कृपाल पब्लिकेशन, दिल्ली)

''पहले सतपुरुष निराकार था, फिर इजहार (आकार) में आया तो ऊपर के तीन निर्मल मण्डल (सतलोक, अलखलोक, अगमलोक) बन गया तथा प्रकाश तथा मण्डलों का नाद (धुनि) बन गया।''

पवित्र पुस्तक सारवचन (नसर) प्रकाशक :- राधास्वामी सत्संग सभा, दयालबाग आगरा, ''सृष्टि की रचना'' पृष्ठ 8 :-

''प्रथम धूंधूकार था। उसमें पुरुष सुन्न समाध में थे। जब कुछ रचना नहीं हुई थी। फिर जब मौज हुई तब शब्द प्रकट हुआ और उससे सब रचना हुई, पहले सतलोक और फिर सतपुरुष की कला से तीन लोक और सब विस्तार हुआ।''

यह ज्ञान तो ऐसा है जैसे एक समय कोई बच्चा नौकरी लगने के लिए साक्षात्कार (इन्टरव्यू) के लिए गया। अधिकारी ने पूछा कि आपने महाभारत पढ़ा है। लड़के ने उत्तर दिया कि उंगलियों पर रट रखा है। अधिकारी ने प्रश्न किया कि पाँचों पाण्डवों के नाम बताओ। लड़के ने उत्तर दिया कि एक भीम था, एक उसका बड़ा भाई था, एक उससे छोटा था, एक और था तथा एक का नाम मैं भूल गया। उपरोक्त सृष्टि रचना का ज्ञान तो ऐसा है।

सतपुरुष व सतलोक की महिमा बताने वाले व पाँच नाम (औंकार - ज्योति निरंजन - ररंकार - सोहं - सत्यनाम) देने वाले व तीन नाम (अकाल मूर्ति - सतपुरुष - शब्द स्वरूपी राम) देने वाले संतों द्वारा रची पुस्तकों से कुछ निष्कर्ष :-

संतमत प्रकाश भाग 3 पृष्ठ 76 पर लिखा है कि ''सच्चखण्ड या सतनाम चौथा लोक है'', यहाँ पर 'सतनाम' को स्थान कहा है। फिर इस पवित्र पुस्तक के पृष्ठ नं. 79 पर लिखा है कि ''एक राम दशरथ का बेटा, दूसरा राम 'मन', तीसरा राम 'ब्रह्म', चौथा राम 'सतनाम', यह असली राम है।'' फिर पवित्र पुस्तक संतमत प्रकाश पहला भाग पृष्ठ नं. 17 पर लिखा है कि ''वह सतलोक है, उसी को सतनाम कहा जाता है।'' पवित्र पुस्तक 'सार वचन नसर यानि वार्तिक' पृष्ठ नं. 3 पर लिखा है कि ''अब समझना चाहिए कि राधा स्वामी पद सबसे उच्चा मुकाम है कि जिसको संतों ने सतलोक और सच्चखण्ड और सार शब्द और सत शब्द और सतनाम और सतपुरुष करके ब्यान किया है।'' पवित्र

पुस्तक सार वचन (नसर) आगरा से प्रकाशित पष्ठ नं. 4 पर भी उपरोक्त ज्यों का त्यों वर्णन है। पवित्र पुस्तक 'सच्चखण्ड की सड़क' पष्ठ नं. 226 ''संतों का देश सच्चखण्ड या सतलोक है, उसी को सतनाम- सतशब्द-सारशब्द कहा जाता है।''

विशेष :- उपरोक्त व्याख्या ऐसी लगी जैसे किसी ने जीवन में न तो शहर देखा, न कार देखी और न पैट्रोल देखा है, न ड्राईवर का ज्ञान हो कि ड्राईवर किसे कहते हैं और वह व्यक्ति अन्य साथियों से कहे कि मैं शहर में जाता हूँ, कार में बैठ कर आनंद मनाता हूँ। फिर साथियों ने पूछा कि कार कैसी है, पैट्रोल कैसा है और ड्राईवर कैसा है, शहर कैसा है? उस गुरु जी ने उत्तर दिया कि शहर कहो चाहे कार एक ही बात है, शहर भी कार ही है, पैट्रोल भी कार को ही कहते हैं, ड्राईवर भी कार को ही कहते हैं, सड़क भी कार को ही कहते हैं।

आओ विचार करें - सतपुरुष तो पूर्ण परमात्मा है, सतनाम वह दो मंत्र का नाम है जिसमें एक ओ३म् + तत् सांकेतिक है तथा इसके बाद सारनाम साधक को पूर्ण गुरु द्वारा दिया जाता है। यह सतनाम तथा सारनाम दोनों स्मरण करने के नाम हैं। सतलोक वह स्थान है जहाँ सतपुरुष रहता है। पुण्यात्माएं स्वयं निर्णय करें सत्य तथा असत्य का।